#### THE

### ARTHASASTRA OF KAUŢILYA

with Bengali translation

[Volume I]

#### BY

Dr. Radhagovinda Basak, M.A., Ph.D., Vidyāvācaspati,

Retired Senior Professor of Sanskrit, Presidency College, Calcutta, and Ex-Lecturer, Calcutta and Dacca Universities.

PUBLISHED BY: SURAJIT C. DAS, GENERAL PRINTERS & PUBLISHERS PVT, LTD., 119, DHARAMTALA STREET, CALCUTTA-13.

#### 1970

Third Edition

PRINTERS AND PUBLISHERS PRIVATE LIMITED, (ABINAS PRESS), 119, DHARAMITMA STREET, CALCUTTA-13.

# कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

[ प्रथमः खण्डः ]

. किलकाता-प्रेसिडेन्सि-महाविद्यालयस्य प्राक्तन-प्रधान-संस्कृताध्यापकेन एम्. ए., पि. एइच्. डि., विद्यावाचस्पतीत्युपाधियुक्तेन श्रीराधागोविन्दवंसाकेन सम्पादितं वङ्गभाषयान्दितश्व

जेनारेक्ष प्रिण्टासं य्याण्ड पाक्लिझासं प्राइभेट लिमिटेड् इत्यास्य मुद्रणालये श्रीसुरजितचन्द्रदासेन मुद्रितं प्रकाशितञ्ज १९७० खृष्टाब्दे कलिकातानगर्याम्,।

#### मम्भामरकत्र निर्वमन

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রের মংকৃত বন্ধামুবাদের দ্বিতীয় সংস্করণের সহিত মূল সংস্কৃত এত্বের পাঠ সংযোজিত করার জন্ম অনেক কৃতবিছা অধ্যাপক ও পাঠকের অহুরোধ আসিয়াছিল। আমি বিশেষভাবে অবগত আছি যে, এই মূল গ্রন্থের অনেকখানি অংশ কলিকাতা বিশ্ববিত্যালয়ের এম. এ. পরীক্ষার জন্ম পাঠ্য বলিয়া নির্দ্ধারিত আছে। সম্প্রতি বি. এ. অনার্স পরীক্ষাতেও কতক অংশ পাঠ্য বলিয়া নিদিষ্ট श्रेग़ाहि। किन्तु, वाकात्त्र, विश्विषठः वाक्रामा (मृश्वेत वाकात्त्र, কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রের মূল সংস্কৃত গ্রন্থ পাওয়া হল্কর হইয়াছে। ভাই ছাত্র-ছাত্রী ও অক্যান্ত পাঠক-পাঠিকাদিগের সুবিধার জন্ম অমুবাদগ্রন্থের সঙ্গে মূল সংস্কৃত অর্থশাস্ত্র সংযোজিও করিয়া প্রকাশ করা হইল। এখন আর ছাত্র-ছাত্রীদের গ্রন্থাগারের গ্রন্থ হইতে মূলের অনুলিপি প্রস্তুত করার কণ্টের প্রয়োজন হইবে না। আরও একটি প্রকৃষ্ট কথা এই যে, মূল সংস্কৃত গ্রন্থের সঙ্গে মিলাইয়। লইয়া বঙ্গান্থবাদ পড়িলে পাঠকের মনে অর্থের সুগমতা প্রতিভাত হইতে পারিবে। মূল সংস্কৃত গ্রন্থের পূর্ববর্তী সম্পাদকগণের ধৃত পাঠ পর্যালোচনা করিয়া যাহা মূল গ্রন্থের সঙ্গত পাঠ বলিয়া বিবেচিত इरेगारा प्रान्थे के क्यां मनाव शृशीख दहेशाছে। ♦ ইভি—

শ্রীরাধাগোবিন্দ বসাক

है: )मा जुनाहे, )268 मान

# प्रथमखण्डस्य विषयानुक्रमणी

## विनयाधिकारिकं-प्रथममधिकरणम्

| <b>अध्यायस</b> ख्या | ा <b>वष</b> यावला                                   | યુષ્ઠમ્ |  |  |
|---------------------|---|---------|--|--|
| ~ 8                 | राजवृत्तिः  | 1       |  |  |
|                     | े विद्यासमुद्देशे आन्वीक्षिकीस्थापना                | 4       |  |  |
| ` <sup>.</sup> ३    | ,, त्रयीस्थापना                                     | 4       |  |  |
| `*                  | "    वार्तादण्डनीतिस्थापना                          | 5       |  |  |
| ሂ                   | वृद्धसंयोगः   | 6       |  |  |
| Ę                   | इन्द्रियजय:   | 7       |  |  |
| ৬                   | इन्द्रियजये राजिषवृत्तम्                            | 7       |  |  |
| 5                   | अमात्योत्पत्तिः 🗇                                   | 8       |  |  |
| 9                   | मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः                             | 9       |  |  |
| १०                  | <ul> <li>उपधाभिः शौचाशौचज्ञानममात्यानाम्</li> </ul> | 10      |  |  |
| ११                  | गूढपुरुषोत्पत्तौ संस्थोत्पत्तिः                     | 11      |  |  |
| १२                  | ,, सञ्चारोत्पत्तिः                                  | 12      |  |  |
| १३                  | स्वविषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणम्                     | 13      |  |  |
| . <b>१४</b>         | परविषये कृत्याकृत्यपक्षोपग्रहः                      | 14      |  |  |
| १५                  | मन्त्राधिकारः                                       | 16      |  |  |
| १६                  | दूतप्रणिधिः   | 18      |  |  |
| १७                  | राजपुत्नरक्षणम्                                     |         |  |  |
| १८                  | अवरुद्धवृत्तमवरुद्धे च वृत्तिः                      |         |  |  |
| १९                  | राजप्रणिधिः   |         |  |  |
| २०                  | निषान्तप्रणिधिः                                     |         |  |  |
| २ <b>१</b>          | <b>आत्मरक्षितकम्</b>                                | 24      |  |  |
| अ                   | ध्यक्षप्रचारः—द्वितीयमधिकरणम्                       |         |  |  |
| १                   | जनपदनिवेशः  | 26      |  |  |
| २                   | भूमिच्छिद्रविधानम्                                  | 28      |  |  |
| ą                   | ु<br>दुर्गविधानम्                                   |         |  |  |
| 8                   | दुर्गनिवेश:   | 30      |  |  |

| <b>अध्या</b> यसंख्या | विषयावली                                    | पृष्ठम्     |  |  |
|----------------------|---|-------------|--|--|
| ሂ                    | सन्निधातृनिचयकर्म                           | 32          |  |  |
| Ę                    | समाहतृंसमुदयप्रस्थापनम्                     | <b>3</b> 3、 |  |  |
| હ                    | अक्षपटले गाणनिक्याधिकारः                    | 34          |  |  |
| 5                    | समुदयस्य युक्तापहृतस्य प्रत्यानयनम्         | 36          |  |  |
| ९                    | <b>उपयुक्त</b> परीक्षा                      | 37          |  |  |
| १०                   | शासनाधिकार:                                 | 39          |  |  |
| <b>१</b> १           | कोशप्रवेष्यरत्नपरीक्षा                      | 42          |  |  |
| १२                   | आकरकर्मान्तप्रवर्तनम्                       | <b>4</b> 5  |  |  |
| १३                   | अक्षशालायां सुवर्णाध्यक्षः                  | 47          |  |  |
| १४                   | विशिषायां सौवणिकप्रचारः                     | 49          |  |  |
| १५                   | कोष्ठागाराध्यक्षः                           | 52          |  |  |
| १६                   | पण्याध्यक्ष:                                | 54          |  |  |
| <b>१</b> ७           | कुप्याध्यक्षः                               | 55          |  |  |
| १८                   | आयुधागाराघ्यक्ष:                            | 56          |  |  |
| १९                   | तुलामानपौतवम्                               | 57          |  |  |
| २०                   | देशकालमानम्                                 | <b>5</b> 9  |  |  |
| २ <b>१</b>           | शुल्काध्यक्षः                               | 61          |  |  |
| <b>२</b> २           | <b>गुल्काध्यक्षे—-गुल्कव्यवहारः</b>         | 63          |  |  |
| २३                   | सूत्राध्यक्ष:•                              | 63          |  |  |
| २४                   | सीताध्यक्ष:"                                | 64          |  |  |
| २४ .                 | • सुराध्यक्षः                               | 66          |  |  |
| २६                   | .सूनाध्यक्ष:                                | 68          |  |  |
| २७                   | गणिकाध्यक्ष:                                | 69          |  |  |
| २८                   | नावध्यक्षः                                  | 71          |  |  |
| २९                   | गोऽध्यक्षः                                  | 72          |  |  |
| ₹•                   | अश्वाध्यक्ष:                                | 74          |  |  |
| ३१                   | हस्त्यघ्यक्षः                               | 76          |  |  |
| ३२                   | हस्त्यध्यक्षे —हस्निप्रचारः                 | 77          |  |  |
| ३३                   | रथाध्यक्षः, पत्त्यध्यक्षः, सेनापतिप्रचारश्च | 79          |  |  |
| 38                   |   |             |  |  |

| अध्यायसंख्या | विषयावली   | पृष्ठम्    |  |
|--------------|--|------------|--|
| ₹¥           | समाहतृ प्रचारः गृहपतिवैदेहकतापसव्यञ्जनाः         |            |  |
| , ,          | प्रणिधयश्च                                       | 80         |  |
| ३६           | नागरिकप्रणिृधिः                                  | 81         |  |
|              | धर्मस्थीयं—तृतीयमधिकरणंम्                        |            |  |
| १            | व्यवहार <sup>‡</sup> थापना, विवादपदनिबन्धः       | 83         |  |
| २            | विवाहसंयुक्तम्—विवाहधर्मः, स्त्रीधनकल्पः,        |            |  |
|              | आधिवेदनिकम्                                      | 86         |  |
| 3            | "—शुश्रूषाभर्मपारुष्यद्वेषातिचारोप-              |            |  |
|              | कारव्यवहारप्रतिषेधाश्च                           | 88         |  |
| ¥            | ,, —निष्पतनं पथ्यनुसरणं                          |            |  |
|              | ह्रस्वप्रवासः दीर्घप्रवासश्च                     | 8 <b>9</b> |  |
| ¥            | दायविभागः — दायक्रमः                             | 91         |  |
| Ę            | ,, —अंशविभागः                                    | 92         |  |
| ও            | ,, —पुत्रविभागः                                  | 93         |  |
| 5            | वास्तुकम्—मृहवास्तुकम्                           | 95         |  |
| ९            | वास्तुकम्—वास्तुविक्रयः (सीमाविवादः,             |            |  |
|              | क्षेत्र विवादः, मर्यादास्थापनं, वाद्यावाधिक      | म्) 96     |  |
| १०           | वास्तुक्रम्—विवीतक्षेत्रपर्याहसा, समयस्यानपाकर्म | च 97       |  |
| ११           | ऋणादानम्   | 99         |  |
| १२           | उपनिधिकम् •                                      | 101        |  |
| १३           | दासकर्मकरकरपः (दासकल्पः कर्मकरूकल्पे             |            |  |
|              | स्वाम्यधिकारः)                                   | 103        |  |
| १४           | दासकर्मकरकल्पे — भृतकाधिकारः सम्भूयसमुत्थान      | म् 105     |  |
| १५           | विकीतकीतानुशयः                                   | 107        |  |
| <b>१</b> ६   | दत्तस्यानपाकर्मं, अस्वामिविकयः, स्वस्वामिसंबन्धः | 108        |  |
| <b>१</b> ७   | साहसम्   | 109        |  |
| <b>१</b> 5   | वाक्पारुष्यम्                                    | 110        |  |
| १९           | दण्डपारुष्यम्                                    | 111        |  |
| २०           | बूतसमाह्वयं प्रकीणंकानि                          | 113        |  |

# कौटिलीयं अर्थशास्त्रम्

## विनयाधिकारिकं---प्रथमाधिकरणम्

#### ॐ नमश्शुऋवृहस्पतिभ्याम्

पृथिव्या लाभे पालने च यावन्त्यर्थशास्त्राणि पूर्वाचार्येः प्रस्थापितानि प्रायशस्तानि संहत्यैकमिदमर्थशास्त्रं कृतम् । तस्यायं प्रकरणाधिकरणसमुद्देशः---

विद्यासभुद्देशः । वृद्धसंयोगः । इन्द्रियजयः । अमात्योत्पत्तिः । मन्त्रि-पुरोहितोत्पत्तिः । उपधाभिश्शोचाशोचज्ञानममात्यानाम् । गूढपुरुषोत्पत्तिः । गूढपुरुषप्रणिधिः । स्विषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणम् । परिवषये कृत्याकृत्य-पक्षोपग्रहः । मन्त्राधिकारः । दूतप्रणिधिः । राजपुत्तरक्षणम् । अवरुद्धवृत्तम् । अवरुद्धे वृत्तिः । राजप्रणिधिः । निशान्तप्रणिधिः । आत्मरक्षितकम् ॥ इति विनयाधिकारिकं प्रथमाधिकरणम् ॥

जनपदिविनिवेशः । भूमिन्छिद्रविधानम् । दुर्गविधानम् । दुर्गनिवेशः । सिम्नधातृनिचयकमं । समाहतृ समुद्रयप्रस्थापनम् । अक्षपटले गाणिनिक्याधिकारः । समुद्रयस्य युक्तापहृतस्य प्रत्यानयनम् । उप्युक्तपरीक्षा । शासनाधिकारः । कोशप्रवेश्यरत्नपरीक्षा । आकरकर्मान्तप्रवर्तनम् । अक्षशालायां
सुवर्णाध्यक्षः । विशिखायां सौर्वाणकप्रचारः । कोषागाराध्यक्षः । व्यण्याध्यक्षः । कुप्याध्यक्षः । आयुधागाराध्यक्षः । तुलामानपौतव्यम् । देशकालमानम् । शुल्काध्यक्षः । सून्नाध्यक्षः । सीताध्यक्षः । सुराऽध्यक्षः । सूनाध्यक्षः ।
गणिकाऽध्यक्षः । नावध्यक्षः । गोऽध्यकः । अश्वाध्यक्षः । हस्त्यध्यक्षः ।
रथाध्यक्षः । पत्त्यध्यक्षः । सेनापितप्रचारः । मुद्राऽध्यक्षः । विवीताध्यक्षः ।
समाहर्तृ प्रचारः । गृहपितवैदेहकतापसध्यञ्जनाः प्रणिधयः । नागरिकप्रणिधः ।। इत्यध्यक्षप्रचारो द्वितीयमधिकरणम् ।।

व्यवहारस्थापना । विवादपदिनबन्धः । विवाहसंयुक्तम् । दायविभागः । वास्तुकम् । समयस्यानपाकमं । ऋणादानम् । भौपनिधिकम् । दासकर्मकरकल्पः । सम्भूयसमुत्थानम् । विकीतकीतानुशयः । दत्तस्यानपाकर्म । अस्वामिविकयः। स्वस्वामिसम्बन्धः। साहसम्। वाक्पारुष्यम्। दण्डपारुष्यम्। द्यूतसमाह्नयम्। प्रकीर्णकानि।। इति धर्मस्थीयं वृतीयमधिकरणम् ॥

कारुकरक्षणम् । वैदेहकरक्षणम् । उपनिपातप्रतीकारः । गूढाजीविनां रक्षा । सिद्धब्यञ्जनैर्माणवप्रकाशनम् । शङ्कांरूपकर्माभिग्रहः । आशुमृतक-परीक्षा। वाक्यकर्मानुयोगः। सर्वाधिकरणरक्षणम्। एकाङ्गवधनिष्क्रयः। शुद्धित्वत्रश्च दण्डकल्पः । कन्याप्रकर्म । अतिचारदण्डः ।। इति कण्टकणोधनं चतुर्थमधिकरणम् ।

दाण्डकिमकम्। कोशाभिसंहरणम्। भृत्यभरणीयम्। अनुजीविव्तम्। समयाचारिकम्। राज्यप्रतिसन्धानम्। एकैश्वर्यम्। इति योगवृत्तं पच्चममधिकरणम् ॥

प्रकृतिसम्पदः । शमव्यायामिकम् । इति मण्डलयोनिष्पष्ठमधिकरणम् ।।

षाड्गुण्यसमुद्देशः । क्षयस्थानवृद्धिनिश्चयः । संश्रयवृत्तिः । समहीनज्यायसां गुणाभिनिवेशः । हीनसन्धयः । विगृह्यासनम् । सन्धायासनम् । विगृह्य यानम् । सन्धाय यानम् । सम्भूय प्रयाणम् । यातव्यामित्रयोरिभग्रहिचन्ता । क्षयलोभिवरागहेतवः प्रकृतीनाम् । सामवायिकविपरिमर्शः । संहितप्रयाणिकम् । परिपिशतापरिपणितापसृताश्च सन्धयः । द्वैधीभाविकास्सन्धिविक्रमाः । यातव्यवृत्तिः । ' अनुग्राह्यमित्रविशेषाः । मित्रहिरण्यभूमिकमंसन्धयः । पार्षिणग्राहिचन्ता। हीनमित्तिपूरणम्। बलवता विगृह्योपरोधहेतवः। दण्डोपनतवृत्तम्। दण्डोपनायिवत्तम्। सन्धिकमं। सन्धिमोक्षः। मध्यमचरितम्। उदासीनचरितम् । मण्डलचरितम् ।। इति षाडगुण्यं सप्तममधिकरणम् ।।

प्रकृतिव्यसनवर्गः । राजराज्ययोर्ध्यसनिचन्ता । पुरुपव्यसनवर्गः । पीडनवर्गः । स्तम्भवर्गः । कोशसंगवर्गः । वलव्यसनवर्गः । मित्रव्यसनवर्गः ।। इति व्यसनाधिकारिकमण्टममधिकरणम् ॥

शक्तिदेशकालबलाबलज्ञानम् । यात्राकालाः । वलोपादानकालाः सन्नाहगुणाः । प्रतिबलकर्मं । पश्चात्कोपचिन्ता । वाह्याभ्यन्तरप्रकृतिकोप-प्रतीकारः । क्षय-व्ययलाभविपरिमर्शः । बाह्याभ्यन्तराश्चापदः ।। दूष्यशत्नुसंयुक्ताः । अर्थानर्थसंशययुक्ताः । तासामुपायविकल्पजास्सिद्धयः ।। इत्यभियास्यत्कर्मे नवममधिकरणम् ।।

स्कन्धावारिनवेशः । स्कन्धावारप्रयाणम् । बलव्यसनावस्कन्दकालरक्षणम् । कूट्युद्धिविकल्पाः । स्वसैन्योत्साहनम् । स्वबलान्यबलव्यायोगः । युद्धभूमयः । पत्त्यश्वरथहस्तिकर्माणि । पक्षकक्षोरस्यानां बलाग्रतो व्यूहिविभागः । सारफल्गुबलविभागः । पत्त्यश्वरथहस्तियुद्धानि । दण्डभोगमण्डल।संहतव्यूह-व्यूहनम् । तस्य प्रतिव्यूहर्संस्थापनम् ।। इति साङ्गामिकं दशममधिकरणम् ।।

भेदोपादानानि । उपांशुदण्डः ।। इति सङ्घवृत्तमेकादशमधिकरणम् ।।

दूतकर्म । मन्त्रयुद्धम् । सेनामुख्यवधः । मण्डलप्रोत्साहनम् । शस्त्राग्नि-रसप्रणिधयः । विवधासारप्रसारवधः । योगातिसन्धानम् । दण्डातिसन्धानम् । एकविजयः ।। इत्याबलीयसं द्वादशमधिकरणम् ।

उपजायः । योगवामनम् । अपसर्पप्रणिधिः । पयुपासनकर्म । अवमर्दः । लब्धप्रशमनम् ॥ इति दुर्गलम्भोपायस्त्रयोदशमधिकरणम् ॥

परवातप्रयोगः । प्रलम्भनम् । स्वबलोपघातप्रतीकारः । इत्यौपनिषदिकं चतुर्दशमधिकरणम् ॥

तन्त्रयुक्तयः ।। इति तन्त्रयुक्तिः पञ्चदशमधिकरणम् ॥

शास्त्रसमुद्देशः — पञ्चदशाधिकरणानि, सपञ्चाशदध्यायशतं साशीति प्रकरणगतं पट्घलोकसहस्राणीति ॥

सुखग्रहणिवज्ञेयं तत्त्वार्थपदिनिश्चितम् । कौटिल्येन कृतं भास्त्रं विमुक्तग्रन्यविस्तरम् ।। इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे प्रथमोऽक्यायः राजवृक्तिः ।

## १ प्रक. विद्यासमुद्देशः-अान्वीक्षिकीस्थापना।

(ं आन्वीक्षिकी ऋयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः । ) तयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः - तयीविशर्षो ह्यान्वीक्षिकीति । वार्ती दण्डनीतिश्चेति वार्हस्पत्याः-संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्रा-विद इति।

दण्डनीतिरेका विद्येत्यीशनसाः तस्यां वह सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति ।

चतस्र एव विद्या इति कौटिल्यः। ताभिर्धमिथौ यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम ।

/सांख्यं योगो लोकायत चेत्यान्वीक्षिकी ।

धर्माधर्मौ त्रय्याम् । अर्थानथौ वार्तायाम् । नयापनयौ दण्डनीत्याम् । बलाबले चैतासां हेत्भिरन्वीक्षमाणा लोकस्योपकरोति, व्यसनेऽभ्यूदये च वृद्धि-मवस्थापयति, प्रज्ञावाक्यिकयावैशारद्यं च करोति। 🔨

> 🏄 प्रदीपस्सर्वविद्यानामुपायस्सर्वकर्मणाम् । । आश्रयहसर्वधर्माणां मश्रदान्वीक्षिकी मता ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः विद्यासमुद्देशे अन्वीक्षिकीस्थापना ॥

## ·१ प्रक. विद्यासमुद्देशः—त्रयीस्थापना ।

(सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी ।) अथवंवेदेतिहासवेदी च वेदा: । शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दोविचितिज्योनिपमिति चाङ्गानि ।

एष वयीधर्मश्चतुर्णा वर्णानाभागां च स्वधर्मस्थापनादौपकारिकः। स्वधर्मो बाह्मणस्याध्ययनमध्यापनं यजनं याजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति । क्षत्रियस्याध्ययनं यजन दानं कृषिपाशुपाल्ये वणिज्या च। शुद्रस्य द्विजातिशुश्रुषा वार्ता कारकुशीलवकर्म च।

गृहस्यस्य स्वकर्माजीवस्तुल्यैरसमानिषिभर्वेवाह्यमृतुगामित्त्रं देविवित्नतिथि-भूरयेषु त्यागश्रोषभोजन च।

त्रह्मचारिणस्स्वाध्यायोऽग्निकार्याभिषेकौ भैक्षत्रतत्वमाचार्ये प्राणान्तिकी वृत्तिस्तदभावे गुरुपुत्रे सत्रह्मचारिणि वा ।

वानप्रस्थस्य ब्रह्मचर्यभूमौ शय्या जटाऽजिनद्यारणमग्निहोत्नाभिषेकौ देवता-पित्रतिथिपूजा वन्यश्चाहार:।

परिव्राजकस्य संयतेन्द्रियत्वमनारम्भो निष्किञ्चनत्वं सङ्गत्यागो भैक्षमनेकता-रण्यवासो बाह्यमाभ्यन्तरं च शौचम्। सर्वेषामहिसा सत्यं शौचमनसूया-ऽऽनृशस्यं क्षमा च।

स्वधर्मस्स्वर्गायानन्त्याय च। तस्यातिक्रमे लोकस्सङ्करादुच्छिद्येत-

तस्मात्स्वधमं भूतानां राजा न व्यभिचारयेत्। स्वधमं संदधानो हि प्रेत्य चेह च नन्दति।। व्यवस्थितायंमयदिः कृतवणिश्रमस्थितिः। वय्या हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे नृतीयोऽध्यायः विद्यासमुद्देशे तयीस्थापना ॥

## १ प्रक. विद्यासमुद्देशः-वार्ताद्ण्डनीतिस्थापना ।

कृषिपाणुपात्ये वणिज्या च वार्ता धान्यपणुहिरण्यकुप्यविष्टिप्रदांनादौप-कारिकी। तया स्वपक्षं परपक्षं च वशीकरोति कोशदण्डाभ्याम्। • ﴿ (आन्वीक्षिकीव्यीवार्तानां योगक्षेमसाघनो दण्डः ) तस्य नीतिर्दण्डनीति:— अलब्धलाभार्था, लब्धपरिरक्षणी, रक्षितविवर्धनी, वृद्धस्य तीर्थेषु प्रतिपादनी च।

तस्यामायत्ता लोकयाता । दे तस्माल्लोकयातार्थी नित्यमुद्यतदण्डस्स्यात् ।

"न होवंविधं वशोपनयनमस्ति भूतानां वथा दण्डः" इत्याचार्याः ।।
िनेति कौटिल्यः । तीक्ष्णदण्डो हि भूतानामुद्वेजनीयः । मृदुदण्डःपरिभूयते ।
यथाहंदण्डः पूज्यः । सुविज्ञातप्रणीतो हि दण्डः प्रजा धर्मार्थकामैयोंजयित ।
दुष्प्रणीतः कामकोधाभ्यामज्ञानाद्वानप्रस्थपरिवाजकानि कोपयित, किमज्जः
पुनगृंहस्थान् ? अप्रणोतो हि मात्स्यन्यायमुद्भावयित । वलीयानवलं हि
पसते दण्डधरामावे । तेन गुप्तः प्रभवतीति ।।

चत्र्वणिश्रमो लोको राज्ञा दण्डेन पालितः। स्वधर्मकर्माभिरतो वर्तते स्वेषु वेश्मसू ।। इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे चतुर्थोऽध्यायः विद्यासमूहेशे वार्तास्थापना दण्डनीतिस्थापना च। विद्यासमुद्देशस्समाप्तः ॥

#### २ प्रकः वृद्धसंयोगः।

तस्मादण्डमूलास्तिस्रो विद्याः।

विनयमूलो दण्डः प्राणभृतां योगक्षेमावहः ।

कृतकस्खाभाविकश्च विनयः। िक्रया हि द्रव्य विनयति नाद्रव्यम्। शुश्रुषा**श्रव**णग्रहणधारणविज्ञानोहापोहतत्त्वाभिनिविष्टवृद्धिः विद्या विनयति नेनरम् ।

विद्यानां तु यथास्वमाचार्यप्रामाण्याद्विनयो नियमश्च । वृत्तचौलकर्मा लिपि सङ्ख्यानं चोपयुञ्जीत ।

वृत्तोपनयनस्त्रयीमान्वाक्षकीं च शिष्टेभ्य:, बार्तामध्यक्षेभ्य: दण्डनीति वक्तृप्रयोक्तृभ्यः।

ब्रह्मचर्यं चाषोडशाद्वर्षात् । अतो गोदानं दारकमं च। अस्य नित्यश्च विद्याबृद्धसंयोगो विनयवृद्धचर्थं, तन्मूलत्वाद्विनयस्य ।

पूर्वमहर्भागं हस्त्यश्वरथप्रहरणविद्यासु विनयं गच्छेत्। पश्चिममितिहास-श्रवणे । पुराणमितिवृत्तमाख्यायिकोदाहरणं धर्मशास्त्रमर्थशास्त्रं चेतीतिहासः ।

शेपर्महोरावभागमपूर्वग्रहणं गृहीतपरिचयं च कुर्यात्। अगृहीताना-मामीक्ष्यश्रवणं च ।

श्रुताद्धि प्रज्ञोपजायते, प्रज्ञया योगो, योगांदात्मबत्तेति विद्यासामध्यंम् विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां विनये रतः। अनन्यां पृथिवीं भुङ्क्ते सर्वभूतहिते रतः ॥ इति कौदिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे पञ्चमोऽध्यायः वृद्धसंयोगः।

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> बर्त्मसू इति पाठान्तरम् ।

### ३ प्रक. इन्द्रियजयः।

िवद्याविनयहेतुरिन्द्रियजयः कामक्रोधलोभमानमदहर्षत्यागास्कार्यः । कर्ण-त्वगक्षिजिह्वाद्र्याणेन्द्रियाणां भव्दस्पर्शरूपरसगन्धेष्वविप्रतिपत्ति शिन्द्रयजयः, शास्त्रार्थानुष्ठानं वा । कृत्स्नं हि शास्त्रमिदमिन्द्रियलयः । ७ र्प अ

तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽिप राजा सद्यो विनम्यति—यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामात् ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमानस्सबन्धुराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः ।

कोपाज्जनमेजयो त्राह्मणेषु विकान्तः, तालजङ्घश्च भृगुषु । लोभादैलश्चातु-वंण्यंमत्याहारयमाणः, सौवीरश्चाजविन्दुः । मानाद् रावणः परदारानप्रयच्छन् दुर्योद्यनो राज्यादशं च । मदाइइम्भोद्भवो भूतावमानी, हैहयश्चार्जुनः । हर्षद्वातापिरगस्त्यमत्यासादयन्, वृष्णिसङ्घश्च द्वैपायनिमिति ।

एते चान्ये च बहवः शतुषड्वर्गमाश्रिताः । ( सबन्धुराष्ट्रा राजानो विनेशुरजितेन्द्रियाः ॥ शतुषड्वर्गमुत्सृष्य जामदग्न्यो जितेन्द्रियः । \ अम्बरीषश्व नाभागो बुभुजाते चिरं महीम् ॥ «

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे विष्ठोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिष्टबर्गत्यागः।

तस्मादरिषड्वर्गत्यागेनेन्द्रियजयं कुर्वीत । वृद्धसंयोगेन प्रज्ञाम्, चारेण चक्षुः, उत्थानेन योगक्षेमसाधनम्, कार्यानुशासनेन स्वधर्मस्थापनं, विनयं विद्योपदेशेन, लोकप्रियत्वमर्थसंयोगेन, हितेन वृत्तिम् ।

एवं वश्येन्द्रियः परस्त्रीद्रव्यहिसाश्च वर्जयेत्, स्वप्नं लौल्यमनृतमुद्धत-वेषत्वमनर्थसंबोगं च । अधर्मसंयुक्तमनर्थसंयुक्तं च व्यवहारम् ।

धर्मार्थाविरोधेन कामं सेवेत । न निम्सुलस्स्यात् । समं बा तिवर्ग-भन्योन्यानुबन्धम् । एको ह्यत्यासेवितो धर्मार्थकामानामात्मानमितरौ च पीडयति । अर्थ एव प्रधान इति कौटिल्यः— अर्थमूलौ हि धर्मकामाविति ।

मर्यादा स्थापयेदाचार्यानमात्यान् वा । य एनमपायस्थानेभ्यो वारयेयुः, छायानालिकाप्रतोदेन वा रहसि प्रमाद्यन्तमिष्रतुदेयुः ॥

सहायसाध्यं राजत्वं चक्रमेकं न वर्तते। कुर्वीत सचिवांस्तस्मात्तेषां च शृण्यान्मतम् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे सप्तमोऽध्यायः इन्द्रियजये राजिषवृत्तम् । इन्द्रियजयस्समाप्तः ।

#### ४ प्रक. अमात्योत्पत्तिः।

सहाध्यायिनोऽमात्यान् कुर्वीत दृष्टशौचसामध्यंत्वाद् इति भरद्वाजः । ते ह्यस्य विश्वास्याः भवन्तीति ॥

नेति विशालाक्षः । सहक्रीडितत्वात् परिभवन्त्येनम् । ये ह्यस्य गृह्य-सधर्माणस्तानमात्यान् कुर्वीत -समानशीलव्यसनत्वात्, ते ह्यस्य मर्मज्ञ-भयान्नापराध्यन्तीति ।

साघारण एष दोषः इति पराशरः-तेषामपि मर्मज्ञभयात्कृतात्कृता-न्यनुवर्तेत ।

> यावद्भचो गृह्यमाचष्टे जनेभ्यः पुरुषाधिपः । अवशः कर्मणा तेन वश्यी भवति तावताम् ॥

य एनमापत्सु प्राणावाधयुक्तास्वनुगृह्णीयुस्तानमात्यान् कुर्वीत । दृष्टानु रागत्वादिति ।

नेति विशुनः — भक्तिरेर्षा न बुद्धिगुणः । सङ्ख्यातार्थेषु कर्मसु नियुक्ता ये यथाऽऽदिष्टमर्थं सविशेषं वा कुर्युस्तानमात्यान् कुर्वीत, दृष्टगुणत्वादिति ।

नेति कौुणपदन्तः — अन्येरमात्यगुणैरयुक्ता ह्येते । पितृपैतामहानमात्यान् कुर्बीत, दृष्टाप्रदानत्वात् । ते ह्येनमपचरन्तमपि न त्यजन्ति सगन्धत्वात् । अमानुषेष्विप चैतत् दृश्यते---गावो ह्यसगन्धं गोगणमतिक्रम्य सगन्धेष्वेवाव-तिष्ठन्ते इति ॥

नेति वातव्याधिः। ते ह्यस्य सर्वेमवगृह्य स्वामिवत्त्रचरन्तोति। तस्मान्नीतिविदो नवानमात्यान् कुर्वीत । नवास्तु यमस्थाने दण्डश्वरं मन्यमाना नापराध्यन्तीति ।

नेति बाहुदन्तीपुतः---शास्त्रविददृष्टकर्मा कर्मसु विषादं अभिजनप्रज्ञाशीचशीर्यान् रागयुक्तानमात्यान् कूर्वीत्, गुणप्राधान्यादिति ।

सर्वेमुपपन्नमिति कौटिल्यः-कार्यसामध्यादि पुरुषसामध्यं कल्प्यते । सामध्यंतश्च-

> विभज्यामात्यविभवं देशकाली च कर्म च। अमात्यास्सवं एवते कार्यास्स्युर्ने तु मन्द्रिणः ॥ इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे अष्टमोऽध्यायः अमात्योत्पत्तिः ।

#### ५ प्रक. मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः।

जानपदोऽभिजातः स्ववग्रहः कृतशिल्पश्चक्षुष्मान् प्राज्ञो धारयिष्ण्दंक्षो वाग्मी प्रगल्भः प्रतिपत्तिमानुत्साहप्रभावयुक्तः क्लेशसहश्शुचिमँती भक्तिश्शीलबलारोग्यसत्त्वसंयुक्तः स्तम्भचापत्यवजितस्संप्रियो मकर्तेत्यमात्यसम्पत् ।

अतः पादार्घगुणहीनो मध्यमावरी ।

चाप्यतः परीक्षेत--समानविद्येभ्यः जनपदमवग्रहं शास्त्रचक्षुष्मत्तांच; कर्भारभ्येषु प्रज्ञां धारयिष्णुतां दाक्ष्यं च; कथायोगेषु बाग्मित्वं प्रागलभ्यं प्रतिभानवत्त्वं च ; आपद्युत्ताहप्रभावौ क्लेशसहत्वं च ; संव्यवहाराच्छोचं मैत्रतां दढ्भक्तित्वं च ; संवासिभ्यश्शीलबलारोग्यसत्त्व-योगमस्तम्भमचापल्यं च ; प्रत्यक्षतः संप्रियत्वमचैरित्वं च ।

प्रत्यक्षपरोक्षानुमेया हि राजवृत्तिः। स्वयं दृष्टं प्रत्यक्षम्, परोपदिष्टं परोक्षम् । कर्ममु कृतेनाकृतावेक्षणमनुमेयम् ॥

यौगपद्यात् कर्मणामनेकस्यादनेकस्यत्वाच्य देशकालात्ययो मा भूत इति परोक्षममात्यैः कारयेदित्यमात्यकर्म ।

पुरोहितम्दितोदितकुलशीलं षडङ्गं वेदे देवे निमित्ते दण्डनीत्यां च अभिविनीतमापदां दैवमानुषीणां अथवंभिरुपायैश्य प्रतिकर्तारं कुर्वीत । तमाचार्यं शिष्यः पितरं पुत्रो भृत्यस्स्वामिनमिव चानुवर्तेत ।

> वाह्मणेनेधितं क्षतं मन्त्रिमन्त्राभिमन्त्रितम्। जयत्यजितमत्यन्तं शास्त्रानुगमशस्त्रितम् ॥ इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे

नवमोऽध्यायः मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः।

#### ६ प्रक. उपधाभिश्शोचाशोचज्ञानममात्यानाम् ।

मन्त्रिपुरोहितसखस्सामान्येष्वधिकरणेषु स्थापयित्वाऽमात्यानुपद्याभि-श्शोचयेत्।

पुरोहितमयाज्ययाजनाध्यापने नियुक्तममृष्यमाणं राजा अवक्षिपेत्। स सितिभिक्शपथपूर्वमेकैकममात्यमूपजापयेतु -- अधामिकोऽयं राजा, साधु धामिक-मन्यमस्य तत्कुलीनमवरुद्धं कुल्यमेकप्रग्रहं सामन्तमाटविकमीपपादिकं वा प्रति-पादयामः । सर्वेषामेतद्रोचते, कथं वा तवेति । प्रत्याख्याने श्रचिरिति धर्मोपधा ।

सेनापतिरसत्प्रग्रहेणावक्षिप्तस्सिविभरेकैकममात्यमूपजापयेल्लोभनीयेनार्थेन राजविनाशनाय सर्वेषामेतद्रोचते. कथं वा तवेति। प्रत्याख्याने श्रचि-रित्यर्थोवभा ।

परिवाजिका लब्धविश्वासाऽन्तःपुरे कृतसत्कारा महामात्रमेकैकमुपजपेत्-राजमहिषी त्वां कामयते कृतसमागमोपाया। महानर्थश्च भविष्यतीति। व्रत्याख्याने श्चिरिति कामोपधा।

प्रवहणनिमित्तमेकोऽमात्यः सर्वानमात्यानावाहयेतु । तेनोद्वेगेन राजा ता-नवरुन्ध्यात् । कापटिकच्छातः पूर्वावरुद्धस्तेषामर्थमानावक्षिप्तमेकैकममात्य-मुपजपेतु - असत्प्रवत्तोऽयं राजा, साध्वेनं हत्वा अन्यं प्रतिपादयिष्मामः। सर्वेषामेतद्रोचते, कथं वा तवेति । प्रत्याख्याने गुचिरिति भयोपधा ।

तत्र धर्मोपधाशुद्धान धर्मस्थीयकण्टकशोधनेषु स्थापयेत । अर्थोपघाणुद्धान् समाहत् सिन्निधात्निचयकर्मस् । कामोपधागुद्धान् वाह्याभ्धन्तरविहाररक्षास् ।

भयोपधाशुद्धानासन्नकार्येषु राजः। सर्वोपधाशुद्धान् मन्त्रिणः क्रयति। सर्वताण्चीन् खनिद्वव्यहस्तिवनकमन्तिष्पयोजयेत्।

> विवर्गभयसंगुद्धानमात्यान्स्वेषु कर्मसु । अधिकुर्याद्यथाशौचिमत्याचार्या व्यवस्थिताः ॥ न त्वेव कूर्यादात्मानं देवीं वा लक्ष्मीक्वरः । शौचहेतोरमात्यानामैतत्कौटिल्यदर्शनम ॥ न दूषणमदुष्टस्य विषेणेवाम्भसश्चरेत्। कदाचिद्धि प्रदूष्टस्य नाधिगम्येत भेषजम् ॥ कृता च कलुषा बुद्धिरपधामिश्चतुर्विधा । नागत्वाऽन्तर्निवर्तेत स्थितात्त्रसांतवव धती ॥

तस्माद्वाह्यमधिष्ठानं कृत्वा चार्ये चतुर्विधे । शोचाशौचममात्यानां राजा मार्गेत सविभिः ।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे दशमोऽध्यायः उपधाभिश्शीचाशीचज्ञानममात्यानां ।

## ७ प्रक. गूढपुरुषोत्पत्तिः।

उपधाभिष्णुद्धामात्यवर्गो गूढपुरुषानुत्पादयेत् कापटिकोदास्थितगृहपतिक-वेदेहकतागसव्यञ्जनान् सित्ततीक्ष्णरसदिभिक्षुकीश्च ।

परमर्गज्ञः प्रगल्भः छातः कापिटकः। तमर्थमानाभ्यामुत्साह्य मन्ती ब्रूयात्—राजानं मां च प्रमाणं कृत्वा यस्य यदकुशलं पश्यसि तत्तदानीमेव प्रत्यादिशेति।

प्रव्रज्याप्रत्यविसतः प्रज्ञाशीचयुक्त उदास्थितः। स वार्ताकर्मप्रदिष्टायां भूभी प्रभूतिहरण्यान्तेवासा कर्मं कारयेत्। कर्मफलाच्च सर्वप्रव्रजितानां ग्रासाच्छादनावसथान् प्रतिविद्यात्। वृत्तिकामांश्चोपजपेत्—एतेनैव वेषेण राजार्थश्चरितन्यो भक्तवेतनकाले चोपस्थातन्यमिति।

सर्वेप्रवाजिताश्च स्वं स्वं वर्गमुपजपेयुः ।

कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः। स कृषिकर्म-प्रदिष्टायां भूमाविति—समानं पूर्वेण ।

वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो वैदेहकव्यञ्जनः । स वण्क्क्मं-प्रदिष्टायां भूमाविति – समानं पूर्वेण ।

मुण्डो जिंटलो वा वृत्तिकामस्तापसव्यञ्जनः । स नगराभ्याशे प्रभूतमुण्ड-जिंटलान्तेवासी शाकं यवसमुष्टि वा मासद्विमासान्तरं प्रकाशमन्नीयात्, गूढ-मिष्टमाहारम् । वैदेहकान्तेवासिनद्द्येनं सिमद्धयोगेर्च्येयुः । शिष्याश्चास्या-वेदयेयुः—"असौ सिद्धस्सामेधिकः" इति । समेधाशस्तिभिश्चाभिगताना-मञ्जविद्यया शिष्यसंज्ञाभिश्च कर्माण्यभिजनेऽवसितान्यादिशेदल्पलाभमग्निदाहं चोरमयं दूष्यवधं तुष्टदानं विदेशप्रवृत्तिज्ञानं "इदमद्यश्चो वा भविष्यतीदं वा राजा करिष्यती"ति ।

तदस्य गूढास्सिवणश्च संवादयेयुः।

सत्वप्रज्ञावाक्यशक्तिसम्पन्नानां राजभाव्यमनुव्याहरेत् मन्त्रिसंयोगं च। मन्त्री चैषां वृत्तिकमैंभ्यां वियतेत । ये च कारणादिभक्रद्धास्तानथैमानाभ्यां शमयेत्, अकारणकुद्धान् तुष्णीं दण्डेन राजद्विष्टकारिणश्च ।

पूजिता आर्थमानाभ्यां राज्ञा राजोपजीविनाम्। जानीयुः शौचमित्येताः पञ्च संस्थाः प्रकीर्तिताः ॥

> इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे एकादशोऽध्यायः गृढ्पुरुषोत्पत्ती भंस्थोत्पत्तिः ।

## 🗕 प्रक. गूढपुरुषप्रणिधिः ।

ये चास्य सम्बन्धिनोऽवश्यभर्तव्यास्ते लक्षणमङ्गविद्यां जम्भकविद्यां मायागतमाश्रमधर्मं निमित्तमन्तरचक्रभित्यधीयानाः सित्रणस्संसगेविद्या वा ।

ये जनपदे शूरास्त्यक्तात्मानो हस्तिनं व्यालं वा द्रव्यहेतोः प्रतियोधयेयुस्ते तीक्ष्णाः ।

ये बन्धुषु निस्नेहाः क्राभ्रालसाश्च ते रसदाः।

परिवाजिका वृत्तिकामा दरिद्रा विधवा प्रगल्भा बाह्यण्यन्तःपुरे कृत-सत्कारा महामात्रकूलान्यधिगच्छेत्। एतया मुण्डावृषस्यो व्याख्याताः। इति सञ्चाराः।

तान् राजा स्वविषये मन्त्रिपुरोहितसेनापतियुवराजदीवारिकान्तर्वशिक-प्रशास्त्रममाहत्सिधातप्रदेष्ट्नाय (गरि?) क्योरव्यावहारिककार्मान्तिक-मन्त्रिपरिषदध्यक्षदण्डदुर्गान्तपालाटविकेषु श्रद्धेयदेशवेषशिल्पभाषाभिजनापदेशान भक्तितस्सामथ्यंयोगाच्चापसपंयेत् ।

तेषां बाह्यं चारं छत्रभृङ्गारव्यजनपादुकासनयानवाहनोपग्राहिणः तीश्णा तं सि्तणः संस्थास्वपंयेयुः ।

सुदारालिकस्नापकसंवाहकास्तरककल्पकप्रसाधकोदकपरिचारका कुञ्जवामनिकरातमूकविधरजडान्धच्छयानो नटनतंकगायनवादकवाग्जीवनकुशी-लवाः स्त्रियश्वाभ्यन्तरं चारं विद्युः । तं भिक्षुक्यः संस्थास्वर्पयेयुः ।

संस्थानामन्तेवासिनः संज्ञालिपिभिश्चारसञ्जारं कुर्युः । न चान्योन्यं संस्थास्ते वा विद्युः।

भिक्षुकीप्रतिषेधे द्वास्स्थपरम्परा मातापितृव्यञ्जनाः, शिल्पकारिकाः कुशीलवा दास्यो वा गीतपाठचवाद्यभाण्डगूढलेख्यसंज्ञाभिर्वा चारं निहंरेयुः । दीर्घरोगोन्मादाग्निरसविसर्गेण वा गूढनिर्गमनम् ।

त्रयाणामेकवाक्ये सम्प्रत्ययः। तेषामभीक्ष्णविनिपाते तूप्णीदण्डः प्रति -षेघो वा।

कण्टकशोधनोक्ताश्चापसर्पाः परेषु कृतवेतना वसेयुः । सम्पातनिश्चारार्थं, त उभपवेतनाः ।

गृहीतपुत्रदारांश्च कुर्यादुभयवेतनान् ।
तांश्चारिप्रहितान् विद्यात्तेषां शौचं च तिद्वधैः ॥
एवं शतौ च मित्रे च मध्यमे चावपेच्चरान् ।
उदासीने च तेषां च तीर्थेष्वष्टादशस्विष ॥
अन्तगृंहचरास्तेषां कुञ्जवामनषण्डकाः ।
शिल्पवत्यः स्त्रियो मूकाश्चित्राश्च म्लेच्छजातयः ॥
दुर्गेषु विणजस्संस्था, दुर्गान्ते सिद्धतापसाः ।
कषंकोदास्थिता राष्ट्रे राद्रान्ते व्रजवासिनः ॥
वने वनचराः कार्याश्वभमणाटविकादयः ॥
परप्रवृत्तिज्ञानार्थाः शीद्राश्चारपरम्पराः ॥
परस्य चैते बोद्धव्याः तादृशेरेव तादृशाः ।
चारसःचारिणस्संस्था गृढाश्चागृढसंज्ञिता ॥
अकृत्यान् कृत्यपक्षीयैः दिश्वतान् कार्यहेतुभिः ।
परापसर्यंज्ञानार्थं मुख्यानन्तेषु वासयेत् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे द्वादशोऽध्यायः गूढपुरुषोत्पत्तौ सन्दारोत्पत्तिः गूढपुरुषप्रणिधिः

# 🗼 ६ प्रक. स्वविषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणम्।

कृतमहामात्यापसपं: पौरजानपदानपसपंयेत् । सितणो द्वित्वद्वनस्तीर्थसभागालापूगजनसमवायेषु विवादं कुर्युः— "सवंगुण-सम्पन्नश्रायं राजा श्रूयते । न चास्य कश्चित् गुणो दृश्यते, यः पौरजानपदान् दण्डकराभ्यां पौडयति" इति ।

तव येऽनुप्रसंशेयुः तानितरस्तं च प्रतिषेधयेत् --- "मात्स्यन्यायाभिभूताः प्रजा मनुं वैवस्वतं राजानं चिकरे। धान्यषड्भागं पण्यदशभागं हिरण्यं चास्य भागधेयं प्रकल्पयामासुः । तेन भृता राजानः प्रजानां योगक्षेमवहाः । तेषां किल्बिषं दण्डकरा हरन्ति, यो योगक्षेमवहाश्च प्रजानाम् । तस्मादुञ्छषड्भाग-मारण्यका अपि निवपन्ति —"तस्यैतःद्भागध्यं योऽस्मान् गोपायती"ति । इन्द्रयमस्थानमेतत् राजानः प्रत्यक्षहेडप्रसादाः। तानवमन्यमानान् दैवोऽपि दण्डः स्पृशति । तस्माद्राजानो नावमन्तव्याः" इति क्षुद्रकान् प्रतिषेधयेत् ।

किंवदन्तीं च विद्युः।

ये चास्य धान्यपशुहिरण्यान्याजीवन्ति, तैरुपकुर्वेन्ति, व्यसने अभ्युदये वा ; कुपितं बन्धुं राष्ट्रं वा व्यावर्तयन्त्यमित्रमाटविकं वा प्रतिषेधयन्ति, तेषां मुण्ड-जटिलब्यञ्जनास्तुष्टातुष्टत्वं विद्युः ।

तुब्टान् भूयः पूजयेत् । अतुब्टान् तुब्टिहेतोस्त्यागेन साम्ना च प्रसादयेत् । परस्पराद्वा भेदयेदेनान् सामन्ताटविकतत्कुलीनावरुद्धेभ्यश्च । तथाऽप्यतुष्यतो दण्डकरसाधनाधिकारेण वा जनपदिवद्वेषं ग्राहयेत् । विद्विष्टानुषांशुदण्डेन जन-पदकोपेन वा साधयेत्। गुप्तयुत्रदारानाकरकर्मान्तेषु वा वासयेत् परेषा-मास्पदभयात्।

ऋुद्धलुद्धभीतावमानिनस्तु परेथां कृत्याः । तेषां कार्तान्तिकनैमितिकमौ-हूर्तिकव्यञ्जनाः परस्पराभिसम्बन्धं अमित्नप्रतिसम्बन्धं वा विद्युः ।

तुष्टानर्थमानाभ्यां पूजयेत् । अतुष्टान् सामदानभेददण्डैस्साधयेत् ।

एवं स्वविषये कृत्यानकृत्यांश्च विचक्षणः। परोपजापात्संरक्षेत् प्रधानान् क्षुद्रकानपि ॥

ू इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणं व्रयोदशोऽध्यायः स्वविषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणं ।

## १० प्रक. परविषये कृत्याकृत्यपक्षीपप्रहः।

कृत्याकृत्यवक्षांपग्रह्स्स्विपये व्याख्यातः । परविषये वाच्यः । संश्रुत्यार्थान् विप्रतब्धः, तुल्यकारिणोशिल्पे वोपकारे वा विमानितः, बल्लभावरुद्धः, समाहूय पराजितः, प्रवासीपतप्तः, कृत्वा व्ययमलब्धकार्यः

स्वधर्माद्दायाद्याद्वोपरुद्धः मानाधिकाराभ्यां भ्रष्टः, कुल्यैरन्तर्हितः, प्रसभाभि-मृष्टस्त्रीकः, काराभिन्यस्तः, परोक्तदण्डितः, मिथ्याचारवारितः, सर्वस्वमाहारितः, बन्धनपरिन्तिष्टः, प्रवासितबन्धुरिति कृद्धवर्गः।

स्वयमुपहतः, विश्वकृतः, पापकर्माभिख्यातः, तुल्यदोपदण्डेनोद्विग्नः, पर्यात्तभूमिः, दण्डेनोपनतः, सर्वाधिकॅरणस्थः, सहसोपचितार्थः, तत्कुलीनोपाशंसुः, प्रद्विष्टो राज्ञा, राजद्वेषी चेति भीतवर्गः।

परिक्षीणोऽत्यात्तस्वः कदर्यो व्यसन्यत्याहितव्यवहारक्चेति लुट्यवर्गः ।

आत्मसम्भावितो मानकामः शत्रुपूजामिवतो नीचैरुपहितस्तीक्ष्णस्साहसिको भोगेनासन्तुष्ट इति मानिवर्गः।

तेषां मुण्डजटिलव्यञ्जनैयों यद्भक्तिः कृत्यपक्षीयस्तं तेनोपजापयेत्—"यथा मदान्धो हस्ती मत्तेनाधिष्ठितो यद्यदासादयित तत्सवं प्रमृद्रात्येवमयमशास्त्रचक्षुरन्धो राजा पौरजानपदवधायाभ्युत्थितः। शक्यमस्य प्रतिहस्तिप्रोत्साहनेनापकर्तुम्, अमर्षः क्रियताम्" इति क्रुद्धवर्गमुपजापयेत्।

"यथा लीनस्सर्पो यस्माद्भयं पश्यति तत्र विषमुत्सृजत्येवमयं राजा जातदोषाशङ्कस्त्वयि पुरा क्रोधविषमुत्सृजत्यन्यत्र गम्यताम्" इति भीतवर्ग-मुपजापयेत् ।

"यथाश्वर्गणिनां धेनुकश्वभ्यो दुग्धे न ब्राह्मणेभ्य एवमयं राजा सत्त्वप्रज्ञा-वात्रयशक्तिहीनेभ्यो दुग्धे नात्मगुणसम्पन्नेभ्यः । असौ राजा पुरुपविशेषज्ञस्से-व्यता"मिति लुब्धवर्गमुपजापयेत् ।

"यथा चण्डालोदपानश्चण्डालानामेवोपभोग्यो नान्येषामेवमयं राजा नीचो नीचानामेवोपभोग्यो न त्वद्विधानामार्याणाम् । असौ राजा पुरुषविशेषज्ञः तत्न गम्यता"मिति मानिवर्गमुपजापयेत् ।

> तथेति प्रतिपन्नांस्तान् संहितान् पणकर्मणा । योजयेत यथाशक्ति सापसर्पान् स्वकर्मसु ॥ लभेत सामदानाभ्यां कृत्याश्च परभूमिषु । सकृत्यान् भेददण्डाभ्यां परदोषांश्च दर्शयेत् ॥

इति कीटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिक।रिके प्रथमाधिकरणे चतुर्दशीऽध्यायः परविषये कृत्याकृत्यपक्षोपग्रहः ।

#### ११ प्रक. मन्त्राधिकारः।

कृतस्वपक्षपरपक्षोपग्रहः कार्यारम्भान् चिन्तयेत् । मन्त्रपूर्वस्सर्वारम्भाः । तदुदेशः संवृतः कथानामनिःस्रावी पक्षिभिरप्यनालोक्यस्स्यात । श्रुयते हि शुकशारिकाभिः मन्त्रां भिन्नइश्वभिरन्यश्च तिर्यग्योनिभिः।

तस्मान्मत्रोद्देशमनायुक्तो नोपगच्छेत् । उच्छिद्येत मन्त्रभेदी ।

मन्त्रभेदो हि दूतामात्यस्वामिनामिङ्गितांकाराभ्याम् । इङ्गितमन्यथा-वृत्ति:। अकितग्रहणमाकार:।

तस्य संवरणं आयुक्तपृरुषरक्षणमाकार्यकालादिति । तेषां हि प्रमाद-मदसुप्तप्रलापकामादिरुत्सेकः प्रच्छन्नोऽवमतो वा मन्त्रं भिनत्ति। तस्माद्रक्षेन्मन्त्रम् ।

मन्त्रभेदोह्ययोगक्षेमकरो राज्ञस्तदायुक्तपुरुषाणां च । तस्मात् — "गृह्यमेको मन्त्रगेते"ति भारद्वाजः । मन्त्रिणामपि हि मन्त्रिणो भवन्ति । तेषामप्यन्ये । सैषा मन्त्रिपरम्परा मन्त्रं भिनत्ति ।

> तस्मान्नास्य परे विद्युः कर्म किन्दिच्चिकीर्षितम्। **आर**ब्धारस्तु जानीयुरारब्धं कृतमेव वा !।

"नैकस्य मन्त्रसिद्धिरस्ती"ति विशालाक्षः। प्रत्यक्षपरोक्षानुमेया हि राजवृत्तिः। (अनुपलब्धस्य जानमुपलब्धस्य निश्चयबलाधानमर्थद्वैधस्य संशय-च्छेदनमेकदेशदुष्टस्य शेषोपलव्धिरिति मन्त्रिसाध्यमेतत्। तस्माद्बुद्धिवृद्धैः सार्धमासीत मन्त्रम् ॥)

> न किञ्चदवमन्येत सर्वस्य शृण्यान्मतम् । बालस्याप्यथंबद्वाक्यमुपयुञ्जीत पण्डितः ॥

"एतन्मन्त्रज्ञानं नैतन्मन्तरक्षण"मिति पराशरः। यदस्य कार्यमभिप्रेतं तत्प्रतिरूपकं मन्त्रिणः पुच्छेत्। 'कार्यमिदमेवमासीदेवं वा यदि भवेत्तत्कथं कर्तव्यमिति' । ते यथा ब्र्युः तत्कुर्यात् । एवं मन्त्रोपलब्धिः संवृतिश्च भवतीति ।

"न" इति पिश्रनः । मन्त्रिणो हि व्यवहितमर्थं वृत्तमवृत्तं वा पृष्टमनादरेण ब्रवन्ति प्रकाणयन्ति वा। सदोषः। तस्मात्कर्मेसु ये येष्वभिप्रेतास्तैस्सह मन्त्रयेत् । तैर्मन्त्रयमाणो हि मन्त्रबुद्धि गुप्ति च लभत इति ॥

"न" इति कौटिल्यः । अनबस्था ह्योषा । मन्त्रिभिस्त्रिभिश्वतुर्भिर्वा सह मन्त्रयेत । मन्त्रयमाणो ह्येकेनार्थक्रच्छ्रेषु निश्चयं नाधिगच्छेत् । एकश्च मन्त्री यथेष्टमनवग्रहश्चरति । द्वाभ्यां मन्त्रयमाणो द्वाभ्यां संहताभ्यामवगृह्यते । विगृहीताभ्यां विनाश्यते । तिषु चनुर्षु वा नैकान्तं कुच्छे णोपपद्यते महादोषम । उपपभं तु भवति । ततः परेषु कृच्छ्रेणार्थंनिश्चयो गम्यते, मन्त्रो वा रक्ष्यते ।

देशकालकार्यवशेन त्वेकेन सह द्वाभ्यामेको वा यथासामर्थ्यं मन्त्रयेत ।

कर्मणामारम्भोपायः, पुरुषद्रव्यसम्पत्, देशकालविभागः, विनिपातप्रतीकारः, कार्यसिद्धिरिति पञ्चाङ्को मन्तः। तानेकैकशः पृच्छेत् समस्ताश्च। हेतुभिश्चैषां मतिप्रविवेकान् विद्यात्। अवाप्तार्थः कालं नातिकामयेत्। न दीर्घकालं मन्त्रयेत न च तेषां पक्ष्यैयेषां अपकुर्यात्।

"मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान्क् वीते"ति मानवाः ।

''षोडशो''ति बाईस्पत्याः ।

''विशतिम्'' इत्यौशनसाः ।

"यथासामर्थ्यम्" इति कौटिल्यः ।

ते ह्यस्य स्वपक्षं परपक्षं च चिन्तयेयुः । अकृतारम्भमारब्धानुष्ठानमनु-ष्ठितिविशेषं नियोगसम्पदं च कर्मणां कुर्युः । आसन्नैस्सह कार्याणि पश्येत् । अनासन्नैस्सह पत्नसम्त्रेषणेन मन्त्रयेत । इन्द्रस्य हि मन्त्रिपरिषदृषीणां सहस्रम् । स तच्चक्षुः । तस्मादिमं द्वचक्षं सहस्राक्षमाहुः ।

आत्यियके कार्ये मन्त्रिणो मन्त्रिपरिषदं चाह्य ब्रूयात् । तत्र यक्क्रूयिष्ठाः कार्यसिद्धिकरं वा ब्रुयस्तत्कुर्यात् कुर्वतश्च—

नास्य गुह्यं परे विद्युः छिद्रं विद्यात्परस्य च ।
गूहेत्कूमं इवाङ्गानि यत्स्याद्विवृतमात्मनः ॥
यथा ह्यश्रोतियः श्राद्धं न सत्तां भोक्तुमृहंति ।
एवमश्रुतशास्त्रार्थो न मन्त्रं श्रोतुमृहंति ॥
इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे

पञ्चदशोऽह्यायः मन्त्राधिकारः।

## १२ प्रक. दूतप्रणिधिः।

उद्धृतमन्त्रो दूतप्रणिधिः । अमात्यसम्पदोपेतो निसृष्टार्थः । पादगुणहीनः परिमितार्थः । अर्धगुणहीनः शासनहरः ॥

सुप्रतिविहितयानवाहनपुरुषपरिवापः प्रतिष्ठेत । "शासनमेवं वाच्यः परस्य वक्षरयेवं तस्येदं प्रतिवाक्यमेवमतिसन्धातन्यम्" इत्यधीयानो गच्छेत्। अटब्यन्तःपालपुरराष्ट्रमुख्यैश्च प्रतिसंसर्ग गच्छेत् । अनीकस्थानयुद्धप्रतिग्रहाप-सारभूमीरात्मनः परस्य चावेक्षेत । दुर्गराष्ट्रप्रमाणं सारवृत्तिगृप्तिच्छिद्राणि चोपलभेत । पराधिष्ठानमनुज्ञातः प्रविशेत् । शासनं च यथोक्तं ब्र्यात् प्राणावाधेऽपि दृष्टे । परस्य वाचि वक्ते दृष्ट्यां च प्रसादं वाक्यपूजनिमण्ट-परिप्रश्नं गुणकथासङ्गमासन्नमासनं सत्कारमिष्टेष् स्मरणं विश्वासगमनं च लक्षयेत्तुष्टस्य, विपरीतमतुष्टस्य । तं ब्रूयात—"दूतमुखा वै राजानस्त्वं चान्ये च ! तस्मादुद्धृतेष्विप शस्त्रेषु यथोक्तः वक्तारस्तेषामन्तावसायिनोऽप्यवध्याः। किम क्र पुनर्जाह्मणः । परस्यैतद्वान्यमेष दूतधर्मः "इति ।

वसेदविसृष्टः प्रपूजया नोत्सिक्तः। परेषु वलित्वं न मन्येत। वाक्य-मनिष्टं सहेत । स्त्रियः पानं च वर्जयेत् । एकश्शयीत । सुप्तमत्तयोहि भावजानं कृत्यपक्षोपजापमकृत्यपक्षे गृढ्प्रणिधानं, रागापरागौ भर्त्तरि, रन्ध्रं च तापसर्वेदेहकव्यञ्जनाभ्यामुपलभेत । तयोरन्तेवासिभिदिविकत् -सकपाषण्डव्यञ्जनोभयवेतनैर्वा.। तेषामसम्भाषायां याचकमत्तोन्मत्तसूप्रलापैः पुण्यस्थानदेवगृहचित्रलेख्यसंज्ञाभिर्वा चारमुपलभेत । उपलब्धस्योपजापमूपेयात् । परेण चोक्तःस्वासां प्रकृतीनां परिमाणं नाचक्षीत । "सर्वं वेद भवा"निति ब्र्यात्, कार्यसिद्धिकरं वा । कार्यस्यासिद्धावुषरुध्यमानस्तर्कयेत् । कि भर्तुर्मे व्यसनमासन्नं पश्यन्, स्वं वा व्यसनप्रतिकर्त्कामः ; पार्षणग्राहास।रावन्त:-कोपमाटविकं वा समुत्थापियतुकामः ; मित्रमाऋन्दं वा व्यापादियतुकामः ; स्वं वा परतो विग्रहमन्तःकोपमाटदिकं वा प्रतिकर्त्तुकामः ; संसिद्धं मे भर्तुं-र्यात्राकालमभिहन्तुकाम ; सस्यकुष्यपण्यसंग्रहं दुर्गकर्म बलसमुत्थानं वा कर्तुकामः ; स्वसैन्यानां व्यायामदेशकालावाकाङ्क्षमाणः ; परिभवप्रमादाभ्यां वा संसर्गानुबन्धार्थी वा, मामुपरुणद्वीति । ज्ञात्वा वसेदपसरेद्धा । प्रयोजन-मिष्टमवेक्षेत वा । शासनमनिष्टमुक्त्वा बन्धवधभयादविमृष्टो व्यपगच्छेदन्यथा नियम्येत ।

प्रेषणं सन्धिपालत्वं प्रतापो मित्रसंग्रहः । उपजापस्मुहृद्भेदो दण्डगूढातिसारणम् ॥ वन्धुरत्नापहरणं चारज्ञानं पराक्रमः । समाधिमोक्षो दूतस्य कर्म योगस्य चाश्रयः ॥ स्वदूतैः कारयेदेतत् परदूतांश्च रक्षयेत् । प्रतिदूतापसर्पाभ्यां दृष्यादृश्येश्च रक्षिभिः ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षोडशोऽध्यायः दूतप्रणिधिः ।

#### १३ प्रक. राजपुत्ररक्षणम्।

रक्षितो राजा राज्यं रक्षत्यासन्नेभ्यः परेभ्यश्च । पूर्व दारेभ्यः पुत्रेभ्यश्च । दाररक्षणं निशान्तप्रणिधौ वक्ष्यामः ।

पुत्र रक्षणं — जन्मप्रभृति ा नपुत्रान् रक्षेत् । कर्कंटकसधर्माणो हि जनक-भक्षाः राजपुताः ।

''तेपामजातस्नेहे पितर्युगांशुदण्डश्श्रेयान्' इति भारद्वाजः ।

"नृशंसमदृष्टवधः, क्षत्रविनाशश्चेति" विशालाक्षः । तस्मादेकस्थानाव-रोधरश्चेयानिति ।

"अहिभयमेत"दिति पाराशराः। कुमारो हि विक्रमभयान्मां पिता रुणद्वाति ज्ञात्वा तमेवाङ्के कुर्यात्तस्मादन्तपालदुर्गे वासरश्चेयानिति ।

"औरभ्रकं भयमेतत्" इति पिशुनः। प्रत्यापत्तेहि तदेव कारणं ज्ञात्वाऽन्तपालसखस्त्यात्। तस्म।त् स्वविषयादपकृष्टे सामन्तदुर्गे वासम्श्रेया"निति।

"वत्सस्थानमेत"दिति कीणपदन्तः । वत्सेनेव हि धेनुं पितरमस्य सामन्तो दुद्यात् । तस्मान्मातृबन्धुषु वासक्त्रेयानिति ।

"ध्वजस्थानमेतत्" इति वातव्याधिः । तेन हि ध्वजेनादितिकौशिकवदस्य मातृबान्धवा मिक्षेरन् । तस्माद् ग्राम्यधर्मेष्वेनमवसृजेयुः । सुखोपरुद्धा हि पुत्नाः पितरं नाभिद्रुद्धान्तीति ।

"जीवन्मरणमेतत्" इति कौटिल्यः । काष्ठिमिव हि घुणजग्धं राजकूल-मविनीतपुत्रमभियुक्तमातं भज्येत । तस्माद्तुमत्यां महिष्यां ऋत्विजश्चरुमैन्द्रा-बाहंस्पत्यं निवंपेयुः। आपन्नसत्त्वायां कौमारभृत्यो गर्भभर्मण प्रजनने च वियतेत । प्रजातायाः पुत्र संस्कारं पुरोहितः कुर्यात् । समर्थं तद्विदो विनयेयुः ।

"सिवणामेकक्वैनं भृगयाद्युतमद्यस्त्रीभिः प्रलोभयेत्-पितरि विक्रम्य राज्यं गृहाणेति । तदन्यस्सत्ती प्रतिषेधयेत्" इत्यामभीयाः ।

"महादोषमबुद्धबोधन"मिति कौटिल्यः । नैवं हि द्रव्यं येन येनार्थजाते-नोपदिहाते तत्तदाचूषति । एवमयं नवबुद्धियंद्यदुच्यते तत्तच्छास्त्रोपदेशमिवाभि-जानाति । तस्माद्धर्ममर्थं बास्योपदिशेष्ठाधर्ममनर्थं च ।

सिनणस्त्वेनं 'तव स्मः' इति वदन्तः पालयेयुः । यौवनोत्सेकात् परस्त्रीष् मनः कूर्वाणं आर्याव्यञ्जनाभिस्स्त्रीभिरमेध्याभिश्शुन्यागारेषु रात्नावृद्धेजयेयुः। मद्यकामं योगपानेनोद्वेजयेयुः । द्युतकामं कापटिकैः पुरुषैरुद्वेजयेयुः । मृगयाकामं प्रतिरोधकव्यञ्जनैस्त्रासयेयुः । पितरि विक्रमबुद्धि तथेत्यनुप्रविषय भेदयेयुः ।

"अप्रार्थनीयो राजा, विपन्ने घातस्सम्पन्ने नरकपातः, संक्रोशः, प्रजाभिरेक-लोहरवध्रक्वे"ति ।

विरागं प्रियमेकपुत्नं वा बब्नीयात्। बहुपुत्नः प्रत्यन्तमन्यविषयं वा प्रेषयेद्यत गर्भः पण्यं डिम्बो वा न भवेत् । आत्मसम्पन्नं सैनागत्ये यौवराज्ये वा स्थापयेत्। बुद्धिमानाहायंबुद्धिर्दुर्बुद्धिरिति पुत्रविशेषाः। शिष्यमाणी धर्मार्थावुपलभते चानुतिष्ठति च बुद्धिमान् । उपलभमानो नानुतिष्ठत्याहार्य-बुद्धिः । अपायनित्यो धर्मार्थद्वेषी चेति दुर्बृद्धिः ।

स यद्येकपुत्रः पुत्रोत्पत्तावस्य वियतेत । पुत्रिकापृत्रानुत्पादयेद्वा । वृद्धस्तु व्याधितो वा राजा मातृबन्धतुल्यगुणबत्सामन्तानामन्यतमेन क्षेत्रे बीजमृत्पादयेत्। न चैकपुत्रमिवनीतं राज्ये स्थापयेत्।

> बहुनामेकसंरोधः पिता पुत्रहितो भवेत्। अन्यतापद ऐश्वर्यं ज्येष्ठभागी तु पूज्यते ॥ कुलस्य वा भवेद्राज्य कुलसङ्को हि दुर्जंयः। थराजव्यसनाबाधः शश्वदावसति क्षितिम्।। इति कौटिलीयार्थं शास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे सप्तदशोऽध्यायः राजपूत्ररक्षणम् ।

#### १४-१५ प्रक. अवरुद्धवृत्तमवरुद्धे च वृत्तिः।

राजपुतः क्रुच्छ्रवृत्तिरसदृशे कर्मणि नियुक्तः पितरमनुवर्तेत, अन्यत प्राणा-बाधकप्रकृतिकोपपातकेभ्यः । पुण्यकर्मणि नियुक्तः पुरुषमधिष्ठातारं याचेत । पुरुषाधिष्ठितश्च सविशेषमादेशमनुतिष्ठेत् । अभिरूपं च कर्मफलमौपायनिकं च लाभं पितुरुपनाययेत् ।।

तथाऽप्यतुष्यन्तमन्यस्मिन् पुत्रे दारेषु वा स्निह्यन्तमरण्याय आपृच्छेत । बन्धवधभयाद्वा यस्तामन्तो न्यायवृत्तिधार्मिकः सत्यवागविसंवादकः प्रतिग्रहीता मानयिता चाभिपन्नानां तमाश्रयेत । तत्तस्यः कोदण्डसम्पन्नः प्रवीरपुरुषकन्या-सम्बन्धमटवीसम्बन्धं कृत्यपक्षोपग्रहं वा कृयात् ।

एकचरस्सुवर्णपाकमणिरागहेमरूप्यपण्याकरकर्मान्तानाजीवेत् । पाषण्ड-सङ्घद्रव्यमश्रोतियभोग्यं देवद्रव्यमाढचिवधवाद्रव्यं वा गूढमनुप्रविश्य सार्ययान-पाताणि च मदनरसयोगेनातिसन्धायापहरेत् । पारग्रामिकं वा योगमातिष्ठेत् । मातुः परिजनोपग्रहेण वा चेष्टेत ।

कारुशित्पिकुशीलविचिकित्सकवाग्जीवनपापण्डच्छद्मभिर्वा नष्टरूपस्तद्वचञ्जन-सत्तः खिद्रे प्रविश्य राज्ञः शस्त्ररसाभ्यां प्रहृत्य बूयात्—"अहमसौ कुमारः, सहभाग्यमिदं राज्यमेको नाहंति भोक्तुं तत्र ये कामयन्ते भर्तुं तानाहं द्विगुणेन भक्तवेतनेनोपस्थास्ये" इति । इत्यवरुद्धवृत्तम् ॥

अवरुद्धं तु मुख्यपुत्रमपसर्पाः प्रतिपाद्यानयेयुः । माता वा प्रतिगृहीता । त्यक्तं गूढपुरुषाः शस्त्ररसाभ्यां हन्युः । अत्यक्तं तुल्यशीलाभिस्स्त्रीभिः पानेन मृगयया वा प्रसज्य राताबुपगृह्यानयेयुः ।

उपस्थितं च राज्येन मदूर्ध्वमिति सान्त्वयेत्। एकस्थमथ संरुन्ध्यात् पुत्रवान्वा प्रवासयेत्॥ •

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे अष्टादशोऽध्याय: अवरुद्धवृत्तमवरुद्धे च वृत्तिः ।

#### १६ प्रक. राजप्रणिधिः।

राजानमुत्तिष्ठमानमनुत्तिष्ठन्ते भृत्याः । प्रमाद्यन्तमनुप्रमाद्यन्ति । कर्माणि चास्य भक्षयन्ति । द्विषद्भिश्चातिसन्धीयते । तस्मादृत्थानमात्मनः कुर्वीत । नालिकाभिरहरष्टधा राति च विभजेत्। छायाप्रमाणेन वा। तिपौरषी पौरुषी चतुरङ्गुला चच्छाया मध्याह्न इति पूर्वे दिवसस्याष्टभागाः। पश्चिमाः व्याख्याताः ।

तत पूर्वे दिवस्याष्टभागे रक्षाविधानमायव्ययी च शृण्यात्। द्वितीये पौरजानपदानां कार्याणि पश्येत । तृतीये स्नानभोजनं सेवेत । स्वाध्यायं च कुर्वीत । चतुर्थे हिरण्यप्रतिग्रहमध्यक्षांश्च कुर्वीत । पञ्चमे मन्त्रिपरिषदा पत्रसंप्रषेणेन मन्त्रयेत । चारगृह्यबोधनीयानि च बृद्धचेत । षष्ठे स्वैर्रावहारं मन्त्रं वा सेवेत । सप्तमे हस्त्यश्वरथायूधीयान् पश्येत् । अष्टमे सेनापतिसखो विक्रमं चिन्तयेत् । प्रतिष्ठितेऽहिन सन्ध्यामुपासीत ।

प्रथमे रातिभागे गृढपुरुषान् पश्येत्। द्वितीये स्नानभोजनं कुर्वीत स्वाध्यायं च। तृतीये तूर्यघोषेण संविष्टः चतुर्थपञ्चमौ शयीत। तूर्यं बोषेण प्रतिवृद्धः शास्त्रमितिकर्तं व्यतां च चिन्तयेत् । सप्तमे मन्त्रमध्यासीत्, गूढपुरुषांश्व प्रेषयेत्। अष्टमे ऋत्विगाचार्यपुरोहितसत्तः स्वस्त्ययनानि प्रतिगृह्णीयात्, चिकित्सकमाहानसिकमौहूर्तिकांश्च पश्येत् । सवत्सां धेनुं वृषभं च प्रदक्षिणीकृत्योपस्थानं गच्छेत् ।

आत्मबलानुकूल्येन वा निशाहर्भागान् प्रतिविभज्ज्य कार्याणि सेवेत ।

उपस्थानगतः कार्याथिनामद्वारासङ्गं कारयेत्। दुदंशौं हि राजा कार्याकर्यिविपर्यासमासन्नैः कार्यते। तेन प्रकृतिकोपमरिवशं वा गच्छेत्। तस्माद्देवताश्रमपार्षंण्डश्रोतियपगूपुण्यस्थानानां बालवृद्धव्याधितव्यसन्यनाथानां स्त्रीणां च क्रतेण कार्याण पश्येत, कार्यगौरवादात्ययिकवशेन वा ।

> सर्वमात्ययिकं कार्यं भ्राणुयान्नातिपातयेत् । कृच्छ्साध्यमतिकान्तमसाध्यं वा विजायते ॥ अग्न्यगारगतः कार्यं पश्येद्वैद्यतपस्विनाम् । पुरोहिताचार्यसलः प्रत्युत्यायाभिवाद्य च ॥ तपस्विनां तु कार्याणि तैविद्यैस्सह कारयेत् । मायायोगविदां चैव न स्वयं कोपकारणात ॥

राज्ञो हि वतमुत्थाने यज्ञः कार्यानुशासनम् । दक्षिणा वृत्तिसाम्यं च दीक्षितस्याभिषेचनम् ।। प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम् । नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम् ।। तस्मान्नित्योत्थितो रांजा कुर्यादर्थानुशासनम् । वर्थस्य मूलमुत्थानमनर्थस्य विपर्ययः ।। अनुत्याने घ्रुवो नक्षाः प्राप्तस्यानागतस्य च । प्राप्यते फलमुत्थानान्लभते चार्थसम्पदम् ।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे एकोनविंशोऽध्यायः राजप्रणिधिः ।

### १७ प्रक. निशान्तप्रणिधिः।

वास्तुकप्रशस्ते देशे सप्राकारपरिखाद्वारमनेककक्ष्यापरिगतमन्तःपुरं कारयेत् ।

कोशगृहविधानेन वा मध्ये वासगृहं, गूढिभित्तिसश्वारं मोहनगृहं तन्मध्ये वा वासगृहं. भूमिगृहं वा, आसप्तकाष्ट्रचैत्यदेशतापिधानद्वारमनेकसुरुङ्गासच्चारं। प्रासादं वा गूढिभित्तिसोपानं, सुषिरस्तम्भप्रवेशापसारं वा। वासगृहं यन्त्रवद्ध-तलावपातं कारयेद् आपत्प्रतीकारार्थमापदि वा कारयेत्। अतोऽन्यथ्या वा विकल्पयेत् सहाध्यायिभयात्।

मानुषेणाग्निना विरपसव्यं परिगतमन्तःपुरमग्निरन्यो न दहति, न चाता-न्योऽग्निज्वंलति, वैद्यतेन भस्मना मृत्संयुक्तेन करकवारिणाऽवलिप्तं च।

जीवान्तीक्ष्वेतामुब्ककपुष्पवन्दाकाभिरक्षीवे जातस्याश्वत्थस्य प्रतानेन वा गुप्तं सर्पा विषाणि वा न प्रसहन्ते । मार्जारमयूरनकुलपृषतोत्सर्गः सर्पान् भक्षयित शुक्रव्शारिका भृङ्गराजो वा सर्पविषणङ्कायां क्रोश्वति । क्रौश्चो विषाभ्यासे माद्यति, ग्लायति जीवंजीवकः, म्रियते मत्तकोकिलः, चकोरस्याक्षिणी विरज्येते । इत्येवं अग्निविषसर्पेभ्यः प्रतिकुर्वीत ।

पृष्ठतः कक्ष्याविभागे स्त्रीनिवेशो गर्भव्याधिवैद्यप्रख्यातसंस्था वृक्षोदकस्थानं

च । बहिः कन्याकुमारपुरम् । पुरस्तादलङ्कारभूमिः मन्त्रभूमिरुपस्थानं कुमाराध्यक्षस्थानं च । कक्ष्यान्तरेष्वन्तवैशिकसैन्यं तिष्ठेत् ।

अन्तर्गृहगतस्स्थिवरस्त्रीपरिशुद्धां देवीं पश्येत्। न काश्विदिश्वगच्छेत्। देवीगृहे लीनो हि भ्राता भद्रसेनं जधान, मातुश्यय्यान्तर्गतश्च पुतः कारूशम्, लाजान्मधुनेति विषेण पर्यस्य देवी काश्विराजम्, विषदिग्धेन नूपुरेण वैरन्त्यं, मेखलामणिना सौवीरं, जालूथमादर्शेन, वेण्यां गूढं शस्त्रं कृत्वा देवी विदूरयं जधान। तस्मादेतान्यास्पदानि परिहरेत्।

मुण्डजटिलकुहकप्रतिसंसगं बाह्याभिश्च दासीभिः प्रतिषेधयेत् । न चैनाः कुल्याः पश्येयुरन्यतः गर्भव्याधिसंस्थाभ्यः । रूपाजीवास्स्रानप्रघषंशुद्धज्ञरीराः परिवर्तितवस्त्रालङ्काराः पश्येयुः । आशीतिकाः पुरुषाः पश्चाशत्कास्स्त्रियो वा मातापितृव्यञ्जनास्स्थविरवर्षवराभ्यागारिकाश्चावरोधानां शौचाशौचं विद्युः स्थापयेयुश्च स्वामिहिते ।

स्वभूमी च वसेत्सर्वः परभूमी न सन्वरेत् ।
न च बाह्येन संसर्गं कश्चिदाभ्यान्तरो त्रबेत् ।।
सर्वं चावेक्षितं द्रव्यं निबद्धागमनिर्गमम् ।
निर्गंच्छेदिधगच्छेद्धा मुद्रासङ्कान्तभूमिकम् ।।
इति कौटिलीयार्यंशास्त्रे विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे
विशोऽष्टयायः निशान्तप्रणिधः ।

## १८ प्रक. आत्मरक्षितकम्।

शयनादुित्यतस्स्त्रीगणैर्घन्विभिः परिगृह्यत, द्वितीयस्यां कक्ष्यायां कञ्चु-कोष्णीिपिभवर्षवराभ्यागारिकैः, तृतीयस्यां कुब्जवामनिकरातैः, चतुर्यां मन्त्रिभ-स्सम्बन्धिभिदौवारिकैश्च प्रासपाणिभिः।

पितृपैतामहं महासम्बन्धानुबन्धं शिक्षितमनुरक्तं कृतकर्माणं जनमासभं कुर्वीत, नान्यतोदेशीयमकृतार्थमानं, स्वदेशीयं वाऽप्यकृत्योपगृहीतम् अन्तर्वशिक-सैन्यं राजानमन्तःपुरं च रक्षेत् ।

गुप्ते देशे माहानसिकः सर्वमास्वादबाहुत्येन कर्म कारयेत् । तद्राजा तथैव प्रतिभुञ्जीत पूर्वमग्रये वयोभ्यश्च बॉल कृत्वा । अग्नेज्वांलाधूमनीलता शब्दस्फोटनं च विषयुक्तस्य, वयसां विपत्तिश्च । अन्नस्योदमा मयूरग्रीवाभः शैत्यं, आशु क्लिब्टस्येव वैवर्ण्यं सोदकत्वमिनलन्नत्वं च । व्यञ्जनानामाशुशुद्कत्वं च नवाथः श्यामफेनपटलविच्छिन्नभावो गन्धस्पशंरस-वधश्च । द्रव्येपु हीनातिरिक्तछायादशंनं फोनपटलसीमन्तोद्वंराजीदशंनं च । रसस्य मध्ये नीला राजी, पयसस्तांन्ना, मद्यतोययोः काली, दद्वनश्च्यामा, मधुनश्चेता । द्रव्याणामार्द्राणामाशुप्रम्लातत्वमुत्पक्वभावः क्वाथनीलश्यावता च । शुद्काणामाशुश्चातनं वैवद्यां च । कठिनानां मृदुत्वं मृदूनां कठिनत्वं च । तद्वस्याशे क्षुद्वसत्ववधश्च । आस्तरणप्रावरणानां श्याममण्डलता तन्तुरोम-पद्मश्चातनं च । लोहमणिमयानां पङ्कमलोपदेहता स्नेहरागगौरवप्रभाववर्णं-स्पर्शवधश्चेति विषयुक्तिलङ्गानि ।

विषप्रदस्य तु णुष्कश्याववनवता वानसङ्गस्स्वेदी विजृम्भणं चातिमातं वेषयुः प्रस्खलनं वानयविप्रेक्षणमावेशः कर्मणि स्वभूमौ चानवस्थानिति ।

तस्मादस्य जाङ्गलीविदो भिषजश्चसन्नास्स्युः।

भिषग्भैषज्यागारादास्वादिवगुद्धमौषधं गृहीत्वा पाचकपेषकाभ्यामात्मना च प्रतिस्वाद्य राज्ञे प्रयच्छेत् । पानं पानीयं चौषधेन व्याख्यातम् ।

कल्पकप्रसाधकास्स्नानगुद्धवस्त्रहस्तास्समुद्रमुपकरणमन्तर्विकहस्तादादाय परिचरेयु: ।

स्नापकसंवाहकास्तरकरजकमालाकारकर्मं दास्यः कुर्युः ताभिरधिष्ठिता वा शिल्पिनः । आत्मचक्षुषि निवेश्य वस्त्रमाल्यं दद्युः । स्नानानुलेपनप्रघर्षचूर्ण-वासस्नानीयानि स्ववक्षोबाहुषु च । एतेन परस्मादागैतकं च व्याख्यातम् ।

कुशीलवाश्यस्त्राग्निरसवर्जनमंथेयुः । आतोद्यानि चैषामन्तस्तिष्ठेयुरश्व-रथद्विपालङ्काराश्च ।

मौलपुरुषाधिष्ठितं यानवाहनमारोहेत्, नावं चाप्तनाविकाधिष्ठिताम् । अन्यनौप्रतिवद्धां वातवेगवशां च नोपेयात् । उदकान्ते सैन्यमासीतः । मत्स्य-ग्राहविशुद्धमवगाहेतः । व्यालग्राहपरिशुद्धमुद्यानं गच्छेत् ।

लुब्धकः श्वगणिभिरपास्तस्तेनव्यालपरावाधभयं चललक्षपरिचयार्थं मृगारण्यं गच्छेत् ।

आप्तशस्त्रग्राहाधिष्ठितस्तिद्धतापसं पश्येत्, मन्त्रिपरिषदा सामन्तदूतं। सम्रद्धोऽषवं हस्तिनं रथं वाऽऽरूढस्सम्नद्धमनीकं गच्छेत्।

निर्याणेऽभियाने च राजमार्गमुभयतः कृतारक्षं दिष्डभिरपास्तगस्त्रहस्त-

प्रव्रजितव्यङ्गं गच्छेत् । न पुरुषसम्बाधमवगाहेत । यावासमाजोत्सवप्रवहणानि च दशवगिकाधिष्ठितानि गच्छेत ।

यथा च योगपूरुषैरन्यान् राजाधितिष्ठति । तथाऽयमन्यवाधेभयो रक्षेदात्मानमात्मवान् ।। इति विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे एकविशोऽध्यायः आत्मरक्षितकम् । एतावता कीटिलीयार्थशास्त्रस्य विनयाधिकारिकं प्रथमाधिकरणं समाप्तम ।

## अध्यक्षप्रचारः—द्वितीयाधिकरणम् । १६ प्रक. जनपद्निवेशः।

भूतपूर्वमभूतपूर्वं वा जनपदं परदेशापवाहनेन स्वदेशाभिष्यन्दवमनेन वा निवेशयेत।

शूद्रकर्षकप्रायं कुलशतावरं पञ्चशतकुलपरं ग्रामं कोशद्विकोशसीमानमन्योन्या-रक्षं निवेशयेत्। नदीशैलवनग्ष्टिदरीसेनुबन्धशाल्मलीशमीक्षीरवृक्षानन्तेप् सीम्नां स्थापयेत ।

अष्टशतग्राम्या मध्ये स्थानीयं चतुरशतग्राम्या द्रोणमुखं, द्विशतग्राम्या स्कावंटिकं, दशग्रामीसंग्रहेण संग्रहणं स्थापयेत्।

अन्तेष्वन्तपालदुर्गाणि'जनपद्धाराण्यन्तपालाधिष्ठितानि स्थापयेत् । तेषा-मन्तराणि वागुरिकशबरपुलिन्दच्ण्डालारण्यचरा रक्षेयुः।

ऋत्विगाचायंप्रोहितश्रोतियेभ्यो ब्रह्मदेयान्यदण्डकराण्याभिरूपदायकानि प्रयच्छेत्। अध्यक्षसञ्जूचायकादिभ्यो गोपस्थानिकानीकास्थचिकित्सकाश्वदमक-जङ्काकारिकेभ्यश्च विकयाधानवर्जम् ।

करदेभ्यः कृतक्षेत्राण्यैकपुरुपिकाणि प्रयच्छेत् । अकृतानि कर्तृ भ्यो नादेयात् । अकृषतामाच्छिद्यान्येभ्यः प्रयच्छेत्। ग्रामभृतकवेदेहका वा कृषेग्रः। अकृषन्तोऽवहीनं दद्यः । धान्यपगुहिरण्यैश्चैनाननुगृह्णीयात् तत्यनु सुखेन दद्यः ।

अनुप्रह्परिहारी चैभ्यः कोशवृद्धिकरी दद्यात् । कोशोपघातिकी वर्जयेत् । अल्पकोशो हि राजा पौरजानपदानेव ग्रसते। निवेशसमकालं यथागतकं वा परिहारं दद्यात् । निवृत्तपरिहारान् पितेवान्गृङ्गीयात् ।

आकरकर्मान्तद्रव्यहस्तिवनव्रजवणिक्पथप्रचारान् वारिस्थलपथपण्यपत्तनानि च निवेषयेत्।

सहोदकमाहार्योदकं वा सेतुं बडनयेत् । अन्येषां वा बडनतां भूमिमार्गवृक्षोप-करणानुग्रहं कुर्यात्, पुण्यस्थानारामाणां च । सम्भूयसेतुबन्धादपकामतः कर्मकरबलीवर्दाः कर्मं कुर्युः । व्ययकंमंणि च भागी स्यात्, न चांशं लभेत ।

मत्स्यप्लवहरितपण्यानां सेतुषु राजा स्वाम्यं मच्छेत् ।

दासाहितकबन्धूनश्यण्वतो सजा विनयं ग्राहयेत्। बालवृद्धन्याधितव्य-सन्यनायांश्च राजा बिभयात्, स्त्रियमप्रजातां प्रजातायाश्च पुतान्।

बालद्रव्यं ग्रामवृद्धा वर्जं [र्घं] येयुरा व्यवहारप्रापणात्, देवद्रव्यं च ।

अपत्यदारान् मातापितरौ भ्रातृ नप्राप्तव्यवहारान् भगिनीः कन्या विधवा-श्राबिभ्रतः शक्तिमतो द्वादशपणी दण्डोऽन्यत्र पतितेभ्यः अन्यत्र मातुः ।

पुत्रदारमप्रतिविधाय प्रव्रजतः पूर्वस्साहसदण्डः, स्त्रियं च प्रव्राजयतः। लुप्तव्यवायः प्रव्रजेदावृश्चच धर्मस्वान् । अन्यथा नियम्येत ।

वानप्रस्थादन्यः प्रत्रजितभावः सजातादन्यः सङ्घस्सामुत्थायकादन्यस्समयानु-बन्धो वा नास्य जनपदमुपनिवेशेत ।

न च तत्रारामा विहारार्थाः शालास्स्युः । नटनतंनगायनबादकवाग्जीवन-कुशीलवा वा न कर्मविद्यं कुर्युः, निराश्रयत्वात् ग्रामाणां, क्षेत्राभिरतत्वाच्च पुरुषाणां कोशविष्टिद्रव्यधान्यरसवृद्धिभवतीति ।

> परचकाटवीग्रस्तं व्याधिदुभिक्षपीहितम् । देशं परिहरेद्राजा व्ययक्रीडाश्च वारयेत् ॥ दण्डविष्टिकरावाधः रक्षेदुपहतां कृषिम् । स्तेनव्यालविषग्राहैः व्याधिभिश्च पशुव्रजान् ॥ वल्लभैः कार्मिकैस्स्तेनैरन्तपालश्च पीहितम् । शोधयेत्पशुसङ्घेश्च क्षीयमाणं वणिक्पयम् ॥ एवं द्रव्यद्विपवनं सेनुबन्धमयाकरान् । रक्षेत्पूर्वकृतान्राजा नवांश्चाभिप्रवर्तयेत् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे प्रथमोऽध्यायः जनपदिनवेशः, आदितो द्वाविशः।

## २० प्रक. भूमिज्छिद्रविधानम्।

अकृष्यां भूमौ पशुभ्यो विवीतानि प्रयच्छेत् ।

प्रदिष्टाभयस्थावरजङ्गमानि च ब्राह्मणेभ्यो ब्रह्मसोमारण्यानि, तपोवनानि च तपस्विभ्यो गोरु(त)पराणि प्रयच्छेत् । तावन्मात्रमेकद्वारं खातगुष्तं स्वादुफलगुल्मगुच्छमकण्टिकद्भुममुत्तानतोयाशयं दान्तमृगचतुष्पदं भग्ननखदंष्ट्र-व्यालमार्गागुकहस्तिहस्तिनीकलभं मृगवनं विहारार्थं राज्ञः कारयेत् ।

सर्वातिथिमृगं प्रत्यन्ते चान्यन्मृगवनं भूमिवशेन वा निवेशयेत् ।

कुप्पप्रदिष्टानां च द्रव्याणामेकैकशी वा वनं निवेशयेत्, द्रव्यवनकर्मान्ता-नटवीश्च द्रव्यवनापाश्रयाः । प्रत्यन्ते हस्तिवनमटव्यारक्षं निवेशयेत् ।

नागवनाध्यक्षः पार्वतं नादेयं सारसमानूपं च नागवनं विदितपर्यन्तप्रवेश-निष्कसनं नागवनपालैः पालयेत् । हस्तिघातिनं हन्युः । दन्तयुगं स्वयं मृगस्याहरतः सपादचतुष्पणो लाभः ।

नागवनपाला हस्तिपकपादपाणिकसंमिकवनचरकपारिकर्मिकसखा हस्ति-मूत्रपुरषिच्छन्नगन्धा भल्लातकीशाखाप्रतिच्छन्नाः पश्वभिस्सप्तभिर्वा हस्तिबन्ध-कीभिः सह चरन्तः शय्यास्थानपद्यालण्डकूलपातोद्देशेन हस्तिकुलपर्यंग्रं विद्युः ।

यूथचरमेकचरं निर्यूथं यूथपित हस्तिनं व्यालं मत्तं पोतं वद्धमुक्तं च निबन्धेन विद्युः । अनीकस्थप्रमाणैः प्रशस्तव्यञ्जनाचारान् हस्तिनो गृह्णीयुः । हस्तिप्रधानो विजयो राज्ञाम् । परानीकव्यूहदुर्गस्कन्धावारप्रमर्देना ह्यतिप्रमाण-शरीराः प्राणहरकर्माणो हस्तिन इति ।

> किलङ्काङ्गगर्जाः श्रेष्ठाः प्राच्याश्चेदिकरूशजाः । दाशार्णाश्चापरान्ताश्च द्विपानां मध्यमा मताः ॥ सौराष्ट्रिकाः पाञ्चननदाः स्तेषां प्रत्यवरास्स्मृताः । सर्वेषां कर्मणा वीर्यं जवस्तेजश्च वर्धते ॥

इति कौटिलीयार्यशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः भूमिच्छिद्रविधानम्, आदितस्त्रयोविशः ।

# २१ प्रक. दुर्गविधानम्।

चतुर्दिशं जनपदान्ते साम्परायिकं दैवकृतं दुगं कारयेत्, अन्तर्दीपं स्थलं वा निम्नावरुद्धमौदकं, प्रास्तरं गुहां वा पावंतं, निरुदकस्तम्बिमिरणं वा धान्वनं खञ्जनोदकं स्तम्बगहृनं वा वनदुगंम्। तेषां नदीपर्वतदुगं जनपदारक्षस्थानं, धान्वनवनदुगंमटवीस्थानम्, "अपाद्यप्रसारो वा। जनपदमध्ये समुदयस्थानं स्थानीयं निवेशयेत्। वास्तुकप्रशस्ते देशे नदीसःङ्गमे हृदयस्य वा अविशोषस्याङ्के, सरसस्तटा कस्य वा वृत्तं दीर्घं चतुरश्चं वा वस्तुकवशेन प्रदक्षिणोदकं पण्यपुट-भेदनमंसवारिपथाभ्यामुपेतम्। तस्य परिखास्तिस्रो दण्डान्तराः कारयेत्। चतुर्देश द्वादश दशेति दण्डान् बिस्तीर्णाः विस्तारादवगाधाः पादोनमधं वा विभागमूला मूले चतुरश्चाः पापाणोपहिताः पापाणेष्टकाबद्धपार्श्चां वा तोयान्ति-कीरागन्तुतोयपूर्णा वा सपरिवाहाः पद्मग्राहवतीः।

चतुर्दण्डावकृष्टं परिखाया षड्दण्डोच्छितमवरुद्धं तिद्वगुणविष्कम्भं खातद्वप्रं कारयेद् ऊर्ध्वचयं मञ्चपृष्ठं कुम्भकुक्षिकं वा हस्तिभिर्गोभिश्च क्षुण्णं कण्टिक गुल्मविषपल्लीप्रतानवन्तं पांसुविशेषेण वास्तुच्छिद्यं वा पूरयेत्।

वप्रस्योपरि प्राकारं विष्कम्भद्विगुणोत्सेधमैष्टकं द्वादशहस्तादूर्ध्वमोजं युग्मं वा आ चतुर्विशतिहस्तादिति कारयेत् ।

रथचर्यासञ्चारं तालमूलमुरजकैः किपशीर्षकैश्चाचिताग्रं पृथुशिलासंहितं वा शैलं कारयेत्, न त्वेव काष्ठमयमग्निरविहतो हि तस्मिन् वसित ।

विष्कम्भचतुरश्रमट्टालकमुत्सेधसमावक्षेपसोपानं काययेत्, त्रिशदण्डान्तरं च। द्वयोरट्टालकयोमंध्ये सहम्यंद्वितलामद्वध्यधायामां प्रतोली कारयेत्।

अट्टालकप्रतोलीमध्ये विधानुष्काधिष्ठानं सापिधानिच्छद्रफलकसंहितिम-तीन्द्रकोशं कारयेत् ।

अन्तरेषु द्विहस्तविष्कम्भं पार्श्वे चतुर्गुणायाममनुप्राकारमप्टहस्तायतं देवपथं कारयेत् ।

दण्डान्तरा द्विदण्डान्नरा वा चार्याः कारयेत्, आग्राह्ये देशे प्रधावितिकां निष्कुरद्वारं च ।

वहिर्जानुभिञ्जनीतिशूलप्रकारकूटावपातकण्टकप्रतिसराहिपृष्ठतालपत्रशृङ्गा-टकश्वदंष्ट्रार्गलोपस्कन्दनपादुकाभ्बरीषोदपानकैः छन्नपथं कारयेत ।

प्राकारमुभयतो मण्डकमध्यर्धदण्डं कृत्वा प्रतोलीषट्तलान्तरं द्वारं निवेशयेत्

पञ्चदण्डादेकोत्तरवृद्धघाऽऽष्टदण्डादिति चतुरश्रम् । षड्भागमायामादिधकमष्ट-भागं वा ।

पञ्चवशहस्तादेकोत्तरमध्टादशहस्तादिति तलोत्सेधः। स्तम्भस्य परिक्षेपाष्वडायामा द्विगुणो निखातः चुलिकायाश्चतुर्भागः।

आदितलस्य पश्च भागाः शाला वापी सीमागृहं च। दशभागिको समत्त-वारणो द्वौ प्रतिमश्चौ ; अन्तरमाणिःहम्यं च समुच्छ्रयादधंतलं, स्थूणावबन्धश्च । आधंवास्तुकमुत्तमागारं विभागान्तरं वा इष्टकावबद्धपार्ध्वं, वामतः प्रदक्षिण-सोपानं गूढभित्तिसोपानमितरतः । द्विहस्तं तोरणशिरः । विपश्चभागिकौ द्वौ कवाटयोगौ, द्वौ द्वौ परिघौ, अरिनिरिन्द्रकीलः, पश्चहस्तमणिद्वारं, चत्बारो हस्तिपरिघाः निवेशाधं हस्तिनखः मुखसमः । सङ्क, मोऽसंहायों वा भूमिमयो वा निरुद्धे ।

प्राकारसमं मुखमवस्थाप्य विभागगोघामुखं गोपुरं कारयेत् ।

प्राकारमध्ये कृत्बा वापी, पुष्करिणीद्वारं चतुश्णालमध्यर्धान्तराणिकं कुमारीपुरं मुण्डहम्यं द्वितलं मुण्डकद्वारं भूमिद्रव्यवण्नेन वा। त्रिभागाधि -कामायामा भाण्डवाहिनीः कुल्याः कारयेत् ।

तासु पाषाणकुद्दालकुठारीकाण्डकत्पनाः ।
मुमृष्ठिमुद्गरा दण्डचक्रयन्त्रशतन्नयः ।।
कार्याः कार्मारिकाश्णूलवेधनाग्राश्च वेणवः ।
उष्ट्रग्रीव्योऽग्निसंयोगाः कुप्यकल्पे च यो विधिः ।
इति कौटिलीयार्थंशास्त्रेऽध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे
नृतीयोऽध्याय. दुर्गविधानम्, आदितश्चतृविंशः ।

# २२ प्रक. दुर्गनिवेशः।

त्रयः प्राचीना राजमार्गास्त्रयः उदीचीना इति वास्तुविभागः। स द्वादणद्वारो युक्तोदकभूमिच्छन्नपथः।

चतुर्दंण्डान्तरा रथ्याः राजमार्गद्रोणमुखस्थानीयराष्ट्रविवीतपथाः सयानीय-श्यूहश्मशानग्रामपथाश्चाष्टदण्डाः । चतुर्दण्डस्सेतुवनपथः । द्विदण्डो हस्तिक्षेत्र-पथः । पञ्चारत्नयो रथपथश्चत्वारः पशुपथः द्वौ क्षूद्रपशुमनुष्यपथः । प्रवीरे वास्तुनि राजनिवेशाः चातुर्वण्यंसमाजीवे । वास्तुहृदयादुत्तरे नवभागे यथोक्तं विधानमन्तःपुरं प्राङ्मुखमुदङ्मुखं वा कारयेत्। तस्य पूर्वोत्तरं भागमाचार्यंपुरोहितेज्यातोयस्थानं मन्त्रिणश्वावसेयुः। पूर्वदक्षिणं भागं महानसं हस्तिशाला कोष्ठागारं च। ततः परं गन्धमाल्यधान्यरसपण्याः प्रधानकारवः क्षत्रियाश्च पूर्वा दिश्वमधिवसेयुः। दक्षिणपूर्वं भागं भाण्डागार-मक्षपटलं कर्मनिषद्याश्च। दक्षिणपश्चिमं भागं कुप्यगृहमायुधागारं च। ततः परं नगरधान्यव्यवहारिककार्मान्तिकाबलाध्यक्षाः पक्वाश्चसुरामांसपण्याः रूपाजीवास्तालावचरा वैश्याश्च दक्षिणां दिशमधिवसेयुः। पश्चिमदिक्षणं भागं खरोष्ट्रगृप्तिस्थानं कर्मगृहं च। पश्चिमोत्तरं भागं यानरथशालाः। ततः परमूर्णासूत्रवेणुचर्मवर्मशस्त्रावरणकारवश्यूदाश्च पश्चिमां दिशमधिवसेयुः। उत्तरपश्चिमं भागं पण्यभैषज्यगृहम्। उत्तरपूर्वं भागं कोशो गवाश्वं च। ततः परं नगरराजदेवता लोहमणिकारवो ब्राह्मणाश्चोत्तरां दिशमधिवसेयुः। वास्तुच्छिद्रानुलासेषु श्रेणी प्रवहणिकनिकाया आवसेयुः।

अपराजिताप्रतिहतज्ञयन्तवैजयन्तकोष्ठकान् शिववैश्रवणाध्विश्रीमदिरागृहं च पुरमध्ये कारयेत् । कोष्ठकालयेषु यथोद्देशं वास्तुदेवताः स्थापयेत् । ब्राह्मैन्द्रयाम्यसैनापत्यानि द्वाराणि । वहिः परिखाया धनुश्शतापकृष्टाक्चैत्य-पुण्यस्थानवनसेतुबन्धाः कार्याः, यथादिणां च दिग्देवताः ।

उत्तरः पूर्वो वा श्गशानवाटः, दक्षिणेन वर्णोत्तराणाम् । तस्यातिक्रमे पूर्वस्साहसदण्डः ।

पाषण्डचण्डालानां श्मशानान्ते वासः ।

कर्मान्तक्षेत्रवशेन वा कुटुम्बिनां सीमानं स्थापयेत् । तेषु पुष्पफलवाट-षण्डकेदारान् धान्यपण्यनिचयांश्च अनुज्ञाताः कुर्नुः, दशकुलीवाटं कूपस्थानम् सर्वन्नेह्धान्यक्षारलवणभैषज्यगुष्कशाकयवसवल्लूरृणकाष्ठलोहचर्माङ्गारस्रायु-विषविषाणवेणुवल्कलसारदारुप्रहरणावरणारुमनिचयाननेकवर्षोपभोगसहान् कार-येत् । नवेनानवं शोधयेत् ।

हस्त्यश्चरथपादातमनेकमुख्यमवस्थापयेत् । अनेकमुख्यं हि परस्परभयात् परोपजापं नोपैतीति ।

एतेनान्तपालदुर्गसस्कारा व्याख्याताः।

न च बाहिरिकान्कुर्यात्पुरराष्ट्रोपघातकान् । क्षिपेज्जनपदस्यान्ते सर्वान् वा दापयेत्करान् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे चतुर्थोऽध्यायः दुर्गनिवेशः, आदितः पश्वविशः ।

### २३ प्रक. सन्निधातृनिचयकर्म।

सिन्नधाता कोशगृहं पण्यगृहं कोष्ठागारं कुप्यगृहमायुधागारं बन्धनागारं च कारयेत्।

चतुरश्रां वापीमनुदकोपस्नेहां खानयित्वा पृथुशिलाभिरुभयतः पार्ध्वं मूलं च प्रचित्य सारदारुपञ्जरं भूभिसमित्रतलमनेकविधानं कुट्टिमदेशस्थानतलमेकद्वारं यन्त्रयुक्तसोपानं देवताविधानं भूमिगृहं कारयेत् ।

तस्योपर्युभयतो निषेधं सप्रग्रीवमैष्टकं भाण्डवाहिनीपरिक्षिप्तं कोशगृहं कार-येत् । प्रासादं वा जनपदान्ते ध्रुवनिधिमापदर्थमभित्यक्तैः पुरुषैः कारयेत् ।

पक्वेष्टकास्तम्भं चतुश्शालमेकद्वारमनेकस्थानतलं, विवृतस्तम्भापसारमुभ-यतः पण्यगृहं, कोष्ठागारं च, दीर्घबहुलशालं कक्ष्यावृतकृडचमन्तः कुप्यगृहं, तदेव भूमिगृहयुक्तमायुधागारं, पृथग्धमंस्थीयं महामात्रीयं, विभक्तस्त्रीपुरुषस्थानमप-सारतः सुगुप्तकक्ष्यं बन्धनागारं कारयेत् ।

सर्वेषां शालाखातोदपानवच्च स्नानगृहाग्निविषत्नाणमार्जारनकुलारक्षाः स्वदैव-पूजनयुक्ताः कारयेत् ॥

कोष्ठागारे वर्षमानमरत्निमुखं कुण्डं स्थापयेत्।

तज्जातकरणाधिष्ठितः पुराणं नवं च रत्नं सारं फल्गुकुप्यं वा प्रति-गृह्णीयात् । तत्र रत्नोपधावुत्तमो दण्डः कर्तुः कारियतुश्च, सारोपधौ मध्यमः फल्गुकुप्योपधौ तच्च तावच्च दण्डः ।

रूपदर्शकविगुद्धं हिरण्यं प्रतिगृह्णीयात्, अगुद्धं छेदयेत् । आहर्तुः पूर्वः साहसदण्डः ।

शुद्धं पूर्णमभिनवं च धान्यं प्रतिगृह्णीयात् । विपर्यये मूलद्विगुणो दण्डः । तेन<sup>द</sup>पण्यं कुप्यमायुधं च व्याख्यातम् ।

सर्वाधिकरणेषु युक्तोपयुक्ततत्पुरुषाणां पणद्विपणचतुष्पणाः परमापहारेषु पूर्वमध्यमोत्तमवधा दण्डाः ।

कोशाधिष्ठितस्य कोशावच्छेदे घातः। तद्वैयावृत्यकाराणामधंदण्डः। परिभाषणमिवज्ञाते। चोराणामभित्रधर्षणे चित्रा घातः। तस्मादाप्तपुरुषा-धिष्ठितः सन्निधाता निचयाननुतिष्ठेत्।

> बाह्यमाभ्यन्तरं चायं विद्याद्वर्पंशतादिष । यथा पृष्टो न सज्जेत व्ययशेषं च दर्शयेत् ॥ इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे पञ्चमोऽध्यायः सन्निधातृनिचयकमं, आदितः पर्ड्विशः।

# २४ प्रक. समाहर्तृ समुद्यप्रस्थापनम्।

समाहती दुर्ग राष्ट्रं खर्नि सेतुं वनं व्रजं विणक्पथं चावेक्षेत ।

शुल्कं दण्डः पौतवं नागरिको लक्षणाध्यक्षो मुद्राऽध्यक्षः सुरा सूना सूत्रं तैलं घृतं क्षारं सौर्वाणकः पण्यसंस्था वेच्या द्यूतं वास्तुकं कारुशिल्पिगणो देवताध्यक्षो द्वारवाहिरिकादेयं च दुर्गम् ।

सीता भागो बलिः करो विशक् नदीपालस्तरो नावः पट्टनं विवीतं वर्तनी रज्जूश्चोररज्जूश्च राष्ट्रम् ।

सुवर्णरजतवज्रमणिमुक्ताप्रबालशङ्खलोहलवणभूमिप्रस्तररसद्यातवः खनिः :

पुष्पफलवाटषण्डकेदारमूलवापास्सेतुः ।

पशुमृगद्रव्यहस्तिवनपरिग्रहो वनम् ।

गोमहिषमजाविकं खरोष्ट्रमश्वाश्वतराश्च व्रजः।

स्थलपथो वारिपथश्च वणिक्पथः।

इत्यायशरीरम्।

मूलं भागो व्याजी परिघः क्लृप्तं रूपिकमत्ययश्चायमुखम् ।

देविपतृपूजादानार्थं स्वस्तिवोचनमन्तःपुरमहानसं दूतप्रावितमं कोष्ठागार-मायुधागारं पण्यगृहं कुप्यगृहं कर्मान्तो विष्टिः पत्यश्वरथद्विपपरिग्रहो गोमण्डलं पशुमृगपक्षिव्यालवाटाः काष्ठतृणवाटण्चेति व्ययशरीरम् ।

राजवर्षं मासः पक्षो दिवसभ्च व्युष्टम् । वर्षाहेमन्तग्रीष्माणां तृतीयसप्तमा दिवसोनाः पक्षाश्शेषाः पूर्णाः । पृथगिधमासक इति कालः ।

करणीयं सिद्धं शोषमायव्ययौ नीवी च।

संस्थानं प्रचारश्यारीरावस्थापनमादानं सर्वसमुदयपिण्डसञ्जातमे-तत्करणायम् ।

कोशापितं राजहारः पुरव्ययश्चाप्रविष्टं, परमसंवत्सरानुवृत्तं शासनमुक्तं मुखाज्ञप्तं चापातनीयमेतत्सिद्धम् ।

सिद्धिप्रकर्मयोगः दण्डशेषमाहरणीयं बलात्कृतप्रतिस्तब्धमवसृष्टं च प्रशोध्य-मेतच्छेषमसारमस्पसारं च ।

वर्तमानः पर्युषितोऽन्यजातश्चायः । दिवसानुवृत्तो वर्तमानः । परमसाव-त्सिरिकः परप्रचार सङ्क्रान्तो वा पर्युषितः । नष्टप्रस्मृतमायुक्तदण्डः पाथवं पारिहोणिकमौपायनिकं डमरगतकस्वमपुत्रकं निधिश्चान्यजातः । विक्षेपव्याधि-तान्तरारम्भशेषश्च व्ययप्रत्यायः । विकये पण्यानामर्घवृद्धिरूपना मानोन्मान-विशेषो व्याजी क्रयसङ्घर्षे वा वृद्धिरित्यायः । नित्यो नित्योत्पादिको लाभो लाभोत्पादिक इति व्ययः। दिवसानुवृत्तो नित्यः। पक्षमाससंवत्सरलाभो लाभः। तयोहत्पन्नो नित्योत्पादिको लाभो-त्पादिक इति।

व्ययसंजातादायव्ययिवशुद्धा नीवी प्राप्ता चानुवृत्ता चेति ।
एवं कुर्यात्समुदयं वृद्धि चायस्य दशयेत् ।
ह्नासं व्ययस्य च प्राज्ञस्साधयेच्च विषयेयम् ॥
इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्विसीयाधिकरणे षष्ठोऽध्यायः
समाहर्नृ समुदयप्रस्थापनम्, आदितः सप्तविशः ।

#### २५ प्रक. अक्षपटले गाणनिक्याधिकारः।

अक्षपटलमध्यक्षः प्रत्यङ् मुखमुदङ् मुखं वा विभक्तोपस्थानं निबन्धपुस्तकस्थानं कारयेत् ।

तत्नाधिकरणानां सङ्ख्याप्रचारसञ्जाताग्रं, कर्मान्तानां द्रव्यप्रयोगे वृद्धिक्षय-व्ययप्रयामव्याजीयोगस्थानवेतनविष्टिप्रमाणं, रत्नसारफल्गुकुष्यानामघेप्रतिवर्णक-प्रतिमानमानोन्मानावामानभाण्डं, देशग्रामजातिकुलसङ्घानां धर्मव्यवहार-चारित्रसंस्थानं, राजोपजीविनां प्रग्रहप्रदेशभोगपरिहारभक्तवेतनलाभं, राज्ञश्च पत्नीपुत्राणां रत्नभूमिलाभं निर्देशोत्पातिकप्रतीकारलाभं, मित्रामित्नाणां च सन्धिविक्रमप्रदानादानानि,,निबन्धपुस्तकस्थं कारयेत्।

ततस्सर्वाधिकरणानां करणीयं सिद्धं शेषमायव्ययौ नीवीमुपस्थानं प्रचार-चरित्तैसंस्थानं च निबन्धेन प्रयच्छेत् । उत्तममध्यमावरेषु च कर्मसु तज्जातिक-मध्यक्षं कुर्यात्, सामुदायिकेष्ववक्लुप्तिकः यमुपहत्य न राजाऽनुतप्येत ।

सहग्राहिणः प्रतिभुवः कर्मोपजीविनः पुत्रा भ्रातरो भार्या दुहितरो भृत्या-श्चास्य कर्मच्छेदं वहेयुः।

तिशतं चतुःपश्चाशच्चाहोराताणां कर्मसंवत्सरः । तमाषाढीपर्यवसानमूनं पूर्णं वा दद्यात् । करणाधिष्ठितमधिमासकं कुर्यात् । अपसर्पाधिष्ठितं च प्रचारं प्रतारचरित्रसंस्थानान्यनुपलभमानो हि प्रकृतस्समुदयमज्ञानेन परि-हापयित, उत्थानक्लेज्ञामहत्वादालस्येन, शब्दादिष्विन्द्रयार्थेषु प्रमादेन, सङ्क्रोशा-ध्रमिनथंभीरुभंयेन, कार्याथिष्वनुग्रहवुद्धिः कामेन, हिंसाबुद्धिः कोपेन, विद्याद्रव्य-वल्लभाषाश्रयाद्द्पेण, तुलामानतर्कगणिकान्तरोपधानाल्लोभेन ।

तेषां आनुपूर्व्या यावानयौपघातः तावानेकोत्तरो दण्ड इति मानवाः । सर्वेताष्टगुण इति पाराशराः ।। दशगुण इति वार्हस्पत्याः ।। विशतिगुणः इत्योशनसाः ।। यथाऽपराधम् इति कौटिल्यः ।।

गाणिनवयान्याषाढामागच्छेयुः । आगतानां समुद्रपुस्तभाण्डनीवीकाना-मेकत्रसम्भाषावरोधं कारयेत् । आयंव्ययनीवीनामग्राणि श्रुत्वा नीवीमवहारयेत् । यच्चाग्रादायस्यान्तरवर्णे नीव्या वर्धेत, व्ययस्य वा यत्परिहापयेत्, तदष्टगुण-मध्यक्षं दापयेत् । विपयंये तमेव प्रति स्यात् ॥

यथाकालमनागतानामपुस्तनीवीकानां वा देयदशबन्धो दण्डः ।

कार्मिके चोपस्थिते कारणिकस्याप्रतिबध्नतः पूर्वस्साहसदण्डः, विषयंये कार्मिकस्य द्विगुणः ॥

प्रचारसमं महामाताः समग्राः श्रावयेयुः अविषममाताः। पृथग्भूतो मिथ्याबादी चैषामुत्तमदण्डं दद्यात् ।

अकृताहोरूपहरं मासमाकाङ्क्षेत । मासादूर्ध्व मासदिशतोत्तरं दण्डं दद्यात् ।

अल्पशेषनीविकं पञ्चरात्रमाकाङ्क्षेत ततः परम् ।

कोशपूर्वमहोरूपहरं धर्मव्यवहारचरित्रसंस्थानसङ्कलननिर्वर्तनानुमानचार-प्रयोगैरवेक्षेत । दिवसपञ्चरात्रपक्षमासचातुर्मास्यसंवत्सरैश्च प्रतिसमा-नयेत् । व्युष्टदेशकालमुखोत्पत्त्यनुदृत्तिप्रमाणदायकदापकनिबन्धकप्रतिग्राहकैश्चाय समानयेत् । व्युष्टदेशकालमुखलाभकारणदेययोगपरिमाणाज्ञापकोद्वारकविधातक-प्रतिग्राहकैश्च व्ययं समानयेत् । व्युष्टदेशकालमुखानुवर्तनरूपलक्षणगरिमाण -निक्षेपभाजनगोपायकैश्च नीवीं समानयेत् ।

राजार्थे कारणिकस्याप्रतिबध्नतः प्रतिषेधयतो वाऽऽज्ञां निबन्धादाय -व्ययमन्यथा वापि विकल्पयतः पूर्वस्साहसदण्डः ।

क्रमावहीनमुत्क्रममिवज्ञातं पुनरुक्तं वा वस्तुकमविलखतो द्वादशपणो दण्डः । निवीमविलखतो द्विगुणः, भक्षयतोऽष्टगुणः, नाशयतः पञ्चबन्धः प्रतिदानं च । मिथ्यावादे स्तेयदण्डः । पश्चात् प्रतिज्ञाते द्विगुणः प्रस्मृतोत्पन्ने च—

> अपराधं सहेताल्पं तुष्येदल्पेऽपि चोदये। महोपकारं चाध्यक्षं प्रग्रहेणाभिपूजयेत्।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे सप्तमोऽध्यायः ; अक्षपटले गाणनिक्याधिकारः आदितोऽष्टाविंशः ।

#### २६ प्रक. समुद्यस्य युक्तापहृतस्य प्रत्यानयनम् ।

कोशपूर्वास्सर्वारम्भाः । तस्मात्पूर्वं कोशमवेक्षेत ।

प्रचारसमृद्धिश्चरित्रानुग्रहश्चोरग्रहो युक्तप्रतिषेधः सस्यसम्पत्पण्यबाहुल्य-मृपसर्गप्रमोक्षः परिहरक्षयो हिरण्योपायनमिति कोशवृद्धः ।

प्रतिबन्धः प्रयोगो व्यवहारोऽवस्तारः परिहापणमुपभोगः परिवर्तनमपहार-श्चेति कोशक्षयः ॥

सिद्धीनामसाधनमनवतारणमप्रवेशनं वा प्रतिबन्धः । तत्न दशबन्धो दण्डः ।। कोशद्रव्याणां वृद्धिप्रयोगः प्रयोगः । पण्यव्यवहारो व्यवहारः । तत्न फलद्विगुणो दण्डः ।

सिद्धं कालमप्राप्तं करोत्यप्राप्तं प्राप्तं वेत्यवस्तारः । पत्न पश्चबन्धो दण्डः । क्लृप्तमायं परिहापयित व्ययं वा विवर्धयतीति परिहापणम् । तत्न हीनचतुर्गुणो दण्डः ।

स्वयमन्यैर्वा राजद्रव्याणामुपभोजनमुपभोगः । तत्न रत्नोपभोगे घातः ; सारोपभोगे मध्यमस्साहसदण्डः, फल्गुकुप्योपभोगे तच्च तावच्च दण्डः ।

राजद्रव्याणामन्यद्रव्येणादानं परिवर्तनं, तदुपभोगेन व्याख्यातम् ।

सिद्धमायं न प्रवेशयित, निबद्धं व्ययं न प्रयच्छिति, प्राप्तां नीवीं विप्रतिजानीत इत्यपहारः । तत्र द्वादशगुणो दण्डः ।

तेषां हरणापायाश्चत्वारिशत्-

पूर्वं सिद्धं पश्चादवतारितं; पश्चात्सिद्धं पूर्वमवतारितं; साध्यं न सिद्धं; असाध्यं सिद्धं; सिद्धमसिद्धं कृतं; असिद्धं सिद्धं कृतम्; अल्पिद्धं बहुकृतं; बहुसिद्धमल्पं कृतम्; अन्यत् सिद्धमन्यत्कृतं : अन्यतिस्सद्धमन्यतः कृतं; देयं न दत्तं; अदेयं पत्तं; काले न दत्तम्; अकाले दत्तं; अल्पं दत्तं बहुकृतं; बहुदत्तमल्पं कृतम्; अन्यद्त्तमन्यत्कृतम्; अन्यतो दत्तमन्यतः कृतं; प्रविष्ट-मप्रविष्टं कृतं; अप्रविष्टं प्रविष्टं कृतं; कुप्यमदत्तमूल्यं प्रविष्टम्; दत्तमूल्यं न प्रविष्टं; सङ्क्षेपो विक्षेपः कृतः; विक्षेणः सङ्क्षेपो वा; महार्घमल्पार्घेण परिवर्तितं; अल्पार्धं महार्घेण वा; समारोपितोऽर्घः, प्रत्यवरोपितो वा; रात्रयः समारोपिता, प्रत्यवरोपिता वा; संवत्सरो मासविषमः कृतः; मासो दिवसविषमो वा; समागमविषमः, मुखविषमः, धार्मिकविषमः, निर्वर्तनविषमः, पिण्डविषमः, वर्णविषमः, अर्घविषमः, मानविषमः, मापनविषमः, भाजनविषमः इति हरणोपायाः।

तत्र)पयुक्तिनिधायकिनवन्धकप्रतिग्राहकदायकदापकमित्त्रमित्विवयावृत्यकराने-कैकशोऽनुयुञ्जीत । मिथ्यावादे चैषां युक्तसमो दण्डः । प्रचारे चापघोषयेत्— "अमुना प्रकृतेनोपहताः प्रज्ञापथन्त्वित" । प्रज्ञापयतो यथोपघातं दापयेत् । अनेकेषु चाभियोगेष्वपञ्ययमानस्सकृदेव परोक्तः सर्वं भजेत । वैषम्ये सवादा-नुयोगं दद्यात् । महत्यार्थापचारे चौल्पेनापि सिद्धस्सर्वं भजेत ।

कृतप्रतिधातावस्यः सूचको निष्पन्नार्थष्षष्ठमंशं लभेत । द्वादशमंशं भृतकः । प्रभूताभियोगादल्पनिष्पत्तौ निष्पन्नस्यांशं लभेत । अनिष्पन्ने शारीरं हैरण्यं वा दण्डं लभेत । न चानुग्राह्यः ।

> निष्पत्तौ निक्षिपेद्वादमात्मानं वाऽपवाहयेत् । अभियुक्तोपजापात्तु सूचको वधमाप्नुयात् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे अष्टमोऽध्यायः समुदयस्य युक्तापहृतस्य प्रत्यानयनम्, आदितः एकोनित्रिशः।

### २७ प्रक. उपयुक्तपरीक्षा ।

अमात्यसम्पदोपेतास्सर्वाध्यक्षाश्शक्तितः कर्मसु नियोज्याः। कर्मसु चैषां नित्यं परीक्षां कारयेत् चित्तानित्यत्वान्मनुष्याणाम्। अश्वसधर्माणो हि मनुष्या नियुक्ताः कर्मसु विकुवंते।

तस्मात्कर्तारं करणं देशं कालं कार्यं प्रक्षेपमुदयं चैषु विद्यात् । ते यथा -सन्देशमसंहता अविगृहीताः कर्माणि कुर्युः । संहता भक्षयेयुः, विगृहीता विनाशयेयुः । न चानिवेद्यभर्तुः किश्विदारम्भं कुर्युरन्यतापत्प्रतीकारेभ्यः । प्रमादस्थानेषु चैषामत्ययं स्थापयेद्दिवसवेतनव्ययद्विगुणम् ।

यश्चेषां यथाऽऽदिष्टमर्थ सविशेष वा करोति स स्थानमानी लभेत ।

"अल्पायतिक्चेन्महाव्ययो 'भक्षयति'। विपर्यये, यथाऽऽयतिव्ययश्च न भक्षयति'' इत्याचार्याः । "अपसर्पणैवोपलभ्यते' इति कौटिल्यः ।

यस्समुदयं परिहापयित स राजार्थं भक्षयित । स चेदज्ञानादिभिः परि-हापयित तदेनं यथागुणं दापयेत् । यस्समुदयं द्विगुणमुद्भावयति स जनपदं भक्षयति । स चेद्राजार्थमुपनय-त्यल्पापराधे वारयितव्यः ; महति यथाऽपराधं दण्डयितव्यः ।

यस्समुदयं व्ययमुपनयति स पुरुषकर्माणि भक्षयति । स कर्मेदिवसद्रव्य-मूल्यपुरुषवेतनापहारेषु यथाऽपराधं दण्डयितव्यः ।

तस्मादस्य यो यस्मिन्नधिकरणे शासनस्थः स तस्य कर्मणो याथातथ्यमाय-व्ययौ च व्याससमासाभ्यामाचक्षीत ।

मूलहरतादात्विककदर्याश्च प्रतिषेधयेत् । , यः पितृपैतामहमर्थमन्यायेन भक्षयित, स मूलहरः । यो यद्यदुत्पद्यते तत्तः द्वक्षयित स तादात्विकः । यो भृत्यात्मपीडाभ्यामुपचिनोत्यर्थं स कदर्यः । स पक्षवांश्चेदनादेयः ; विषयंये पर्यादातव्यः ।

यो महत्यर्थसमुदये स्थितः कदयंस्सिश्चित्ते, उपनिधत्ते, अवस्नावयित वा— सिन्नधत्ते स्ववेश्मिनि, अविनिधत्ते पौरजानपदेषु, अवस्नावयित परिवषये,—तस्य सत्रो मन्त्रिमित्नभृत्यबन्धुपक्षमार्गीतं गीतं च द्रव्याणामुपलभेत ।

यश्चास्य परविषये सन्वारं कुर्यात्तमनुप्रविषय मन्त्रं विद्यात् । सुविदिते शतुशासनापदेशेनैनं घातयेत् ।

तस्मादस्याघ्यक्षाः सङ्ख्ञ्चायकलेखकरूपदर्शकनीवीग्राहकोत्तराध्यक्षसखाः कर्माणि कुर्यु: ।

उत्तराध्यक्षाः हस्त्यश्चरथारोहास्तेषामन्तेवासिनश्शिल्पशौचयुक्तास्सङ्ख्याय-कादीनामपसर्पाः ।

बहुमुख्यमनित्यं चाधिकरणं स्थापयेत्।

यथाह्यनास्वादयितुं न शक्यं जिह्वातलस्यं मधु वा विषं वा । अर्थस्तथा ह्यथैंचरेण राज्ञः स्वल्पोऽप्यनास्वादयितुं न शक्यः ॥ भत्स्या यथाऽन्तस्सलिले चरन्तो जातुं न शक्याः सलिलं पिवन्तः । युक्तास्तथा कार्यविधौ निथुक्ता जातुं न शक्या धनमाददानाः ॥ अपि शक्या गतिर्जातुं पततां से पतिवणाम् । न त प्रच्छन्नभावानां यक्तानां चरतां गतिः ॥

न तु प्रच्छन्नभावानां युक्तानां चरतां गतिः ।। आस्त्रावयेच्चोपचितान् विपर्यस्येच्च कर्मसु । यथा न भक्षयन्त्यर्थं भक्षितं निवंमन्ति वा ॥ न भक्षयन्ति ये त्वर्थान्न्यायतो वर्धयन्ति च । नित्याधिकाराः कार्यास्ते राज्ञः प्रियहिते रताः ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे नवमोऽध्यावः ; उपयुक्तपरीक्षा, आदितस्त्रिशः ।

# २८ प्रक. शासनाधिकारः।

शासने शासनिमत्याचक्षते । शासनप्रधाना हि राजानः, तन्मूलत्वात् सन्धिवग्रहयोः ।

तस्मादमात्यसम्पदोपेतः सर्वसमयविदाशुग्रन्थश्चार्वक्षरो लेखवाचनसमर्थो लेखकः स्यात् । सोऽव्यग्रमना राज्ञस्सन्देशं श्रुत्वा निश्चितार्थं लेखं विदध्याद्, देशैश्वर्यवंशनामधेयोपचारमीश्वरस्य देशनामधेयोपचारमनीश्वरस्य।

जाति कुलं स्थानवयश्श्रुतानि कर्मद्धिशीलान्यथ देशकाली। यौनानुबन्धं च समीक्ष्य कार्ये लेखं विदध्यात्पुरुषानुरूपम्।।

अयंक्रमः, सम्बन्धः, परिपूर्णता, माधुर्यमौदायं, स्पष्टत्विमिति लेखसम्पत् । तत्र यथावदनुपूर्विक्रया---प्रधानस्यार्थस्य पूर्वमिभिनिवेश इत्यर्थस्य क्रमः । प्रस्तुतस्यार्थस्यानुपरोधादुत्तरस्य विधानमासमाप्तेरिति सम्बन्धः ।

अर्थपदाक्षराणामन्यूनातिरिक्तता हेतूदाहरणदृष्टान्तैरथीपवर्णनाऽश्रान्तपदेति परिपूर्णता ।

सुखोपनीतचार्वर्थशब्दाभिधानं माधुर्यम् । अग्राम्यशब्दाभिधानमौदार्यम् । प्रतीतशब्दप्रयोगस्स्पष्टत्वमिति । अकारादयो वर्णाः विषष्टः ।

वर्णसङ्घातः पदम् । तच्चतुर्विधं नामाख्यातोपसर्गनिपाताश्चेति ।

तत्र नाम सत्त्वाभिधायि। अविशिष्टलिङ्गमाख्यातं क्रियावाचि। कियाविशेषतकाः प्रादय उपसर्गः। अन्ययाश्चादयो निपाताः।

पदसमूहो वाक्यमथंपरिसमाप्तौ । एकपदावरस्त्रिपदपरः परपदार्थानुरोधेन वर्गः कार्यः । लेखकपरिसंहरणार्थं इतिशब्दो वाचिकमस्येति च ।

निन्दा प्रशंसा पृच्छा च तथाऽऽख्यानमथार्थना । प्रत्याख्यानमुपालम्भः प्रतिषेधोऽथ चोदना ॥ सान्त्वमभ्यवपत्तिश्च भत्संनानुनयौ तथा । एतेष्वर्थाः प्रवर्तन्ते तयोदशमु लेखजाः ॥

तत्नाभिजनशरीरकर्मणां दोषवचनं निन्दा। गुणवचनमेतेषामेव प्रशंसा। "कथमेत"दिति पृच्छा। "एवम्" इत्याख्यानम्। देहीत्यर्थना। "न प्रयच्छामा" इति प्रत्याख्यानम्। अननुरूपं भवते इत्युपालम्भः। "मा कार्षीः" इति प्रतिषेधः। "इदं क्रियताम्" इति चोदना। "योऽहं स भवान्, मम यद् द्रव्यं तद्भवतः" इत्युपग्रहः सान्त्वम्। व्यसनसाहाय्यमभ्यवपत्तिः। सदोष-मायतिप्रदर्णनमभिभत्संनम्।

अनुनयस्त्रिविधोऽर्थकृतावितिकमे पुरुषादि व्यसने चेति । प्रज्ञापनाज्ञापरिदानलेखा -स्तथा परीहारिनमृष्टलेखौ । प्रावृत्तिकश्च प्रतिलेख एव सर्वेत्नगश्चेति हि शासनानि ।।

अनेन विज्ञापितमेवमाह तद्दीयतां चेद्यदि तत्त्वमस्ति । राज्ञस्समीपे वरकारमाह प्रज्ञापनेषा विविधोपदिष्टा ।।

> भर्तुराज्ञा भवेद्यत्न निग्रहानुग्रहौ प्रति । विशेषेण तु भृत्येषु तदाज्ञालेखलक्षणम् ।। यथाऽहंगुणसंयुक्ता पूजा यत्नोपलक्ष्यते । अप्याधौ परिदाने वा भवतस्तावुपग्रहौ ।।

जातेविक्षेषेषु पुरेषु चैव
ग्रामेषु देशेषु च तेषु तेषु ।
अनुग्रहो यो नृपतेनिदेशात्
तज्ज्ञः परीहार इनि व्यवस्येत् ।।
निमुद्धिटस्थापना कार्या करणे वचने तथा ।

एषा वाचिकलेखस्स्यात् भवेन्नैसृष्टिकोऽपि वा ।। विविधां दैवसंयुक्तां तत्त्वजां चैव मानुषीम् । द्विविधां तां व्यवसन्ति प्रवृत्ति शासनं प्रति ।। दृष्ट्वा लेखं यथातत्त्वं ततः प्रत्यनुभाष्य च । प्रति लेखो भवेत्कार्यो यथा राजवचस्तथा ।। यतेश्वरांश्चाधिकृतांश्च राजा रक्षोपकारौ पथिकार्थमाह । सर्वत्नगो नाम भवेत्स मार्गे देशे च सर्वत्न च वृदितव्यः ।

उपायास्सामोपप्रदानभेददण्डाः ।

तत्र साम पञ्चिवधं—गुणसङ्कीर्तनं सम्बन्धोपाख्यानं परस्परोपकार-सन्दर्शनमायतिप्रदर्शनमात्मोपनिधानमिति ।

तत्नाभिजनशरीरकर्मप्रकृतिश्रुतिद्रव्यादीनां ।गुणागुणग्रहणं प्रशंसा स्तुति -र्गुणसङ्कीतंनम् ।

ज्ञातियोनमोखस्रोवकुलहृदयिमत्रसङ्कीर्तनं सम्बन्धोपाख्यानम् ।
स्वपक्षपरपक्षयोरन्योन्योपकारसङ्कीर्तनं परस्परोपकारसन्दर्शनम् ।
अस्मिन्नेबं कृत इदमावयोर्भवतीत्याशाजननमायतिप्रदर्शनम् ।
"योऽहं स भवान्यन्मम द्रव्यं तद्भवता स्वकृत्येषु प्रयोज्यताम्" इत्यात्मोपनिधानमिति ।

उपप्रदानमर्थोपकारः।

शङ्काजननं निर्भत्सनं च भेदः।

वधः परिक्लेशोऽर्थंहरणं दण्ड इति ।

अकान्तिव्यीघातः पुनरुक्तमपशब्दः संप्लव इति लेखदोषाः ॥

तत्र कालपत्रकमचारुविषमविरागाक्षरत्वमकान्तिः।

पूर्वेण पश्चिमस्यानुपपत्तिव्याघातः। उक्तस्याविशेषेण द्वितीयमुच्चारणं पुनरुक्तम्।

लिङ्गवचनकालकारकाणामन्ययाप्रयोगोऽपशब्दः । अवर्गे वर्गकरणं वर्गे चावर्गिकया गुणविपर्यासस्सं प्लव इति । सर्वशास्त्राण्यनुकम्य प्रयोगमुपलभ्य च । कौटिल्येन नरेन्द्रार्थे शासनस्य विधिः कृतः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे दशमोऽध्यायः। शासनाधिकारः। आदित एकविशः।

# २६ प्रक. कोशप्रवेश्यरत्वपरीक्षा।

कोशाध्यक्षः कोशप्रवेश्यं रत्नं सारं फल्गु कुप्यं वा तज्जातकरणाधिष्ठितः प्रतिगृह्णीयात् ।

ताम्रपणिकं पाण्डचकवाटकं, पाशिक्यं, कौलेयं, चौर्णेयं, माहेन्द्रं, कार्दिमिकं, स्रौतसीयं, हादीयं, हैमवतं च मौक्तिकम् ।

शङ्खः श्रुक्तिः प्रकीर्णकं च योनयः ।

मसूरकं त्रिपुटकं कूर्मकमधंचन्द्रकं कञ्चुिकतं यमकं कर्तकं खरकं सिक्थकं कामण्डलुकं श्यावं नीलं दुर्विद्धं चाप्रशस्तम् ।

स्थूलं वृत्तं निस्तलं भ्राजिष्णु स्वेतं गुरु स्निग्धं देशविर्द्धं च प्रशस्तम् । शीर्षकमुपशीर्षकं प्रकाण्डमवघाटकं तरलप्रतिवन्धं चेति यष्टिप्रभेदाः ।

यष्टीनामष्टसहस्रमिन्द्रच्छन्दः । ततोऽधं विजयच्छन्दः । शतं देवच्छन्दः । चतुष्पष्टिरधंहारः । चतुष्पश्चाशाद्रश्मिकलापः । द्वाविश्रद्गुच्छाः । सप्त-विशितिनंक्षत्रमाला । चतुविशितिरघंगुच्छः । विशितिर्माणवकः । ततोऽधंमधं-माणवकः । एत एव मणिमध्यास्तन्माणवका भवन्ति । एकशीर्षकण्युद्धो हारः । तद्वच्छेषाः । मणिमध्योऽधंमाणवकः व्रिक्तकः फलकहारः पञ्चफलको वा । सूत्रमेकावली शुद्धा । सैव मणिमध्या यष्टिः । हेममणिचित्रा रत्ना-वली । हेममणिमुक्तान्तरोऽपवर्तकः । सुवर्णसूत्रान्तरं सोपानकम् । मणिमध्यं वा मणिसोपानकं ।

तेन शिरोहस्तपादकटीकलापजालकविकल्पा व्याख्याताः ।

मणिः कौटो मौलेयकः पारसमुद्रकश्च ।

•सौगन्धिकः पद्मरागः अनवद्यरागः पारिजातपुष्पकः बालसूर्यकः । वैदूर्यः— उत्पलवर्णः शिरीरपुष्पक उदकवर्णो वंशरागः गुकपत्नवर्णः पुष्यरागो गोमूत्रको गोमेवकः ।

नीलावलीय इन्द्रनीलः कलायपुष्पको महानीलो जाम्वबाभो जीमूतप्रभो नन्दकः स्रवन्मध्यः ।

शुद्धस्फटिकः मूलाटवणैः शीतव्ष्ठिः सूर्यंकान्तश्चेति मणयः।

षडश्रश्चतुरश्चो वृत्तो वा, तीव्ररामः संस्थानवानच्छस्स्निग्धो गुरुर्राचिष्मानन्त-गंतप्रभः प्रभानुत्रेपी चेति मणिगुणाः ।

मन्दरागप्रभः सशकंरः पुष्पिच्छद्रः खण्डो दुर्विद्धो लेखःकीणं इति दोषाः । विमलकः सस्यकोऽञ्जनमूलकः पित्तकस्युलभको लोहिताक्षोऽमृगाश्मको ज्योतीरसको मैलेयक आहिच्छत्रकः कूर्पः प्रतिकूर्पः सुगन्धिकूर्पः क्षीरपकः गुक्तिचूर्णकः शिलाप्रबालकः पुलकः गुक्रपुलकः इत्यन्तरजातयः ।

शेषाः काचमणयः।

सभाराष्ट्रकं मध्यमराष्ट्रकं कास्तीरराष्ट्रकं श्रीकटनकं मणिमन्तकिमन्द्रवानकं च वज्रम् ।

खनिस्स्रोतः प्रकीर्णकं च योनयः ।

मार्जाराक्षकं च शिरीषपुष्पकं गोमूतकं गोमेदकं शुद्धस्फटिकं मूलाटी-पुष्पकवर्णं मिशवर्णानामन्यतमवर्णमिति वज्जवर्णाः ।

स्थूलं स्निग्धं गुरु, प्रहारसहं, समकोटिकं भाजनलेखितर्कुन्नामि भ्राजिष्णु च प्रशस्तम् ।

नष्टकोणं निरश्चि पार्श्वापवृत्तं च अप्रशस्तम् ।

प्रवालकं आलककन्दकं, वैवर्णिकं च रक्तं पद्मरागं च करटगभिकनिका-वर्जमिति ।

चन्दनं सातनं रक्तं भूमिगन्धि । गोशीर्षं क कालताम्रं मत्स्यगन्धि । हिरचन्दनं शुकपत्नवर्णमाम्रगन्धि । ताणसं च । ग्रामेश्कं रक्तं रक्तकालं वा वस्तमूत्रगन्धिः । दैवसभेयं रक्तं पद्मगन्धि । जावकं च । जोङ्गकं रक्तं रक्तकालं वा । स्निग्धं । तौरूपं च । मालेयकं पाण्डुरक्तं । कुचन्दनं काल-वर्णकं गोमूत्रगन्धे कालपर्वतकं रूक्षमगरुकालं रक्तं रक्तकालं वा । कोशाकारपर्वतकं कालं कालचित्रं वा । शातोदकीयं पद्माभं कालस्निग्धं वा । नागपर्वतकं रूक्षं शैवलवर्णं वा । शाकलं किपलमिति ।

लघु स्निग्धमश्यानं सर्पिस्नेहलेपि गन्धसुखं त्वगनुसार्यनुत्वणमविराग्युष्ण-महं दाहग्राहि सुखस्पर्शनमिति चन्दनगुणाः।

अगर--जोङ्गकं कालं कालिवतं मण्डलिवतं वा। श्यामं दोङ्गैकं। पारसमूद्रकं चित्ररूपम् उशीरगन्धि नवमालिकागन्धि वेति।

गुरु स्निग्धं पेणलगन्धि निर्हारि अग्निसहमसंप्लुतधूमं समगन्धं विमर्देसह-मित्यगरुगुणाः ।

तैलपणिकं — अणोकग्रामिकं मांसवर्णं पद्मगन्धि । जोङ्गकं रक्तपीतकमुत्पल-गन्धि गोमूलगन्धि वा । ग्रामेरुकं स्निग्धं गोमूलगन्धि । सौवर्णकुडचकं रक्तपीतं मातृलुङ्गगन्धि । पूर्णकद्वीपकं पद्मगन्धि नवनीतगन्धि वेति ।

भद्रश्रीयं — पारलोहित्यकं जातीवर्णं । आन्तरवत्यमुशीरवर्णः । उभयं कुष्ठगन्धि चेति ।

[२ अधि. ११ अध्या.

कालेयकः स्वर्णभूमिजस्स्निग्धपीतकः । शौत्तरपर्वतको रत्नपीतकः इति साराः।

पिण्डक्वाथधूमसहमविरागि योगानुविधायि च । चन्दनागरुवच्च तेषां गुणाः ।

कान्तनावकं प्रैयकं चौत्तरपर्वतकं धर्म। कान्तनावकं मयूरग्रीवाभं। प्रैयकं नीलपीतं श्वेतं लेखाविन्दुचित्रं तदुभयमष्टाङ्गलायामम्।

विसी महाबिसी च द्वादशग्रामीये। अव्यक्तः रूपा दुहिलिका चित्रा वा बिसी। परुषा श्वेतप्राया महाविसी। द्वादशाङ्गलायाममुभयम्।

श्यामिका कालिका कदली चन्द्रोत्तरा शाकुला चारोहजाः। कपिला विन्दुचिता वा श्यामिका। कालिका कपिला कपोतवर्णा वा। तदुभयमष्टा-क्रुलायामम्। परुषा कदली हस्तायता। सैव चन्द्रचित्रा चन्द्रोत्तरा। कदलीविभागा शाकुला कोठमण्डलचित्रा कृतकर्णिकाऽजिनचित्रा चेति।

सामूरं चीनसी सामूली च वाह्नवेयाः । षट्विंशदङ्गुलमञ्जनवर्णं सामूरम् । चीनसी रक्तकाली पाण्डुकाली वा । सामूली गोधूमवर्णेति ।

सातिना नलतूला वृत्तपुच्छा च औद्राः। सातिन कृष्णा। नलतूला नलतूलवर्णा। कपिला वृत्तपुच्छा च। इति चर्मजातयः।

चर्मणां मृदु स्निग्धं बहुलरोम च श्रेष्ठम्।

शुद्धं शुद्धरक्तं पद्मरक्तं च आविकम् । खचितं वानचित्नं खण्डसङ्घात्यं तन्तुविच्छित्नं च ।

कम्बलः केचलकः कलमितिका सौमितिका तुरगास्तरणं वर्णकं तलिच्छकं वारवाणः परिस्तोमः समन्तभद्रकं च आविकम् ।

पिच्छिलमाईमिव च सूक्ष्मं मृदु च श्रेष्ठम्।

अध्यय्लोतिसङ्घात्या कृष्णा भिङ्गिसी वर्षवारणमपसारक इति नैपालकम् । सम्पुटिका चतुरश्रिका लम्बरा कटवानक प्रावरकः सत्तलिकेति मृगरोम ।

वाङ्गकं श्वेतं स्निग्धं दुकूलं, पौण्ड्रकं श्यामं मणिस्निगैधं, सौवर्णकुडचकं सूर्यवर्णं मणिस्निग्धोदकवानं वतुरशवान व्यामिश्रवानं च ।

एतेषामेकांशुकमधंद्वित्रिचतुरंशुकमिति । तेन काशिकं पोण्डकं च क्षोम व्याख्यातम ।

मागधिका पौण्डिका सौवर्णकुडचका च पत्नोर्णाः। नागवृक्षो लिकुचो वकुलो वटश्च योनयः। पीतिका नागवृक्षिका, गोधूमवर्णा लैकुची, इदेता वाकुली, शेषा नवनातवर्ण।

तासां सौवर्णकुण्डचका श्रेष्ठा। तया कौशेयं चीनपट्टाश्च चीनभूमिजा व्याख्याताः।

माधुरमापरान्तकं कालिङ्गकं काणिकं वाङ्गकं वात्सकं माहिषकं च कार्पासिकं श्रेष्ठमिति ।

> अतः परेषां रत्नानां प्रमाणं मूल्यलक्षणम् । जाति रूपंच जानीयान्निधानं नवकर्मच ॥ पुराणप्रतिसंस्कारं कर्मगुह्यमुपस्करान् । देशकालपरीभोगं हिस्राणांच प्रतिकियाम् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे एकादशोऽध्यायः कोशप्रवेषयरत्नपरीक्षा, आदितो द्वाविशः ।

# ३० प्रक. आकरकर्मान्तप्रवर्तनम् ।

आकराध्यक्षः गुल्बधातुशास्त्ररसपाकमणिरागज्ञस्तज्ज्ञसखो वा तज्ज्ञातकर्म-करोपकरणसम्पन्नः किट्टमूषाङ्गारभस्मलिङ्गं वाऽऽकरं भूतपूर्वमभूतपूर्व वा भूमि-प्रस्तररसधातुमत्यर्थवर्णगौरवमुग्रगन्धरसं परीक्षेत ।

पर्वतानामभिज्ञातोद्देशानां बिलगुहोपत्यकाऽलयनगूढ्खातेष्वन्तःप्रस्यन्दिनो जम्बूचूततालफलपक्वहरिद्राभेदहरितालक्षौद्रहिङ्गु लुकपुण्डरीकशुकमयूरपत्नवर्णा-स्सवर्णोदकौषधीपर्यन्ताश्चिकणा विशवा भारिकाश्च रसाः काञ्चनिकाः ।

अप्सु निष्ठचूतास्तैलविद्वसिपणः पङ्कमलग्राहिणश्च ताम्ररूप्ययोश्शृतादुपरि वेद्वारः ।

सत्प्रतिरूपकमुग्रगन्धरसं शिलाजतु विद्यात् ।

पीतकास्ताम्रकास्ताम्रतीतका वा भूमिप्रस्तरधातवो भिन्ना नीलराजीवन्तो मुद्गमाषक्रसरवर्णा वा दिधविन्दुपिण्डचित्रा हरिद्रा हरीतकीपद्मपत्नशैवलयकृत्-प्लीहानवद्यवर्णा भिन्नाश्च प्रचुवालुकालेखाविन्दुस्वस्तिकवन्तः सगुिकका अचिष्म-नतस्ताप्यमाना न भिद्यन्ते बहुफेनधूमाश्च सुवर्णधातवः प्रतीवापार्थास्ताम्र-रूप्यवेधनाः।

शङ्क्षकर्पूरस्फटिकनवनीतकपोतपारावतिवमलकमयूरग्रीवावर्णाः सस्यकगोमे-दकगुडमत्स्यण्डिकावर्णाः कोविदारपद्मपाटलीकलायक्षोमातसीपुष्पवर्णास्ससीसाः साञ्जनाः विस्ना भिन्नाः व्वेताभाः कृष्णाः कृष्णाभाः व्वेताः सर्वे वा लेखाविन्दु-चिन्ना मृदक्ये ध्यायमाना न स्फुटन्ति बहुफेनधूमाश्च रूप्यधातवः ।

सर्वधातूनां गौरववृद्धौ सत्त्ववृद्धिः । तेषामणुद्धा मूढगर्भा वा तीक्ष्णमूत्र-क्षारभाविता राजवृक्षवटपीलुगोपित्तरोचनामहिषखरकटमूललण्डपिण्डवद्धास्तत्प्र-तीवापास्तदवलेपा वा विशुद्धास्स्रवन्ति ।

यवमाषतिलपलाशपीलुक्षारैगोंक्षीराजक्षीरैर्वा कदलीवज्रकः-दप्रतीवापो मार्दवकरः ।

मधुमधुकमजापयः सतैलैं
घृतगुडकिण्वयुतं सकन्दलीकम् ।
यदिष शतसहस्रधा विभिन्नं
भवति मृदु विभिरेव तन्निषेकैः ॥

गोदन्तश्रुङ्गप्रतीवापो मृदुस्तम्भनः।

भारिकस्स्निग्धो मृदुश्च प्रस्तरधातुर्भूमिभागो वा पिङ्गलो हरितः पाटलो लोहितो वा ताम्रधातुः ।

काकमेचकः कपोतरोचनावर्णः श्वेतराजिनद्धो वा विस्नस्सीसधातुः।

ऊषरकर्बुरः पक्वलोष्टवर्णो वा त्रसुधातुः । कुरुम्बः पाण्डुरोहितस्सिन्दु-वारपुष्पवर्णो वा तीक्ष्णधातुः ।

काकाण्डभुजपत्नवर्णो वा वैकृत्तकधातुः।

अच्छिस्स्निग्धः सप्रभो घोषवान् शीततीवस्तनुरागश्च मणिधातुः।

धातुसमुत्थितं तज्ज्ञातकर्मान्तेषु प्रयोजयेत् ।

कृतभाण्डव्यवहारमेकमुखमत्ययं चान्यत्न कर्तृकेतृविकेणां स्थापयेत् ।

आकरिकमपहरन्तमष्टगुणं दापयेदन्यत्र रत्नेभ्यः।

स्तुनमिनसृष्टोपजीविनं च बद्धाकर्म कारयेत्, दाण्डोपकारिणं च । व्यय-क्रियाभारिकमाकरं भागेन प्रक्रयेण वा दद्यात्, लाघविकमात्मना कारयेत् ।

लोहाध्यक्षः ताम्रसीसत्रपुर्वेकृन्तकारक्टवृत्तकंसताललोध्रकमन्तिान् वारयेत्, लोहमाण्डव्यवहारं च ।

लक्षणाध्यक्षः चतुर्भागताम् रूप्यरूपं तीक्ष्णत्रपुसीसाञ्जनानामन्यतममाष-वीजयुक्तः कारयेत् पणमधंपणं पादमप्टभागमिति । पादाजीवं ताम्ररूपं माषकमधंमायकं काकणीमधंकाकणीमिति ।

रूपदर्शक: पणयातां व्यवहारिकीं कोणप्रवेश्यां च स्थापयेत् ।

रूपिकमण्डकं शतं, पश्चकं शतं व्याजीं, पारीक्षिकमण्डभागिकं शतं। पश्चिविशतिपणमत्ययं चान्यत्र कर्तृ केनृतिकेनुपरीक्षितृभ्यः। खन्यध्यक्षः शङ्खवज्रमणिमुक्ताप्रवालक्षारकर्मान्तान् कारयेत् पणनव्यवहारं च। लवणाध्यक्षः पाकमुक्तं लवणभागं प्रक्रयं च यथाकालं सङ्गृह्णीयात्, विक्रयाच्च मूल्यं रूपं व्याजीं च।

आगन्तुलवणं षड्भागं दद्यात् । दत्तभागविभागस्य विक्रयः । पञ्चकं शतं ब्याजीं, रूपं, रूपिकं च । क्रेता शुल्कं, राजपण्यच्छेदानुरूपं च वैधरणं दद्यात् । अन्यत्न क्रेता षट्छतमत्ययं च ।

विलवणमुत्तमं दण्डं दद्यौत्, अनिमृष्टोपजीवी च अन्यत्न वानप्रस्थेभ्यः । श्रोतियास्तपस्विनो विष्टयश्च भक्तलवणं हरेयुः । अतोऽन्यो लवणक्षारवर्गः शुल्कं दद्यात् ।

एवं मूल्यं विभागं च व्याजीं परिघमत्ययम् ।

शुल्कं वैधरणं दण्डं रूपं रूपिकमेव च ।।

खिनभ्यो द्वादशिवधं धातुं पण्यं च संहरेत् ।

एवं सर्वेषु पण्येषु स्थापयेन्मुखसंग्रहम् ।।

आकरप्रभवः कोशः कोशाहण्डः प्रजायते ।

पृथिवी कोशदण्डाभ्यां प्राप्यते कोशभूषणा ।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे द्वादशोऽध्यायः आकरकर्मान्तप्रवर्तनम्, आदितः त्रयस्त्रिंशः ।

# ३१ प्रक. अक्षशालायां सुवर्णाध्यक्षः।

सुवर्णाध्यक्षः सुवर्णंरजतकर्मान्तानामसम्बन्धावेशनचतुश्शालामेकद्वारामक्ष-शालां कारयेत् । विशिखामध्ये सौर्वाणकं शिल्पवन्तमभिजातं प्रात्ययिकं च स्थापयेत् ।

जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं वैणवं शृङ्गिशुक्तिजं जातरूपं रसविद्ध-माकरोद्गतं च सुवर्णम् ।

किञ्जल्कवणं मृदु स्निग्धमनादि भ्राजिष्णु च श्रेष्ठम्, रक्तपीतकं मध्यमम्, रक्तमवरं श्रेष्ठानाम् ।

पाण्डु ब्वेतं चाप्राप्तकं । तद् येनाप्राप्तकं तच्चतुर्गुणेन सीसेन शोधयेत्, सीसान्वयेन भिद्यमानं गुष्कपटलैध्मिपयेत्, रूक्षत्वाद्भिद्यमानं तैलगोमये निषेचयेत् ।

आकरोद्गतं सीसान्वयेन भिद्यमानं पाकपत्नाणि कृत्वा गण्डिकासु कुट्टयेत्, कन्दलीवज्ञकन्दकल्के वा निषेचयेत्।

तुत्थोद्गतं गौडिकं काम्बुकं चाक्रवालिकं च रूप्यम् । श्वेतं स्निग्धं मृदु च श्रेष्ठम् । विपर्यये स्फोटनं च दुष्टम् । तत्सीसचतुर्भागेन शोधयेत् ।

उद्गतचूलिकमच्छं म्राजिष्णु दिधवणं च शुद्धम्।

शुद्धस्यैको हारिद्रस्य सुवर्णो वर्णकः । ततः शुल्बकाकण्युत्तरापसारिता आ चतुस्सीमान्तादिति षोडश वर्णकाः ।

सुवर्णं पूर्वं निकष्य पश्चाद्वणिकां निकषयेत् । समरागलेखमिन म्नोन्नते देशे निकषितम् परिमृदितं परिलीढं नखान्तराद्वा गैरिकेणावच्णितमुपिधं विद्यात् । जातिहिङ्गलुकेन पुष्पकासीसेन वा गोमूत्रभावितेन दिग्धेनाग्रहस्तेन संस्पृष्टं सुवर्ण श्वेतीभवित ।

सकेसरः स्निग्धो मृदुर्भाजिष्णुश्च निकषरागः श्रेष्ठः ।

कालिङ्गकस्तापीपापाणो वा मुद्भवर्णौ निकषः श्रेष्ठः । समरागी विक्रय-क्रयहितः । हस्तिच्छविकः सहरितः प्रतिरागी विक्रयहितः । स्थिरः परुषो विषमवर्णश्चाप्रतिरागी क्रयहितः ।

बवेतिश्चिनकणः समवर्णः श्रुक्षणो मृदुर्भाजिष्णुश्च श्रेष्ठः ।

तापे वहिरन्तश्च समः किञ्जल्कवर्णः कारण्डकपुष्पवर्णा वा श्रेष्ठः। स्यावो नीलश्चाप्राप्तकः।

तुत्राप्रतिमानं पौतवाध्यक्षे वक्ष्यामः । तेनोपदेशेन रूप्यमुवर्ण दद्यादा-ददीत च ।

अक्षशालामनायुक्तो नोपगच्छेत्। अभिगच्छन् उच्छेद्यः। आयुक्तो वा सरूप्यस्वर्णस्तेनैव जीयेत। विचित्तवस्त्रहस्तगृद्धाः काञ्चनपृषतत्वष्टृतपनीय-कारवो घ्मायकचरकपांसुधावकाः प्रविशेयुनिष्कसेयुश्च। सर्वं चैपामुपकरण-मनिष्ठिताश्च प्रयोगास्तत्वैवावतिष्ठेरन्। गृहीतं सुवर्णं च धृतं च प्रयोगं करण-मध्ये दद्यात्। सायं प्रातश्च लक्षितं कर्नृकारियनृमुद्राभ्यां निदध्यात्।

क्षेपणो गुणः क्षुद्रकमिति अर्माणि । क्षेपणः काचार्पणादीति । गुणस्सूत्र -वानादीनि । घनं सुषिरं पृषतादियुक्तः क्षुद्रकमिति ।

अर्पयेत् काचकमंणः पश्चभागं काञ्चनं दशभागं कटुमानम । ताम्रपादयुक्तं रूप्यपादयुक्तं वा सुवर्णं संस्कृतकं तस्माद्रक्षेत् ।

पृपतकाचकर्मणः त्रयो हि भागाः परिभाण्डं द्वौ वास्तुकम् । चत्वारो बा वास्तुकं त्रयः परिभाण्डम् ।

त्वष्टकमंगः। शुल्वभाण्डं समसुवर्णेन संयूह्येत्। रूप्यमाण्डं घनं

घनसुषिरं वा सुवर्णार्घेन अवलेपयेत् । चतुर्भागसुवर्णं बालुकाहिङ्कुलकस्य रसेन चुर्णेन वा वासयेत् ।

तपनीयं ज्येष्ठं सुवर्णं सुरागं, समसीसातिकान्तं पाकपत्रपक्वं सैन्धविक-योज्ज्वलितं नीलपीतश्वेतहरितशुककपोतवर्णानां प्रकृतिर्भवित । तीक्ष्णं चारस्य मयूरग्रीवाभं श्वेतमञ्जं चिमिविमायितं पीतचूणितं काकणिकस्सुवर्णरागः।

तारमुपशुद्धं वा । अस्थितुत्थे चतुस्समसीसे चतुष्रशुष्कतुत्थे चतुः, कपाले विर्गोमये द्विः, एवं सप्तदमृतुत्यात्तिकान्तं सैन्धविकयोज्ज्वालितम् । एतस्मात्-काकण्युत्तरापसारिता । आ द्विमाषादिति सुवर्णे देयं, पश्चाद्वागयोगः । ग्वेततारं भवति ।

त्रयोऽंशाः तपनीयस्य द्वातिशाद्भागश्वेततारमूछितं तत् श्वेतलोहितकं भवति । ताम्रं पोतकं करोति ।

तपनीयमुज्ज्वास्य रागितभागं दद्यात् । पीतरागं भवति । श्वेततारभागौ द्वावेकस्तपनीयस्य मृद्गवणं करोति ।

कालायसस्यार्धभागाभ्यक्तं कृष्णं भवति । प्रतिलेपिना रसेन द्विगुणाभ्यक्तं तपनीयं शुकपत्रवर्णं भवति । तस्यारम्भे रागविशेषेषु प्रतिवर्णिकां गृह्णीयात् ।

तीक्ष्णताम्रसंस्कारं च बुद्धचेत । तस्माद्वज्ञमणिमुक्ताप्रबालरूपाणामपनेयिमानं च रूप्यभुवर्णभाण्डबन्धप्रमाणानि चेति ।

समरागं समद्वन्द्वगसक्तपृषतं स्थिरम् । मुप्रमृष्टमसंपीतं जिभक्तं घारणे सुखम् ॥ अभिनीतं प्रभायुक्तं संस्थानमधुरं समम् । मनोनेत्राभिरामं च तपनीयगुणाः स्मृताः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे त्रयोदशोऽध्यायः ; अक्षशालायां सुवर्णाध्यक्षः, आदितश्चतुस्त्रिशः।

# ३२ प्रक. विशिखायां सौवर्णिकप्रचारः।

सौर्वणिकः पौरजानपदानां रूप्यसुवर्णमावेशनिभिः कारयेत् । निर्दिष्ट-कालकार्यं च कर्मं कुर्युः, अनिर्दिष्टकालं कार्यापदेशम् । कालातिपातने पादहीनं वेतनं तिद्द्वगुणश्च दण्डः । कार्यस्यान्ययाकरणे वेतननाशः तिद्द्वगुणश्च दण्डः । यथावर्णप्रमाणं निक्षेपं गृह्णीयुस्तथानिधमेवार्पयेयुः, कालान्तरादिप च तथानिधमेव प्रतिगृह्णीयुरन्यत्र क्षीणपरिशीर्णाभ्याम् ।

आवेशनिभिस्सुवर्णपुद्गललक्षणप्रयोगेषु तत्तज्जानीयात् ।

तप्तकलधौतकयोः काकणिकस्सुवर्णे क्षयो देयः । तीक्ष्णकाकणी रूप्यद्विगुणा रागप्रक्षेपस्तस्य षड्भागः क्षयः ।

वर्णहीने माषावरे पूर्वस्साहसदण्डः, प्रमाणहीने मध्यमः, तुलाप्रतिमानोप-धावुत्तमः, कृतभाण्डोपधौ च ।

सौवणिकेनादृष्टमन्यत्न वा प्रयोगं कारयतो द्वादशपणो दण्डः, कर्तुद्विगुणः ; सापसारक्वेत् । अनपसारः कण्टकशोधनाय नीयेत । कर्तुश्च द्विशतो दण्ड पणच्छेदनं वा ।

तुलाप्रतिमानभाण्डं पौतवहस्तात्ऋीणीयुः । अन्यथा द्वादशपणो दण्डः । घनं घनसुषिरं संयूह्यमवलेप्यं सङ्घात्यं वासितकं च कारुकर्म । तुलाविषममपसारणं विस्नावणं पेटकः पिङ्कश्चेति हरणोपायाः ।

सन्नामिन्युत्कीर्णिका भिन्नमस्तकोपकण्ठी कुझित्रया सकटुकक्ष्या पारि वेल्ल्ययस्कान्ता च दुष्टतुलाः ।

रूप्यस्य द्वी भागावेकः गुल्वस्य विपुटकम् । तेनाकरोद्गतमपसार्यतेः तित्तृपुटकापसारितं, गुल्वेन गुल्वापसारितं, वेल्लकेन वेल्लकापसारितं, गुल्वार्ध-सारेण हेम्ना हेमापसारितम् ।

मूकमूषा पूर्तिकिट्टः करटकमुखं नाली सन्दणो जोःङ्गनी सुर्वीचका लवणम् । तदेव सुवर्णमित्यपसारणमार्गाः ।

पूर्वप्रणिहिता वा पिण्डबालुका । मूषाभेदादग्निष्ठा । उद्धियन्ते । पश्चाद्बन्धने, आचितकपत्रपरीक्षायां वा रूप्यरूपेण परिवर्तनं विस्नावणम्, पिण्डबार्लुकानां लोहपिण्डबालुकाभिवा ।

गादश्चाभ्युद्धार्येश्च पेटकः संयूद्धावलेष्यसङ्घात्येषु कियते । सीसरूपं सुवर्णपत्रेणाविलप्तमभ्यन्तरमष्टकेन बद्धं गाडपेटकः । स एव पटलसम्पुटेष्व-भ्युद्धार्यः । पत्रमाश्चिष्ठदं यमकण्यं तावलेष्येषु कियते । शुल्वं तारं वा गर्भः पत्राणाम् सघात्येषु कियते गुल्वरूपं सुवर्णपत्रसंहतं प्रमृष्टं सुपार्थ्वं । तदेव यमकपत्रसंहतं प्रमृष्टं तास्रताररूपं चीत्तरवर्णकः ।

तदुभयं तापनिकषाभ्यां निश्यव्दोल्लेखनाभ्यां वा विद्यात् । अभ्युद्धायं वदराम्ले लवणोदके वा सादयन्तीति पेटकः ।

धनसुषिरे वा रूपे मुवर्णमृत्मालुकाहिङ्गुलुककलको वा तप्तोऽवितिष्ठते।

दृढवास्तुके वा रूपे बालुकामिश्रजतुगान्धारपङ्को वा तप्तोऽवितिष्ठते । तयो-स्तापनमवध्वंसनं वा शुद्धिः । सपिरभाण्डे वा रूपे लवणमुल्कया कटुशर्करया तप्तमवितिष्ठते । तस्य क्वाथनं शुद्धः । अव्श्रपटलमष्टकेन द्विगुणवास्तुके वा रूपे वध्यते । तस्यापिहितकाचकस्योदके निमज्जत एकदेशः सौदिति । पट-लान्तरेषु वा सूच्याभिद्यते । मण्यो रूप्यं सुवर्णं वा घनसुषिराणां पिङ्कः । तस्य तापनमवध्वंसन वा शुद्धः । इति पिङ्कः ।

तस्माद्वज्रमणिमुक्ताप्रवालरूपाणां जातिरूपवर्णप्रमाणपुद्गललक्षणान्युप-लभेत ।

कृतभाण्डपरीक्षायां पुराणभाण्डप्रतिसंस्कारे वा चत्वारो हरणोपायाः— परिकुट्टनमवच्छेदनमुल्लेखनपरिमर्दनं वा ।

पेटकापदशेन पृथतं गुणं पिटकां वा यत् परिशातयन्ति तत्परिकुट्टनम् । यद् द्विगुणं वास्तुकानां वा रूपे सीसरूपं प्रक्षित्य अभ्यन्तरमविष्ठिन्दन्ति तदवच्छेदनम् । यद् धनानां तीक्ष्णेनोल्लिखन्ति तदुल्लेखनम् । हरिताल-मनिश्चलाहिङ्कुलकचूर्णानामन्यतमेन कुहिबन्दचूर्णेन वा वस्त्रं संयूद्य यत् परिमृद्धन्ति तत् परिमदंनम् । तेन सीवर्णराजतानि भाण्डानि क्षीयन्ते । न चैषां किश्विदवरुगणं भवति ।

भग्नखण्डधृष्टानां संयूह्यानां सदृशेनानुमानं कुर्यात् । अवलेप्यानां यावदुरपाटितं तावदुत्पाटचानुमानं बुर्यात् । विरूपाणां वा । तापनमुदकपेषणं वा बहुणः कुर्यात् ।

अवक्षेपः प्रतिमानमग्निर्गण्डिका भण्डिकाधिकरणी पिञ्छरसूत्रं चेल्लं बोल्लनं शिर उत्सङ्को मक्षिका स्वकायेक्ष दृतिरुदकशरावमग्निष्ठिमिति काच विद्यात्।

राजतानां विस्नं मलग्राहि परुषं प्रत्तीतं विवर्ण वा दुष्टिमिति, विद्यात् । एवं नवं च जीर्णं च विरूपं च विभाण्डकम् । परिक्षेतात्ययं चैषां यथोद्दिष्टं प्रकल्पयेत् ।।

इति कीटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे चतुर्दशोऽध्यायः विशिखायां सीर्वणिकप्रचारः, आदितः पश्वविशः।

#### ३३ प्रक. कोष्ठागाराध्यक्षः।

कोष्ठागाराध्यक्षः साताराष्ट्रक्रयिमपरिवर्तकप्रामित्यकापमित्यकसिंहिनिकान्य-जातव्ययप्रत्यायोपस्थानान्युपलभेत ।

सीताध्यक्षोपनीतः सम्यवणंकस्सीता । पिण्डकरः, षड्भागः, सेनाभक्तं, विलः, करः, उत्सङ्गः, पाश्वं, पारिहीणिकं, औपायनिकं, कौष्ठेयकं च राष्ट्रम् ।

धान्यमूल्यं, कोशनिर्हारः', प्रयोगप्रत्यादानं च ऋयिमम् । सस्यवर्णाना-मर्घान्तरेण विनिमयः परिवर्तकः ।

सस्ययाचनमन्यतः प्रामित्यकम्।

तदेव प्रतिदानार्थमापिमत्यकम् ।

कुटुकरोचकसक्तु शुक्तिपिष्टकम तज्जीवनेषु तैलपीडनमौरभ्रचाक्रिकेष्विक्षूणां च क्षारकर्म सिहनिका ।

नष्टप्रस्मृतादिरन्यजातः ।

विक्षेपव्याधितान्तरारम्भशेषं च व्ययप्रत्यायः।

तुलामानान्तरं हस्तपूरणमुत्करो व्याजी पर्युषितं प्राजित चोपस्थानमिति ।

धान्यस्नेहक्षारलवणानाम्।

धान्यकरुपं सीताध्यक्षे वक्ष्यामः । सपिस्तैलवसामज्जानस्रेहाः ।

फाणितगुडमत्स्यण्डिकाखण्डणकराः क्षारवर्गः।

सैन्धवसामुद्रविडयवक्षारसौवर्चलोद्भेदजा लवणवर्गः।

क्षोद्रं मार्हीकं च मधु।

इक्षुरसगुलमधुकाणितजाम्बवपनसानामन्यतमो मेषश्रङ्गीपिष्पलीक्वाथाभि-युतो मासिकव्याण्मासिकस्सावत्सरिको वा चिद्भिटोर्वारुकेक्षुकाण्डाम्रफलामल-कावस्तः गृद्धो वा गुक्तवर्गः ।

वृक्षाम्लकरमर्दाम्रविदलामलकमातुलुङ्गकोलवदरसौवीरकपरूषकादिः फलाम्ल-वर्गः ।

दधिधान्याम्लादिदंवाम्जवर्गः।

पिप्पलीमरीचश्रङ्गिवेराजाजीकिरातिक्तगौरसर्षपकुस्तुम्बुरुचोरकदमनक-मरुवक्षियुकांडादिः कटुकवर्गः ।

गुष्कमत्स्यमांसकन्दमूलफलशाकादि च शाकवर्गः।

तथोऽर्धमापदर्थं जानपदानां स्थापयेत् । अर्धमुषयुञ्जीतः । नवेन चानवं शोधयेत् । क्षुण्णघृष्टिपष्टभृष्टानामार्द्रभुष्कसिद्धानां च धान्यानां वृद्धिक्षयप्रमाणानि प्रत्यक्षीकुर्वीत ।

काद्रवत्रीहीणामधं सारः, शालीनामष्टभागोनः, तिभागोगो वरकाणाम् । त्रियङ्गरूणामधं सारो नवभागवृद्धिश्च । उदारकस्तुल्यः । यवा गोधूमाश्च क्षुण्णाः ।

तिला यवा मुद्गभाषाश्च खृष्टाः । पञ्चभागवृद्धिगींधूमः सक्तवश्च । सादोना कलायचमसी ।

मुद्रमाषाणामर्धपादोनः । शैम्बानामर्धं सारः । विभागोनः मसूराणाम् । पिष्टमामं कुल्माषश्चाध्यर्थंगुणाः । द्विगुणो यावकः । पुलाकः पिष्टं च सिद्धम् ।

कोद्रववरकोदारकप्रियङ्गरूणां तिगुणमन्नं चतुर्गुणं ब्रीहीणां पश्चगुणं शालीनाम् ।

तिमितमपराम्नं द्विगुणमधीधिकं विरूढानाम् । पञ्चभागवृद्धिभृंष्टानाम् । कलायो द्विगुणः, लाजा भग्जाश्च । पट्कं तैलमतसीनाम् । निम्बकुशास्र-कपित्यादीनां पञ्चभागः । चतुर्भागिकास्तिलकुसुम्भमधुकेङ्गदीस्नेहाः ।

कार्पासक्षीमाणां पञ्चपले पलसूत्रम् ।

पञ्चद्रोणे शालीनां च दशाढकं तण्डुलानां कलभभोजनम्, एकादशकं व्यालानां, दशकम् औपवाह्यानां, नवकं सान्नाह्यानाम्, अष्टकं पत्तीनाम्, सप्तकं मुख्यानाम्, पट्कं देवीकुमाराणाम्, पञ्चकं राज्ञाम् ।

अखण्डपरिणुद्धानां वा तण्डुलानां प्रस्थः।

चतुर्भागस्सूपः, सूपषोडशो लवणस्यांशः, चतुर्भागस्सपिषः तैलस्य वा, एकमार्यभक्तम् । प्रस्थषड्भागस्यूपः, अर्धस्नेहमवराणाम् । पादोनं स्त्नीणाम् । अर्ध बालानाम् ।

मांसपलविंशत्या स्नेहार्धकुडुम्बः, पिलको लवणस्यांशः, क्षारपलयोगः, दिधरणिकः कटुकयोगः, दध्नश्वार्धप्रस्थः ।

तेनोत्तरं व्याख्यातम्।

शाकानामध्यधंगुणः, शुष्काणां द्विगुणस्य चेव योगः ।

हस्त्यश्वयोस्तदध्यक्षे विद्याप्रमाणं वक्ष्यामः ।

बलीवर्दानां माषद्रोणं यवानां वा पुलाकः । शेषमश्वविधानम् । विशेषो घाणिपण्याकतुला कणकुण्डकं दशाढकं वा । द्विगुणं महिषोष्ट्राणाम् ।

अर्धद्रोणं खरपृषतरोहितानाम्। आढकमेणकुरङ्गाणाम्। अर्धाढकमजै-

लकवराहाणां द्विगुणं वा कणकुण्डकम् । प्रस्थोदन इशुनाम् । हंसको श्वमयूराणा-मधंप्रस्थः । शेषाणामतो मृगपशुपक्षिव्यालानामे कभक्तादनुमानं ग्राहयेत् ।

अङ्गारान् तुषान् लोहकर्मान्तिभित्तिलेप्यानां हारयेत् । कणिकाः दासकर्म-करसूपकराणाम् । अतोऽन्यदौदनिकापूपिकेभ्यः प्रयच्छेत् ।

तुलामानभाण्डं रोचनीदृषन्मुसलोलूखसकुट्टकरोचकयन्त्रपत्नकशूर्पचालनिका-कण्डोलीपिटकसंमार्जन्यश्चोपकरणानि ।

मार्जकरक्षकधारकमायकमापकदायकदापकृशलाकाप्रतिग्राहकदासकर्मकरव-र्गश्च विष्टि:।

> उच्चैर्धान्यस्य निक्षेपो मूताः क्षारस्य संहताः । मृत्काष्ठाकोष्ठास्स्नेहस्य पृथिवी लवणस्य च ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे पञ्चदशोऽध्यायः कोष्टागाराध्यक्षः, आदितष्षट्तिशः ।

#### ३४ प्रक. पण्याध्यक्षः।

पण्याध्यक्षः स्थलजलजानां नानाविधानां पण्यानां स्थलपथवारिपथोप-यातानां सोरफल्ग्वर्धान्तरं प्रियाप्रियतां च विद्यात् । तथा विक्षेपसंक्षेपऋयविकय-प्रयोगकालान् ।

यच्त्र पण्यं प्रचुरं स्यात्तरेकीकृत्यार्धमारोपयेत्। प्राप्तेऽघं वाऽर्घान्तरं कारयेत्।

स्वभूमिजानां राजपण्यानामेकमुखं व्यवहारं स्थापयेत्। परभूमिजाना-मनेकमुखम्। उभयं च प्रजानामनुग्रहेण विकापयेत्। स्थूलमपि च लाभ प्रजानामौपघातिकं वारयेत्। अजस्यपण्यानां कालोपरोधं सङ्कुलदोपं वा नोत्पादयेत्।

वहुमुखं वा रालपण्यं वैदेहकाः कृतार्घं विक्रीणीरन् । छेदानुरूपं च वैधरणं दद्युः ।

षोडणभागो मानव्याजो । विश्वतिभागस्तुलामानम् । गण्यपण्यानामेकः-दशभागः । परभूमिजं पण्यमनुग्रहेणावाहयेत् । नाविकसार्थवाहेभ्यश्च परिहार-मायतिक्षमं दद्यात् । अनिभयोगश्चार्थेष्वागन्तूनामन्यत्न सभ्योपकारिभ्यः ।

पण्याधिष्ठातारः पण्यमूल्यमेकमुखं काष्ठद्रोण्यामेकच्छिद्रापिधानायां निदध्युः। अह्नश्चाष्टमे भागे पण्याध्यक्षस्यार्थयेयुः "इदं विक्रीतिमदं णेप"िमिति। तुलमानभाण्डकं चार्ययेयुः। इति स्विविषये व्याख्यातम्।

परिवषये तु—पण्यप्रतिपण्ययोर्घमूल्यं च आगमय्य शुल्कवर्तन्याति-वाहकगुल्मतरदेयभक्तभागव्ययशुद्धभुदयं पश्येत्। असत्युदये भाण्डिनिर्वहणेन पण्यप्रतिपण्यार्घेण वा लाभं पश्येत्। ततस्सारपादेन स्थलव्यवहारमध्यना क्षेमेण प्रयोजयेत्। अटव्यन्तपालपुरराष्ट्रमुख्यैश्च प्रतिसंसर्गं गच्छेदनुग्रहार्थम्।

आपदि सारमात्मानं वा भोक्षयेत् । आत्मनो वा भूमिमप्राप्तः सर्व-देयविशुद्धं व्यवहरेत् ।

वारिपथे च यानमाटकपथ्यदनपण्यप्रतिपण्यार्घप्रमाणयात्नाकालभयप्रती-कारपण्यपत्तनचारित्राण्यपलभेत ।

> नदीपथं च विज्ञाय व्यवहारं चरित्रतः । यतो लाभस्ततो गच्छेदलाभं परिवर्जयेत् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे पोड़शोऽध्यायः पण्याष्यक्षः, आदितस्सप्तर्त्विगः ।

#### ३५ प्रक. कुप्याध्यक्षः।

कुप्याध्यक्षो द्रव्यवनपालैः कुप्यमानाययेत् । द्रव्यवनकर्मान्ताश्च प्रयोजयेत् । द्रव्यवनिष्ठदां च देयमत्ययं च स्थापयेदस्यस्रापद्भचः ।

कुप्यवर्गः---शाकतिनिशधन्वनार्जुनमधूकतिलकसालशिशपारिमेदराजादन-शिरीषखदिरसरलतालसर्जाश्वकणैसोमवल्ककशास्रप्रियकधवादिस्सारदारुवर्गः ।

उटजिचिमयचापवेणुवंशसातीनकण्टकभाल्लूकादिः वेणुवर्गः ।

वेत्रशीकवल्लीवाशीश्यामलतानागलतादिर्वल्लीवगंः।

मालतीमुर्वाकंशणगवेथुकातस्यादिः वल्कवर्गः।

मुञ्ज**बल्बजादि र**ज्जुभाण्डम् । तालीतालभूजीनां पत्नम् । किंशुककुसुम्म-<sup>हङ्क</sup>ुमानां पुष्पम् ।

कन्दमूलफलादिरौषधवर्गः।

कालकूटवत्सनाभहालाहलमेषशृङ्गमुस्ताकुष्ठमहाविषवेल्लितकगौराद्रंबालक-मार्कटहैमवतकालिङ्गकदारदकांकोलसारकोष्ट्रकादीनि विषाणि । सर्पाः कीटाश्च । त एव कुभ्भगताताः । विषवगैः ।

गोधासेरकद्वीपिशिशुमारसिंहव्याघ्रहस्तिमहिषचमरसृमरखड्गगोमृगगवयानां चर्मास्थिपित्तस्राय्वस्थिदन्तशृङ्गखुरपुच्छानि, अयेषां वाऽपि मृगपशुपिक्ष-व्यालानाम् ।

कालायसताम्रवृत्तकांस्यसीसत्नपुर्वकृन्तकारंकूटानि लोहानि । विदलमृत्तिकामयं भाण्डम् । अङ्गारतुषभस्मानि मृगपणुपक्षिन्यालवाटाः काष्ठतृणवाटाश्चेति । विहरन्तश्च कर्मान्ता विभक्तास्सर्वभाण्डिकाः । आजीवपुररक्षार्थाः कार्याः कुप्योपजीविना ।। इति कौढिलीयार्थणाम्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे सप्तदणोऽध्यायः

#### ३६ प्रक. आयुधागाराध्यक्षः।

कुष्याध्यक्षः, आदितोऽष्टित्रशः ।

आयुधागाराध्यक्षः साङ्ग्रामिकं दौर्गकिमकं परपुराभिघातिकं यन्त्रमायुध-मावरणमुपकरणं च तज्जातकारुशिलिपिभः कृतकर्मप्रमाणकालवेतनफल-निष्पत्तिभिः कारयेत् । स्वभूमौ च स्थापयेत् । स्थानपरिवर्तनमातपप्रवात-प्रदानं च बहुणः कुर्यात् । ॐष्मोपस्रेहिकिमिभिष्पहन्त्यमानमन्यथा स्थापयेत् । जातिक्ष्पलक्षणप्रमाणागममूल्यनिक्षेपैश्चोपलभेत ।

सर्वतोभद्र ज्ञामदग्न्यबहुमुखविश्वासघातिसङ्घाटियानकपर्जन्यकबाहृध्वेवाह्यधं-बाहृनि स्थितयन्त्राणि ।

पञ्चालिकदेवदण्डमूकरिकामुसलयष्टिहस्तिवारकतालवृन्तमुद्गरद्रुघणगदा-स्पृक्तलाकुट्टालास्कोटिमोद्भाटिमोत्पाटिमशतझीतिशूलचकाणि चलयन्ताणि ।

शक्तिप्रासकुन्तहाटकभिण्डिपालशूलतोमरवराहकणंकणयकपंणप्रासिकादीनि च हलमुखानि ।

तालचापदारवणाङ्गाणि कार्मृककोदण्डद्रूणा घन्षि । मूर्वाकंशणगवेधुवेणुस्नायूनि ज्याः । वेणुशरश्वलाकादण्डासनानाराचाश्च इषवः। तेषां मुखानि छेदनभेदन-ताडुनान्यायसास्थिदारवाणि।

निस्तिंशमण्डलाग्रासियष्टयः खड्गाः । खड्गमहिषवारणविषाणदारुवेणुमूनानि त्सरवः ।

परशुकुठारपट्टसखनितकुद्दालककचकाण्डच्छेदनाः क्षुरकल्यः । यन्त्रगोष्पणमुष्टिपाषाणरोचनीदृषदश्चायुधानि ।

लोहजालजालिकापट्टकवचसूत्रकंकटशिशुमारकखड् गिधेनुकह स्तिगोचर्मखुर-श्रृङ्गसङ्घातं वर्माणि । शिरस्त्राणकण्ठताणकूर्पासकञ्चुकवारवाणपट्टनागोदिरका । पेटी चर्महस्तिकर्णतालमूलधमनिकाकवाटिकटिकाप्रतिहतवलाहकान्ताश्चावराणि ः

हस्तिरथवाजिनां योग्यभाण्डमालङ्कारिकं सन्नाहकल्पनाश्चोपकरणानि । ऐन्द्रजालिकमौपनिषदिकं च कर्म । कर्मान्तानां च ।

> इच्छामारम्भनिष्पत्ति प्रयोगं व्याजमुद्यम् । क्षयव्ययौ च जानीयात् कुप्यानामायुधेश्वरः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे अष्टादशोऽध्यायः आयुद्यागाराध्यक्षः, आदित एकोनचत्वारिशः।

# ३७ प्रक. तुलामानपौतवम्।

पीतवाध्यक्षः पीतवकर्मान्तान् कारयेत्।

धान्यमाषा दश सुवर्णमाषकः । पञ्च वा गुज्जाः । तेषोड्श सुवॄर्णः हर्षो वा । चतुःकर्षं पलम् ।

अष्टाशीतिगौरसर्षपा रूप्यमाषकः । ते षोड्श धरणम् । शैम्ब्यानि वा वंशतिः ।

विशतितण्डुलं वज्रधरणम्।

अर्धमाषकः, माषकः, द्वी, चत्वारः, अष्टी माषकाः, सुवर्णौ द्वी, चत्वारः, स्टौ सुवर्णाः, दश, विश्वातः, विश्वत्, चत्वारिशत्, शतमिति ।

तेन धरणानि व्याख्यातानि ।

प्रतिमानान्ययोमयानि मागधमेकलशैलमयानि, यानि वा नोदकप्रदेहाभ्यां शृद्धि गच्छेयुरुडणेन वा हासम्।

अध्यक्षप्रचार:

षड्क्षुलादूर्ध्वमण्टाङ्गुलोत्तराः दश तुलाः कारयेल्लोहपलादूर्ध्वमेक-पलोत्तराः । यन्त्रमुभयतः शिक्यं वा ।

पश्चिम्रियात्पललोहां द्विसप्तत्यङ्गुलायामां समवृत्तां कारयेत्। तस्याः पश्चपिलकं मण्डलं बध्वा समकरणं कारयेत्। ततः कर्षोत्तरं पलं, पलोत्तरं दशपलं, द्वादश पश्चदश विशतिरिति पर्वानि कारयेत्। तत आशताद्दशोत्तरं कारयेत्। अक्षेषु नाद्धीपनद्धं कारयेत्।

द्विगुणलोहां तुलामतब्षण्णवत्यङ्गुलायामां परिमाणीं कारयेत् । तस्याः शतपदादूध्वं विश्वतिः, पञ्चाशत्, शतमिति पदानि कारयेत् ।

विशतितौलिको भारः।

दशधरणिकं पलम्। तत्पलशतमायमानी।

पञ्चपलावरा व्यावहारिकी भाजन्य तःपुरभाजनी च।

तासामधंघरणावरं पलम्। द्विपलावरमुत्तरलोहम्। पङ्ङ्गुलावरा-श्चायामाः।

पूर्वयोः पञ्चपलिकः प्रयामो मांसलोहलवणमणिवर्जम् ।

काष्ठतुला अष्टहस्ता पदवती प्रतिमानथती मयूरपदाधिष्ठाना ।

काष्ठपञ्चविंशतिपलं तण्डुलप्रस्थसाधनम् । एष प्रदेशो बह्नस्पयोः ।

इति तुलाप्रतिमानं व्याख्यातम्।

अथ धान्यमाषद्विपलशतं द्रोणमायमानम् । सप्ताशीतिपलशतमर्धपलं च व्यावहारिकम् । पञ्चसप्ततिपलशतं भाजनीयम् । द्विषिट्टिपलशतमर्धपलं चान्तःपुरभाजनीयम् ।

तेषामादकप्रस्थकुड्ुवाश्चतुर्भागावराः ।

ू पोड़गद्रोणा खारी, विशतिद्रोणिकः कुम्भः, कुम्भैर्दशभिवंहः ।

शुष्कसारदारुमयं समं चतुर्भागिशाखं मानं कारयेत् । अन्ति शिखं वा । रसस्य तु ।

सुरायाः पुष्पफलयोः तुषाङ्गाराणां सुधायाश्च शिखामानं द्विगुणोत्तरा वृद्धिः।

सपादपणो द्रोणमूल्यम् । आढ़कस्य पादोनः । पण्माषकाः प्रस्थस्य । माषकः कुडुवस्य ।

द्विगुणं रसादीनां मानमूल्यम् ।

विशतिपणाः प्रतिमानस्य । तुलामूल्यं विभागः ।

चनुर्माषिकं प्रातिवेधनिकं कारयेत्। अप्रतिविद्धस्यात्ययः सपादः

सप्तविशतिपणः । प्रातिवेधनिकं काकणाकमहरहः पौतवाध्यक्षाय दद्युः । द्वान्निशद्भागस्तैलस्य । पञ्चाशद्भागो मानस्रावो द्वाणाम् ।

कुडुम्बार्धंचतुरष्टभागानि मानानि कारयेत् ।
कुडुम्बार्थंचतुराशीतिर्वारकस्मिषि मतः ।
चतुष्पष्टिस्तु तैलस्य पादश्च घटिकाऽनयोः ॥
इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे एकोनिविशोऽध्यायः
तुलामानपौतवम्, आदितश्चत्वारिशः ।

### ३८ प्रक. देशकालमानम्।

मानाध्यक्षो देशकालमानं विद्यात्।

अष्टौ परमाणवो रथचक्रविप्रूट्। ता अष्टौ लिक्षा। ता अष्टौ युकामध्यः। ते अष्टौ यवमध्यः। अष्टौ यवमध्यः अङ्गलम्।

मध्यमस्य पुरुषस्य मध्यमाया अङ्गुल्या मध्यप्रकर्षो वाऽङ्गलम् । चतुरङ्गुलो धनुग्रहः । अष्टाङ्गुला घनुर्मूष्टः ।

द्वादशङ्गुलो वितस्तिः छायापौरुषं च । चतुर्दशाङ्गुलं शमश्शलः परिरयः पदं च । द्विवितस्तिररत्निः प्राजापत्यो हस्तः ।

सधनुर्गहः पौतविववीतमानम् । सधनुर्म् [ब्ट. किब्कुः कसो बा।

द्विचत्वारिणदङ्गुलस्तक्ष्णः काकचिककिष्कुः स्कन्धातारदुर्गराजपरिग्रहः मानम् । चतुःपञ्चाणदङ्गुलः कुष्यवनहस्तः ।

चतुरशीत्यङ्गुलो व्यामो रज्जुमानं खातपौरुषं च । चतुररत्निर्दण्डो धनुर्नालिका पौरुषं च ।

गाहंपत्यमध्टणताङ्गुलं धनुः पथिप्राकारमानम् । पौरुषं च अग्निचित्यानाम् । पट्कंसी दण्डो ब्रह्मदेयातिश्यमानम् ।

दशदण्डा रज्जुः । द्विरज्जुकः परिदेशः । तिरज्जुकं निवर्तनम् । एकतो द्विदण्डाधिको बाहुः । धनुस्सहस्रं गोष्ठतम् । चतुर्गोष्ठतं योजनम् । इति देशमानम् । कालमानमत ऊर्ध्वम् । तुटो लवो निमेषः काष्ठा कला नालिका मुहूर्तः पूर्वापरभागौ दिवसो राज्ञिः पक्षो मास ऋतुरयनं संवत्सरो युगमिति कालाः ।

निमेषचतुर्भामस्तुटः ।

द्वी तुटी लवः।

द्वौ लबौ निमेषः।

पञ्च निमेषाः काष्ठा ।

विंशत्काष्ठाः कला ।

चत्वारिशत्कला नाड्का।

सुवर्णमाषकाश्चत्वारश्चतुरङ्गुलायामाः कुम्भिच्छिद्रमाढ्कमंभसो वा नालिका । दिनालिका मुहूर्तः । पश्चत्रशमुहूर्तो दिवसो रातिश्च चैत्रे मास्याश्चयुजे च मासि भवतः । ततः परं तिभिर्मुहूर्तोरन्यतरष्णण्मासं वर्धते ह्रसते चेति ।

छायायामष्टपीरुष्यामष्टादशभागश्छेदः, षट्पीरुपां चतुर्दशभागः, चतुष्पी-रुष्यामष्टभागः, द्विपीरुष्यां षड्भागः, पौरुष्यां चतुर्भागः, अष्टाङ्ग लायां त्रयो दशभागाः, चतुरङ्गुलायां अष्टभागाः, अच्छायो मध्याह्न इति ।

परावृत्ते दिवसे शेषमेवं विद्यात् ।

आषाढ़े मासि नष्टच्छायो मध्याह्नो भवति । अतः परं श्रावणादीनां षण्मासानां द्वचङ्गुलोत्तरा माघादीनां द्वचङ्गुलावरा छाया इति ।

पञ्चदशाहोरात्राः पक्षः । सोमाप्यायनश्शृक्लः । सोमावच्छेदनो बहुलः ।

द्विपक्षो मासः।

त्रिशदहोरातः प्रकर्ममासः।

सार्धस्सीरः।

अर्धन्यूनश्चान्द्रमासः ।

सप्तिबंशतिनक्षित्रमासः।

द्वाविंशत् मलमासः।

पञ्चित्रंशदश्ववाहायाः ।

चत्वारिशद्धस्तिवाहायाः।

द्वी मासावृतुः।

श्रावणः प्रोष्ठपदश्च वर्षाः ।

बाश्वयुजः कार्तिकश्च शरत्।

मार्गशीषं: पौषश्च हेमन्त: ।

माघः फाल्गुनश्च शिशिरः।

चैतो वैशाखश्च वसन्तः ।
ज्येष्ठामूलीय आषादृश्च ग्रीष्मः ।
शिशिराद्युत्तरायणम् । वर्षादि दक्षिणायनम् ।
द्वचयनस्संवत्सरः ।
पञ्चसंवत्सरो युगमिति ।

दिवसस्य हरत्यकंष्षिटभागमृतौ ततः ।
करोत्येकमहृष्ठेदं तथैवैकं च चन्द्रमाः ॥
एवमर्घतृतीयानामब्दानामधिमासकम् ।
ग्रीष्मे जनयतः पूर्वं पश्चाब्दान्ते च पश्चिमम् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे विशोऽध्यायः देशकालमानम् आदित एकचत्वारिशः ।

#### ३६ प्रक. शुल्काध्यक्षः।

शुल्काध्यक्षः शुल्कशालां ध्वजं च प्राङ्मुखं वा महाद्वाराभ्याशे निवेशयेत् । शुल्कादायिनश्चत्वारः पश्च वा सार्थोपयातान् वणिजो लिखेयुः— 'के कुतस्त्याः कियत्पण्याः क्व चाभिज्ञानमुदा वा कृता'' इति ।

अमुद्राणामत्ययो देयद्विगुणः।

क्टमुद्राणां शुरुकाष्टगुणो दण्डः ।

भिन्नमुद्राणामत्ययो घटिकास्थाने स्थानम् ।

राजमुद्रापरिवर्तने नामकृते वा सपादपणिकं वहनं दापयेत्।

ध्वजमूलोपस्थितस्य प्रमाणमर्घ च वैदेहकाः पण्यस्य ब्र्युः—''एतत्प्रमा-णेनार्घेण पण्यमिदं कः क्रेतेति''। त्रिरुद्धोषितमर्थिभ्यो दद्यात्। क्रेतृसङ्घर्ष मूल्यवृद्धिस्सशुल्का कोशं गच्छेत्।

शुल्कभयात्पण्यपमाणं मूल्यं वा हीनं ब्रुवतस्तदितिरिक्तं राजा हरेत्। शुल्कमष्टगुणं वा दद्यात्।

तदेव निविष्टपण्यस्य भाण्डस्य हीनप्रतिवर्णकेनार्घापकर्षेणे सारभाण्डस्य फल्गुभाण्डेन प्रतिच्छादने च कुर्यात् ।

प्रतिकेतृभयाद्वा पण्यमूल्यादुपरि मूल्यं वर्धयतो मूल्यवृद्धि राजा हरेत्, द्विगुणं वा शुल्कं कुर्यात् ।

तदेवाष्टगुणमध्यक्षम्य छादयतः।

तस्माद्रिक्रयः पण्यानां धृतो मितो गणितो वा कार्यः, तर्कः फल्गुभाण्डा-नामानुग्राहिकाणां च।

ध्वजमूलमितकान्तानां चाकृतशुल्कानां शुल्कादेष्टगुणो दण्डः । पथिकोत्-पथिकास्तद्विद्युः ।

वैवाहिकमन्वायनमौपयानिकं यज्ञकृत्यप्रसर्वनैमित्तिकं देवेज्याचौलोपनयन-गोदानव्रतदीक्षणादिषु क्रियाविशेषेषु भाण्डमुच्छुत्कं गच्छेत् ।

अन्यथावादिनस्स्तेयदण्डः ।

कृतगुल्केनाकृतगुल्कं निर्वाहयतो द्वितीयमेकमुद्रया भित्वा पुटमपहरतो वैदेहकस्य तच्च तावच्च दण्डः।

णुल्कस्थानाद्ग्रोमयपलालं प्रमाणं कृत्वाऽपहरत उत्तमस्साहसदण्डः।

शस्त्रवर्मकवचलोहरथरत्नधान्यपशूनामन्यतमानिर्वाह्यं निर्वाहयतो यथावघु-षितो दण्डः पण्यनाशश्च ।

तेषामन्यतमस्यानयने बहिरेवोच्छुल्को विक्रयः।

अन्तपालः सपादपणिकां वर्तनीं गृह्णीयात् पण्यवहनस्य, पणिकामेकखुरस्य. पश्चनामर्धपणिकां, क्षुद्रपश्चनां पादिकां, अंसभारस्य मापिकाम् । नष्टापहृतं च प्रतिविदध्यात् ।

वैदेश्यं सार्थ कृतसारफल्गुभाण्डविचयनमभिज्ञानं मुद्रां च दत्वा प्रेषये-दध्यक्षस्य।

वैदेहकव्यञ्जनो वा सार्थप्रमाण राजः प्रेषयेत् । तेन प्रदेशेन राजा शुल्का-ध्यक्षस्य सार्थप्रमाणमुपदिशेत सर्वजत्वस्यापनार्थम् । ततस्सार्थमध्यक्षोऽभिगम्य बूयात्—''इदभमुष्यामुष्य च सारभाण्डं फल्गुभाण्डं च न निगूहितव्यं एष राजः प्रभावः'' इति ।

निगूहतः फल्गुफाण्डं शुल्काष्टगुणो दण्डः, सारभाण्डं सर्वापहारः । राष्ट्रपीड़ाकरं भाण्डमुच्छिन्दादफलं च यत् । महोपकारमुच्छुल्कं कुर्याद्वीज तु दुर्लभम् ।।

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे एकविशोऽध्यायः शुल्काध्यक्षः, आदितो द्विचत्वारिशः ।

### ३६ प्रक. शुल्काध्यक्षः--शुक्कव्यवहारः ।

शुल्कव्यवहारः । बाह्यमाभ्यन्तरं चातिथ्यं, निष्काम्यं प्रवेश्यं च शुल्कम् । प्रवेश्यानां मूल्यपञ्चभागः ।

पुष्पफलशाकमूलकन्दविल्लिक्यवीजशुष्कमत्स्यमांसानां षड्भागं गृह्णीयात् । शङ्खवज्जमणिमुक्ताप्रवालहाराणां तज्जातपुरुषैः कारयेत् कृतकर्मप्रमाणकाल-वेतनफलनिष्पत्तिभिः ।

क्षोमदुकूलिक्त्रमितानकङ्कटहरितालमनिश्णलाहिङ्गः लुकलोहवर्णधातूनां चन्द-नागरुकटुकिण्वावरणानां सुरादन्ताजिनक्षोमदुकूलिकरास्तरणप्रावरणिकिमि-जातानामजैलकस्य च दशभागः, पश्चदशभागो वा।

वस्त्रचतुष्पदद्विपदसूत्रकार्पासगन्धभैषज्यकाष्ठवेणुवत्कलचर्ममृद्भाण्डानां घान्य-स्नेहक्षारलवणमद्यपक्वान्नादीनां च विश्वतिभागः पञ्चविश्वतिभागो वा ।

ढ़ारादेयं शुल्कप<sup>्</sup>चभागः आनुग्राहिकं वा यथादेशेपकारं स्थापयेत् ।

जातिभूमिषु च पण्यानामविक्रयः।

खनिभ्यो धातुपण्यादाने षट्छतमत्ययः।

पुष्पफलवाटेभ्यः पुष्पफलादाने चतुष्पञ्चाशत्पणो दण्डः ।

षण्डेभ्यः शाकमूलकन्दादाने पादोनं द्विपश्वाशत्पणो दण्डः ।

क्षेत्रेभ्यस्सर्वसस्यादाने त्रिपञ्चाशत्पणः ।

पणोऽध्यर्धपणश्च सीतात्ययः।

अतो नवपुराणानां देशजातिचरित्रतः । पण्यानां स्थापयेच्छुत्कमत्ययं चापकारतः ।।

इति कौिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे द्वाविशोऽध्यतयः शुल्कव्यवहारः, आदितस्त्रिचत्वारिशः । •

#### ४० प्रक. सूत्राध्यक्षः।

स्त्राध्यक्षः स्त्रवर्मवस्त्ररज्जुव्यवहारं तज्जातपुरुषैः कारयेत् । ऊर्णावल्ककार्पंसतूलशणक्षौमाणि च विधवान्यङ्गाकन्याप्रव्रजितादण्डप्रति-कारिणीभी रूपाजीवामातृकाभिर्बृद्धराजदासीभिव्युपरतोपस्थानदेवदासीभिश्च । श्लक्ष्णस्थूलमघ्यतां च सूत्रस्य विदित्वा वेतनं कल्पयेत् । बहुल्पतां च । सूत्रप्रमाणं ज्ञात्वा तैलामलकोद्वर्तनैरेता अनुगृह्णीयात् ।

तिथिषु प्रतिपादनमानैश्च कर्म कारियतव्याः । सूत्रहासे वेतनहासः द्रव्यसारात् ।

कृतकर्मप्रमाणकालवेतनफलनिष्पत्तिभिः कारुभिष्च कर्म कारयेत्, प्रतिसंसगं च गच्छेत् ।

क्षौमदुकूलिकमितालराङ्कवकार्पाससूत्रवानकर्मान्तांश्च प्रयुञ्जानो गन्ध-माल्यदानैरन्यैश्चौपग्राहिकैराराधयेत् । वस्त्रास्तरणप्रावरणविकल्पानुत्थापयेत् । कञ्चटकर्मान्तांश्च तज्जातकादिशालिपभिः कारयेत ।

याश्चानिष्कासिन्यः प्रोषितविद्यवा न्यङ्गा कन्यका वाऽत्मानं बिभृयुस्ताः स्वदासीभिरनुसार्यं सोपग्रहं कर्मं कारियतव्याः ।

स्वयमागच्छन्तीनां वा सूत्रशालां प्रत्युषिस भाण्डवेतनविनिमय कारयेत् । सूत्रपरीक्षार्थमातः प्रदीपः ।

स्त्रिया मुखसन्दर्भनेऽन्यकार्यसंभाषायां वा पूर्वस्साहसदण्डः । वेतन-कालातिपातने मध्यमः, अकृतकर्मवेतनप्रदाने च ।

गृहीत्वा वेतनं कर्म अकुर्वत्याः अङ्गुष्ठसन्दंशनं दापयेत्। भक्षिताप-हृतावस्कन्दितानां अ। वेतनेषु च कर्मकराणामपराधतो दण्डः।

रज्जुवर्तकैश्चर्मकारैश्च स्वयं संसृज्येत । भाण्डादीनि च वरतादीनि वर्तयेत् ।

> सूत्रवल्कमयो रज्जूवरता वैत्रवेणवीः। साम्नाह्या बन्धनीयाश्च यानयुग्यस्य कारयेत्।

इति कोटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षत्रचारे द्वितीयाधिकरणे तयोविशोऽध्यायः सूत्राध्यक्षः, आदितश्चतुरचत्वारिशः ।

#### ४१ प्रक. सीताध्यक्षः।

सीताऽध्यक्षः कृषितन्त्रशुल्ववृक्षायुर्वेदजस्तज्ज्ञसस्ती वा सर्वधान्यपुष्पफल-शाककन्दमूलवाल्लियधोमकार्पासवीजानि यथाकालं गृह्धीयात् ।

बहुहलारिकृष्टायां स्वभूमो दासकर्मकरदण्डप्रतिकर्तृ भिर्वापयेत् ।

कर्षणयन्त्रोपकरणबलीवर्देश्चैषामसङ्गं कारयेत्। कारुभिश्च कर्मार-कुट्टाकमेदकरज्जुवर्तंकसर्पग्राहादिभिश्च।

तेषां कर्मफलविनिपाते तत्फलहानं दण्डः।

षोडशद्रोणं जाङ्गलानां वर्षप्रमाणमध्यर्धमानूपानां देशवापानाम् । अर्धत्रयोदशाश्मकानां त्रयोविशतिरवन्तीनाममितमपरान्तानां हैमन्यानां च कुल्यावापानां च कालतः ।

वर्षातिभागः पूर्वपश्चिममासयोः, द्वौ तिभागौ मध्यमयोः सुषमारूपम् । तस्योपलब्धिवृंहस्पतेस्स्थानगमनगर्भाघानेभ्यः शुक्रोदयास्तमयचारेभ्यः सूर्यस्य प्रकृतिवैकृताच्च ।

सूर्याद्वीजसिद्धिः । वृहम्पतेस्सस्यानां स्तम्बकरिता । शुक्राद्वृष्टिरिति । व्यस्सप्ताहिका मेघा अणौतिः कणशीकराः । षिटरातपमेघानामेषा वृष्टिस्समाहिता । वातमातपयोगं च विभजन्यत्र वर्षति । तीन् कर्षकांश्च जनयन् तत्र सस्यागमो ध्रुवः ।।

ततः प्रभूतोदकमल्पोदकं वा सस्यं वापयेत् ।

शालित्रीहिकोद्रवतिलप्रियङ्गुदारकवरकाः पूर्ववापाः । मृद्गमाषशैम्ब्या मध्यवापाः । कुमुम्भमसूरकुलुत्थयवगोधूमकलायातसीसर्षपाः पश्चाद्वापाः ।

यथर्त्वशेन वा वीजवापाः।

वापातिरिक्तमधंसीतिका कुर्युः । स्वबीर्योपजीविनो वा चतुर्थंपश्वभागिकाः । यथेष्टमनवसितभागं दद्युरन्यत कृच्छेभ्यः ।

स्वसेतुभ्यः हस्तप्रावितममुदकभागं पश्वमं दशुः । स्कन्धप्रावितमं चतुर्थम् । स्रोतोयन्त्रप्रावितमं च तृतीयम् ।

चतुर्षं नदीसरस्तटाककूपोद्धाटम्।

कमादकप्रमाणेन कैदारं हैमनं ग्रैष्मिकं वा सस्यं स्थापयेत्।

शाल्यादि ज्येष्ठम्। षण्डो मध्यमः। इक्षुः प्रत्यवरः। इक्षवो हि बह्नाबाधा व्ययग्राह्विणश्च ।

फेनाघातो वल्लीफलानां, परिवाहान्ताः पिष्पलीमृद्वीकेक्षूणां, कूपपर्यन्ताः शाकमूनानां, हरणिपर्यन्ताः हरितकानां, पाल्यो लवानां, गन्धभैषज्योशीर ह्रीवेऱ-रिपण्डालुकादीनाम् । यथास्वं भूमिषु च स्थाल्याश्चानुष्याश्चीषधीस्स्थापयेत् ।

नुषारपायनमुष्णभोषणं वा सप्तरात्नादिति धान्यवीजानां, तिरात्नं वा कोशीधान्यानां, मधुष्तसूकरवसाभिष्शकृद्युक्ताभिः काण्डवीजानां छेदलेपो, मधुषृतेन कन्दानाम् । अस्थिवीजानां शक्तवालेपः । शाखिनां गर्तदाहो गोस्थिशकृद्भिः काले दौहृदं च ।

प्ररूढांश्राशुष्ककटुमत्स्यांश्च स्नुहिक्षीरेण पाययेत् ।

कार्पससारं निर्मोकं सर्पस्य च समाहरेत्। न सर्पास्तव तिष्ठन्ति धूमो यत्रैष तिष्ठति ॥

सर्ववीजानां तु प्रथमवापे सुवर्णोदकसंष्लुतां पूर्वमुध्टि बापयेत् अमं च मन्त्रं ब्रूयात् —

"प्रजापतये काश्यपाय देवाय च नमः सदा ।
सीता मे ऋध्यतां देवी बीजेषु च धनेषु च ॥"
षण्डवाटगोपालकदासकर्मंकरेभ्यो यथापुरुषपिरवापं भक्तं कुर्यात् ।
सपादपिणकं मासं दद्यात् । कर्मानुरूपं कारुभ्यो भक्तवेतनम् ।
प्रशीर्णं च पुष्पफलं देवकार्यार्थं ब्रीहियवमाग्रयणार्थं श्रोतियास्तपिस्वनआहरेयुः । राशिमूलमुञ्छवृत्तयः ।

यथाकालं च सस्यादि जातं जातं प्रवेशयेत् ।
न क्षेत्रे स्थपयेत्कि चित्पलालमपि पण्डितः ।:
प्रकाराणां समुच्छ्रायान् वलभीवां तथाविधाः ।
न संहतानि कुर्वीतं न तुच्छानि शिरांसि च ।।
खलस्य प्रकरान्कुर्यान्मण्डलान्ते समाश्रितान् ।
अनप्रिकास्सोदकाश्च खले स्युः परिकर्मिणः ।।

इति कौटिलीयार्थणास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे चतुर्विशोऽध्यायः सीनाध्यक्षः, आदितः पञ्चचत्वारिशः ।

### ४२ प्रक. सुराध्यक्षः।

मुराध्यक्षस्मुराकिण्वव्यवहारान् दुर्गे जनपदे स्कन्धावारे वा तज्जातसुरा-किण्वव्यवहारिभिः कारयेत एकमुखमनेकमुखं वा विक्रयक्षयवणेन वा । षट्छत-मत्ययमन्यत्र कर्नु केनुविकेत्णां स्थापयेत् । ग्रामादनिणंयनमसम्पातं च । मुरायाः, प्रमादभयात्कमंमु निर्दिष्टानां, मर्यादातिकमभयादार्याणां, उत्साहभयाञ्च तीधणानाम् । लक्षितमल्पं वा चतुर्भागमधंकुडुम्बं कुडुम्बमधंप्रस्थं वेति ज्ञातशौचा निर्हरेयु:।

पानागारेषु वा पिवेयुरसःचारिणः।

निक्षे गोपनिधिप्रयोगापह्तादीनामनिष्टोपगतानां च द्रव्याणां ज्ञानार्थ-मस्वामिकं कुप्यं हिरण्यं चोपलभ्य निक्षेप्तारमन्यत्र व्यपदेशेन ग्राहयेत् । अति-व्ययकत्तरमनायतिव्ययं च ।

न चानर्घेण कालिकां वा सुरां दद्यादन्यत्र दुष्टसुरायाः। तामन्यत्र विकापयेत्। दासकर्मकरेभ्यो वा वेतनं दद्यात्। वाहनप्रतिपानं सूकरपोपणं वा दद्यात्।

पानागाराण्यनेककक्ष्याणि विभक्तशयनासनवन्ति पानोहेशानि गन्धमाल्यो-दकवन्त्यृतुसुखानि कारयेत् ।

तत्रस्थाः प्रकृत्यौत्पतिकौ व्ययौ गूढा विद्युरागन्त्ंश्च ।

ऋेतृः णां मत्तसुप्तानामलङ्काराच्छादनिहरण्यानि च विद्युः। तन्नाशे विण्जस्तच्च तावच्च दण्डं दद्यः।

वणिजस्तु संवृतेषु कक्ष्याविभागेषु स्वदासीभिः पेशलरूपाभिरागन्तूना-मवास्तव्यानां च आर्यरूपाणां मत्तसुप्तानां भावं विद्युः ।

मेदकप्रसन्नाऽऽसवारिष्टमेरेयमधूनाम्।

उदकद्रोणं तण्डुलानामर्धादकं दयः प्रस्थाः किण्वस्येति मेदकयोगः।

द्वादशाढकं पिष्टस्य पञ्च प्रस्थाः किण्वस्य पुत्नकत्वक्फलयुक्तो वा जातिसम्भारः प्रसन्नायोगः ।

कपित्थतुला फाणितं पश्चतौलिकं प्रस्थो मधुन इत्यासवयोगः । पादाधिको ज्येष्ठः पादतीनः कनिष्ठः ।

चिकित्सकप्रमाणाः प्रत्येकशो विकाराणामरिष्टाः।

मेपणृङ्गित्वक्कवाथाभियुतो गुडप्रतीवापः पिष्पलीमरिचसम्भारस्तिफलायुक्तो वा मैरेयः । गुडयुक्तानां वा सर्वेषां तिफलासम्भारः ।

मृद्वीकारसो मधु । तस्य स्वदेशो व्याख्यानं कापिशायनं हारहूरकमिति । माषकलनीद्रोणमामं सिद्धं वा विभागाधिकतण्डुलं मोरटादीनां कापिक-भागयुक्तं किण्वाबन्धः ।

पाठालोध्रतेजीवत्येलावालुकमधुकमधुरसाप्रियङ्गुदारुहरिद्रामरिचपिष्पलीनां च पञ्चकर्षिकः सम्भारयोगो मेदकस्य प्रसन्नायाश्च । मधुकनिर्यूहयुक्ता कटशर्करा वर्णप्रसादनी च । अध्यक्षप्रचारः

चोचचित्रकविलङ्गगजिपप्पलीनां च कार्षिकः ऋमुक्रमधुक्रमुस्तालोध्राणां द्विकार्षिकश्चासवसम्भारः। दशभागश्चैषां वीजबन्धः।

प्रसन्नायोगक्ये तसुरायाः ।

सहकारसुरा रसोत्तराः वीलोत्तरा वा महासुरा सम्भारिका वा।

तासां मोरटापलाञ्चपत्त्रमेषशृङ्गीकरंञ्जक्षीरवृक्षकषायभावितं दग्धकट-शर्कराचूर्णं लोध्नचित्रकविलङ्गपाठामुस्ताकलिङ्गयवदारुहरिन्द्रेन्दीवरशतपुष्पापा-मार्गसप्तपर्णनिम्बास्फोतकल्कार्धयुक्तमन्तर्नेखो मुष्टिः कुम्भी राजपेयां प्रसादयति । फाणितः पञ्चपलिकश्चात्र रसवृद्धिर्देयः ।

कुटुम्बिनः कृत्येषु श्वेतसुरामौषधार्थ वारिष्टमन्यद्वा कर्तुं लभरेन् । उत्सवसमाजयात्रासु चतुरहस्सौरिको देयः । तेष्वननुज्ञातानां प्रहवणान्तं

दैवसिकमत्ययं गृह्णीयात्।

सुराकिण्वविचयं स्तियो बालाश्च कुर्युः । अराजपण्याः पश्चकं शतं णुल्कं दद्युः । सुरकामेदकारिष्टमघुफलाम्लाम्लशीधूनां च ।

> अह्नश्च विकयं व्याजीं ज्ञात्वा मानहिरण्ययोः । तथा वैधरणं कुर्यादुचितं चानुवर्तयेत् ।।

इति कौटिलीयार्थणास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे पञ्चविक्षोऽध्यायः मुराऽध्यक्षः, आदितप्षट्चत्वारिक्षः ।

### ४३ प्रक. सूनाध्यक्षः।

सूनाध्यक्षः प्रदिष्टाभयानामभयवनवासिन† च मृगपणुपक्षिमत्म्यानां बन्घवधहिंसायामुत्तमं दण्डं कारयेत् । कुटुम्बिनामभयवनपरिग्रहेषु मध्यमम् ।

अप्रवृत्तवद्यानां मत्स्यपिक्षणां वन्धवधिहसयां पादोनसप्तविशतिपणमत्ययं कुर्यात्, मृगपशूनां द्विगुणम् ।

प्रवृत्तिहिंसानामपिरगृहीतानां पड्भागं गृह्णीयात् । मत्स्यपक्षिणां दशभागं वाधिकं मृगपशूनां शुल्कं वाधिकम् ।

पक्षिमृगाणां जीवच्छड्शागमभयवनेपु प्रमुञ्चेत्।

सामुद्रहस्त्यश्वपुरुपवृषगर्वभाकृतयो मत्स्याः सारसा नादेयास्तटाककुल्योद्भवा वा, कौश्वोत्कोशकदात्यूह्हंसचक्रवाकजीवक्त्रीवकभूङ्ग राजचकोरमत्तकोकिस- मयूरशुकमदनशारिका विहारपक्षिणो मञ्जल्याश्चान्येऽपि प्राणिनः पक्षिमृगा हिंसावाधेभ्यो रक्ष्याः । रक्षातिक्रमे पूर्वस्साहसदण्डः ।

मृगपशूनामनस्थि मांसं सद्योहतं विकीणीरन् । अस्थिमतः प्रतिपातं दद्युः । तुलाहीने हीनाष्टगुणम् ।

वत्सो वृषो धेनुश्चैषामवध्याः ।'

घतः पञ्चाशस्को दण्डः । क्लिप्टघातं घातयतश्च ।

परिसूनमिशरःपादास्थि विगन्धं स्वयं मृत च न विक्रीणीरन् । अन्यथा द्वादणपणो दण्डः ।

> दुष्टाः पशुमृगव्याला मत्स्याश्चाभयचारिणः । अन्यतः गुप्तिस्थानेभ्यो वधबन्धमवाप्नुयुः ॥

इति कीटिलीयार्थभास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे षड्विंशोऽध्यायः

सूनाध्यक्षः, आदितस्सप्तचत्वारिंशः ।

# ४४ प्रक. गणिकाऽध्यक्षः ।

गणिकाऽध्यक्षः गणिकान्वयामगणिकान्वयां वा रूपयौवनशिल्पसम्पन्नां सहस्रेण गणिकां कारयेत् । कुडुम्बार्धेन प्रतिगणिकाम् ।

निष्पतिताप्रेतयोर्दुहिता भगिनी वा कुटुम्बं भरेत । तन्माता वा प्रतिगणिकां स्थापयेत् । तासामभावे राजा हरेत् ।

सौभाग्यालङ्कारवृद्धचा सहस्रेण वारं कनिष्ठं मध्यमुत्तमं वाऽऽरोपयेत्। छत्रभृङ्गारव्यजनशिविकापीठिकारथेषु च विशेषार्थम् ।

सौभाग्यभङ्गे मातृकां कुर्यात् ।

निष्कयश्चतुर्विशतिसाहस्रो गणिकायाः । द्वादशसाहस्रो गणिकापुत्नस्य । अष्टवषीत्प्रभृति राज्ञः कुणीलवकर्म कुर्यात् ।

गणिका दासी भग्नभोगा कोष्ठागारे महानसे वा कर्म कुर्यात् । अविशन्ती सपादपणमवरुद्धा मासवेतनं दद्यात् ।

भोगं दायमायं व्ययमायति च गणिकायाः निबन्धयेत्। अतिव्ययकर्म च वारयेत्।

मातृहस्तादन्यताभरणन्यासे सपादचतुष्पणो दण्डः। स्वापतेयं विक्रय-माधानं नयन्त्यास्सपादपञ्चाशत्पणो दण्डः। चतुर्विंशतिपणो वाक्पारुष्ये । द्विगुणो दण्डपारुष्ये । सपादपश्वाशत्पणः पणोऽर्धपणश्च कर्णच्छेदने ।

अकामायाः कुमार्या वा साहसे उत्तमो दण्डः। सकामायाः पूर्वः साहसदण्डः।

गणिकामकामां रुन्धतो निष्पातयतो वा ब्रणविदारणेन वा रूपमुपन्नतः सहस्रं दण्डः। स्थानविशेषेण वा दण्डवृद्धिरानिष्क्रयद्विगुणात् पणसहस्रं वा दण्डः।

प्राप्ताधिकारां गणिकां घातयतो निष्क्रयित्रगुणो बण्डः । मातृकादुहि-तृकारूपदासीनां घात उत्तमस्साहसदण्डः ।

सर्वत प्रथमेऽपराधे प्रथमः, द्वितीये द्विगुणः, तृतीय त्निगुणः, चतुर्थे यथाकामी स्यात् ।

राजाज्ञया पुरुषमनभिगच्छन्ती गणिका शिफासहस्रं लभेत । पञ्चसहस्रं वादण्डः ।

भोगं गृहीत्वा द्विषत्या भोगद्विगुणो दण्डः । वसितभोगापहारे भोगमण्टगुणं दद्यात् अन्यत्न व्याधिपुरुषदोषेभ्यः ।

पुरुषं झत्याश्चिता प्रतापोऽन्सु प्रवेशनं वा ।

गणिकाऽऽभरणमर्थ भोगं वाऽपहरतोऽष्टगुणो दण्डः । गणिका भोगमायति पुरुषं च निवेदयेत् ।

एतेन नटनर्तंकगायकवादकवाग्जीवनकुशीलवञ्चवकसौभिकचारणस्त्रीव्यव-द्वारिणां स्त्रियो गृढाजीवाश्च व्याख्याताः ।

तेषां नूर्यमागन्तुकं पञ्चपणं प्रक्षावेतनं दद्यात् ।

रूपाजीवा भोगद्वयगुणं मासं दद्युः।

गोतवाद्यपाठचनृत्तनाटचाक्षरिबद्धवीणावेणुमृदङ्गपरिवत्तज्ञानगन्धमात्यसंयू-हनसंपादनसंवाहनवैशिककलाज्ञानानि गणिका दासी रङ्गोपजीविनीश्च ग्राहयतो राजमण्डलादाजीवं कुर्यात् । गणिकापुत्रान् रङ्गोपजीविनश्च मुख्यान्निष्पादयेयुः सर्वेत्रालापचाराणां च ।

> संज्ञाभाषान्तरज्ञाश्च स्त्रियस्तेषामनात्मसु । चारघातप्रमादायं प्रयोज्या बन्धुवाहनाः ॥

इति कौटिलीयार्यशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे सप्तर्विभोऽध्यायः गणिकाऽध्यक्षः, आदितोऽष्टचत्वारिशः।

#### ४५ प्रक. नावध्यक्षः।

नावध्यक्षस्समुद्रसंयाननदीमुखतरप्रचारान् देवसरोविसरोनदीतरांश्च स्थानी-यादिष्ववेक्षेत ।

तद्वेलाकूलग्रामाः क्लृप्तं दद्युः ।

मत्स्यवन्धका नौकहाटकं षड्भागं दद्युः । पत्तनानुवृत्तं शुल्कभागं विणिजो दद्युः । यात्रावेतनं राजा नौभिस्सम्पतन्तः । शङ्खमुक्ताग्राहिणो नौभाटकं दद्युः स्वनौभिर्वा तरेयुः ।

अध्यक्षदचैषां खन्यध्यक्षेण व्याख्यातः ।

पत्तनाध्यक्षनिबन्धं पण्यपत्तनचारित्नं नावध्यक्षः पालयेत् ।

मूढवाताहतां तां पितेवानुगृह्णीयात् ।

उदकप्राप्तं पण्यमशुल्कमधैंशुल्कं वा कुर्यात्। यथानिर्दिष्टाश्चैताः पण्यपत्तनयात्नाकालेषु प्रेषयेत्। संयातीर्नावः क्षेत्रानुगताः शुल्कं याचेत। हिस्निका निर्घातयेत्। अभित्रविषयातिगाः पण्यपत्तनचारित्रोपधातिकाश्च।

शासकितयामकदात्तरिश्मग्राहकोत्सेचकाधिष्ठिताश्च महानावो हेमन्त-ग्रीष्मतार्यासु महानदीषु प्रयोजयेत । श्रुद्रकाः क्षुद्रिकासु वर्षास्त्राविणीषु ।

बद्धतीर्थाश्चेताः कार्याः राजद्विष्टकारिणां तरणभयात् ।

अकालेऽतीर्थे च चरतः पूर्वस्साहसदण्डः । काले तीर्थे च अनिसृष्टतारिणः पादोनसप्तविशतिपणः तरात्ययः ।

कैवर्तकाष्ठतृणभारपुष्पफलवाटषण्डगोपालकानामनत्ययस्सम्भाव्यदूतानुपातिनां च सेनाभाण्डप्रचारप्रयोगाणां च । स्वतरणैस्तरतां, वीजभक्तद्रव्योपस्करांश्चा-नूपप्रामाणां तारयताम् ।

ब्राह्मणप्रत्रजितबालवृद्धव्याधितशासनहरगिभण्यो नावाध्यक्षमुद्राभिस्तरेयुः । कृतप्रवेशाः पारविषयिकाः सार्थप्रमाणा वा विशेयुः ।

परस्य भार्यां कन्यां वित्तं वाऽपहरन्तं शिङ्कितमाविग्नमुद्भाण्डीकृतमहाभाण्डेन मूर्धिन भारेणावच्छादयन्तं सद्योगृहीतलिङ्गिनं अलिङ्गिन वा प्रव्रजितमलक्ष्य-व्याधितं भयविकारिणं गूढसारभाण्डशासनशस्त्राग्नियोगं विषहस्तं दीर्घपथिकममुद्रं चोपग्नाहयेत्।

क्षुद्रपशुर्मनुष्यश्च सभारो माषकं दद्यात् ।

शिरोभारः कायभारो गवाश्वं च द्वौ । उष्ट्रमहिषं चतुरः । पश्च लघुयानम् । षड्गोलिङ्गम् । सप्त शकटम् । पण्यभारः पादम् । तेन भाण्डभारो व्याख्यातः । द्विगुणो महानदीषु तरः । क्लृप्तमानूपग्रामा भक्तवेतनं दद्यः ।

प्रत्यन्तेषु तराः शुल्कमातिवाहिकं वर्तनीं च गृह्णीयुः । निर्गच्छतश्चामुद्रस्य भाण्डं हरेयुः । अतिभारेणावेलायामतीर्थे तरतश्च ।

पुरुषोपकरणहीनायामसंस्कृतायां वा नावि विपन्नायां नावध्यक्षो नष्टं विनष्टं वाऽभ्यावहेत् ।

> सप्ताहवृत्तामाषाढी कातिकीं चान्तरा तरः । कार्मिकप्रत्ययं दद्यान्नित्यं चाह्निकमावहेत् ॥

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रं अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे अष्टाविशोऽध्यायः नावध्यक्षः, आदितः एकोनपञ्चाशः ।

#### ४६ प्रक. गोऽध्यक्षः।

गोऽघ्यक्षो वेतनोपग्राहिकं करप्रतिकः भग्नोत्सृष्टकं भागानुप्रविष्टकं व्रजपर्यग्रं नष्टं विनष्टं क्षीरघृतसञ्जात चोपलभेत ।

गोपालकपिण्डारकदोहकमन्थकलुब्धकाः शतं शतं धेनूनां हिरण्यभृताः पालयेयुः । क्षीरघृतभृता हि वत्सानुपहन्युरिति वेतनोपग्राहिकम् ।

जरद्गुधेनुगर्भिणीप्रष्ठौहीवत्सतरीणां समिवभागं रूपशतमेकः पालयेत्। धृतस्याष्टौ वारकान् पणिकं पुच्छं अङ्कवर्मं च वार्षिकं दद्यादिति करप्रतिकरः।

व्याधितान्यङ्गानन्यदोहीदुर्दोहापुत्रघ्नीनां च समविभागं रूपणतं पालयन्त-स्तज्जातिकं भागं'दद्युरिति भग्नोत्मृष्टकम् ।

परचक्राटवीभायादनुप्रविष्टानां पश्चनां पालनधर्मेण दशभागं दद्युरिति भागानुप्रविष्टकम् ।

वत्सा वत्सतरा दम्या वहिनो वृषा उक्षाणश्च पुङ्गवाः । युगवाहनशकटवहा वृष्यभास्सूनामहिषाः पृष्ठस्कन्धवाहिनश्च महिषाः । वित्सका वत्सतरी प्रष्ठीही गर्भिणी धेनुश्चाप्रजाता वन्ध्याश्च गावो महिष्यश्च । मासद्विमासजाता-स्तासामुपजा वत्सा वित्सकाश्च । मासद्विमासजातानङ्क्षयेत । मासद्विमासजातानङ्क्षयेत । मासद्विमासजातानङ्क्षयेत । मासद्विमासजातानङ्कष्येत । बाङ्कं विज्ञं वर्णं श्राङ्गान्तरं च लक्षणमेवमुपजा निबन्धयेदिति वज्ञप्यंग्रम् ।

चोरहृतमन्ययूथप्रविष्टमवलीनं वा नष्टम्।

पङ्कविषमन्याधिजरातोयाहारावसम्नं वृक्षातटकाष्ठिशालाभिहतमीशानव्याल-सर्पग्राहदावाग्निविपन्नं विनष्टम् । प्रमादादभ्यावहेयुः ।

एवं रूपाग्रं विद्यात्।

स्वयं हन्ता घातयिता हर्ता हारयिता च वध्यः।

परपश्नां राजाङ्केन परिवर्तियता रूपस्य पूर्वं साहसदण्डं दद्यात् ।

स्वदेशीयानां चोरहृतं प्रत्यानीय पणिकं रूपं हरेत्। परदेशीयानां मोक्षयिताऽर्धं हरेत्।

बालवृद्धव्याधितानां गोपालकाः प्रतिकुर्युः ।

लुब्धकश्वगणिभिरपास्तस्तेनब्यालपरबाधभयमृतुविभक्तमरण्यं चारयेयुः । सर्पव्यालत्नासनार्थं गोचरानुपातज्ञानार्थं च त्रस्तूनां घण्टातूर्यं च बध्नीयुः । समव्यूढतीर्थमकर्दमग्राहमुदकमवतारयेयुः पालयेयुश्च ।

स्तेनव्यालसर्पग्राहगृहीतं व्याधिजराऽवसन्नं च वावेदयेयुरन्यथा रूपमूल्यं भजेरन्।

कारणमृतस्याङ्कचर्म गोमहिषस्य, कर्णलक्षणमजाविकानां, पुच्छमङ्कचर्म चाश्वखरोष्ट्राणां, बालचर्मवस्तिपित्तस्नायुदन्तखुरश्रङ्कास्थीनि चाहरेयुः।

मांसमाममार्द्र शुष्कं वा विक्रीणीयुः।

उदश्वित् श्ववराहेभ्यो दद्युः।

कूचिकां सेनाभक्तार्थमाहरेयुः।

किलाटो घाणपिण्याकक्लेदार्थः।

पशुविकेता पादिकं रूपं दद्यात्।

वर्शाशरद्धेमन्तानुभवतः कालं दह्युः । शिशारवसन्तग्रीष्मानेककालम् । द्वितीयकालदोग्धुरङ्कष्ठच्छेदो दण्डः । दोहकालमतिकामतस्तत्फलहानं

दण्डः ।

एतेन नस्यदम्ययुगि ज्ञनवर्तनहाला व्याख्याताः ।

क्षीरद्रोणे गवां घृतप्रस्थः । पञ्चभागाधिको महिषोणां । द्विभागाधिको-ज्ञावीनां । मन्यो वा सर्वेषां प्रमाणं, भूमितृणोदकविशेषाद्धि क्षीरधृत-वृद्धिर्भवति ।

यूयवृषं वृषेणावपातयतः पूर्वः साहसदण्डः, घातयत उत्तमः । वर्णावरोधेन दशतीरक्षा ।

उपनिवेशदिग्विभागो गोप्रचाराद् बलान्वयते वा गवां रक्षासामध्यच्चि ।

अजादीनां षाण्मासिकीमूर्णां ग्राहयेत् । तेनाश्वखरोष्ट्रवराहन्नजा व्याख्याताः ।

वलीवर्दानां नस्याश्वभद्रगतिवाहिनां यवसस्याधंभारः, तृणस्य द्विगुणं, तुला घाणिपण्याकस्य, दशाढकं कणकुण्डकस्य, पञ्चपिकं मुखलवणं, तैलकुडुवो नस्यं प्रस्यः पानम्। मांसतुला, दध्नश्चाढकं, यवद्रोणं, माषाणां वा पुलाकः। क्षीरद्रोणमर्घाढकं वा सुरायाः, स्नेहअस्यः क्षारदशपलं श्टङ्गिवेरपलं च प्रतिपानम्। पादोनमश्वतरगोखराणां, द्विगुणं महिषोष्ट्राणां कर्मंकरवलोवर्दानां पायनायं च धेनूनाम्। कर्मकालतः फलतश्च विधानम्। सर्वेषां तृणोदक-प्रकाम्यमिति गोमण्डलं व्याख्यातम्।

> पञ्चर्षमं खराश्वानामजावीनां दशर्षभम् । शक्यं गोमहिषोष्ट्राणां यूथं कुर्याच्चतुर्वृषम् ।। इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे एकोनित्रशोऽध्यायः गोऽध्यक्षः, आदितः पञ्चाशः ।

#### ४७ प्रक. अश्वाध्यक्षः।

अश्वाध्यक्षः पण्यागारिकं ऋयोपागतमाहवलब्धमाजातं साहाय्यागतकं पणस्थितं यावत्कालिकं वाऽश्वपर्यग्रं कुनवयोवर्णचिह्नवर्गागमैर्लेखयेत्।

अप्रशस्तन्य ङ्गव्याघितांश्चावेदयेत् ।

कोशकोष्ठागाराभ्यां च गृहीत्वा मासलाममश्ववाहश्चिन्तयेत् ।

अश्वविभवेनायतामश्वायामद्विगुणविस्तारां चतुर्द्वारोपावर्तनमध्यां सप्रग्रीवां प्रद्वादासनफलकयुक्तां वानरमयूरप्रृपतनकुलचकोरणुकशारिकाभिराकीणाँ शालां निवेशयेत्।

अश्वायामचतुरश्रशलक्ष्णफलकास्तारं सखादनकोष्ठकं समूत्रपुरीषोत्सर्गः मेर्केकशः प्राङ् मुख मुदङ् मुखं वा स्थानं निवेशयेत् । शालावशेन वा दिग्विभाग कल्पयेत् । बडबावृषिकशोराणाम् एकान्तेषु ।

बडबायाः प्रजातायास्त्रिरातं घृतप्रस्थापानं, अल ऊध्वं सक्तुप्रस्थ स्नेहभैपज्यप्रतिपानं दशरात्ने, ततः पुलाको यवसमातंवश्वाहारः । दशरात्नादूध्वं किशोरस्य घृतचतुर्भागः सक्तुकुहुवः, क्षीरप्रस्थश्वाहार आ षण्मासादिति । ततः परं मासोत्तरमधंवृद्धियंवप्रस्थस्य आ तिवर्षात्, द्रोण आ चतुवर्षादिति । अत ऊध्वं चतुर्वर्षः पश्ववर्षो वा कर्मण्यः पूर्णप्रमाणः ।

द्वातिशदङ्कुलं मुखमुतमाश्वस्य, पश्च मुखान्यायामः, विशत्यङ्कुला जङ्घा, चतुर्जङ्घ उत्सेवः। त्राङ्कुलावरं मध्यमावरयोः। शताङ्कुलः परिणाहः। पश्चभागावरं मध्यमावरयोः।

उत्तमाश्चस्य दिद्रोणं शालिव्रीहियवप्रियङ्गूणामधंशुष्कमधंसिद्धं वा,
मुद्माषाणां वा पुलाकः । स्नेहर्प्रस्थश्च । पञ्चपलं लवणस्य । मांसं
पञ्चाशत्पिककं रसस्यादकं द्विगुणं वा दघ्नः पिण्डवलेदनार्थम् । क्षारपञ्चपालिकः सुरायाः प्रस्थः पयसो वा द्विगुणः प्रतिपानम् । दीर्घपथभारक्लान्तानां
च स्वादनार्थं स्नेहप्रस्थोऽनुवासनं कुडुवो नस्यकर्मणः । यवसस्यार्घभारः,
तृणस्य द्विगुणः षडरिनपरिक्षेपः पुञ्जीलग्राहो वा ।

पादावरमेतन्मध्यमावरयोः । उत्तमसमो रथ्यो वृषश्च मध्यमः । मध्यमसमश्चावरः । पादहीनं बडवानां पारशमानां च । अतोऽर्धं किशोराणां च इति विधायोगः ।

विधापावकसूत्रग्राहकचिकित्सकाः प्रतिस्वादभाजः। युद्धव्याधिजरा-कर्मक्षीणाः पिण्डगोचरिकाः स्युः असमरप्रयोग्याः पौरजानपदानामर्थेन वृषा वडवास्वायोज्याः।

प्रयोग्यानामुत्तमाः काम्बोजकसैन्धवारट्टजवनायुजाः। मध्यमा वाह्णीक-पापेयकसौबीरकतैतजाः शेषाः प्रत्यवराः।

तेषां तीक्ष्णभद्रमन्दवशेन साम्नाह्यनीपवाह्यकं वा कर्म प्रयोजयेत् । चतुरश्रं कर्माश्वस्य साम्नाह्यम् ।

वरुगनो नीचैर्गतो लङ्घनो घोरणो नारोष्ट्रश्वौपवाह्याः।

तत्नौपवेणुको वर्धमानको यमक आलीढप्लुतः पृथ (पूर्वः) गस्त्रिकचाली च वल्गनः।

स एव शिरःकणंविशुद्धो नीचैर्गतः, षोडशमार्गो वा। अकीर्णकः प्रकी-णोत्तरो निषण्णः पादवीनुवृत्त ऊर्मिमार्गः शरभकीडितरशरभप्लुतः वितालो बाह्यानवृत्तः पञ्चपाणिस्सिहायतस्स्वाधूतः क्लिष्टः दिलङ्गितो वृंहितः पुष्पामिकीर्णश्चेति नीचैर्गतमार्गाः।

कपिप्लुतो भेकप्लुत एकप्लुत एकपादप्लुतः कोकिलसंचार्युरस्यो बकचारी च लङ्कनः।

काङ्को वारिकाङ्को मयूरोऽर्धमयूरी नाकुलोऽर्धनाकुलो वाराहोऽर्धवाराहण्चेति घोरण: ।

संजाप्रतिकारो नारोष्ट्र इति।

पण्णव द्वादशेति योजनान्यध्वा रथ्यानां पञ्चयोजनान्यर्धाष्टमानि दशेति पृष्ठवाह्यानामश्वानामध्वा ।

विक्रमो भद्राश्वासो भारवाह्य इति मार्गाः ।

विक्रमो विल्गतम्पकण्ठम्पजवो जवइच धाराः।

तेषां बन्धनोपकरणं योग्याचार्याः प्रतिदिशेयुः । साङ्ग्रामिकं रथा-श्वालङ्कारं च सूताः । अश्वानां चिकित्सकाः शरीरह्नासवृद्धिप्रतीकारमृतु-विभक्तं चाहारम् ।

सूत्रग्राहकाश्वबन्धकयावसिकविधापाचकस्थानपालकेशकारजाङ्गलीविदश्च स्वकर्मभिरश्वानाराधयेयु:।

कर्मातिक्रमे चैषां दिवसवेतनच्छेदनं कुर्यात् । नीराजनोपरुद्धं वाह्रयत-श्चिकित्सकोपरुद्धं वा द्वादशपणो दण्डः । कियाभैषज्यसङ्ग्नेन व्याधिवृद्धौ प्रतीकारद्विगुणो दण्डः । तदवरोधेन वैलोम्ये पत्नमृत्यं दण्डः ।

तेन गोमण्डलं खरोष्ट्रमहिषमजाविकं च व्याख्यातम्।

द्विरह्नस्क्षानमश्वानां गन्धमाल्यं च दापयेत् । कृष्णसन्धिपु भूतेज्याः शुक्लेण स्वस्तिवाचनप् ।। नीराजनामाश्वयुजे कारयेश्ववमेऽहनि । यात्रादाववसाने वा व्याधी वा शान्तिके रतः ।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे विशोऽध्यायः अश्वाध्यक्षः, सादित एकपश्वाशः ।

#### ४८ प्रक. हस्त्यध्यक्षः।

हस्त्यध्यक्षो हस्तिवनरक्षां दम्यकर्मक्षान्तानां हस्तिहस्तिनीकलभानां गालास्थानग्रय्याकर्मविधायवसप्रमाणं कर्मस्यायोगं बन्धनोपकरणं साङ्ग्रामिक-मलङ्कारं चिकित्सकानीकस्थोपस्थायुकवर्गं चानृतिष्ठेत् ।

हस्त्यायामद्विगुणोत्सेघविष्कम्मायामां हस्तिनीस्थानाधिकां सप्रग्रीवां कुमारीसङ्ग्रहां प्राङ्मुखीमुदङमुखीं वा णालां निवेशयेत् ।

हस्त्यायामचतुरश्रश्रक्षणालानस्तम्भफलकान्तरकं मूत्रपुरीषोत्सर्गस्यःनं निवे-णयेत् । स्थानसमग्रय्यामर्घापाश्रयां दुर्गे साम्नाह्योपवाह्यानां बहिर्दम्य-व्यालानाम् । प्रथमसप्समावष्टमभागावह्नस्कानकालो, तदनन्तरं, विधायाः। पूर्वाह्णे व्यायामकालः, पश्चाह्नः प्रतिपानकालः। राविभागो द्वो स्वप्नकालो, विभागस्यंवेशनोत्थानिकः।

ग्रीष्मे ग्रहणकालः । विशतिवर्षो ग्राह्यः ।

विक्को मूढो मत्कुणो व्याधितो गिभणा धेनुका हस्तिनी चाग्राह्याः।

सप्तारित्नरुत्सेधो नवायामो दशपरिणाहः प्रमाणतश्चत्वारिशद्वर्षो भवत्युत्तमः । विशद्वर्षो मध्यमः । पश्चिविशतिवर्षोऽवरः ।

तयोः पादावरो विधाविधिः।

अरत्नौ तण्डुलद्रोणः । अर्घाटकं तैलस्य । सिप्पस्तयः प्रस्थाः । दशपलं लवणस्य । मासं पञ्चाशत्पिलकम् । रसस्याढकं द्विगुणं वा दध्नः पिण्डक्लेद-नार्थम् । क्षारं दशपिलकम् मद्यस्य आढकं द्विगुणं वा पयसः प्रतिपानम् । गात्नावसेकस्तैलप्रस्थः शिरसोऽष्टभागः प्रादोपिकश्च । यवसस्य द्वौ भारौ सपादौ शृष्यस्य गुष्कास्यर्धनृतीयो भारः । कडङ्गरस्यानियमः ।

सप्तारितना तुल्यभोजनोऽष्टारितनरत्यरालः ।

यथाहस्तमवशेपः षडरितनः पञ्चारितनश्च ।

क्षीरयावसिको विक्कः ऋौडार्थ ग्राह्यः।

सञ्जातलोहिता प्रतिच्छन्ना संलिप्तपक्षा समकक्ष्याच्यतिकीर्णमांसा सम-तल्यतला जातदोणिकेति शोभाः।

> शोभावशेन व्यायामं भद्रं मन्द्रं च कारयेत् । मृगसङ्कीर्णलिङ्गं च कर्मस्वृतुवशेन वा ॥

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे एकविशोऽध्यायः हस्त्यध्यक्षः, आदितो द्विपश्चाशः।

## ४८ प्रक. हस्त्यध्यक्षः—हस्तिप्रचारः।

कर्मस्कन्धाः चत्वारः दम्यस्सान्नह्य औपवाह्यो व्यालश्च ।

तन्न दम्यः पञ्चिवधः---स्कन्धगतः स्तम्भगतो वारिगतोऽवपातगतो यूथगतक्चेति । तस्योपविचारो विक्ककर्म ।

साम्राह्यस्सप्तिक्रयापथः — उपस्थानं संवर्तनं संयानं वधावधो हस्तियुद्धं नागरायणं साङ्ग्रामिकं च । तस्योपविचारः कक्ष्याकर्मं प्रैवेयकर्मं यूथकर्मं च । औपवाह्योऽष्टिवधः—आचरणः, कुञ्जरौपवाह्यः, धोरणः, आधानगतिकः, यष्टचुपवाह्यः, तोत्रोपवाह्यः, शुद्धोपवाह्यः, मार्गायुकश्चेति । तस्योपविचारः शारदकर्महीनकर्मं नारोष्ट्रकर्मं च ।

व्याल ऐकिकियारथः। तस्योपिवचार आयम्यैकरक्षः कर्मशिङ्कितोऽवरुद्धो विषमः प्रभिन्नः प्रभिन्नविनिश्चयो मदहेतुविनिश्चयश्च।

क्रियापिपन्नो ब्यालः । शुद्धस्सुन्नतो विषमः सर्वदोषप्रदुष्टश्च ।

तेषां बन्धनोपकरणमनीकस्थप्रमाणम्। आलानग्रैवेयकक्ष्यापरायणपरि-क्षेपोत्तरादिकं बन्धनम्। अङ्कुशवेणुयन्त्रादिकमुषकरणम्। वैजयन्तीक्षुर-प्रमालास्तरणकुथादिकं भूषणम्। वर्मतोमरशरावापयन्त्रादिकस्साङ्ग्रामिका-लङ्कारः।

चिकित्सकानीकस्थारोहकाद्योरणहस्तिपकोपचारिकविधापाचकयावसिकपाद-पाशिकक्टीरक्षकोपशायिकादिरौपस्थायिकवर्गः ।

चिकित्सककुटीरक्षविधापाचकाः प्रस्थौदनं स्नेहप्रसृति क्षारलवणयोश्च द्विपलिकं हरेयुः । दशपलं मांसस्यान्यत्न चिकित्सकेभ्यः ।

पथिब्याधिकमम्मदगराऽभितप्तानां चिकस्सकाः प्रतिकुर्युः ।

स्थानस्यागुद्धिर्यंवसस्याग्रहणं स्थले शायनमभागे घातः परारोहणमकाले यानमभूमावतीर्थेऽवतराणं तरुषण्ड ६२४८त्ययस्थानानि । तमेषां भक्तवेतना-दाददीत ।

तिस्त्रो नीराजनाः कार्याश्चातुर्मास्यर्तुसन्धिषु । मूतानां कृष्णसन्धीज्यास्सेनान्यः शुक्लसन्धिषु ॥ दन्तमूलपरीणाहद्विगुणं प्रोज्झ्य कल्पयेत् । अब्दे द्वचर्धे नदीजानां पञ्चाब्दे पर्वतौकसाम् ॥

इति कौटिलीयायंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे द्वानिशोऽध्यायः हस्तिप्रचारः, आदितः निपन्चाशः।

## ४६-५१ प्रक. रथाध्यक्षः, पत्त्यध्यक्षः, सेनापतिपत्रचारः ।

अश्वाध्यक्षेण रथाध्यक्षो व्याख्यातः ।

स रथकर्मान्तान् कारयेत्।

दशपुरुषो द्वादशान्तरो रथः। तस्मादेकान्तराबरा आ षडन्तरादिति सप्त रथाः।

देवरथपुष्यरथसाङ्ग्रामिकपारियाणिकपरपुराभियानिकवैतियिकांश्च रथान् कारयेत् ।

इब्बस्तप्रहरणावरणोपकरणकल्पनास्सारिथरिषकरथ्यानां च कर्मस्वायोगं विद्यात्। आ कर्मभ्यश्च भक्तवेतनं भृतानामभृतानां च योग्यरक्षानुष्ठानमर्थं-मानकर्मं च।

एतेन पत्त्यध्यक्षो व्याख्यातः। स मौलभृतश्रेणिमित्रामित्राटवीबलानां सारफल्गुतां विद्यात्। निम्नस्थलप्रकाशकूटखनकाकाशदिवारात्रियुद्धव्यायामं च विद्यात्। आयोगमयोगं च कर्मसु।

तदेव सेनापितस्सर्वयुद्धप्रहरणिवद्याविनीतो हस्त्यश्वरथचर्यासंघुष्टचतुरङ्गस्य वलस्यानुष्ठानाधिष्ठानं विद्यात् ।

स्वभूमि युद्धकालं प्रत्यनीकमभिन्नभेदनं भिन्नसन्धानं संहतभेदनं भिन्नवधं दुगैवधं यात्राकालं च पश्येत्।

तूर्यंध्वजपताकाभिर्व्यूहसंज्ञाः प्रकल्पयेत् । स्थाने याने प्रहरणे सैन्यानां विनये रतः ॥

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे वयस्त्रिक्षोऽध्यायः रधाध्यक्षः पत्यध्यक्षः सेनापतिप्रचारश्च, आदितः चतुष्पःचाशः।

# ५२-५३ प्रक. मुद्राध्यक्षः, विवीताध्यक्षः।

मुद्राऽध्यक्षो मुद्रां माषकेण दद्यात् । समुद्रो जनपदं प्रवेष्टुं निष्क्रमितुं वा लभेत ।

द्वादशपणममुद्रो जानपदो दद्यात्। कूटमुद्रायां पूर्वस्साहसदण्डः। तिरोजनपदस्योत्तमः।

[२ अधि. ३४ अध्या.

विवीताध्यक्षो मुद्रां पश्येत् ।

भयान्तरेषु च विवीतं स्थापयेत् । चोरव्यालभयान्निम्नारण्यानि शोधयेत् । अनुदके कूपसेतुबन्धोत्सान् स्थापयेत्, पुष्पफलवाटांश्च ।

लुब्धकश्वगणिनः परिव्रजेयुररण्यानि ।

तस्करामित्राभ्यागमे शङ्खदुन्दुभिशब्दमेग्राह्याः कुर्युः शैलवृक्षाधिरूढा वा, शीघ्रवाहना वा।

अभिवाटवीसश्वारं च राज्ञो गृहकपोर्तमुद्रायुक्तैर्हारयेयुः धूमाग्निपरंपरया वा । द्रव्यहस्तिवनाजीवं वर्तनीं चोररक्षणम् । सार्थातिवाह्यं गोरक्यं व्यवहारं च कारयेत् ।।

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे चतुस्त्रिक्षोऽध्यायः मुद्राध्यक्षो विवीताध्यक्षः, आदितः पञ्चपञ्चाशः ।

# ५४-५५ प्रक. समाहत् प्रचारः ग्रहपतिवैदेहक-तापसब्यञ्जनाः प्रणिधयः ।

समाहर्ता चतुर्धा जनपदं विभज्य ज्येष्ठमध्यमकनिष्ठविभागेन ग्रामाग्रं परिहारकमायुधीयं धान्यपणुहिरण्यकुष्यविष्टिप्रतिकरिमदमेतावदिति निबन्धयेत्। तत्प्रदिष्टः पञ्चग्रामीं दशग्रामीं वा गोपश्चिन्तयेत्।

सीमावरोधेन ग्रामाग्रं, कृष्टाकृष्टस्थलकेदारारामपण्डवाटवनवास्तुर्चत्यदेव गृहसेतुँबन्धश्मशानसत्त्रप्रापुण्यस्थानविवीतपथिसङ्ख्यानेन क्षेत्राग्रं, तेन सीम्नां क्षेत्राणां च मर्यादारण्यपथिप्रमाणसम्प्रदानविकयानुग्रहपरिहारनिवन्धान् कारयेत्। गृहाणां च करदाकरदसङ्ख्यानेन।

तेषु चैतावच्चानुर्वण्यंमेतावन्तः कर्षंकगोरक्षकवैदेहककारुकर्मकरदासा-श्चैतावच्च द्विपदचतुष्पदिमदं चैष हिरण्यविष्टिणुल्कदण्डं समुत्तिष्ठितीति ।

कलानां च स्त्रीपुरुषाणां बालवृद्धकर्मचरित्राजीवव्ययपरिमाणं विद्यात् । एवं च जनपदचतुर्भागं स्थानिकः चिन्तयेतु ।

गोपस्थानिकस्थानेषु प्रदेष्टारः कार्यकरणं बलिप्रग्रहं च कुर्युः ।

समाहतृंप्रदिष्टाश्च गृहपतिकव्यञ्जना येषु ग्रामेषु प्रणिहितास्तेषां ग्रामाणां क्षेत्रगृहकुलाग्रं विद्युः । मानसञ्जाताभ्यां क्षेत्राणि, भोगपरिहाराभ्यां गृहाणि,

वर्णकर्मभ्यां कुलानि च । तेषां जङ्घाग्रमायव्ययौ च विद्युः । प्रस्थितागतानां च प्रवासावासकारणमनथ्यानां च स्त्रीपुरुषाणां चारप्रचारं च विद्युः ।

एवं वैदेहकव्यञ्जनाः स्वभूमिजानां राजपण्यानां खनिसेतुवनकर्मान्त-क्षेत्रजानां परिमाणमर्षं च विद्युः । परभूमिजातानां वारिस्थलपथोपयातानां सारफल्गुपण्यानां कर्मसु च शुल्कवर्तन्यातिवाहिकगुल्मतरदेयभागभक्तपण्यागार-प्रमाणं विद्युः ।

एवं समाहतृं प्रदिष्टास्तापसव्यञ्जनाः कर्षकगोरक्षकवैदेहकानामध्यक्षाणां च शौचाशौचं विद्युः । पुराणचोरव्यञ्जनाश्चान्तेवासिनश्चैत्यचतुष्पयशून्यपदोद-पानतोर्थायतनाश्रमारण्यशैलवनगहनेषु तेनामित्रप्रवीरपुरुषाणां च प्रवेशन स्थानगमनप्रयोजनान्युपलभेरन् ।

समाहर्ता जनपदं चिन्तयेदेवमुत्थितः । चिन्तयेयुश्च संस्थास्तास्संस्थाश्चान्यास्स्वयोनयः ॥ इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे पश्चित्रशोऽध्यायः

समाहतृ प्रचारः गृहपतिवैदेहकतापसव्यञ्जनप्रणिधयश्च, आदितष्यटपन्त्राणः ।

# प्रद प्रक. नागरिकप्रणिधिः।

समाहतृ वन्नागरिको नगरं चिन्तयेत्। दशकुली गोपः, विशतिकुलीं चत्वारिशत्कुलीं वा। स तस्यां स्त्रीपुरुषाणां जातिगोत्ननामकर्मभिः जङ्घाप्रमायव्ययौ च विद्यात्।

एवं दुर्गचतुर्भागं स्थानिकश्चिन्तयेत्।

धर्मावसथिनः पाषण्डिपथिकानावेद्यं वासयेयुः। स्वप्रत्यायाश्च तपस्विनश्शोतियांश्च।

कारुशिल्पिनस्स्वकर्मस्थानेषु स्वजनं वासयेयुः। वैदेहकाश्चान्योन्यं स्वकर्मस्थानेषु। पण्यानामदेशकालविकतारमस्वकरणंच निवेदयेयुः।

णौण्डिकपाक्यमांसिकौदनिकरूपाजीवाः परिज्ञातमावासयेयुः । अतिव्यय-कर्तारमत्याहितकर्माणं च निवेदयेयुः । चिकित्सकः प्रच्छन्नव्रणप्रतीकारकारियतारमपथ्यकारिणं च गृहस्वामी च निवेद्य गोपस्थानिकयोर्मुच्येत् । अन्यथा तुल्यदोषस्स्यात् ।

प्रस्थितागतौ च निवेदयेत्। अन्यथा राविदोषं भजेत । क्षेमराविषु विपणं दद्यात्।

पथिकोत्पथिकाश्च वहिरन्तश्च नगरस्य देवगृहपुण्यस्थानवनश्मशानेषु सव्वणमनिष्टोपकरणमुद्भाण्डीकृतमाविग्नमतिस्वप्नमध्वक्रान्तमपूर्वं वा गृह्णीयुः।

एवमभ्यन्तरे शून्यनिवेशावशनशोण्डिकोदनिकपाक्वमांसिकद्यूतपाषण्डावासेषु विचयं कुर्युः ।

अग्निप्रतीकारं च ग्रीष्मे मध्यमयोरह्मश्चतुर्भागयोः । अष्टभागोऽग्निदण्डः । वहिरिधश्रयणं वा कुर्युः ।

पादः पञ्चघटीनां कुम्भद्रोणीनिश्रेणीपरशुशूर्पाङ्कुशकचग्रहणीदृतीनां चाकरणे ।

तृणकटच्छन्नान्यपनयेत्। अग्निजीविन एकस्थान् वासयेत्। स्वगृहप्रद्वारेषु गृहस्वामिनो वसेयुः। असंपातिनो रात्रौ रथ्यासु कूटव्रजास्सहस्रं तिष्ठेयुः। चतुष्पद्वारे राजपरिग्रहेषु च।

प्रदीप्तमनिभधावतो गृहस्वामिनो द्वादशपणो दण्डः । षट्पणोऽवक्रयिणः । प्रमादाद्दीप्तेषु चतुष्पञ्चाषत्पणो दण्डः ।

प्रादोपिकीऽग्निना वध्यः।

पांसुन्यासे रथ्यायामब्टभागो दण्डः ।

पङ्कोदकसिन्न रोधे पादः। राजमार्गे द्विगुणः।

पुण्यस्थानोदकस्थानदेवगृहराजपरिग्रहेषु पणोत्तरा विष्ठा दण्डाः। मूत्रे-ष्वधंदण्डाः।

भैषज्यव्याधिभयनिमित्तमदहचाः ।

मार्जारश्वनकुलसर्पप्रेतानां नगरस्यान्तरुत्सर्गे विषणो दण्डः। खरोष्ट्रा-श्वतराश्वपमुप्रेतानां षट्पणः। मनुष्यप्रेतानां पश्चामात्पणः।

भागविषयि शवद्वारादन्यसम्भविनर्णयने पूर्वस्साहसदण्डः । द्वाःस्थानां दिशतम् । ममन्नानादन्यत्र न्यासे दहने च द्वादशपणो दण्डः ।

विषण्नालिकमुभयतो रात्रं यामतूर्यम् ; तूर्यंशब्दे राज्ञो गृहाभ्याशे सपादपणमक्षणताडनम्, प्रथमपश्चिमयामिकम्, मध्यमयायामिकं द्विगुणम्, बहिश्चतुर्गुणम् ।

शङ्कनीये देशे लिङ्गे पूर्वापदाने च गृहीतमनुयुञ्जीत ।

राजपरिग्रहोपगमने नगररक्षारोहणे च मध्यमस्साहसदण्डः । सूतिकाचिकित्सकप्रेतप्रदीपयाननागरिकतूर्यप्रेक्षाग्निनिमत्तं मुद्राभिश्चाग्राह्याः । चाररात्तिषु प्रच्छन्नविपरतीवेषाः प्रत्नजिता दण्डशस्त्रहस्ताश्च मनुष्या दोषतो दण्डयाः ।

रक्षिणामवार्यं वारयतां वार्यं चाबारयतामक्षणिद्वगुणो दण्डः । स्त्रियं दासीमिधमेहयतां पूर्वस्साहसदण्डः । अदासी मध्यमः । कृतावरोधामुत्तमः, कुलस्त्रियं वधः ।

चेतनाचेतनिकं रात्निदोषमशंसतो नागरिकस्य दोषानुरूपो दण्डः। प्रमादस्थाने च।

नित्यमुदकस्थानमार्गभूमिच्छन्नपथवप्रप्राकाररक्षावेक्षणं नष्टप्रस्मृतापसृतानां च रक्षणम् ।

बन्धनागारे च बालबृद्धन्याधितानाथानां च जातनक्षत्रपौर्णमासीषु विसर्गः । पुण्यशीलास्समयानुबद्धा वा दोषनिष्क्रयं दद्युः ।

दिवसे पञ्चराते वा बन्धनस्थान् विशोधयेत् । कर्मणा कायदण्डेन हिरण्यानुग्रहेण वा ॥ अपूर्वदेशाधिगमे युवराजाभिषेचने । पुत्रजन्मनि वा मोक्षो बन्धनस्य विधीयते ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अध्यक्षप्रचारे द्वितीयाधिकरणे षट्तिशोऽध्यायः नागरिकप्रणिधिः, आदितस्सप्तपञ्चाशः । एतावता कौटिलीयस्यार्थशास्त्रस्य अध्यक्षप्रचारो द्वितीयमधिकरणं समाप्तम् ।

# धर्मस्थीयं—तृतीयमधिकरणम् ५७-५८ प्रक. व्यवहारस्थापना विवादपदनिबन्धः ।

धर्मस्थास्त्रयस्त्रयोऽमात्या जनपदसन्धिसङ्ग्रह्द्रोणमुखस्थानीयेषु व्यव -हारिकानर्थान् कुर्युः ।

तिरोहितान्तरगारनक्तारण्योपध्युपह्वरकृतांश्च व्यवहारान् प्रतिषेधयेयुः।

कर्तुः कारियतुश्च पूर्वस्साहसदण्डः । श्रोतृृणामेकैकं प्रत्यर्धदण्डाः । श्रद्धेयानां तु द्रव्यव्यपनयः ।

परोक्षेणाधिकर्णग्रहणमवक्तव्यकरा वा तिरोहितास्सिध्येयुः । दायनिक्षेपोप-निधिविवाहसंयुक्ताः स्त्रीणामनिष्कासिनीनां व्याधितानां चामूढसंज्ञानामन्त रगारकृतास्सिध्येयुः ।

साहसानुप्रवेशकलहिववाहराजनियोगयुक्ताः पूर्वरातव्यवहारिणां रातिकृताः सिध्येयुः ।

सार्थत्रजाश्रमव्याधचारणमध्येष्वरण्यचराणामरण्यकृतास्सिध्येयुः । गूढाजीविषु चोपधिकृतास्सिध्येयुः ।

मिथस्समवाये चोपह्वरकृताः सिध्येयुः । अतोऽन्यथा न सिध्येयुः ।

अपाश्रयविद्भिश्च कृताः, वितृमता पुत्रेण, पिता पुत्रवता, निष्कुलेन भ्राता किन्छेनाविभक्तांशेन, पितमया, पुत्रवस्या च स्त्रिया, दासाहितकाम्यां, अप्राप्तातीतव्यवहाराभ्यां, अभिशस्तप्रव्रजितव्यङ्गव्यलिनिभ्र्यान्यत्न निसृष्ट-व्यवहारेभ्यः।

तत्नापि ऋद्धेनार्तेन मत्तेनोन्मत्तेनावगृहीतेन वा कृता व्यवहारा न सिध्येयुः । कर्तृंकारियतृश्रोनृणां पृथग्यथोक्ता दण्डाः । स्वे स्वे तु वर्गे देशे काले च स्वकरणकृतास्संम्पूणंचाराश्शुद्धदेशा दृष्टरूपलक्षणप्रमाणगुणास्सर्वव्यवहारा- स्सिध्येयुः । पश्चिमं त्वेषां करणमादेशाधिवर्ज श्रद्धेयम् ।

संवत्सरमृतुं मासं पक्षं दिवसं करणमधिकरणमृणं वेदकावेदकयोः कृतसमर्थावस्थयोर्देशग्रामजातिगोत्रनामकर्माणि चाभिलिख्य वादिप्रतिवादिप्रश्ना-नर्थानुपूर्व्या निवेशयेत् । निविष्टांश्चावेक्षेत ।

निबद्धं पादमुत्मृज्यान्यं पादं सङ्क्रामित । पूर्वोक्तं पश्चिमेनार्थेननाभि-सम्बद्धयते । परत्नान्यमनभिग्राह्मामभिग्राह्माविष्ठते । प्रतिज्ञाय देशं "निर्दिश" इत्युक्ते न निर्दिशित । हीनदेशमदेशं वा निर्दिशित । निर्दिष्टाद्देशादन्यदेश-मुपस्थापयति । उपस्थिते देशेऽथंवचनं "नैवम्" इत्यपव्ययते । साक्षिभिरवधृतं नेच्छति । असम्भाष्ये देशे साक्षिभिमिथस्सम्भापते । इति परोक्तहेतवः ।

परोक्तदण्डः पञ्चवन्धः । स्वयंवादिदण्डो दशवन्धः । पुरुषभृतिरष्टांशः । पथिभक्तमर्घविशेषतः । तदुभयं नियम्यो दद्यात् ।

अभियुक्तो न प्रत्यभियुञ्जीत, अन्यत कलहसाहससार्थंसमवायेभ्यः। न चाभियुक्तेऽभियोगोऽस्ति। अभियोक्ता चेत् प्रत्युक्तस्तदहरेव न प्रति ब्रूयात्, परोक्तस्स्यात्। कृतकार्यविनिश्चयो ह्यभिनियोक्ता नाभियुक्तः। तस्याप्रति- बुवतस्तिरात्नं सप्तरात्नमिति । अत ऊर्ध्वं तिपणावराद्यं द्वादशपणपरं दण्डं कुर्यात् । तिपक्षादूद्ध्वंमप्रतित्रुवतः परोक्तदण्डं कृत्वा यान्यस्य द्रव्याणि स्युस्ततोऽभियोक्तारं प्रतिपादयेदन्यत्र प्रत्युपकरणेभ्यः । तदेव निष्पततोऽभियुक्तस्य कुर्यात् । अभियोक्तुनिष्पातसमकालः परोक्तभावः । प्रेतस्य व्यसनिनो वा साक्षिवचनाः सारम् अभियोक्ता दण्डं दत्त्वा कर्मं कारयेत् । आधि वा स कामं प्रवेणयेत् । रक्षो झरक्षितं वा कर्मणा प्रतिपादयेत् अन्यत्र बाह्मणादिति ।

चत्रवणिश्रमस्यायं लोकस्याचाररक्षणात्। नक्यतां सर्वधमणां राजा धर्मप्रवर्तकः ॥ धर्मश्च व्यवहारश्च चरितं राजशासनम् । विवादार्थश्रत्ष्पादः पश्चिमः पूर्ववाधकः ॥ अत सत्यस्थितो धर्मो व्यवहारस्तु साक्षिपु । चरित्रं सङ्ग्रहे पुसां राज्ञामाज्ञा तु शासनम् ॥ राज्ञः स्वधर्मस्स्वर्गाय प्रजा धर्मेण रक्षितुः। अरक्षितुर्वा क्षेप्तुर्वा मिथ्यादण्डमतोऽन्यथा ॥ दण्डो हि केवलो लोकं परं चेमं च रक्षति । राज्ञा पुत्ने च शती च यथादोषं समं धृतः ।। अनुशासद्धि धर्मेण व्यवहारेण संस्थया। न्यायेन च चतुर्थेन चतुरन्तां महीं जयेत्।। संस्थाया धर्मशास्त्रेण शास्त्रं वा व्यवहारिकम्। योऽस्मिन्नर्थे विरुध्येत धर्मेणायै विनिश्चयेत् ॥ शास्त्रं विप्रतिपद्येत धर्मन्यायेन केनित्। न्यायस्तव प्रमाणं स्यात्तव पाठो हि नश्यति ॥ दष्टदोषस्स्वयंवादः स्वपक्षपरपक्षयोः। अनुयोगाजंवं हेतुश्शपथश्चार्थसाधकः ॥ पूर्वोत्तरार्थव्याघाते साक्षिवक्तव्यकारणे । चारहस्ताच्च निष्पाते प्रदेष्टव्यः पराजयः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्यीये तृतीयाधिकरणे प्रथमोऽध्यायः विवादपदनिबन्धः, आदितोऽण्टपश्चाशः।

# ५६ प्रक. विवाहसंयुक्तम्—विवाहधर्मः स्त्रीधनकल्प आधिवेदनिकम्।

विवाहपूर्वो व्यवहारः ।
कन्यादानं कन्यामलङ्कृत्य ब्राह्मो विवाहः ।
सहधमंचर्या प्राजापत्यः ।
गोमिथुनादानादार्षः ।
अन्तर्वेद्यामृत्विजे दानाद् दैवः ।
मिथस्समवायात् गान्धवः ।
मुस्तादानादाक्षसः ।
मुस्तादानाद्राक्षसः ।
सुप्तादानाद्रिणाचः ।
पितृप्रमाणाश्चत्वारः पूर्वे धम्याः ।
मातापितृप्रमाणाः शेषाः ।
तौ हि णुल्कहरौ दुहितुः । अन्यतराभावेज्यतरो वा ।
दिद्वतीयं णुल्कं स्त्री हरेत् । सर्वेषां प्रीत्यारोपणमप्रतिषद्धम् ।

परद्विसाहस्रा स्थाप्या वृत्तिः। आबन्ध्यानियमः।

तदात्मपुत्रस्नुषाभिर्माणप्रावासाप्रतिविघाने च भार्याया भोक्तुमदोषः । प्रतिरोधकव्याधिदुर्भिक्षभयप्रतीकारे धर्मकार्ये च पत्युः । सम्भूय वा दम्पत्यो-मिथुनं प्रजातयोस्त्रिवर्षोपभुक्तं च धर्मिष्ठेषु विवाहेषु नानुयुञ्जीत । गान्धर्वा-सुरोपभुक्तं सवृद्धिकमुभयं दाप्येत । राक्षसपैशाचोपभुक्तं स्तेयं दद्यात् ।

इति विवाहधर्मः ।

वृत्तिराबन्ध्यं वा स्त्रीधनम् ।

मृते भर्तरि धर्मकामा तदानीमेवास्थाप्याभरणं गुल्कशेषं च लभेत । लब्ध्वा वा विन्दमाना सवृद्धिकमुभयं दाप्येत । कुटुम्बकामा तु श्वग्रुरपतिदत्तं निवेशकाले लभेत । निवेशकालं हि दीर्घप्रवासे व्याख्यास्यामः ।

असुरप्रातिलोभ्येन वा निविष्टा श्वसुरप्रतिदत्तं जीयेत । ज्ञातिहस्ता-दाजिमुख्टाया ज्ञातयो तथागृहीतं दखुः।

न्यायोपगतायाः प्रतिपत्ता स्त्रीधनं गोपायेत् । पतिदायं विन्दमाना जीयेत । धर्मकामा भुञ्जीत । पुत्रवतो विन्दमाना स्त्रीधनं जीयेत । तत्तु स्त्रीधनं पुत्रा हरेयुः । पुत्रभरणार्थे वा विन्दमाना पुत्रार्थे स्फातीकुर्यात् । बहुपुरुषप्रजानां पुत्राणां यथापितृदत्तं स्त्रीधनमवस्थापयेत् । कामकारणीयमपि स्त्रीधनं विन्दमाना पुत्रसंस्थं कुर्यात् ।

अपुता पतिशयनं पालयन्ती गुरुसमीपे स्त्रीधनमायुःक्षयाद् भुञ्जीत । आपदर्थे हि स्त्रीधनम् । ऊर्ध्यं दायादं गच्छेत् ।

जीवति भर्तरि मृतायाः पुत्रा दुहितरश्च स्त्रीधनं विभजेरन् । अपुत्रायाः दुहितरः । तदभावे भर्ता ।

शुल्कमन्वाधेयमन्यद्वा बन्धुभिर्दत्तं बान्धवा हरेयुः । इति स्त्रीधनकल्पः ।

वर्षाण्यष्टावप्रजायमानामपुत्रां बन्ध्यां चाकाङ्क्षेत, दश निन्दुं, द्वादश कन्याप्रसिवनीम्। ततः पुत्रार्थी द्वितीयां विन्देत। तस्यातिक्रमे शुल्कं स्त्रीधनमधं चाधिवेदनिकं दद्यात्। चतुर्विशतिपणपरं च दण्डम्।

शुल्कस्त्रीधनमशुल्कस्त्रीधनायास्तत्प्रमाणमाधिवेदनिकमनुरूपां च वृत्ति दत्त्वा बह्वीरिप विन्देत । पुतार्था हि स्त्रियः ।

तीर्थंसमवाये चासां यथाविवाहं पूर्वोढां जीवत्पुतां वा पूर्वं गच्छेत्। तीर्थगूहनागमने षण्णवितदंण्डः। पुत्रवतीं धर्मकामां बन्ध्यां निन्दुं नीरजस्कां वा नाकामामुपेयात् न चाकामः पुरुषः। कुष्ठिनीमुन्मत्तां वा गच्छेत्। स्त्री तु पुत्रार्थमेवंभूतं वोपगच्छेत्।

नीचत्वं परदेशं वा प्रस्थितो राजकित्विषी । प्राणाभिहन्ता पतितस्त्याज्यः क्लीवोऽपि वा पतिः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः , विवाहसंयुक्ते विवाहधर्मः स्त्रीधनकल्प आधिवेदनिकृम्, आदित एकोनषष्टितमोऽध्यायः ।

# ५६ प्रक. विवाहसंयुक्तम्—शुश्रूषाभर्मपारुष्य-द्वेषातिचारोपकारव्यवहारप्रतिषेधारच ।

द्वादशवर्षा स्त्री प्राप्तव्यवहारा भवति । षोड्शवर्षः पुमान् । अत ऊर्ध्वमशुश्रुषायां द्वादशपणः स्त्रिया दण्डः पुसी द्विगुणः ।

भर्मण्यायामनिर्दिष्टकालायां ग्रासाच्छादनं वाऽधिकं यथापुरुषपरिवापं सिविशेषं दद्यात्। निर्दिष्टकालायां तदेव सङ्ख्याय। बन्धं च दद्यात्। शुरुकस्त्रीधनाधिवेदनिकानामनादने च।

श्वशुरकुलप्रविष्टायां विभक्तायां वा नाभियोज्यः पतिः ।

इति भर्म ।

नग्ने ! विनग्ने ! न्यङ्गे ! अपितृके ! मातृके ! इत्यनिर्देशेन विनयग्राहणम् ।

वेणुदलरज्जुहस्तानामन्यतमेन वा पृष्ठे विराघातः। तस्यातिकमे वाग्दण्डपारुष्यदण्डाभ्यामधंदण्डाः।

तदेव स्तिया भर्तरि प्रसिद्धमदोषाया ईर्ष्याया वाह्यविहारेषु द्वारेष्वत्ययो यथानिदिण्टः।

इति पारुष्यम ।

भतीरं द्विपती स्त्री सप्तार्तवाज्यमण्डयमाना तदानीमेव स्थाप्याभरणं निधाय भतीरम् अन्यया सह गयानमनुशयीत ।

भिक्षुत्रयन्वाधिज्ञातिकुलानामन्यतमे वा भर्ता द्विषन् स्त्रियमेकामनुशयीत । ंद्वष्टिलिङ्गे मैथुनापहारे सवर्णायसर्योपगमे वा मिथ्यावादी द्वादशपर्ण इद्यात् ।

अमोक्ष्या भर्तुरकामस्य द्विषती भार्या भार्यायाश्च भर्ता। परस्परं द्वेषान्मोक्षः।

स्त्रीविप्रकाराद्वा पुरुपश्चेन्भोक्षमिच्छेत् यथागृहीतमस्यै दद्यात् ।

पुरुपविष्रकाराद्वा स्त्री चेन्मोक्षमिच्छेत् नास्यै यथागृहीतं दद्यात् । अमोक्षो धर्मविवाहानामिति ।

प्रतिपिद्धा स्त्री दपंगद्य की डायां त्रिपणं दण्डं दद्यात् । दिवा स्त्रीप्रेक्षा-विहारगमने षट्पणो दण्डः ।

पुरूषप्रेक्षाविहारगमने द्वादशपणः। रात्री द्विगुणः।

सुप्तमत्तप्रव्रजने भर्तुरादाने च द्वारस्य द्वादशपणः। रात्नौ निष्कासने द्विगुणः।

स्त्रीपुंसयोर्में थुनार्थेऽनङ्गविचेष्टामां रहोश्लीलसम्भाषायां वा चतुर्विशति-पणः स्त्रिया दण्डः, पुंसो द्विगुणः ।

केशनीवीदन्तनखावलम्बनेषु पूर्वस्साहसदण्डः, पुंसो द्विगुणः ।

शिङ्कितस्थाने सम्भाषायां च पणस्थाने शिफादण्डः । स्त्रीणां ग्राममध्ये चण्डालः पक्षान्तरे पञ्चशिफा दद्यात् । पणिकं वा प्रहारं मोक्षयेत् ।

इत्यतिचारः ।

प्रतिषिद्धयोः स्त्रीपुंसयोरन्योन्योपकारे क्षुद्रकद्रव्याणां द्वादश्यपणो दण्डः, स्यूलकद्रव्याणां चतुर्विशतिपणः, हिरण्यसुवर्णयोश्चतुष्पश्चाशत्पणः स्त्रियाः दण्डः, प्सो द्विगुणः।

त एवागम्ययोरधंदण्डाः ।

तथा प्रतिषिद्धपुरुषव्यवहारेषु च। इति प्रतिपेधः।

राजद्विष्टातिचाराभ्यामात्मापक्रमणेन च । स्त्रीधनानीतशुरुकानामस्वाम्यं जायते स्त्रियः ।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे तृतीयोऽध्यायः विवाहसयुक्ते णुश्रुपाभर्मपारुष्यद्वेषातिचारोपकारव्यवहार-प्रतिषेधाश्च, आदितष्षष्ठितमः ।

# ५६ प्रक. विवाहसंयुक्तम्—निष्पतनं पथ्यनुसरणं हस्वप्रवासः दीर्घप्रवासश्च ।

पतिकुलाभिष्पतितायाः स्त्रियाष्यद्पणा दण्डोऽन्यत्न विप्रकारात् । प्रतिविद्धायां द्वादणपणः । प्रतिवेशगृहातिगतायाष्यद्पणः ।

प्रानिवेशिकभिक्षुकवैदेहकानामवकाशभिक्षापण्यादाने द्वादशपणो दण्डः, प्रतिविद्धाना पूर्वः साहसदण्डः । परगृहातिगतायादचतुर्विशतिपणः ।

परभार्यावकाशदाने शत्यो दण्डोऽन्यतापद्भयः । वारणाज्ञानयोनिदौषः ।

पतिविप्रकारात् । पतिज्ञातिसुखावस्थग्राभिकान्वाधिभिक्षुकीज्ञातिकुलाना-मन्यतममपुरुषं गन्तुमदोष इत्याचार्याः ।

सपुरुषं वा ज्ञातिकुलम्। कुतो हि साध्वीजनस्य छलं सुखमेतदवबोद्धुम् इति कौटिल्यः।

प्रेतव्याधिव्यसनगर्भनिमित्तमप्रतिषिद्धमेव ज्ञातिकुलगमनम् ।

तिन्निमित्तं वारयतो द्वादशपणो दण्डः । तत्नापि गूहमाना स्वीधनं जीयेत, ज्ञातयो वा छादयन्तः शुल्कशेषम् ।

इति निष्पतनम् ।

पतिकुलान्निष्पत्य ग्रामान्तरगमने द्वादशपणो दण्डः स्थाप्याभरणलोपश्च । गम्येन वा पुंसा सहप्रस्थाने चतुर्विशतिपणः ; सर्वधर्मलोपश्चान्यद्ध भर्मदान-तीर्थगमनाभ्यां पुंसः पूर्वः साहसदण्डः, तुल्यश्रेयसः पापीयसो मध्यमः । बन्ध्ररदण्डयः । प्रतिषेधेऽर्धदण्डः ।

पथि व्यन्तरे ग्रुटदेशाभिगमने मैथुनाथेंन शिङ्कतप्रतिपिद्धाभ्यां वा पथ्यनुसारेण सङ्गृहणं विद्यात् ।

तालावचरचारणमत्स्यवन्धकलुब्धकगोपालकशौण्डिकान'मन्येषां च प्रसृष्ट स्त्राकाणां पथ्यनुसरणमदोषः । प्रतिषिद्धे वा नयतः पुंसः स्त्रियो वा गच्छन्त्यास्त एवाधंदण्डाः ।

इति पथ्यनुसरणम् ।

ह्रस्वप्रवासिनां शूद्रवैश्यक्षत्रियत्राह्मणानां भार्यास्संवत्सरोत्तरं काल-माकांक्षेरन् अप्रजातास्मंवत्सराधिकं प्रजाताः, प्रतिविह्ताः द्विगुणं कालम् । अप्रतिविह्तास्मुखावस्था विभृयुः परं चत्वारि वर्षाण्यष्टौ वा ज्ञातयः । ततो यथादत्तमादाय प्रमुञ्चेयुः ।

बाह्यणभधीयानं दशवर्षाण्यप्रजाता, द्वादण प्रजाता। राजपुरुषम् आ आयुःक्षयादाकाङ्क्षेत । सर्वणतश्च प्रजाता नापवादं लभेत । कुटुम्बद्धिलोपे बा सुखावस्थैविमुक्ता यथेष्टं विन्देत जीवितार्थमापद्गता वा ।

धर्मविवाहात्कुमारी पिरगृहीतारमनाख्याय प्राप्तितं श्रूयमाणं सप्त तीर्थान्याकाङ्क्षेत संवत्सरं श्रयमाणम् आख्याय प्रोषितमश्रूयमाणं पश्च तीर्थान्याकाङ्क्षेत दश श्रूयमाणम् । एकदेशदत्तशुल्कं त्रीणि तीर्थान्यश्रूयमाणम्, श्रूयमाणं सप्त तीर्थान्याकाङ्क्षेत । दत्तशुल्कं पश्च तीर्थान्यश्रूयमाणम्, दश श्रूयमाणम् । ततः परं धर्मस्थैविसृष्टा यथेष्टं विन्देत । तीर्थोपरोधो हि धर्मवध इति कौटिल्यः । ६० प्रक.]

दीर्घप्रवासिनः प्रवाजितस्य प्रेतस्य वा भार्या सप्त तीर्थान्याकाङ्क्षेत, संवत्सरं प्रजाता। ततः पतिसोदर्य गच्छेत्। बहुपू प्रत्यासन्नं धार्मिकं भर्मसमर्थं कनिष्ठमभार्यं वा । तदभावेऽप्यसोदर्यं सिपण्ड कूल्यं वा । मेतेषाम। एष एव क्रमः।

> एतानुत्कम्य दायादान् वेदने जारकर्मणि । जारस्वीदात्रवेत्तारस्संप्राप्तास्संङ्ग्रहात्ययम् ॥ इति भौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे चतुर्थोऽध्यायः विवाहसंयुक्ते निष्पतनं पथ्यनुसरणं हस्वप्रवासः दीर्घप्रवासश्च । विवाहसंयुक्तं समाप्तम् । आदितः एकपष्टितमः ।

# ६० प्रक. दायविभागः--दायक्रमः।

अनीश्वराः पितृमन्तिस्थितपितृमातृकाः पुत्राः । तेषाम् ऊर्ध्वं पितृतो वायारिभागः पितृद्रव्याणाम् । स्वयमजितमिवभज्यम् अन्यत्र पितृद्रव्यादुत्थितेभ्यः ।

तिनृद्रव्यादविभक्तोपगतानां पुत्राः पौत्रा वा आ चतुर्थादित्यंशभाजः। गवदिविच्छिन्नः विण्डो भवति । विच्छिन्नपिण्डास्सर्वे समं विभजेरन ।

अपितृद्रव्या विभक्तिपितृद्रव्या वा सहजीवन्तः पुनिविभजेरन् । यतश्चोत्तिष्ठेत स दच्छां लग्नेत ।

द्रव्यमपुत्रस्य सोदर्या भ्रातरः सहजीविनो वा हरेयुः कन्याश्च ।

रिक्थं पुत्रवतः पुत्रा दुहितरो वा धर्मिष्ठेषु विवाहेषु जाताः। तदभावे पिता धरमाणः, पित्रभावे भ्रातरो भ्रानुपुताश्च ।

अपितृका बहवोऽपि च भ्रातरो भ्रातपुत्राश्च पितृरेकमंशं हरेयुः। सोदर्याणामनेकपितृकाणां पितृतो दायविभागः।

पितृश्रातृपुताणां पुर्वे विद्यमाने नापरमवलम्बन्ते, ज्येष्ठे च कनिष्ठ-मथंग्राहिण:।

जीबद्विभागे पिता नैकं विशेषयेत्। न चैकमकारणान्निविभजेत। पितुरसत्यर्थं ज्येष्ठाः कनिष्ठाननुगृह्णीयुः, अन्यत मिथ्यावृत्तेभ्यः ।

प्राप्तन्यवहाराणां विभागः। अप्राप्तन्यवहाराणां देयविशुद्धं मातृबन्धुषु ग्रामवृद्धेषु वा स्थापयेयुर्व्यवहारप्रापणात्। प्रोषितस्य वा।

सिन्नविष्टसममसिन्नविष्टेभ्यो नैवेशनिकं दद्युः। कन्याभ्यश्च प्रदानिकम्। ऋणरिक्थयोस्समौ विभागः।

उदपात्नाण्यपि निष्किञ्चना विभजेरन् इत्याचार्याः । छलमेतदिति कौटिल्यः । सतोऽर्थंस्य विभागो नासतः । एतावानर्थः सामान्यस्तस्यैतावान् प्रत्यंशः इत्यनुभाष्य बुवन् साक्षिषु विभागं कारयेत् । दुविभक्तमन्योन्यापह्त-मन्तिह्तिमविज्ञातोत्पन्नं वा पुनविभजेरन् ।

अदायादकं राजा हरेत् स्त्रीवृत्तिप्रेतकार्यवर्जमन्यत श्रोतियद्रव्यात् । तत् त्रैविद्येभ्यः प्रयच्छेत् ।

पतितः पतिताज्जातः वलीवश्चानंशाः । जडोन्मत्तान्धकुष्ठिनश्च । सितः भार्यार्थे तेषामपत्यमतिद्वधं भागं हरेत् । ग्रासाच्छादनिमतरे पतितवर्जाः ।

तेषां च कृतदाराणां लुप्ते प्रजनने सित । सृजेयुबन्धिवाः पुत्रांस्तेषामंशं प्रकल्पयेत् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे पञ्चमीऽध्यायः दायविभागे दायक्रमः, आदितो द्विषष्टितमः।

## ६० प्रक. अंशविभागः।

एकस्त्रीपुत्राणां ज्येष्टांशः ब्राह्मणानामजाः क्षत्रियाणामश्याः, वेश्यानां गावः, शुद्राणामवयः ।

काणलिङ्गास्तेषां मध्यमांशः, भिन्नवर्णाः कनिष्ठांशः ।

चतुष्पदाभावे रत्नवर्जानां दशानां भागं द्रव्याणामेकं ज्येष्ठो हरेत्। प्रतिमुक्तस्वधापाशो हि भवति इत्योशनसो विभागः।

पितुः परिवापाद्यानमाभरणं च ज्येष्ठांशः, शयनासन भुक्तकांस्यं च भध्यमांशः, कृष्णधान्यायसं गृहपरिवापो गोशकटं च कनिष्ठांशः। शेषद्रव्याणामेकदव्यस्य वा समो विभागः।

वादायादा भगिन्यः । मातुः परिवापाद्भक्तकांस्याभरणभागिन्यः ।

मानुषहीनो ज्येष्ठस्तृतीयमंशं ज्येष्ठांशाल्लभेत । चतुर्थमन्यायवृत्ति -र्निवृत्तधमंकार्यो वा । कामाचौरस्सर्व जीयेत ।

तेन मध्यमकनिष्ठी व्याख्याती तयोर्मानुषोपेतो ज्येष्ठांशादर्घ लभेत । नानास्त्रीपुत्राणां तु संस्कृतासंस्कृतयोः कन्याकृतिऋययोरभावे च, एकस्याः पूत्रयोर्यमयोर्वा पूर्वजन्मना ज्येष्ठभावः ।

सूतमागधत्रात्यरथकाराणामैश्वर्यतो विभागः शेषास्तमुपजीवेयुः। अनीश्वरा स्समविभागा इति ।

चातुर्वेण्येपुताणां ब्राह्मणीपुत्रश्चतुरोहंशान् हरेत्, क्षतियापृत्रस्तीनंशान्, वैश्यापुत्रो द्वावंशी, एकं शूद्रापुतः ।

तेन त्रिवर्णद्विवर्णपुत्रविभागः क्षत्रियवैश्ययोग्याख्यातः ।

ब्राह्मणस्यानन्तरापुत्रस्तुल्यांशः । क्षत्नियवैश्ययोरर्धांशः । तुल्यांशो वा मानुषोपेतः ।

तुल्यानुल्ययोरेकपुत्रस्यवें हरेद् बन्धूश्च बिभृयात्।

त्राह्मणानां तु पारणवस्तृतीयमंशं लभेत । द्वावंशी सिपण्डः कुल्योः वाऽऽसन्नः स्वधादानहेतोः । तदभावे पितृराचार्योऽन्तेवासी वा ।

क्षत्ने वा जनयेदस्य नियुक्तः क्षेत्रजं सुतम् । मातृबन्धुस्सगोत्नो वा तस्मै तत्प्रदिशेद्धनम् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे षष्ठोऽध्यायः दायविभागेहंशविभागः, आदितस्त्रिषष्टितमः ।

## ६० प्रक. दायविभागः—पुत्रविभागः।

परपरिग्रहे वीजमुत्सृष्टं क्षेत्रिणः इत्याचार्याः । माता भस्त्रा यस्य रेतस्तस्यापत्यम् इत्यपरे । विद्यमानमुभयम् इति कौटिल्यः ।

स्वयंजातः कृतिक्रयायामौरसः । तेन तुल्यः पुत्तिकापुतः । सगोत्नेणान्य-गोत्नेण वा नियुक्तेन क्षेत्रजातः क्षेत्रजः पुतः । जनयितुरसत्यन्यस्मिन् पुत्ने स एव द्वििनृको द्विगोत्नो वा द्वयोरिष स्वधारिक्थभाग् भवति । तत्सधर्मा बन्धूनां गृहे गूढ जातस्तु गूढ जः । बन्धुनीत्सृष्टोऽपविद्धः संस्कर्तुः पुत्रः । कन्यागर्भः सगर्भोढायास्सहोढः । पुनर्भूतायाः पौनर्भवः ।

म्बयं जातः पितृबन्ध्नां च दायादः । परजातसंस्कर्त्रेव न बन्ध्नाम् । तत्सधर्मा मातापितृभ्यामद्भिदंत्तो दत्तः । स्वयं बन्धुभिर्वा पुत्रभावोपगत उपगतः। पुत्रत्वेऽधिकृतः कृतकः। परिक्रीतः क्रीत इति।

औरसे तृत्पन्ने सवर्णास्तृतीयांशहराः । असवर्णा ग्रासाच्छादनभागिनः ।

ब्राह्मणक्षत्रिययोरनन्तरापृत्रास्सवर्णाः, एकान्तरा असवर्णाः ।

ब्राह्मणस्य वेश्यायामम्बष्ठः, शुद्रायां निषादः पारशवो वा ।

क्षत्रियस्य शुद्रायामुग्रः।

शुद्र एव वैश्यस्य ।

सवर्णासु चैषामचरितवृतेभ्यो जाता वात्याः।

इत्यनुलोमाः ।

गुद्रादायोगवक्षत्तचण्डालाः ।

वैश्यान्मागधवैदेहकौ ।

क्षव्रियात्सृतः ।

पौराणिकस्त्वन्यस्मृतो मागधश्च ब्रह्मक्षत्नाद्विशेषतः।

त एते प्रतिलोमाः स्वधर्मातिकमाद्राजस्सम्भवन्ति ।

उग्रन्नेपाद्यां कुक्कुटकः। पिपर्यये पुल्कसः। वेदेहिकायाममम्बष्ठाद्वैणः विपर्यये कुशीलवः । क्षनायामुग्राच्छ्पाकः इत्यतेऽन्ये चान्तरालाः ।

कमणा वैण्यो रथकारः। तेषां स्वयोनौ विवाहः। पूर्वापरगामित्व वृत्तानुवृत्तं च स्वधर्मान् स्थापयेत् । शूद्रसधर्माणो वा अन्यत्र चण्डालेभ्यः ।

•केवलमेवं वर्तमानस्वर्गमाप्नोति राजा नरकमन्यया । सर्वेषामन्तरालान समो विभागः।

देशस्य जात्याः सङ्घस्य धर्मो ग्रामस्य वाऽपि यः। उचितस्तस्य तेनैव दायधर्मं प्रकल्पयेत ॥ इति कौटिलीयार्थणास्त्रं धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे सप्तमोऽध्यायः

> दायविभागे पुत्रविभागः, दायविभागस्समाप्तः । आदितश्चतृष्पष्ठितमोऽध्यायः ।

#### ६१ प्रक. वास्तुकं-एहवास्तुकम्।

सामन्तप्रत्यया वास्तुविवादाः । गृहं क्षेत्रमारामस्सेतुबन्धस्तटाकमाधारो वा वास्तुः । कर्णंकीलायससम्बन्धोऽनुगृहं सेतुः । यथासेतुभोगं वेश्म कारयेत् । अभूतं वा परकुडयादपक्रम्य द्वावरत्नी त्निपदीं वा पादे बन्धं कारयेत् । अवस्करं म्रममुदपानं वा न गृहोचितमन्यत्न, अन्यत्न सूतिकाकूपादी निर्देशाहादिति ।

तस्यातिकमे पूर्वस्साहसदण्डः।

तेनेन्धनावघातनकृतं कल्याणकृत्येष्वाचामोदकमार्गाश्च व्याख्याताः।

त्रिपदीप्रतिकान्तमक्ष्यर्घमरित्न वा प्रवेश्य गाढप्रसृतमुदकमार्गं प्रस्नवणप्रपातं वा कारयेत् । तस्यातिकमे चतुष्पञ्चाशत्पणो दण्डः ।

एकपदीप्रतिकान्तभर्रात्न वा चिकिचतुष्पदस्थानमग्निष्ठम् उदञ्जरस्थानं रोचनीं कुटूनीं वा कारयेत् । तस्यातिकमे चतुर्विंशतिपणो दण्डः ।

सर्ववास्तुकयोः प्राक्षिप्तकयोर्वा शालयोः किष्कुरन्तरिका विपदी वा। तयोश्चतुरंगुलं नीप्रान्तरं समारूढकं वा। किष्कुमात्नमाणिद्धारमन्तरिकायां अण्डफुल्लार्थमसम्पातं कारयेत्।

प्रकाशार्थमल्यमूध्वे वातायनं कारयेत् । सम्भूय वा गृहस्वामिनो यथेष्टं कारयेयुरनिष्टं वारयेयु:।

वानलटचाश्चोध्वंमावार्य भागं कटप्रच्छन्नमवमर्शभित्ति वा कारगेद् वर्षावाधाभयात्। तस्यातिकमे पूर्वस्साहसदण्डः।

प्रतिलोमद्वारवातायनवाधायां च अन्यत राजमार्गरथ्याभ्यः।

खातसोपानप्रणालीनिश्रेण्यवस्करभागैर्वहिर्बाधायां भोगनिग्रहे च । पर-कुडचमुदकेनोपन्नतो द्वादशपणो दण्डः । मूत्रपुरीषोपघाते द्विगुणः ।

प्रणाजीमोक्षो वर्षति । अन्यथा द्वादशपणी दण्डः ।

प्रतिषिद्धस्य च वसतः। निरस्यतश्चावकयणम्, अन्यत्न पारुष्यस्तेय-साहससङ्ग्रहणमिथ्याभोगेभ्यः। स्वयमभिप्रस्थितो वर्षावकयशेषं दद्यात्।

सामान्ये वेश्मिन साहाय्यमप्रयच्छतस्सामान्यमुपरुन्धतो भोगं च गृहे द्वादशपणो दण्डः । विनाशयतस्तद्विगुणः ।

> कोष्ठकाङ्गणवर्जानामग्निकुट्टनशालयोः । विवतानां च सर्वेषां सामान्ये भोग इष्यते ॥

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे अष्टमोऽध्यायः वास्तुके गृहवास्तुकम् । आदितः पञ्चषष्टितमोऽध्यायः।

# ६१ प्रक. वास्तुकं--वास्तुविक्रयः।

ज्ञातिसामन्तधनिकाः क्रमेण भूमिपरिग्रहान् केतुमभ्याभवेयुः। ततोऽन्ये वाह्याः।

सामन्तचत्वारिशत्कुल्या गृहप्रतिमुखे वेश्म श्रावयेयुः । सामन्तग्रामवृद्धेषु क्षेत्रमारामं सेतुबन्धं तटाकमाधारं वा मर्यादासु यथासेतु भोगम् । 'अनेनार्घेण कः केता' इति त्रिराघुषितमञ्याहतं केता केतुं लभेत ।

स्पर्धया वा मूल्यवर्धने मूल्यवृद्धिः सशुल्का कोशं गच्छेत् । विकयप्रतिक्रोष्टा शुल्कं दद्यात् ।

अस्वामिप्रतिक्रोशे चतुर्विशतिपणो दण्डः। सप्तरात्रादूर्ध्वमनिभसरतः प्रतिकुष्टो विक्रीणीत । प्रतिकृष्टातित्रमे वास्तुनि द्विशतो दण्डः। अन्यत्न चतुर्विशतिपणो दण्डः। इति वास्तुविक्रयः।

सीमविवादं ग्रामयोरुभयोस्सामन्ताः पञ्चग्रामी दशग्रामी वा सेतुभिस्स्थावरैः कृत्निमैर्वा कुर्यात् ।

कर्षकगोपालवृद्धकाः पूर्वभुक्तिका बा, अबाह्यास्सेतूनामनिभज्ञा बहव एको वा निर्दिश्य सामसेतून् विपरीतवेषाः सीमानं नयेयुः । उद्दिष्टानां सेतूनामदर्शने सहस्रदृण्डः । तदेव नीते सीमापहारिणां सेतुच्छिदां च कूर्यात् ।

प्रनष्टं सेतुमोगं वा सीमानं राजा यथोपकारं विभजेत्।

क्षेत्रविवादं सामन्तग्रामवृद्धाः कुर्युः। तेषां द्वैधीभावे यतो बहव-श्णुचयोऽनुमता वा ततो नियच्छेयुः। मध्यं वा गृह्ह्गीयुः। तदुभयं परोक्तः वास्तु राजा हरेत् प्रनष्टस्वामिकं च यथोपकारं वा विभजेत्।

प्रसिद्धादाने वास्तुनि स्तेयदण्डः। कारणादाने प्रयासमाजीवं च परिसङ्ख्याय बन्धं दद्यात्। मर्यादापहरणे पूर्वस्साहसदण्डः: मर्यादाभेदे चतुर्विशतिपणः। तेन तपोवनिववीतमहापयश्मशानदेवकुलयजनपुण्यस्थान-विवादा व्याख्याताः।

इति मर्यादास्थापनम्।

सर्व एव विवादाहसामन्तप्रत्यया।

विवीतस्थलकेदारषण्डखलवेश्मवाहनकोष्ठानां पूर्वं पूर्वमावाधं सहेत । ब्रह्मसीमारण्यदेवयजनपुण्यस्थानवर्जाः स्थलप्रदेशाः । आद्यारपरिवाहके -दारोपभोगैः परक्षैककृष्टवीर्जाहसायां यथोपघातं मूल्यं दद्युः । केदाराराम-सेत्वन्धानां परस्परहिसायां हिसाद्विगूणो दण्डः ।

पक्चान्निविष्टमधरतटाकं नोपरितटाकस्य वेदारमुदकेनाप्लावयेत् । उपरिनिविष्टं नाधरतटाकस्य पूरास्नावं वारयेद् अभ्यत्न त्निवर्षोपरत-र्मणः । तस्यातिकमे पूर्वस्साहसदण्डः, तदाकवामनं च ।

पञ्चवर्षोपरतकर्मणः सेतुबन्धस्य स्वाम्यं लुप्येतान्यवापद्भचः ।

तटाकसेतुबन्धानां नवप्रवर्तने पाञ्चविषकः परिहारः। भग्नोत्सृष्टानां चातुर्विषकः। समुपारूढानां तैविषकः। स्थलस्य द्वैविषकः स्वात्माद्याने विकये च।

खातप्रावृत्तिमनदीनिबन्धायतनतटाककेदारारामषण्डवापानां सस्यवणंभागो-त्तरिकमन्येभ्यो वा यथोपकारं दद्युः । प्रक्रयावक्रयविभागभोगनिसृष्टोप-भोक्तारक्वैषां प्रतिकृर्युः । अप्रतीकारे हीनद्विगुणो दण्डः ।

> सेतुभ्यो मुञ्जतस्तोयमवारे षट्पणो दमः। बारे वा तोयमन्येपां प्रमादेनोपकन्यतः।।

इति कौटिलीयार्थणास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे नवमोऽध्यायः वास्तुके वास्तुविक्रयः सीमाविवादः मर्यादास्थापनं वाधावाधिकम । आदितः षट्षिटतमोऽध्यायः ।

# ६१-६२ प्रक. वास्तुकं—विवीतक्षेत्रपथहिंसा समयभ्यानपाकर्म च ।

कर्मोदकमार्गमुचितं रुन्धतः कुवंतोऽनुचितं वा पूर्वस्साहसदण्डः । सेतुकूपपुण्यस्थानचैत्यदेवायननानि च परभूमौ निवेशयतः पूर्वानुवृत्तं धर्मेसेनुमाधान विक्रयं वा नयतो नाययतो वा मध्यमस्साहसदण्डः श्रोतृ णामुत्तमः अन्यव भग्नोत्मृष्टात् । स्वाम्यभावे ग्रामाः पुण्यशीला वा प्रतिकुर्युः । पथिप्रमाणं दुर्गनिवेशे व्याख्यातम् ।

क्षुद्रपशुमनुष्यपथं रुन्वतो द्वादशपणो दण्डः। महापशुपथं चतुर्विशति-पणः। हस्तिक्षेत्रपथं चतुष्पश्चाशत्पणः। सेतुवनपथं षट्शतः। श्मशान-ग्रामपथं द्विशतः। द्रोणमुखपथं पश्चशतः। स्थानीयराष्ट्रविवीतपथं साहस्रः। अतिकर्षणे चैषां दण्डचतुर्था दण्डाः। कर्षणे पूर्वोक्ताः।

क्षैतिकस्याक्षिपतः क्षेत्रमुपवासस्य बा त्यजतो वीजकाले द्वादशपणो दण्डः, अन्यत दोषोपनिपाताविषद्योभ्यः।

करदाः करदेष्वाधानं विऋयं वा कुर्युः। ब्रह्मदेयिका ब्रह्मदेयिकेषु। अन्यथा पूर्वस्साहसदण्डः, करदस्य वाऽकरदग्रामं प्रविशतः।

करदं तु प्रविशतः सर्वेद्रव्येषु प्राकाम्यं स्याद्, अन्यत्रागारात्। तदप्यस्मै दद्यात्।

अनादेयमकृषतोऽन्यः पञ्चवर्षाण्युपभुज्य प्रयासनिष्क्रयेश दद्यात् । अकरदाः परत्न वसन्तो भोगमुपत्रीवेयुः ।

ग्रामार्थेन ग्रामिकं व्रजन्तं उपवासाः पर्यायेणानुगच्छेयुः अननुगच्छन्तः पणार्धेपणिकं योजनं दद्युः ।

ग्रामिकस्य ग्रामादस्तेनपारदारं निरस्यतश्चतुर्विशतिपणो दण्डः । ग्रामस्योत्तमः ।

निरस्तस्य प्रवेशो ह्याधिगमेन व्याख्यातः।

स्तम्भैस्समन्ततो ग्रामाद्धनुश्शतापकृष्टमुपशालं कारयेत् ।

पशुप्रचारार्थं विवीतमालवनेनोपजीवेयुः।

रिववीतं भक्षयित्वावसृतानामुब्द्रमहिषाणां पादिकं रूपं गृह्णीयुः । गवाहव-खराणां चार्धपादिकम् । क्षुद्रपशूनां षोडशभागिकम् ।

भक्षयित्वा निषण्णानामेत एव द्विगुणा दण्डाः । परिवसतां चतुर्गुणाः । ग्रामदेववृषा वा अनिर्देशाहा वा धेनुरुक्षाणो गोवृषाम्चादण्ड्याः ।

सस्यभक्षणे सस्योपघातं निष्पत्तितः एरिसङ्ख्याय द्विगुणं दापयेत्। स्वामिनश्चानिवेद्य चारयतो द्वादशपणो दण्डः। प्रमुञ्जतश्चतुर्विशतिपणः। पालिनामधंदण्डः। तदेव षण्डभक्षणे कुर्यात्। वाटभेदे द्विगुणः। वेश्मखलवलयगतानां च धान्यानां भक्षणे हिंसाप्रतीकारं कुर्यात्।

अभयवनमृगाः परिगृहीताः भक्षयन्तः स्वामिनो निवेच यथाऽवध्यास्तथा प्रतिषेद्धन्याः ।

99

पश्वो रिक्मप्रतोदाभ्यां वारियतव्याः । तेषामन्यथा हिसायां दण्डपारुष्य-दण्डाः । प्रार्थयमाना दृष्टापराद्या वा सर्वोपायैनियन्तव्याः । इति क्षेत्रपर्याहसा ।

कर्षकस्य ग्राममभ्युपेत्याकुर्वतो ग्राम एवात्ययं हरेत्। कर्माकरणे कर्मवेतनद्विगुणं, हिरण्यदाने प्रत्यंशद्विगुणं, भक्ष्यपेयादाने च प्रहवणेषु द्विगुणमंशं दद्यात्।

प्रेक्षायामनंशदः स्वस्वजनो न प्रेक्षेत । प्रच्छन्नश्रवणेक्षणे च सर्वहिते च कर्मणि निग्रहेण द्विगुणमंशं दद्यात् ।

सर्वंहितमेकस्य ब्रुवतः कुर्यू राज्ञाम् । अकरणे द्वादशपणो दण्डः !

तं चेत्सम्भूय वा हन्युः पृथगेषामपराधद्विगणो दण्डः। उपहन्तृषु विभिष्टः। ब्राह्मणतभ्रचेषां ज्येष्ठं नियम्येत ।

प्रहवणेषु चैषां ब्राह्मणे नाकामाः कुर्युः । अंशं च लभेरन् । तेन देशजातिकुलसङ्घानां समयस्यानपाकमं व्याख्यातम् । राजा देशहितान् सेतून् कुर्वतां पथि सङ्कमान् । ग्रामशोभाश्च रक्षाश्च तेषां प्रियहितं चरेत् ॥

इति कीटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे दशमोऽध्यायः वास्तुके विवीतक्षेत्रपथिहिसा, वास्तुकं समाप्तं समयस्यानपाकर्मं च।
आदितस्सप्तविष्टतमोऽध्यायः।

#### ६३ प्रक. ऋणादानम्।

सपादपणा धर्म्या मासवृद्धिः पणशतस्य । पञ्चपणा व्यवहारिकी । दशपणा कान्तारकाणाम् । विशतिपणा सामुद्राणाम् । ततः परं कर्तुः कारियतुश्च पूर्वस्साहसदण्डः । श्रोतृणामेकैकं प्रत्यर्धदण्डः ।

राजन्ययोगक्षेमवहे तु धनिकधारणिकयोश्चरित्रमपेक्षेत ।

धान्यवृद्धिः सस्यनिष्पत्तावृपार्धा परं मूल्यकृता वर्धेत । प्रक्षेपवृद्धि-रुदयादर्धम् सिन्नधानसन्ना वार्षिकी देया । चिरप्रवासस्तम्भन्नविष्टो वा मूल्यद्विगुणं दद्यात् । अकृत्वा वृद्धि साधयतो वा मूल्यं वा वृद्धिमारोप्य श्रावयतो बन्धचतुर्गुणो दण्डः । तुक्छश्रावणायामभूतचतुर्गुणः । तस्य विभागमादाता दद्यात्, शेषं प्रदाता ।

दीर्घसत्रव्याधिगुरुकुलो १६ छं बालमसारं वानर्णमनु वर्धत । मुच्यमान-मृणमप्रतिगृह्णतो द्वादशपणो दण्डः। कारणापदेशेन निवृत्तवृद्धिकमन्यत तिष्ठेत् । दशवर्षोपेक्षितमृणमप्रतिग्राह्यमन्यत बालवृद्धव्याधितव्यसनिप्रोषित-देशत्यागराज्यविभ्रमेभ्यः।

प्रेतस्य पुताः कुसादं दद्यः। दायादा वा रिक्थहरास्सहग्राहिणः प्रतिभुवो वा। न प्रातिभाव्यमन्यत्। असारं बालप्रातिभाव्यम्। असङ्ख्यातदेशकालं तु पुत्राः पौता दायादा वा रिक्थं हरमाणा दद्यः। जीवितविवाहभूमिप्राति-भाव्यमसङ्ख्यातदेशकालं तु पुताः पौका वा वहेयुः।

नानर्णपमवाये तु नैको द्वौ युगपदिभवदेयाताम् अन्यत प्रतिष्ठमानात्। ततापि गृहीतानुपूर्वा राजश्रोतीयद्रव्यं वा पूर्व प्रतिपादयेत् ।

दम्पत्योः पितापुत्रयोः भ्रातृणां चाविभक्तानां परस्परकृतमृणमसाध्यम् ।

अग्राह्याः कर्मकालेषु कर्षका राजपुरुषाश्च । स्त्री वाप्रतिश्राविणो पतिकृतं ऋणम् अन्यत्र गोपालकार्धसीतिकेम्यः ।

पतिस्तु ग्राह्यः । स्त्रीकृतम् ऋणमप्रतिविधाय प्रोपित इति । सम्प्रति-पत्तावृत्तमः । असम्प्रतिपत्तौ तु साक्षिणः प्रमाणम् ।

प्रात्ययिकाष्णुचयोऽनुमना वा नयोऽवराध्यीः। पक्षानुमतौ वा हौ। ऋणं प्रति, न त्वेवैकः।

प्रतिषिद्धास्स्यालसहायान्यथिधनिकधारणिकवैरिन्यञ्जधृतदण्डाः । चाव्यवहार्याः राजश्रीत्रियग्रामभृतककुष्ठित्रणिनः पतितचण्डालकुरिसतकर्माणो-उन्धवधिरमूकाहंवादिनः स्त्रीराजपुरुपाश्चा अन्यत्न स्ववर्गभ्यः ।

पारुध्यस्तेयसङ्ग्रहणेषु तु वैरिम्यालसहायवर्जाः । रहस्यव्यवहारेष्वेका स्त्री पुरुष उपश्रोता उपद्रव्टा वा साक्षी स्यात् राजतापसवर्जम् ।

स्वामिनो भृत्यानामृत्विगाचार्या श्रिशब्याणां मातापितरौ पुताणां चानिग्रहेण साध्यं कुर्युः । तेपामितरे वा । परस्पराभियोगे चैपामुत्तमाः परोक्ता दशबन्धं दद्युरवराः पञ्चवन्धम् ।

इति साक्ष्यधिकारः।

वाह्मणोदकुम्भाग्निसकाशे साक्षिणः परिगृह्णीयात् । तत्र ब्राह्मणं ब्रुयात्-मत्यं बृहीति । राजन्यं, वैदयं वा-मा तवेष्टापूर्तफलं कथालहस्तक्ष्मसुबलं भिक्षार्थी गच्छेरिति । शूदं - जन्ममरणान्तरे यद्धः पुण्यफलं तद्वाजानं गच्छेत् । राज्ञश्च किल्विपं युष्मान् अन्यथावादे । दण्डश्चानुबन्धः । पश्चादिप ज्ञायेत यथादृष्टश्रुतम् ।

एकमन्त्रास्सत्यमवहरतेति । अनवहरतां सप्तरात्रादूर्ध्वं द्वादशपणो दण्डः । त्रिपक्षादूर्ध्वमभियोगं दद्युः ।

साक्षिभेदे यतो बहवः शुचयोऽनुमता वा ततो नियच्छेयुः। मध्यं वा गृह्हीयुः। तद्वा द्रव्यं राजा हरेत्। साक्षिणश्चेदिभयोगादूनं ब्रूयुरितिरिक्तस्याभि-योक्ताबन्धं दद्यात्। अतिरिक्तः वा ब्रूयुस्तदितिरिक्तः राजा हरेत्। बालिश्यादिभयोक्तुर्वा दुश्भुतं दुलिखितं प्रेताभिनिवेशं वा समीक्ष्य साक्षिप्रत्ययमेव स्यात्।

साक्षिवालिक्येष्वेव पृथगनुपयोगे देशकालकार्याणां पूर्वमध्यमोत्तमा दण्डाः इत्यौशनसाः।

कूटसाक्षिणो यमर्थमभूतं वा कुर्युर्भूतं वा नाशयेयुस्तद्शगुणं दण्डः दद्युरिति यानवाः।

बालिश्याद्वा विसंवादयतां चित्रो घात इति वार्हस्पत्याः ।

न, इति कौटिल्यः। ध्रुवा हि साक्षिणस्थोतव्याः। अष्टण्वतां चनुविशतिपणो दण्डः, ततोऽबंमध्रुयाणाम्।

देशकालाविद्रस्थान् साक्षिणः प्रतिपादयेत् । दूरस्थानप्रसारान् वा स्वामिवाक्येन साधयेत् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे एकादशोऽध्यायः ऋणादानम्, आदिताऽण्टपिष्टिनमः ।

# ६४ प्रक. औपनिधिक्तम्।

उपिनिधः ऋणेन व्याख्यातः । परचकाटविकाभ्यां दुर्गराष्ट्रविलोपे वा, प्रतिरोधकैर्वा ग्रामसार्थव्रजिवलोपे, चक्रयुक्ते नाणे वा, ग्राममध्याग्युदकावाधे वा, किश्विदमोक्षयमाणे कुष्यमनिर्हार्यवर्जमेकदेणमुक्तद्रध्ये वा, ज्वालावेगोपरुद्धे वा, नावि निमग्नायां मुषितायां स्वयमुपरूढो नोपनिधिमभ्यावहेत् ।

उपनिधिभोक्ता देशकालानुरूप भोगवेतनं दद्यात्। द्वादशपणं च दण्डम्। उपभोगनिमित्तं नष्टं विनष्टं वाऽभ्यावहेच्चतुर्विशितिपणश्च दण्डः। अन्यथा वा निष्पतने। प्रेतब्यसनगतं वा नोपनिधिमभ्याभवहेत्। आधानिक प्रयापव्ययनेषु चास्य चतुर्गुणपञ्चबन्धो दण्डः। परिवर्तने निष्पातने वा मूल्यसमः।

तेन आधिप्रणाशोपभोगविकयाधानापहारा ब्याख्याताः।

नाधिस्सोपकारः सीदेत् । चास्य मूल्यं वर्धेत । निरुपकारस्सीदेन्मूल्यं चास्य वर्धेत, अन्यत्न निसर्गात् ।

उपस्थितस्याधिमप्रयच्छतो द्वादशपणो दण्डः। प्रयोजकासिष्ठधाने वा ग्रामवृद्धेषु स्थापियत्वा निष्क्रयमाधि प्रतिपद्येत । निवृत्तवृद्धिको वऽऽधि-स्तत्कालकृतमूल्यस्तैव्रवावतिष्ठेत, अनाशिवनाशकरणाधिष्ठितो वा । धारणक-सिष्ठधाने वा विनाशभयादुद्गतार्षं धर्मस्थानुज्ञातो विक्रीणीत । आधिपाल-प्रत्ययो वा ।

स्थावरस्तु प्रयासभोग्यः फलभोग्यो वा । प्रक्षेपवृद्धिमूल्यशुद्धमाजीवम-मूल्यक्षयेणोपनयेत् ।

अनिसृष्टोपभोक्ता मूल्यशुद्धमाजीवं वन्धं च दद्यात्। शेषमुपनिधिना ब्याख्यातम्।

एतेनादेशोऽन्वाधिश्च व्याख्यातौ ।

सार्थेनान्वाधिहस्तो वा प्रदिष्टां भूमिमप्राप्तश्चोरैभंग्नोत्सष्टो वा नान्वाधि-मभ्यावहेत । अन्तरे वा मृतस्य दायादोऽपि नाभ्यावहेत् । शेषमुपनिधिना व्याख्यातम् ।

याचितकमवक्रीतकं वा यथाविधं गृह्लीयुस्तथाविधमेव अर्पयेयुः।

भ्रेषोपनिपाताभ्यां देशकालोपरोधि दत्तं नष्टं विनष्टं वानाभ्याभवेयुः । शेषमुपनिधिना व्याख्यातम् ।

वैयापृत्यविक्रयस्तु — वैयापृत्यकरा यथादेशकालं विक्रीणानाः पण्यं यथाजातं मूल्यसुदयं च दद्युः ।

शेषमुरनिधिना व्याख्यातम्।

देशकालातिपातने वा परिहीणं सम्प्रदानकालिकेन अर्घेण मूल्यमुदयं च दद्यः।

यथासम्भाषितं वा विक्रीणाना नोदयगिधगच्छेयुः। मूल्यमेव दद्युः। अर्धपतने वा परिहीणं यथापरिहीणं मूल्यमूनं दद्युः।

सांव्यवरिकेषु वा प्रात्यियकेष्वराजवाच्येषु भ्रेषोपनिपाताभ्यां नष्टं विनष्ट वा मूल्यमपि न दद्युः। देशकालान्तरितानां तु पण्यानां क्षयवव्यविशुद्ध मूल्यमुदयं च दद्युः। पण्यसमवायानां च प्रत्यंशम्। शेषमुपनिधिना व्याख्यातम् । एतेन वैय्यापृत्यविकयो व्याख्यातः। निक्षेपश्चोपिनिधिना । तमन्येन निक्षिप्तमन्यस्यापंयतो हीयेत । निक्षेपापहारे पूर्वापदानं निक्षेप्तारश्च प्रमाणम् । अणुचयो हि कारवः । नैषां कारणपूर्वो निक्षेपधर्मः । कारणहींनं निक्षेपमपव्ययमानं गुढभीत्तिन्यस्तान् साक्षिणो निक्षेप्ता रहस्यप्रणिपातेन प्रेज्ञापयेत्, वनान्ते बा मद्यप्रहवणविश्वासेन ।

रहिस वृद्धो व्याधितो वैदेहकः कश्चित्कृतलक्षणं द्रव्यमस्य हस्ते निक्षिप्यापगच्छेत्। तस्य प्रतिदेशेन पुत्नो म्राता वाऽभिगम्य निक्षेपं याचेत। दाने शुद्धिरन्यथा निक्षेपं स्तेयदण्डं च दद्यात्।

प्रव्रज्याभिमुखो वा श्रद्धेयः कश्चित्कृतलक्षणं द्रव्यमस्य हस्ते निक्षिप्य प्रतिष्ठेत । ततः कालान्तरागतो याचेत । दाने शुचिरन्यथा निक्षेपं स्तेयदण्डं च दद्यात् । कृतलक्षणेन वा द्रव्येण प्रत्यानयेदेनं बालिशजातीयो वा रात्रौ राजदायिकाङ्क्षणभीतः सारमस्य हस्ते निक्षिप्यापगच्छेत् । स एनं बन्धनागारगतो याचेत । दाने श्चिरन्यथा निक्षेपं स्तेयदण्डं च दद्यात् ।

अभिज्ञानेन चास्य गृहे जनमुभयं याचेत । अन्यतरादाने यथोक्तं पुरस्तात्।

द्रव्यभोगानामागमं चास्यानुयुञ्जीत । तस्य चार्थस्य व्यवहारोप-लिङ्गनमभियोक्तुश्चार्थंसामर्थ्यम् ।

एतेन भिथस्समवायो व्याख्यातः।

तस्मात्साक्षिमदच्छन्नं कुर्यात्सम्यग्विभाषितम् । स्वे परे वा जने कार्यं देशकालाग्रवर्णतः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे द्वादशोऽध्यायः औपनिधिकम्, आदितः एकोनसप्ततितमः।

# ६५ प्रक. दासकमंकरकल्पः।

उदरदासवर्जमार्यप्राणमप्राप्तव्यवहारं शूद्रं विक्रयाधानं नयतस्स्वजनस्य दादशपणो दण्डः । वैश्यं द्विगुणः । क्षत्नियं त्रिगुणः । ब्राह्मणं चतुर्गुणः । परजनस्य पूर्वमध्यमोत्तमवधा दण्डाः केतृ श्रोतृ णां च ।

म्लेच्छानामदोषः प्रजां विक्रेतुमाधातुं वा । न त्वेवार्यस्य दासभावः ।

अथवाऽऽर्यमाधाय कुलबन्धनम् आर्याणामापदि निष्क्रयं चाघिगम्य बालं साहाय्यदातारं वा पूर्वं निष्कीणारन् ।

सकृदात्माधाता निष्पतितः सीदेत् । द्विरन्येनाहितकः । सुकृदुभौ परविषयाभिमुखौ ।

वित्तापहारिणो वा दासस्यार्यभावमपहरतोऽर्धदण्डः। निष्पतितप्रेतव्य-सनिनामाधाता मृत्यं भजेत ।

प्रेतविण्मुत्रोच्छिष्टग्राहणामाहितस्य नग्नस्नापनं दण्डप्रेषणमितिकमणं च स्त्रीणां मूल्यनाशकरम्। धात्रोपरिचारिकार्धसीतिकोपचारिकाणां च मोक्षकरम्। सिद्धमुपचारकस्याभिप्रजातस्य अपक्रमणम्।

धात्रीमाहितिकां वाकामां स्ववशामधिगच्छतः पूर्वस्साहसदण्डः, परवशां मध्यमः। कन्यामाहितकां वा स्वयमन्येन वा दूषयतः मूल्यनाशः शुल्कं तद्द्विगुणश्च दण्डः।

आत्मविकयिणः प्रजामार्या विद्यात् । आत्माधिगतं स्वामिकर्माविरुद्धं लभेत, पित्रंघ च दायम् । मूल्येन चार्यत्वं गच्छेत् ।

तेनोदरदासाहितकौ व्याख्यातो ।

प्रक्षेपानुरूपश्चास्य निष्कयः । दण्डप्रणीतः कर्मणा दण्डमुपनयेत् । आर्यप्राणो ध्वजाहृतः कर्मकालानुरूपेण मृत्यार्धेन वा विमुच्येत ।

गृहेजातदायागतलब्धकीतानामन्यतमं दासमूनाष्टवर्षं विवन्धुमकामं नीचे कर्मणि विदेशे दासीं वा सगर्भामप्रतिविहितगर्भभर्मण्यां विक्रयाधानं नयतः पूर्वस्साहसदण्डः केतृश्रोतृ णां च ।

दासमनुरूपेण निष्कयेणार्यम्कुर्वतो द्वादशपणो दण्डः । संरोधश्चाकारणात् । दासद्वयस्य ज्ञातयो दायादाः । तेषाम् अभावे स्वामी ।

स्वामिनस्स्वस्यां दास्यां जातं समातृक्षम् अदासं विद्यात् । गृह्या चेत् कुटुम्बार्यविन्तनी, माता भ्राता भगिनी चास्याः अदासास्स्युः ।

दासं दासीं वा निष्कीय पुनर्विक्रयाधानं नयतो द्वादणपणो दण्डः, अन्यत्र स्वयंवादिभ्यः ।

इति दासकल्पः।

कर्मकरस्य कर्ममम्बन्धमासन्ना विद्युः । यथासम्भाषितं वेतनं लभेत । कर्मकालानुरूपममम्भाषितवेतनम् । कर्षकरसस्यानां, गोपालकस्सर्पिषां, वैदेहकः पण्यानामात्मना व्यवहृतानां, दशभागमसम्भाषितवेतनो लभेत । सम्भाषित-वेतनस्तु यथासम्भाषितम । कारुशिल्पिकुशीलविचिकित्सकवाग्जीवनपरिचारिकादिराशाकारिकवर्गस्तु यथाऽन्यस्तद्विधः कुर्यात् । यथा वा कुशलाः कल्पयेयुः, तथा वेतनं लभेत । साक्षिप्रत्ययमेव स्यात् । साक्षिणामभावे यतः कर्म ततोऽनुयुञ्जीत ।

वेतनादाने दशबन्धो दण्डः, षट्पणो वा । अपन्ययमाने द्वादशपणो दण्डः, पञ्चबन्धो वा ।

नदीवेगज्वालास्तेनव्यालोपरुद्धः सर्वस्वपुत्रदारात्मदानेनार्तस्वातारमाहूय निस्तीर्णः कुशलप्रदिष्टं वेतनं दद्यात् ।

तेन सर्ववार्तदानानुशया व्याख्याताः।

लभेत पुंश्चली भोगं सङ्गमस्योपलिङ्गनात्। अतियाच्या तु जीयेत दौर्मत्याविनयेन वा ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे त्रयोदशोऽध्यायः दासकर्मकल्पो दासकल्पः कर्मकरकल्पे स्वाम्यधिकारः, आदितस्सप्ततितपोऽध्यायः ।

# ६६ प्रक. कमेकरकल्पः, सम्भूयसमुत्थानम् ।

गृहीत्वा वेतनं कर्म अकुर्वतो भृतकस्य द्वादशपणो दण्डः। संरोधश्चा-करणात्।

अशक्तः कुत्सिते कर्मणि व्याधौ व्यसने वा अनुशयं लभेत । परेण वा कारयितुम् । तस्य व्ययकर्मणा लभेत भर्ता वा कारयितुम् ।

नान्यस्त्वया कारियतब्यो मया वा नान्यस्य कर्तव्यम् इत्यवरः। भर्तुरकारयतो भृतकस्याकुर्वतो वा द्वादशपणो दण्डः। कर्मनिष्ठापने भर्तुरन्यत्र गृहीतवेतनो नासकामः कुर्यात्।

उपस्थितमकारयतः कृतमेव विद्यात् इत्याचार्याः ।

"न" इति कौटिल्यः । कृतस्य वेतनं, नाकृतस्यास्ति । स चेदल्पमिष कारियत्वा न कारयेत्, कृतमेव अस्य विद्यात् । देशकालातिपातनेन कर्मणामन्यथाकरणे बा नासकामः कृतमनुमन्येत । सम्भाषितादिधकिकियायां प्रयासं मोघं कुर्यात् ।

तेन सङ्घभृता व्याख्याताः । तेषामाधिस्सप्तरात्रमासीत । ततोऽन्यमुप-

स्थापयेत्। कर्मनिष्पाकं च। न चानिवेद्य भर्तुस्सङ्घः कश्चित्परिहरेत्, उपनयेद्वा । तस्यातिक्रमे चतुर्विशतिपणो दण्डः । सङ्घेन परिहतस्यार्धदण्डः । इति भृतकाधिकारः।

सङ्घभृतास्सम्भूयसमुत्थातारो वा यथासम्भाषितं वेतनं समं वा विभजेरन् । कर्षकवैदेहका वा सस्यपण्यारम्भपर्यवसानान्तरे सन्नस्य यथाकृतस्य कर्मणः प्रत्यंशं दद्यः। पुरुषोपस्थाने समग्रमंशं दद्यः। संसिद्धे तुद्धुतपण्ये सन्नस्य तदानीमेव प्रत्यंशं दद्यः । सामान्या हि पथि सिद्धिश्चासिद्धिश्च ।

प्रकान्ते त् कर्मणि स्वस्थस्यापक्रमता द्वादशपणो दण्डः। प्राकाम्यमपक्रमणे।

चोरं त्वभयपूर्वं कर्मणः प्रत्यंशेन ग्राहयेद्द्यात् प्रत्यंशमभयं च । पुनस्स्तेये प्रवासनमन्यत्र गमने च । महापराधे तु दूष्यवदाचरेत् ।

याजकाः स्वप्रचारद्रव्यवर्ज यथासम्भाषितं वेतनं समं वा विभजेरन्। अग्निष्टोमादिषु च ऋतुषु दीक्षणादूर्ध्व याजकस्सन्नः पश्चममंशं सोमविक्रयादुर्ध्व चतुर्थमंशम् । मध्यमोपसदः प्रवर्गोद्वासनादुर्ध्वं तृतीयमंशम् । मध्यादूर्ध्वमर्धमंशम्। सुत्ये प्रातस्सवनादूर्ध्वं पादोनमंशम्। माध्यन्दिनात् सावनादूर्ध्व समग्रमंशं लभेत । नीता हि दक्षिणा भवन्ति । वृहस्पतिसवनवर्जं प्रतिसवनं हि दक्षिणा दीयन्ते । तेनाहर्गं पदक्षिणा व्याख्याताः ।

सन्नानामा दशाहोरात्राच्छेपभृताः कर्म कुर्युः। अन्ये वा स्वप्रत्ययाः। कर्मण्यसमाप्ते तु यजमानस्सीदेत्, ऋत्विजः कर्म समापय्य दक्षिणां हरेयुः । असमाप्ते तु कर्मणि याज्यं याजकं वा त्यजतः पूर्वस्साहसदण्डः ।

अनाहिताग्निरशतगुरयज्वा च सहस्त्रगुः। मुरापो वृपलीभर्ता ब्रह्महा गुरुतल्पगः।

असत्प्रतिग्रहे युक्तः स्तेनः कृत्सितयाजकः । • अदोषस्त्यक्तुमन्योन्यं कर्मसङ्करनिश्चयात् ॥

इति कौटिलीयाथंशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे चतुर्दशोऽध्यायः दासकर्मकरकल्पे भृतकाधिकारः सम्भूयसमृत्थानम्, आदित एकसप्ततितमः।

# ६७ प्रक. विक्रोतक्रीतानुशयः।

विकीय पण्ययप्रयच्छतो द्वादशपणो दण्डः, अन्यत्न दोषोपनिपातावियह्येभ्यः । पण्यदोषो दोषः । राजचोराग्रयुदंकवाध उपनिपातः । बहुगुणहीनमार्तकृतं वाऽविपह्यम् ।

वैदेहकानामेकरात्रमनुशयः। कर्षकाणां विरातम्। गोरक्षकाणां पञ्चरात्रम्। व्यामिश्राणाम् उत्तमानां च वर्णानां वृत्तिविकये सप्तरात्रम्।

आतिपातिकानां पण्यानामन्यत्नाविक्रेयमित्यविरोधेनानुशयो देयः । तस्यातिकमे चतुर्विशतिपणो दण्डः, पण्यदशभागो वा ।

क्रीत्वा पण्यमप्रतिगृह्णीतो द्वादशपणो दण्डः, अन्यत्न दोषोपनिपाता-विषह्येभ्यः । समानश्चानुशयः विकेत्रनुशयेन ।

विवाहानां तु त्रपाणां पूर्वेषां वर्णानाः पाणिग्रहणासिद्धमुपावर्तनम् । श्रूद्राणां च प्रकर्मणः । वृत्तपाणिग्रहणयोरिप दोषमीपशायिकं दृष्ट्वा सिद्धमुपावर्तनम् । नत्वेवाभित्रजातयोः ।

कन्यादोषमौपणायिकमनाख्याय प्रयच्छतः षण्णवतिर्देण्डः शुल्कस्त्री-धनप्रतिदानं च ।

वरियतुर्वा वरदीपमनाख्याय विन्दतो द्विगुणः । गुल्कस्त्रीधननाशश्च । द्विपदचतुष्पदानां तु कुष्ठव्याधितानामगुचीनामुत्साहस्वास्थ्यशुचीनाना-माख्याने द्वादशपणो दण्डः ।

आ त्रिपक्षादिति चतुष्पदानामुपावर्तनम् । आ संवत्सरादिति मनुष्याणाम् । तावता हि कालेन शक्यं शीचाशौचे ज्ञातुमिति ।

> दाता प्रतिग्रहीता च स्यातां नोपहतौ यथा। दाने कये वाऽनुशयं तथा कुर्युस्सभासदः॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे पञ्चदशोऽध्यायः विक्रीतकीतानुशयः, आदितो द्विसप्ततितमः ।

# ६८-७० प्रक. दत्तस्यानपाकर्म, अस्वामिविकयः, स्वस्वामिसंबन्धः ।

दत्तस्याप्रदानमृणादानेन व्याख्यातम् ।

दत्तमन्यवहार्यमेकत्नानुशये वर्तेत । सर्वस्वं पुत्रदारं आत्मानं प्रदायानुशयिनः प्रयञ्चेत् । धर्मदानमसाधुषु, कर्मसु चौपधातिकेषु वा । अर्थदानमनुपकारिषु अपकारिषु वा । कामदानमहेषु च । यथा च दाता प्रतिग्रहीता च नोपहतौ स्याताम्, तथानुशयं कुशलाः कल्पयेयुः ।

दण्डमयादाकोशभयादनर्थभयाद्वा भयदानं प्रतिगृह्णतस्तेयदण्डः प्रयच्छतश्च । रोषदानं पर्राहसायाम् । राज्ञामुपरि दर्पदानं च । तन्नोत्तमो दण्डः ।

प्रतिभाव्यं दण्डणुल्कशेषमाक्षिकं सौरिकं कामदानं च नाकामः पुत्नो दायादो वा रिक्थहरो दद्यात्।

इति दत्तस्यानपाकमं ।

अस्वामिविकयस्तु—निष्टापहृतमासाद्य स्वामी धर्मस्थेन ग्राह्येत्। देशकालातिपत्तौ वा स्वयं गृहीत्वोपहरेत्। धर्मस्थश्च स्वामिनमनुगुञ्जीत—
"कुतस्ते लब्धम्" इति । स चेदाचारक्रमं दर्णयेत, न विक्रेतारं तस्य द्रव्यस्यातिमर्गेण मुच्येत । विक्रेता चेद्दृश्येन, मूल्यं स्तेयदण्डं च । स चेदासारमधिगच्छेदपसरेदापसारक्षयादिति क्षये । मूल्यं स्तेयदण्डं च दद्यात् ।

नाष्टिकं च स्वकरणं कृत्वा नष्टप्रत्याहृतं लभेत । स्वकरणाभावे पञ्चबन्धो दण्डः । तच्च द्रव्यं राजधम्मै स्यात ।

नव्टापहृतमिनवेद्योत्कर्षतः स्वामिनः पूर्वं साहसदण्डः ।

, शुल्कस्थाने नष्टापहृतोत्पन्नं तिष्ठेत् । तिपक्षादूर्ध्वमनभिसारं राजा हरेत्. स्वामी वा स्वकरणेन ।

पञ्चपणिकं द्विपदरूपस्य निष्त्रयं दद्यात्। चतुष्पणिकमेकखुरस्य। द्विपणिकं गोमहिषस्य। पादिकं क्षुद्रपणूनाम्। रत्नसारफल्गुकुप्यानां पञ्चक शतं दद्यात्।

परचकाटवीह्तं तुप्रत्यानीय राजा यथास्वं प्रयच्छेत् । चोरहत्तमविद्यमानं स्वद्रव्येभ्यः प्रयच्छेत् प्रत्यानेतुमणक्तो वा । स्व्यं ग्राहेणाहतं प्रत्यानीय तिश्वष्कयं वा प्रयच्छेत् ।

परिवषयाद्वा विक्रमेणानीतं यथाप्रदिष्टं राज्ञा भुञ्जीतान्यत्नार्यप्राणेभ्ये देवकाह्मणतपस्विद्रव्येभ्यश्च ।

इत्यस्वामिविऋय:.।

स्वस्वामिसम्बन्धस्तु—भोगानुवृत्तिरुच्छिन्नदेशानां यथास्वं द्रव्याणाम् । यत् स्वं द्रव्यमन्यैर्भुज्यमानं दश वर्षाण्युपेक्षेत, हीयेतास्य अन्यत्न बाल-वृद्धव्याधितव्यसनित्रोषितदेशत्यागराज्यविभ्रमेभ्यः ।

विशतिवर्षोपेक्षितमनुवसितं वास्तुं नानुयुञ्जीत ।

ज्ञातयश्त्रोतियाः पाषण्डा वा राज्ञामसिन्नघौ परवास्तुषु विवसन्तो न भोगन हरेयुः ; उपनिधिमाधि निधि निक्षेपं स्त्रियं सीमानं राजश्रोतियद्रव्याणि च ।

आश्रमिणः पाषण्डा वा महत्यवकाशे पुरस्परमवाधमाना वसेयुः । अल्पां बाधां सहरन् । पूर्वागतो वा वासपर्यायं दद्यात् । अप्रदाता निरस्येत ।

वानप्रस्थयतित्रह्मचारिणामाचार्यशिष्यधर्मभ्रातृसमानतीर्थ्या रिक्**यभा**जः क्रमेण ।

विवादपदेषु चैषां यावन्तः पणाः दण्डाः तावती रात्नीः क्षपणाभिषेकाग्नि -कार्यमहाक्रच्छ्वर्धनानि राज्ञश्चरेयुः । अहिरण्यसुवर्णाः पाषण्डास्साघवः । ते यथास्वमुपवासत्रतैराराधयेयुः, अन्यत्न पारुष्यस्तेयसाहसंग्रहणेभ्यः । तेषु यथोक्ता दण्डाः कार्याः ।

> प्रय़ज्यासु वृथाचाराश्राजा दण्डेन वारयेत् । धर्मो ह्यधर्मोपहतः शास्तारं हन्त्युपेक्षितः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थाये तृतीयाधिकरणे षोडशोऽध्यायः दत्तस्यानपकर्म अस्वामिविकयः स्वस्वामिसम्बन्धः, अादितस्त्रिसप्तितमः।

#### ७१ प्रक. साहसम्।

साहसमन्वयवत्प्रसभकमं । निरन्वये स्थेयमपव्ययने च । "रत्नसारफल्गुकुप्यानां साहसे मूल्यसमो दण्डः" इति मानवाः । "मूल्यद्विगुणः" इत्योशनसाः । "यथापराधः" इति कौटिल्यः । पुष्पफलशाकमूलकन्दपक्वान्नचर्मवेणुमृद्भाण्डादीनां क्षुद्रकद्रव्याणां द्वादश-पणावरदचतुर्विशतिपणपरो दण्डः।

कालायसकाष्ठरज्जुद्रव्यक्षुद्रपशुवाटादीनां स्थूलकद्रव्याणां चतुर्विशति-पणावरोऽष्टचत्वारिशत्पणपरो दण्डः। ताग्रवृत्तकंसकाचदन्तभाण्डादीनां स्थूलकद्रव्याणाम् अष्टचत्वारिशत्पणावरं षण्णवतिपरः पूर्वस्साहसदण्डः। महापशुमनुष्यक्षेत्रगृहहिरण्यसुवर्णसूक्ष्मवस्त्रादीनां स्थूलकद्रव्यानां द्विशतावरः पञ्चशतपरः मध्यमस्साहसदण्डः।

स्त्रियं पुरुषं वाऽभिषह्य बध्नतो बन्धयतो बन्धं वा मोक्षयतः पञ्चशतावरः सहस्रपर उत्तमः साहसदण्डः इत्याचार्याः ।

यस्साहसं प्रतिपत्तेति कारयति स गुणं दद्यात् । यावद्धिरण्यमुपथोक्ष्यते तानदास्यामि इति स चतुर्गुणं दण्डं दद्यात् ।

य एतावद्धिरण्यं दास्यामि इति प्रमाणमुह्ण्य कारयति स यथोक्तं हिरण्यं दण्डं च दद्याद् इति वाहंस्पत्याः ।

स चेत्कोपं मदं मोहं वाऽपिदशेत्, यथोक्तवद्ग्डमेनं कुर्यानिति कांटिल्यः ।

दण्डकमंसु सर्वेषु रूपमण्टपणं शतम् ।

शतावरेषु तु व्याजीं च विद्यात्पञ्चपणं शतम् ।।

प्रजानां दोपवाहुल्याद्राज्ञां वा भावदोषतः ।

रूपव्याज्यावर्धामप्ठे धर्म्या तु प्रकृतिस्स्मृता ।।

इति कौटिलीयार्थणास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे सप्तदशोऽध्यायः,

साहसम्, आदितश्चतुस्सप्तितितमः ।

### ७२ प्रक. वाक्पारुष्यम्।

वाक्यारुष्यमुपवादः कुत्सनमभिभत्संनमिति ।

शरीरप्रकृतिश्रुतवृत्तिजनपदानां शरीरोपवादेन काणखञ्जादिभिस्सत्ये त्रिपणो दण्डः । मिथ्योपवादे षट्पणो दण्डः ।

शोभनाक्षिदन्त इति काणखञ्जादीनां स्तुतिनिन्दायां द्वादशपणो दण्डः । कुष्ठोन्मादक्नैव्यादिभिः कुत्सायां च ।

सत्यमिथ्यास्तुतिनिन्दासु द्वादणपणोत्तरा दण्डाः तुल्येषु। विशिष्टेषु

द्विगुणः । होनेब्वर्धदण्डः । परस्त्रीषु द्विगुणः । प्रमादमदमोहादिभिरध-दण्डाः ।

कुष्ठोन्मादयोश्चिकत्सकाः सिन्नकृष्टाः पुमांसश्च प्रमाणम् । क्लीवभावे स्तियः मूत्रफेम् अप्सु विष्ठानिमज्जनं च ।

प्रकृत्योपवादे ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्गान्तावसायिनामपरेण पूर्वस्य त्रिपणोत्तराः दण्डाः । पूर्वेणापरस्य द्विपणाधराः कुब्राह्मणादिभिश्च कृत्सायाम् ।

तेन श्रुतोपवादः वाग्जीवनानां, कारकुशीलवानां वृत्त्युपवादः, प्राग्धूणकः गान्धारादीनां च. जनपदोपवादा व्याख्याताः ।

यः परं ''एवं त्वां करिष्यामि'' इति करणेनाभिभत्संग्रेदकरणे, यस्तस्य करणे दण्डः, ततोऽर्धदण्डं दद्यात् ।

अशक्तः कोपं मदं मोहं वाऽपिदिशेत्, द्वादशपणं दद्यात् । जातवैराशयः शक्तस्वापकर्तुं यावज्जीविकावस्थं दद्यात् । स्वदेशग्रामयोः पूर्वं मध्यमं जातिसङ्घयोः । आकोशाहेवचैत्यानाम् उत्तमं दण्डमहेति ॥

इति कोटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे अष्टादशोऽध्यायः, वाक्पारुष्यमः, आदितः पञ्चसप्ततितमः ।

## ७३ प्रक. दण्डपारुष्यम्।

दण्डपारुष्यं स्पर्शनमवगूणं प्रहतमिति ।

नाभरधः कायं हस्तपञ्च मस्मपासुभिरिति स्पृशतस्त्रिपणो दण्डः ।

तैरेवामेध्यैः पादष्ठीविकाभ्यां च षट्पणः। छर्दिमूतपुरीषादिभि-द्वीदशपणः। नाभेक्षपरि द्विगुणाः। शिरसि चतुर्गुणाः समेषु।

विशिष्टेपु द्विगुणाः । हीनेषु अर्धदण्डाः । परस्त्रीषु द्विगुणाः । प्रमादमदमोहादिभिरर्धदण्डाः ।

पादवस्त्रहस्तकेशावलम्बनेषु षट्पणोत्तरा दण्डाः।

पीडनावेष्टनाञ्त्रनप्रकर्षणाध्यासनेषु पूर्वस्साहसदण्डः । पातायित्वाऽप-कमतोऽर्धदण्डाः ।

शुद्रो येनाङ्गेन ब्राह्मणमभिहन्यात्तदस्य छेदयेत् । अवगूर्णे निष्क्रयः, स्पर्शेऽर्धदण्डः । तेन चण्डालाशुचयो व्याख्याताः । हस्तेनावगुर्णे त्रिपणावरो द्वादशपणपरो दण्डः। पादेन द्विगुणः। दुःखोत्पादनेन द्रब्येण पूर्वस्साहसदण्डः । 'प्राणावाधिकेन मध्यमः ।

काष्ठलोब्टपाषाणलोहदण्डरज्जुद्रव्याणामन्यतमेन दुःखमशोणितमुत्पादयत-श्चतुर्विशतिपणो दण्डः। शोणितोत्पादने द्विगुणः, अन्यत्र दुष्टशोणितात् । मृतकल्पमशोणितं व्नतो हस्तपादपारंचिकां वा कुर्वतः पूर्वस्साहसदण्डः । पाणिपाददन्तभञ्जे कर्णनासाच्छेदने व्रणविदारणे च अन्यव दुष्टव्रणेभ्यः। सिवयग्रीवाभञ्जने नेत्रभेदने वा वाक्यचेष्टाभोजनोपरोधेषु च मध्यम-

स्साहसदण्डः । समुत्थानव्ययश्च । विपत्तौ कण्टकशोधनाय नीयेत ।

महाजनस्यैकं घ्नतो प्रत्येकं द्विगुणो दण्ड:।

पर्युषितः कलहोऽनुप्रवेशो वा नाभियोज्य इत्याचार्याः ।

नास्त्यपकारिणो मोक्ष इति कौटिल्यः।

कलहे पूर्वागतो अयति अक्षममाणो हि प्रधावति इत्याचार्याः ।

'न' इति कौटिल्यः । पूर्वं पश्चाद्वाऽऽगतस्य साक्षिणः प्रमाणम् । असाक्षिके घातः कलहापलिङ्गनं वा ।

षाताभियोगमप्रतिबुवतस्तदहरेव पश्चात्कारः।

कलहे द्रव्यमपहरतो दशपणो दण्डः।

श्रुद्रकद्रव्यहिंसायां तच्च तावच्च दण्डः ।

स्थूलकद्रव्यहिसायां तच्च द्विगुणश्च दण्डः ।

वस्त्राभरणहिरण्यसुवर्णभाण्डहिमायां तच्च पूर्वश्च साहसदण्डः ।

·परकुडामभिवातेन क्षोभयतस्त्रिपणो दण्डः। छेदनभेदने षट्पणः, पातनभञ्जने द्वरदशपणः प्रतीकारम्च।

दु:स्रोत्पादनं द्रव्यमस्य वेश्मनि प्रक्षिपतो द्वादणपणो दण्डः । प्राणावाधिकं पूर्वस्साहसदण्डः ।

क्षद्रपश्चनां काष्ठादिभिर्दुःखोत्पादने पणो द्विपणो वा दण्डः। शोणितोत्पादने द्विगुणः ।

महापश्वामेतेष्वेव स्थानेषु द्विगुणो दण्डः, समुत्थानव्ययश्च ।

पूरोवनस्पतीनां पुष्पफलच्छायावतां प्ररोहच्छेदने षट्पणः। क्षुद्रशाखाच्छेदने पीनशाखाच्छेदने चत्र्विंगतिपणः । स्कन्धवधे पूर्वस्साहसदण्डः । सम्बिखती मध्यमः।

पुष्पफलण्छायावद्गुल्मलतास्वधंदण्डः । पुष्यस्थानतपोवनश्मशानद्रुमेषु च । सीमवृक्षेषु चैत्येषु द्रुमेष्वालक्षितेषु च । त एव द्विगुणा दण्डाः कार्या राजवनेषु च ।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे धर्मस्थीये तृतीयाधिकरणे एकोर्निवशोऽध्यायः, दण्डपारुष्यम् । आदितष्वट्सप्ततितमः।

# ७४-७५ प्रक. चूतसमाह्वयं प्रकीर्णकानि ।

चूताध्यक्षो चूतमेकमुख कारयेत्। अन्यव दीव्यतो द्वादणपणो दण्डः गूटाजीविज्ञापनार्थम्।

ृद्यताभियोगे जेतुः पूर्वस्साह्सदण्डः । पराजितस्य मध्यमः । बार्लिश-जातीयो ह्येष जेतृकामः पराजयं न क्षमते इत्याचार्याः । 'न' इति कौटिल्यः । पराजितभ्चेद् द्विगुणदण्डः क्रियेत, न कश्चन राजानमभिसरिष्यिति । प्रायशो हि कितवाः कूटदेविनः । तेषामध्यक्षाः शुद्धाः काकणीरक्षांभ्च स्थापयेयुः ।

काकण्यक्षीणामन्योपधाने द्वादणपणो दण्डः । कूटकर्मणि पुर्वस्साहस-दण्डः, जितप्रत्यादानम । उपधौ स्तेयदण्डश्च ।

जिनद्रव्यादक्ष्यक्षः पञ्चकं शतमाददीत, काकण्यक्षारलाश्चलाकावक्रयमुदक-भूमिकर्मक्रयं च । द्रव्याणामाधानं विक्रयं च कुर्यात् । अक्षभूमिहस्तदोषाणां चाप्रतिषेधने द्विगुणो दण्डः ।

तेन समाह्वयो व्याख्यातः अन्यत्र विद्याशिल्पसमाह्नयादिति ।

प्रकीर्णकं तु । याचितकावकीतकाहितकनिक्षेपकाणां यथादेशकालमदाने, यामच्छायासमुपवेशसस्थितीनां वा देशकालातिपातने, गुरुमतरदेयं ब्राह्मणं साध्यतः प्रतिवेशानुवेशयोरुपरि निमन्त्रणे च द्वादशपणो दण्डः ।

सन्दिष्टमधंमप्रयच्छतो, श्रातृभार्यां हस्तेन लङ्घयतो रूपाजीवामन्योपरुद्धां गच्छतः, परवक्तव्यं पण्यं श्रीणानस्य, समुद्रं गृहमुद्भिन्दतः ; सामन्तचत्वारिश-रकुन्या वाधामाचरतश्चाष्टचत्वारिशत्पणो दण्डः ।

कुलनीवीग्राहकस्यापव्ययने, विधवां छन्दद्यसिनी प्रसह्याधिचरतः,

चण्डालस्यायां स्पृशतः, प्रत्य(सन्नमापद्यनशिष्ठावतो निष्कारणमभिधावनं कुर्वतः, शाक्याजीवकादेरन् वृषलप्रविज्ञान् देविषतृकार्येषु भोजयतश्यत्यो दण्डः ।

शपथवानगानुयोगमिनसृष्ट कुर्वतो युक्तकमं चायुक्तस्य, क्षुद्रपशुवृषाणां पुंस्त्वोपघातिनो दास्या गर्भमौषधेन पातयतम्च पूर्वस्साहसदण्डः।

णितापुत्रयोदम्पत्योभ्रातृभगिन्योमितुलभागिनययोषिशाष्याचार्ययोवी परस्पर-मपिततः त्यजनसम्बार्थाभिषयात ग्राममध्ये वा त्यजतः पूर्वस्साहसदण्डः। कान्तारं मध्यमः। तांत्रमित्तं भ्रेषयत उत्तमः। महप्रश्यागिष्ठनस्येष्वधंदण्डाः।

पुरुषमबन्धनीय बध्ननं यन्धयतो वन्य वा मोक्षयतो बालमप्राप्तव्यवहारं बध्नतो बन्धयतो वा सहस्रदण्डाः । पुरुषापराधविशेषेण दण्डविशेषः कार्यः ।

नीर्थकरस्तपस्वी व्याधितः क्षुत्पिपासाध्वक्कान्तस्तिरो<mark>धान पदो दण्डसेदी</mark> निष्किञ्चनश्चानुग्राह्याः ।

इवब्रःह्मणतपस्विस्ति व व्वद्भव्याधितानामनाथानामनभिसरतां धमंस्थाः कार्याणि कुर्युः । न च देणकालभोगच्छलेनातिहरेयुः ।

पूज्या विद्याबुद्धिगौरुपानिजनकर्मातिशयतश्च पुरुपाः।

एव भार्याण धर्मस्थाः कुर्युरच्छलदर्शिनः । समास्मर्वेषु भावेषु विश्वास्या लोकसम्प्रियाः ॥

इति कौटिलायार्थणास्त्रे धर्मस्थीय तृतीयाधिकरणे विणोऽध्यायः, द्यूतसमाह्मय प्रकीणंकानि । शादितस्सप्तसप्ततितमीऽध्यायः। एतावता कौटिलीयस्यार्थशास्त्रस्य धर्मस्थीय तृतीयसधिकरण समाप्तम् ॥०॥

# क्लिंगिय वर्गमाञ्च

[প্রাচীন ভারতের রাজনীতি ও অর্থনীতিবিষয়ক গ্রন্থ]

#### क्षश्य খल

গিলকাতা প্রেসিডেন্সি কলেজের সংস্কৃতবিভাগের ভৃতপূর্ব প্রধান অধ্যাপক ও

ক্ষিকাতা ও ঢাকা বিশ্ববিচ্চালয়ের প্রাক্তন অধ্যাপক **ডক্টর রাধাগোবিন্দ বসাক** এম. এ., পি.এইচ.ডি.

কর্মক

বঙ্গভাষায় কুতাসুবাদ

জেনারেন প্রিণ্টার্স য়্যাণ্ড পাব্লিশার্স প্রাইভেট নিমিটেড ১১৯, ধ্রমতলা স্ট্রীট : কলিকাতা-১৩ প্রকাশক: শ্রীস্থরজিৎ চন্দ্র দাস, জেনারেল প্রিণ্টাস য়াও পাব্লিশাস প্রাইভেট লিঃ ১১৯. ধর্মতলা ষ্ট্রাট, কলিকাতা-১৩

[ मूला ३ ১৫ টाका ]

্রন্থ পরিক্রমা প্রেস, ৩০/১বি, কলেজ রো, কলিকাতা—> শ্রীঅপর্ণাপ্রসাদ সেনগুপ্ত কর্তৃক মৃদ্রিত যে-যে কৌটিল্যচরিত দেশনায়ক নিজ নিজ সৃক্ষা বৃদ্ধির প্রয়োগ করিয়া ভারতের স্বাধীনতা-সংগ্রামে বিজয়ী হইয়াছেন, অর্থশাস্ত্রবিৎ সেই-সেই পূজনীয় মহাপুরুষদিগকে শ্মরণ করিয়া ভাঁহাদের উদ্দেশ্যে এই গ্রন্থের উৎসর্গ করা হইল।

#### ( দিতীয় সংস্করণের প্রথম খণ্ডের )

#### মুখবৃন্ধ

বিগত ইং ১৯৫০ সালের ১৮ই জুলাই তারিথে কোটিলীয় অর্থশন্ত্রের প্রথম থণ্ডের মংকৃত বঙ্গান্তবাদ কলিকাতায় প্রকাশিত হইয়াছিল এবং বিতীয় থণ্ডের বঙ্গান্তবাদ গ্রন্থ ইং ১৯৫১ সালের ২৩শে মার্চ্চ তারিথে কলিকাতায় প্রকাশিত হইয়াছিল। স্থান্তমাজ আমাদের বঙ্গান্তবাদের সাহায্যে স্থ্রাচীন কোটিলায় অর্থশাস্ত্রের মত ত্রুহ সংস্কৃতগ্রন্থের বিষয়াবলী বুঝিবার অবসর পাইয়া পরিতুইচিত্তে আমাকে নানারূপ সহান্তভূতি-পূর্ণ উৎসাহ প্রদান করিয়াছেন। গত ১১-১২ বৎসরে আমাদের মৃক্তিত ও প্রকাশিত বইগুলি নিঃশেষভাবে বিক্রীত হইয়া গিয়াছে। বহু মনীধী প্রাক্ত পণ্ডিত, অধ্যাপক, অন্যান্ত শিক্ষক ও ছাত্র-ছাত্রীরা আমার গ্রন্থের বিতীয় সংস্করণ শীঘ্র প্রকাশ করার জন্য অন্যরোধ জানাইয়াছেন। আমার মনে দৃঢ় বিশ্বাস হইয়াছে যে, এই স্কেঠিন সংস্কৃত গ্রন্থের বঙ্গান্থবাদ প্রকাশিত হওয়ায়, প্রাচীন অর্থশাস্ত্রের পঠনপাঠনের দিকে শামাজিকদিগের দৃষ্টি অনেকটা আরুট্ট হইতে পারিয়াছে। এই ভাবিয়া আমি তাঁহাদের নিকট ক্রতজ্ঞচিত্রে বাধিত বোধ করিতেছি।

পূর্ণের কলিকাতা ও ঢাকা বিশ্ববিভালয়ে সংস্কৃতের এম্-এ পরীক্ষাথিদিগের জন্ম কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রের কতক অংশ পাঠ্য বিষয় বলিয়া নির্দারিত ছিল। এখন অত্যন্ত স্থথের বিষয় যে, এই প্রস্তের অংশবিশেষ কলিকাতা ও বর্দ্ধমান বিশ্ববিভালয়ে সংস্কৃত বি-এ (অনাস্ত্র) পরীক্ষাথিদিগের পাঠ্য তালিকাভুক্তও চহয়াছে। স্নাতকোত্তর সময়ে ভারতীয় ইতিহাস সঙ্গনীয় গবেষণায় ব্যাপ্ত ইবে যে-সব ছাত্র-ছাত্রীয়া, তাহাদের পক্ষে প্রাচীন রাজনীতি ও অর্থনীতি বিষয়ক কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রের জ্ঞান যে অত্যাবশ্যকীয় তদ্বিয়য় সন্দেহ নাই। কাজেই বি-এ ও এম্-এ, পরীক্ষায় এই প্রস্তের সহিত পূর্ব্ব পরিচয় থাকিলে—বভাথিদিগের পরে গবেষণাকাগে তাহা অতীব প্রয়োজনীয় ও ম্লাবান মনে হইবে।

প্রথম সংশ্বরণে আমরা বঙ্গান্থবাদের সহিত মূল সংস্কৃত গ্রন্থ মুদ্রিত করিয়া প্রকাশ করিতে না পারায় হৃঃখ প্রকাশ করিয়াছিলাম। ছাত্র-ছাত্রীরা অনেকেই <sup>মূল</sup> সংস্কৃত পাঠ্যাংশ মুদ্রিত পুস্তুক হইতে নিজ নিজ থাতায় স্বহস্তে লিথিয়া লইয়া বিষয় পাঠ করে। তাহাদের সনির্বন্ধ অহুরোধে এবার আমরা অহুবাদের ছই খণ্ডেরই সহিত মূল সংস্কৃত গ্রন্থ মূদ্রিত করিয়া সম্বন্ধ করিয়া দিয়াছি। ইহাতে পাঠক-পাঠিকার স্থবিধা হইবে তাহাতে সন্দেহ নাই।

আর একটি বিষয়ে পণ্ডিতসমাজের দৃষ্টি আরুষ্ট করিতে ইচ্ছা করি। অর্থশাস্ত্রের বঙ্গাহ্নবাদের প্রথম সংস্করণের বিতীয় থণ্ডে পরিশিষ্টরূপে আমি প্রাচীন
দণ্ডনীতি ও অর্থনীতি বিষয়ক প্রায় ৬০০।৭০০ পারিভাষিক শব্দের তালিকা ও
সেগুলির অভিধান প্রকাশ করিয়াছিলাম—তাহা হইতে আমাদের বাঙ্গাল প্রদেশের পরিভাষা কমিটির সভ্যগণ কোন কোন নৃতন শব্দের চয়ন করিয়া নিয়াছেন কি না, তাহা আমি জানি না। তবে এই বিষয় গুনিয়াছি যে, ভারতের অন্যান্ত প্রদেশের কোন কোন পণ্ডিতেরা সেই পারিভাষিক অর্থশাস্ত্রবিষয় ক অনেক শব্দ স্থানীয় ভাষায় বাবহার জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন।

সর্বশেষে বক্তব্য এই যে, কলিকাতার প্রসিদ্ধ জেনারেল প্রিণ্টারস্ এও পাবলিশারস্ নামক প্রতিষ্ঠানের প্রধান স্বত্যবিকারী আমার পূর্বতন স্নেহাম্পদ ছাত্র শ্রীমান্ স্বরেশচন্দ্র দাস, এম্-এ, এবার এই গ্রন্থের মৃদ্রণ ও প্রকাশনকার্য্যের সম্পূর্ণ ভার গ্রহণ করিয়া আমাকে অধিকতর ক্রতক্ততাপাশে বদ্ধ করিয়াছেন। কলিকাতা, ৬৯নং বালিগঙ্গ গার্ডেনস,

বালিগঞ্জ, কলিকাতা-১৯ ১৬ই আশ্বিন, বাং ১৩৭০ সন, ১লা অক্টোবর, ইং ১৯৬৩ সাল।

<u>ইতি—</u>

**জীরাধাগোবিন্দ বসা**ক

( প্রথম সংক্ষরণের প্রথম খণ্ডের )

#### মুখবন্ধ

প্রভিগবানের ইচ্ছায় কোটিলীয় অর্থশান্ত্রের বঙ্গান্তবাদ ( প্রথমখণ্ড) মৃদ্রিত হইয়া প্রকাশিত হইল। বিগত ধিতীয় মহাযুদ্ধের তাওবলীলা চলিতে থাকার সময়ে এবং দেশময় স্বাধীনতাসংগ্রাম অব্যাহতগতিতে বৃদ্ধি পাইতে থাকা কালে, সরকারী কলেজের অধ্যাপনাকার্য্য হইতে অবসরগ্রহণের পরে, আমি এই গ্রন্থে অন্বাদকার্য্যে বতী হইয়া প্রায় আড়াই বৎসর পর্যন্ত ইহাতে অভিনিক্তি থাকিয়া এই শ্রমসাধ্য ব্রত সমাপন করিয়াছিলাম। অন্বাদকার্য্যের অবসানের পরেও, এই অন্বাদ্টি গ্রন্থাকারে মৃদ্রিত ও প্রকাশিত করা হইবে কি না, সে

সম্বন্ধে গত তুই বৎসর পর্যান্ত আমার মনে যে হৈথীভাব ছিল, কলিকাতা বিশ্ব-বিভালয়ের কর্তৃপক্ষ ও অন্যান্ত সহদয় কৃতবিত্ব বন্ধুবান্ধবের প্ররোচনায় তাহা অবশেষে ত্যাগ করিয়া আমি ইহার মূদ্রণ ও প্রকাশকার্য্যের ব্যবস্থায় প্রবৃত্ত হইয়াছিলাম। বর্ত্তমান সময়ে গ্রন্থমূদ্রণ অত্যন্ত ব্যয়সাধ্য, এই জন্ত অন্ধবাদের সঙ্গে মূল সংস্কৃত গ্রন্থ ছাপাইতে না পারায় আমি অত্যন্ত হুঃথিত।

সংস্কৃত-সাহিত্য-সাগরের একটি প্রধান ও প্রক্লপ্ট রত্বস্বরূপ এই কোটিলীয় অর্থশান্ত্রথানি আজ প্রায় ৪১ বৎসর পূর্ন্বে আবিষ্কৃত হইয়া প্রকাশিত হইয়াছিল। এই আবিষ্ণার কেবল ভারতীয় সাহিত্যের নহে, পৃথিবীর দর্শ্ব সাহিত্যের একটি শ্বরণীয় ঘটনা। এই গ্রন্থ আমরা সর্ব্ধপ্রথম পাঠ করিতে আরম্ভ করি ইং ১৯১১ সাল হইতে। রাজসাহীর বরেন্দ্র-অন্তসদ্ধানসমিতির যে ত্রিমৃতিস্বরূপ ছিলেন ৺অক্ষয়কুমার মৈত্রেয়, ৺রায় বাহাতুর রমাপ্রসাদ চন্দ ও দিঘাপতিয়ার রাজকুমার ৺শরৎকুমার রায়, তাঁহাদের সাহচর্য্যে প্রত্নতত্ত্ববিষয়ক গবেষণায় নিযুক্ত থাকিয়া বাঙ্গালা দেশের তথনকার নবাবিষ্ণৃত তামশাসন ও প্রস্তরলিপি প্রভৃতির পাঠো-দ্বারসাধন এবং তদ্ব্যাখ্যা ও তৎসমালোচনায় প্রবৃত্ত থাকা সময়ে, আমি বিভিন্ন তামশাসনে 'ভূমিচ্ছিদ্র-ক্যায়' কথাটির মূলতথ্য কি হইতে পারে তদ্গাবেষণার ফলে এই কোটিলীয় অর্থশাম্বের দ্বিতীয় অধিকরণের দ্বিতীয় অধ্যায়ে 'ভূমিচ্ছিদ্র-বিধান'-নামক প্রকরণের বিষয় অবগত হই। আমার পক্ষে সর্বপ্রথম এই গ্রন্থে প্রবেশের ইতিহাস হইল ইহাই। এই ত্বরহ গ্রন্থের কিছু বিষয় যে তথন বেশী বুঝিতে পারিতাম—তাহা এখন স্পর্দার সহিত বলিতে পারি না। তারপর, ইহাতে আমাকে অন্প্রবিষ্ট হইতে হয়, যথন ৮মহামহোপাধ্যায় ডক্টর হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশয় ঢাকা বিশ্ববিত্যালয়ের এম্-এ. ক্লাসের ছাত্রদিগকে এই গ্রন্থের অংশবিশেষ পড়াইবার জন্ম আমাকে আদেশ করেন। পরে কলিকাতা বিশ্ব-বিত্যালয়েও আমাকে কিছু কাল ইহা পড়াইতে হইয়াছিল। এই পাঠন-কার্য্যের স্থযোগ না পাইলে, এই গ্রন্থের বঙ্গাত্মবাদবিষয়ে কোন প্রবৃত্তিই আমার মনে আসিত কি না, তাহা বলিতে পারি না। আমি যথন অন্থবাদকার্য্যে ব্যাপৃত ছিলাম, তখন সংবাদ পাইলাম যে, আমার পূর্বতন সহযোগী ৺অশোকনাথ শাস্ত্রীও এই কার্য্যে হস্তক্ষেপ করিয়াছেন এবং 'ভারতবর্ধ'-নামক মাসিক পত্রিকার কয়েক সংখ্যায় এই বিষয়ে তাঁহার কয়েকটি প্রবন্ধও প্রকাশিত হইয়াছিল, আমি বুঝিয়াছিলাম যে, তাঁহার মত নানাকার্য্যে ব্যাপৃত অধ্যাপকের পক্ষে এই ১৫০টি অধ্যায়-সমন্বিত গ্রন্থের বঙ্গামুবাদ অনেক বৎসর ব্যাপিয়া করিলেও যদি

কথনও শেষ হয়। পরে তিনি অন্থবাদকার্য্য হইতে ক্ষান্ত থাকেন এবং 'আরও কিছুকাল গত হইলে, তিনি দেহরক্ষা করেন। এই শাস্ত্রের অত্বাদকার্য্যে অগ্রসর হইতে থাকিয়া আমি ক্রমশ: বুঝিতে পারিতেছিলাম যে, কি ত্বংসাধ্য কার্য্যে আমি হস্তক্ষেপ করিয়াছি। কারণু, গ্রন্থথানি অতি প্রাচীন ও ইহাতে যে-ভাবে বিষয়গুলি আলোচিত হইয়াছে এবং যেরপ পারিভাষিক শন্দপ্রয়োগ সহ ইহা লিখিত হইয়াছে তাহাতে অনেকস্থলে সম্যগ্ভাবে অর্থবাধ করিতে সমর্থ হইয়াছি তাহা বলিতে সাহস হয় না। এই গ্রন্থের হস্তলিখিত প্রাচীন পাণ্ড্-লিপির প্রাচুর্গ্য না থাকায়, স্থানে স্থানে পাঠগুদ্ধিবিধয়ে সংশয়ও মনে উপস্থিত হয়। ডক্টর শ্রাম শাস্ত্রীর ইংরেজী অন্তবাদ ও দাক্ষিণাত্যের অশেষশাস্ত্রনিফাত মহামহোপাধ্যায় গণপতি শাল্পী মহোদয়ের সংস্কৃত টীকা প্রকাশিত না হইলে, ভারতীয় অন্য কোনো প্রাদেশিক ভাষাতে এই গভীর তথ্যসংবলিত কঠিন গ্রন্থের ভাষান্তরিত হওয়ার সম্ভাবনা কম হইত বলিয়া প্রতিভাত হয়। এই শাম্বের বঙ্গাস্থাদ করিতে যাইয়া, অর্থবোধের সোক্র্যার্থ আমি ব্যাখ্যাগর্ভ অন্থবাদেরই চেষ্টা করিয়াছি—কেবল শান্ত্রিক ভাষান্তররূপ অন্তবাদে প্রবৃত্ত হই নাই। ভারতীয় ভাষাসমূহের মধ্যে বিগ্রাভাম্বর বেদরত্ব উদয়বীর শাস্ত্রীর হিন্দী অন্ত্রাদ হইতেও আমি নিজকার্য্যে বেশ সহায়তা লাভ করিয়াছি।

ষয়ং কোটিল্য বহুসংখ্যক পূর্বনাচার্য্যদিগের রচিত অর্থশাস্থাবিষয়ক গ্রন্থরাজি ও রাজনীতি ও অর্থনীতিবিষয়ক অক্যান্ত মতামত পর্য্যালোচনা করিয়া যে গ্রন্থ-থানি লিখিয়াছেন এবং যাহাতে তিনি নানাশাস্ত্র হইতে লব্ধ নিজের পরিপক জ্ঞানের পরিচয় দিয়াছেন, তাহা যে অত্যন্ত তুর্ব্বোধ গ্রন্থ হইবে তদ্বিষয়ে সন্দেহ থাকার অবসর নাই। তিনি যে এই অর্থশাস্ত্রে আন্ত্রীক্ষিকী, ত্রন্ত্রী, বার্ত্তা ও দণ্ডনীতি—এই বিভাচতুইয়েই নিজের অধিকারের প্রমাণ দিয়াছেন তাহা নহে, ইহাতে তিনি শুল্পশাস্ত্র, বাস্ত্রবিভা, রাম্যানশাস্ত্র, উন্তিদ্বিভা, ভূগোল ও ইতিহাস, বেদ প্রভৃতি নানাবিভা ও নানাশাস্ত্রের প্রক্রই জ্ঞানেরও পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। কাজেই আমাদের মত স্বল্পজ্ঞান ও মন্দমতি লোকের পক্ষে এই গ্রন্থের সম্পূর্ণ গ্রন্থিভেদ একরূপ অসম্ভব। তথাপি মহাকবি ভবভূতির সেই প্রসিদ্ধ শ্লোকের অন্ধাংশের কথা শ্ররণ হয়—

"উৎপৎশুতেহস্তি মম কোহণি সমানধর্মা কালো হয়ং নিরবধিবিপুলা চ পৃথী"।

আমরা এই গ্রন্থণানি যেরূপ বুঝিয়াছি, সেইরূপেই ইহার অন্থবাদ লিপিবন্ধ

করিয়া রাখিলাম। পৃথিবী ত বাস্তবিকই বিপুল—কোথায় কে এখনই আছেন যিনি আরও অধিকতর উৎকর্ষসহকারে অথবাদ করিতে পারেন। অথবা, কালও নিরবধি—ভবিশ্বতে হয়ত অক্স যোগ্যতর ব্যক্তি অথবাদের উৎকর্ষ বাড়াইতে সমর্থ হইবেন।

বহুকাল পরে আজ ভারতবর্ধ সর্ব্বাঙ্গীণ স্বাধীনতা প্রাপ্ত হইয়াছে। ভারতের শাসন ও রক্ষাকার্য্যে যাঁহারা এখন ব্রতী ও দেশের সবগুলি প্রদেশে (বিশেষতঃ বাঙ্গালা প্রদেশে) যাঁহারা মন্ত্রিপদে আরুট, তাঁহাদেরও নিজদেশে প্রাচীনকালে প্রচলিত ও প্রবর্ত্তিত রাষ্ট্রনীতি ও অর্থনীতি-বিষয়ক গ্রন্থের সহিত সবিশেষ পরিচয় থাকা আবশ্রক। আমাদের দেশের প্রাচীন রাজনীতি ও অর্থনীতিবিষয়ক বৈশিষ্ট্য কিরূপ ছিল তাহা না জানা থাকিলে, দেশের সভ্যতা, ভব্যতা ও রুষ্টিরক্ষা তুরুর কার্য্য বলিয়া মনে করা যাইতে পারে। যাহাতে দেশভক্ত রাষ্ট্রনায়কগণের ও বিদ্বৎসমাজের দৃষ্টি এ-দিকে থানিকটা আরুষ্ট হইতে পারে তঙ্গুতাই এই স্থপ্রাচীন তুরুহ কোটিলীয় অর্থশাম্বের বঙ্গান্থবাদে আমার প্রয়াস। প্রাচীন রাজনীতি ও অর্থনীতির আলোচনা ও প্রচারবিষয়ে সামাজিকগণের মন ইহা পাঠ করিয়া যদি একট্রও পরিবর্ত্তিত ও পরিশোধিত হয়, তাহা হইলেই আমার পরিশ্রম সার্থক বিরেচিত হইবে।

এ-স্থলে রুতজ্ঞতাসহকারে উল্লেখ করা ঘাইতে পারে যে, আমি এই অয়বাদকার্য্যে উৎসাহ পাইয়াছি আমার বন্ধু ও প্রাক্তন সহযোগী ডাঃ রমেশচন্দ্র মজুমদার,
ডাঃ য়শীলকুমার দে, ডাঃ প্রবোধচন্দ্র লাহিড়ী, ডাঃ জিতেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,
ডাঃ নীহাররঞ্জন রায়, মহামহোপাধ্যায় যোগেন্দ্রনাথ সাংখ্য-বেদান্ত-তর্কতীর্থ-প্রন্থ
পণ্ডিত ও মনীধীগণ হইতে। আমার অপর বন্ধু শ্রীললিতকুমার সেন মহাশয়ও
আমাকে এই গ্রন্থের প্রকাশবিষয়ে অনেক স্থপরামর্শ দিয়া বাধিত করিয়াছেন।
কিন্তু, এই শ্রমসাধ্য অয়বাদকার্য্যের প্রধান প্রযোজক ছিলেন আমার প্রবিতন
য়েহাম্পদ ছাত্র শ্রীমান্ স্বরেশচন্দ্র দাস এবং তাহার প্রয়ন্তে ও সহায়তায় এই গ্রন্থ
তাহারই জেনারেল প্রিন্টারস্ এও পারিশারস্-নামক প্রতিষ্ঠান হইতে মৃত্রিত ও
প্রকাশিত হইল। ইতি—

কলিকাতা, ৬৯নং বালিগঞ্জ গার্ডেনদ্, বালিগঞ্জ, কলিকাতা-১৯ ২রা শ্রাবণ, বাং ১৩৫৭ সন, ১৮ই জুলাই, ইং ১৯৫০ সাল।

শ্রীরাধাগোবিন্দ রসাক

## অবতরণিকা

১৯০৯ গ্রীষ্টাব্দে মহীশূরের পণ্ডিত ডক্টর আর শাস্তাম শাস্ত্রী কোটিলীয় অর্থশান্ত্রের সর্ব্ধপ্রথম একটি সংস্করণ প্রকাশ করেন। তৎপূর্ব্বে পৃথিবীর সর্ব্বত্ত পণ্ডিতমণ্ডলী এই শাস্ত্রের নামমাত্রই অবগত ছিলেন; এবং কেবল প্রাচীন কোন কোন সংস্কৃত গ্রন্থে ইহার উল্লেখের ও সংস্কৃত টীকা পঞ্চীতে এই শাস্ত্র হইতে উদ্ধৃত বচনবিশেষের কথা তাঁহাদের পরিজ্ঞাত ছিল। দাক্ষিণাত্যের এই মনীষীর এই গ্রন্থের আবিষ্কার ভারতীয় সংস্কৃত সাহিত্যের নহে, জগতের সর্বনাহিত্যের ইতিহাসে এক অসাধারণ ঘটনা। পার্থিব বা অ-পারমার্থিক বিষয়ে লিথিত এই প্রাচীন অর্থশান্ত্রের মূল্যবত্ত। অত্যন্ত অধিক। এই বিপুলায়তন গ্রন্থমধ্যে অত্যন্ত ত্বরহ ও প্রায় তুর্বোধ অনেক বাক্য ও শব্দনিচয় রহিয়াছে। একজন ভারতীয় শাস্ত্রবিৎ বিদেশীয় পণ্ডিত এই অর্থশাস্ত্রকে একথানি 'গ্রন্থ' না বলিয়া ইহাকে একটি 'গ্রন্থাগার'-নামে পরিচিত করিতে চাহিয়া বাস্তবিকই ইহার মর্বাদা রক্ষা পণ্ডিতমণ্ডলী কর্তৃক ত্রই গ্রন্থথানিতে সনৃদ্ধিষ্ট বহুবিধ বিষয়ের সমাক্ পর্যালোচনা, সতর্ক বিচার ও উপযুক্ত মূল্যনির্ণয় সমাপ্ত হইতে আরও বহু বহু বৎসরের পরিশ্রমের প্রয়োজন হইবে—এইরূপ বর্ণিলে অত্যুক্তি করা হইবে না। এই শান্ত্রের যে চারিখানি প্রশিদ্ধ সংস্করণে ব্যাখ্যা ও অনুবাদসহ পাঠ এযাবৎ প্রকাশিত হইয়াছে, সেই পাঠ সর্ব-শুদ্ধ বলিয়া গৃহীত হইতে পারে না। অনেক স্থলে পাঠ-বিষয়ে সন্দেহ রহিয়া যায়। ভবিষ্যতে ভারতের দিগ্,বিদিকে অবস্থিত বিভিন্ন প্রদেশের কোন কোন স্থানে এই গ্রন্থের আরও হস্তাক্ষর-লিখিত পাণ্ড্লিপি আবিষ্ণুত হইতে পারিলে, তৎসাহায্যে পরে ইহার পাঠগুদ্ধি ঘটিতে পারে। বাস্তবিকই এই বিশাল অর্থশান্তের সান্তিনিবেশ পঠন-পাঠন একটি ছুরুহ কাজ এবং ইহার শুদ্ধ ব্যাখ্যাকশ্বও স্থানে স্থানে কণ্টদাধ্য ব্যাপার।

বিগত চল্লিশ বংসরের মধ্যে প্রাচ্য ও প্রতীচ্য দেশের অনেক মনীষাসম্পন্ন ছাত্র, অধ্যাপক ও প্রাক্ত পাঠক এই অর্থশান্তে বর্ণিত ও পর্যালোচিত বিষয়বিশেষ অবলম্বন করিয়া গবেষণা চালাইয়া পণ্ডিতসমাজের পত্রিকাদিতে প্রবন্ধাকারে, কিংবা স্বরচিত পুক্তকপুস্থিকাতে তাঁহাদের গবেষণার ফল প্রকাশ করিয়াছেন। এশ্বলে আমরা সেগুলির বিস্তৃত উল্লেখের প্রয়োজন বোধ করি না।

এই প্রাচীন অর্থশান্তে প্রাপ্ত ভাব ও বিষয়সমূহ পাঠ ও বিবেচনা করিয়া আমাদের মনুে ইহার ভিত্তিস্বরূপ ষেরূপ চিত্র প্রতিফলিত হইয়াছে তাহারই কিঞ্চিৎ আভাস নিম্নে লিপিবদ্ধ হইতেছে। এই অবতরণিকার শেষাংশে আমরা ছইটি তর্কবহুল প্রশ্নের সংক্ষিপ্ত উল্লেখ ও তৎসমাধানের প্রয়াস করিব। প্রথম প্রশ্নটি হইল এই:—প্রীপ্তপূর্ব চতুর্থ শতাবদে ভারতবর্ধের প্রথম সমাট্ মোর্য্যবংশীয় চন্দ্রগুপ্তের প্রধানমন্ত্রী কোটিলা (তদীয় অপর ছই নাম হইল চাণকা ও বিষ্ণুগুপ্ত) নিজেই এই অর্থশান্ত প্রণয়ন করিয়াছেন অথবা তদীয় মতাবলদী পরস্পরাপ্রাপ্ত পরবর্তীকালের কোন শিশু বা শিশুসংঘ ইহা রচনা করিয়াছেন ? বিতীয় প্রশ্নটি হইল এই:—এই গ্রন্থের প্রতিপান্ত বিষয়সমূহ কি কোন রাজ্যবিশেষে প্রচলিত অর্থনীতি, রাজনীতি, ও সমাজনীতির চিত্র, অথবা সে-গুলি যে-কোন কালে ও যে-কোন স্থানে সামাজ্য-প্রতিষ্ঠাবিষয়ে প্রয়োজনীয় আদর্শব্রূপ একটি রীতিনীতির কথা ? সাধারণতঃ কোটিলীয় অর্থশান্তকে লোকেরা রাজনীতি ও রাজ্যশাসনপ্রণালীর গ্রন্থ বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন। দণ্ডনীতি-বিষয়ক গ্রন্থ বলিয়াও এই অর্থশান্ত্র পণ্ডিতসমাজে পরিচিত হয়।

প্রাচীন ভারতে ঐতিহাসিক বিভিন্ন যুগে দেশের বিভিন্ন প্রদেশের সমসময়ে বা ভিন্ন ভিন্ন সময়ে আমরা রাজভন্ন, গণতন্ত্র, জাতি বা বর্গতন্ত্র ও কুলম্বামিক রাজ্যের শাসনপ্রণালী প্রতিষ্ঠিত ও প্রচলিত ছিল বলিয়া জানিতে পারি। কিন্তু, অধিকদংখ্যক রাজ্যেই রাজতম্বশাসনের ব্যবস্থাই নিয়মিত ছিল। রাজ্যের বা রাজশক্তির তত্ত্ববিশ্লেষণে রত প্রাচীন রাজনীতিবিদ্গণ মানব প্রকৃতির দোষ-ভাগের ক্থা কথনই বিশ্বত হইতেন না, কারণ, তাঁহারা ভাবিতেন যে, শীল ও ও সদাচারের ভ্রংশকারী ও অন্যের স্বাধীনতা ও অধিকারে হস্তক্ষেপকারী অসজ্জনের অভাব কথনই সমাজে ছিল না। কাজেই চুইজনের অত্যাচার ও পাপাচরণ নিবারিত রাখিবার জন্ম শাসনতন্ত্রের প্রয়োজনীয়তা সর্বাদাই উপলব্ধ হইত। অন্তথা, জনগণের জীবন ও সম্পত্তির রক্ষণকার্য্য ও তাহাদের শান্ত্রবিহিত বর্ণাশ্রমধর্মের পালনকার্য্য অচল হইয়া যাইতে পারে-–এই ভয় অস্বাভাবিক নহে। প্রাচীন হিন্দু-রাজনীতিতে লোকের জীবন ও সম্পত্তি এবং ধর্মরক্ষারূপ তুইটি প্রধান মূল বিষয়ের চিন্তা, আলোচনা ও নির্ণয় পরিদৃষ্ট হয়। কিন্তু, এই তুইটি বিষয়ই নির্ভর করে রাজার দণ্ডশক্তি-প্রণয়নদারা লোকসমাজের কণ্টক বা দোষকারীকে শান্তি দেওয়ার উপর। প্রজাসমূহের হিত ও স্থবিধানই রাজার প্রধান ও প্রথম কর্ত্তব্য এবং তাঁহার মিতীয় কর্ত্তব্য হইল লোকম্বিতি বা সমাজ- শৃন্ধলা ব্যবস্থিত রাখা। সেই জন্ম রাজাকে 'দণ্ডধর' বলিয়াও অভিহিত করা হয়। বরং তাঁহাকে দণ্ডশক্তির বিগ্রহ বলিয়াও পরিচিত করা যায়। রাজনীতিশাস্ত্রে তাঁহাকে চতুর্বর্লের ও চতুরাশ্রমের 'প্রতিভূ' বলিয়াও বর্ণিত দেখা যায়। কোটিলা, কামন্দক, শুক্র প্রভৃতির রচিত রাজনীতি বা দণ্ডনীতিশাস্ত্রে, মহু, যাক্তবন্ধা, নারদ প্রভৃতির রচিত শ্বতিগ্রন্থে, রামায়ণ ও মহাভারতে এবং পরবর্ত্তী সময়ের মহাকবিগণের রচিত মহাকাব্যাদিতেও রাজদণ্ডবিষয়ে যথেষ্ট আলোচনা পরিদৃষ্ট হয়। রাজ্যকে মাৎশুলায়ের অভিভব হইতে রক্ষা করিতে হইলে, রাজাকে ঘৃষ্টশাসনের শক্তি প্রয়োগ করিতেই হইবে। তাহা না হইলে, জলমধ্যে বৃহদাকার মৎশুসমূহের গ্রাস হইতে যেমন ক্ষু ক্ষু মৎশুসমূহ আত্মরক্ষা করিতে পারে না, তেমন রাজ্যেও রাজ্যশাসনের বিধান যথাযথভাবে প্রচলিত না থাকিলে, সমাজে সবলের কবল হইতে ঘুর্বলকে রক্ষা করা কটিন হইয়া পড়ে। অতএব, ইহা নিশ্চিত যে, রাজার প্রভূশক্তি (কোশদণ্ডজ তেজঃ) ও নিগ্রহশক্তির ভয়েই ঘৃদ্ধতকারীরা ভীত ও ত্রস্ত থাকে, এবং লোকসমাজে শৃন্ধলা ও যোগক্ষম রক্ষিত হয়।

রাজা ও প্রজার মধ্যে যে সামাজিক সংবিৎ বা চুক্তিসম্বন্ধে একটা মতবাদের কথা (The Theory of Social Contract) বর্ত্তমানকালের সমাজনীতি-গ্রন্থসমূহে অবগত হওয়া যায়—তাহা প্রাচীন ভারতের নীতিশাপ্তক্ত পণ্ডিতেরাও বেশ জানিতেন। মান্থয় যথন নীতিবিৎ জন্তবিশেষই বটে, তথন আদিম সমাজে বাসকালেই মানবগণের পরস্পরের ঐকমত্যে একটি রাজনীতিক সংঘ রচনা করা একটা কুম্চিত কার্য্য বলিয়াই গণ্য হইবার যোগ্য। এই সংবিৎ বা চুক্তিতে মান্থবেরা হইটি পক্ষে বিভক্ত হইয়াছিল। এক পক্ষে তাহাদের ছারা নির্ব্বাচিত এক রাজা, অপর পক্ষে প্রজাবর্গ। রাজা প্রজাদিগের নিজ নিজ অধিকার ধর্মতঃ রক্ষা করার প্রতিশ্রুতিতে মাবদ্ধ হইলে পর, প্রজারাও রাজকর্ত্বক লোকরক্ষার ভারগ্রহণম্বীকারের পরিবর্গ্তে তাঁহাকে সমাজম্বিতিরক্ষক-হিসাবে তাহাদের ধাত্ত-হইয়াছিল। কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ও অত্যান্ত রাজনীতিশাক্ষে এইরূপ চুক্তির উল্লেখ ও ফুচনা পরিদৃত্ত হয়।

ভারতের প্রাচীন মর্থশাম্বপ্রণেতারা ও পরবর্ত্তী নীতিশাম্বলেথকেরা রাজ্যকে (State বা Body-Politic-কে) দপ্তপ্রকৃতিক বা সপ্তাঙ্গ বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। কোটিল্য 'প্রকৃতিসম্পদ্'-নামক প্রকরণে (৬৪ অধিঃ ১ম

অধ্যায়ে ) রাজ্যের এই সাতটি প্রকৃতি বা অঙ্গের নাম ও ক্রম এইরূপে লিপিবন্ধ করিয়াছেন, যথা—স্বামী, অমাত্য, জনপদ, হুর্গ, কোষ, দণ্ড ও মিত্র। শব্দকোষকার অমরসিংহ পরে এই নামগুলির অল্পস্কল্ল একটি শাব্দিক ও ক্রমিক পরিবর্ত্তন করিয়াছেন, যথা—( স্বামী স্থলে ) রাজা, অমাত্য, ( মিত্র স্থলে ) স্থর্ৎ, কোষ, (জনপদ স্থলে) রাষ্ট্র, হুর্গ ও (দণ্ড স্থলে) বল। প্রভূশক্তি, মন্ত্রশক্তি ও উৎসাহশক্তিতে শক্তিমান্ স্বামী বা রাজাই হইলেন ভারতীয় প্রাচীন রাজতন্ত্র-শাসনপ্রণালীর কেন্দ্ররূপী সর্বপ্রধান ও প্রথম প্রকৃতি। অমাত্য-নামক দ্বিতীয় প্রকৃতিবারা আমরা কেবল রাজার ধী-সচিব বা মতিসচিব ও কর্মসচিবগণকেই বুঝিব না; রাজতম্বশাসনপ্রণালীতে সর্বপ্রকার শাসনাধিকরণ বা শাসন বিভাগেরও যাঁহারা অধ্যক্ষ ছিলেন তাঁহাদিগকে—এমন কি, অধ্যক্ষগণের নিমন্থ ক্ষুত্র কর্মচারী বা আমলাগণকেও বুঝিব। তৃতীয় প্রকৃতি জনপদ বা রাষ্ট্র-শব্দবারা পুর বা নগর ব্যতিরিক্ত রাজ্যের অবশিষ্ট দেশ ও দেশবাসীদিগকে ব্ঝিতে হইবে। ছর্গ-নামক চতুর্থ প্রকৃতির অর্থ কেবল জলছর্গ, স্থলছর্গ, বনছর্গ, পর্বতহর্গ, মক্ষহর্গ ও প্রান্তহর্গাদি নহে; প্রাচীনকালে ভারতের প্রত্যেক বড় বড় পুর ও নগর প্রাচীর ও পরিথাদিম্বারা স্থরক্ষিত ছিল বলিয়া সেগুলিও তুর্গশব্দবাচ্য ছিল। পঞ্চম প্রকৃতি কোষশব্দদ্বারা রাজভাণ্ডারের রত্নাদি সারবস্তু ও বস্ত্রাদি ফল্ক বা অসার বপ্তকে অর্থাৎ ষতপ্রকার দ্রব্যরাজি সেথানে থাকে সেগুলিকে ব্ঝায়। ষষ্ঠ প্রকৃতি দণ্ড বা বলশনদারা হস্তী, অশ্ব, রথ ও পদাতিক-এই চতুরঙ্গ সেনাকে বুঝিতে হইবে। আবার এই পদাতিক সেনারও অনেকপ্রকার ভেদ আছে, ষথা—মোলবল, ভৃতকবল, শ্রেণীবল, মিত্রবল, অমিত্রবল ও অটবীবল। সপ্তম প্রকৃতি মিত্র বা স্কংশন্টি বাদশরাজমণ্ডলের মধ্যে যাহারা বিজিগীয়ু রীজার সহিত মিত্রতাহতে আবদ্ধ (অর্থাৎ বাঁহারা যুদ্ধাদিতে তাঁহার সহায়ক স্বস্ত্রং বা allies) তাঁহাদিগকে বুঝায়। রাজা স্বয়ং ও তাঁহার মিত্রেরা 'রাজপ্রকৃতি'-সংজ্ঞায় এবং অমাত্যাদি অবশিষ্ট পাঁচটি প্রকৃতি 'দ্রব্যপ্রকৃতি'-সংজ্ঞায়ও অভিহিত হইয়া থাকে। এই সাভটি প্রকৃতি বা অঙ্গ মিলিত হইয়া কার্য্যনির্বাহ করিলে, রাজ্যরূপ শরীর স্থচালিত ও পরিপুষ্ট থাকিতে পারে। ইহারা পরস্পরের উপকার माधन कतित्वहे मभाग् ভाবে कार्याकत्र थाकে। পরস্পরনিরপেক্ষ হইয়া চলিলে, ইহার। রাজ্যের বা State-এর ব্যাধি বা প্রকোপ উৎপাদন করে। এই সপ্তাঙ্গ বা সপ্তপ্রত্নতিক রাজ্যই হইল প্রাচীন হিন্দু রাজনীতিতত্ত্বের সারসংগ্রহ।

কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রের বিষয়ক্ষচ এইভাবে সমৃদ্দিষ্ট হইয়াছে । সমগ্র গ্রন্থথানি

বিনয়াধিকারিক প্রভৃতি নামে পরিচিত পঞ্চদশ অধিকরণে বিভক্ত হইয়াছে। এই অধিকরণগুলিতে অমাত্যোৎপত্তি-প্রভৃতি নামে আখ্যাত ১৮০টি প্রকরণ বা আলোচ্য বিষয় সন্নিহিত আছে। আবার এই প্রকরণগুলি ১৫০টি অধ্যায়ে বিবেচিত ও আলোচিত হইয়াছে। স্বতরাং কোন কোনও অধ্যায়ে একাধিক প্রকরণও নির্ণীত দেখা যায়। সাধারণ দৃষ্টিতে এই গ্রন্থথানি সংস্কৃতভাষার গতে রচিত দৃষ্ট হয় এবং ইহাতে ব্যবহৃত বহুশব্দকে আর্যপ্রয়োগরূপে ধরিতে হয়। প্রত্যেক প্রকরণের আরম্ভাংশে উক্ত কয়েকটি সংক্ষিপ্ত বাক্যকে আমরা গ্রন্থের 'ফত্র'-রূপে ধরিয়া লইতে পারি। কিন্তু, স্বর্গীয় মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত গণপতি শাস্ত্রী প্রকরণের নামরূপে উক্ত সংক্ষিপ্ত শন্ধনিচয়কেই 'সূত্র' বলিয়া ধার্য্য করিতে চাহিয়াছেন। অবশিষ্ট গ্রন্থাংশকে 'ভাষ্য'-রূপে গ্রহণ করিতে হইবে। পালিভাষায় রচিত বৌদ্ধ জাতক-গ্রন্থাবলীতে, গ্লাংশের শেষভাগে ও কথন কথন মধ্যভাগেও, যেমন আলোচিত মতবাদ বা তত্ত্বাদির পরিপোষণার্থক কয়েকটি শ্লোক প্রাপ্ত হওয়া যায়, কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রেও প্রকরণোক্ত বিষয়সমূহের সারসংগ্রহহিসাবে এক বা একাধিক শ্লোক অধ্যায়ান্তে ও কথন কথন অধ্যায় মধ্যেও লিপিবদ্ধ দৃষ্ট হয়। দে-গুলি কৌটিলাের নিজের রচিত পছা. কিংবা তৎপূর্ণবর্ত্তী আচার্য্য-বিশেষের উক্তি তাহা নির্দ্ধারণ করা কঠিন। গ্রন্থাবদানে কোটিলা একটি আর্যা-ল্লোক এইরপ লিখিয়া রাথিয়াছেন, যথা—

> "দ্বী বিপ্রতিপত্তিং বহুণা শাম্বেষু ভাষ্করাণাম্। স্বয়মেব বিষ্ণুগুপুশ্চকার স্থুত্বং চ ভাষ্যং চ॥"

"শাস্ত্রসমূহের (ব্যাখ্যা-বিষয়ে) ভাষ্যকারগণের মধ্যে বহুপ্রকারের বিপ্রতিপত্তি বা বিবাদ লক্ষ্য করিয়া, বিষ্ণুগুপ্ত স্বয়ং স্ত্রন্ত রচনা করিয়াছেন এবং (ইহার) ভাষ্যপ্ত রচনা করিয়াছেন।"

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত রাজতন্ত্র, রাজ্যেরই বিষয়সমূহ অবলম্বন করিয়া লিখিত গ্রন্থ। ইহাতে বর্ণিত রাজতন্ত্র অনিয়ন্ত্রিত রাজার আধিপত্যবিষয়ক নহে; ইহাকে সচিবায়ত্ত রাজ্যই বলা চলে। রাজনীতিবিদ্গণের মতে রাজার প্রথম শ্রেষ্ঠ কর্ত্ব্য হইল প্রজাবর্গের হিত ও হৃথ উৎপাদন করা, এবং তাহাদের জীবন ও সম্পত্তি রক্ষার জন্ত সমাজে বিধি-ব্যবহার বা আইন ও শৃঞ্জলা হ্ব্যবন্থিত করার চেটায় ব্রতী থাকা। রাজার নিজ রাজ্যমধ্যে প্রজাদিগের যোগক্ষেমের দিকে দৃষ্টি রাখিয়া শাসনব্যবন্থা করার পারিভাষিক নাম হইল 'তন্ত্র'। রাজার বিতীয় শ্রেষ্ঠ কর্ত্ব্য হইল আসন্ধ ও দূরবর্ত্তী পররাষ্ট্রসমূহের রাজাদিগের কার্য্যকলাপের উপর তীক্ষ

দৃষ্টি রাখা এবং প্রয়োজন উপস্থিত হইলে তাঁহাদের সহিত যুদ্ধবিগ্রহে প্রবৃত্ত হওয়া। বিজিগীযুর পক্ষে ষাভ্গুণ্যের মধ্যে যে গুণ্টির প্রয়োগের প্রয়োজন হয়, তাহা প্রয়োগ করিয়া বিদেশীয় শত্রু রাজার প্রতি কূটনীতির প্রয়োগের অভিপ্রায়-পোষণরূপ ব্যাপারের নাম হইল 'আবাপ'। তদীয় অর্থশাল্পপ্রণয়ন প্রসঙ্গে কোটিল্য 'তন্ত্র' ও 'আবাপ'—এই উভয়বিধ নীতি শ্বরণ করিয়াই সম্ভবতঃ সেই গ্রন্থের অধিকরণ, প্রকরণ ও অধ্যায়গুলির ক্রম ও সাজকল্পনা করিয়া থাকিবেন। শাস্ত্রের তন্ত্রাংশে তিনি পাঁচটি অধিকরণে ৯৫টি প্রকরণের ও ৯৬টি অধ্যায়ের এবং আবাপাংশে পরবত্তী নয়টি অধিকরণে ৮৪টি প্রকরণের ও ৫৩টি অধ্যায়ের সনিবেশ করিয়াছেন। এক প্রকরণাত্মক পঞ্চদশ অধিকরণে ১টি অধ্যায়ে আলোচ্য বিষয়গুলিকে 'তন্ত্র' ও 'আবাপের' অন্তর্ভুক্ত গণ্য না করিলেও চলিতে পারে। প্রথম পাঁচটি অধিকরণের নাম হইল, যথাক্রমে—(১) 'বিনয়াধিকারিক' ( অর্থাৎ রাজার বিনয় ও বিত্যাদিশিক্ষার প্রস্তাব-যুক্ত ), (২) 'অধাক্ষপ্রচার' ( অর্থাৎ বিভিন্ন শাসনবিভাগের অধ্যক্ষগণের কর্ত্তব্যাদিনির্ণয়-যুক্ত ), (৩) 'ধর্মস্থীয়' ( অর্থাৎ দেওয়ানী-আদালত-দম্পকীয় ব্যবহারস্থাপনা-যুক্ত ), (৪) 'কণ্টক-শোধন' ( অর্থাৎ ফোজদারী-সম্পর্কীয় ব্যবহারে সমাজের কন্টক বা উপদ্রবকারীদিগের শাস্তি বিধি-যুক্ত ) এবং (৫) 'ষোগবৃত্ত' ( অর্থাৎ গৃঢ়পুরুষাদি-কর্তৃক উপাংশুবধাদির প্রয়োগ-যুক্ত )। তৎপরবর্ত্তী নয়টি অধিকরণের নাম হইল যথাক্রমে—(৬) 'মণ্ডলযোনি' ( অর্থাৎ দাদশ-রাজমণ্ডলের চিন্তাবিষয়ক ), (৭) 'বাড্গুণা' ( অর্থাৎ সন্ধিপ্রভৃতি ছয়টি গুণের প্রতিপাদন-যুক্ত ), (৮) 'ব্যসনাধিকারিক' ( অর্থাৎ সপ্তাঙ্গ রাজ্যের বিপদের ও সঙ্কটের আলোচনা-বিষয়ক ), (৯) 'অভিযাম্ভৎকর্ম' ( অর্থাৎ বিজিগীযু রাজার শত্রুর প্রতি অভিযান-সম্বন্ধীয়), (১০) 'সাংগ্রামিক' (অর্থাৎ শংগ্রাম-বিষয়ক আলোচনা-যুক্ত ), (১১) 'সংঘবৃত্ত' ( অর্থাৎ সংঘ বা শ্রেণী প্রভৃতির প্রতি বিজিগীযুর 'মাচরণ-সম্বন্ধীয় ), (১২) 'আবলীয়দ' (অর্থাৎ অবলীয়ান্ বা তুর্বলতর বিজিগীযুর করণীয়-যুক্ত), (১৩) 'হুর্গলস্ভোপায়' ( অর্থাৎ শত্রুহর্গের লাভোপায়-সম্বন্ধীয় ) এবং (১৪) 'ঐপনিষদ' ( অর্থাৎ পরোক্ষভাবে শত্রুজয়ের উপায়-রহস্তের কথা বিষয়ক )। সর্বাশেষের প্রকরণের নাম (১৫) 'তন্ত্রযুক্তি' ( অর্থাৎ অর্থশান্তে প্রচলিত ৩২ প্রকারের ব্যাখ্যান-স্থায়-বিষয়ক )।

অর্থশাম্বে পাঠকবর্গের স্থপ্রবেশের জন্ত, আমরা এন্থলে উপরিউক্ত পঞ্চদশ অধিকরণে অন্তর্ভুক্ত প্রকরণগুলি হইতে কয়েকটি বিশিষ্ট কোটিলীয় মৃলনীতি ও মতবাদের প্রতি তাঁহাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে হুইচ্ছা করি। সর্বাগ্রে আমাদের এই কথা স্মরণ রাখিতে হইবে যে, কোটিলীয় রাজনীতি ব্রাহ্মণাদি চতুর্ব্বর্ণের ও ব্রহ্মচার্য্যাদি চতুরাশ্রমের স্ব-স্থ ধর্মপালনরূপ মূলের উপর প্রতিষ্ঠিত। লোকযাত্রা স্থষ্টভাবে রক্ষা করিতে হইলে রাজাকে প্রকৃত দণ্ডধর হইয়া রাজ্যশাসনে প্রবৃত্ত হইতে হইবে। লোকসমাজে মাৎস্তমায় বা অরাজকতা প্রতিহত করিতে হইলে, রাজাকে যথার্হণণ্ড হইতে হইবে। কোটিল্য মনে করেন যে, বর্ণাশ্রমের ধর্ম পালিত হইলে, ইহা স্বর্গ ও অনস্তফল মোক্ষেরও সাধন হইতে পারে। স্বধর্মের উল্লঙ্ঘন ঘটিলে সমাজে কর্মসংকর ও বর্ণসংকর উপস্থিত হয় ও সমাজ উচ্ছিন্ন হইয়া পড়ে। স্থতরাং তাঁহার মতে রাজার প্রথম কর্ত্তব্য সমস্ত লোককে স্বধর্ম হইতে ভ্রষ্ট না হইতে দেওয়া [ "স্বধর্মঃ স্বর্গায়ানস্ভ্যায় চ। তস্তাতিক্রমে ব্যবস্থিতার্য্যমর্য্যাদঃ ক্বতবর্ণাশ্রমস্থিতি:। ত্র্য্যা হি রক্ষিতো লোকঃ প্রসীদতি ন मीमिक"॥ >18 ]। आञ्चमप्पमयुक नीिक ताका कृप प्रत्मत अधिकाती इहेत्नक, স্বপ্রকার প্রকৃতি সম্পদে সম্পন্ন থাকিতে পারিলে, তিনি সমগ্র পৃথিবী জয় করিয়া চাতৃরস্ত সমাট্ বা সার্কভৌম নরপতি হইতে পারেন [ আত্মবাংস্কলদেশােহপি যুক্ত: প্রকৃতিসম্পদা। নয়জ্ঞ: পৃথিবীং ক্ৎস্লাং জয়তোব ন হীয়তে। ৬।১]। অর্থশান্তের এক স্থানে (১৩।৪) কৌটিল্য পুথিবীজয়ের চারি প্রকার পথ বা মার্গের কথা উল্লেখ করিয়া শেষে বলিয়াছেন যে, উক্ত মার্গচতুইয় অবলখন করিয়া সমগ্র পৃথিবী জয় করার পর বিজিগীয়ু রাজা বর্ণ ও আশ্রমগুলির সঙ্গতরূপে বিভাগ করিয়া স্বধর্মাত্মসারে ইহা ভোগ করিবেন ("জিত্বা চ পৃথিবীং বিভক্তবর্ণাশ্রমাং স্বধর্মেণ ভূঞ্জীত" ১০া৪)। কোটিল্যের মতে রাজর্ষির আদর্শচিত্র এইরূপ হওয়া উচিত, যথা—তাঁহাকে অরিষভ্বর্গত্যাগপূর্বক ইন্দ্রিয়জয়, বিভাবৃদ্ধগণের সহিত সংযোগৰারা নিজের প্রজ্ঞাবিকাশ, চার বা গৃঢ়পুরুষগণের নিয়োগদারা দৃষ্টিকার্য্য উত্থান বা কার্য্যোভমন্বারা প্রজাবর্গের যোগ-ক্ষেম্যাধন, কর্তব্যের অঞ্শাসনদারা প্রজাদিগকে স্বধর্মে স্থাপন, বিভার উপদেশঘারা তাহাদের বিনয়শিক্ষাদান, সমূচিত কার্য্যে অর্থনিয়োগদারা লোকপ্রিয়ত্ব-লাভ ও হিতসাধনদারা নিজ বৃত্তি অবলম্বন করিতে হইবে ('তম্মাদরিষড্বর্গত্যাগেনেন্দ্রিয়জয়ং वृक्षमः (वार्गन প্রজ্ঞाः, চারণে চক্ষ্:, উত্থানেন যোগক্ষেমসাধনং, কার্গ্যামুশাসনেন च्रधर्षाञ्चापनः, विनयः विष्णापरितानन, लाकश्चियञ्चर्यमः रायानन, विष्ठन वृद्धिम्"। ১।৭)। রাজার পকে উত্থানগুণটি (অর্থাৎ সর্বকালে ও সর্বস্থানে কার্য্যদর্শনে ব্যাপৃত থাকা-রূপ গুণটি) ত্রত বলিয়া গণ্য হওয়ার যোগ্য ("রাজ্ঞো হি

ব্রতমুখানম্," ১।১৯); এবং অর্থের (রাজকার্য্যের) মূলই হইল উত্থান এবং অঞ্জান সর্বপ্রকার অনর্থের মূল ("অর্থশু মূল্ম্খানং অনর্থশু বিপর্যায়ঃ, ১।১৯)। কোটিল্য মনে করেন রাজাকে উত্থানগুণবিশিষ্ট লক্ষ্য করিলেই রাজভৃত্যগণ (বা রাজকর্মচারিগণ<sub>,</sub>) নিজেরাও তদ্গুণবিশিষ্ট হইয়া পড়ে। আবার তাহারা রাজাকে প্রমাদযুক্ত ( অর্থাৎ কর্ত্তব্যকার্য্যে অনবধানযুক্ত ) দেখিলে নিজেরাও সঙ্গে সঙ্গে প্রমাদী হইয়া পড়ে এবং রাজকার্য্য নষ্ট করিয়া ফেলে ( "রাজানম্তির্চমানং অন্তির্চন্তে ভৃত্যাঃ, প্রমালভং অর্প্রমালভি কর্মাণি চাস্ম ভক্ষমন্তি," ১।১৯)। এই শান্তে স্পষ্টভাবে ইহাও উক্ত হইয়াছে যে, প্রজার স্থ্য উপস্থিত হইলেই রাজার স্থ্য হয় এবং প্রজার হিত হইলেই তাহা রাজার হিত বলিয়া বিবেচা। যেটা রাজার নিজের প্রিয়, সেটা তাহার হিত নছে, কিন্তু, প্রজাবর্গের যেটা প্রিয়, সেটাই রাজার হিত ("প্রজাম্বথে স্থং রাজ্ঞ: প্রজানাং চ হিতে হিতম্। নাত্মপ্রিয়ং হিতং রাজ্ঞ: প্রজানাং তু প্রিয়ং হিতম্"। ১৷১৯)। রাজা ও প্রজার সম্বন্ধ পিতা ও সম্ভতির সম্বন্ধের গ্রায় ঘনিষ্ঠ হওয়া উচিত। কোটিল্য একস্থানে লিখিয়াছেন, সর্ব্যপ্রকার ভয় উপস্থিত হইলে উপহত বা ভয়পীড়িত প্রজাবর্গকে তিনি পিতার স্থায় রক্ষাত্রগ্রহ প্রদর্শন করিবেন ("সর্বত্ত চোপহতান্ পিতেবাত্ব-গুহ্নীয়াৎ"। ৪।৩)। কোটিল্যের মতে ধর্ম, অর্থ ও কাম-—এই ত্রিবর্গের মধ্যে অর্থই প্রধান, যেহেতু ধর্ম ও কাম অর্থ ঘারাই সাধ্য হয় ("অর্থ এব প্রধান ইতি কৌটিল্য:, অর্থমূলো হি ধর্মকামাবিতি"। ১।৭)। কৌটিল্যের মতে রাজপরিবারস্থ পুরুষ ও স্ত্রীগণের উপরও রাজার সম্পূর্ণ বিশ্বাস রাখা বিধেয় নহে। কোটিলা বলেন যে, রাজপুত্রেরা কর্কটকের সমান-ধর্ম-বিশিষ্ট বলিয়া নিজ জনককে ভক্ষণ করিতে পারে। স্থতরাং রাজাকে জন্মাবধি তাহাদের উপর সজাগ দৃষ্টি রাখিতে হইবে ("জন্মপ্রভৃতি রাজপুত্রান্ রক্ষেৎ। কর্কটসধর্মাণো হি জনকভক্ষা রাজ-পুত্রাঃ"। ১।১৭)। কিন্তু, রাজাকে শ্বরণ রাখিতে হইবে যে, যে রাজকুলে রাজ-পুত্রেরা অবিনীত বা অশিক্ষিত থাকিয়া যায় তাহা শত্রুদারা আক্রান্তমাত্র श्हेरलहे, घूनहर्किक कार्रष्ठेत जाम न्यामाखिर जानिया पर् ("कार्षमिव हि ঘুণজগ্ধং রাজকুলমবিনীতপুত্রমভিযুক্তমাত্রং ভজ্যেত"। ১।১৭)। কাজেই রাজার একমাত্র পুত্রও যদি অবিনীত বা অশিক্ষিত হয়, তাহা হইলে তিনি সেই পুত্রকে কথনই রাজ্যে স্থাপিত করিবেন না ("ন চৈকপুত্রমবিনীতং রাজ্যে স্থাপয়েৎ"---১।১৭)। রাজান্ত:পুরে রাজাকে মহিষীসমীপে দর্শনার্থ উপস্থিত হইতে

হইলে, বিশ্বস্ত বৃদ্ধ পরিচারিকারা দেবীদর্শনে কোন প্রকার বাধা-বিপত্তির সম্ভাবনা নাই বলিয়া রাজাকে জানাইলে পর, তিনি অন্তঃপুরে যাইবেন ("অন্তর্গ হগতঃ স্থবিরন্ত্রীপরিশুদ্ধাং দেবীং পশ্রেৎ"। ১।২০)। এই সম্বন্ধ কৌটিল্য প্রাচীনতর ভারতীয় ইতিহাস হইতে মহিদীগণ-কর্তৃক রাজহত্যার অনেকগুলি দপ্তান্ত উদ্ধৃত করিয়াছেন। নিজের পরিজনের উপর রাজার অবিশ্বাস এত প্রগাঢ় থাকা উচিত যে, সিদ্ধ ও তাপসজনকে দর্শন দিতে হইলেও তিনি বিশ্বস্ত শন্ত্রগ্রাহী রক্ষিপুরুষদারা বেষ্টিত হইয়া তাহা করিবেন এবং সামস্ত ও পরদেশীয় দূতগণের দাক্ষাৎকারসময়ে মন্ত্রিপরিষদ্দারা অধিষ্ঠিত থাকিবেন ( "আপ্ত-শন্ত্রগ্রাহাধিষ্ঠিতং সিরুতাপদং পশ্যেৎ, মন্ত্রিপরিষদা সামন্তদূতম্"। ১।২১)। আপ্ত নাবিকদারা অধিষ্ঠিত জলপোতাদি রাজাকে ব্যবহার করিতে হইবে। তিনি কথনও জনসঙ্গুল প্রদেশে প্রবেশ করিবেন না ("ন পুরুষসম্বাধমবগাহেত"— ১।২১)। এমন কি রাজবৈত্য, ঔষধপাচক ও পেষকাদি পরিচারকবর্গের দারা পূর্বের আম্বাদিত করাইয়া, লাজাকে ঔষধ, মন্ত ও অক্তান্ত পানীয় দ্রব্য ব্যবহার করিতে দিবেন। রন্ধনশালাতে নিযুক্ত মাহানসিক প≉ দ্রবাদি আগে স্বয়ং আস্বাদন করিয়া, এবং অগ্নিতে ও কাকাদি পক্ষীর নিকট বলিরূপে প্রদান করিয়া, পরে সেই সব দ্রব্য বিষশ্তম বলিয়া বিবেচিত হইলে রাজাকে তাহা আহারার্থ প্রদান করিবে। কে'টিলাের মতে রাজা ইল্লানীয় হইয়া প্রজাদিগের প্রতি অনুগ্রহ প্রদর্শন করেন এবং ঘমস্থানীয় হইয়া নিগ্রহ বিধান করেন। অতএব, রাজাকে অবমানিত করা উচিত নহে ("ইন্রথমস্থানমেতদ্ রাজানঃ প্রত্যক্ষ হেডপ্রসাদাঃ। তানবমন্তমানং দৈবোহপি দণ্ডঃ স্পৃশতি। তম্মান্ রার্জানো নাবমন্তব্যাঃ"। ১।১৩)। রাজসমক্ষে রাজপাদোপজীবী অমাত্যাদিগণের কিরূপ বৃত্তি বা ব্যবহার অবলম্বন কর। উচিত তংপ্রসঙ্গে কোটিলা একটি মূল্যবান আভাণক প্রচার করিয়া তাঁহাদিগকে দাবধান করিয়া দিয়াছেন। তিনি বলেন যে, রাজার আশ্রয়লাভকারী উপজীবীদিগের বৃত্তি ৰ্যবহার অগ্নিতে খেলার সায় থিবেচিত হওয়া উচিত। কারণ, রাজরুণ অগ্নি একদেশদাহী নহে। অনুজীবী প্রতিকূল হইলে, তিনি তাহার সপুত্রকল্য সমগ্র পরিবার নষ্ট করিতে পারেন, এবং সে অমুকূল হইলে, তিনি তাহাকে উন্নতও করিতে পারেন ("অগ্নানিব হি সংপ্রোক্তা বৃত্তী রাজোপজীবিনাম্। একদেশং দহেদগ্নি: শরীরং বা পরং গত:। সপুত্রদারং রাজা তু ঘাতয়েণ্ বৰ্দ্ধয়েত বা"। ৫।৪)।

কৌটিল্যের রাজ্যপরিকল্পনায় রাজার স্বেচ্ছাচারিত্বের কোন নিদর্শন প্রকটভাবে পাওয়া যায় না। ইহা একরূপ সচিবায়ত্ত রাজ্তন্ত্র। অমাত্যগুণ-সম্পদের নিপুণভাবে বিচার করিয়া রাজাকে ধী-সচিব ও কর্মসচিব নিযুক্ত করিতে হইবে। কারণ, তিনি বলেন রাজ্যপরিচালনা সহায়সাধ্য ব্যাপার। স্থতরাং অমাত্যনির্ঘাচন ও তাহাদিগের নিয়োগ অবশ্রকর্ত্তব্য ("সহায়সাধ্যং রাজত্বং চক্রমেকং ন বর্ত্ততে"।—১।৭)। ধর্মোপধা, অর্থোপধা, কামোপধা ও ভয়োপধা—এই চারি প্রকার উপধাদ্বারা রাজা সচিবগণের শৌচাশোচ পরীক্ষা করিয়া তাহাদিগকে বিভিন্ন শাসনবিভাগের অধ্যক্ষতা প্রভৃতি কার্য্যে নিযুক্ত করিবেন। মন্ত্রিসংখ্যার বিচার উত্থাপন করিয়া কোটিল্য পূর্ব্বতর আচার্ঘ্যদিগের মত উদ্ধার করিয়া তাহা খণ্ডন করিয়া বলিয়াছেন যে, তাঁহাদের মতে যে, এক হইতে আরম্ভ করিয়া বহুসংখ্যক মন্ত্রীকে লইয়া রাজা গুহুবিষয়ের মন্ত্রণা করিতে পারেন বলা হইয়াছে, সেই মতের সহিত তিনি স্বমত মিলাইতে পারেন না। তাঁহার মতে মন্ত্রীসংখ্যা তিন বা চারিজনের কম বা বেশী হওয়া উচিত নহে। এই সংখ্যা কম হইলেও রাজার কার্যানাশ হইতে পারে, বেশী হইলে বিষয়নির্ণয় অসিদ্ধ হইতে পারে এবং মন্ত্রভেদের সম্ভাবনাও থাকিয়া যায় ( "মন্ত্রভিন্ত্রিভি-শ্চতৃর্ভির্বা সহ মন্ত্রেতে"—১।১৫)। মন্ত্রিপরিষদের সভ্যসংখ্যা কার্যান্ত্র্পানের প্রয়োজনাত্মারে নির্দ্ধারিত হওয়া উচিত, ইহাই কৌটিল্যের মত। মন্ত্রিপরিষদের ধী-সচিব ও কর্মসচিবদিগকে একত্র ডাকাইয়া আত্যয়িক বা শীঘ্রকরণীয় সমস্থা-বহুল বিষয়সমূহের আলোচনা করিয়া সেই সভায় অধিকসংখ্যক সচিবেরা যাহা করিতে মত দিবেন, রাজা তাহা গ্রহণ করিয়া কার্য্য করিবেন। অথবা, অল্প-দংখ্যক সচিবেরাও যাহা কার্যাসিদ্ধিকর উপায় বলিয়া নির্দ্ধারিত করিবেন, রাজা তাহা অবলম্বন করিয়াও কার্য্য করিতে পারেন ("আত্যয়িকে কার্য্যে মন্ত্রিণো মন্ত্রিপরিষদং চাহুয় ক্রয়াৎ। তত্র ষদ্ ভূমিষ্ঠাঃ কার্য্যসিদ্ধিকরং বা ক্রয়ুক্তৎ कुर्यग्रद"--->।>৫ )।

কোটিলীয় রাজনীতিতে গৃঢ়পুরুষ বা গুপ্তচর-নিয়োগের অভ্তপ্রকার ব্যবস্থা পরিদৃষ্ট হয়। প্রাচীন ভারতে শাসনপ্রণালী চালাইবার জন্ম নিযুক্ত অধ্যক্ষাদির কার্য্যের স্থসমাধান গৃঢ়পুরুষদিগের সহায়তা ব্যতিরেকে সম্ভবপর দেখা যায় না। গুপ্তচরগণের নানাপ্রকার শ্রেণীবিভাগ আছে। এছলে তাহার সম্যক্ বিবরণ লিপিবদ্ধ করা সমীচীন হইবে না। সংক্ষেপে এই বলা যায় যে, প্রচ্ছন্নভাবে কার্য্য করিয়া গৃঢ়পুরুষেরা রাজার প্রতি প্রজাবর্গের কিরূপ মনোভাব দৃষ্ট হয়, অমাত্যাদি রাজপাদোপজীবিগণের রাজার প্রতি কতথানি অহুরাগ বা বিরাগ বর্তুমান আছে, কি ভাবে প্রজা-জনের দারা কৃত অপরাধ পরিজ্ঞাত হওয়া যায়, পররাজ্যের কোষবল ও সেনাবল কিরূপে অবগত হওয়া যায়, কি প্রকারে অগ্নি ও বিষাদির প্রয়োগদারা দৃয়জন ও শত্রুর উপাংশুবধ সাধিত হইতে পারে এবং কণ্টকশোধনকার্য্যে ব্যাপৃত বিচারকদিগেরও কি ভাবে সাহায্য হইতে পারে ইত্যাদি বিষয়ে সংবাদ বহন করিয়া ও অক্যান্ত কর্ত্তব্য সম্পাদন করিয়া গুপ্তচরেরা রাজার রাজ্যশাসনকার্য্যের নানারূপ স্থবিধাবিধান করিয়া দিতে পারে। এক-শ্রেণীর গুপ্তচরের নাম ছিল 'উভয়বেতন'। তাহারা স্বপ্রভুর বেতনভোগী হইয়া শক্রুর রাজ্যে অপদর্প বা চরের কার্য্য করিত। কিন্তু, স্বপ্রভূর অন্তমোদনদহকারে তাঁহার স্বার্থের জন্ম তাহারা শত্রু রাজার নিকট হইতেও বেতনগ্রহণপূর্বক তাঁহারও কাজ করিত। পাছে তাহারা বিশ্বাসঘাতক হইয়া পড়িয়া শক্রর কার্য্যেই চিরকাল ব্যাপৃত হয়, এইজন্য তাহাদের ম্বরাজ্যে অম্পস্থিতিকালে তাহাদের স্ত্রীপুত্রেরা নিজ প্রভুর বশে রক্ষিত থাকিত ("গৃহীতপুত্রদারাংশ্চ কুর্য্যাত্বভারবেতনান্"—১।১২ )। কোটিলীয় অর্থশাম্বে দূতপ্রণিধিকেও আমরা চরপ্রণিধির অঙ্গবিশেষ বলিয়া মনে করিতে পারি। গৃঢ়পুরুষদিগকে অপ্রকাশ চর এবং দৃতদিগকে প্রকাশচর বলিয়াও মনে করা যাইতে পারে। দৃতের কার্য্য অত্যন্ত কষ্টকর। সব রাজারাই দৃতম্থ অর্থাৎ তাঁহার। দূতের মৃথ দিয়াই নিজ বক্তব্য অপর রাজাকে শুনাইয়া থাকেন। দূতের বাক্য তাহার নিজ বাক্য নহে, তাহা তাহার প্রভুর প্রযুক্ত বাক্য। স্থতরাং জাতিতে চণ্ডাল হুইলেও দৃত অবধ্য, ব্রাহ্মণজাতীয় দৃতের ত কোন কথাই নাই ("দৃতম্থা বৈ রাজানস্থ চান্সে চ। তত্মাত্ততেষপ্লি শস্ত্রেয় যথোক্তং বক্তারঃ। তেষামন্তা-বদায়িনোহপ্যবধাাঃ, কিমঙ্গ পুনর দ্বাদাাঃ। পরস্তৈতদ্ বাক্যমেষ দৃতধর্ম ইতি"-->।১৬)।

প্রাচীন ভারতের রাজ্যশাসনতয় কি ভাবে পরিচালিত হইত তাহার একটি সম্পূর্ণ ও স্থলর চিত্র অর্থশান্তে লিখিত পাওয়া যায়। ইহা একরপ আধুনিক-কালের আমলাতয়ের মত বলিয়া প্রতীয়মান হয়। শাসনবিভাগগুলি বহু-প্রকারের অধ্যক্ষরারা অধিষ্ঠিত ছিল। বড় বড় মহামাত্য বা মহামাত্র এবং 'উপযুক্ত' (উচ্চকর্মাধ্যক্ষ) ও 'যুক্ত' (নিম্নকর্মচারী), লেখক, গাণনিক বা হিদাবরক্ষক, সমাহর্তা (ধনসংগ্রহকারী মহামাত্র), সমিধাতা (রাজধনাদির নিচয় ও রক্ষণকর্মে ব্যাপৃত মহামাত্র) ইত্যাদির বহুবিধ কর্ত্ব্যকর্মের বর্ণনা এই শাস্তে

নির্দ্ধারিত ও নিণাত পাওয়া যায়। অর্থনীতি-হিসাবে একালের স্থায় প্রাচীন-কালেও গ্রামই ছিল সর্কাপেক্ষা ক্ষুদ্র কেন্দ্র এবং রাজনীতি-হিসাবে ইহাই ছিল স্বায়ত্তশাসনবিষয়ে একরূপ স্বাধীন প্রতিষ্ঠান। নৃতন গ্রামের নিবেশ-সময়ে রাজাকে লক্ষ্য রাখিতে হইত যেন ইহাতে শূদ্রজাতীয় ও কর্যকশ্রেণীভূত জনেরই সংখ্যাধিক্য বিভামান থাকিতে পারে। এইরূপ দশটি গ্রাম লইয়া যে গ্রামসংহতি রচিত হইত তাহার নাম ছিল 'সংগ্রহণ', দ্বিশতগ্রামাত্মক সংহতির নাম ছিল 'কার্কটিক' বা 'থার্কটিক'। এইরূপ চতুঃশতগ্রামাত্মক ও অষ্টশত গ্রামাত্মক সংহতির নাম ছিল যথাক্রমে 'দ্রোণমূথ' ও 'স্থানীয়'। তুর্গ-নামে পরিচিত বড় বড় পুর বা নগর তৎকালে প্রাকারাদিপরিবেষ্টিত ছিল। কৌটিল্যের সময়ে সমস্ত ভূমি বা জমির স্বামিত্ব রাজাতেই পর্যাবদিত ছিল কিনা সেই প্রশ্নের সমাধান সম্পূর্ণভাবে উপলব্ধ হয় না। কিন্তু, তথাপি দেখা যাইতেছে যে, নূতন গ্রামনিবেশসময়ে রাজা ঋত্বিক, আচার্য্য, পুরোহিত ও শ্রোত্রিয়দিগকে সর্ব্যপ্রকার দণ্ড ও কর হইতে রহিত করিয়া ব্রহ্মদেয়-নামক ভূমি দান করিতেন। ফসল উৎপাদনের উপযোগী, 'ক্লডক্ষেত্র'-নামক ক্ষেত্র এক-পুরুষমাত্রের ভোগা করিয়া রাজা করদায়ী কৃষকদিগকে দিতেন এবং যাহারা 'অকতক্ষেত্ৰ'-নামক ক্ষেত্ৰ ( অৰ্গাৎ যে ক্ষেত্ৰ অপ্ৰহত বা থিলভূমি সেগুলি ) ফসল উৎপাদনের উপযোগী করিতে পারিত, সেই সব ক্ষেত্র রাজা রুষকদিগের নিকট হইতে ফিরাইয়া লইতেন না, বরং দেগুলির স্বামিত্ব তাহাদের উপর পর্যাবসিতও হইত বলিয়া মনে হয় ("করদেভাঃ রুতক্ষেত্রাণাৈকপুরুষিকাণি প্রথচ্ছেৎ। অকতানি কর্ত্তা। নাদেয়াৎ"—২।১)। রাজকোষের উন্নত অবস্থার দিকে দৃষ্টি রাখিয়া রাজা ক্বকদিগকে (বীজাদি-দানরূপ) 'অন্তগ্রহ' ও (করম্জির্নপ) 'পরিহার' বিতরণের ব্যবস্থা করিবেন। কোষের উপঘাতক হইলে তিনি এই রীতি বর্জন করিবেন। কারণ, অল্পকোষযুক্ত রাজা পুরবাদী ও জনপদ-বা সীদিগকে গ্রাস করিতে পারেন ("অল্পকোষো হি রাজা পৌরজানপদান গ্রসতে"—২।১)। সম্ভবতঃ জাতিশক্তির বৃদ্ধি ও তাৎকালিক বৌদ্ধর্মের উপদিষ্ট সন্ন্যাস বা প্রভ্রজাগ্রহণনিয়ামর বিরুদ্ধে অভিযান উদ্দেশ্য করিয়াই কোটিলা এইরপ একটি সমাজনীতির প্রচলন করিতে রাজাকে উপদেশ দিয়াছিলেন যে. যে ব্যক্তি নিজ স্ত্রীপুত্রাদির ভরণব্যবস্থা না করিয়া সংসার-ত্যাগী হইবে, কিংবা নিজের স্ত্রীকেও প্রব্রজিতা করিবে, সে ব্যক্তি রাজঘারে দণ্ডার্হ হইবে। তাঁহার মতে কেবল দেই পুরুষই রাজখারের ধর্মস্থ বা বিচারকগণের অমুমতি লইয়া

প্রবজ্যা গ্রহণ করিতে পারিবে, যাহার মৈথ্নশক্তি সম্পূর্ণভাবে লুপ্ত হইয়াছে, অন্তথা তাহার দণ্ড হইবে কারানিবাস ("পুরদারমপ্রতিবিধায় প্রব্রজ্ঞতঃ পূর্বঃ সাহসদণ্ডঃ স্ত্রিয়ঞ্চ প্রব্রাজয়তঃ। লুপ্রব্যবায়ঃ প্রব্রজ্ঞদাপ্টছা ধর্মস্থান্, অন্তথা নিয়ম্যেত"—২।১)। আরও একটি অত্যন্ত বিশ্বয়কর সমাজরীতির প্রবর্তন করিবার জন্য তিনি একটি নিয়মের উপদেশ করিয়াছিলেন যে,—রাজার নৃতনজনপদনিবেশে বানপ্রস্থ ব্যতীত অন্য কোন প্রকার সন্যাসী বা প্রব্রজ্ঞিত থাকিতে পারিবে না; রাজ্যের কল্যাণার্থ রচিত কোন সংঘ ব্যতীত অন্য কোনপ্রকারের ত্র্জাত সংঘ দেখানে স্থান পাইবে না; এবং প্রজার হিতার্থে অন্তর্কৃল কার্য্যকারী দলব্যতীত অন্যপ্রকার অনিইকারক সংবিৎ বা চ্ক্তিতে আবদ্ধ অন্য কোনপ্রকার সংহতদলের উপস্থিতি রাজসরকার সন্থ করিতে পারিবেন না ("বানপ্রস্থাদন্যঃ প্রব্রজ্ঞিতভাবং স্থজাতাদন্যঃ সংঘং, সাম্থায়কাদন্যঃ সময়ান্তবন্ধো বা নাম্য জনপদ্ম্পনিবিশেত"—২।১)। রাজ্যের আয়ব্যয়ের বরাদ্ধভারনিরূপণ সমাহর্ত্তার উপর ন্যস্ত থাকিত।

রাজা অমাত্যসম্পদ্যুক ও উপযুক্ত-নামক অধিকারীদিগের কর্মশক্তি পরীক্ষা করিয়া সর্ব্যকার্য্যে তাহাদিগকে নিযুক্ত করিবেন। কারণ, কার্ণ্যে নিযুক্ত হইলে অধাক্ষণণও নিজ নিজ সভাব দোষগ্রস্ত করিয়া ফেলিতে পারেন, যথা রখ-বাহনাদি কার্য্যে নিশুক্ত হইয়া শাস্ত অশ্বগুলিও বিকারগ্রস্থ হইয়া পড়ে ( "অশ্ব-সধর্মাণো হি মতুষ্যা নিযুক্তাঃ কর্ণস্থ বিকুর্গতে"—২।৯)। যাহাতে রাজকর্ম-চারিগণ রাজার্থ আত্মসাৎ করিতে সমর্গ না হইতে পারেন, সেইজন্ম কৌটিল্য এইরপ নিয়ম সমর্থন করিয়াছেন যে, প্রত্যেকটি অধিকরণ বা কার্য্যদপ্তর এমনভাবে স্থাপিত হওয়া চাই যেন, তাহাতে অনেক মুখ্য বা প্রধান প্রধান কর্মচারী নিযুক্ত থাকিতে পারেন এবং কোন কর্মচারীই এককার্য্যে বহুকালব্যাপী হইয়া নিযুক্ত থাকিতে না পারেন ("বহুমুখ্যমনিতাং চাধিকরণং স্থাপয়েৎ" —২।৯)। অর্থবিভাগে ব্যাপত রাজকর্মচারিগণ গোপনে স্বল্পবিমাণে वाकार्थ जान्नामन ना कविशा शांकिए भारतन ना। को छिना निश्चिशास्त्रन रम, ষেমন কোন ব্যক্তির জিহ্বাতলে মধুবা বিধ স্থিত থাকিলে সে অনিচ্ছায়ও তাহা আস্বাদন না করিয়া থাকিতে পারে না, তেমন রাজার্থবিষয়ে নিযুক্ত কর্ম-চারীরা স্বল্প হইলেভ রাজার্থ আস্বাদন না করিয়া থাকিতে পারে না ("যথা হুনাস্বাদয়িত্বং ন শক্যং জিহ্বাতলন্থং মধু বা বিষং বা। অর্থন্তথা হুর্থচরেণ রাজ্ঞঃ স্বল্লোহপানাস্বাদয়িতুং নং শকাঃ" ॥---২।৯ )।

তুর্গনিবেশকালেও রাজাকে লক্ষ্য রাখিতে হইবে ষে, তুর্গমধ্যে তুর্গস্থ লোকের নিত্যপ্রয়োজনীয় সর্ব্যপ্রকার (তৈলাদি) শ্লেহ, (ধান্তাদি) ক্ষারবস্তু, লবণ, ভৈষজ্য, যবস, তৃণ কাৰ্ষ্ঠ, লোহ, চর্ম্ম, বেণু, অস্ত্রাদিপ্রহরণ, কবচাদি আবরণ প্রভৃতি দ্রব্যগুলি এমন পরিমাণে রাখিতে হইবে যেন তাহারা অনেক বর্ষ পর্য্যন্ত বিনা অভাবে তাহা উপভোগ করিতে পারে এবং পুরাতন দ্রব্যগুলি থরচ করিয়া নৃতনগুলির সঞ্চয় অক্ষ্ণু রাখিতে হইবে ("নবেনানবং শোধয়েৎ"—২।৪)। বড়ই আশ্চর্যোর বিষয় কোটিলীয় শাল্বে উল্লিখিত পাওয়া যায় যে, লবণ রাজপণ্য-পর্যায়ে অন্তর্ভুক্ত ছিল অর্থাৎ লবণের কারবার রাজসরকারের একচেটিয়া ব্যাপার ছিল। আগন্তলবণের অর্থাৎ পরদেশ হইতে আমদানীকৃত লবণের কারবারীকে মৃল্যের ষষ্ঠভাগ রাজকোষে গুৰুৰপে দিতে হইত ("আগদ্ভলবণং ষড়ভাগং দৃত্যাং"—২।১২ )। এন্থলে অর্থনীতিবিষয়ক আরও তুইটি মতবাদের কথা বলা ঘাইতে পারে। নিজদেশের প্রজাবর্গের রক্ষণহেতু রাজা কথনই পরদেশ হইতে স্বরাষ্ট্রপীড়াকর ও অল্পনলবিশিষ্ট ভাণ্ডাদি (বিক্রেয় দ্রব্যাদি) ष्माट्रेंट मित्रन ना ; किन्द প্রয়োজনবোধে তিনি যে সব ধান্সবীজাদি দ্রব্য মহোপকারক এবং যাহা স্বরাষ্ট্রে তুল্ল'ভ তাহা বিনাগুল্কেও স্বরাজ্যে আনাইতে অভ্যতি দিতে পারেন ( "রাষ্ট্রপীড়াকরং ভাণ্ডনুচ্ছিন্দ্যাদফলং চ ষৎ। মহোপকার-মৃচ্ছুল্কং কুর্যাদ বীজং চ তুর্লুভ্ম্" ॥---২।২১)।

কৌটিল্যের সমসাময়িক ভারতে নাগরিক-নামক মহামাত্রের প্র্যবেক্ষণে নগরসমূহে পৌরশাসনবিধি কিরপ প্রচলিত ছিল তাহা পাঠ করিলে ময়ে হন ইহা আধুনিক পৌরপ্রতিষ্ঠানের প্রধান অধিকারীর (Mayor-এর) শাসনবিধির সহিত তুলন। করা যাইতে পারে। নাগরিকের অধীনস্থ স্থানিক ও গোপক্ষামক কর্মচারীরা নগরে বিভ্যমান স্থীপুরুষদিগের জাতি, গোত্র, নাম ও ব্যবসায় সহ তাহাদের সংখ্যা, আয় ও ব্যয়ের কথা হিসাবপুস্তকে নিবদ্ধ রাখিতেন। ধর্মশালার তরাবধায়কেরা নাগরিকের অন্তমতি লইয়া পথিকগণকে সেখানে বাস করিতে দিতে পারিতেন। গৃহস্বামীকে তাহার গৃহ হইতে প্রস্তানকারী ও গৃহে আগমনকারীর নামও নাগরিকের কার্য্যালয়ে জানাইতে হইত। নগরে কোনপ্রকার অগ্রিদাহ উপস্থিত হইলে অগ্রিনির্ব্বাপণের জন্ম গৃহ হইতে সাহায্যার্থ ধাবিত না হইলে, গৃহস্বামী ও তাহার ভাড়াটিয়া রাজদণ্ডে দণ্ডিত হইত। অন্তের গৃহে অগ্রিসন্দীপনকারীকে অপরাধের জন্ম সেই অগ্রিদ্বারাই বধ করিতে হইবে (প্রাদীপিকাংগ্রিনা বধ্যঃ" ২০৬)। রাজা নৃতন দেশ জয় করিলে, যুবরাজের অভিষেক

হইলে, কিংবা রাজপুত্রের জন্ম হইলে, নগরকারাগারে আবদ্ধ লোকদিগের কারাম্ভি আদৃষ্ট হইত। রাজার জন্মনক্ষত্রদিবসে ও পৌর্ণমাসীতেও কারারুদ্ধ বালক, বৃদ্ধ, ব্যাধিগ্রস্ত ও অনাথজনদিগকে কারামৃক্ত করা হইত ( 'অপূর্ব্বদেশা-ধিগমে যুবরাজাভিষেচনে। পুত্রজন্মনি বা মোক্ষো বন্ধনশ্য বিধীয়তে ॥"—২।৩৬; "বন্ধনাগারে চ বালবৃদ্ধব্যাধিতানাথানাং জাতনক্ষত্র-পৌর্ণমাসীযু বিসর্গং" —২।৩৬)।

দেওয়ানী ও ফৌজদারী ব্যবহারবিধি-নিরূপণ জন্ম কোটিলা যে তুইটি অধিকরণ লিপিৰদ্ধ করিয়াছেন তাহা হইতে অবগত হওয়া যায় যে, সর্বপ্রকার ব্যবহার-নির্ণয়ে রাজাই সর্ব্বশ্রেষ্ঠ চরম অধিকারী। প্রথমতঃ দেওয়ানী মোকদমার বিচারকার্য্য পরিচালনা করেন তিন তিন জন ধর্মস্থ-নামক মহামাত্র এবং ফৌজদারী মোকদমার বিচারকার্যা পরিচালনা করেন তিন তিন জন প্রাদেষ্ট্-নামক মহামাত্র। কোটিল্যের অন্ধ্রশাসিত ব্যবহারবিধিতে দ্বাদশবর্ষীয়া স্ত্রী ও ষোড়শবর্ষীয় পুরুষ প্রাপ্তব্যবহার বলিয়া গণ্য। ধর্মস্থ বা বিচারকগণ অবলম্বন না করিয়া বিচারকার্য্য পরিচালনা করিবেন এবং বিচারকালে তাঁহারা সর্বনাই সমদর্শী হইয়া লোকের বিশ্বাসভাজন ও প্রিয় হইতে চেষ্টা করিবেন ("এবং কার্য্যাণি ধর্মস্থা: কুর্যুরচ্ছুলদর্শিন:। সমাঃ দর্কেষু ভাবেষু বিশ্বাস্থা লোকসম্প্রিয়াং"॥—৩।২০)। কৌটিলীয় অর্থশান্ত জনসাধারণের মনে অপরাধীর গ্রহণ বা গ্রেপ্তার-বিষয়ে রাজার সর্ববিজ্ঞতার প্রভাবই খ্যাপন করে। এই প্রসঙ্গে সমাহত্-নামক মহামাত্র. পুরবাদী ও জনপদবাদীদিগের নিকট রাজপ্রভাবেই তাহাদের গ্রেপ্তার হইয়াছে ইহা ঘোষণা করিয়া চৌরাদি অপরাধীদিগকে উপস্থাপিত করিবেন ( "পূর্স্ববচ্চ গৃহীবৈতান সমষ্ঠা প্ররূপয়েৎ। সর্বজ্ঞগ্যাপনং রাজ্ঞ কারয়ন রাষ্ট্রাসিয়"॥ —৪।৫)। কণ্টকশোধন-নামক অধিকরণে কোটিল্য একটি সামাজিক নীতির প্রসর্ত্তন করিয়া উপদেশ করিয়াছেন যে, কোন ফৌজদারী অপরাধের জন্ত ব্রাহ্মণকে উৎপীড়ন কর। বিধেয় হইবে না এবং তাহার প্রতি বধদণ্ডও অবিধেয় হইবে। উৎকট অপরাধে তাহাকে রাজ্য হইতে অভিশপ্ত চিরুদ্বারা ব্রণিত করিয়া নির্বাসিত করা যাইতে পারে, অথবা, আকর-প্রদেশে বা থনিময় প্রদেশে বাস করাইতে পারা যায়। ("সর্দাপরাধেষপীড়নীয়ো ব্রাহ্মণ: ৷ . . . . ব্রাহ্মণ: পাপকর্মাণমূদ্যুক্তাস্কক্লতব্রণম। কুর্ণ্যান্নিবিষয়ং রাজা বাসয়েদাকরেষু বা"॥ —৪।৮)। দণ্ডবিধানে রাজার কোন ত্রুটি লক্ষিত হইলে কৌটিলাের মতে তিনিও

দণ্ডার্হ হইবেন। রাজার উপর বিহিত দণ্ডের ধন জলমধ্যে বরুণদেবের উদ্দেশ্যে প্রদান করিতে হইবে। তাহা হইলে রাজার ব্যতিক্রমজনিত পাপ শোধিত হয়, কারণ, বরুণদেবই মাহুষের উপর অন্নচিত বিচারকারী রাজ্ঞ্গণের শাসক হয়েন ("অদণ্ড্যদণ্ডনে রাজ্ঞো দণ্ডস্তিংশদ্গুণোহস্তুদি।……শাস্তা হি বরুণো রাজ্ঞাং মিথ্যা ব্যাচরতাং নৃষ্"।—৪।১৩)। রাজধর্মের প্রতিষ্ঠার জন্ম প্রয়োজনবোধে রাজা তাঁহার প্রিয় মহামাত্রদিগের উপরও উপাংগুদণ্ডের (গোপনে বধদণ্ডের) প্রয়োগ করিতে পারেন এবং একত্র মিলিত হইয়া যে দব দৃষ্য রাষ্ট্রমুখ্য রাজ্যের উপঘাত ঘটাইতে সমর্থ, তাহাদিগেরও গোপনে বধসাধন করাইতে পারেন; কারণ, প্রকাশভাবে তাহাদিগকে হুন্ধার্য্য হইতে নিবারণ করা সম্ভবপর নাও হইতে পারে ("রাজ্যোপঘাতিনস্ত বল্লভা: সংহতা বা যে মুখ্যা: প্রকাশমশক্যা: প্রতিষেদ্ধ দুয়াঃ, তেষু ধর্মক্রচিকপাংগুদণ্ডং প্রয়ন্ত্রীত''—৫।১)। এমলে ইহাও উল্লিখিত হওয়ার যোগ্য যে, বাক্পাক্ষ্য, স্তেয় বা চোর্য্য, সাহস ও সংগ্রহণ বা বাভিচারের দোষে দোষী সাব্যস্ত হইলে, বানপ্রস্থ, ষতিপ্রভৃতিরাও দণ্ডনীয় হইবেন। কোটিল্য মনে করেন যে, মিথ্যাচারীরা প্রব্রজ্যা বা সন্ন্যাসের অবস্থাতেও রাজনত্তে দণ্ডিত হইবেন, কারণ, ধর্ম যদি অধর্মদারা উপহত হয় এবং রাজদারা উপেক্ষিত হয়, তাহা হইলে ইহা শাসনকারী রাজাকে নষ্ট করিতে পারে ( "প্রব্রজ্যাস্থ বুথাচারান রাজা দণ্ডেন বারয়েৎ। ধর্মো হধর্মোপহতঃ শাস্তারং হন্তাপেক্ষিতঃ ॥---৩।১৬)।

কোটিলাের সময়ে সমাজে দাসপ্রথা প্রচলিত ছিল, কিন্তু, এই প্রথা কতকগুলি সামাজিক নিয়মের মধ্যে আবদ্ধ ছিল। কেহ ফ্রেচ্ছ বা অনার্য্যজাতির কোন লােককে বিক্রেয় করিলে, বা বন্ধক রাথিলে, তাহার দােষ হইত না, কিন্তু আর্য্যগণের দাসভাব সমাজে অচল ছিল ("ফ্রেচ্ছানামদােষঃ প্রজাং বিক্রেতুমাধাতুং বা। ন ত্বোর্য্যন্ত দাসভাবং"—৩।১৩)। যে কোন আর্য্য-ব্যক্তি নিজকে বিক্রয় করিলেও তাহার সস্তান-সন্ততিকে আর্য্য বলিয়া জানিতে হইবে। প্রভূকে নিক্রয়-মূল্য প্রদান করিলে আত্মবিক্রয়ী পুনর্বার আর্যন্ত প্রাপ্ত হইতে পারে। কৌটলীয় অর্থশাল্পে বিধবা-বিবাহ সম্ভবপর ছিল বলিয়া জানা যায়। পতির মরণান্তে বিধবা স্ত্রী থদি পত্যন্তর গ্রহণ করে, তাহা হইলে সে পূর্ব পতির প্রদন্ত সম্পত্তিতে অধিকারিণী হইতে পারিবে না; কিন্তু, সে সংযত জীবন যাপন করিলে তাহা ভোগ করিতে পারিবে ("পতিদায়ং বিন্দমানা জীয়তে। ধর্মকামা ভৃষ্কীত"—৩।২)। তাহার পুত্র থাকিলেও যদি কেন্তা বিধবা স্ত্রী পুনর্বার

পতিগ্রহণ করে, তাহা হইলে সে তাহার স্ত্রীধন হইতে বঞ্চিত হইবে ("পুত্রবতা বিন্দমানা স্ত্রীধনং জীয়েত"—৩।২ )। স্বামী ও স্ত্রীর মধ্যে বিবাহযোগের ভঙ্গসম্বন্ধে এই শাস্ত্রে এরূপ বিধান লিপিবদ্ধ পাওয়া যায় যে, দ্বেষপরায়ণা হইলেও স্ত্রী পতির ইচ্ছার বিক্লন্ধে মোক্ষ বা বিবাহ-বন্ধনত্যাগ লাভ করিতে পারিবে না। সেইরূপ আবার পতি দ্বেষপরায়ণ হইলেও স্ত্রীর অনিচ্ছায় স্ত্রীকে ত্যাগ করিতে পারিবে না। যথন স্বামী ও স্ত্রার পরক্ষারের প্রতি দ্বেষ বা অরাগ সত্য বলিয়া ধার্য্য হইবে, কেবল তথনই মোক্ষ বা ছাড়াছাড়ি বিহিত হইতে পারে ("অমোক্ষ্যা ভর্তুরকামত্য দ্বিষতী ভার্য্যা, ভার্যাশ্রু ভর্তা। পরক্ষারং দ্বেষান্মাক্ষঃ"—১০)।

রাঙ্গকোষে অর্থকুদ্রতা পরিদৃষ্ট হইলে রাজা প্রজাবিশেষের নিকট হইতে অসত্পায়ে ও বলপ্রয়োগে অত্যধিক অথের সংগ্রহ করিতে পারেন ("কোশম-কোশঃ প্রত্যুৎপরার্থকৃদ্রঃ সংগৃহীরাং''---(।২ )। 'প্রণর'-নামক যে অর্থযাচনার কথা অর্থশাম্রে উল্লিখিত পাওয়া যায়, তাহা ব্যবহারী (কারবারী), কর্গক ও ষোনি-পোষক (ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পশুপক্ষিপালক) -গণের নিকট হইতেও সংগ্রহ করিবার বন্দোবস্ত রাজা করিতে পারেন; কিন্তু, এই প্রকার করপ্রণয় বা অতিরিক্ত অর্থসংগ্রহ একবারই মাত্র করা বিধেয়, তুইবার নছে ( "সক্লেব ন ছিঃ) প্রধোজা: '-- ৫।২ )। এই প্রদক্ষে কোটিলা রাজাকে সতর্ক করিয়া দিতেছেন যে, যাহারা দৃয়জন ও অত্যন্ত অধার্মিক, কেবল তাহাদিগের উপরই যেন তিনি রাজকোষ-বর্দ্ধনের জন্ম এইরূপ অতিবিক্ত অর্থসংগ্রহের উপায় প্রয়োগ করেন, ধান্মিক ও নিরপরাধ লোকের উপর নহে। কারণ, থেমন বাগান হইতে পাক। ফল পংগ্রহ করাই বিধেয়, কাচা ফল নহে, তেমন দোষপরিপাকযুক্ত তুই ব্যক্তি হইতেই এমন ধন সংগ্রহ করা উচিত, আদোষ ব্যক্তি হইতে নহে, তাহা করিলে প্রজামধ্যে কোপ উৎপাদিত হইতে পারে এবং তজ্জ্য রাজার নিজের নাশঙ আশন্ধিত হইতে পারে ( "পকং পক্মিবারামাৎ ফলং রাজ্যাদবাপুয়াৎ। আত্র-(फ्ट्रम् छत्रमाभः वर्द्धारः (काशकातकम् ॥''--- ६।२ )।

রাজ্যপ্রতিসন্ধান ও একৈখণ্য-নামক প্রকরণে কোটিল্য পূর্বাচার্য ভারথাজের একটি মত আলোচনা-পূর্বক খণ্ডন করিয়া স্বমতের প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। ভারথাজ মনে করিতেন যে, রাজার মৃহ্যুর পর প্রধান মন্ত্রীর পক্ষে বলপূর্বক সিংহাসন অধিকার করা ভায়ান্তমোদিত বলিয়া সমর্থিত হইতে পারে। তাঁহার মতে অমাত্যই রাজ্যের একমাত্র নিয়ামক এবং রাজার মৃত্যুর পরে তাঁহার নিজ সমক্ষে

ষয়ং উপস্থিত রাজ্যকে তিনি উপেক্ষা করিতে পারেন না। এইরূপ স্থযোগ ত একবারই উপস্থিত হয় (''কাল্চ সরুদভোতি"—৫।৬)। কিন্তু, কোটিল্য লিখিয়াছিলেন যে, অমাত্যকে এইরূপ ব্যবস্থা করিতে হইবে যেন রাজার মৃত্যুর পরে একৈর্য্য (অর্থাৎ একই রাজবংশের আধিপতা) চলিতে থাকে। তিনি আরও মনে করেন যে, অমাত্যের স্বয়ং রাজ্যাধিকাররূপ বিশ্বাসঘাতী কার্য্য রাজ্যে প্রকৃতিকোপ উৎপাদিত করিতে পারে, ইহা ধর্মসঙ্গত কর্মন্ত এবং ইহা একান্তিক কার্য্যাধক নতে। এই প্রসঞ্জে তিনি উপদেশ করিয়াছেন যে, রাজব্যানে প্রধান অমাত্যের কর্জব্য হইবে আত্মন্তলসক্ষর রাজপুত্রকে রাজ্যে স্থাপিত করা। আত্মসম্পন্ন রাজপুত্র না পাওয়া গোলে, কোন ব্যসনাসক্ত ক্মারকেও মহামার্য্যপাসমক্ষে উপস্থাপিত করিয়া প্রধানমন্ত্রী এইরূপ বলিবেন, "এই রাজপুত্রত প্রজ্মাত, বাস্তবিকপক্ষে আপনারাই প্রভ্রমানীয়, বলুন ত এই বিবয়ে কি করঃ ঘাইতে পারে ?" ("রাজপুত্রমাত্রসম্পন্ত রাজ্যে স্থাপয়েং।……প্রতমাত্রেহতঃ, ভবন্ত এব স্বামিনঃ, কথং বা ক্রিয়তামিতি"—৫।৬)।

রাজমণ্ডলের কল্পনায় কেটিলা বিজিগীয় রাজার অনস্তর ব। ব্যবধানবিহীন রাজাকে অরিস্থানীয় বলিয়া মনে করেন। মনে রাথিতে হইবে যে, বিজিগীযুর দন্মুথ দিকের পর-পর নরপতির নাম হইবে (১) মরি, (২) মিত্র, (৩) অরিমিত্র, (০) মিত্র-মিত্র ও (৫) অরিমিত্র-মিত্র এবং পশ্চাতের পর-পর নরপতির নাম হুটুরে (১) পার্ফিগ্রাহ, (২) আক্রন্দ, (৩) পার্ফিগ্রাহাসার ও (৪) আক্রন্দাস্যর। বিজিগীয়ুর বিদিগ্দিকে অবস্থিত অপর ছুই নরপতির পারিভাষিক নাম (১) মধ্যম ও (২) উদাসীন। এই দাদশ রাজপ্রকৃতি লইয়াই বাদশরাজমণ্ডল রচিত হয়। স্থান, বিগ্রহ, যান, আসন, হৈথীভাব ও সমাশ্রয়—এই ছয়টি গুণের উপ্যুক্ত প্রয়োগৰারা প্রত্যেক বিজিগীযুকেই লক্ষ্য রাখিতে হইবে—কেমন করিয়া তিনি ক্ষয়ের অবস্থা হইতে স্থানের এবং স্থানের অবস্থা হইতে বুদ্ধির অবস্থায় উপনীত হইতে পারিবেন। শত্রুর সহিত যুদ্ধ করিতে অবতীর্ণ হইলে প্রত্যেক রাজারই মাত্যক্ষয়, অথব্যয়, অজ্ঞাতপূর্ব্ব দূরবন্তী রাজ্যে অভিযান ও নানাবিধ নৃশংস আচরণ প্রভৃতি অনেকপ্রকার ক্লেশ ও অস্থবিধা ভোগ করিতে হয়। এ২ কারণে, বিগ্রাহের অবস্থা হইতে সন্ধি বা শাস্তির অবস্থাকে প্রত্যেক রাজার অধিকতর উপযোগী বলিয়া মনে করা উচিত। যথন বিগ্রহ অবলম্বন একান্ত অপরিহার্য্য হইয়া উঠিবে তথন কি প্রকার যুদ্ধ শ্রেয়ন্কর বলিয়া বিবেচিত হইবে পে-বিষয়ে কৌটিলা নিজগুরুর একটি মত থণ্ডিত করিয়াছেন। গুরুর মত হইল

—প্রকাশযুদ্ধ অপেক্ষায় মন্ত্রযুদ্ধ (অর্থাৎ সত্রী, রসদ, তীক্ষাদি গৃঢ়পুরুষ্দিগের প্রয়োগদারা শক্রনাশের চেষ্টা) অধিক লাভজনক, কারণ, যুদ্ধ উপস্থিত হইলে উভয়পক্ষেরই লোকক্ষয় ও অর্থব্যয় অনিবার্য্য এবং যুদ্ধে জয়লাভকারীরও সেনাবল ও ধনবল ক্ষ্মপ্রাপ্ত হয় বলিয়া জেতাও পরাজিত-প্রায়ই হইয়া থাকেন। কিন্তু, কোটিলা স্বয়ং মনে করেন যে, যত লোকক্ষয় ও ধনব্যয়ই হউক না কেন, ব্যায়ামযুদ্ধদারাই শত্রুর বিনাশসাধন করা আবশ্যক ( "জিত্বাপি হি ক্ষীণদণ্ডকোশঃ পরাজিতো ভবতীত্যাচার্য্যা:। নেতি কোটিল্য:। স্বমহতাপি ক্ষয়ব্যয়েন শক্র-বিনাশোহভূপগন্তব্যঃ।"—৭।১৩)। তবে বিজিগীয়ু অভিযানে প্রবৃত্ত হইবার পূর্ব্বে নিজের ও শত্রুর বলাবল পরীক্ষা করিয়া যদি নিজকে বলীয়ান্ মনে করেন এবং যুদ্ধে জয়ী হইলে তাঁহার অধিকতর লাভের ও শক্রর অধিকতর ক্ষয়ের সম্ভাবনা আছে এরূপ বুঝেন, তাহা হইলেই তিনি অগ্রহায়ণ, চৈত্র বা জ্যৈষ্ঠমানে শত্রুর বিরুদ্ধে অভিযানে প্রবৃত্ত হইবেন। যুদ্ধে প্রবৃত্ত বিজিগীযুর পক্ষে প্রজাবর্গ হইতে দৈন্ত উত্থাপন করিতে হইলে, ব্রাহ্মণজাতীয় লোক যথাসম্থব ত্যাগ করিতে হইবে, কারণ. ে কটিলোর মতে ব্রাহ্মণের। প্রাণিপাত-দারাই সম্বুট হয়েন এবং সম্বুবতঃ তজ্জ্য তাঁহারা সহজ্বেই শত্রুর হস্তগত হইয়া পড়িতে পারেন। প্রহরণবিছায় স্থানিকত ক্ষত্রিয়দেনাই সর্বোত্তম। কিন্তু, কোটিল্য ইহাও মনে করেন যে, বৈশ্যসেনা ও শৃদ্রসেনাও অধিকতর শ্রেষণের হইতে পারে, যদি তাহাদের মধ্যে অধিকসংখ্যায় সারসমন্ত্রিত প্রবীর পুরুষ থাকে। শক্রবধে উন্নত বিজিগীযুদারা কূট্যুদ্ধ প্রবৃত্তিত করা অত্যায় হয় না—ইহাই কোটিল্যের মত। হৃদ্ধে কৃট উপায় ও নানাপ্রকার ছল ও চাতুরীর প্রয়োগ কৌটিল্যের অভিমত বস্তু। যুদ্ধে আগ্নেয় অন্তর, উপনিষৎ-প্রয়োগ ( অর্থাৎ বিষাদি প্রয়োগ ), উপজাপ ও অসতা উক্তি প্রভৃতির বাবহার অনিবার্য। শক্রবাতের জন্ম মন্ত্রৌষধির প্রয়োগও প্রতিষিদ্ধ বলিয়া কোটিল্য গণনা করেন না। শক্রপ্রযুক্ত অন্তরূপ, অনিষ্টকর ও ক্রুর উপায়ের প্রতীকারের বিধানও এই শান্তে উপদিষ্ট হইয়াছে। নানারূপ কূট উপায়দাশা শত্রুর উদ্বেগ বর্দ্ধন না করিতে পারিলে, মুদ্ধে বিজিগীযুর পক্ষে জয়ের সম্ভাবনা হ্রাস পায়। প্রসঙ্গক্রমে কোটিল্য বলিয়াছেন যে, ধহুদ্ধারীদের নিক্ষিপ্ত বাণ কেবল একজন প্রতিযোদ্ধাকে মারিতেও পারে, না ও মারিতে পারে; কিন্তু, প্রজ্ঞাবান্ ব্যক্তির প্রযুক্ত মতি বা বৃদ্ধি গর্ভস্থিত প্রাণিসমূহেরও নাশ ঘটাইতে সমর্থ হয় ( "একং হল্লার বা হল্লাদিয়ু প্রাক্তেন তু মতিঃ ক্ষিপ্তা হন্যাদ গর্ভগতানপি"॥ ১০।৬ )।— ক্ষিপা ধরুত্মতা।

সংগ্রাম উপস্থিত হইলে রাজা স্বয়ং যোদ্ধপুরুষদিগকে কিরূপ উক্তিঘারা প্রোৎসাহিত করিবেন এবং মন্ত্রী ও পুরোহিতবারাও তাহা করাইবেন, সে-সন্বন্ধে কোটিলীয় অর্থশাস্তে একটি স্থন্দর চিত্র অন্ধিত পাওয়া যায়। বিজিগীষু রাজা তাহাদিগকে বলিবেনু যে, তিনি স্বয়ং এবং যোদ্ধপুরুষেরা উভয়ই তুল্যবেতনভোগী অর্থাৎ উভয়েরই যুদ্ধজয়লন লাভ সমান; এবং বিজ্ঞিত রাজ্যও উভয়ে একদঙ্গে ভোগ করিবেন। মন্ত্রী ও পুরোহিতেরাও তাহাদিগকে বলিবেন যে, যুদ্ধে মৃত শ্রগণের স্বর্গলাভ শাস্ত্রালয়েদিত এবং ভর্ত্পিণ্ডের বিনিময়ে যাহারা যুদ্ধ করিতে অসমত হয় তাহারা নরকগামী হইয়া থাকে (''তুল্যবেতনেহশ্মি, ভবদ্ধিং সহ ভোগ্যমিদং রাজ্যম্……নবং শরাবং দলিলস্ত পূর্ণং স্কুসংস্কৃতং দর্ভকুতোত্তরীয়ম্। তৎ তস্ত মা ভূমরকং চ গচ্ছেদ্ যো ভর্তৃপিণ্ডস্ম ক্লতে ন যুদ্ধেং ॥—১০।৩)। বার্কোপজীবী ও রাজশব্দো-পজীবী কতিপন্ন সংঘ বা শ্রেণীর পরিচন্ন দিয়া কোটিল্য বলিয়াছেন যে, বিজিগীযু এই সংঘগুলি হইতে সেনালাভ করিতে পারিলে, তাহা অক্তান্ত সেনালাভ ও মিত্রলাভের অপেক্ষায় অধিকতর প্রশস্ত বলিয়া বিবেচিত হওয়ার যোগ্য। কারণ, সংহত সংঘগুলি শত্রুগণের অধুয়া হইয়া থাকে ( "সংঘা হি সংহতত্বাদ্ধুয়াঃ পরেষাম্"।-->১।১)।

বিজিগীষ্ রাজা নিজের ও নিজের রাজ্যের এবং তদীয় শক্রর ও তাঁহার রাজ্যের প্রকৃতিবাসনসম্বন্ধে চিন্তা ও বিবেচনা করিবেন। রাজ্যের সাতটি অক্সের বা প্রকৃতিরই বাসন বা বিপদের গুরু-লঘুভাব একান্ত চিন্তনীয়। এই প্রসঙ্গে কোটিল্য এরপ মতবাদ প্রচার করিয়াছেন যে, যে কোন রাজ্যের পক্ষে রাজবাসনই সর্বাপেক্ষা অধিকতর অহিতকর এবং বাহ্নকোপ অপেক্ষা আভ্যন্তর কোপই বেশী ভয়াবহ।

যদি বিজিগীয় স্বয়ং শক্রর অপেক্ষায় অবলীয়ান্ হয়েন, তাহা হইলে তাঁহার হর্তর কি হইবে সে-বিষয়ে কোটিল্য এই মত প্রকাশ করিয়াছেন যে, তাঁহাকে ভারদাজ আচার্য্যের মত অক্সরণ করিয়া বলীয়ান্ শক্রর নিকট বেতসবৃত্তি মবলগনপূর্বক প্রণতিপরায়ণ হইতে হইবে না; অথবা, বিশালাক্ষ আচার্য্যের তোবলঙ্গী হইয়া পরাক্রমকে ক্ষত্রিয়ধর্ম বলিয়া মনে করিয়া, যুদ্ধে অবতীর্ণ হইয়া গাঁহাকে বিনাশের পথে অসগ্রর হইতে হইবে না। বলীয়ান্ শক্রর আক্রমণে মবলীয়ান্ বিজিগীযুকে অধিকতর শক্তিসম্পন্ন অন্ত কোন রাজাকে, কিংবা শক্রর মপ্রধর্ষণীয় কোন হুর্গ, আশ্রয় করিয়া আক্রমণকারীর প্রতি যুদ্ধব্যাপারে প্রবৃত্ত

হইতে হইবে, তাহা না করিলে তাঁহাকে তরণসাধনবিহীন হইয়া সমূদ্রে অবগাহন-কারীর দশা প্রাপ্ত হইতে হইবে ("যুদ্ধ্যমানশ্চাল্পদৈলঃ সমূদ্রমিবাপ্পবোহবগাহমানঃ সীদতি। তদ্ বিশিষ্টং তু রাজানমাশ্রিতো তুর্গমবিষহং বা চেষ্টতে"।—১২।১)।

নবরাজ্যলাভের পরে বিজিগীয় রাজা দেই রাজ্যের প্রজাবর্গের মধ্যে প্রশমন বা শান্তিস্থাপনের ব্যবহা করিবেন। নিজগুণবারা পরাজিত শক্রর দোষ তিনি আচ্ছাদিত করিতে চেষ্টা করিবেন এবং নিজের গুণ বিগুণ বর্দ্ধিত করিবেন। নিজের রাজধর্ম সম্যক্ পালন করিয়া তিনি লব্ধরাজ্যের প্রজাদিগের উপকার সাধনে এতী হইবেন। নবরাজ্যের ক্যত্যপক্ষীয়দিগকে দানাদিলারা প্রসন্ধ রাখিবেন। তিনি নিজের উপকারের প্রতিশ্রুতি কখনই ভঙ্গ করিবেন না। বরং লব্ধরাজ্যের প্রজাদিগের সমান শীল, বেব, ভাষা ও আচার অবলম্বন করিয়া তাহাদেরই পূজ্য দেবতার ও আশ্রমের পূজা করিবেন এবং তাহাদের উৎসব, সমাজ ও বিহার-সহন্দে ভক্তিভাবাপন্ন হইবেন। অক্যাহ ও পরিহারদারা ত্বং প্রজাবর্গের হিতসাধন তাঁহাকে করিতে হুইবে। নবলব্ধ দেশে তিনি অধন্য ব্যবহার বর্তন করিয়া ব্যবহারের প্রবর্তন করিবেন ("চরিত্রমক্রতং ধন্মাং কৃতং চাত্যৈঃ প্রবর্তমেৎ। প্রবর্ত্যের চাধর্ম্যং কৃতং চাত্যে

এই কোটিলীয় অর্থশাস্ত্র নানাবিধ জাতব্য বিথয়ের খনিস্বরূপ গ্রন্থ। রাজনীতি মর্থনীতির ও সমাজনীতিবিধয়ক আরও বছপ্রকার তথ্য ইহাতে সন্নিবিষ্ট আছে। সে-সবের বিস্তৃত বিবলে প্রদান এই অবতরণিকার অসম্থব। উপরি প্রণালোচিত নীতিবাদ-সমূহের পাঠ ও সমালোচনাকারা ছাত্র ও শিক্ষকমণ্ডলী গদি এই অর্থশাম্বের মৃল সংস্কৃত গ্রন্থ ও আমাদের এই বদার্থবাদের সহিত পরিচয় লাভ করেন, তাহা হইলৈ তাঁহার। প্রাচীন ভারতের জনুগণের জানবিষয়ে অকপ্রবিষ্ট ইইতে পারিবেন এবং তাহাদের সভ্যতা ও ক্রিসংক্ষে গ্রেমণায়ও প্রবৃত্ত হইতে পারিবেন – ইহাই অমার বিশ্বাস।

মতঃপর আমর। করেকটি প্রয়োজনীয় প্রগ্ন উত্থাপন করিয়। তথিচারে প্রবৃত্ত হুইতেছি।

মর্থশাম্বে-প্রণয়নের প্রারম্ভে কোটিল্য ভারতবর্ধের স্থপ্রাচীন নীতিশাস্ত্রজ্ঞ প্র নীতিশাস্থ্র-রচয়িতা শুক্র (উশনাঃ) ও বৃহস্পতিকে প্রণাম করিয়াছেন। রাজনীতি ও অর্থনীতিবিং পূর্বাচার্যাদিগের প্রবৃত্তিত ও রচিত অর্থশাস্ত্র-সমূহ অধ্যয়ন করিয়া তিনি দেগুলি হইতে শাস্ত্রীয় বিষয়সমূহ সংক্ষেপ করিয়া নিজনামে প্রচলিত (কোটিলীয়) অর্থশাস্ত্র রচনা করিয়াছেন। তিনি যে স্বয়ং অর্থশাস্ত্রের সম্প্রদায়- প্রবর্ত্তক নহেন, তাহা ইহা হইতেই প্রমাণিত হয়। তদীয় শান্ত্র পাঠ করিলে বুঝা যায় যে, এই অাশাস্ত্রের উৎপত্তি-সদন্ধে একটি ঐতিহ্ব অবশ্রুই আছে এবং ইহা ক্রমবর্দ্ধনশীল রাজনীতি ও অর্থনীতিবিষয়ক বিধান ও সিদ্ধান্তের উপর প্রতিষ্ঠিত। কোটিল্যকর্তৃক উল্লিখিত প্রাক্তন অর্থশাস্ত্র-প্রস্থানসমূহের প্রবর্তৃক-দিগের নামমধ্যে আমরা মহু, বুহস্পতি, উশনাঃ, পরাশর ও আছির নাম পাই; এবং তাঁহাদের মতবাদ ও সিদ্ধান্ত যাহারা স্বীকার ও অবলম্বন করিতেন. তাহাদিগকে ষ্পাক্রমে 'মানব,' 'বার্হম্পত্য', 'ঔশনস', 'পারাশর' ও 'আছীয়' বলিয়া তিনি পরিচিত ও নির্দিষ্ট করিয়াছেন। তন্মধ্যে আমরা প্রথম চারিজন মাচার্য্যকে ভারতীয় রাজনীতি ও শৃতিসংহিতার প্রাচীন রচয়িতা বলিয়া জানিতে পারি। কিন্তু সংস্কৃত-সাহিত্যে আন্তি-নামক নীতিবিদের কথা আমরা খন্য চুবারিপ পাই নাই। এ-স্থলে মনে করাইয়া দেওয়া যাইতে পারে যে, ভারতে প্রতীচ্যদেশীয় আলেকজাণ্ডার-দি-গ্রেটের অভিযানসময়ে তিনি যথন উত্তর-পশ্চিমাঞ্লে অনেকদূর পর্যান্ত পূর্কাদিকে অগ্রসর হইতেছিলেন, তথন তক্ষণীলার রাজার আন্তি-নামক একটি কুমার বর্তমান ছিলেন। এই আন্তি পিতাকে উপদেশ দেন যেন তিনি বিদেশীয় বিজিগীয় আলেকজাণ্ডারের সহিত মিত্রতাদারা মিলিত হইয়া ভারতীয় রাজা পৌরব পোরদপ্রভৃতির বিরুদ্ধে অভিযানে প্রবৃত্ত হয়েন। বদেশের রাজগণের সহিত একত্র মিলিত হইয়া বিদেশীয় আক্রমণকারীর বিরুদ্ধে rভায়মান না হইয়া, তক্ষশীলাধিপ পুত্রের পরামর্শে ভারতগৃহে বিদেশীয় শক্রর প্রবেশের দার উন্মোচন করিয়া দিয়াছিলেন। স্বদেশদ্রোহী রাজপুত্র আন্থির কোন বিশিষ্ট রাজনীতিবিষয়ক মতবাদ গ্রহণ করিয়া নিয়া কোন রাজনীতিবিদেরা ত্রপ্রতিষ্ঠার জন্ম কোন অর্থশাস্ত্রাদি রচনা করিয়াছিলেন কিনা, তাহা স্পষ্ট বুঝা যায় না। তবে এই আন্তির মতবাদ থাঁহারা স্বীকার করিয়া নিয়াছিলেন, সেই-সব মতাগুদরণকারীরাই 'আস্কীয়'-নামে কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে উল্লিখিত হইয়া গাকিবেন, এইরূপ মনে করা অযুক্তিযুক্ত না-ও হইতে পারে। কৌটিল্য তদীয় গ্রন্থের একটিমাত্র স্থলে ( প্রথম অধিকরণের সপ্তদশ অধ্যায়ে ) এই আস্তীয়দিনের মত উদ্ধৃত করিয়াছেন। রাজপুত্রগণ হইতে রাজার আত্মরক্ষাবিষয়ক আলোচনার প্রসঙ্গে, পূর্ববর্ত্তী অক্যাক্ত আচার্য্যগণের মতের উল্লেখ করার সময়ে, কোটিলা শান্তীয়দিগের মতও লিপিবদ্ধ করিয়াছেন। তিনি লিথিয়াছেন যে, আন্তীয়েরা ভাবিতেন, যে, বিনয়শিক্ষার অধীন রাজকুমারকে দত্তি-নামক কোন গৃঢ়পুরুষ বা ওপ্তচর "মৃগয়া, দ্যুত (জুয়াখেলা), মছাপান ও স্ত্রীসঙ্গের প্রলোভন দেখাইবে,"

এবং সে তাঁহাকে "পিতার বিরুদ্ধে আক্রমণ চালাইয়া নিজহস্তে রাজ্য গ্রহণ করার জন্ম উপদেশও দিবে"। আজীয়েরা এইপ্রসঙ্গে ইহাও অবশ্য বলিরাছেন যে, অপর একজন সত্রী (চর) সেই কুমারকে এমন কর্ম করিতে প্রতিষেধ করিবে। কিন্তু, কোটিলা স্বয়ং এইপ্রকার মতের অত্যন্ত বিরোধী ছিলেন, কারণ, তিনি ভাবিতেন যে, অপরুবৃদ্ধি রাজপুত্রকে এইরপ অন্প্রণাদেয় উপদেশ করা দোষতৃষ্ট; পিতৃদ্রোহরূপ অজ্ঞাতপূর্কবিষয়ের অবতারণা করা অন্যায় কার্য্য এবং ইহা কুমারের মনে অসদ্ভাব উৎপাদন করিয়া ভবিশ্বং অনর্থ ঘটাইতে পারে। আজীয়দিগের সম্বন্ধে এইটুকুমাত্র কথা আমরা কোটিলীয় অর্থশান্ত্র হইতে জানিতে পারি।

কোটিল্য অর্থশাস্ত্রে ৫৩ বার 'আচার্যাঃ' এই বহুবচনাস্ত সংস্কৃত শব্দটিবারা অজ্ঞাতনামা নীতিবিৎ কোন পূর্ব্বাচার্য্যকে উদ্দেশ্য করিয়া বিষয়বিশেষসম্বন্ধ তাঁহার মত উদ্ধৃত করিয়াছেন। এই শব্দটিবারা তিনি তাঁহার নিজ শিক্ষাগুরুকেই লক্ষ্য করিয়াছেন বলিয়া আমাদের নিকট প্রতিভাত হয়। কারণ, সংস্কৃত-সাহিত্যে গোরবার্থে এইরূপ বহুবচনাস্ত পদের ব্যবহার দৃষ্ট হইয়া থাকে। এই বহুবচনাস্তক শব্দবারা আমরা "পূর্ব্ববর্ত্তী আচার্য্যগণ" এইরূপ ব্যাখ্যা গ্র হ করিতে ইচ্ছুক হই না, যে-হেতু অজ্ঞাতপরিচয় ও অজ্ঞাত-নামা কোন কোন আচার্য্যকে তিনি ২ বার 'ইত্যেকে' ও ২ বার 'ইত্যেপরে' বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন, এবং যাঁহারা কোন প্রসিদ্ধ আচার্য্যের মতবাদগ্রাহী ছিলেন, তাঁহাদিগকে কোটিল্য 'মানবাঃ' ইত্যাদিরূপ বিশিষ্ট শব্দবারাই পরিচিত করিয়াছেন।

'কোটিল্য নিজ গ্রন্থে অন্ত য়ে-সব পূর্ববাচার্য্যের মতবাদ ও সিদ্ধান্ত উদ্ধাত করিয়াছেন, তাঁহাদের নাম হইল তারবাজ ( = ড্রোণ, পবার উল্লেখ), বিশালাক ( = শিব, ৬বার), পিশুন ( = নারদ, ৬বার), কোণপদম্ব ( = তীম্ম, ৪বার), বাতবাধি ( = উদ্ধাব, ৫বার), বাহুদন্তিপুত্র ( = ইন্দ্র, ১ বার), পরাশর ( ১বার) এবং পারাশর ( = ব্যাস ? ১বার)। অমাত্য-নির্ব্বাচন, রাজপুত্রগণের উপর রাজার তীক্ষ দৃষ্টিপাত, মিথ্যাসাক্ষ্যপ্রদান, রাজ্যপ্রতিসদ্ধান ও কূটবৃদ্ধাদি নানাবিষয়ের আলোচনা প্রদক্ষে তিনি উক্ত পূর্বাচার্যাদিগের নামোল্লেখপুর্বক তাঁহাদের মতবাদ উত্থাপন করিয়া তৎখণ্ডনে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। তাঁহাদের সহিত নিজ্ঞ মতের অনৈক্য বা তাঁহাদের পরস্পরের মধ্যে মতপ্রতেদ প্রদর্শন করিবার উদ্দেশ্যে, তিনি তাঁহাদের নাম ও মতের উল্লেখ করিয়াছেন। অনেক-

च्रांत जांशास्त्र विकास निष्मत मण श्रीणिष्ठी कत्रिवात करा, कोहिना 'जाशासन'-নামক তন্ত্রযুক্তিদারা বিধির জন্ম "ইতি কোটিল্যং" ও নিষেধের জন্ম নেতি কৌটিল্যা:" এইরূপ বাক্য প্রয়োগ করিয়া নিজের নাম নিজেই উল্লেখ করিয়াছেন। ছন্দের প্রয়োজনে একটি শ্লোকে (১١১০) তিনি "এতং কোটিলাদর্শনম"—এইরপ বাক্যদারা নিজের মত পোষণ করিয়ান্তেন; গতাংশের স্থানে স্থানে প্রযুক্ত "ইতি কোটিলাঃ" এইরূপ বাক্য সেখানে ব্যবহার করিতে পারেন নাই। এই প্রসিদ্ধ ও প্রাচীন নীতিশাস্ত্ররচয়িতা আচার্য্যদিগের সম্বন্ধে ষতটুকু ইতিহাস সংগৃহীত হইতে পারে, তাহা আমার পরমবন্ধু মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত শ্রীষোগেব্রুনাথ তর্ক-দাংখ্য-বেদাস্ততীর্থ মহাশয় তদীয় অচিরপ্রকাশিত 'প্রাচীন ভারতের দণ্ড-নীতি'-নামক উচ্চাঙ্গগ্রন্থের প্রথম ও পঞ্চম পরিচ্ছেদে অতি স্থন্দরভাবে লিপিবন্ধ করিয়া রাখিয়াছেন। পাঠকবর্গ সেই গ্রন্থ পাঠ করিলে তাহা সবিশেষ জানিতে পারিবেন। মহাভারতের শান্তিপর্কে (৫৮-৫৯ অধ্যায়) আমরা বৃহস্পতি বিশালাক্ষ, কাব্য (উশনাঃ), মহেন্দ্র (সহস্রাক্ষ), প্রাচেতদ মন্ত্র, ভরদাজ (বৃহস্পতি-পুত্র) ও গৌরশিরা:—এই কয়েকজন রাজশান্ত্র-প্রণেতার নাম এবং বৈশালাক্ষ, বাহুদম্ভক, বার্হস্পত্য প্রভৃতি শাম্বের উল্লেখ পাইয়া থাকি। এই স্থলে বলিয়া রাথা উচিত যে, ভগবান শঙ্করাচার্য্যের শিষ্য বিশ্বরূপাচার্য্যের (তাঁহার অপর নাম স্থবেশবাচার্য) তদীয় 'বালক্রীড়া'-নামক যাজ্ঞবেজ্যস্থতির টীকাতে (১।৩২৮) বুহস্পতি ও বিশালাক্ষের নাম উল্লিখিত পাওয়া যায়। এই টীকাতে তিনি বৈশালাক্ষতন্ত্র ও কোটিলীয় অর্থশাস্ত্র হইতে বচনও উদ্ধৃত করিয়াছেন। ৮মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত গণপতি শাস্ত্রী কৌটলোর অর্থশান্ত্রথানিকে যাজ্ঞবদ্ধা-মৃতির পরবর্ত্তী কালের রচনা বলিয়া যে মতবাদ প্রচার করিতে চাহিয়াছেন—তাহা আমরা সঙ্গত বলিয়া বিবেচনা করি না।

বিষ্ণুগুপ্তাপরনামা পণ্ডিত চাণকা, 'কোটিলা'—এই অপবাদস্চক তৃতীয় নামেও পরিচিত ছিলেন। প্রাক্-কোটিলা নীতিশান্ত্রবিৎ বাহুদন্তিপুত্র, পিশুন, বিশালাক্ষ, বাতব্যাধি ও কোণপদস্ত প্রভৃতি নিন্দনীয় নামসমূহের সহিত কোটিলাের নিজের নামও তুলিত হইতে পারে। নীতিশান্ত্র-প্রবক্তা এই আচার্যাগণের নামের সহিত দৈহিক ও মানসিক বিকলতা ও ব্যাধির বা দােষের আভাস লক্ষিত হয়, এবং তাঁহারা কেন যে সমসাময়িক জনসমাজে এইরূপ নামে আখ্যাত ও পরিচিত হইতেন তাহা সমাগ্ ভাবে ব্রিতে পারা যায় না।

ষে বিপ্লবী দণ্ডনীতিজ্ঞ তীক্ষধী মহামন্ত্ৰী কোটিল্য কুটনীতি ও যুদ্ধাদিবিষয়ের সব প্রশ্নের সমাধানে, প্রয়োজনের অন্থরোধে, ধর্ম ও স্থনীতির পথ ত্যাগ করিয়া নানাবিধ নুশংস ও ভয়াবহ উপায় অবলয়নের উপদেশ করিতে দ্বিধাবোধ করেন নাই, তাঁহার নাম কুটিল-শব্দ হইতে উৎণন্ন 'কোটিল্য' হইতে পারে, ইহাতে সংশয়ের কোন কারণ উপলব্ধ হয় না। তথাপি ৮মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত গণপতি শাস্ত্রী তাঁহাকে 'কুটল'-গোত্রে উৎপন্ন মনে করিয়া তাঁহার চিরপ্রসিদ্ধ কোটিল্য নামটিকে 'কোটল্য'-নামে পরিবর্ত্তিত করিয়া প্রচারের প্রয়াসী হইয়া-ছিলেন। কোটিল্য-শব্দটি সংস্কৃত ভাষায় অপশব্দ নহে; এবং ইহা প্রাচীন পুরাণাদি গ্রন্থে ও মহাকবি দণ্ডী, বাণ, বিশাখদন্ত এবং কামলকের গ্রন্থাদিতেও েতমন ভাবেই পাওয়া গিয়াছে। ভারতের বিভিন্ন প্রদেশে প্রাপ্ত এইসব গ্রন্থের প্রাচীন হস্তলিখিত পাণ্ডুলিপিতে কোটিল্যরূপেই এই নাম পঠিত হয়। মূল্রা-বাক্ষসনামে স্থপরিচিত প্রাচীন নাটকে নাটকপ্রণেতা মহাকবি বিশাখদত্ত একটি লোকে (১৮) চাণক্যের কুটিল বা বক্রবৃদ্ধির কথা শ্বরণ করিয়া তাঁহাকে "ে কাটিলাঃ কুটিলমতিঃ", ইত্যাদিরপ বর্ণনা করিয়াছেন। তাহার কুটিলমতিত্বের এই উল্লেখ হুইতেও বুঝা যায় যে, কোটিলোর সহিত 'কুটিল' শব্দের সমন্ধ একরপ নির্ণীতই আছে। এই স্লোকেই মহাকবি আরও বর্ণনা করিয়াছেন যে, দেই কোটিল্যই বলপ্রয়োগসহকারে নিজের ক্রোধাগ্রিঘারা (বনাগ্রিঘারা দশ্ব বংশের বা বাঁশের মত ) নন্দবংশের ধ্বংস সাধন করিয়াছিলেন। কাজেই অর্থশান্ত-প্রণেতার নাম 'কোটিল্য' হওয়াই যুক্তিসহ ( 'কোটল্য' নহে )।

এথানে এখন একটি তর্ক ও বিবাদসঙ্গল প্রশ্ন উত্থাপিত হইতেছে। প্রশ্নটি এই :— সূত্র ও ভাস্তময় কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্র-নামক গ্রন্থখানি কি মোর্যায়্র্যাল্প কর্মাছিলেন, অথবা, ভারতবর্ষের ইতিহাসের পরবর্ত্তী কোন মুগে কোটিলীয় সিদ্ধান্তনিচয় অবলম্বন করিয়া অপর কোন ব্যক্তিবা মনীবীসংঘ তাহা করিয়াছিলেন গ এই প্রশ্নের সঙ্গে সঙ্গে আমরা বিতীয় প্রকটি প্রশ্নের আলোচনাও কথঞিৎ করিতে ইচ্ছুক। সেই প্রশ্নটি হইল এই মুর্প :— এই অর্থশাস্ত্রে বর্ণিত বিষয়সমূহ কি কোন ঐতিহাসিক রাজ্যে প্রচলিত শাসনপ্রশালীয় চিত্র বলিয়া গৃহীত হইতে পারে, অথবা, সে-গুলিকে বে-কোন কালে প্রচলিত হওয়ার যোগ্য একটি আদর্শ শাসন পদ্ধতির বন্ধ বলিয়া মনে করা বাইতে পারে গ বে মনীবীয়া এই ছইটি প্রশ্নের আলোচনায় প্রমৃত্ব ছইয়া স্কৃত্র মন্তর্ভার করিয়াছেন, তাঁহাদিগকে ছইটি শ্রেণীড়ে বিভক্ত

করিয়া অতি সংক্রেপে তাঁহাদের নাম ও মতসগদ্ধে এইর্প্-একটি বিবরণ দেওয়া যাইতে পারে, যথা—

ইয়াকবি (Jacobi) -ভিন্সেন্ট্ শিথ্—টমান্-মেয়ার (Meyer) -হণ্কিন্স্-মোনাহান্ (শ্রামশাস্ত্রী ও গণপতি শাস্ত্রীর মত-পোষকগণ এবং জয়স্বাল্, নরেক্রনাথ লাহা, নারায়ণচক্র বন্দ্যোপাধ্যায় প্রভৃতিধারা অমুস্ত)—প্রথমপক্ষ

#### বলাম

ইয়োলী ( Jolly )—ভিন্টারনিজ্-কিথ্ ( ডাঃ হেমচন্দ্র রায়-চৌধুরী, ডাঃ অতীন্দ্র বস্থ প্রভৃতিধারা অহুস্তত )—**দ্বিতীয় পক্ষ** 

উক্ত পক্ষরয়ের মধ্যে প্রথম পক্ষের পণ্ডিতেরা চন্দ্রগুপ্রমোর্যোর ( আফুমানিক ৩২৩-২৯৮ খ্রীষ্টপূর্বান্ধ) কূটনীতিবিৎ ব্রাহ্মণজাতীয় প্রধানমন্ত্রী কোটিল্যকেই অর্থশান্তের একমাত্র লেখক ও প্রণেতা বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন। দুষ্টান্তরূপে এথানে টমাদের মত উদ্ধৃত করা যাইতে পারে। করিয়াছেন বে, এই গ্রন্থে কৌটিলা বে চিত্র অন্ধিত করিয়াছেন তাহাতে মৌর্ঘ্য-নামাজ্যে প্রবর্ত্তিত ও প্রচলিত রাজনীতি, অর্থনীতি ও নমাজনীতিরই কথা প্রকাশিত হইয়াছে। ভিন্সেন্ট শ্বিথ ও বিশ্বাস করিতেন যে, অর্থশান্ত গ্রন্থথানি কোটিল্যের নিজেরই রচনা এবং বাস্তবিক ইহা মোর্যায়ুগেরই শুদ্ধ ও প্রাচীন নিদর্শন, এবং তাঁহার মতে ইহার অধিকাংশ ভাগই দেই যুগের খাঁটি রচনা, তবে ইহাতে কোন কোন অংশ পরবর্ত্তী কালে প্রক্ষিপ্ত হইয়া থাকিবে। তিনি জারও লিথিয়াছেন যে, ইহাতে বর্ণিত বিষয়সমৃহ মৌর্যায়াজ্যস্থাপনের অনতি-পূর্ববর্ত্তী কালে সংঘটিত শাসন-তন্ত্রবিষয়ক ঘটনাবলীর প্রতিধ্বনিমাত্র। এম্বলে ইহাও মনে রাখিতে হইবে যে, ষ্ট্রাবো, জাষ্টন, প্লিনী, মিগাসপেনিস প্রভৃতি গ্রীক পুরাবিদ্যাণ সেই কালের যে-সব ঘটনা ও সামাজিক অবস্থার বিবরণ লিপিবদ্ধ করিয়া রাখিনাছেন, দে-সব অর্থশাল্পে বর্ণিত বিষয়ধারা স্থব্যাখ্যাত হইতে পারে; এবং মৌর্যসমাট অশোকের ( আফুমানিক ২৭৩-২৩২ খ্রীষ্টপূর্ব্বান্ধ) প্রস্তরশাসন-শমূহে উল্লিখিত অনেক বিষয়ের অর্থবোধ কোটিলীয় অর্থশান্তের সাহায্যে স্থাম रहेशा थाक--- भववर्जीकारम द्रिष्ठ दाष्ट्रनीिक भाषाधिमधान हेराद वार्था कठिन বলিয়া প্রতিভাত হয়।

বিতীয়পক্ষের বাদিগণ মনে করেন যে, অর্থশাস্ত্রধানি কোটিলীয় সিদ্ধান্তসমূহে শক্ষপ্রত্যয় পরবর্ত্তী যুগের কোন শিশু বা শিশুসংখ্বারা রচিত হট্যা থাকিবে। দুটাস্তবন্ধপ বলা বাইতে পারে যে, কিথ্-সাহেব মনে করিতেন যে, ইহা প্রায় ৩০০ খ্রীষ্টাব্দের রচিত গ্রন্থ এবং ইহার বিষয়বিশেষগুলি কোন বিশিষ্ট রাজ্যের সমাজচিত্র নহে—দেগুলি একটা আদর্শ তন্ত্রের স্বরূপ বলিয়া গৃহীত হওয়ার যোগ্য এবং ইহাতে বর্ণিত ও পর্য্যালোচিত রীতিনীতিগুলি সার্ব্যত্রিক ও সার্ব্ব-কালিক ঘে-কোন রাজতন্ত্রে প্রচলিত হইঘার যোগ্য বলিয়া গৃত হইতে পারে। প্রাচীনতর ধর্মশাস্থগুলির রচনাভঙ্গির সহিত কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রের রচনার ভঙ্গি বেশী মিলে না, বরং ইহা আরও পরবর্ত্তীসময়ে ধর্মশাস্থগুলির ভঙ্গির সহিত বেশী মিলে—এইরূপ যুক্তি প্রদর্শন করিয়া ডাঃ রায়-চৌধুরী ও ডাঃ বস্থ এই গ্রন্থখানি খ্রীষ্টাব্দের প্রথম শতকে রচিত বলিয়া বিবেচনা করেন। মনীষী ইয়োলী এই গ্রন্থে রসায়ন ও থনিবিতার অনেক বিষয় নিহিত আছে দেখিয়া ইহাকে ৪০০ খ্রীষ্টপুর্ব্বাব্দের রচনা বলিয়া গ্রহণ করিতে অনিজ্বক, কারণ, তাঁহার মজে ভারতবাসীরা তত প্রাচীনকালে এই তুই বিত্যায় বিশেষ কোন বৈশারত লাভ করিয়াছিল বলিয়া জানা নাই। এই দ্বিতীয় পক্ষের পণ্ডিতগণ এইরূপও মনে করেন যে, কোটিলীয় অর্থশাস্থ্র যেন একথণ্ড রাজনীতি ও অর্থনীতির দর্শনশাস্থ্র এবং ইহা বাস্তব শাসনসম্বন্ধীয় ঘটনাবলীর কোন বিশিষ্ট বিবরণনিবন্ধক গ্রন্থ নহে।

কিন্তু, মনীষাসম্পন্ন যে-কোন পাঠক এই অর্থশান্ত্রের পাঠকালে অবশ্রুই লক্ষ্য করিবেন যে, ইহার বিষয়গুলি কোন ক্ষুদ্র বা বৃহৎ কোন সামাজ্যবিশেষের বিবরণের উপর নির্ভর করিয়া লিখিত হয় নাই। স্বপ্রভূ চন্দ্রগুপের নায় ষে কোন বিজিগীয়ু রাজা কেমন করিয়া ক্ষ্ম ক্ষম অক্তান্য রাজ্যগুলিকে নিজের রান্ধশক্তির প্রভাবের ভিতর আনয়ন করিয়া, একীকরণদারা এক বিশাল সামান্ধা প্রতিষ্ঠা করিয়া নিজে একরাট হইতে পারিবেন, তাহারই ফুচনার অর্থশান্তথানির বচয়িতা এই গ্রন্থ রচনী করিয়া থাকিবেন। এইরূপ ভাব পোষণ করিয়াই আমরা কোটিলীয় অর্থশান্ত্রের আবাপ-সম্বন্ধীয় অধিকরণ-সমূহের (৬— ১১ অধিকরণ ) বিশেষ মুদ্যাবন্তা স্বীকার করিতে অভিসাষী। স্থতরাং কৌটিলা নিজের প্রতিষ্ঠিত মৌর্যাসামাজ্যের জায় নাতিবৃহৎ সামাজ্যের বিষয় সচনা ক্রিয়াই সম্ভবত: এই গ্রন্থ রচনা করেন নাই। কোটিলোর মত বাজনীতি-বিশারদ মহামন্ত্রীর পক্ষে তৎপূর্ববর্ত্তী যুগের মগধপ্রভৃতি রাজ্যের ইতিহাসের সহিত স্থপরিচিত থাকা একান্তই সম্ভবপর ছিল। তিনি যে মগধের শিশুনাগ-বংশীর নন্দ্দিগের রাজ্যের বিলোপসাধন করিয়া মোধ্য চন্দ্রগুপ্তকে সেখানে সিংহাসনে অধিরা করাইয়াছিলেন এবং নিজের মতিসচিবতার ফলে <sup>বহ</sup> ৰছ কর্মস্চিবের সাহায্যে ও কৃটনীতির প্রয়োগকুশলতায় ক্রমশং ভারতবর্ষে একথানি माञ्राष्म्रात्र পত्তন করিতে প্রয়াসী হইয়। ক্বতকার্য্যও হইয়াছিলেন, তাহা ত সত্য ঐতিহাসিক ঘটনা। ঐষ্টপূর্ব্ব চতুর্ব শতকের লোক হইয়া কৌটিল্যের পক্ষে পঞ্চম ও ষষ্ঠ গ্রীষ্টপূর্বাবের মহামানব বুদ্ধদেবের ( আতুমানিক ৫৬৭—৪৮৭ খ্রীষ্টপূর্বান্ধ) সমসাময়িক, ভারতবর্ষের উত্তরভাগে প্রবর্ত্তিত ছোট ছোট রাজ্যসমূহে প্রচলিত রাজতন্ত্রের সব বিষয়ও জানা সম্ভবপর ছিল। কাজেই বৌদ্ধর্মের প্রবর্তন ও প্রচলনসময়ে অবস্থী, কোসল, বৎস ও মগধ প্রভৃতি রাজ্তম রাজ্যসমূহের ও পালিভাষায় রচিত গ্রন্থসমূহে উল্লিখিত অন্তান্ত গণতান্ত্রিক রাজ্যসমূহের বিষয় অধিকতরভাবে কৌটিল্যের অবগত থাকা আমরা অন্তমান করিয়া নিতে পারি। পালিগ্রন্থসমূহে তাৎকালিক যে ষোড়শ গণতান্ত্রিক রাজ্যের নামতালিকা পাওয়া যায়, তন্মধ্যে (পালি বানান অভুসারে) বক্জী (ও লিচ্ছবী), মল্লা, কম্বোজা, কুরু ও পাঞ্চালা এবং আরও একাদৃশ তাদৃশ গণরাজ্যের নাম পাওয়া গিয়াছে। ইহা বড়ই কৌতৃহলোদীপক বলিয়া বোধ হইতে পারে যে, কোটিলা অর্থশান্তের একাদশ অধিকরণে যে-সব সংঘবদ্ধ গণতান্ত্রিক রাজ্যের নাম করিয়া, তাঁহাদিগের অধ্যতা-গুণের জন্য তল্মধ্য হইতে সৈত্য ও মিত্রলাভের চেষ্টা করিবার উদ্দেশ্যে বিজিগীয়ু রাজাকে উপদেশ করিয়াছেন, দে-দব রাজ্যের সংঘ বা গণের নামমধ্যে আমরা লিচ্ছবিক ( ताक्रधानी छेखत विशादतत्र रिवणानी नगत ), खिक्क ( विराम्ह त्राष्ट्रात 'বজ্জী'-নামে প্রিচিত গণ ), মল্লক ( কুশিনগর ও পাবা-নগরের গণ ). ম**ডেক** (উত্তর-পশ্চিম প্রান্তদেশের সাকল-নগর রাজধানী), কুকুর (উত্তর কাঠিবার ও গুজরাতের আনর্জ-প্রদেশের গণ ), কুরু (রাজধানী প্রাচীন ইক্সপ্রস্থ) ও পাঞ্চাল (কুরুদিগের পূর্ব্বদিকে উত্তর পাঞ্চালের রাজধানী কাম্মিলানগর ও দক্ষিণ পাঞ্চালের রাজধানী কাগ্যকুক্ত )—এই সংঘগুলির নামও পাইয়া থাকি। কৌটিল্য এই সংঘণ্ডলিকে "রাজশন্দোপজীবিনং" অর্থাৎ রাজোপাধিধারী সংঘোপজীবী বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। পালিগ্রন্থ হইতেও জানা যায় যে. विक्री वा बिक्रांकित निक्रिश्तमध्यस्म त्राक्रमस वावहात्र कतिएक । व्यर्थमारस्यत्र এहे মধিকরণে আমরা "বার্জাশাস্থোপজীবী" দংঘ বলিয়া কাম্বোজ ও হ্বরাষ্ট্রদেশের ক্ষরিয়শ্রেণীদিগকেও উল্লিখিত পাইতেছি। এই কাম্বোজগণের দেশ ছিল ভারতবর্ষের উত্তর-পশ্চিম প্রাস্তসমীপে অবস্থিত, এবং হুরাষ্ট্রগণের দেশ ছিল দক্ষিণ-পশ্চিমে কাঠিবার ও গুজরাত দেশের অংশবিশেষ। অর্থশান্ত্রে উপরি উল্লিখিত সংখ্ বা গণ্সমূহের বিবরণ বিচার করিলে, ঐতিহাসিক পণ্ডিত ভিন্সেন্ট

স্মিথের একটি মত অত্যন্ত সমীচীন বলিয়া আমাদের নিকট প্রতিভাত, হয়। এই মনীষী বৌদ্ধযুগের গণতান্ত্রিক রাজ্যাদিসগদ্ধে যে কাল নির্ণয় করিয়াছেন, কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রে আলোচিত অর্থনীতি ও বাজনীতির বিষয়গুলিতে যেন সেই কালেরই ছাপ উপলব্ধ হয়। শ্বিথ-সাহেবের মতে সেই কাল হইল—যথন উদ্ভরে হিমালয় হইতে আরম্ভ করিয়া দক্ষিণে নর্মদা নদী পর্যান্ত বিস্তৃত ও নিয়মিতভাবে ব্যবস্থিত দেশবিভাগে স্ব-স্বপ্রধান বহুসংখ্যক রাজতঃ ও গণতঞ্জের রাজা প্রতিষ্ঠিত ছিল, এবং সেই রাজ্যগুলি বিদেশীয় দূরবন্তী অক্যান্য রাজ্য হইতে বিচ্ছিন্ন থাকিয়া ও পরস্পরের মধ্যে বিবাদ-বিসংবাদ লইয়া ব্যস্ত রহিয়া, কোন স্বপ্রতিষ্ঠিত সাম্রাজ্যের অস্তভূ ক হইতে চাহিত না—সেই কাল। এই ভাব লইয়া আলোচনা করিলে বলিতে হয় যে, পূর্ব্বোল্লিখিত ছই শ্রেণীতে বিভক্ত পণ্ডিতমণ্ডলীর মধ্যে কোটিলীয় অর্থশান্তের উৎপত্তিকাল ও বিষয়সমূহের প্রকৃতিসম্বন্ধে যে বিতর্ক চলিতেছে তাহার সমাধান হইতে পারে এবং খ্রীষ্টপূর্ব্ব চতুর্থ শতকে কৌটিল্য নিজেই এই অর্থশাম্ম রচনা করিয়াছিলেন এরূপ যাঁহাদের মত, সেই মতই সমীচীন; এবং ইহা পরবর্ত্তী কোন যুগে রচিত হইয়া থাকিবে এইরপ মত ততটা সমাদরণীয় হইতে পারে না। মৌর্যাস। আজ্যের প্রতিষ্ঠার পূর্বের, অথবা ( ইহাই অধিকতর সম্ভাবনার কথা ), মগধের সিংহাসনে মোর্যাক্স চক্দ্রপ্তবেক হপ্রতিষ্ঠিত করিয়া তদীয় রাজাটিকে লব্ধপ্রশমন-রীতিতে দৃঢ়সংহত করার পরে, কোটিলা, মহামন্ত্রীর কঠিন ও শ্রমবহুল কর্ত্তব্য হইতে অবসর গ্রহণ করিয়া এই অর্থশান্ত্রথানি প্রণয়ন করিয়া থাকিবেন। এই মতের পরিপোষণার্থ আমরা অর্থশান্ত্রের যে চারিটি শ্লোকে (১।১, ২।১০, ১৫।১ ও গ্রন্থাবসানের শ্লেকে) কোটিল্যকে ( ওরফে বিষ্ণুগুপ্তকে ) স্বর্থশান্ত্রকং বলিয়া উল্লিথিত পাই. দে-কথা ভূলিয়া যাইতে পারি না অতএব, এইরূপ বিশাস অযুক্তিযুক্ত হইবে না বে, চক্ত্ৰপ্ত মোর্য্যের সচিবায়ত্ত সামাজ্যে রাজনীতি, অর্থনীতি ও সমাজ-নীতির যে প্রচলিত অবস্থা মহামন্ত্রিহিদাবে কেটিনা লক্ষ্য করিয়াছিলেন তাহা, এবং চাতৃরন্ত মহীপতিত্বের আকাজ্জী থে-কোন বিজিগীযুর পক্ষে ধেরপ আদর্শ শাসনপ্রণালী ও ব্যবহারপদ্ধতির প্রচলন করা আবশ্রক তাহা-এই উভয়বিং অবস্থা উদ্দেশ্য করিয়াই তিনি নিজরচিত অর্থশাস্ত্রের আলোচ্য ও প্রতিপাগ বিবিধ বিষয়ের অবতারণা ও মীমাংসা লিপিবদ্ধ করিয়া থাকিবেন।

শ্ৰীরাধাগো বিন্দ বসাব

# (नौिंगिय वर्गमास

### [ প্রথম খণ্ড ]

## অধ্যায়-সূচী

### বিনয়াধিকারিক—প্রথম অধিকরণ

| বিষয়  |     | পৃষ্ঠাৰ |
|--|-----|---------|
| প্রথম অধ্যায়—রাজবৃত্তি                                    | ••• | >       |
| দ্বিতীয় অধ্যায়—বিভাসমূদ্দেশ ; আন্বীক্ষিকী-স্থাপনা        | ••• | ٩       |
| তৃতীয় অধ্যায়—বিভাসমূদেশ , ত্রয়ী স্থাপনা                 | ••• | ь       |
| চতুর্থ অধ্যায়—বিভাসমূদ্দেশ ; বার্ছা ও দণ্ডনীতি-স্থাপনা    | ••• | ٥ د     |
| পঞ্চম অধ্যায়—বৃদ্ধ (জ্ঞানবৃদ্ধ ) জনের সহিত সংযোগ          | ••• | ১২      |
| ষষ্ঠ অধ্যায়—ইন্দ্রিয়জয়; কামাদি ছয় রিপুর বর্জ্জন        |     | ১৩      |
| <b>দপ্তম অধ্যা</b> র—ইন্দ্রিয়জয়; রাজর্ষির ব্যবহার        | ••• | 20      |
| অষ্টম অধ্যায়—অমাত্যগণের নিয়োগ                            | ••• | 24      |
| নবম অধ্যায়—মন্ত্রী ও পুরোহিতের নিয়োগ                     | ••• | 76      |
| দশম অধ্যায়—উপধা বা ছলরীতিতে অমাত্যগণের শৌচ ও              |     |         |
| অশ্যেচ-পরীক্ষা   | ••• | ্২১     |
| একাদশ অধ্যায়গৃতৃপুরুষদিগের নিয়োগ                         | ,   | , २8    |
| দাদশ অধ্যায়—গৃঢ়পুরুষদিগের প্রণিধি বা কার্য্যে ব্যাপৃতি   | ••• | ২৬      |
| ত্রয়োদশ অধ্যায়—স্বরাজ্যে কৃত্যপক্ষ ও অকৃত্যপক্ষের রক্ষণ  | .,. | ೨۰      |
| চতৃদিশ অধ্যায়—শত্রুবাজ্যে কৃত্যপক্ষ ও অকৃত্যপক্ষের সংগ্রহ | ••• | ಅಲ      |
| পঞ্চল অধ্যায়—মন্ত্রাধিকার                                 | ••• | ৩৭      |
| বোড়শ অধ্যায়দৃতপ্রণিধি                                    | ••• | 8.7     |
| সপ্তদশ অধ্যায়রাজপুত্রগণ হইতে রাজার আত্মরকা                | ••• | 8¢      |
| অষ্টাদশ অধ্যায়—পিতার প্রতি অবক্ষ রাজপুত্রের ব্যবহার ও     |     |         |
| <b>অবঞ্জ রাজপু</b> ত্রের প্রতি পিতার ব্যবহার               | ••• | ¢ o     |
| উনবিংশ অধ্যায়বাজপ্রণিধি বা রাজার কার্যব্যাপৃততা           | ••• | 65      |

| বিষয়  |     | . পৃষ্ঠান্ক  |
|--|-----|--------------|
| বিংশ অধ্যায়—নিশান্তপ্রণিধি বা দ্বাব্দতবনের অষ্ট্রান               | ••• | ee           |
| একবিংশ অধ্যায়—আত্মরক্ষা   |     | ¢6           |
| অধ্যক্ষপ্রচার—দ্বিতীয় অধিকরণ                                      |     |              |
| थ्रेषम <b>च्या</b> ग्र कन्मनित्यम                                  |     | ৬৩           |
| দ্বিতীয় অধ্যায়—ভূমিচ্ছিত্রবিধান বা কর্গণের অযোগ্য ভূমির ব্যবস্থা |     | ৬৮           |
| তৃতীয় অধ্যায়—তুর্গবিধান  |     | 90           |
| চতুর্থ অধ্যায়—ত্র্গনিবেশ  | •   | 90           |
| পঞ্চম অধ্যায়—সন্নিধাতার নিচয়কর্ম                                 |     | 96           |
| ষষ্ঠ অধ্যায়—সমাহর্তার সম্দয় প্রবর্তন                             |     | ৮১           |
| সপ্তম অধ্যায়—অক্ষপটলে গাণ্নিকদিগের অধিকার                         |     | ৮৭           |
| অষ্টম অধ্যায়—যুক্ত বা অধিকারীদারা অপহত সম্দয়                     |     |              |
| প্রত্যানয়ন  |     | ۶ <b>ج</b>   |
| নবম অধ্যায়—উপযুক্তগণের পরীক্ষা                                    |     | 46           |
| দশম অধ্যায়—শাসন বা রাজলেথের বিধান                                 |     | > >          |
| একাদশ অধ্যায়—কোশে প্রবেশযোগ্য রত্নাদির পরীক্ষা                    |     | ۶۰۶          |
| খাদশ অধ্যায়—আকরকর্মান্তের প্রবর্ত্তন                              |     | 775          |
| ত্রয়োদশ অধ্যায়—অক্ষণালাতে স্বর্ণাধ্যক                            |     | ১২৬          |
| চতৃৰ্দ্দশ অধ্যায়—বিশিখা বা বিপণিতে সৌবৰ্ণিকের ব্যাপার             |     | ১৩৩          |
| পঞ্জশ অধ্যায়—কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষ                                     |     | >80          |
| বোড়শ অধ্যায়—পণ্যাধ্যক্ষ  |     | >89          |
| সপ্তদশ অধ্যায়—কুপ্যাধ্যক্ষ  |     | >0.          |
| অষ্টাদশ অধ্যায়—আয়্ধাগারাধ্যক                                     |     | 565          |
| উনবিংশ অধ্যায়—তুলা ও মানের ( বাটের ) সংশোধন                       | •   | 549          |
| বিংশ অধ্যায়—দেশ ও কালের মান                                       |     | ১৬২          |
| একবিংশ অধ্যায়—গুৰুাধ্যক   |     | ১৬৭          |
| দ্বাবিংশ অধ্যায়—শুকাধ্যক ; শুক্ব্যবহার বা শুক্ব্যবস্থা            |     | 393          |
| ত্রয়োবিংশ অধ্যায়—স্ত্রাধ্যক                                      | ••• | 7,40         |
| মতেরিংশ অস্থায়—সীতাগ্যক বা ক্রম্কির্যাগ্যক                        |     | <b>5 9 5</b> |

| বিষয়   |            | পৃষ্ঠাস্ব   |
|---|------------|-------------|
| পঞ্চবিংশ অধ্যায়-—স্থ্রাধ্যক্ষ  | •••        | 747         |
| ষড্বিংশ অধ্যায়স্নাধ্যক   |            | >>¢         |
| সপ্তবিংশ অধ্যায়—গণিকাধ্যক্ষ  |            | ১৮৭         |
| অষ্টাবিংশ অধ্যায়—নাবধ্যক্ষ   | •••        | <b>५</b> ३२ |
| উ নত্রিংশ অধ্যায়—গোধ্যক্ষ  |            | ७६८         |
| ত্রিংশ অধ্যায়—অখাধাক্ষ   |            | २०५         |
| একত্রিংশ অধ্যায়—হস্তাধ্যক্ষ  | •••        | २०৮         |
| দ্বাত্রিংশ অধ্যায়—হস্তাধ্যক্ষ—হস্তিপ্রচার                                | •••        | 577         |
| ত্রয়োন্তিংশ অধ্যায়—রথাধ্যক্ষ, পত্ত্যধ্যক্ষ ও সেনাপতির কার্য্য           |            | २५६         |
| চতৃন্ধিংশ অধ্যায়—মূদ্রাধ্যক্ষ ও বিবীতাধ্যক্ষ                             | •••        | २ऽ१         |
| পঞ্চত্রিংশ অধ্যায়—সমাহর্ত্তার ব্যাপার এবং গৃহপতি, বৈদেহক ও               |            |             |
| তাপস-বেশধারী গৃঢ়পুরুষগণের কার্য্য  |            | २ऽ৮         |
| ষট্তিংশ অধ্যায়—নাগরিকের কর্ত্তব্য  |            | २२२         |
| ধর্মস্থীয়—তৃতীয় অধিকরণ  |            |             |
| প্রথম অধ্যায়— ব্যবহারস্থাপনা ও বিবাদপদনিবন্ধ                             |            | २२३         |
| দ্বিতীয় অধ্যায়—বিবাহসংযুক্ত; তদন্তর্গত বিবাহধ <b>র্ম, স্ত্রীধন</b> বিধি |            |             |
| ও আধিবেদনিক   |            | २७৫         |
| তৃতীয় অধ্যায়—বিবাহসংযুক্ত ; তদন্তর্গত ৭ শুক্রষা, ভর্ম ( ভরণ             | )          | ,           |
| পারুষ্ণ, দ্বেষ, অতিচার ও উপকার-ব্যবহারের প্রতিয়ে                         | <b>ा</b> स | ์ २8∙       |
| চতুর্থ অধ্যায়—বিবাহসংযুক্ত; তদস্তর্গত নিষ্পতন, পথ্যহুসরণ,                |            |             |
| হু <b>ন্থপ্রবাদ ও দীর্ঘপ্রবাদ</b>   | •••        | ₹88         |
| পঞ্চম অধ্যায়—দায়বিভাগ; তদন্তর্গত দায়ক্রম                               |            | २८৮         |
| ষ <sup>ঠ</sup> অধ্যায়—দায়বিভাগ ; তদন্তর্গত অংশবিভাগ                     |            | २৫२         |
| <b>সপ্তম অধ্যায়—দায়বিভাগ</b> ; তদস্তর্গত পুত্র বিভাগ                    |            | २८६         |
| অটম অধ্যায়—বাস্তক; তদন্তর্গত গৃহবাস্তক                                   |            | 263         |
| নবম অধ্যায়—বাস্তুক; তদস্তর্গত বাস্তবিক্রয়                               | •••        | <b>૨৬</b> 8 |
| দশম অধ্যায়—বাস্তক ; ভদন্তর্গত বিবীত ও ক্ষেত্রপথের হিংসা                  | এবং        |             |
| শময় বা নিয়মের অকরণ  | •••        | २७१         |

#### 211%0

| <b>विवग्न</b>  |       | পৃষ্ঠাৰু    |
|--|-------|-------------|
| একাদশ অধ্যায়খণগ্ৰহণ   |       | <b>૨</b> ૧૨ |
| ৰাদশ অধ্যায়—উপনিধিবিষয়ক                                      | •••   | २ १৮        |
| জয়োদশ অধ্যায়—দাস ও কর্মকরবিষয়ক বিধি                         |       | २৮७         |
| চতুর্দশ অধ্যায়—কর্মকরবিধি ও সভ্য়সম্থান                       |       | ২৮৮         |
| পঞ্চদশ অধ্যায়—বিক্রীত ও ক্রীত দ্রব্যসহদ্ধে অ হুশয় বা বিসংবাদ |       | २३১         |
| বোড়শ অধ্যায়—প্রতিজ্ঞাত দ্রব্যের অদান ; অস্বামিবিক্রয় ও      |       |             |
| <b>স্বস্থামি</b> সম্বন্ধ                                       |       | ২৯৩         |
| সপ্তদশ অধ্যায়—সাহস  | •••   | २२१         |
| অষ্টাদশ অধ্যায়—বাক্পাক্ষ্য                                    | •••   | २२३         |
| উনবিংশ অধ্যায়—দণ্ডপারুষ্য                                     |       | ৩৽২         |
| বিংশ অধ্যায়—দ্যুত ও সমাহবয় এবং প্রকীর্ণ বা পরিশিষ্ট          | • • • | ٥٠٤         |

### বিনয়াধিকারিক—প্রথম অধিকরণ

#### প্রথম অধ্যায়

#### রাজরত্তি

ওঁ শুক্রাচার্য্য ও আচার্য্য বৃহস্পতিকে নমন্ধার দ্বানাইতেছি। পৃথিবীর (মহ্যাব্রতী ভূমির) লাভ ও ইহার (লব্ধ ভূমির) রক্ষণবিষয়ে পূর্ব্বাচার্য্যগণ যতগুলি অর্থশাস্ত্র রচনা করিয়া প্রবর্ত্তিত করিয়া গিয়াছেন, প্রায়শঃ দেগুলি সংগ্রহ করিয়া, এই অর্থশাস্ত্রথানি (আমরা) প্রণয়ন করিয়াছি।

এই অর্থশান্ত্রথানির প্রকরণ (খণ্ড বিষয়-বিভাগের)ও অধিকরণের (বৃহৎ বিষয়-বিভাগের) সংক্ষিপ্ত নির্দ্ধেশ করা হইতেছে।

(এই রলে বলা আবশুক যে, নিম্নলিখিত অধিকরণ ও প্রকরণের যে যে নাম মূলগ্রন্থে দেওরা আছে, তাহার অবিকল বঙ্গামুবাদ এখন সন্নিবেশিত কবা কঠিন। দ্বিতীয় অধ্যায় হইতে আরম্ভ কবিয়া গ্রন্থের শেষ পর্যান্ত সব বিষয়গুলির বিস্তৃত নিরূপণ ও বিষরণ জানা হইয়া গোলে এই সব অধিকরণ ও প্রকরণের নামের সমাক্ ব্যাখ্যা হুদয়ঙ্গম হইবে। কাজেই বাধ্য হইয়া আমাকে এই অধ্যায়ে মূলগ্রন্থের শব্দগুলিকেই অধিকাংশ স্থলে রক্ষা করিয়া সংক্ষিপ্ত ভাবেই বঙ্গামুবাদ লিপিবদ্ধ করিতে হইয়াছে।)

(বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে নিম্নলিথিত ১৮টি প্রকরণ নিরুপিত হইয়াছে, যথা—)

(১) বিভাসমূদেশ (অর্থাৎ আয়ীক্ষিকী, এয়ী, বার্জা ও দণ্ডনীতি এই চারি বিভার নিরূপণ)। (২) বৃদ্ধ-সংযোগ (অর্থাৎ জ্ঞানবৃদ্ধদিগের সহিত বিভার্থী রাজকুমারের সংযোগ)। (৩) ইক্রিয় জয়। (৪) অমাত্যোৎপত্তি (অর্থাৎ অমাত্যবর্গের নিয়োগ)। (৫) মন্ত্রী ও পুরোহিতের নিয়োগ। (৬) উপধা বা ছলরীতিতে অমাত্যগণের শোচ ও অশোচ পরীক্ষা। (৭) গৃঢ়পুক্ষদিগের নিয়োগ। (৮) গৃঢ়পুক্ষদিগের প্রাণিধি বা কার্যে ব্যাপৃতি। (৯) অরাজ্যে কত্যপক্ষ ও অক্ত্যপক্ষের রক্ষণ। (১০) শক্রাজ্যে কৃত্যপক্ষ ও অক্তযপক্ষের সংগ্রহ। (১১) মন্ত্রাধিকার। (১২) দৃতপ্রনিধি (অর্থাৎ দৃত্তের কর্ম সম্প্রধান্ধণ)। (১০) রাজপুরেরক্ষণ (অর্থাৎ রাজপুরেরণ হইতে রাজার আয়রক্ষা)। (১৪) অবক্ষর রাজপুরের (পিতার প্রতি) ব্যবহার। (১৫) অবক্ষর রাজপুরের

কণ্টকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে এই ত্রয়োদশ প্রকরণ বিচারিত ছইয়াছে।

( এখন **যোগর্ন্ত**-নামক পঞ্চম অধিকরণে, অর্থাৎ ষাহাতে সত্রিপ্রভৃতি গৃঢ়-পুরুষদিগের অঞ্ছান বর্ণিত আছে তাহাতে ব্যাখ্যাত ৭টি প্রকরণের নাম নিপিবন্ধ করা হইতেছে, যথা— )

(২) দণ্ড প্রয়োগের বিধি। (২) কোষের অত্যধিক সংগ্রহ। (৩) ভৃত্যদিগের ভরণ। (৪) রাজ্যোপজীবিগণের বৃত্তি বা ব্যবহার। (৫) সময় বা
ব্যবস্থার আচরণ। (৬) রাজ্যের প্রতিসন্ধান (অর্থাৎ রাজব্যসনের উৎপত্তিতে
মন্ত্রীদিগের করণীয়-চিন্তন)। (৭) একৈশ্বর্য্য (অর্থাৎ এক রাজপুত্রের ঐশ্বর্য্যে
স্থাপন)।

যোগবৃদ্ধ নামক পঞ্চম অধিকরণে এই সাতটি প্রকরণ নির্দ্ধারিত হইয়াছে।
(সম্প্রতি মণ্ডলযোনি-নামক ষষ্ঠ অধিকরণে ব্যাখ্যাত ২টি প্রকরণের নাম
প্রদন্ত হইতেছে, যথা— )

- (১) রাজাদি প্রকৃতির সম্পৎ। (২) শম ও ব্যায়াম (বা উল্ভোগ)।
  মণ্ডলখোনি-নামক ষষ্ঠ অধিকরণে এই ছুই প্রকরণ নিরূপিত হইয়াছে।
  (এখন **ষাড্গুণ্য**-নামক সপ্তম অধিকরণে ব্যাখ্যাত ২৯টি প্রকরণের নাম
  সন্ধিবেশিত হইতেছে, যথা—)
- (১) ষাজ্পুণ্যের সংক্ষিপ্ত পরিচয়। (২) ক্ষয়, স্থান, (তদবছতা) ও বৃদ্ধির নিশ্চয় (অর্থাৎ ইহাদের স্বরূপ-নিরূপণ)। (৩) সংশ্রম-বৃত্তি। (৪) সম, হীন ও অধিকের গুণস্থাপনা। (৫) হীনের করণীয় সদ্ধি। (৬) বিগ্রহ করিয়া আসন। (মানেশ অবস্থান)। (৭) সন্ধি করিয়া আসন। (৮) বিগ্রহ করিয়া অভিযান। (১) সন্ধি করিয়া আসন। (৮) বিগ্রহ করিয়া অভিযান। (১) হীনাদির সহিত মিলিত হইয়া একসঙ্গে প্রয়াণ। (১১) যাতব্য ও অমিত্রের প্রতি অভিগ্রহ বা অভিযানের চিন্তন। (১২) প্রকৃতিবর্গের ক্ষয়, লোভ ও বিরাগের হেতু। (১০) সামবায়িক রাজগণের গুরু-লঘু-ভাব বিচার। (১৪) সন্ধিবন্ধ (শত্রু ও বিজিগীয়ু) রাজার প্রয়াণ। (১৫) পরিপণিত, পরিগণিত ও অপস্তে সন্ধি। (১৬) হৈথীভাব-সম্বন্ধীয় সন্ধি ও বিক্রম (বা বিগ্রহ)। (১৭) যাতব্য-রৃত্তি (অর্থাৎ যাতব্য-বিজিগীয়ুর সামবায়িকদিগের প্রতি ও শেষোক্রদিগের য়াতব্যের প্রতি বৃত্তি)। (১৮) অমুগ্রাঞ্ মিত্র-বিশেষগণ। (১৯) মিত্র-সন্ধি, ছিরণ্য-সন্ধি, ভূমি-সন্ধি ও ক্ম-সন্ধি। (২০) পার্কিগ্রাছচিত্ব। (২১) হীনশক্তির পুরুণ। (২২) প্রবেশশক্তর

সহিত বিগ্রহ করিয়া উপরোধের ( ছুর্গপ্রবেশের ) হেতু। (২৩) দণ্ডোপনতের বৃত্তি। (২৪) দণ্ডোপনায়ীর বৃত্তি। (২৫) দন্ধিকর্ম। (২৬) দন্ধিমোক। (২৭) মধ্যমের প্রতি বৃত্তি। (২৮) উনাদীনের প্রতি বৃত্তি। (২২) মণ্ডলের প্রতি বৃত্তি।

ষাজ্গুণ্য-নামক ষষ্ঠ অধিকরণে এই উনত্তিশ প্রকরণ আলোচিত হইয়াছে।
( সম্প্রতি ব্যাসনাধিকারিক-নামক অষ্টম অধিকরণে ৮টি প্রকরণের নাম প্রদত্ত হইতেছে, যথা— )

(২) প্রক্ষতিসমূহের ব্যসনবর্গ। (২) রাজা ও রাজ্যের ব্যসনসম্পকীয় চিস্তা।
(৩) পুরুষব্যসনবর্গ। (৪) পীড়নবর্গ। (৫) স্তম্থনবর্গ ( অর্থাৎ বিদ্নের কথাছারা রাজকার্গ্যের উপরোধের হেতুনির্ণিয়)। (৬) কোষসম্পর্কা ( অর্থাৎ রাজার্থের অপ্রদানের হেতুচিস্তা)। (৭) বল বা সৈন্তোর ব্যসনবর্গ। (৮) মিত্রব্যসনবর্গ। ব্যসনবিকারিক নামক অস্টম অধিকরণে এই আট প্রকরণের ব্যাখ্যা করা হইয়াছে।

( এখন **অভিযান্তৎকর্ম**-নামক নবম অধিকরণে ১২টি প্রকরণের নাম দেওয়া হইতেছে, যথা— )

- (১) শক্তি, দেশ ও কালের বলাবলজ্ঞান। (২) যাত্রার কালনির্ণয়।
  (৩) সেনার উল্ভোজনকাল। (৪) সন্নাহ-গুণ। (৫) প্রতিবলের উত্থাপন।
- (৬) প\*চাংকোপের চিন্তা। (৭) বাহ্ন ও আভ্যন্তর প্রকৃতিবর্গের কোপ প্রতীকার।
- (৮) ক্ষয়, বায় ও লাভের বিচারণ। (৯) বাহ্ন ও আভ্যন্তর আপং।
- ্১০) দৃল্য ও শক্রসংযুক্ত আপং। (১১) অর্থ, অনর্থ ও সংশরসম্বন্ধীয় আপং।
- ্১২) আপৎসমূহের প্রতীকারার্থ উপায়-সমূহের প্রয়োগভেদন্ধনিত সিদ্ধি।

অভিযাক্তৎকর্ম-নামক নবম অধিকরণে এই ছাদশ প্রকরণ নিরূপিত হইয়াছে।

( সম্প্রতি সাংগ্রামিক-নামক দশম অধিকরণে ১৩টি প্রকরণের নাম সন্ধিবেশিত হইতেছে, যথা— )

(১) স্কন্ধাবারনিবেশ। (২) স্কন্ধাবারের প্রয়াণ। (৩) বলবাসন ও অবস্কন্দনকাল হইতে সেনারক্ষণ। (৪) কৃট্যুক্ষের ভেদসমূহ। (৫) স্বসৈন্তের উৎসাহ প্রদান।
৬) শক্রসেনা অপেক্ষায় নিজ সেনার বিশেষ বাবস্থা। (৭) যুদ্ধভূমি।
৮) পদাতি, অশ্ব, রথ ও হস্তীর কর্ম। (১) পক্ষ, কক্ষ ও উরস্তের বলপরিমাণাম্থদারে বাহ-বিভাগ। (১০) সার ও কন্ধ দেনার বিভাগ। (১১) পন্ধি, অশ্ব, রথ

ও হস্তীর যুদ্ধ। (১২) দগুবাৃহ, ভোগবাৃহ, মণ্ডলবাৃহ ও অসংহতবাৃহসমূহের রচনা। (১৩) পুর্বোক্ত বাৃহাদির প্রতিবাৃহ-সংস্থাপন।

সাংগ্রামিক-নামক দশম অধিকরণে এই ত্রেয়োদশ প্রকরণ ব্যাখ্যাত হইয়াছে।
(এখন স্বভ্রবৃত্ত-নামক একাদশ অধিকরণে ২টি প্রকরণ ব্যাখ্যাত হইতেছে,
ষণা—)

- . (১) সম্বভেদের প্রয়োগ। (২) উপাংগুদণ্ড (বা নিগৃঢ়বধ)।
  সম্বাবৃত্ত-নামক একাদশ অধিকরণে এই তুই প্রকরণ সন্ধিবেশিত হইয়াছে।
  (সম্প্রতি আবলীয়াস-নামক ছাদশ অধিকরণে, অর্থাৎ যাহাতে তুর্বলতর
  বিজিপীয় রাজার করণীয় বর্ণিত আছে তাহাতে নটি প্রকরণের নাম প্রদত্ত হইতেছে,
  যথা— )
- (১) দৃতকর্ম। (২) মন্ত্রবৃদ্ধ। (৩) সেনামুখ্যদিগের বধ। (৪) মণ্ডল-প্রোৎসাহন। (৫) শন্ধ, অনি ও বিষের গৃঢ়প্রয়োগ। (৬) বিবধ (ধান্যাদি পর্য্যাহার), আসার (স্বহৃদ্ধল) ও প্রসারের (বনাদি হইতে আহত ইন্ধনাদির) নাশ। (৭) যোগ বা কপটোপায়-ঘারা অতিসন্ধান (প্রবঞ্চন)। (৮) দণ্ডঘারা অতিসন্ধান। (১) একবিজয় (অর্থাৎ অসহায় বিজিগীযুকর্তৃক শত্রুর অভিভব)।

আবলীয়স-নামক ঘাদশ অধিকরণে এই নয় প্রকরণ ব্যাথাত হইয়াছে।
( এখন **তুর্গলভ্যোপায়**-নামক ত্রয়োদশ অধিকরণে ৬টি প্রকরণের নাম দেওয়া হইতেছে, যথা— )

(১) উপুজাপ। (২) যোগ বা গৃঢ়পুরুষ-প্রয়োগ দ্বারা বামন ( জর্থাৎ নিক্ষামণ)। (৩) জপদর্প বা গৃঢ়পুরুষদিগের ( শক্রদেশে ) নিবাদবিধি। (৪) পর্যুপাসনকর্ম ( অর্থাৎ সেনাদ্বারা শক্রত্বর্গের বেষ্টনকার্য্য)। (৫) জবমর্দ্দ ( অর্থাৎ শক্রত্বর্গ গ্রহণ)। (৬) লব্ধপ্রশমন ( বিজিত শক্রত্বর্গাদিতে শাস্তিভাপন)।

তুর্গলস্থোপায়-নামক ত্রয়োদশ অধিকরণে এই ছয় প্রকরণ সন্নিবেশিত আছে।
( সম্প্রতি ঔপনিষদ-নামক চতুর্দশ অধিকরণে এট প্রকরণের নাম বলা হুইতেছে, ষ্থা—)

(১) শক্রঘাতের উপায়-প্রয়োগ। (২) প্রলম্ভন ( অর্থাৎ মন্ত্রোবধীপ্রয়োগছারা শক্রবঞ্চন )। (৩) বসেনার উপর শক্র-প্রযুক্ত উপদাতের প্রতীকার।
উপনিবদ-নামক চতুর্দশ অধিকরণে এই তিন প্রকরণ আলোচিত হইয়াছে।

( সর্ব্বশেষে তক্ত্রযুক্তি-নামক পঞ্চদশ অধিকরণে ১টি প্রকরণের নাম করা হইতেছে, যথা— )

(১) তন্ত্রযুক্তি ( অর্থাৎ এই অর্থশান্তরপ তারে ব্যাথ্যান্তারসমূহ )। তন্ত্রবৃক্তি-নামক পঞ্চদশ প্রকরণে এই এক প্রকরণ ব্যাথ্যাত হইসাছে।

এই শান্তের বিষয়স্চী আছে এইরপ:—ইহাতে ১৫টি অধিকরণ, ১৫০টি অধ্যায় ও ১৮০টি প্রকরণ এবং ৬০০০টি শ্লোক আছে ( অর্থাৎ ইহাতে সরিবেশিত অক্যর-সমূহরার। ৬ হাজার ৩২ অক্ষর-বিশিষ্ট শ্লোক বা প্রস্থের রচনা সম্ভবণর হইতে পারে )।

গ্রহাছল্য বৰ্জন করিয়া কোটিল্য এই শাস্ত্র প্রণয়ন করিয়াছেন; ইহা স্থক্মার-বৃদ্ধি লোকেরাও সহজে বৃদ্ধিতে পারে, এবং ইহাতে এমনভাবে তত্ত্ব (অর্থশান্ত্রের বিষয়), ইহার অর্থ ও অর্থোপযোগী পদ প্রযুক্ত হইয়াছে ষদ্ধারা নিশ্চয়-জ্ঞান-বিষয়ে কোন প্রকার সন্দেহের অবকাশ নাই ॥১॥

কোটিলীয় অর্থশান্দে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে রাজবৃত্তি-নামক প্রথম অধ্যায় সমাপ্ত।

### দ্বিতীয় অধ্যায়

#### ১ম প্রকরণ—বিস্তাসমুদ্দেশ; আধীক্ষিকী—স্থাপনা

বিভা চারি প্রকার—ম্পা, (১) আদীক্ষিকী (অধ্যাত্মবিভা; মতাস্তরে, হেতুবিভা), (২) ত্রয়ী (স্বক্, মজু: ও দাম-বেদা অক বিভা), (৩) বার্জা (কৃষি, পশুপালন ও বাণিজ্যাত্মক বিভা) ও (৪) দণ্ডনীতি (বা রাজনীতি বিভা)।

মানব বা মন্থশিগুদিগের মতে বিভা তিন প্রকার, যথা—ত্রয়ী, বার্দ্তা ও দণ্ডনীতি। কারণ, আয়ীক্ষিকী বিভা (ত্রয়ী বিভার ম্ব -বিচারকারিণী বলিয়া) ত্রমীরই অন্তর্গত বলিয়া ধরা যায়।

বার্ছস্পত্য বা বৃহস্পতি শিশ্বদিগের মতে বিচা হুই প্রকার, যথা—বার্ছা ও দণ্ডনীতি। কারণ, লোকষাত্রাবিৎ (অধাৎ বার্ত্তা ও দণ্ডনীতিতে অভিজ্ঞ) জনের পক্ষে ত্রন্থী আবরণ-মাত্র (অর্থাৎ নাস্তিকভাদি-জনিত নিন্দা হইতে রক্ষা পাওয়ার উপায় মাত্র, তাই ইহার বিভাস্থ-শীকারের প্রয়োজন বড় একটা নাই বিশ্বদেই চলে)।

ঔশনস বা শুক্র, শিক্সদিগের মতে বিখা কেবল একটি মাত্রই হইতে পারে এবং তাহা দণ্ডনীতি। কারণ, এই বিখাতেই অন্যান্ত সব বিখার (যোগক্ষেমরূপ) ক্রিয়াকলাপ প্রতিষ্ঠিত আছে। (অর্থাৎ দণ্ডনীতিই অপর তিন বিখার যোগক্ষেম সাধন করিতে পারে)।

কিন্তু, কোটিল্যের মতে উক্ত চারিটিই বিহ্যা বলিয়া পরিগণিত হইবার যোগ্য। কারণ, সবগুলি বিহ্যারই সেই জন্ম বিহ্যান্থ আছে মনে করিতে হইবে, যে-জন্ম সেই সবগুলি দ্বারাই লোকের ধর্ম ও অর্থের বেদন বা জ্ঞান হয়।

(এখন আদ্বীক্ষিকী বিভার স্বরূপ বলা হইতেছে—) সাংখ্য-শাস্থ্য, যোগ-শাস্থ্য ও লোকায়ত-শাস্থ্য—এই তিনটি শাস্থই আদ্বীক্ষিকীর অন্তর্ভুক্ত। এয়ীতে ধর্ম ও অধর্মই প্রধানতঃ প্রতিপাদিত আছে। বার্ত্তাতে অর্থ ও অনর্থ প্রতিপাদিত আছে। এবং দণ্ডনীতিতে নয় ও অপনয় প্রতিপাদিত আছে। এয়ী প্রভৃতি তিনটি বিভার বল (প্রাধান্ত) ও অবল (অপ্রাধান্ত) হেতুঘারা নির্দ্ধারণ করে বলিয়া আদ্বীক্ষিকী-বিভা লোকের উপকার করিয়া থাকে । ইহা বাসন ও অত্যাদয়ের উৎপত্তিতে (মাসুষের) বৃদ্ধিকে অবিচলিত রাথে, এবং ইহা (মাসুষের) প্রজ্ঞা (জ্ঞান), বাক্যপ্রয়োগ ও কর্মকরণ বিষয়ে পটুতা উৎপাদন করিয়া থাকে।

এই আদ্বীক্ষিকী বিভা ( অপর ) সব বিভার প্রদীপ-স্বরূপ, সর্বকর্মের উপায় বা সাধন-স্বরূপ, এবং সর্ব্ধপ্রকার ( বৈদিক ও লৌকিক ) ধর্মের আশ্রয়-স্বরূপ বলিয়া সর্ব্বদাই বিবেচিত হয় ॥১॥

কোটিলীয় অর্থশাম্বে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে বিভাসমূদ্দেশ-নামক প্রকরণে আধীক্ষিকী-স্থাপনা-নামক বিভীয় অধ্যায় সমাপ্ত।

### তৃতীয় অধ্যায়

১ম প্রকরণ—বি**স্তাসমূদ্দেশ; ত্ররী স্থাপনা** 

সামবেদ, ঋগ্বেদ ও যজুবেরদ—এই তিন বেদের নাম ত্রন্নী। অথবর্ধ-বেদ ও (মহাভারতাদি) ইতিহাসও বেদপর্য্যায়ে পতিত হয়। শিক্ষা (বর্ণের উদ্ধারণাদির উপদেশক শান্ত্র), কল্প (যজ্ঞাদির অহ্ন্তান-সহক্ষে উপদেশক শান্ত্র), ইব্যাক্ষরণ (শক্ষাহশাসন), শিক্ষক্ত (শক্ষাবিক্তনের উপদেশক শান্ত্র), ছেন্দোবিচিত্তি (ছন্দ নিরূপণের শান্ত্র) ও জ্যোতিষ—এই ছয়টিকে (বেদের)
অঙ্গ বলিয়া নির্দ্দেশ করা হয়।

এই ত্রমীতে উপদিষ্ট বা প্রতিপাদিত ধর্ম, ( ব্রাহ্মণাদি ) চারি বর্বের ও ( ব্রহ্মচর্য্যাদি ) চারি আশ্রেমের নিজ নিজ ধর্মে ( কর্তব্যে ) সকলকে নিয়ন্ত্রিত করিয়া রাথে বলিয়া, (লোকের ) পরম উপকার সাধন করিয়া থাকে।

( সম্প্রতি চারি বর্ণের নিজ নিজ ধর্ম বলা হইতেছে )। অধ্যয়ন ( বেদাদি-পঠন ), অধ্যাপন ( বিজা-বিতরণ ), যজন ( যজ্ঞকরণ ), যাজন ( যজ্ঞ করান ), দান ও প্রতিগ্রহ ( দানগ্রহণ ) এইগুলি ব্রোজ্মণের স্বধর্ম বলিয়া গৃহীত হয়।

অধ্যয়ন, যজন, দান, শস্ত্রহারা জীবিকার্জ্জন ও প্রাণীদিগের রক্ষণ—এইগুলি ক্ষত্রিয়ের স্বধর্ম। অধ্যয়ন, যৃজন, দান, কৃষিকার্য্য, (গবাদি) পশুপালন ও বাণিজ্যকরণ—এইগুলি বৈশ্রোর স্বধর্ম।

(রান্ধণাদি) বিজগণের শুশ্রষা (সেবা), বার্ত্তা (অর্থাৎ কৃষি, পশুপালন ও বাণিজ্য) এবং কারুকর্ম (শিল্পীর কার্য্য) ও কুশীলব কর্ম (গীতিবাদিত্রাদি কর্ম ও ভাটচারণদিগের কর্ম) এই গুলি শুদ্রের স্বধর্ম। (সম্প্রতি চারি আশ্রমের স্ব স্বর্ধ্ম বল্লা হইতেছে)। (সর্ববর্ণের অন্তর্ভুক্ত) গৃহন্তের স্বধর্ম হইল—
নিজ বর্ণের জন্ম বাবন্থিত কর্মনারা জীবিকানির্বাহ, নিজকুলের সমান কুলে জাত, অথচ অসমাস্থ খবির গোত্রে সম্ভূত ব্যক্তিদিগের মধ্যে বিবাহ সম্পাদন, ঋতুরক্ষার্থ স্থী-গমন-শীলতা, দেবতা, পিতৃলোক, অতিথি ও ভৃত্যাদিকে (খাত্মাদি—) দান ও তদত্তাবশিষ্টের ভোজন।

ত্রজ্জানারীর স্বধর্ম হইল—স্বাধ্যায় (স্ববেদের অধ্যয়ন), অগ্নিকার্য্য ও স্নান ও ভিক্ষানর্য্যা, (আর নৈষ্টিক ব্রন্ধানীর পক্ষে) জীবন পর্যান্ত আচার্য্য-সমীপে অবস্থান এবং আচার্য্যের অভাবে গুরুপুত্র-সমীপে, অথবা সমানশাখাধ্যায়ী বৃদ্ধ-সমীপে অবস্থান।

বানপ্রস্থের স্বধর্ম হইল—নিজের ব্রহ্মচর্যাব্রতরক্ষা ( অর্থাৎ উর্দ্ধরেতাঃ হইয়া থাকা ), ভূমিতে শয়ন, জট। ও অজিন ( মৃগচর্ম ) ধারণ, অগ্নিহোত্র ও ( ত্রিকাল ) স্থান এবং বনজাত ( কন্দম্লাদি ) দ্রব্যের আহার।

পরিব্রাজক বা সন্ন্যাসীর স্বধর্ম হইল—নিজের ইন্দ্রিয়গুলিকে সংযত রাখা, কোন কর্মেই প্রাবৃত্ত না হওয়া (নৈক্ম্যা), কোন বস্তুতেই স্বন্ধ রক্ষা না করা লোকসভ ত্যাগ করা, অনেক স্থানে ঘাইয়া জিক্ষান্ন সংগ্রহ, অর্গ্যে নিবাস এবং বাহ্য ও আভ্যন্তর শোঁচ বা শুচিভাব ( অর্থাৎ কায়, মন ও বাক্য বিষয়ে শুদ্ধভাব রাখা )।

সকল বর্ণের ও সকল আশ্রমের পক্ষে সাধারণ ধর্ম হইল—অহিংসা, সত্যবচন, শৌচ বা শুদ্ধতা, অস্থার অভাব ( অর্থাৎ গুণপক্ষপাতিত্ব ), অনিষ্ঠ্রতা ও ক্ষমা।

(বর্গাশ্রমবর্গের) স্বধর্ম পালিত হইলে, ইহা স্বর্গ ও আনস্তার (অনস্তম্থ বা মোক্ষের) সাধন হইতে পারে। স্বধর্মের উল্লক্ত্মন ঘটিলে, লোকসকল কর্মসংকর ও বর্গসংকরবশতঃ উচ্ছেদ প্রাপ্ত হয়। অতএব রাজার উচিত কার্য্য হইবে সমস্ত ভূতগণকে (প্রাণিবর্গকে) স্বধর্ম হইতে ভ্রষ্ট হইতে না দেওয়া। যে রাজা (সকলকে) স্বধর্ম আচরণ করাইতে পারেন, তিনি ইহলোকে ও পরলোকে স্বর্গী হইতে পারেন॥১॥

যে প্রজা-লোকের আর্যাম্যাণা। (সদাচারনিয়ম) ব্যবস্থিত আছে, যে প্রজা-লোক বর্ণ ও আশ্রমের নিয়মাণি মানিয়া চলে, এবং যে প্রজা-লোক ত্রয়ীর বিধান দারা রক্ষিত হয়, সে প্রজা-লোক প্রসন্ন ( স্বখসমূদ্ধ ) থাকে এবং কখনই নই হয় না ॥২॥

কোটিলীয় অর্থশাম্বে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে বিভাসমূদ্দেশ প্রকরণে ব্রয়ীস্থাপনা-নামক তৃতীয় অধ্যায় সমাপ্ত।

### চতুর্থ অধ্যায়ু

#### ১ প্রকরণ—বিভাসমুদ্দেশ ; বার্ত্তা ও দণ্ডনীতি স্থাপনা

কৃষি, (গবাদি) পশুপালন ও বাণিজ্য—এই তিন বিষয়ই বার্ডা-নামক বিহ্যান্বারা প্রতিপাদিত হয় এবং এই বিচ্ছা, ধাহ্য, পশু, হিরণ্য, কুপ্য (স্বর্ণ-রৌপ্যাতিরিক্ত তাত্রাদি তৈজস ও সারদাক প্রভৃতি অতৈজস দ্রব্য), ও বিষ্টি (কর্মকর) প্রবানে সহায়তা করে বলিয়া সমাজের উপকার সাধন করিয়া থাকে। (রাজা) এই বিহ্যার প্রভাবে উৎপাদিত কোষ ও দণ্ড (সেনা)-দ্বারা স্থপক্ষ ও পরপক্ষকে বশে রাখিতে পারেন।

তে (আধীক্ষিকী, এয়ী ও বার্ছা—এই তিন বিভার যোগ ও ক্ষেম সাধন করিতে

দওই সমর্থ হয় (অর্থশান্তে সামাদি উপায়-চতুইয়ের অন্ততম উপায়ের নামও

দেশুও দওখন রাজাও দওছানীয় বশিয়া ক্রিড হয় )। এই দও-নামক বিভার

যাহা নীতি বা স্বরূপের প্রতিপাদনকারী তত্ত্ব তাহার নাম দণ্ডনীতি (বা রাজনীতি) শাস্ত্র। এই দণ্ডনীতি অলব বস্তুকে লাভ করায়, লব বস্তুকে রক্ষা করায়, রক্ষিত বস্তুকে বিদ্বিত করায় এবং বৃদ্ধিপ্রাপ্ত বস্তুকে উপযুক্ত পাত্রে বিনিযুক্ত করায়। লোকযাত্রা (সমাজ-ব্যবহার) এই দণ্ডনীতির উপরই নির্ভর করিয়া থাকে। অতএব, যে রাজা লোকযাত্রার সম্যক্ অনুষ্ঠানে তৎপর, তিনি নিতাই উন্মতদণ্ড অর্থাৎ দণ্ডপ্রণয়নে উন্থাক্ত রহিবেন।

 $\sqrt{h}$   $\int$  ( কোটিল্যের নিজ) আচার্গ্যের $^{\prime}$  মত এই ষে, দণ্ড ব্যতিরেকে অন্ত কোন প্রকীর সাধন তেমন কার্য্যকর হইতে পারে না—যাহা দারা সকলকে বশে রাখা যায়। কিন্তু, কৌটিল্য (দণ্ডমাত্রকেই তেমন সাধন) বলিয়া মনে করেন না। কারণ, তাঁহার মতে, যে রাজা তীক্ষদণ্ড ( অর্থাৎ যিনি অল্লাপরাধে উগ্র দণ্ড প্রণয়ন করেন ). তিনি সকল প্রাণীরই উরেগ উৎপাদন করেন। আবার যে রাজা মৃত্বদণ্ড ( অর্থাৎ যিনি মহাপরাধে মৃত্র দণ্ড প্রণয়ন করেন ), তিনি স্বয়ং পরাভব প্রাপ্ত হয়েন। কিন্তু, যে রাজা যথার্হদণ্ড ( অর্থাৎ যিনি অপরাধান্তরূপ উচিত দণ্ড প্রায়ন করেন ), তিনি সকলের পূজা লাভ করেন। কারণ, যে দণ্ড শাম্ব হইতে উত্তমন্ধপে জ্ঞাত হইয়া প্রণীত বা প্রযুক্ত হয়—তাহা প্রজাজনকে ধর্ম, অর্থ ও কাম এই ত্রিবর্গ দ্বারা যুক্ত করিতে পারে। কাম ও ক্রোধবশতঃ কিংবা অজ্ঞানবশতঃ যে দণ্ড তুষ্প্রণীত ( অর্থাৎ অর্থাবং প্রযুক্ত ) হয়—তাহা বানপ্রস্থ ও পরিবান্ধকদিগেরও কোপ উৎপাদন করে—গৃহস্থগণের ত কথাই নাই। আবার, যদি দণ্ড অপ্রশীত বা অপ্রযুক্তই রহে, তাহা হইলে ইহা মাৎস্তস্তায় উৎপাদন করে ( অর্থাৎ বড বড মংস্থা যেমন ছোট ছোট মংস্থাগুলিকে গ্রাস করিয়া ফেলে—তেমন তথন সবল লোকেরা তুর্মল ও অবল লোকদিগকে গ্রাস করিয়া ফেলে)। কারণ, দুগুধুর বা দণ্ডপ্রথেতা রাজার অভাবে, বলবান লোক বলশৃন্ত লোককে গ্রাস করিয়া থাকে ( অর্থাৎ ক্ট দিয়া থাকে )। ( অতএব), দণ্ডবারা গুপ্ত বা রক্ষিত ( রাজা ) প্রভাববিশিষ্ট হইয়া থাকেন। (কেহ কেহ <sup>\*</sup>দণ্ডবারা রক্ষিত তুর্বল প্রজা বা সমাজ সবল হয়' এরপ ব্যাখ্যাও করেন )।

চারি বর্ণ ও চারি আশ্রমের লোকের। রাজাঘারা দণ্ডের প্রভাবে পালিত হুইলে, নিজ নিজ ধর্মে ও রুর্মে অভিরত থাকিয়া স্বগৃহে (বর্মাস্থ-পাঠে ছ ছ পথে) স্থথে থাকিতে পারে॥১॥

কোটিলীয় অর্থশাল্রে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে বিভাসগুদ্দেশ-নামুক প্রকরণে বার্ভাও দওনীতি স্থাপনা-নামক চতুর্থ অধ্যায় সমাপ্ত।

#### পঞ্চম অধ্যায়

#### ২য় প্রকরণ—বৃদ্ধ (জ্ঞানবৃদ্ধ) জনের সহিত সংযোগ

অতএব, (আদীক্ষিকী, ত্রয়ী ও বার্তারপ) তিন বিছার মূলই হইল দণ্ড বা দণ্ডনীতিজ্ঞান। প্রাণধারীদিগের (অর্থাৎ প্রজাবর্গের) যোগ ও ক্ষেমসাধনকারী দণ্ড, বিনয় বা শিক্ষারূপ মূলের উপর প্রতিষ্ঠিত।

বিনয় তুই প্রকার—ক্বতক · ( অর্থাৎ পরিশ্রমপ্র্বক ক্রিয়ার দারা প্রাপ্ত ) ও সাভাবিক ( বাসনাবশতঃ স্বতঃসিদ্ধ )। কিন্তু, ক্রিয়া, দ্রব্যের বা উপযুক্ত পারের উপর বিহিত হইলেই তাহাকে ( সেই পারকে ) বিনীত বা শিক্ষিত করিতে পারে; কিন্তু, ইহা অদ্রব্য বা অপারের উপর বিহিত হইলে তাহাকে বিনীত বা শিক্ষিত করিতে পারে না। যে ব্যক্তির বৃদ্ধি—শুশ্রমা ( গুরুজনের উপদেশশ্রবণে ইচ্ছা ), শ্রবণ, গ্রহণ, (শ্রুতবিষয়ের অর্থবোধ ), ধারণ ( উপদিষ্ট বিষয়ের স্মৃতিতে রক্ষণ ), বিজ্ঞান ( ধারিত বিষয়ের বিশিষ্ট জ্ঞান ), উহা ( অন্তক্ত বিষয়ের অন্তমান), অপোহ ( অন্তের তর্কনিরসন জন্ম বিপরীত তর্ক ) ও তত্ত্বে ( বিষয়েব যাথার্যাক্রানে ), অভিনিবিষ্ট থাকে, সেই যোগ্য ব্যক্তিকেই বিল্যা বিনীত বা শিক্ষিত করিতে পারে, অন্তকে পারে না।

বিভাসমূহের প্রামাণ্য বিভিন্ন মাচার্য্যগণের উপর নির্ভর করে বলিয়া, শিল্পগণ সেই সেই আচার্য্যের অনুশাসনক্রমেই বিনয় (শিক্ষা)-গ্রহণ ও নিয়ম পালন করিবে।

চৌলকর্ম (মুগুন সংস্থার) সম্পূদিত হইলে (রাজা বা রাজপুত্র) লিপি (অক্ষর লেখা) ও সংখ্যান (অন্ধ-গণনা) নিয়মপূর্বক অভ্যাস করিবেন। উপনয়ন (বা গায়গ্রীর উপদেশ) প্রাপ্ত হওয়ার পর (তিনি) ত্রয়ী ও আধীক্ষিকী বিজ্ঞা শিষ্টগণ ( মর্গাং তংতবিজ্ঞাভিজ্ঞ আচার্য্যগণ) হইতে, বার্হা-বিজ্ঞা (সীতাধ্য-কাদি) বড় বড় অধ্যক্ষগণ হইতে এবং দণ্ডনীতি প্রবচনকুশল ও প্রয়োগকুশল নীতিবিদ আচার্য্যগণ হইতে নিয়মপুর্বক শিক্ষা করিবেন।

(তিনি) ষোড়শ বংসর পর্যন্ত ব্রহ্মচর্য্য পালন করিবেন। তংপর তাঁহার গোদান বা কেশান্ত-কর্ম ও দারকর্ম বা বিবাহ হইবে। তাঁহার (রুতদার রাজার বা রাজপুত্রের) বিনয়বৃত্তির জন্ম তাঁহাকে নিতাই বিভাবৃত্ত মার্চার্যাগণের সহিত সংযোগ রক্ষা করিতে হইবে। কারণ, বিনয়ের মৃলই হইল ইহা (অর্থাৎ বিভাবৃত্ত সংযোগ)।

দিনের প্রথমভাগে (রাজা) হস্তিবিছা, অশ্ববিছা, রথবিছা ও অন্থান্থবিছাতে শিক্ষা গ্রহণ করিবেন এবং শেষভাগে ইতিহাস-শ্রবণ বিষয়ে (শিক্ষা গ্রহণ করিবেন)। ইতিহাস শব্দ কারা আমরা পুরাণ, (রামায়ণাদি) ইতির্ত্ত, (দিব্যমান্থয়দির চরিত্রকথারূপ) আখ্যায়িকা, উদাহরণ প্রের্কতবিষয়ের উপপাদক দৃষ্টান্ত, মতান্তরে, মীমাংসাদি লায়োপল্যাসবিষয়ক শান্ত্র), (মানবাদি) ধর্মশান্ত্র ও (বার্হস্পত্যাদি) অর্থশান্ত্র বৃঝিব। অবশিষ্ট দিন ও রাত্রিভাগে (তিনি) নৃতন নৃতন বিশয়ের জ্ঞানলাভে ও গৃহীত জ্ঞানের পরিচয়ে (মনন ও চিন্তন) অভ্যাস করিবেন এবং যাহা (সম্যক্) গৃহীত হয় নাই তহিষয়ে পুনঃ পুনঃ প্রবণ করিবেন। কারণ, (পুনঃ পুনঃ) শ্রবণ হইতেই প্রজ্ঞা (জ্ঞানবিকাশ) সম্ভাবিত হয়, প্রজ্ঞা হইতে যোগ (বা শান্ত্রোক্ত বিষয়ের অনুষ্ঠান-শ্রদ্ধা), আবার যোগ হইতে আত্মবক্তা বা মনস্বিতা উপজ্ঞাত হয়—এবং এই ভাবেই বিঞ্জালভের সামর্থ্য বা শক্তি উৎপাদিত হয়।

কারণ, বিভাষার। বিনীত ও প্রজাদিগের বিনয়ে বা শিক্ষাতে রত রাজা সর্বভূতের হিতে রত থাকিলে রাজান্তর-শৃত্যা ( অর্থাৎ একাতপত্রা ) পৃথিবী ভোগ করিতে পারেন ॥১॥

> কোটিলীয় অর্থশান্তে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে বৃদ্ধসংযোগ-নামক পঞ্চম অধ্যায় সমাপ্ত।

### ষষ্ঠ অধ্যায়

৩য় প্রকরণ—ই**ন্দ্রিয়জয় ; কামাদি ছয় রিপুর বর্জ্জন** 

কোম, ক্রোধ, লোভ, মান (নিজ বৃদ্ধির অন্প্রমন্তবিধয়ে অভিমান), মদ (গর্ব) ও হর্পের (ইউপ্রাপ্তিতে স্থাম্ভবের) বর্জ্জন দ্বারা ইন্দ্রিয়জয় লাভ করিতে হইবে—এবং এই ইন্দ্রিয়জয় বিভাজনিত বিনয়ের (শিক্ষার) কারণ হয়। কর্ণ, ত্বক, নেত্র, জিহ্বা ও নাসিকা—এই পঞ্চ ইন্দ্রিয়ের (য়থাক্রমে) শব্দ, ম্পর্শ, রস ও গদ্ধরপ বিষয়-পঞ্চকের প্রতি (স্বভাবতঃ) অবিরোধসহকারে প্রবৃত্তির নাম ইন্দ্রিয়-জয়য়। শাস্তে প্রতিপাদিত বিষয়ের অন্তর্গানকেও ইন্দ্রিয়জয় বলা মায় (অর্থাৎ তক্ষারাও ইন্দ্রিয়জয় লয় হয়)। কারণ, এই শাস্ত্রটি সম্পূর্ণই ইন্দ্রিয়

জয় বলিয়া অভিহিত হইতে পারে (অর্থাৎ এই শাল্পে প্রতিপান্ত সব বিষয়ই ইন্দ্রিয়ঙ্গয়ের কারণ হইতে পারে )।)

ষে রাজা শাস্ত্রবিহিত কর্তব্যের বিরুদ্ধ অনুষ্ঠান করেন এবং যিনি নিজ ইন্দ্রিয়-বর্গকে স্ববশে আনিতে পারেন নাই, তিনি চাতুরন্ত হইলেও (অর্থাৎ চতু:সমুদ্রা ম্ব পৃথিবীর অধীশ্বর হইলেও ) তৎক্ষণাৎ বিনষ্ট হয়েন। যথা—ভোজবংশীয় দাওক্য নামক রাজা ও বিদেহাধিপতি করাল-নামক রাজা—উভয়েই কামবশতঃ ব্রান্ধণের ক্যাকে পাইতে ইচ্ছুক হইয়া (তাহাদের পিতাদারা অভিশপ্ত হওয়ায়) নিজ বান্ধব ও রাষ্ট্রসহ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। কোপবশতঃ **জনমেজ**য় রাজা ব্রান্ধণের উপর বিক্রম প্রকাশ করিতে যাইয়া (তদীয় শাপে) ও তালজভ্র রাজা ভৃগুদিগের উপর সেরপ কার্য্য করিয়া বিনাশপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন। লোভের বশবর্ত্তী হইয়া ইলানন্দন (পুরুরবাঃ) এবং দোবীর দেশের রাজা অজবিন্দুও পীড়াদানপূর্ণক (ব্রাহ্মণাদি) চারি বর্ণ হইতে অতিমাত্রায় ধনাপহরণ করায় (তাহাদের কোপেই) বিনষ্ট হয়েন। অভিমানবশতঃ **রাবণ** প্রত্বীকে (রামপত্নী সীতা-দেবীকে) না ফিরাইয়া দিয়া ও **তুর্ব্যোধন** স্বরাজ্য হইতে অংশমাত্রও (পাওবদিগকে) প্রতার্পণ না ক্রিয়া বিনাশপ্রাপ্ত ২ইয়াছিলেন। মদ বা গর্দের বংশগত হইয়া সমস্ত প্রজাদিগকে অপমানিত করিয়া **ডভ্রেন্ডব** রাজা (নরনারায়ণের হস্তে) এবং হেয়য় দেশের অধিপতি অর্জ্জুন (কীর্তবীর্যার্জ্জুন পরগুরামের হস্তে ) নাশ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। এবং হর্মের বশীভূত হইয়া বাতাপি-নামক (অস্তুর) অগস্ত্য খবিকে অতিমাত্রায় আক্রমণ করিয়া এবং দ্বৈপায়ন ঋযিকে (ব্যাসদেবকে) • তেমনই আ্ফ্রিমণ করিয়া **রুষিঃস্তর্ভ**ও (যাদবসংঘও) নাশপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন।

এই রাজারা ও অসাতা বহু রাজা (কামাদি) শত্রুষড়্বর্গের বশীভূত ১ইযা ইক্রিয়জয়ে অসমর্থ হওয়াতে বাশ্বব ও রাষ্ট্রসহ বিনাশপ্রাপ্ত হইয়াছেন।।১॥

আবার এই শক্রষড়্বর্গকে বিসর্জন করিয়া জিতেন্দ্রিয় হওরায় জামদগ্রা (পরশুরাম), অম্বরীষ ও নাভাগ চিরকাল পৃথিবী ভোগ করিতে পারিয়াছিলেন।।২।।

কৌটিলীয় অর্থশান্তে বিনয়াধিকারিক নামক প্রথম অধিকরণে ইন্দ্রিয়জয় নামক প্রকরণে অরিষড্বর্গত্যাগ-নামক ষষ্ঠ অধ্যায় সমাপ্ত।

#### সপ্তম অধ্যায়

#### ৬য় প্রকরণ—ইন্দ্রিয়জয়; রাজর্ষির ব্যবহার

পূর্দোক কারণে (সমন্ত শ্রেরাবন্তর সাধন বলিয়া) রাজরি (কামাদি) অরিষড্বর্গের বর্জন দারা ইন্দিয়জয় করিবেন; (বিছা-) বৃদ্ধদিগের সহিত সংযোগ দারা নিজের প্রজা বিকশিত করিবেন; চার বা গৃঢ় পুরুষগণের নিয়োগ দারা চক্ত্র কার্য (অবাৎ স্থরাই ও পররাইের সমস্ত ব্যবস্থার প্রতি দৃষ্টি রক্ষা) করিবেন; নিজের উত্থান বা কার্য্য-তৎপরতাদারা (প্রজাবর্গের) যোগ ও ক্ষেম্নাধন করিবেন; কর্ত্ত্য বিষয়ে নিজের অন্তশাসন বা আজ্ঞাবিধান দার। (প্রজাদিগকে) স্বধর্মে স্থাপিত করিবেন; বিছার উপদেশ দারা (নিজেকে ও প্রজাবর্গকে) বিনীত বা শিক্ষিত করিবেন; (বিশিষ্ট কার্য্যে) অর্থবিনিয়োগদার। জনপ্রিয়ম লাভ করিবেন; এবং (প্রজার প্রতি) হিতাচরণ দারা নিজের বৃত্তি বা ব্যবহার চালাইবেন।

এইভাবে ইন্দ্রিয় গুলিকে স্ববশে রাথিয়া (তিনি) পরস্ত্রীতে কামনা, পরদ্রব্যে লোভ ও পরহিংসা বর্জন করিবেন এবং (অত্বচিত) নিদ্রা, চাঞ্চল্য, মিথ্যাবচন, উদ্ধত ও অবিনীত বেশধারণ, ও অনর্থের সহিত সংযোগ (অর্থাৎ অনর্থ কার্য্য ও অনর্থকারী পুরুষের সহিত সম্পর্ক) ত্যাগ করিবেন, এবং অধর্ম-সংযুক্ত ও অনর্থসংযুক্ত ব্যবহারও (তিনি) পরিত্যাগ করিবেন।

ধর্ম ও অর্থের সহিত বিরোধ না ঘটাইয়া (তিনি) কামের সেবা করিবেন। কেবল যে (তিনি) স্থা-রহিত হইয়াই থাকিবেন তাহা নহে। জ্বাবা, (তিনি) পরস্পর-সংস্ট ধর্মা, অর্থ ও কামরূপ ত্রিবর্গের সমানভাবে সেবা করিবেন। কারণ, ধর্মা, অর্থ ও কামের মধ্যে একটি যদি অত্যধির্কভাবে (বাসনরূপে) সেবিত হয়, তাহা হইলে ইহা নিজকে ও অপর হুইটিকেও কট প্রদান করে (অর্থাৎ ধর্মা, অর্থ ও কামকে; অর্থ, ধর্মা ও কামকে; ও কাম, ধর্মা ও অর্থকে পীড়িত করে)।

ক্রিকিটেক্যের মতে ( ত্রিবর্গের মধ্যে ) অর্থ-ই প্রধান বস্তু। কারণ, ধর্ম ও কাম অর্থের উপরই নির্ভর করিয়া থাকে। অথবা, ( তিনি ) আচার্য্যগণকে ও অমাত্যগণকে নিজ কার্য্যের সীমারপে ( অর্থাৎ অফ্রান্স্যত-শাসন বলিয়া ) ভাপিত বা নিয়োজিত করিবেন, কারণ, তাঁহারাই তাঁহাকে ( রাজাকে ) অনর্থ- স্থান ছইতে ( অর্থাৎ অনিষ্টকর অফ্রান হইতে ) নিবারিত রাথিবেন, কিংবা

রাজা প্রমাদী হইলে তাঁহাকে মন:কইদায়ী প্রতাদ বা অঙ্কুশরপী ছায়া প্রমাণ ও নালিক প্রমাণের নিবেদন দ্বারা (এই অধিকরণের ১৯শ অধ্যায় দ্রষ্টব্য) আঘাত করিবেন (অর্থাৎ তাঁহারা তাঁহাকে প্রমাদে সময়পাত করা হইতে রক্ষা করিয়া স্ব-কার্য্য-তৎপর করিবেন)।

রাজত্ব-কার্য্য সহায় পাইলেই সাধিত হইতে পারে, (অর্থাৎ একাকী রাজার পক্ষেত্বর রাজকার্য্য সম্পাদন সম্ভবপর নহে বলিয়া সহায়ের প্রয়োজন হয় ), (কারণ, ) (শকটাদির) একটিমাত্র চক্র (চক্রান্তরের সহায়তা ব্যতিরেকে) চলে না (অর্থাৎ রাজারাও সেইরপ অমাত্যাদির সহায় ব্যতিরেকে একাকী রাজকার্য্য পরিচালনে সম্যক্ সমর্থ হয়েন না)। অতএব, (রাজা সহায়ভূত) সচিবদিগকে নিযুক্ত করিবেন এবং তাঁহাদের মত শ্রবণ করিবেন ॥১॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্বে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে ইন্দ্রিয়ঙ্গয়-নামক প্রকরণে রাজ্বি-বৃত্ত-নামক সপ্তম অধ্যায় সমাপ্ত।

### অষ্টম অধ্যায়

#### ৪র্থ প্রকরণ—অমাত্যগণের নিয়োগ

আচার্য্য ভারন্ধাজের ( স্থোণাচার্য্যের ) মতে (রাজা ) নিজের সহাধ্যায়ী ( সহপাঠা )-দিগের মধ্য হইতেই নিজের অমাত্যগণকে নিযুক্ত করিবেন, কারণ, তাঁহাদের শোচ বা মনের শুদ্ধভাব ও কার্য্য-সামর্থ্য-সমন্ধে তিনি ( সহপাঠের সময়েই ) সব অবগত হইয়া থাকিবেন। সেই কারণে, তাঁহারা ( অমাত্যেরা ) তাঁহার ( রাজার ) বিশ্বাসের পাত্রও হইতে পারিবেন।

(কিন্তু), আচার্য্য বিশালাক্ষ এই মত পোষণ করেন না। কারণ, তাঁহার মতে এই (সহাধ্যায়ী) অমাত্যেরা (সহপাঠের সময়ে) তাঁহার সহিত একত্র ক্রীড়া করিতেন বলিয়া তাঁহাকে (রাজাকে) অবহেলা করিতে পারেন। স্ক্তরাং রাজা তাঁহাদিগকেই অমাত্য নিযুক্ত করিবেন, যাঁহারা (চরিত্রের) গুহু বা গুগু বিষয়ে (রাজার সহিত) সমান-ধর্ম-বিশিষ্ট; কারণ, তাঁহারা শীল (গুণময় স্থভাব) ও ব্যসন (দোষ) বিষয়ে (রাজার সহিত) সমান। সেই কারণে, রাজা তাঁহাদের সব ধর্ম অবগত মাছেন বলিয়া তাঁহারা স্কার্য্য-নিপাদনে কোন অপ্রাধ করিবেন না।

আবার, আচার্য্য পরাশর মনে করেন যে, এই দোষ ত (রাজা ও আমাত্যগণের) উভয়ের পক্ষে সমান। আমাত্যেরাও রাজার সব ধর্ম অবগত আছেন এই ভয়ে, (রাজা) তাঁহাদের স্বষ্ট্ন ও অস্বষ্ট্নভাবে ক্লত সর্ব্ব কর্মেরই অনুসরণ করিবেন।

রাজা অবশ হইয়া যে যে লোকের কাছে নিজের গুপ্ত কথা বলিবেন, সেই কার্য্য দারাই তিনি তাহাদের বশগামী হইয়া পড়িবেন ॥১॥

স্থতরাং, তিনি তাঁহাদিগকেই অমাত্য নিযুক্ত করিবেন, যাহার। প্রাণের উপর আশঙ্কাপ্রদ বিপদেও তাঁহার উপকার সাধন করিয়া থাকেন, কারণ, রাজা নিজের প্রতি তাঁহাদের অন্তর্গাগের পরিচয় পাইয়াছেন।

(কিন্তু), আচার্য্য পিশুন (নারদ) এই মতাবলম্বী নহেন। (তিনি মনে করেন যে,) ইহা তো রাজভক্তি মাত্র—ইহা তাঁহাদের বৃদ্ধিপ্রকাশের পরিচায়ক নহে। তিনি তাঁহাদিগকেই অমাত্যপদে নিযুক্ত করিবেন, যাঁহারা যে কর্মসমূহ হইতে অর্থাগমের ইয়ত্তা হইয়াছে, তাহাতে নিযুক্ত হইয়া, যথাদিপ্ত অর্থ উৎপাদন করিতে, বা তাহা হইতে অধিক পরিমাণ অর্থ উৎপাদন করিতে সমর্থ হয়েন। কারণ, এইরপ কার্য্য দারাই তাঁহাদের (বৃদ্ধি-) গুণ কেবল পরীক্ষিত হইতে পারে।

আবার, আচার্য্য কৌণপদন্ত (ভীম) এই মত মানেন না। তিনি মনে করেন যে, তাঁহারা অন্তান্ত অমাত্যগুণ-বিরহিত। (মৃতরাং) যাঁহারা পিতা ও পিতামহ-ক্রমে আগত, তেমন ব্যক্তিদিগকে অমাত্যরূপে (রাজা) নিযুক্ত করিবেন, কারণ, তাঁহারা অনেক অপদান (অবদান বা কর্মবৃত্ত, অর্থাৎ প্রশস্ত-কর্ম) পূর্ব্ব হইতেই লক্ষ্য করিয়া আদিতেছেন। (রাজা) তাঁহাদের প্রতি অপচার বা অন্তায় আচরণ করিলেও তাঁহারা কথনই তাঁহাকে পরিত্যাগ করিতে পারিবেন না,—যে-হেতু, তাঁহাদের সহিত রাজার সমন্ধ বা পরিচয় প্রতিষ্ঠিত আছে। এমন কি, এইরূপ ব্যবহার মামুষ ব্যতিরিক্ত পশু প্রভৃতির মধ্যেও দেখা যায়। কারণ, গরুরাও অপরিচিত গোসমূহ ছাড়িয়া পরিচিত গোগণের নিকটই অবস্থান করে।

(কিন্তু,) আচার্য্য ব্যাতব্যাধি (উদ্ধব) এই মত অবলম্বন করিতে প্রস্তুত নহেন। কারণ, (তাঁহার মতে) তাঁহারা (অর্থাৎ কুলক্রমাগত অমাত্যেরা) রাজার দর্ব্ব বিষয় নিজ অধীন করিয়া, নিজেরাই রাজার ন্যায় স্বাতন্ত্র্য অবলম্বন করিয়া চলিবেন। অতএব, রাজার পক্ষে নীতিশান্ত্রবিৎ নৃতন লোককেই

1

অমাত্যপদে নিযুক্ত করা উচিত, কারণ, এই নবীন লোকেরা দণ্ডধর রাজাকে যমের পদে প্রতিষ্ঠিত মনে করিয়া কোন প্রকার অপরাধ করিতে সাহসী হইবেন না।

(কিন্তু), আচার্য্য বাহ্রদন্তীপুত্র (ইন্দ্র) এই মত পোষণ করেন না। (তাঁহার মতে) কেবল নীতিশাম্বে নিপুণ ব্যক্তি, শাস্তার্থের অন্তুষ্ঠানকর্মে অপরিচিত থাকায়, সর্ব্ব কর্মেই বিষাদগ্রস্ত হইবেন, অর্থাৎ সফল হইবেন না। স্থতরাং, রাজা এমন লোককেই অমাত্যরূপে নিযুক্ত করিবেন, যিনি সহংশজাত, প্রজ্ঞাবান, (উপধা-) শুদ্ধ, শূর ও স্বামীর প্রতি ভক্তিমান্, কারণ, গুণের প্রাধান্তই সর্ব্বতোভাবে প্রয়োজনীয়।

কোটিল্য স্বয়ং মনে করেন যে, পূর্ব্বোক্ত আচার্য্যগণের অন্থমোদিত লব বিষয়গুলি যুক্তিযুক্ত মনে হইতে পারে, তবে পুরুষের দামর্থ্য (অর্থাৎ তৎ-তৎ অধিকারস্থানের যোগ্যতা) তাঁহার সর্ব্বপ্রকার কার্য্যনিম্পত্তিক শক্তি দারা ও (শাস্ত্র-জ্ঞানাদিল্র ) দামর্থ্য দারাই নির্দ্ধারিত—( অতএব ),

(বিশ্বাশ্যত্ব প্রভৃতি) অমাত্যগুণ-সমূহ বিবেচনা করিয়া, এবং উচিত দেশ, উচিত কাল ও কর্মের স্বরূপ বৃঝিয়া, (রাজা) (সহাধ্যায়িপ্রভৃতি) সর্বপ্রকার লোকদিগকে অমাত্য বা কর্মসচিবের পদে নিযুক্ত করিতে পারেন, কিন্তু, মন্ত্রী বা ধীসচিবের পদে নহে (অর্থাৎ মন্ত্রী তিনিই হইবেন যিনি সর্বপ্রকার অমাত্য-গুণোপেত হইবেন)॥২॥

কৌটিলীয় অর্থশান্তে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে অমাত্য-নিয়োগ-নামক অষ্টম অধ্যায় সমাপ্ত।

#### নবম অধ্যায়

### ৫ম প্রকরণ—মন্ত্রী ও পুরোহিতের নিয়োগ

এখন প্রধান অমাত্য বা মন্ত্রীর গুণসম্পদের কথা বলা হইতেছে—যথা, তিনি হইবেন (১) জানপদ, অর্থাৎ রাজার সহিত একদেশোন্তব, (২) অভিজ্ঞাত, অর্থাৎ উচ্চকুলসভূত, (৩) স্ববগ্রহ, অর্থাৎ যিনি নিজেকে ও অপরকে অমূচিত কার্য্য হইতে নিবারণ করিতে সমর্থ, (৪) কৃতিশিল্প, অর্থাৎ রথচর্য্যা—গান্ধর্ববিচ্চা প্রভৃতিতে নিপুণ, (৫) চক্ষুদ্মান্, অর্থাৎ চক্ষুরূপী অর্থশান্তে অভিজ্ঞ, (৬) প্রাক্ত, অর্থাৎ তীক্ষধীসম্পন্ন, (৭) ধার্মকুর, অর্থাৎ পূর্ববৃত্তান্তাদি সমজে

শারণশক্তিযুক্ত, (৮) দক্ষ, অর্থাৎ কার্য্যসম্পাদনে ক্ষিপ্রকারী, (১) বাগ্মী, অর্থাৎ বাক্যকথনে কুশল, (১০) প্রাপান্ত, অর্থাৎ যে কোন বিষয় সম্যক্ ব্যক্ত করিতে সাহসযুক্ত, (১১) প্রতিপত্তিমান্, অর্থাৎ যুক্তিতর্কদারা প্রবোধনকারী, (১২) **উৎসাহযুক্ত,** অথাৎ পুক্ষকার-সমন্বিত, (১৩) প্রভাবযুক্ত, অর্থাৎ প্রভূশক্তিসম্পন্ন, (১৪) ক্লেশসহ, অর্থাৎ ক্লেশ সহ্ করিতে সমর্থ, (১৫) শুচি, অর্থাৎ উপধা-চতুইয় বিষয়ে গুদ্ধবৃক্ত, (১৬) মৈত্র, অর্থাৎ সকলের প্রতি মিত্র-ভাবাপন্ন, (১৭) **দৃঢ়ভক্তি**, অর্থাৎ রাজা বা স্বামীর প্রতি অবিচাল্য অহুরাগ-বিশিষ্ট, (১৮) শীলযুক্ত, অর্থাৎ সদাচরণকারী, (১৯) বলসংযুক্ত, অর্থাৎ দৈহিক বলযুক্ত, (২০) **আরোগ্য-সংযুক্ত**, অর্থাৎ স্থসান্ত্যবশতঃ নীরোগ, (২১) সত্ত্বসংযুক্ত, অর্থাৎ ধৈর্য্যশালী, (২২) স্তম্ভবর্জ্জিত, অর্থাৎ গর্মরহিত, (২৩) চাপল্যবর্জ্জিত, অর্থাৎ চাঞ্চল্যরহিত, (২৪) সংপ্রিয়, অর্থাৎ সোম্যাকৃতি এবং (২৫) শক্রতার অনুৎপাদক ও ইহার উপশম্য়িত। ( এই গুণরাজি সম্গ্র-ভাবে থাঁহার থাকিবে তিনিই প্রথম শ্রেণীর অমাত্য বলিয়া গুহীত হইবেন।) এই গুণগুলির এক-চতুর্থাংশ থাঁহার কম আছে, তিনি মধ্যম শ্রেণীর অমাত্য বলিয়া পরিগণিত হইবেন, এবং গুণগুলির অর্দ্ধাংশ ধাহার কম আছে, তিনি অবর বা অধম শ্রেণীর অমাত্য বলিয়া গণ্য হইবেন।

উক্ত গুণগুলির মধ্যে (অথবা, উক্ত তিনপ্রকার অমাত্যদিগের) জনপদ (জন্মস্থান) ও অবগ্রহ (আত্ম-পর-সংখ্যন শক্তি), আপ্ত বা বিশ্বাস্থজনের নিকট হইতে (রাজা) পরীক্ষা করিয়া জানিবেন; সমান বিভাবিদ্গণের নিকট হইতে তাঁহাদের শান্তরপনেত্রবন্তা অর্থাৎ শাস্ত্র নৈপুণ্য জানিবেন। কর্মাগ্রন্থানসময়ে তাঁহাদের প্রজ্ঞা, ধারণশক্তি ও দক্ষতার বিচার করিবেন; কথাপ্রসঙ্গে তাঁহাদের বাগ্মিত্ব, প্রগল্ভতা ও নব নব প্রজ্ঞার উন্মেখণালিত্ব ব্রিয়া লইবেন; আপৎকালে তাঁহাদের সাহস, প্রভাব (প্রভূশক্তি) ও ক্লেশসহত্ব পরীক্ষা করিবেন; সংব্যবহার (রাজকার্য্যের সম্পাদন, অথবা আচার-ব্যবহার) হইতে তাঁহাদের গুল্ভা, মৈত্রীভাব ও দৃঢ়ভক্তিতা জানিয়া লইবেন; সহবাসী জনের নিকট হইতে তাঁহাদের শীল (চরিত্র), বল (দৈহিক শক্তি), আরোগ্য (নীরোগতা), সন্ত্র্যোগ (ইর্ধ্যযোগ) ও নির্গর্বতা ও অচাঞ্চল্য জানিবেন; এবং প্রত্যক্ষভাবে অর্থাৎ নিজ্ঞ দর্শন দ্বারা তাঁহাদের সোম্যাক্ষতিত্ব ও অবৈরিত্ব (অক্তের সহিত শক্রত্বের অভাব) বুঝিয়া লইবেন।

কারণ, রাজবৃত্তি (রাজার ব্যবহার) প্রত্যক্ষ, পরোক্ষ ও অন্যমেয় এই তিন

প্রকারের হইয়া থাকে ( অর্থাৎ এইজন্মই পূর্ববর্ত্তা অমাত্য-গুণ পরীক্ষায় রাজা এই তিন প্রকার প্রমাণই ব্যবহার করিবেন বলিয়া উক্ত হইয়াছে)। যাহা নিজেই দেখিয়া লওয়া হয়, তাহাই প্রত্যক্ষ জ্ঞান; যাহা পর ( বা আপ্রজন ) ছারা উপদিষ্ট হয় তাহাই পরোক্ষ জ্ঞান; এবং কর্মসম্বন্ধে সম্পাদিত কার্য্যাংশ ছারা অসম্পাদিত কার্য্যাংশের ঈক্ষণ বা বোধই হইল অমুমেয় জ্ঞান। যেহেতু, রাজকার্য্যসমূহের মধ্যে এক সময়েই অনেক কার্য সম্পাদন করার আবশ্রক হয়, কর্মও অনেক প্রকারের হইতে পারে এবং এক এক কর্ম এক এক স্থানে করণীয় হইতে পারে, স্ক্তরাং দেশ ও কালের অতিক্রম না ঘটে, এইজন্ম রাজা ( স্বপক্ষে ব কার্য্য নিজের সম্পাদন করা সম্ভবপর নহে বলিয়া ) অমাত্যদিগের ছারা তাহা সম্পাদন করাইবেন। এই পর্যন্ত অমাত্যাদির কর্ম আলোচিত হইল।

রাজা সেইপ্রকার ব্যক্তিকে পুরোহিত নিযুক্ত করিবেন, যিনি অতি সমৃদ্ধ কুল ও শীল-বিশিষ্ট, যিনি ষড়ঙ্গ সহিত বেদবিভায়, দৈব বা জ্যোতিষশান্ত্রে, নিমিত্রশান্ত্রে (শকুনশান্ত্রে) ও দণ্ডনীতিশান্ত্রে অত্যন্ত শিক্ষিত এবং যিনি দৈব (দেবকৃত) ও মাহুষ (মাহুষকৃত) বিপদের—অথর্ব-মন্ত্রের প্রয়োগ ও অহ্যান্ত উপায়ন্তারা প্রতীকার করিতে সমর্থ। শিশ্য যেমন আচার্য্যের, পুত্র যেমন পিতার ও ভূত্য যেমন স্বামীর অহুবর্ত্তন করে, (রাজাও) তেমন সেই পুরোহিতের অহুবর্ত্তন করিবেন।

এমন ব্রাহ্মণ (পুরোহিত) দারা সংবর্দ্ধিত, মন্ত্রিগণের মন্ত্রণাদারা সংস্কৃত ও শাস্ত্রোক্ত বিধানের অনুষ্ঠানপর হইলে ক্ষাত্রধর্ম বা ক্ষত্রিয়কুল, শস্ত্র-সাহায্য ব্যতিরেকেও, একাস্তভাবে অজেয় (অলভ্য) বস্তুও জয় করিয়া লইতে প্রীরে॥১॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্বে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে
মন্ত্রী ও পুরোহিতের নিয়োগ-নামক নবম অধ্যায় সমাপ্ত।

#### দশম অধ্যায়

৬ৡ প্রকরণ—উপধা বা **ছলরীভিতে অমা**ত্যগণের শৌচ ও অশৌচ পরীক্ষা

অমাত্যদিগকে দামান্ত অধিকরণে ( অধিকারপদে ) নিযুক্ত করিয়া, ( রাজা ) মন্ত্রী ও পুরোহিতের সহিত যুক্ত হইয়া তাঁহাদিগকে ( অমাত্যগণকে ) (বক্ষ্যমাণ ) উপধা বা ছলদ্বারা ( শোচাশোচ সম্বন্ধে ) পরীক্ষা করিয়া লইবেন।

(রাজা) পুরোহিতকে স্মাজ্য (অর্থাৎ যক্তকরণে অযোগ্য নীচকুলোম্ভব) জনকে যজ্ঞ করাইতে ও (বেদাদি) পড়াইতে নিযুক্ত করিবেন এবং সেই পুরোহিত তজ্জ্য (রাজার প্রতি) রুষ্ট হইলে, তিনি (রাজা) তাঁহাকে নিজের অধিকারপদ হইতে অপসারিত করিবেন। সেই তিরম্বত পুরোহিত (তথন) (বক্ষামাণ) সঞ্জি-নামক গৃঢ়পুরুষগণের সহায়তায়, শপ্থপূর্বক মমাতাকে (নিম্বর্ণিত উপায়ে) উপজাপিত (অর্থাৎ রাজা হইতে ভেদ্যুক্ত) করিবেন। তিনি এইরূপ বলিবেন—"আমাদের এই রাজা অধার্মিক। আমাদের উচিত হইবে তাঁহার স্থানে অন্য এক ধার্মিক ব্যক্তিকে নিবেশিত করা—( এখন ) শেই (নব নিবেশ্যমান) ব্যক্তি রাজার নিজ বংশসম্ভূত কেহই হউন, বা **তাঁ**হার কোন অবরুদ্ধ (পুত্রাদিই) হউন, কিংবা উচ্চকুলোম্ভব কোন সর্বাঞ্জন-পূঞ্জিত দামন্তরাজই হউন, অথবা কোন অটবীপতিই হউন, বা আমাদের সকলের বিবেচনায় উপযুক্ত বলিয়া সমর্থিত অন্ত কোন ব্যক্তিই হউন। এই মত অন্ত দকলেরই অন্নাদিত, এখন এই বিষয়টি আপনার কেমন লাগে ?" যদি সেই উপজাপিত অ্যাত্য এই প্রকার মত প্রত্যাখ্যান করেন, তাহা হইলে তাহাকে ভূচি (অর্থাৎ রাজভক্তিযুক্ত) মনে করা হইবে। ইহার নাম **ধর্ম্বোপধা** (অর্থাৎ ধর্মবিষয়ক কথাদারা ছলনাপূর্ব্বক পরীক্ষণরীতি)।

সেনাপতিকে (রাজা) কোন অপূজ্য ব্যক্তির প্রতি সৎকার প্রদর্শন করিতে বলিবেন, এবং সেনাপতি তাহা করিতে অস্বীক্রত হইলে (তিনি) তাঁহাকে পদ্চ্যুত করিবেন—এইভাবে (অপমানিত হইয়া সেনাপতি) সত্ত্তি দ্বারা (তন্নামক গৃঢ়পুরুষগণদ্বারা) এক একটি অমাত্যের নিকট লোভনীয় অর্থ উপস্থাপিত করিয়া, রাজার বিনাশের জন্ম উপজাপিত করিবেন (অর্থাৎ পূর্কোক্ত উপায়ে মতামত জিজ্ঞাসা করিয়া রাজবিনাশে অমাত্যকে প্রবর্ত্তিত করিবেন)। তিনি এইরূপ বলিবেন—"অন্য সকলেরই এই বিষয়ে অন্থমোদন আছে। আপনার মত কি ?"

সেই অমাত্য এই মত প্রত্যাখ্যান করিলে তাঁহাকে শুচি বলিয়া ধরিতে হইবে। ইহারই নাম **অর্থোপধা** (অর্থাৎ ধনলাভবিষয়ক কথান্বারা ছলনাপ্র্বক পরীক্ষণরীতি)।

কোন পরিব্রাজিক। (ভিক্ষকী)—ি যিনি রাজার অন্তঃপুরে মহিষীগণের বিধাসের পাত্রী ও তাঁহাদের দারা সম্পূজিতা—এক এক জন মহামাত্রকে (প্রধান অমাত্যকে) উপজাপিত করিবেন। তিনি এইরূপ বলিবেন—"রাজমহিষী আপনাকে কামনা করেন এবং তিনি আপনার সমাগমের সব উপায়ও স্থির করিয়াছেন। আপনার অনেক অর্থলাভও হইবে।" সেই মহামাত্র যদি এই প্রকার বাক্য প্রত্যাখ্যান করেন, তাহা হইলে তিনি শুচি বলিয়া বিবেচিত হইবেন। ইহারই নাম কামোপধা (অর্থাৎ কামবিষয়ক কথালারা ছলনাপূর্ক্তর পরীক্ষণ-রীতি)।

প্রবহণ (নৌকাবিশেষ বা কণীরথ নামক পাল্কী) ব্যবহার করিয়া গোষ্ঠী-কোতুক সম্পাদন করার জন্ত (রাজার বিশ্বাসভাজন) কোন এক অমাত্য অন্তান্ত সব অমাত্যকে একত্র মিলিত করিবেন। তন্নিমিত্তক উদ্বেগে রাজা তাঁহাদিগকে (অর্থ ও মান হইতে অপসারিত করিয়া) অবরুদ্ধ করিবেন। রাজাবারা ইতিপূর্দের অপমানিত ছাত্রবৃত্তিধারী কাপটিক নামক গৃঢ়পুরুষ সেই অমাত্যগণের মধ্যে যাঁহারা অর্থ ও মান হইতে রাজকর্তৃক চ্যুত হইয়াছেন তাঁহাদের প্রত্যেককে এইভাবে উপজাপিত করিবে—"এই রাজা অসৎ মার্গে প্রবৃত্ত। আমরা তাঁহাকে সহসা হত্যা করিয়া অন্ত একজনকে রাজপদে বসাইব। এই বিষয়ে সকলেরই মৃত আছে, আপনার অভিমত কি ?" যে অমাত্য এইরূপ বাক্য প্রত্যাখ্যান করিবেন তাঁহাকে শুচি বলিয়া বৃত্তিতে হইবে। ইহার নাম ভারোপাদা (অ্থাৎ ভয় প্রাক্শিক্সক ছলনাগারা চরিত্র-পরীক্ষা)।

এই চারি প্রকার উপধাদারা শোধিত অমাত্যগণের মধ্যে যাহারা ধর্ম্মোপধা-বিষয়ে শুদ্ধ বলিয়া পরিক্রাত হইয়াছেন তাঁহাদিগকে ধর্মান্থীয় (তৃতীয় অধিকরণ দ্রপ্রয়) ও কণ্টকশোধন (চতুর্থ অধিকরণে দ্রপ্রয়)-বিষয়ক কার্য্যে নিযুক্ত করিবেন। যাহারা অর্থোপধাবিষয়ে শুদ্ধ তাঁহাদিগকে সমাহর্ত্তা (রাজকর-সংগ্রহকারী অধ্যক্ষবিশেষ) ও সন্ধিধাতা (রাজকোষ নিধানকরণে ব্যাপৃত অধ্যক্ষবিশেষ) এই উভয় অধ্যক্ষের ধনসংগ্রহ ও ধননিধান কার্য্যে নিযুক্ত করিবেন। যাহারা কামোপধা-বিষয়ে শুদ্ধ তাঁহাদিগকে (রাজার) বাহ্ম ও আভ্যন্তর বিহারসাধনভূত স্ত্রীলোক ও মহিষীদিগের রক্ষাকার্য্যে নিযুক্ত করিবেন।

এবং খাঁহার। ভয়োপধাবিষয়ে শুদ্ধ তাঁহাদিগকে (তিনি) নিজ সমীপবর্ত্তী ( অর্থাৎ শরীররক্ষাদি ) কার্য্যকলাপে নিযুক্ত করিবেন। ( কিন্তু, ) খাঁহারা উক্ত চারি-প্রকার উপধাবিষয়ে শুদ্ধ বলিয়া সিদ্ধ হইয়াছেন তাঁহাদিগকে ( তিনি ) মিল্লিপদে নিযুক্ত করিবেন। আবার খাঁহারা সর্ব্ধপ্রকার উপধাবিষয়ে অশুচি বলিয়া সিদ্ধ হইয়াছেন, তাঁহাদিগকে থনি, দ্রব্যবন, হস্তিবন ও নানাপ্রকার কর্মান্তে বা কারখানায় ( অর্থাৎ সেইরূপ শারীর আয়াসবহল কার্য্যে ) নিযুক্ত করিবেন।

পূর্ব্বাচার্য্যগণেরই এইরপ ব্যবস্থা যে ধর্ম, অর্থ ও কাম এই ত্রিবর্গ ও ভয়
—এই চারি প্রকারের উপধাদারা পরীক্ষিত হইয়া শুদ্ধ বলিয়া যে যে অমাত্য সিদ্ধ
হইবেন, তাঁহাদিগকে তাঁহাদের শুদ্ধির অন্তর্মপ নিজ নিজ উপযোগী কার্য্যে রাজা
নিয়োজিত করিবেন ॥১॥

কিন্তু, কৌটিল্যের এই সিদ্ধান্ত যে, রাজা অমাত্যগণের শোঁচ পরীক্ষায় যেন কথনই নিজেকে বা দেবীকে (পট্মহিষীকে) লক্ষ্য বা বিষয়ীভূত করিবেন না (অর্থাৎ টানিয়া আনিবেন না) ॥२॥

দোষরহিত অমাত্যের উপধাদারা পরীক্ষার্থ বঞ্চনকার্য্যে রাজা কথনও হস্তক্ষেপ করিবেন না, ইহা শুদ্ধ জলকে বিষমিশ্রিত করার ন্যায় অন্যায় কার্য্য হইবে। কারণ, ইহাই অধিকতর সহুব যে, একবার কোন অমাত্য (এইপ্রকার ছলনাদির ফলে) ঘুইবৃদ্ধি হইয়া উঠিলে, তাঁহার প্রতীকারের ঔষধ আর পাওয়া ষাইবে না ॥৩॥

সন্তবান্ ( অমাত্যদিগের ) ধৃতিতে অবস্থিত বৃদ্ধিকে যদি চারি প্রকার উপধানদারা কল্যিত করা যায়, তাহা হইলে তাঁহাদের সেই চতুর্বিধা বৃদ্ধি ( অকল্যাণের ) শেষ দীমা পর্য্যন্ত না থাইয়া নিবন্তিত হইবে না (অর্থাৎ সেই অমাচ্যেরা তাঁহাদের কল্যিত বৃদ্ধির প্রয়োগে রাজার অহিত সাধন করিতেও পারেন ) ॥॥॥

অতএব, রাজা উক্ত চতুর্বিধ উপধার আচরণে কোন বাহ্য বস্তুকেই লক্ষ্য করিয়া **সত্রি**-নামক গৃঢ়পুরুষদারা অমাত্যগণের শোচ ও অশোচ পরীক্ষা করিয়া লইবেন ॥৫॥

কোটিলীয় অর্থশাম্বে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে উপধারার।
অমাত্যগণের শৌচাশোচ পরীক্ষা-নামক দশম অধ্যায় সমাপ্ত।

#### একাদশ অধ্যায়

# ৭ম প্রকরণ—গৃ**ঢ়পুরুষ দিগের নিয়োগ**

রোজা) প্রাপ্তক্ত প্রকরণে বর্ণিত উপধা-চতুষ্টয়দারা অমাত্যবর্গের শুদ্ধতা উপলন্ধি করিয়া গৃঢ়পুরুষদিগকে নিযুক্ত করিবেন। এই গৃঢ়পুরুষ বা গুপ্তচরগণ নানাবিধ হইতে পারে, যথা—(১) কাপটিক (কপটর্বত্ত ছাত্র), (২) উদান্থিত (উদাসীন সন্মাসী), (৩) গৃহপতিক (কর্ভূত গৃহস্থ), (৪) বৈদেহক (বিণিক্) ও (৫) ভাপসের (তপস্থাকারীর) বেষধারী এবং (৬) সত্রী নানাশান্ত্রের অধ্যয়নকারী বলিয়া পরিচিত গুপ্তচর), (৭) ভীক্ষ্ণ (শরীর-নিরপেক্ষ অতিসাহসী ব্যক্তি), (৮) রসদ (বিষপ্রদায়ী লোক) ও (২) ভিক্ষুকী (পরিব্রাজিকা—প্রভৃতি)।

অত্যের ছিদ্রজ্ঞাতা, প্রগণ্ভ ছাত্রবেষী জনকে কাপটিক বলা হয়। তাহাকে অনেক ধন ও সম্মানদারা উৎসাহিত করিয়া রাজমন্ত্রী (অর্থাৎ প্রধান অমাত্য) এইরূপ বলিবেন—"রাজাকে ও আমাকে সর্কবিষয়ে প্রমাণভূত মনে করিয়া তৃমি যাহার (অর্থাৎ যে সব অমাত্যাদির) যাহা অকুশল (অক্যায় কার্য্য) দেখিবে, তাহা তথনই আমাদিগকে জানাইবে।"

প্রাক্ত ও শুচিযুক্ত, (কিন্তু,) প্রব্রজ্যা বা সন্ন্যাস হইতে চ্যুত (মতান্তরে, সন্ন্যাসে দীক্ষিত ) ব্যক্তিকে উদান্থিত বলা হয়। প্রচুর নগদ টাকা ও অনেক শিশ্ব লইয়া এই ব্যক্তি বার্ত্তাকর্মের জন্ম নির্দ্ধারিত ভূমিতে যাইয়া (শিশ্বগণদ্বারা) বার্ত্তাকর্ম্ম (অর্থাৎ কৃষি, বাণিজ্য ও পশুপালন-কর্ম) করাইবে। সেই বার্ত্তাকর্মদানীদ্বারা, সর্বপ্রকার প্রব্রজ্ঞিতদিগের (অর্থাৎ বোদ্ধ-জৈন-পাশুপতাদি সন্ম্যাসীদিগের) গ্রাসাচ্ছাদন ও নিবাসের ব্যবস্থা করিবে। এইপ্রকার (গ্রাসাচ্ছাদন ও নিবাসের ব্যবস্থা করিবে। এইপ্রকার (গ্রাসাচ্ছাদন ও নিবাসের) বৃত্তি যাহারা কামনা করে তাহাদিগকে (এই উদান্থিত) উপজাপিত করিবে (অর্থাৎ ফুসলাইয়া স্ববশে রাথিবে) এবং এইরূপ বলিবে—"তোমরা পরিগৃহীত (বোদ্ধাদি-) বেষেই রাজার প্রয়োজন অ্যুষ্ঠান করিবে, এবং ভক্ত (ধান্যাদি) ও ক্লেজ্কনের সময় উপস্থিত হইলে আমার নিকট আসিবে।" সর্বপ্রকার প্রব্রজ্ঞতেরা ব্রাহাদের নিজ্ঞ নিজ বর্গকে উপজাপিত করিয়া নিজ বশে রাথিবে।

রুষিবৃত্তিতে ক্ষয়প্রাপ্ত ( দরিত্র ) অথচ প্রজ্ঞা ও শৌচযুক্ত কর্যককে গৃহপতিব্যঞ্জন বলা হয়। এই ব্যক্তি রুষিকর্মের জন্ম নিন্দিষ্ট ভূমিতে ঘাইয়া উদান্থিত-

নামক গৃঢ়পুরুষের মতই পূর্ব্ববৎ কার্য্য করিবে ( অর্থাৎ গ্রাসাচ্ছাদন ও নিবাসের ব্যবস্থাপূর্ব্বক অন্তান্ত কর্যকবেষধারী পুরুষদিগকে স্ববশে রাথিবে )।

বাণিজ্যবৃত্তিতে ক্ষয়প্রাপ্ত (দরিন্ত্র ), অথচ প্রক্তা ও শৌচযুক্ত বাণিজককে বৈদেহকব্যঞ্জন বলা হয়। এই ব্যক্তি বাণিজ্যকর্ম্মের জন্ম নির্দিষ্ট ভূমিতে ঘাইয়া পূর্ববিং সমান কার্য্য করিবে (অর্থাৎ উক্তরূপ ব্যবহারদ্বারা অন্যান্ম বাণিজকবেষধারী পুরুষদিগকে স্ববশে রাথিবে )।

মৃণ্ডিতমস্তক (বৌদ্ধভিক্ষ্ক ও ক্ষপণকাদি) বা জটাধারীর (শৈবপাণ্ড-পতাদির) বেষে অবস্থানকারী ব্যক্তি যদি নিজের জীবিকার জন্ম রাজকার্য্য করিতে কামনা করে, তাহা হইলে তাহাকে তাপসব্যঞ্জন বলা হয়। সেই ব্যক্তি নগরের নিকটে (উপকর্ণে) বহুসংখ্যক মৃগু ও জটিল, শিয়গণসহ বাস করিয়া শাক বা তৃণমৃষ্টি একমাস বা হইমাস অন্তর প্রকাশ্যভাবে থাইবে (যেন লোকেরা তাহাকে নিরাহার তাপদ বলিয়াই জানিতে পারে, কিন্তু, দে গোপনভাবে অভীষ্ট আহার্য্য खरा थारेरा भातिरत এवः भृर्स्कां के रितारकराञ्चन भृष्भूकरवत मिराग्रता **এ**ই তাপসব্যঞ্জন গৃঢ়পুরুষকে তদীয় সমিদ্ধযোগের জন্য (অর্থাৎ তাঁহার তপস্থা-প্রভাবে অন্তকে ধনাদি দারা সমৃদ্ধিযুক্ত করিতে পারেন—এই হেতু ) তাঁহাকে খুব পূজা সৎকার দেখাইবে। এবং এই তাপসের শিয়ের। এইরূপ আবেদন করিবে —"এই সিদ্ধ পুরুষটি সামেধিক অর্থাৎ তিনি ভাবী সম্পত্তি প্রভৃতির কথা সকলকে বলিয়া দিতে পারেন।" সমেধা অর্থাৎ ভবিশ্বৎ সম্পদ্বিষয়ে প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করার অভিলাষে তৎসমীপে আগত ব্যক্তিদিগের অঙ্গস্থ চিহ্নাদি পরিদর্শন করিয়া, (মতান্তরে, শুভাশুভপ্রতিপাদক জ্যোতিধাঙ্গবিষ্ঠাদারা) ও শিয়গণের (নেত্রবিলাসাদি) ইঙ্গিত বুঝিয়া, তিনি (সেই সামেধিক তাপস) তাহার্দিগৈর নিজকুলে নিষ্পন্ন কার্য্যাদির **আদেশ** জানাইবেন অর্থাৎ তাহা ব্যক্ত করিবেন। আবার (প্রশ্নকর্তার) কার্য্যলাভের অল্লতা, তাহার গৃহে অগ্নিদাহ চোরভয়ের সম্ভাবনাবিষয়ও (তিনি) বলিবেন, এবং দূষ্য বা রাজছেষকারীর বধ, রাজসন্তোষে বৃহৎ দান, বিদেশে সস্থৃত বৃত্তান্তের জ্ঞান, 'তোমার অভ্য বা আগামীকল্য এই প্রকার ঘটনা ঘটিবে' অথবা 'অন্ত বা কল্য রাজ াতোমার সম্বন্ধে এইরূপ বিধান করিবেন' ইত্যাদি বিষয়সমূহ (প্রশ্নোন্তরে) ব্যক্ত করিবেন।

এই তাপদের সেই আদেশবাক্য গৃঢ় সত্রীরা যাথার্থ্যে পরিণত করিবে (অর্থাৎ তাপদের আদিট অগ্নিদাহাদি ঘটাইয়া তাপদের কথার যথাযথত্ব প্রমাণিত করিবে)। যদি প্রশ্নকর্তারা সন্তব্ধ প্রজ্ঞা ও বাগ্যিত্বশক্তিসম্পন্ন হয়েন, তাহা হইলে তাঁহাদিগকে রাজার নিকট হইতে সম্থাব্য (ধনলাভাদি) ও মন্ত্রীর সহিত সংযোগের
কথাও আদেশরূপে বলিয়া দিবেন। (মন্ত্রীর সহিত সাক্ষাৎকার ঘটিলে) সেই
মন্ত্রী ও তাঁহাদিগের (সন্ত-প্রজ্ঞাদির অন্তর্মণ) বৃত্তি ও কর্ম পরিকল্পনা-বিষয়ে যত্মবান্
হইবেন। যাহারা (কাপটিকাদি গৃঢ়পুক্য হইতে পরিজ্ঞাত) কোন কারণবশতঃ
ক্রেদ্ধ বলিয়া বিজ্ঞাত, তাহাদিগকে (মন্ত্রী) অর্থ ও সম্মানদারা শাস্ত করিবেন।
আর যাহারা অকারণে ক্রেদ্ধ ও রাজার দেষকারী তাহাদিগকে (তিনি) গোপনে
বধ করাইবেন।

অর্থ ও সমানদার। রাজকর্তৃক পূজিত গৃঢ়পুক্ষগণ (অমাত্যাদি) রাজোপজীবী-দিগের শোচ পরীক্ষা করিয়া জানিবে। কাপটিকাদি পাঁচ প্রকার গৃঢ়পুক্ষদিগকে সংস্থ-নামে প্রকীর্ত্তিত করা হয়। (রাজপ্রয়োজনে তাহারা একস্থানে অবস্থান করিয়াই গুপ্তচরের কার্য্য করে বলিয়া ইহাদের নাম সংস্থ) ॥১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে গৃঢ়পুরুষের উৎপত্তি নামক একাদশ অধ্যায় সমাপ্ত ।

### দ্বাদশ অধ্যায়

৮ম প্রকরণ-- গৃঢ়পুরুষদিগের প্রণিধি বা কার্য্যে ব্যাপৃতি

ষাহারা রাজার সহিত সম্বন্ধ্যুক্ত বলিয়া তাঁহার অবশ্রপোয়া, তাহারা যদি সামুদ্রিকাদি লেক্ষণশাস্ত্রা, অঙ্গবিশ্র্যা (শিক্ষাব্যাকরণাদি ষড়ঙ্গশাস্ত্রা, অথবা অঙ্গপরিদর্শনদারা গুভাগভ-জ্ঞাপনবিহ্যা), জন্তুকবিশ্রা (বশীকরণ ও অন্তর্জানা-দিবিহ্যা—ইক্রহত এক দানবের নাম ছিল জন্তক), ইক্রেজালবিস্তা, আশ্রমধর্ম্ম (মন্নাদিশাস্ত্রে প্রতিপাদিত আশ্রমধর্ম ), নিমিত্র বা শকুনশাস্ত্র ও অন্তর্জকেবিস্তা (নানাদিকে শকুনিকৃজন হইলে ইহার ফলাফল কি হইতে পারে তদ্বিজ্ঞাপক শাকুনশাস্ত্রান্তর্জ্ব অধ্যায়বিশেষের নাম অন্তরচক্র—বরাহমিহিরকৃত বৃহৎসংহিতাগ্রন্থের ৮৭তম অধ্যায় ক্রইব্য )—প্রভৃতি এবং অন্যান্ত্র সংসক্রশাস্ত্রের, (য্থা—কামশাস্ত্র ও ইহার সহিত সম্প্রক্ত গীতবান্তাদিশাস্ত্রের ) অধ্যয়নকারী হয়, তাহা হইলে তাহাদিগকে স্বত্রী বলা হইয়া থাকে।

যাহারা নিজ জনপদে শরীরনিরপেক্ষ হইয়া নিজের শোর্য্যে নির্ভর করিয়া

হস্তী বা ( ব্যাড্রাদি হিংশ্রজন্তর সহিত দ্রব্যলাভের লোভে যুদ্ধাদি করে তাহাদিগকে তীক্ষ্ণ বলা হয়।

যাহারা আত্মীয়-স্বন্ধনের প্রতি স্নেহ-বিহীন, অত্যস্ত ক্রুরস্বভাব ও অলস ( অতুৎসাহী ) তাহাদিগকৈ **রুসদ** বলা যায় (রস বা বিষপ্রয়োগ করিতেও তাহার। সংকোচ বোধ করে না, এইজন্মই তাহাদের এইপ্রকার নাম )।

জীবিকার ভোগার্থিনী দরিন্দ্র, প্রাগলভ বিধবা ব্রাহ্মণা যদি রাজস্থঃপুরে সৎকার লাভ করিয়া (প্রায়শঃ) মহামাত্রগণের কুলে বা গৃহে যাতায়াত করে, তাহা হইলে তাহাকে পরিব্রাজিকা (অর্থাৎ তদ্ধপিণী গুপ্তচর) বলা যায়। ভাবে মুণ্ডা (বৌদ্ধভিক্ষকী) ও বুষলী (শূদ্রা) নামে পরিচিতাদিগকেও বুঝিতে হইবে। এই পর্যান্ত **সঞ্চার**-নামে আখ্যাত সত্রিপ্রভৃতির লক্ষণ বলা হইল (তাহারা সর্বত্র সঞ্চরণ করিয়া রাজপ্রয়োজনে চার বা গুপুবার্তা সংগ্রহ করে বলিয়া তাহাদের এই সঞ্চার নাম )। রাজা তদীয় নিজ রাজ্যে উক্ত সঞ্চার-নামক গৃঢ়পুরুষদিগকে, তাহাদিগের ভক্তি (রাজ-ভক্তি) ও দামর্থ্য (কার্য্য-সম্পাদনপট্টতা ) পর্য্যালোচনা করিয়া, এবং সকলের বিশ্বসনীয় তাহাদিগের দেশ, বেষ, শিল্প, ভাষা ও আভিজাত্যের ছলনা নিন্দিষ্ট করিয়া দিয়া, নিম্নলিথিত অপ্তাদশ মহামাত্র (মহামাত্য বা তীর্থ)-গণের উপর চার সংগ্রহে নিযুক্ত করিবেন। এই অষ্টাদশ মহামাত্রের নাম—যথা, (১) মন্ত্রী (প্রধান অমাত্য), (২) পুরোহিত ( রাজপুরোহিত ), (৩) সেনাপতি ( সেনাবিভাগের প্রধান অমাত্য; মতান্তরে, মহাসেনানায়ক), (৪) যুবরাজ (যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত রাজপুত্র ), (৫) দৌবারিক ( রাজকুলের প্রধান প্রতিহারী ), (৬) অন্তর্ক্বংশিক ( অন্তঃপুরাধিকৃত প্রধানপুক্ষ ), (৭) প্রাশাস্তা ( কারাগারের প্রশাসনকারী, এই তালিকার এই শব্দটির স্থানে মহাভারতে 'কারাগারাধিকারী' ও রামায়ণে 'বন্ধনা-গারাধিকত' শব্দের প্রয়োগ দেখা যায়), (৮) সমাহর্তা (রাজকরাদির সংগ্রহকারী প্রধান অধ্যক্ষ ), (১) সন্ধ্রিধাতা (রাজভাণ্ডারে সঞ্চিত ধনাদির নিধানকারী ), (১০) প্রাদেষ্ট্রা ( কণ্টকশোধনাধিকৃত ফৌজনারীর প্রধান বিচারক ), (১১) নায়ক (কেহ কেহ শন্টি দারা দেনানায়ক বুঝেন। অষ্টাদশ তীর্থের তালিকায় রামায়ণ ও মহাভারতে এই স্থানে নগরাধাক্ষ শদের ব্যবহার দেখা যায়। তবে কি শন্ধটির পাঠ মূলে নাগরিক হইবে ? ), (১২) পৌরব্যবহারিক (পুরবাসী-দিগের ব্যবহার বা আইন প্রয়োগ-সম্বন্ধে আদালতের প্রধান বিচারক, অর্থাৎ ধর্মাধ্যক্ষ ), (১৩) কার্মান্তিক ( কর্মান্ত বা থনি ও অক্যান্য কার্থানার প্রধান পর্যাবেক্ষক), (১৪) মন্ত্রিপরিষদধ্যক্ষ (অর্থাৎ যিনি অমাত্যপরিষদের অধ্যক্ষ বা সভাধ্যক্ষ), (১৫) দশুপাল (সেনারক্ষার অধিপতি), (১৬) তুর্গপাল (তুর্গরক্ষার প্রধান পর্যাবেক্ষক), (১৭) অন্তরপাল (রাজ্য-সীমারক্ষক), (১৮) আটবিক (অটবীপাল)।

(মন্ত্রি প্রভৃতি অষ্টাদশ) মহামাত্যদিগের বাহ্ন সমাচার, তীক্ষ-নামক সঞ্চারেরা তাঁহাদিগের ছত্র, ভূঙ্গার, ব্যক্তন, পাত্রকা, আসন, যান ও ( অখাদি ) বাহনাদির উপগ্রহণদারা সেবাপরায়ণ হইয়া সব সমাচার জানিয়া লইবে এবং সত্রীরা সেই সমাচার সংস্থদিগের নিকট নিবেদন করিবে।

তাঁহাদিগের আভ্যন্তর সমাচার, রসদ নামক সঞ্চারেরা—পাঁচক আরালিক (পকভক্ষাকার বা পকমাংসাদি বিক্রেতা), স্নানকারক, সংবাহক (অঙ্গমর্দক), আন্তরক (শ্যার আন্তরণকারী), কল্পক (নাপিত), প্রসাধক প্রসাধন বা অলম্বারাদি বিধানকারী) ও জলহারকের বেষধারী হইয়া, এবং কুজ, বামন, কিরাভ, মুক (বোবা), বিধির, জড় (বোকা) ও অন্ধের বেষধারী হইয়া এবং নট (অভিনেতা), নর্ত্তক, গায়ন (গান্কারী), বাদক (বাছকারী), বাগ্জীবন (পুরার্ত্তের কথক, অথবা নানারপ কোশলময় শকাদি উচ্চারণ করিয়া তামাসা প্রদর্শনকারী) ও কুশীলেব (লঙ্গ্মনপ্রবাদিবারা উপজীবিকাকারী খেলক বা চারণ) সাজিয়া এবং স্বীলোকেরাও (অর্থাৎ যে স্ত্রীলোকেরা গুপ্তচরের কার্য্যে নিযুক্ত তাহারাও) সব সংবাদ জানিয়া লইবে এবং ভিক্কীরা (রসদাদিবারা বিজ্ঞাত) সেই আভ্যন্তর সংবাদ সংস্থদিগের নিকট অর্পণ করিবে।

শংস্থদিগের, শিশ্যেরা তাহাদের (রচিত) সাংকেতিক লিপিসংযোগে তাহাদের পরিজ্ঞাত চারসমূহ (রাজসমীপে) সঞ্চারিত বা প্রেরিত করিবে। (কিন্তু সর্তকতা এইভাবে অবলম্বন করিতে হইবে) যেন সংস্কেরা বা সঞ্চারীরা নিজেদের মধ্যেই একে অক্তকে চিনিতে না পারে (কারণ, তাহা হইলে তাহারা একের প্রাপ্ত সমাচারই নিজেরও প্রাপ্ত বলিয়া জানাইয়া রাজাকে বঞ্চিত করিতে সমর্থ হইয়া রাজ-প্রয়োজন নই করিতে পারে)।

যদি (অমাত্যাদির অন্তঃপুরে) ভিক্ষ্কীদের প্রবেশ নিবিদ্ধ থাকে, তাহা হইলে ঘারপালেরা পরস্পরায় (অর্থাৎ প্রথম ঘারপাল বিতীয়কে, বিতীয়টি স্থতীয়কে—এইভাবে) ভিতরের সংগৃহীত চার বা গুপ্তসমাচার বাহির করিয়া ফোলিবে (অর্থাৎ রাজান্তিকে প্রেরণার্থ সংস্থদিগের নিকট অর্পণ করিবে);— (এই উপায় অবলম্বিত না হইতে পারিলে) অন্তঃপুরের পরিচারকদিগের মাতা বা পিতা সাজিয়া গৃঢ়পুরুষেরা সমাচার বাহির করিবে; অথবা, (অন্তঃপুরুত্ব রমণী-দিগের কেশসংস্কারাদি) শিল্পকর্মের রচয়িত্রীরা কিংবা গানকারিণীরা বা অন্তপ্রকার দাসীজনেরা সমাচার বাহির করিবে; অথবা (ভিতরের অন্তান্ত গৃঢ়পুরুষেরা গানরচনা, শ্লোকরচনা, (সাংকেতিক) বাভ্যবাদন ও ভাওদ্রব্যের সহিত লুকায়িত লেথ বা অন্তপ্রকারের সংকেত প্রকাশদ্বারা সমাচার বাহির করিবে। অথবা (গৃঢ়-পুরুষেরা) দীর্ঘকালের রোগ বা উন্সাদের ছলনা করিয়া, কিংবা (ভিতরে) অয়ি লাগাইয়া ও বিষদান করিয়া (সংভ্রম উপস্থিত হইলে) দৃঢ়ভাবে সেইস্থানের সব সমাচার লইয়া বাহিরে নির্গত হইয়া আসিবে।

তিনজন গৃঢ়পুরুষ (কোন সমাচার সম্বন্ধে) সমান কথা বলিলে তাহা বিশ্বাস-যোগ্য বলিয়া গৃহীত হইবে। বার বারই যদি তাহারা পরস্পরবিরোধী সমাচার আনয়ন করে, তাহা হইলে তাহাদিগকে গোপনে দণ্ড দিতে হইবে, অথবা কার্য্য হইতে বিতাড়িত করা হইবে।

(উক্ত গৃত্পুক্ষণণ ছাড়াও) কন্টকশোধন-নামক অধিকরণে উক্ত অপসর্প বা গৃত্পুক্ষণণকে এইভাবে নিযুক্ত করিতে হইবে, যেন তাহারা শক্রদিণের রাজ্যেও তাহাদের নিকট হইতে বেতন পাওয়ার ব্যবস্থা করিয়া দেখানেই (তাহা-দিগের দেবার্থ) বাদ করিবে। তাহা হইলেই তাহারা দেখান হইতে অনায়াদে গুপ্ত সমাচার বাহির করিয়া পাঠাইতে পারিবে। এইরূপ গৃত্পুক্ষদিগকে উভয়-বেতন বলা হয় (যেহেডু, তাহারা বিজিগীয় ও তাঁহার শক্র—এই উভয়ের নিকট হইতে বেতনগ্রাহী হয়)।

রোজা) উভয়বেতন গৃঢ়পুরুষদিগকে নিযুক্ত করার সময়ে তাহাদিগের স্থ্রী ও পুত্রদিগকে নিজ অধীনে রাখিবেন এবং শক্রুবারা প্রেরিত উভয়বেতন চরদিগকেও উত্তমরূপে জানিয়া রাখিবেন এবং তাহাদের গুদ্ধিসম্বন্ধে জ্ঞাতব্য বিষয় তৎপ্রকার চরন্বারাই (অর্থাৎ উভয়বেতন চরদ্বারাই) জানিবেন ॥১॥

এইভাবে (রাজা) শত্রু, মিত্র, মধ্যম ও উদাসীন রাজাদিগের উপর ও তাঁহাদিগের (মন্ত্রি-সেনাপতি প্রভৃতি) অষ্টাদশ তীর্থ বা মহামাত্রদিগের উপর গুপ্তচর নিযুক্ত করিবেন ॥२॥

(সেই শক্র প্রভৃতির) গৃহমধ্যে গুপ্তচরের কার্য্য সম্পাদন করিবার জন্ম (তিনি) কুজা, বামন ও নপুংসক, শিল্পজ্ঞ স্ত্রীলোক, বোবা ও অন্ত নানাবিধ ক্লেক্সজাতীয় পুরুষদিগকে নিযুক্ত করিবেন ॥৩॥ (তিনি তাঁহাদিগের তুর্গসমূহে চারসংগ্রহের জন্য ) বণিক্ (বা বৈদেহকব্যঞ্জন) পুরুষদিগকে, তুর্গসীমায় সিদ্ধ তাপসদিগকে (বা তাপসব্যঞ্জনদিগকে), রাষ্ট্রে বা জনপদে কর্মক (বা গৃহপতিব্যঞ্জন) ও উদাস্থিতদিগকে এবং তাঁহাদিগের জনপদ-সীমাতে ব্রজবাসীদিগকে (গোপালকদিগকে) সংস্থ-নামক গৃঢ়পুরুষরপে নিযুক্ত করিবেন ॥॥॥

(তিনি) শক্রদিগের কার্য্যকলাপ জানিবার জন্ম তাহাদিগের বনে, ক্ষিপ্রকারী বনচর, (বৌদ্ধজৈনাদি সম্প্রদায়ভূক্ত) শ্রামণ ও আটবিক প্রভৃতিকে চারশ্রেণীরূপে নিযুক্ত করিবেন ॥৫॥

এই প্রকারে (তিনি) শত্রুর নিযুক্ত তাদৃশ **অগূঢ়** বা অচ্ছন্ন বেষাদিধারী সঞ্চারী ও সংস্থ-নামক গৃঢ়পুরুষদিগকে তজ্জাতীয় অন্য গৃঢ়পুরুষদারা জানিয়া লইবেন ॥৬॥

যে রাষ্ট্রমুখ্যের। অরুত্য ( অর্থাৎ লাভবশতঃ শক্রর পক্ষে যোগদানে বিম্থ ), তাঁহাদিগকে ( রাজ। ), ( শক্ররাজ্যের ) রুত্যদিগকে ( অর্থাৎ উপজ্ঞাপ প্রভৃতি রারা যাহাদিগকে তাঁহার সবশে আনিবার সম্ভাবনা আছে তাঁহাদিগকে ) স্বপক্ষে আনিবার উপায় ব্ঝাইয়া দিয়া, শক্রর অপসর্প বা ওপ্তচরদিগের প্রবৃত্তি বা বৃত্তান্ত অবগত হ ওয়ার জন্ম রাষ্ট্রশীমাতে ( বাস ) কর।ইবেন ॥৭॥

> কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে বিনয়াধিকারিক নামক প্রথম অধিকরণে গুঢ়পুরুষ-প্রণিধি-নামক দাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

#### ত্রয়োদশ অধ্যায়

#### ৯ম প্রকরণ—**স্বরাজ্যে কৃত্যপক্ষ ও অকৃত্যপক্ষের রক্ষণ**

রোজার নিজের রাজ্যন্থিত যে সমস্ত অতুই প্রজা শত্রুর উপজাপবশতঃ ভেছ হইতে পারে তাহার। কুত্র, এবং যে সমস্ত তুই প্রজারা সেরপ হইতে পারে না তাহারা অকৃত্য—এই ছই প্রকার প্রজাকে কি ভাবে রক্ষা করা যায়—তাহাই এই প্রকরণে নির্ণীত হইয়াছে।) (মন্ত্রি-প্রভৃতি) মহামাতাদিগের উপর অপসর্পণ বা গুপ্তচরের কার্য্যের ব্যবস্থা করিয়া (রাজা) পুরবাসী ও জনপদবাসীদিগের উপরও অপসর্পণের ব্যবস্থা করিবেন (অর্থাৎ তাঁহার প্রতি প্রজাদিগের অন্তরাগ ও অপরাগের বিষয় গোপনে জানিবার জন্ত গৃঢ়পুরুষদিগকে নিযুক্ত করিবেন)।

সঞ্জিনামক গৃঢ়পুরুষেরা পরস্পরের মধ্যে কলছ উপস্থাপিত করিয়া তীর্থন্থান, সভাগৃহ, (থাত পানীয়াদির) গৃহ (অর্থাৎ দোকান), পূগ (বা দলবন্ধ কর্মকর-সমূহ) ও অন্যান্য জনসভ্যে নিম্নলিখিতভাবে বিবাদ উত্থাপন করিবে, যথা—"(কেবল) শুনাই গিয়াছে যে, এই রাজা সর্ব্ধপ্রকার-গুণসম্পন্ন। কিন্তু তাঁহার কোন গুণই লক্ষ্য করা যায় না। বরং তিনি পৌর ও জানপদদিগকে দণ্ড দিয়া ও তাহাদের উপর কর বসাইয়া পীড়িত করেন।"

উক্ত তীর্থাদি স্থানে যাহারা (উপরি উক্ত রাজনিন্দার) অসমোদন করিবে. তাহাদিগকে ও প্রথম নিন্দককে অন্য একজন সত্রী নিমোক্ত ভাবে বারণ করিবে। সে তাহাদিগকে এইরূপ বলিবে—"মাৎস্তস্তারে অভিভূত হইয়া ( অর্থাৎ বৃহৎ বুহৎ মৎস্থ ধেমন ক্ষুদ্র মৎস্থগুলিকে গিলিয়া থায়, তেমন অরাজকতার অবস্থায় সবলেরা তুর্বলকে সংপীড়িত করে—এই অবস্থায় পতিত হইয়া ) প্রজারা বৈবস্বত মহুকে নিজেদের রাজা নির্বাচিত করিয়াছিল। এবং তাহারা এইরূপ নিয়ম করিল ষে, রাজা তাহাদের নিকট হইতে ধান্যের ষষ্ঠাংশ ও পণ্যের (বিক্রয়-দ্রব্যের ) দশমাংশ ও **হিরণ্য** (নগদ টাকা ) ভাগধেয় বা কররূপে পাইবেন। এই ভাগধেয় ভৃতিরূপে পাইয়া রাজারা প্রজাদিগের যোগ ও ক্ষেমের ভার বহন করেন। তাহাদের উপর প্রযোজ্য দণ্ড ও কর তাহাদিগের পাপ নই করে এবং তাহাদিগের যোগ ও ক্ষেমের সাধক হয়। এই কারণে ( অর্থাৎ রক্ষা-কার্য্যের-ভৃতিরূপে ভাগধেয় এবং দণ্ড ও কর রাজার প্রাণ্য বলিয়া), আরণ্যক ঋষিরাও তাহাদিগের উষ্ণ (বা কণায় কণায় দংগৃহীত ধান্যাদি) হইতেও ষষ্ঠাংশ রাজীকে প্রদান করেন, (এবং তাঁহারা ভাবেন যে, ) 'ইহা সেই রাজার জন্য ভাগধেয় বা কর, যিনি আমাদিগকে রক্ষা করেন'। রাজারা ইনদ্র ও যমস্থানীয়, কারণ, তাঁহারা প্রত্যক্ষেই (প্রজাদিগের) অনুগ্রহ ও নিগ্রহ করিয়া থাকেন। এই রাজাদিগকে যে অবমাননা করে, তাহাকে দৈব দণ্ডও স্পর্শ করিয়া থাকে। ষ্মতএব; রাদ্ধাদিগকে কথনই অবমানিত করা উচিত নহে। এই প্রকার যুক্তিদারা ( সেই সত্রী রাজনিন্দক ) নীচ লোকদিগকে বারণ করিবে"।

(সত্রী গৃঢ়পুরুষেরা) সব কিংবদন্তী বা জনশ্রুতি জানিবে। (প্রজাদিগের মধ্যে) যাহারা জীবিকা-নির্বাহের জন্ম রাজার দন্ত ধান্ম, পশু ও হিরণ্যের উপর নির্জর করে, অথবা, যাহারা এই সমস্ত দ্রব্য রাজাকে তাঁহার বিপদ ও সম্পদের সময়ে প্রদান করিয়া তাঁহার উপকার করে, অথবা যাহারা রাজার প্রতি কুপিত তদীয় বান্ধব বা জনপদকে সেই কোপ হইতে নিবর্ত্তিত করে, অথবা যাহারা রাজার অমিত্র ও আটিবিককে (অটবীপালকে) শক্রভাব হইতে নিবারিত করে, তাহাদের তুইভাব ও অতুইভাব মৃগু ও জটিলের বেষধারী গুপ্তচরেরা জানিবে।

যাহারা রাজার প্রতি তুইভাবাপন্ন তাহাদিগকে (রাজা) অত্যধিকভাবে সৎকার প্রদর্শন করিবেন। আর, যাহারা তাঁহার প্রতি অতুষ্ট বা অপ্রসন্ন তাহাদের তুষ্টির জন্ম (তিনি) তাহাদিগকে অর্থদান ও সাম বা সাম্ববাদদারা প্রসাদিত বা সম্ভষ্ট করিবেন। অথবা, (তিনি) তাহাদিগকে (অর্থাৎ অতুষ্ট-জনদিগকে ) পরস্পর হইতে (ভেদনীতির প্রয়োগ দ্বারা) ভিন্ন করাইবেন একং তাহারা যাহাতে দামন্ত, আটবিক, রাজকুলসভূত ব্যক্তি ও অবকৃদ্ধ রাজপুত্রাদির উপর উপজাপ (ভেদ) চালাইতে না পারে, তজ্জ্ব্য তাহাদিগকে দেই সামস্তাদি হইতেও ভিন্ন করাইবেন। ইহাতেও যদি তাহারা অতুট্টই থাকিয়া যায়, তাহা হইলে (রাজা) তাহাদিগকে দণ্ড ও কর সাধনবিষয়ক অধিকারে নিযুক্ত করিয়া, তাহাদিগের উপর জনপদের বিদ্বেষ উৎপাদন করাইবেন। এইভাবে তাহারা জনপদের বিদেষ-ভাজন হইয়া উঠিলে, (তিনি) তাহাদিগকে গুপ্তহত্যা দারা বা জনপদের ( অর্থাৎ জানপদজনের ) কোপোৎপাদনদ্বারা দমিত করিবেন। পাছে বা ( এই অতুষ্টজনেরা ) শত্রুর পক্ষভূত আশ্রয়স্থল হইয়া পড়ে—এই ভয়ে, তাহাদিগের স্ত্রী-পুত্রের রক্ষাভার নিজের উপর লইয়া, (রাজা) তাহাদিগকে আকরের কর্মান্ত সমূহে (কারথানাগুলিতে) নিযুক্ত করিয়া তথায় বাস করীইবেন। প্রজাবর্গের মধ্যে ক্ষহারা ক্রন্ধ-স্বভাব, লোভী, ভীত ও অবমানিত তাহারাই শত্রুর ক্বত্য বা ভেন্ম হইতে পারে ( অর্থাৎ তাহারাই শত্রুর উপজাপে পড়িয়া তাহার বশগামী হইতে পারে )।

কার্দ্তান্তিক (দৈবজ্ঞ), নৈমিন্ত্রিক (শুভাশুভ-শকুনজ্ঞতা), ও মৌছূর্ত্তিকের (ত্রিকালজ্ঞ জ্যোতিবিকের) বেষধারী গৃঢ়পুরুষেরা উক্ত কুদ্ধাদি অতৃষ্ট-জনদিগের পরস্পরের মধ্যে স্থাপিত সম্বন্ধ ও শক্রুর সহিত আবদ্ধ সম্বন্ধ বিষয়ের সব তথ্য জানিবে।

তুইদিগকে (রাজা) অর্থদান ও সম্মানপ্রদর্শন দ্বারা সংক্রত করিবেন। এবং (তিনি) অতুইদিগকে (অবস্থা-ভেদে) সাম, দান, ভেদ ও দণ্ড এই উপায়-চতুইয় দ্বারা বশে রাখিবেন। এই ভাবে নীতিবিৎ রাজা নিজ রাজ্যে ক্বতা ( অতুষ্ট অর্থাৎ শত্রুর ভেন্ত ) ও অক্বতা ( তুষ্ট অর্থাৎ শত্রুর অভেন্ত ) প্রধান ( মৃথা ) ও ক্ষ্ত্রুক ( অমৃথা ) পুরুষদিগকে শত্রু-প্রধোজ্য উপজাপ ( বা ভেদ ) হইতে রক্ষা করিবেন ॥১॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে স্বরাজ্যে কৃত্যপক্ষ ও অকৃত্যপক্ষের রক্ষণ-নামক ত্রয়োদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

## চতুৰ্দ্ধশ অধ্যায়

#### ১০ম প্রকরণ—শত্রুরাজ্যে কুত্যপক্ষ ও অকুত্যপক্ষের সংগ্রহ

(রাজার) স্বরাজ্যে রুত্য (অতুষ্ট) ও অরুত্য (তুষ্ট) পক্ষের পুরুষদিগের সংগ্রহ (পূর্ব অধ্যায়ে) ব্যাখ্যাত হইয়াছে। সম্প্রতি (তাঁহার) শত্রুর রাজ্যে রুত্য ও অরুত্যপক্ষের লোকদিগের সংগ্রহ (বা স্বায়ন্তীকরণের বিষয়) নিরূপিত হুইবে।

পূর্ব্ব অধ্যায়ে জুদ্ধাদি কতাচতৃষ্টয়ের বিষয় বলা হইয়াছে, ) তয়ধ্যে কাহারা কাহারা কে দুদ্ধবর্গে অন্তর্ভুক্ত হইতে পারে তাহা এখন বলা হইতেছে :—
(১) (রাজা) যাহাকে অর্থদানের প্রতিশ্রুতি দিয়াও তাহা না দিয়া বঞ্চিত করিয়াছেন, সে ব্যক্তি; (২) কোন শিল্পবিষয়ে বা উপকারজনক কার্য্যে সমানভাবে তুইজন কার্য্যকারীর মধ্যে যে অক্যতর ব্যক্তিকে অবমানিত করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (৬) যাহাকে রাজার প্রিয়জনেরা রাজকুলে প্রবেশ-বিষয়ে অবক্ত্ব বা প্রতিষিদ্ধ করিয়াছেন, সে ব্যক্তি; (৪) যাহাকে ভাকিয়া আনিয়া পরাজিত বা তিরস্কৃত করা হইয়াছে (মতাস্তরে, যাহাকে সমাহ্রয়ে অর্থাৎ দ্তেক্রীড়াদিতে ভাকাইয়া হতধন করা হইয়াছে ), সে ব্যক্তি; (৫) (রাজাদেশে ) স্বদীর্ঘকালস্থায়ী প্রবাসজনিত তৃঃথে যে উপতাপমৃক্ত হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (৬) যে (উৎকোচাদি দিয়া) অনেক ব্যয়্ম করিয়াও নিজ কার্য্য উদ্ধার করিতে পারে নাই, সে ব্যক্তি; (৭) যাহাকে নিজ ধর্ম্ম বা আচারাফ্রসারে কার্য্য করিতে বা নিজের দায়ভাগ পাইতে মানা করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (৮) যাহাকে সম্মানের পদ ও অধিকার বা নিয়োগপদ হইতে ভ্রষ্ট করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (৯) যাহাকে (রাজার) স্বকুলসম্ভূত লোকেরা (গুণের হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (৯) যাহাকে (রাজার) স্বকুলসম্ভূত লোকেরা (গুণের

অপলাপ দ্বারা) অপ্রকাশিত রাখিয়াছে (অর্থাৎ যাহার খ্যাতি চাপিয়া রাখিয়াছে), সে ব্যক্তি; (১০) যাহারে জ্রীকে বলাৎকার-সহকারে ধর্ষণ করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (১১) যাহাকে কারাক্ষ করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (১২) (বিনা বিচারে) যাহাকে পরের কথা শুনিয়াই দণ্ডিত করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (১৩) মিথ্যা যুক্তিশ্বারা যাহাকে সৎকর্মচারণে নিবারিত করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (১৪) যাহার সর্বস্থ অপহরণ করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি; (১৫) যাহার কার্য্য বাঁধিয়া দিয়া অর্থাৎ যাহাকে কার্য্য-বিষয়ে অয়থা নিয়য়্রিত করিয়া ক্রেশ দেওয়া হইয়াছে, সে ব্যক্তি; এবং (১৬) যাহার (পুত্রাদি) বাদ্ধবজনকে স্বদেশ হইতে নিম্নাসিত করা হইয়াছে, সে ব্যক্তি। উক্ত ব্যক্তিরাই ক্রেম্বর্গে অস্তর্ভুক্ত হইতে পারে (এবং তাহারাই শক্রম্বারা সহজে ক্রত্য হইতে পারে)।

সম্প্রতি যাহারা ভীতবর্গে অন্তভুক্ত হইতে পারে, তাহাদের কথা বলা হইতেছে:—(১) যে ব্যক্তিকে (নৃশংস কর্মাদি করিয়া) নিজেকে দৃষ্ঠিত করিয়াছে; (২) যে ব্যক্তিকে (কোন বিষয়ে) অপ্যানাদি দ্বারা অত্যাচারিত করা হইয়াছে; (৩) যে ব্যক্তির পাপকর্ম (নিন্দার্থ) প্রকাশ করিয়া দেওয়া হইয়াছে; (৪) যে ব্যক্তি সমান দোষকারীর উপর দণ্ড পতিও হইতে দেখিয়া উদ্বিগ্ন হইয়াছে; (৫) যে ব্যক্তি সমান দোষকারীর উপর দণ্ড পতিও হইতে দেখিয়া উদ্বিগ্ন হইয়াছে; (৫) যে ব্যক্তি সংল্যর ভূমি জাের করিয়া নিজ অধিকারভুক্ত করিয়াছে; (৬) যে ব্যক্তিকে দণ্ডবারা উপহত বা কশিত করা হইয়াছে, (৭) যে ব্যক্তি সর্ব্যপ্রকার অধিকরণের (রাজকাগ্য বিভাগের) অধিকারে অবস্থিত; (৮) যে ব্যক্তি সহসা অনেক অর্থ সঞ্চয় করিতে পারিয়াছে; (৯) যে ব্যক্তি রাজকুলের জ্যোকদিগকে (নিজ স্বার্থের জন্ম) আশ্রম করিয়াছে; (১০) যে ব্যক্তিকে রাজা দেষ করিয়া থাকেন (অর্থাৎ রাজা যাহার প্রতি অন্যন্তহ-দৃষ্টি রাথেন না); এবং (১১) যে ব্যক্তি রাজাকে দ্বেষ করিয়া থাকে। এই প্রকার ব্যক্তিরাই ভীতবর্গে অন্তভুক্ত হইতে পারে (এবং তাহারাই শক্রমারা সহজে কতা বা ভেন্ন হইতে পারে)।

সম্প্রতি **লুক্কবর্গে** অন্তর্ভুক্ত লোকদিগের কথা বলা হইতেছে:—(১) যে ব্যক্তির সমস্ত অর্থাদি বৈভব ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়া গিয়াছে; (২) যাহার ধনসম্পত্তি অত্যধিকভাবে (রাজকর্ভক দণ্ডকররূপে) গৃহীত হইয়াছে; (৩) যে ব্যক্তি কদ্ব্য বা রুপণ; (৪) যে ব্যক্তি (স্ত্রীপানাদিরূপ) ব্যসনে আসক্ত; এবং (৫) যে ব্যক্তি জীবনের অনপেক্ষী কর্মন্বারা (ধনাদিনিমিত্ত ব্যবহার বা কারবারাদি ক্রিয়াতে তৎপর)। এই প্রকার ব্যক্তিরাই ল্ব্বর্গে অস্তর্ভুক্ত হইতে পারে (এবং তাহারাই শক্রুদারা ক্রত্য বা ভেন্ম হইতে পারে)।

এখন মানিবর্গে অন্তর্গু লোকদিগের কথা বলা হইতেছে:—(১) যে ব্যক্তি নিজেকে অত্যন্ত (বিদ্বান্ বা শ্রাদির্রূপে) বড় বলিয়া মনে করে; (২) যে ব্যক্তি নিজের প্রতি অন্তের সন্মান কামনা করে; (৩) যে ব্যক্তি নিজ্ঞ শক্রুর প্রতি অন্তের প্রদর্শিত পূজা সহিতে পারে না; (৪) যে ব্যক্তি নীচজনদারা প্রোৎসাহিত হইয়া কোন কার্য্যে অভিনিবেশিত হইয়াছে; (৫) যে ব্যক্তি স্বয়ং তীক্ষ্ণ অর্থাৎ নিজের জীবনকেও গণনা করে না; (৬) যে ব্যক্তি সাহসিক অর্থাৎ সহসা কোন কার্য্যে বা কোন সাহদের কার্য্যে প্রবৃত্তিশীল; এবং (৭) যে ব্যক্তি ভোগ্যবস্তর প্রাপ্তিতে অসম্ভন্ত ('ভাগেন'—পাঠ ধত হইলে, নিজের প্রাপ্য ভাগ পাইয়াও অসম্ভন্ত, এইরূপ ব্যাখ্যা)। এই প্রকার ব্যক্তিরাই মানিবর্গে অন্তর্ভুক্ত হইতে পারে (এবং তাহারাই শক্রের দ্বারা ক্লত্য বা ভেল্ড হইতে পারে)।

এই চারিবর্গের লোকদিগের মধ্যে, ক্বত্যপক্ষীয় যে ব্যক্তি যাহা পাইতে অভিলাষী তাহাকে সেই দ্রব্যাদির দানসহকারে রাজা মৃত্ত ও জটিলধারী গৃঢ়-পুরুষগণ ঘারা উপজাপিত করিবেন ( অর্গাৎ শক্রু হইতে তাহাদিগকে ভিন্ন করিয়া স্ববশে আনিতে চেঞ্জা করিবেন )।

( কুদ্ধবর্গের উপর উপজাপের প্রকার বলা হইতেছে:—) পূর্ব্বোক্ত গূঢ়-পুরুষেরা তাহাদিগকে বলিবে—"প্রমাদী হস্তিপকদ্বারা চালিত মদ-জনিত বিকার বশতঃ প্রমন্ত হস্তী যেমন সমুথে যাহা পায় তাহা সবই নষ্ট করে, তেমন এই অন্ধরাজা রাজনীতিশাস্ত্ররূপ চক্ষ্ম হারাইয়া, (শাস্ত্রজ্ঞানবিহীন) অন্ধ মন্ত্রী-দারা পরিচালিত হইয়া, পুরবাসী ও জনপদবাসীদিগের নাশের জন্মই উন্নত ইইয়াছেন। তাহার প্রতার্থী শক্ররাজদিগকে তাঁহার বিরুদ্ধে প্রোৎসাহিত করিয়া তাঁহার অপকার করা যাইতে পারে, অতএব, আপনারা তাঁহার প্রতি প্রকোপ উৎপাদন করুন।" এইরূপ বলিয়া, তাহার। (গুঢ়পুক্ষেরা) ক্রুদ্ধবর্গকে উপজাপিত করিবে।

(ভীতবর্গের উপর উপজাপের প্রকার বলা হইতেছে:—) পূর্বেকাক গৃঢ়পুরুষেরা তাহাদিগকে বলিবে—"দর্প ধেমন ভীত হইলে যাহার নিকট হইতে ভয়ের আশঙ্কা লক্ষ করে, তাহার উপরই (নিজের) বিষ উদগীরণ করে, তেমন এই রাজা আপনাদের দিক হইতে দোষের আশঙ্কা করিয়া আপনাদের উপরই ক্রোধর্মপ বিষের উৎদর্গ করিবেন। (অতএব), আপনারা (তাঁহার রাজ্য

ছাড়িয়া) অন্য কোন স্থানে চলিয়া যাউন।" এইরূপ বলিয়া তাহারা (গৃঢ়-পুরুষেরা) ভীতবর্গকে উপজ্ঞাপিত করিবে।

(লুনবর্গের উপর উপজাপের প্রভাব বলা হইতেছে:—) পূর্ব্বোক্ত গৃঢ়পুরুষেরা তাহাদিগকে বলিবে—"চণ্ডালদিগের ধেয় যেমন কুরুরদিগকেই হয় দেয়, ব্রাহ্মণদিগকে নহে, তেমন এই রাজা, যাহারা সন্ত, প্রজ্ঞা ও বাক্যশক্তিহীন সেই সব পুরুষদিগকেই ধনাদি ফল দান করেন, কিন্তু, যাহারা আয়গুণসম্পদে সমৃদ্ধ তাহাদিগকে তাহা দেন না। কিন্তু অমৃক রাজা পুরুষবিশেষদিগকে (অর্থাৎ উপযুক্ত বিশিষ্ট পুরুষদিগকে) বেশ চিনিয়া লইতে পারেন। (অতএব,) আপনারা তাঁহার সেবায় প্রবৃত্ত হউন।" এইরপ বলিয়া তাহারা (গৃঢ়পুরুষষেরা) লুনবর্গকে উপজাপিত করিবে।

(মানিবর্গের উপর উপজাপের প্রকার বলা হইতেছে:—) পূর্ব্বোক্ত গৃচ্পুরুষেরা তাহাদিগকে বলিবে—"চণ্ডালদিগের কৃপ যেমন চণ্ডাল দিগেরই উপভোগের যোগ্য হইয়া থাকে, অলু লোকের জন্ম নহে, তেমন এই নীচ রাজা নীচজনদিগেরই উপযোগের বা স্বথসাধনের যোগ্য, আপনাদের লায় আর্য্যদিগের স্বথসাধনের জন্ম নহে। অমৃক রাজা পুরুষবিশেষের তারতম্য বেশ ব্বেন। (অতএব) আপনারা তৎসমীপে চলিয়া যাউন।" এইরপ বলিয়া—তাহারা (গৃচ্পুরুষেরা) মানিবর্গকে উপজাপিত করিবে ন্ অর্থাৎ তাহাদের রাজা হইতে ভিন্ন করিবার চেষ্টা করিবে)।

যাহারা এই প্রকার উপজাপের ফলে নিজ স্বামী বা রাজা হইতে ভিন্ন হইবার জন্ম স্বীকার করিবে, তাহাদিগুকে (সত্যশপথাদি) পণকর্মবারা সন্ধিতে আবদ্ধ করিয়া (রাজা) তাহাদিগকে তাহাদের শক্তি পর্যালোচনাপূর্বক নিজ নিজ কার্য্যে নিযুক্ত করিবেন, কিন্তু তাহাদিগের উপর দৃষ্টি রাথার জন্ম অপসর্প বা গৃঢ়পুক্ষত্ত নিয়োজিত করিবেন ॥১॥

শক্রর ভূমিতে ধাহারা ক্বত্য (অর্থাৎ ভেদযোগ্য,) তাহাদিগকে সাম ও দান এই তৃই উপায় দ্বারা (রাজা) লাভ করিবেন, এবং ধাহারা অক্বত্য (অর্থাৎ ভেদসাধ্য নহে) তাহাদিগকে ভেদ ও দণ্ড এই উভয় উপায় দ্বারা লাভ করিবেন এবং (তাহাদিগের নিকট) শক্রবাজার দোষগুলি দেখাইয়া দিবেন ॥২॥

কোটিলীয় অর্থশাম্বে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে শত্রুরাজ্যে কৃত্য ও অক্বত্যপক্ষের সংগ্রহ নামক চতুর্দশ অধ্যায় সমাপ্ত।

### পঞ্চদশ অধ্যায়

#### ১১শ প্রকরণ—মন্ত্রাধিকার

সংদশে ও পরদেশে কৃত্য ও অকৃত্য পুরুষদিগকে স্ববশে সংগ্রহ করার পর, (বিজিগীযু রাজা) রাজ্যশাসনসম্মীয় সর্বপ্রকার কার্য্যের আরন্থ (মন্ত্রণাঘারা) বিবেচনা করিবেন। কারণ, সর্ব্ব কার্য্যের আরন্থই মান্ত্রপূর্বক করিতে হয় (অর্থাৎ করণীয় কর্মবিষয়ে পূর্বের মন্ত্রণা করিয়া, পরে তাহা আরম্ভ করিতে হয় )।

মন্ত্রণার স্থান চারিদিকে আবৃত থাকিবে ও সেখান হইতে কোন কথাবার্দ্তার শব্দও বাহিরে নিঃশ্রুত বা নিক্রান্ত হইতে পারিবে না, এবং সেই স্থান পক্ষীদিগেরও দৃষ্টিগোচর হইবে না। কারণ, এমনও গুনা যায় যে, শুক ও শারিকারা (রাজার) মন্ত্রণা ভিন্ন বা প্রকাশিত করিয়া দিয়াছে, এবং কুরুর ও অক্যান্ত নীচ জন্তুরাও তদ্ধ্রপ করিয়াছে। অতএব, (মন্ত্রণাকার্য্যে) নিযুক্ত না হইয়া, কেহই মন্ত্রণান্থানে যাইতে পারিবে না। যে ব্যক্তি মন্ত্রণার ভেদ বা প্রকাশ করিবে, তাহার উচ্ছেদ করিতে হইবে।

কারণ, দৃত, অমাত্য ও স্বয়ং স্বামীর (রাজার) ইঙ্গিত ও আকার হইতেও মন্ত্রভেদ সম্ভবপর হয়।

মান্থবের স্বাভাবিক কার্য্যকরণের চেষ্টা হইতে ভিন্নপ্রকার চেষ্টার নাম **ইঞ্লিত**। মানসিক ভাবাদি জানিবার সাধনভূত অঙ্গসংস্থান বা আরুতিকে **আকার** বলা হয়।

যতক্ষণ মন্ত্রিত কার্য্য সম্পাদনের কাল উপস্থিত না হইবে, ততক্ষণ পর্যন্ত ইঞ্জিত ও আকার গোপন করিয়া রাখিতে হইবে; এবং মন্ত্রণাকার্য্যে ব্যাপৃত (আমাত্যাদি) পুরুষদিগকেও মন্ত্রণাজ্ঞেদের সম্ভাবনা হইতে রক্ষা করিতে হইবে। কারণ, তাঁহাদিগের প্রমাদ (অনবধানতা,) মদ বা মত্যপানাদিজনিত চিত্তবিকার, নিস্ত্রিত অবস্থায় প্রলাপ ও কাম (বিষয়াভিলাষ) প্রভৃতি, এবং তাহাদের গর্ব্ব নির্শীত মন্ত্রপ্রকাশে সহায়তা করে। (গৃহভিত্তিমধ্যে) প্রচ্ছন্ন থাকিয়া শ্রোতা, ও (মূর্থাদি বলিয়া) অবজ্ঞাত লোকও গুপ্ত মন্ত্র প্রকাশ করিয়া দিতে পারে। (অতএব,) রাজা (প্রমাদাদি হইতে) মন্ত্র রক্ষা করিবেন।

বেহেতৃ, মন্ত্রভেদ (অর্থাৎ মন্ত্রের আদেশকালেই প্রকাশ) রাজার ও তাঁহার আযুক্ত পুরুষদিগের (অর্থাৎ মন্ত্রাধিকারাদিতে নিযুক্ত রাজপাদোপ- বৈগণের ) যোগ ও ক্ষেমের নাশ করিয়া থাকে। অতএব, আচার্য্য ভারদ্বাজ্বের (স্রোণচার্য্যের ) মতে, রাজার পক্ষে একাকীই মন্ত্রবিচার করা উচিত (অর্থাৎ রাজা মন্ত্রীকেও তাহা জানিতে দিবেন না )। কারণ, মন্ত্রীদিগেরও নিজ নিজ মন্ত্রী থাকে (অর্থাৎ নিজ মন্ত্রণাসহায়কদিগের সহিত মন্ত্রীরাও মন্ত্রণার আলাপ করিতে পারেন )। আবার, সেই মন্ত্রীদিগেরও অন্য মন্ত্রী থাকে। (কাজেই, ) এই মন্ত্রিপরম্পরার (মন্ত্রণার ) ফলে, তাঁহারা মন্ত্র প্রকাশিত করিয়া ফেলেন।

অতএব, বিজিগীয়ু রাজার চিকীর্ষিত কোন কর্মই অন্যেরা যেন না জানিতে পারে। কেবল যাহারা সেই কর্ম সম্পাদন করিবে, তাহারাই সেই কর্ম আরন্ধ হইলে জানিবে, অথবা সেই কর্ম সমাপ্ত হইলে জানিবে ॥১॥

কিন্তু, আচার্য্য বিশালাক্ষ এইরপ মনে করেন যে, একাকী কাহারও মন্ত্রবিচারদারা মন্ত্রের সিদ্ধি ঘটে না (অর্থাৎ রাজা একাকী মন্ত্র বিচার করিবেন না)। কারণ, রাজকার্য্য প্রভ্যক্ষ, পরোক্ষ্য ও অনুমান প্রমাণের উপরই নির্ভর করে (অর্থাৎ রাজকার্য্য দহায়দাধ্য)। বিষয়ের দার্যক্ উপলব্ধি হয় নাই তাহার জ্ঞান, জ্ঞাত বিষয়ের নিশ্চয়বলদারা দূঢ়ীকরণ, কোন বিষয়ের দ্বৈধীভাব উপন্থিত হইলে দেই সংশয়ের ছেদন, এবং কোন বিষয়ের একাংশের উপলব্ধি হইতে অবশিষ্টাংশের অন্ত্রমান—এই সব কার্য্য মন্ত্রিগণের দ্বারা সাধ্য।

অতএব, (রাজা) জ্ঞানবৃদ্ধগণের সহিত মন্ত্রণা করিতে বসিবেন। তিনি কাহাকেও অবজ্ঞা করিবেন না এবং সকলেরই মত শ্রবণ করিবেন। বালকের বাক্ষ্যও যদি যুক্তিমং হয়, তাহা হইলে পণ্ডিতজন তাহাও স্বীকার করেন॥২॥

পারাশরের। (অর্থাৎ আচার্য্য পরাশরের মতাবলম্বীরা) বলেন থে, (বিশালাক্ষোক্ত মতামুদারে) কেবল মন্ত্রের জ্ঞানই সম্ভাবিত হয়, কিন্তু, মন্ত্রবক্ষা ঘটে না। তাঁহার (রাজার) যে কার্য্য অভিপ্রোত, সেই কার্য্যের তুলা অন্য কোন কার্য্যের কথা (উত্থাপন করিয়া) (তিনি) মন্ত্রীদিগকে জিজ্ঞাদা করিবেন—"এই কার্য্য (পূর্বের্ব) এইরূপ ভাবে করা হইয়াছিল; (আছা) যদি ইহা (এখন) এইরূপভাবে দাঁড়ায়, তাহা হইলে কি ভাবে ইহা করা উচিত হইবে?" এইভাবে জিজ্ঞাদিত হইলে মন্ত্রীরা যেমন বলিবেন (রাজা) তেমনই তাহা করিবেন। এইরূপ করা হইলে, মন্ত্রের জ্ঞানও হইল, মন্ত্রের দংবরণ বা গোপনও হইল।

(কিন্তু,) আচার্য্য পিশুনের (নারদের) মতে এই উপদেশ গ্রাহ্য হইতে পারে না। কারণ, (তাঁহার মতে) প্রকারান্তরে উপদ্বাপিত কোন সংঘটিত বা অসংঘটিত বিষয় জিজ্ঞাসিত হইলে, মন্ত্রীরা তৎসবদ্ধে (নিজদিগকে রাজার অবিশ্বস্ত মনে ভাবিয়া) অনাদর-সহকারে আলাপ করিবেন; অথবা তাহা প্রকাশ করিয়া ফেলিবেন। ইহা দোষের কথা বটে; অতএব, যে-যে কার্য্য বাঁহারা (অর্থ্যানপট্ বলিয়া রাজার) অভিমত বাক্তি, তাঁহাদিগের সহিত (তিনি) মন্ত্রণা করিবেন। তাঁহাদের সহিত মন্ত্রণা করিলে রাজার পক্ষে মন্ত্রবৃদ্ধি ও মন্ত্রগুপ্তি—এই উভয়ই লক্ষ হইতে পারে।

(কিন্তু,) কৌটিল্য এই মত যুক্তিযুক্ত মনে করেন না। কারণ, (তাহার মতে ) উক্তমণ মন্নণাকার্ফোর বাবস্থা করা হইলে, অনবস্থা দোষ আপতিত হইবে ( অর্থাৎ মন্ত্রণার বিষয়ীভূত কর্মের বহুত্ববশতঃ অধিক সংখ্যক মন্ত্রীর প্রয়োজন হইবে—এবং তাঁহাদের প্রত্যেকের সঙ্গে মন্ত্রণার বাবদা কথনই সম্ভবপর নহে )। তিন বা চারিজন মন্ত্রীর সঙ্গেই রাজ। মন্ত্রণা করিবেন। কারণ, একজন মন্ত্রীর সহিত মন্ত্রণা করিলে রাজা কইনিদ্ধার্য্য বিষয় উপস্থিত হইলে ( অর্থাৎ কার্য্যসন্ধট উপস্থিত হইলে), কার্যানিশ্চয় করিতে পারিবেন না। মন্ত্রী একজন হইলে, তিনি প্রতিদ্বন্দিরহিত হইয়া স্বেচ্ছায় কার্যা চালাইতে পারেন। তুইজন মন্ত্রীর সহিত মন্ত্রণা করিলে, তাঁহারা উভয়ে একমত হইয়া রাজাকে আপন বশে আনিতে পারেন। এবং তাঁহারা পরস্পর বিপরীত মতাবলম্বী হইলে, রাজার ( কার্যাহানি ) ঘটাইতে পারেন। তিন বা চারিজন মন্ত্রী থাকিলে, সেরপ কোন মহান দোষ নিয়তই উৎপন্ন হয় না, হইলেও তাহা অনেক কর্তে ঘটে ( অর্থাৎ হঠাৎ ঘটে না )। এবং (মন্ত্রণার বিষয়ীভূত কর্মন্ত) উপপত্তিযুক্ত হয় ( অর্থাৎ অবাধে তাহা সঞ্চন্তর হয় )। এই সংখ্যার (অর্থাৎ চারিজনের) অধিক মন্ত্রী থার্কিলে, অর্থ বা বিষয়ের নিশ্চয়নিরপণ অতি ক্লেশে সম্পন্ন হইতে পারে, অথবা মন্ত্রও অতি ক্লেশে রক্ষিত হইতে পারে।

দেশ, কাল ও কার্য্যের বশে, (রাজা) এক বা ছুইটি মন্ত্রীর সহিতও মন্ত্রণা করিতে পারেন, অথবা নিজের সামর্থ্যাত্রসারে একাকীও মন্ত্রবিচার করিতে পারেন।

মান্ত্র পঞ্চাঞ্চ-বিশিষ্ট, (অর্থাৎ মন্ত্রের অঙ্গ পাঁচটি) যথা—(১) কার্য্যের আরম্ভ করার উপায় (অর্থাৎ যথা—স্বরাজ্যে চুর্গাদি নির্মাণবিষয়ে এবং পররাজ্যে সন্ধিবিগ্রন্থ ও দৃতাদি প্রেরণবিষয়ে), (২) পুরুষ বা কার্য্যকুশল লোকজন ও রত্ন স্বর্ণাদি দ্রব্যসম্পত্তি, (৩) (কার্য্যনিষ্পাদনের উপযোগী) দেশ ও কালের বিভাগ বিচারণ, (৪) কার্য্যপ্রে বিন্নাদি উপস্থিত হইলে, তাহার প্রতীকার বা প্রশমনের চিন্তা, এবং (৫) কার্য্যসিদ্ধিবিষয়ক বিবেচনা ( অর্থাৎ কার্য্যের ফলে—ক্ষয়, স্থান বা বৃদ্ধির কোনটা ঘটিবে—তচ্চিন্তা)। (রাজা) মন্ত্রিগণের প্রত্যেককে পৃথক্ভাবেও মত জিজ্ঞাসা করিতে পারেন এবং তাঁহাদিগকে একত্র মিলিত করিয়াও সমস্ত মন্ত্রীদিগকেও জিজ্ঞাসা করিতে পারেন। তাঁহাদিগের মতবিভিন্নতাও যুক্তিপূর্বক বৃঝিয়া লইবেন। অর্থ বা বিষয়ের নিশ্চয় বা মতনিদ্ধারণ পাইয়া, (তিনি) তাহা কার্য্যে পরিণত করিতে সময় অতিক্রান্ত হইতে দিবেন না। রাজার পক্ষে কোন বিষয়ে মন্ত্রণাও দীর্ঘকাল পর্যন্ত করা উচিত নহে। যাহাদের সম্বন্ধে (রাজাকে) কোনপ্রকার অপকার করিতে হইতে পারে, তাহাদের পক্ষভুক্ত লোকদিগের সহিতও (তিনি) কোনরূপ মন্ত্রণা করিবেন না।

(ইতিপূর্ব্বে কোটিল্যের মতে চারিজনের অধিক মন্ত্রী নিযুক্ত করা রাজার উচিত নহে ইহা বলা হইয়াছে—তাঁহারা, কিন্তু রাজার ধী-সচিব বা মতি-সচিব। মুম্প্রতি কর্ম-সচিবগণের সংখ্যা বিচারিত হইতেছে এবং তাহাদের দ্বারা রচিত বে অমাতাপরিষৎ, তাহাকেই সম্ভবতঃ মন্ত্রিপরিষৎ, এই পারিভাষিক নাম দেওয়া হইয়াছে। সে যাহা হউক—) **মানব**দিগের অর্থাৎ মন্তশিশ্বদিগের মতে রাজা দ্বাদশ জন অমাত্য লইয়া **মন্ত্রিপরিষৎ** গঠিত করিবেন। বা**র্হস্পত্য**দিগের অर्थाৎ दृरुष्पि - শিশ্रामिश्वाद मराज এই পরিষদের অমাত্য সংখ্যা যোল হইবে। ঔশনস্দিগের অর্থাৎ শুক্রাচার্যের শিয়াদিগের মতে এই সংখ্যা হইবে বিংশতি। ( কিন্তু, ) কৌটিল্যের মত এই যে, ( কার্য্যাফুষ্ঠানকারী আযুক্ত পুরুষদিগের ) সামর্থ্য অফুসারে এই সংখ্যা নির্দিষ্ট করা উচিত হইবে। অমাত্যগণ (অর্থাৎ এই কর্ম-সচিবগণ ) রাজার স্বপক্ষগত ও পরপক্ষগত কার্য্যের অঞ্চানবিষয়ক চিন্তা করিবেন। (রাজা) যে কর্ম আরন্ধ হয় নাই তাহার আরম্ভ, যাহা আরন হইয়াছে তাহার অনুষ্ঠান, যাহা অনুষ্ঠিত হইয়াছে তাহারও বিশেষ-সম্পাদন এবং তৎ তৎ কর্ম্মের অফুষ্ঠানে অধিকৃত পুরুষদিগের নিয়োগ সম্বন্ধে প্রকর্ষসাধন ( অর্থাৎ তাহাদের গুণবত্তাদি-বিচার ) করাইবেন! যে অমাত্যেরা ( রাজার ) সন্নিধানে আছেন তাঁহাদিগের সহিত মিলিত হইয়া ( রাজা ) কার্য্য দেখিবেন, এবং বাঁহারা নিকটে নাই তাঁহাদিগের সহিত পত্রপ্রেরণ দারা মন্ত্রণা করিবেন। ইত্রেক্সর মন্ত্রিপরিষৎ এক সহস্র ঋষি লইয়া গঠিত ছিল এবং তিনি (ইন্দ্র ) তাঁহাদিগকে দিয়া কার্য্য পরিদর্শন করাইতেন বলিয়া তাঁহারা

তাঁহার চক্ষ্ভূতি ছিলেন। সেই জন্মই এই দ্বিনয়ন দেবতাকে সহত্যাক্ষ অর্থাৎ ( সহস্রনেত্র-সমন্বিত ) বলিয়া পণ্ডিতেরা বর্ণনা করিয়া থাকেন।

কোন আত্যায়িক কার্য্য (অর্থাৎ শীঘ্র করণীয় সমস্তাপূর্ণ কঠিন কার্য্য) উপস্থিত হইলে, রাজা পূর্ব্বোক্ত মন্ত্রিগণকে (মতিসচিবদিগকে) ও মন্ত্রিপরিষ্বৎকে (অর্থাৎ কর্মসচিবদিগের সভ্যগণকে) একত্রে ডাকাইয়া দর্ব্ব বিষয় তাঁহা দিগকে বলিবেন। সেই সভায় বহুসংখ্যক সচিবেরা যাহা করিতে মত দিবেন, অথবা, (অল্পসংখ্যক সচিবেরাও) যাহা কার্য্যসিদ্ধিকর উপায় বলিয়া নিশ্ধারিত করিবেন, (রাজা) তাহাই করিবেন।

এই প্রকার কার্য্যকারী রাজার গুহু (মন্ত্রাদি) বিষয় অন্ত লোকেরা জানিতে পারিবেন।, বরং তিনিই অন্তের (বা শক্রর) ছিদ্র বা দোষ জানিতে পারিবেন। কচ্ছপ যেমন নিজ অঙ্গগুলিকে সঙ্কৃচিত করিয়া রাথে, রাজাও তাঁহার গোপনীয় বিষয় লুকাইয়া রাখিবেন ( অর্থাৎ তাঁহার আন্তরিক ভাব অন্তকে জানিতে দিবেন না ) ॥১॥

থেমন কোন **অভোত্রিয়** (বেদবিভারহিত) ব্রাহ্মণ সজ্জনের শ্রাদ্ধ ভোগ করিবার থোগ্য নহেন, তেমন যে মন্ত্রী (রাজনীতি) শাম্বের অর্থ বা অভিপ্রায় কথনও শুনেন নাই (ও জানেন নাই) তিনিও মন্ত্রণাবিষয়ক কথা শুনিবার যোগ্য নহেন ॥২॥

> কোটিলীয় অর্থশান্তে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে মন্ত্রাধিকার-নামক পঞ্চদশ অধ্যায় সমাপ।

### ষোড়শ অধ্যায়

## ১২শ প্রকরণ—দূ**ভপ্রণিধি**

মন্ত্রণার বিধয় নির্দ্ধারিত হইলে পরই দ্তপ্রেষণ কার্যা বিবেচিত হওয়া উচিত।
দৃত তিন প্রকারের হইতে পারে—যে দৃত পূর্ব্বোক্ত সর্বপ্রকার অমাত্য-গুণযুক্ত,
তাহাকে নিজ্প্তার্থ দৃত বলা হয়; যে দৃতের সেই সব গুণের এক চতুর্থাংশ কম
থাকিবে, তাহাকে পরিমিতার্থ দৃত বলা হয়; আর যে দৃতের সেই সব গুণের
অর্দ্ধাংশ কম থাকিবে, তাহাকে শাসনহর দৃত বলা হয়।

দুত তথনই শত্রুরাজার দেশে প্রস্থান করিবেন, যথন তিনি দেখিবেন যে, তাঁহার যান, (অখাদি) বাহন, (কর্মকরাদি) পুরুষ ও তাঁহার (শ্যান্তরণ প্রভৃতি ) সরঞ্জাম সবই সমাগ্ভাবে ব্যবস্থিত হইয়াছে। "শত্রুরাজার নিকট স্ব-স্বামীর শাসন এইভাবে বলিতে হইবে; শত্রু রাজা তৎসম্পর্কে এইরূপ বলিবেন; তাঁহার প্রতি এইরূপ উত্তর দিতে হইবে; তাঁহাকে এইভাবে নিজের বশে আনিতে হইবে"—এবং জাতীয় বিষয় উত্তমরূপে বুঝিয়া শুনিয়া দূত পরদেশে গমন করিবেন। তাঁহাকে (শক্রুর) **অটবীপাল, অন্তপাল,** পুরমুখ্য ও রাষ্ট্রমুখ্যদিগের সহিত বন্ধুত্ব স্থাপন করিতে হইবে। দৃত নিজ (প্রভূর) ও শত্রুর অর্থাৎ উভয়ের সৈক্তনিবেশস্থান, যুদ্ধ করার যোগ্য ভূমি ও যুদ্ধ হইতে অপসরণের অহুকূল ভূমি (তুলনা করিয়া) অবেক্ষণ করিবেন। ( দৃত ) আরও উপলব্ধি করিবেন, ( শত্রুর ) তুর্গ ও জনপদের ইয়ন্তা কতথানি, ও (তদীয় রাজ্যে) (স্থবর্ণ-মণ্যাদির উৎপত্তিজনিত) সার দ্রব্য কত আছে, (লোকের) বৃত্তি ব' জীবিকার্জনের উপায় কেমন আছে, (রাজ্যের) বক্ষাকার্য্য কেমন বিহিত আছে, এবং ( রাজা ও রাজ্যের ) ছিদ্র বা দেখেজনিত রন্ত্র কতটা আছে। (দৃত) শত্রুর **অধিষ্ঠানে** (রাজধানীতে) তাঁহার অনুমতি লইয়া প্রবেশ করিবেন।

প্রাণের আশকা দৃষ্ট হইলেও, (দৃত) নিজ প্রান্থর ঘরা যথাকথিত শাসন বা বার্ত্তা (শক্ররাজার নিকট) উপস্থাপিত করিবেন। শক্ররাজা যদি (দৃতসমাগমে) নিজ কথার, মৃথে ও নয়নে প্রদর্মতার ভাব ব্যক্ত করেন, দৃতের বাক্য সমাদর-পূর্বক শুনেন, (দৃতের প্রভুর) কুশলাদি ইউসম্বন্ধে জিজ্ঞাসা করেন, (প্রভুর) গুণক্তা বলিলে তাহাতে আসক্তি,প্রদর্শন করেন, নিজ সমীপে (দৃতকে) আসন প্রদান করেন ও তাহাকে সম্মান প্রদর্শন করেন, নিজ সমীপে (দৃতকে) আসন প্রদান করেন ও তাহাকে সমান প্রদর্শন করেন, ইউকার্য্যে অর্থাৎ উৎসব বা (ভোজনাদিতে) দৃতকে শ্বরণ করেন এবং দৃতের দোত্যে বিশ্বাস করেন, তাহা হইলে এই সব লক্ষণ দেখিয়া তিনি বৃঝিবেন যে, সেই শক্ররাজা তুই অবস্থায় আছেন। ইহার বিপরীত লক্ষণ দেখিলে তাঁহাকে অতুই বলিয়া বিবেচনা করিবেন। এই প্রকার অতুই রাজাকে দৃত এইরূপ বলিবেন—"আপনি ও অন্থ সকল রাজারাই দৃত্তমুখ অর্থাৎ দৃতের ম্থেই নিজ কথা অপর রাজাকে শুনান। এই হেতু দৃতগণের উপর শত্ম উন্তোলিত হইলেও তাঁহারা (নিজ নিজ প্রভুষারা) যাহা উক্ত হইয়াছে তাহাই ব্যক্ত করিয়া বলিবেন। দৃতগণের মধ্যে যদি কেহ তাহাবসারী বা চণ্ডালজাতীয়ও হয়েন, তথাপি তাঁহারা বধ্য নহেন। আব

ব্রাহ্মণ জাতীয় দৃতগণের ত কথাই নাই। (আমার প্রযুক্ত বাক্য আমার নহে)—পরের বাক্য ইহা। ইহাই দৃতের ধর্ম।"

বিদায় না পাওয়া পর্যান্ত ('দৃত ) পরাধিষ্ঠানেই বাস করিবেন এবং শত্রুর পূজা বা সৎকার পাইলে গর্ব্ধ অন্তভ্ব করিবেন না। শক্রসকাশে থাকা সময়ে (তিনি) নিজকে বলবান্মনে করিবেন না; তাঁহার বাক্য অনভিমত হইলেও তাহা (তিনি) সহু করিবেন; (সেথানে) স্ত্রীলোকের সঙ্গ বা মত্যাদিপান (তিনি) বর্জন করিবেন; (তিনি) একাকী শয়ন করিবেন, কারণ, এমনও দেখা যায় যে, স্থপ্ত এ মদমত্ত বাক্তি (নিদ্রা ও মত্ততার অবস্থায়) নিজের মনোভাব প্রলাপ-সহকারে ব্যক্ত করিয়া ফেলে। (দূত) **ভাপসব্যঞ্জন** (তাপসের বেষধারী) ও বৈদেহকব্যঞ্জন (বণিকের বেষধারী) গৃঢ়পুরুষগণ দারা শত্রুরাজার কৃত্যপক্ষে (এই অধিকরণের ১৪শ মধ্যায় দ্রষ্টব্য ) উপজাপ বা ভেদসাধন কার্য্য, অক্নতাপক্ষের উপর ( তীক্ষরসদাদি ) গৃঢ়পুরুষের নিয়োগ এবং (অমাত্যাদি) প্রকৃতিবর্গের ফপ্রভূর উপর অভ্রাগ ও বিরাগ, ও তাঁহাদের r । प्राप्त कि म- এই সমস্ত বিষয় জানিয়া লইবেন । অথবা, সেই তাপসবাঞ্চন ও বৈদেহকবাঞ্চন গৃঢ়পুরুষদিগের শিশ্বগণ দার। ও চিকিৎসকবেষধারী ও পাষ্ড-বেষণারী পুরুষণাণ দারা কিংবা উভয়বেতন-নামক গৃঢ়পুরুষ দারা (অর্থাৎ যে-সব গুপ্তচরেরা স্ব ও পররাজার বেতনভোগী হইয়া কার্য্য করে তাহাদিগের দারা) শত্রুর আচরণ জানিয়া লইবেন। ধদি এই সব গৃঢ়পুরুষদিগের কাহারও সঙ্গে কথাবার্ত্তা করার সম্ভাবনা উপস্থিত না হয়, তাহা হইলে (তিনি) ভিক্ষ্ক, (মদ-) মত্ত, উন্মত্ত ও স্কুপ্ত ব্যক্তিদিণের প্রলাপ দারা, কিংবা ( তীর্থ ও আশ্রমাদি) পুণাস্থান ও দেবালয়ে গৃঢ়পুরুষ দারা, এবং (ভিত্তিতে প্রদর্শিক) **চিত্র ও বিশেষ অক্ষর লেখার সংজ্ঞা দ্বারা শত্রুর সব সমাচার উপলব্ধি করিবেন।** উপলব্ধ বৃত্তাস্তাত্মদারে (তিনি) উপজাপ বা ভেদরপ উপায় অবলম্বন করিবেন। শক্রবাজ দারা জিজ্ঞাসিত হইলেও (তিনি) নিজ রাজার (অমাত্যাদি) প্রকৃতির ইয়ন্তা বা ঠিক অবস্থা প্রকাশ করিবেন না। "আপনি ( নিজেই ) সব জানেন"—এইরপ (তিনি) বলিবেন। অথবা (তিনি তাহাতে সম্ভ? না হইলে) (দৃত) ততথানি বলিবেন, যাহাতে তাঁহার দৌতাকার্য নিরিনাভ করিতে পারে ( অর্থাৎ সমগ্র কথা বলিবেন না )।

কার্য্য সিদ্ধ হইয়৷ গেলেও যদি শক্ররাজা তাঁহাকে উপরোধ করেন অর্থাৎ ফিরিয়া যাইতে অরুমতি না দেন, তাহা হইলে তিনি ( দৃত ) উপরোধের কারণ নিম্নলিখিত ভাবে মনে মনে ভাবিবেন—"তবে কি এই রাজা আমার নিজ প্রভূর কোন আসন্ন বিপদ দেখিয়া আমাকে উপক্লম রাখিতেছেন; অথবা, তিনি ( আমার প্রত্যাবর্তনের পূর্কেই ) তাঁহার নিজের কোন বাসন বা বিপদের প্রতীকার করিবার ইচ্ছা করিয়া, অথবা, (তদীয় মিত্রভূত) পার্বিগ্রাছ রাজাকেও (সেই পার্ফিগ্রাহের মিত্রভূত) আসার-নামক রাজাকে আমার নিজ প্রভুর বিরুদ্ধে উত্যোজিত করিবার ইচ্ছা করিয়া, কিংবা আমার প্রভুর রাজ্যে ( অমাত্যাদি প্রকৃতিজনের মধ্যে ) অন্তঃকোপ অর্থাৎ আভ্যন্তরীণ স্বামিদ্রোহ, বা কোন আটবিক রাজাকে তাঁহার বিরুদ্ধে যুদ্ধে উত্যোজিত করিবার ইচ্ছা করিয়া, অথবা আমার প্রভুর মিত্ররাজাকে বা তদীয় আক্রেন্দ (পৃষ্ঠমিত্র) রাজাকে হনন করিবার ইচ্ছা করিয়া, অথবা তাঁহার শত্রু হইতে সম্ভাবামান নিজের উপর কোন বিগ্রহ বা যুদ্ধ, নিজ রাজ্যের অন্তঃকোপ, বা নিজ আটবিক রাজার কোপ প্রতীকার করিবার ইচ্ছা করিয়া, অথবা 🖣 আমার নিজ প্রভুর স্বথোপনত অভিযানকাল নষ্ট করিবার ইচ্ছা করিয়া অথবা (যুদ্ধসময়ে উপযোগী) নিজের শশু, কুপা ও পণ্যের সংগ্রহ, তুর্গসংস্থার কর্ম, বা নিজ সৈত্যের বৃদ্ধি করিবার ইচ্ছা করিয়া, অথবা নিজের সৈত্যসমূহের ব্যায়ামের যোগ্য দেশ ও কালের জন্ম আকাজ্জা করিয়া, অথবা নিজের উপর আপতিত কোন পরিভব বা অনাদর ও প্রমদ বা প্রীতির জন্ম, অথবা আমার প্রভুর সহিত সংসর্গের সাতত্য-প্রার্থী হইয়া (অথবা তেমন সংসর্গে দোষোৎপত্তির কথা জানাইবার উদ্দেশ্য করিয়া) আমাকে উপরুদ্ধ রাখিতেছেন ?" এইভাবে তর্ক করিয়া বুঝিয়া তিনি সেখানেই বাস করিবেন, অথবা সেখান হইতে অপুদুরণ করিবেন। স্বপ্রভুর অতীষ্ট প্রয়োজনের প্রতি তিনি দৃষ্টি রাথিয়া চলিবেন। স্বপ্রভূর প্রদন্ত, শত্রুর অনভীষ্ট শাসন বা বার্তা (শক্রসমীপে) বলিয়া (তিনি) নিজের বন্ধন ও বধের ভয়ে, শক্রদ্বারা অনিসজ্জিত ( অর্থাৎ অনন্তমতগমন ) হইলেও ফিরিয়া আসিবেন। অন্তথা, তাঁহার নিয়মন বা শক্ত কর্তৃক আবদ্ধ হওয়া সম্ভবপর হইয়া উঠিতে পারে।

দূতকর্ম বা দ্তের কার্যগুলি এইরপ হইবে:—( স্বামিদদেশ শক্রর নিকট প্রদানজন্ম ও শক্রর প্রদত্ত শাসন নিবেদন করার জন্ম) প্রেরণ, পূর্বরিক্ত সন্ধিরক্ষণ, (অবসর প্রাপ্তিতে) নিজ রাজার প্রতাপপ্রদর্শন, মিত্রসংগ্রহ-করণ, (ক্রত্যাদির উপর) উপজাপ বা ভেদচালন, (শক্রের) স্বন্ধদ্গণের মধ্যে ভেদ-ব্যবস্থা, (শক্রের) সেনা ও গৃঢ়পুক্ষদিগকে বিতাড়িত করণ, (শক্রের) বদ্ধু ও

রত্বের অপহরণ, গৃঢ়পুরুষদিগের সংবাদ-সংগ্রহের পরিচয়, (শক্রুর ছি ন্তু পাইলে) পরাক্রমের ব্যবস্থা, সমাধি বা সন্ধিনিখাসার্থ রাজকুমারাদিরপ আহিত বস্তুর মোচন ও (উপনিষদিক প্রকরণে উক্ত) মারণাদি যোগের আশ্রয়গ্রহণ ॥১-২॥

উপরি উল্লিখিত কার্য্যবলী (রাজা) নিজের দৃত্যণদ্বারা সাধন করাইবেন এবং শত্রু-দৃত্যণের কার্য্যবলী লক্ষ্য করার জন্ম প্রতিদৃত ও অপসর্প বা গৃঢ়পুরুষ নিযুক্ত করিয়া এবং (স্বদেশস্থিত) দৃশ্য ও (পরদেশে প্রচ্ছন্নভাবে স্থিত) অদৃশ্য রক্ষিপুর্কিষণণ নিযুক্ত করিয়া তাহাদের নিকট হইতে আত্মরক্ষা করিয়া চলিবেন (অর্থাৎ যাহাতে পরদূতেরা কোন মিত্রসংগ্রহাদি কার্য্য করিতে না পারেন, তৎপ্রতি তিনি সজাগ দৃষ্টি রাখিবেন) ॥৩॥

কোটিলীয় অর্থশাল্পে বিনয়াধিকারিক নামক প্রথম অধিক রণে দৃতপ্রণিধি-নামক ষোড়শ অধ্যায় সমাপ্ত।

#### সপ্তদশ অধ্যায়

## ১৩শ প্রকরণ—রা**জপুত্রগণ হইতে রাজার আত্মরক্ষা**

(স্ববাশ্বর প্রভৃতি) যাঁহার। রাজার সমীপে অবস্থান করেন তাঁহাদের হস্ত হুইতে যে রাজা রক্ষিত হুইতে পারেন, তিনিই রাজ্য রক্ষা করিতে সমর্থ হয়েন। সর্বপ্রথম দারগণ ও পুত্রগণ হুইতেই (তিনি আত্মরক্ষা করিবেন)।

কি প্রকারে রাজা়্ স্থানরগণ হইতে আত্মরক্ষা করিবেন সে-সব উপায় নিশান্তপ্রণিধিনামক ﴿১৭শ ) প্রকরণে বলা হইবে।

সম্প্রতি পুরগণ হইতে রাজার আত্মরক্ষা উক্ত হইতেছে। রাজপুরাদিগকে তাঁহাদের জন্ম হইতেই (রাজা) রক্ষা করিবেন ( অর্থাৎ তাঁহাদিগকে স্বতম্ব থাকিতে দিবেন না—তাঁহাদের প্রতি তীক্ষ দৃষ্টি রাখিবেন )। কারণ, রাজপুরোরা কর্কটকের সমানধর্মবিশিপ্ট বলিয়া নিজ জনককে ভক্ষণ করিতে পারেন, অর্থাৎ কুলীরকেরা যেমন পিতাকে ভক্ষণ করিয়া জীবিত থাকে, রাজপুরোরাও স্থ-পিতাকে বিনষ্ট করিয়া নিজেরা ঐশ্বর্যভোগী হইতে পারেন।

আচার্য্য ভারদ্বাজের ( স্রোণাচার্য্যের মতে )—বে সব পুত্র জন্মলাভ করিলে পিতা তাহাদের প্রতি ক্ষেহে আরুষ্ট হয়েন না, তাহাদিগকে গোপনে বধ কর। উচিত। আচার্য্য বিশালাক্ষের মতে এই (নিরপরাধ শিশুমারণরূপ) কার্য্য নিষ্ঠুরতার লক্ষণ, কারণ, ইহাছারা অদৃষ্ট বা অপরীক্ষিত রাজপুত্রের বধ করা হয় এবং ক্ষত্রিয়বংশের বীজও নষ্ট করা হয়। অতএব, (তাঁহার মতে) সেই পুত্রকে এক স্থানেই (অর্থাৎ পিতার সমীপেই) অবরুদ্ধ রাখা উচিত হইবে।

কিন্তু, পারাশরের। (অর্থাৎ পরাশর আচার্য্যের মতাবলমীরা) মনে করেন মে, এই প্রকার ব্যবহার অহিভয়তুলা অর্থাৎ সর্পকে নিজ ঘরে রাখা যেমন বিপত্তিজনক, রাজপুত্রকে নিজ ঘরে অবরুদ্ধ রাখাও তেমন বিপত্তিজনক। কারণ, কুমার মনে করিবে "আমার বিক্রমের অর্থাৎ আক্রমণের ভয়েই পিতা আমাকে আটক করিয়া রাখিয়াছেন," এবং এইরপ ভাবিয়াই সেই কুমার বিক্রমকেই অবলম্বন করিবে। অতএব, তাঁহাদিগের মতে, (স্বসমীপে না রাখিয়া যদি রাজা) তাহাকে (নিজরাজ্যের) কোন অন্তপালের (দ্রন্থিত) তুর্গে রাখেন, তাহা হইলে ইহা অধিকতর মঙ্গলের কার্য্য হইবে।

আচার্য্য পিশুনের (নারদের) মতে ইহা উরক্ত বা মেষভয়তুল্য অর্থাৎ কোন মেবের অন্ত মেবের প্রতি আক্রমণসময়ে ইহা যেমন প্রথমতঃ দ্রে সরিয়া যাইয়া আক্রমণ করে, তেমন রাজপুত্রের দ্রন্থিত তুর্গে অপসরণও পিতার প্রতি অধিকতর বিক্রমে আক্রমণের হেতৃ হইতে পারে। কারণ, পিতার মনে পুত্র হুইতে আক্রমণের ভয়ই তাহার নির্দাসনের কারণ, ইহা জানিয়া সে অন্তথালের সহায়তা লইয়া (পিতার উপর বিক্রম প্রদর্শন করিতে পারে)। অতএব, নিজ রাজ্য হইতে দ্রবর্ত্তী কোন সামন্তরাজের তুর্গে সেই কুমারের বাস নির্ণীত করাই অধিকতর শ্রেয়প্রর।

কিন্তু, আচার্য্য কোণপদন্তের (ভীগ্নের) মতে, ইহা গোবৎসের বন্ধনন্থানতুল্য হইবে। কারণ, এই সামন্তর্গ্রের ক্ষিত পুত্রকে বংগতুল্য মনে করিয়া সামন্তরাজ তদীয় পিতাকে ধেন্নতুল্য বিবেচনায় সেই বংসরূপী পুত্রদারা পিতার ধনদোহন করিবেন। অত এব, কুমারকে মাতৃবান্ধবীদিগের নিকট বাস করানই প্রশন্ততর।

আচার্য্য বাভব্যাধির (উদ্ধবের) মতে, ইহা ধবজ্বতুল্য ব্যাপার। কারণ, এই ধ্বজতুল্য কুমারদারা তাহার মাতৃবান্ধবেরা আদিতি (অর্থাৎ নানা প্রকার দেবতার প্রতিকৃতি প্রদর্শনপূর্ব্বক তে ভিক্ষ্কী ভিক্ষা করে) ও কৌশিকের (সর্পপ্রদর্শনপূর্ব্বক ভিক্ষাকারী ব্যালগ্রাহী সাপুড়ের) ন্তায় অর্থসংগ্রহ করিবে। অতএব, তাহাকে (স্ত্রীসেবাদি) গ্রামাজনোচিত ধর্মে যথেচ্ছসঞ্চার জন্য ছাড়িয়া

দিতে হইবে। কারণ, বিষয়স্থথের জন্ম অবরুদ্ধ রাজপুত্রেরা পিতার প্রতি দ্রোহাচরণ করে না।

কেটিল্যের মতে, এই প্রকার ব্যবহার পুত্রের জীবন্মরণতুল্য অর্থাৎ তাহাকে অবিনীত অবস্থায় রাখিয়া গ্রাম্যস্থথে প্রবর্ত্তিত করিয়া রাখিলে, তাহাকে জীবন্দশাতেই যেন মারিয়া ফেলা হইল। কারণ, (তাঁহার মতে) যে রাজকুলে পুত্রেরা অবিনীত বা অশিক্ষিত থাকিয়া যায়, তাহারা শত্রুবারা আক্রান্তমাত্র হইলেই, ঘুণজগ্ধ (ঘুণচর্কিত) কাঠের ন্তায় স্পর্শমাত্রেই ভাঙ্গিয়া পড়ে। অতএব, (রাজা এইরপ বিধান করিবেদ যেন) মহিষী ঋতুমতী হইলে ঋত্বিক্ পুক্ষেরা গর্ভাধানে স্পুত্র লাভার্থ ইত্রু ও বৃহস্পতি দেবতান্বয়ের উদ্দেশ্যে তাঁহারা হিন্যাধন (অর্থাৎ পুত্রের ঐশ্র্যাদির জন্ম ইন্রের ও তাহার বিন্তাবৃদ্ধি প্রভৃতির জন্ত বৃহস্পতির উদ্দেশ্যে তাঁহারা যেন হবির্দান) করেন। মহিষী পর্ভবতী হইলে, কৌমারভূত্য (শিশুচিকিৎসক) তাঁহার গর্ভপোষণ ও প্রসব-সম্বন্ধে বিশেষভাবে যত্ম নিবেন। মহিষী পুত্র প্রসব করিলে পর, রাজপুরোহিত পুত্রের যথোচিত সংশ্বার করিবেন। (তৎপর) পুত্র সমর্থ হইলে (অর্থাৎ বিন্তার গহণ-ধারণাদিবিষয়ে পট্ হইলে) তাহাকে তত্তৎ বিন্তায় অভিজ্ঞ শিক্ষকগণ বিনীত করিবেন (অর্থাৎ শিক্ষা দিবেন)।

দ্যতিনামক গৃঢ়পুক্থদিগের মধ্যে অন্যতম, সেই (বিনীত) কুমারকে মুগয়া, দ্যত (জুয়াথেলা), মজপান ও স্ত্রীসঙ্গের প্রলোভন দেথাইবে; এবং তাহাকে বলিবে—"পিতার প্রতি আক্রমণপূর্বক রাজ্য নিজ হস্তে গ্রহণ কর"। তাহাদের মধ্যে অন্য একজন সঞ্জী ক্রাহাকে (এইরপ কার্য্য করিতে) প্রতিষেধ করিবে। ইহা আজিনামক আর্র্যুরে মতামুমায়ী নীতিবিদ্গণের মতবাদ (মত্বান্তরে, আঙ্কিনামক যে এক ভারতীয় রাজা তক্ষশিলাতে আলেকজাণ্ডারের দরবারে উপঢৌকন হস্তে উপস্থিত ছিলেন, সেই নীতিবিৎ রাজার মতাবলম্বীদিগের ইহা মতবাদ)। কিন্তু, কোটিল্যের মতে ইহা উপাদেয় উপদেশ নহে, কারণ, তিনি মনে করেন যে, (পিতৃল্যেররূপ) অজ্ঞাত বিষয়ের উপদেশ, (পুত্রের) মহান্ অনর্থ ঘটাইতে পারে। কারণ, যেমন (মৃত্তাণ্ডাদি) কোন নৃতন দ্রব্য, (তৈলাদি) যে যে বস্তুরারা লিপ্ত হয়, ইহা সেই সব বস্তুই চ্য়য়া লয়, তেমন এই নৃতনবৃদ্ধিবিশিষ্ট (অর্থাৎ সদসদ্বিবেকবৃদ্ধিহীন) রাজপুত্র, তাহাকে যাহা বলা হইবে তাহাই শাস্তের উপদেশ বলিয়া জানিয়া লইবে। অতএব, তাহার প্রতি (আরার্য্যণণ) যাহা প্রকৃত ধর্ম ও অর্থ তাহাই উপদেশ করিবেন,

(পিতৃত্রোহাদিরূপ) যাহ। অধন্ম ও (মৃগয়াদিরূপ) যাহা অনর্থ, তাহা কখনই উপদেশ করিবেন না।

(বরং) সত্রীরা (তন্নামক গৃঢ়পুরুষেরা)—"আমরা তোমারই দেবক" এই বলিয়া তাহাকে (রাজপুত্রকে) পালন করিবে। যৌবনমদ বৃদ্ধি পাইলে কুমার যদি পরস্ত্রীতে মনোনিবেশ করে, তাহা হইলে তাহারা তাহাকে **আর্য্যা**র বেষধারিণী অশুচি স্ত্রীলোক দারা রাত্রিতে শূন্ত গৃহে অত্যম্ভ উদ্বিগ্ন করিয়া তুলিবে ( অর্থাৎ সে যেন ভবিষ্যতে আর পরস্ত্রীলোভী না হয় )। যদি সে মছপান स्মমনা করে, তাহা হইলে ( সত্রীরা ) তাহাকে যোগপান ( অর্থাৎ বিরস দ্রবাযুক্ত মদ) খারা উদ্বিয় করিবে ( অর্থাৎ সে যেন ভবিশ্বতে আর মত্যকামী না হয় )। যদি সে দ্যুতে ( অর্থাৎ জুয়াথেলাতে ) মনোনিবেশ করে, তাহা হইলে সত্তীরা কাপটিক (তন্নামক গৃঢ়পুরুষবিশেষ অথবা কপট ক্রীড়াশীল জুয়ারী) পুরুষগণ দ্বারা তাহাকে উদ্বিগ্ন করিবে ( অর্থাৎ সে ধেন ভবিশ্বতে আর দ্যুতকামী না হয় )। ( যদি সে মৃগয়াকামী হয়, তাহা হইলে ( সত্রীর। ) প্রতিরোধকারী চোরের বেষধারী পুরুষগণদারা তাহাকে ত্রানগুক্ত করিবেন (অর্থাং সে যেন ভবিষ্যতে আর মৃগয়া করিতে কামনা না করে )। পুত্র পিতার উপর আক্রমণ করিতে মনন করিলে, (সত্রীরা)—"আচ্ছা, তাহাই করা হইবে" এইরপ বলিয়া তাহার সঙ্গে মিল করিয়া (ক্রমশঃ) তাহাকে সেই কার্য্য হইতে নিব্রিভিড করিবে। (তাহারা তাহাকে) এইরূপ বলিবে—"রাজার প্রতি আক্রমণ-প্রার্থনা অর্থাৎ আক্রমণের চেষ্টা করাই উচিত নহে। কারণ, তুমি যদি ইহাতে বিফল হও, তাহা হইলে তোমার বধ নিশ্চিত, এবং তোমাকে সেইক্লুগ্য লোকনিন্দা ভোগ করিতে হইবে, ও এমনও হইতে পারে যে, জনতার প্রজ্যেকে এক এক খণ্ড লোইপাত দ্বারা তোমার বধও সাধন করিতে পারে।"

রাজা (তাঁহার প্রতি) অনারুই, প্রিয়, একমাত্র পুত্রকেও বন্ধনে রাথিবেন। আর, তিনি যদি বহু পুত্রের পিতা হয়েন, তাহা হইলে সেই অনারুই পুত্রকে তেমন প্রত্যন্ত দেশে (অর্থাৎ রাজ্যের সীমাপ্রান্তে), অথবা অন্ত রাজার দেশে পাঠাইয়া দিবেন—বেখানে (রাজোচিত) খাছদ্রব্য ও পণ্যবস্তু (ভোগার্থে) বিশ্বমান নাই; অথবা যেখানে তাহার উছ্যোগে কোন প্রকার ভিন্ন বা বিশ্নবের সম্ভাবনা নাই। যে পুত্র উপযুক্ত আত্মগুণসম্পন্ন তাহাকে (রাজা) সেনাপতি বা যুবরাজের পদে স্থাপিত করিবেন।

বৃদ্ধিমান, আহাধ্যবৃদ্ধি ও তুর্ববৃদ্ধি--নাজপুত্রদিগের এই তিন প্রকার

ভেদ হইতে পারে। (তন্মধ্যে) আচার্য্য দারা শিষ্ট হইয়া যে পুত্র কেবলমাত্র ধর্ম ও অর্থ উপলব্ধি করে তাহা নয়, তাহার আচরণও করে, তাহাকে বৃদ্ধিমান্ পুত্র বলা হয়। যে পুত্র (ধর্ম ও অর্থ) উপলব্ধি করিয়াও তাহার আচরণ করে না, তাহাকে আহার্যাবৃদ্ধি বলা যায়। যে পুত্র সর্বদা প্রমাদপরায়ণ এবং যে ধর্ম ও অর্থের দেব করে, তাহাকে ভ্রব্যুদ্ধি বলা যায়।

সেই হুৰ্ব্যন্ধি পুত্ৰ যদি রাজার একমাত্র পুত্র হইয়া থাকে, তাহা হইলে রাজা (রাজ্য করার জন্য উপযুক্ত অধিকারী পাওয়ার উদ্দেশ্যে) তাহার (সেই হুর্ব্ব ্রি পুত্রের ) পুত্রোৎপত্তি-বিষয়ে যত্নবান্ হইবেন। অথবা (তিনি) নিজ পুত্রিকার পুত্র উৎপাদিত করিবেন (অর্থাৎ নিজ কন্তাকে--"তাহার পুত্রোৎপত্তি হইলে সেই পুত্র আমার পুত্র হইবে" এইরূপ চুক্তিতে বরের হস্তে সমর্পণ করিবেন)। কিন্তু, রাজা যদি বৃদ্ধ বা ব্যাধিগ্রস্ত হয়েন, তাহা হইলে তিনি মাতৃকুলের কোন বন্ধু (বান্ধব), বা স্বকুলজাত কোন পুরুষ, বা গুণবান কোন সামস্ত নূপতিবারা স্বক্ষেত্রে (স্বমহিধীতে) (নিয়োগদারা) পুত্র উৎপাদন করাইতে পারেন। (তথাপি) অবিনীত (অশিক্ষিত) একমাত্র পুত্রকে রাজ্যে স্থাপিত করিবেন না। রাজার বহু পুত্রের মধ্যে যে-টি ( ছুর্ব্বদ্ধি ) তাহাকে ( প্রত্যস্তাদি দেশে ) তিনি অবক্ষ রাখিতে পারেন। (পুত্র হইতে) কোন আপদের সম্ভাবনা না থাকিলে, রাজা পুত্রের হিতে রত থাকিবেন। কিন্তু, (অনেক প্রিয় পুত্র থাকিলেও) রাজৈশর্য্য জ্যেষ্ঠপুত্তে সমর্পিত হইলে তাহাই প্রশস্ত কার্য্য বলিয়া গৃহীত হয় ॥ ১ ॥ অথবা, রাজ্য সমগ্র কুলের হস্তেও সমর্পিত থাকিতে পারে ( অত্রন্থ 'কুল'-শন্দ দারা রাজার বহু পুত্রের সম্মেকে, অথবা পুত্র না থাকিলে কুলবুদ্ধদিগকেও বুঝাইতে কারণ, এইরূপ কুলস্ভব তুর্জন্ন হইয়া (অর্থাৎ শত্রুর আক্রমণ নিরাক্ত করিয়া ) এবং রাজব্যসনজনিত আবাধ (প্রজাপীড়ন )-বিহীন হইয়া

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে রাজপুত্র হইতে রাজার আত্মরকা-নামক সপ্তদশ অধ্যায় সমাপ্ত ।

নিরন্তর পৃথিবীতে অধিষ্ঠান করে॥ ২॥

## অষ্টাদশ অধ্যায়

# ১৪ শ-১৫শ প্রকরণ—পিতার প্রতি অবরুদ্ধ রাজপুত্রের ব্যবহার ও অবরুদ্ধ রাজপুত্রের প্রতি পিতার ব্যবহার

( অবক্ল ) রাজপুত্র নিজের পক্ষে অযোগ্য কোন কার্য্যে পিতাদারা নিযুক্ত হওয়ায়, অতি কন্তে জীবনযাত্রা নির্বাহ করিতে থাকিলেও, পিতার অমুবর্তন করিয়া চলিবেন; কিন্তু, তাঁহাকে নিজের প্রাণসংশয়কর কোন কার্য্য, (অমাত্যাদি) প্রকৃতির কোপোৎপাদন, বা কোনরূপ পাতকের (ঘোর পাপের) কার্য্য করিতে বলা হইলে, তাঁহার পক্ষে (পিতার অনুবর্ত্তন) না করিলেও চলিবে। কোনও পুণ্যকর্মে নিযুক্ত হইলে, (রাজপুত্র) সেই কার্য্যে সাহায্য করার জন্ত পিতার নিকট একজন অধিষ্ঠাতা বা কর্মনেতা পুরুষ চাহিয়া লইবেন। সেই পুরুষদারা অধিষ্ঠিত হইয়া, (তিনি) রাজার আদেশ সবিশেষভাবে পালন করিবেন। (তিনি সেইকার্য্যে) অমুরূপ ফল লাভ করিলেও (প্রজা-জন হইতে) কোনরূপ উপায়ন-জব্য (উপঢোকনজব্য) পাইলে, তাহা পিতৃসমীপে পাঠাইয়া নিবেন ( অর্থাৎ স্বয়ং তাহা উপভোগ করিবেন না )।

এই প্রকার ব্যবহার-প্রাপ্তি সত্তেও পিতা যদি তাঁহার প্রতি অতৃষ্টই থাকেন এবং অন্থ ও (স্বমাত্বাতিরিক্ত) অন্থ কোন মহিষীর প্রতি স্নেহপরায়ণ থাকেন, তাহা হইলে তিনি পিতার নিকট অরণ্যে গমনের অন্থমতি জিজ্ঞাসা করিবেন। অথবা, যদি পিতা হইতে তাঁহার বন্ধন বা বধপ্রাপ্তির ভয় থাকে, তাহা হইলে তিনি, যে সামন্ত নূপতি ন্যায়পূর্বক ব্যবহার করেন এবং যিনি ধার্মিক, সত্যবাদী, স্মবঞ্চক এবং শরণাগতজনের আশ্রয়দাতা ও ভাহাদের প্রতি সম্মানপ্রদর্শক, তেমন এক সামন্তের আশ্রয় লইবেন। সেই সামন্তের আশ্রয়ে থাকিয়া, (রাজপুত্র) কোষ ও সৈন্যম্বারা উত্তমরূপে যুক্ত হইয়া কোন প্রবীর (প্রকৃষ্ট বীর) পুক্ষবের কন্যাকে বিবাহ কবিতে গারেন, কিংবা (পিতার) আটবিকগণের সহিত মিত্রতা-সম্বন্ধ স্থাপন করিতে পারেন, অথবা (পিতার) ক্লত্যবর্গের (অর্থাৎ অতৃষ্ট অমাত্যদিগের) সহিত (নিজ সহায়ের বৃদ্ধিজন্য) মিলিত হইতে পারেন।

যদি (উক্তরপ কোষদণ্ডের সহায় না পাইয়া) রাজপুত্রকে একাকীই থাকিতে হয়, তাহা হইলে তিনি স্থবর্ণপাক (অর্থাৎ রসতন্ত্রের প্রয়োগে লোহাদিকে স্থবর্ণ পরিণত করার বিজ্ঞা), (হীরকাদি) মণি, রাগ (লাক্ষাদিরঞ্জন দ্রব্য), সোনা ও রূপার পণ্যদ্রব্যের ব্যাপার ও আকর-দ্রব্যের কার্থানার ব্যাপার অবলয়ন

ক রিয়া নিজের জীবিকা উপার্জ্জন করিবেন। অথবা, (তিনি) পাষ্ঠুদিগের (বিধর্মীদিগের) ও সংযের (বৌদ্ধ সংঘের) দ্রব্য, শ্রোক্তিয় ব্রাহ্মণ যাহা ভোগ করে না এমন দেব-দ্রব্য, এবং ধনসমুদ্ধা বিধবার দ্রব্য গুঢ়ভাবে তাহাদিগের গৃহে প্রবেশ করিয়া অপহরণ করিবেন এবং সার্থ বা বণিক সংঘের (পণ্যযুক্ত) যানপাত্রে (পোতাদিতে) মদকর-রসাদি (বিষাদি) প্রয়োগ করিয়া, তাহাদিগকে বঞ্চিত করিয়া লুট বা অপহরণ করিয়া লইতে পারেন। অথবা, (তিনি) ( ত্রমোদশ অধিকরণের ) পারগ্রামিক ( শত্রুর প্রাসাদ অধিকারবিষয়ক ) প্রকরণে উক্ত উপায়াবলীও অবলম্বন করিতে পারেন। অথবা, (তিনি) নিজ মাতার সেবকজনগণের আতৃকূল্যবিধানপূর্বকও ( স্ববৃদ্ধির জন্য ) চেষ্টমান হইতে পারেন। অথবা, (তিনি) তক্ষাদি কাক, (চিত্রকরাদি) শিল্পী, কুশীলব, চিকিৎসক, বাগ্জীবন ও পাষণ্ডের বেষে ছদ্মবেষযুক্ত হইয়া, নিজ স্বরূপ লুকাইয়া, তৎ-তৎ-পুরুষের বেষধারী গৃঢ়পুরুষদিগের সহিত মিলিত হইয়া, রাজার ছিদ্রে ( অর্থাৎ অপকার স্থানে ) প্রবেশ করিয়া, তাঁহাকে শস্ত্র ও বিষদ্বারা প্রহার করিয়া ( অর্থাৎ মারণার্থ আক্রমণ করিয়া) (অমাত্যদিগকে) বলিবেন,—"আমিই সেই রাজকুমার; আমার সহিত একত্র হইয়া যে রাজ্য (পিতার) ভোগ্য, তাহা (পিতা) একাকী ভোগ করিবার অধিকারী হইতে পারেন না , এইরূপ অবস্থায় আপনারা যাঁহারা ( অমাত্যাদি পদের ) কার্য্যভার চালাইতে চাহেন, তাঁহাদিগকে দিগুণ ভক্ত (ভাতা) ও বেতন দিয়া (আমি) সম্মানিত করিতে পারি।" এই পর্যান্ত অবরুদ্ধ পুত্রের ব্যবহার বর্ণিত হইল।

অপর পক্ষে, (অমাত্যাদি) মৃথ্যগণের পুত্রেরা গুপ্তচরের বেষে উপস্থিত হইয়া, অবরুদ্ধ পুত্রকে বুঝাইয়া বলিয়া (অর্থাৎ তিনি যদি পিতার প্রতি অনুক্লবৃত্তি হয়েন, তাহা হইলে, যোবরাজ্যপ্রাপ্তির সন্থাবনা আছে ইত্যাদিরপ প্রবোধবাক্য বলিয়া ) তাঁহাকে (পিতৃসমীপে) আনিতে চেটা করিবেন, কিংবা রাজসম্মানিতা তাঁহার মাতাও তাঁহাকে বশে আনিতে পারেন। অবিধেয় পুত্রকে রাজা পরিত্যাগ করিলে, তাঁহাকে গৃঢ়পুরুষেরা শস্ত্র ও রস (বিষ) প্রয়োগদারা হত্যা করিতে পারে। আর যদি তেমন পুত্র অপরিত্যক্তই থাকেন, তাহা হইলে (গৃঢ়পুরুষেরা) তাহাকে নিজের সমানস্বভাব স্ত্রীঘারা, মন্তপানহারা বা মৃগয়াদারা আসক্ত করিয়া রাত্রিতে বাঁধিয়া রাজান্তিকে আনিতে পারে।

( অবক্তম পুত্র রাজাস্থিকে ) উপস্থিত হইলে, রাজা তাঁহাকে "আমার উত্তরকালে রাজ্য তোমারই হইবে"—এইরূপ বলিয়া, রাজ্যনিমিত্ত তাঁহাকে সান্ধনা দিবেন। যদি সেই পুত্র একরপ অবস্থায়ই অবিনীত থাকিয়া যায়, তাহা হইলে রাজা তাঁহাকে কারারুদ্ধ করিয়া রাখিবেন। অথবা, তিনি বহু পুত্রের পিতা হইলে এমন পুত্রকে (রাজ্য হইতে) নির্বাদিত করিতে পারেন ॥১॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে পিতার প্রতি
অবক্লন্ধ পুত্রের ব্যবহার ও অবক্লন্ধ পুত্রের প্রতি পিতার
ব্যবহার নামক অষ্টাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

### উনবিংশ অধ্যায়

### ১৬শ প্রকরণ—রাজপ্রণিধি বা রাজার কার্য্যব্যাপৃততা

রাজা যদি উত্থানযুক্ত ( অর্থাৎ কর্জব্যকার্য্যে উত্যোক্তা ) থাকেন, তাহা হইলে, ( অমাত্যাদি ) ভৃত্যবর্গও কার্য্যে উত্থানযুক্ত হইয়া পড়ে। আবার রাজা যদি প্রমাদযুক্ত ( অর্থাৎ কর্ত্তব্য কার্য্যে অনবধানযুক্ত ) হয়েন, তাহা হইলে ভৃত্যবর্গও প্রমাদী হয় এবং তাহারা তাঁহার ( রাজার ) কার্য্যসমূহ নষ্ট করে। এবং তিনি ( রাজা ) শক্রত্বারা অতি-সংধিত বা বঞ্চিত হয়েন। অতএব, ( রাজা ) নিজের উত্থান বা উত্যোগবিষয়ে সমাহিত থাকিবেন।

রোজা) নালিকাবারা (এক নালিকার সময় পরিমাণে ২৪ মিনিট) পরিমাপ করিয়া দিবাভাগকে অষ্ট্রধা এবং রাত্রিভাগকে অষ্ট্রধা বিভক্ত করিবেন (এক অষ্ট্রভাগে এক পাদ কম ৪ নালিকা অর্থাৎ ৬% নালিকা হয় অর্থাৎ দেড় ঘণ্টাকাল পরিমিত হয়)। অথবা, তিনি পুরুষের ছায়ামানঘারা দিবসের প্রথম চারিটি অষ্ট্রভাগ কল্পনা করিবেন, যথা (১) স্বর্য্যাদয় হইতে তিন পুরুষ পরিমাণের ছায়া পর্যান্ত প্রথম অষ্ট্রভাগ, (২) একপুরুষ পরিমাণের ছায়া পর্যান্ত বিতীয় অষ্ট্রভাগ, (৩) চারি অঙ্গুলা পরিমাণের ছায়া পর্যান্ত তৃতীয় অষ্ট্রভাগ ও (৪) মধ্যাত্র পর্যান্ত চতুর্থ অষ্ট্রভাগ। এই চারিটি অষ্ট্রভাগ ঘারা দিবসের পশ্চিম বা চারিটি অষ্ট্রভাগ ব্যাখ্যাত ব্বিতে হইবে, অর্থাৎ (৫) চতুরঙ্গুলা ছায়া, (৬) পৌরুষী ছায়া, (৭) ত্রৈপৌরুষী ছায়া ও (৮) দিনান্ত ( সর্ব্বনাকল্যে প্রত্যেকের দেড় ঘণ্টা পরিমিত করিয়া দিবসের আটটি ভাগ কল্পিত হইল)।

(রাজা) দিবসের এই আটটি ভাগের প্রথমটিতে (গত রাত্রির) রক্ষা-বিধান

কার্য্য ও (গত দিনের) আয়-ব্যয়ের বিষয় শ্রবণ করিবেন। দ্বিতীয় ভাগে (তিনি) পুরবাদীদিগের ও জনপদবাদীদিগের কার্য্য নিরীক্ষণ করিবেন। তৃতীয় ভাগে (তিনি) স্নান ও ভোজন করিবেন এবং স্বাধ্যায় (বেদাধ্যয়ন) সম্পাদন করিবেন। চতুর্থ ভাগে (তিনি) হিরণ্যের (বা নগদ টাকার) প্রতিগ্রহ করিবেন এবং অধ্যক্ষদিগকে (কার্য্যবিশেষে) নিযুক্ত করিবেন। পঞ্চম ভাগে (তিনি) মন্ত্রিপরিষদের সহিত পত্রব্যবহারছারা মন্ত্রণা চালাইবেন এবং গুপুচরগণের প্রতি গুহুবিষয়ের উপদ্শিস্সমান কার্য্যাবলী অবগত হইবেন। ষষ্ঠ ভাগে (তিনি) স্বচ্ছদেদ বিহার, অথবা মন্ত্রণা করিবেন। সপ্রম ভাগে (তিনি) হস্তী, অশ্ব, রথ ও আয়ৢধ্সমূহ পর্য্যবেক্ষণ করিবেন। অইম ভাগে (তিনি) সেনাপতিকে সঙ্গে করিয়া (য়ুদ্ধাদি-) বিক্রমের বিষয় আলোচনা করিবেন। দিবাভাগের অবসান হইলে (তিনি) সায়ংকালীন উপাসনা করিবেন।

( আবার ) রাত্রির প্রথম অষ্টভাগে ( তিনি ) গৃঢ়পুরুষদিগের সহিত সাক্ষাৎ করিবেন। বিতীয় ভাগে ( তিনি ) স্নান ও ভোজন এবং স্বাধ্যায় সমাপন করিবেন। তৃতীয় ভাগে তিনি তুর্য্য বা গীতবাদিত্রাদির শ্রবণস্থথ অন্থভব করিয়া শুইবেন এবং চতুর্থ ও পঞ্চম ভাগে নিদ্রা ঘাইবেন। ষষ্ঠ ভাগে ( তিনি ) তুর্যাঘোষদ্বারা জাগরিত হইয়া ( অর্থাদি- ) শাস্ত্র ও (পরদিনে ) যাহা কর্ত্ব্য হইবে তদ্বিষয়ের চিন্তা করিবেন। সপ্তম ভাগে ( তিনি ) মন্ত্র বিচার করিবেন এবং গৃঢ়পুরুষদিগকে যথাবিষয়ে প্রেরণ করিবেন। অষ্টম ভাগে ( তিনি ) শ্রম্থিকি ( যাজক ) আচার্য্য ( বিভার উপদেশকারী ) ও পুরোহিত্তকে সঙ্গে কবিয়া স্বন্ধিরত পুরুষ ) ও মোহার্ত্তকের ( দৈবজ্ঞ বা শুভাশুভ গ্রহচিন্তকের ), সঙ্গে সাক্ষাৎ করিবেন। ( তৎপর ) বৎস সহিত ধেন্য ও বৃষভকে প্রদক্ষিণ করিয়া উপস্থানে বা আস্থানমণ্ডপে যাইবেন।

অথবা, (তিনি) নিজের বল বা শক্তির আম্তকুল্য চিন্তা করিয়া, রাত্রি ও দিন ( অম্যপ্রকারে) বিভক্ত করিয়া, স্বকার্য্যের অম্যন্ধানও করিতে পারেন।

উপস্থানে ( সভাগতে ) উপস্থিত হইয়া ( তিনি ) কার্য্যার্থিগণের দার-নিরোধ বন্ধ করাইবেন, অর্থাৎ যাহাতে আগত কার্য্যার্থীরা সহজে রাজসমীপে স্বকার্য্যানিবেদনার্থ উপস্থিত হইতে পারে তিনি সেই প্রকার ব্যবস্থা করাইবেন। কারণ, যে রাজা ত্র্দ্দর্শ ( অর্থাৎ কার্য্যার্থীরা সহজে যাহার সাক্ষাৎ করিতে পারে না ), তিনি অস্তিকসেবকগণদারা কার্য্যাকার্য্যের বিপর্যাস বা বৈপরীত্য ঘটান ( অর্থাৎ

রাজা স্বয়ং তাদৃশ সাক্ষাৎকারদ্বারা যেরপ কার্য্যনিম্পত্তি করিতে পারিবেন, আসন্নচারী তাহা করিতে পারিবে না বলিয়া কার্য্যাবলী উলট-পালট হইয়া ঘাইতে পারে)। তাহা হইলে অর্থাৎ কার্য্যাকার্য্যের বিপর্য্যাস ঘটলে, (তিনি) অমাত্যাদি প্রকৃতির কোপ উৎপাদন করিবেন, অথবা শক্রর বশগামী হইয়া পড়িবেন। অতএব, (তিনি) দেবতা, আশ্রম, পারশু (বিধর্মী), শোক্তিয় (গবাদি) পশু ও পুণ্যস্থান সম্বন্ধীয় এবং বালক, বৃদ্ধ, ব্যাধিত, ব্যসনী (বিপদগ্রস্তজন), অনাথ জন ও দ্বীলোক সম্বন্ধীয় কার্য্যাবলী যথাক্রমে পর্য্যবেক্ষণ বা বিচার করিবেন। অথবা, (তিনি) কার্য্যের গুরুত্ব ব্রিয়া, কিংবা কার্য্যের অতিপাতিত্বের আশক্ষায় (অর্থাৎ কোন কার্য্যের বিচার কালবিলম্বদোষে স্থগিত থাকিলে, তাহা শীদ্রবিচার্য্য বলিয়া বিবেচিত হইলে) অক্যথা কার্য্যদর্শন করিতে পারেন, অর্থাৎ উপরি বর্ণিত কার্য্যক্রম তিনি রক্ষা না করিতেও পারেন।

( গুরুই হউক, আর লঘুই হউক ) সব আত্যায়িক (জরুরি ) কার্য্যই রাজা শ্রবণ করিবেন এবং সেই কার্য্য অতিক্রাস্ত হইতে দিবেন না। (কারণ,) অতিক্রাস্ত বা অতিপাতিত কার্য্য (পরে ) কপ্টসাধ্য হইয়া দাড়ায়, অথবা, ইহা অসাধ্যও হইয়া উঠে ॥১॥

রোজা) অগ্নিগৃহে উপস্থিত হইয়া, পুরোহিত ও আচার্য্যকে দক্ষে করিয়া প্রত্যুত্থান ও অভিবাদনপূর্বক বৈগ্ন (বেদবিৎ পণ্ডিত) ও তপস্বীদিগের কার্য্য দর্শন করিবেন ॥২॥

পাছে বা কোন কোপ উপস্থিত হয় এই কারণে, (রাজা) কিন্তু, তপস্বীদিগের ও মায়াপ্রয়োগে অভিজ্ঞজনদিগের কার্য্য কৈরিক্তা অর্থাৎ ত্রয়ীবিত্তাবিৎ পণ্ডিত-গণকে সঙ্গে লৃইয়া পর্য্যবেক্ষণ করিবেন, কথনই একাকী তাহা করিবেন না ॥৩॥

মনে রাখা উচিত ষে, রাজার পক্ষে উত্থান বা উল্লোগ (অর্থাৎ সর্ব্বকালে কার্য্য-ব্যাপৃততা ব্রত বলিয়া গণ্য, কার্য্য বা ব্যবহারের নির্ণয় তাঁহার পক্ষে যজ্ঞসদৃশ; (শক্রমিত্রাদিতে) ব্যবহারসমতা তাঁহার পক্ষে দক্ষিণা বা দানস্বরূপ; এইভাবে কার্য্যে দীক্ষিত রাজারই (বাস্তবিক) অভিষেচন বা অবভৃথ-স্থান (সম্পন্ন বলিয়া বিবেচিত হওয়ার যোগ্য) ॥৪॥

প্রজার স্থথ উপস্থিত হইলেই রাজার স্থা হয়, এবং প্রজার হিত হইলেই তাহা রাজার হিত বলিয়া বিবেচ্য। যেটা রাজার নিজের প্রিয় সেটা তাঁহার হিত নহে, কিন্তু, প্রজাবর্গের যেটা প্রিয় সেটাই রাজার হিত ॥৫॥

অতএব, নিত্য উত্থিত বা উত্থানযুক্ত হইয়া, রাজা অর্থ বা কার্য্যের নির্ণয়

করিবেন। অর্থের (রাজকার্য্যের) মূলই হইল উপ্থান, এবং ইহার বিপর্যায় অর্থাৎ অরুখান অনর্থের মূল (এ স্থলে অর্থ শব্দের সম্পৎ অর্থ গ্রহণ করা সমীচীন মনে হয় না) ॥৬॥

অন্থানের ফলে, (অতীতে) প্রাপ্ত কার্য্যের এবং ভবিশ্বতে প্রাপ্তিযোগ্য কার্য্যের নাশ নিশ্চিত। উত্থানের ফলে (রাজা) (সত্তঃ) ফল বা কার্য্যসিদ্ধি প্রাপ্ত হইতে পারেন এবং তিনি কার্য্যের পূর্ণ সম্পাদনও লাভ করিতে পারেন ॥৭॥ কোটিলীয় অর্থশান্তে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে

রাজপ্রণিধি-নামক উনবিংশ অধ্যায় স্মাপ্ত।

### বিংশ অধ্যায়

### ১৭শ প্রকরণ—নিশান্তপ্রণিধি বা রাজভবনের অসুষ্ঠান

রোজা ) বাস্তবিভাবিৎ লোকদিগের মতে যে স্থান প্রশস্ত দেখানে প্রাকার, পরিথা ও দ্বারযুক্ত এবং অনেক প্রকোষ্ঠবিশিষ্ট অন্তঃপুর নির্মাণ করাইবেন।

(সন্নিধাত্নিচয়কর্ম-নামক প্রকরণে উক্ত) কোষগৃহনির্মাণের যে সমস্ত বিধান আছে সেই বিধানান্ত্রসারে, তিনি (অন্তঃপুরের) মধ্যে নিজের বাসগৃহ নির্মাণ করাইতে পারেন। যে গৃহের ভিত্তির মধ্যে সঞ্চরণপথ লুকায়িত আছে এমন মোহনসংজ্ঞক গৃহও (অর্থাৎ মার্গ-ব্যামোহকারক গৃহ) হইতে পারে,—এমন মোহনগৃহের মধ্যেও (তিনি) নিজের বাসগৃহ নির্মাণ করাইতে পারেন। অথবা, নিকটবত্তী দিকে প্রতিষ্ঠিত কোন চৈত্য বা দেবায়তনে যে দেবতার মূর্ত্তি আছে সেই দেবতার মূর্ত্তিবারা ইহার দ্বার আচ্ছাদিত করিয়া এবং একাধিক স্থরঙ্গবারা সঞ্চরণপথ ইহাতে নিবেশিত করিয়া ভূমিগৃহ (ভূমিগর্ভহ গৃহ) নির্মিত হইতে পারে,—তন্মধ্যে (রাজা স্থ-বাসগৃহ রচনার ব্যবস্থাও করাইতে পারেন)। অথবা, যাহাতে ভিত্তির মধ্যে সোপান লুকায়িত আছে, কিংবা যাহার প্রবেশ বা অপসরণমার্গ স্থবির (ছিন্তুক্ত) স্তম্ভের মধ্যে আছে এমন প্রাসাদও নির্মিত হইতে পারে, এবং তন্মধ্যে রাজা নিজ বাসগৃহ রচনা করাইতে পারেন। (কিন্তু,) এই বাসগৃহ শক্র হইতে প্রাপিত আপদের প্রতীকারার্থ এমন ভাবে নির্মিত হইবে যে, (অবসর

উপস্থিত হইলে ) ইহাকে তল পর্যান্ত পাতিত করিবার উদ্দেশ্যে ইহা যন্ত্রবন্ধ থাকিবে ( অর্থাৎ সেই যন্ত্রের সংশ্রনে সমস্ত বাসগৃহ অবসরমত পাতিত করা যাইতে পারিবে )। ( পূর্বের নির্দ্মিত না থাকিলেও ) আপদ উপস্থিত হইলে ( রাজা) এই প্রকার বাসগৃহ নির্মাণ করাইতে পারেন। ( শক্ররাজাও তাঁহার মত তুল্যশাস্ত্র-বেতা হইতে পারে—এই ভয়ে ) উক্তরূপ বাসগৃহ রচনা না করাইয়া ( তিনি ) নিজের বৃদ্ধিবিবেচনায় অন্যপ্রকার বাসগৃহও নির্মাণ করাইতে পারেন।

(নিশাস্তমধ্যে অগ্নিভয় নিবারণের উপায় বলা হইতেছে, য়থা—) যে অস্তঃপুর, বাম দিকে রক্ষিত হইয়া, তিন বার (বেণুছারা মথিত হওয়ায়) মাস্থবের অস্থি হইতে উৎপয় অগ্নিছারা (ময়াদির উচ্চারণপূর্বক) পরিগত হয়, সেই অস্তঃপুরকে অয় কোন অগ্নি দহন করিতে পারে না। (এমন কি,) এখানে অয় অগ্নি জলিতেই পারে না। এবং য়িদ করক বা বর্ধশিলার জলসহ মিপ্রিত করিয়া (বল্লীক-) মৃত্তিকাযুক্ত বৈহাত ভক্ম (অর্থাৎ বিহাৎপাতে দগ্ধ বৃক্ষাদির ভক্ম) দারা সেই অস্তঃপুর অবলিপ্ত করা হয়, তাহা হইলেও (ইহাকে) অয় কোন অগ্নি দহন করিতে পারে না, বা সেথানে অগ্নি জলিতেই পারে না।

(এখন বিষপ্রতীকারের উপায় বলা হইতেছে, যথা—) জীবন্তী (গুড়চী), খেতা (শদ্ধিনী), মৃদকের (লোধ ক্রমবিশেষের) পুষ্প ও বন্দাকা-নামক রক্ষোপরি জাত লতাবিশেষ দ্বারা, অথবা অক্ষীব রক্ষে (শিগ্রু বা সজিনা রক্ষে) জাত অশ্বথের প্রতানদ্বারা স্থরক্ষিত অন্তঃপুরের উপর সর্পের বা অন্তপ্রকারের বিষের প্রভাব থাকিবে না। গৃহে মার্জার, ময়ুর, নকুল ও পৃষতমুগ ছাড়িয়া দিলে, ইহারা সর্পগুলিকে ভক্ষণ করে। সর্প ও অন্ত বিষশকা উপস্থিত হইলে, শুক, শারিকা, কিংবা ভূঙ্গরাজ (অলিবিশেষ) চীৎকার করিয়া থাকে। বিষ নিকটে উপস্থিত হইলে, ক্রোঞ্চ পক্ষী বিহরল হয়, জীবঞ্জীবকে পক্ষী গ্রানিযুক্ত হয় (হর্ণরহিত হয়), মন্ত কোকিল মরিয়া যায়, এবং চকোরের অক্ষিদ্ধয় লাল হইয়া উঠে। উক্ত প্রকারে (রাজা রাজভুবনে) মগ্নি, বিষ ও সর্প হইতে রক্ষার বিধান করিবেন।

(নিশান্তের) পশ্চান্তাগে বিভিন্ন কক্ষ্যাতে রাজস্ত্রীদিগের নিবাসস্থান ও গর্ভসংস্থা (গভিনী অবস্থায় বাসযোগ্য স্থান), ব্যাধিসংস্থা (ব্যাধির অবস্থায় তাঁহাদের বাসযোগ্য স্থান) ও বৈজ্ঞপ্রত্যাখ্যাত-সংস্থা (অর্থাৎ অসাধ্য রোগে রুগ্না স্ত্রীদিগের বাসযোগ্য স্থান) নির্মাণ করাইতে হইবে এবং সেথানে বৃক্ষ্যান (উন্তানাদি) ও উদকস্থান (তড়াগাদি) থাকিবে। (উক্ত স্থানগুলির) বাহিরে

ক্যাপুর (অবিবাহিত রাজক্যাগণের বাসস্থান) ও কুমারপুর (অপ্রাপ্তব্যবহার রাজকুমারগণের বাসস্থান) রচিত থাকিবে। (নিশান্তের) অগ্রভাগে
(বিভিন্ন কক্ষাতে) অলম্বারভূমি (বিচিত্র শোভাযুক্ত মহল), মন্ত্রভূমি (মন্ত্রণার
সভাগৃহ), উপস্থান (আস্থানমগুপ অর্থাৎ দরবার-স্থান) এবং কুমারগণের
অধ্যক্ষের জন্ম নির্দিষ্ট স্থান থাকিবে (কুমারাধ্যক্ষ শন্দটি পরবর্ত্তিকালের
প্রস্তর ও তামলিপিতে প্রাপ্ত 'কুমারামাত্য' শব্দের সহিত তুলনীয়। এ
স্থলে কুমারদিণের ও সন্নিধাতৃ প্রভৃতি অধ্যক্ষগণের স্থান বলিয়া অন্থবাদ করিলে
ইহা সমীচীন বোধ হইবে না, কারণ, ইতিপূর্কেই কুমারপুর উল্লিখিত হইয়াছে)।
অন্যান্ত কক্ষ্যাতে অন্তঃপুরাধিক্বত প্রধান পুরুষের রক্ষা-সৈন্ত বা রক্ষিপুরুষেরা
থাকিবে।

গৃহমধ্যে উপস্থিত হইয়া (রাজা) বিশ্বস্ত বৃদ্ধ পরিচারিকা দ্বারা পরিশুদ্ধা (অর্থাৎ দেবীদর্শনে কোন প্রকার বাধাবিপত্তির সন্থাবনা নাই বলিয়া জানিয়া) মহিষীকে দর্শন দিবেন। তিনি (একাকী, বৃদ্ধ পরিচারিকা সঙ্গে না নিয়া) কথনও দেবীসমীপে উপস্থিত হইবেন না। কারণ; (দেবীগৃহে রাজার একাকী গমনে কিরপ দোষ হইতে পারে, এথানে প্রাচীন ইতিহাস হইতে কতকগুলি দৃষ্টাস্ত উদ্ধৃত হইতেছেঃ) দেবী বা পট্টমহিষীর গৃহে ল্কায়িত থাকিয়া (বীরসেননামক) লাতা, (রাজা) ভজেসেনকে হত্যা করিয়াছিলেন; এবং নিজ মাতার শ্যার নীচে প্রচ্ছন্ন থাকিয়া (রাজ-) পুত্র, কার্মশ রাজাকে হত্যা করিয়াছিলেন। মধুছলে বিষ দিয়া তাহাতে লাজ (বা থই) মিশ্রিত করিয়া (রাজাকে তাহা থাওয়াইয়া) কাশিরাজকে, বিষদারা উপলিপ্ত নৃপুরের (আঘাতে) বৈর স্ত রাজাকে, (বিষদিম্ম) মেথলামিনির স্পর্শনারা রাজা জালুথকে এবং নিজের বেণীতে গুঢ়ভাবে শত্ম ল্কাইয়া রাথিয়া তদ্ধারা রাজা বিভুরথকে তাহাদের নিজ নিজ মহিষীরা মারিয়া ফেলিয়াছিলেন।

রোজা) মহিষীদিগকে কখনই মৃত্ত (মৃত্তিতমন্তক বৌদ্ধ ভিক্ষ্ক প্রভৃতি), জটিল (জটাধারী শৈবপাশুপতাদি) ও কুহক বা মায়াপ্রয়োগকারীদিগের সহিত সংসর্গ বা পরিচয় রাখিতে দিবেন না এবং বাহিরের দাসীদিগের সহিত্তও তাহা করিতে দিবেন না। দেবীদিগের বাদ্ধবেরাও (পূর্ক্ষোক্ত) গর্ভসংস্থা ও ব্যাধিসংস্থা ব্যতীত অক্তস্থানে তাঁহাদিগের সহিত সাক্ষাৎকার লাভ করিতে পারিবে না (অর্থাৎ তাঁহাদের সন্তানপ্রসব ও ব্যাধিসময়ে সেই তুই স্থানে

তাঁহাদিগকে বান্ধবেরা দেখিতে অন্তমতি পাইতে পারেন )। রূপাজীবা বা বেশ্যারা লান ও (দেহমলাদির) ঘর্ষণদারা শুদ্ধদেহ হইয়া এবং নিজ বন্ধ ও অলম্বার পরিবর্ত্তিত করিয়া (অর্থাৎ পূর্ব্ব পরিহিত বন্ধাদি ত্যাগ করিয়া পরিশুদ্ধ বন্ধাদি পুনরায় পরিয়া ) (রাজার পরিচর্যার্থ রাজসমীপে ) দর্শন দিবে। অশীতিবর্ষবয়য় পুরুষয় পরিয়া ) (রাজার পরিচর্যার্থ রাজসমীপে ) দর্শন দিবে। অশীতিবর্ষবয়য় পুরুষয় প্রাপাণ যথাক্রমে পিতা ও মাতার বেষধারী ও বেষধারী থাকিয়া, এবং রাজবাড়ীতে কার্য্যকারী স্থবির ও নপুংসকেরা অন্তঃপুরস্থ রাজস্ত্রীগণের শোচ ও অশোচ জানিয়া রাখিবে এবং স্বামী বা রাজার হিতার্থ (রাজসমীপে ) তাহা নিবেদন করিবে।

(রাজকুলের) সকল লোকই (অর্থাৎ দেবীগণ ও তৎপরিচারকগণ) নিজ নিজ নির্দিষ্ট স্থানেই বাস করিবে, পরভূমিতে সঞ্চরণ করিবে না, এবং অভ্যস্তরের কেছই বাহিরের কাহারও সঙ্গে সংসর্গ রাখিতে পারিবে না॥১॥

কিঞ্চ, সকল দ্রবাই—ইহাদের বাহির হইতে আগমন ও ভিতর হইতে নির্গমের বিষয় নিবন্ধপুস্তকে লিপিবদ্ধ হইলে এবং সেগুলি সম্যক্ পরীক্ষিত হইলে—বাহিরে যাইতে পারিবে এবং ভিতরে আসিতে পারিবে। কিন্তু প্রত্যেক দ্রব্যের আধারভাত্তে মুদ্রা বা মোহর অন্ধিত থাকা চাই ( অর্থাৎ বিনা মোহরে কোন দ্রব্য বাহিরেও যাইবে না. ভিতরেও আসিবে না।

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে নিশান্তপ্রণিধি-নামক বিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

## একবিংশ অধ্যায়

#### ১৮শ প্রকরণ—আত্মরকা

প্রোতঃকালে ) শ্যা হইতে উথিত হওয়ার পর, (রাজা) ধমুষ্পানি স্ত্রীগণধারা পরিবৃত হইবেন। বিতীয় কক্ষ্যাতে কঞ্চ্ন ও উফীবধারী হইয়া (অর্থাৎ শরীরে কুর্জা ও মাথায় পাগড়ী পরিয়া) বর্ণবরেরা (নপুংসকেরা) ও অত্যান্ত গৃহকার্য্যাধিকত পুরুষেরা (রাজাকে বেষ্টন করিবে)। তৃতীয় কক্ষ্যাতে, (তিনি) কুল, বামন (থর্কাকৃতি পুরুষ) ও কিরাভিজাতীয় পুরুষগণধারা (পরিবৃত থাকিবেন)। (তিনি) চতুর্থ কক্ষ্যাতে, মন্ত্রিগণ, সম্বন্ধিগণ (অর্থাৎ

আত্মীয়বান্ধবগণ) ও হস্তে প্রাস-নামক (কুন্ত-নামক) অন্তর্ধারী দৌবারিকগণ (দ্বারপালগণ) দ্বারা (পরিবেষ্টিত থাকিবেন)।

রাজা এমন জনকে আসন্নচারী (অর্থাৎ স্বদেহরক্ষাকারী) নিযুক্ত করিবেন, যাহারা পিতৃপৈতামহ (অর্থাৎ বংশপরম্পরাপ্রাপ্ত), মহাকুলীনদিগের সহিত সম্পর্কযুক্ত, শিক্ষিত, অম্বরক্ত (রাজভক্ত) ও কৃতকর্মা (অর্থাৎ কর্মকরণে অভিজ্ঞতাযুক্ত)। যাহার প্রতি কোনও প্রকার ধনাদি দান বা সম্মানপ্রদর্শন করা হয় নাই এমন অন্যদেশবাসীকে, অথবা, পূর্কে যাহার অপকার করা হইয়াছিল এবং যে পরে আবার স্বীকৃত হইয়াছে এমন স্বদেশবাসী জনকেও (তিনি আসন্নচারী নিযুক্ত করিবেন না)। অন্তর্কংশিকের (অর্থাৎ অন্তঃপুরে অধিকৃত প্রধান পুরুষের) সৈন্য রাজাকে ও অন্তঃপুরস্থিত শ্বীগণকে রক্ষা করিবে।

স্থপ্ত প্রদেশে (রাজার) মাহানসিক (পাকশালাধিকত প্রধান পুরুষ) সর্বব্রকার থাছদ্রব্যের পাককর্ম, স্বাদাধিক্যের প্রতি লক্ষ্য করিয়া সম্পাদন করাইবে। রাজা সেই সব (সাধিত) থাছদ্রব্য প্রথমে অগ্নিদেবকে ও পক্ষিগণকে বলিম্বরূপ প্রদান করিয়া, সেইভাবেই (অর্থাৎ নবপ্রস্তুত দ্রব্য হিসাবেই) আহার করিবেন।

(অগ্নিতে খাল্যপ্রক্ষেপ ও পক্ষীকে খাল্যবিল প্রদানের হেতৃ বলা হইতেছে, ষথা—) বিষময়খাল্যযুক্ত অগ্নির জালা ও ধুম নীলবর্ণ হইয়া পড়ে (অর্থাৎ বিষদিশ্ব অন্নাদি অগ্নিতে প্রক্ষিপ্ত হইলে অগ্নির প্রভা ও ধূম নীলাকার ধারণ করে); ইহাতে (চট্চট্) শব্দ ক্ষোটিত হয় এবং সেইরূপ খাল্য পক্ষীরা খাইলে তাহাদের ও মরণ ঘটে। বিষমিশ্র অন্নের বাষ্প ময়ুর-কঠের ল্যায় বর্ণযুক্ত হয়, ইহা শীল্র ঠাণ্ডা হয়, (কর-) সংপিষ্ট দ্রব্যের ল্যায় ইহা বিবর্ণ হয়, ইহা জলয়ুক্ত হয়ুয়া পড়ে তাবং ইহা অক্রেদযুক্ত অর্থাৎ শুক্তও হয়য়া যাইতে পারে। (বিষমিশ্র) ব্যঞ্জন (স্পাদি দ্রব্য) শীল্র শুরু হয়য়া যায়, তাহাতে কাথ হয় অর্থাৎ অগ্নিষোগেও অপক থাকে, ইহাতে সংজাত শ্রামবর্ণের ফেনপটল বিচ্ছিয় ভাব ধারণ করে (অর্থাৎ ব্যঞ্জন হইতে ফেনপটল পৃথক হইয়া যায়), এবং ইহার (স্বাভাবিক) গদ্ধ, স্পর্শ ও রসের (আস্বাদনের) নাশ ঘটে। দ্রববস্তু অর্থাৎ তরল পদার্থ (বিষমিশ্র হইলে), ইহাতে প্রতিফলিত (নিজের) ছায়া হীন (ছোট) বা অতিরিক্ত (বড়) দেখা যায় এবং ইহার ফেনপটলে বিভাগ দৃষ্ট হয়, ও ইহার উর্ক্রের দির্দা দৃষ্ট হয়। (স্বতাদি রসন্দ্রব্য বিষমিশ্র হইলে) ইহার মধ্যে নীলবর্ণের রেখা, ক্য় (বিষমিশ্র হইলে) ইহার মধ্যে নীলবর্ণের রেখা, হয়্ব ও জল (বিষমিশ্র হইলে)

ইহাদের মধ্যে কাল বর্ণের রেখা, দিধ (বিষমিশ্র হইলে) ইহার মধ্যে শ্রামবর্ণের রেখা এবং মধু (বিষমিশ্র হইলে) ইহার মধ্যে শ্বেতবর্ণের রেখা দৃষ্ট হয়। (আম প্রভৃতি) আর্দ্র প্রব্যসমূহ (বিষমিশ্র হইলে) শীদ্র শুকাইয়া যায়, অতি পকভাব ধারণ করে এবং বিশেষভাবে পাকিলে নীল ও কপিশবর্ণ হইয়া উঠে। শুক্ষ দ্রব্যসমূহ (বিষমিশ্র হইলে) শীদ্রই চুর্নিত হইয়া যায় এবং বিবর্ণ হইয়া উঠে। কঠিন দ্রব্যসমূহ (বিষমিশ্র হইলে) মৃদ্র হইয়া যায়, এবং মৃদ্র দ্রব্য (বিষমিশ্র হইলে) মৃদ্র হইয়া যায়, এবং মৃদ্র দ্রব্য (বিষমিশ্র হইলে) কঠিন হরয়া যায়। বিষমিশ্র দ্রব্যসমূহের নিকট সঞ্চরণশীল (পিপীলিকাদি) ক্ষুদ্র প্রাণীরা প্রাণ হারায়। আন্তরণ (বিছানার কম্বলাদি) ও প্রাবরণ (উর্ণা-বন্ত্রাদি) (বিষমিশ্র হইলে) ইহাদের স্থানে স্থানে শুনামবর্ণের মণ্ডল দৃষ্ট হয় এবং ইহাদের স্বত্ত ও রোমসমূহের পক্ষগুলি (স্ক্রাংশগুলি) থসিয়া পড়ে। লোহ (ম্বর্ণাদি ধাতু) ও মনিময় দ্রব্যসমূহ (বিষমিশ্র হইলে) ইহাদের উপর পদ্মলের লেপ পতিত হয় এবং ইহাদের ম্ন্ন্র (চাক্চিকা), রাগ (রঙ্ক), গৌরব (গুরু ওজন), প্রভাব (ম্বকার্য্যকরণশক্তি), এবং বর্ণ ও স্পর্শগুণের নাশ মটে। এই পর্যান্ত বিষযুক্ত দ্রব্যসমূহের চিহ্ন নির্মণিত হইল।

যে ব্যক্তি অন্তের উপর বিষ প্রদান করে, তাহার ম্থ শুক্ষ ও কপিলবর্ণ হইয়া যায়, তাহার (কথাবার্জাকালে) বাক্যপ্রতিবন্ধ উপস্থিত হয়, (শরীরে) ঘর্ম দেখা দেয়, মুথে বিজ্ঞান বা হাই উঠা লক্ষিত হয়, (শরীরে) অত্যধিক কম্প উপস্থিত হয়, (পথ পরিষ্কার থাকিলেও ইহাতে) তাহার পদস্খলন ঘটে, কেহ কথা বলিলে ('আমার সহ্মেই কথা হইতেছে' ইহা মনে করিয়া) সেই দিকে তাকাইয়া থাকে, (এক চিস্তায়ই) তাহার মন আবিষ্ট থাকে, এবং এক কর্ম্মে ও এক স্থানে সেলাগিয়া থাক্তি পারে না।

অতএব, রাজা স্বদমীপে বিষবৈশ্ব ও (অক্যান্স) চিকিৎসক (নিযুক্ত) রাথিবেন।

রাজার ভিষক্ (গৃহচিকিৎপক) ঔষধশালা হইতে নিজ আস্বাদন্দারা বিশুদ্ধ বলিয়া পরীক্ষিত ঔষধ লইয়া, (ঔষধের) পাচক ও পেষককে (পেষণকারীকে) তাহা থাওয়াইবে এবং নিজেও তাহা থাইয়া, পরে তাহা রাজাকে (ব্যবহারার্থ) দিবেন। এতন্দারা ঔষধের স্থায় মন্থ ও জল শোধিত করিয়া তাহা রাজাকে ব্যবহার করিতে দিতে হইবে—তাহাও ব্যাখ্যাত হইল।

য়য়ক ( নাপিত ) ও প্রসাধক ( বন্ধালয়ারাদি প্রসাধনের বিধানকারী সেবক )
য়য়ং স্পানপূর্বক শুদ্ধবন্ধ পরিধান করিয়া, শুদ্ধ হস্তে মৃদ্রাযুক্ত (ক্রুরবন্ধাদি )

অন্তর্বংশিকের (অন্তঃপুরস্থ প্রধান অধিকারীর) হস্ত হইতে লইয়া (রাজার) পরিচর্য্যা কার্য্যে-ব্যাপুত হইবে।

রোজভবনে) দাসীরা (রাজার সম্বন্ধে) স্নাপক (স্নানকরানের পরিচারক), সংবাহক (অঙ্গমর্জনকারী), আন্তরক (আসন ও শ্যাদির রচনাকারী), রজক ও মালাকারের কার্য্য নিজেরা সম্পাদন করিবে; অথবা, দাসীগণদ্বারা অধ্যক্ষিত হইয়া তৎ তৎ শিল্পীরাও রাজার সম্বন্ধে নিজ নিজ কার্য্য করিতে পারে। তাহারা নিজ নিজ চক্ষ্তে বস্ত্র ও মাল্য নিবেশিত করিয়া (পরে রাজাকে) দিবে এবং স্নানে ব্যবহর্তব্য অম্প্রলেপন (চন্দনাদি), প্রেম্বর্গ (গাত্রঘর্ষণদ্রব্য), চূর্যবাস (স্থগন্ধ চূর্নাদি—মাধুনিক কালের পাউডার ইত্যাদি) ও স্নানীয় (মস্তকাদিতে স্নানসময়ে দেয় স্থগন্ধি তৈলাদি) তাহারা নিজ নিজ বক্ষংস্থলে ও বাহুতে স্পর্শ করাইয়া—( রাজাকে) দিবে। ইহা দ্বারা পরদেশ হইতে প্রাপ্ত ভোগ্যবস্তর উপযোগ ব্যাখ্যাত হইল—বুঝিতে হইবে।

(রাজসমীপে) কুশীলবেরা (নটনর্ত্তকাদি শিল্পীরা), সঙ্গে শন্ত্র, অগ্নি ও বিষ না লইয়া নর্মক্রীড়া (থেলাদি) দেখাইবে। এবং তাহাদের ক্রীড়াদির সাধনস্বরূপ যে সব বাদ্যভাণ্ডের প্রয়োজন হইবে সেগুলি রাজবাড়ীর মধ্যে থাকিবে এবং অশ্ব, রথ, হস্তী ও (বিভিন্ন) অলঙ্কারও সেথানে থাকিবে (অর্থাৎ বিষযোগাদির আশঙ্কানিরাকরণার্থ সে সব দ্রব্য, রাজবাড়ী হইতেই, তাহারা ক্রীড়া দেখাইবার সময়ে পাইবে)।

(রাজা) আপ্ত প্রধানপুরুষধারা অধিষ্ঠিত যানে ( শিবিকাশকটাদিতে ) ও বাহনে ( অশ্বাদিতে ) আরোহণ করিবেন এবং বিশ্বস্ত নাবিক্ষারা অধিষ্ঠিত নোকা ব্যবহার করিবেন। অন্ত নোকা সহ প্রতিবদ্ধ নোকা ও বায়ুবেগের বশগামিনী নোকা ( তিনি ) ব্যবহার করিবেন না। (রাজা নোকাতে চলিতে থাকিলে ) জলের উভয় পার্ম্বে (রক্ষার্থ ) সৈত্য থাকিবে।

মংস্ত ও অন্যান্ত ( কুস্তীরাদি ) জলজন্তশুদ্ধ অর্থাৎ তদ্বিহীন জলে ( তিনি ) স্নানার্থ অবগাহন করিবেন ( মংস্তগ্রাহ-শব্দবারা মংস্তাহণশীল ধীবরকেও ব্রাষ্ট্রতে পারে—অর্থাৎ ধীবরেরা তিমিনক্রাদি শ্ন্য বলিয়া জলের নির্দেশ দিলে রাজা তাহাতে স্নান করিতে পারেন)। উত্যান সর্পাদি হিংশ্রজন্তগ্রাহীদিগের নির্পন্ধরারা পরিশুদ্ধ বলিয়া জানিলে, ( তিনি ) সেই উত্যানে যাইবেন।

যে মুগবনে ব্যাধ ও চণ্ডালগণৰারা চোর ও হিংমুজন্ত হইতে আশক্ষনীয়

উপদ্রবের ভয় দ্রীকৃত হইয়াছে, চঞ্চল মুগাদির প্রতি লক্ষ্যের অভ্যাস করার জন্য (তিনি) সেই মুগবনে যাইতে পারেন।

বিশ্বস্ত শস্ত্রধারী দ্বারা অধিষ্ঠিত হইয়া (রাজা নবাগত) সিদ্ধপুরুষ ও তপস্থি-জনের সহিত দেখা করিবেন এবং মন্ত্রিপরিষৎ দ্বারা অধিষ্ঠিত হইয়া (তিনি) সামন্তরাজগণের দূতের সহিত দেখা করিবেন।

শিরস্থাণ ও কবচাদিম্বারা সজ্জিত হইয়া, অথবা, অশ্ব, হস্তী বা রথে আরোহণ করিয়া ( রাজা ) যুদ্ধসজ্জা ও সেনা দর্শন করিবেন।

রাজা (নগর হইতে ) বাহিরে নিক্ষমণ ও (নগরমধ্যে ) প্রবেশ করার সময়ে, এমন পথ দিয়া যাইবেন যাহার উভয় পার্থে রক্ষিপুরুষেরা রক্ষাকার্য্যে ব্যাপৃত আছে এবং যাহাতে দণ্ডধারী পুরুষেরা, শস্ত্রপাণি লোককে, সন্যাদীকে ও অঙ্গবিহীন জনগণকে দ্রে অপসারিত রাথিয়াছে। (রাজা) জনসঙ্গল প্রদেশে প্রবেশ করিবেন না। (তিনি) দশবর্গিক (অর্থাৎ দশজন ভটের নায়ক) ছারা অধিষ্ঠিত হইয়া যাত্রা (দেবতাদিগের রথযাত্রা প্রভৃতি শোভাযাত্রা), সমাজ (আনন্দার্থ বছলোকের মিলনসভা), উৎসব (বসস্থোৎসবাদি) ও প্রবহণে (শকটাদি আরোহণে, মতান্তরে, উত্যানভোজাদিতে ) যোগ দিবেন।

রাজা ধেমন কাপটিক গুঢ়পুরুষগণদারা অন্য নুপতিদিগের বাধা উপস্থিত করেন, তেমন তিনি নিজেও প্রযত্মবান্ হইয়া অন্য নুপতিদিগের উৎপাল্যমান উপদ্রব হইতে নিজেকে রক্ষা করিবেন॥ ১॥

> কোটিলীয় অর্থশাঙ্গে বিনয়াধিকারিক-নামক প্রথম অধিকরণে আত্মরক্ষা-নামক একবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত। প্রথম অধিকরণ সমাপ্ত।

# অধ্যক্ষ প্রচার—দ্বিতীয় অধিকরণ প্রথম অধ্যায়

#### ১৯শ প্রকরণ-জনপদনিবেশ

পূর্ব হইতেই স্থিত ( অর্থাৎ পুরাতন ) এবং নৃতন জনপদের নিবেশ করিতে হইলে, পরদেশ ( অর্থাৎ শক্ররাজার বা অগ্ররাজার দেশ ) হইতে জনসমূহ আনাইয়া, ও স্বদেশের যে অংশে জনবাহুল্য আছে সে অংশ হইতে জনসমূহ সরাইয়া আনিয়া, ( রাজা ) তাহা করিবেন।

রোজা) এমন প্রাম নিবেশ করিবেন যাহাতে শ্দুজাতীয় রুষকই বেশীর ভাগ থাকিবে, যাহাতে কমপক্ষে একশত ও অনুর্দ্ধ পাঁচশত ঘর (গৃহস্তের ক্ল) থাকিবে, যাহার সীমা হইতে গ্রামান্তরের সীমা পর্যান্ত এক ক্রোশ বা হুই ক্রোশ ব্যবধান থাকিবে, এবং যাহা (প্রয়োজন হইলে) অন্যান্ত গ্রামসম্বন্ধে পরস্পরের রক্ষাবিষয়ে সাহায্যকরণক্ষম হইবে। নদী, শৈল (শিলাকূট), বন, গৃষ্টি নামক ওষধিবৃক্ষ, দরী (গর্ভ), সেতৃবন্ধ (আবদ্ধ জলাশয়াদি), শাল্মলী বৃক্ষ, শমীবৃক্ষ ও ক্ষীরবৃক্ষ দারা এই প্রকার প্রামের সীমান্ত নির্দ্দিষ্ট করিতে হইবে, অর্থাৎ এই সমন্ত বস্তুর স্থাপন দারা গ্রামের সীমা নির্দিষ্ট করিতে হইবে।

রোজা) উক্তপ্রকার আটশত গ্রাম মধ্যে **স্থানীয়**-নামক (পরবর্তী সময়ে নিগমাপরনামধ্যে স্থান) নগর বা মহাগ্রাম-বিশেষ, চারিশত গ্রামমধ্যে **ডোলমুখ**-নামক উপনগর-বিশেষ, চ্ইশত গ্রামমধ্যে কা**র্বাটিক** (পাঠান্তরে খার্বাটিক) নামক ক্ষুদ্র নগরবিশেষ এবং দশখানি সেই প্রকার গ্রাম সংগৃহীত বা এক ব্রিত করিয়া সংগ্রহণ-নামক (পরবর্তী সময়ে মহাদ্রঙ্গাপরপর্যায়) বড়, গ্রাম-বিশেষ স্থাপন করিবেন। (ইহাদ্বারা এইরপ জানা গেল যে, প্রাচীন ভারতে গ্রাম দর্বাপেক্ষা ক্ষুদ্র জনপদাংশ এবং তদপেক্ষায় বৃহত্তর জনপদাংশগুলির যথাক্রমে নাম হইবে—সংগ্রহণ, কার্বাটক (বা থার্বাটিক), দ্রোণমুখ ও স্থানীয়।

রোজ। জনপদের ) সীমান্তে জনপদের ( প্রবেশ ও নির্গমের ) দারভূত অন্তপালত্র্গ স্থাপিত করিবেন এবং সেগুলি অন্তপাল-নামক অধ্যক্ষ দারাই অধিষ্ঠিত থাকিবে। এই অন্তপাল-ত্র্গসমূহের অন্তরাল প্রদেশগুলিকে বাগুরিক ( মুগবন্ধনজীবী ব্যাধ ), শবর, পুলিন্দ, চণ্ডাল ও ( অন্যান্য ) অরণ্যচর জাতিরাই রক্ষা করিবে, অর্থাৎ রাজ। বা তৎপক্ষে তাঁহার অন্তপাল এই সমস্ত জাতির মস্ত্রাধারাই সেই সব প্রদেশ রক্ষা করিবেন। (জনপদনিবেশ-বিষয়ে রাজা) ঋত্বিক্, আচার্য্য, পুরোহিত ও শ্রোত্রিয় (বেদাধ্যায়ী) ব্রাহ্মপদিগকে সর্ব্বপ্রকার দণ্ড ও কর হইতে রহিত করিয়া এবং উপযুক্ত পুত্রপোত্রাদি উত্তরাধিকারীদিগেরও ভোগ্য-বিষয় (অর্থাৎ বংশান্তক্রমে ভোগ্য করিয়া দিয়া) ব্রহ্মদেয়-নামক ভূমি দান করিবেন। (পরবর্ত্তিকালেও রাজারা সর্ব্বত্র তাম্রপট্ট-প্রণয়ন দ্বারা এইরূপ ভূমি দান করিয়াছেন।)

(তিনি) অধ্যক্ষ ও সংখ্যায়ক- (গণনাকার্য্যে বা হিদাবরক্ষায় ব্যাপৃত পুরুষ) গণকে এবং (দশগ্রামী প্রভৃতির অধিকারী) গোপ, (জনপদ ও নগর চতুর্ভাগের অধিকারী) ছানিক, অনীকস্থ (হস্তিশিক্ষায় নিপুণ পুরুষ), চিকিৎসক, অশ্বদমক (অশ্বশিক্ষায় অভিজ্ঞ পুরুষ) ও জঙ্খাকরিক (সংবাদাদি বহন করিয়া দ্রদেশে গতাগতজীবী পুরুষ)-গণকেও (দণ্ড ও কর রহিত করিয়া) ভূমিদান করিবেন; কিন্তু, ভূমির প্রতিগ্রহকারীরা এই ভূমি সম্বন্ধে বিক্রয় ও আধান (বন্ধক রাখা) কার্য্য করিতে পারিবেন না (অর্থাৎ তাঁহারা কেবল এই রাজপ্রদক্ত ভূমি ভোগ করিতে পারিবেন)।

যাহারা ভূমির জন্য রাজকরাদি দিতেছে, তাহাদিগকে রাজা ক্লতক্ষেত্র, অর্থাৎ যে ক্ষেত্রকে ফসলোৎপাদনের উপযোগী করা হইয়াছে দে ক্ষেত্র, এক পুরুষমাত্রের ভোগ্য করিয়া দিনেন। যে-সব ক্ষেত্র অক্লত, অর্থাৎ যাহা অপ্রহত (খিল) ক্ষেত্র, সেগুলিকে যে ক্লযকেরা ফসলের উপযোগী করিবে, তাহাদের নিকট হইতে সেগুলি রাজা আর ফিরাইয়া লইবেন না (অর্থাৎ সে ক্ষেত্রগুলির স্বামিত্ব ক্লযকের্পর্যবসিত হইবে)।

'যে ক্লযকেরা ক্ষেত্র কর্ষণ না করিয়া ( তাহা ফেলিয়া রাখিবে ), তাহাদিগের নিকট হইতে দে সব ক্ষেত্র ছিনাইয়া লইয়া তাহা অন্য ( ক্ষেত্রতৈয়ারকারী ) ক্লযকদিগকে ( রাজা ) দিবেন। অথবা, ( অন্য ক্লয়ক না পাওয়া গেলে) গ্রামের ভ্তকেরা ( ভৃতিভোগী কর্মকরেরা, মতান্তরে, গ্রামাধিকারী রাজ-পুরুষেরা ) ও বৈদেহকেরা (বিণিকগণ ) সেই সব ক্ষেত্র কর্ষণ করিবে। (আগে স্বীকার করিয়া পরে) যদি কেহ ক্ষেত্র কর্ষণ না করে, তাহা হইলে তজ্জন্য যে ক্ষতি হইবে, তাহাকে তাহা পূরণ করিয়া দিতে হইবে। (ক্লয়িকার্যের স্থবিধার জন্য রাজা অমুপায় অবস্থায় ) ক্লয়কদিগকে (বীজ ) ধান্য, পশু ও হিরণ্য ( নগদ টাকা ) দিয়া অমুগৃহীত বা উপকৃত করিবেন্। ( তাহারাও অর্থাৎ ক্লয়কেরাও ) পরে সে-সব দ্রব্য নিজ স্থবিধামত রাজাকে ফ্রিরাইয়া দিবে।

যদ্দারা রাজকোষ (উত্তরকালে) বর্দ্ধিত হইতে পারে, (রাজা) তাহাদিগকে (রুষকজনদিগকে) তেমন অস্থুগ্রহ (যথা, স্বন্ধকালস্থায়ী করাদি হইতে মৃক্তি, বা বীজাদি দানরূপ উপকার) ও পরিহার (সম্পূর্ণ করম্ক্তি) দেওয়ার ব্যবস্থা করিবেন। রাজকোষ-ক্ষয়কারী অম্প্রাহ ও পরিহার (তিনি) বর্জ্জন করিবেন। কারণ, রাজা অল্পরেকাযযুক্ত হইলে (রাজকোষ পূরণ করিবার উদ্দেশ্যে নব নব করাদি বসাইয়া) পূর্বাসী ও জনপদবাসীদিগকে গ্রাস করিতে পারেন (অর্থাৎ তাহাদিগকে পীড়িত করিতে পারেন)। নৃতন জনপদ বা কুলাদির নিবেশকালে, অথবা, উচিত অবস্থার প্রাপ্তিতে, (তিনি) পরিহার দিবার ব্যবস্থা করিবেন। যাহাদের পরিহারভোগের সময় অতিক্রান্ত হইয়া গিয়াছে, তাহাদিগকে (তিনি) পিতার ন্যায় অম্প্রাহদানে উপকার করিবেন।

(তিনি) আকর, কর্মান্ত (শিল্পকারখানা), দ্রব্যবন (দারুচন্দনাদি মূল্যবান বৃক্ষাদির বন) হস্তিবন, ব্রজপ্রচার (গোহধ্যক্ষপ্রকরণে উক্ত গবাদির জন্ম বিবীতাদি স্থাপন) ও বণিক্পথ-প্রচার (অর্থাৎ বিদেশ হইতে আমদানী মাল ও স্বদেশ হইতে রপ্তানী মালের যাতায়াতের জন্ম রাস্তা নির্মাণ) এবং জলপথ, স্থলপথ ও পত্তন (ক্রুবিক্রয়ের উপযোগী হাটবাজার, বা নোমাত্রগম্য পুর— 'পট্রন'-পাঠে শকট, অশ্ব ও নোহারা গম্য পুর) নিবেশিত করিবেন।

(তিনি কৃষিকার্য্যের স্থবিধার জন্য) নিত্যজলবিশিষ্ট (অর্থাৎ নন্যাদি হইতে আনীত জলবিশিষ্ট), অথবা, (বর্ষা সময়ে) কৃত্রিম উপায়ে আনীত জলবিশিষ্ট (জলাশয়াদিরপ) সেতৃবন্ধ নির্মাণ করাইবেন। অথবা, অন্য লোকেরা সেতৃবন্ধ রচনায় প্রবৃত্ত হইলে তাহাদিগকে (তিনি জলাশয়নির্মাণার্থ) ভূমি, (জলপ্রবেশ ও জলনির্গমের জন্য) পথ, ও (সারদারু প্রভৃতির জন্য) বৃক্ষরূপ উপকরণসমূহ দিয়া অন্থগ্রহ করিবেন। পুণ্যস্থান (দেবগৃহাদি) ও আরাম (বাগানবাড়ী) নির্মাণ করার জন্যও (তিনি তেমন অন্থগ্রহ করিবেন)। সকলে একত্র মিলিত হইয়া সেতৃবন্ধ রচনা করিতে গেলে, যে ব্যক্তি তাহাতে নিজ কর্মাংশ সম্পাদন করিতে অনিজ্বুক হইবে, তাহার পরিবর্গে তাঁহার নিজ কর্মকর ও বলীবর্দ্ধেরা সেই বাজ করিবে (অর্থাৎ রাজা তাঁহার পরিবর্গে তাঁহার কর্মকরাদি দ্বারা কাজ করাইয়া লইবেন)। এইরূপ ব্যক্তিকে (সেতৃবন্ধের) ব্যয়কার্য্যে অংশভাক্ হইতে হইবে; কিন্তু, (সেতৃবন্ধের ফলে উদিত আয়ের বা লাভের) অংশ সে পাইবে না।

সেতৃবন্ধসমূহে উৎপাত্মান মৎস্ত, প্লব (কারণ্ডব নামক জলচর পক্ষী) ও হরিত পণ্য (শাক-শবজী দ্রব্য)-সমূহে রাজারই স্বামিত্ব বা অধিকার থাকিবে,

অর্থাৎ সম্ভূয়-সেতৃকারীরা উৎপন্ন দ্রব্যের ভাগ পাইবে না। (নিবেশিত জনপদে) যে সব দাসজন বা আহিত (বন্ধকীভূত) জন, বা (লোকের) পুরাদি-বাদ্ধবেরা স্ব-স্থামীর আজ্ঞা উল্লেজন করিবে, (রাজা) তাহাদিগকে বিনয় বা উচিত শিক্ষা গ্রহণ করাইবেন, অর্থাৎ তিনি তাহাদিগকে বিনীত রাখিবেন। বালক, বৃদ্ধ ও ব্যাধিগ্রস্ত ও বিপদগ্রস্ত লোকেরা যদি অনাথ (বা প্রভূশ্ন্য) হয়, তাহা হইলে রাজা তাহাদিগকে ভরণ করিবেন। এবং কোন অপ্রজাতা অর্থাৎ বন্ধ্যা রমণী, এবং প্রজাতা (অপত্যবতী) রমণীর পুরেরা যদি অনাথ বা প্রভূশ্ন্য হয়, তাহা হইলে রাজা তাহাদিগকেও ভরণ করিবেন।

গ্রামবৃদ্ধগণ, ব্যবহারপ্রাপ্তির বয়স পর্যান্ত ( অর্থাৎ সাবালকত্ব প্রাপ্তির বয়স পর্যান্ত ) বালকের সম্পত্তি বাড়াইতে থাকিবেন ( 'বর্জ্জরেয়্ং' পাঠ ধরিলে, সেই সম্পত্তি নিজেরা ভোগ করিবেন না—ইহাই ব্যাখ্যা ) এবং ( নিত্যই দেবোত্তর সম্পত্তিও বাড়াইতে থাকিবেন ( অথবা, 'বর্জ্জরেয়্ং' পাঠ ধরিলে, তাহা নিজভোগে আনিবেন না—ইহাই ব্যাখ্যা )।

যে ব্যক্তি ভরণ করার শক্তি থাকা সত্তেও, নিজের পুত্র-কত্যা ও স্ত্রী, পিতা ও মাতা, অপ্রাপ্তব্যবহার (অর্থাৎ নাবালক) ভ্রাতা এবং অবিবাহিতা ও বিধবা ভগিনীদিগকে ভরণ করিবে না, তাহার উপর ১২ পণ দণ্ড প্রদন্ত হইবে; কিন্তু, পুত্রাদি যদি কোনও কারণে পতিত হইয়া থাকে, তাহা হইলে অভরণকারী গৃহপতির দণ্ড হইবে না। তবে মাতা যদি পতিতাও হয়েন, তাহা হইলে তিনি সর্বাদা গৃহস্বামীর ভরণীয়া থাকিবেন।

পুত্রদের ও স্বীর জীবনোপায়-ব্যবস্থা না করিয়া, কেহ যদি প্রব্রজ্যা বা সন্মাস প্রহণ করে এবং নিজের স্থাঁকেও সন্মাসগ্রহণে প্রযোজিত করে, তাহা হইলে তাহাকে প্রথম সাহস দণ্ড ভোগ করিতে হইবে। যাহার মৈথ্নশক্তি সম্পূর্ণভাবে লোপ পাইয়াছে এমন ব্যক্তিই সরকারী ধর্মস্থ (প্রাড্বিবাকাদি)-গণের অমুমতি লইয়া প্রব্রজ্যা বা সন্মাস গ্রহণ করিতে পারিবে, অন্তথা, তাহাকে কারাগৃহে আবদ্ধ হইতে হইবে।

বানপ্রস্থজনের অতিরিক্ত কোন প্রব্রজিত বা সন্মাসী, (রাজা ও রাজ্যের) কল্যাণার্থ রচিত সজ্জের অতিরিক্ত কোন ( তুর্জ্জাত ) সজ্জ, অথবা একত্রিত হইয়া প্রজাহিতার্থ অন্তক্ল কার্য্যকারী দলের অক্তিরিক্ত অন্ত (রাজন্তোহাদির আচরণার্থ) কোন সংবিতে বা প্রতিজ্ঞায় আবদ্ধ সংহত দল, রাজার জনপদে উপনিবেশ লাভ করিতে পারিবে না।

কিন্তু, সেথানে (জনপদে) বিহারার্থ অর্থাৎ চিন্তবিনোদনার্থ উপবন ও (নাট্য-) শালা থাকিবে না। (তাহা না থাকিলেই) নট, নর্জক, গায়ক, বাদক, বাগ্জীবন (কথাবর্ণনায় পট় লোক) ও কুশীলবেরা (নানারূপ ক্রীডাঘারা অভিনয়কারীরা) (জনপদবাসীদিগের) নিজ নিজ কর্মে বিদ্ন-বিধান করিতে পারিবে না। কারণ, গ্রামগুলিতে নাট্যাদি প্রদর্শনের প্রেক্ষাগৃহাদিরূপ আশ্রয় না থাকিলে এবং সেথানকার পুরুষেরা ক্ষেত্রকার্য্যে সর্ব্রদা ব্যাপৃত থাকিলে, (সেথানে) কোষ, বিষ্টি (কর্মকর কর্ম), (দাক প্রভৃতি) দ্রব্য, ধান্য ও (গ্রডাদি) রসেব বৃদ্ধি হওয়ার সম্থাবনা থাকিবে।

রাজা দেখিবেন, যেন তাঁহাব দেশ বা জনপদ পরচক্র ( শক্রসেনা ) ও অটবীপালদিগের অত্যাচারগ্রস্ত এবং ব্যাধি ও ছভিক্ষ-প্রপীড়িত না হয়, এবং তিনি যে-সব ক্রীডাতে ধনবায় বেশী হওয়ার সম্ভাবনা তাহা নিবারিত কবিবেন॥ ১॥

দণ্ড, বিষ্টি ও কররপ পীড়ান্বারা (রুষকগণের) রুষিকার্য্য উপহত বা নষ্ট হইলে, (তিনি) সেই রুষিকার্য্য রক্ষা করিবেন, এবং চোর, ব্যাল (হিংশ্রজন্ত ), বিষপ্রয়োগ ও ব্যাধিন্বারা উপহত পশুব্রজন্ত রক্ষা করিবেন ॥ ২॥

(তিনি) রাজবল্লভ (অর্থাৎ তৎপ্রিয়), (রাজকরাদির সংগ্রহকারী) কর্মচারী, চোর, অন্তপাল ও (ব্যাদ্রাদি) পশুসংঘদ্ধারা পীড়িত হওয়ায় ক্ষীয়মাণ বণিকৃপথ শোধিত রাখিবেন (অর্থাৎ এই সব বিপত্তি হইতে বণিকৃপথ মুক্ত রাখিবেন) ॥ ৩॥

এই প্রকারে, রাজা পূর্বকৃত দ্রব্যবন, হস্তিবন, সেতৃবন্ধ ও আকরসমূহ রক্ষা করিবেন এবং নৃতন নৃতন ( দ্রব্যবনাদি ) নির্মাণ করাইবেন ॥ ৪ ॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে জনপদ-নিবেশ-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ২২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## দ্বিতীয় অধ্যায়

## ২০শ প্রকরণ—ভূমিচ্ছিজ্রবিধান বা কর্ষণের অযোগ্য ভূমির ব্যবস্থা

যে ভূমি কর্যনের অযোগ্য তাহাতে (গোমহিষাদি) পশুর জন্ম বিবীত বা তৃণজলাদিযুক্ত গোচারণক্ষেত্র (রাজা) নির্মাণ করাইবেন। (সেই সব অরুন্ম ভূমিতে রাজা) এক গোরুক্ত বা গব্যুতি পরিমাণ (প্রায় ৪ ক্রোশ পরিমিত) ব্রহ্মারণ্য (বেদাধ্যয়নোপযোগী অরণ্য) ও সোমারণ্য (সোম্যাগের অরুষ্ঠানোপযোগী অরণ্য) ব্রহ্মণদিগকে দিবেন; এবং সেই সব স্থানে (রুক্ষাদি) স্থাবর ও (মুগাদি) জঙ্গমগণের প্রতি অভয়ও প্রদিষ্ট বা দত্ত থাকিবে। সেইরূপ তিনি তপস্বিজনের জন্য (অরুন্ম ভূমিতে) তপোবন দান করিবেন। রাজার (মৃগয়াদি) বিহারজন্য তিনি (অরুন্ম ভূমিতে) এমন মৃগবন নিবেশিত করাইবেন, যাহা গোকত পরিমিত ও একবারবিশিষ্ট হইবে (অর্থাৎ প্রবেশ ও নির্গমজন্য যাহাতে একটি পথ থাকিবে) এবং যাহা চত্র্দিকে পরিখাদ্বারা রক্ষিত থাকিবে, যাহাতে আরু ফল, গুল্ম ও পুষ্পাগুচ্ছ থাকিবে, যাহা কন্টকময় জমশূন্য ও আগভীর জলাশয়যুক্ত থাকিবে, যেথানে মৃগ ও চতুষ্পদ জন্তুরা দান্ত অর্থাৎ মান্তবের পরিচয়ে বিশ্বস্ত, যেথানে ব্যাল (হিংস্র) জন্তুদিগের নথ ও দস্ত ভয়, এবং যেথানে মৃগমার যোগ্য হন্তী, হস্তিনী ও করিপোত্যণ থাকিবে।

প্রত্যম্ভ ভূমিতে (জনপদসীমাস্তে), বা যোগ্য ভূমি হইলে (জন্যত্ত্রও), (তিনি) জন্য মৃগবন নিবেশিত করাইবেন, যাহাতে (উপক্রত হইয়া) সকল প্রকার পশুই আশ্রয় লইতে প্রারে।

কুপ্যাধ্যক্ষ প্রকরণে ( এই অধিকরণের ১৭শ অধ্যায়ে ) উক্ত ( দারু-বেণ্-বন্ধ প্রভৃতি ) দ্রব্যসমূহের এক একটির জন্য এক একটি বন নিবেশিত করাইবেন।

(তিনি) স্রব্যবন সম্বন্ধীয় কর্মান্ত বা কারখানা এবং স্রব্যবনে উপজীবিকা লাভ করিবার উপযোগী আটবিকদিগকে (নিবেশিত করাইবেন)।

রোজা ) নিজের জনপদপ্রান্তে আটবিকজনথারা রক্ষিত হস্তিবন নিবেশিও করাইবেন। হস্তিবনের অধ্যক্ষ, নাগবনপাল পুরুষগণ দ্বারা পর্বতে, নদী (-কুলে), (বড়) সরোবর (সমীপে) ও অন্প বা জলময় প্রদেশে অবস্থিত নাগবন রক্ষা করিবেন; কিন্তু, (নাগবনপালেরা) সেই সব নাগবনের সীমা এব ইহাতে প্রবেশ ও নির্গমের পথ জানিয়া রাখিবে। (নাগবনপালেরা) হস্তিঘার্ত

( শবরাদিকে ) হত্যা করিতে পারিবে। স্বয়ং মৃত হস্তীর দম্ভযুগল আহরণকারী ( বনেচরদিগকে ) ৪ ঠ্র পণ পারিতোষিক দেওয়া যাইতে পারে।

নাগবনপালেরা, হস্তিপক (মাহত), পাদপাশিক (হস্তীর পাদে পাশবন্ধনকুশল জন), সীমাবিং বা সীমারক্ষক পুক্ষ, (অন্তান্ত) বনচর ও পারিকর্মিক বা হস্তীর পরিচর্য্যায় নিপুণ পুক্ষদিগকে সঙ্গে লইয়া, হস্তীর মৃত্র ও বিষ্ঠার গন্ধে আচ্ছন্ন হইয়া, ভল্লাতকী বা অক্ষর বৃক্ষের শাখাদ্বারা ল্কায়িত থাকিয়া, পাঁচসাতিটি হস্তিবশকারিণী হস্তিণীসহ এদিক-ওদিকে ঘ্রিয়া ঘ্রিয়া, (হস্তীর) শ্যা, অবস্থান, পদচিহ্ন লণ্ড বা বিষ্ঠা, (নদী প্রভৃতির) ক্লপাত প্রদেশসমূহ লক্ষ্য করিয়া, হস্তিযুথের সঞ্চারসীমা পরিজ্ঞাত হইবে।

( তাহারা ) কোন্ হস্তী যৃথচর, কোন্টি একচর (যে হস্তী একাকীই চরণ করে — দলের সঙ্গে নহে ), কোন্টি যৃথচাত, কোন্টি যৃথপতি, কোন্টি ক্রপ্রক্লতি, কোন্টি মন্ত, কোন্টি পোত বা অল্পবয়স্ক ও কোন্টি বন্ধ হইতে মৃক্ত—এই সব তন্ধ নিবন্ধপুত্তক বা হস্তিশাস্ত্রপাঠে পরিজ্ঞাত লক্ষণ হইতে জানিবে।

ভানীকন্দ্র বা হস্তিশিক্ষায় স্থচতুর প্রাজ্ঞ জনদিগের কথা প্রমাণরূপে ধরিয়া, (তাহারা) যাহাদের প্রশস্ত লক্ষণ ও আচরণ দৃষ্ট হয়, তেমন হস্তিসমূহকে ধরিবে। কারণ, রাজাদিগের বিজয়লাভে হস্তীই প্রধান সাধন। যে-হেতু প্রকাণ্ড শরীরধারী ও প্রাণহরণ-কর্ম্মে পটু হস্তীরাই শক্রর সেনা-বৃহে, তুর্গ ও স্কন্ধাবার (সেনানিবেশ বা রাজধানীর) ধ্বংস-সাধনে সমর্থ হয়।

হস্তিসম্হের মধ্যে ক**লিজ** ও **অন্ত** দেশের হস্তী এবং পূর্ব্বদেশীয় ও চেদি এবং করুশ দেশে উৎপন্ন হস্তীই উত্তম শ্রেণীর হস্তী। দশার্ব ও অপুরান্ত ব্য পশ্চিমদেশের হস্তী মধ্যম শ্রেণীর হস্তী॥ ১॥

সুরাষ্ট্র ও পঞ্চনদ ('পাঞ্জনাঃ' পাঠও দৃষ্ট হয়—'পঞ্জনদেশীয়' ইহাই অর্থ) দেশের হস্তীকে অধম শ্রেণীর হস্তী বলিয়া ধরা হয়। কিন্তু, এই সব (তিন শ্রেণীর) হস্তীরই বীর্ঘ্য, বেগ ও তেজঃ (শিক্ষা-) কর্মঘারা বাড়াইয়া লওয়া যায়॥ ২॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্বে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে ভূমিচ্ছিত্র-বিধান-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ২৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## তৃতীয় অধ্যায়

### ২১শ প্রকরণ—তুর্গবিধান

(রাজা) চতুর্দ্দিকেই জনপদের প্রান্তভাগে, দৈবকৃত অর্থাৎ স্বাভাবিক বিষম-স্থলভূত, যুদ্ধের উপযোগী তুর্গ করাইবেন। এই তুর্গ চারি প্রকারের হইতে পারে —(১) ওদক হুৰ্গ, (২) পাৰ্কান্ত হুৰ্গ, (৩) ধান্ধন হুৰ্গ ও (৪) বন তুর্গ। তন্মধ্যে উদক তুর্গ আবার তুই প্রকারের হইতে পারে; যে তুর্গের চারিদিকেই (নদী প্রভৃতির) জল ইহাকে বেইন করিয়া রহিয়াছে—ইহা প্রথম প্রকার এবং যে তুর্গের স্থলভাগ চতুর্দিকে নিম্ন বা গভীর জলাশয়াদিদারা অবরুদ্ধ বা বেষ্টিত—ইহা দ্বিতীয় প্রকার। পার্বত দুর্গও দুই প্রকার হইতে পারে ;—যে দুর্গ পর্বত-প্রস্তরময়,—ইহা এক প্রকার এবং যে দুর্গ স্বাভাবিক-গুহাত্মক—ইহা দ্বিতীয় প্রকার। ধারন হুর্গও হুই প্রকার হইতে পারে ;—বে হুর্গ জল ও তৃণরহিত —ইহা এক প্রকার এবং যে তুর্গ উষর বা বালুকাদিযুক্ত স্থানবিশেষ—ইহা দিতীয় প্রকার। বনতুর্গও তুই প্রকার হইতে পারে, যে তুর্গ চতুদ্দিকে পঙ্কযুক্ত জল থাকায় গতিবৈক্লব্য ঘটায়—ইহা এক প্রকার এবং যে হুর্গ ঘন স্বল্পফ্রমবিশিষ্ট হওয়ায় ত্বস্পবেশ্য—ইহা দিতীয় প্রকার। এই সব ছর্গের মধ্যে, নদীছর্গ ও পর্বতছর্গ (বিপদকালে) জনপদের রক্ষাস্থান হইতে পারে এবং ধান্ধনত্বৰ্গ ও বনত্বৰ্গ আটবিকদিগের (রক্ষা) স্থান হইতে পারে; অথবা, আপদের সময়ে ইহা 🤇 রাজা ) অপসরণের বা পলাইয়া যাইবার আশ্রয়ন্থান হইতে পারে।

জনপদের মধ্যপ্রদেশে রাজা ছানীয় (আট শত গ্রাম-মধ্যন্থ নগরবিশেষ)
নিবেশিত করাইবেন। এই স্থানীয় নগর রাজার সমৃদ্য় অর্থাৎ রাজকোষে
প্রবেশ্য ধনরাশির স্থান (এই প্রসঙ্গে আধুনিক Collectorate শ্বরণীয় হইতে
পারে) বলিয়া গণ্য। ইহাকে বাস্তবিভায় অভিজ্ঞ জনের নির্দিষ্ট দেশে, কিংবা
কোন কোন নদীর সঙ্গমন্থলে, অথবা, সদানীর কোন ফ্রদ, সরোবর বা
(পদ্মাকরাদি) তড়াগের অন্ধদেশে নিবেশিত করিতে হইবে; বাস্তন্থিতিবশতঃ
ইহা বৃত্ত বা গোলাকার, দীর্ঘাকার বা চতুরপ্র অর্থাৎ চৌকর হইতে পারে; ইহার
চতুম্পার্শে জনপ্রবাহ বহিতে থাকা আবশ্যক; ইহা এক প্রকার পত্তন বলিয়া
বিবেচিত হইবে, অর্থাৎ ইহা চতুর্দ্দিক হইতে উৎপন্ন পণ্যসমূহের সংগ্রহ ও ক্রয়বিক্রয়ের কেন্দ্র হইবে, এবং ইহা শ্বলপথ ও জলপথের সহিত যুক্ত থাকিবে।

রোজা এই স্থানীয়ের ) চতুর্দিকে তিনটি পরিখা বা থাত পরস্পরের মধ্যে এক দণ্ড অর্থাৎ ৪ হস্তপরিমিত ভূমি (২য় অধিকরণে ২য় অধ্যায় দ্রষ্টবা) ব্যবধান রাখিয়া নির্মাণ করাইবেন। এই তিনটি পরিথা ক্রমান্বয়ে চতুর্দশ দণ্ড (অর্থাৎ ৫৬ হস্ত ), ছাদশ দণ্ড (অর্থাৎ ৪৮ হস্ত ) ও দশ দণ্ড (অর্থাৎ ৪০ হস্ত ) বিস্তারয়্ক অর্থাৎ চণ্ডড়া থাকিবে; ইহাদের গভীরতা বা নিমতা বিস্তারের পরিমাণ হইতে একপাদ (একচতুর্থাংশ) কম বা বিস্তারের অর্দ্ধপরিমিত থাকিবে, অথবা ইহারা বিস্তারের একতৃতীয়াংশ পরিমাণে গভীর থাকিবে; মূল বা তলদেশে ইহারা চতুরশ্র বা সম্যক্ বদ্ধ থাকিবে এবং পাধাণ ছারা রচিত থাকিবে; অথবা, ইহাদের পার্যগুলি পাধাণ বা ইট্টক ছারা আবদ্ধ থাকিবে; ইহারা নীচে জলোদয়দেশ পর্যান্ত থাত হইবে, অথবা, নিদী প্রভৃতি হইতে ) আগন্তুক জলভারা পূর্ণ থাকিবে; ইহাদের জলনির্সমনের পথও থাকিবে; এবং এগুলিতে পদ্ম ও নক্রাদি জলচর জীবও থাকিবে।

(রাজা) থাত হইতে উদ্ধৃত মৃত্তিকা দারা বঞা বা মৃচ্চয় নির্মাণ করাইবেন।
ইহা পরিথা হইতে চারি দণ্ড অর্থাৎ ১৬ হস্ত ব্যবধানে থাকিবে। ইহার উদ্ধৃায়
বা উচ্চতা ছয় দণ্ড বা ২৪ হস্তপরিমিত থাকিবে; ইহা (নীচে) দৃঢ়ভাবে সংক্রম্ব
থাকিবে (অর্থাৎ যেন মৃত্তিকা গলিয়া না পড়ে); উচ্চতার দিগুণ ইহার বিদ্বস্ত
বা বিস্তার থাকিবে। ইহার তিন প্রকার ভেদ হইতে পারে, যথা (১) উদ্ধিচয়
বপ্র অর্থাৎ যে বপ্র নীচের দিকে স্থুল বা মোটা ও উপর দিকে রুশাকার,
(২) মঞ্চপৃষ্ঠ বপ্র অর্থাৎ যে বপ্র নীচে ও উপরে সমানভাবে বিপুল, এবং
(৩) কুম্বকুক্ষিক বপ্র অর্থাৎ যে বপ্র নীচে ও উপরে রুশ, কিন্তু, মধ্যম্বলে কুম্বের গ্রায়
স্থুল। এই বপ্র হস্তী ও গো-দারা ক্রম্ব বা প্রহত করাইয়া দৃঢ় করিতে হইবে এবং
ইহাকে কন্টকী গুল্ম ও বিষলতাপ্রতানযুক্ত করিতে হইবে। (বপ্র নির্মাণের পরও
বিদি) মৃত্তিকা অরশিষ্ট থাকে তদ্ধারা (তিনি) বাস্তগর্জসমূহ প্রিত করাইবেন।

রাজা বপ্রের উপর প্রাকার নির্মাণ করাইবেন। ইহার উৎসেধ বা উচ্চতা ইহার নিজের বিক্ষ বা বিস্তারের দিগুণ হইবে; ইহা ইইক-নিমিত হইবে এবং ইহার উৎসেধের মান বার হস্তের উর্দ্ধে (১৩-১৫ হস্ত ইত্যাদি) বিষমসংখ্যক, অথবা, (১৪-১৬ হস্ত ইত্যাদি) সমসংখ্যক হস্তপরিমিত হইতে পারে; কিন্তু, ২৪ হস্তপরিমিত উচ্চতাই ইহার অবধি অর্থাৎ ২৪ হস্তের অধিক ইহার উচ্চতা থাকিবে না। অথবা, (তিনি) এই প্রাকার (ইইকময় না করাইয়া) শৈল বা শিলাময় করাইবেন; এবং (ইহার বিস্তার এতটা পরিমাণে থাকিবে যেন) ইহার উপর একখানি রথে চড়িয়া একটি রথী, গতাগতি করিতে পারে; ইহার অগ্রভাগ তালবৃক্ষের মূলের প্রতিকৃতি, মৃরজ বা মৃদঙ্গের প্রতিকৃতি ও কপিশীর্ষের প্রতিকৃতি ছারা সমন্বিত থাকিবে; অথবা, ইহা বিপুল শিলাছারা বন্ধ থাকিবে। ইহাকে কখনও কার্চনির্মিত করিতে হইবে না; কারণ, ইহাতে অগ্নি সতত দন্নিহিত থাকিয়া বাস করে।

প্রোকারের উপর ) আট্টালক নির্মাণ করাইবেন,—ইহা বিস্তারের অফরপ চতুরত্র হইবে অর্থাৎ ইহার আয়াম ও উৎসেধ (উচ্চতা) বিস্তারের সমপরিমিত থাকিবে; এবং ইহার উচ্চতার অফ্ররপ মাপে ইহাতে এমন সোপান থাকিবে যাহা সরাইয়া নেওয়া চলে। এইরপ অট্টালক একে অন্ত হইতে ত্রিশ দণ্ড (বা ১২০ হাত ) ব্যবধানে থাকিবে।

এইরপ ছুইটি অট্টালকের মধ্যে (তিনি) এমন প্রতােলী বা রথ্যা (পথ) নির্মাণ করাইবেন, যাহা হর্ম্যের (ধবলগৃহের) দ্বিতলযুক্ত থাকিবে একং যাহার দৈর্ঘ্য বিস্তারের দেড়গুণ হইবে।

অট্টালক ও প্রতোলীর মধ্যে (তিনি) ইন্দ্রকোশ-নামক এক আসন প্রস্তুত করাইবেন। ইহা তিন জন গাড়্ছ বা ধতুর্ধারী পুরুষের অবস্থান-বিষয়ে পর্ণ্যাপ্ত হওয়া চাই এবং ইহা এমন একটি কাষ্ঠফলকযুক্ত থাকিবে, যাহাতে ( ধাত্মছদিগকে ) লুকায়িত রাখিবার সাধনবিশিষ্ট ছিদ্রসকল থাকিবে, অর্থাৎ যাহার পৃষ্ঠভাগে ধাত্মছেরা লুকায়িত থাকিয়া ছিদ্রছারা সম্মুখের আগন্তুকদিগকে দেখিয়া বাণাদি নিক্ষেপ করিতে পারিবে।

প্রাকারের সঙ্গে সঙ্গে, (অট্টালক, প্রতোলী ও ইক্রকোশের) অন্তরালে তুই হঠি বিস্তারুত্বক এবং (প্রাকারের) পার্থে ইহার চতুগুর্ণ আয়াম বা দৈর্ঘ্যযুক্ত অর্থাৎ আট হাত পরিমিত ('অইহস্তায়তং' পাঠিট পুনরুক্ত বলিয়া বিবেচিত হইতে পারে) এক একটি দেবপথ নামক (গুপ্ত) পথ (তিনি) নির্মাণ করাইবেন।

এক দণ্ড বা চারি হাত, অথবা, তৃই দণ্ড বা আট হাত বিভূত চার্য্যা বা সঞ্চরণপথ (তিনি) নির্মাণ করাইবেন এবং (তিনি) বাহির হইতে দর্শনের অতীত প্রদেশে, প্রধাবিতিকা অর্থাৎ বাহির হইতে শক্রপ্রক্রিপ্ত বাণাদির গোচর হইতে রক্ষা পাইবার জন্ম রুত কৃত্র আবরণ বা প্রাচীর (?) বা পথবিশেষ, এবং নির্মুহ শার অর্থাৎ প্রাকারের বহিভূতি প্রতিপক্ষের সর্বকার্য্য দর্শনের উপরোগী কোটরের বিবর নির্মাণ করাইবেন।

পেরিখার ) বহির্ভাগে ( তিনি তুর্গমধ্যে প্রবেশের ) পথ নিম্নলিখিত বস্তুধারা ছয় রাথিবার ব্যবস্থা করাইবেন—জাত্মগুনী-নামক যন্ত্রকীল-বিশেষ ) অর্থাৎ ষে কীল মাটিতে জাত্ম পর্যান্ত উচ্চ করিয়া প্রোথিত রাখিলে আগন্তকদিগের জাত্মপ্রদেশে তাড়ন সম্ভাবিত ), ত্রিশূলসমূহ, কৃপ, কৃট (লোহশলাকাবিশেষ ), অবপাত (তুণাদি বারা আচ্ছাদিত গর্ভ), কন্টকপ্রতিসর (লোহনির্মিত কন্টকরারা আচিত জালবিশেষ ), অহিপৃষ্ঠ ও তালপত্রের আকারে আকারিত ত্রিকোটিবিশিষ্ট লোহ-যন্ত্রবিশেষ, কুরুরের দন্তসদৃশ লোহকীলবিশেষ, অর্গল বা লোহদণ্ড, উপদ্ধনন (অলন সহায়ক কাষ্ঠবিশেষ ), পাত্রকা ( একপাদমাত্র সংপাতে পর্য্যাপ্ত পঙ্কপ্রিত গর্জ ), অম্বরীয ( ল্রাই্রয়—অর্থাৎ অগ্নিযুক্ত সংতপ্ত ভর্জনপাত্র-সংবলিত গর্জ ) ও উপদান ( দ্বিত জ্বপূর্ণ কুপুর্বিণী )।

প্রাকারের উভয় ভাগে দেড় দণ্ডপরিমিত ( অর্থাৎ ৬ হস্তপরিমিত ) মণ্ডপ নির্মাণ করিয়া, প্রতোলীর আধারভূত ছয়টি তোরণস্তম্ভ-যুক্ত ছার ( তিনি ) নিবেশিত করাইবেন। এই দার চতুরশ্র বা চতুরোণাকার হইবে এবং ইহার বিস্তার পঞ্চ দণ্ড ( কুড়ি হাত ) হইতে ক্রমশঃ বাড়াইয়া অন্ত দণ্ড ( বিত্রিশ হাত ) পর্যায় হইতে পারিবে। ( কাহারও মতে ) ইহার বিস্তার তুই দণ্ড (বা চারি হাত) পরিমিতও হইতে পারে। অথবা, ইহা দৈর্ঘ্যে ইহার আশ্রিত বিস্তারের মান অপেক্ষায় এক ষঠাংশ বা এক অন্তমাংশ অধিক হইতে পারে।

( স্তম্ভের ) উৎসেধ বা উচ্চতা নীচের তলদেশ হইতে পঞ্চনশ হস্ত হইতে এক এক হস্ত বাড়াইয়া অষ্টাদশ হস্তপরিমিত হইতে পারিবে।

স্তম্ভের পরিক্ষেপ বা পরিধি ইহার লম্বতার এক ষষ্ঠাংশ হওয়া চাই; ইহার (পরিক্ষেপ-মানের) দ্বিগুণ অংশ অর্থাৎ এক তৃতীয়াংশ (মৃক্তিকার নীচি) নিখাত থাকিবে এবং ইহার চুলিকা বা স্তম্ভ-শিখার মান হইবে (পরিক্ষেপের) এক চতুর্থাংশ।

প্রতোলীর তিন তলের মধ্যে প্রথম তলটিকে পাঁচ ভাগে বিভক্ত করিয়া, সেই ভাগগুলিতে একটি শালা, একটি বাপী, ও একটি সীমাগৃহ প্রস্তুত করাইতে হইবে। (শালাপ্রান্তে) ইহার দশমাংশবিস্তার-যুক্ত ঘুইটি প্রতিমঞ্চ (মঞ্চপ্রতিকৃতি সন্নিবেশ-বিশেষ) মন্ত বারণযুক্ত ( অর্থাৎ মন্ত নাগাকৃতি নিযুহি বা ভিত্তিম্ব কীলকবিশেষ-যুক্ত করাইয়া) নির্মাণ করাইতে হইবে। (শালা ও সীমাগৃহের) অন্তর্রালে ভাণি বা ক্ষে বার নিবেশিত হইবে (মগুণের কোণকেও আণি বলা হয়)। হর্ম্য বা উপরিতলের চন্দ্রশালা-নামক গৃহ, প্রথম তলের উৎসেধ বা

উচ্চতার অর্দ্ধপরিমাণ উৎদেধযুক্ত থাকিবে এবং ইহাতে খুণা বা ক্ষ্ম ক্ষ্ম স্তম্ভ আবদ্ধ থাকিবে ('আণিহর্মাং'—এইরূপ সমন্ত পাঠ থাকিলে, 'সীমাগৃহ' অর্থ হইবে)। উত্তমাগার অর্থাৎ তৃতীয় তলটি দেড় দণ্ডপরিমিত হইবে (একবাস্ত তিন দণ্ডপরিমিত; অতএব, ইহা আর্দ্ধবাস্তক হইবে অর্থাৎ ইহার পরিমাণ দেড় দণ্ড অর্থাৎ হয় হস্ত হইবে)। অথবা, ইহা (পঞ্চ দণ্ড চতুর্ম্ম থারের) এক তৃতীয়াংশ পরিমাণ হইবে। (এই উত্তমাগারটির) পার্যগুলি ইউকাবদ্ধ থাকিবে; ইহার বাম দিকে প্রদক্ষিণভাবে আগমনের উপযোগী সোপান থাকিবে; এবং অপর দিকে (অর্থাৎ দক্ষিণ দিকে) ভিত্তিতে প্রোথিত গৃঢ় সোপান থাকিবে।

তোরণের শিরোদেশ তুই হস্তপরিমিত হইবে। তিন বা পাঁচ ভাগযুক্ত তুইটি কবাট থাকিবে। (কবাটদ্বর বন্ধ করিবার জন্ম) তুই তুইটি পরিষ্ বা অর্গল থাকিবে। কবাটের ইন্দ্রকীল বা প্রধান কীলকটি এক অর্বন্ধি বা এক হস্ত ( = ২৪ অঙ্গুলি পরিমাণ )-পরিমিত হইবে। (কবাটের মধ্যে) একটি পঞ্চ হস্তপরিমিত আণিদ্বার বা ক্ষুদ্র দারবিশেষ থাকিবে। সমগ্র দারটি এত বড় হইবে, যেন ইহার ভিতর দিয়া চারিটি হস্তী একসঙ্গে প্রবেশ করিতে পারে (চারিটি গজার্গল থাকিবে—ইহা হইতে লক্ষণাদ্বারা উক্তর্মণ অমুবাদ করা হইয়াছে)।

( বার-) সন্নিবেশের অদ্ধনানযুক্ত ( অর্থাৎ আড়াই দণ্ড উৎসেধযুক্ত ) এবং বারের সমান বিস্তারযুক্ত ছন্তিনশ্ব-নামক ক্রমনিম মৃত্তিকাক্ট ( ফুর্গ হইতে অবতরণার্থ ) স্থাপিত থাকিবে। ( ফুর্গের ) সংক্রেম বা সঞ্চারণপথ দ্বির বা দৃঢ়ভাবে ( দাকপ্রভৃতি দারা ) নির্দ্দিত থাকিবে, ক্লিংবা নিকদক স্থানে ইহা মৃত্তিকানিমিতও হইতে পারে।

রোজা) প্রাকারের তুল্য মানবিশিষ্ট মৃথ বা নিংসরণমার্গ পরিকল্পনা করিয়া, ইহার এক তৃতীয়াংশ গোধার মৃথাকৃতি করিয়া একটি গোপুর বা নগরবার নির্মাণ করাইবেন। প্রাকার-মধ্যে বাপী নির্মাণ করিয়া পুকরিণীঘার-নামক বাপীর ঘার নির্মাণ করাইবেন। পূর্কোক্ত অন্তর বা অবকাশ ও আণি বা ক্ষুদ্র ঘারের পরিমাণ হইতে দেড়গুণ পরিমাণবিশিষ্ট চতুংশাল নির্মাণ করিয়া, ইহাতে কুমারীপুর-নামক ঘার স্থাপিত করিবেন। বিতল মৃগুহর্ম্ম (সম্ভবতঃ শৃক্তরহিত হর্ম্ম) নির্মাণ করিয়া ইহাতে মৃগুক্বার-নামক ঘার স্থাপিত করিবেন। অথবা, নিজ ভূমি ও দ্রব্যসম্পৎ ব্রিয়া (তিনি) যথোক্ত ঘারগুলির যে কোনটি নির্মাণ করাইতে পারেন। (তিনি) স্ববিজ্ঞারমানের ভৃতীয়াংশাধিক

দৈর্ঘ্যবিশিষ্ট ভাণ্ড বা উৎপন্ন দ্রব্যাদির বাহনোপযোগী কুল্যা বা পন্ন:প্রণালী নিবেশিত করাইবেন।

এই সব কুল্যাতে পাষাণ, কুদ্দাল, কুঠার, কাণ্ড (বাণ), কল্পনা (গজোপকরণাদি), মৃষ্ঠি বা লোহম্খ দারুময় গদাবিশেষ (ভুক্তণী পাঠেও শস্থাবিশেষ), মৃদগর, দণ্ড, চক্র, যন্ত্র ও শতন্মি (আয়ুধবিশেষ) এবং লোহকারের শিল্পসাধ্য দ্রব্যসমূহ, শূল, বেধনকারী অগ্রবিশিষ্ট বেণু, উট্ট্রগ্রীবাক্বতি শস্থবিশেষ ও যে-সব আয়ুধে শক্রদাহের জন্ম অগ্নি সংযুক্ত থাকে সেই প্রকার আয়ুধসমূহ নিবেশিত রাখা হইবে; এবং কুপ্যাধ্যক্ষ-প্রকরণে যে-সব বস্তুর বিধান করা হইয়াছে, সে-সব বস্তুও সেখানে (তিনি) নিবেশিত করাইবেন॥ ১-২॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্বে অধ্যক্ষপ্রচার নামক দ্বিতীয় অধিকরণে তুর্গবিধান-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ২৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## চতুৰ্থ অধ্যায়

#### ২২শ প্রকরণ—দুর্গনিবেশ

( হুর্গের ) বাস্তবিভাগ এইভাবে করিতে হইবে, যথা—ইহাতে তিনটি রাজমার্গ পূর্ব-পশ্চিমে আয়ত, ও তিনটি রাজমার্গ উত্তর-দক্ষিণে আয়ত থাকিবে। এই বাস্ত-বিভাগ ঘাদশ ঘারযুক্ত হইবে (প্রত্যেক রাজপথের হুইটি প্রান্তে হুইটি করিয়া ঘার হইলে, উক্ত ছয়টি রাজমার্গের মোট বারটি ঘার হইবে ) এবং ইহাতে ( বাস্ত্রশাস্ত্রের বিস্তারামুক্রপ ) উচিত জ্লপথ, ভূমিপথ ও ( গৃঢ়-স্বক্লাদিময় ), গুপ্তা পথ থাকিবে।

(ইহাতে) চারি দণ্ড-পরিমিত বিস্তারযুক্ত রুখ্যাসমূহ (বিশিথানামক পথ) থাকিবে। রাজমার্গ, জোণমূথে যাওয়ার পথ, স্থানীয়ে যাওয়ার পথ, রাষ্ট্র বা জনপদে যাওয়ার পথ ও বিবীতে যাওয়ার পথ এবং সংযানীয়ে (ক্রয়বিক্রয়-ব্যবহারের প্রধান স্থান অর্থাৎ বড় বড় বাজারে) যাওয়ার পথ, ব্যহপথ (শক্রসমাগমে সৈত্য বাহির করিয়া নেওয়ার পথ), শ্মশানে যাওয়ার পথ ও গ্রামে প্রবেশের পথগুলি আট দণ্ডপরিমিত বিস্তারযুক্ত হইবে। সেতুপথ ও বনপথ চারি দণ্ডপরিমিত বিস্তারযুক্ত হইবে। হস্তিপথ ও ক্ষেত্রপথ ছিদণ্ডপরিমিত

বিস্তারযুক্ত হইবে। রথপথ পাঁচ অরত্বিপরিমিত, (গোমহিষাদি-) পশুপথ চারি অরত্বিপরিমিত এবং (মেধাদি-) ক্ষ্দ্র পশুপথ ও মত্ব্যপথ চুই অরত্বিপরিমিত বিস্তারযুক্ত হইবে।

(বান্ধণাদি) চারি বর্ণের উপজীবিকার উপযোগী অত্যুত্তম বাস্ততে রাজনিবেশ বা রাজবাড়ী স্থাপিত করিতে হইবে। বাস্তহদয় দেশ অর্থাৎ বাস্তুর মধ্যদেশ হইতে উত্তরদিগ্বর্তী নবমভাগে (নিশান্তপ্রণিধি প্রকরণে) উক্ত বিধানামুদারে পূর্ব্বমুখী বা উত্তরমুখী অস্তঃপুর নির্মাণ করাইতে হইবে। ইহার ( রাজনিবেশের ) পূর্বোত্তর ভাগে আচার্য্য ও পুরোহিতের এবং ( তাঁহাদের ) যজ্ঞ ও জলের স্থান থাকিবে, এবং মন্ত্রিগণও সেথানে বাস করিবেন। ( ইহার ) পূর্ব-দক্ষিণভাগে মহানস ( রন্ধনশালা), হস্তিশালা ও কোষাগার থাকিবে। তাহার পর, পূর্বাদিকে গন্ধপণ্য, মাল্যপণ্য, ধান্তপণ্য, ও ( ঘৃতাদি ) রমপণ্যের (দোকান-গৃহ থাকিবে), এবং প্রধান কারু বা শিল্পীরা ও ক্ষত্রিয়েরা বাস নিবন্ধপুস্তকাদি রাখিবার স্থান) ও কর্মানিষ্ঠা ( স্বর্ণরজতাদির শিল্পকর্মের আপণ বা ক্রয়বিক্রয়ার্থ বস্তুশালা) থাকিবে। দক্ষিণ-পশ্চিম ভাগে কুপ্যগৃহ ও আযুধাগার থাকিবে। তাহার পর, দক্ষিণ দিকে নগর-ব্যবহারিক, ধান্ত-ব্যবহারিক, কার্মান্তিক (খনিপ্রভৃতির কর্মান্তে অধিকৃত পুরুষ) ও বলাধ্যক্ষ ( সেনাধ্যক্ষ ) এবং প্রকান্নপণ্যবিক্রয়ী, স্থরাপণ্যবিক্রয়ী, ও মাংসপণ্যবিক্রয়ী এবং পাজীবা ( বেখা ), তালাবচর ( তালে তালে নৃত্যকারী নটবিশেষ ) ও বৈখ্যেরা থাকিবে। পশ্চিম-দক্ষিণ ভাগে থর বা গর্দভ ও উইুদিগের গুপ্তিস্থান বা বাঁধিয়া রাখার স্থান ও (ইহাদের ক্রয়-বির্ক্রমমম্বর্মী) কর্মের স্থান থাকিবে। পশ্চিম-উত্তর ভাগে যান বা শকটাদির শালা ও রথশালা থাকিবে। তাহার পর. পশ্চিমদিকে উর্ণাকারু (পশমী দ্রব্যের শিল্পী), স্তত্তকারু (কার্পাস স্তত্তের তম্ববায় ), বেণুকারু (বেতের শিল্পী ), চর্মকারু ( চামড়ার শিল্পী ), বর্মকারু (কবচাদি-নির্মাতা) ও শস্তাবরণকারু এবং শুদ্রেরা বাস করিবে। উত্তর-পশ্চিম-ভাগে পণ্যগৃহ ( রাজকীয় পণ্যবম্বর ঘর ) ও ভৈষজ্যগৃহ থাকিবে। উত্তর-পূর্ববভাগে কোষ এবং গো ও অশ্ব থাকিবে। তাহার পর, উত্তর দিকে **নগরদেবতা** ও রাজকুলের দেবতা, লোহকার ও মণিকার এবং ব্রাহ্মণেরা বাস করিবে। বাস্তচ্ছিদ্রের অবকাশসমূহে (বাস্তর অন্তরালের অবশিষ্ট স্থানসমূহে) শ্রেণী ( त्रक्रकामि वर्ग ) ७ श्ववहनित्कता वा सक्तवाद्य निविकामि वाहीता थाकित्व।

প্রমধ্যে অপরাজিতা (হুর্গা), অপ্রতিহত (বিষ্ণু?), জয়ত্ত ও বৈজয়ত্তের (ইন্দ্রের) কোষ্ঠক (অন্তর্গুই), এবং শিব, বৈশ্রবণ (কুবের), অশ্বিনীকুমারন্ধর, শ্রী বা লক্ষী ও মদিরা-দেবতার (হুর্গার নামবিশেষ) গৃহ থাকিবে। পূর্ব্বোক্ত কোষ্ঠক ও আলয়সমূহে তৎ তৎ দেশে প্রচলিত বাস্ত-দেবতাসমূহ স্থাপিত করিতে হইবে। পুরের চারি দিকে উত্তরাদিক্রমে ব্রাক্ষার (ব্রন্দের কিংবা ব্রন্দার সম্বন্ধীয় দ্বার), ঐশ্রেরার (ইন্দ্রমম্বন্ধীয় দ্বার), বাম্যদ্বার (ব্যামসম্বন্ধীয় দ্বার) ও সৈনাপত্যদ্বার (দেনাপতি বা কার্তিকেয়সম্বন্ধীয় দ্বার) সন্নিবিষ্ট থাকিবে। পরিথার বাহিরে ধয়্যংশত বা দণ্ডশত ব্যবধান-মুক্ত চৈত্যে, পুণাস্থান, বন ও সেতৃবন্ধ স্থাপন করিতে হইবে; এবং দিগসুসারে (স্ব-স্থ্) দিগাদেবতা স্থাপিত হইবেন।

(পুরের) উত্তরে বা পূর্ব্বে শ্মশানবাট অবস্থিত থাকিবে, এবং দক্ষিণে উত্তম-বর্ণের (ব্রাহ্মণের) শ্মশানবাট থাকিবে। এই বাটের ব্যবহার সম্বন্ধে অতিক্রম ঘটিলে (অপরাধীর প্রতি) প্রথম সাহস দণ্ড বিহিত হইবে।

কুটুম্বীদিগের (বা সাধারণ গৃহপতিদিগের ) কর্মান্ত (কারখানা ) ও ক্ষেত্রের পরিমাণাগুসারে তাহাদের (ভূমি-) সীমা স্থাপন করিতে হইবে। কর্মান্তক্ষেত্র-সমূহে তাহাদিগকে পুস্পবাট (ফুলের বাগান), ফলবাট (ফুলের বাগান), মণ্ড (পদ্মাদির সংঘাত) ও (শাকাদির) কেদারভূমি এবং ধান্ত ও (অন্তান্ত) গণ্য রাজপুরুষদিগের অন্তজ্ঞা বা অনুমতি লইয়া স্থাপন করিতে হইবে এবং দশকুলপরিমিত ভূমিবাটের প্রয়োজনে এক একটি কৃপও স্থাপন করিতে হইবে (মধ্যম হলদ্বন্ধারা কর্ষণীয় ভূমিথওকে একটি 'কুল' বলা হয়; মতান্তরে, দশটি গ্রুলারা কৃষ্য ভূমিকেও 'কুল' বলা হয়)।

অনেক বর্ধ পর্যান্ত উপভোগের যোগ্য সর্বপ্রকার স্নেহ (তৈলাদি), ধান্ত (গুড়াদি), ক্ষার, লবণ, ভৈষজ্ঞা, শুদ্ধ শাক, যবস (ঘাসাদি), বলুর (শুদ্ধ মাংস); তুণ, কান্ত (ইন্ধন), লোহ, চর্ম, অঙ্গার (কয়লা), স্নায়ু, বিষ, বিষাণ (শৃঙ্ক), বেণু, বন্ধল, সারদার্ক (মজবুত কান্তাদি), প্রহরণ (অস্তাদি), আবরণ (কবচ), ও প্রস্তরসমূহ (পুরমধ্যে) নিচিত বা সংগৃহীত রাখিতে হইবে। এই সব দ্রব্য নৃতন পাইলে, তদ্ধারা পুরাতনগুলিকে শোধিত করিতে হইবে, অর্থাৎ নৃতন দ্রব্য পাইলে পুরাতন দ্রব্য থরচ করিয়া তৎস্বলে নৃতন দ্রব্য নিচিত রাখিতে হইবে। (পুরমধ্যে) হস্তী, অশ্ব, রথ ও পদাতিক সেনাকে অনেক মুখ্য বা প্রধানদিগের অধীন করিয়া রাখিতে হইবে। কারণ, বল বা সেনা বছমুখ্যের অধীন হইলে, পরস্পরের ভয়বশতঃ শক্রর উপজাপে পতিত হইতে পারে না (সেনা এক নায়কের অধীন হইলে, সেই নায়ক লোভাদিবশতঃ, অহ্য নায়কের অভাবে, শক্রর উপজাপে পতিত হইয়া স্বসেনাকে শক্রর ভেছ্য করিয়া তুলিতে পারেন)।

ইহা দারা অন্তপালদিগেরও তুর্গ সংস্কার ব্যাখ্যাত হইল, বুঝিতে হইবে।

(পুরমধ্যে রাজা কথনও) বাহিরিকদিগকে (অর্থাৎ কিতব, বঞ্চক, নট, নর্জকাদিকে) বসাইবেন না, কারণ, তাহারা পুরের ও রাষ্ট্র বা জনপদের উপঘাতক বা কার্য্যনাশক। (যদি বসাইতেই হয়, তাহা হইলে তিনি তাহাদিগকে) জনপদের সীমাদেশে বসাইবেন এবং অন্য সকলের ন্যায় তাহাদিগকেও কর দিতে বাধ্য করাইবেন॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দিতীয় অধিকরণে তুর্গনিবেশ-নামক চতুর্থ অধ্যায় ( আদি হইতে ২৫ অধ্যায় ) সম। ও।

#### পঞ্চম অধ্যায়

#### ২৩শ প্রকরণ—সন্ধিধাতার নিচয়কর্দ্ম

সন্ধিশাতা, (যে উচ্চপদ্বিক "রাজপুরুষ রাজকোষাদির সম্যগ্ভাবে নিধানকারী, অর্থাৎ যিনি সে সমন্তের সংগ্রহ ও রক্ষণকার্য্যে ব্যাপৃত) কোষগৃহ ( স্থবর্গরত্বাদির নিচয়ন্তান), পণ্যগৃহ (রাজকীয় পণ্য বা বিক্রেয় স্রব্যাদির নিচয়ন্তান), কোষ্ঠাগার (ধান্তাদি থাভদ্রব্যের নিচয়ন্তান), কুপ্যগৃহ (সারদারু প্রভৃতি দ্রব্যের নিচয়ন্তান), আয়ুধাগার (অস্ত্রশন্তাদির নিচয়ন্তান) ও বন্ধনাগার (কারাগৃহ) নির্মাণ করাইবেন।

(সম্প্রতি কোষগৃহের নির্মাণপ্রকার বলা হইতেছে, যথা—) (সন্নিধাতা) চতুরখ্র (চোকোণ) একটি বাপী খনন করাইবেন এবং (দেখিবেন যেন) ইহাতে কোন জল ও ক্লেদাদি স্নেহ দ্রব্য না থাকে। এই বাপীর উভয় দিকে ইহার পার্যন্ত মৃদদেশ বড় বড় শিলাদ্বারা আবদ্ধ করাইয়া তন্মধ্যে একটি ভূমিগৃহ (অর্থাৎ

ভূগর্ভন্থ গৃহ ) নির্মাণ করাইবেন। এই ভূমিগৃহ সারদাক্ষয় পঞ্চরমূক্ত হইবে; ইহার ভূমির অয়রপ, ইহাতে তিনটি তল থাকিবে; ইহাতে অনেক প্রকার (কোষ্ঠাদির) বিধান থাকিবে; ইহার দেশ (উপরিতল), স্থান (মধ্যম তল ও তল (অধস্তন তল) কৃটিম (অর্থাৎ দৃঢ়ভাবে উপল ও ইইকাদি ঘারা নিবদ্ধ) থাকিবে; ইহাতে মাত্র একটি ঘার যুক্ত থাকিবে; ইহার সোপান যন্ত্রযুক্ত (অর্থাৎ যথাসময়ে নিবেশন ও অপসরণের উপযোগী) থাকিবে; এবং দেবতার প্রতিমাইহার পিধান বা আচ্ছাদন থাকিবে। (তিনি) এই ভূমিগৃহের উপরিভাগে এক কোষগৃহ নির্মাণ করাইবেন। এই কোষগৃহ বাহিরে ও ভিতরে অর্গলমূক্ত থাকিবে; ইহা প্রগ্রীব অর্থাৎ মৃথশালা বা বারান্দা-ঘর কিংবা বাতায়নমূক্ত থাকিবে; ইহা ইইকনির্মিত হইবে; ইহা ভাগুবাহিনী অর্থাৎ ভাগুপূর্ণ নদী-ধারা পরিবৃত্ত থাকিবে (কেহ কেহ ভাগুবাহিনীকে দ্রব্যের আধারশালারণে ব্যাখ্যা করেন)। অথবা, তিনি (কোষগৃহত্তল্য) এক প্রাসাদ জনপদান্তে অভিত্যক্ত পুরুষঘারা (অর্থাৎ যাহারা বধদণ্ডে দণ্ডিত হইয়া সমাজত্যক্ত হইয়াছে তাহাদের সাহায্যে) নির্মাণ করাইবেন, যেন ইহা স্থায়ী নিধি বা কোশযুক্ত থাকায়, আপৎকালে সেই নিধি উপযোগে আসিতে পারে।

(তিনি) পাকা ইইক্ষারা নির্মিত স্তম্ভবুক, চতু:শাল (অর্থাৎ চতুর্দিকে অন্যোক্তসমুখীন শালাযুক্ত), এক্ষারবিশিষ্ট, অনেক কোষ্ঠ ও ভূমিকাযুক্ত ও উভয় পার্যে খোলা স্তম্ভশোভিত অপসার বা অলিন্দযুক্ত পণ্যগৃহ ও কেন্যাগার আবৃত প্রাচীরযুক্ত কুপ্যগৃহ ভিতরে নির্মাণ করাইবেন। (তিনি) ভূমিগৃহযুক্ত কুপ্যগৃহকেই আয়ুখাগারুরপে নির্মাণ করাইবেন। এবং (তিনি) ধ্রুর্মন্ত কুপ্যগৃহকেই আয়ুখাগারুরপে নির্মাণ করাইবেন। এবং (তিনি) ধ্রুর্মন্ত বেবহারনির্ধয়কারী প্রধান বিচারপুক্ষ ও (অক্যান্ত) মহামাত্রগণের (বিচারে দণ্ডনীয় লোকদের জন্ত) পৃথক্ পৃথক্ বন্ধনাগার নির্মাণ করাইবেন। এই বন্ধনাগারে বাসকারী স্ত্রী ও পুক্ষগণের জন্ত বিভিন্ন স্থান থাকিবে, এবং অপসার (অর্থাৎ অলিন্দ) হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত কন্যাগুলি স্বর্মন্ত থাকিবে।

এই সব (কোষগৃহাদির) জন্ত, শালা, থাত (পরিথা) ও উদপানের (কুপের) জায়, স্মানগৃহ, অগ্নিত্রাণ, বিষত্রাণ (১ম অধিকরণের প্রণিধিপ্রকরণোক্ত বিধি জ্রষ্টব্য) মার্জ্জার ও নকুলের ব্যবস্থা ও অন্তান্ত আরক্ষা (রক্ষিপুরুষ ছারা রক্ষার ব্যবস্থা করাইবেন, এবং এই সব ব্যবস্থা তৎ তৎ স্থানের নিজ নিজ দেবতার পূজাবিধান-সহকারে নিষ্পন্ন করাইবেন।

কোষ্ঠাগারে বৃষ্টির পরিমাণ মাপার জন্ম এক অরত্বিপরিমিত ম্থবিশিষ্ট একটি কুগু ( গর্জ ) স্থাপিত করিতে হইবে।

(সন্নিধাতা) তৎ তৎ দ্রব্যসমূহের ব্যবহারীদিগের বংশে উৎপন্ন করণ বা কর্মকরদিগের সহায়তা লইয়া, পুরাতন ও ন্তন অবস্থা বিবেচনা করিয়া, রক্মব্য, (চল্দনাদি) সারদ্রব্য, (বস্তাদি) ফক্কদ্রব্য, বা (দাক্ষচর্মাদি) কুপ্যদ্রব্যসমূহ সংগ্রহ করিবেন। যদি কেহ (রাজকোষে) রত্তাদিবিষয়ে নকল রত্ত্ব দিয়া বা দেওয়াইয়া বঞ্চনা করে, তাহা হইলে তাহার উপর উত্তম সাহস দণ্ড প্রযুক্ত হইবে। সারদ্রব্য সম্বন্ধে এইরূপ বঞ্চনায় তাহার উপর মধ্যম সাহস দণ্ড প্রযুক্ত হইবে, এবং ফক্কদ্রব্য ও কুপ্যদ্রব্য সম্বন্ধে এইরূপ বঞ্চনায় তাহার উপর সেই দ্রব্য (অর্থাৎ তজ্জাতীয় একটি দ্রব্যপ্রদানরূপ দণ্ড) ও ইহার মূল্যের সমান অর্থান্ড প্রযুক্ত হইবে।

ক্লপদর্শক দারা (অর্থাৎ ম্দ্রাপরীক্ষক দারা) হিরণ্যের (অর্থাৎ প্রচলিত ম্দ্রার) শুদ্ধতা পরিজ্ঞাত হইয়া, (সয়িধাতা) তাহা (রাজকোষের জন্য) প্রতিগ্রহ করিবেন; অশুদ্ধ (অর্থাৎ কূট বলিয়া নির্ণীত) হইলে সেই মৃদ্রা তিনি ছেদন করিয়া ফেলিবেন (যেন অন্যে তাহা আর ব্যবহার করিতে না পারে)। (ক্টহিরণ্য) যে আহরণ করিবে (অর্থাৎ আনিবে), তাহার উপর প্রথম সাহস দণ্ড প্রযুক্ত হইবে।

(তিনি রাজকোষের জন্ম) শুদ্ধ, পূর্ণ (ওজনে পুরাপুরি) ও ন্তন ধান্তের পরিগ্রহ করিবেন। ইহার অন্তথা বিধান হইলে, (দাতা বা গ্রহীতা রাজপুরুষকে) মূল দেয় ধান্তের দিগুণ দণ্ড দিতে হইবে। ইহা দারা পণ্য, কুপ্য ও আযুধ প্রতিগ্রহের নিয়মও ব্যাখ্যাত হইল, বৃঝিতে হইবে।

ুদর্বপ্রকার অধিকরণে অর্থাৎ শাসনবিভাগে কার্য্যকারী যুক্ত (প্রধান অধিকারী), উপযুক্ত (তৎসহায়ক অধিকারী; মতান্তরে, যুক্তগণের উপরিতন কর্মচারী) ও তৎপূরুষেরা (অক্যান্ত নিম্ন অধিকারীরা) যদি ( দ্রব্যাদি ) অপহরণ করে, তাহা হইলে তাহাদের যথাক্রমে এক পণ, ছই পণ ও চারি পণ দণ্ড হইবে, এবং প্রথম অপরাধের পরে বার বার অপহরণ করিলে, তাহাদের উপর ক্রমশঃ প্রথম, মধ্যম ও উত্তম সাহস দণ্ড, (এমন কি, বধদণ্ডও প্রযুক্ত হইতে পারে)।

কোষাধিষ্ঠিত পুরুষ যদি রাজকোষের অবচ্ছেদ বা ঘাটতি ঘটায়, তাহা হইলে তাহার উপর বধদও প্রযুক্ত হইবে। তাঁহার (নিমন্থ) ব্যাপৃত পুরুষেরা বা পরিচারকেরা যদি সেই অপরাধ করে, তাহা হইলে তাহাদের অর্থদও প্রযুক্ত হইবে। যদি কোষাবচ্ছেদরূপ অপরাধ স্বষ্টুভাবে না জানা যায়, তবে

তাঁহাদিগের উপর কেবল নিন্দাপূর্ব্বক ভংগনা প্রয়োগ করিলেই চলিবে। চোরেরা যদি সাহসপূর্ব্বক (সন্ধিচ্ছেদাদি দ্বারা রাজার) কোষাদি অপহরণ করে, তাহা হইলে তাহাদিগের উপর বিচিত্র (কটবহুল) বধদণ্ড প্রদত্ত হইবে।

অতএব, সন্নিধাতাকে বিশ্বস্ত পুরুষদিগের সহায়তায় অধিষ্ঠিত থাকিয়া, (কোষাদির) নিচয়কর্ম বা সংগ্রহকার্য্যের অঞ্চান করিতে হইবে।

(সিমিধাতা) বাহ্ন ( অর্থাৎ জনপদ হইতে উথিত ) ও আভ্যন্তর ( অর্থাৎ নগর হইতে উথিত ) আয় জানিয়া রাথিবেন; তাঁহাকে একশত বৎসরের অতীত আয় সম্বন্ধে জিজ্ঞাসা করিলেও তিনি যেন না ঠেকেন, অর্থাৎ বিনা কটে যেন তাহা বলিতে পারেন; এবং তিনি ব্যয়িত অর্থের অবশিষ্ট অর্থও যেন দেখাইতে সমর্থ হয়েন॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্মে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে সন্নিধাতার নিচয়কর্ম-নামক পঞ্চম অধ্যায় (আদি হইতে ২৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## ষষ্ঠ অধ্যায়

## ২৪শ প্রকরণ—সমাহর্তার সমুদয়প্রবর্ত্তন

সমাহর্ত্ত। (উৎপন্ন আয়ের সমাহরণকারী প্রধান রাজপুরুষ) তুর্গ, রাষ্ট্র, থনি, সেতু, বন, ব্রজ ও বণিক্পথ পর্য্যবেক্ষণ করিবেন (অর্থাৎ এই সাত বিষয় হইতে ধনোৎপত্তিসম্বন্ধে বিবেচনা করিবেন)।

নিম্নলিখিত দ্বাবিংশ উপায় হইতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম ত্বুর্গ-শন্ধদারী অভিহিত হইয়াছে, যথা—(১) শুল্ক, (২) দণ্ড বা জরিমানার অর্থ, (৩) পোতব (তুলা-মানপরিচ্ছেদ), (৪) নাগরিক (বা নগরাধাক্ষ) প্রকরণ হইতে লব্ধ ধন, (৫) লক্ষণাধ্যক্ষ (পাটোয়ায়ী বা কাত্যনগোর কার্যদারা ক্ষেত্রারামাদির লক্ষণ বা সীমানির্দেশ হইতে প্রাপ্ত), (৬) ম্লাধ্যক্ষ, (৭) স্থরাধ্যক্ষ, (৮) স্থনাধ্যক্ষ (প্রাণিবধের অধ্যক্ষ), (১) স্ত্রাধ্যক্ষ, (১০) তৈলবিক্রেতা, (১১) দ্বতবিক্রেতা, (১১) দ্বতবিক্রেতা, (১১) ক্ষারবিক্রেতা (অর্থাৎ গুড়াদি-বিক্রয়ী), (১৩) সৌবর্ণিক (রাজনিযুক্ত স্বর্ণাধিকারী), (১৪) পণ্যসম্থা (বা পণ্যশালা), (১৫) বেখ্যাধ্যক্ষ (গণিকাধ্যক্ষ-প্রকরণ দ্রষ্টব্য), (১৬) দ্যুত (জুয়া থেলা), (১৭) বাস্তক (গৃহাদি-নির্মাতা), (১৮-১৯) কারু ও শিল্পিগণ (অর্থাৎ স্কুল ও স্ক্র শিল্পকারসমূহ), (২০) দেবতাধ্যক্ষ

(দেবালয় নিরীক্ষক) ও (২১-২২) দ্বার ও বাহিরিকের আদেয় ধন (অর্থাৎ পুরদ্বারে ও পুরের বাহিরের নটনর্তকাদি হইতে আদেয় অর্থ)।

নিয়লিথিত ত্রয়োদশটি উপায় হইতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম রাষ্ট্রশব্দরারা বলা হইয়াছে, যথা—(১) সীতাধ্যক্ষ (অর্থাৎ ক্রমির নিরীক্ষক),
(২) ভাগ (ধান্তাদির ষড়ভাগ), (৩) বলি (উপহার বা যাচিত ধন),
(৪) কর (ফল ও বৃক্ষাদিসমন্ধ রাজদেয় ধন), (৫) বণিক্ (বণিকদিগের
দেয় ধন), (৬) নদীপাল (নদীর ঘাটরক্ষক ঘারা প্রাপ্য ধন), (৭) তর
(নদীপ্রভৃতির থেয়ালর ধন), (৮) নাবাধ্যক্ষ (৯) পট্টন বা পত্তন (নদীতীরস্থ
ছোট ছোট পুর বা নগর), (১০) বিবীতাধ্যক্ষ, (১১) বর্তনী (অন্তপালাদিলর
পথ কর) (১২) রক্জ্ (বিষয়পতিঘারা জরিপ বিভাগের প্রাপ্য) ও
(১৩) চোররক্জ্ (পরবর্ত্তী কালের চোরোদ্ধরণিক নামক চৌকিদারী থাজানা)।
নিয়লিথিত ঘাদশ উপায় হইতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম খিনি-শক্ষ

নিয়ালাথত দাদশ ডপায় হহতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম খান-শদ
দারা বলা হইয়াছে, যথা—(১) স্বর্ণ, (২) রজত বা রৌপ্য, (৩) বজ্র বা হীরক
(৪) (মরকত প্রভৃতি) মণি, (৫) মৃক্তা, (৬) প্রবাল, (৭) শদ্ধ, (৮) লোহ
(লোহা বা স্বর্ণ ও রজত ভিন্ন অ্যান্ত ধাতু), (১) লবণ, (১০) ভৃমিধাতু,
(১১) প্রস্তরধাতু ও (১২) রসধাতু (খনিজ তৈলাদি)।

নিম্নলিথিত পাঁচটি (মতান্তরে ছয়টি) উপায় হইতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম সেতু-শব্দু হার বাচ্য, যথা—(১) পুস্পবাট (ফুলের বাগ), (২) ফলবাট (ফুলের বাগ), (৩) ষণ্ড (তাল-গুবাক-নারিকেল-কদলী প্রভৃতি), (৪) কেদার (ধান্তাদির ক্ষেত্র) ও (৫) মূলবাপ (অর্থাৎ আর্দ্রক-হরিন্তাদির ক্ষেত্র)। (এই স্থলে পুর্ম্ম, ফল ও বাট—এইরপ পদচ্ছেদ করিয়া 'বাট' শব্দু রাই প্রভৃতির বাট গৃহীত হইয়াছে, এইজন্তই মতান্তরে উপায়গুলির সংখ্যা ছয় হইতে পারে)।

নিয়লিথিত চারিটি উপায় হইতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম ব্ল-শব্দধারা অভিহিত হইয়াছে, যথা—(১) বেইনাবদ্ধ পশুবন (গবয়াদি পশুর বন), (২) মৃগবন (হরিণাদির বন), (৩) দ্রব্যবন (শাককাষ্ঠাদির বন) ও (৪) হস্তিবন। নিয়লিথিত আটটি উপায় হইতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম ব্রেজ্ঞ-শব্দধারা লক্ষিত হইয়াছে, যথা—(১) গো, (২) মহিষ, (৩) অঙ্ক বা ছাগ, (৪) অবিক বা মেষ, (৫) থর বা গদ্ধভ, (৬) উইু, (৭) অশ্ব ও (৮) অশ্বতর (বেশর বা থচ্চর)।

নিম্নলিথিত তুইটি উপায় হইতে যে ধনাগম হয়, তাহার নাম বিনিকৃপথ-শব্দবারা কথিত হইয়াছে, যথা—(১) স্থলপথ ও (২) জ্বলপথ।

উক্ত উপায়গুলির নাম আয়েশরীর, অর্থাৎ এইগুলিই রাজার ধনাগমন্থান। নিম্নলিখিত সাতটি ধনাগমের উপায়কে আয়ের মুখ বা প্রধান স্থান বলিয়া বিজ্ঞক করা হইতেছে, যথা—(১) মূল (অর্থাৎ ধাত্তফলাদির বিক্রয়লর ধন), (২) ভাগ (ধাত্তাদির বড়ভাগ), (০) ব্যাজী (পুনরায় দ্রব্য মাপিলে কম না হয় কজ্জা যে বিংশতিভাগ বেশী আদায় করা হয়, অর্থাৎ শতকরা পাঁচভাগ হিসাবে—তৃতীয় অধিকরণে ১৩শ অধ্যায় দ্রইব্য), (৪) পরিঘ (থেয়া ও অত্যাত্তা ভাড়া ?), (৫) ক্লৃপ্ত (নির্দিষ্ট কর), (৬) রূপিক (লবণাধ্যক্ষ ছারা লবণ-বিক্রমী হইতে আটভাগ গ্রহণ) ও (৭) অত্যয় (অর্থাৎ ধর্মস্থীয় ও কন্টক-শোধনাদি প্রকরণে বর্ণিত দণ্ডের বা জরিমানার ধন।

উক্ত সাতটি উপায়ে লব্ধ প্রধান আয়ের পারিভাষিক নাম আয়মুখ।

নিম্নলিখিত প্রকারের ব্যয়কে ব্যয়শরীর বলিয়া নির্দেশ করা হইতেছে, যথা—(১) দেবপূজার্থ ব্যয়, (২) পিতৃপূজার্থ (প্রাদ্ধাদির ) জন্ম ব্যয়, (৩) দানার্থ (রাহ্মণাদিকে পর্দ্ধ প্রভৃতি দিনে দীয়মান ) ব্যয়, (৪) স্বস্তিবাচননিমিত্তক (অর্থাৎ শান্তি ও পুষ্টির জন্ম পুরোহিতাদিকে দীয়মান ) ব্যয়, (৫) অন্তঃপুরের ব্যয় (অর্থাৎ দেবী ও রাজপুরাদির জন্ম কর্ত্তব্য ব্যয় ), (৬) মহানদের বা রাজরন্ধন-শালার ব্যয়, (৭) দৃত-প্রাবর্ত্তিম অর্থাৎ দৃত প্রবর্তনের থরচ, (৮) কোষ্ঠাগারের ব্যয় (অর্থাৎ তরিশ্মাণাদি-জন্ম থরচ ), (৯) আয়ুধাগার, (১০) পণ্যগৃহ, (১১) কুপাগৃহ, (১২) কর্মান্ত (নানারূপ কারথানা ) ও (১৩) বিষ্টি (বা হঠাৎ করণীয় কর্ম্মের জন্ম কর্ম্মকর থরচ সম্বন্ধীয় ) ব্যয়, এবং (১৪) পত্তি, (১৫) অন্থ, (১৬) রথ ও (১৭) হস্তি-সংগ্রহের থরচ, (১৮) গোমণ্ডল (গো-মহিষাদি রক্ষণের থরচ ), (১৯) পশুবাট, (২০) মুগবাট, (২১) পক্ষিবাট ও (২২) ব্যালবাট জন্ম (ব্যান্থাদি হিংম্ম জন্তদিগের রক্ষণস্থান-জন্ম ) থরচ, (২৩) কাষ্ঠবাট ও (২৪) তৃণবাট রক্ষণাদির থরচ।

উক্ত ব্যরগুলির সমষ্টিগত নাম ব্যয়শরীর।

রাজার রাজ্যাভিষেক হইতে গণিত বর্গ, মাস, পক্ষ ও দিবস—এই চারিটি বৃষ্ট্র-সংজ্ঞায় অভিহিত হইয়া থাকে (অর্থাৎ রাজসরকারের নিবন্ধপুস্তকে হিসাব লেথার সময়ে অমৃক রাজার অমৃক বর্ষে, অমৃক মাসে, অমৃক পক্ষেও অমৃক দিবসে—ইহা ঘটিয়াছিল ইত্যাদিরপ লিপিবদ্ধ করিতে হইবে)। এই রাজবর্ষের

গণনায় বর্ষা, হেমন্ত ও গ্রীক্ষ—এইরপে তিনভাগে কালকে বিভক্ত করা হয় । অর্থাৎ প্রত্যেক ভাগের চারি মাসে আটটি করিয়া পক্ষ গণনা করা হয় । । এই প্রতি বিভাগের আট পক্ষের মধ্যে ) তৃতীয় ও সপ্তম পক্ষে এক এক দিন করিয়া কম ধরা হয় অর্থাৎ ইহাতে চতুর্দশ দিন থাকে, আর অবশিষ্ট পক্ষগুলিতে পূর্ণ (পঞ্চদশ) দিন থাকে । তদ্তিরিক্ত এক মাস অধিক গণনাও হইবে (অর্থাৎ সৌরমাসাতিরিক্ত চাক্রমাস-হিসাবে গণনা করিলে প্রতিমাসে ছই এক দিন করিয়া কম হইয়া গিয়া প্রথম আড়াই বৎসর পরেই গড়হিসাবে বার মাস স্থলে তের মাস হয়—এই অতিরিক্ত মাসকেই অধিমাস বা মলমাস বলা হয় ) । রাজদেরবারের ব্যবহারার্থ এইরূপ ভাবেই কাল-গণনা করিতে হয় ।

সমাহর্তাকে (১) করণীয়, (২) সিদ্ধ, (৩) শেষ, (৪) আয়, (৫) ব্যয় ও (৬) নীবী—এই ছয়টি বিষয়ের ব্যবস্থা করিতে হইবে।

তন্মধ্যে করনীয় ছয় প্রকার, য়থা—(১) সংস্থান ( অর্থাৎ কোন স্থান হইতে কত আয় স্থিত আছে, তাহা ), (২) প্রচার ( অর্থাৎ ভিন্ন ভিন্ন স্থানের সর্ব্ধ প্রকার বিভাগীয় কার্য্যের জ্ঞান ), (৩) শরীরাবস্থান ( অর্থাৎ পূর ও জনপদগুলি আয়ব্যয়-শরীরের নিশ্চয় ), (৪) আদান ( অর্থাৎ ঠিক সময়ে ধাল্ল ও হিরণ্যাদির আদায়করণ ), (৫) সর্ব্বসমৃদায়পিও ( অর্থাৎ প্রতি গ্রাম ও প্রতি নগরহিদাবে সর্ব্ব প্রকার সমৃদয়েরর বা উৎপন্ন ধনাদির সংগ্রহ ও ইহার জ্ঞান ) ও (৬) সঞ্জাত ( অর্থাৎ সর্ব্ব প্রকার উপায়ভারা প্রাপ্ত ধনের পরিমাণ জানিয়া রাখা )। ( এই সব কার্য্য সমাহর্তার অবশ্রুকর্ত্ব্য বলিয়াই ইহার করণীয় সংজ্ঞা।)

সিদ্ধ ছয় প্রকার, য়থা—(১) কোষার্পিত অর্থাৎ রাজকোষে য়াহা অর্পিত বা জমা দেওয়া হইয়াছে, (২) রাঁজহার (অর্থাৎ রাজা নিজকার্য্যের জন্ত সমাহর্তার নিকট হইতে মাহা লইয়াছেন) ও (৩) পুরবায় (অর্থাৎ নগরে শালাপ্রভৃতি নির্মাণার্থ ব্যয়িত ধন)। এই তিন প্রকার ধনের নাম প্রাবিষ্ট-শব্দারা সংজ্ঞিত হয়। (৪) পরম সংবৎসরায়য়য়ত অর্থাৎ অতীত বর্ণের থরচের পরও য়াহা অয়য়য়য় বা জেরয়পে আগত ধন, (৫) শাসনম্ক অর্থাৎ যে সম্পত্তি রাজশাসনদারা করময়ক ও (৬) ম্থাজ্ঞপ্র, অর্থাৎ যাহা রাজার ম্থের কথায় প্রদত্ত হয়য়াছে। শেষের তিন প্রকার ধন বা সম্পত্তি আপাতনীয়-শব্দারা সংজ্ঞিত হয়। উক্ত তিন প্রকার প্রবিষ্ট ও তিন প্রকার আপাতনীয়—এই ছয়টিই সিদ্ধ শব্দবারা সংজ্ঞিত হয়।

লোষ ছয় প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) সিদ্ধিপ্রকর্মযোগ অর্থাৎ সিদ্ধ ব

প্রাপ্ত ( ধান্তাদি ) বস্তুর স্বায়তীকরণে প্রবৃত্তি ( অর্থাৎ অদন্ত করাদির আদায়-জন্ত এইরূপ প্রবৃত্তি ) ও (২) দণ্ডশেষ ( অর্থাৎ দণ্ড বা দৈন্তের উপযোগে বিহিত্ত খরচ হইতে অবশিষ্ট ধন; মতান্তরে, দণ্ড বা জরিমানার অনাদায়-অংশ )। এই চুইটির সংজ্ঞা-আহরনীয় ( অর্থাৎ ইহা অল্লায়াসে সংগৃহীত হইতে পারে )। (৩) ( রাজার প্রিয়জন দারা ) বলপূর্কক অপ্রদন্ত ধন—যাহার নাম প্রতিস্ক ধন, (৪) অবস্থ ই ধন অর্থাৎ যে দেয় ধন পুরম্খাদি জনেরা স্বেচ্ছায় দেয় না। শোষাক্ত তুইটির সংজ্ঞা প্রশোধ্য ( অর্থাৎ প্রযুজসাধ্য ধন )। (৫) অসার ( অর্থাৎ নিক্ষলতায় ব্যয়িত ধন ) ও (৬) অল্পার (অর্থাৎ মে ধন অর্থিক পরিমাণে ব্যয়িত হইলেও স্বল্প ফল প্রস্ব করে )। এই ছয়টি শেষ-শন্ধবাচক।

আয় তিন প্রকার, যথা---(১) বর্তমান, (২) প্র্যুসিত ও (৩) অন্তজাত। তন্মধ্যে যে আয় প্রতি দিন হয়, অর্থাৎ নিতা আয়, তাহার নাম বর্তমান আয়। যে আয় পূর্ব্ব বংসরেই হওয়া উচিত ছিল তাহা যদি বর্তমান বংসরে গৃহীত হয়, এবং ভূতপূর্ব্ব অধ্যক্ষের সময়েই গ্রহণযোগ্য যে মায় বর্ত্তমান সময়ে পরিজ্ঞাত হয় ( অথবা, যাহা পর বা শক্রর দেশ হইতে আগত আয় ) তাহার নাম প্রাসিত আয়। আবার (১) যে আয় বিশৃত ছিল, কিন্তু, সম্প্রতি অভিজ্ঞাত হইল. (২) যে আয় ( অপরাধী ) আযুক্ ( বা অধিকারী ) পুরুষ হইতে দণ্ডরূপে গৃহীত হয়. (৩) পার্যনামক আয়, অর্থাৎ নিদিষ্ট আয়ের অতিরিক্ত (বক্র পন্থাবলমনে) প্রাপ্ত ( অথবা, নিজের প্রভূত্বের প্রভাবে প্রাপ্ত যে আয় ), (৪) পারিহীণিক আয় অর্থাৎ কোন ক্ষতিপূরণার্থ গৃহীত যে আয়, (৫) উপায়নিক আয় অর্থাৎ উপায়ন বা উপঢ়োকনরূপে গৃহীত যে আয়, (৬) ডমর বা কোন প্রকার বিপ্লবের সময়ে (শক্রনো প্রভৃতি হইতে) আহত ধনরূপ আয়, (৭) অপুত্রক আয় ব্দর্থাৎ কাহারও দায়ভাগী পুত্রাদি না থাকায়, রাজগামী সেই দায় হইতে প্রাপ্ত আয় ও (৮) নিধি হইতে লব্ধ আয়-এই আয়গুলি অন্তব্জাত আয় বলিয়া সংজ্ঞিত হয়। অন্য আর এক প্রকার আয়ের কথা বলা হইতেছে যাহার নাম ব্যয়-প্রত্যায় আয়, যথা—(১) বিক্ষেপশেষ অর্থাৎ কোনও গুরুতর কার্ষ্যের জন্ম নির্দ্দিষ্ট ব্যয় হইতে অবশিষ্ট ধন, (২) ব্যাধিতশেষ অর্থাৎ রোগীদিগের খরচ-জন্ম রক্ষিত ব্যয়িতাবশিষ্ট অংশ ও (৩) অন্তরারম্ভশেষ অর্থাৎ রাজপুরে হুর্গ প্রাসাদাদি নির্মাণার্থ রক্ষিত ধনের বায়িতাবশিষ্ট অংশ। আরও (পাঁচ) প্রকার আয়ের কথা বলা হইতেছে, যথা—(১) ( ক্রীত ) পণ্যের বিক্রয়সময়ে মূলাবৃদ্ধি হইলে তাহা হইতে উৎপন্ন অতিরিক্ত আয়, (২) উপজা অর্থাৎ প্রতিসিদ্ধ দ্রব্যাদির বিক্রয় হইতে উপজাত আয়, (৩) মান ও উন্মানের বিশেষের বা ন্যুনাধিক্যের দক্ষন প্রাপ্ত আয়, (৪) ব্যাজী বা ফাও-নেওয়ার আয়, অর্থাৎ পুনর্কার দ্রব্য মাপিবার সময়ে উনতার আশঙ্কায় বিংশতিভাগ আগেই বাড়াইয়া নেওয়ার জন্ম উৎপন্ন আয় ও (৫) ক্রয়কারীদিগের মধ্যে ক্রয়কালে সংঘর্ষ বা মূল্য বাড়াইবার স্পর্দ্ধাবশতঃ উৎপন্ন অতিরিক্ত আয়। (উক্ত দর্ব্ব প্রকার আয়ই আয়-শব্বাচ্য।)

ব্যয় নিরপণে বলা হইতেছে যে, বায়ও চারি প্রকারের হইতে পারে, যথা—(১) নিতা, (২) নিত্যোৎপাদিক, (৩) লাভ ও (৪) লাভোৎপাদিক। যে বায় প্রতি দিনই হইয়া থাকে তাহার নাম নিতাবায়। যে বায় পাক্ষিক, মাসিক ও বাৎসরিক লাভের জন্য করা হইয়া থাকে সেই ব্যয়ের (পারিভাষিক) নাম লাভ। নির্দ্ধারিত নিতাবায় ও লাভবায়ের সঙ্গে সঙ্গে যে যে বায় অতিরিক্ত করা হয় তাহাদিগের নাম যথাক্রমে নিত্যাৎপাদিক ও লাভোৎপাদিক বায়।

আয় ও বায়ের সম্যক্ গণনাদারা নিশ্চিত, অথচ সর্ব প্রকার ব্যয় সঙ্গুলান করার পর উত্থিত দ্রব্য বা ধনের সংজ্ঞা **নীবী**। এই নীবীও তুই প্রকার হইতে পারে, যথা—প্রাপ্ত অর্থাৎ যাহা রাজকোষে জমা দেওয়া হইয়াছে এবং অন্যবন্ত অর্থাৎ যাহা জমা করার জন্য প্রেরিত হইয়াছে।

প্রাক্ত (সমাহর্তা) উক্ত প্রকারে (রাজকোষের জন্য) সমৃদয় বা ধনোৎ পত্তির ব্যবস্থা করিবেন এবং (তিনি) আয়ের বৃদ্ধি ও ব্যয়ের হ্রাস প্রদর্শন করিবেন অর্থাৎ যাহাতে রাজার আয় বাড়ে ও ব্যয় কম হয়, সে দিকে য়ত্রবান থাকিবেন। (প্রয়োজন হইলে, তিনি) ইহার বৈপরীত্যও ঘটাইতে পারেন (অর্থাৎ অধিক ফলপ্রাপ্তির আশায় আয়হ্রাস ও ব্যয়বৃদ্ধিরও ব্যবস্থা করিতে পারেন)॥১॥

কোটিলীয় অর্থশান্তে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে
সমাহর্ত্তার সমূদয়প্রস্থাপন-নামক ষষ্ঠ অধ্যায়
( আদি হইতে ২৭ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### সপ্তম অধ্যায়

#### ২৫শ প্রকরণ—অক্ষপটলে গাণনিকদিগের অধিকার

অধ্যক্ষ বা মহাগাণনিক এমন একটি অক্ষপটল ( গাণনিকগণের কর্মাফ্রচানযোগ্য স্থান ) নির্মাণ করাইবেন যাহা পূর্ব্ব বা উত্তর্বদিকের অভিমূথ থাকিবে। ইহা অনেক উপস্থান বা ছোট ছোট কক্ষ্যাতে বিভক্ত থাকিবে, এবং ইহাতে ( আয়ব্যয়ের ) নিবন্ধপুস্তক ( থাতাপত্র ) রাথিবার স্থানও ব্যবস্থিত থাকিবে (পরবর্ত্তিকালে এই অধ্যক্ষ পুস্তপাল-নামে পরিচিত হইত, এবং তাঁহার অন্ত নাম মহাক্ষপটলিক বলিয়াও পাওয়া গিয়াছে )।

(দলিলদন্তাবেজ তৈয়ার করা ও রাথার জন্য নির্দিষ্ট) এই দপ্তরে (এই অধ্যক্ষ ) নিম্নলিখিত বিষয়গুলিকে নিবন্ধপুস্তকে লিপিবন্ধ করাইবেন, যথা---(১) (রাজ্যশাসনতন্ত্রভুক্ত ) সর্ব্ব প্রকার অধিকরণ বা বিভাগের সংখ্যা, তাহাদের প্রচার বা কর্তব্যসম্বন্ধীয় নিয়মকাত্মন, ও দেগুলির সঞ্জাত বা উৎপন্ন আয়ের ইয়তা; (২) রাজকর্মান্ত বা থনিজন্রব্যাদির কারথানাসমূহের দ্রব্যবিনিয়োগ-সম্বন্ধে বৃদ্ধি বা হৃদ বা লাভ, ক্ষয় (নাশ ও ক্ষতি), বায়, প্রয়াম (অপ্রাপ্তি বা অভাবের সময়ে দ্রব্যের ক্রয়াদর বা চাহিদা), ব্যাজী (গত অধ্যায়ে দ্রষ্টব্য), যোগ ( দ্রব্য ও অপদ্রব্যের মিশ্রণ ), স্থান ( দ্রব্যের উৎপত্তি-স্থান ), বেতন (কর্মকরদিণের ভৃতি) ও বিষ্টির (বলকারিত কর্মের জন্ম নিযুক্ত কর্মকরদিণের) প্রমাণ বা ইয়তা; (৩) রত্ন (মরকতাদি), সার, ফল্ক (অসার) ও কুপ্য পদার্থের অর্ঘ্য বা মূল্য, প্রত্যেকটির বর্ণক বা রঙ্, মান বা তোল, উন্মান্ক বা উচ্চতা ও প্রশস্ততার মাপ ও ইহাদের দ্বারা তৈরী ভাগু বা মাল; (৪) দেশ, গ্রাম, জাতি, কুল ও সংঘের ধর্ম, ( দায়ভাগাদি ) ব্যবহার, চারিত্র বা সম্দাচারের স্বরূপ ( সংস্থান শব্দকে ভিন্ন করিয়া ধরিলে ইহার অর্থ পূর্ব্বস্থিত বা দেশের রীতিনীতি হইতে পারে); (৫) রাজোপজীবী পুরুষদিগের প্রগ্রহ বা পূজাসংকারাদির রকম, প্রদেশ বা বাসস্থান, ভোগ বা উপায়নপ্রভৃতি, পরিহার বা করম্ক্তি, ভক্ত ( অশ্বগজাদির জন্ম খোরাকি ) ও তাঁহাদের বেতনপ্রাপ্তি; (৬) রাজা স্বয়ং তাঁহার পত্নীগণ ও রাজপুত্রেরা কি কি রত্ন ও ভূমি লাভ করিয়াছেন তাহা; (৭) রাজপ্রভৃতির নিত্য দেয় ধনের অতিরিক্ত ধন, উৎসবাদিতে খরচ করার জন্ম বিশেষভাবে প্রাপ্ত ধন ও ব্যাধি প্রভৃতি প্রশমনার্থ প্রাপ্ত ধনলাভ কতথানি তাহা;

এবং (৮) মিত্র ও অমিত্ররাজগণের প্রতি ( যথাক্রমে ) সন্ধি করিয়া প্রদীয়মান ধন ও যুদ্ধ করিয়া আদীয়মান ধনের পরিমাণ। এই সমস্ত বিষয় ( অক্ষপটলের ) নিবন্ধপুস্তকে বা রেজিষ্টারে ( গণনাধ্যক্ষ ) লিপিবদ্ধ করাইবেন।

তদনন্তর সর্ব্ধ প্রকার অধিকরণের (কর্মবিভাগের অধ্যক্ষাদি কর্মকরগণের) করণীয়, দিন্ধ, শেষ, আয়, বায় ও নীবী (এই অধিকরণের ষষ্ঠ অধ্যায় দ্রষ্টবা), তাহাদিগের উপস্থান বা কর্মকরণে উপস্থিতিকাল, প্রচার (ব্যাপার বা কার্যপদ্ধতি), ও চরিত্র (আচার) সম্বন্ধীয় স্বরূপ (তিনি অর্থাৎ প্রধান গাণনিক) নিবন্ধপুস্তকে লিখাইয়া (অথবা, নিবন্ধপুস্তকে লিখিত ব্যবস্থায়সারে) নির্দ্ধারণ করিয়া দিবেন। তিনি উত্তম, মধ্যম ও অধম কর্মসমূহের সম্পাদন-জন্ম ইহার অন্তর্মপ অধ্যক্ষ নিযুক্ত করিবেন এবং এককর্ম সাধনের যোগ্য অনেক পুরুষ পাইলে তিনি তাহাকেই অধ্যক্ষ করিবেন—যিনি কর্মনৈপূণ্য ও অন্তান্ম গুণসন্তারের পরিচয় দিয়াছেন এবং ( যাহার কোন অপরাধ ঘটিলে ) তাহাকে দণ্ড দিয়া রাজা (নিজেও ) অন্তত্থ হইবেন না (অর্থাৎ যেন তেমন অধ্যক্ষ রান্ধণ বা রাজার আত্মীয়স্তজন না হয়েন এবং তাঁহাদের অপরাধের জন্ম তাঁহাদিগকে শান্তি দিতে হইলে তাঁহার মনে অন্তর্তাপ না আদে )।

( এইরপ ভাবে নিযুক্ত অধ্যক্ষের কোন প্রকার অপচার বা কর্মদোষ প্রমাণিত হইলে) উভাহার থাহারা সহগ্রাহী বা সহাপহরণকারী, গাঁহারা তাঁহার প্রতিভূ বা জামিন ছিলেন তাঁহারা, থাহারা তাঁহার অধীনস্থ কর্মচারী তাঁহারা, তাঁহার পুত্র, ভ্রাতা, ভার্যা, কন্যা ও তাঁহার নিজ ভূত্যেরা (অধ্যক্ষের দোষে রাজসরকারের) কর্মচ্ছেদজনিত ক্ষতি পূরণ করিয়া দিবেন।

• তিন শ্বৃত চুয়ায় (৩৫৪) দিনরাত্রি (দিবস) ধরিয়া (রাজসরকারের) কর্ম সংবংসর গ্রানা করিতে হইবে। এই কর্মসংবংসর আষাঢ় মাসের পূর্ণিমায় সমাপ্ত বলিয়া গ্বত হইবে এবং এইরপ কালগণনা করিয়া যাহার যাহা (বেতনাদি) প্রাপ্ত হইবে এবং এইরপ কালগণনা করিয়া যাহার যাহা (বেতনাদি) প্রাপ্ত হইবে তাহা (পূরা হইলে) পূর্ণ করিয়া, অথবা, (নিয়োগটি অন্তরালসময়ে ঘটিলে) কম করিয়া দিতে হইবে। অধিমাসক (অর্থাৎ প্রতিমাসে কে কতথানি কার্য্য করিয়াছে ইহার) গণনা কোন করণ বা কেরাণীছারা অধিষ্ঠিত থাকিবে (অর্থাৎ সেই করণই তাহা গণনা করিয়া দিবে)। এই স্থলে অধিমাসকশ্বন ছারা মলমাস লক্ষিত হইয়া থাকিলে, তক্ষন্ত অতিরিক্ত দিবসে ক্বত কর্মের হিসাবও এই করণ হইতেই জানিয়া লইতে হইবে—এইরপ ব্যাখ্যা করা যায়)। (অধ্যক্ষ) অপসর্প বা গুপ্তচরদারা (কর্মচারী দিগের) প্রচার বা কার্য্যাবলী

অবেক্ষণ করাইবেন। তৎতৎকার্য্যে নিযুক্ত কোন অধ্যক্ষপ্রচার, চরিত্র ও সংস্থানের (পূর্ব্বস্থিতির) বিষয় (অপসর্পযোগে) না জানিলে, সেই অজ্ঞানবশতঃ তিনি রাজার সমূদয় বা ধনোৎপত্তির হানি ঘটাইয়া দিবেন; এবং (তিনি) উত্থান বা কর্মোত্তম ও ক্লেশ সহিতে না পারিয়া নিজের অলসতার দরুন; শব্দাদি ইন্দ্রিরবিষয়ে প্রমাদে পতিত হইবার দরুন; নিন্দা, অধর্ম ও অনর্থের আশঙ্কায় ভীক হওয়ায় সেই ভয়ের দক্ষন; কার্য্যার্থিগণের প্রতি অক্তগ্রহ দেখাইবার জন্ম কাম বা কামচারিতার দক্ষন; কাহারও প্রতি হিংসাবৃদ্ধিতে প্রণোদিত হইয়া কোপের দক্ষন; নিজের বিহ্যা, দ্রব্যা (ধনসম্পত্তি ) ও রাজবন্ধভদিগের আশ্রয়ের উপর নির্ভর করিয়া দর্পের দক্ষন: এবং তুলান্তর, মানান্তর ও গণিকান্তরের ( অন্ত প্রকার গণনার) ছলনা করিয়া লোভের দরুনও (রাজ-সমুদয়ের ক্ষতি সাধন করিতে পারেন)। স্থতরাং গণনাধ্যক্ষের অজ্ঞান, আলম্ম, প্রমাদ, ভয়, কাম, কোপ, দর্প ও লোভ—এই আট প্রকার দোষ সমুদয়ের হানি ঘটাইতে পারে। মানবেরা অর্থাৎ আচার্য মন্ত্র শিষ্ট্রোরা এই মত পোষণ করেন যে, উক্ত আট প্রকার দোষের ম্থাক্রমে যে কয়টি দোষের দক্ষন রাজকোষের যতথানি হানি হইবে, সেই দোষসংখ্যার উপরও একগুণ অধিক অর্থদণ্ড ( অপরাধী গাণনিককে ) দিতে হইবে ( যথা, তুই কারণে ৫ টাকার ক্ষতি হইলে ৫  $\times$  (২+১) = ১৫ টাকা দণ্ড হইবে )। (কেহ কেহ এমনও ব্যাখ্যা করেন যে, একাদিগুণ অধিক দণ্ড হইবে, অর্থাৎ একটি দোষে ক্ষতির সমান দণ্ড, তুইটি দোষে দ্বিগুণ, তিনটি দোষের ত্রিগুণ ইত্যাদি।) পারাশব্রের। অর্থাৎ আচার্য্য পরাশবের শিষ্মের। মনে করেন যে, সর্ব্ব প্রকার অপরাধেই ক্ষতির আটগুণ দণ্ড হইবে। বা**র্হস্পত্য** বা আচার্য্য বৃহস্পতির শিষ্যগণের মতে সব অপরাধেই দশগুণ দণ্ড ইইবে। ঔশনস বা শুক্রাচার্য্যের শিয়াগণ মনে করেন যে, সব অপরাশ্বেই বিশগুণ দণ্ড হওয়া উচিত। (কিন্তু,) কৌটিল্যের মতে অপরাধের (গুরুত্ব ও লঘুত্ব) পর্য্যালোচনা করিয়া দণ্ড দিতে হইবে।

প্রধান গণনাধ্যক্ষের কার্য্যালয়ে ) গণনাকার্য্যসমূহ অথাৎ তৎপ্রাদর্শনকারী কর্মচারীরা, (হিসাব লইয়া) আষাঢ়-পূর্ণিমার দিনে উপস্থিত হইবে। সরকারী মূদ্রা বা শিলমোহরযুক্ত পুত্তভাগু বা নিবদ্ধপুত্তকের পেটিকা ও নীবী (অর্থাৎ ব্যয়িত ধনের অবশিষ্ট ধন)-সহকারে তাহারা যথন সেথানে আসিবে, তথন (হিসাব বুঝাইয়া না দেওয়া পর্যস্ত) তাহারা পরক্ষরের সহিত কোন আলাপ করিতে পারিবে না—এইরপ ব্যবস্থা (গণনাধ্যক্ষ) করাইবেন। তাহাদের

নিকট হইতে আয়, ব্যয় ও নীবীর পরিমাণ শুনিয়া (তিনি) তাহাদের নিকট হইতে নীবী বৃঝিয়া লইবেন। লিখিত আয়ের পরিমাণ হইতে, নিবদ্ধপুস্তকে বিস্তৃত বর্ণনাহসারে, নীবী বাবদ যে ধন বাড়িবে বলিয়া প্রতিপন্ন হয়, এবং ব্যয়ের পরিমাণ হইতেও যে ধন কমিয়া যায় বলিয়া দৃষ্ট হয়, সেই ধনের আটগুল ধন সেই (হিসাবপ্রদর্শক) অধ্যক্ষকে (প্রধান গণনাধ্যক্ষ) (দণ্ডরূপে) দেওয়াইবেন (অর্থাৎ সেই অধ্যক্ষ হইতে তাহা গ্রহণ করিবেন)। ইহার বিপর্যয় বা বৈপরীতা ঘটিলে, বদ্ধিতাংশ সেই অধ্যক্ষই (পুরস্কারস্বরূপ) পাইবেন।

যে অধ্যক্ষেরা নির্দিষ্ট সময়ে (হিসাব লইয়া) উপস্থিত হইবেন না, অথবা, (উপস্থিত হইলেও) পুস্ত (নিবন্ধপুস্তক) ও নীবী না লইয়া উপস্থিত হইবেন, তাহাদিগকে দেয়াংশের দশগুণ দণ্ড দিতে হইবে। কার্দ্মিক বা বড় কর্মচারী উপস্থিত হইলেও, কার্মণিক বা ছোট কর্মচারী যদি হিসাব মিলাইয়া না লয়েন, তাহা হইলে তাঁহাকে প্রথম সাহস দণ্ড দিতে হইবে। ইহার বিপরীত ঘটিলে অর্থাৎ কার্মিকের দোষ হইলে, সেই কার্মিককে ইহার দ্বিগুণ দণ্ড দিতে হইবে।

রাজার মহামাত্রগণ তাঁহাদের প্রচার বা বিভাগীয় কাখ্যের প্রয়োজনাতরপ সমগ্র হিসাব পরস্পরের অন্ত্র্ল করিয়া শুদ্ধভাবে (লোকদিগকে) শুনাইবেন বা জানাইবেন। (তাঁহাদিগের মধ্যে) কেহ বিসংবাদী বা মিথ্যাবাদী প্রতিপন্ন হুইলে, তাঁহার উপর উত্তম সাহস দণ্ড প্রযুক্ত হুইবে।

ষে ( অধ্যক্ষ ) নির্দিষ্ট দিবসে ( উপহর্তব্য ধনাদি দ্রব্যের ) হিসাব উপস্থাপিত করিতে পারেন না, তাঁহাকে ( ইহার হিসাব-জন্ম) আরও এক মাস সময় দেওয়া যাইতে পারে। এক মাস অতীত হুইয়া গেলে, তার পরও হিসাব না দেখাইতে পারিদো, তাঁহার প্রতি প্রতিমাসে ২০০ পণ দও বিহিত হুইবে। যে অধ্যক্ষের অল্প পরিমিত নীনীর হিসাব বাকি থাকে, তাঁহাকে নির্দিষ্ট দিনের পরও পাঁচ দিনের সময় দেওয়া যাইতে পারে, তৎপর তাঁহার উপরও দণ্ডের ব্যবস্থা করিতে হুইবে।

বে অধ্যক্ষ নিন্দিষ্ট দিবদে (নীবীরূপ) কোশসহকারে হিসাব ব্ঝাইয়া দিতে উপস্থিত হইবেন, তাঁহাকে (প্রধান গণনাধ্যক্ষ) ধর্ম, ব্যবহার, চরিত্র, সংস্থান (পূর্বস্থিতি), সঙ্কলন (হিসাব রচনা), নির্বর্ত্তন (কার্য্যনিম্পত্তি); অন্তমান (অর্থাৎ এক কার্য্যবারা অন্ত কার্য্যের অন্তমান) ও চার বা গৃঢ়পুরুষদিগের প্রয়োগছারা পরীক্ষা করিবেন।

এক দিন, পাঁচ দিন, এক পক্ষ, এক মাস, চারি মাস ও সংবৎসর-এইরূপ

কাল বিভাগ করিয়া ( আয়, বায় ও নীবীর ) হিসাব-রাখিতে হইবে ( অর্থাৎ হিসাব-নিকাশ এমনভাবে প্রস্তুত করিতে হইবে যাহাতে রাজসরকারের প্রতিদিনের, প্রতি পাঁচ দিনের, প্রত্যেক পক্ষের, প্রত্যেক চাতুর্মান্তের ও প্রত্যেক বৎসরের আয়, ব্যয় ও নীবীর পরিমাণ তৎক্ষণাৎ জানা যাইতে পারে )। আয়ের হিসাব লিথিবার সময়ে, ব্যুষ্ট ( রাজবর্গাদি—এই অধিকরণের ষষ্ঠ অধ্যায় দ্রপ্টব্য ), দেশ, কাল, মৃথ ( আয়মৃথ ও আয়শরীর ), উৎপত্তি ( আয় হইতে উৎপন্ন বৃদ্ধি-প্রভৃতি ), অমুবৃত্তি (পুন: পুন: আগম ), প্রমাণ বা পরিমাণ, দায়ক (করাদির দাতা ), দাপক ( যে রাজপুরুষ করাদি দেওয়ান তিনি ), নিবন্ধক ( নিবন্ধপুস্তকের লেখক) ও প্রতিগ্রাহক ( আদায়কারী )—এই সমস্ত বিষয়েরও উল্লেখ রহিল কি না তাহার পরীক্ষা করা আবশ্রক। ব্যয়ের হিসাব লিখিবার সময়ে, বুাই, দেশ, কাল, মৃথ ( ব্যয়মৃথ ও ব্যয়শরীর ), লাভ ( পূর্ব্বাধ্যায় দ্রষ্টব্য ) কারণ ( ব্যয়ের কারণ ), দেয় বস্তুর নাম, যোগ ( দ্রব্য ও অপদ্রব্যের মিগ্রণ ), পরিমাণ, আজ্ঞাপক (বায়ের জন্য আজ্ঞাকারী), উদ্ধারক (রাজকোষ হইতে ধনাদির আনেতা), নিধাতৃক ( ভাণ্ডাগারিক ) ও প্রতিগ্রাহক (ব্যয়ের গ্রহণকারী)—এই সব বিষয়েরও উল্লেখ আছে কি না তাহা পরীক্ষা করা দরকার। ( আবার ) নীবীর হিসাব निश्वितात ममराय तुर्धे, रम्भ, कान, मूथ, अञ्चवर्त्त, क्रभ ( अक्रभ). नक्ष्म ( দ্রব্যের চিহ্ন ), পরিমাণ, নিক্ষেপভাজন ( যে পাত্রে দ্রব্য জমা রাথা হইবে তাহা ) ও গোপায়ক ( দ্রব্যের রক্ষক )—এই সব বিষয়েরও উল্লেখ আছে কি না তাহা পরীক্ষা করা উচিত ( অর্থাৎ আয়, বায় ও নীবীর হিসাবে তৎ তৎ বিষয়ের উল্লেখ আছে কি না, তাহা মিলাইয়া হিসাব পরীক্ষা করিতে হইবে )।

যে কারণিক রাজার ধনাদিবিষয়ে নিবন্ধপুস্তকে হিসাব না লিখিবে, অধীবা, (রাজার) আজ্ঞা উল্লক্ষন করিবে, অথবা, নিবন্ধস্থ নিয়মের অপ্তক্রম করিয়া অন্য প্রকারে আয় ও ব্যয়ের কল্পনা করিবে, তাহার উপর প্রথম সাহস দণ্ড বিহিত হইবে।

থে (কর্মচারী লেখক) কোন বস্তুসম্বন্ধে ক্রম পরিত্যাগপূর্বক বা উলট-পালটভাবে, বা অন্সের বোধবিরুদ্ধভাবে, বা পুনরুক্তভাবে হিসাব (অন্যায়রূপে) লিখিবে, তাহার দণ্ড হইবে শ্বাদশ পণ।

যে ব্যক্তি নীবীসম্বন্ধে এইরূপ ভূল করিয়া লিখিবে, তাহার দণ্ড পূর্ব্ব দণ্ডের দ্বিগুণ অর্থাৎ ২৪ পণ হইবে; যে ব্যক্তি স্বয়ং নীবী গ্রাস করিবে, তাহার সেই দণ্ডের আটগুণ অর্থাৎ ৯৬ পণ দণ্ড হইবে; এবং যে ব্যক্তি নীবী (অক্তকে দিয়া) নাশ করিবে, তাহার সেই দণ্ডের পাঁচগুণ অর্থাৎ ৬০ পণ দণ্ড হইবে এবং তাহাকে নাশিত দ্রব্য পুনরায় দিতে হইবে। (নীবী-সম্বন্ধে কোন কর্মচারী) মিথা। কথা বলিলে তাহার উপর স্তেয়দণ্ড অর্থাৎ চুরি করার অপরাধে প্রযুজ্যমান দণ্ড বিহিত হইবে। হিসাব-সম্পর্কীয় কোন বিষয়ে পূর্কে অস্বীকার করিয়া পরে স্বীকার করিলে, অপরাধীকে স্তেয়দণ্ডের দিগুণ দণ্ড ভোগ করিতে হইবে, এবং পূর্কে ভূলিয়া গিয়া পরে চিন্তাপূর্কক স্থির করিলেও তাহাকে স্তেয়দণ্ডের দিগুণ দণ্ড ভোগ করিতে হইবে।

রাজা, ( অধ্যক্ষের ) অপরাধ অল্প হইলে তাহা সহ করিবেন; এবং তাঁহাদারা অল্প আয়ও যদি বন্ধিত হয়, তাহা হইলে (তিনি) ততুপরি তুই হইবেন। এবং (তিনি) তাঁহার মহোপকারী অধ্যক্ষকে সর্ব্ধ প্রকার সৎকার দ্বারা সম্মানিত করিবেন॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে গাণনিক্যাধিকার-নামক সপ্তম অধ্যায় ( আদি হইতে ২৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# অষ্টম অধ্যায়

# ২৬শ প্রকরণ—যুক্ত বা **অধিকারী দ্বারা অপহৃত সমূদয়ের প্র**ভ্যা**নয়ন**

(তন্ত্র ও আবাপের) সর্ব্ব কার্যাই কোশের উপর নির্ভর করে। সেইজন্ত (রাজা) সুর্ব্ব কার্যোর পূর্ব্বে "কোশ পর্যাবেক্ষণ করিবেন (অর্থাৎ যাহাতে কোশবৃদ্ধি ঘটে এবং কোশক্ষয় না ঘটে, তিনি সেদিকে চিন্তা করিবেন)।

কোশবৃদ্ধি নিম্নলিখিত উপায়ে সন্তবপর হয়, য়থা—(১) প্রাচারসমৃদ্ধি,
অর্থাৎ রাজ্যের এলাকা বাড়াইয়া লওয়া; (২) চরিত্রামুগ্রহ, অর্থাৎ দেশ,
জাতি, কল প্রভৃতির আচার-ব্যবহার রক্ষা করিয়া চলা; (৩) চোরগ্রহ, মর্থাৎ
চোর-দম্মার অত্যাচার নিবারণার্থ তাহাদিগের গ্রেপ্তার; (৪) যুক্তপ্রতিষেধ,
অর্থাৎ যাহাতে মুক্তেরা বা মধিকারী পুরুষেরা ধনাপহরণ এবং প্রজাপীড়ন হইতে
নিবারিত থাকে তাহার চেষ্টা করা; (৫) শশুসম্প্রৎ, অর্থাৎ সর্ব্ব প্রকার শশ্রের
উৎপাদন বিষয়ে মনোযোগ দেওয়া; (৬) প্রণার্বাছল্য, অর্থাৎ বিক্রেয় পণ্যের
বহল পরিমাণে উৎপাদন; (৭) উপস্বর্গ-প্রামোক্ষ, অর্থাৎ অগ্নিপ্রভৃতি উপত্রব

হইতে দেশ ও নিজের রক্ষাকর্ম; (৮) পরিহারক্ষয়, অর্থাৎ করম্ব্রিন হ্রাস, বা কাহারও কর্দান মাপ না করা; ও (১) হিরণ্যোপায়ন, অর্থাৎ প্রজা হইতে নগদ টাকা উপায়ন বা উপঢোকনরূপে গ্রহণ করা। এই নয়টি বিষয় কোশবৃদ্ধির হেতু।

নিম্নলিথিত আটটি উপায় কোশক্ষয়ের হেতু বলিয়া বিবেচিত হইতে পারে, যথা—(১) প্রতিবন্ধ, (২) প্রয়োগ, (৩) ব্যবহার, (৪) অবস্তার, (৫) পরিহাপণ, (৬) উপভোগ, (৭) পরিবর্ত্তন ও (৮) অপহার।

প্রতিবন্ধ তিন প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) যে রাজগ্রাহ্থ করাদি সিদ্ধ হইয়াছে, অথাৎ যাহার আদায় করার সময় আসিয়াছে, তাহার অসাধন বা আদায়ের উপায় নির্দ্ধারণ না করা; বা, (২) সেই সিদ্ধ করাদি উৎপন্ন হইলেও তাহা স্বহস্তে না আনা; বা, (৩) আবার তাহা স্বহস্তপ্রাপিত হইলেও নিরম্বপুস্তকে লিথাইয়া রাজভাণ্ডারে প্রবেশ না করান। এই প্রতিবন্ধ-দোষে (কোশক্ষয় ঘটিলে অপরাধী অধিকারীকে) ক্ষয়াংশের দশগুণ দণ্ড দিতে হইবে।

রাজকোশে প্রবেশ্য দ্রব্যসমূহ বৃদ্ধি বা স্থদের জন্য প্রয়োগ করার নাম প্রায়োগ (অর্থাৎ অধিকারী যদি এমন দ্রব্য স্থদে লাগাইয়া স্থদটা স্বয়ং ভোগ করে, তাহা হইলেই ইহা এ স্থলে যথার্থ প্রয়োগ নামে কথিত হইবে)। রাজপণ্য ছারা ব্যবহার বা ক্রয়বিক্রয়রূপ ব্যবহার করার নাম ব্যবহার (অর্থাৎ এইরূপ ব্যাপার করিয়া অধিকারী কিছু অর্থ উপার্জ্জন করিয়াও লইতে পারেন)। এই ছুইটির (প্রয়োগ ও ব্যবহারের) দোবে (কোশক্ষয় ঘটিলে অপরাধী অধিকারীকে) তাঁহার লব্ধ ফল বা মুনাফার দিগুণ দণ্ড দিতে হইবে।

অবস্তার ছই প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) করাদি গ্রহণের নির্দিষ্ট কাল প্রাপ্ত হইলেও, (উৎকোচাদির লোভে যদি অধিকারী) ইহাকে, অপ্রাপ্ত বলিয়া ধার্য্য করিয়া লয়েন, অথবা, (২) অপ্রাপ্ত কালকে (দেষবশতঃ) প্রাপ্ত বলিয়া ধার্য্য করিয়া লয়েন। এই অবস্তার-দোষে (কোশক্ষয় ঘটিলে অপরাধী অধিকারীকে) ক্ষয়াংশের পাঁচগুণ দণ্ড দিতে হইবে।

্ষদি কোনও যুক্তপুরুষ) (১) নিয়ত বা নির্দ্ধারিত আয় কমাইয়া দেন, অথবা, (২) নিয়ত বা নির্দ্ধারিত ব্যয় বাড়াইয়া ফেলেন, তাহা হইলে এই উভয়-প্রকার দোষের নাম পরিহাপণ হয়। এই পরিহাপণ-দোষে (কোশক্ষয় ঘটিলে অপরাধী অধিকারীকে) ক্ষতির চতুগুর্ণ দণ্ড দিতে হইবে।

(রত্, সার, ফস্কুও কুপা) এই সমস্ত রাজদ্রব্য যদি কোন যুক্তপুরুষ স্বয়ং

উপভোগ করেন, বা অন্যন্ধারা সেগুলি উপভোগ করান, তাহা হইলে এই ছুই প্রকার দোষকে উপভোগ বলা যায়। এই সমস্ত দ্রব্যের উপভোগসহন্ধে এইরূপ দণ্ডের ব্যবস্থা আছে—রত্নের উপভোগে বধদণ্ড, সারদ্রব্যের উপভোগে মধ্যম সাহস দণ্ড, এবং ফল্পদ্রব্য ও কুপ্যদ্রব্যের উপভোগে অপরাধী যুক্তপুক্ষকে সেই উপভ্ক দ্রব্য ফিরাইয়া দিবার এবং তৎপরিমাণ ম্ল্যাও দিতে তাঁহাকে বাধ্য করিবার দণ্ড দিতে হইবে।

সেইরপ অন্ত কোন দ্রব্য বদল দিয়া রাজদ্রব্য স্বয়ং গ্রহণ করার নাম পরিবর্ত্তন। এই দোষে উপভোগদোষেরই দণ্ড অপরাধীর উপর বিহিত হইবে। সিদ্ধ বা প্রাপ্ত আয় (যদি কোন যুক্তপুরুষ) নিবন্ধপুস্তকে আরোপিত না করেন, কিংবা নিবন্ধ অর্থাৎ পুস্তকে আরোপিত বায় (নির্দ্দিষ্ট ব্যক্তিকে) না দেন, এবং হস্তগত নীবী 'পাওয়া যায় নাই' বলিয়া অপলাপ করেন, তাহা হইলে এই তিন প্রকার দোষের নাম অপহার হইবে। এই অপহার-দোষে অপরাধী যুক্তপুরুষ বা অধিকারীকে ক্ষয়াংশের বারগুণ দণ্ড দিতে হইবে।

যুক্তগণের পক্ষে চল্লিশ প্রকারের (রাজ্জব্যাদি) হরণের উপায় হইতে পারে, যথা---(১) যাহা ( অর্থাৎ ধালাদি ) পূর্বে আদার করা হইয়াছে, কিন্তু, ভাহা পরে (হিসাবপুস্তকে) প্রবেশিত হইয়াছে (অর্গাৎ মধ্যবর্ত্তী সময়ে তাহা যুক্তদারা উপভুক্ত হইয়া থাকিবে); (২) যাহা পরে প্রাপ্ত হইয়াছে, তাহা পূর্বে আদায় করা হইয়াছে বলিয়া লিখিত হইয়াছে; (৩) যাহা ( করাদি ) গ্রহণ করিতে হইবে, তাহা (ঘৃষ থাইয়া) আদায় করা হয় না; (৪) যাহা (ব্রাহ্মণাদি হইতে) গ্রহণ করা উচিত নহে, তাহা (বলপূর্বক) আদায় করা: (৫) মাহা প্রাপ্ত হইয়াছে, তাহা পাওয়া যায় নাই বলা, বা পুস্তকে তদ্রপ লিখিয়া রাখা; (৬) যাহা পাওয়া যায় নাই, তাহা প্রাপ্ত হইয়াছে বলিয়া দেওয়া বা তদ্রপ নিবন্ধপুন্তকে লিথিয়া রাখা; (৭) অল্প (করাদি ) আদায় করিয়া বেশী লিথিয়া রাখা; (৮) বেশী (করাদি) আদায় করিয়া অল্প পাওয়া গিয়াছে বলিয়া লিখিয়া রাখা; (১) এক বস্তু ( যেমন, গম ) প্রাপ্ত হইয়াছে, কিন্তু, অপর বস্তু (যেমন, জোয়ার) প্রাপ্ত হইয়াছে বলিয়া লিথিয়া রাখা; (১০) এক ব্যক্তির নিকট হইতে প্রাপ্ত বস্তুকে অপর ব্যক্তির নিকট হইতে নির্দেশ করা; (১১) (রাজাদির আজ্ঞাতে) যাহা বলিয়া ( স্থবর্ণাদি ) অন্তকে দেওয়া উচিত, তাহা না দেওয়া, এবং যাহা দেওয়া উচিত নহে তাহা দেওয়া; (১২) যাহা কোন বিশিষ্ট কালে ( যেমন, यक्कां मिनमारम ) मिरा इट्टेर जाटा जथन ना रमखमा, এবং विभिन्न कारन माटा मिरा হইবে তাহা অকালে দেওয়া; (১৩) অল্প ধনাদি ( যেমন, ৫০ টাকা ) দেওয়া হইয়াছে, কিন্তু বেশী টাকা ( যেমন, ১০০ টাকা ) দেওয়া হইয়াছে বলিয়া লিখিয়া রাখা; (১৪) বেশী ধন দিয়। অল্ল ধন নিবন্ধপুস্তকে লিখিয়া রাখা ( অর্থাৎ বেমন, ১০০ টাকা রাজকোশ হইতে লইয়া ৮০ টাকা গ্রাহককে দিয়া যুক্তপুরুষ নিজে ২০ টাকা অপহরণ করিয়াছেন ); (১৫) এক বস্তু দিতে হইবে (এইরূপ আজ্ঞা পাইয়াও), অত্য বস্তু দেওয়া হইয়াছে বলিয়া লিখিয়া রাখা; (১৬) একজনকে যাহা দেওয়া হইয়াছে, তাহা অপরজনের নামে নিবদ্ধ করা হইয়াছে; (১৭) যাহা উত্থল করা হইয়াছে, তাহা জমা দেওয়া হয় নাই; (১৮) যাহা উম্বল করা হয় নাই, তাহা জমা করা হইয়াছে; (১৯) যে সব কুপা দ্রব্য (বন্ত্রাদি) ক্রয় করা হইয়াছে, কিন্তু, যাহার মূল্য দেওয়া হয় নাই, তাহার মূল্য দেওয়া হইয়াছে বলিয়া (নিবন্ধে ) প্রবিষ্ট করা হইয়াছে; (২০) যে বস্তুর মূল্য দেওয়া হইয়াছে, তাহার মূল্য দেওয়া হয় নাই বলিয়া (নিবস্কে) ্রিখিত হইয়াছে; (২১) বহু লোক হইতে একত্র-গ্রাহ্ম ( পিণ্ডকরাদি ), বিক্ষিপ্ত ভাবে নামে নামে গৃহীত বলিয়া ( নিবন্ধপুস্তকে ) লিখিত; (২২) যাহা বিক্ষিপ্ত-ভাবে অর্থাৎ পৃথক্ পৃথক্ লইতে হইবে তাহা সংক্ষিপ্তভাবে অর্থাৎ একত্র মিলাইয়া গ্রহণ করা হইয়াছে বলিয়া লিখিত; (২৩) মহামূল্য বস্তকে অল্প মূল্য বস্তু লইয়া পরিবর্ত্তন করা বা বদল লওয়া; (২৪) অল্প মূল্য বস্তুকে মহামূল্য বস্তু লইয়া পরিবর্তন করা; (২৫) বস্তুর নির্দিষ্ট মূল্য বাড়াইয়া দেওয়া; (২৬) বা, সেই মূল্য কমাইয়া দেওয়া; (২৭) ( কর্মকরদিগের ) কর্মদিনের সংখ্যা বাড়াইয়া লেখা; (২৮) অথবা, সেই দিনসংখ্যা কমাইয়া লেখা; (२२) मःवरमदात माम-मःथा। गर्गनाम देवसमा विधान कतिमा, ल्या ( रम्मन, যে বৎসর অধিমাসরহিত তাহাকেও অধিমাসযুক্ত বলিয়া ধরিয়া লওয়া); (৩০) অথবা, মাদের দিন-সংখ্যার গণনায় বৈষম্য বিধান করিয়া লেখা ( যেমন, যে মাস কম দিনে পূর্ণ হইবে না, তাহাকেও কম দিনবিশিষ্ট বলিয়া ধরিয়া লওয়া); (৩১) ( কর্মক্ষেত্রে ) উপস্থিত কর্মকরগণের সংখ্যায় বৈষম্য ঘটান ( অর্থাৎ কর্মকর সংখ্যা বেশী ধরিয়া, অধিক ধৃত নামের জন্ম তাহাদের উক্ত বেতন নিজে অপহরণ করা ); (৩২) এক আয়ম্থ হইতে উৎপন্ন ধনাদি অন্ত আয়ম্থ হইতে উৎপন্ন বলিয়া বৈষম্য ঘটান; (৩৩) ব্রাহ্মণাদি ধার্মিক জনের প্রতি (রাজাজ্ঞায় প্রদেয় ধন হইতে কিঞ্চিৎ অপহরণ করা; (৩৪) কোন কার্য্যের সম্পাদনবিষয়ে বৈষম্য ঘটান (ষেমন, অন্ত ব্রান্ধণেরাই কেবল নদী প্রস্তৃতি বিনামূল্যে পার হইয়াছে এইরূপ মিথ্যা কথনঘারা তরদেয় ধন স্বয়ং অপহরণ করা); (৩৫) পিগু বা একসঙ্গে আদায়যোগ্য ধনাদিসম্বন্ধে (উৎকোচাদি লইয়া কাছাকেও বাদ দিয়া ধন গ্রহণরূপ) বৈষম্য ঘটান; (৩৬) ব্রাহ্মণাদি বর্ণ-বিষয়ক আয় সম্বন্ধে, অথবা, (স্বর্ণাদির) বর্ণসম্বন্ধে, বৈষম্য উৎপাদন করা; (৩৭) (দ্রব্যের) নিয়তমূল্যে বৈষম্য ঘটাইয়া (লাভের অংশ স্বয়ং গ্রহণরূপ) অপহরণ; (৩৮) মানের অর্থাৎ তুলাদগুর্দির বৈষম্য ঘটান (ষেমন, ক্ম মান দিয়া দ্রব্য মাপিয়া দেওয়া ও বেশী মান দিয়া দ্রব্য মাপিয়া লওয়া ইত্যাদি); (৩৯) ওজন করাইতে বৈষম্য উৎপাদন করা ও (৪০) ভাজন বা পাত্র সম্বন্ধীয় বৈষম্য ঘটান (ষেমন, উপথ্কু পাত্রসহ্যোগে ঘতাদি দ্রব্য না মাপিয়া ছোট পাত্রহারা তাহা মাপা)।

্যুক্তকর্তৃক রাজধন) অপহরণের এই (চল্লিশ প্রকার) উপায়গুলি নির্দ্ধারিত হইল।

উক্ত হরণোপায়সম্বন্ধে কোন যুক্তের উপর (হরণেন) সন্দেহ উপস্থিত হইলে, (রাজা) **উপযুক্ত** অর্থাৎ সেই যুক্তের উপরিস্থ অধিকারী, **নিধায়ক** অর্থাৎ রাজধনরক্ষক, নিবন্ধক ( নিবন্ধপুস্তকের লেথক ), প্রতিগ্রহীতা, দায়ক (করাদির দানকারী), দাপক (যে রাজপুরুষ করাদির আদায়কারী), মন্ত্রী (রাজার তৎতদ্বিভাগীয় ধীসচিব) ও সেই মন্ত্রীর কর্মকরদিগের প্রত্যেককে (ভিন্ন ভাবে) জিজ্ঞাসাবাদ করিবেন (অর্থাৎ অপরাধী যুক্তের দোষসম্বন্ধে তদন্ত বসাইবেন)। তাঁহারা অর্থাৎ এই সাক্ষীরা মিথ্যা কথা তাঁহ্।দিগের প্রতি ( অভিবৃক্ত ) যুক্তৈর বা অধিকারীর সমান দণ্ড বিহিত ইহবে। এবং (রাজা) দব এলাকায় এইরূপ ঘোষণা করাইবেন—''অন্ক অধিকারী পুরুষদ্বারা যাহারা উপহত বা পীড়িত হইয়াছে, তাহারা (উপস্থিত হইয়া) আবেদন করুক।" যে ব্যক্তি (যুক্তকর্ত্ত্ব অপহরণের) প্রজ্ঞাপন করিবে, তাহাকে, যতথানি ধনাদি তাহার উপহত হইয়াছে তত্থানি ধনাদি ( অপরাধী যুক্ত হইতে লইয়া) দেওয়াইতে হইবে। কোন যুক্তের বিরুদ্ধে অনেক অভিযোগ উপস্থাপিত হইলে, সে যদি সে-সব অস্বীকার করে এবং ইহার একটি মাত্র অভিযোগ (সাক্ষিপ্রভৃতি দারা) প্রমাণিত হওয়ায় সেই যুক্ত পরাজিত হয়, তবে তাহাকে দব অভিযোগেই দোষী দাব্যস্ত করা হইবে; একং তচ্জন্ত তাহাকে সব অভিযোগের জ্ঞাই যথাভাগ দণ্ড দিতে হইবে। অনেক অভিযোগের নির্ণয়ে বৈষম্য উপস্থিত হইলে ( অর্থাৎ কতক অভিযোগ সত্য বলিয়া স্বীকৃত হইলে, আর কতক অভিযোগ অস্ত্য বলিয়া অস্বীকৃত হইলে ), অপরাধীকে সেই বিপ্রতিপন্ন সব অভিযোগসম্বন্ধ সাক্ষিপ্রশাদির অবসর দিতে হইবে।

(প্রজ্ঞাপিত) অর্থাপহরণ বড় বড় রকমের হইলে, যদি (সাক্ষিপ্রভৃতি দারা) অল্প ধনসম্বন্ধীয় অপহরণও যুক্তের বিরুদ্ধে প্রমাণিত হয়, তাহা হইলে তাহাকে সর্বপ্রকার অপহরণের অপরাধে দোধী সাব্যস্ত করা হইবে, এবং তক্ষ্ম্য তাহাকে সব অপরাধের অন্তর্মপ যথাভাগ দণ্ড বহন করিতে হইবে।

যুক্তদারা সংঘটিত প্রতিঘাত বা অর্থাপহরণ সম্বন্ধ কোন সূচক (গুপ্তভাবে সংবাদের স্ট্রানারী) ক্লতাব্দ্ব বা (প্রাড্বিবাক কর্ত্ত্ক) ক্লতাহ্বান হইয়া, যদি সে স্টিত অর্থ বা বিষয় প্রমাণিত করিয়া দিতে পারে, তাহা হইলে সে (অপহ্বত ধনের) ষষ্ঠাংশ লাভ করিবে, এবং যদি সেই স্ট্রনাদায়ক ব্যক্তি (সেই যুক্তের) ভূত্য হয়, তাহা হইলে সে দাদশাংশ পাইবে। অনেক প্রকার দ্রব্য সম্বন্ধে অভিযোগ হইলেও, যদি (স্ট্রক) অল্প দ্রব্য সম্বন্ধে অভিযোগ হইলেও, যদি (স্ট্রক) অল্প দ্রব্য সম্বন্ধে অভিযোগ প্রমাণিত করিতে পারে, তাহা হইলে প্রমাণিত অংশ হইতেও সে (উক্তর্নপ ষষ্ঠ) ভাগ লাভ করিবে। স্ট্রক অভিযোগ প্রমাণিত করিতে না পারিলে, তাহাকে শারীরিক দণ্ড, অথবা, নগদ অর্থদণ্ড ভোগ করিতে হইবে, এবং (সরকার-পক্ষ হইতে) সে কথনও কোন অন্থগ্রহ পাইবে না।

(স্চকের স্থচিত) অভিযোগ সিদ্ধ হইয়। গেলে, (স্থচক) সেই বাদ বা মোকদ্দমার বিরাম ঘটাইতে পারে এবং নিজেকে সেই অভিযোগের বন্ধন হইতে মুক্ত করিয়া লইতে পারে [ভট্টস্বামীর টীকার মতে "স্থচিত অর্থের সংসিদ্ধি ঘটিলে, স্থচকের (স্থচকত্বরূপ) অপবাদ অন্তের উপর চাপাইয়া দিতে হইবে এবং স্প্রকল তথন নিজে সেথানে উপস্থিত ছিল না—এইরূপ রটাইয়া দিবে"—এইরূপ ব্যাখ্যাও হইতে পারে]। অভিযোগের বিষয়ীভূত যুক্তের উপজাপে (অর্থাৎ উৎকোচাদি গ্রহণের দোষে) পতিত হইয়া (মিথ্যা বচনে প্রবৃত্ত হইলে) স্থচককে বধদও প্রাপ্ত হইতে হইবে ॥ ১॥

কোটিলীয়ে অর্থশান্তে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে যুক্তবারা অপহৃত সমৃদয়ের প্রত্যানয়ন-নামক অষ্টম অধ্যায় ( আদি হইতে ২৯ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### নবম অধ্যায়

## ২ ৭শ প্রকরণ—উপযুক্তগণের পরীক্ষা

(এই প্রকরণে যুক্ত-নামক অধিকারী দিগের উদ্ধাতন অধিকারী যাঁহারা, তাঁহারাই উপযুক্ত-নামে কথিত এবং তাঁহারাই সম্ভবতঃ পরবর্ত্তিকালের গুপ্তসাম্রাজ্যের যুগে উপরিক-নামে পরিচিত হইতেন।) (প্রথম অধিকরণের ৫ম প্রকরণে উক্ত) অমাত্যসম্পদ্যুক্ত সর্ব্ব প্রকার অধ্যক্ষদিগকে (যুক্ত ও উপযুক্ত-নামক অধিকারীদিগকে) তাঁহাদের কর্মশক্তি বুঝিয়া সর্ব্ব কর্মে নিযুক্ত করা উচিত। মান্তবের চিক্ত স্কভাবতঃ অব্যবস্থিত হইয়া পড়ে, এই জন্ম (রাজা) অধ্যক্ষগণকে তৎতৎকার্য্যে নিযুক্ত করিয়া তাঁহাদের দোষগবেষণারূপ পরীক্ষা করাইবেন। কারণ, কার্য্যে নিযুক্ত হইলে মান্তয় (স্বভাবতঃ স্থশীল হইলেও) বিকারগ্রন্ত হইয়া পড়ে, তাই মান্তবক অব্যের সমান ধর্মবিশিষ্ট বলা যায় (অর্থাৎ রথবহনাদি কার্য্যে নিযুক্ত হইবার পূর্কে শান্ত বলিয়া প্রতিভাত অস্থগণ তৎকার্য্যে নিয়েজিত হইলে কথনও যেমন বিকারপ্রাপ্ত হয়, মান্তবও তেমনি কার্য্যে নিযুক্ত হইলে বিকারপ্রাপ্ত হয়, মান্তবও তেমনি কার্য্যে নিযুক্ত হইলে বিকারপ্রাপ্ত হয়—স্বতরাং তাহাদের চরিত্রের পরীক্ষা বাঞ্থনীয়)।

সেই কারণে, (রাজা) এই অধ্যক্ষগণসম্বন্ধে, কর্ত্তা (অধিকারী প্রুক্ষ), করণ (নিম্নবর্ত্ত্রী কর্মকরগণ, অথবা কার্য্যের অমুষ্ঠানোপায়), দেশ, কাল, কার্য্য, প্রক্রেপ (কার্য্যের জন্ম ব্যবস্থিত মূল্ধনাদি) ও উদয় (ধনলাভ)—এই সব বিষয়ে সব তথ্য জানিবেন। তাঁহারা (অধ্যক্ষেরা) প্রভুর আজ্ঞামুসারে (সর্ব্বদা) অধ্যহত হেইয়া (অর্থাৎ পরক্ষার একসঙ্গে জটলা না করিয়া) ও পরক্ষার অবিরোধী থাকিয়া কার্য্য করিবেন; কারণ, তাঁহারা পরক্ষার সংহত বা মিলিত হইলে (রাজার কর্মফল) ভক্ষণ (অর্থাৎ অপহরণ) করিতে পারেন, এবং পরক্ষার বিগ্রহ বা বিরোধ করিলে (কর্মফল) নই করিতে পারেন। আপদের প্রতীকার ব্যতীত অন্য কোন কাজই তাঁহারা স্বামী বা রাজাকে না জানাইয়া আরম্ভ করিবেন না। কোনও কার্য্যে তাঁহাদের (অধ্যক্ষদিগের) কোনরূপ প্রমাদ ঘটিলে, (রাজা) তাঁহাদের উপর অর্থদণ্ডের ব্যবস্থা করিবেন, এবং এই দণ্ড তাঁহাদিরে দৈনিক বেতনের ও কর্মনাশজনিত ক্ষতির বিগুল পরিমাণ হইবে (মতান্তরে, "তাঁহাদের দৈনিক বেতনের জন্ম যাহা থরচ হয়, তাহার বিগুণ"—এইরূপ ব্যাথ্যাও প্রদন্ত হইয়া থাকে)।

এই অধ্যক্ষণণমধ্যে যিনি রাজার আদিষ্টরপ রাজকার্য্য সম্পাদন করিবেন, অথবা, তাহা হইতেও অধিকতর বিশেষভাবে তাহা সম্পাদন করিবেন, তিনি রাজার নিকট হইতে পদোন্নতি ও সৎকার লাভ করিবেন।

প্রাচীন আচার্য্যদিগের (অথবা, কোটিল্যের নিজ গুরুর) মতে, যে উপযুক্ত (বা অধ্যক্ষ) অল্প ধন উপার্জ্জন করিয়া বেশী ব্যয় করেন, তিনি (রাজার্থ) ভক্ষণ করেন (অর্থাৎ তিনি রাজা ও প্রজার অর্থে জীবিকা চালান) এবং যিনি ইহার বিপরীতভাবে চলেন অর্থাৎ বেশী ধন উপার্জ্জন করিয়া অল্প ব্যয় করেন, কিংবা আয়ের অন্তর্ক্ষণ ব্যয় করেন তিনি (রাজার্থ) ভক্ষণ করেন না। কিন্তু, কোটিলা স্বয়ং এই মত পোষণ করেন না,—তিনি মনে করেন যে, গুপ্তচরদ্বারাই (উপযুক্তদিগের) অর্থবিষয়ক তৃষ্টতা ও অতৃষ্টতা জানিয়া লইতে হইবে।

যে উপযুক্ত রাজার সমুদয় বা ধনোৎপত্তির ন্যুনতা বিধান করেন, তিনি রাজার্থ ভক্ষণ করেন। তিনি যদি অজ্ঞান প্রভৃতি দোষে এইক্ষপ ধনহানি ঘটান, তাহা হইলে (রাজা) তাঁহাকে তাঁহার অপরাধাত্মরূপ সেই ক্ষতি ষ্থাগুণ (অর্থাৎ দ্বিগুণ, ত্রিগুণ বা অধিকগুণ) পূরণ করিয়া দিতে বাধ্য করাইবেন।

যে **উপযুক্ত** (প্রজা হইতে নিয়ত আয়ের অপেক্ষায়) দ্বিগুণ আয় উত্থাপন করেন, তিনি নিশ্চিতই জনপদ বা জনপদবাদীদিগকে ভক্ষণ করেন (অর্থাৎ অত্যধিক আয় উদ্ভাবন করিয়া প্রজাদিগের পীড়ন করেন)। তিনি যদি উদ্ভাবিত সমস্ত রাজার্থ (রাজ-সরকারে) আনিয়া দেন, তাহা হইলে তাঁহার অপরাধ অল্প ভাবিয়া তাঁহাকে (ভবিশ্বতে প্রজাপীড়নপূর্বক মেন বেনী অর্থ আদায় না করা হয়, এই বিলিয়া) প্রতিষেধ করিয়া দেওয়া উচিত; কিন্তু, অপরাধ গুরুতর হইলে, তাঁহার উপর তদ্মুরূপ দণ্ড বিধান করিতে হইবে।

ষে উপযুক্ত ব্যয়-জন্ম নিয়ত অর্থ, (ব্যয় না করিয়া) আয়ে পরিণত করিয়া দেখান, তিনি রাজপুরুষ বা কর্মকরদিগকে ও রাজকার্য্য ভক্ষণ করেন (অর্থাৎ কর্ম না করাইয়া লোকের ও রাজকার্য্যের নাশ বিধান করেন)। কোন কার্য্যের জন্ম কর্ম-দিবদের সংখ্যা, সেই কার্য্যের জন্ম প্রয়োজনীয় স্রব্যের মূল্য এবং কর্মকর পুরুষদিগকে দেয় বেতন তিনি যদি অপহরণ করেন, তাহা হইলে তাঁহাকে যথাপরাধ দণ্ড ভোগ করিতে হইবে (অর্থাৎ কর্ম নাশিত হওয়ায় রাজার বাহা কৃতি হইবে তাঁহাকে তাহা পূরণ করিয়া দিতে হইবে)।

সেই কারণে, যে উপযুক্ত বা অধ্যক্ষ রাজার যে অধিকরণে (কার্যবিভাগে

শাসনকার্য্যে নিযুক্ত আছেন, তিনি সেই ) বিভাগের কর্ম্মের যথাস্থিতি, ইহার আয় ও ব্যয়, এই সব বিষয় বিস্তৃত ও সংক্ষিপ্তভাবে ( রাজাকে ) নিবেদন করিবেন।

বে উপযুক্ত বা অধ্যক্ষেরা **মূলহর, তাদান্তিক ও কদর্য্য** তাঁহাদিগকে রাজা (মূলহরণাদিরপ) কার্য্য করিতে নিষেধ করিবেন (অথবা, তাঁহাদিগকে স্থনিয়োগ হইতে পদত্যাগ করাইবেন)।

ষিনি পিছুপৈতামহ সম্পত্তি অগ্রায়পূর্বক ভক্ষণ করেন তাঁহাকে মূল্ছর বলা হয়। যিনি যাহাই প্রত্যহ লাভ করেন তাহাই জক্ষণ করিয়া ফেলেন, তাঁহাকে জালাজিক বলা হয়। (আর), যিনি নিজের ভৃত্যদিগকে ও নিজকে পীড়িত করিয়া অর্থ বাড়ান, তাঁহাকে কদর্য্য বলা হয়। এই প্রকার উপযুক্ত যদি (বন্ধ্বান্ধবপ্রভৃতি) পক্ষবলে বলীয়ান্ থাকেন, তাহা হইলে (তাহাদিগের কোপনিবেধের জন্য) তাঁহার উপর অর্থদণ্ড প্রয়োগ করিয়া, তাঁহার ধন প্রহণ করা উচিত নহে। ইহার বিপর্যায়ে (অর্থাৎ তাঁহার নিজপক্ষীয় বন্ধ্বান্ধব না থাকিলে) তাঁহার সুর্বান্ধ কাড়িয়া লওয়া উচিত।

বে কদর্য্য (উপযুক্ত ) মহান্ অর্থলাভে অবস্থিত থাকিয়া, সেই অর্থের সন্নিধান, অবনিধান বা অবস্থাবণ ঘটান, অর্থাৎ তিনি যদি সেই অর্থ নিজ বাড়ীতে ভূমিগর্জে বা অক্তম্থানে গৃঢ়ভাবে স্থাপন করিয়া রাথেন, অথবা, পৌরজানপদদিগের নিকট রক্ষার্থ তাহা (গোপনে) রাখিয়া দেন, অথবা শক্রর দেশে (কাহারও নিকট) পাঠাইয়া সেথানে জমা করিয়া রাথেন, তাহা হইলে সত্তি-নামক গৃঢ়পুরুষ, তাঁহার (সেই কদর্য্য উপযুক্তের) মন্ত্রী (মন্ত্রণাদাতা), মিত্ত, ভূত্য ও বান্ধবপক্ষ ও তাঁহার দ্রব্যসমূহের আগমন (আয়) ও গমন (ব্যয়)-সম্বন্ধে সব বিষয় উপলব্ধি করিবে।

ষে কদর্যন্থ (উপযুক্ত ) রাজার শক্রর দেশে ( দ্রব্যাদির ) সঞ্চারণ করিবেন, সত্রী ( সূত্রপুক্ষ ) তাঁহার সহিত মিল দিয়া ( অর্থাৎ তাঁহার মিত্র বা ভৃত্য সাজিয়া ) তাঁহার অভিসদ্ধির গুপুরহস্ত জানিয়া লইবে। তাঁহার অভিসদ্ধি এইভাবে জানা গেলে পর, ( রাজা ) শক্রদেশ হইতে প্রেরিত কোন শাসন বা লেখ্য প্রাপ্তির ছল করিয়া তাঁহাকে বধ করাইবেন ( অর্থাৎ কৃটভাবে এমন লেখ্য প্রস্তুত করান হইবে, যেন শক্ররাজা সেই কদর্য্যকে লিখিতেছেন যে, তাঁহার প্রেরিত ধন তিনি পাইয়াছেন এবং অবশিষ্ট কিন্তি তিনি যেন শীঘ্র পাঠাইয়া দেন —এবং সেই লেখ্য রাজা তাঁহার নিজ হস্তগত করিয়া প্রখ্যাপন করিবেন )।

সেই জ্বন্ত, (সমস্ত বিভাগের) অধ্যক্ষণণ (রাজার ধনসম্বন্ধ) কার্য্যকলাপ'

श्र

সংখ্যায়ক (গাণনিক বা আয়-ব্যয়ের হিসাব-রক্ষক), লেখক, রূপদর্শক (ধাতৃময় মূলার পরীক্ষক), নীবীগ্রাছক (আয়-ব্যয়ের অবশিষ্ট নীবীগ্রহণে অধিকৃত পুরুষ) ও উত্তরাধ্যক্ষ (অর্থাৎ রাজকর্মচারীদিগের কার্য্যনিরীক্ষণকারী প্রধান অধিকারী)—এই সমস্ত কর্মচারীর সহিত একত্রে মিলিত হইয়া সম্পাদন করিবেন। উক্ত উত্তরাধ্যক্ষগণ, (অত্যন্ত তীক্ষ বৃদ্ধিসম্পন্ন হইয়াও বৃদ্ধ হওয়ায়) হন্তী, অশ্ব ও রথে আরোহণ করিয়া স্ব স্ব কার্য্য সম্পাদন করিবেন। তাঁহাদের (উত্তরাধ্যক্ষগণের) শিয়েরা কর্মকোশল ও শোচযুক্ত হইয়া উক্ত সংখ্যায়ক প্রভৃতির (কার্যপ্রবৃত্তি পরীক্ষার জন্য) গুপ্তচরের কার্য্য করিবে।

সর্ব্ধ প্রকার অধিকরণ ( যুক্ত ও উপযুক্তগণের কার্য্যন্থান ) রাজা এমনভাবে স্থাপন করিবেন থেন ইহাতে অনেক মুখ্য বা প্রধান কর্মচারী থাকিবেন ( অর্থাৎ তাঁহাদের সংখ্যা বেশী থাকিলে পরস্পরের ভয়ে রাজার্থের অপহরণ সম্ভবপর হইবে না ) এবং ইহাতে কর্মচারীরা নিত্য বা চিরস্থিত থাকিবে না ( অর্থাৎ তাহারা যেন এক কার্য্য হইতে কার্য্যান্তরে বদলী হইতে পারে, কারণ, বেশী দিন এক কার্য্য নিযুক্ত থাকিলে তাহারা নিজ নিজ দোষ লুকাইয়া চলিবার উপায় উদ্ভাবন করিতে পারিবে এবং সেইজন্ত রাজার্থ অপহত হইবার সম্ভাবনা থাকিবে )।

কোন ব্যক্তির জিহ্বাতলে স্থিত মধু বা বিষ যেমন (অল্প হইলেও) সে ইহার আস্বাদন করিবে না বলিলেও আস্বাদন না করিয়া থাকিতে পারে না, তেমন রাজার অর্থ-বিষয়ে ব্যাপৃত কর্মচারীও স্বল্ল হইলেও রাজার্থ আস্বাদন (ভোগ) না করিয়া থাকিতে পারে না॥ ১॥

মৎস্থাসকল জলের মধ্যে চলাচল করার সময়ে জল পান কব্লিলেও প্রথমন তাহা অন্ত্যের জানা সম্ভবপর নয়, তেমন রাজার অর্থকার্যব্র্যাপারে নিযুক্ত যুক্তগণও (কার্য্যকালে) ধন অপহরণ করিলে তাহা (রাজার পক্ষেও) জানা সম্ভবপর নহে॥২॥

এমন কি, আকাশে উজ্ঞীয়মান পক্ষিসমূহের গতিও জানা যাইতে পারে, তথাপি কার্য, সম্পাদন করার সময়ে গুপ্তভাবে কার্য্যকারী যুক্তগণের গতি জানা যায় না ( অর্থাৎ তাহাদের অপহরণ তুর্কোধ্য হইয়া পড়ে ) ॥ ৩॥

( অতএব ) রাজা, যে সব কর্মচারীরা অপহৃত ধনদারা সমৃদ্ধ হইয়াছে তাহাদিগের নিকট হইতে সেই ধন কাড়িয়া লইবেন এবং তাহাদিগকে কর্মসম্বন্ধে বিপ্রান্ত করিবেন ( অর্থাৎ উচ্চ কর্ম হইতে নীচ কর্মে নিযুক্ত করিবেন ), যাহাতে

তাহারা ( আর ) রাজার্থ ভক্ষণ করিতে না পারে এবং ভক্ষিত অর্থও উগড়াইয়া দিতে পারে॥ ৪॥

(যে-সব অর্থচর কর্মচারীরা) রাজার্থ ভক্ষণ (অর্থাৎ অপহরণ) করে না, বরং গ্রায়তঃ ইহার বৃদ্ধি করিয়া থাকে, রাজার প্রিয় ও হিতকার্য্যে রত, সেই সব কর্মচারীদিগকে (তিনি) নিজ্যাধিকারে (অর্থাৎ স্থির অধিকারে) নিযুক্ত রাথিবেন॥ ৫॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে উপযুক্তপরীক্ষা-নামক নবম অধ্যায় ( আদি হইতে ৩০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## দশম অধ্যায়

## ২৮শ প্রকরণ—শাসন বা রাজলেখের বিধান

পত্রার্পিত বিষয়ের নামই শাসন বলিয়া (আচার্য্যগণ) বলিয়া থাকেন। রাজারা (কার্যানির্কাহের জন্ম শাসন বা লেখ্যের উপরই নির্ভর করিয়া থাকেন) কারণ, ( ষাভ্গুণ্যের মধ্যে বিশেষতঃ ) সদ্ধি ও বিগ্রহ্ বিষয়ক সব কার্য্যেই শাসনমূলক বিবেচিত হয় (অর্থাৎ সদ্ধি ও বিগ্রহাদি কার্য্য লেখ্য দারাই সম্পাদিত হইয়া থাকে)।

এই কারণে, এমন ব্যক্তি (শাসনের) লেখক (নিযুক্ত) হইবেন যিনি অমাত্যগুণসম্পদ্বিশিষ্ট, যিনি সর্ব্ব প্রকার (বর্ণ ও আশ্রমের) আচারবিষয়ে অভিজ্ঞ, যিনি শীঘ্র বাকারচনায় নিপুণ, যিনি স্বন্দর হস্তাক্ষর দারা লিপি লিখিতে জানেন, এবং দিনি (স্বন্দাইভাবে) লেখ-পঠনেও সমর্থ। এবস্তৃত লেখক রাজালারা উক্ত সন্দেশ (বাচিক বার্জা) অব্যগ্রচিত্তে শ্রবণ করিয়া এমনভাবে লেখ রচনা করিবেন যেন লেখের অর্থ নিশ্চিত বা স্থবিবেচিত বলিয়া বুঝা যায়, এবং সেই লেখ যদি কোন রাজার সম্বন্ধে রচিত হয়, তাহা হইলে তাহাতে সেই রাজার দেশ, ঐশ্বর্যা, বংশ ও নামের সসম্মান নিদ্দেশ থাকিবে, এবং ইহা অনীশ্বর বা অপ্রভু (অমাত্যাদি-) সম্বন্ধে রচিত হইয়া থাকিলে, তাহাতে তাঁহার দেশ ও নামের উপচার বা সম্মানস্থচক নিদ্দেশ থাকিবে।

(লেথককে) রাজকার্য্যবিষয়ে যাঁহার সম্বন্ধে লেখ রচনা করিতে হইবে উাঁহার জাতি (ব্রাহ্মণভাদি), কুল (বংশ), স্থান (সান্ধিবিগ্রহিকাদি অধিকার), বরস, শাস্ত্রজ্ঞান, কর্ম ( বৃত্তি ), ঋদ্ধি (ধনসম্পত্তি ), শীল (সদাচার ), দেশ (নিবাস-স্থান ), কাল ও বিবাহসম্বন্ধ উত্তমরূপে পর্য্যালোচনা করিয়া, এবং সেই পুরুষের (উত্তম, মধ্যম বা অধম পদের ) অহুরূপভাবে, সেই লেখ রচনা করিতে হইবে॥ ১॥

প্রত্যেক লেথ বা শাসনের ছয়টি গুণ থাকা আবশ্যক, যথা—(১) অর্থক্রম, (২) সম্বন্ধ, (৩) পরিপূর্ণতা, (৪) মাধুর্যা, (৫) উদার্য্য ও (৬) স্পর্যন্ত ।

তন্মধ্যে, (১) **অর্থক্রেম**রূপ লেখগুণের লক্ষণ এইরূপ:—যথার্যভাবে বিষয়ের ক্রমরক্ষা, অর্থাৎ প্রধান অর্থের বা বিষয়ের সন্নিবেশ সর্ব্ব প্রথমে করা (অর্থাৎ তৎপর অপ্রধান বিষয়ের নিরূপণ)।

প্রস্তুত বা প্রকৃত বিষয়ের উপরোধ বা বাধা না ঘটে, এমনভাবে প্রদর্কী বিষয়ের নিরূপণ লেখের শেষপর্যন্ত চালাইয়া যাওয়ার নাম (২) সম্বন্ধ।

(৩) পরিপূর্ণভাশ্বন এই ভাবে সিদ্ধ হয় :— (লেখরচনায়) অর্গ, পদ ও অক্ষরসমূহের ন্যনতা বা অতি রিক্ততা না থাকা; হেতৃ (উপপত্তি), উদাহরণ (শাস্বীয় সামঞ্জন্তাদির কথন) ও দন্তান্ত (লোকিক নিদর্শন) দ্বারা বিষয়ের নিকপণ; এবং পদব্যবহারে অশিথিলতা অর্থাৎ যেথানে একটি বাক্য প্রয়োগ করা উচিত, সেথানে কেবলমাত্র একটি পদ্দারা অর্থ প্রকাশের চেষ্টা না করা।

যাহাতে স্থগম ও স্থন্দর অর্থ প্রতিপাদিত হইতে পারে এমন শব্দপ্রয়োগের নাম (৪) মাধ্র্যা। অগ্রামা (গ্রামাতাদোষ-বিবর্জ্জিত) শব্দের প্রয়োগের নাম (৫) প্রদার্মা। স্থপ্রসিদ্ধ শব্দের প্রয়োগের নাম (৬) স্পষ্ট্রপ্ত।

অকারাদি বর্ণের সংখ্যা ত্রিষষ্টি (৬৩)—অর্থাৎ হুম্ব, দীর্ঘ ও প্লুত ভেদে স্বর-বর্ণের সংখ্যা ২২, ব্যঞ্জনবর্ণের মধ্যে স্পর্শবর্ণের ২৫, অন্তঃস্থবর্ণের ৪, অন্তন্ত্রীর, বিসর্গ, জিহ্বাম্লীয় ও উপগ্নানীয়ের ৪, উন্মবর্ণের ৪ ও যমাস্করের ৪,— মোট ৬৩)।

বর্ণসংঘাত বা বর্ণের সমবায়ের নাম পাদ। এই পদ চারি প্রকার যথা,—নাম.
আথ্যাত, উপদর্গ ও নিপাত। তর্মধ্যে যে পদ সন্তবাচী অর্থাৎ জাতি, গুণ ও
ক্রবাবাচক, তাহার নাম নাম। যে পদ ক্রিয়াবাচক এবং যাহা (প্রীপুংসাদি-)
লিঙ্গবিশেষশৃন্ত, তাহার নাম আখ্যাত। যে 'প্র'-প্রভৃতি শব্দ ক্রিয়ার বিশেষ
অর্থ জোতনা করে, তাহাদের নাম উপসর্গ। 'চ'-প্রভৃতি অব্যয় শব্দের নাম
নিপাত। যে পদসমূহদ্বারা পূর্ণ বা নিরাকাজ্ক অর্থ বৃদ্ধিতে প্রতিষ্ঠিত হয় সেই
পদসমূহের নাম বাক্য। পরবর্ত্তী পদের অর্থ অভ্সরণ করিয়া, কমপক্ষে একটি

ও বেশীপক্ষে তিনটি পদ লইয়া বর্গ (সমাস; মতান্তরে, বিরাম বা অবসান) বিহিত হইতে পারে। কোন লেখের পরিসমাপ্তি স্চনার জন্ম, 'ইতি'-শব্দ ( অর্থাৎ বদি লেখে আর কিছু বলিবার অবশিষ্ট না থাকে) থাকিবে, অথবা, ( অর্থাৎ কিছু আরও গোপনীয় বিষয় বলিবার থাকিলে ) 'ইহার ( অর্থাৎ লেখ- হরের ) মুখ হইতে অবশিষ্টাংশ শ্রোতবা'—এইরূপ উক্তি থাকিবে।

নিম্নলিখিত ত্রয়োদশ প্রকারে লেখজাত বিষয় প্রবর্ত্তিত হইতে পারে, যথা—
(১) নিন্দা, (২) প্রশংসা, (৩) পৃচ্ছা, (৪) আখ্যান, (৫) অর্থনা, (৬) প্রত্যাখ্যান,
(৭) উপালম্ভ, (৮) প্রতিবেধ, (১) চোদনা, (১০) সাম্ব, (১১) অভ্যবপত্তি,
(১২) ভর্ৎসনা, ও (১৩) অফুনয়॥ ২-৩॥

তন্মধ্যে, কাহারও বংশ, শরীর ও কার্য্যসম্বন্ধে দোষের কথা বলার নাম **নিন্দা** এবং এই তিন বিষয়ে গুণের কথা বলার নাম প্রা**শংসা**। "এই কার্য্য কিরপে করা যায়"—এইরপ জিজ্ঞাসার নাম **পুচ্ছা**। "ইহা এইরপে করিতে হইবে"—এইরপ উত্তর দেওয়ার নাম **আখ্যান**। "ইহা ( অর্থাৎ কোশদণ্ডাদি ) দেও"—এইরপ যাচনার নাম **অর্থনা**। (যাচনাকারীকে) "ইহা দিব না" এ ইরূপ নিষেধ করার নাম প্রান্ত্যাখ্যান। "এই কার্য্য আপনার অফরুপ ( যোগ্য ) কার্য্য নহে"—এইরূপ বলার নাম **উপালম্ভ**। "এইরূপ কার্য্য করিও না"-এইরপ উপদেশ করার নাম প্রা**তিষেধ।** "ইহা করা চাই"-এইরপ প্রেরণার নাম ক্রোদনা। "আমিও যে, তুমিও সে, যে দ্রব্য আমার, সে দ্রব্য তোমার"—এইরপে অমুকূলিত করার নাম **সান্ত্র**। কাহারও ব্যসন বা বিপত্তির সময়ে সাহায্য প্রদানের নাম **অভ্যবপত্তি**। কাহারও আয়তি বা ভবিশ্যৎকাল দো যক্ত বলিয়া ( অর্থাৎ ভবিষ্যৎ ভাল হইবে না বলিয়া ) ভয় প্রদর্শন করার নাম ভৎ সনা। অমুনয় বা অমুরোধ তিন প্রকারের হইতে পারে, যথা— (১) অর্থকরণনিমিত্তক ( অর্থাৎ যে অন্তনয় অবশ্রকরণীয় কার্য্য-সম্পাদনের নিমিত্ত করা হয়), (২) অতিক্রমনিমিত্তক (অর্থাৎ যে অফুনয় কাহারও নিজের মতামুসারে কার্যা না করায়, তদীয় কোপপ্রশমনার্থ করা হয়) ও (৩) পুরুষাদিব্যসননিমিত্তক ( অর্থাৎ যে অঞ্চনয় কাহারও ভূত্যাদির ব্যসন বা বিপত্তির অন্থরোধে করা হয় )।

শাসন বা রাজলেথ আট প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) প্রজ্ঞাপনা, (২) আজ্ঞা, (৩) পরিদান, (৪) পরীহার, (৫) নিস্ষ্টি, (৬) প্রাবৃত্তিক, (৭) প্রতিলেখ ও (৮) সর্বত্রেগ ॥ ৪ ॥ এই প্রক্তাপনা-নামক শাসন বিবিধ প্রকার বলিয়া উপদিষ্ট হয়। ইহা এক প্রকার (দৃষ্টদোষ অমাত্যাদির প্রতি) আবেদন, যথা—"এই (রাজাহ্চর) দ্বারা এইরূপভাবে (রাজা) বিজ্ঞাপিত হইয়াছেন" ('এই মহামাত্র একটি নিধি প্রাপ্ত হইয়া তাহা আত্মসাৎ করিয়াছেন' ইত্যাদি); এবং (রাজাও) এইরূপ বলিয়াছেন—"যদি এই বৃত্তান্ত সত্য হইয়া থাকে, তাহা হইলে ইহা (নিধিগত ধনাদি) ফিরাইয়া দিউন"। "আপনার দ্বারা ক্রিয়মাণ কল্যাণ-কর্মের কথা (রাজান্তিকে) বলা হইয়াছে" ('বরকার'-স্থলে 'পরকার' পাঠও কোন কোন পুস্তকে দৃষ্ট হয়—পরকার = শক্রুর কার্য্য, এইরূপ ব্যাখ্যা হইতে পারে)॥ ৫॥

যে লেথপত্রে কাহারও প্রতি, বিশেষতঃ রাজভৃত্যদিগের প্রতি, রাজার নিগ্রহ বা অন্তগ্রহরূপ আজ্ঞা নিবিষ্ট আছে, তাহাকে **আ**জ্ঞা বলা হয়॥ ৬॥

যে লেখেতে ( সংগাধ্য ব্যক্তির ) যথোচিত গুণদ্বারা সংযুক্ত পূজা বা সংকার প্রদর্শিত হয়, তাহার নাম পরিদান লেখ। ইহা তুই প্রকারের হইতে পারে— ( সংগাধ্য ব্যক্তির ) কোন ( বন্ধুমরণাদি-জনিত ) মনোব্যথা উপস্থিত হইলে আশ্বাস প্রদানরূপ এবং ( অন্ত কোনও ঘটনাতে ) পরিরক্ষণরূপ দয়াভাব প্রকাশ। এইরূপ লেখদ্বারা সংগাধ্য ব্যক্তিকে রাজার অন্তক্ল করিয়া রাখা ( অর্থাৎ তাঁহার উপগ্রহ ) সম্ভবপর হয় ॥ ९ ॥

যে লেখেতে (ব্রাহ্মণাদি) জাতিবিশেষ, নগরবিশেষ, গ্রামবিশেষ ও দেশ-বিশেষ-সম্বন্ধ রাজার নির্দ্দেশাত্মসারে করাদির অগ্রহণরূপ অন্ত্রহ নিবিষ্ট থাকে, বিশেষজ্ঞ ব্যক্তি তাহাকে প্রীছার-নামক লেখ বলিয়া বুঝিয়া লইবেন॥ ৮॥

তাহার নাম নিস্ষ্টি লেথ যাহাতে কোন কার্য্যকরণসংক্ষে বা কোন কার্য্যকথন-সংক্ষে নিস্টি বা কোন আপ্ত পুরুষের প্রামাণ্যের আখ্যান স্থাপিত হুয় ( স্কর্থাৎ 'আমার বিশাসী অমৃক ব্যক্তির ক্রিয়া আমারই ক্রিয়া, অমৃকেরু বচন আমারই বচন'—এইরূপ উক্তি থাকে)। এই নিস্টিলেথ তুই প্রকার—বাচিক (বচন-প্রামাণ্যসংক্ষী)॥ ১॥

শাসনসংক্ষে সেইরপ শাসনের নামই প্রার্ত্তিক যাহাতে দৈবী ও মামুষী এবং তত্ত্বগত প্রবৃত্তি নিবিষ্ট থাকে (অর্থাৎ যাহাতে অনাবৃষ্টিপ্রভৃতি অগুভ দৈবফল ও স্থভিক্পপ্রভৃতি শুভ দৈবফলসংযুক্ত সমাচার এবং চোরাদি ও বন্ধু প্রভৃতি ত্বারা সংঘটিত প্রতিকৃল বা অন্তকৃল কার্য্যসংযুক্ত সমাচার এবং তত্ত্বসংযুক্ত বা বাস্তব সমাচার লিপিবদ্ধ আছে)। এইরপ প্রবৃত্তি শুভ ও অশুভাত্মক বলিয়া দিবিধ হইতে পারে॥ ১০॥

প্রতিলেখ বা উত্তরপ্রদায়ী লেখ রচনা করিতে হইলে (লেখককে অন্ত হইতে প্রাপ্ত) লেখ যথাতথ্যভাবে স্বয়ং পড়িয়া ও ব্ঝিয়া, পরে (রাজার নিকট আবার) ইহা পড়িয়া তাঁহাকে শুনাইয়া, রাজার বচনাগুসারে উত্তর রচনা করিতে হইবে॥ ১১॥

ষে লেখপত্রে রাজা পথিকদিগের জন্ম তাহাদের রক্ষা, ও (জন্ম প্রকার) উপকারবিষয়ে (তুর্গপালাদি) ঈশ্বরজনকে (অর্থাৎ প্রভূত্বশালী ব্যক্তিদিগকে) ও (সমাহর্ভূ-প্রভৃতি) অধিকারিজনকে আদেশ করেন, সেই লেখপত্রের নাম স্বর্বব্রেগা লেখ, কারণ, ইহা পথে, দেশে ও (রাষ্ট্রপ্রভৃতি) জন্ম সব স্থানে প্রচারিত হইয়া থাকে ॥ ১২ ॥

(সন্ধিবিগ্রহাদি কার্য শাসনমূলক হইয়া থাকে এবং সেগুলি উপায়চতৃষ্টয়-সাপেক্ষ, স্থতরাং শাসনলেথককে উপায়গুলিতে বৃংপত্তিমান্ থাকিতে হইবে, এই জন্ম সম্প্রতি উপায়াচতৃষ্টয়ও কথঞ্চিৎ নির্দ্ধণিত হইতেছে। উপায় চারি প্রকার, যথা—(১) সাম, (২) উপপ্রদান, (৩) ভেদ ও (৪) দণ্ড।

তন্মধ্যে **সাম** পঞ্চবিধ—(১) গুণসংকীর্ত্তন, (২) সম্বন্ধোপাখ্যান, (৩) পরস্পরোপকারদন্দর্শন, (৪) আয়তিপ্রদর্শন ও (৫) আয়োপনিধান।

এই পাঁচটির মধ্যে প্রথমতঃ গুণসংকীর্তনের লক্ষণ প্রদন্ত হইতেছে। যে সামপ্রয়োগে (শক্রনরপতি বা অন্য কাহারও) কুল, শরীর, কর্ম, স্বভাব, শাস্ত্র-সংস্কার ও (হস্তাশাদি) দ্রব্যাদির গুণের ('গুণাগুণগ্রহণং' পাঠেও তদ্রপ ব্যাখ্যা) স্বরূপাখ্যান করিয়া প্রশংসা (শ্লাঘাত্মক বচন) বা স্বতি (অবিভ্যমান গুণেরও কীর্তন) করা হয়, তাহার নাম গুণসংকীর্ত্তন। যে সামপ্রয়োগে কাহারও জ্ঞাতিসম্বন্ধ (সমান কুল্লে জন্মসম্বন্ধ), যৌনসর্থন্ধ (বিবাহজনিত সম্বন্ধ), মৌখসম্বন্ধ (অধ্যয়ন ও অধ্যাপনা হইতে উৎপন্ন সম্বন্ধ), প্রোবসম্বন্ধ (যাজ্যযাজকরূপ সম্বন্ধ—যজ্ঞের এক পাত্রবিশেষের নাম ক্রব্রু ), কুলসম্বন্ধ (উপকারসভূত সম্বন্ধের) উল্লেখ করা হয়, তাহার নাম সম্বন্ধাপাশ্যান।

যে সামপ্রয়োগে স্বপক্ষ ও পরপক্ষের দ্বারা কৃত উপকারের সংকীর্জন থাকে তাহাকে **পরস্পরোপকারসক্ষর্শন** বলা হয়।

'এই কার্য্য এইরূপে করা হইলে আমাদের উভয়ের এইরূপ (গুভ) ফল হইবে'—এই প্রকার আশা উৎপাদন করিয়া যে সামপ্রয়োগ বিহিত হয়, তাহার নাম আয়েভিপ্রাদর্শন। 'আমিও যাহা আপনিও তাহা, অর্থাৎ আমরা উভয়ে অভিন্ন, যাহা আমার দ্রব্য তাহা আপনি নিজের কার্য্যে ( যথেচ্ছভাবে ) প্রয়োগ করিতে পারেন'— এইরপ আত্মসমর্পণস্থচক উক্তিবারা যে সামপ্রয়োগ বিহিত হয়, তাহাকে আত্মোপনিধান বলা হয়।

(ভূমিপ্রভৃতিরূপ) অর্থনারা উপকার করার নাম **উপপ্রেদান**। ইহার ভেদ তুই প্রকার, যথা—(১) (শক্রুর মনে) শঙ্কার উৎপাদন ও (২) নিভর্মন অর্থাৎ 'অপকার করিব' বলিয়া ধমক দেওয়া।

দশু তিন প্রকার, যথ।—(১) ব্যাপাদন বা হত্যা, (২) বন্ধন-তাড়নাদিরূপ পীড়া দেওয়া, ও (৩) অর্থের অপহরণ।

অকান্তি, ব্যাঘাত, পুনক্বক্ত, অপশব্দ ও সংপ্লব—এই (পাঁচটি) লেখের দোষ।

তন্মধ্যে, কোন লেখ যদি কালিম্রক্ষিত পত্রে লিখিত হয়, অথবা, ইহার অক্ষরগুলি অস্থন্দর, বা বিষম ( অর্থাৎ স্থূল-স্ক্ষ বা ছোট-বড় ) বা বিরাগযুক্ত ( অর্থাৎ জলপ্রায় মসীতে লিখিত ) হয়, তাহা হইলে ইহা অকান্তি-নামক দোষ-ছুই বলিয়া গৃহীত হয়।

পূর্ববর্ত্তী অর্থের দারা পরবর্ত্তী অর্থের বিরোধ হইলে, ইহাকে ব্যা**ঘাত** দোষ বলা হয়।

বিনা বিশেষে উক্ত বিষয়ের দ্বিতীয়বার উচ্চারণের নাম পুনক্তক্ত দোষ।
(স্ত্রীপুংসাদি) লিঙ্গ, (একবচনাদি) বচন, (ভূতাদি) কাল ও (কর্মাদি)
কারকের অন্তথা প্রয়োগের নাম অপশব্দ দোষ।

(লেখে) যেখানে বর্গ বা বিরাম রাখা আবশুক নয়, সেখানে বিরাম ব্রুকা করা এবং যেখানে বিরাম রাখা আবশুক, সেখানে বিরাম না রাখ্বা এবং উক্ত (অর্থক্রমাদি) লেখগুণসমূহের বৈপরীত্য ঘটান হয়, তাহা সংপ্লাব-নামক দোষ বলিয়া পরিগণিত।

সর্ব্বশাস্ত্র (উত্তমরূপে) জানিয়াও (শাস্ত্রের) প্রয়োগ উপলব্ধি করিয়া কৌটিল্যু রাজার প্রয়োজনে শাসন-রচনার বিধি উপদেশ করিয়াছেন। ১৩। কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে শাসনাধিকার-

নামক দশম অধ্যায় ( আদি হইতে ৩১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# একাদশ অধ্যায়

#### ২৯শ প্রকরণ—কোশে প্রবেশযোগ্য রত্নাদির পরীক্ষা

কোশাধ্যক্ষ কোশে রক্ষণার্থ কোশ-প্রবেশযোগ্য (মণিম্কাদি) রত্ব, (চন্দনাদি) সার, (পট্টাদি) ফল্ক, ও (সারদাক্ষ প্রভৃতি ও যন্ত্রায়ুধ প্রভৃতি) কুপ্যদ্রব্যসমূহ তৎ তৎ দ্রব্যে জাত বা তৎ-সম্বন্ধ ব্যবহারে ব্যাপৃত, করণপুরুষগণের সহিত যুক্ত হইয়া (অর্থাৎ তাহাদের মতামত লইয়া) গ্রহণ করিবেন।

প্রথমতঃ মোক্তিক বা মৃক্তার পরীক্ষণ অভিহিত হইতেছে— মোক্তিকের (দশটি) উৎপত্তি-ক্ষেত্র আছে এবং ইহাদের নামান্থসারে মোক্তিকের নাম হইরা থাকে, যথা—(১) ভাদ্রপর্ণিক (অর্থাৎ পাণ্ড্য দেশের তাদ্রপর্ণী নদীতে সমৃত্রসঙ্গমন্থানে উৎপন্ন), (২) পাণ্ড্যকবাটক (পাণ্ড্য দেশের মলয়নোটি নামক পর্ব্বতে উৎপন্ন), (৩) পাঞ্চিক্য (পাশিক্য নদীতে উৎপন্ন), (৪) কোলের অর্থাৎ সিংহল দ্বীপে ময়ুর্গ্রামের কূলা নামী নদীতে উৎপন্ন), (৫) চার্বের অর্থাৎ কেরল দেশের চূর্ণানামী নদীতে উৎপন্ন), (৬) মাহেক্রে পর্ব্বতের নিকটবর্ত্তী সমৃত্রে উৎপন্ন), (৭) কার্দ্দমিক (অর্থাৎ পারসীকের কর্দ্দমানামী নদীতে উৎপন্ন), (৮) কোর্চিমিক (অর্থাৎ পারসীকের কর্দ্দমানামী নদীতে উৎপন্ন), (৮) কোর্চিমিক (অর্থাৎ বর্ব্বর সাগরের কূলে শ্রোতসী নদীতে উৎপন্ন), (৯) হ্রান্টীয় (অর্থাৎ বর্ব্বর সাগরের কূলে শ্রীঘণ্ট-নামক হ্রদে উৎপন্ন), ও (১০) হৈমবন্ত (অর্থাৎ হিমালয়ে উৎপন্ন)।

 মৌক্লিকের তিনটি যোনি বা জন্মস্থান হইতে পারে, যথা—(১) শঙ্খ.
 (২) শুক্তি ওন(৩) প্রকীর্ণক বা বিবিধ ( অর্থাৎ হস্তীর কুন্ত, সর্পের মন্তক প্রভৃতি ও অক্যান্ত সাধন হইতে প্রাপ্ত )।

মোজিকের অয়োদশ দোষ বলা হইতেছে, ষথা—(১) মস্রক (মস্বের আকারবিশিষ্ট), (২) ত্রিপুটক (ত্রিকোণাকৃতি), (৩) কুর্মক (কুন্মাকৃতি) (৪) অর্জচন্দ্রক (অর্জচন্দ্রাকার), (৫) কঞ্চুকিত (কঞ্চুক বা ছালযুক্ত) (৬) ষমক (য্গ্যাকৃতি), (৭) কর্ত্তক (কাটা বা ছিন্ন), (৮) থরক (থরথরা) (৯) সিক্থক (মোমের মত বিন্দুযুক্ত), (১০) কামগুলুক (কমগুলুর আকার বিশিষ্ট), (১১) শ্রাব (কপিশবর্ণ), (১২) নীল (নীলবর্ণ) ও (১৩) তুর্বিণ অস্থানে বিদ্ধ)। এই প্রকার মৌজিক অপ্রশস্ত বিলিয়া জ্ঞাত।

মোক্তিকের আটট গুণ নির্দিষ্ট হইতেছে, যথা—(১) শ্বুল (মোটা), (২) বৃত্ত (গোলাকার), (৩) তলরহিত (অর্থাৎ যাহা মস্থণ স্থানে অবস্থান করিতে পারে না), (৪) দীপ্তিযুক্ত, (৫) শ্বেত, (৬) গুরু (ভারী), (৭) স্নিগ্ধ (চাক্চিকাযুক্ত) ও (৮) যথাস্থানে বিদ্ধ। এই প্রকার মোক্তিক প্রশস্ত বলিয়া ধৃত হয়।

ষষ্টি বা মূক্রার লহরীর প্রভেদ পাঁচ প্রকার, যথা—(১) শীর্ষক (যে মালার মধ্যস্থলে একটি বড় মূক্রা এবং উভয় পার্ষে সমানাক্ষতি ছোট ছোট মূক্রা প্রথিত থাকে), (২) উপশীর্ষক (যে মালার মধ্যস্থলে একটি বড় মূক্রা ও উভয় পার্ষে সমানাকার ছোট ছোট মূক্রা একটি করিয়া থাকে এবং এইরূপ তিনটি তিনটি ভাগ করিয়া পূর্ণ মালা গ্রথিত হয়), (৩) প্রকাশুক (যে মালার মধ্যস্থলে একটি বড় মূক্রা এবং উভয় পার্ষে সমানাকার ছোট মূক্রা তুইটি করিয়া থাকে এবং এইরূপ পাঁচটি পাঁচটি ভাগ করিয়া পূর্ণ মালা গ্রথিত হয়), (৪) অবঘাটক (যে মালার মধ্যস্থলে একটি বড় মূক্রা এবং উভয় পার্ষে সমানাকৃতি কৃশ, কৃশতর মূক্রা ইত্যাদি ক্রমে মালাটি গ্রথিত হয়) ও (৫) ভরল-প্রতিবন্ধ (যে মালায় সব সমানাকৃতি মূক্রা গ্রথিত থাকে)।

উক্ত প্রত্যেক প্রকারের যাষ্ট্র বা লহরীর সংখ্যা যদি ১০০৮ থাকে, তাহা হইলে তদ্ধারা রচিত ভূষণের নাম ইশ্রেচ্ছন্দ। যাষ্ট্রির সংখ্যা ইহার অর্দ্ধ অর্থাৎ ৫০৪ থাকিলে, ভূষণের নাম বিজয়চ্ছন্দ। ১০০ যাষ্ট্র-সমন্বিত ভূষণের নাম দেব-চছন্দ। ইহাতে ৬৪ যাষ্ট্র থাকিলে ইহার নাম হয় ভ্যব্রেহার। ইহাতে ৫৪ যাষ্ট্র থাকিলে ইহার নাম ব্রিশাকলাপ। ইহাতে ৩২ যাষ্ট্র থাকিলে ইহার নাম শ্রেচ্ছ। ইহাতে ২৭ যাষ্ট্র থাকিলে ইহার নাম নাম ক্রেচ্ছার নাম ক্রেচ্ছার নাম ক্রেচ্ছার নাম ভ্রেচ্ছার নাম ক্রেচ্ছার নাম ভ্রেচ্ছার নাম ভ্রেচ্ছার ব্যাকিলে ইহার নাম ক্রেচ্ছার ব্যাকিলে ইহার নাম আর্দ্ধিওছে। ইহাতে ২০ যাষ্ট্র থাকিলে ইহার নাম আর্দ্ধিওছে। ইহাতে ২০ যাষ্ট্র থাকিলে ইহার নাম আর্দ্ধিওলাকক।

উক্ত ইক্সছন্দ প্রভৃতির মধ্যন্থলে মণি সংলগ্ন থাকিলে, ইহাদের নাম ইক্সছন্দ-মাণবক প্রভৃতি হইবে (সেইরূপ, বিজয়ছ্ছন্দ-মাণবক, দেবছ্ছন্দ-মাণবক, অর্জহার-মাণবক ইত্যাদি নাম হয়)। কেবল মাত্র শীর্ষক-নামক যষ্টি ছারা নির্দ্মিত হইলে ইক্সছ্ছন্দ প্রভৃতি-নামক মৌজিক ভূষণের নাম হইবে শুদ্ধহার (অর্থাৎ তথন ইহার নাম হইবে ইক্সছ্ছন্দ-শীর্ষক-শুদ্ধহার ইত্যাদি)। শীর্ষকের স্থায় কেবল মাত্র উপশীর্ষক, প্রকাণ্ডক, অব্ঘাটক ও তরল-প্রতিবন্ধ-নামক ষষ্টিছারা নির্দ্মিত হইলেও ইক্সছ্ছন্দ প্রভৃতি-নামক ভূষণের পূর্ববৎ

নামকরণ হইবে (যথা—ইক্সচ্ছন্দোপশীর্ষক-শুদ্ধহার, ইক্সচ্ছন্দ-প্রকাণ্ডক-শুদ্ধহার,
ইক্সচ্ছন্দাবঘাটক-শুদ্ধহার, ইন্ডাদি)। অর্দ্ধমাণবক-নামক (দশ যষ্টিসমন্থিত) মৌক্তিক ভূষণটিতে যদি (মরকতাদি) মি মধ্যবর্ত্তী থাকে, এবং
যদি ইহাতে তিনটি স্বর্ণফলক (বা সোনাদানা) বা পাঁচটি স্বর্ণফলক লগ্ন থাকে,
তাহা হইলে ইহার নাম কলকহার হইবে। কেবল শুদ্ধ (অর্থাৎ অন্ত
মণিবিহীন) একাবলী হইলে অর্থাৎ ইহাতে এক লহরী মূক্তা থাকিলে সেই
মালাকে সূত্র বলা হয়। সেই একাবলী মূক্তামালাতে মি সংলগ্ন হইলে
ইহার নাম যষ্টি হয়। হেমগুলিকা ও মণিগুলিকা গুদ্দিত থাকিলে, সেই
বিচিত্র ষ্টির নাম হইবে রক্তাবলী। যে মালা ক্রমে স্বর্ণগুলিকা, (তৎপর)
মণিগুলিকা ও (তৎপর) মূক্তাগুলিকা দারা রচিত হয় তাহার নাম অপবর্শ্বক।
কেবল স্বর্ণগুলিকার সহিত কোন মৌক্তিক মালা গ্রথিত হইলে, ইহার নাম
সোপানক হইবে। আবার ইহার মধ্যে যদি মণিও গ্রথিত হয়, তাহা
হইলে ইহার নাম মণিসোপানক হইবে।

উক্ত নিরূপণ দারা মস্তক, হস্ত, পদ ও কটিদেশের উপযোগী মোক্তিক সর বা লহরী ও স্বসমূহের প্রকারভেদও ব্যাখ্যাত হইল বলিয়া বৃদ্ধিতে হইবে। (এই পর্যান্ত মোক্তিকপ্রকরণ বলা হইল।)

মণির আকরভূমির নামান্থসারে ইহা ত্রিবিধ হইতে পারে, যথা—(১) কোট (মলর সাগরের নিকটবর্ত্তী কোটি-নামক স্থানে উৎপন্ন), (২) মালেয়ক (মলর-দেশের কর্ণীবনাথ্য পর্বতমালাতে উৎপন্ন) ও (৩) পারসমুক্তক (সম্ব্রপারে সিংগল প্রস্কৃতি দ্বীপে উৎপন্ন)।

(জাতিতেদে) মাণি পাঁচ প্রকার হইতে পারে, বথা—(১) সোঁগন্ধিক (অর্থাৎ তল্পামক ঈবৎ-নীলাভাযুক্ত রক্তবর্ণ উৎপলের ন্তায় রঙ্-যুক্ত), (২) পদ্মরাগ (পদ্মের রঙ্বিশিষ্ট), (৩) অনবজ্ঞরাগ (কুল্ক্মবর্ণ) (৪) পারিজাতপুষ্পক (পারিজাত কুল্ক্মের রঙ্-যুক্ত) ও (৫) বালস্থ্যক (উদীয়মান স্থোর মত

বৈদুর্য্য আট প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) উৎপলবর্ণ (লাল কমলের বর্ণবিশিষ্ট), (২) শিরীষপুষ্পক (শিরীষ পুষ্পের বর্ণবিশিষ্ট), (৩) উদকবর্ণ (জলের মত স্বচ্ছবর্ণা), (৪) বংশরাগ (বেণুপত্তের রঙ বিশিষ্ট), (৫) শুকপত্তবর্ণ (শুক্রপক্ষীর পক্ষের মত বর্ণবিশিষ্ট), (৬) পুরুরাগ (হরিন্তার বর্ণবিশিষ্ট), (৭) গোম্ত্রক (গোম্ত্রের সমান বর্ণযুক্ত ) ও (৮) গোমেদক (গোরোচনার সমান বর্ণ বিশিষ্ট )।

ইন্দ্রনীল-জাতীয় মণি আট প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) নীলাবলীয় (শ্বেত হইলেও নীলধারায় তরঙ্গিত বলিয়া উপলক্ষিত, (২) ইন্দ্রনীল (ময়ুরবহের বর্ণবিশিষ্ট), (৩) কলায়পুষ্পক (কলায় পুষ্পের রঙ্ যুক্ত), (৪) মহানীল (ভ্রমরবর্ণ), (৫) জাম্ববাভ (জম্বু ফলের বর্ণযুক্ত), (৬) জ্পীমৃতপ্রভ (মেঘবর্ণ), (৭) নন্দক (অন্তঃশ্বেত, কিন্তু, বহিনীলবর্ণ ও (৮) প্রবন্ধ্য (জ্বলপ্রবাহের রশ্বিবিশিষ্ট)।

শ্বাটিক-জাতীয় মণি চারি প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) শুদ্ধক্ষটিক ( অত্যন্ত শুকুবর্ণ ), (২) মূলাটবর্ণ ( তক্রবর্ণ ), (৩) শীতবৃষ্টি ( চন্দ্রকান্ত = যে মণি চন্দ্রকিরণস্পর্শে দ্রবযুক্ত হয় ) ও (৪) স্বর্য্যকান্ত ( যে মণি স্ব্যুক্তরসম্পর্কে অগ্নি বমন করে )। এইগুলিই মণিভেদ।

মণিসম্হের গুণ এইরূপ—(১) ছয় কোণবিশিষ্ট, (২) চারি কোণবিশিষ্ট, (৩) গোলাকার, (৪) তীব্ররাগ (গভীর বর্ণবিশিষ্ট), (৫) সংস্থানযুক্ত (অর্থাৎ ভূষণে সন্নিবেশিত হওয়ার উপযুক্ত অবয়ববিশিষ্ট), (৬) নির্মাল, (৭) মহণ, (৮) গুরু (ভারী), (৯) অর্চিয়ান্ (দীপ্তিমান্), (১০) অন্তর্গতপ্রভ (মধ্যে চঞ্চল-প্রভাযুক্ত) ও (১১) প্রভান্থলেপী (যাহা নিজ প্রভাদারা নিকটম্ব বস্তুকে প্রভাযুক্ত করে)।

মণিসম্হের দোষ এইরপ—(১) মন্দরাগ ( হাল্কা রঙ্ বিশিষ্ট ), (২) মন্দপ্রজ ( ফ্রাতিহীন ), (৩) সশর্কর ( অর্থাৎ থরথরা বা ছোট ছোট দানাযুক্ত ), (৪) পুষ্পচ্ছিত্র ( যাহাতে ছোট ছোট বিন্দুরপ ছিত্র আছে ), (৫) থণ্ড ( কাটা ), (৬) ছবিদ্ধ ( অস্থানে বিদ্ধ ) ও (৭) লেথাকীর্ণ ( দাগী বা রেথাযুক্ত ),।

অবাস্তর-জাতীয় মণির প্রকার-ভেদ বলা হইতেছে, যথা—(১) বিমলক (খেত-হরিত), (২) সম্প্রক (নীল), (৩) অঞ্চনমূলক (নীল-কাল), (৪) পিত্তক (গো-পিন্তের রঙ্বিশিষ্ট), (৫) স্থলভক (খেতবর্ণ), (৬) লোহিতাক্ষ (পর্যান্তে লাল ও মধ্যে কাল), (৭) মৃগাশ্মক (খেত-রুষ্ণ), (৮) জ্যোতীরসক (খেত-রক্ত), (১) মৈলেয়ক (হিলুলকের রঙ্বিশিষ্ট), (১০) আহিচ্ছত্রক (অহিচ্ছত্র দেশে উৎপন্ন, অথবা, অহিচ্ছত্র বা ব্যাঙের ছাতার রঙ্বিশিষ্ট), (১১) কূর্প (যাহাতে ছোট হিন্দু উঠিয়াছে অর্থাৎ যাহা শর্করিল), (১২) প্রতিকূর্প (দাগী), (১৩) স্থগদ্ধিকূর্প (মূল্যবর্ণ), (১৪) ক্ষীরপ্রক (ছ্ম্বর্ণ), (১৫) শুক্তির্ক

(নানা বর্ণে মিলিত বা চিত্রিত, (১৬) শিলাপ্রবালক (শিলাপ্রবালের বর্ণযুক্ত), (১৭) পুলক (মধ্যে কৃষ্ণবর্ণ) ও (১৮) শুক্রপুলক (মধ্যে শুক্রবর্ণ)। অবাস্তর-জাতীয় মণি উক্তরূপ অষ্টাদশ প্রকারের হইতে পারে।

অবশিষ্ট প্রকারের মণিসমূহকে কাচমণি (অর্থাৎ কাচের মত নিরু । বলা হয়।

বজ্ঞ বা হীরকের উৎপত্তিস্থানের নামামুদারে ইহা ছয় প্রকার হইতে পারে,
যথা—(১) সভারাষ্ট্রক (বিদর্ভদেশে সভারাষ্ট্র-নামক স্থানে উৎপন্ন),
(২) মধ্যমরাষ্ট্রক (কোসলদেশে মধ্যমরাষ্ট্র-নামক স্থানে উৎপন্ন), (৩) কাস্তীর-রাষ্ট্রক (কাস্তীররাষ্ট্রে উৎপন্ন; 'কাশ্মীররাষ্ট্রক' পাঠ থাকিলে কাশ্মীররাষ্ট্রে উৎপন্ন),
(৪) শ্রীকটনক (শ্রীকটন-নামক পর্বতে উৎপন্ন), (৫) মণিমন্তক (উত্তরাপথে মণিমন্তক-নামক পর্বতে উৎপন্ন) ও (৬) ইন্দ্রেবানক (কলিঙ্গদেশের ইন্দ্রবান-নামক স্থানে উৎপন্ন)।

খনি, জলপ্রবাহ ও (গজদন্তের মূলপ্রদেশ-প্রভৃতি) বিবিধ স্থানে হীরক উৎপন্ন হয়।

হীরকের বর্ণ বা রঙ্ বলা হইতেছে, যথা—(১) মার্জ্ঞারাক্ষক (অর্থাৎ বিড়ালের নেত্রের সমান বর্ণবিশিষ্ট), (২) শিরীযপুষ্পক (শিরীয পুষ্পের সমান বর্ণবিশিষ্ট), (৩) গোমূত্রক (গোমূত্রের সমান বর্ণযুক্ত), (৪) গোমেদক (গোরোচনার সমান বর্ণ), (৫) শুদ্ধফটিক (ফটিকের মত শ্বেতবর্ণ), (৬) মূলাটীপুষ্পকবর্ণ (মূলাটী ফুলের রঙ্বিশিষ্ট) এবং (৭) উক্ত মণিবর্ণসমূহের অক্যতমবর্ণবিশিষ্ট।

স্থূল (মোটা), স্থিয় (চক্চকে), গুৰু (ভারী), প্রহারসহ (অর্থাৎ কোন কিনি বস্তু ছারা প্রস্তুত হইলেওঁ অভেছ), সমকোটিক (সমান কোণবিশিষ্ট), ভাজনলেথি (কাংস্থাদি পাত্রে লেথাদির উৎপাদক), তর্কু ভ্রামি (তরু নামক স্ত্রকর্জনষন্ত্রের মত ভ্রমণশীল) ও ভ্রাজিফু (অতিদীপ্তিমান্) হীরক প্রশস্ত (উত্তম) বলিয়া গণ্য।

যে হীরক কোণশৃন্ত, নিরশ্রি ( অর্থাৎ তীক্ষ কোণরহিত ) ও একপার্ষে অধিক নিঃস্বত, তাহা অপ্রশস্ত ( অধম ) বলিয়া জ্ঞাত হয় ;

প্রবালের উৎপত্তি স্থান ছইটি, যথা—(১) আলকলক (মেচ্ছদেশের অলকল-নামক সম্প্রবর্তী স্থানে উৎপন্ন) ও (২) বৈবর্ণিক (ঘবনদ্বীপে বিবর্ণ-নামক সমৃদ্রের একদেশে উৎপন্ন)। ইহার বর্ণও ছই প্রকার, যথা—(১) রক্ত (লাল) ও (২) পদ্মরাগ (লাল পদ্মের সমান বর্ণ)। কিন্তু, যে প্রবাল করট বা

কুস্ম্পুশের বর্ণযুক্ত (মতান্তরে, কুমিজগ্ম—ব্যাখ্যা) ও যে প্রবাল গর্ভিণিকা (অর্থাৎ স্থলমধ্য) তাহা অন্পাদেয় বলিয়া ত্যাজ্য। (এই পর্যান্ত রত্নপরীক্ষা নিরূপিত হইল)।

( সারদ্রব্যের মধ্যে সর্কাগ্রে চন্দ্রন নিরূপিত হইতেছে )। চন্দনের উৎপত্তি-স্থান ষোড়শ, ইহার বর্ণ নয় প্রকার, ইহার গন্ধ ছয় প্রকার ও ইহার গুণ একাদশ প্রকার বলিয়া বর্ণিত হইবে, যথা-সাতনদেশে উৎপন্ন চন্দনের বর্ণ লাল ও ইহার গন্ধ (নবসিক্ত) ভূমির সমান গন্ধবিশিষ্ট। গোশীর্যদেশে উৎপন্ন চন্দনের বর্ণ কাল-তাম এবং ইহার গন্ধ মৎস্তোর গন্ধের মত। হরিচন্দন বা হরিদেশে উৎপন্ন চন্দনের বর্ণ শুক পক্ষীর পাথার ত্যায় বর্ণবিশিষ্ট ও ইহা আত্রগন্ধযুক্ত। তার্ণদ (তৃণসা নাম্মী নদীর কূলে জাত) চন্দনও হরিচন্দনের মত শুকপত্রবর্ণ ও আমগন্ধি। গ্রামেরুদেশে উৎপন্ন চন্দনের বর্ণ লাল হয়, রক্ত-কালও হয় এবং ইহার গন্ধ বস্ত বা ছাগের মূত্রের ক্যায় গন্ধবিশিষ্ট। দেবসভা-নামক স্থানে উৎপন্ন চন্দনের বর্ণ লাল ও ইহার গন্ধ পদ্মের গন্ধের মত। জাবক দেশে উৎপন্ন চন্দনও तक्तर्व ७ श्मार्शका । एकाक्ररमाम উৎপन्न ठन्मन तक्तर्व ७ तक कान वर्व, ७ ন্নিগ্ন ( চক্চকে )। ( ইহা সম্ভবতঃ প্রগদ্ধি বলিয়া গৃহীত হইবে )। তুরূপদেশে উৎপন্ন চলনও জোঙ্গক চলনের বর্ণাদিবিশিষ্ট। মালা-নামক স্থানে উৎপন্ন চলন পাণ্ড্-রক্তবর্ণ (ও সম্ভবতঃ পদ্মগিদ্ধি)। কুচন্দন-নামক চন্দন কাল বর্ণবিশিষ্ট ও গোমৃত্তের সমানগদ্ধি (কোন কোন ব্যাখ্যাকার 'গোমৃত্ত' শদ্ধের অর্থ 'নীলোৎপল' ধরিয়াছেন )। কালপর্বাত-নামক দেশে উৎপন্ন চন্দন রক্ষ, অগুরুর মত কালবর্ণ, অথবা রক্তবর্ণ, অথবা রক্ত-কালবর্ণ। কোশকারপর্বতে উৎপন্ন চন্দন কালবর্ণ, অথবা রুফ্ড-কর্ব্যবর্ণ। শীতোদকদেশে উৎপন্ন চন্দন পন্নৰ্শ, অথবা কাল ও শ্লিগ্ধ। নাগপর্বতদেশে উৎপন্ন চন্দন রক্ষ ( খরঞ্জা ), অথবা শৈবালের বর্ণবিশিষ্ট। শাকলদেশে উৎপন্ন চন্দন কপিলবর্ণ (পীলা ও লাল বর্ণে মিলিত )। (কালপর্কত হইতে শাকলদেশ পর্যান্ত দেশসমূহে উৎপন্ন চন্দন সম্ভবতঃ গোমূত্রগন্ধি )।

চন্দনে নিমবর্ত্তী একাদশ গুণ থাকিতে পারে, ষথা—(১) লঘু (হাল্কা),
(২) দ্বিশ্ব (মন্ত্ন), (৩) অখ্যান ( যাহা বিলম্বে শুদ্দ হয়), (৪) সণিংশ্রেহলেপী
( অর্থাৎ যাহা ঘতের মত মন্ত্ণভাবে শরীর লিপ্ত করে ), (৫) গদ্ধস্থ ( গদ্ধবিষয়ে
মনোরম), (৬) ত্বগত্নসারি ( যাহা শরীরের চর্ম্মে প্রবেশ করিয়া স্থাদায়ক ),
(৭) অন্ত্র্যাণ ( যাহা স্ক্ষতাবশতঃ পরিক্টু নহে ), (৮) অবিরাগি ( অর্থাৎ যাহা

শরীরে মাথিলেও বর্ণ ও গন্ধ ত্যাগ করে না ), (১) উচ্চসহ ( যাহা উষ্ণতা সহ করিতে পারে), (১০) দাহগ্রাহী (শরীরের সন্তাপ হরণে সমর্থ) ও (১১) স্থম্পর্শন ( যাহা স্পর্শ করিতেও স্থথকর )।

সম্প্রতি তাগুরু সদদ্ধে বলা হইতেছে)— জোঙ্গক (কামরূপ দেশের জোঙ্গ-নামক স্থানে উৎপন্ন) অন্তরু রুঞ্বর্গ, কাল-কর্ম্বর্গ, অথবা মন্ডলচিত্রবর্গ (অর্থাৎ রুফ্ ও খেত বিন্দুর্ক্ত)। (কামরূপদেশের) দোঙ্গ-নামক স্থানে উৎপন্ন অন্তরু শ্যামবর্গ। সন্দ্রপারে (অর্থাৎ সিংহলাদি দ্বীপে) উৎপন্ন অন্তরু নানা-বর্ণবিশিই। উক্ত অন্তরু উশীরের বা নবমালিকার গদ্মযুক্ত হইতে পারে।

অপুরুর নিয়বণিতরূপ (আটটি) গুণ থাকিতে পারে, যথা—(১) গুরু (ভারী), (২) স্থিপ্ন (মহণ), (৩) মনোহর গন্ধবিশিষ্ট, (৪) নির্হারি (অর্থাৎ যাহার গন্ধ বহুদ্র পর্যান্ত প্রহুত হয়), (৫) অগ্নিসহ (যাহা অগ্নিসংখোগেও তাড়াতাড়ি দক্ষ হয় না), (৬) অসংপ্লুত্দুম (যাহার পুম সংপ্লব বা ব্যাকুলতা ঘটায় না), (৭) সমগন্ধ (যাহা দাহের আদি, মধ্য ও অন্তে সমান গন্ধযুক্ত থাকে) ও (৮) বিমন্দ্রহ (যাহা ব্রাদিস্বারা বিমন্দিত হইলেও স্বগন্ধ ত্যাগ করে না।)

(তৈলপর্ণিক-নামক চন্দনবিশেষ বা গন্ধদ্রব্যবিশেষের নিরূপণ করা হইতেছে।) (কামরূপ দেশের) তাশোক প্রামে উৎপন্ন তৈলপণিকের বর্ণ মাংসের বর্ণের মত এবং ইহা পদ্মগন্ধি (ভট্ন্থামী ব্যাখ্যা করেন যে, ইহা হরিণমাংসের পেশীর মত বর্ণবিশিষ্ট)। জোঙ্গ-নামক স্থানে উৎপন্ন তৈলপণিকের বর্ণ রক্ত-পীত এবং ইহার গন্ধ উৎপল বা গোমুত্রের গন্ধের মত। গ্রামেরুদেশে উৎপন্ন তৈলপণিক স্লিপ্ধ (মত্ত্ব) ও গোম্ত্রগন্ধি হয়। (ইহার বর্ণ সম্ভবতঃ জেনজক তৈলপণিকের মত রক্ত-পীত)। স্থল্পকুজ্য-নামক দেশে উৎপন্ন তৈলপণিক ক্ষক্ত-পীতবর্ণ ও মাতৃলুঙ্গের (ক্ষচকের) গন্ধবিশিষ্ট। পূর্ণকন্ধীপে উৎপন্ন তৈলপণিক পন্নগন্ধি বা নবনীতগন্ধি হইতে পারে, (সম্ভবতঃ ইহার বর্ণও রক্ত-পীত)। উক্ত দেশগুনির অবস্থান কামরূপ প্রেদেশে আছে বলিয়া খ্যাত হয়)।

ভজ্ঞীয়-নামক চন্দনবিশেষ তৃই প্রকার—(১) (কামরপের) লোহিত্য নদের পরবর্ত্তী দেশে উৎপন্ন ভজ্ঞীয় জাতি বা ধৃথিকা পুল্পের বর্ণবিশিষ্ট। (২) কামরপের) আগুরবতী-নামী নদীর তীরে উৎপন্ন ভজ্ঞীয় উশীরবর্ণ। এই উভয় প্রকার ভজ্ঞীয়ের গন্ধ কুষ্ঠ-নামক শুষধের গন্ধসদৃশ।

কালেয়ক-নামক দারুবিশেষ ছই প্রকার—(১) বে কালেয়ক **স্বর্ণভূমি**তে (ব্রহ্মদেশে; মতান্তরে, স্নাত্রাদেশে) জন্মে তাহা স্নিগ্ধ (মহন) ও পীতবর্ণ।

(২) যে কালেয়ক উত্তরপর্কতে (হিমালয়ে) উৎপন্ন হয় তাহা রক্ত-পীতবৃর্ণ। এই পর্যান্ত সারদ্রব্য-সমূহ নিরূপিত হইল।

শেষোক্ত তিন প্রকার দ্রব্যের অর্থাৎ তৈলপর্ণিক, ভন্তশ্রীয় ও কালেয়কের গুণ এইরূপ, যথা—ইহারা পেষণ, কথন (পাককরণ) ও অগ্নিতে ধূপন সহু করিতে পারে (অর্থাৎ ইহাদের গন্ধ তথনও সমান থাকে); ইহারা (দ্রব্যান্তরের সহিত মিশ্রণে ও কালান্তরেও) বিকাররহিত (অর্থাৎ বর্ণাদি ত্যাগ করে না) এবং ইহারা অক্যান্ত গন্ধন্রবোর সহিত যোগ বা মিশ্রণের আফুকূল্য করিয়া থাকে। আরও বলা হইতেছে যে, চন্দন ও অঞ্জকর যত প্রকার গুণ বর্ণিত হইয়াছে ইহারা তদ্গুণবিশিষ্ট হইয়া থাকে।

ফেল্পদ্রব্যসম্থের মধ্যে প্রথমতঃ চর্ম্মের নিরূপণ করা হইতেছে।) **চর্ম্ম** (১) কাস্তনবদেশে উৎপন্ন ও প্রৈয়দেশে উৎপন্ন এবং এই উভয় চর্মাই উত্তরপর্বতক ( অর্থাৎ হিমালয় পর্ন্মতে উৎপন্ন ) বলিয়া খ্যাত ( স্থতরাং কাস্তনব ও প্রৈয়দেশ হিমালয় পর্বতের একদেশ বলিয়া পরিজ্ঞাত )। কাস্তনবচর্ম মধ্রের গ্রীবার সমান বর্ণ। প্রৈয়কচর্ম নীল-পীত, শ্বেত এবং রেখা ও বিন্দু দ্বারা চিত্রিতও হইতে পারে। এই উভয় প্রকারের চর্মাই আট অঙ্গুলি-প্রিমিত আয়ামযুক্ত।

বিশী ও মহাবিদী-নামে পরিচিত চর্ম দাদশগ্রামে (হিমালয় প্রদেশস্থ দাদশ-রেচ্ছগ্রাম-নামক স্থানে) উৎপর হয়। তর্মধ্যে যে চর্মের কোন বর্ণবিশেষ স্বস্পষ্ট প্রতিভাসিত হয় না (অর্থাৎ যাহা বহুবর্ণের প্রতিভাসনবশতঃ অনির্দ্ধারিতবর্ণ) এবং যাহা লোমযুক্ত ও চিত্র তাহার নাম বিদী। যে চর্ম্ম পরুষ (খরস্পর্শ) ও প্রায় ধবলবর্ণ তাহার নাম মহাবিদী। এই উভয় প্রকারের চর্ম্মই দ্বাদশ অন্তুলি-পরিমিত আয়ামবিশিষ্ট।

আরোহজ (অর্থাৎ আরোহ-নামক হিমালয় প্রদেশে উৎপন্ন) চর্ক পাঁচ প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) শ্রামিকা, (২) কালিকা, (৩) কদলী, (৪) চন্দ্রোত্তরা ও (৫) শাকুলা। তন্মধ্যে যে চর্ম কপিলবর্ণ বা বিন্দুরারা চিত্রিত তাহার নাম শ্রামিকা। যে চর্ম কপিলবর্ণ বা কপোতবর্ণ তাহার নাম কালিকা। উক্ত ত্বই প্রকারের চর্মাই আট অঙ্গুলি-পরিমিত আয়ামযুক্ত। কদলী-নামে পরিচিত চর্ম থরম্পর্শ ও একহস্ত আয়ত হয়। এই কদলী চর্মাই যদি চন্দ্রাকার মণ্ডলঘারা চিত্রিত হয়, তাহা হইলে ইহার নাম চল্লোভারা হইয়া থাকে। শাকুলা-নামক চর্ম্ম কদলী চর্ম্মের এক-ভৃতীয়াংশ পরিমিত আয়ামবিশিষ্ট (অর্থাৎ আট অঙ্গুলি-পরিমিত আয়ামযুক্ত; মতাঙ্গরে, কদলীর তিনগুণ আয়ামবিশিষ্ট); ইহা কোঠ-

নামক রোগর্বিশেষে শরীরে উৎপন্ন গোলাকার মণ্ডলের ন্যায় মণ্ডলম্বারা চিত্রিত ও স্বভাবসঞ্জাত গোলাকার গ্রন্থিযুক্ত অজিনবৎ ( মৃগচর্মের মত ) চিত্রিতও থাকে।

বাহলব-নামক (হিমালয়ের) এক প্রাদেশবিশেষে উৎপন্ন চর্ম তিন প্রকার হইয়া থাকে, যথা—(১) সাম্বর, (২) চীনসী ও (৩) সাম্লী। (তয়ধ্যে) সাম্বর চর্ম ছয়িরশ অঙ্গলি-পরিমিত আয়ামবিশিষ্ট ও ইহার বর্ণ অঞ্জনবৎ কাল। চীনসী চর্ম লাল-কাল বা পাণ্ড্-কাল হইয়া থাকে। সাম্লী চর্ম গোধ্মের বর্ণ-বিশিষ্ট (শেষোক্ত তুই প্রকার চর্মের আয়াম ছয়িরশ অঙ্গলি)।

উদ্র-নামক (জলচর) জন্তর চর্ম তিন প্রকার হইয়া থাকে, যথা—(১) সাতিনা,
(২) নলতুলা ও (৩) বৃত্তপুচ্ছা। সাতিনা চর্ম রুফবর্ণ। নলতুলা চর্ম নলতুলের
( অর্থাৎ নলত্থাের তুলার মত খেত ) বর্ণবিশিষ্ট। এবং বৃত্তপুচ্ছা চর্ম কপিল্বর্ণ। এই প্রয়ন্ত চর্মের বিবিধ জাতির নিরূপণ করা হইল।

চর্মের মধ্যে যাহ। মৃত্র (মোলায়েম), স্নিগ্ধ (চক্চকে) ও বহুলোমবিশিষ্ট তাহাই শ্রেষ্ঠ বলিয়া বুঝিতে হইবে।

অবি বা মেষের লোম হইতে উৎপাদিত (কম্বলাদি) দ্রব্য শ্বেত, সম্পূর্ণ লাল ও আংশিক লাল হইয়া থাকে। আবিক (বস্ত্রাদি) (১) থচিত (অর্থাৎ স্চিবানকর্মধারা নিম্পাদিত), (২) বানচিত্র (বানকর্মধারা যাহাতে বৈচিত্র্য সাধিত হইয়াছে), (৩) থণ্ড-সংঘাত্য (অর্থাৎ বুন্ট-করা বহু বহু থণ্ড একত্রিত করিয়া নিম্পাদিত) ও (৪) তদ্ভবিচ্ছিন্ন (অর্থাৎ যাহাতে বুন্নসময়ে কতক তদ্ভ ছাড়িয়া দিয়া জালীর মত করা হইয়াছে)।

আবিক (বস্তাদি) লাধারণতঃ দশবিধ হইতে পারে, ষথা—(১) কম্বল, (২) কেচনক ( ক্রেচপক' পাঠও দৃষ্ট হয়, ইহা জঙ্গলে গোপালকেরা শিরদ্ধাণ ছিসাবে ব্যবহার করিয়া থাকে), (৩) কলমিতিকা ( ক্রেলমিতিকা' পাঠও দৃষ্ট হয়; ইহা হাতির উপরে দেওয়ার আন্তরণ বা ঝুল, অথবা হাতির উপরে রক্ষিত অম্বারীর নীচে বিছাইবার আন্তরণবিশেষ ), (৪) সৌমিতিকা ( ইহা একপ্রকার ক্রম্বর্ণ কলমিতিকা-বিশেষ এবং ইহাও গজপর্ব্যাণের উপর বিছাইবার আন্তরণ ), (৫) তুরগান্তরণ ( ঘোড়ার পিঠে বিছাইবার আন্তরণ ). (৬) বর্ণক ( রঙ্গীন কম্বল), (৭) তলিচ্ছক ( 'তল্লিখক' পাঠও দৃষ্ট হয়; ইহাও বিছানায় বিছাইবার ক্রম্বলবিশেষ ), (৮) বারবাণ ( কম্বলনিন্মিত গাত্রে পরিধানোপযোগী ক্রম্কুকাদি), (৯) পরিস্তোম ( ইহাও এক প্রকার ক্রম্বল—নির্দ্বাণবৈচিত্রারশতঃ
নাহা বিভ্তবং অবভাসিত হয়; মতান্তরে, কুথ বা গালিচাবিশেষ ) ও

( ১০.) সমন্তভদ্রক (সন্নাহপট্টবিশেষ; মতান্তরে, হস্তি-প্রভৃতির জ্বনত্রাণ)। যে আবিক পিচ্ছিল (শ্লন্ধ বা চিক্না) ও আর্দ্রবৎ প্রতীয়মান এবং যাহা সুন্দ্ম ও মৃত্—সেই প্রকার আবিক শ্রেষ্ঠ।

আট থণ্ড জোড়া দিয়া নির্মিত কৃষ্ণবর্ণের কম্বলভেদের নাম ভিক্নিনী, ইহা বৃষ্টিরোধের সাধক। অপসারক-নামক কম্বলও বর্ধবারণ, কিন্তু, ইহা থণ্ড কাপড় জোড়া দিয়া নির্মিত হয় না, একথণ্ড কাপড় হইতেই নির্মিত হয়। এই তুই প্রকার কম্বলবিশেষ নেসালৈ দেশজাত।

মৃগরোম হইতে উৎপন্ন কাপড় ছয় প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) সম্পূটিকা (জঙ্ঘাত্রাণ বা জাঙ্ঘিয়াবিশেষ), (২) চতুরশ্রিকা (চোকোণ কম্বলবিশেষ, ইহাতে দশা বা পাড় থাকে না এক ইহার কোণগুলি নয় অঙ্গুলি-পরিমিত চিহ্ন্যুক্ত থাকে,), (৩) লম্বরা (প্রচ্ছাদনার্থ ব্যবহৃত পট্টবিশেষ), (৪) কটবানক (মোটা স্থ্রেগারা নির্মিত বস্ত্রবিশেষ), (৫) প্রাবরক (চাদরবিশেষ) ও (৬) সম্ভলিকা (আন্তরণবিশেষ)।

তুকুল বা ক্ষোমবস্ত্র ( দিছ্-কাপড় ) তিন প্রকার বাঙ্গক, পৌশুক ও সোবর্গকুড্যক। তন্মধ্যে বঙ্গদেশে উৎপন্ন তুকুল শেতবর্গ ও দ্বিশ্ব হয়; এবং ( ব্রহ্মদেশের বা স্থমাত্রা-দ্বীপের ) স্থবর্গকুড্য-নামক স্থানে উৎপন্ন তুকুল প্র্যোর হ্যাতির মত বর্গবিশিষ্ট হয়। উক্ত তুক্লগুলির বান বা বুনন সম্বন্ধে বলা হইতেছে; যথা—তুকুল (১) মণিস্নিগ্নোদকবান হইতে পারে ( অর্থাৎ এই প্রকার তৃক্লের ত রপ্রশুভূতি জলে ভিজাইয়া, পরে মণিবন্ধবারা দেগুলি ঘর্ষণ করিয়া তন্ধারা ইহা বুনট করিতে হয়), (২) চতুরশ্রবান হইতে পারে ( অর্থাৎ যে তুকুল তানায় ও বানে এক প্রকার স্ত্রন্বারাই প্রস্তুত হয়), এবং (৩) ব্যামিশ্রবান-হুইতে পারে ( অর্থাৎ যে তুকুল কার্পাস তন্তর সহিত কোশেয়ক তন্তপ্রভৃতি মিশাইয়া তৈয়ার করা হয়; অথবা, যাহা ভিন্ন বর্ণবিশিষ্ট স্ত্রন্বারা তৈয়ার করা হয়ু )।

এই তুক্লগুলির মধ্যে যাহা একাংশুক, অর্থাৎ তানা ও বানে এক প্রকার তত্ত্বারা নির্মিত ( তাহাই স্ক্ষতাবশতঃ প্রশস্ত )। আবার, তুক্ল অন্ধর্মাংশুকও হইতে পারে অর্থাৎ যাহার তানায় তুইস্ত্র এবং বানে একস্ত্র থাকে; অথবা, যাহার তানায় একস্ত্র ও বানে তুইস্ত্র থাকে, এবং ঘাংশুক, ত্রাংশুক ও চতুরংশুকও হইতে পারে ( অর্থাৎ যে তুক্ল তানায় ও বানে তুই, তিন ও চারিটি স্ত্রে দারা নির্মিত হয়—স্তরাং শোষোক্ত তিন প্রকার তুক্ল উত্তরোত্তর স্থুল হইবে)।

ইহাদারা কাশী দেশে ও পুণ্ডু দেশে উৎপন্ন ক্ষোমণ্ড (রেশমী বন্ধও) ব্যাখ্যাত হইল (অর্থাৎ সেগুলিও একাংশুকাদি হইতে পারে)।

পত্রোর্ণা বা ধোতকোশেয় তিন দেশে উৎপন্ন হয়, যথা (১) মাগধিকা (মগধদেশে জাত), (২) পৌতিকা (পুণ্ডুদেশে জাত) ও (৩) সৌবর্ণকুত্যকা (স্বর্ণকুত্যদেশে জাত) (বৃক্ষপত্রে ক্রমির লালা হইতে উর্ণা উৎপন্ন হয়)। এই পত্রোর্ণার উৎপত্তিস্থান চারি প্রকার বৃক্ষ যথা—(১) নাগবৃক্ষ, (২) লিকুচ, (৩) বকুল ও (৪) বট। নাগবৃক্ষে জাত পত্রোর্ণা পীতবর্ণ, লিকুচবৃক্ষে জাত পত্রোর্ণা গোধ্মবর্ণ, বকুলবৃক্ষে জাত পত্রোর্ণা শেতবর্ণ ও অবশিষ্টটি অর্থাৎ বটবৃক্ষে জাত পত্রোর্ণা নবনীতবর্ণ হইয়া থাকে।

উক্ত পত্রোর্ণাসমূহ-মধ্যে সৌবর্ণকুডাক পত্রোর্ণা শ্রেষ্ঠ। পত্রোর্ণার বর্ণনাদারা অন্য কৌশেয় (রেশম) বস্ত্র ও চীনদেশে উৎপন্ন **চীনপট্ট**ও ব্যাখ্যাত হইল (অর্থাৎ ইহাদেরও যোনি ও বর্ণ পত্রোর্ণার সমান বুঝিতে হইবে)।

কার্পাসিক বা কার্পাসস্ত্রজাত বস্ত্রাদি নিয়বণিত সাত দেশে উৎপন্ন হইলে শ্রেষ্ঠ বলিয়া গণনীয়, যথা—(১) মাধুর—(মধুরা পাণ্ডাদেশের রাজধানী; অথবা, বিথ্যাত মথ্রা-নগরীতে উৎপন্ন), (২) আপেরান্তক (অপরান্ত বা কোষণদেশে উৎপন্ন), (৩) কালিঙ্গক (কলিঙ্গদেশে উৎপন্ন), (৪) কালিক (কাশীদেশে উৎপন্ন), (৫) বাঙ্গক (বঙ্গদেশে উৎপন্ন), (৬) বাৎসক (বৎসদেশে বা কোশাদীদেশে উৎপন্ন) ও (৭) মাহিষক (কুন্তলদেশের রাজধানী মাহিমতীতে; মতান্তবে, মহীশুরে উৎপন্ন)।

(ন্কাপ্রভৃতি হইতে আরম্ভ করিয়া কার্পাসিক পর্যান্ত) যত প্রকার রঃদ্রবাদি পৃথবি উক্ হইয়াছে তদতিরিক্ত অক্যান্ত রয়েরও প্রমাণ, মৃল্য, লক্ষণ, জাতি, রূপ, নিধান (রক্ষণপ্রকার), এবং নবকশ (অর্থাৎ আকরজাত দ্রব্যাদি হইলে ইহাদের শোধন, বেধন ও ঘর্ষণাদি কর্ম ), তথা পুরাতন বস্তুর প্রতিসংশ্বার (অর্থাৎ নবীকরণ), কর্মপ্রভ্ (অর্থাৎ রত্তাদির রঞ্জনঘর্ষণাদি কর্মপ্রহত্তা), উপশ্বর (রত্তাদি কর্মের উপথোগী শাণাদি উপকরণ দ্রব্য), দেশ ও কালান্ত্রসারে ইহাদের উপভোগ ও (দ্রব্যাদির) নাশকারী (মৃষিকাদি) হিংক্র প্রাণার প্রতীকার-সংক্ষেদ্র বিষয় (কোশাধ্যক্ষকে) জানিতে হইবে॥ ১-২॥

কোটিলীয় অর্থশাম্ব্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে কোশে প্রবেশ্য রত্বপরীক্ষা-নামক একাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৩২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### দ্বাদশ অধ্যায়

# ৩০শ প্রকরণ—আকরকর্মান্তের প্রবর্ত্তন

আকরাধাক্ষকে (থনিকার্য্যের অধ্যক্ষকে) শুল্লশাস্ত্র শোকলাদি ভূসিরা-বিজ্ঞান; অথবা যে শাল্পে তামাদি ধাতৃকে স্বর্ণাদিতে পরিণত করিবার উপদেশ প্রদত্ত আছে সেই শাল্ব), **ধাতুশান্ত্র** ( মর্গাৎ যে শাল্পে নানাপ্রকার ধাত্র শক্তি বাডাইবার উপদেশ বিহিত আছে ), রস (রসোপনিযদাথা বিজ্ঞান ), পাক ( কনকাদি ধাত্র অগ্নিপচন-কর্মদারা উৎকর্মসাধন-জান ) ও মণিরাগ ( মণিসমূহের বর্ণভেদেংপাদন কর্ম )—এই সবের জ্ঞানবিজ্ঞান জানিতে হইবে ; এবং তাঁহাকে তৎ তৎ শুল্বশাম্মাদিতে অভিজ্ঞ লোকদিগকে কার্য্যার্থ সহায়রূপে লইতে হইবে; অথবা, তাঁহাকে সেই সব দ্রব্যের কার্য্যে নিতা উল্যোগী কর্মকরগণ দ্বারা ও তৎ তৎ কর্মকরণের উপযোগী (খনিত্রাদি) উপকরণসমহ দারা মৃক্ত হইতে হইবে। ( এইরূপ সম্পদে সম্পন্ন ) আকরাধাক্ষ ভৃতপূর্ব আকরের কিট্ট ( লোহমল ), মৃষা ( স্বর্ণাদি গলাইবার ভাণ্ডাদি ), অঙ্গার ও ভশ্মরূপ চিহ্ন দেখিয়া, এগুলিকে পরীকা করিবেন; অথবা, তিনি অভূতপূর্ত্ত (নৃত্ন) আকর,—ইহার ভূমি ( মৃত্তিকা ), প্রাঞ্র ও রুসের ( জলপারদাদির ) ধাতৃ বা সারপ্রকৃতি বিবেচনা করিয়া, ইহার বর্ণ ও গৌরব (গুরুত্ব বা ভার ) অত্যর্থমাত্রায় বর্তমান থাকা দেখিয়া, এবং ইহার গন্ধ ও রস তীরভাবে থাকা লক্ষ্য করিয়া পরীক্ষা করিবেন।

ষে পর্দতসমূহের উদ্দেশ (বিচয়জন্ম) পূর্দ্ধবিচিত, সেই পর্দতসমূহের বিল ( ভূ-বিবর), গুলা (দেবথাত বিল ), উপত্যকা, লয়ন (শিলা দিল কর্মানর। নির্মিত গুলা), ও গ্রেখাতের মধ্যে প্রক্রাদশীল (প্রবহনশীল),— এবং জন্ম আমু ও তালফল, প্রহরিদ্যাভঙ্গ, হরিতাল, মধু, হিদলক, পুথরীক (খেতপর), শুক ও ময়্ব-পক্ষের বর্ণবিশিন্দ, এবং যাহার পরিসরপ্রদেশে সমানবর্ণের জল ও ওাধী লক্ষিত হয় তেমন, চিক্লণ (মন্দণ), বিশদ (পরিদার রক্মের) ও ভারিক ( শুক্র ) রস ( দ্রব) দুর হইলে, ইহাকে কাঞ্চনিক ( স্বর্ণোৎপাদক ) রস বলিয়া ব্রিতে হইবে।

যথোক কাঞ্চনিক রস জলে নিশিপ্ত হইলে, তৈলের ন্যায় বিসর্পণশীল হয়, এবং ইহা (জলের) পদ ও মল (নীচে) তলাইয়া দেয়, এবং ইহা (শতপলাত্মক) তাম্র ও রূপ্যের উপর ( একপল পরিমাণে ) নিক্ষিপ্ত হইলে ( তৎপরিমিত ) সেই তুই ধাতুকে স্ববর্ণীকরণে সমর্থ হয়।

উক্ত কাঞ্চনিক রসের সমানরপবিশিষ্ট কোন রস যদি উগ্র গন্ধ ও উগ্রাস্থাদনযুক্ত হয়, তাহা হইলে ইহাকে **শিলাজতু**-নামক দ্রব্যান্তর বুঝিতে হইবে ( অর্থাৎ
ইহা স্বর্থ নহে )।

সেই-প্রকার ভূমিধাতৃ ও প্রস্তরধাতৃকেও স্বর্ণধাতৃ ( অর্থাৎ স্বর্ণের খনি ) বলা হইবে, যাহার বর্ণ পীত, তাম বা ( মিশ্র ) তাম-পীত, যাহা বিদারিত হইলে ( মধ্যে ) নীল রেখাযুক্ত হয়, অথবা, মৃদ্য ( মৃগ্ ), মাষ, তিলের বর্ণযুক্ত প্রতিভাত হয়, ষাহা দধিবিদ্র মত ( দধির স্ক্ষ কণার মত ) বিদ্যুক্ত এবং দধিপিণ্ড-সদৃশ স্থল বিন্দু হারা আকীর্ণ; অথবা, যাহা হরিদ্রা, হরীতকী, পদ্মপত্র, শৈবাল, যক্তং ও শ্লীহার ( গুলোর ) নির্দ্দোর্য ( মতান্তরে, অনবত্য-শন্দটিকে কুঙ্কুম-অর্থে ধরা হইয়াছে ) বর্ণবিশিষ্ট; যাহা ভেদপ্রাপ্ত হইলে স্ক্ষ বালুকার রেখা, বিন্দু ও স্বস্তিক ( ত্রিকোণরূপী রেখাবিশেষ )-সমন্বিত; যাহা গুলিকা বা গুটিকাযুক্ত, দীপ্তিবিশিষ্ট; যাহা তাপিত হইলেও ক্টুটিত হয় না, কেবল বহু ফেন ও ধুম্যুক্ত হয়; এবং যাহা তাম ও রূপ্যে চূর্ণাকারে নিক্ষিপ্ত হইলে তল্বেধনে ( অর্থাৎ স্বর্ণজ্ব্রাপণে ) সমর্থ হয়।

সেই খনিজ পদার্থকেই ক্লপ্যধাতু (অর্থাৎ রূপ্য-জনক ধাতু) বলা হয়, যাহার বর্ণ শন্থা, কর্পূর, ক্ষটিক, নবনীত, ( আরণ্য ) কপোত, (গ্রামা) পারাবত, বিমলক ( খেতরক্ত মণিবিশেষ ), ও ময়্রের গ্রীবার মত বর্ণবিশিষ্ট ; ( অথবা, যাহা ) সম্রুক ( নীলমণি ), গোমেদক, ওড় ( পিগুশর্করা ) ও মৎস্যণ্ডিকার ( শর্করার ) মত বূর্ণবৃক্ত ; ( অথবা, যাহা ) কোবিদার ( তামপুশ্প বৃক্ষ ), পদা, পাটলী, কলায়, ক্ষোম ও অত্যুগী পুশ্পের মত বর্ণসমন্বিত ; যাহাতে সীসধাতু মিশ্রিত থাকে ; যাহাতে অঞ্জন ( সীসকের ক্রায় শুক্রবর্ণ ধাতুবিশেষ ) মিশ্রিত থাকে ; ও যাহা ফ্রান্ধনৃক্ত, যাহা থণ্ডিত হইলে ( বাহিরে ) খেতবর্ণ ও ( মধ্যে ) কৃষ্ণবর্ণ ও ( কিংবা, বাহিরে ) যাহা কৃষ্ণবর্ণ ও ( মধ্যে ) কেথবা, ( উক্ত সর্ব্বপ্রকার বর্ণবৃক্ত হইলেও, যাহা নানাবিধ ) রেখা ও বিন্দুরারা চিত্রিত ; যাহা মৃত্, ( কিন্তু, ) যাহা তাপিত হইলেও ফুটিত হয় না, ( বরং ) বহু ফেন ও ধুমযুক্ত লক্ষিত হয় ।

( উক্ত ও বক্ষ্যমাণ ) ধাতুসমূহের গুরুত্ব ( ভার ) যতই বর্দ্ধিত হইবে, ততই ইহাদিগের নিজগত সারের বৃদ্ধি বৃদ্ধিতে হইবে। যে সব ধাতু (অভ্যধাতুমিশ্রণে) অভন্ধ বা অনভিব্যক্ত-সন্ত, তাহাদের শোধনপ্রকার বলা হইতেছে, যথা,— তীক্ষম্ত্র (মাহ্মবের মৃত্র; মতোন্তরে, গজাখাদির মৃত্র) ও তীক্ষকার (কদলী প্রভৃতির ভন্ম) ঘারা ধাতৃগুলিকে ভাবিত করিতে হইরে; অথবা, দেগুলিকে রাজবৃক্ষ (অফ্য নাম শম্পাক), বটবৃক্ষ ও পীলৃবৃক্ষের (কন্ধ), গোপিন্ত, গোরোচনা, মহিষ, গর্দ্দভ ও করভের (উট্টবৎসের) মৃত্র ও মলপিণ্ডের সহিত মিশ্রিত করিতে হইবে; এবং উক্ত বস্তুসমূহের চূর্ব, (পরিশোধ্যমান) ধাতৃগুলিকে প্রভীবাপকরণার্থ (অর্থাৎ তাপপ্রয়োগে চূর্ণীকরণ প্রক্রিয়ার জন্ম) নিক্ষিপ্ত হইলে, অথবা, ধাতৃগুলিকে সেই দব চূর্ণছারা উপলিপ্ত করিলে সেই ধাতৃগুলি দ্রব্যান্তরের সংসর্গজ দোষ হইতে নিম্ক্তি হইয়া, নিজের আসল রূপ প্রকটিত করে, অর্থাৎ গুদ্ধ হয়।

ষব, মাষ, তিল, পলাশ ও পীলুর ভশ্ম এবং গোক্ষীর ও ছাগক্ষীরের সহিত কদলীকন্দ ও বক্সকন্দ ( স্থরণকন্দ ) মিশ্রিত করিয়া যে প্রতীবাপ অর্থাৎ তন্দারা ভাবনা দেওয়া হয়, তাহার ফলে (স্থবর্ণ ও রজতের) মৃত্তা উৎপন্ন হইতে পারে।

মধু, মধুক ( যষ্টিমধু ) ও ছাগীর ত্ন্ম, তৈল, ম্বত, গুড় ও কিন্ব ( স্থরাবীজ্ব ) এবং কন্দলী ( কচ্ছ-স্থলে উৎপন্ন ঝাটবিশেষ ) এই সব দ্রব্য— একত্র মিশ্রিত করিয়া ( তদ্দারা যে কন্ধ প্রস্তুত করা হয় ) সেই কন্ধ তিন বার নিক্ষিপ্ত হইলে ( স্থবর্ণাদি ) যে কোন ধাতুই শতসহস্র প্রকারে বিভিন্ন হইলেও মৃত্ ( নরম ) হইয়া যায়॥ ১॥

গোদন্ত ও গোশক্ষের চূর্ণ দারা প্রতীবাপ-প্রক্রিয়া প্রযুক্ত হইলে ( স্বর্ণাদি ধাতুর ) মৃত্তা লুগু হয়। (এই পর্যান্ত স্বর্ণ ও রোপ্য সম্বন্ধ প্রকরণ শেষ হইল)।

ভারী, মন্দণ ও মৃত্ প্রস্তরধাতৃ বা ভূমিধাতৃ তামের উৎপত্তিম্বান বিদ্যা বিজ্ঞাত হইতে পারে, এবং এই **ভামেধাতু**র বর্ণ পিঙ্গল (কপিল), হ্বরিত, নীল), পাটল (ঈধৎ লাল) ও লাল হইতে পারে।

সীসাধাতুর যোনি (উৎপত্তিস্থান) কাকবর্ণের মত রুফ, বা কপোতবর্ণ বা গোরোচনাবর্ণ হয়, এবং ইহাতে ধবল রেখা বদ্ধ থাকে ও ইহা তুর্গদ্ধযুক্ত থাকে।

জ্রপু ( খেতসীস )-ধাতু উষরদেশের তায় ঈষৎ-পাণ্ড্রর্ণ, অথবা, পক ইইকের বর্ণযুক্ত হইয়া থাকে।

যে স্থান কুরুম্ব (অর্থাৎ মহণ পাষাণযুক) ও পাণ্ড্-রক্তবর্ণ, অথবা সিম্নুবার পুল্পের বর্ণবিশিষ্ট তাহাকে **ত্তীক্ষ্ণধাতু**র (লোহধাতুর) উৎপত্তিস্থান বলিয়া জানা যায়।

কাকের অওসমানবর্ণ, অথবা, ভূর্জপত্রের বর্ণবিশ্বিষ্ট ধাতুভূমিকে বৈক্ষ**ন্তকধাতুর** উৎপত্তিস্থান বলিয়া জানিতে হইবে। (সাত প্রকার লোহধাতু এই পর্য্যন্ত অভিহিত হইল)।

মণিধাতু (মণির উৎপত্তিস্থান) স্বচ্ছ, স্লিগ্ধ, প্রভাযুক্ত, (অগ্নিতে তাপিত হইলে বা ট্রাদিঘারা প্রস্তুত হইলে) শব্দোৎপাদক, অত্যন্ত শীতল, ও অল্পরাগ হইয়া থাকে।

(খনিস্থ) ধাতু হইতে সম্থিত (স্বর্গাদি) তৎ তৎ ধাতুজাত কর্মান্তসম্হে (কারথানাতে) প্রযোজিত করা হইবে।

রোজকীয় আকরাব্যক্ষ) সরকারী (কর্ণান্তে) নির্মিত (ধাতুজ) ভাও (বা দ্ব্যা) সমূহের ব্যবহার (ক্রয়বিক্রয়-ব্যাপার) **একমুখ-ভাবে** (অর্থাৎ একস্থানে একচেটিয়া ভাবে) স্থাপন করিবেন, এবং অক্সস্থানে (সেই সব দ্ব্রের কারবার করা হইলে), ভাওনির্মাণকারী, ক্রয়কারী ও বিক্রয়কারীর উপর দ্প্রবিধানের ব্যবস্থাও করিবেন।

থেনিজ পদার্থের ) অপহরণকারী আকরিকের ( আকরে নিযুক্ত কর্মকরের উপর অপহৃত দ্রবোর মূল্যের আটগুণ অর্থদণ্ড দেওরাইতে হইবে; কিন্তু এই দণ্ড রত্মাপহরণের বেলায় খাটিবে না (কারণ, পরে বলা হইবে যে রত্মাপহারীর উপর বধদণ্ড বিহিত আছে )।

যে কোন (আকরিক বা অনাকরিক) পুরুষ খনিজ দ্রব্য চুরি করিবে, বা রাজার অন্তমতি ব্যতিরেকে খনিজ দ্রব্যের ব্যাপারবারা উপজীবিকা অর্জন করিবে তাহাকে ধরিরা আনিয়া (থনির) কর্ম করাইয়া লইতে পারা যাইবে এবং (পেহদণ্ডের পরিবর্ত্তে) যাহার উপর অন্দণ্ডরূপ উপকার প্রদর্শিত হইলেও সে অর্থন্ত দিতে পারে না, তাহাকে দিয়াও সেই ভাবে খনির কার্য্য করাইয়া লওয়া যাইতে পারিবে।

ষে (রাজকীয়) আকরকর্ম ব্যয়ভারিক (অর্থাৎ বহুধনব্যয়সাধ্য) ও ক্রিয়া-ভারিক (অর্থাৎ অনেক লোকের প্রয়ন্ত্রাধ্য), সেই কর্ম (অন্তের সঙ্গে) ভাগের ব্যবস্থা করিয়া, অথবা, প্রক্রয়ের (আকরস্থ জব্যের মাজদেয় কতক অংশের পরিপণনের) ব্যবস্থা করিয়া, অন্তের হস্তে দিতে পারা যাইবে। আর যে আকরকর্ম উক্ত ব্যয় ও ক্রিয়াসম্বন্ধে লাঘবিক (অর্থাৎ বাহা করাইতে লগুব্যয় ও লগুপ্রয়ের সম্ভাবনা আছে) তাহা (আকরাধ্যক্ষ সরকার-পক্ষে) স্বয়ং করাইবার ব্যবস্থা করিবেন।

লোহাধ্যক্ষ (অর্থাৎ স্থবর্ণ ও রজত ব্যতীত তামাদি অন্য লোহ বা ধাতৃর অধ্যক্ষ) তাম, দীস, অপু, বৈকৃত্তক, আরক্ট (পিতল), বৃত্ত (ধাতৃবিশেষ), কংস (কাঁসা), ও তাল—এই সব লোহ বা ধাতৃর জন্ম কর্মান্ত (কারথানা), করাইবেন, এবং এই সব লোহজাত ভাও বা দ্রব্যসমূহের (ক্রয়বিক্র্যরূপ) ব্যবহার বা ব্যাপারও করাইবেন।

( সম্প্রতি লক্ষণাধ্যক্ষের অর্থাৎ যে অধ্যক্ষ রূপা ও তামার মুদ্রা-নির্মাণকার্য্যের অধ্যক্ষ তাঁহার ব্যাপার ও ঐরপ মুদ্রানির্মাণের প্রকার বলা হইতেছে। তিনিই আধুনিক কালের টক্ষশালা বা টাকশালার অধ্যক্ষ।) রূপনিষ্ঠিত কপ বা মূদ্রার (রূপ = রূপিয়া আধুনিক) ভেদ চারি প্রকার—যথা, পণ ( = আতুমানিক আধুনিক টাকা), অৰ্দ্ধপণ ( = আধুলী), পাদপণ ( = দিকি) ও অঞ্ডাগপণ (= তুয়ানি)—এই চারি প্রকার মূদ্রা বা সিক্ষা লক্ষণাধ্যক্ষ প্রস্তুত করাইবেন এবং এই ( ষোড়শমাধাত্মক ) পণ প্রস্তুত করিতে হইলে, ইহাতে চারি মাষ প্রমাণ তাম, ও তীক্ষ (লোহ), ত্রপু, সীস ও অঞ্জন (রসাঞ্জন) এই চারি প্রকার ধাতুর অন্যতমের একমাষপরিমিত বীজ লইয়। (অবশিষ্ট একাদশ মাষপরিমিত আসল রূপোর সহিত মিশাইয়া) প্রণ্-নামক রূপার সিক্ষা এবং (উক্ত প্রকারেই) অদ্ধপণ-নামক, পাদপণ-নামক ও অস্ট্রভাগপণ-নামক রূপার সিকাসমূহ নির্মাণ করাইদেন। আবার, (উপরি উক্ত রূপ্য নির্মিত রূপ বা সিকাগুলির পাদ বা চত্গাংশরূপে ব্যবহারের যোগ্য ) (মতান্তরে, পাদপণ-নামক রূপ্যরূপের চতুর্থাংশরূপে ব্যবহারের যোগ্য ) চারি প্রকার তাম্রুপের অর্থাৎ তাম্রসিকার কথা বলা হইতেছে। লক্ষণাধ্যক্ষ উক্ত সিকাগুলির অথবা উক্ত পাদপণ-নামক সিকার চতুর্থাংশম্ল্যের মাষক-নামক তামরূপ বা তামসিকা প্রস্তুত করাইবেন (ইইাতে ধোলভাগের মধ্যে চারিভাগ রূপা, তীক্ষাদি ধাতুচতুইয়ের অন্যতমের একভাগ ও বাকি একাদশভাগ তাম থাকিবে ), এবং ইহার ( অর্দ্ধপ্রমাণ-যোগে ) অর্দ্ধমাষক ( চতুর্ত্তাগপ্রমাণ-যোগে ) **কাকনী** ও ( অইতাগপ্রমাণ-যোগে ) **অর্দ্ধকাকনী-নামে** পরিচিত তাম্ররূপ বা তামসিকাও নির্মাণ করাইবেন ( স্থতরাং মাধক, কাকণী ও অর্দ্ধকাকণীর মৃল্য আধুনিক কালে প্রচলিত ম্জার সিকি, ছয়ানি, আনি ও আধ-আনির মত মূদ্রাও হইতে পারে; কিংবা মতাস্তরে, আনি, আধ-আনি, পয়সা ও আধ-পয়সার মত মুদ্রাও হইতে পারে )।

ক্লপদর্শক (অর্থাৎ সিকার সারাসারতা-পরীক্ষাকারী রাজপুরুষ) আদান ও প্রদানরূপ ব্যবহারের প্রয়োজনার্থক প্রণযাত্তা (অর্থাৎ পণপ্রভৃতি সিকার সাধারণ্যে চল্তি ) নির্দেশ করিবেন এবং কোন্পণ (ও অস্থান্থ সিকা ) রাজ-কোশে প্রবেশনযোগ্য তাহাও নির্দেশ করিবেন। (রাজকীয় টক্ষশালায় সাধারণ লোক রূপ্য ও তাম আনিয়া দিয়া তাহা বারা ব্যবহারিক সিকা প্রস্তুত করাইয়া লইতে আসিলে এই রূপদর্শক ইহার থরচ বরাদ্দ করিবার সময়ে 'রূপিক', 'ব্যাজী' ও 'পারীক্ষিক' নামক তিন প্রকার কর আদায় করিবেন)। (রূপদর্শক) প্রতি ১০০ পণ নির্মাণের জ্মু ৮ পণ রূপিক-নামক কররূপে (ইহা কর্মকর্রদিগের ভৃতিরূপে গ্রহীতব্য মনে হয়), শতকরা পাঁচ পণ ব্যাজী-নামক কররূপে (ইহা রাজভাগ বলিয়া প্রতীয়মান) ও শতকরা আটভাগ (অর্থাৎ ১২ই পণ, ইহা পরীক্ষকের ভৃতি বলিয়া বোদ্ধব্য) পারীক্ষিক-নামক কররূপে স্থাপনা করিবেন। (এই শেষোক্ত অষ্টভাগিক কর যে না দিবে) তাহার উপর রূপদর্শক ২৫ পণ দণ্ড ব্যবস্থা করিতে পারিবেন; কিন্তু, এই দণ্ড, যে ব্যক্তি সিকার নির্মাণকারী বা ইহার ক্রেয় ও বিক্রয়কারী ও পরীক্ষক, তাঁহার উপর প্রবৃত্তিত হইবে না (মতান্তরে, এই বাক্যাটির ব্যাখ্যা এইরূপ—অন্য স্থানে সিকা নির্মিত করাইলে, অপরাধী হইবেন তৎকর্তা, তৎক্রেতা, তিহিক্রেতা ও তৎপরীক্ষক এবং তাঁহাদের প্রত্যেকের উপর রূপদর্শক ২৫ পণ দণ্ড বিধান করিতে পারিবেন)।

খনির অধ্যক্ষ শদ্ধ, হীরক, মণি, মৃক্তা, প্রবাল ও ক্ষারদ্রব্যের কর্মান্ত (পাটন, ঘ্র্ণণ, রঞ্জন, খনন শোধন ও উৎপাদনাদির জন্ম কার্থানা) নির্মাণ করাইবেন ও (উৎপাদ্ম পণ্যের) পণনব্যবহারের (ক্রয়বিক্রয়-ব্যাপারের) বন্দোবস্ত করাইবেন।

লবণাধ্যক্ষ, ভাগে অপিত আকরলভ্য লবণ ও প্রক্রয় বা পরিপণসর্ত্তে লভ্য লবণ পাকযুক্ত ( অর্থাৎ ব্যবহারের যোগ্য হইয়া নিপ্পন্ন ) হইলে, তাহা মথাকালে সংগ্রহ করিবেন, পএবং তিনি লবণবিক্রয়-লন্ধ মূল্য রূপ বা নগদ টাকাকারে এবং ইহার ব্যাজীও ( অর্থাৎ মানব্যাজী পুনর্বার মাপিবার সময়ে দ্রব্যের যে উনতা হয় তংপ্রতিকারার্থ যতথানি বেশী লওয়া হয়—মাহাকে আমরা 'কাও' বলি ) সংগ্রহ করিবেন।

জ্মাগস্তু ( অর্থাৎ প্রদেশ হইতে আগত ) লবণের কারবারীকে ( রাজকোশের জন্ম মৃল্যের ) ষষ্ঠভাগ দিতে হইবে। এই ভাগ ও (মান ব্যাজীরূপ ) বিভাগ ( রাজকোশের জন্ম ) দেওয়া হইলেই আগস্তুলবণব্যবহারী তাহা বিক্রেয় করিতে পারিবে। (সেই ব্যাপারীকে আরও দিতে হইবে মৃল্যের ) শতকরা গাঁচ পণ ব্যাজী-নামক কর ( অষ্টভাগিক ? ), রূপ-নামক কর, ও শতকরা আট পণ রূপিক-

নামক কর। (আগন্ত লবণের) ক্রয়কারীকেও (রাজবিহিত) শুক্ষ দিতে হইবে, এবং তাহাকে রাজপণ্যের (অর্থাৎ লবণাদি যাহা রাজার নিজ দেশে লকণাধ্যক্ষের পরিদর্শনে নির্মিত হয় তাহার) ছেদ বা ক্ষতির অনুরূপ (তৎপূরণার্থক) বৈধরণ-নামক করও দিতে হইবে। (রাজপণ্য থাকা সত্ত্বেও) অন্যস্থানে লবণ ক্রয়কারীকে শতকরা ৬ পণ দণ্ডও দিতে হইবে।

মোটিপ্রভৃতি সহ ) বিমিশ্রিত (দোষযুক্ত ) লবণের ব্যবহারী বা ব্যাপারীকে উত্তম সাহস দণ্ড প্রদান করিতে হইবে, এবং যে ব্যক্তি রাজার অন্থমতি ব্যতীত লবণের উৎপাদক হয়, তাহাকেও সেইরূপ দণ্ড দিতে হইবে; কিন্তু, বানপ্রস্থাদিগের বেলায় এই নিয়ম খাটিবে না (অর্থাৎ তাঁহারা রাজান্তমতি ব্যতিরেকেও লবণ উৎপাদন করিয়া নিজ উপযোগে আনিতে পারিবেন)। শ্রোত্রিয়, তপস্বী ও বিষ্টিরা (অর্থাৎ রাজপ্রয়োজনমতে যাহাদিগকে হঠাৎ ডাকাইয়া কাজ করাইতে হয় তাহারা) নিজ খাওয়ার জন্ম লবণ (বিনা শুল্কে) তৈয়ার করিয়া লইতে পারিবেন। ইহা ছাড়া অন্যান্ম (কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষ-প্রকরণে উক্ত) লবণবর্গ ও ক্ষারবর্গের অন্তর্গত পদার্থের উৎপাদক প্রভৃতিকে শুক্ত দিতে হইবে।

এই প্রকারে ( আকরাধ্যক্ষ ) মূল্য, বিভাগ, ব্যাজী, পরিঘ (পারীক্ষিক কর ? ) অত্যয়, শুল্ক, বৈধরণ, দণ্ড, রূপ ( নগদ টাকা, অথবা, শতকরা আটপণাত্মক কর ) ও রূপিক এবং নানারূপ খনি হইতে প্রাপ্ত ছাদশবিধ ধাতু ও ( তাহা হইতে উৎপাদিত ) পণ্য সংগ্রহ করিবেন ॥ ২-৩॥

কোশ আকর হইতেই উৎপন্ন হয় এবং কোশ হইতেই দণ্ড বা সেনার উন্নতি ঘটে; কোশভূষিতা পৃথিবী (ভূমি) কোশ ও দণ্ডের সাহায্যেই লাভ করা যায়॥ ৪॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিক্**র**ণে আকরকর্মান্তের প্রবর্তন-নামক দাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৩৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### ত্রয়োদশ অধ্যায়

# ৩১শ প্রকরণ—অক্ষশালাতে স্থবর্ণাধ্যক্ষ

স্থৃবর্ণাধ্যক্ষ ( অর্থাৎ যে প্রধান পুরুষ স্থর্বরজ্বাদির সংশোধন প্রভৃতি কার্যোর নিরীক্ষণে অধিকারী ) স্থর্ব ও রজতের ( অলঙ্কারাদি ঘটনক্রিয়ার ) কারথানার জন্ম এমন অক্ষণালা ( স্থ্রবাদির সংশোধনাদি কর্মের উপযোগী স্থান ) নির্মাণ করাইবেন যাহাতে পরস্পার-সম্বন্ধরহিত গৃহযুক্ত চতুঃশাল থাকিবে এবং যাহা ( রক্ষাকার্য্যের সৌকর্দ্যার্থ ) একটি মাত্র দার-বিশিষ্ট হইবে । তিনি ( স্থ্রবাধ্যক্ষ ) বিশিখা-মধ্যে ( স্থবর্ণাদির ব্যবসায়ে বা ব্যাপারের জন্ম নির্দিষ্ট রথ্যামধ্যে ) শিল্পবান ( অর্থাৎ বক্ষ্যমাণ ক্ষেপণাদি শিল্পকার্যে নিপুণ ), কুলীন ও বিশ্বাসী সৌবর্ণিককে ( স্থব্দারকে নিজ্ব অধীন করিয়া ) স্থাপিত বা নিযুক্ত করিবেন ।

স্বর্ণ (পাঁচ প্রকার বর্ণযুক্ত হইয়।) পাঁচ প্রকারের হইতে পারে, ধথা—
(১) জাদ্দ্রন (ইহা জস্ফলের রসসমানবর্ণ এবং ইহা মেরুপর্বত হইতে উদ্বৃত্ত জস্কুনদীতে উৎপন্ন), (২) শাতকুম্ব (ইহা পদ্মের কিঞ্কুলসমানবর্ণ এবং ইহা শতকুম্বপর্বতে উৎপন্ন), (৩) হাটক (ইহা ক্রগ্রুকুম্বর্ব এবং ইহা হাটকনামক আকর হইতে উৎপন্ন), (৪) বৈণব (ইহা ক্রিকার-পুম্পবর্ণ এবং ইহা বেণুপর্বতে উৎপন্ন ও (৫) শঙ্গিশুক্তিজ (ইহা মনঃশিলার বর্ণবিশিষ্ট এবং ইহা প্রক্রিক্তি বা স্বর্ণভূমিতে উৎপন্ন)। এই (পাঁচ প্রকার) স্বর্ণ-ই আবার বিবিধ হইতে প্রারে—যথা—(১) জাতরূপ (স্বয়ং গুদ্ধ অর্থাৎ স্বর্ণরূপেই উৎপন্ন), (২) রসবিদ্ধ (রস বা পারদ্যোগে কাঞ্চনীক্রত) ও (৩) আকরোদগত (অগুদ্ধরপ্র থনি হইতে প্রাপ্ত)।

ষে স্বর্ণ (পদ্মের) কিঞ্চন্ধবর্ণ, মৃত্র (নরম), স্লিগ্ধ (মৃত্রণ বা অরুক্ষ), স্মনাদি (নাদ বা শব্দরহিত—'অন্তনাদি'-পাঠে 'দীর্ঘকালব্যাপী নাদশীল' এইরূপ ব্যাখ্যা) ও ভাস্বর, তাহাই শ্রেষ্ঠ বা উত্তম স্তবর্ণ। ষাহা লোহিত-পীতবর্ণ তাহা মধ্যম স্বর্ণ। (এবং) ষাহা লোহিতবর্ণ তাহা স্থধম বা নিরুষ্ট স্বর্বণ।

( স্বর্ণশোধনের প্রকার বলা হইতেছে—) শ্রেষ্ঠ স্বর্ণসমূহের মধ্যে যে স্কর্ব পাণ্ডবর্ণ ও শ্বেতবর্ণ তাহাকে অপ্রাপ্তক-সংজ্ঞায় আখ্যাত করা হয় ( অর্থাৎ এই দ্ধপ স্বর্ণ অপদ্রব্যমিশ্রিত থাকায় নিজ স্বরূপ প্রাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত ইহার এই অপ্রাপ্তক সংজ্ঞা)। যে অপদ্রব্যের জন্ম সেই স্বর্গ অপ্রাপ্তক বলিয়া গৃহীত, সেই অপদ্রব্যের চারিগুণ সীস ইহাতে ঢালিয়া ( সীসক্ষয় না হওয়া পর্যন্ত ) ইহা শোধন করিতে হইবে। এই ( সীসমিশ্রণে ) যদি সেই স্বর্গ ভিত্মমান হয় ( ফাটিয়া যায় ), তাহা হইলে ইহাকে শুদ্ধ গোময়বারা অগ্নিতে তাপিত করিতে হইবে। আবার যদি সেই স্বর্গ নিজ রক্ষতার জন্ম ফাটিয়া যায়, তাহা হইলে তৈল ও গোময়ে ইহার নিষেচন করিতে হইবে ( অর্থাৎ তদ্ধারা ভাবনা দিতে হইবে )।

আকর হইতে উদগত স্থবর্ণ যদি সীস মিলাইয়া শুক করার সময়ে ফাটিয়া যায়, তাহা হইলে ইহাকে পাকা পত্রে পরিণত করিয়া গণ্ডিকাতে (কাষ্ঠফলকে) রাখিয়া (কাষ্ঠঘারা) কুটিত করিতে হইবে; অথবা, ইহাকে কন্দলী (বল্লিবিশেষ), বক্স (জাবের) ও কন্দের (পদ্মম্লের) কন্ধ বা কাথে নিষেচিত করিতে হইবে (অর্থাৎ তাহাতে ভিত্তমানতা দূর করার জন্ম ভিজাইয়া রাখিতে হইবে)।

রূপ্য চারি প্রকার, যথা—(১) তুথোদগত (অর্থাৎ তৃথপর্বতে উৎপন্ন—ইহার রঙ্ যুঁইফুলের মত), (২) গোডিক ( অর্থাৎ গোড়দেশে উৎপন্ন—ইহার রঙ্ তগরফুলের মত), (৩) কান্তুক ( অর্থাৎ কম্বপর্বতে উৎপন্ন) ও (৪) চাক্রবালিক ( অর্থাৎ চক্রবাল-নামক আকরে উদ্ভূত, ইহার ও পূর্ববত্তী প্রকারের রূপ্যের রঙ্ কুন্দপুশের মত)। যে রূপ্য শেত, স্মিগ্ধ ও মৃত্ত (কোমল), তাহাই শ্রেষ্ঠ রূপ্য। উক্ত তিন গুণের বৈপরীত্যে ( অর্থাৎ রূপ্য যদি কাল, রক্ষ ও থর হয়, তাহা হইলে ) রূপ্য ফোটনদোষে দ্বিত হয়। সেইরূপ ছুষ্ট রূপ্য ইহার চতুর্থ ভাগ সীসন্বারা শোধিত করিতে হয়।

যে রূপ্যে বুদ্বুদের মত বিন্দু উত্থিত হয় এবং যাহা স্বচ্ছ, রুচি বা চু চমকযুক্ত ও দধির বর্ণবিশিষ্ট তাহাও শুদ্ধ রূপ্য।

ষোলমাষপ্রমাণাত্মক, স্বভাবশুদ্ধ, হরিদ্রাভঙ্গের বর্ণবিশিষ্ট স্বর্ণহারা নির্মিত স্থবর্ণ-নামক মুদ্রার নাম শুদ্ধ বর্ণক। (এই শুদ্ধ বর্ণক ব্যতীত আরও ধোল প্রকার মিশ্র বর্ণক হইতে পারে, যথা—) এই শুদ্ধ বর্ণকে এক কাকণী (এক মাষের চতুর্থাংশ) পরিমিত তাম মিশাইয়া, তাহা হইতে তৎপরিমিত শুদ্ধ স্বর্ণ কমাইয়া দিলে এবং ক্রমশঃ ধোলকাকণী পর্যান্ত অর্থাৎ চারিমাষ পর্যান্ত তাম মিশ্রণ ও শুদ্ধস্বর্ণাপদারণের কার্য্য চালাইয়া আরও ধোল প্রকার (মিশ্র) বর্ণক প্রান্ত হওয়া যায় (অর্থাৎ আদল দোনার নাম শুদ্ধ বর্ণক ইহা

এক প্রকার; ও থাদের সোনার নাম মিশ্র বর্ণক, ইহা বোল প্রকার; অতএব, মোটের উপর সপ্তদশ প্রকার বর্ণক হইতে পারে)।

(বর্ণকের পরীক্ষাকয়ে নিকষপাষাণে কষ্টিপাথরে) প্রথমতঃ (শুদ্ধ) স্ববর্ণের নিকষ বা ঘর্ষণ রেথাপাত করিয়া, তাহার পরে তাহাতে বর্ণিকার (অর্থাৎ থাদঘারা অশুদ্ধ স্বর্ণের) রেথাপাত করিতে হইবে। নিকষপাষাণের অনীচ ও অমুচ্চ স্থানে রেথাপাত যদি সমানরাগ-বিশিষ্ট হয়, তাহা হইলে স্বর্ণ স্বষ্ট নিকষিত হইয়াছে, অর্থাৎ নিকষপাষাণে পরীক্ষা ন্যায়্য হইয়াছে, বলিয়া গৃহীত হইবে। আর যদি (ম্বর্ণবিক্রেতা) নিকষপ্রস্তরে গাঢ়ভাবে স্বর্ণ ঘরে, কিংবা যদি ম্বর্ণক্রেতা তাহাতে অগাঢ়ভাবে (ধীরে) স্বর্ণ ঘরে, অথবা যদি (বিক্রেতা বা তৎপক্ষীয় পরীক্ষক) নিজের নথমধ্যে স্থিত কোন গৈরিকের (পীত ধাতুর) চুর্ণ স্বর্ণের রেথাপাতে নিক্ষেপ করে—তাহা হইলে এই তিন প্রকার কার্য্যকে উপধি বা কপটকার্য্য বলিয়া জানিতে হইবে। (ক্রেতার পক্ষে আরও একপ্রকার উপধি বা ব্যাজের কথা বলা হইতেছে, যথা—) গোম্ব্রে ভাবিত জাতিহিন্দুলক-নামক পদার্থ, বা পুস্পকাসীস-নামক (পীতবর্ণ) হরিতালবিশেষ বারা লিপ্ত হস্তাগ্র স্পর্ণ করিলে স্বর্ণ শ্বেতবর্ণ (অর্থাৎ হীনবর্ণ) ধারণ করে।

নিকষপাষাণে ( স্বর্ণের ) রেথারাগ যদি বছকেদর যুক্ত, স্লিয়, মৃত্ ও দীপ্তিযুক্ত হয়, তাহা হইলে ইহা শ্রেষ্ঠ নিকষরাগ। মৃগের বর্ণবিশিষ্ট কালিক ( স্বর্ণাৎ কলিকদেশে উৎপন্ন ) পাষাণ ও ভাপী-পাষাণ ( তাপীনায়ী নদীতে উৎপন্ন পাষাণ ) শ্রেষ্ঠ নিকষপাষাণ বলিয়া খ্যাত। সমানরাগ গ্রহণে যোগ্য স্বর্ণাৎ স্বর্ণের ঠিক বর্ণকগ্রাহী নিকষপাষাণ, বিক্রয়লারী ও ক্রয়কারী উভয়ের স্বর্ঞ্জ হয়িতবর্ণযুক্ত নিকষ ( স্বপন্নপ্ত রাগোৎকর্ম প্রাক্তে। গুল্কচর্ম্মের মত খরগুঁদ্ধ হরিতবর্ণযুক্ত নিকষ ( স্বপন্নপ্ত স্বর্ণেরও) রাগোৎকর্ম প্রদর্শন করে, বলিয়া ইহা স্বর্ণবিক্রেতার স্বর্ঞ্জ হয়ি থাকে। স্বার যে নিকষপাষাণ দৃঢ়, খর (খর্থরে ) ও নানাপ্রকার বর্ণবিশিষ্ট, তাহা ( উৎকৃষ্ট স্বর্ণেরও) যথান্থিত রাগ প্রদর্শন করে না বলিয়া, ইহা স্বর্ণক্রেতার পক্ষে স্বর্ঞ্জ হইয়া থাকে।

ছিল স্বর্ণথণ্ড যদি চিক্কণ (স্থিম), (অন্তর ও বাহিরে) সমানবর্ণ, মক্ত্রণ, মৃত্রু ও দীপ্তিশীল হয়, তাহা হইলে সেই ছেদ বা থণ্ড শ্রেষ্ঠ বলিয়া জ্ঞেয়।

( স্বর্ণ-থণ্ড অগ্নিতে ) তাপিত করিলে যদি ইহা অস্তরে ও বাহিরে সমানবর্ণ থাকে, অথবা ( তাপনের পূর্ব্বে ও পরে ) ( পদ্মের ) কিঞ্জব্বের বর্ণবিশিষ্ট থাকে, কিংবা কুরগুক পুম্পের বর্ণযুক্ত থাকে, তবে ইহা শ্রেষ্ঠ বলিয়া পরিক্ষাত হইবে। ( স্বর্ণাদি ধাতুর ) তুলাপরিচ্ছেনের বিধান পৌতবাধ্যক্ষ ( তুলামান-পৌতব ) প্রকরণে বলা হইবে। (সেই প্রকরণে উক্ত ) উপদেশক্রমে রূপ্য ও স্থবর্ণের দান ও গ্রহণ বিধেয় হইবে।

যে ব্যক্তি অনাযুক্ত অর্থাৎ অকশালাতে কোন প্রকার কাজ করে না, সে দেখানে যাইতে পারিবে না। (এই নিষেধসত্তেও) কোন (অনাযুক্ত) ব্যক্তি যদি তদভিমুখে যায়, তাহা হইলে তাহার সর্বান্ত অপহরণ করিয়া লইতে হইবে। অথবা, যদি আযুক্ত ( অর্থাৎ অক্ষশালায় কার্য্যকারী ) ব্যক্তিও রূপ্য ও স্বর্ণ লইয়া শেখানে যায়, তাহা হইলে ( তাহার হস্তন্থিত ) রূণ্য ও স্বর্ণ দণ্ডরূপে তাহার নিকট হইতে লওয়া যাইতে পারে। ( অক্ষণালাতে প্রবেশকারী ও দেখান হইতে নিক্রমণকারী ) কাঞ্চনকারু ( অর্থাৎ রসাদিবেধ দ্বারা অন্তধাতুর স্বর্ণীকরণশিল্পী ), পৃষতকাক (স্বৰ্ণগুলিকাদি স্ক্ষশিল্পকারী) বঙ্গুকাক (স্বৰ্ণাদি নিৰ্শ্বিত পট্টপত্রাদির শাণপালিস করার কার্য্যে নিপুণ শিল্পী) ও তপনীয়কারুরা ( অগ্নিতাপযোগে নানাজাতীয় ভূষণনিশ্মাণকারী শিল্পীরা ) এবং যাহারা গ্রায়ক (ভন্ত্রাগ্রায়ক), পরিচারক ও ধূলিধাবক (অর্থাৎ ধূলিশোধক) তাহারা সকলে তাহাদের বস্ত্র, হস্ত ও (শরীরের) গুহুস্থান পরীক্ষা করাইয়া (সেথানে) প্রবেশ করিবে ও ( সেখান হইতে ) বাহিরে যাইবে। ( কারুপ্রভৃতি ) এই সব লোক-দিগের সর্বপ্রকার কর্মোপকরণ ও অসমাপ্ত (শিল্প-) দ্রবাসমূহ সেই স্থানেই ( অকশালাতেই ) থাকিবে ( অর্থাৎ বাহিরে আনিতে দেওয়া হইবে না )। কারুরা কার্য্য করার জন্ম প্রয়োজনীয় যে স্থবর্ণ গ্রহণ করিবে, তাহা ও (তাহা হইতে প্রস্তুত ) শিল্পপদার্য ( স্থবর্ণাধ্যক্ষের অধীন ) করণ (বা লেখক )-গণের মধ্যে (তৎসমকে) তুলাতে ওজন করিয়া (তাহাদের পুস্তকে ওজন দেখাইয়া ) কাক্তপ্রভৃতিকে (স্বর্ণাধ্যক্ষ) দিবেন। প্রতিদিন সায়ংকালে ও° প্রাতংকালে কর্লা (সৌবর্ণিক) ও কার্ম্বিতার (স্বর্ণাধ্যক্ষের) মূলাদারা চিহ্নিত করিয়া ( ভাণ্ডাগারের করণ ) তাহা মজুত রাখিবে ( ও দেথান হইতে দিবে )।

(স্বর্ণাদির) কর্ম তিন প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) ক্ষেপণকর্ম,
(২) গুণকর্ম ও (৩) ক্ষুদ্রককর্ম। (তন্মধ্যে) কোন আভূষণে কাচাদি মণির
সংযোজনকর্মের নাম ক্ষেপণকর্ম। (স্বর্ণের) স্ত্রাদিধার। অলহারাদি
প্রথনের নাম গুণকর্ম। (কটকাঙ্গুলীয়কাদি) ঘনকর্ম, রন্ত্রগুক্ত (ভূঙ্গারাদিনির্মাণ) স্ব্রিরকর্ম ও গুটকাদিযুক্ত (পত্রভঙ্গাদিরচনা) পৃষ্তাদিযুক্ত কর্ম—
এই তিন প্রকার কর্মের নাম ক্ষুদ্রককর্ম।

স্বর্ণে কাচাদি মণি সংযোজন করিবার সময়ে মণির পঞ্চম-তলভাগপর্যান্ত কাঞ্চল অর্পণ করিতে হইবে এবং ইহার দশম ভাগ কটুমান-নামক (মণির চারিদিকে মণির দৃঢ় বন্ধনের জন্ম) স্বর্ণপিট্ট দিতে হইবে। (রত্তের আধারবন্ধকার্য্যে সৌবর্ণিকের স্বর্ণাদির অপহরণ সন্তাব্যা, তিছিষয়ে স্থবর্ণাধ্যক্ষের করণীয় নির্দিষ্ট হইতেছে, যথা—) (সেই কার্য্যে) রূপ্যের প্রয়োজন হইলে তাহাতে ইহার এক চতুর্থাংশ তাম মিশাইয়া ততটুকু রূপ্য অপহত হইতে পারে এবং (সেই কার্য্যে) স্বর্ণের প্রয়োজন হইলে তাহাতেও ইহার এক চতুর্থাংশ রূপ্য মিশাইয়া ততটুকু স্বর্ণ অপহত হইতে পারে—অথচ এই কার্যাহারা রূপ্য ও স্বর্ণ শুদ্ধ বলিয়া সংস্কারপ্রাপ্ত হইতে পারে। এই জন্য স্বর্ণাধ্যক্ষকে এই প্রকার জুয়াচ্রি রক্ষা করিতে হইবে।

আবার পৃষতকাচকর্মে অর্থাৎ গুটিকামিশ্রকাচকর্মে ম্বর্ণকে (পাঁচ ভাগ করিয়া ইহার) তিন ভাগ পরিভাণ্ডের (অর্থাৎ পদাদি আকার নির্মাণের) জন্য এবং তুই ভাগে বাস্তকের (অর্থাৎ দ্রব্যের আধারপীঠ বন্ধের) জন্য প্রযোজ্য হইতে পারে। অথবা, (মণিগুলি মুল হইলে) ম্বর্ণকে (সাত ভাগ করিয়া ইহার) চারিভাগ বাস্তকের জন্য এবং তিন ভাগ পরিভাণ্ডের জন্য প্রযোজ্য হইতে পারে।

বুট্ কর্ম অর্থাৎ তামরক্ষতাদিবারা নির্মিত ঘনপত্রাদি কর্মসগন্ধে বলা হইতেছে, (১) তামনির্মিত ভাওে সমান ( অর্থাৎ তামপুলতুলাপলপরিমিত ) স্থবর্পত্র সংযোজিত করা যাইতে পারে। (২) রূপ্যনির্মিত ভাও যদি ঘন ( অর্থাৎ অঙ্গুলীয়কাদিরপ ) হয়, অথুবা, ঘনস্থবির ( স্থালীকলসাদিরপ ঘন অথচ ফাঁপা ) হয়, তাহা হইলে ইহাকে রূপ্যের অর্ধপরিমিত স্থবর্গরারা অবলিপ্ত বা শ্লেষিত করা যাইতে পারেণ। (৩) এবং ( সেই রূপ্যভাণ্ডের ) এক চতুর্থাংশ স্থবর্ণ লইয়া ইহা বালুকা ও হিঙ্গুলকের রস বা চূর্ণের সহিত মিশাইয়া তদ্ধারা সেই রূপ্যভাণ্ড বাসিত বা ভাবিত করা যাইতে পারে।

(সম্প্রতি তপনীয় কর্ম নির্মণিত হইতেছে।) (পদ্মকিঞ্জাদির) উত্তম-বর্ণবিশিষ্ট ও (রিগ্রদীয়) উত্তম রাগবিশিষ্ট শ্রেষ্ঠ তপ্রশীয় (অর্থাৎ অলহারাদি নির্মাণের জ্বগ্র ঘটনীয় গুল্ধ কনক), এবং যে স্বর্থ অগুল্ধ, তাহা সমপরিমিত দীসদারা শোধিত করিয়া, কিংবা ভোট ছোট পত্র করিয়া গোময়ের অগ্নিতে) ইচা দগ্ধ করিয়া, সির্দেশের মৃত্তিকার সহিত উজ্জালিত করিয়া লইলে তাহাও নীল, পীত, খেত, হরিত ও শুকশিশুর বৃণ্যুক্ত (অলহারাদি নির্মাণের) প্রকৃষ্টি

বা কারণ হইতে পারে। এই প্রকার স্বর্ণের সম্বন্ধে তীক্ষ্-নামক ধাতুও নীলাদি-বণস্থের প্রকৃতি হইতে পারে, কিন্তু, এই তীক্ষ ময়ুরের গ্রীবার মত আভাবিশিষ্ট, ভঙ্গে শুক্ল ও চিমিচিমায়িত (অর্থাৎ অত্যন্ত ভাষর) হওয়া চাই। ইহাই তথ্য করিয়া চ্লীক্লত হইলে, এক কাকণীপরিমিত সেই চ্লি স্বর্ণে প্রক্ষিপ্ত করিলে সেই স্বর্ণে রাগ বা রঙ্ বাদ্দত হইবে (অর্থাৎ এইরূপ তীক্ষ রঞ্জকর্ত্রের পরিণত হইবে)।

অত্যন্ত শুদ্ধ তার বা রজতভ উক্ত নীলাদি বর্ণের প্রকৃতি হইতে পারে, কিন্তু, এই রজত নিম্নবর্ণিত উপায়ে শুদ্ধ করিছে হয়, য়থা—প্রথমতঃ, ইহাকে অন্থিতুথে (অর্থাৎ অন্থিচ্প মিশ্রিত মৃত্তিকাদারা নির্মিত ম্যাতে বা পাত্রে) চারি বার, সমান সীসমিশ্রিত মৃত্তিকাদারা নির্মিত ম্যাতে চারি বার, শুদ্ধ তৃথে (ভটুস্বামীর মতে, কটুশর্করানির্মিত ম্যাতে) চারি বার, কপালে বা শুদ্ধ মৃত্তিকানির্মিত ম্যাতে তিন বার এবং গোময়নির্মিত ম্যাতে ছই বার—এইভাবে ম্যাতে সংগ্রদশ বার আবর্ত্তিত করিয়া সৈন্ধবিকার (অর্থাৎ সিন্ধুদেশের লবণযুক্ত মৃত্তিকার) সহিত উজ্জালিত করিলে, ইহা শুদ্ধ হয়। এই শুদ্ধ তার বা রজতের এক কাকণী স্বর্ণে প্রক্রিপ হইলে, এক কাকণী পরিমিত স্থবর্ণ সরাইয়া লইতে পারা যায় এবং এইভাবে ছই মায (আট কাকণী) পর্যান্ত এই রূপ্য স্থবর্ণে প্রক্রেপ কর্মা যাইতে পারে। তৎপর ইহাতে রাগ্যোগ (অর্থাৎ পূর্কোক্ত তীন্ধকাকণী-প্রক্রেপ কর্ম্ম) বিহিত হইতে পারে। তাহা হইলে ম্বর্ণ সেই খেত তারসদৃশ প্রভাযুক্ত হইতে পারে।

(৩২ ভাগে বিভক্ত সামান্ত স্বর্ণ হইতে) তিন ভাগ সরাইয়া নিয়া তাহাতে সেই তিন ভাগ পরিমিত তপনীয় (য়থোক্ত প্রকারে শোধিত) স্বর্ণ প্রক্ষিপ্ত হইলে, তাহা যদি ত্র্র অংশ শ্বেত তার রজতের সহিত আবর্ত্তিত করা হয়, ভাহা হইলে সেই স্বর্ণ শ্বেতলোহিত বর্ণযুক্ত হয় (মতাস্থঃ, ৩২ ভাগে ৩ ভাগ তপনীয় স্বর্ণের সহিত অবশিষ্ট ২৯ ভাগ খেত তার রূপ্য মিশাইয়া আবর্তন করিলে সেই স্বর্ণ শেতলোহিতবর্ণ হয়)। (উপরি উক্ত প্রণালীতে শ্বেত তার রজতন্থানে) য়িদ ঘাজিংশদ্ভাগিক তাম মিশ্রিত করা হয়, তাহা হইলে সেই স্বর্ণ পীতবর্ণ হয় (মতাস্তরে, ব্যাখ্যা পূর্কবিৎ হইবে অর্থাৎ ৩ ভাগ তপনীয় স্বর্ণের সহিত অবশিষ্ট ২৯ ভাগ তাম মিশাইয়া আবর্তন করিলে সেই স্বর্ণ পীতবর্ণ হয়)।

তপনীয় স্বৰ্ণকে ( সৈন্ধবিকা বা সিন্ধুদেশের লবণযুক্ত মৃত্তিকা দারা ) উজ্জালিত করিয়া ভাহাতে উক্ত ভীক্ষাদি রাগস্রব্যের ক্ট ভাগ (মতাস্তরে, রাগত্রিভাগ – শোধিত স্বর্ণ ত্রিভাগ, অথবা, তাম্রত্রিভাগ ) দিতে হইবে। এইরূপ করিলে স্বর্ণের রাগ বা রঙ্জ পীত হইবে।

খেত তার রজত তুই ভাগ লইয়া তাহাতে এক ভাগ তপনীয় স্বর্ণ আবত্তিত করিলে, সেই স্বর্ণের রাগ মুদেগর রাগের সমান হয়।

কালায়দের অর্দ্ধভাগ (পূর্ব্বোক্ত এক তৃতীয়াংশের অর্দ্ধভাগ অর্থাৎ ম্বর্ণের ঘর্ষাংশ)-দ্বারা ম্বর্ণ অভ্যক্ত (অন্থলিপ্ত) হইলে দেই ম্বর্ণ ক্রম্বর্ণ হয়। পারদের সহিত দ্রবীকৃত কালায়সদ্বারা দ্বিগুণ অন্থলিপ্ত হইলে ম্বর্ণ শুকপক্ষীর পক্ষসদৃশ বর্ণযুক্ত হয়। পূর্ব্বোক্ত নীলপীতাদিবর্ণযুক্ত ম্বর্ণের কর্মারস্কে রাগবিশেষবিষয়ে (তারতম্য-নির্ণয়ের জন্ম) প্রত্যেকের বর্ণক গ্রহণ করা উচিত হইবে (অর্থাৎ নিক্ষ পাষাণে রেথাপাতদ্বারা বিচার করিতে হইবে)।

রঞ্জনার্থে প্রধোজ্য) তীক্ষ ধাতু ও তাদ্রের সংস্কার বা শোধনও ( ধাতুশোধন-শাস্ত্র হইতে ) জানিতে হইবে। অতএব (অর্থাৎ কারুদের অপহরণাশদ্ধায় স্থবর্ণরজ্বতাদির গুদ্ধিপ্রকার জানা আবশ্যক বলিয়া), হীরক, মণি, মৃক্তা, প্রবাল ও রূপের ( ধাতুনিন্মিত টক্ষাদি মৃদ্রার ) সম্বন্ধে ( তৎ তৎ অসার বস্তুর প্রক্ষেপ্যারা সার বস্তুর পরিবর্তনাদিরূপ) অপহরণ-প্রকারের জ্ঞানও রাখিতে হইবে এবং রূপ্যময় ও স্থবর্ণময় ভাও (অলক্ষারাদি)-নিন্মাণবিষয়ে বন্ধ (রচনা) ও প্রমাণও (পরিমাণ) বৃঝিতে হইবে।

তপনীয় স্বৰ্ণবারা নির্মিত আভ্ষণাদির নিম্নবর্ণিত (চতুর্দ্ধশ) গুণ থাকা চাই, যথা—ইহা সর্পত্র একপ্রকার রাগ বা রঙ্-বিশিষ্ট হইবে; (ওজন ও বর্ণাদিবিষয়ে) একটি অক্তটির সমান হইবে; ইহার মধ্যে কোন গুটিকা সংযুক্ত থাকিবে না; ইহা স্থির বা বহু দিবস স্থায়ী হওয়ার যোগ্য হওয়া চাই; ইহা উত্তমনপে পরিষ্কৃত হইদা চমকদার হইবে; ইহার ছায়া বা কান্তি বাড়াইবার জন্ম যেন অধিক ঘর্ষিত না হয়; ইহার অবয়ব সমানভাবে বিভক্ত থাকিবে; ধারণে ধারণকারীর পক্ষে ইহা স্থাকর হইবে; ইহার নির্মাণ পরিকার ও উচ্চশ্রেণীর মত হইবে; ইহা দীপ্তিযুক্ত হইবে; সংস্থান বা আকারবিষয়ে ইহা মধুর হইবে; ইহা (সর্পাদিকে) সমান হওয়া চাই; এবংইহা মন ওংনত্রদানকে অভিরাম বা স্থাকর হইবে॥ ১-২॥

কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে অক্ষশালাতে স্থবন্ধ্যক্ষ-নামক ক্রয়োদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৩৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# চতুর্দ্ধশ অধ্যায়

## ৩২শ প্রকরণ—বিশিখা বা বিপণিতে সৌবর্ণিকের ব্যাপার

সৌবর্ণিক ( স্থবর্ণাদিনির্দ্মিত শিল্পদ্রব্যের কারবারে নিযুক্ত রাজপুরুষ ) পুরবাসী ও জনপদবাসীদিগের রূপ্যশিল্প ও স্বর্ণশিল্প শিল্পশালার স্বর্গকারগণের ঘারা তৈয়ারী করাইবেন। আবেশনীরা ( অর্থাৎ শিল্পনির্দ্মাতা কার্রুকরেরা বা কারিগরেরা ) সময় ( নির্দ্মাণকাল ) ও করণীয়শিল্প ( কটককুণ্ডলাদি )-সম্বন্ধে ( বেতন বা মজুরী প্রভৃতি বিষয়ে সব কথা ) নির্দ্দেশ করিয়া কাজ হাতে নিবে; এবং হাতের কাজের গুরুজ বা অধিকতা থাকিলে সেই অপদেশে বা ছলে নির্দ্মাতব্য বস্তুর নির্দ্মাণসময়ের নির্দ্দেশ ব্যতিরেকেও কাজ গ্রহণ করিতে পারে।

( কিন্তু, কোন কারিগর ) যদি পরিভাষিত সময় অতিক্রম করে, অর্থাৎ সেই সময়ের মধ্যে শিল্পদ্রব্য প্রস্তুত করিয়া না দিতে পারে, তাহা হইলে তাহার বেতন বা মজুরী একচতুর্থাংশ কম হইবে এবং সেই (চতুর্ভাগহীন) বেতনের দিগুল অর্থও তাহাকে দণ্ডরূপে দিতে হইবে ( অর্থাৎ যদি মজুরী ১০০ টাকা হয় তাহা হইলে তাহার দোষের জন্ম মজুরী ৭॥০ টাকা হইবে এবং ১৫০ টাকা অতিরিক্ত জরিমানাও তাহাকে দিতে হইবে)। যদি সে কার্য্যের অন্যথা করে ( অর্থাৎ কটকন্থলে কেয়ুর প্রস্তুত করে ), তাহা হইলে তাহার বেতন বা মজুরী নই হইবে এবং বেতনের দ্বিগুল অর্থও তাহাকে দণ্ডরূপে দিতে হইবে।

কারিগরেরা যেরপ বর্ণের বা বণিকার ও যেরপ পরিমাণের নিক্ষেপ (বা ঘটনীয় রূপ্য ও স্থবর্ণ) গ্রহণ করিবে, ঠিক দেইরপ বর্ণ ও প্রমাণ •রক্ষা করিয়া শিল্পজ্র (গ্রাহককে) বৃঝাইয়া দিবে এবং যাহারা স্থবর্ণাদির নিক্ষেপক (অর্থাৎ যে পৌরজ্ঞানপদেরা অলঙ্কারাদি প্রস্তুত করিতে দিয়াছে), তাহারা কালান্তর ঘটিলেও (অর্থাৎ গ্রহীতা কারিগরের বিদেশাদিগমন বা অকালমরণাদিজনিত বিলম্ব ঘটিলে) যেমন বর্ণ ও যেমন প্রমাণের স্থবর্ণাদি দিয়াছিলেন তথাবিধ স্থবর্ণাদি ফিরাইয়া নিবেন (অর্থাৎ ম্বর্ণরাক্ত কিংবা তাহার পুরাদিকে বেতনহানি বা বেতননাশ ও অতিরিক্ত অর্থদণ্ড ভূগিতে হইবে না), কিন্তু যদি তাহারা নিক্ষেপের ক্ষয় ও শীর্ণতা ঘটায়, তাহা হইলে তাহাদের উপর সেই দণ্ড বিহিত হইবে।

ভাবেশনীরা ( অর্থাৎ স্বর্ণকারুরা ) কিভাবে স্থবর্ণ ( স্বর্ণের কিঞ্ক বর্ণাদি ), পুদগল ( স্বর্ণাদিনিমিত আভরণ ভূঙ্গারাদি প্রব্যের অবয়ব ) ও লক্ষণের ( স্বর্ণাদিনিমিত চিহ্নযুক্ত মূন্রাদির ) প্রয়োগ বা ব্যবহারাদি করিয়া থাকে তৎতৎ সর্ববিষয় ( সৌবর্ণিক ) জানিয়া রাখিবেন ( অর্থাৎ আবেশনীরা যাহাতে ছলাদি করিয়া স্বর্ণাদি অপহরণ না করে তজ্জন্য সৌবর্ণিক সব বিষয় জানিয়া রাখিবেন )।

( অন্তদ্ধ ) স্বর্ণ ও রজত অগ্নিতে তাপিত করা হইলে বোল মাধাত্মক স্থবর্ণ এক কাকণিকপরিমিত অর্থাৎ মাধ চতুর্থাংশপরিমিত স্বর্ণ ক্ষয় হইতে দিতে হইবে (প্রক্ষেপককে—অর্থাৎ তাহাকে এক কাকণিকপরিমিত কম স্বর্ণ নিতে হইবে )। এক কাকণীপরিমিত তীক্ষ ধাতু ও চুই কাকণীপরিমিত রূপ্যধাতু রাগ বা রঙ করার জন্ত (বোলমাধাত্মক স্থবর্ণে) প্রক্ষিপ্ত হইতে পারে; এই রাগপ্রক্ষেপের ( অর্থাৎ তিন কাকণীপরিমাণের ) ষষ্ঠভাগ অর্থাৎ অর্দ্ধ কাকণী ক্ষয় ধার্য হইতে পারে।

কমপক্ষে প্রত্যেক এক মাধ স্থবর্ণে যদি কারিগর বর্ণহানি ঘটায়, তাহা হইলে তাহার উপর প্রথম সাহসদগু বিহিত হইবে, প্রমাণ বা পরিমাণের হানি ঘটাইলে তাহাকে মধ্যম সাহস দণ্ড ভোগ করিতে হইবে; এবং তুলাদণ্ড ও প্রতিমান (ওজনের বাট) বিষয়ে ছল করিলে তাহার উপর উত্তম সাহস দণ্ড বিহিত হইবে। ঘটত দ্রব্যের পরিবর্ত্তনাদির ছল প্রকাশ পাইলেও তাহাকে উত্তম সাহস দণ্ড ভোগ করিতে হইবে।

যে ব্যক্তি সৌবর্ণিকের অজ্ঞাতসারে (সরকারী বিশিখা হইতে) অন্ত স্থানে যাইয়া স্বর্ণাদির প্রয়োগ (অলঙ্কারাদি নির্মাণ) করায়, তাহার উপর ১২ পণ দশু বিহিত হইবে, এবং যে কারু তাহা করিবে, তাহাকে ইহার দ্বিগুণ (অর্থাৎ ২৫ পণ) দশু দিতে হইবেঁ। এই দশু তখনই প্রযুক্ত হইবে—যদি কার্য়িতা ধরা পড়ে (অর্থাৎ তখন সে চোর শক্ষার কলক হইতে নিজেকে থালাস করিতে পারিবে)। যদি সেই কার্য়িতা তদ্রপ শক্ষা হইতে নিজেকে বাঁচাইতে না পারে, তাহা হইলে সে কন্টকশোধনকারী প্রদেষ্টার নিক্ট বিচারার্থ নীত হইবে। এইরূপ অপসার (নিছ্তি)-রহিত কারিগরেরও তুই শত পণ অর্থদণ্ড হইবে, অথবা, তাহার পণনসাধনভূত পঞ্চাকুলির ছেদন করা হইবে।

(সোবর্ণিক ও স্বর্ণকারুদিগকে) পোতবাধ্যক্ষের নিকট হইতে তুলাভাও ও প্রতিমানভাও (ওজন করার বাট) ক্রম করিয়া লইতে হইবে। অন্তথা (অর্থাৎ স্বয়ং তাহা নির্মাণ করিলে, কিংবা অন্তত্ত্ত্ত ক্রম করিলে) তাহাদিগের ১২ পদ দণ্ড হইবে। কারু বা শিল্পীর কর্ম ছয় প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) ঘন ( অঙ্গুলীয়কাদি নির্মান), (২) ঘনস্থবির (ভূঙ্গারাদি নির্মাণ), (৩) সংমূহ্ ( স্থর্ণাদি নির্মিত স্থুল পত্রাদির যোজন), (৪) অবলেপ্য ( লঘু পত্রাদির যোজন), (৫) সংঘাতা (কটিস্ত্রাদি অলম্বার, যাহাতে অল্প অল্প করিয়া অংশগুলি যোজন করিতে হয়) ও (৬) বাসিতক (রসাদিবারা ঘাহা বাসিত বা ভাবিত করা হয়)।

( উপরি উল্লিখিত কর্মষড্কে ) কান্তদিগের পাঁচ প্রকার হরণোপায় লক্ষিত হইতে পারে, যথা—(১) তুলা বিষম, (২) অপসারণ, (৩) বিস্রাবণ, (৪) পেটক ও (৫) পিন্ধ ( পরবর্ত্তী সন্দর্ভসমূহে এগুলির নিরূপণ করা হইয়াছে )।

হুই তুলা বা তুলাবিষম ( অর্থাৎ তোলনে জুয়াচ্রি করার উপায়ভূত থারাপ তুলা ) আট প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) সন্নামিনী (অর্থাৎ যে তুলা মৃত্ লোহদ্বারা নির্মিত হওয়ায় যথেচ্ছভাবে যে দিকে সে দিকে ঝুঁকান যায় ), (২) উৎকীর্ণিকা ( অর্থাৎ যে তুলার ভিতরে ছিদ্রমধ্যে পারদাদির চূর্ণ ভরা থাকে ),
(৩) ভিন্নমস্তকা ( অর্থাৎ যে তুলার মস্তক বা অগ্রভাগ ভিন্ন বা রক্ত্রমৃক্ত এবং যাহা
বাতাভিন্থে ধরিলে বাতদ্বারা ঝুঁকিয়া পড়িতে পারে ), (৪) উপকল্পী ( অর্থাৎ
যে তুলাতে অনেক গ্রন্থি বিভ্যমান আছে ), (৫) কুশিক্যা ( অর্থাৎ যে তুলার
শিক্যা, বা তোল্য বস্তু ঝুলাইবার হ্র অত্যন্ত থারাপ ), (৬) সকটুকক্ষ্যা ( অর্থাৎ
যে তুলার কক্ষ্যা বা তোল্য বস্তু রাথিবার পাত্র বা বাটি থারাপ ), (৭) পারিবেলী
( অর্থাৎ যে তুলা কেবল হেলাদোলা করে বা পরিচলনশীল হয় ) ও (৮) অয়ম্বান্তা
( অর্থাৎ যে তুলা অয়ম্বান্ত লোহনির্মিত হওয়ায় যে-দিকে ম্বর্ণাদি থাকিবে সেদিকেই হেলিত হইবে )।

(অসার দ্রব্য প্রক্ষেপ করিয়া সারদ্রব্য সরাইয়া নেওয়ার কৌশলের নাম 
অসসারণ। সম্প্রতি অপসারণ বর্ণিত হইতেছে)। ছই ভাগ রূপ্য ও এক ভাগ তাম মিলাইয়া আবর্তিত করিলে যে অপদ্রব্য প্রস্তুত হইবে ইহার নাম 
ত্রিপুটক। (অপসারণ চারি প্রকার হইতে পারে, যথা—) (১) যদি আকর হইতে ( শুরুভাবে) উদ্যাত স্বর্ণে ত্রিপুটক মিশাইয়া তাহা সরাইয়া লওয়া হয়, তাহা হইলে এই প্রকার স্বর্ণাপহরণকে ত্রিপুটকাপসারিত্ত আখ্যা দেওয়া হয়। (২) কেবলমাত্র গুরু বা তাম মিশাইয়া শুদ্ধর্য অপসারণ করার নাম শুরুপসারিত। (৩) তীক্ষলোহ ও রূপ্য সমানভাবে আবর্ত্তিত করিলে যে অপদ্রব্য নিশ্বিত হয় ইহার নাম বেল্লক—এই বেল্লকপ্রক্রেপপূর্বক স্বর্ণ অপসারণের নাম বেল্লকাপসারিত।

(৪) সমানভাগে স্বর্ণের সহিত তাম্র মিশাইয়া তদ্ধারা ভদ্দরণ অপসারণের নাম ক্রেমাপসারিত।

উক্ত প্রকার অপসারণের মার্গ বা পথ নিয়লিখিত দ্রবাদির সাহায্যে অবলম্বিত হইতে পারে, অর্থাৎ ম্বর্ণকারেরা এই সব দ্রবাদির সাহায্যে ম্বর্ণাদি অপহরণ করিয়া গ্রাহককে বলিবে—এইরূপ (অশুদ্ধ) স্বর্ণাই আকর হইতে উদ্যাত হইয়াছিল। দ্রবাগুলির নাম, যথা—মৃকম্যা (অর্থাৎ যে ম্যা বা স্বর্ণাদি গালাইবার পাত্র অন্য কোন ল্কায়িত ধাতুখণ্ডযুক্ত থাকে), পৃতিকিট্ট (লোহমল), করটকম্থ (কাকম্থসদৃশ কাতনী বা কাঁচি), নালী (নল), সন্দংশ (সাঁড়াশী), জ্যোক্ষনী (লোহকটিকা বা লোহার চিমটা), স্বর্চিক। (সোরা প্রভৃতি ক্ষার-বিশেষ, যাহা স্বর্ণাদি গালাইবার সময়ে তপ্ত স্বর্ণে প্রক্ষিপ্ত হয়) ও লবণ। (আরও একটি অপহরণমার্গ বলা হইতেছে)—অথবা পূর্বে হইতে অন্নিতে প্রচ্ছেরভাবে রক্ষিত পিণ্ডবাল্কা (অর্থাৎ দ্রবীভূত রূপ্য ও স্বর্ণসম্পর্কে পিণ্ডীভূত স্ক্ষ বাল্কা) অপহরণে সাহায্য করিতে পারে—স্বর্ণকার এইরূপ ব্যাচ্চ করিতে পারে যে, ম্যা ভাঙ্কিয়া গিয়াছে এবং সে এই বলিয়া অগ্নিতে পূর্বে হইতে স্থিত পিণ্ডবাল্কা উঠাইয়া দিবে (অর্থাৎ কৌশলে কতক শুদ্ধম্বর্ণ চূরি করিয়া অবশিষ্ট স্বর্ণে পিণ্ডবাল্কা মিশাইয়া গ্রাহককে ঠকাইতে পারে)।

( আগে নির্মিত দ্রব্যাংশগুলির ) পরে সন্ধান করার সময়ে, অথবা প্রচুর পরিমাণে ঘটিত পত্রগুলির পরীক্ষা করার সময়ে, রজতনির্মিত শিল্পন্রব্য দ্বারা ( স্বর্ণনির্মিত ভাণ্ডের ) পরিবর্ত্তন বা বিনিময়ের নাম বিত্যাবল । অথবা, লোহের আকরসম্ভূত বালুকাদারা স্বর্ণের আকরসম্ভূত পিণ্ডবালুকার পরিবর্ত্তনও অক্যপ্রকার বিস্থাবণ ।

পেটক ( প্রর্থাৎ সংশ্লেষ বা পাত মোড়াই করণ ) তুই প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) গাঢ় বা দৃঢ় ও (২) অভ্যুদ্ধার্য্য অর্থাৎ যাহা উঠাইয়া ফেলা যায়, এবং এই তুই প্রকার পেটকই ( পূর্কোক্ত ) সংযুত্ত, অবলেপ্য ও সংঘাত্য কর্ম্মে ব্যবহৃত হইতে পারে। কোন সীসনির্মিত শিল্পদ্রব্য স্বর্ণের পাত্যারা অবলিপ্ত ( মোড়াই ) হইলে যদি ইহা মোমন্বারা ( দৃঢ়ভাবে ) বন্ধ করা হয়, তাহা হইলে ইহাকে গাঢ়পেটক বলা হয়। (এই প্রকার বন্ধন অপ্তকাদি বা মোমাদি-ঘারা সংশ্লিষ্ট না থাকিলে ) ইহা কেবল উপরিভাগটা ঢাকিয়া রাথে বলিয়া এইরূপ পেটকের নাম অভ্যুদ্ধার্য্য ( অর্থাৎ যাহা সহজে উঠাইয়া ফেলা যায় ) হয়। অবলেপ্য-কর্মে কেবল একপার্থে স্বর্ণপত্র যোজিত হইতে পারে, অথবা উভয়পার্মেও যোজিত

হইতে পারে। (কখনও বা অন্য উপায়ে স্বর্ণ অপহত হইতে পারে, যথা,) স্বর্ণপ্রসমূহের মধ্যে তাম ও রজতনিন্দিত পাতও গভিত করা যায়। সংঘাত্য কর্মে তামনির্মত শিল্পদ্রতা (একপার্যে) স্থর্ণপত্র হারা আচ্ছাদিত করা যাইতে পারে এবং ইহা খুব প্রমার্জন হারা উজ্জ্বলিত করিয়া ইহাকে শোভন পার্যমূক্ত করিয়া দেখাইতে পারা যায়। সেই তামনির্মিত শিল্পদ্রতাই স্বর্ণনির্মিত পত্রহারা উভয় পার্যে যোজিত ও প্রমৃষ্ট হইতে পারে। (কেবল স্বর্ণপত্রই যোজিত হয় না), তামপত্র ও রজতপত্রও (কৃষ্ণায়সাদি-নির্মিত আচ্ছাত্য দ্রব্যের) আচ্ছাদ্ক হইয়া ইহাকে বর্ণকবিশিষ্ট করিতে পারে।

(পেটকের পরীক্ষা নিরূপিত হইতেছে।) উক্ত উভয়রপ পেটক (গাঢ়পেটক ও অভ্যুদ্ধার্য্য পেটক) অগ্নিতে তাপন ও নিকষ-পাষাণে ঘর্ষণ দ্বারা, অথবা, শব্দহীন (ছেদন বা আঘাত) ও তীক্ষন্থ বস্তুর উল্লেখন বা রেখাপাত দ্বারা ব্ঝিয়া লইতে হইবে। অভ্যুদ্ধার্য্য পেটক বদরফলের অম রসে বা লবণজলে নিবেশিত করিয়াও পরীক্ষা করা যাইতে পারে। এই পর্যান্ত পেটক-নামক হরণোপায় ব্যাখ্যাত হইল।

( এখন পাঁচ প্রকার পিঙ্ক ও ইহার পরীক্ষা নির্দ্ধিত হইতেছে।) কোন ঘন ও স্থবিরযুক্ত (অলঙ্কার-) ভাওে স্থবর্ণমুৎ ও স্থবর্ণমালুকা (উভয়ই কোন ধাতৃবিশেষ হইবে ) এবং হিন্ধূলকের কম্ব অগ্নিতে তাপিত করিয়া প্রক্ষিপ্ত হইলে তাহা সেই ভাণ্ডে লাগিয়া থাকে। যে অলঙ্কার-দ্রব্যের বাস্তক বা পীঠবন্ধ দৃঢ়, তাহাতে পিণ্ডবালুকা মিশ্রিত জতু (লাক্ষা) ও গান্ধারের (দিন্রের) পঙ্ক অগ্নিতে তাপিত করিয়া প্রক্ষিপ্ত হইলে তাহা সেই দ্রব্যে লাগিয়া থাকে। উক্ ঘন-স্থ্যিরযুক্ত ও দূঢ়বাস্তুক দ্রব্যের শোধনোপায় হইবে—ইহাকে অগ্নিজত তাশন বা আবশুক মত তাড়ন ( অর্থাৎ মৃত্তিকাদিতে চোট দেওয়া )। পৃষতমণিবন্ধযুক্ত অল্কার-দ্রব্যে, কঠিন শর্করার সহিত মিশ্রিত লবণ অগ্নিজালাতে তপ্ত করিয়া প্রক্রিপ্ত হইলে ইহা সেই দ্রব্যে লাগিয়া থাকে। ইহার শুদ্ধির উপায় হইবে---ইহাকে (বদরাম্লরসে) কথিত করা অর্থাৎ তাহাতে ফুটাইয়া সিদ্ধ করা। যে স্বর্ণাদিনির্দ্মিত শিল্পন্তব্যের বাস্তক (পীঠবন্ধ) দিগুণভাবে অবগাঢ় বন্ধনে বন্ধ, তাহাতে মোমধারা অভ্রধাতুর পটল বা পাত জ্বোড়াই করা যায়। সেই নিরুষ্ট কাচ ( অর্থাৎ অত্র ) যাহাতে লুকায়িত আছে সেই আভরণ জলে নিমজ্জিত করিলে, ইহার একদেশ ইহাতে ভূবিবে, ( কিন্তু কাচ্যুক্ত অংশ তাহাতে ভূবিবে না )। ( অভ্রন্থলে ) ষদি অন্য ( তাত্রাদি ধাতুর ) পটল ( অলহারে ) ব্যবহৃত হয়, তাহা হইলে (সেই অলম্বার) স্টেম্বারা ভেদ করিয়া পরীক্ষা করিতে হয়। ঘন-স্থবির আভরণসম্বন্ধে মনি (কাচমনি প্রভৃতি), রূপ্য বা (অশুদ্ধ) স্থবর্ণ বোজিত করিয়া, (শুদ্ধস্থবর্ণাদির) পিল্ক-নামক হরণোপায় অবলম্বিত হইতে পারে। সেইরূপ পিক্ষের শোধন করিতে হইলে অগ্নিতে তাপন বা তাড়নই শুদ্ধিজ্ঞানের উপায়। এই পর্যাস্ত পিন্ধ ব্যাখ্যাত হইল।

এই কারণে, (সোবর্ণিক) হীরক, মণি, মৃক্তা ও প্রবাল—এই সব দ্রব্যের জাতি (উৎপত্তিস্থান), রূপ (আকার), বর্ণ (রঙ্), প্রমাণ (পরিমাণ বা ওজন), তরির্মিত আভরণাদি শিল্পদ্রব্য ও লক্ষণ (চিহ্ন) উপলব্ধি করিবেন।

নির্মিত ভাণ্ডের ( আভরণাদি শিল্পদ্রব্যের ) পরীক্ষাসময়ে ও পুরাতন ( জীর্ণ ) ভাণ্ডের প্রতিসংস্কার বা নবীকরণসময়ে চারি প্রকার হরণোপায় ( অবলম্বন করিয়া শিল্পীরা স্থবর্ণাদি চুরি করিতে পারে), যথা---(১) পরিকুট্টন, (২) অবচ্ছেদন, (৩) উল্লেখন ও (৪) পরিমর্দন। (তন্মধ্যে পূর্ব্বোক্ত) পেটক-পরীক্ষার ছলনা করিয়া, পৃষত ( ক্ষুদ্র গুটিকা ) গুণ ( স্থবর্ণ দ্রাদি ) বা পিটকা ( স্থবর্ণাদি-নিমিত বাটী বা বাক্স প্রভৃতি ) হইতে (অল্প বা অধিক অংশ অপহরণ করার উদ্দেশ্যে যদি অর্ণকার ভূমিতে) পাতিত করিয়া ফেলে, তাহা হইলে সেই কার্যকে **পরিকুটন** বলা হয়। দ্বিগুণভাবে (বহুপত্রপুটদারা) সংঘটিত শিল্পভাণ্ডে ( স্বর্ণদারা অন্তলিপ্ত ) সীসপত্র প্রক্ষেপ করিয়া, (যদি স্বর্ণকার ) (শুদ্ধ স্ববর্ণাংশের) অভ্যন্তর অবচ্ছিন্ন করিয়া (অর্থাৎ কাটিয়া), লইয়া যায়, তাহা হইলে সেই কাৰ্য্যকে অবচ্ছেদন বলা হয়। ঘননিশ্বিত দ্রব্যসমূহ (যদি স্বর্ণকার) তীক্ষায়স বা তীক্ষ শম্বদারা উল্লেখন করে বা চাহিয়া নেয়, তাহা হইলে সেই কার্য্যকে উল্লেখন বলা হয়। ( আবার) ছরিতাল, মৃষ্টাশিলা ও হিন্নুলকের কোন একটির চূর্ণ দারা মিপ্রিত, অথবা, কুরুবিন্দ-নামক (প্রস্তরবিশেষের) চূর্ণ দ্বারা মিশ্রিত কোন বন্ত্রথণ্ড সংযোজিত করিয়া ( যদি সে ) তন্ধারা (কোন স্বর্ণাদিনির্মিত আভ্রষণ ) ঘর্ষণ করে, তাহা হইলে সেই কার্য্যের নাম পরিমর্দ্দন বলা হয়। এই পরিমর্দ্দন খারা স্থবর্ণ ও রজতনির্মিত ভাগু বা শিল্পদ্রবাসমূহ ক্ষয় প্রাপ্ত হয় (অর্থাৎ ইহাদের পরিমাণ ঘাটিয়া যায়)। অথচ এই দব ভাণ্ডদমূহের অম কোন প্রকার ভদাদি দোষ ঘটে না ( স্থতরাং, অপহরণ উপলব্ধ হওয়া কঠিন হয় )।

সংযুত্ব অর্থাৎ দৃঢ়পত্রঘটিত ভাগুসমূহ (পরিকুট্টনে) শাতিত বা ভগ্ন এ অবচ্ছেদনে) খণ্ডিত ও (উল্লেখনে) ঘর্ষিত হইলে, সেই সব দ্রব্য হইতে অপহত অংশ, তৎসমানজাতীয় দ্রব্যের অবয়বাদির প্রমাণ দ্বারা, অমুমান করিয়া লইতে হইবে। অবলেপ্য (তমুশ্রুদ্ধিত) দ্রব্যসমূহের যতথানি অংশ উৎপাটিত করা হইয়াছে, ততথানি অংশ উৎপাটিত করিয়া (স্বর্ণকার্বারা অপহত স্বর্ণাদির) (মান ও ওজন) অমুমান করিয়া লইতে হইবে। অথবা, যে সমস্ত আভূষণাদি (অপদ্রব্যাদির মিশ্রণহেতু) বিরূপ বা রূপান্তবিত হয়, সেগুলির পরীক্ষাও উক্ত রীতিতে করিতে হইবে। এবং সে-গুলিকে বহুবার অগ্নিতে তাপিত করিতে হইবে এবং সে-গুলিকে জলে প্রক্ষেপ করিয়া (চ্ক্রিকা বা কুচিবারা) কুট্টন করিতে হইবে (এই প্রকার শোধনবারাই আভূষণগুলির বিরূপতা বা বৈর্ব্য দ্রীকৃত হুইবে)।

(আরও হরণোপায় বলা হইতেছে।) স্বর্ণকারাদিলারা নিয়লিখিত উপায় অবলিয়ত হইতেছে দর্শন করিলে, (সৌবনিক) সেগুলিকে কাচ বা হরণোপায় বলিয়া জানিবেন, যথা—অবক্ষেপ (অর্থাৎ হস্তলাঘবদারা সারদ্রব্য অপহরণ করিয়া অপদ্রব্য-প্রক্ষেপ), প্রতিমান (অর্থাৎ মূল দ্রব্য বদলাইয়া অন্য দ্রব্য রাখা), অয়ি (অর্থাৎ অয়িতে স্থবর্ণাদির প্রবেশন), গণ্ডিকা (য়ে কার্মাধারে স্থবর্ণাদি আহত করাহয়), ভণ্ডিকা (স্বর্ণদ্রব্যের নিষেকার্থ পাত্র বিশেষ), অধিকরণী (লোহপাত্রবিশেষ যাহাতে স্বর্ণাদি গালাইতে হয়), পিছ (ময়ৢরবর্হ), স্ত্র (স্থবর্ণ ওজন করার তুলায় তয়ৢ), চেল্ল (বয়ৢ), বোল্ল (কথাব্যাজে দ্রয়ার চিত্তব্যাক্ষেপ জন্মান), শিরঃ (মস্তককণ্ড্র্যন), উৎসঙ্গ (অঙ্ক বা অন্যান্ত গুয়্ম প্রদেশ), মক্ষিকা (মক্ষিকা নিবারণচ্ছলে ধাতৃদ্রব্য নিজ অঙ্কে সংশ্লিষ্ট করা), নিজ শরীরের দিকে দৃষ্টি, দৃত্তি (ভস্না), জলের শরাব (পাত্রবিশেষ), ও অয়িয় বস্তু (অর্থাৎ অয়িতে প্রক্ষিপ্ত অপদ্রব্যাদি)। (স্বর্ণকার উক্ত উপায় ও বস্তুগুলির দিকে অধিকতর মনোনিবেশ করিলে সৌবর্ণিক ব্রিবিবেন যে, সে স্বর্ণাদি হরণের চেষ্টা করিতেছে)।

রজতনিশ্বিত দ্রব্যসমূহের পাঁচ প্রকার দোষচিহ্ন লক্ষিত হইতে পারে, যথা— ইহা বিস্ত্র ( অর্থাৎ সীসাদি-সংসর্গে তুর্গদ্ধযুক্ত ), মলিন, কঠোর বা খরম্পর্শ, কঠিন ( কোমলতা-বিহীন ), ও বিবর্ণ ( অপদ্রব্যমিশ্রণে প্রভাহীন ) হইতে পারে।

এই প্রকারে (সৌবর্ণিক) নৃতন, জীর্ণ (পুরাতন) ও অপদ্রব্যমিশ্রণে (বিরূপ ভাগুকসমূর্হ (শিল্পদ্রব্যসমূহ) পরীক্ষা করিবেন এবং (এই সমস্ত দ্রব্যের দোবোৎ-পাদক স্বর্ণকারাদির উপর) যথানির্দিষ্ট অত্যয় বা অর্থদণ্ডাদি প্রয়োগ করিবেন। ॥১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে বিশিখাতে সৌবর্ণিকের ব্যাপার-নামক চতুর্দশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৩৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### পঞ্চদশ অধ্যায়

## ৩৩শ প্রকরণ—কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষ

(কোষ্ঠ বা উদরের পোষণার্থ প্রয়োজনীয় ধান্তাদি পদার্থের নামও কোষ্ঠশব্দধারাই অভিধেয়। স্থতরাং সমস্ত থাজন্রব্য সংগৃহীত হইয়া যে স্থানে রক্ষিত
হয় তাহার নাম কোষ্ঠাগার এবং রাজকীয় কোষ্ঠাগারের জন্ত যে প্রধান
অধিকারী নিযুক্ত থাকেন তাঁহার নাম কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষ।) কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষ
সীতা, রাষ্ট্র, ক্রয়িম, পরিবর্ত্তক, প্রামিত্যক, আপমিত্যক, সিংহনিকা, অন্তজাত,
ব্যয়প্রত্যায় ও উপস্থান—এই দশ বিষয়ের পূর্ণ উপলব্ধি করিবেন।

( যথাক্রমে উক্ত দশটি বিষয়ই বর্ণিত হইতেছে।) ( পরবর্ত্তী সীতাধ্যক্ষ-প্রকরণে অভিহিত প্রধান অধিকারী) সীতাধ্যক্ষদারা (কোষ্ঠাগারে) প্রবেশিত সর্বপ্রকার ( ধাক্যাদি) শশুজাতের নাম **সীতা** ( অর্থাৎ ক্রমিজাত সর্বপ্রকার শশু কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষ ঠিক্মত ও অন্যনভাবে গ্রহণ করিবেন।)

(কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষের রাষ্ট্রোপ্সন্ধিদ্বারা নিম্নলিখিত পিওকরাদির যথাযথভাবে সংগ্রহাদি বুঝিতে হইবে। ) রাষ্ট্র-শব্দবারা এই দশ প্রকার বস্তু বুঝা যায়, যথা—(১) পিশুকর (অর্থাৎ তৎ তৎ গ্রামাদি হইতে নিয়ত প্রাপ্য রাজ-কীয় কররূপ বস্তুজাত ), (২) যড্ভাগ ( অর্থাৎ ষষ্ঠভাগ, চতুর্থভাগ ইত্যাদিরূপ তৎ তৎ দেশসিদ্ধ রাজভাগ), (৩) সেনাছক্তে (অর্থাৎ সেনার সন্নাহন ও অভিযান-সময়ে প্রজাবর্গদারা যথাদেশপ্রসিদ্ধ তৈল-তণ্ডল-লবণাদি রাজদেয় বস্তু-জাত ; মতাস্তরে, সেনাদিগের প্রাপ্য তৎ তৎ বস্তজাত হইতে রাজার্থে তাহা-দিগের দ্বারা দের অংশ), (৪) বলি ( ষড্ভাগাতিরিক্ত যথাদেশপ্রসিদ্ধ দশবদাদি অংশ, যাহার অন্ত নাম 'ভিক্ষাভক্ত'), (৫) কর ( সামস্তাদি হইতে রাজার প্রাপ্য কর; মতান্তরে, জল ও বৃক্ষাদি-সমম্ম রাজদেয় অংশ), (৬) উৎসঞ্জ (রাজার পুত্রজন্মাদি উৎসবে প্রজাদিগের বিশেষ অর্থাদি দান), (१) পাশ্ব (উচিত কর হইতে অধিক করসংগ্রহ—যাহা যোগবৃত্তাখ্য অধিকরণে কোশা-ভিসংহরণ-নামক প্রকরণে উক্ত হইবে ), (৮) পারিহীণিক ( চতুপদ জন্তবারা বিনাশিত শত্যের জন্য বিহিত দণ্ড হইতে লব্ধ ধন ), (১) ঔপায়নিক ( রাজাকে উপঢ়েকিনরপে প্রাদত্ত ধন ) ও (১•) কৌষ্ঠেয়ক ( রাজার দ্বারা স্থাপিত তড়াগ 📲 বারামাদিতে উৎপন্ন দ্রব্যজাত )।

ক্রেমিম তিন প্রকার, যথা—(>) **ধাল্যমূল্য** (ধালাদি বিক্রম করিয়া মূল্যরূপে প্রাপ্ত হিরণ্যাদি ধন), (২) কোশনির্হার (রাজকোষ হইতে গৃহীত হিরণ্যাদি-দারা ক্রীত ধালাদি) ও (৩) প্রয়োগপ্রত্যাদান (স্থদের জল্ম প্রযুক্ত রাজকীয় ধালাদি স্থদসহ উস্থল করিয়া পুনরায় কোষ্ঠাগারে প্রবেশন)।

একপ্রকার শস্তের বিনিময়ে ন্যনাধিক অন্যপ্রকার শস্ত গ্রহণ করার নাম **পরিবর্ত্তক**।

(মিত্রাদি) অন্য ব্যক্তি হইতে (পুনঃ শোধের ইচ্ছা না করিয়া শশুষাচনার নাম প্রামিত্যক।

পরে স্থদসহ শোধ দেওয়া হইবে এইরূপ দর্ভে অন্ত হইতে শভ্যাচনের নাম **আপিমিত্যক**।

যাহারা উপজীবিকার জন্ম কুট্টককর্ম (কুট্রন বা শস্তাদির অবঘাতকার্য); রোচককর্ম (মৃদ্যমাযাদির বিদলনকার্য), সক্তনুকর্ম (ঘরট্রাদির সাহায্যে যবাদির চূর্ণীকরণকার্য), গুকুকর্ম (ইক্প্প্রভৃতির রস হইতে আসবাদি-সন্ধানকার্য) ও পিট্টকর্ম (আটা প্রভৃতি তৈয়ার করার জন্ম গমাদির পেষণকার্য) করে, তাহাদিগের নিকট হইতে প্রাপ্য রাজদেয়; এবং যে সব চক্রী বা তৈলিকেরা (যক্তিয় ?) উরত্র বা মেষ বলি দিয়া তাহা হইতে তৈল নিপীড়ন করিয়া জীবিকা অর্জন করে, তাহাদিগের নিকট হইতে প্রাপ্য রাজদেয়; এবং যাহারা ইক্ষর রস হইতে কার জ্ব্য (ফাণিত-গুড়-থগুদি) প্রস্তুত করিয়া জীবিকা নির্বাহ করে, তাহাদিগের নিকট প্রাপ্য রাজদেয় অংশের নাম সিংহনিকা (এই স্থলে 'সংহনিকা'-পাঠ অধিকতর সমীচীন বলিয়া প্রতিভাত হয়)। যে দ্রব্য অন্য লোকে হারাইয়াছে কিংবা ভূলিয়া গিয়াছে তাহা কোষ্টাগারে আনীত হইলে ইহাকে অন্যুজাত্র আয় বলিয়া আখ্যাত করা যায়।

ব্যয়প্রত্যায় (অর্থাৎ কোন কার্য্যের জন্ম নির্দ্ধারিত ব্যয় হইতে যদি কিছু অর্থ অবশিষ্ট থাকে, সেই আয়ের নাম ব্যয়প্রত্যায়) তিন প্রকার হইতে পারে, যথা—
(১) বিক্ষেপন্যের (অর্থাৎ কোন কার্য্যমাধনের জন্ম প্রেরিত সেনাদির প্রয়োজনে ব্যয়িত ধন হইতে অবশিষ্ট ধন), (২) ব্যাধিতশেষ (অর্থাৎ তৈষজ্ঞালার থরচ হইতে অবশিষ্ট ধন) ও (৩) অন্তরারস্ত্রশেষ (অর্থাৎ ত্র্য-প্রামাদাদির পরিকর্মনিমিন্ত নির্গত ধন হইতে লঘুবায়জনিত অবশিষ্ট ধন)।

উপস্থান ছয় প্রকার হইতে পারে, ষণা—(১) ভিন্ন **তুলা ও মানের** (বাটের) ব্যবহার হইতে প্রাপ্ত স্থব্য (অর্থাৎ অধিক তুলা ও মানধারা গ্রহণ

করিয়া হীন তুলা ও মানধারা প্রদান করিলে যে লাভ হয় তাহা ), (২) হস্তপূর্ম। ( অর্থাৎ তোলনের পরও হস্ত পূরণ করিয়া ধান্যাদি গ্রহণ ), (৩) উৎকর ( ধান্যাদির রাশি হইতে অথবা মান ও গণনার বস্ত হইতে অধিক পরিমাণে বস্ত উঠাইয়া লওয়া ), (৪) ব্যাজী ( দ্রব্যের ষোড়শভাগাদি যাহা পুনর্কার মানের ন্যূনতা পরিহারের জন্ম অধিক লওয়া হয়—ফাও লওয়া ), (৫) পযুর্তাসিত ( গত বৎসরের অবশিষ্টাংশ ) ও (৬) প্রাজ্জিত ( স্বনৈপুণ্যে উৎপাদিত পুষ্পতামূলাদি দ্রব্য )—এই পর্যাস্ত উদ্দিষ্ট সীতাদি পদার্থের বিবরণ প্রদন্ত হইল।

সম্প্রতি ধান্ত, ক্ষেহ, ক্ষার ও লবণ—এই পদার্থগুলির নিরূপণ করা হইবে।

ধান্তাবর্গের বিবরণ দীতাধ্যক্ষ প্রকরণে বলা হইবে। ঘত, তৈল, বদা ও মক্জা—এই চারি প্রকার দ্রব্য ক্ষেত্-পর্নায়ভুক্ত। ইক্ষ্ হইতে উৎপন্ন ফাণিত (রাব), গুড়, মৎস্তাণ্ডিকা (গুড় ও খণ্ডশর্করার মধ্যমাবন্ধার চিনির নাম) ও খণ্ডশর্করা—এইগুলি ক্ষারবর্গের অন্তর্গত।

সৈন্ধব, সাম্দ্ৰ ( সম্দ্ৰের জল হইতে প্ৰস্তুত লবণ ), বিড, যবক্ষার, সৌবর্চ্চল ( স্থবর্চচলদেশে উভ্ত লবণ-বিশেষ ; অথবা, সোরাজাতীয় লবণ বিশেষ ) ও উদ্ভেদজ ( উষরমৃত্তিকা হইতে লব্ধ ল্বণ )—এইগুলি ল্বণবর্গের অন্তর্গত।

মধু ছই প্রকার—(১) ক্ষেণিজ (মক্ষিকালারা সঞ্চিত মধু) ও মার্দ্বীক (অর্থাৎ মৃদ্বীক বা দ্রাক্ষার রস হইতে প্রাপ্ত মধু)।

ইক্রস, গুড়, মধু, ফাণিত, জাম্ব (জাস্ফলের রস) ও পনস (কাঁঠালের রস)—এই ছয় প্রকার রসের যে কোন একটিকে মেষশৃঙ্গী (ওষধিবিশেষ)ও পিপ্রলীর কাপ্পের সহিত মিশ্রিত করিয়া এবং সেইটিকে চিন্তিট (বল্লীফল-বিশেষ), উর্বাক্তক (শশাব্দ্রন্থায় ফলবিশেষ), ইক্ত্রাণ্ড, আম্রফল ও আমলকের সারের সহিত মিশাইয়া, কিংবা এগুলির কোনটির সহিত না মিশাইয়া ভদ্ধভাবেই রাথিয়া—যে রস একমাস, ছয়মাস বা একবৎসরকাল প্র্যান্ত সেই অবস্থায় রাথিয়া প্রস্তুত করা হয় (এই রস ষ্থাক্রমে অধ্যম, মধ্যম ও উত্তম শ্রেণীর রস বলিয়া থ্যাত হইবে)—তাহা ভ্রুক্তবর্গের অন্তর্গত।

বৃক্ষায় ( তেঁতুল ), করমর্দ্ধ ( করোন্দা, পাণি আমলা ), আম্র, বিদল (দাড়িম), আমলক, মাতুলুঙ্গ ( ছোলঙ্গ-নামক লেব্বিশেষ ), কোল ( ছোট বদর ), বদর ( খুল বদর ) সৌবীরক ( বদর-বিশেষ ), পরষক ( পরষ্ফল, একপ্রকার অম ফল ) প্রেড্তি ফ্লাম্রবর্গের অন্তর্গত।

দধি ও ধান্মায় ( কাঞ্চিক ) প্রভৃতি ( তক্রাদিও ইহার অন্তভূ ক্র হইতে পারে ) দ্রবায়বর্ণের অন্তর্গত।

পিপ্পলী; মরিচ, শৃঙ্গিবের ( আদ্রক বা আদা ), অজাজী ( জীরা), কিরাততিক্ত (ভূনিম্ব বা চিরাতা ), গৌরসর্বপ ( সাদা সর্বপ ), কুল্বমূর্ক ( ধ্যাক বা ধনিয়া ), চোরক ( পৃকা বা পিড়িঙ্গ ), দমনক ( দোনা), মরুবক ( পিণ্ডীতক বা ময়না কণ্টকিবৃক্ষবিশেষ ), শিগ্রুকাণ্ড ( শজিনা ) প্রভৃতি কট্টকবর্গের অন্তর্গত।

শুক মৎস্থা, শুক্ত মাংসা, কন্দ (স্ব্রণাদি), মূল ( শতমূলী প্রভৃতি ), ফল (বার্জাকু প্রভৃতি ) ও শাকাদি শাকবর্গের অন্তর্গত।

জনপদবাদী দিগের ( ছণ্ডিক্ষাদি ) আপৎসময়ের জন্ত (ক্রেহাদি বর্গস্থিত ) দ্রব্যসমূহ হইতে অর্দ্ধ পরিমাণ রক্ষা করিতে হইবে। (অবশিষ্ট) অর্দ্ধ পরিমাণ
(রাজমহানদাদিতে) ব্যবহারের জন্ত থরচ হইতে পারে। নৃতন ফদল উৎপন্ন
হইলে পুরাতন দ্রবাস্থলে নৃতন দ্রব্য রাখিতে হইবে (অর্থাৎ পুরাতন দ্রব্য বিনিয়োগে বা ব্যবহারে আনিয়া নৃতন দ্রবাহারা তৎস্থান পূর্ণ করিতে হইবে)।

ধান্তসমূহ ক্ষুণ্ণ ( অবঘাত প্রাপ্ত ), ঘুষ্ট ( ফলীকৃত ), পিই ও ভূষ্ট (ভাজা) হইলে এবং আর্দ্র, শুদ্দ ও সিদ্ধ হইলে, ইহাদের ক্ষয় ও বৃদ্ধির ইয়তা ( কোষ্টাগারাধ্যক্ষ ) স্বয়ং প্রত্যক্ষ করিবেন।

কো দ্রব ও ব্রীহিধান্তের সার অর্ধ-পরিমাণ থাকে (অথাৎ অবশিষ্ট অর্ধ ক্ষয় হয়)। শালিধান্তের সার ট্র অংশ কম অর্ধ-পরিমাণ থাকে (মতান্তরে, 'অইজাগোনঃ'—পাঠিট 'অর্ধভাগোনঃ'—পাঠরপেও গৃত হয়)। বরক-ধান্তের সার ট্র অংশ কম অর্ধ-পরিমাণ পাওয়া যায়) প্রিয়ন্ত্রর (কন্ত্র) সার অর্ধ-পরিমাণ থাকে, অথবা এই অন্ধে ট্র অংশ বৃদ্ধিও হয়। উদারক-ধান্তের সার-পরিমাণ সমানই থাকে। যব ও গোধ্ম-ক্ষ্ম করা হইলেও ইহার সার সমান পরিমাণেই পাওয়া যায়।

তিল, যব, মৃদগ ও মাষ ঘৃষ্ট হইলেও দারসগন্ধে দমান পরিমাণই পাওয়া যায়। গোধুম ও সক্তুদ্ম্হের দার हे অংশ বৃদ্ধি পায়। ঘৃষ্ট কলায়ের চমদী বা শ্লফুর্ল हু অংশ কম পাওয়া যায়। মৃদগ (মৃগ) ও মাবের চমদী দার हু অংশ কম হয়। শৈদ্দম্হের (শৈমজাতীয় প্রব্যের) চমদী-দার অদ্ধ পরিমাণ পাওয়া যায়। মস্বের চমদী-দার हু অংশ কম হয়।

কাঁচা (গোধ্মাদি) ও কুঝাষ (ম্লগমাষাদি) পিট হইলে পরিমাণে ১ই গুণ হয় । যাবক (অর্থাৎ বিতুষীকৃত যব) পিট হইলে পরিমাণে দ্বিগুণ হয়। পুলাক (অর্থাৎ অন্ধ-নিদ্ধ চাউল) ও পিষ্ট (অর্থাৎ গোধুমাদির চূর্ণ) নিদ্ধ হইলে (অর্থাৎ রান্নায় পক হইলে) দ্বিগুণ পরিমিত হয়।

কোদ্রব, বরক, উদারক ও প্রিয়ঙ্গুর তণ্ডুল হইতে অন্ন রাঁধা হইলে ইহার পরিমাণ তিনগুণ হয়; বীহির অন্ন চতুগুণ ও শালিধান্তের অন্ন পাঁচগুণ হয়। (ধান্ত কাটিবার সময়ে) তিমিত বা আদ্রীকৃত বীহি প্রভৃতির অন্ন দিগুণ হয় এবং অঙ্ক্রিত বীহি প্রভৃতির অন্ন অন্ধাধিক দ্বিগুণ অর্থাৎ আড়াই-গুণ পরিমিত হয়।

ভৃষ্ট (বা ভাজা) হইলে (ব্রীহি প্রভৃতির) है আংশ বৃদ্ধি পায়। কলায় ভৃষ্ট হইলে পরিমাণে বিগুণ হয়। লাজ (খই) ও যব ভৃষ্ট হইলে পরিমাণে বিগুণ হয়।

অতসীবীজ হইতে ই অংশ তৈল নির্গত হয়। নিম্ন, কুশ, আম, কপিথ প্রভৃতির বীজ হইতে ই অংশ তৈল পাওয়া যায়। তিল, কুস্কু, মধুক ও ইঙ্গুলী হইতে তৈল ই অংশ পরিমাণে পাওয়া যায়।

পাঁচ পল কার্পাস ও ক্ষোম হইতে এক াল-পরিমিত স্ত্র পাওয়া যায়।

পাঁচ দ্রোণ বা বিশ আচক শালিধান্ত হইতে ( আবহননাদি দ্বারা ) নিপাদিত দ্বাদশ আচক তণ্ডুলের অন্ন কলভ বা বালহস্তীর থাতার্থ উপযোগী অন্ন হইবে। বালে বা হুই গজের পক্ষে ( পূর্ব্বোক্ত বিশ আচক হইতে ) নিম্পাদিত একাদশ আচক তণ্ডুলের অন্নই উপযোগী অন্ন হইবে। পূর্ব্বোক্তরূপে নিম্পাদিত দশ আচক তণ্ডুলের অন্ন উপবাহ্ বা রাজবাহ্ হস্তীর উপযোগী অন্ন হইবে। দেইরূপ বিশু আচক শালিধান্ত হইতে নিম্পাদিত নয় আচক তণ্ডুলের অন্ন সানাহ্ বা যুক্ষকার্যো ব্যাপ্ত হস্তার পক্ষে উপযোগী অন্ন হইবে। তদ্রপভাবে নিম্পাদিত আট আচক তণ্ডুলের অন্ন পদাতিক সৈত্যের উপযোগী অন্ন হইবে। পূর্ব্বোক্ত রীতিতে নিম্পাদিত সাত আচক তণ্ডুলের অন্ন নৃথ্য ভটপ্রধানদিগের ভোজনোপযোগী অন্ন হইবে। দেবী বা রাজপত্নী ও কুমার বা রাজপুত্রদিগের জন্ত উক্ত প্রকারে নিম্পাদিত ছয় আচক তণ্ডুলের অন্নই উপযোগী অন্ন হইবে এবং রাজার জন্ত সেইভাবে নিম্পাদিত পাঁচ আচক তণ্ডুলের অন্নই ভোজনোপযোগী অন্ন হইবে এবং নাজার জন্ত সেইভাবে নিম্পাদিত পাঁচ আচক তণ্ডুলের অন্নই ভোজনোপযোগী অন্ন হইবে এবং নাজার জন্ত সেইভাবে নিম্পাদিত পাঁচ আচক তণ্ডুলের অন্নই ভোজনোপযোগী অন্ন হইবে। অথবা, রাজার নিজ ভোজনের জন্ত বিশ আচক বা, অশীতি প্রস্থ শালিধান্ত হইতে নিম্পাদিত এক প্রন্থ অথগ্রের্যর ও প রিশুদ্ধ তণ্ডুলের অন্নই উপ্যোগী হইবে।

এক প্রস্থের চতুর্থাংশ সূপ ( ভাল প্রভৃতি রসবস্থ ), সূপের 5 ত অংশ লবণ, স্পের ह অংশ শ্বত বা তৈল—ইহাই একজন মধ্যবিত্ত আর্থ্য পুরুষের ভোজন নির্দিষ্ট হইতে পারে। এক প্রস্থের ষষ্ঠাংশ সূপ ও সূপের ই অংশ স্নেহ বা তৈলাদি ( লবণের মাত্রা সমানই থাকিবে )—ইহাই একজন অমধ্যবিত্ত আর্থ্য পুরুষের ভোজনাংশ বলিয়া গৃহীত ( অর্থাৎ রাজপরিচারকেরা এইরূপ বরাদ্দে ভাতা পাইবে )। উক্ত ভোজনাংশের ह অংশ কম থাতা আর্থ্য স্ত্রীলোকের ভোজনোপযোগী হইবে এবং উক্ত ভোজনাংশের অর্দ্ধ পরিমাণ বালকদিগের ভোজনোপযোগী হইবে।

বিশ পল-পরিমিত মাংস (পাকসংশ্বারে) গৃহীত হইলে, তাহাতে অর্দ্ধ কুড়ুব (অর্থাং এক প্রস্থের টু অংশ) স্নেহদ্রবা (অর্থাৎ তৈলঘুতাদি), ১ পল লবণ, (অথবা, লবণের অভাবে) ১ পল (যবক্ষারাদি) ক্ষারযোগ, ২ ধরণ (পোতবাধ্যক্ষ-প্রকরণে উক্ত পরিমাণ) কটুকযোগ (অর্থাৎ পিপ্পলী প্রভৃতি মসলা) এবং ই প্রস্থ (অর্থাৎ ২ কুডুব) দুধি দিতে হইবে।

ইহা দ্বারা পরিমাণে অধিক মাংস পাকের জন্ম স্নেহাদি লইলে, উক্ত হারেই সে সব বাবহার করিতে হইবে—ইহা বুঝিয়া লইতে পারা যায়। শাক পাক করিতে হইলে উক্ত মাংস-সম্বদ্ধী যোগই ১ই গুণ দিতে হইবে। গুদ্দ শাক (ও মাংস) পাক করিতে হইলেও উক্ত মাংস-পাকের স্নেহাদিযোগ দ্বিগুণ করিতে হইবে।

হস্তী ও অখের বিধা বা প্রাতাহিক ভোজা বস্তুর পরিমাণের বিষয় হস্তাধ্যক্ষে ও অখাধ্যক্ষ-প্রকরণে উক্ত হইবে। বলীবর্দ্দের বিধার পরিমাণ হইবে ১ দ্রোণ মাষ ও (১ দ্রোণ-পরিমিত) যবপুলাক অর্থাৎ অর্দ্ধসিদ্ধ যব এবং অবশিষ্ট জ্বব্য অখের সমান দিতে হইবে। তবে বলীবর্দ্দের বিধা-সম্বন্ধে অখের •বিধা হইতে এই বিশেষ যে, ইহাদিগের জন্ম শুক্ত তিলের কল্ক ১ তুলা বা ১০০ পল, অথবা ১০ আঢ়ক কণকুগুক (অর্থাৎ ভাঙ্গা তণ্ডুলের কণার সহিত মিশ্রিত ভূসি) দিতে হইবে।

বলীবর্দের জন্ম নির্দিষ্ট বিধার দিও বিধা মহিষ ও উট্টের জন্ম বাবস্থা করিতে হইবে। থর বা গর্দিভ, পৃষত (বিদ্চিত্র মৃগ) ও রোহিত হরিণের জন্ম (মাষ বা যবপুলাকের) অর্দ্ধন্দোণ বা ২ আঢ়ক বিধারণে দিতে হইবে। এণ ও কুরক হরিণের জন্ম ১ আঢ়ক উক্ত বিধাই দিতে হইবে। অজ বা ছাগ, এড়ক বা মেষ ও বরাহের জন্ম ই আঢ়ক উক্ত বিধা দিতে হইবে; অথবা, ইহাদিগের জন্ম কণকুণ্ডক (ভাঙ্গা তণ্ডুলের সহিত মিশ্রিত ভূসি) উক্ত ই আঢ়কের দিগুল (অর্থাৎ ১ আঢকের পরিমাণে) দিতে হইবে। কুকুরের জন্ম ১ প্রস্থ-পরিমিত ভোজন দিতে হইবে। হংস, ক্রোঞ্চ ও মধ্রের জন্ম ই প্রস্থ অন্ন নির্দিষ্ট। উক্ত জীবজন্তুর অতিরিক্ত মৃগ, পশু, পক্ষী ও ব্যালদিগের একদিনের ভোজন পরীক্ষা করিয়া ইহাদিগের বিধা অন্যমান করিয়া লইয়া নিন্দেশি করিতে হইবে।

পোকাদি কর্ম হইতে নিশার) অঙ্গার ও তৃথ লোহকর্মান্ত (লোহকারের কারথানা) ও (গহাদির) ভিত্তি লেপন কার্গ্যের জন্ত দিতে হইবে। দাস, কর্মকর ও স্পকারদিগের জন্ত তণ্ডলকণ (তাহাদের থাছার্গে) দিতে হইবে। ইহাদিগকে দিয়াও যদি অবশিষ্ট কিছু থাকে, তাহা হইলে ইহা সাধারণ উ্তদনিক (অন্নপাচক) ও অপূপ-কর্মকরদিগকে (পিট্রকাদি-পাচকদিগকে) দিতে হইবে।

(উক্ত দ্রব্যাদি তৈয়ার করিবার) উপকরণ বলা হইতেছে, যথা—তৃলাভাগু, মানভাগু (বা ওজন করার বাট), রোচনী (ভাল প্রভৃতি দলনের যন্ত্র), দৃষৎ (পেষণ-প্রস্তর), মৃষল, উল্থল, কুটকযন্ত্র (ঢেঁকি), রোচকযন্ত্র (আটা প্রভৃতির পেষণ যন্ত্র—ইহা মন্তন্ত্র, বলীবদ্ধ ও সলিল্যারা চালিত হুইতে পারে), প্রক (কাষ্ঠময় ছডিকাবিশেষ ?), স্প (প্রফোটন বা কুলা), চালনিকা (চালনী), কেণ্ডোলী (বংশদলনির্দিত ভাগু বা ছোট টুকরী), পেটেবা (পিটাইবার যন্ত্র) ও সম্মার্জনী (শোধনী বা ঝাডু)।

মার্জ ক (ঝাডুদার), আরক্ষক (কোষ্ঠাগারের রক্ষী পুনষ), **ধারক** (তুলাছারা মাপকারী), মায়ক (ধাতাদির মানকারী), মাপক (মান-প্রিদর্শক), দায়ক, দাপক (দ্রবাদি-দানের পরিদর্শক), শলাকাপ্রভিগ্রাহক (ওজন গণনার যষ্টিগ্রহণকারী), দাস ও কর্মকরবর্গকে বিষ্টি-সংজ্ঞায় অভিহিত করা হয়।

ধান্ত রক্ষার স্থান উচ্চে নিবি? হইবে, (গুড ফাণিতাদি) ক্ষারদ্রব্যের নিক্ষেপ বা রক্ষণ-স্থান সাম্রঘটিত তৃণাদিশ্বারা আচ্ছাদিত হইবে, (তৈল মৃতাদি) ক্ষেহদ্রব্যের রক্ষণ-স্থান মৃৎকোষ্ঠ অর্থাৎ মুনায় কুস্থাদি ও কাষ্ঠকোষ্ঠ (দারুময়) পাত্র হইবে, এবং লবণের নিক্ষেপ-স্থান পৃথিবী বা ভূমি (অথবা পার্থিব ঘটাদি) হইবে॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে কোষ্ঠাগারাধ্যক্ষনামক পঞ্চদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৩৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### ষোড়ুশ অধ্যায়

#### ৩৪শ প্রকরণ—প্রা**গ্যক্ষ**

পণ্যাধ্যক্ষকে নানাবিধ স্থলে ও জলে উৎপন্ন এবং স্থলপথ ও জলপথ দিয়া আগত পণ্যসমূহের মধ্যে সারন্তব্যের ও ফল্পন্তব্যের মূল্যতারতম্য এবং কোন্ পণ্য লোকের বেশী প্রিয় ও কোন্টি অপ্রিয় সেই বিষয় ( অর্থাৎ পণ্যের চাহিদা ইত্যাদি বিষয় ) জানিয়া রাখিতে হইবে। সেই প্রকারে তাঁহাকে পণ্যসমূহের বিক্ষেপ ( অর্থাৎ সংক্ষিপ্ত দ্রব্যসমূহের বিস্তার ), সংক্ষেপ ( বিক্ষিপ্ত দ্রব্যসমূহের একত্রীকরণ ), ক্রয় ও বিক্রয়-প্রয়োগের ( অর্থাৎ এই সবের অন্তর্গান বা অনক্রানের ) উপযুক্ত কালসম্বন্ধেও সব বিষয় জানিয়া রাখিতে হইবে।

(পণাাধ্যক্ষ) যে পণ্য প্রচুর পরিমাণে উৎপন্ন হইবে তাহা একত্র-গত করিয়া ইহার মূল্য চড়াইয়া দিবেন। ইহার সমুচিত মূল্য পাওয়া গেলে (তিনি) পরে ইহার মূল্যভেদ (অর্থাৎ আরোপিত মূল্য হইতে ন্যুনতা) ঘটাইবেন।

পণ্যাধ্যক্ষ ) স্বদেশে উৎপন্ন রাজপণ্যসমূহের একমুখ ব্যবহার (অর্থাৎ এক নিয়ত স্থান বা ব্যক্তির মারফতই একচেটিয়া ক্রয়-বিক্রয় ) স্থাপিত করিবেন। (তিনি) পরদেশে উৎপন্ন পণ্যসমূহের অনেকমুখ ব্যবহার (অর্থাৎ অনেক স্থান হইতে ক্রয়-বিক্রয়ের ব্যবস্থা) স্থাপিত করিবেন এবং তিনি এই উভয়বিধ পণ্য (অর্থাৎ স্বদেশজাত ও পরদেশজাত পণ্য ) প্রজাবর্গের প্রতি অন্তগ্রহবৃদ্ধি রাখিয়া (অর্থাৎ তাহাদিগকে যেন অধিক মূল্যরূপ উপপীড়া সহিতে না হয় এইভাবে) বিক্রয় করাইবার জন্ম ব্যবস্থা করিবেন। তিনি ইহাও লক্ষ্য রাখিবেন থে, স্থুল (মোটা) লাভের সম্থাবনা থাকিলেও যদি সেই জন্ম প্রজাবর্গের উপঘাত বা কপ্ত উপস্থিত হয়, তাহা হইলে তাহাকে সেই লাভ বারণ করিতে হইবে। (তিনি) অজন্ম বা সহজে প্রাপ্য পণ্যসমূহের উপযুক্ত কালে বিক্রয়ের উপরোধ বা বিক্রয়প্রতিষেধ, কিংবা সেগুলির সংকুলদোষ (অর্থাৎ অধিক পরিমাণে জ্মাকরণ) উৎপাদন করিবেন না।

বহু লোকদারা বিক্রেতব্য রাজপণ্য বৈদেহক বা বাণিজকের। ইহার নির্দারিত মূল্যে বিক্রেয় করিবে। তাহারা যদি সেই সব দ্রব্য নির্দিষ্ট মূল্য হইতে কম মূল্যে বিক্রেয় করিয়া ক্ষতি ঘটায়, তাহা হইলে তাহারা ছেদ বা মূল্যহানিরূপ বৈধরণ-সংজ্ঞক অর্থপূরণ করিয়া দিতে বাধ্য থাকিবে। বাণিজকগণ হইতে আদের রাজকীয় অংশ নিদ্ধারিত হইতেছে, যথা—পণ্যসমূহের মানব্যাজী (মানদণ্ডাদিধার। মান বা পরিমাপজনিত ব্যাজী) দ্রব্যের হিউ ভাগ, তুলামান (তোল করার জন্ম যে ব্যাজী গ্রহণ করা হয়) দ্রব্যের ব্যাজী হঠ ভাগ এবং গণ্যপণ্যের (অর্থাৎ গুবাকাদি যে পণ্য গণিয়া বিক্রের করা হয়) ব্যাজী হঠ ভাগ (কেহ কেহ এই ব্যাজী ক্রেতাদিগের প্রাপ্য বলিয়া ব্যাখ্যা করেন)।

(পণ্যাধ্যক্ষ) পরদেশে জাত পণ্যসম্হ ( বিদেশী বাণিজকদিগের প্রতি )
অন্তগ্রহ প্রদর্শন করিয়া (অর্থাৎ অন্তপালাদির উপদ্রব নিবারণ ও ব্যাজামোক্ষ
মঞ্জ্র করিয়া ) আনাইবেন। এবং যাহারা জলপথবাহক সার্থবাহ বা বণিক্,
তাহাদিগের প্রতি উত্তরকালের উপযুক্ত পরিহার বা করমোক্ষণ (তিনি) বিধান
করিয়া দিবেন। আগন্তক বা বিদেশ হইতে আগত ব্যাপারীদিগের অর্থ-বিষয়ে
(ঋণ-বিষয়ে) কেহ (রাজন্বারে) অভিযোগ আনিতে পারিবে না (অর্থাৎ
বিনা অভিযোগে ঋণ আদায়ের ব্যবস্থা করিতে হইবে), কিন্তু, যাহারা সেই
বিদেশী ব্যাপারীদিগের উপকারসাধক কার্য্যসহযোগী (অর্থাৎ তাহাদিগের
ব্যাপারে অংশীদার হইয়া উপকারক) তাহারা (রাজন্বারে) তাহাদিগের প্রাপ্য
অর্থের জন্ম অভিযোগ আনিতে পারিবে।

রাজপণ্যের বিক্রেভারা একস্থান হইতে আগত বিক্রীত পণ্যের ম্ল্য একটি মাত্র ছিন্দ্রনার আচ্ছাদিত কাষ্ঠময় দ্রোণী বা পেটিকাতে নিহিত করিবে। দিনের অষ্টম ভাগে (বিক্রয়ের অবসানে) সেই ম্ল্য পণ্যাধ্যক্ষের নিকট অর্পণ করিবে এবং বলিবে, "এতথানি মাল বিক্রীত হইয়াছে এবং এতথানি অবশিষ্ট রহিয়াছে"। তাহারা তুলাভাও ও মানভাওও (তুলাদও ও মাপিবার বাটপ্রভৃতিও) (তাঁহাকে) অর্পণ করিবে। এই পর্যান্ত রাজার নিজদেশে উৎপন্ন পণ্যসম্হের বিক্রয়াদি-বিধি ব্যাখ্যাত হইল।

সম্প্রতি পরদেশে পণ্যাদি বিক্রয়-সঙ্গদে বিধি ব্যবস্থাপিত হইতেছে। পণ্যাধ্যক্ষ (প্রথমতঃ) স্বপণ্য ও পরপণ্যের মৃল্য (তারতম্যসহকারে) বিচার করিয়া বৃঝিবেন এবং (তৎপর) তিনি লক্ষ্য করিবেন যে, পরদেশে নিজ্পণ্যসমূহ ব্যাপারার্থ লইয়া গেলে, সেথানে শুল্ক, বর্ত্তনী (সেই দেশের অন্তপালকে দেয় কর), আতিবাহিক (সেই দেশের মার্গাতিবাহন-জন্ম পুলিশকে দেয় কর), শুলাদেয় (সেনানিবাসে দেয় কর), তরদেয় (নদীপ্রভৃতি পার হওয়ার জন্ম নাবিককে দেয় কর), ভক্তে (কর্মকর বলীবর্দাদির ভোজনজন্ম খরচ), ও

ভাটকের (ভাড়ার) জন্ম কত ব্যয় হইবে; এবং সেই সব ব্যয় বাদ দিয়া (পণ্যবিক্রয়লারা) শুদ্ধ লাভ কত টিকিতে পারে। যদি কোন উদয় বা লাভ দৃষ্ট না হয়, তাহা হইলে তিনি বিবেচনা করিবেন যে, নিজ ভাগু (পণ্যদ্রব্য) লাভের প্রতীক্ষায় সেথানে নিয়া জমা রাখা যায় কি না, এবং নিজপণ্যের বদলে পরপণ্য লইয়া তদ্দারা লাভ করা যায় কি না। তৎপর (অর্থাৎ লাভের উপলব্ধি হইলে) তিনি সমীক্ষিত লাভের এক-চতুর্থাংশবারা ক্ষেমমার্গ দিয়া (অর্থাৎ চৌরাদির উপদ্রবরহিত পথ দিয়া) স্থলব্যবহার অর্থাৎ স্থলপথবারা কৃত বিক্রয়াদিব্যাপার প্রযোজিত করিতে পারেন। এবং (তিনি) তাহাদের আফুক্ল্য লাভের আশায় তদ্দেশীয় স্লাট্টবীপাল, স্বারমুখ্য ও রাষ্ট্রমুখ্য দিগের সহিত প্রতিসংদর্গ (সংগতি ও পরিচয়) স্থাপন করিবেন।

পণ্যাধ্যক্ষের অধীন কোন নিজ দেশীয় বণিক্ বিদেশে ব্যাপার করিতে গিয়া) যদি কোন বিপদে পতিত হয়, তাহা হইলে তাহাকে নিজের (রত্মাদি) দার দ্রব্য ও নিজের শরীর রক্ষা করিতে হইবে। অথবা, পরদেশ হইতে নিজ দেশে না আদা প্যান্ত, তাহাকে দে দেশের রাজার প্রাপ্য দর্ক প্রকার নিজেদের করাদি শোধ করিয়া বাণিজ্য-ব্যবহার করিতে হইবে।

(সেইরপ কোন বর্ণিক) জলপথে যাইরা প্রদেশে বাণিজ্য করিবার পূর্বের যানভাটক (অর্থাৎ নৌকাদি ভাড়া), পথ্যদন (পথে থাই-খরচ), নিজপণ্য ও পরপণ্যের মূল্যসম্বন্ধে (তারতম্য-) বিচার, যাত্রাকাল (পরদেশযানের উপযুক্ত কাল, অথবা, গতাগতির কালের পরিমাণ), ভয়প্রতীকার (পথে চৌরাদি-ভয়ের প্রতিবিধান) ও পণ্যপত্তনচারিত্র (নিজপণ্য বিক্রয়ের জন্য যে পরপত্তনে যাইতে হইবে সে-দেশের আচার-ব্যবহার) এই সব বিষয় উত্তমভাবে জানিয়া লইবে।

নদীপথে গেলেও, তৎ তৎ দেশের চরিত্র ( আচার-ব্যবহার ) অন্থসরণ করিয়া বাণিজ্যবিষয় জানিয়া, তাহাকে যে-পথে গেলে লাভ বেশী হইবে, সে পথে যাইতে হইবে; এবং যে-পথে ( জলপথাদিতে ) গেলে অল্প লাভ বা অলাভ হইবে, সে-পথ তাহাকে বজ্জন করিতে হইবে॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্বে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে পণ্যাধ্যক্ষ নামক ষোড়শ অধ্যায় ( আদি হইতে ৩৭ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### সপ্তদশ অধ্যায়

#### ৩৫শ প্রকরণ—কুপ্যাধ্যক্ষ

কুপ্যাধ্যক্ষ ( অর্থাৎ যে প্রধান রাজকর্মচারী কুপ্য বা সারদারু, বেণু, বল্লী, বন্ধ প্রভৃতি পদার্থের সংগ্রহাদি কার্য্যে ব্যাপৃত থাকেন ) দ্রব্যবনের রক্ষিপুরুষগণছারা কুপ্য আনাইবেন। (তিনি) দ্রব্যবনের দ্রব্যাদিন্ধারা ( শকটাদিনির্মাণার্থ )
কারখানাও বসাইবেন। (তিনি) দ্রব্যবনে ( বৃক্ষাদির শাখা, স্কন্ধ, ম্লাদি )
ছেদনকারী কর্মকরগণের কার্য্যের জন্ম দেয় বেতনের ও ( অনহ্জ্ঞাত বৃক্ষছেদনাদির জন্ম ) তাহাদিগের উপর দণ্ডের ব্যবস্থা করিবেন; কিন্তু, কোনও বিপদ ( যথা
—শকট্যুগভঙ্গাদি ) উপস্থিত হইলে অনহ্জ্ঞাত বৃক্ষছেদনজন্ম দণ্ড বিহিত

এখন কুপ্যবর্গের অন্তর্গত সারদাক প্রভৃতি অবান্তরবর্গের দ্রব্যাদির নাম নিরূপিত হইতেছে। সারদাক্রবর্গে (অর্থাৎ শক্ত বা মজবৃত কাষ্ট্রর্গে) নিরূপিথিত বৃক্ষসমূহ অন্তর্ভুক্ত, যথা—শাক ( সেগুণ-ফুলাদি ), তিনিশ ( নেমী বা রথফ), ধরন ( ধমুর্ক্ষ, ধামনি বৃক্ষ ), অর্জ্জ্ন, মধুক, তিলক, সাল, শিংশপ ( শিশুবৃক্ষ ), অরিমেদ ( বিট্থাদির, গুইয়া বাবলা ), রাজাদন ( ক্ষীরিকা বৃক্ষ ), শিরীষ, খদির, সরল, তাল, সর্জ্জ, অশ্বর্ক ( সর্জ্জভেদ ), সোমবন্ধ ( শ্বেত খদির, কট্ফল ), কশ ( লোমশপুচ্ছক নকুলবৃক্ষভেদ ), আম্র ( মতান্তরে, 'কশাম' একটি সমস্ত পদ), প্রিয়ক ( গোরসর্জ্জ, মতান্তরে, পীতশালক ), ধব (ধুরন্ধর বৃক্ষ ) প্রভৃতি।

েবেণুবর্গে নিম্নোদ্ধত বৃক্ষসমূহ অন্তর্ভুক্ত, যথা—উটজ ( এক প্রকার বেণু, যাহার মধ্যে রড় স্থবির বা ছিদ্র আছে, যাহার পৃষ্ঠ কর্কশ ও যাহার তন্ততে কণ্টক আছে ), চিমিয় (স্থবিরশৃত্য মৃত্র ছালবিশিষ্ট বেণুভেদ), চাপ ( স্বল্লস্থবির ও অত্যন্ত খরখরা বেণুভেদ), ( বেণু নিঙ্কণ্টক ও চাপযোগ্য ), বংশ ( বাঁশ ), সাতীন ( ছোট বাঁশভেদ ), কণ্টক ( বেণুভেদ ), ভাল্লক ( মোটা, দীর্ঘ ও নিঙ্কণ্টক বেণুবিশেষ ) ইত্যাদি।

বল্লীবর্গে নিম্নলিখিত লতাগুলি অন্তভূ ক্র, যথা—বেত্র (বেত), শীকবল্লী (লতাবিশেষের নাম), বাশী (অৰ্জ্জ্ন-পুম্পের মত পুষ্পবতী লতা), খ্যামলতা (প্রাসিদ্ধ গোপবল্লী বা শারিবা লতা), নাগলতা (অপর নাম নাগজিহ্বা, তাত্ম্বলী) প্রভৃতি।

মালতী ( চামেলীবিশেষ ), ম্র্রা, অর্ক, শণ, গবেথ্ক ( 'গবেধুকা' পাঠ সঙ্গত প্রতিভাত হয়—ইহা এক প্রকার তৃণবিশেষ ), অত্সী প্রভৃতি বক্ষবর্গের অন্তর্গত।

মন্থ, বল্বজা প্রভৃতি রক্ত্রভাও (অর্থাৎ রচ্জ্-নির্মাণের উপযোগী সাধন)নামে পরিচিত। তালী ও ভূর্জ্জ—ইহার! লেখ্যোপযোগী পাত্র বা কাগজের কার্য্য
সাধন করিতে পারে। কিংশুক, কুহুন্ত ও কুন্ধ্নের প্রুপ্ত (বন্ধাদি-রঞ্জনের সাধন)।

( স্বরণাদি ) কন্দ, (উশীরাদি ) মূল, ( আমলকাদি ) ফল প্রভৃতি ও্র্যাধি-বর্গের অন্তর্গত।

স্থাবরবিষবর্গ নিয়লিখিত ব্যব্কাদির অন্তর্ভুক্ত, যথা—কালকূট (অশ্বথ-পত্রের আক্রতিবিশিষ্ট পত্রধারী বৃক্ষবিশেষ—ইহার নির্য্যাস বিষযুক্ত হয়), বৎসনাভ (সির্বারপত্রসদৃশ পত্রযুক্ত বিষবৃক্ষবিশেষ), হালাহল (স্চীর ক্যায় পত্রবিশিষ্ট, নীলপল্লব ও গোস্তনাক্ষতি-ফলশালী বিষবৃক্ষবিশেষ), মেষশৃঙ্গ (উৎপলের মৃক্লের ক্যায় ফলবিশিষ্ট বৃক্ষভেদ), মৃস্তা (তুই প্রকার, থণ্ডশর্করার মত ও শব্দের মত শেত), কুর্গ (বিষময় ওষধিবিশেষ), মহাবিষ (মাংসবর্গ স্তনের চূচুকাকার ফলবিশিষ্ট ওষধি; এই শব্দটি বিমুখসর্পকেও বুঝায়, কিন্তু তথন ইহা জন্সম বিষের অন্তর্ভুক্ত হইতে পারে), বেল্লিতক (ক্ষুব্রক্ত মূলজ ওষধিবিশেষ), গৌরার্দ্র (কৃষ্ণবর্গ কল্পজ ওষধিবিশেষ), বালক (অপর নাম খ্রীবের, পিপ্ললীর আকারবিশিষ্ট ওষধিবিশেষ), মার্কট (বানরের বর্ণবিশিষ্ট এক প্রকার বিষোষধি), হৈমবত (হিমালয়ে উৎপন্ন দীর্ঘপত্র বিষোষধি-বিশেষ), কালিঙ্গক (কলিঙ্গদেশে উৎপন্ন, যবাক্রতি ওষধিবিশেষ) দারদক (দরদ দেশে উৎপন্ন বিষযুক্তপত্রবিশিষ্ট ওষধি), অন্ধোলসারক (আকোড় বা ধলআঁকুড়া বৃক্ষের সার বিষবস্থবিশেষ), উষ্ট্রক (বিষবৃক্ষবিশেষ, প্রাচীন টীকার মতে উষ্ট্রমেট্রের আকারবিশিষ্ট ফলযুক্ত বৃক্ষ বা ওষধিতেন) প্রভৃতি।

জাসমবিষপর্য্যায়ে সর্প ও (চিত্রভেকাদি) কীট বিষবর্গের অন্তর্গত (ইহারা সভাবস্থিত অবস্থায় অসংস্কৃত বিষ বলিগা পরিজ্ঞাত)। কিন্তু, এই সর্প ও কীটগুলিই (উপনিষদপ্রকরণে উক্ত বিধানমতে) (অপুনির্মিত) কুছাদিতে সংযোজিত হইলে অধিকতর বিষযুক্ত হইয়া সংস্কৃত হয়।

গোধা, গেরক ( শ্বেতত্বগ্ বিশিষ্ট গোধাবিশেষ ), ত্বীপী (চিতা বাঘ), শিংশুমার ( শুপুক্ নামক জলজন্তভেদ ), সিংহ, বাাদ্র, হাতি, মহিব, চমর ( মৃগভেদ ), স্মর

(মৃগভেদ), খজগ (গণ্ডার), গো, মৃগ ও গবয়ের এবং অন্যান্য মৃগ, পশু, পক্ষী ও বালের (হিংম্রজন্তর) চর্মা, অন্ধি, পিন্ত, স্নায়্ (অতঃপর মৃলে যে অন্ধি শব্দ পঠিত দৃষ্ট হয়, তাহা দিকলদোষত্বই বলিয়া প্রতিভাত হয়), দন্ত, শৃঙ্ক, খুর ও পুচ্ছগুলি কুপ্যসংজ্ঞায় গৃহীত হইবার যোগ্য (এবং কুপ্যাধ্যক্ষ এগুলির সংগ্রহ করাইবেন)।

নিম্নলিখিত লোহধাতৃসংজ্ঞক দ্রবাগুলিও কুপোর অন্তর্ভুক্ত (সেইজন্য এ-গুলি আকরকণান্তপ্রকরণে উক্ত হইলেও এন্থলে পুনকক্ত হইতেছে), যথা—কালায়স, তাম, বৃত্ত (ধাতৃ বিশেষ ? অথবা, 'তামবৃত্ত' একশন্দ বলিয়া গৃহীত হইবে), কাংস্ম (কাস), সীস, ত্রপু, বৈকন্তক (নীজবজ্ঞ-নামক ধাতৃবিশেষ ?) ও আরক্ট (পিত্তল)।

ভাও ছেই প্রকার, যথা—(১) বিদলময় (অর্গাৎ নংশবেরাদিনিম্তিত) ভ (২) মৃত্রিকাময় (কুলালনিম্তি জলকুছাদি)।

অঙ্গার, তুব ও ভশ্ম, এবং মুগবাট, পশুবাট, পক্ষিবাট ও ব্যালবাট ( অথাং তৎ তৎ জীবজন্তুর রক্ষণস্থল ) এবং কাষ্ঠবাট ও তৃণবাট——এই সবও কুপ্যুসংজ্ঞায় জ্ঞাপ্য।

(কুপ্যাধ্যক্ষ) কুপ্যদারা যাহারা জীবিকা অর্জ্জন করে তাহাদিগের সাহায্যে (রাজনগরাদির) বাহিরে ও মধ্যে দর্মর প্রকার ভাণ্ডসম্বন্ধী কর্মান্ত (কারথানা অপরস্পর সংশ্লিষ্টভাবে জীবিকাপ্রয়োজনে ও পুররক্ষাপ্রয়োজনে স্থাপিত করিবেন॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশান্তে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে কুপ্যাধ্যক্ষ.নামব সপ্রদশ অধ্যায় ( आদি হইতে ৩৮ অধ্যায় ) সমাপ্র ।

# অষ্টাদশ অধ্যায়

#### ৩৬ প্রকরণ—**আয়ুধাগারাধ্যক্ষ**

আয়ুধাগারের অধ্যক্ষ (অন্ধ্রশালার প্রধান অধিকারী পুরুষ ) সংগ্রামকার্গ্যের জন্ম প্রয়োজনীয়, তুর্গের (নিশ্মাণ-রক্ষণাদি) কর্মের জন্ম প্রয়োজনীয়, ও
শক্রনগরের অভিঘাত বা ধ্বংসকার্য্যের জন্ম প্রয়োজনীয় (সর্বতোভন্রাদি) যন্ত্র,
(শক্তিপ্রাসাদি) আয়ুধ, (পেটীচর্মাদি) আবরণ ও (হস্তির্থাদির অলঙ্কারাদি)

উপকরণ তৎ তৎ কর্মাভিজ্ঞ কারু ( স্থুলকর্মকারী ) ও শিল্পী ( স্ক্ষরুর্মকারী ) লোকের সহায়তায় নির্মাণ করাইবেন ; কিন্তু, (তিনি) এই সব কারু ও শিল্পী দিগের ( দৈনন্দিন ) কর্মের পরিমাণ, কর্মের সময়, কর্মজনিত বেতন ও কর্মের ফলরূপে নিম্পাদিত যন্ত্রাদির ইয়তা পূর্বের নির্মারিত করিয়া তাহাদিগকে কার্য্যে নিযুক্ত করিবেন। (তিনি) নিম্পাদিত দ্রব্যসমূহ ইহাদিগের রক্ষণোপযোগী স্থানে ( অথবা, নিজের আয়ত্ত-স্থানে ) নিবেশিত রাথিবেন। ( যন্ত্রপ্রভৃতির ) বহু বার স্থান-পরিবর্জন ( অর্থাৎ সেগুলিকে ঠিক রাথিবার জন্ম একস্থান হইতে অন্তম্থানে নিবেশন ) ও সেগুলিকে ( ম্ব্যাসময়য় ) রোদে ও বাতাসে প্রদান করিতে হইবে। যে-সব দ্রব্য উয়া, য়েহ ( সেদ ) ও ( ঘূণাদি ) রুমিন্বারা নই ইইতে পারে, সে-গুলির স্থাপনাদিবিষয়ে অন্য প্রকার ব্যবস্থা করিতে হইবে। ( দ্রব্যগুলির ) জাতি ( শ্রেণীভুক্ততা ), রূপ ( বক্রাদি রূপ ), লক্ষণ ( শান্থোক্ত উত্তমাদি চিহ্ন ), প্রমাণ ( দৈর্গ্যাদি-পরিছেদ ), আগম ( প্রাপ্তিম্থান ), মূল্য ও নিক্ষেপ ( একত্র করিয়া রক্ষণ )-সম্বন্ধে ( আযুধাগারাধ্যক্ষ ) সমস্ত বিধয় উপলব্ধি করিবেন।

নিমলিথিত দশটি যন্ত্রকে (স্থানে স্থিত অবস্থায় ব্যবহার করিতে হয় বলিয়া) **স্থিত-যন্ত্র নাম দে**ওয়া হয়, যথা—(১) সর্ব্বতোভদ্র (ইহা এক প্রকার শকটচক্রের আকার-বিশিপ্ত যন্ত্র, যাহা হুর্গকুডো রক্ষিত হইয়া ঘুরিতে থাকিলে চতুর্দিকে পাষাণ নিক্ষেপ করিতে পারে), (২) জামদগ্ন্য ( এই যন্ত্রের মধ্য স্থানে রক্ষিত শরগুলি সহজে নিক্ষিপ্ত হইতে পারে ), (৩) বহুমুখ (ইহা তুর্গপ্রাকারের উপর অবস্থিত অট্রালকবিশেষ, যেথানে বসিয়া ধনুর্ধারী পুরুষেরা চতুর্দ্ধিকে বাণ নিক্ষেপ করিতে পারে), (৪) বিশ্বাসঘাতী ( নগরের বাহিরে ডির্মাগবচ্ছিত পরিঘবিশেষ, যাহা স্পর্শমাত্রেই শক্রর উপর পতিত হইয়া তাহার প্রাণনাশ করিতে পারে ), (৫) সংঘাটা ( ইহা দীর্ঘ কার্চে সংঘটিত অগ্নিযন্ত্রবিশেষ, যদ্ধারা অট্রালকাদি প্রদীপিত হইতে পারে), (৬) যানক (ইহা চক্রের উপর আরুঢ় দণ্ডের মত আয়ত যন্ত্রবিশেষ), (৭) পর্জন্তক (ইহা অগ্নির উপশান্তির জন্ম বরুণান্ত্র-বিশেষ; মতান্তরে, ইহা পঞ্চাশ হস্ত-পরিমিত প্রাকারের উপর অবস্থিত ষন্ত্ৰবিশেষ, যাহা শত্ৰু সমীপগত হইলে তত্বপরি ষন্ত্রবিশ্লেষণদারা পাতিত করা যায়). (৮) বাছষত্র (ইহা পর্জ্জন্তকের অর্ধ্ধপ্রমাণবিশিষ্ট পরম্পরাভিন্থী স্তম্ভবয়রূপ ষন্ত্র, যাহা যন্ত্রবিশ্লেষণদারা শত্রুর উপর পাতিত হইতে পারে), (৯) উদ্ধবাহ (উদ্বন্ধিত পৰ্জন্যকপ্ৰমাণ মহাস্তম্ভ, যাহা যন্ত্ৰবিশ্লেষণদারা শত্রুর উপর পাতিত হইতে পারে ) ও (১০) অর্দ্ধবাহু (ইহা পূর্ব্বোক্ত ষল্প্রের অর্দ্ধপ্রমাণ

নিম্নলিথিত সপ্তদৃশ যন্ত্রকে চলযন্ত্র-নামে পরিচিত করা হয়, যথা,— (১) পঞ্চালিকা ( এই যন্ত্র তীক্ষমুখবিশিষ্ট সারদারুনিশ্বিত এবং ইহা তুর্গপ্রাকারের বাহিরে শত্রুর পথনিরোধের জন্ম জলমধ্যে রক্ষিত হয় ), (২) দেবদণ্ড ( ফুর্গের প্রাকারের উপর স্থাপিত কীলকরহিত মহাস্তম্ভ), (৩) স্করিকা ( স্ত্রে ও চর্মছারা নির্মিত ভস্তাবিশেষ—ইহার মধ্যে কার্পাসাদি পুরিয়া রাখা হয় একং ইহা বাহির হইতে পাষাণ-নিক্ষেপ রোধ করার জন্ম প্রচ্ছাদনীহিসাবে ব্যবহৃত হয়; মতান্তরে, ইহা স্করের আকারবিশিষ্ট চর্মারত বেণুময় প্রচ্ছাদনী-বিশেষ এবং ইহা প্রাকারগ্রহণের নিবারণার্থ ব্যবহৃত হয় ), (৪) মুষলষ্টি (ইহা থদির কাষ্ঠধারা নির্দ্মিত শূলাক্বতি যন্ত্রনিশেষ ), (৫) হস্তিবারক ( ইহা হস্তিবারণার্থ নির্মিত দিমুথ বা ত্রিমুথ দণ্ড বিশেষ; মতান্তরে, ইহা হস্তীকে আঘাত করার জন্ম ব্যবহৃত পরিঘবিশেষ ), (৬) তালবৃস্ত ( বাতাদ-সঞ্চারার্থ ঘূর্ণ্যমান চক্রমন্ত্র-বিশেষ ), (৭) মূল্যর, (৮) ক্রঘণ ( মূল্যরাকার কার্চময় দণ্ডবিশেষ ), (১) গদা, (১০) স্পুক্তলা (কণ্টকনিচিত গদাবিশেষ), (১১) কুদাল, (১২) আম্ফোটিম (শব্দোখানপূর্বক মুৎপাষাণ ক্ষেপণের চর্ণাময় ষন্ত্রবিশেষ), (১৩) উদ্ঘাটিম (মুদ্পরাক্তি যন্ত্রবিশেষ); (১৪) উৎপাটিম (শুষ্টাদি ঝটিতি উৎপাটিত করার জন্ম ব্যবহৃত যন্ত্ৰবিশেষ), (১৫) শতল্পী (স্থুল ও দীৰ্গ কীলকাচিত মহাস্তম্ভ, যাহা শকটচক্রযুক্ত অবস্থায় তুর্গের প্রাকারের উপর রক্ষিত হয় ), (১৬) ত্রিশূল ও (১٩) চক্র !

'তীক্ষাপ্র বলিয়া নিয়লিথিত আয়ুধগুলির নাম হলমুখা, ষ্থা—শক্তি (চারিহাত-পরিমিত করবীর পত্তের আকারবিশিষ্ট মৃথযুক্ত এবং গোন্তনাকার হাতলযুক্ত সর্বলোহময় যন্ত্রবিশেষ ), প্রাস (চতুর্বিংশতিঅঙ্গুল-পরিমিত দ্বিপীঠযুক্ত কাষ্ঠগর্ভ সর্বলোহময় অপ্রবিশেষ ), কুন্ত ( ৭-৬-৫ হন্তপরিমিত বল্লমবিশেষ ), হাটক (কুন্ততুলাপ্রমাণবিশিষ্ট ত্রিকণ্টকযুক্ত অপ্রবিশেষ ), ভিণ্ডিপাল (মোটা-ফলকবিশিষ্ট কুন্ত ), শূল (তীক্ষ একম্খযুক্ত অপ্রবিশেষ—ইহার প্রমাণ অনিয়ত ), তোমর (এই অপ্রের অপ্রভাগ বাণাক্ষতি, ইহার প্রমাণ ৪॥/৫ হন্ত পর্যন্ত হইতে পারে ), বরাহকর্ণ (ইহা বরাহের কর্ণাক্ষতিম্থবিশিষ্ট প্রাস ), কণয় (ইহ এক প্রকার লোহময় অপ্র এবং ইহা উভয়দিকেই ত্রিকণ্টকাকার ম্থবিশিষ্ট এবং মধ্যমুষ্ট —ইহার প্রমাণ ২০-২২-২৪ অঙ্গুলি পর্যন্ত হইতে পারে ), কর্পণ (তোমর

তুল্য অস্ত্রবিশেষ, ইহা হস্তদারা ক্ষেপণীয় ও ইহা এক প্রকার পক্ষযুক্ত শরের ন্যায় হয়), ত্রাসিকা (ইহা চূড়াযুক্ত সর্বলোহময় প্রাসের ন্যায় অস্ত্রবিশেষ) ও অন্যান্য অস্ত্র।

কামুক, কোদও ও জ্রণ, এই তিন নামে পরিচিত বিভিন্ন প্রকারের **ধকু**ঃ তালময়, চাপময় (বেগুবিশেষের নাম চাপ), দারুময়, ও শৃঙ্গময় বা শৃঙ্গনির্মিত হইতে পারে।

জ্যা বা ধরু:তে ব্যবহৃত গুণ, মূর্বা, অর্ক, শণ, গবেধু, বেণু ও স্নায়ু—এই সব দ্রব্য হইতে নির্মাণ করা যায়।

ইষু বা বাণ বিভিন্ন প্রকারের হইতে পারে, যথা—বেণু, শর, শলাক। (সারদার হইতে প্রস্তুত শলাকা), দণ্ডাসন (অর্দ্ধনারাচ) ও নারাচ (সর্ব্ধ-লোহময় বাণ)। এই ইয়ু বা বাণগুলির মৃথ বা অগ্রভাগ ছেদন, ভেদন (সশোণিত অভিঘাতপ্রদান) ও তাড়ন (অশোণিত প্রহারদান) কার্য্য করিয়া থাকে এবং সে-গুলি লোহ অস্থি ও দারুনির্মিত হইতে পারে।

খড়গ (তরবারী তিন প্রকার যথা—নিস্তিংশ (যে তরবারীর অগ্রভাগ বক্র), মণ্ডলাগ্র (যে তরবারীর অগ্রভাগ মণ্ডল বা বৃত্তাকার), ও অসিষষ্টি (যে তরবারীর আকার পাতল ও লম্বা)। **ৎসক্ত** বা থড়গান্টি থড়গ (গণ্ডার) ও মহিষের বিষাণ (শৃঙ্ক) এবং হস্তীর বিষাণ (দম্ভ)-দ্বারণ নির্মিত এবং দারু ও বেণুমূলদ্বারাও নির্মিত হইতে পারে।

পরশু (২৪ অঙ্গুল-পরিমিত সর্বলোহময় ক্ষুর্যস্ত্রবিশেষ), কুঠার, পট্টস (উভয়দিকে ত্রিশূল্যুক্ত ষন্ত্রবিশেষ), খনিত্র, কুদাল, ক্রুক্ত (করপত্র বা করাত) ও কাণ্ডছেদন—এই যন্ত্রগুলি ক্ষ্রের ক্রায় তীক্ষ্ন বলিয়া ক্ষুব্রকল্প-নামে অখ্যাত হইয়া থাকে।

ষন্ত্রপাষাণ (ষে পাষাণ যন্ত্রজারা বিক্ষিপ্ত হয়), গোষ্পণপাষাণ (ষে পাষাণ গোষ্পণ-নামক ষষ্টি হইতে বিক্ষিপ্ত হয়) ও মৃষ্টিপাষাণ (ষে পাষাণ হস্তমৃষ্টি হইতে বিক্ষিপ্ত হয়), এবং রোচণী (দলনের ষত্রশিলা) ও দৃষদ্ (বড় বড় শিলাখণ্ড) প্রভৃতিও জ্বায়ুশ্ব নামে পরিচিত।

নিম্নলিখিত আবরণদ্রব্যাদি বর্ম্ম-নামে আখ্যাত হয়, য়থা—লোহজাল (মন্তক-সহিত সর্বাঙ্গের জন্ম লোহময় আবরণ-বিশেষ), লোহজালিকা (মৃতিত মন্তকের জন্ম লোহময় আবরণ-বিশেষ), লোহপট্ট (বাহু ব্যতীত সর্বাঙ্গের জন্ম আবরণ-বিশেষ) ও লোহকবচ (বক্ষঃছল ও পৃঠের জন্ম লোহময় আবরণ-বিশেষ),

স্ত্রকন্ধট (কার্পাদাদি স্ত্রন্থারা নির্মিত সন্নাহ)। এবং শিশুমারক, খড়্গী (গণ্ডার), ধেরুক (গবর), হস্তী ও গো (র্ষভ)—এই পশুগুলির চর্ম, থুর ও শৃঙ্গন্ধারা শিল্পিনটিত আবরণও বর্মনামে অভিহিত হইতে পারে। শিরস্থাণ (মস্তক রক্ষাকারী আবরণ), কণ্ঠন্রাণ (কণ্ঠমাত্রের জন্ম আবরণ), কর্পাস (অর্দ্ধবাছর আবরণ), কঞ্চ্ব (জান্তপর্যান্ত বিস্তৃত আবরণ), বারবাণ (গুল্ফপর্যান্ত বিস্তৃত আবরণ), পট্ট (বাহু ব্যতীত অঙ্গের জন্ম নির্মিত অলোহময় আবরণ) ও নাগোদরিকা (করাঙ্গুলিত্রাণ; মতান্তরে, উরস্থাণ) এইগুলি দেহের জন্ম আবরণভেদ। পেটা (বল্লীময় খেটক বা ঢাল), চর্ম (চর্মনির্মিত ঢাল), হস্তিকর্ণ (মৃথ ঢাকিবার ফলক), তালমূল (কার্মনির্মিত ঢাল) ধমনিকা (স্ত্রেময়ী পেটা), কবাট (কার্চময় ফলকভেদ), কিটিকা (চর্ম, বেণু বা বিদলময়ী পেটা), অপ্রতিহত (সম্পূর্ণ হস্তরক্ষার জন্ম নির্মিত আবরণ) ও বলাহকান্ত (অপ্রতিহত নামক আবরণের পর্যান্তে যে লোহপট্ট বন্ধ থাকে) এগুলিও আবরণবিশেষের নাম।

হস্তী, রথ ও অধের শিক্ষার্থ যে-সব ( অঙ্কুশানি) ভাও ব্যবহৃত হয় এবং ইহাদের ভূষণার্থ (পতাকাদি) অলঙ্কার ও (বর্মাদি) সন্নাহরচনাদি উপকর্মণ শ্রুবারা বাচ্য।

ঐন্ত্রজালিক (মায়ানিশ্মিত) কর্ম ও উপনিষদিক (ঔপনিষদক-নামক অধিকরণে উক্ত বিষাদির প্রতীকারলক্ষণ) কর্মও এই উপকরণ-সংজ্ঞায় অভিহিত হয়।

আয়ুধেশ্বর ( অর্থাৎ আয়ুধাধ্যক্ষ ) ( গত অধ্যায় ও বর্ত্তমান অধ্যায়ে উক্ত ) কুপ্যাপ্রবা সম্বন্ধীয় কার্থানাগুলির বিষয়ে ( রাজার বা রাজশাসকদিগের ) ইচ্ছা বা অভিপ্রায়, কর্মারস্ক ও কর্মসিদ্ধি, উপযোগ, দোষ, লাভ, ক্ষয় ও ব্যয় বিশেষভাবে উপলব্ধি করিবেন ॥ ১ ॥

কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে আয়ুধাগারাধ্যক্ষ-নামক.অষ্টাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৩৯ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## উনবিংশ অধ্যায়

## ৩৭শ প্রকরণ—তুলা ও মানের (বাটের) সংশোধন

পৌতবাধ্যক্ষ ( তুলা ও মানভাণ্ডের সংশোধন-জন্ম নিযুক্ত প্রধান অধিকারী) পোতবের জন্ম (অর্থাৎ তুলাও প্রতিমান বা বাট তৈয়ার করার জন্ম) কারথানা স্থাপিত করিবেন।

দশটি ধান্তের মাধের (বা দানার) ওজনহারা একটি স্থবর্ণমাধক কল্পিত হয়। অথবা, পাঁচটি গুল্লাফলহারাও ১ মাধক সংজ্ঞা বিহিত হয়। এইরপ ১৬টি মাধকহারা এক স্থবর্ণ বা কর্ম নির্মণিত হয়। আবার ৪ কর্মে এক পালা ওজনধরা যায়। [ অর্থাৎ স্থবর্ণ ওজনের জন্ম নিম্নলিখিত রীতি আর্য্যারণে নির্দিষ্ট হইতে পারে, যথা—

১০ ধান্ত মাষ = ১ স্থ্ৰৰ্ণমাষক
অথবা, ৫ গুঞ্জা = ১ স্থ্ৰৰ্ণমাষক
১৬ মাষক = ১ স্থৰ্ণ বা কৰ্ষ
৪ কৰ্ম = ১ পল ]

সম্প্রতি রূপ্যের প্রতিমান বা ওজন-বাট বলা হইতেছে )। ৮৮টি গোঁর বা সাদা সর্গণের ওজনবারা একটি রূপ্যমায়ক কল্পিত হয়। এইরূপ ১৬টি রূপ্যমায়ক বারা ১ ধরণ-নামক প্রতিমান ধরা হয়। অথবা, ২০টি শৈষ বা শিষ্টি-ফলবারা ১ ধরণ নির্দ্ধারিত হয়। [অর্থাৎ রূপ্য ওজনের জন্ম নিম্নলিখিত রীতি আর্য্যারূপে গৃহীত হইতে পারে, যথা—

৮৮ গৌর সর্বপ = ১ রূপ্যমাষক ১৬ রূপ্যমাষক = ১ ধরণ অথবা, ২০ শৈষ = ১ ধরণ

২০টি (মধ্যম ও অথও) তণ্ডুলের প্রমাণ বা ওজনদারা এক বজ্রাধরণ অর্থাৎ হীরকের ১ ধরণ নির্দ্ধারিত হয়।

(উক্ত বর্ণিত স্থবর্ণাদি ওজন করার জন্ম) নিম্নলিখিত চতুর্দ্দশ প্রকারের প্রতিমান বা বাট ব্যবহৃত হইতে পারে, যথা—(১) অর্দ্ধমাষক, (২) মাষক, (৩) চুই-মাষক, (৪) চারি মাষক, (৫) আট মাষক, (৬) স্থবর্ণ (=১৬ মাষক), (৭) চুই স্থবর্ণ, (৮) চারি স্থবর্ণ, (১) আট স্থবর্ণ,

- (১০) দশ স্থবর্ণ (অর্থাৎ তদানীস্তন ১০ ভরির বাট), (১১) কুড়ি স্থ্বর্ণ
- (১২) ত্রিশ স্থবর্ণ, (১৩) চল্লিশ স্থবর্ণ ও (১৪) শত স্থবর্ণ।

স্বর্ণ মাপিবার জন্ম যে-সমস্ত স্থবর্ণাদি-নামক প্রতিমানের বা বাটের কথা বলা হইল তন্ধারা রূপ্য মাপিবার জন্ম ধরণাদি-নামক প্রতিমানও ব্যাখ্যাত হইল বলিয়া ধরিতে হইবে (অর্থাৎ অর্দ্ধমাযকের বাট হইতে ১০০ ধরণের বাট পর্যান্ত ১৪ প্রকার প্রতিমান থাকা বুঝিতে হইবে)।

তোল বা ওজন করার জন্ম নির্দ্দিষ্ট প্রতিমান বা বাটগুলি লোহদারা নির্দ্দিত হইতে পারে; কিংবা, মগাধ ও মেকল দেশে উদ্ভূত শিলাদারা নির্দ্দিত হইতে পারে; অথবা, (শঙ্খাদি) এমন দ্রব্যদারা নির্দ্দিত হইবে যাহা জলদারা আলীরুত হইলে বা কোন মললেপদারা প্রালিপ্ত হইলে (ওজনে) বৃদ্ধি পাইবে না, কিংবা যাহা উফলারা (অগ্নিপ্রভূতির তাপদারা) হ্রাস বা ন্যুনতা প্রাপ্ত হইবে না।

( স্বর্ণ ও রূপ্য তোল করার জন্য ) দশ প্রকার তুলা ( পোতবাধ্যক্ষ ) নির্মাণ করাইবেন। প্রথম তুলার আয়াম ৬ অঙ্গল-পরিমিত হইবে এবং দ্বিতীয়দি তুলাতে আয়াম ক্রমশঃ ৮ অঙ্গল করিয়। বাড়িতে থাকিবে ( অর্থাৎ দ্বিতীয় তুলাতে আয়াম থাকিবে ১৪ অঙ্গল, তৃতীয়ে ২২ অঙ্গল, চতুর্যে ৩০ অঙ্গল ইত্যাদিক্রমে দশম তুলাতে আয়াম থাকিবে ৭৮ অঙ্গল) এবং প্রথম তুলার লোহময় অংশের ওজন থাকিবে ১ পল এবং দ্বিতীয়াদির ওজন ক্রমশঃ এক এক পল পর্যান্ত বাড়িয়া দশম তুলাতে অর্থাৎ উক্ত ১৪ অঙ্গল-পরিমিত তুলাতে ১০ পল ওজন লোহাংশ থাকিতে পারিবে। এই সব তুলায়য়ের উভয় পার্ষে (মেয় ও মানকে পর্যান্তমে ধারণজন্য ) শিক্য বা শিক্যা ( স্তুরময় বাটা ) থাকিবে।

্ম্বর্ণ প্রক্রপ্য ব্যতীত অস্তাল পদার্থ মাপিবার জন্ত অন্ত প্রকার তুলার নির্দ্রপণ করা হইতেছে।) ৩৫ পল-পরিমিত লোহদারা নির্দ্রিত ও ৭২ অঙ্গুল ( অর্থাৎ ৩ হস্ত )-পরিমিত আয়ামবিশিষ্ট সমর্ত্তা-নামে এক তুলা প্রস্তুত করা যায়। সেই তুলার মধ্যে পাঁচ পল-পরিমিত একটি মণ্ডল বা আংটী বাঁধিয়া (তিনি) সমকরণ ( অর্থাৎ ঠিক মাঝামাঝি অংশে চিহ্নদান ) করাইবেন। সেই সমচহ্বের পর এক এক কর্মক্রমে এক পল পর্যান্ত ( অর্থাৎ ১ কর্ম, ২ কর্ম, ৩ কর্ম ও ৪ কর্ম বা ১ পল পর্যান্ত ) মাপের চিহ্ন বলাইয়া যাইতে হইবে, তৎপর এক এক পলক্রমে দশ পল পর্যান্ত ( অর্থাৎ ১ পল, ২ পল ইত্যাদিক্রমে দশ পল পর্যান্ত ) মাপের চিহ্ন (তুলাতে) বসাইতে হইবে, (তৎপর) ১২ পল, ১৫ পল ও ২০ পল পর্যান্ত মাপের

চিহ্ন ( অর্থাৎ এইভাবে ১৬টি চিহ্ন বা দাগ ) ( তুলাতে ) বসাইতে হইবে, তৎপর ( অর্থাৎ ২০ পলের দাগের পর ) দশ দশ পলক্রমে ১০০ পল পর্যান্ত ( অর্থাৎ ৩০ পল, ৪০ পল ইত্যাদিক্রমে ১০০ পল পর্যান্ত ) মাপের চিহ্ন বসাইতে হইবে। প্রত্যেক অক্ষে অর্থাৎ পঞ্চম, দশম, পঞ্চদশ প্রভৃতি দাগে নদ্ধীবন্ধ ( এক প্রকার রজ্জুর রেথাচিহ্ন; পাঠান্তরে, নান্দীবন্ধ অর্থাৎ স্বন্তিকাচিহ্ন) বসাইতে হইবে।

সমবৃত্তা তুলার বিগুণ-পরিমিত (অর্থাৎ ৭০ পল-পরিমিত) লোহছারা নিশ্বিত ও ৯৬ অঙ্গুল (অর্থাৎ ৪ হস্ত )-পরিমিত আয়ামবিশিষ্ট পরিমাণী-নামক তুলা প্রস্তুত করা যায়। ইহাতে সমবৃত্তা তুলাতে আদর্শিত রীতিতে ১০০ পল মাপের দাগের পর ২০ পল (অর্থাৎ ১২০ পল), ৫০ পল (অর্থাৎ ১৫০ পল) ও ১০০ পল (অর্থাৎ ২০০ পল) মাপের চিহ্ন বসাইতে হইবে।

(১০০ পলে এক তুলা ওজন হয়—এই রপ) ২০ তুলাতে ১ ভার পরিমাণ মাপ বলিয়া ধৃত হয়।

( স্বর্ণ-রূপ্যাদির অতিরিক্ত দ্রব্য মাপিবার জন্ম অন্ম এক প্রকার পলবিশেষের বাটের কথা বলা হইতেছে, যথা—) পূর্ব্বোক্ত ধরণের দশটিতে এক পলবিশেষ ধরা হয়। সেই দশধরণাত্মক পলের ১০০ টিতে এক আয়েমানী তুলা পরি-গণিত হয় (ইহা রাজকীয় আয়ের মাপ করে বলিয়া এই সংজ্ঞাবিশিষ্ট)।

উক্ত আয়মানী তুলা হইতে ক্রমশঃ ৫ পল করিয়া কম পরিমাণে তুলার নাম যথাক্রমে ব্যবহারিকী তুলা ( যাহা ক্রয়-বিক্রয়ের উপযোগিনী ), ভাজনী তুলা ( ভ্তাদিগকে দেয় দ্রব্যাদির মাপে ব্যবহর্তব্য ) ও অস্তঃপুরভাজনী তুলা ( রাজমহিষী ও রাজপুত্রদিগকে দেয় দ্রব্যের মাপ-জন্ম ব্যবহর্তব্য ), অর্থাৎ ইছার প্রথমটি ৯৫ পলাত্মক, বিতীয়টি ৯০ পলাত্মক ও তৃতীয়টি উচ৫ পলাত্মক তুলাবিশেষ।

উক্ত ব্যবহারিকী প্রভৃতি তিন তুলার প্রত্যেক পলে উত্তরোত্তর আধ আধ ধরণ কম থাকিবে, অর্থাৎ আয়মানী তুলাতে ১০ ধরণে এক পল হয়, কিন্তু, ব্যবহারিকী তুলাতে ১২ ধরণে এক পল, ভাজনী তুলাতে ১ ধরণে এক পল ও অন্তঃপ্রভাজনী তুলাতে ৮২ ধরণে এক পল হয়। ইহাদিগের প্রত্যেক তুলাতে উত্তরোত্তর তুই তুই পরিমাণে লোহ কম থাকিবে, অর্থাৎ আয়মানীতে ধদি ৩৫ পল লোহ থাকে, তাহা হইলে ব্যবহারিকীতে ৩৩ পল, ভাজনীতে ৩১ পল ও অন্তঃপুরভাজনীতে ২৯ পল-পরিমিত লোহ থাকিবে। এবং ইহাদিগের প্রত্যেক

তুলাতে উত্তরোত্তর ৬ অঙ্গ্ল-পরিমাণে আয়াম কম থাকিবে, অর্থাৎ আরমানীতে ষদি ৭২ অঙ্গল আয়াম থাকে, তাহা হইলে ব্যবহারিকীতে ৬৬ অঙ্গুল, ভাজনীতে ৬০ অঙ্গুল ও অন্তঃপুরভাজনীতে ৫৪ অঙ্গুল আয়াম থাকিবে।

প্রথম তুইটি তুলাতে (অর্থাৎ সমবৃত্তা ও পরিমাণী তুলাতে) মাংস, লোহ, লবণ ও মণি ব্যতিরিক্ত অন্ত দ্রব্যের মাপ-সময়ে (শতপলে) ৫ পল পরিমাণে অধিক মাপা যায় এবং এই অতিরিক্ত পাঁচ পল প্রযাম-নামে খ্যাত হয়। কাঠ তুলা (অর্থাৎ সারদারু-নির্মিত তুলা) নির্মিত হইলে ইহার আয়াম ৮ হস্ত-পরিমিত হইবে, ইহাতে এক-তুইক্রমে পদ বা চিক্ত প্রদর্শিত হইবে, ইহার জন্মা প্রতিমান বা পাষাণাদিময় বাট থাকিবে, এবং ইহার অধিষ্ঠান বা আধার ময়্ব-পদাকার স্কম্ব হইবে।

একপ্রস্থ-পরিমিত তণ্ডলের পাকসাধনে ২৫ পল কার্চ বা ইন্ধন লাগে। এই নিয়মই বহু বা অক্সদ্রবাদির পরিমাপে ব্যবস্থিত থাকিবে। এই পর্যাস্থ তুল। ও প্রতিমান (বা বাটের) বিষয় ব্যাখ্যাত হইল।

(সম্প্রতি ধান্তাদি মাপিবার জন্ত দ্রোণ, আঢ়ক প্রভৃতির নিরপণ কর হইতেছে।) ধান্তমাষদ্বারা পূরলীয় ২০০ পল পরিমাণের নাম এক আয়মান জোণ। সেইরপ ১৮৭ই পল পরিমাণের নাম এক বাবহারিক জোণ। আবার তেমন ১৭৫ পল পরিমাণের নাম এক ভাজনীয় জোন। এবং ১৬২ই পল পরিমাণের নাম এক অন্তঃপুরভাজনীয় জোণ।

উক্ত চারি প্রকার দ্রোণের উক্তরোত্তর है অংশ ভাগ কম হইতে থাকিলে ইহাদের আঢ়কাদি নাম হইবে, অধাৎ > দ্রোণের हे অংশের নাম **আঢ়িক.** ১ আঁঢ়কের हे অংশের নাম **প্রস্থ** ও ১ প্রস্তের हे অংশের নাম **কুড়ুব**।

ষোল জোণি ১ খারী, কৃড়ি জোণে ১ কুম্ব ও দশ কৃষ্টে ১ বছ হয়।

ধোলাদি মাপিবার জন্য ) যে মান প্রস্তুত করিতে হইবে তাহা শুক দার ময় হইবে, ইহার (মৃল ও অগ্রভাগ ) সমান হইবে, এবং ইহার শিথাতে মেয়ন্তব্যের हু অংশ যেন ধরিতে পারা যায়—তেমন ভাবে নির্মাণ করিতে হইবে। অথবা, এই মানের শিথা ভিতরেও প্রবিষ্ট রাথা যাইতে পারে, অর্থাৎ মেয়ন্তব্য এই মানের মৃথ পর্যন্ত মাপা যাইতে পারে,। কিন্তু, (মৃততৈলাদি) রসন্তব্যের মাপে অন্তঃশিথ মানই ব্যবহর্ত্ব্য।

স্বা, পূপা, ফল, তুষ, অঙ্গার ও হধা ( চুণ )—এই সব দ্রব্য মাপিবার জন্ত যে মান ব্যবহার করিতে হইবে তাহাও শিখামান হইতে পারে, কিন্ত, ইহা (ধান্তাদি

মাপার শিথামানের মত) চতুর্ভাগাত্মক না হইয়া, ইহা বিগুণাত্মক হ**ই**য়া বর্দ্ধিত হইবে।

এক স্রোণ-পরিমিত দ্রব্য মাপিবার জন্ম ব্যবহৃত মানভাণ্ডের মূল্য সওয়া পণ (১ ব্লু পণ) নির্দ্ধারিত হইবে। এক আঢ়ক-নামক মানভাণ্ডের মূল্য ত্ব্ব-নামক মানভাণ্ডের মূল্য ৬ মাষ ও কুড়্ব-নামক মানভাণ্ডের মূল্য ১ মাষ হইবে।

রসাদি দ্রব্য মাপিবার জন্য ব্যবহৃত মানভাণ্ডের মূল্য উক্ত মূল্যের দ্বিগুণ হুইবে, অর্থাং ১ ক্রোণের মূল্য ২ ই পণ, ১ আঢ়কের মূল্য ১ ই পণ, ১ প্রস্থের মূল্য ১২ মাব ও ১ কুড়ুবের মূল্য ২ মাব ব্রিতে হুইবে।

উক্ত চতৃক্ষ প্রকারের প্রতিমান সম্দয়ের (অর্থাৎ এক প্রস্থ বাটের) মূল্য ২০ পণ হইবে। এবং তুলাদণ্ডের মূল্য ইহার তৃতীয়াংশ ৬% পণ হইবে।

(পৌতবাধ্যক্ষ) প্রত্যেক চারিমাসে একবার তুলা ও মানের পরিশোধন-কার্য্য করাইবেন। যে ব্যক্তি যথাসময়ে পরিশোধন না করাইবে তাহাকে ২৭ প্র দণ্ড দিতে হইবে। (তুলা ও মানব্যবহারী ব্যাপারীরা) তুলা ও বাট পরি-শোধনের জন্ত প্রত্যেক দিনে ১ কাকণিক হিসাবে কর পৌতবাধ্যক্ষকে দিবে অর্থাৎ প্রত্যেক চারিমাসে ১২০ কাকণিক কর পরিশোধনকালে তাঁহাকে দিবে।

(তপ) গত থবিদ করার সময়ে, ইহার  $\frac{1}{\sqrt{5}}$  অংশ তপ্তবঢ়াজী-নামে ব্যাজী অধিক লইতে হইবে এবং (তপ্ত) তৈল থবিদ করার সময়ে ইহার  $\frac{1}{\sqrt{5}}$  অংশ তপ্তব্যাজী অধিক লইতে হইবে। অক্যান্য দ্রব পদার্থের থবিদ-সময়ে  $\frac{1}{\sqrt{5}}$  অংশ মানস্কাব-নামক ব্যাজী অধিক লইতে হইবে।

(এক প্রস্তের চতুর্ভাগের নাম এক কুড়ুব বলা হইয়াছে ) ইহার মানসাধন > কুড়ুব, ৢৢ কুড়ুব, ৣৢ কুড়ুব ও ৣইকুড়ুব হইতে পারে, অর্থাৎ এই চারি প্রকার ছোট বাটও ব্যবহৃত হইতে পারিবে।

৮৪ কুড়ুব দ্বত মাপা হইলে ইহা বারক-সংজ্ঞায় পরিচিত হয় এবং ৬৪ কুড়ুব তৈল মাপা হইলেও ইহা বারক-সংজ্ঞায় আখ্যাত হয়। এই দ্বত-বারক ও তৈল-বারকের চতুর্ভাগ (অর্থাৎ যথাক্রমে ২১ কুড়ুব ও ১৬ কুড়ুব) ঘটিকা (অর্থাৎ দ্বতদ্টিকা ও তৈল্ঘটিকা)-নামে আখ্যাত হয়॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাম্বে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে তুলামান-পোতব-নামক উনবিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## বিংশ অধ্যায়

#### ৩৮শ প্রকরণ—দেশ ও কালের মান

মানাধ্যক্ষ (পৌতবাধ্যক্ষ) দেশ (ভূমি ও তহিকার প্রকারাদি) ও কালের মান জানিয়া লইবেন।

৮ পরমাণ্ ( অতীক্রিয় অণ্ ) সংহত হইয়া রথচক্রমারা উত্থাপিত ( চক্রপ্রা ছ )
এক বিপ্রুট বা রজ্ঞাকণাতে পরিণত হয়। ৮ বিপ্রুট-বা ধ্লিকণাতে ১ লিক্ষা
হয়। ৮ লিক্ষাতে ১ যুক্ষামধ্য হয়। ৮ যুকামধ্যবারা ১ যবমধ্য হয়।
৮ যবমধ্যবারা ১ অকুলা হয়।

অথবা, মধ্যম আকারবিশিষ্ট পুরুষের ( হাতের ) মধ্যম অঙ্গুলির মধ্যপ্রদেশের পৃথুত্বকে এক অঙ্গুলের পরিমাণ ধরা যাইতে পারে।

[ উক্ত মানগুলিকে নিম্নলিখিতভাবে সংক্ষেপে নিবদ্ধ করা যায় যথা :

৮ পরমাণ্ = ১ বিপ্রুট্ (ধূলিকণা)

৮ विश्वष्ट्रे= > निका

৮ निका = ১ य्कामधा

৮ युकामधा = > यवमधा

৮ यवभशा = ३ व्यक्त ]

৪ অঙ্গৰারা **ধনুগ্র হ** হয়। ৮ অঙ্গৰারা ১ **ধনুমু প্রি** হয়।

১২ অঙ্গুলে ১ বিভস্তি বা ১ ছায়াপৌরুষ (শঙ্গুমাণ) হয়। ১৪ অঙ্গুলে ১ শম বা শল বা পরিরয় বা পদ হয় (এগুলে সংজ্ঞা চারিটি) ২ বিভস্তিতে বা ২৪ অঙ্গুলে ১ অর্ত্তি বা প্রাজ্ঞাপত্ত্য (প্রজ্ঞাপতি বা বিশ্বকশ্মার সম্মত) হস্তে।

ি সংক্রিপ্ত সূত্র এইরূপ হইতে পারে, যথা :

৪ অস্ল= > ধমুগ্রহি

৮ অপুল বা ২ ধহুপ্রহি = ১ ধহুম্ ষ্টি

১২ অঙ্গুল= ১ বিভক্তি বা ছায়াপৌক্ষ

>৪ অকুল == > শম বা শল বা পরিরয় বা পদ

২৪ অঙ্গুল বা ২ বিভক্তি=> অৱন্ধি (বা প্রাজাপত্য > হন্ত)

› প্রাজ্ঞাপত্য হস্তের (অর্থাৎ ২৪ অঙ্গুলের) সহিত ১ ধন্নগ্রাহ বা ৪ অঙ্গুল মিলিত হইলে ষে (২৮ অঙ্গুলের) হস্তমান হইবে তাহা পোতব (কার্চতুলাদি) ও বিবীতের (পশুচারণক্ষেত্রাদির) মানকার্য্যে ব্যবহৃত হয় এবং ১ প্রাজ্ঞাপত্য হস্তের (অর্থাৎ ২৪ অঙ্গুলের) সহিত ১ ধন্নমূ' ষ্টি বা ৮ অঙ্গুল মিলিত হইলে ষে (৩২ অঙ্গুলের) হস্তমান হইবে ইহার সংজ্ঞা কিছুবা কংন্য।

[ সংক্ষিপ্ত সূত্র এইরূপ হইতে পারে, যথা :

২৮ অঙ্গুল = ১ হস্ত (পোতব ও বিবীত-মানে ব্যবহৃত ) ৩২ অঙ্গুল = ১ কিছু বা কংগ।]

তক্ষা বা স্ত্রধরের (ছুতারের) কার্য্যের জন্ম ৪২ অঙ্গুল-পরিমিত হস্ত ধরা । যাইতে পারে। ক্রকচ বা করপত্রের (করাতের) কর্মের উপযোগী কিছু (অর্থাৎ ১২ অঙ্গুল-পরিমিত) ব্যবহৃত হইতে পারে। উক্ত মানদ্বয় স্কন্ধাবার, তুর্গ ও রাজকুল বা রাজবাড়ীতে ব্যবহৃত হইতে পারে। কুপ্যদ্রব্যের বনে ব্যবহৃত্ব্য মান ৫৪ অঞ্গুল-পরিমিত হস্ত ধরা যাইতে পারে।

৮৪ অঙ্গুলের ১ হস্তের নাম ব্যাম—ইহা রজ্জ্ব মান হইতে পারে এবং ইহা (কৃপাদি) থাতের পুরুষমানরূপে ব্যবহৃত হইতে পারে।

[ সংক্ষিপ্ত হৃত্ত এইরূপ হইতে পারে, যথাঃ

৪২ অঙ্গুল = ১ হস্ত ( ভক্ষণের কার্য্যে ব্যবহৃত )

৩২ অন্বল = ১ হস্ত ( করপত্রকর্মের কার্য্যে ব্যবহৃত )

৫৪ অঙ্গুল= ১ হস্ত ( কুপাবনের কার্য্যে ব্যবহৃত )

৮৪ অন্ব= > হস্ত ( রজ্জু ও থাতাদির মাপের কার্য্যে ব্যবহৃত )]

৪ অরত্বিতে ১ **ডগু** হয় ( অর্থাৎ ৯৬ অঙ্গুলে ১ দণ্ড )। দণ্ডের **অ**পর তিন সংজ্ঞা—**ধসুঃ, নালিকা ও পৌরুষ**।

১০৮ অঙ্গুলে গার্হপত্য-ধহুঃ নামে এক মান হয়; ইহা পথ ও ( হুর্গাদির ) প্রাকারের মাপে ব্যবহৃত হয়। আবার সেই ১০৮ অঙ্গুলে ১ পৌরুষও হয়; ইহা যজ্ঞাদিতে ) অগ্নির চয়নবিশেষে ব্যবহৃত মান।

[ সংক্ষিপ্ত স্তত্ত এইরূপ হইতে পারে, যথা:

৪ অরত্বি বা ৯৬ অঙ্গুল= ১ দণ্ড, ধহুং, নালিকা বা পৌরুষ ১০৮ অঙ্গুল= ১ গার্ছপত্য ধহুং ( পথ ও প্রাকারের মান ) ১০৮ অঙ্গুল= ১ পৌরুষ ( অগ্নিচিত্যের মান ) ]

৬ কংসে অর্থাপ ৮ হস্তে বা ১৯২ অকুলেও ১ দণ্ড হইতে পারে; ইহা

ব্রহ্মদেয় ও অতিথির জন্ম বিস্ট ভূমিপ্রাভৃতির মান হইতে পারে। (৪ হস্ত-পরিমিত) দণ্ডের দশটিতে অর্থাৎ ৪০ হস্তে > রুজ্জুহয়। এইরূপ ২ রজ্জ্বা৮০ হস্তে > পরিদেশ হয়। এবং ৩ রজ্জুবা ১২০ হস্তে > নিবর্ত্তন।

[ সংক্ষিপ্ত স্থত্ত এইরূপ হইতে পারে, যথা:

৬ কংস বা ১৯২ অঙ্গুল বা ৮ হস্ত = ১ দণ্ড (ব্রহ্মদেয় ও আতিথ্যের ভূম্যাদি মান)

১০ দণ্ড বা ৪০ হস্ত= ১ রজ্জ্

২ রজ্জু বা ৮০ হস্ত = ১ পরিদেশ

৩ রজ্জ্বা ১২০ হস্ত= ১ নিবর্তন ]

(৩০ দণ্ডে ষে ১ নিবর্ত্তন হয় তাহার) এক দিকে ২ দণ্ড বাড়াইয়া ধরিলে (এবং অক্যান্ত দিকে ৩০ দণ্ডই রহিলে) যে মানবিশেষ দাড়াইবে, ইহার সংজ্ঞা বাস্ত। ২০০০ ধহঃশ্বারা ১ গোরুত (বা ক্রোশ) হয়। ৪ গোরুতে ১ যোজন হয়। এই পর্যান্ত দেশমান নিক্পিত হইল।

[ সম্পূর্ণ দেশমানের সংক্ষিপ্ত ফুত্র এইরূপ হইতে পারে, যণা:

৮ পরমাণ্= ১ বিপ্রাট্ বা ধূলিকণা

৮ विश्वर्षे= > निका

৮ निका= > युकामश

৮ যুকামধ্য = ১ যবমধ্য

৮ रुव्यक्षा = ১ अञ्जूल

৪ আুঙ্গুল= ১ ধনুগ্ৰহ

২ ধকুগ্ৰহ=১ ধকুন্টি

১ই ধন্ম ্ষ্টি = ১ বিভস্তি

২ বিভস্তি= ১ অর্ত্রি বা হস্ত

৪ অর্থ্যি = ১ দেও

১০ দণ্ড= ১ রক্তু

২ রক্জ্= ১ পরিদেশ

> ३ পরিদেশ = > নিবর্ছন

৬৬ৡ নিবর্গন বা ২০০০ দণ্ড= > গোরুত বা ক্রোশ

৪ গোকত= ১ যোজন ]

चलान कालत मान गाथााज शहेरत। जूहे, नत, निरमध, कार्छा, कना,

নালিকা, মৃহর্ত্ত, (দিনের) পূর্বভাগ, (দিনের) পরভাগ, দিবস, রাত্তি, পক্ষ, মাস, ঋতু, অয়ন, সংবৎসর ও যুগ—কালের এইরূপ সপ্তদশ ভাগ কল্পিত হয়।

এক নিমিষের (চক্ষর পক্ষপাতন-সময়ের) চতুর্থ অংশের নাম তুট (ইহাই যেন কালের পরমাণ্ড্ত)। ২ তুটে > লব হয়; ২ লবে > নিমেষ হয়; ৫ নিমেষে ১ কাষ্ঠা হয়; ৩০ কাষ্ঠাতে ১ কলা হয়; ৪০ কলাতে > নাজিকা হয়। (নালিকা শব্দের প্রকারান্তর উক্ত হইতেছে, যথা)—৪ স্বর্ণমাব-পরিমাণ প্রস্থ ও ৪ অঙ্গুল দীর্ঘ একটি জলকুন্তে ছিল্র দিয়া তৎকুন্তন্থিত > আঢ়ক জল যতটা সময়ে নির্গত হয়—সেই পরিমাণ সময়ের সংজ্ঞাও নালিকা হইতে পারে।

২ নালিকায় ১ মৃত্রুর্ত্ত হয়। ১৫ মৃত্রুর্ত্তে ১ দিবস ও ১৫ মৃত্রুর্ত্তে ১ রাজিও হয়; কিন্তু এই ছই পরিমাণ চৈত্র ও আশ্বিন মাসে ঘটে (কারণ, এই ছই মাসেই দিবস ও রাত্রি সমপ্রমাণ থাকে)। ইহার পরে ৬ মাস পর্যান্ত দিবস ও রাত্রির অক্যতরটি যথাক্রমে বাড়ে ও কমে (অর্থাৎ ৬ মাস দিবস বাড়ে ও রাত্রি কমে, আবার পরবর্ত্তী ৬ মাসে দিবস কমে ও রাত্রি বাড়ে)। (চৈত্রবিষ্বুবের পর দিবসের বৃদ্ধি ও রাত্রির হাস, এবং আশ্বিনবিষ্বুবের পর রাত্রির বৃদ্ধি ও দিবসের হাস ঘটিতে থাকে)।

সম্প্রতি ছায়াছারা কালমানের নিরূপণ করা হইতেছে।) যথন ছায়া ৮ পৌরুষ অর্থাৎ ৯৬ অঙ্গুল দীর্ঘ প্রতিভাত হইবে, তথন সম্পূর্ণ দিনের ঠ্রচ ভাগ গত হইয়াছে। আবার ছায়া ৬ পৌরুষ (= १২ অঙ্গুল) দীর্ঘ প্রতীয়মান হইলে দিনের ঠ্র অংশ গত হইয়াছে বুঝা ঘাইবে। ছায়া ৪ পৌরুষ (= ৪৮ অঙ্গুল) দীর্ঘ হইলে দিনের ঠ্র অংশ, ২ পৌরুষ (= ২৪ অঙ্গুল) দীর্ঘ হইলে দিনের ঠ্র অংশ, ১ পৌরুষ (= ১২ অঙ্গুল) দীর্ঘ হইলে দিনের ঠ্র অংশ, ৮ অঙ্গুল-পরিমাণে দীর্ঘ হইলে দিনের ঠ্র অংশ, ৪ অঙ্গুল-পরিমাণে দীর্ঘ হইলে দিনের ঠ্র অংশ গত হইয়াছে বুঝিতে হইবে। যথন কোন ছায়া দৃষ্ট হইবে না (অর্থাৎ যথন ছায়া শঙ্কুতে প্রবিষ্ট হইবে) তথন মধ্যাক্ত সময় উপস্থিত জানিতে হইবে।

দিবসের মধ্যাহ্ন সময় পার হইলে—উক্তভাবেই (বিপরীতক্রমে) অবশিষ্ট দিবস-ভাগ গণনা করিতে হইবে।

আবাঢ় মাসের ( অর্ডে মধ্যাক্ত কালে ছায়া দেখা যায় না। তারপর শ্রাবণাদি ছয় মাসে (পৌষ মাসের শেষ পর্যান্ত) ছায়া ২ অঙ্গুল-ক্রমে বাড়িতে থাকে এবং মাঘাদি ছয় মাসে (আবাঢ় মাসের শেষ পর্যান্ত) ইহা ( ছায়া ) ২ অঙ্গুল-ক্রমে ক্রমিতে থাকে। >৫ অহোরাত্রিতে > পাক্ষ হয়। যে পক্ষে সোম (চন্দ্র) বাড়িতে থাকে, তাহার সংজ্ঞা শুক্রপক্ষ এবং যে পক্ষে চন্দ্র কমিতে থাকে, তাহার সংজ্ঞা বৃহস্পক্ষ (বা কৃষ্ণপক্ষ)।

উক্ত শুক্ল ও কৃষ্ণপক্ষণ মিলিয়া > মান্স ( দাবন মান ) হয়। ৩০ অহোরাত্র ধরিয়া > প্রকর্ম্মান্স ( অর্থাৎ কর্মকরদিগের ভৃতি-গণনার মান ) হয়। অর্দ্ধ অহোরাত্র দহিত ৩০ অহোরাত্রে ( অর্থাৎ ৩০ ই দিনে ) > সৌরমান্স ( সুর্য্যের গতির অস্করপে গণনীয় মান ) হয়। আবার অর্দ্ধ অহোরাত্র নান ৩০ অহোরাত্রে ( অর্থাৎ ২০ ই দিনে) > চান্দ্রমান্স ( চল্লের হ্রান-বৃদ্ধি অস্তনারে গণনীয় মান ) হয়। ২৭ অহোরাত্রে > নাক্ষত্রমান্স হয়। ৩২ অহোরাত্রে > মলমান্স হয়। অপপ্রবাহণ-কার্য্যে নিযুক্ত কর্মচারীদিগের বেতন-মান ৩৫ অহোরাত্রে মান ধরিয়া নিরূপিত হইবে। এবং হস্তিপ্রবাহণ কার্য্যে নিযুক্ত কর্মচারীদিগের বেতন-মান ৪০ অহোরাত্রে মান ধরিয়া নিরূপিত হয়।

২ মাদে ১ ঋতু হয়। শ্রাবণ ও প্রোষ্ঠপদ (ভাজ) এই তুই মাদ বর্ধা ঋতু। আখিন ও কার্ত্তিক—এই তুই মাদ শার্বং ঋতু। মার্গনীর্গ (বা অগ্রহায়ণ) ও পৌষ—এই তুই মাদ হেমন্ত ঋতু। মাঘ ও ফাল্পন—এই তুই মাদ শিশির (বা শীত) ঋতু। চৈত্র ও বৈশাখ—এই তুই মাদ বসন্ত ঋতু। জ্যোষ্ঠাম্লীয় (জ্যৈষ্ঠ) ও আবাঢ়—এই তুই মাদ গ্রীদ্বা ঋতু।

শিশিরাদি ও ঋতু ( অর্থাৎ শিশির, বসন্ত ও গ্রীম ঋতুর ) নাম উত্তরায়ণ।
বর্ধাদি ও ঋতুর ( অর্থাৎ বর্ধা, শরৎ ও হেমন্ত ঋতুর ) নাম দক্ষিণায়ন। উক্ত
২ অয়নে ( অর্থাৎ উত্তরায়ণ ও দক্ষিণায়ন মিলিত ধরিয়া ) ১ সংবৎসর হয়।
৫ সংবৎসরে ১ যুগা হয়। এই পর্যান্ত ( ব্যবহারিক কালমান নির্দ্ধিত হইল )
ি সম্পূর্ণ কালমানের সংক্ষিপ্ত স্ত্র বা আর্থ্যা এইরূপ হইতে পারে, যথা:

- ২ তুট=১লব
- २ नव=> निस्मय
- ৫ निय्यय= > काक्री
- ৩০ কাষ্ঠা= ১ কলা
- 80 कमा= > नामिका
- २ नामिका==> मृहर्रह
- > । भूकृर्ख = > ष्यदात्राज
- ১৫ অহোরাত্র= ১ পক

- ২ পক্ষ= ১ মাস
- ২ মাস = ১ ঋতু
- ৩ ঋতু = ১ অয়ন
- ২ অয়ন = ১ সংবৎসর
- भः त<भव = > यश ]

( সম্প্রতি হুইটি শ্লোকরার। অধিমাস বা মলমাসের তব্ব নিরূপিত হুইতেছে ।) সর্য্য প্রতিদিন দিবসের উঠ ভাগ ছেদ করিয়া লগ; এই কারণে ( সর্য্য) এক ঋতুতে ( অনাং ৬০ অহোরাত্রে ) এক দিন অধিক উৎপাদন করে ( স্থতরাং ২ই বংসরে ১৫ দিন বাডাইয়া দেয় ), এই প্রকারে চক্রও ( সর্য্যের মত ) প্রতিদিন দিবসের উঠ ভাগ কম করিয়া লয়, প্রতরাং এক ঋতুতে এক দিন ছেদ করিয়া দেয় ( স্থতরাং ২ই বংসরে ১৫ দিন কমাইয়া দেয় )। এই ভাবে আড়াই বংসরে ( অর্থাৎ মাঘ প্রভৃতি ৩০ মাসে ) গ্রীয় ঋতুতে প্রথম অধিমাস বা মলমাস ও পাঁচ বংসবে ( অর্থাৎ অতঃপর আড়াই বংসরে শ্রাবণ প্রভৃতি ৩০ মাসে ) দ্বিতীয় ভ্রেমিমাস বা মলমাস ( স্থ্যা ও চক্র ) উৎপাদন করে ॥ ১-২ ॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বির্তায় অধিকরণে দেশ ও কালের মান-নামক বিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## একবিংশ অধ্যায়

#### ৩৯শ প্রকরণ—শুক্তাপ্যক্ষ

শুক্ষাধ্যক্ষ শুক্ষশালা নির্মাণ করাইবেন এবং সেই শালার পূর্বর ও উত্তর দিকের প্রধান দারসমীপে এক ধ্বজা (শুক্ষশালার চিহ্নবপে) নিবেশিত করাইবেন।

(শুল্কাধ্যক্ষকত্ত্ব নিযুক্ত) শুল্ক-আদায়কারী চারি বা পাঁচজন কর্মচারী ভিল্কালাতে ভাগুসহিত সমাগত বণিক্দিগের সম্বন্ধে নিম্নিথিতভাবে নিবন্ধ-প্রকে বাকা লিথিবে, যথা—"নৈগম বা ব্যাপারীরা কে (অর্থাৎ তাহাদের নাম ও জ্বাতি কি), কোথা হইতে তাহারা আসিয়াছে (অর্থাৎ তাহাদের নিবাস কোথায়), তাহারা কে কত পরিমাণ পণ্য বা বিক্রেয় বস্তু আনিয়াছে, এবং তাহারা

কোথায় ( অর্থাৎ কোন্ অন্তপালের নিকট হইতে ) পণ্যবিশেষের পরিচয়বিষয়ক মূলা বা বিজ্ঞপ্রিপত্র পাইয়াছে ( অর্থাৎ কি কি মাল মূল্রাযুক্ত হইয়া আসিয়াছে )।

যে ব্যাপারীরা মূল্রারহিত পণ্য আনিয়াছে, তাহাদিগকে (অন্তপালের নিকট) দেয় (বর্তনী-নামক) শুল্কের দ্বিগুণ দণ্ড দিতে হইবে।

ষে বণিকেরা কৃট বা কপট মূল্রান্বারা পণ্য মূদ্রিত করিয়া আনিবে, তাহাদিগকে দেয় শুব্দের আটগুণ দণ্ডকপে দিতে হইবে।

যে বণিকেরা মূদ্রা পাইয়াও ইহা নট্ট করিয়াছে, তাহাদিকে ( অক্সান্ত বণিকের দৃষ্ঠ শুৰুশালার) কোন এক স্থানে ঘটিকাত্রয়কাল পর্য্যস্থ অবস্থানরূপ ( আটক থাকারূপ ) দণ্ড ভোগ করিতে হইবে।

ষে পণ্যবাহী ব্যাপারী রাজমূদ্রার পরিবর্ত্তন ঘটাইবে বা পণ্যবস্তুর নামের পরিবর্ত্তন ঘটাইবে, তাহাকে (শুক্ষাধ্যক্ষ) ১ বৈ পণ প্রত্যেক পুক্ষবাফ দ্রব্যের জন্ম দণ্ডরূপে) দেওয়াইবেন।

শুদ্ধশালাতে অবন্ধিত ধ্বজার মূলদেশে উপস্থিত পণ্যদ্রব্যের পরিমাণ ও আর্ঘ বা মূল্যের হার বৈদেহক বা বলিকেরাই এই ভাবে ঘোষণা কবিবে, যথা—"এই পণ্যের পরিমাণ এতথানি এবং ইহার আর্ঘ বা মূল্য এতথানি—ইহা কে ক্রম করিতে চাহেন ?" তিনবার এই প্রকারে উদঘোষিত মাল যাহারা ক্রয়ার্থী (খরিদদার), তাহাদিগকে দিতে হইবে। খরিদসম্পর্কে ক্রেভা দিগের মধ্যে সংঘর্ষ (আর্থাৎ মূল্যবৃদ্ধির হেতৃভূত পরম্পর স্পর্দ্ধার সম্ভাবনা) উপস্থিত হইলে, পণ্যের মূল্য যতথানি বর্দ্ধিত হইবে (আর্গাৎ বলিকের পূর্ব্বনির্দিষ্ট মলোব অপেক্ষায় যতথানি অধিক মূল্য পাওয়া যাইবে), তাহা (সেই নিন্দিষ্ট মূল্যের অতিরিক্ষ মূল্য,) শুক্ষস্থিত রাজকোশে প্রবেশ করিবে।

ষদি ( অধিক ) শুল্কদানের ভয়ে কোন পণ্যবাহী বর্ণিক পণ্যেব পরিমাণ ( ইয়ন্তা ) কিংবা ইহার মূল্য কম করিয়া বলে, তাহা হইলে ততক পরিমাণ ও মূল্যের অতিরিক্ত যে পরিমাণ ও মূল্য পা ওয়া যাইবে তাহা রাজ। হবণ করিবেন। অথবা, সেই বণিকৃকে ( এই অপরাধের জন্য ) আটগুণ শুল্ক দিতে হইবে।

ষে ব্যাপারী (উত্তম) পণ্যগারা পুরিত ভাণ্ডের মালসগদে হীন বা নিরুষ্ট প্রতিভাশিক বা নমূনা দেখাইয়া (অধিক শুক্তরে) মালের মূল্য পাতিত করিবে, কিংব। সারভাণ্ড (উত্তম দ্রবাসমূহ) ফক্তভাণ্ডবারা (নিরুষ্ট দ্রবাগারা) প্রতিভালিত করিয়া (ঢাকিয়া) রাখিবে তাহাকেও পুর্বোক্ত আটণ্ডণ শুক্তরপ দণ্ড দিতে হইবে।

পণ্যের প্রক্তিক্রয়কারীর ভয়ে কোন ক্রেতা যদি পণ্যের নির্দিষ্ট মূল্যের উপরও মূল্য বাড়াইয়া (পণ্য) খরিদ করিতে চাহে, তাহা হইলে সেই মূল্যের বিদ্ধিতাংশ রাজা হরণ করিবেন। অথবা, তাহাকে দ্বিগুণ শুরু দিতে হইবে।

বিদ্ধুত্ব বা উৎকোচের জন্ম) যদি কোন শুদ্ধাধ্যক্ষ কোন বৈদেহক বা ব্যাপারীর দোষ গোপন করেন, তাহা হইলে তাহাকে বৈদেহকদিগের উপর তৎ তৎ অপরাধের জন্ম ধার্য্য দণ্ডের আটগুণ দণ্ড দিতে হইবে।

অতএব, (তোলনীয়, পরিমেয় ও গণনীয়) পণ্যের বিক্রয়, তুলাতে তোলিত, (প্রস্থাদিষারা) পরিমিত ও (সংখ্যাদ্বারা) গণিত করিয়া, সম্পন্ন করিতে হইবে ( যাহাতে অসত্য ব্যবহার না ঘটিতে পারে )। (অঙ্গারাদি) কন্ধৃতাও ও শুদ্ধন্দিক বা স্বল্পগুরুপ অন্থগ্রহপ্রাপ্ত (লবণাদি) পণ্যের সঙ্গদ্ধে মান ও অর্ঘ তর্কাত্মক (সম্ভাবনাত্মক) বলিয়া ধরা যাইতে পারে (অর্থাৎ মোটাম্টি বিচারদারা ইহা ধার্য্য হইতে পারে )।

শুব্দানের ব্যবস্থা না করিয়া (যে-সব ব্যাপারী শুব্ধশালার) ধ্বজামূল অতিক্রম করিয়া পলাইয়া যাইবে, তাহাদিগের উপর দেয় শুব্ধের আটগুণ দণ্ড প্রদত্ত হইবে। (রাজার চররূপে নিযুক্ত হইয়া) বাণিজ্যের ছলে পথচারী ও (তৃণকাদাদি-হারক ও পশুপাল প্রভৃতি) উৎপথচারী (অর্থাৎ রাজাদেশে সর্ব্ব-জনচার্য্য রাস্তা ব্যতীত অক্যান্ত আরণ্য রাস্তা দিয়া যাতায়াতকারী) পুক্ষেরা তাহা (অর্থাৎ অক্রতশুব্ধ বণিকদিগের শুব্ধশালা অতিক্রম করিয়া পলায়ন) জানিয়া লইবে (যেন অভিযোগ উপস্থিত হইলে তাহারা সাক্ষী হইতে পারে)।

( নিয়লিখিত দ্রবাসমূহের উপর শুক্ষ ধার্য্য হইবে না।) যে ভাও বা পণাদ্রব্য বিবাহের কার্য্যে লাগিবে, যাহা (নৃতন বধু পতিগৃহে) যাওয়ার ম্বার্য্যর
( নিতৃগৃহ হইতে ) সঙ্গে নিয়া যায়, ( অয়সত্রাদির জন্য ) যাহা উপায়নরপে
প্রদন্ত হয়, ( দিধি-তৃদ্ধাদি ) যাহা যজ্ঞকার্য্যের জন্য ও ( ঔষধাদি ) যাহা প্রসবের
জন্য প্রয়োজনীয় এবং দেবতার ইজ্যা বা নিত্যনৈমিত্তিক পূজাদি ক্রিয়া, চৌল,
উপনয়ন, গোদান, ব্রত-দীক্ষাদি নানাপ্রকার সংস্কার ও ধর্মকার্য্যে যে-সব দ্রব্য আবশ্রুক হয়—সে-সব দ্রব্য বিনা শুক্তে ( নগরাদিতে ) প্রবেশ করান যাইতে পারে । উক্ত বিষয়সম্বন্ধে কেহ অক্সথা বলিয়া ( অর্থাৎ অবৈবাহিক ভাওকে বৈবাহিক ভাও ইত্যাদি বলিয়া ) মাল নিতে চাহিলে তাহাকে চোরদণ্ডে দণ্ডিত
হইতে হইবে ।

বে মালের উপর ভব দেওয়া হইয়াছে (সেই মালের বাসনে বা বস্তাদিতে)

সেই মালের সঙ্গে অদন্তশুদ্ধ মাল নিক্কমণ করিলে, এবং এক প্রকার মালের জন্য মূলা প্রদর্শন করিয়া (তত্ত্ব্লারূপ) দিতীয় প্রকারের মাল নির্বাহিত বা নিজ্ঞামিত করিলে, এবং পুট বা পণ্যবাসন ভাঙ্গিয়া তন্মধ্যন্থিত মালের সঙ্গে অদন্তশুদ্ধ মাল ভরিয়া নিলে, অপরাধী বৈদেহক বা বণিক্কে সেই নিক্ষামিত মাল ও (আর এক প্রস্থ ) তৎপরিমিত মাল দণ্ডরূপে দিতে হইবে।

যে ব্যাপারী শুক্ষান হইতে গোময় ও পলাল (ধান্যস্তম্ব) অর্থাৎ নিঃদার দ্রব্য (ছলপূর্বক) প্রমাণ করিয়া (দারদ্রব্য) নিক্রামিত করিয়া নিবে, তাহার প্রতি উত্তম দাহদ দণ্ড বিহিত হইবে।

কেহ যদি (রাজাধারা) অনির্কাহ্ (অর্থাৎ স্বদেশ হইতে অনির্কাহিত হওয়ার যোগ্য বলিয়া প্রথ্যাপিত) শস্ত্র, বর্ম, কবচ, লোহ, রথ, রত্ন, ধান্য ও পশুর মধ্যে যে কোন দ্রব্য নির্কাহিত বা নিক্সামিত করে, তাহা হইলে তাহাকে রাজাধারা প্রথ্যাপিতরূপ দণ্ড দিতে হেইবে এবং তাহার নির্কাহ্মান শস্ত্রাদি পণ্যও নই করা হইবে।

আবার কেহ উক্ত শস্ত্রাদি পণ্যের যে কোনটিকে বাহির হইতে (নগরাভান্তরে) আনিতে ইচ্ছা করিলে, তাহার সেই পণ্য (ছুর্গাদির) বাহাদেশেই বিনা শুল্লে বিক্রীত হইতে পারিবে। **অস্তুপাল** পণ্যাদির বহন (শকটাদির) জন্য ১৯ পণ্ (মার্গরক্ষানিমিন্তক) বর্ত্তনী-নামক শুল্ল লইবেন, এবং (অশ্ব প্রভৃতি) একক্ষুরবিশিষ্ট জন্তর জন্য ১ পণ্, (গবাদি) পশুর জন্য ই পণ্, (মেবাদি) কৃদ্র পশুর জন্য হ্র পণ্ ও ক্ষন্ত্রে (মাল-) বহনকারী পুরুষের জন্য ১ মাব শুল্ল লইবেন। (মার্গমধ্যে) কাহারও কোন মাল হারাইয়া গেলে বা চোরে চুরি করিয়া নিলে, অস্তুপালকে ইহার প্রতিবিধান করিতে হইবে (অর্থাৎ অন্তসন্ধানবারা সেই মাল পাওয়াইতে হইবে—নচেৎ তাঁহাকে তাহা নিজে পূরণ করিয়া দিতে হইবে)।

( অন্তপাল ) বিদেশ হইতে আগত সার্থ ব। বণিকৃদংঘের সারভাও ও ফস্কভাণ্ডের ইয়তা অন্তস্কান করিয়া এবং তাহাতে নিজের অভিজ্ঞান ( স্বহস্তেলেখের চিহ্ন ) ও মূলা ( পণ্যপুটের উপর করণীয় শিলমোহর ) অর্পণ করিয়া, সেই
সার্থকে শুকাধ্যকের নিকট পাঠাইয়া দিবেন ) যেন শুকাধ্যক কিছু হরণ না
করিতে পারেন )।

অথবা, (রাজনিযুক্ত) বৈদেহকের বেশধারী গৃঢ়পুরুষ সার্থ বা বণিক্সংছের প্রমাণ (অর্থাৎ পণ্য বহুনাদির সংখ্যা) রাজাকে (গোপনে) নিবেদন করিবে। (গৃঢ়পুক্ষবের) সেই (গুপ্ত) উপদেশামুদারে রাজা নিজের দর্বজ্ঞত্ব খ্যাপনের জন্য গুলাধ্যক্ষের নিকট দার্থের বা বণিক্দংঘের প্রমাণ জানাইয়া দিবেন। তৎ পর গুলাধ্যক্ষ দার্থের নিকট উপস্থিত হইয়া বলিবেন—"অম্ক অম্ক (বণিকের) এতথানি দারভাগু ও এতথানি ফল্পভাগু দঙ্গে আছে—তোমরা ইহা লুকাইতে পারিবে না। এইরূপ (পরোক্ষ দ্রব্যজ্ঞাতের ইয়ত্তা-নির্ণয়) আমাদের রাজার (দর্বস্ক্রতার) প্রভাবেই ঘটয়া থাকে"।

(এইভাবে উক্ত হইয়াও) যে বণিক্ নিজের (কার্পাসাদি) ফল্কভাও লুকাইবে, তাহাকে দেই মালের উপর দেয় শুবের আট গুণ শুল্ক দিতে হইবে; এবং যে নিজের (রত্মাদি) সারভাগু লুকাইবে, তাহাকে সম্পূর্ণ মাল (রাজ-সরকারে) ছাড়িয়া দিতে হইবে অর্থাৎ তাহার সব মাল অপহৃত হইবে)।

যে ভাগু (বা বিষমতাদি বিক্রেয় দ্রব্য ) রাষ্ট্রের পীড়া বা অনিষ্ট উৎপাদন করে, কিংবা যে ভাগু অফল বা অন্নফলবিশিষ্ট, রাজা তাহার (আমদানী) বন্ধ করিবেন বা তাহা নষ্ট করিবেন। কিন্তু, লোকের মহোপকারসাধক (নিজ রাষ্ট্রে) ফুর্লভ (ব্রীহি প্রভৃতি ধান্যের) বীজ অশুভ করিয়া দিবেন (অর্থাৎ ইহা বিনাশুভে রাজ্যে প্রবেশ করিতে দিবেন)॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে শুদ্ধাধ্যক্ষ-নামক একবিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## দ্বাবিংশ অধ্যায়

#### ৩৯শ প্রকরণ—শুক্ষাধ্যক্ষ ; শুক্ষব্যবহার বা শুক্ষব্যবস্থা

শুষ্কব্যবহার ( অর্থাৎ কোন্ পণ্যের উপর কতথানি শুরু দিতে হইবে ইহার ব্যবস্থা) নিরূপিত হইতেছে। শুরু তিন প্রকার হইতে পারে, যথা— (১) বাছশুষ্ক ( অর্থাৎ জনপদে উৎপন্ন পণ্যসম্বদ্ধে যাহা ধার্য্য হয়), (২) আভ্যন্তর শুক্ক ( অর্থাৎ দুর্গ ও নগরাদিতে উৎপন্ন পণ্যসম্বদ্ধে যাহা ধার্য্য হয়) ও (৩) আভিথ্য শুক্ক ( অর্থাৎ বিদেশ হইতে আগত পণ্যসম্বদ্ধে যাহা ধার্য্য হয়)। উক্ত প্রত্যেক প্রকার শুক্ক আবার দুই ভাগে বিভক্ত হইতে পারে, যথা—(১) নিজ্ঞান্য শুক্ক ( অর্থাৎ এক দেশ হইতে নিজ্ঞান্য পণ্যের নিজ্ঞান্য- নিমিত্তক শুষ্ক ) ও (২) প্রাবেশ্য শুষ্ক ( অর্থাৎ অন্য দেশ হইতে প্রবেশনীয় পণ্যের প্রবেশ-নিমিত্তক শুষ্ক )।

পরদেশ হইতে আগত পণ্যের উপর ইহার মূল্যের है অংশ গুরুরূপে ধার্য্য হইবে (ইহা সামান্য বিধান)। (কিন্তু,) পুল্প, ফল, শাক, মূল, (স্রবাদি) কল্দ, (কুমাণ্ডাদি) বাল্লিক্য, (ধান্যাদি) বীজ, শুল মংস্থ ও শুল মাংস—এই দ্রব্যপ্তলির মূল্যের है ভাগ শুরুরূপে (শুরুধায়ক্ষ) গ্রহণ করিবেন।

(তিনি) শঝ, বক্স (হীরক), মণি, ম্ক্তা প্রবাল ও হারের সংক্ষে শুঙ্ক-নিরূপণ করাইবেন তৎ তৎ প্রব্যের লক্ষণ-বিচক্ষণ পুরুষদিগের সহায়তায় কারণ, তাহারা সেই সেই প্রব্যের (নির্মাণ-) কর্ম, পরিমাণ, (নির্মাণের) কাল, বেতন ও ফলনিপত্তি (অর্থাৎ পণ্যের পূর্ণ উদ্ভব বা নির্মাণ) অবগত থাকে (স্থতরাং প্রব্যগুলির মূল্য তাহারা জ্ঞানে বলিয়া শুঙ্কের সম্চিত নির্ণয় করিয়া দিতে সমর্থ হইবে)।

ক্ষোম (স্থুল বন্ধজ রেশমের বস্তু), তুক্ল (স্ক্ষু বন্ধজ রেশমের বস্তু), ক্রিমিতান (রুমিকোশ হইতে প্রাপ্ত রেশমের চীনপট্টাদি), করুট (স্ত্রজাত কবচাদি), হরিতাল, মনংশিল, হিন্নুলুক, লোহ ও বর্ণধাতু (গৈরিকাদি), এবং চন্দন, অগুরু, (পিপ্পলাদি) কটুক, কিগবর (মঘ্যবীজ প্রভৃতি তৈলজাতীয় দ্রব্যঙ্গাত), এবং হুরা, দম্ভ (গজদম্ভাদি), অজিন (রুম্ফচর্ম্ম), ক্ষোম ও তুক্ল নির্মাণের তন্ত্রসমূহ, (গালিচাদি) আন্তরণ, (শয্যার জন্য) প্রাবরণ ও রুমিজাত (কোশেয় দ্রব্যাদি), এবং অজ (ছাগ) ও এড়কের (মেষের) লোমদ্বারা প্রস্তুত বন্ধাদির উপর (মূল্যের) ১০ ভাগ কিংবা ১০ ভাগ শুরুরপে নির্দ্ধারিত হইবে।

রেন্দ্র, চতুপদ ও বিপদ জন্ত, স্তা, কার্পাস, গন্ধতার, ভৈষজা ( ওবিধি ), কার্চ, বেণ্, বন্ধল, চর্ম্ম ও মৃদ্রিমিত ভাণ্ডের ( কলশাদি দ্রব্যের ) এবং ধান্য, ( মৃতাদি ) স্কেছদ্রা, কার, লবণ, মহা. ও পরু অন্ন প্রভৃতির উপর ( ম্ল্যের ) ২০ কিংবা ২৯ ভাগ শুক্তরপে নির্মারিত হইবে।।

নগরের প্রধান দ্বারাধ্যক্ষ) প্রত্যেক পণ্যের জন্য নির্দ্ধারিত শুব্দের  $\frac{1}{6}$  ভাগ দ্বারাদের শুব্দ বলিয়া সংগ্রহ করিবেন। (এই দ্বারাদের শুব্দ ও ) মন্যান্য যে শুব্দ রাজার অন্তগ্রহবশতঃ আনীত পণ্যের উপর ধার্য্য হয় তাহা স্বদেশের উপকারের উপর দৃষ্টি রাধিয়া (শুব্দাধ্যক) শ্বাপিত করিবেন।

বে বে ভূমিতে বে বে পণ্য উৎপন্ন হয়, তাহা সেই ভূমিতে বিক্রয় করিতে পারা যাইবে না। থনি হইতে উৎপন্ন ধাতৃ ও তদ্ধাতৃদারা নির্মিত পণ্যসমূহের গ্রহণে গ্রহণকারীর (ও ত্রিক্রয়কারীর) উপর ৬০০ পণ দণ্ড ধার্য্য হইবে।

পুশ্পবাট ও ফলবাট হইতে পূষ্প ও ফল গ্রহণ করিলে, গ্রহণকারীর (ও তরিক্রয়কারীর) উপর ৫৪ পণ দও ধার্য্য হইবে।

ষণ্ড (বা শাকাদি উদ্ভিজ্জ দ্রব্যের ক্ষেত্র) হইতে শাক, মূল ও কন্দ গ্রহণ করিলে ় গ্রহণকারীর (ও তদ্বিক্রয়কারীর ) উপর ৫১% পণ দণ্ড ধার্য্য হইবে।

(ধার্যাদির) ক্ষেত্র হইতে সর্ব্ধপ্রকার শস্ত গ্রহণ করিলে, গ্রহণকারীর (ও তদ্বিক্রয়কারীর) উপর ৫৩ পণ দণ্ড ধার্য্য হইবে।

ইহার অতিরিক্ত প্রত্যেক ক্ষেত্রজ দ্রব্যের (ক্রেয়জন্ম) ১ পণ ও (বিক্রয়জন্ম) ১ পণ সীভাত্যের বা ক্রবিজ্ঞাত দ্রব্যসম্বন্ধী দণ্ড বলিয়া ধার্য্য হইবে।

অত এব, নৃতন ও পুরাতন পণ্যের উপর বিভিন্ন দেশ ও বিভিন্ন জাতির আচারান্ত্রসারে শুব্ধ নির্দ্ধারিত হইবে এবং (দেশে) সেই সব পণ্যজনিত কোন অপকার সম্ভাবিত হইলে তজ্জ্জ অত্যয় বা দণ্ডেরও ব্যবস্থা করিতে হইবে ॥ ১ ॥ কোটিলীয় অর্থশাম্ব্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে শুব্ধাধ্যক্ষপ্রকরণোক্ত শুদ্ধবাবহার-নামক দ্বাবিংশ অধ্যায় (আদি হইতে ৪৩ অধ্যায়) সমাপ্ত।

## ত্রয়োবিংশ অধ্যায়

#### ৪০শ প্রকরণ—সূত্রাধ্যক

সূত্রাধ্যক্ষ স্ত্রশিল্পিকুলে জাত স্ত্রকর্মকুশল পুরুষদারা স্ত্র, বর্ম্ম (কব্চ), বস্ত্র ও রজ্জুর (কর্তুন ও বানাদি কার্য্যরূপ) ব্যবহার বা নির্মাণাদি কর্ম করাইবেন।

বিধবা দ্বী, অঙ্গবিকল দ্বী, (অবিবাহিতা) কন্তা, প্রব্রজিতা (সম্মাসিনী) ও দণ্ডপ্রতিকারিণীর (অর্থাৎ যে দ্বীলোককে দণ্ডের নিক্রমরূপে কর্ম করিতে হয়, সে দ্বীলোকের) সহায়তায়, এবং গণিকামাতৃকা (বেচ্ছাদিগের ধাত্রী), বৃদ্ধা রাজদাসী (রাজপরিচারিকা) ও (নৃত্যগীতাদিবারা) দেবতার উপস্থান বা পূজাকার্য্য হইতে যাহারা অযোগ্য বলিয়া নিবৃত্ত হইয়াছে সে সব দেবদাসীগণবারা, উর্ণা (মেধাদির লোম), বঙ্ক (মূর্কাদির ত্রসর), কার্পাস, তুলা (শাক্ষল্যাদি), শণ ও ক্ষেম হইতে প্রাপ্ত তম্ভবারা (শত্রু) কাটাইবেন।

( স্ত্রাধ্যক্ষ ) স্ত্রের শ্লক্ষতা ( চাক্চিকা ), স্থূলতা ও মধ্যতাসম্বন্ধে উত্তমরূপে জানিয়া ( স্ত্রকর্তনের ) বেতন নির্দ্ধারিত করিবেন। এবং ( তিনি এক সময়ে কর্তনের বহুত্ব ও অল্পন্থ জানিয়াও ( বেতন নির্দ্ধারণ করিবেন, অর্থাৎ কার্য্যের অধিকতা ও ন্যনতা বিবেচনা করিয়া তাহা করিবেন )। স্ত্রের প্রমাণ ( ওজন ও লম্বতা প্রভৃতি ) জানিয়া ( তিনি ) তাহাদিগের ( বিধবা প্রভৃতির ) গুণ বিবেচনা করিয়া তাহাদিগকে ( তাহাদের প্রীতি ও অত্যের প্রোৎসাহনের জন্ম তাহাদিগের ব্যবহারার্থ ) তৈল, আমলক ও অন্যান্য উন্ধর্তনহারা ( অর্থাৎ শরীরের মলাপকর্থনার্থ অন্যান্য পিইকাদিবারা ) অনুগৃহীত করিবেন।

(পার্বণাদি) তিথিসমূহেও (অর্থাৎ ষেগুলি কর্মাদিবস নহে, সেই সব দিনেও) দান ও মানধারা (তাহাদিগের ঘারা) কর্মা করাইতে হইবে। দ্রব্যাসার (অর্থাৎ স্বব্যের মূল্যাদি) অপেক্ষা করিয়া (তিনি) স্ত্রহ্যাসের জন্ম (অর্থাৎ স্বত্যের ন্যায্য প্রমাণের ন্যনতার জন্ম) বেতনহাস বিধান করিতে পারিবেন।

(তিনি) যে সব তন্ত্রায় প্রভৃতি কারুগণ কার্য্যের প্রমাণ, সময়, বেতন ও ফলনিষ্পত্তি (অর্থাৎ নিষ্পন্ন বস্তাদিরপ ফল) সম্বন্ধে চুক্তিতে আবদ্ধ হইবে তাহাদিগের ঘারাও (স্ত্রকর্তন ও বানাদি) কর্ম করাইয়া লইবেন, এবং তাহাদিগের ছলপ্রয়োগাদির অবগতির জন্ম তিনি তাহাদিগের সহিত স্থাস্ত্রে মিশিয়া চলিবেন।

তিনি ক্ষোম, তুক্ল, ক্রিমিডান (রেশম), রাহ্ব (রঙ্গু-নামক মৃগের লোমজ) ও কার্পাদের স্ত্রকর্তন ও স্ত্রবানের (বস্ত্রনির্দাণের) জন্ম কর্মান্ত বা কারথানা হাপন করিয়া গন্ধ ও মাল্যদানুনহারা ও অন্য প্রকার আন্তর্কুল্য-বিধায়ক পারিতোষি-কাদিহারা (শিল্পীদিগকে) প্রসন্ন রাথিবেন। (এবং তাহাদিগের হারা তিনি) নানাপ্রকার বস্ত্র, আন্তরণ ও প্রাবরণ নির্দাণ করাইবেন।

তৎ তৎ কার্য্যে নিপুণ কাক ও শিল্পিগণবারা তিনি ককটের ( অর্থাৎ স্ক্রময় কবচাদির ) কন্মান্ত বা কারখানাও স্থাপিত করিবেন। বে-সব স্থালোক স্থামীর প্রবাসনিমিত্ত বিযুক্তস্থামিকা, বে-সব বিকলাঙ্গী স্থালোক ও (অবিবাহিতা) কন্তা বাড়ীর বাহিরে নিক্রান্ত হয় না, অথচ যাহারণ স্বপরিপ্রমন্থারা অক্তিত প্রাসাচ্ছাদনের উপরই দেহযাত্রা নির্ভর করে, ( স্ত্রাধ্যক্ষ ) নিজের দাসীগণবারা তাহাদিগকে অন্তর্বান্তিত করিয়া, প্রীতিসংকারপূর্বক তাহাদিগের বারা ( স্ত্রকর্তন ও বানাদি ) কর্ম করাইবেন।

বে-সব বীলোক নিজেরাই অতি প্রত্যুবে স্ত্রশালাতে আগমন করিবে,

তাহাদিগের সম্বন্ধে তিনি তাহাদের নিকট হইতে স্ত্রাদি ভাও ( অর্থাৎ নির্মিত স্ত্রাদি দ্রব্য ) লইয়া ইহার বিনিময়ে তাহাদিগের প্রাণ্য বেতন দেওয়ার বন্দোবস্ত করিবেন এবং সেই সময়ে স্ত্রাদির গুণ পরীক্ষার জন্য প্রদীপের প্রয়োজন হইলে ( অধ্যক্ষকে ) ততথানি প্রকাশযুক্ত প্রদীপের ব্যবস্থা করিতে হইবে যদ্ধারা সেই পরীক্ষাকার্যাই কেবল চলিতে পারে ( অর্থাৎ আগত স্ত্রীলোকদিগের ম্থাদিদর্শন যেন অধিক দীপপ্রকাশে না ঘটিতে পারে )।

(এই অবস্থায় অধ্যক্ষ) যদি উপস্থিত কোন দ্বীলোকের মৃথ দর্শন করেন, কিংবা প্রকৃত কার্য্যের অতিরিক্ত কোন বিষয়ে তাহার সঙ্গে কথাবার্ত্তা থলেন, তাহা হইলে তাঁহার উপর উত্তম সাহস দণ্ড বিহিত হইবে। বেতনপ্রাপ্তির নির্দ্ধারিত সময় অতিক্রম করিলে (তাঁহাকে) মধ্যম সাহস দণ্ড ভোগ করিতে হইবে এবং (উৎকোচাদি লাভের আশায়) অকৃত কর্ম্মের জন্ম (কাহাকেও) বেতন দিলেও (তিনি) সেই মধ্যম সাহস দণ্ড ভোগ করিবেন। যে শ্বীলোক বেতন লইয়াও কর্ম্ম করিবে না তাহার উপর অন্ধৃষ্ঠচ্ছেদরপ দণ্ড (স্ব্রোধ্যক্ষ) দেওয়াইতে পারিবেন এবং এই দণ্ড তাহাদিগের উপরও পতিত হইতে পারিবে যাহারা (স্প্রোদি দ্রব্য) ভক্ষণ (অর্থাৎ আত্মসাৎ) করিবে, বা অপরহণ করিবে, কিংবা তাহা লইয়া পলাইয়া যাইবে। (দেহদণ্ড ছাড়াও) কর্মকরগণের অপরাধ বিবেচনা করিয়াই তাহাদিগের প্রতি বেতন-কর্জনরূপ দণ্ড বিহিত হইতে পারিবে।

রচ্ছ্বর্তন ও চর্মময় উপকরণাদি নির্মাণ করিয়া যাহারা জীবিকা উপার্জন করে তাহাদিগের সহিত (স্ত্রাধ্যক্ষ) স্বয়ং সংসর্গ বা স্থ্য রাখিবে। বর্ত্রাদি (অর্থাৎ গবাশাদির বন্ধনী প্রভৃতি) ভাগু (উপকরণদ্রব্যপ্ত) তিনি নির্মাণ করাইবেন।

কোর্পাসাদি) সূত্র ও (শণাদি)বন্ধ হইতে নির্মাতব্য রজ্জু এবং বেত্র ও বেণু হইতে নির্মাতব্য বরত্রা (গবাশাদির বন্ধনী), যাহা সম্লাহ (কবচাদি যুদ্ধোপকরণ) ও (রথাদি) যান এবং (অখাদি) যুগ্যের বন্ধনের উপযোগী হইবে—সে-সব বন্ধ (আবশ্রক্তান্সনারে অধ্যক্ষ) নির্মাণ করাইবেন॥ ১॥

কৌটিলীয় অথশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে স্ত্রাধ্যক্ষ-নামক ক্রয়োবিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# চতুর্ব্বিংশ অধ্যায়

### ৪১শ প্রকরণ—সীভাধ্যক্ষ বা কৃষিকর্মাধ্যক

কৃষিশাস্ত্র, শুল্পশাস্ত্র (ভূমির সিরাসমূহবিষয়ক শাস্ত্র), বুক্ষের আয়ুর্বেদশাস্ত্র স্বয়ং উত্তমরূপে জানিয়া কিংবা তৎ তৎ শাস্ত্রে অভিজ্ঞ ব্যক্তিগণের সহায়তা লইয়া, সীভাধ্যক্ষ (রাজকীয় কৃষিকর্মাধ্যক্ষ) সর্বপ্রকার ধাত্ত, পূপ্প, ফল, শাক, কন্দ, মূল, বাল্লিক্য (কুন্মাণ্ড প্রভৃতি বল্লীজ্ঞাত ফল), ক্ষেম ও কার্পাদের বীজ ব্যাসময়ে সংগ্রহ করিবেন।

তিনি (সীতাধ্যক্ষ) বহু হলম্বারা পরিক্ট নিজ (বা সরকারী) ভূমিতে (মতান্তরে, সেই সেই বীজের উপযোগপ্রাপ্ত ভূমিতে) উক্ত বীজসমূহ দাস (ক্রীতদাসাদি), কর্মকর (বেতনভোগী কর্মকর) ও কর্মন্বারা দণ্ডনিক্রয়কারী পুরুষগণদ্বারা বপন করাইবেন।

(সীতাধ্যক্ষ) এই সব দাসাদিকে ভূমিকর্ধণের (হলাদি) যন্ত্রপাতি, (অন্তান্ত রজ্জ্প্রভৃতি) উপকরণ ও বলীবর্দের সঙ্গে সংসর্গ (অর্থাৎ এগুলির রক্ষাভার) হইতে নিবারিত রাখিবেন। সেইরূপ কারু, কর্মার (লোহকার), কুট্টাক (তক্ষা), মেদক (খনক; ভেদক-পাঠ সঙ্গততর), রজ্জ্বর্ত্তক (রজ্জ্নির্মাণকারী) ও সর্পগ্রহদিগের (সর্পগ্রহণকারীদিগের) সহিতও (ইহাদিগকে) সংস্টে রাখিবেন না।

ে(কারু প্রভৃতির) দোষে ক্লুষিকর্মের যে ফলহানি ঘটিবে, সেই হাপিত (নাশিত) ফলের পরিমাণামুসারে তাহাদের প্রতি অর্থদণ্ড বিহিত হইবে।

(শশ্যনিষ্পত্তির উপযোগী বৃষ্টিপাতের পরিমাণ নিরূপিত হইজেছে।)
জাঙ্গল বা মরুপ্রায় দেশ সম্বন্ধে (বর্ধমানার্থক কুন্তে) ষোড়শ দ্রোণ-পরিমিত
বর্ধণজল জমা হইলে, ইহাই শশ্যনিম্পাদনে পর্য্যাপ্ত বর্ধণের স্থচনা বলিয়া
পরিগণিত হইবে। অন্প বা জলপ্রায় প্রদেশ সম্বন্ধে ইহাম দেড়গুণ অর্থাৎ ২৪
দ্রোণ বর্ধা পর্যাপ্ত বলিয়া গৃহীত হইবে। কোন্ কোন্ দেশে কতথানি বর্ধা
হইলে ফসল পর্য্যাপ্ত হইবে তাহা বলা হইতেছে,—অশ্যাক-দেশে (মহারাষ্ট্র
প্রদেশে) ১৩ই দ্রোণ ও অবক্তী-দেশে ২৩ দ্রোণ বর্ধপ্রমাণ বলিয়া গৃহীত।
অপ্রাক্ত-প্রদেশে (কন্ধা-নামক পাশ্চান্তাদেশে) অপরিমিত বর্ধার প্রয়োজন;

হিমবৎ-প্রদেশে ও যে-সব দেশে কুল্যা বা থালদ্বারা আনীত জলদ্বারা কৃষিকর্ম সাধিত হয় সে-সব দেশে স্বস্বকালের উচিত বর্ষণদ্বারা শস্তু-নিষ্পত্তি ঘটে।

বর্ষণের চারি মাসের অর্থাৎ শ্রাবণ, ভাদ্র, আশ্বিন ও কার্ত্তিকের মধ্যে প্রথম মাস (অর্থাৎ শ্রাবণ) ও চরম মাস (অর্থাৎ কার্ত্তিক)—এই উভয় মাসে (উক্ত দেশসমূহের পক্ষে বর্ণিত পর্য্যাপ্ত) বর্ষণপরিমাণের है অংশ ও মধ্যম তুই মাসে (অর্থাৎ ভাদ্র ও আশ্বিন মাসে) है অংশ পাওয়া গেলেই (বর্ষণ-সম্বন্ধে) সংবৎসর শোভন বলিয়া পরিজ্ঞাত হইতে পারে।

বর্ষণজনিত স্থ-সংবৎসরের উপলব্ধি হয় বৃহস্পত্তি গ্রহের স্থান (মেষাদি-রাশিতে অবস্থান), গমন (তদগুরাশিতে সংক্রমণ) ও গর্ভাধান (অর্থাৎ বৃহস্পতির । গতির ফলে অগ্রহায়ণ প্রভৃতি মাসে তৃষারপাত প্রভৃতি) হইতে, শুক্রগ্রহের উদয়, অন্ত ও চার (অর্থাৎ আষাচ় মাসের পঞ্চমী প্রভৃতি নয়টি তিথিতে ইহার সঞ্চার) হইতে এবং সূর্য্ব্যের প্রকৃতি বা স্বভাবের (মণ্ডলবেইনাদিরপ) বিকৃতি বা অন্তথাভাব হইতে।

বর্ণিতরূপ স্থ্য হইতে শস্তের বীজনিম্পত্তি, বর্ণিতরূপ বৃহস্পতি হইতে শস্তের স্তম্ম বর্জন, এবং বণিতরূপ শুক্র হইতে বৃষ্টি অফুমিত হইতে পারে।

যদি তিন মেঘ (বর্ধা-বাদল) সপ্তাহ-কাল পর্যন্ত অবিচ্ছিন্নভাবে বর্ধণ করে ্অর্থাৎ এইভাবে সপ্তাহকাল পর্যন্ত যদি তিন বার বর্ধণ হয়), এবং যদি অশীতি বার মেঘ সান্ত্র-বিন্দুব্র্যী হয়, এবং যষ্টি বার আতপযুক্ত মেঘ বর্ধণ করে, তাহা হইলে এইরূপ বৃষ্টিই সম (অর্থাৎ অন্যূন ও অনতিরিক্ত) বলিয়া লোকহিতকর হইবে ॥ ১ ॥

যে স্থানে (মেঘ বা পজ্জান্ত) বায়ু ও আতপকে পৃথক করিয়া বিভক্ত করিয়া অর্থাৎ বায়ু ও রোদ্রকে নিজ নিজ কার্য্য করিছে অবসর দিয়া এবঞ্চ (ভূমিতে) তিন বার কর্বণের অবসর উৎপাদন করিয়া বর্ষণ করে, সেই স্থানে শস্তাগম নিশ্চিত॥ ২॥

তৎপর ( অর্থাৎ যথোক্ত বর্ষণপ্রমাণ অবগত হইয়া, সীতাধ্যক্ষ ) প্রচুর জলবারা , নিপান্ত ও অ**র জল**বারা নিপান্ত শস্য বপন করাইবেন।

শালি, ত্রীহি (ধাগ্যাদি), কোত্রব, তিল, প্রিয়ঙ্গু, দারক ও বরক—এই দাত প্রকার শক্ষের বীজ বর্ধার পূর্বভাগে বপন করিতে হয়। মৃদ্যা, মাষ ও শৈষ (শিষ বা শিম প্রভৃতি),—এই তিন প্রকার শক্ষের বীজ বর্ধার মঞ্জভাগে বপন করিতে হয়। আর, কুস্তু, মন্ত্র, কুলুখ, ষব, গোধ্ম, কলায়,

অতসী ও সর্বপ—এই আট প্রকার শস্ত্রের বীব্দ বর্ধার শেষভাগে বপন করিতে হয়।

অথবা, উক্ত শশুদির বীজবপন তৎতৎ বীজের সম্যক্ নিষ্পত্তির উপযোগী ঋতু-অমুসারেও করা যাইতে পারে।

ষে ক্ষেত্রে বপন করা হইয়াছে তদতিরিক্ত ক্ষেত্রে ভার্কসীতিকেরা (অর্থাৎ বাহারা ফসলের অর্ধভাগ নেওয়ার স্বীকারে বপন করে তাহারা) বপনকার্যভার লইতে পারিবে। অথবা যাহারা (স্বামিসম্বন্ধীয় বীজাদি লইয়া) কেবল স্বশরীরের আয়াসমাত্রঘারা উপজীবিকা অর্জ্জন করে, তাহারা ফসলের ক্ট্র বা ক্রি অংশ স্বীকার করিয়া বপনাদি কার্য্য করিতে পারে। (উক্ত বপনকারীরা) ফসলের অনির্দ্ধারিত অংশও স্বামীর ইচ্ছাত্র্সারে তাঁহাকে দিতে পারে, কিন্তু, তাহাদের কোনও কন্ত উপস্থিত হইলে এই প্রকার ব্যবস্থা না-ও করা যাইতে পারে।

(শাস্ত্রাহ্ণসারে রাক্ষাই ভূমি ও জলের অধিপতি, তাই রাজপ্রাপ্য ভূমিকরের স্থায় জলকরও কৃষকদিগকে দিতে হয়। সম্প্রতি সেই জলকর নির্ণীত হইতেছে, যথা)—কৃষকেরা নিক্ষ পরিশ্রমে নিশ্পাদিত (তড়াগাদি) সেতৃ হইতে (কুম্ভাদি ভরিয়া) হতে বহনপূর্বক জল নিয়া কৃষিকর্ম করিলে সেই জলব্যবহার-জগ্র (রাজাকে) हे অংশ দিবে, স্বন্ধে বহনপূর্বক জল নিয়া কৃষিকর্ম করিলে हे অংশ দিবে, এবং স্রোত্রয় অর্থাৎ থাল প্রভৃতি জলসারণী হইতে জল নিয়া কৃষিকর্ম করিলে ফসলের ह অংশ দিবে।

(স্বদেতৃতিয় অশু) নদী, সরোবর, তড়াগ ও কৃপ হইতে (অরঘট্টাদি যুম্রবারা,) জল ব্যবহার করিয়া ক্রষিকর্ম করিলে (ক্রযকেরা) (রাজ্ঞাকে) ফসলের টু অংশ দিবে।

( দীতাধ্যক্ষ ) কৃষিকর্মে অপেক্ষিত জলের (প্রাচ্র্য্য ও অপ্রাচ্র্য্য ) অহুসারে কেদারক্ষেত্রে বাপ্য, হেমন্তকালে বাপ্য, কিংবা গ্রীম্মকালে বাপ্য শস্ত বাপিত করিবেন।

(সর্বপ্রকার ফসলের মধ্যে) শালিধান্তাদির ফসল উত্তম (ইহাতে অর আয়াস ও ব্যয় হয়—ফল অধিক)। কদলী প্রভৃতি বণ্ডের ফসল মধ্যম। ইক্ষুর ফসল অধম। কারণ, ইহার বপনাদিতে নানাপ্রকার বিশ্ব (মহন্ত ও মৃষ্কিক্দির উপদ্রব) আছে ও ইহা অত্যস্ত ব্যয়সাধ্য।

(কুমাণ্ডাদি) বল্লীফলের উত্তম বাপদেশ হইল জলের পর্যান্তদেশ, যাহাতে

জালের ফেন আঘাত করে। পিপ্পলী, মৃথীক (আঙ্কুর) ও ইক্ষুর উত্তম বপনস্থান হইল জালের পরিবাহ বা উচ্ছ্যানের পরিসর-প্রদেশ। শাক ও ম্লের উত্তম বাপস্থান কৃপপার্যন্থ ভূমিভাগ। হরিতক বা সবজীর ফসলের উত্তম হান হইল হরি বা কুল্যাদির পর্যন্তপ্রদেশ (মতান্তরে, হরিণ তড়াগাদির রিক্তভূত আর্দ্রন্দেশ)। পালি বা ক্ষেত্রমধ্যন্থিত সেতৃ বা জলবন্ধ হইল ছেদনযোগ্য গন্ধ, ভৈষজ্ঞা, উশীর, থ্রীবের (বালাখ্য গন্ধপ্রব্য বিশেষ) ও পিণ্ডালুক (কচাল প্রভৃতি রোমকন্দ) প্রভৃতির উত্তম বপনস্থান। (সীতাধ্যক্ষ) স্ব স্ব যোগ্য ভূমিতে স্থলপ্ররোহিণী ও জলপ্রায়প্রদেশপ্ররোহিণী ওয়ধি স্থাপিত বা বাপিত করিবেন।

(ক্ষেত্রে বপনযোগ্য বীজসমূহের সংস্কারপ্রথা নির্দ্দিষ্ট হইতেছে।) ধান্তবীজসমূহের সাতদিবস পর্যন্ত তুষার-পায়ন (অর্থাৎ রাত্রিতে তুষার পানের জন্ত রক্ষণ) ও উষ্ণানোষণ (অর্থাৎ দিবাভাগে রোল্রে রক্ষণ) করিতে হইবে।
কোশীধান্তসমূহেরও (মৃদগামাযাদির বীজেরও) তিন দিন বা পাঁচ দিন পর্যন্ত এই কার্য্য (অর্থাৎ তুষার-পায়ন ও উষ্ণশোষণ) করিতে হইবে। (ইক্ষ্ প্রভৃতি) কাগুবীজের (অর্থাৎ যাঁহাদের টুকরাগুলি বপন করিতে হয়়) ছিন্নপ্রদেশগুলিতে মধ্, য়ত ও শ্করের বসা (চর্বা) গোময়য়্ক করিয়া লেপন করিতে হয়।
(ফ্রণাদি) কন্দগুলির ছেদলেপ কেবল মধ্ ও য়তলারা করিতে হয়। (কার্পাসাদি)
ক্রিবীজসমূহে গোময়লারা লেপ দিতে হয়। (আম্র-পনসাদি) রক্ষের বীজনিবেশগর্ষ্কে তুণাদিলারা দাহ বা উষ্ণতা দিতে হয় এবং যথার্থ সময়ে (অর্থাৎ পুল্পফলাদির প্রসব সময়ে) গক্ষর অন্থি ও গোময়লারা দোহদ দিতে হয়।

উক্ত সর্ব্যপ্রকার বীজ যথন অঙ্ক্রিত হইবে, তথন সেগুলিকে সুহি-নামক ওষধির ক্ষীরের সহিত মিশ্রিত করিয়া আর্দ্র ক্ষুদ্র মংশ্রুরারা সেচন করিতে হয়। ●

কার্পাসবীজের সার ও সর্পের নির্মোক ( সর্পত্তক্ ) একসঙ্গে করিয়া ধূপিত করিতে হইবে। এই সম্মিলিত উভয়বিধ স্রব্যের (ধূপনজনিত) ধূম যেথানে থাকিবে সেথানে কোন সর্প থাকিতে পারে না॥ ৩॥

সর্বপ্রকার বীজেরই প্রথম বপনসময়ে, ইহার প্রথম বীজম্টি স্বর্ণ সংযুক্তজল
ছারা সিক্ত করিয়া বপন করিতে হয়। নিম্নবর্তী মন্ত্রও তৎসঙ্গে পাঠ করিতে

হয়, মথা—

প্রজাপতি, কাশ্রপ ( স্থাপুত্র ) ও ( পঞ্জার ) দেবকে সর্বাদা নমস্কার জানাইতেছি । সীভাদেবী ( কৃষির অধিষ্ঠাত্রী দেবীর নাম এখানে 'সীতা"বলিয়া গত হইয়াছে ) আমার বীজ ও ধনসমূহের বৃদ্ধি বিধান করন ॥ ৪॥

(সীতাধ্যক্ষ) ষণ্ডবাট-পালক, গো-পালক, দাস ও অ্যান্ত কর্মকরের জন্ম প্রত্যেক পুরুষের পরিশ্রমের অম্বরূপ ভক্ত বা ভোজন দানের ব্যবস্থা করিবেন এবং (তিনি) তাহাদের বেতন-জন্ম প্রত্যেককে প্রতিমাসে ১ প্র পণ দিবেন। (তিনি) প্রত্যেকের কর্মাপ্রসারে, কারুদিগকে (তক্ষাদিকে) ভক্ত (ভোজন) ও বেতন (মাসিক নগদ মাহিনা) দিবার ব্যবস্থা করিবেন। দেবকার্য্যের জন্ম (রুক্ষ হইতে স্বয়ং) পতিত পুল্প ও ফল, এবং নবশস্ত্য-নামক ইষ্টির (নবায়-ক্রিয়ার) উদ্দেশ্যে (স্বয়ং পতিত) ব্রীহি ও যব ক্রোক্রিয়া ব্রাহ্মণেরা ও তপস্বীরা আহরণ করিতে পারিবেন। আর যাহারা উষ্ণবৃত্তি করিয়া জ্বীবিকা চালান তাহারা (থলনিবেশিত) ধান্তসমূহের সমীপগত কণিশাদি সংগ্রহ

চতুর ( অর্থাৎ অর্থসঞ্চয়বিধানজ্ঞ) ব্যক্তি যথাসময়ে সম্ৎপন্ন সর্বপ্রকার শস্তাদি ( রক্ষণস্থানে ) প্রবেশ করাইবেন এবং তেমন চতুর ব্যক্তি কথনই পদাল ( বা তুষ ) পর্যান্ত ক্ষেত্রে রাখিবেন না॥ ৫॥

প্রকর বা ধান্তানিবেশস্থান (গোলা) সম্জুতিত অর্থাৎ উচ্চ করিয়া তৈয়ার করাইতে হইবে। এই গৃহগুলির শিরোদেশ যেন পরস্পর সংশ্লিষ্ট না হয় এবং তুচ্ছাকার (অর্থাৎ প্রচণ্ড বায়ু প্রভৃতিধারা অপহারযোগ্য) না হয়—সেদিকে দৃষ্টি রাখিতে হইবে॥ ৬॥

মণ্ডলের সমীপে (অর্থাৎ যে স্থানে বলীবদ্ মণ্ডলভ্রমণ করিয়া স্তম্বধান্তের বিশ্লেষণ করে তৎসমীপেই) থল-প্রকর (অর্থাৎ ধান্ত মাড়িবার খামারসমূহ) নির্মিত করা হইবে। যাহারা খলে কর্মকর তাহাদের নিকট অগ্লি থাকিবে না বরং তাহারা সঙ্গে সঙ্গেল রাখিবে ( যেন অগ্লিদাহ উপস্থিত হইলে অগ্লিপ্রশামার্থ তাহারা সেই জল ব্যবহার করিতে পারে)॥ १॥

কৌটিলীয় অর্থশান্তে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে সীতাধ্যক্ষ-নামক চত্বিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## পঞ্চবিংশ অধ্যায়

#### ৪২শ প্রকরণ<del> সুরাধ্যক</del>

স্থরাধ্যক্ষ তুর্গে, জনপদে বা স্কন্ধাকরে (সেনানিবেশস্থানে) স্থরা ও তৎকিছের (হরাবীজের) ব্যবহার বা ব্যাপার, তৎকর্মকুলে উৎপন্ন নিপুণ স্থরা ও কিথব্যবহারিগণঘারা করাইবেন এবং এই ব্যাপার তিনি প্রক্রম্থভাবে ( অর্থাৎ একস্থানে দ্রব্য রাখিয়া কেন্দ্রীকরণহিসাবে ), বা বহুমুখভাবে ( অর্থৎ অনেক শ্বানে দ্রব্য রাখিয়া বিকেন্দ্রীকরণহিসাবে ) চালাইবেন, অথবা, ক্রয় ও বিক্রয়ের অবস্থা বৃঝিয়া অগ্যতরভাবে বা উভয়ভাবেও চালাইতে পারেন। নিদ্দিট্ট স্থানের অতিরিক্ত শ্বানে ( স্থরা ও কিথের ) উৎপাদনকারী, ক্রয়কারী ও বিক্রয়কারীদিগের উপর ৬০০ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। ( তিনটি কারণে ) স্থরাধ্যক্ষকে পর্যবেক্ষণ করিতে হইবে যেন গ্রাম হইতে স্থরা ( অর্থাৎ স্থরামন্ত ব্যক্তিগণ ) বাহিরে নিংস্ত না হইতে পারে এবং গৃহ হইতে গৃহান্থরে বা জনাকীর্ণ স্থানে যাইতে না পারে—ইহার প্রথম কারণ এই যে, এইরূপ ব্যবস্থা না থাকিলে তৎতৎকর্মে নিযুক্ত ব্যক্তিগণের প্রমাদে বা অনবধানতায় পতিত হইবার ভয় হইতে পারে; দ্বতীয় কারণ, তীক্ষ ( কঠোরস্থভাব শ্র )-গণের ( অমুচিত কার্য্যে ) উৎসাহ ( শল্পাদিপ্রয়োগ-সম্বন্ধে ) বাড়িয়া যা ইবার ভয়ও হইতে পারে।

(রাজমূলাদিদারা) চিহ্নিত অল্প পরিমাণ স্থরা, মথা— ह কুড়ুব, ই কুড়ুব বা > কুড়ুব, অথবা ই প্রস্থ বা > প্রস্থ পরিমাণ তাহারাই (বাহিরে) নিতে পারিবে যাহাদের শৌচ বা শুচিতা ( স্থরাধ্যক্ষেরও ) পরিজ্ঞাত আছে।

যাহারা স্থর। লইয়া অন্ত অ সঞ্চরণের অন্তমতি পাইবে না, এমন লোকেরা (নির্দিষ্ট) পানাগারে বা মদের দোকানে মগুপান করিতে পারিবে। (কোন মগুপায়ীছারা) নিক্ষেপ, উপনিধি (ম্লাযুক্ত গ্রাস), প্রয়োগ (আধি বা বন্ধক) ও (চোরাদিছারা) অপহত বা অগ্যভাবে প্রাপ্ত ক্র্বাসমূহের কিংবা বে-আইনী ভাবে উপগত ক্রবাসমূহের তত্ত্ব জানিবার অভিপ্রায়ে এবং অস্থামিক (বা অনবগত-মালিক) কুপ্য ক্রব্য ও হিরণ্য (নগত টাকা) শাইয়া, (মগুব্যবসায়ী) নিক্ষেপাদি রক্ষাকারীকে (পানাগার হইতে) অগ্য কোন স্থানে কোন ছলনায় (স্ক্রাধ্যক্ষের সহায়তায়) ধরাইয়া দিবে। এবং (পানাগারে) কেছ আয়ের অধিক ব্যয়কারী

কিংবা আয়তি বা উত্তরকালের জন্ম সঞ্চয় না রাথিয়া ব্যয়কারী (মন্তপায়ীকেও) ধরাইয়া দিবে।

অনর্ঘের সর্জে (বিনা মূল্যে বা অল্পমূল্যে ) ও কালান্তরে দেয় মূল্যের সর্জে ( স্থরাবিক্রিয়ী ) কাহাকেও উত্তম স্থরা দিতে পারিবে না, কিন্তু তৃষ্ট বা দোষযুক্ত স্থরা দিতে পারিবে । সেই তৃষ্ট স্থরাও ( উত্তম স্থরা বিক্রয়ের স্থান হইতে ) অক্যত্র বিক্রয় করাইতে হইবে । ( এই তৃষ্ট স্থরা ) দাস ও ( ক্ষুন্ত ) কর্মকরদিগকে বেতন-রূপে ( অর্থাৎ বেতনের পরিবর্জে ) দেওয়া যাইতে পারে । অথবা, ( এই তৃষ্ট স্থরা ) ( উট্রাদি ) বাহন-পশুর পানীয় দ্রব্যরূপে বা শৃকরের পোষণার্থ ব্যবহৃত হুইতে পারে ।

স্থরাধ্যক্ষকে তেমন পানাগার প্রস্তুত করাইতে হইবে—যাহাতে অনেক কক্ষ্যা বা কামরা থাকিবে, যাহাতে ভিন্ন ভিন্ন শধ্যা ও আসন থাকিবে, যাহাতে পৃথক্ পানোপযোগী স্থানও থাকিবে, যাহাতে গদ্ধদ্রব্য, মাল্য ও জল রক্ষিত থাকিবে এবং যাহা ভিন্ন ভিন্ন ঋতুতে ভোগ্যবস্তুর সমাবেশে স্থথকর হইবে।

গৃঢ়পুক্ষেরা (পানাগারে কর্মকরাদিরপে) অবস্থিত থাকিয়া (মত্যপায়ীদিগের) বায় প্রকৃতিসিদ্ধ (অর্থাৎ সাধারণ) কিংবা উৎপত্তি-সিদ্ধ (অর্থাৎ অপূর্ব্ব উপায়ে প্রাপ্ত) ইহা জানিয়া লইবে এবং তাহারা আরও জানিবে—কোন আগন্তুক (বিদেশাগত লোক) সেথানে আসিয়াছে কি না।

(এই গৃঢ়পুক্ষেরা) মছাপানে মন্ত হইয়া স্থা ক্রেতাদিগের (শরীরে অবস্থিত) অলকার, আচ্ছাদন ও (সঙ্গে রক্ষিত) হিরণ্য (নগদ টাকা) সম্বেদ্ধ তত্ত্ব জানিয়া রাখিবে। সেই (অলকারাদির) নাশ ঘটিলে, (মছাবিক্রেতা) বৃণিকেরা তাহা প্রণু করিয়া দিতে ও তৎ পরিমিত অর্থদণ্ডও (রাজসরকারের) দিতে বাধ্য থাকিবে।

পৃথক পৃথকৃষ্টিত একান্ত কক্ষ্যাগুলিতে যে-সব আগন্তুক (বিদেশাগত) ও স্বদেশনিবাসী আর্যাভাবে প্রতীয়মান লোকেরা মদমত্ত অবস্থায় গুইয়া আছে তাহাদের অভিপ্রায় মন্তবণিকেরা নিজ-নিজ ক্ষচিরাক্লতি দাসীবারা অবগত হইবে

মেদক, প্রসন্না, আসব, অরিষ্ট, মৈরেয় ও মধু—এই ছয় প্রকার স্থরার নিরূপণ করা হইতেছে।

এক দ্রোণ-পরিমিত জল, ই আঢ়ক-পরিমিত তণ্ডুল বা চাউল ও তিন প্রস্থ পরিমিত কিথ ( স্থরাবীজ )—এই তিন বস্তুর মিশ্রণের নাম মেদক্ষযোগ ( অর্থা এই বস্তুগুলি মিলিত হইলে মেদক-নামক স্থরা প্রস্তুত হয় )। ১২ আঢ়ক-পরিমিত পিট (ময়দা বা আটা) ও ৫ প্রস্থ-পরিমিত কিগ বা তৎস্থলে পুত্রক-নামক বৃক্ষের ছাল ও ফলযুক্ত (বক্ষ্যমাণ) জাতিদস্ভার (পাঠালোগ্র প্রভৃতি যোগ) মিশাইয়া প্রাসক্লাযোগ (অর্থাৎ প্রসন্ধা-নামক স্থরা) তৈয়ার করা যায়।

১ তুলা (বা ১০০ পল )-পরিমিত কপিখফলসার, ৫ তুলা (বা ৫০০ পল) পরিমিত ফাণিত (কাঁচা ইক্ষ্রস = রাব, ইহার নামান্তর) ও ১ প্রস্থ মধু মিশাইয়া আাসবযোগ তৈয়ার করা যায়। এই যোগে যদি এক-চতুর্থাংশ কপিখাদির পরিমাণ অধিক করা হয়, তাহা হইলে এই আসবযোগ উত্তম বলিয়া পরিজ্ঞাত হয়, এবং ইহাতে যদি কপিখাদির পরিমাণ এক চতুর্থাংশ কম করা হয়, তাহা হইলে ইহা নিরুষ্ট আসবযোগ বলিয়া পরিজ্ঞাত হয়।

প্রত্যেক রোগের উপশমের জন্ম চিকিৎসকগণ যে ভাবে অরিষ্ট প্রস্তুত করেন সেইভাবেই ( অর্থাৎ বৈচ্যপ্রসিদ্ধ উপায়ে ) **অরিষ্ট**যোগ বুঝিতে হইবে।

মেষশৃঙ্গী-নামক বৃক্ষের ছালের কাথধার। আদ্রীকৃত ও গুল বা গুড়ের প্রতিবাপ বা মিশ্রনে যদি ত্রিফলার যোগ দেওয়া হয়, কিংবা ত্রিফলার ছলে পিপুল ও মরিচের সম্ভার দেওয়া হয়, তাহা হইলে ইহা মৈরেয়মোগ বলিয়া আখ্যাত হয়। সর্বপ্রকার গুল বা গুড়যুক্ত মছেই ত্রিফলা সম্ভার ব্যবস্তুত হইয়া থাকে।

মৃথীকা বা দ্রাক্ষার রদ হইতে প্রস্তুত স্থরার নাম মধু। এই মধুর উৎপত্তি-দেশের নামান্ম্সারে ত্ইটি আখ্যান (ছ্যাখ্যানং পাঠই সমীচীন মনে হয়) বা নাম হয়, যথা—কাপিশায়ন (অথাৎ কপিশা-নামক নদীতীরস্থ দেশজাত) ও হারহুরুক (অর্থাৎ হরহুর-নামক নগরে জাত)!

মাষকল্প হইতে ভাবিত জল, কাঁচাই হউক বা সিদ্ধই হউক, ১ দ্রোণ-পরিমিত লইয়া, তাহাতে ১ ক্ট দ্রোণ-পরিমিত তণ্ডুলপিট মিশাইয়া এবং তাহাতে ১ কর্ষ-পরিমিত মোরটাদি বস্তু যোগ করিয়া কিন্তু-নামক যোগ বা বন্ধ ( অর্থাৎ স্থরাবীজ্ঞ) প্রস্তুত করিতে হয়।

মেদক ও প্রাসন্ধা-নামক স্থরাতে এক প্রকার সম্ভারযোগ দেওরা হয় এবং এই যোগ পাঠা (অপর নাম অষষ্টা, ইহা এক প্রকার বৃক্ষ), লোগ্র, তেজোবতী (গজপিপ্ললী), এলা (এলাচী), বাল্ক, মধুক (মধ্যষ্টি), মধুরসা (আঙ্গুর, মতাস্করে দ্ব্রা), প্রিয়ঙ্গু দারুহরিদ্রা, মরিচ ও পিপ্ললীর প্রত্যেকটিব, চুর্ণ পাঁচ কর্য-পরিমিত লইয়া প্রস্তুত করিতে হয়। যদি কটশর্করা মধ্কের ক্যায় মৃক্ত

করিয়া (মেদক ও প্রসন্ন-নামক স্থরাতে ) মিশ্রিত করা হয়, তাহা হইলে এই উভয় প্রকার স্থরার বর্ণ প্রসাদগুণযুক্ত হয় ( অর্থাৎ মনোরম হয় )।

আসবসম্ভার (বা আসব-নামক স্থরার মসলা) তৈয়ার করিতে হইলে, চোচ (দারুচিনি), চিত্রক, বিড়ঙ্গ ও গজপিপ্পলী এইগুলির প্রত্যেকটি এক কর্য পরিমাণ এবং ক্রম্ক (গুবাক), মধুক, মৃস্তা (মৃথা) ও লোগ্র—এইগুলির প্রত্যেকটির তুই কর্য পরিমাণ লইয়া ইহা (সম্ভার) প্রস্তুত করিতে হয়। যে কোন দ্রব্যের আসব করিতে হইলে, উক্ত (চোচাদি) দ্রব্যসমূহের ১০ ভাগ করিয়া দিলে সেই আসবের বীজবন্ধ প্রস্তুত হইতে পারে।

শ্বেভস্থরা-নামক স্থরা প্রস্তুত করিতে হইলে প্রসন্না-স্থরা প্রস্তুত করার যোগই প্রযুক্ত হইবে ( টীকাকারদিগের মতে, ইহাতে প্রসন্নার সম্ভার ও বীজবন্ধ ব্যবহার করিতে হয় না )।

( স্থরার নিয়লিখিত প্রকারভেদও হইতে পারে, যথা— (১) সহকার স্থরা ( অর্থাৎ যে স্থরাতে আমরস বা আমতেলাদি মিশ্রিত করা হয় ), (২) রসোভরা ( অর্থাৎ যে স্থরাতে গুড়প্রতিবাপ যোগ করা হয় ), (৩) বীজোভরা যাহার অপর নাম মহাস্থরা ( অর্থাৎ যাহাতে বীজবদ্ধরবার মাত্রার আধিক্য থাকে ) ও (৪) সন্তারিকী ( অর্থাৎ যে স্থরাতে সন্তারের মাত্রার আধিক্য থাকে )।

উক্ত সর্বপ্রকার হ্বরাতে যদি মোরটা ( মূলপুপিকা-নামক বল্লীভেদ ), পলাশ ( কিংন্তক )- পত্র ( লোহমারক, ইহা এক প্রকার ঔষধ ), মেষশৃঙ্গী, করঞ্জ ও ক্ষীররক্ষের ( বটাদিরক্ষের ) ক্ষায়লারা ভাবিত করিয়া দয়্ম কটশর্করার চূর্ণ, লোধ্র, চিত্রক, বিভঙ্গ, পাঠা, মৃস্তা, কলিঙ্গয়ব ( কলিঙ্গদেশে উৎপন্ন যব ), দারুহরিন্তা, ইন্দীবর, শতপুপা, অপামার্গ, সপ্তপর্ণ, নিম্ন ও আন্ফোতের ( বা আন্ফোট বা অর্কর্ক্ষের ) করের সহিত ( সেই শর্করার ) অর্ধ পরিমাণ যুক্ত করিয়া, ইহার অনুস্থানথম্ন্তিমেয় পরিমাণ এককৃন্ত বা খারী-পরিমিত রাজার পানযোগ্য তৎ তৎ স্বরাতে প্রক্ষিপ্ত করা যায়, তাহা হইলে ইহা হ্বরাগুলিতে প্রসাদ-গুণ আনয়নকরে ( অর্থাৎ হ্বরাগুলিকে মনোরম করিতে পারে ) এবং যদি ইহাতে পঞ্চললপরিমিত ফাণিত প্রদন্ত হয়, তাহা হইলে ইহার রস বা হাদ বন্ধিত হইতে পারে । কুটুনী বা গৃহস্থেরা ( বিবাহাদি ) গৃহস্কত্যে শেতহ্মরা ও ঔষধের জন্ত অরিষ্ট কিংবা অন্তপ্রকার, হ্বরা তৈয়ার ( বা ব্যবহার ) করিতে পারিবে ।

(বদন্তাদি) উৎসবে, (বদুবাদ্ধবের) সমাজে (বা মিলনে) ও বাত্রাভে

( অর্থাৎ ইষ্টদেবতাদির শোভাষাত্রাতে ) চারিদিন পর্যান্ত হ্বরা ব্যবহারের আদেশ ( হ্বরাধ্যক্ষ ) দিতে পারিবেন । ( উক্ত উৎস্বাদিতে হ্বরাধ্যক্ষের ) অন্তমতি না লইয়া যাহারা হ্বরাপান করিবে তাহাদিগের প্রহ্বণ বা তৃষ্টিভোজনের পরে, ( হ্বরাধ্যক্ষ ) তাহাদিগের নিকট হইতে প্রতিদিনের হিসাবে দণ্ড গ্রহণ করিবেন ( মতান্তরে, রাজকর্মকরেরা বিনা অন্তমতিতে যে কয়েকদিন মদমত্ত হইয়া কর্মহানি উৎপাদন করিবে, সেই দৈনিক হানি অন্ত্সারে তিনি দণ্ড ব্যবস্থা করিবেন, —এই ব্যাখ্যা )।

স্থরাপাককার্য্যে ও কিঞ্প্রস্থতকরণকার্য্যে (তন্-রদে অনভিজ্ঞ) স্ত্রীলোক ও বালকগণকে নিযুক্ত করা উচিত হইবে।

যাহারা রাজপণ্য-হিসাবে নহে, কিন্তু নিজের উৎপাদিত পণ্য হিসাবে মগু প্রস্তুত করিয়া বিক্রয় করিবে, তাহারা হ্বরকা (সাধারণ হ্বরা), মোদক, অরিষ্ট, মধু, ফলাম্ন (তাল-নারিকেলাদি ফলের রসবারা নির্মিত হ্বরা) ও অমুশীধুর (অর্থাৎ গুড় প্রতিবাপ হইতে উৎপাদিত হ্বরার) জন্ত শতকরা পাঁচ পণ করিয়াদণ্ড দিতে বাধ্য হইবে।

(উক্ত শুদ্ধের অতিরিক্ত) প্রতিদিনের (স্বরা) বিক্রয় ও বৈধরণ (তোল ও মাপের জন্ম কর ) নির্দ্ধারণ করিয়া (স্বরাধ্যক্ষ) (বোড়শভাগরূপ) মানব্যাজী ও (বিংশতিভাগরূপ) হিরণ্যব্যাজী আদায় করিবেন; কিন্তু, (তিনি)উচিত করই অমুবর্ত্তন করিবেন (অর্থাৎ স্বেচ্ছায় কর ধার্য্য করিবেন না)॥১॥

কৌটিলীয় অর্থশান্তে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে স্থরাধ্যক্ষ-নামক পঞ্চবিংশতি অধ্যায় ( আদি হইতে ৪৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## ষড়্বিংশ অধ্যায়

## ৪৩শ প্রকরণ-—**সূলাধ্যক্ষ**

ষে-সব মৃগ, পশু, পক্ষী ও মংস্থ রাজার আদেশে অভয়লাভের পাত্র বলিয়া উদ্ঘোষিত এবং রাজকীয় সর্বাতিথিবনে (মতান্তরে, ঋষিদিগের ব্রহ্মসোমারণ্যে) বাস করে—সেগুলিকে যাহারা বন্ধন করিবে, প্রহার করিবে ও তাহাদের প্রতি মারণাদি হিংসা প্রদর্শন করিবে, সূনাধ্যক্ষ (প্রাণিবধন্থানে অধিকৃত রীজপুক্ষ ) তাহাদিগকে উত্তম সাহস দণ্ডে দণ্ডিত করাইবেন। (কিন্তু) কুটুম্ভরণ্শীল

গৃহস্থগণ যদি অভয়বনে স্থিত মৃগাদিবিষয়ে বন্ধন, বধ ও হিংসার আচরণ করে, তাহা হইলে ( স্থনাধ্যক্ষ ) তাহাদিগকে মধ্যম সাহস দও দেওয়াইবেন।

ষে-সব মৎশু ও পক্ষী (আক্রমণকারীর প্রতি) হননাদিতে প্রবৃত্ত হয় না, সে-সব মৎশু ও পক্ষীর বন্ধ, বধ ও হিংসার জন্ম (তিনি) অপরাধী ব্যক্তির প্রতি ২৬% পণ দণ্ড বিধান করিবেন, এবং তদ্ধপ মৃগ ও পশুর বন্ধ, বধ ও হিংসার জন্ম অপরাধী ব্যক্তির প্রতি ইহার বিশুণ (অর্থাৎ ৫৩% পণ) দণ্ড বিধান করিবেন।

ঘাতকের প্রতি হিংসায় প্রবৃত্ত, (কিন্তু) অস্বামিক বা অরক্ষিতবনগত পশুদিগের হত্যাকারী হইতে (স্নাধ্যক্ষ) মারিত পশুর বঠভাগ রাজাদেয় বলিয়া গ্রহণ করিবেন। (এইরূপ অবস্থায় মারিত পশুর বা ধৃত) মংস্থ ওপক্ষিগণ হইতে (তিনি) দশম অংশ বা তদধিক এবং মৃগ ও পশুগণ হইতেও (তিনি) দশম অংশ বা তদধিক রাজাদেয় শুভরূপে গ্রহণ করিবেন।

(বনগৃহীত) জীবন্ত পক্ষী ও মৃগসমূহ হইতে ইহার ষষ্ঠভাগ (মৃগাধ্যক্ষ) অভয়বনে ছড়াইয়া দিবেন।

(কোন্ কোন্ প্রাণাকে রক্ষা করিতে হইবে তাহার নিরূপণ করা হইতেছে।)
হস্তী, অশ্ব, পুরুষ (মানব), বৃষ ও গর্দভের আরুতিধারী সম্প্রজাত মৎস্থ
(জলচর প্রাণিবিশেষ) এবং সরোবরে, নদীতে, তড়াগেও কুল্যাতে (থালে)
উদ্ভূত মৎস্থ; এবং ক্রেকি, উৎক্রোশক (কুরর), দাভুরু (জলকাকবিশেষ),
হংস, চক্রবাক, জীবঞ্জীবক, ভূঙ্গরাজ (মোরগের মত পক্ষিবিশেষ, চকোর,
মন্তকোকিল, ময়ুয়, শুক (তোতা বা টিয়াজাতীয় পক্ষিবিশেষ) ও মদনশারিকা
(মন্ত ময়না)—এই সব বিহার বা ক্রীড়ার্থ পক্ষিসমূহ; এবং অন্তান্থ প্রকারের
মঙ্গলার (ময়লস্চক) প্রাণাংশী পিক্ষিই হউক, বা মুগ হউক,—এই সব প্রাণিবর্গকে
হিংসা (মারণ) ও আবাধ (তাড়নাদি ক্লেশ) হইতে রক্ষা করিতে হইবে।
এই রক্ষাকর্শের অতিক্রম লক্ষিত হইলে (স্থনাধ্যক্ষকে?) প্রথম সাহস দণ্ড
দিতে হইবে।

(বাজারে) অন্থিশৃন্ত অভিনব মৃগ ও পশুর মাংস বিক্রম করা যাইবে। যদি বিক্রীত মাংসে অন্থি থাকে, তাহা হইলে বিক্রমকারীকে অন্থি-পরিমিত মাংস (অন্থির পরিবর্জে) পূরণ করিয়া দিতে হইবে। ওজনে কাহাকেও মাংস কম দেওয়া হইলে, বিক্রেতাকে হীনমাংসের আটগুণ দণ্ডরূপে দিতে হইবে (প্রাচীন টীকাকার্বের মতে, এই ক্ষতিপূরণার্থ মাংস হইতে অন্তমাংস ক্রেতা পাইবেন এবং অবশিষ্ট সাতভাগ স্বাধ্যক্ষকে দিতে হইবে )।

(মুগপশুদিগের মধ্যে) বৎস, বীর্যসেচনকারী পুংগবাদি ও ধেয় কথনও কেছ বধ করিতে পারিবে না। ইহাদিগের হননকারীকে ৫০ পদ দণ্ড দিতে হইবে। ক্লেশ দিয়া কেছ (এই পশুগুলিকে) ঘাতিত করিলে, তাহাকেও ৫০ পদ দণ্ড দিতে হইবে।

যে মাংস স্থনাতে (রাজকীয় পশুবধস্থানে) মারিত পশুর মাংস নহে, মস্তক, পাদ ও অস্থিনিহীন পশুর মাংস, হুর্গন্ধযুক্ত মাংস ও (রোগাদি বশতঃ) স্বয়ংমৃত পশুর মাংস তাহা (বাজারে) বিক্রন্ন করা ঘাইবে না। ইহার ব্যতিক্রম হইলে অপরাধীর প্রতি ১২ পণ দশু বিহিত হইবে।

অভয়বনে, সঞ্চারী হিংস্র পশু, মুগ, ও (ব্যাদ্রাদি) ব্যালজন্ত এবং মংস্ত, রক্ষাস্থান হইতে বহির্গত হইয়া অন্তত্ত্ব গেলে, বধ (প্রহারাদি) ও বন্ধন প্রাপ্ত হইতে পারে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাম্বে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে স্নাধ্যক্ষ-নামক বড়্বিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪৭ আধ্যায় ) সমাপ্ত।

### সপ্তবিংশ অধ্যায়

#### ৪৪শ প্রকরণ--গণিকাধ্যক্ষ

গণিকাধ্যক্ষ-নামক রাজকীয় অধিকারী গণিকাবংশে উৎপন্না, অথবা অ-গণিকাবংশে উৎপন্না রূপবতী ও যৌবনবতী ও (গীতবাদিত্রাদি•) কলাসম্পন্না কামিনীকে (প্রতিবর্বে) ১০০০ পণ বেতনে (রাজকুলের )শাণিকারণে নিযুক্ত করিবেন। (তিনি) অন্তাত্র একজন প্রতিগণিকাকেও নিযুক্ত করিতে পারেন, তবে রাজপরিচর্য্যারূপ কার্য্য সে (প্রতিগণিকা) নিজে অর্জটুকু করিবে এবং (পূর্বে নিযুক্ত গণিকা) অবশিষ্ট অর্দ্ধাংশ করিবে—এইরূপ করণীয়-বিভাগ (তাঁহাকে) করিয়া দিতে হইবে। (এইস্থলে কুট্ম শব্দের অর্থ নির্দিষ্ট কর্ত্তব্যকরণ)।

কোন গণিকা যদি কার্য্য ছাড়িয়া চলিয়া যায়, বা মারা যায়, তাহা হইলে ভাহার কল্পা বা ভগিনী ভাহার কার্য্যভার গ্রহণ করিবে (এবং তৎত্যাঞ্জ্য সম্পত্তিও গ্রহণ করিবে )। অথবা, সেই গণিকার মাতা অপর একজনকে প্রতিগণিকারণে স্থাপন করিবে। তাহাদের অভাবে (অর্থাৎ কন্সা, ভগিনী বা মাত্নিযুক্ত প্রতিগণিকা না থাকিলে ) রাজাই (গণিকাধন ) হস্তগত করিবেন।

(গণিকাধ্যক্ষ গণিকার) সোভাগ্য (পুরুষাকর্ষণে মনোরমতা) ও তদীয় অলম্বারবৃদ্ধির আমুগুণ্যে, এত সহস্র পণ দেওয়ার ক্রমে, কনিষ্ঠ, মধ্যম ও উত্তম শ্রেণীতে বিভক্ত করিবেন (অর্থাৎ কনিষ্ঠাকে এক সহস্র, মধ্যমাকে তুই সহস্র ও উত্তমাকে তিন সহস্র পণ বেতন দিবেন)।

(গণিকাধ্যক্ষ) তাহাদিগকে শোভার উৎকর্বজন্ম (রাজার) ছত্র ও ভৃঙ্গার, ব্যজন ও শিবিকা, পীঠিকা (রাজার বসিবার বিশিষ্ট আসন) ও রথ-সম্বন্ধী কর্মকরণে (অর্থাৎ তৎতৎদ্রব্য বহনাদি ক্রিয়াতে সেবার্থ) নিযুক্ত করিবেন।

(গণিকার) রূপযোবনাদির স্থিতিজ্বল্য সোভাগ্যের ভঙ্গ হইলে (অর্থাৎ তাহার রূপ ও যৌবনের বয়স অতিক্রান্ত হইয়া গেলে) (গণিকাধ্যক্ষ) তাহাকে (পরবর্তিনী ভোগ্যা গণিকার) মাতৃত্বানীয়া করিয়া রাখিতে পারেন (অর্থাৎ পরবর্তিনী গণিকা তাহার শিক্ষাধীনা থাকিবে, এইভাবে রাজকুলে তাহাকে মাতৃকার পদ দেওয়া যাইতে পারে)।

গণিকা যদি রাজ্বসেবা হইতে মৃক্তি চাহে, তাহা হইলে তাহাকে ২৪০০০ পণ নিজ্ঞয় (মৃক্তিমৃল্য) দিতে হইবে। গণিকাপুত্র ১২০০০ পণ নিজ্ঞয় দিলে দাশুতা হইতে মৃক্ত হইতে পারিবে। (নিজ্ঞয় না দিতে পারিলে), গণিকাপুত্র আট বৎসর পর্যান্ত (রাজকুলে) কুশীলবের (বা চারণের) কর্মা করিবে (তৎপর তাহার দাশুম্ক্তি)।

ভোগার্ছ বয়:ক্রম অপক্রান্ত হইলে গণিকার দাসী (পরিচারিকা) (রাজার) কোষ্ঠগারে বা মহানসে (রন্ধনশালায়) কর্ম করিতে পারিবে। যদি দে এইরূপ কাজে প্রবেশ না করে অথচ সে যদি অন্ত কোন পুক্ষকর্ভৃক (ভোগার্থ স্বগৃহে) রক্ষিত হয়, তাহা হইলে সে (যাহার দাসী সেই গণিকাকে, মতান্তরে, রাজাকে অর্থাৎ রাজসরকারে) মাসিক ১ই পণ দিতে বাধ্য থাকিবে।

(গণিকাধ্যক্ষ) গণিকার ভোগ (ভোকার নিকট হইতে প্রাপ্ত ধন), দায় (মাতৃকুলক্রমে আগত ধন), আয় (ভোগাতিরিক্ত ধনাগম), বায় ও আয়তি (উত্তরকালে সংস্থান) এই সব বিষয় নিবন্ধপুস্তকন্থ রাখিবেন। আর গণিকার অত্যধিক বায় নিবারণ করিবেন।

মাতার হাতে না রাখিয়া আভরণ রক্ষার জন্ম অন্তত্ত করিলে, (গণিকাকে) ৪ট্ট পণ দণ্ড দিতে হইবে। (বন্ধভাজনাদিরূপ অন্যান্ত) স্রব্যসম্পত্তি বিক্রয় করিলে বা বন্ধক রাখিলে তাকাকে ৫০ ট্র পণ দণ্ড দিতে হইবে।

বাক্পাক্ষয়ের অপরাধ হইলে ( অর্থাৎ কাহারও প্রতি কঠোর বা কুৎসিত বাক্য প্রয়োগ করিলে) ( গণিকাকে ) ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে। দণ্ডপাক্ষয়ের অপরাধ হইলে ( অর্থাৎ কাহাকেও করপাদ বা দণ্ডাদিবারা তাড়না করিলে ) তাহাকে উক্ত দণ্ডের বিগুণ অর্থাৎ ৪৮ পণ দণ্ড দিতে হইবে। সে যদি কাহারও কর্ণ ছেদন করিয়া ফেলে, তাহা হইলে তাহাকে ৫০ ট্র পণ এবং আরও ১ পণ ও ই পণ, অর্থাৎ ৫১ ট্র পণ দিতে হইবে।

যে পুরুষ কোন কুমারীর । উপর তাহার ইচ্ছার বিরুদ্ধে বলাৎকার করিবে তাহাকে উত্তম সাহস দণ্ড দিতে হইবে। আর কুমারীর ইচ্ছা সত্ত্বেও তত্পরি বলাৎকারকারীকে প্রথম সাহস দণ্ডে দণ্ডিত হইতে হইবে।

কামনারহিত গণিকাকে যে পুরুষ ( স্বগৃহে ) অবরুদ্ধ করিবে, অথবা, তাহাকে অন্তত্ত লুকাইয়া রাখিবে, কিংবা কোনপ্রকার এণ বা ( দন্তনথাদিলারা ) ক্ষত উৎপাদন করিয়া তাহার রূপ নপ্ত করিবে, তাহাকে ১০০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। গণিকার শরীরগত বিশেষ বিশেষ স্থানে এণাদি উৎপাদন করিলে অপরাধীর দণ্ড বর্দ্ধিত হইতে পারে এবং এই দণ্ড ২৪০০০ পণ যে নিক্ষয়মূল্য অবধারিত করা হইয়াছে ইহার দ্বিগুল অর্থাৎ ৪৮০০০ পণ পর্যান্ত উঠাইতে পারা যাইবে—মতান্তরে, 'স্থানবিশেষ' শন্ধ্বারা গণিকার উত্তমাদি ভেদের প্রাধান্ত অন্থসরণ করিয়াও দণ্ডবৃদ্ধি কল্পিত হইতে পারিবে )। অথবা, দণ্ড সহত্রপণ পর্যান্ত হইতে পারে ( এই বাক্যটি সমন্ত আদর্শপুন্তকেই পাওয়া যায় সত্য, কিন্তু পূর্বাপর বাক্যগুলির সঙ্গে ইহার অর্থসঙ্গতি বৃঝা যায় না বলিয়া, ইহা প্রক্ষিপ্ত বাক্যও হইতে পারে )।

যে গণিকা (রাজকুলে ছত্রভূঙ্গারাদি গ্রহণের কর্মে) অধিকার বা নিয়োগ
প্রাপ্ত হইয়াছে তাহাকে ঘাতিত করিলে অপরাধীকে নিক্ষয়মূল্যের তিনগুণ
(অর্থাৎ ৭২০০০ পণ) দণ্ড দিতে হইবে। আর মাতৃকা, কুমারী ও রূপদাসী
(যে দাসী প্রতিকর্ম বা গন্ধমাল্যাদি দ্রব্য প্রস্তুত করে, কিংবা যে রূপদারা
আজীবিকা অর্জ্জনের জন্ম দাসীবৃত্তি অবলম্বন করে)—এই তিনজনের ঘাত বা
মারণ সাধিত হইলে অপরাধীকে উত্তম সাহস দণ্ড দিতে হইবে।

দর্মপ্রকার অপরাধধস্থলেই যে দণ্ডের ব্যবস্থা করা হইয়াছে তাহা প্রথম অপরাধেই প্রযোজ্য প্রথম দণ্ড বলিয়া গৃহীত হইবে। দ্বিতীয়বার স্পেই অপরাধ করা হইলে, অপরাধীর উপর প্রথম দণ্ডের দ্বিগুণ দণ্ড ও ছতীয় বার হইলে

ইহার তিনগুণ দণ্ড বিহিত হইবে, কিন্তু চতুর্থবার একই অপরাধ করিলে অপরাধীর উপর বিচারকের ইচ্ছামুসারে দণ্ড বিহিত হইতে পারিবে (অর্থাৎ দণ্ড চারিগুণও হইতে পারে, কিংবা অপরাধীর সর্বস্বহরণ বা প্রবাসনাদি আরও গুরুতর দণ্ড ব্যবস্থিত হইতে পারে)।

রাজার আজ্ঞা পাইলেও যদি গণিকা কোন পুরুষবিশেষের ভোগার্থ তৎসমীপে না যায়, তাহা হইলে তাহার উপর এক সহস্র কশাঘাত দণ্ড বিহিত হইবে, অথবা তদণ্ডের অভাবে ৫০০০ পণ অর্থদণ্ড হইবে।

সজ্যোগের বেতন লইয়াও (পুরুষের প্রতি) দ্বেষকারিণী গণিকাকে ভোগ-বেতনের দ্বিগুণ অর্থদগুরূপে দিতে হইবে। গণিকা যদি রাত্রিতে বসতি বা সজ্যোগের বেতন লইয়া, কোন ব্যাজে পুরুষকে ভোগ না করিতে দিয়া সময় কাটাইয়া দেয়, তাহা হইলে তাহাকে ভোগবেতনের আটগুণ অর্থদণ্ড দিতে হইবে। কিন্তু, পুরুষের কোন প্রকার (সংক্রামক) ব্যাধি বা অন্যপ্রকার পুরুষদোবের জন্ম গণিকার সজ্যোগবিষয়ে আপত্তি হইলে, তাহার কোন দণ্ড হইবেনা।

কোন পুরুষকে হত্যা করিলে গণিকাকে সেই পুরুষের সেই চিতাগ্নিতেই দগ্ধ করা যাইতে পারে, অথবা তাহাকে (গলাতে শিলাবন্ধনপূর্ব্বক) জলে নিমজ্জিত করিয়া মারিতে পারা যাইবে।

যদি কোন পুরুষ গণিকার নিজ আভরণ, অন্ত অর্থ (গৃহন্রব্যাদি) বা ভোগ (অর্থাৎ ভোগবেতন) অপহরণ করে, তাহা হইলে তাহাকে অপহত দ্রব্যের মূল্যের আটগুণ অর্থদণ্ড দিতে হইবে। গণিকা (গণিকাধ্যক্ষের নিকট) তাহার ভোগবেতন, আয়তি (উত্তরক্ষালে সম্ভাব্য আমদানী) ও (কৃতসহবাস) পুরুষের সম্বন্ধে সব সংবাদ নিবেদন করিবে।

এই সমস্ত বিধানদারা, নট (অভিনয়কারী) নর্তক, গায়ক (কর্গগায়ী), বাদক (বংশীপ্রভৃতি ষ্মবাছকর), বাগ্,জীবন (কথকতাদারা জীবিকাকারী), কুশীলব (নর্তকীদারা নাচগান করাইয়া জীবিকাকারী), প্লাবক (রজ্পুপ্রভৃতিদারা থেলাপ্রদর্শক), সৌভিক (ঐক্রজালিক) ও চারণ (ভাট) ও স্থীব্যবহারীদিগের (অর্থাৎ স্থীদারা জীবিকাকারীদিগের) স্থী ও যাহারা গোপনে ব্যভিচারকার্য্যে রতা সেই স্ব স্থীও ব্যাখ্যাত হইল (অর্থাৎ গণিকাবিধিগুলি ভাহাদের উপরও প্রযোজ্য)।

( नर्टनर्खकानित ) मन यमि षश्च मिन रहेएए ( निज्ञ श्वामनीय ) षाग्र इत्र.

তাহা হইলে তাহাদিগকে (প্রত্যেক ?) প্রদর্শনীর বেতন বা করম্বরূপ (রাজ-সরকারে) ৫ পণ দিতে হইবে।

ক্লপাজীবা বা রূপধারা জীবিকাকারিণী গণিকাকে প্রতিমাদে (রাজসরকারে) ত্ই দিবসের লব্ধ ভোগবেতন কর্ত্রপে দিতে হইবে (অর্থাৎ প্রতিমাদের সমগ্র ) আয়ের ত্রী বা ঠুক ভাগ রাজাদেয় হইবে )।

যে (আচার্য্য) গণিকা, দাসী (গণিকাতিরিক্ত বেষ্ঠা) ও রঙ্গোপজীবিনীদিগকে (নটাদির খ্রীদিগকে)-গীত, বাছা, পাঠ্য (আখ্যায়িকাদির পাঠকোশল),
নৃত্য, নাট্য, অক্ষর (লিপিবিছা), চিত্র, বীণা, বেণু (বাঁশী), মৃদক্ষ, পরচিত্তজ্ঞান
(অর্থাৎ পরকৃত ইন্ধিত ও আকার জানা), গদ্ধসংযূহন (গদ্ধযোগ প্রস্তুত করা),
মাল্যসম্পাদন (মাল্যগাঁথা), সংবাহন (অক্সমর্ফন) ও বৈশিক কলার
(বেষ্ঠাদিগের শিক্ষণীয় বিস্থার) জ্ঞান শিক্ষা দিবেন, (রাজা) রাজমণ্ডল
(অর্থাৎ নগরগ্রামাদি হইতে উথিত রাজকররূপ আয়) হইতে তাহার আজীব
বা বৃত্তি ব্যবস্থা করিবেন।

গণিকাপুত্রদিগকে ও রঙ্গোপজীবীদিগকে দব তালাবচরগণের (অর্থাৎ যাহাত্বা দঙ্গীতে তাল রক্ষা করিয়া নৃত্য ও অভিনয়াদি সম্পাদন করে তাহাদিগের) ম্থা বা প্রধান (অর্থাৎ আচার্যাস্থানীয় ) করা হইবে।

উক্ত তালাবচরদিগের (রঙ্গোপজীবীদিগের) সংজ্ঞাবিশেষে ও ভাষাবিশেষে অভিজ্ঞাত স্ত্রীদিগকে, তাহাদের (রাজার অর্থদানাদিখারা বশীক্ষত) বন্ধুবান্ধবের সহায়তায় রাজকার্য্যে নিযুক্ত রাথিয়া, (রাজা) তাহাদিগকে (নিজদেশের) অজিতেন্দ্রিয় দৃষ্য লোকদিগের উপর (শত্রুখারা প্রযুক্ত) চর বা গুপ্তচর দিগের হত্যা বা প্রমাদসাধন করার জন্ম প্রয়োগ করিবেন ॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে গণিকাধ্যক্ষ-নামক সপ্তবিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## অষ্টাবিংশ অধ্যায়

#### ৪৫শ প্রকরণ—নাবধ্যক

নাবধ্যক্ষ স্থানীয়াদি নগরে ( অর্থাৎ স্থানীয় দ্রোণমূথ থার্কটিক ও সংগ্রহণ-নামক নগরাদিতে ) সন্দ্রক্লসমীপস্থ ( নোকা যাতায়াত-পথ ), সম্দ্র ও নদীর সঙ্গমন্থ তরণপথ এবং দেবসরোবর ( অর্থাৎ সর্কাদা যে সরোবর জলসমৃদ্ধ থাকে ), বিসরঃ ( অর্থাৎ যে সরোবরের জল শুকাইয়া যায় ), ও নদীতরণ-পথ অবেক্ষণ করিবেন ( অর্থাৎ রাজকীয় নোবিভাগে নোকাভাড়া, তরদেয় প্রভৃতি আদায়কার্য্য পর্যাবেক্ষণ করিবেন )।

সম্স্র-নদী প্রভৃতির বেলাভূমি ও ক্লে বাসকারী গ্রামজনেরা ক্লুপ্ত বা তরণজন্ম রাজার আদেয় নিয়ত কর দিবে।

ষাহারা মংস্থ বন্ধন করে সেই ধীবরের। রাজকীয় নৌকাব্যবহারের ভাড়ারূপে (গুত মংস্থাদির ) ষষ্ঠ ভাগ দিবে। বনিকেরা পান্তনে (কুলনগরে বা বন্দরে ) প্রবর্ত্তিত নিয়মান্থসারে পণ্যের পঞ্চম বা ষষ্ঠভাগ মূল্য শুল্করূপে প্রদান করিবে। রাজকীয় নৌকাদারা যাতায়াতকারী লোকেরা যাত্রাবেতন অর্থাৎ যাতায়াতের ভাড়া দিবে। শন্ধ ও শুক্তাগ্রহণকারীরাও (রাজনৌকা ব্যবহার করিলে) নৌকাভাটক বা নৌকাভাড়া দিবে, (কিন্তু,) তাহারা নিজ নিজ নৌকারাপ্র তর্বনকার্য্য করিতে পারিবে।

শশ্বনুক্তাদিবিষয়ে ইহাদের অধ্যক্ষের ( অর্থাৎ নাবধ্যক্ষের ) কর্ত্তব্য থগ্রধ্যক্ষের কর্ত্তব্যনিরপর্ণেই ব্যাথ্যাত হ্রইয়াছে বুঝিতে হইবে ( অর্থাৎ খনিজাত বস্তুর জগ্য খগুধ্যক্ষ যেমন কর্মান্তাদি স্থাপন করেন ও সেই সব দ্রব্যের ব্যাপার পর্য্যবেক্ষণ করেন, নাবধ্যক্ষণ্ড মংগুশশ্বাদিসংক্ষে সেইরপ ব্যবস্থা করিবেন )।

পত্তনাধ্যক্ষবারা ব্যবস্থিত বলিয়া নিবন্ধপুস্তকে লিখিত পণ্যপত্তনে প্রচলিত চরিত্র বা নিয়মাচার নাবধ্যক্ষ পালন করিয়া চলিবেন (অর্থাৎ ইহার অতিবর্ত্তন করিবেন না)।

(নাবধ্যক্ষ) দিগ্রমে পতিত কিংবা ঝড়বাতাসে আহত নৌকাকে পিতার ন্থায় অন্তগ্রহ করিয়া বাঁচাইবেন। নৌকাতে যে-সব পণ্য জলে দৃষিত হইয়াছে সেগুলির উপর ধার্য শুরু (তিনি) লইবেন না, কিংবা (অবস্থা ব্রিয়া) অর্দ্ধ শুরু লইবেন। (বাতাহতাদি) নৌকাগুলির শুন্ধনান বিষয় নির্দিষ্ট হইলে পর (অর্থাৎ ইহারা সর্বন্ধরহিত হইবে, অথবা, অর্ধন্তব্দায়ী হইবে ইহা ঠিক হইলে) সেগুলিকে পাণ্যপদ্ধনে যাত্রার সময় উপস্থিত হইলেই পাঠাইয়া দিতে হইবে। চলস্ত অবস্থার নৌকাগুলি শুন্ধক্ষেত্রে উপস্থিত হইলে, তাহাদের কাছে শুন্ধ চাহিয়া লইতে হইবে। যে-সব নৌকাতে হিংসাকারী (চোর-দস্থারা) থাকিবে সেগুলিকে নষ্ট করিতে হইবে। (আবার) যে নৌকাগুলি শক্রুর দেশের দিকে যাইতেছে এবং যেগুলি পণ্যপত্তন বা বন্দরের নিয়ম উল্লন্ড্রন করিয়া পলাইতে চাহে দেগুলিকে নষ্ট করিতে হইবে।

মহানৌকাসমূহকে ( অর্থাৎ বড় বড় নৌকাগুলিকে ), হেমস্ত ও গ্রীম্মকালেও লবাহুল্য-বশতঃ নৌ-তরগীয়। মহান গী গুলিতে ( নাব্যাক্ষ ),—শাসক ( নৌকা-চালন বিষয়ে প্রধান নিদেশক অধিকারী ), নিয়ামক। পোত্বহ বা নৌকাচালক) , দাত্রগ্রাহী (রক্ষ্ প্রভৃতি কাটিবার জন্ম যে হস্তে দাত্র বা দা ধরাণ করিয়া থাকে ), রশ্মিগ্রাহী ( নৌকাতে রক্ষ্ গ্রহণকারী ) ও উৎসেচক ( নৌকামধ্যে জল প্রবেশ করিলে ইহার সেচনকারী ) ঘারা অধিষ্ঠিত করিয়া, প্রয়োগ করিবেন । আর যে সব নদী কেবলমাত্র বর্ধাকালে নৌ-তরগীয়া হয় সেই ক্ষ্মুল নদী গুলিতে ক্ষ্মুল ক্ষম্ম নৌকার ব্যবন্ধা করিবেন ।

এই নৌকাগুলিকে নির্দিষ্ট তীর্থে ( ঘাট বা দেটশনে ) বাঁধিতে হইবে, কারণ, তাহা না হইলে রাজার দ্বেষকারীর ( শক্রপ্রযুক্ত তীক্ষ ও রদদ প্রভৃতির ) তরণভন্ন থাকিয়া যাইবে ( অর্থাৎ বাঁধা ঘাটে নৌকাগুলি আবন্ধ থাকিলে পর্য্যবেক্ষণ-কার্য্য সরল হইবে )।

অনির্দিষ্ট সময়ে ( অর্থাৎ নিশীথ-সময়াদিতে ) ও অতীর্থে ( যাহা নির্দিষ্ট ঘটি নহে তথায় ) যে ব্যক্তি ( নতাদি ) পার হইবে, তাহাকে প্রথম সাহস দত্তে দণ্ডিত হইতে হইবে। আবার নির্দিষ্ট কালে ও নির্দিষ্ট ঘাটেও যদি কেহ বিনা অমুমতিতে ( নতাদি ) পার হয়, তাহা হইলে তাহাকে ২৬% পণ দণ্ড দিতে হইবে।

(এই তরদণ্ড কাহাদের উপর প্রযুজ্ঞামান হইবে না—তাহা এখন বলা হইতেছে।) ধীবর, কাঠবাহী, তুণবাহী, পুস্পবাটপালক (অর্থাৎ ফুলের বাগান বক্ষাকারী মালী), ফলবাটপালক যগুপালক (শাকসবজী রক্ষাকারক) ও গোপালকদিগের প্রতি (এই অসময়ে বা অঘাটে, বা বিনা অহুমতিতে নির্দিষ্ট সময়ে ও ঘাটে পার হওয়ার অপরাধ-জনিত) দণ্ড প্রযুক্ত হইবে না। চোরাদি বলিয়া যাহারা শঙ্কার পাত্র তাহাদের পশ্চাতে যাহারা যাইবে এবং যাহারা দ্তের পশ্চাতে যাইবে, তাহারাও সেই দণ্ড হইতে নিষ্কৃতি পাইবে। সেনাতে ব্যবহর্ত্ব্য ভাগু যাহারা পার করিবে ও যাহারা গুপ্তচররূপে নিযুক্ত তাহাদেরও এই দণ্ড দিতে হইবে না। যাহারা নিজের তরণ-সাধন নোকাদিখারা (নভাদি) পার হইবে এবং যে সব জলময় প্রদেশের নিকটস্থ গ্রামবাসী (ধান্তাদি) বীজ, ভক্তপ্রব্য (খাওয়ার জিনিষ) ও (গৃহস্থের অন্তান্ত প্রয়োজনীয়) উপকরণ পার করাইবে তাহারাও উক্ত দণ্ডে দণ্ডিত হইবে না।

বান্ধণ, প্রব্রজিত (অর্থাৎ গৃহত্যাগী সন্মাসী), বালক, বৃদ্ধ, ব্যাধিগ্রস্ত, রাজশাসনহারী ব্যক্তি ও গর্ভিণী স্ত্রীলোক কেবলমাত্র নাবধ্যক্ষের মূস্রা (বা মৃক্তিপত্র) প্রদর্শন করিলেই নভাদি (বিনা শুল্কে) পার হইতে পারিবে।

যাহার। প্রবেশের অন্তমতি পাইয়া পরদেশ হইতে আগত, কিংবা যাহার। ( অন্তমতি না পাইয়াও ) অন্তজ্ঞাত বণিক্সার্থের অধিগানে আছে তাহারা ( রাজার দেশে ) প্রবেশ লাভ করিতে পারিবে।

নেবধ্যক্ষ) সেই ব্যক্তিকে গ্রেপ্তার করাইবেন যে ব্যক্তি অন্তের স্ত্রী, কন্যা বা বিত্তের অপহরণকারী বলিয়া নিম্নর্থিত চিহ্নসমূহ ধারণ করে, যথা— যে ব্যক্তি শক্ষিত (চকিতভাবে চলনশীল অর্থাৎ সন্দেহের পাত্র), আবিগ্ন (সম্রম বা ররাযুক্ত), স্বশক্তির অধিক ভাগুভার বহনকারী, মাথার উপর বৃহদাকার বোঝা লইয়া প্রায় আর্তম্থ, সন্তঃ সন্তঃ পরিব্রাজকের চিহ্নধারী হইয়া সন্ন্যাসী বলিয়া পরিচিত, পরিব্রাজকের লিঙ্গ বা চিহ্ন সন্তঃপরিত্যাগকারী, ব্যাধিগ্রস্ত বলিয়া পরিচিত হইলেও ব্যাধিচিহ্নশৃত্র, ভয়কারণে (ম্থাদিতে) বিকারযুক্ত, সারযুক্ত (রুড়াদিণ) ভাগু-গোপ্লনকারী, শাসন বা লেখ্য-গোপ্লকারী, শস্ত্রগোপ্লনকারী ও (উপনিষদপ্রকরণে উক্ত) অগ্নিযোগের ক্রব্যাদি গোপ্লকারী, হল্ডে বিষধারী; দীর্ঘপ্রের পথিক ও (অস্তপালাদির) মুদ্রা-রহিত।

( এখন নদী প্রভৃতি তরণের ভাড়া সম্বন্ধে বলা হইতেছে।)

( অজাদি ) ছোট পশুর জন্ম এবং হস্তে গ্রহণের যোগ্য ভারধারী মান্থবের জন্ম তর্ম দিতে হইবে এক মাষক। মস্তকে বা শবীরে ( অর্থাৎ স্কলাদিতে ) বহনযোগ্য ভারবিশিপ্ত লোকের এবং গোও অশের ভাড়া তুই মাষক। উট্ট ও মহিষের ভাড়া চারি মাষক। ছোট যানের ( গাড়ী প্রভৃতির ) ভাড়া পাঁচ মাষক। গরুর গাঁড়ীর ভাড়া ছয় মাষক। শকট বা বড় গাড়ীর ভাড়া সাত মাষক। পণ্যস্রব্যের এক ভার অর্থাৎ ২০ তুলা-পরিমিত পণ্যের ভাড়া রু পণ। ইহারারা ্মহিষাদিবারা) ভাগুভার বহনের ভাড়াও নির্দ্দিষ্ট হইল (অর্থাৎ এক এক ভারের জন্ম এক মাষক ভাড়া) ব্ঝিতে হইবে। (উক্ত ভাড়া লঘুনদীবিষয়ক) কিন্তু, মহানদী সকল পার হইতে গেলে উক্ত তরবেতন দ্বিগুণিত দিতে হইবে।

জলময় প্রদেশের উপকূলে যে গ্রামবাসীরা বাস করে তাহাদিগকে (নাবিকের জন্ম) নির্দ্দিষ্ট ভক্ত ও বেতনও দিতে হইবে।

প্রত্যন্তপ্রদেশে (অর্থাৎ প্রদেশদীমান্তে) তরণে নিযুক্ত রাজপুক্ষরে। ব্যাপারীদিগ হইতে) আতিবাহিক শুস্ক (অর্থাৎ অতিবাহন নিমিন্তক রাজভাব্য কর; মতান্তরে, শুদ্ধ ও আতিবাহিক কর) ও বর্ত্তনী-নামক কর (অন্তপালের নিকট দেয় পথ ব্যবহারের কর) সংগ্রহ করিবে। মূদ্রা বিরহিত হইয়া (কোন ব্যাপারী মাল লইয়া,) পার হইলে (নাবধ্যক্ষের কর্মকরেরা) তাহার ভাশু বা মালপত্র ছিনাইয়া রাথিবে। আর যে ব্যক্তি পুরুষের বহনের অতিরিক্ত ভার লইয়া অকালে ও ঘাটবিহীন স্থানে নত্যাদি পার হইবে তাহার ভাশু বা মালপত্রও কাড়িয়া নেওয়া চলিবে।

( সরকারী ) নোকা ( শাসক-নিয়ামকাদি ) পুরুষ ও উপকরণবিহীন অবস্থায় ও সংস্কার করার অভাবে বিপন্ন হইলে, নাবধ্যক্ষকে নষ্ট ও বিনষ্ট মালের জন্ম ক্ষতিপূরণ করিয়া দিতে হইবে।

আষাঢ় মাসের পূর্ণিমা দিবস হইতে পরবর্ত্তী এক সপ্তাহ এবং কার্ত্তিক মাসের পূর্ণিমার পরবর্ত্তী এক সপ্তাহ—এই উভয় কালের মধ্যে (বর্ষাকালে তরনীয় নদীসমূহে) নাবিকেরা তর বা তরণবৈতন সংগ্রহ করিবে। (নাবধ্যক্ষের নিকট তাহারা) নিতাই কর্মসম্বন্ধীয় বিশ্বাসযোগ্য হিসাব প্রদান করিবে এবং প্রতিদিন প্রাপ্ত নোকাভাডাও তাঁহাকে দিবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে নাবধ্যক্ষ-নামক অষ্টাবিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৪৯ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## উনব্রিংশ অধ্যায়

#### ৪৬শ প্রকরণ—গোখ্যক

কোষ্যক্ষ নিম্নলিখিত আট প্রকার কার্য্যের তত্তাবধান করিবেন, ষ্ণা—
(১) বেতনোপগ্রাহিক, (২) করপ্রতিকর, (৩) ভয়োৎস্ট্রক, (৪) ভাগাম্প্রবিষ্ট্রক,
(৫) ব্রজপর্য্যগ্র, (৬) নষ্ট, (৭) বিনষ্ট ও (৮) ক্ষীরঘ্যতসঞ্জাত। (অনস্তর এই
আটিট কার্য্যের স্বরূপ ক্রমশঃ বর্ণিত হুইতেছে )।

গোপালক (গোপালনকারী ভৃত্য), পিণ্ডারক (মহিষপালক ভৃত্য), দোহক (গোমহিষাদির ত্ম দোহনকারী ভৃত্য), মন্থক (দিধি প্রভৃতির মন্থনকারী ভৃত্য) ও লুব্ধক (জঙ্গলে গোমহিষাদিকে ব্যালভয় হইতে রক্ষাকারী ভৃত্য)— এই পাঁচ প্রকার কর্মকর নগদ টাকা (ও অমবস্থাদিরপ) বেতনদারা ভৃত হইয়া শত শত ধেরুর পালনকার্য্য সম্পাদনে নিযুক্ত থাকিবে। তাহারা ত্মম্বতাদি বেতনরূপে পাইবে না) কারণ, ত্মম্বতরূপ ভৃতি পাইয়া কাজ করিলে তাহারা (অধিক ত্মম্বতাদির লোভে) বৎসগুলিকে (ত্ম বেশী থাইতে না দিয়া সেগুলিকে) উপহত বা রুশিত করিবে। গ্রাদি রক্ষার এই প্রকার উপায়কে নেত্রনাপ-প্রাহিক বলা হয়। (অর্থাৎ এই উপায়ে কেবল শুক্ত নগদ টাকা ইত্যাদিই বেতনরূপে এই কর্মকরেরা গোধ্যক্ষের বিভাগ হইতে পাইবে।)

জরদাবী (বৃদ্ধ গরু), (তৃশ্বদাত্রী) ধেন্তু, গর্ভিণী গাভী, প্রথমগর্ভবতী গাভী, ও বৎসতরী (যে বৎসা অল্পদিন পূর্বে স্তনজন্মতা ত্যাগ করিয়াছে)—এই পাঁচ প্রকার গাভীর ক্ষমবিভাগক্রমে (অর্থাৎ প্রত্যেকের কুড়িটি লইয়া) এক শত সংখ্যা একজন পালক (কর্মকর) পালন করিবে। এই কর্মকর (উক্ত গাভীসকলের মালিককে) প্রতিবর্ধে আট বারক (অর্থাৎ ৮৪ কুড়ুব) মৃত, পুচ্ছগণনায় দেয় ১ পন কর (অর্থাৎ প্রত্যেক পশুর জন্য ১ পন কর )ও মৃত পশুর রাজম্দ্রান্ধিত চর্ম্ম দিবে। এই প্রকার গোরক্ষণের নাম কর্মপ্রান্তিকর।

ব্যাধিগ্রস্তা, বিকলাঙ্গী, অনন্যদোহী (অর্থাৎ যে ধেন্ত এক বিশিষ্ট জনেরই দোহনীয়া), দুর্কোহা (অর্থাৎ যে ধেন্তকে দোহন করিতে হইলে পাদবন্ধনাদির প্রয়োজন হয়), ও পুত্রন্ধী (অর্থাৎ যে ধেন্তর গর্ভসাব ঘটিয়াছে, অথবা, যে মৃতবৎসা )—এই পাঁচ গাভীর সমবিভাগক্রমে (অর্থাৎ প্রত্যেকের কুড়িটি লইয়া) একশত সংখ্যার পালনকারী কর্মকরেরা গাভীজাত দুগ্মন্থতাদি (পূর্বোক্ত

রীতিতে ) রাজভাগরণে ( অধাক্ষকে ) প্রদান করিবে। এইভাবে গোরক্ষণের নাম জ্যোৎক্ষক ।

শক্রচক্রের ছ লনার ভয়ে ও আটবিকদিগের অপহরণের ভয়ে (রাজব্রজে) (রক্ষার্থ) প্রবেশিত পশুদিগের (গাভী প্রভৃতির) পালনজন্ম বেতনদানের নিয়মান্সনারে পশুস্বামীরা তুগ্নন্থতাদির আমদানীর দশম ভাগ রাজসরকারে দিতে বাধ্য থাকিবে। এই প্রকার গোরক্ষণ ভাগানুপ্রবিষ্টক-নামে আখ্যাত হয়।

বৎস ( স্তনন্ধর বাছর), বৎসতর ( স্তনপানত্যাগী বড় বাছুর), দম্য ( क्रगां िक निका शाहेवात (यागा), वहनकाती बाँ ए, ( वीर्वा महनकाती) বুষ ও উক্ষা ( হালাদিচালনে যোগ্য বুষ )—এই ছয় প্রকার পুংগব হুইতে পারে। যুগবাহন ও শকটবাহনকারী বুষভ (বা বীর্ঘ্যসেচনকারী), স্থনামহিষ ( মাংসমাত্রোপযোগী মহিষ ), ও পৃষ্ঠ ও স্বন্ধবাহী—এই চারি প্রকার মহিষ হইতে পারে। গাভী ও মহিষী সাত প্রকার হইতে পারে, ষথা—(১) বৎসিকা ( স্তনপায়িনী ), (২) বৎসতরী (ত্যক্তস্তনপানা), (৩) প্রক্রেছী ( প্রথমগর্ভবতী ), (৪) গর্ভিণী, (৫) ধেরু ( হুগ্নদাত্রী ), (৬) অপ্রজাতা ( বিজননার্হ বয়স অপ্রাপ্তা ) ও (৭) বন্ধ্যা। তুইমাস ও একমাস পূর্ব্বেজাত বৎস ও বৎসাদিগকে **উপজা** সংজ্ঞায় অভিহিত করা হয়। মাসজাত ও দ্বিমাসজাত বৎসাদিকে (তপ্তমুদ্রাদ্বারা) চিহ্নিত করিতে হইবে। (গোধাক্ষকে) মাস ও ছইমাস পর্য্যন্ত রাজব্রজে থাকিয়াছে এমন (অজ্ঞাতস্বামিক) বৎসাদিকেও চিহ্নিত করিতে হইবে। অফ (স্বস্তিকাদি কুত্রিম চিহ্ন), চিহ্ন (পুচ্ছাদির শ্বেতত্বপ্রভৃতিরূপ স্বাভাবিক চিহ্ন), বর্ণ (শুক্ল-কৃষ্ণাদি রঙ্ ) ও শঙ্কের বিশেষ লক্ষণ--এই সক লক্ষণ-সহ উক্ত উপজা-নামক বৎদাদির সংখ্যা প্রভৃতি বিবন্ধপুস্তকে-(গোধ্যক ) লেখাইয়া রাথিবেন। এই ভাবে গবাদি রক্ষণের নাম ব্র**জপ্রা**র্য্যগ্র।

নষ্ট গোধন তিন প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) চোরকর্তৃক অপহৃত, (২) অন্ত মৃথে প্রবিষ্ট ও (৩) অবলীন ( অর্থাৎ বনমধ্যে স্বযূথ হইতে ভ্রষ্ট )।

কর্দমে পণ্ডিত, বিষমে অর্থাৎ গর্জাদিতে পণ্ডিত, ও ব্যাধি ও জরাগ্রস্ত, বেগফুক জলপ্রবাহাদিতে পণ্ডিত ও আহারদোধে দৃষিত হইয়া (বে-সব গবাদি)
বিপন্ন হয়; এবং বৃক্ষপাত, অভট বা ভৃগুপতন, বড় বড় কাষ্ঠপাত ও শিলাপাত
দারা (যে সব গবাদি) অভিদাত প্রাপ্ত হয়; এবং বিদ্যাৎপাত, ব্যাল বা হিংশ্রপশু ও নক্রের আক্রমণ ও বনবহিন্দারা (বে-সব গবাদি) বিপন্ন হয়—বে-সব

বিনষ্ট পর্যায়ে গণিত হইবে। (পালকাদিরা) এ-গুলিকে প্রমাদস্থান হইতে রক্ষা করিয়া চলিবে (মতান্তরে, তাহাদের প্রমাদে যে-সব গবাদি বিনষ্ট হইবে সেগুলিকে তাহারা পূরণ করিয়া দিতে বাধ্য থাকিবে)।

এইভাবে গোধ্যক্ষকে গবাদি পশুর সংখ্যা জানিয়া রাখিতে হইবে।

ষে (গোপালক) গবাদি নিজে হনন করে বা অন্যন্ধারা হনন করায়, কিংবা নিজে হরণ করে বা অন্যন্ধারা হরণ করায়, তাহার উপর বধদণ্ড বিহিত হইবে।

কোন (গোধ্যক্ষের অধীন) কর্মচারী যদি বে-সরকারী পশুর রূপ রাজকীয় চিহ্নিছারা চিহ্নিত করিয়া পরিবর্ত্তন করে, তাহা হইলে তাহাকে প্রথম সাহস দণ্ড দিতে হইবে।

যে ব্যক্তি চোরাপস্থত নিজদেশীয় গবাদি আনিয়া প্রত্যর্পণ করিবে, সে (মালিক হইতে) প্রতি পশুর জন্ম এক পণ প্রাপ্ত হইবে। আর, যে ব্যক্তি পরদেশীয় পশুকে (চোরাদি হইতে) মোচন করিতে পারিবে, (সে পশুসামী হইতে) পশুটির মূল্যের মর্দ্ধ প্রাপ্ত হইবে।

গোপালকেরা বালপশু ( অল্পবয়স্ক গবাদি ), বৃদ্ধপশু ও ব্যাধিগ্রস্ত পশুদিণের বিপদের প্রতিকার চিস্তা করিবে।

(গোপালকগণ) ব্যাধ ও কুকুরগণ পোষকদিগের থারা চোর, ব্যাল বা হিংশ্রজন্ত ও শত্রুর উপদ্রব-ভয় দূর করিয়া ঋতু-বিভক্ত ( অর্থাৎ ঋতুভেদে তৃণ-জলাদির সমৃদ্ধি যে যে অরণ্যে সম্চিত বলিয়া বাবস্থিত তেমন) অরণো (গবাদির) চারণ করাইবে।

ু (শক্ষাবণে) আুস্যুক্ত গবাদিপশুর (গলাতে) শক্কারী ঘণ্টা গাঁধিয়া দিতে হইবে, যেন তৎশ্রবণে দর্প ও হিংশ্রজন্তরা আস্যুক্ত হইয়া পলায় ও যেন পশুগুলির গোচরস্থান অবগত হওয়া যায় (অর্থাৎ কোন্ ভূমিভাগের তাহার। চরিয়া বেড়াইতেছে তাহা জানা যায়)।

গোপালকেরা গবাদিপগুকে তেমন জলেই (স্নানপানাদি করাইবার জন্ম) নামাইবে, যেথানে অবিষম ও বিস্তীর্ণ তীর্থ বা ঘাট আছে এবং যেথানে কর্দ্দম ও নক্রাদি জলজন্তু নাই; এবং (তাহারা সতর্কতার সহিত) পশুগুলিকে রক্ষা করিবে।

(তাহারা) কোন গবাদি পশু—চোর, (ব্যান্থাদি) হিংশ্রজন্ত, দর্প ও নক্রমারা গৃহীত হইলে, কিংবা ব্যাধি ও জরাগ্রন্ত হইয়া মৃত হইলে, তৎক্রণাৎ (গোধ্যক্ষের নিকট) সেই সংবাদ নিবেদন করিবে, তাহা না করিলে তাহাদিগকে প্রত্যেক বিপন্ন পশুর মূল্য ( শাস্তিরূপে ) দিতে হইবে।

(ব্যাধিপ্রভৃতি স্বাভাবিক) কারণে মৃত গো ও মহিষের রাজ্বচিহ্নিত চর্ম, ছাগ ও মেষের কর্ণে রুত চিহ্ন এবং অর্থ; গর্দদভ ও উট্টের পুচ্ছ ও অঙ্কযুক্ত চর্ম আহরণ করিয়া (মরণপ্রতায় উৎপাদনার্থ গোধাক্ষসমীপে) উপস্থাপিত করিবে এবং এই সব মৃতপশুর কেশ, চর্ম বস্তি (মৃত্রাশয়), পিত্ত, স্নায়্ (অয়), দন্ত, খ্র ও শৃঙ্গও সংগ্রহ করিয়া আনিবে (এই সব বস্ত কুপ্যাগারে ব্যবহারার্থ দিতে হইবে)।

(মৃতপশুগুলির) অপক মাংস তাহাদিগকে আর্দ্র বা শুক অবস্থায়ই বিক্রয় করিয়া ফেলিতে হইবে।

সেই সব পশুর ( ত্ন্ধ হইতে উৎপাদিত ) ঘোল কুকুর ও বরাহের থাছারূপে দিতে হইবে।

সেনার ভোজ্যবস্তরপে **কুর্চিকা** (ঘনীক্বত তত্রবিকার বা ছানা) সংগ্রহ করিয়া রাথিতে হইবে।

আর কিলাট (নষ্ট বা স্ফুটিত হুগ্ধ), (গোমহিষাদির ভক্ষ্য) ঘাণ (ঘাগা ?) হইতে প্রাপ্ত পিষ্ট তৈলবীজপিণ্ডের (থোলের) ক্লেদন কার্য্যের জন্য আহত হইবে।

যে কোন ব্যক্তি ( গবাদি ) পশু বিক্রয় করিলে, প্রত্যেক ( বিক্রীত ) পশুর জন্ম ই পণ ( গোধ্যক্ষের নিকট ) জমা দিবে।

গোপালকেরা বর্ধা, শরৎ ও হেমন্ত ঋতুতে ছই বেলাতেই (গোমহিধাদির) দোহন করিতে পারিবে। (কিন্তু,) শিশির, বসন্ত ও গ্রীম ঋতুতে কেবল একবেলা (অর্থাৎ রাত্রিতেই) দোহন করিতে হইবে।

দ্বিতীয় বেলাতে দোহন করিলে অপরাধীর অঙ্গৃচ্ছেদরূপ দণ্ড হইবে (গ্রীষ্মকালেও অনেক দেশে ২।৩ বার দোহনপ্রথা আছে. সেই স্থানের জন্ম সম্ভবতঃ এই নিয়ম)।

দোহনকাল অতিক্রম করিয়া দোহন করিলে অপরাধীকে দণ্ডরূপে সেই দিনের বেতনকল হইতে বঞ্চিত হইতে হইবে।

এতদ্বারা নাসাবেধন, ( ন্তন গবাদির ) শিক্ষণ, যুগপিক্সন ( অর্থাৎ অদান্ত পশুকে দান্ত পশুর সহিত যুগে যোজন করা ) ও বর্ত্তনের (প্রচারণা দ্বি শিক্ষার ) সময় অতিক্রমকারী কর্মকরেরও কর্মফল (অর্থাৎ বেতন-) হানিরূপ দণ্ড হইবে। গাভীর এক দ্রোণ-পরিমিত ত্ম হইতে এক প্রস্থ দ্বত পাওয়া যায়। মহিষীর ( এক দ্রোণ-পরিমিত ত্ম হইতে ) है প্রস্থ অধিক ( অর্থাৎ ১ ই প্রস্থ ) দ্বত পাওয়া যায়। ছাগী ও মেধীর ( এক দ্রোণ-পরিমিত ত্ম হইতে ) ই প্রস্থ অধিক ( অর্থাৎ ১ ই প্রস্থ দ্বত পাওয়া যায়। অথবা, এই পশুগুলি সদদ্ধে দধিমদ্বন হইতে প্রাপ্ত দ্বতের পরিমাণই প্রমাণ ধরা যাইবে, কারণ, বিশিষ্ট ভূমি, ত্ণ ও জল ব্যবহারে পশুগুলির ত্ম ও দ্বতের পরিমাণ ( অথবা ত্মে দ্বতের পরিমাণ ) রৃদ্ধি পাইয়া পাকে ( সম্ভবতঃ, ইহা উপরি উক্ত ক্ষীরদ্বতসঞ্জাতের নিরুপণ গোধ্যক্ষের অধ্যক্ষতা-কার্যের অক্যতম কার্য্য)।

যদি কোনও ব্যক্তি পশুষ্থে রক্ষিত ( বীর্ধ্যদেচনকারী) বৃধকে অন্থ বৃষের সহিত যুদ্ধ করায়, তাহা হইলে তাহার উপর প্রথম সাহস দণ্ড বিহিত হইবে; এবং ইহাকে বধ করাইলে তাহার উত্তম সাহস দণ্ড হইবে।

পশুগুলির বর্ণ বা রঙ্ অন্থুসারে দশ-দশটি পশুর এক একটি বর্গ করিয়া ( এমন দশটি বর্গবারা রচিত শতাত্মক পাল ) রক্ষা করিতে হইবে।

গবাদির বনে বাস ও বিচরণের দিখিভাগ অর্থাৎ নিয়মিত স্থান ব্যবস্থিত করিতে হইলে দেখিতে হইবে—পশুগুলির প্রচার বা চরিবার স্থান কতদ্র বা কোথায়, ইহাদের দলের গোগ কেমন, ও ইহাদের রক্ষা করার সামর্থ্য গোপালক-দিগের কতথানি আছে।

গোধ্যক্ষ অজ (ছাগ) প্রভৃতি পশুর উর্ণা (গাত্ররোম) প্রতি ছয় মাদে একবার গ্রহণ করাইতে পারিবেন।

ইহাদারা অশ্ব, গৰ্দভ, উটু ও বরাহের ব্রজও ব্যাখ্যাত হইল (অর্থাৎ এই পশুগুলি সময়েও উপরি পর্যালোচিত সব ব্যবস্থা খাটিবে)।

বঁলীবন্দের মধ্যে যে-গুলির নাসাবেধন হইয়াছে এবং যে-গুলি শ্রেষ্ঠ অশ্বের মত গতিশীল ও (রথাদি-) বাহক হইতে পারে, সেগুলির থাতের পরিমাণ নিম্নলিথিতরপ হইবে, যথা— অর্দ্ধভার ( অর্থাৎ দশ তুলা-পরিমিত ) যবস ( হরিত ঘাস ), ইহার দ্বিগুণ অর্থাৎ ২০ তুলা ( সামান্ত ) তুণ, এক তুলা **ঘাণপিণ্যাক** ( থোল ), ১০ আঢ়ক কণকুণ্ডক ( অর্থাৎ স্ক অমাকণায়ক্ত অমের কম্ব বা মাড় ), ৫ পল ( সৈম্ব ) ম্থলবণ, ১ কুড়ুব নাসা-সেচনার্থক তৈল, ও ১ প্রস্থ পানার্থ তৈল। ইহাদের জন্ম আরও নিতে হইবে ১ তুলা মাংস, ১ আঢ়ক দধি, ১ ল্রোণ যব, অথবা, ১ লোণ-পরিমিত মাষ্টারা নির্মিত পুলাক (অর্থাৎ অর্দ্ধণক সির্ক্থ )।

১ দ্রোণ হৃগ্ধ, অথবা 💲 আঢ়ক স্থরা, ১ প্রেম্ব ক্ষেহন্রব্য ( তৈল বা দ্বন্ত ), ১০পল

ক্ষারদ্রব্য (গুড় প্রভৃতি) ও ১ পল শৃঙ্গিবের (অর্থাৎ আর্দ্রক শুষ্ঠী) এই দ্রব্যগুলি মিলাইয়া (অগ্নিদীপনার্থক) বলীবর্দ্দ পশুকে পান করাইতে হইবে।

অশতর (থচ্চর), অন্য পুংগব ও গর্দ্ধভের জন্য উপরি উক্ত (খান্ত ও পানীয়ের এক চতুর্থাংশ কম হইতে পারিবে। মহিষ, উট্ট ও (শকটাদির উপযোগী কর্মকরণে যুক্ত বলীবর্দ্দের জন্য দিগুণ বিধা ধার্য্য করিতে হইবে। (হুয়৸াত্রী) গাভীর জন্যও উক্ত পানীয় দ্রব্য (ও খাল্ডদ্রব্যের) দিগুণ পরিমাণ দিতে হইবে। (বলীবর্দ্দাদির) কর্মকালের পরিমাণ ও (ধেন্থ প্রভৃতির হৃষ্কবাহল্যাদি) ফল লক্ষ্য করিয়া খাল্য ও পানীয়ের বিধান করিতে হইবে (অর্থাৎ প্রয়োজন হইলে দিগুণেরও অধিক পরিমাণ দেওয়া যাইতে পারিবে)। সব পশুর জন্য তুণ ও জলের প্রচুরতার দিকে লক্ষ্য রাখিতে হইবে। এই পর্যাম্ব গোমগুলসম্বন্ধীয় বিধা প্রভৃতি ব্যাখ্যাত হইল।

যে-যুথে সংখ্যায় একশত গৰ্দ্ধভ বা অশ্ব থাকিবে তাহাতে পাঁচ-পাঁচটি করিয়া ঋষভ ( অর্থাৎ তঙ্জাতীয় পুরুষ পশু ) রাখিতে হইবে, যে-যুথে একশত করিয়া অজ ( ছাগ ) বা মেষ থাকিবে তাহাতে দশ-দশটি করিয়া ঋষভ ( পুরুষ পশু ) এবং যে-যুথে একশত সংখ্যক গরু, মহিষ বা উট্ট থাকিবে তাহাতে চারি-চারিটি ঋষভ ( পুরুষ পশু ) রাখিতে হইবে ॥ ১ ॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে গোধ্যক্ষ-নামক উনত্রিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৫০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### ত্রিংশ অধ্যায়

#### ৪ ৭শ প্রকরণ—তাশ্বাধ্যক্ষ

(রাজকীয়) আশ্বাধ্যক্ষ নিয়লিখিত (সাতপ্রকার) অখের সংখ্যা (নিজ নিবন্ধপুস্তকে) লেখাইয়া রাখিবেন, যথা—(১) যে অখসমূহ (বিক্রয়ার্থ) পণ্যাগারে রক্ষিত হুইতেছে; (২) যে-গুলি ক্রয়ন্ধারা লব্ধ; (৩) যে-গুলি যুদ্ধে প্রাপ্ত; (৪) যে-গুলি নিজাখবারা উৎপন্ন; (৫) যে-গুলি অন্ত রাজাকে সাহায্য প্রদানের পরিবর্গে প্রাপ্ত; (৬) যে-গুলি অন্ত লারা (অর্থের পরিবর্গে ) প্র বা অধিন্ধপে স্থিত ও (৭) যে-গুলি অন্ত সময়ের জন্য অন্ত হুইতে নিজ প্রয়োজনে আনীত; এবং সেই সঙ্গে অশ্বগুলির কুল (অর্থাৎ পারসীক-কামোজাদি

কোন্দেশে জন্ম), বয়স, (শুক্লকুঞাদি) বর্ণ, চিহ্ন, বর্গীকরণ (পারসীকাদি-ভেদে বিভাগ) ও প্রাপ্তিস্থানের বিষয়ও লেখাইবেন।

(তিনি) ষে-সব অশ্ব অপ্রশস্ত (অর্থাৎ স্বভাবতঃ দোষযুক্ত), অঙ্গবিকল ও ব্যাধিগ্রস্ত, (সে-সবের পরিবর্ত্তন ও চিকিৎসার জন্ম) সরকারের নিকট জানাইয়া রাখিবেন।

এক মাদের জন্ম পর্যাপ্ত (নগদ খরচ ও অশ্বভোজ্যাদি) যথাক্রমে রাজকোশ ও কোষ্ঠাগার হইতে লইয়া অশ্ববাহ (সহিস) অশ্ব-পরিচর্য্যার কার্য্য চালাইবে।

( অখাধ্যক্ষ ) এমন অখশালা (বা মদুরা ) নির্মাণ করাইবেন, যাহা অখের সংখ্যাস্থসারে দীর্ঘ বা আয়ত হইবে, যাহা অখের লগতার বিগুণ বিস্তারযুক্ত হইবে, যাহা ( চতুর্দ্ধিকে ) চারিটি দ্বার-যুক্ত থাকিবে এবং যাহার মধ্যস্থল অখগণের উপাবর্ত্তন বা প্রলুঠনের জন্ম পর্য্যাপ্ত হইবে, যাহাতে প্রাক্তীব বা বারান্দা থাকিবে, যাহার দ্বারদেশের বহির্ভাগ (উভয় পার্যে আসন-জন্ম কাষ্ঠ- ) ফলক-যুক্ত থাকিবে, এবং যাহা (বিষাদির প্রতিকারার্য) বানর, ময়ুর পৃষ্ত (মুগবিশেষ ) নকুল, চকোর, শুক ও শারিকাদ্বারা পরিব্যাপ্ত থাকিবে।

( অশ্বাধ্যক্ষকে অশ্বশালা ) প্রত্যেক অশ্বের জন্ম এমনভাবে পূর্বে বা উত্তরন্থী স্থান নিবেশিত করিতে হইবে, যাহাতে অশ্বের দৈর্ঘান্স্সারে চৌকোণ, চাক্চিক্যযুক্ত কাষ্ঠফলকের আস্তরণ থাকিবে, যাহাতে ( যবসাদি ) ভক্ষণের উপযোগী কোষ্ঠ নির্মিত থাকিবে এবং যাহাতে ( অশ্বের ) মল ও মূত্র ত্যাগের স্থবিধা থাকিবে । ( রাজভবনের উত্তর-পূর্বভাগে অশ্বশালা থাকা উচিত এরপ অন্তর্ব্ব বলা হইয়াছে, কুকন্ত, অশ্বের সংখ্যাবাহন্য-জন্ম যদি অন্তর্দিকে অশ্বশালার নির্মাণ আবশ্রক হয়, তাহা হইলে সেই ) অশ্বশালার অবস্থানবশতঃ ( দ্বারাদির ) দিখিভাগ কল্পনা করিয়া নিতে হইবে । বড়ব। (প্রাদিনিনী অশ্ব ) , বৃষ (বীর্যাসেচনকারী অশ্ব ) ও কিশোর (অর্থাৎ ৬ মাস হইতে ৩ বৎসর বয়ন্ধ অশ্বশিশু)-গণের জন্ম একান্ত স্থান ( অর্থাৎ অন্তান্তের দৃষ্টির অগোচর স্থলে পৃথক্ পৃথক্ভাবে স্থান ) নির্দিষ্ট থাকিবে ।

কোন বড়বা ( ঘোটকী ) শিশু প্রসব করিলে পর, ইহাকে তিনদিন পর্যান্ত ( প্রতিদিন ) একপ্রন্থ-পরিমিত স্বত পান করিতে দিতে হইবে। ইহার পর ইহাকে দৃশ দিবস পর্যান্ত (প্রতিদিন) একপ্রন্থ-পরিমিত সক্তু এবং স্নেহ্রব্য ( তৈলাদি )-মিশ্রিত ভৈষজ্ঞা ( কাথাদি উষধ ) পানার্থ দিতে হইবে। তদনন্তর পুলাক (অর্থাৎ অন্ধনিদ্ধ ম্বাদি), ম্বন (ঘাস) ও ঋতুযোগ্য (অন্তান্ত শস্তাদিরূপ) আহার দিতে হইবে।

প্রসবের দশদিন পরে, ছয় মাস পর্যান্ত কিশোরকে (অশ্বশিশুকে) এক কুড়ুব সক্তু এবং ইহার চতুর্থাংশ য়ত ইহাতে মিশাইয়া দিতে হইবে এবং একপ্রস্থ দ্বপ্ধও ইহার আহার্যার্রপে দিতে হইবে। তাহার পর তিন বৎসর পর্যান্ত (প্রতিদিন) একপ্রস্থ-পরিমিত ষব দিতে হইবে এবং (দরকার হইলে) প্রতিমাসে অর্দ্ধপ্রস্থিত ষব বাড়াইয়া (প্রতিদিন) দিতে পারা ষাইবে। (ইহার পরে) চারি বৎসর বয়স পর্যান্ত একলোণ-পরিমিত ষব (প্রতিদিন) দেওয়া ষাইতে পারিবে, ইহার পর, কিশোরের চারিবর্ষ বা পঞ্চবর্গ পূর্ণ হইলে, ইহা (সামাহাদি) কর্ম্মের উপযুক্ত হইবে এবং তথন তাহার প্রমাণও (নিমোক্ত কায়প্রমাণও) পূর্ণ হইবে।

উত্তম অশ্বের মৃথ ৩২ অঙ্গুল-পরিমিত হইবে; মৃথ-পরিমাণের পাঁচগুল অর্থাৎ ১৬০ অঙ্গুল ইহার আয়াম বা দৈর্ঘ্য হইবে। ইহার জজ্মা ২০ অঙ্গুল-পরিমিত হইবে; এবং ইহার উৎসেধ বা উচ্চতা জজ্মা-পরিমাণের চারিগুণ অর্থাৎ ৮০ অঙ্গুল হইবে। (উত্তম অশ্বের যে পরিমাণ বলা হইল তাহা হইতে) ৩ অঙ্গুল কম পরিমাণ হইবে মধ্যম অশ্বের, এবং তদপেক্ষায়ও ৩ অঙ্গুল কম পরিমাণ হইবে অধম অশ্বের। (উত্তম অশ্বের) পরিণাহ বা পরিক্ষেপ (মোটাই) ১০০ অঙ্গুল-পরিমিত হইবে। মধ্যম অশ্বের পরিক্ষেপ (উত্তম অশ্বের পরিক্ষেপের পরিমাণ হইতে) পঞ্চভাগ কম হইবে অর্থাৎ ৮০ অঙ্গুল-পরিমিত হইবে এবং অধম অশ্বের পরিক্ষেপ তদপেক্ষায়ও পঞ্চভাগ কম হইবে অর্থাৎ ৬৪ অঙ্গুল-পরিমিত হইবে (মতান্তরে, ৬০ অঙ্গুল হইবে)।

উত্তম অশ্বের জন্ম শালি (ধান্য), ত্রীহি (সাধারণ চাউল), বা প্রিয়ঙ্গুর হই দোণ—ইহা অগ্ধন্তম, অথবা অর্দ্ধসিদ্ধন্ত হইতে পারে—কিংবা উক্ত পরিমাণের ম্দা (ম্গ) ও মাধের পুলাক (অর্থাৎ ভক্তসিক্থ) (ভোজনার্থ) দিতে হইবে এবং পানার্থ স্থেহের (অর্থাৎ তৈল বা দ্বতের) একপ্রস্থ, লবণ পাঁচ পল, মাংস পঞ্চাশ পল, এবং খাল্গপিণ্ডের ক্লেদনের জন্ম (অর্থাৎ হজাইবার জন্ম) (মাংসাদির) রস এক আঢ়ক, কিংবা, ইহার দ্বিগুণ (অর্থাৎ ২ আঢ়ক) দিধি দিতে হইবে। পাঁচ পল (গুড়াদি) ক্ষারদ্রব্যের সহিত একপ্রস্থ স্থরা বা তিদ্ধিগুণ (অর্থাৎ ২ প্রস্থ) ত্র্যাও (অপ্রাত্নে) দিতে হইবে।

ু এবং যে অশ্বগুলি দীর্ঘ পথ চলিয়া ও অধিক ভার বহন করিয়া ক্লান্ট হইয়াছে

তাহাদের খাওয়ার জন্ম একপ্রস্থ-পরিমিত স্নেহন্রব্য দিতে হইবে—ইহাই তাহাদের জন্ম অমুবাসনাখ্য বস্তিচিকিৎসা (মতাস্তরে, খাওয়ার জন্ম যেমন এক প্রস্থ স্নেহ দিতে হইবে, তেমন অমুবাসনচিকিৎসার জন্মও একপ্রস্থ স্নেহ দিতে হইবে—এইরূপ অমুবাদ)। আবার এক কুড়ুব (অর্থাৎ প্রস্থের চতুর্ভাগ)-পরিমিত স্নেহ (অংখর) নাসিকাসেচন-জন্ম দিতে হইবে। যবস (বা হরিত শস্মের) অর্ধভার (অর্থাৎ দশ তুলা) এবং ইহার দ্বিগুণ (অর্থাৎ বিশ তুলা) তৃণ, অথবা ছয় হস্ত পরিক্ষেপ-পরিমিত তৃণস্তম্বসংঘাত (অর্থাৎ তুই বাহুর আলিক্ষনহারা গ্রাহ্ম তৃণস্তম্বস্থুণ) দিতে হইবে।

(উত্তম অখের নিমিত্ত বিহিত থাতাদির পরিমাণ হইতে) এক-চতুর্থাংশ কম আহার্য্যাদি মধ্যম অখের জন্ত বিহিত এবং তদপেক্ষায়ও এক-চতুর্থাংশ কম আহার্য্য অধম অখের জন্ত বিহিত হইবে। রথবহনকারী কিংবা বীর্য্যসেচনকারী মধ্যম অখের জন্তও উত্তম অখের আহার্য্যাদি বিহিত বলিয়া ধরা হইবে এবং রথবাহী কিংবা বীর্য্যদেচনকারী অধম অখ মধ্যম অখের আহার্য্যাদি পাইবে।

বড়বা বা ঘোটকী ও থচ্চরজাতীয় ঘোটকের জন্ম উক্ত বিধার পরিমাণের এক-চতুর্থাংশ কম বিধা বিহিত এবং এই বিধা হইতেও এক-চতুর্থাংশ কম বিধা কিশোর অশ্বের জন্ম নির্দিষ্ট হইবে। এইভাবে ( অশ্বের জন্ম বিধা প্রদানের প্রকার নির্নাপিত হইল।)

( অশ্বের ) বিধা বা আহারের যে পাচক, যে ( অশ্বের ) স্তন্ত্র বা রশ্মিগ্রাহী পরিচারক ও যে ( অশ্বের ) চিকিৎসক, তাহারাও বিধাভাগী হইবে অর্থাৎ তাহাদের নিজ ব্যবহারার্থ তাহারা সরকারপক্ষ হইতে বিধা পাইতে অধিকারী হইবে।

বে-সব অশ্বংগৃদ্ধ, ব্যাধি ও জরার নিমিত ক্ষীণ হইয়া পড়ে এবং যাহারা (সাল্লাফাদি) কর্মকরণে অসমর্থ দেগুলিকে কেবল উদরপৃত্তির জন্ম আহাগ্য দিতে হইবে। যে-সব অশ্ব (শক্তিশালী হইলেও) গৃদ্ধকর্মের অযোগ্য সেগ্রেলিকে পুরবাসী ও জনপদবাসীদিগের প্রয়োজনার্থ ব্যরূপে অর্থাৎ বীর্যসেচক-রূপে বড়বাতে প্রয়োগ-জন্ম রাখিতে হইবে।

যুদ্ধাদিকর্মে প্রযুক্ত হইবার উপযুক্ত অখণ্ডলির মধ্যে সেই সেই অখই উত্তম বলিয়া গহীত হইবে, যাহারা কান্দোজ, সিদ্ধা, আরুট্ট (পাঞ্চাবের উত্তর-পূর্বেন্থ দেশবিশেষ), ও বলায়ু (আরবদেশের প্রাচীন নাম) দেশে উৎপন্ন। আর বাহুলীক (অর্থাৎ প্রাচীনদিগের মতে, যে দেশ পাঞ্চাবের পাঁচ নদী ও সিদ্ধানদের ন ন্তর্বার্ত্তী দেশ), পাপের ( সম্ভবতঃ উত্তর-পশ্চিম সীমান্তদেশের অন্তর্ভুক্ত কোন দেশ), সৌবীর ( গুজরাটপ্রদেশের দেশবিভাগের প্রাচীন নাম) ভিত্তল দেশে উৎপন্ন অথ মধ্যম। অবশিষ্ট (পূর্ব্বোক্ত দেশ সমূহ হইতে অতিরিক্ত স্থরাট্রাদি দেশজাত) অথ অধ্যম।

উপর্যক্ত অশগুলির তীক্ষণতিত্ব ( অর্থাৎ অত্যন্ত্ম কশাঘাতেই কার্য্যপট্টতা ), ভদ্রগতিত্ব ( অর্থাৎ কশাঘাতের মাত্রান্ত্মারেই ক্র্য্যপট্টতা ) ও মন্দণতিত্ব ( অর্থাৎ বেশী কশাঘাতে কার্য্যপরতা ) লক্ষ্য করিয়া তাহাদিগকে সাল্লাহ্ম ফুরুসম্বন্ধীয় ) বা ঔপবাহ্যক ( সাধারণ মানাদিবহনযোগ্য ) কর্মে নিযুক্ত করিতে হইবে ।

(শালিহোত্রাদিবার। অভিহিত) সংগ্রামসম্বন্ধীয় সোষ্ঠবযুক্ত কর্মকে সান্নাহ্য কর্মবলা হয়।

আর (অশ্বের) উপবাহ্ন কর্ম পাঁচপ্রকার হইতে পারে, যথা—বল্পন ( ঘ্র্ণনগতি), নীচৈর্গত (অবিক্লতগতিতে ঘ্র্ণন), লজ্মন (লম্মপ্রদান), ধোরণ (নানাগতিতে দৌড়ান) ও নারোষ্ট্র (ইসারাতে গমন)। তন্মধ্যে বল্পন ছয় প্রকার হইতে পারে, যথা (১) ঔপবেণুক (অর্থাৎ একহস্ত-পরিমিত পরিক্ষেপের মধ্যেই মণ্ডলাকারে ঘ্র্ণন), (২) বর্দ্ধমানক (অর্থাৎ পরিক্ষেপের যে মণ্ডল লইয়া গতি আরদ্ধ তাহাই রক্ষা করিয়া ঘূর্ণন), (৩) যমক (অর্থাৎ একপাদ সন্থূচিত করিয়া অন্য পাদ প্রসারিত করিয়া প্রত্যুক্ত ঘূর্ণন), (৫) পূর্ব্বার্দ্ধারা ঘূর্ণন) ও (৬) ব্রিকেচালী (অর্থাৎ শরীরের প্রার্দ্ধারা ঘূর্ণন) ও

মন্তক ও কর্ণবয় অবিকৃত রাখিয়া অশ্ব ষে বন্ধন করে, তাহাই নীটের্গত বলিয়া অভিহিত হয় । এই নীটের্গত বোল প্রকার হইতে পারে, য়থা—(১) প্রকীর্ণক (অর্থাৎ সর্বপ্রকার গতির সংকর যাহাতে আছে), (২) প্রকীর্ণান্তর (প্রকীর্ণ হইলেও যাহাতে একটি গতিই প্রধান), (৩) নিয়য় (অর্থাৎ যাহাতে পৃষ্ঠভাগ অকম্পিত থাকে), (৪) পার্মানুর্ত্ত (অর্থাৎ যাহাতে একদিকে তির্গক্ গতি লক্ষিত হয়), (৫) উদ্মিমার্গ (অর্থাৎ জলের তরঙ্কের মত উন্নত ও আনত গতিবিশিষ্ট চলন), (৬) শরভক্রীড়িত (অর্থাৎ শরভজন্তর ক্রীড়ার মত গতি), (৭) শরভঙ্গা তি (অর্থাৎ শরভের লক্ষনের মত চলা), (৮) ব্রিতাল, (অর্থাৎ তিন পাদে চলা), (৯) বাহারুর্ত্ত (অর্থাৎ দক্ষিণে ও বামে ঘ্রিয়া চলা),

(১০) পঞ্চপাণি (অর্থাৎ তিন পাদ একবার রাথিয়া অন্ত পাদ ছইবার রাথিয়া চলা),
(১১) সিংছারত ( অর্থাৎ সিংহের ক্যায় চলা ), (১২) স্বাধৃত ( অর্থাৎ একেবারেই
অতিদীর্ঘগতি ), (১৩) ক্লিষ্ট ( অর্থাৎ চালক ছাড়াই ছুটিয়া চলা ), (১৪) ক্লিকিড
( অর্থাৎ শরীরের অগ্রভাগ অবনত করিয়া চলন ), (১৫) বংহিত ( অর্থাৎ
শরীরের অগ্রভাগ উন্নত করিয়া চলন ) ও (১৬) প্রুজ্পাভিকীর্ন ( অর্থাৎ
গোম্ত্রিকার ক্যায় এদিক-ওদিক হইয়া চলা )।

লাজ্যন সাত প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) কপিপ্লৃত ( অর্থাৎ বানরের মত লক্ষ্ণ দেওয়া ), (২) ভেকপ্লৃত ( অর্থাৎ ভেকের মতন লক্ষ্ণ দেওয়া ), (৩) এণপ্লৃত ( অর্থাৎ হরিণের মত লক্ষ্ণ দেওয়া ), (৪) একপাদপ্লৃত ( অর্থাৎ তিন পাদ সক্ষ্ণ চিত করিয়া কেবল এক পাদদারা লক্ষ্ণ দেওয়া ), (৫) কোকিলসঞ্চারী ( অর্থাৎ কোকিলের মত ঝট্ করিয়া লক্ষ্ণ দিয়া সঞ্চরণ ), (৬) উরস্থা ( অর্থাৎ চারি পাদই সঙ্কৃচিত করিয়া বুক দিয়া লক্ষ্ণ দেওয়া ও (৭) বক্চারী ( অর্থাৎ বকের ফ্রায় মাঝে ধীরে চলিয়া হঠাৎ লক্ষ্ণ দেওয়া )।

শোরণ আট প্রকার হইতে পারে; যথা—(১) কান্ধ (অর্থাৎ কন্ধ-নামক পক্ষীর মত গতি), (২) বারিকান্ধ (অর্থাৎ হংসাদির মত সমানগতি), (৩) মায়ুর (অর্থাৎ ময়ুরগতি), (৪) অর্ধমায়ুর (অর্থাৎ কিছু কিছু ময়ুরের মত গতি), (৫) নাকুল (অর্থাৎ নকুলের মত গতি), (৬) অর্ধনাকুল (অর্থাৎ কিছু কিছু নকুলের মত গতি), (৭) বারাহ (অর্থাৎ শৃকরের ন্যায় গতি) ও (৮) অর্ধবারাহ (অর্থাৎ কিছু কিছু বরাহের ন্যায় গতি)।

শিক্ষালব্ধ সংজ্ঞা বা সক্ষেতের অন্তরপ চলার নাম নারোষ্ট্র। (এই পর্য্যন্ত অখের ঔপবাহ্য কর্ম নিরুপিত হইল)।

(উত্তম, মধ্যম ও অধম) রথবাহী অখের ষথাক্রমে ছয়, নয় ও বার যোজন দ্র পর্যান্ত পথ চলা ব্যবস্থিত (মতান্তরে, অধম, মধ্যম ও উত্তম অখের ষথাক্রমে এইরূপ পথ চলা ব্যবস্থিত)। আর উত্তম, মধ্যম ও অধম পৃষ্ঠভারবাহী অখের ষথাক্রমে পাঁচ, সাড়ে সাত ও দশ গোজন দৃর পর্যান্ত পথ চলা ব্যবস্থিত (মতান্তরে, পূর্ববং অধমাদিক্রমে)।

(উক্ত তিন প্রকার) অখের মার্গ বা গতিও তিন প্রকার, যথা—(১) বিক্রম (শনৈঃ শনৈঃ গমন বা মন্দগতি), (২) ভদ্রাখাস (বা মধ্যমগতি) ও (৩) ভারবাৃহ্ন (অর্থাৎ ভারবহনকারী লোকের ন্যায় ভীত্রগতি বা ক্রভগতি)।

(ভিন্ন ভিন্ন অধের চলনের) ধারা বা ক্রমও পাঁচপ্রকার হইতে পারে,

গথা-—(১) বিক্রম (ধীরে গমন), (২) বল্লিত (মণ্ডলাকারে গমন), (৩) উপকণ্ঠ (লাফাইয়া লাফাইয়া চলা), (৪) উপজব (প্রথমে অধিক বেগে ও পরে অল্ল বেগে চলা) ও (৫) জব (প্রথমে অল্ল বেগে পরে অধিক বেগে চলা)।

যোগ্য আচার্য্যেরা (অর্থাৎ অশ্বশিক্ষকেরা) তাহাদের (অর্থাৎ রথ্য ও পৃষ্ঠবাহ্য অশগুলির) মুথাদিতে বন্ধনযোগ্য নানাপ্রকার পর্য্যাণাদি সাজসম্বন্ধে উপদেশ করিবেন। স্থত বা সারথিরা রথ ও অশ্বের সংগ্রামসম্বন্ধীয় অলঙ্কারবিষয়ে উপদেশ করিবেন। অশ্বগণের চিকিৎসকেরা অশ্বের শরীরের হ্রাস ও বৃদ্ধির প্রতীকারসহন্ধে ও ভিন্ন ভিন্ন ঋতুতে উপযোগী আহারসহন্ধে উপদেশ করিবেন।

স্ত্রাহ ( অর্থাৎ অশ্বের রশ্মিধারক ), অশ্ববন্ধক ( অর্থাৎ থলীন বা লাগাম, পর্য্যাণ বা জীনাদি বন্ধনকার্য্যে অধিকৃত পরিচারক ), যাবসিক ( অর্থাৎ ঋতুর মন্তর্গামী ঘাসাদি আহারদাতা ), বিধাপাচক (অর্থাৎ শালিম্দা প্রভৃতির পাচক), স্থানপাল ( অর্থাৎ অশ্বের অবস্থানদেশের শোধক কর্মচারী ) কেশকার ( অর্থাৎ অশ্বের কেশাদি যথাসময়ে কাটিয়া ছাটিয়া দেয় বে কর্মকর ) ও জাললবিদেরা (বিষবিভাপট্ অশ্ব-চিকিৎসকেরা ) নিজ নিজ নিয়ত কর্মজারা অশ্বেরা পরিচর্য্যা করিবে।

এই সব কর্মচারীরা নিজ কর্জব্যের অতিক্রম (অকরণ বা অগ্রথাকরণ) করিলে, তাহাদিগের (অতিক্রম-) দিবসের বেতন কাটিয়া লওয়া হইবে। নীরাজন ক্রিয়ার জন্ম (অর্থাৎ অথের উপদ্রব শান্তির জন্ম ক্রিয়ানাণ দীপাদিবার সৎকারবিশেষের জন্ম) যে অশ্বকে বাঁধিয়া রাখা হইয়াছে, অথবা যে অশ্বকে চিকিৎসার জন্ম উপদ্রুদ্ধ করা হইয়াছে, সেই অশ্বকে কর্ম করাইলে অপরাধীর দাদশ পণ দণ্ড হইবে। (চিকিৎসা-) ক্রিয়া বা ঔষধের অকরণ-জন্ম (অশ্বের) ব্যাধির বৃদ্ধি ঘটিলে, তাহার প্রতীকার-জন্ম যত থরচ হইবে ইহ্বর দিগুল মূল্য (অশ্বর) দণ্ডেরপে দিতে হইবে। আর চিকিৎসা ক্রিয়া ও ভৈষজ্যের দোষে অশ্বের বিপত্তি ঘটিলে, অশ্বের মূল্য যতটা ততটা দণ্ডরপে তাঁহাকে দিতে হইবে।

এতদ্বারা অর্থাৎ অশ্বের পরিচর্য্যা ও চিকিৎসা প্রভৃতির নিরূপণ হইতে, গোমগুল, গর্মভ, উট্ট ও মহিষ, এবং অজ (ছাগ) ও অবিক (মেষ)-সম্বন্ধেও পরিচর্য্যাদির কথা ব্যাখ্যাত হইল ব্ঝিতে হইবে (অর্থাৎ অপরাধ প্রতিপন্ন হইলে গোধ্যক্ষ প্রভৃতির উপরও অন্ধর্মপ দণ্ড ব্যবন্ধিত হইবে)।

(শরৎ ও গ্রীমকালে অখাধাক্ষ লক্ষ্য করিবেন যেন) প্রতিদিন অখের

তুইবার স্নান করান হয় এবং তাহাকে গন্ধ ও মাল্য দেওয়া হয়, এবং ক্লম্পর্কে (অর্থাৎ অমাবস্থায়) ভূতবলি ও শুক্লপর্কে (অর্থাৎ পূর্ণিমা-তিথিতে) স্বস্তিবাচনের ব্যবস্থা থাকে ॥ ১ ॥

আখিন মাসের নবম দিনে ( অখের ) **নীরাজনা** (বা আরাত্রিক বা আরতি ) করাইতে হইবে এবং অখাধ্যক্ষকে যাত্রার প্রারম্ভে ও অবসানে এবং ( অখের ) ব্যাধির সময়ে শান্তিকার্য্যে নিরত থাকিয়া ( নীরাজনা করাইতে হইবে )॥ ২॥

কৌটিলীয় অর্থশাত্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে অশ্বাধ্যক্ষ-নামক ত্রিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৫১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### একত্রিংশ অধ্যায়

#### ৪৮শ প্রকরণ—হস্ত্যধ্যক্ষ

হস্ত্যধ্যক্ষ নিম্নলিখিত কার্য্যগুলির অন্তর্গান-াব্ধয়ে পর্যবেক্ষণ করিবেন,—
(তিনি) হস্তিবনের রক্ষাকার্য্য বিধান করিবেন; শিক্ষাকর্মগ্রহণদারা দাছ
হস্তী, হস্তিনী ও হস্তীশাবকের জন্য শালাসমূহের, (দাড়াইবার আলান বন্ধন)
স্থানের, শয্যার (শয়নস্থানের), (সামাহাদিক) কর্মের, বিধার বা আহার্য্যন্তব্যের
ও যবসের (কাঁচা ঘাসের) প্রমাণ নির্ণয় করিয়া দিবেন; হস্তীকে দম্যাদি কর্মে
শিক্ষালাভের জন্য আযুক্ত বা আসক্ত করাইবার বন্দোবস্ত করিবেন; হস্তীর বন্ধন
(আলানাদি), (অক্স্পাদি) উপকরণ, (বর্ম-তোমরাদি) সাংগ্রামিক অলঙ্কার
এবং (হস্তীর জৃন্য) টিকিৎসক, অনীকন্ত্র (গজশিক্ষক) ও উপস্থায়ুক্
বর্মের (উপস্থান বা পরিচর্য্যায় রত কর্মকর) কার্য্যসম্বন্ধে সমস্ত বিধান
করিবেন।

(তিনি) এইরপ হস্তিশালা নির্মাণ করাইবেন,—যাহার উৎসেধ (উচ্চতা) বিষ্ণপ্ত (বিস্তার) ও আয়াম (দীর্ঘতা) হস্তীর যাহা উৎরুষ্ট আয়াম বা দীর্ঘত (অর্থাৎ হাত ) তাহার বিশুণ হইবে (অর্থাৎ হস্তিশালার উচ্চতা, বিস্তার ধ দীর্ঘতা ১৮ হাত-পরিমিত হইবে), যাহাতে হস্তিনীর জন্ম অতিরিক্ত স্থানের যাবস্থা থাকিবে, যাহা প্রেক্তীব বা ম্থশালা-(বারান্দা-) যুক্ত থাকিবে, যাহাতে কুমারী-নামক হস্তিবন্ধনন্তভোপরি রক্ষিত তুলায়ন্তের মত দণ্ড পর্য্যাপ্তভাবে

দংগৃহীত থাকিবে, এবং যাহার মূথ বা দ্বার পূর্ব্বদিকে বা উত্তরদিকে অবস্থিত থাকিবে।

(তিনি) হস্তীর মৃত্র ও পুরীষ (মল) ত্যাগের জন্ম এমন স্থান নির্মাণ করাইবেন যাহাতে হস্তীর আয়াম-পরিমিত অর্থাৎ নয় হাত-পরিমিত এক মফণ বন্ধনস্তম্ভ প্রোথিত থাকিবে এবং যাহাতে জমি ঢাকিবার জন্ম চারিকোণযুক্ত কার্চফলক (অগ্রোন্ধতভাবে,) পাতা থাকিবে। (তিনি) হস্তীর জন্ম পূর্ব্বোক্ত ছানের মাপের অমুগুণ এক শ্যা নির্মাণ করাইবেন, যাহার উন্নত স্থান অর্দ্ধপঞ্চম হস্ত (অর্থাৎ সাড়ে চারিহাত) পরিমিত থাকিবে—কিন্তু, এই শ্যা সান্নাহ্ম ও উপবাহ্ম হস্তীর জন্ম তুর্গ (বা নগর) মধ্যে নিবেশিত থাকিবে এবং দম্য ও ব্যাল হস্তীর জন্ম তুর্গ-বহির্ভাগে নিবেশিত থাকিবে।

দিনমানকে সমান আট ভাগে বিভক্ত করা হইলে ইহার প্রথম ও সপ্তম ভাগে হাতির স্নানকাল বৃঝিতে হইবে এবং এই তুই বার স্নানের পরেই হাতিকে বিধা বা পক আহার্য্য দিবার কাল বৃঝিতে হইবে। পূর্ব্বাহ্নে হাতির ব্যায়ামকর্ম্মের জ্বন্ত নির্দিষ্ট কাল থাকিবে। অপরাহে পানের কাল নির্দিষ্ট থাকিবে। রাত্রিকে সমান তিন ভাগে বিভক্ত করা হইলে ইহার তুই ভাগ সময় হাতিকে ঘুমাইতে দিতে হইবে এবং অবশিষ্ট তৃতীয় ভাগ তাহাকে বিশ্রামার্থ উপবেশন ও উত্থানজ্ব্য দিতে হইবে।

গ্রীমেই হাতি ধরার উপযুক্ত কাল ( তথন হাতি গ্রীমের তাপবশতঃ ক্ষীণবল থাকে বলিয়া গ্রহণযোগ্য হয় ) এবং বিংশতিবর্ধ-বয়স্ক হাতিই ( অর্থাৎ সেই বয়সের নীচে না হয় ) গ্রহণযোগ্য হয় ।

স্তনন্ধর বা মাতৃত্ত গ্রপায়ী ( যাহার নাম বিক্ক ), মৃঢ়-নামক হাতি ( অর্থাৎ যাহার দাঁত হস্তিনীর দাঁতের সমান পরিমাণ-বিশিষ্ট ), মৎকুগ্ধ-নামক হাতি ( অর্থাৎ যাহার দাঁত নিক্ষান্ত হয় নাই ) ও ব্যাধিগ্রস্ত হাতি এবং গর্ভিণী ও বিক্ষ হাতিকে স্তন্থপান-দাত্রী হস্তিনী গ্রহণযোগ্য নহে। প্রমাণে যে হাতির উচ্চতা দাত হাত, আয়াম বা দৈর্গ্য নয় হাত ও পরিণাহ বা পরিক্ষেপ ( অর্থাৎ মোটাই ) দশ হাত এবং যাহার বয়স চল্লিশ বৎসর সে হাতিই উত্তম বলিয়া পরিজ্ঞাত। যে হাতির বয়স ত্রিশ বৎসর তাহাকে মধ্যম বলিতে হইবে ( ইহার প্রমাণ উচ্চতায় ছয় হাত ইত্যাদি পরে বলা যাইবে ) এবং যে হাতির বয়স পাঁচিশ বৎসর তাহাকে অবর বা অধম বলা যায় ( ইহার প্রমাণ উচ্চতায় পাঁচ হাত ইত্যাদিও পরে বলা যাইবে )।

শোষোক্ত তুই প্রকার হাতির ( অর্থাৎ মধ্যম ও অর্ধম হাতির ) বিধা বা আহার্য্য দেওয়ার বিধি চতুর্জাগ করিয়া কম হইবে অর্থাৎ উত্তম হাতির জন্ম বেধপরিমাণ বিধার ব্যবস্থা আছে তাহা হইতে এক চৌথ কম বিধা পাইবে মধ্যম হাতি এবং মধ্যম যাহা পাইবে তদপেক্ষায় এক চৌথ কম বিধা পাইবে অধম হাতি।

পূর্ণ দাত অর্থা বা দাত হাত উচ্চ হাতির জন্ম প্রত্যেক অর্থার হিসাবে এইরপ বিধা ব্যবস্থিত হইবে, যথা—এক দ্রোণ তণ্ড্ল, অর্ধ আঢ়ক তৈল, তিন প্রস্থ যত, দশ পল লবণ, পঞ্চাশ পল মাংস, ভূক্তপিণ্ডের সেচনার্থ এক আঢ়ক (মাংস-সংস্কৃত) রস অথবা, (রসাভাবে) ইহার বিগুণ দধি, দশ পল কার (গুড়াদি দ্রবা), মধ্যাহে পানের জন্ম এক আঢ়ক মন্ম অথবা, (মন্মাভাবে) ইহার বিগুণ দুর্ম, গাত্রে মাথিবার জন্ম একপ্রস্থ তৈল, মাথায় দেওয়ার জন্য এক প্রস্থের অন্ত ভাগ অর্থাৎ অর্ধ ক্র্ডুব তৈল, (রাত্রিতে) প্রদীপের জন্ম ততথানি (অর্থাৎ প্রস্থের অন্ত ভাগ) তৈল। ২ই ভার (৪৫০০ পল) যবস বা হরিত শস্থাদি ও ২ই ভার গুরু শশ্প দিতে হইবে। কিন্তু, কড়ঙ্গর বা শুল্লকীর প্রাদি সম্বন্ধে কোন নিয়ম নাই। (অর্থাৎ উক্ত বিধার সাতগুণ-পর্রিমিত বিধা সাত হাত উচ্চ উত্তম হস্তীকে দিতে হইবে; সম্বন্তঃ 'প্রত্যেক অর্থান্থর হিসাবে' এই ব্যাখ্যা ছাড়িয়া অর্থা সমন্ধে সাত হাত উচ্চ হাতির জন্যই এইরূপ বিধা ব্রিতে হইবে, ইহার সাত গুণ নহে)। আট হাত উচ্চ বে হাতির নাম আন্ত্যরালা হাতি তাহার ভোজন সাত হাত উচ্চ হাতির সমানই থাকিবে।

উপরিউক্ত সাত হাত ও আট হাত উচ্চ হাতি ছাড়া যে (মধ্যম) হাতি উচ্চতায় ছয় হাত ও যে (অধ্যু) হাতি উচ্চতায় পাঁচ হাত তাহারা যথাক্রমে উত্তম হাতির জন্য বিধেয় বিধার এক-চতুর্থাংশ কম এবং মধ্যম হাতির জন্য বিধেয় বিধার এক-চতুর্থাংশ কম এবং মধ্যম হাতির জন্য বিধেয়

ক্রীড়ার জন্য (কর্মের জন্য নহে ) যদি বিশ্ব হস্তী গ্রহণযোগ্য হয়—তাহা হইলে ইহাকে হন্ধ ও থবদ দারাই পোষণ করিতে হইবে।

সাত অবস্থায় হাতির সাত প্রকার শোভা কল্পনীয় হয়, যথা—হাতির যে অবস্থায় কেবল স্বক ও অস্থি দেখা যায় এবং যাহাতে ক্ষরির উপজাত হয় সেই অবস্থার শোভার নাম সঞ্জাতলোহিতা। যে অবস্থায় কিঞিৎ মাংস উৎপর হওয়ার অস্থি ছন হইতে থাকে সে অবস্থার শোভার নাম প্রতিচ্ছল্পা। যে অবস্থায় ছই পার্যেই মাংসলেপ ঘটাতে ইহা মস্প দেখা যায় সেই অবস্থার

শোভাকে সংলি প্রপক্ষা বলা হয়। যে অবস্থায় হাতির সব অবয়বে সমানভাবে মাংস দৃষ্ট হয় সে অবস্থার শোভা সমকক্ষ্যা বলিয়া আখ্যাত। যে হাতির শরীরের এক স্থানে নীচ ও অক্স স্থানে উক্ত মাংস দেখা যায়, সেই অবস্থার শোভা ব্যতিকীর্ণমাংসা বলিয়া অভিহিত। যে অবস্থায় হাতির পৃষ্ঠবংশে উৎপন্ন মাংসের সমান মাংস পৃষ্ঠবংশপার্থেও লক্ষিত হয় সেই অবস্থার শোভাকে সমত্ত্মতলা নাম দেওয়া হয় এবং যে অবস্থায় হাতির পৃষ্ঠের আক্রতি, পার্থন্ধরের মাংসের উন্নতির জন্ম দ্রোণীর মত দেখায় সে অবস্থার শোভা জাতজোণিকা বলিয়া কথিত হয়।

উপরিউক্ত শোভার অন্থসরণ করিয়া ভদ্র (উত্তম) হস্তী, মন্দ (নধ্যম) ও ।

মৃগ (অধ্ম) হস্তীকে ব্যায়াম ও পরিশ্রম শিক্ষা দেওয়াইতে হইবে এবং ভদ্রাদি
সঙ্করজনিত মৃগহস্তীকেও (অর্থাৎ ভদ্রমন্দ, ভদুমৃগ ইত্যাদিকেও) সান্নাহাদি
কর্মে শিক্ষা দেওয়াইতে হইবে। অথবা, সকল হাতিকেই (শরদাদি) ঋতু
অন্থসরণ করিয়া শিক্ষা দেওয়াইতে হইবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক দ্বিতীয় অধিকরণে হস্তাধ্যক্ষ-নামক একত্রিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৫২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### দ্বাত্রিংশ অধ্যায়

#### ৪৮শ প্রকরণ—হস্ত্যধ্যক্ষ—হস্তিপ্রচার

কর্মভেদাত্মসারে হস্তী চারি প্রকার, যথা—(>) দম্য ( অর্থাৎ শিক্ষাদারা দমনযোগ্য, (২) সান্নাহ্ম ( যুদ্ধকার্য্যের উপযোগী ), (৩) উপবাহ্ম ( সোওয়ারী বহনযোগ্য ) ও (৪) ব্যাল ( ঘাতকবৃত্তিযুক্ত )।

তন্মধ্যে দ্ব্যা হস্তী পাঁচ প্রকার, যথা—(১) স্কন্ধগত (যে হস্তী মনুয়াকে স্বন্ধে লইতে কোনরূপ উপদ্রব করে না ), (২) স্তন্থগত (যে হস্তী স্বন্ধে বন্ধন সহ্ করে), (৬) বারিগত (যে হস্তী সহজে বারি বা বারী অর্থাৎ গজবন্ধনী বা গজবন্ধন-শালাতে প্রবেশ করে—"বারী তু গজবন্ধনী" ইত্যমর:; "বারিবাগ্গজবন্ধন্যো: শ্রী ক্লীবেহস্থনি বালুকে" ইতি মেদিনী ), (৪) অবপাতগত (যে হস্তী ত্গচ্ছর করিয়া রচিত গর্জে আসিয়া পতিত হয় ) এবং (৫) যুথগত (যে হস্তী দাস্ক

হস্তিনীর সহিত বিহারার্থ বৃথে বা গজদলে উপস্থিত হয় )। দম্যহন্তীর পরিচর্ব্যা বিৰু বা হস্তিশিশুর পরিচর্ব্যার মত হইবে, অর্থাৎ তাহাকেও তৃগ্ধ, ঘাস ও ইক্ষ্কাণ্ডাদি দিতে হইবে।

সায়াভ হস্তীর সাত প্রকার ক্রিয়ামার্গ বিহিত হইতে পারে, যথা—
(১) উপস্থান অর্থাৎ অগ্রপশ্চাবর্ত্তী অবয়বের নমন ও উন্নমন করা এবং ধ্বজা, উদ্ধা, বেণু ও রজ্জু-প্রভৃতি লজ্মন করা; (২) সংবর্ত্তন অর্থাৎ ভূমিতে শয়ন, উপবেশন ও রেখা-গর্ত্ত প্রভৃতি লজ্মন করা; (৩) সংখান অর্থাৎ সরল, বক্র, গোমৃত্রিকাকার কিবো মগুলাকার গতিবিশেষে চাতুর্য্য; (৪) বধাবধ অর্থাৎ শুগু, দন্ত বা গাত্রেছারা অশ্ব, মাত্র্য বা রথাদির বধসাধন; (৫) হস্তিযুদ্ধ অর্থাৎ অন্য হস্তীর সহিত যুদ্ধ; (৬) নাগরায়ণ অর্থাৎ নগরের গোপুর, অট্রালক ও পরিঘ প্রভৃতির ভঞ্জন; ও (৭) সাংগ্রামিক অর্থাৎ সোপ্তিকাদি প্রকাশযুদ্ধে প্রবর্ত্তন। সান্নাহ্ হস্তীর উপচরণ বা পরিচর্ব্যাদিতে লক্ষ্য রাখিতে হইবে—যেন হস্তী কক্ষ্যা বা মধ্যবন্ধনে, কণ্ঠভূষাবন্ধনে ও (পূর্মকায় ও পশ্চাদ্বর্ত্তী কায়ের উন্নতরাদি গজশান্ধ্যেক ক্রিয়ালারা) অন্য যুথাদিতে প্রবেশকরণে কৌশল লাভ করিতে পারে।

ওপবাহ্ হন্তী আট প্রকার, যথা—(১) আচরণ অর্থাৎ যে হন্তী পূর্ব্ব ও অপর কায়ের উচ্চ-নীচ করা প্রভৃতি সর্ব্বপ্রকার গঙ্গগতির অত্সরণ করিতে পারে; (২) কুঞ্জরোপবাছ অর্থাৎ যে হস্তী অন্ত হস্তীর সহিত এক সঙ্গে উপবাহ কার্যা করিতে পারে; (৩) ধোরণ অর্থাৎ যে হন্তী এক পক্ষ বা পার্ম ধরিয়াই সর্ব্বকর্ম করে; (৪) আধানগতিক অর্থাৎ যে হস্তী তুই তিন প্রকারের গতিতে চলিতে জানে; (৫) ষষ্ট্রাপবাহ্ন অর্থাৎ যে হস্তী ষষ্টি তাড়নায় কর্ম করে; (৬) তোত্তোপ বাহ্ন অর্থাৎ যে হক্তই তোত্র বা কন্টকময় বেণু বা অঙ্গুশাদির তাড়নায় কর্ম করে (৭) শুদ্ধোপবাহ অর্থাৎ যে হস্তী ষষ্টি বা তোত্রের তাড়না ব্যতিরেকেই মাহুতের পদাঘাতাদি সংজ্ঞাদারাই চলিতে পারে এবং (৮) মার্গায়ুক অর্থাৎ যে হস্তী শিকারকর্মে শিক্ষাপ্রাপ্ত। ঔপবাহ্ন হস্তীর উপচরণ বা পরিচর্য্যাকার্য্য তিন প্রকারের হইতে পারে, যথা—(১) শারদকর্ম—ইহা চারি প্রকার—(ক) হস্তী অভিমাত্রায় পুল থাকিলে ইহার ক্লীকরণ, (থ) কুল থাকিলে ইহার স্থুলীকরণ, (গ) লোহিত বা মন্দাগ্নি হইলে ইহার অগ্নিদীপন এবং (ঘ) ইহা প্রকৃতিস্থ থাকিলে ইহার স্বাস্থ্যবন্ধণ; (২) হীনকর্ম অর্থাৎ হস্তী ব্যায়ামে বিমুখ থাকিটে ইহাকে ব্যায়ামে প্রবর্তন ও (৩) নারোষ্ট্রকর্ম অর্থাৎ হস্তীকে সংজ্ঞা বা ইসার শিকা দেওয়া।

ব্যাল বা ঘাতক হস্তীর ক্রিয়া-মার্গ একপ্রকার। ইহার উপচরণ বা পরিচর্ব্যা এইরপ—ইহাকে নিয়মিত ক্রিয়া এক লোকই রক্ষা করিবে। অথবা, আষম্যা দণ্ডদারাই কেবল ইহাকে রাখিতে হইবে।

উপত্রবকারী হস্তী নিম্নলিথিতরপ হইতে পারে, যথা—(১) কর্ম্মান্ধিত অর্থাৎ শিক্ষাকর্ম্মসময়ে যে হস্তী প্রতিক্লচারী হইয়া উঠে; (২) অবরুদ্ধ অর্থাৎ যে হস্তী দর্মের অন্নপ্রযোগী বলিয়া উপেক্ষিত; (৩) বিষম অর্থাৎ যে হস্তী মদদোয়ে ছট্ট; (৫) প্রভিন্নবিনিশ্চয় মহুষ্ঠানকারী; (৪) প্রভিন্ন অর্থাৎ যে হস্তী মদদোয়ে তৃষ্ট; (৫) প্রভিন্নবিনিশ্চয় মর্থাৎ যে হস্তী মদদোয়ে বা বিধাদোয়ে অত্যন্ত ব্যাকুলীভূত এবং (৬) মদহেতৃবিনিশ্চয় অর্থাৎ যে হস্তী সর্ব্বদাই মদমন্ত থাকায় তাহার মদহেতৃত্ব মবিজ্ঞাত থাকে।

সাধারণতঃ ব্যাল হস্তী সর্ব্বক্রিয়াতেই দোষযুক্ত অর্থাৎ তুইকর্মে দূষিত। ইহার ত্রুদ চারিপ্রকার, যথা—(১) শুদ্ধ অর্থাৎ যে ব্যাল হস্তী কেবল ঘাতৃক (হস্তিাাত্মান্সারে অষ্টাদশ দোষে তুই); (২) স্ত্রত অর্থাৎ যে ব্যাল হস্তী কেবল চালক
পঞ্চদশ দোষে তুই); (৩) বিষম অর্থাৎ যেন্ব্যাল হস্তী ঘাতন ও চালন এই
ইভয়কর্মের দোষে তুই; ও (৪) সর্ব্বদোষপ্রতুই অর্থাৎ যে ব্যাল হস্তী উক্ত তেত্রিশ
র নিজের উনবিশাংতি দোষে তুই।

হস্তীদিগের বন্ধন ও আবশুকীয় অন্যান্য উপকরণদ্রব্যসম্বন্ধে অনীকক্ষ্ম অর্থাৎ হস্তিশিক্ষাবিচক্ষণ শিক্ষকেরাই প্রমাণ অর্থাৎ তাঁহাদের কথামুসারে সে-সব চরণীয়। তর্মধ্যে, আলান অর্থাৎ হস্তীবন্ধন স্তন্ত, গৈরায়ণ অর্থাৎ হস্তীর প্রাবেয়ক অর্থাৎ হস্তীর গ্রীবাবন্ধনের শৃত্মল; কক্ষ্যা অর্থাৎ হস্তীর কক্ষবন্ধনরক্ত্ম, পারায়ণ অর্থাৎ হস্তীতে আরোহণসময়ের আলম্বনরক্ত্ম, পরিক্ষেপ অর্থাৎ হস্তীর পদবন্ধন-পাশ বা ৰুজ্ম, ও উত্তর অর্থাৎ কলাপাদি গলবন্ধনবিশেষ, ইত্যাদি দ্রব্যগুলিকে বন্ধান বলা হয়। বক্ষ্মা, বেণু (বা দশু) ও যন্ত্র (পাঞ্চালিকাদির্দ্ধণ যন্ত্র যাহা আয়ুধাগারাধ্যক্ষ প্রকরণে উক্ত হইয়াছে) ইত্যাদি দ্রব্যকে উপকরণ বলা হয়। বৈজয়ন্তী হিস্তীর উপর রক্ষণীয় পতাকা, অথবা কণ্ঠহার-বিশেষ), ক্ষ্রপ্রমালা (নক্ষত্রমালানামক মালাবিশেষ, ২য় অধিকরণে ১১ অধ্যায় দ্রন্থব্য), আন্তরণ (অন্যারীর নীচে পাতিবার বন্ত্রবিশেষ) ও কুর্থ (হস্তীর ঝুল) ইত্যাদি দ্রব্যকে ভূষণ বলা হয়। বর্ষ (কবচ), তোমর (অপর নাম শর্কলা, চতুর্হস্ত-পরিমিত আয়ুধবিশেষ; সম্ভবত: যাহাকে বাঙ্গালীরা শাবল বলে), শরাবাপ (তুণীর বা বাণাধান) ও (অন্যান্য) যন্ত্র প্রশ্ন গাহাক বলে) স্বাবাপ (তুণীর বা বাণাধান) ও

নিয়লিখিত কর্মকরসমূহকে লইয়া হস্তীর ঔপস্থায়িকবর্গ অর্থাৎ উপস্থান বা পরিচর্ঘ্যায় নিযুক্ত লোক বৃঝিতে হইবে, যথা—(১) চিকিৎসক (অর্থাৎ হস্তীর পীড়াদির উপশমজন্য নিযুক্ত গজবৈছা), (২) অনীকস্থ (হস্তিশিক্ষক), (৩) আরোহক (গজশাস্ত্রজ্ঞ গজারোহী), (৪) আধোরণ (গজশাস্ত্রজ্ঞ গজকর্মকৃশল পুরুষ), (৫) হস্তিপক (হস্তীরক্ষক), (৬) উপচারিক (হস্তীর চারণ, উদ্বর্জন ও অভ্যঞ্জনাদি কার্য্যসম্পাদক), (৭) বিধাপাচক (হস্তীর আহার্য্য বস্তুর পাককারী), (৮) যাবসিক (যবসদানকারী), (১) পাদপাশিক (হস্তীর পাদবদ্ধনকারী), (১০) কুটারক্ষক (গজশালার রক্ষণ ও শুচীকরণাদিতে ব্যাপ্ত পুরুষ), (১১) ঔপশায়িক (হস্তীর শয়নশালায় অধিকৃত পুরুষ) প্রভৃতি।

চিকিৎসক, কুটীরক্ষক ও বিধাপাচক ( হস্তীর আহার হইতে প্রত্যেকে নিজের জন্য ) এক প্রস্থ-পরিমিত অন্ন, এক প্রস্থতি বা অর্দ্ধাঙ্গূল-পরিমিত স্নেহ ( তৈলদ্বতাদি ) ও দুই পল-পরিমিত ক্ষার (গুড়াদি ) ও লবণ লইতে পারিবে। আর
চিকিৎসক ব্যতীত অপর দুই জন ( অর্থাৎ কুটীরক্ষক ও বিধাপাচক ) দশপলপরিমিত মাংসও লইতে পারিবে।

পথচলার সময়ে ('পথি'শব্দ পরবর্ত্তী সমাসবদ্ধ পদের সহিত সংযোজিত করিলে —পথগমনে অভিতপ্ত হস্তীর সহিত অর্থাহয় হইবে), হস্তী যদি ব্যাধি, কর্ম, মদ ও জরাতে অভিতপ্ত হয়; তাহা হইলে চিকিৎসকেরা ইহার প্রতীকার করিবে।

নিম্বর্ণিত দোষ হইলে ঔপস্থায়িকদিগের দণ্ডের কারণ উপস্থিত হইবে, যথা—হস্তীর থাকিবার স্থানের অশুদ্ধি বা অমার্জ্জনাদিজনিত আবর্জ্জনা রাথা, হস্তীকে থাওয়াইবার জন্য যবস না নেওয়া, স্থল বা শক্ত ভূমিতে হস্তীকে শোয়ান, তাড়নের অর্যোগ্য মর্মাদিস্থানে আঘাত করা, হস্তীর উপর অনধিকারী অপর লোককে চড়ান, অসময়ে হস্তীকে চালন, অভূমি বা বিষমদেশে চালন, অতীর্থে বা ঘাটশূন্য স্থানে হস্তীকে জলে নামান, এবং তরুগহনে হস্তীকে নেওয়া স্থতরাং এইগুলি অভ্যায় বা দণ্ডস্থান বলিয়া নির্দেশ করা হইয়াছে। এই দণ্ড তাহাদের ভক্ত (ভাতা) ও বেতন হইতে আদায় করা হইবে।

( হস্তীর বলবৃদ্ধি ও বিদ্নের শান্তির জন্য ) চাতুর্মান্তের ঋতুসদ্ধিতে অর্থাৎ কার্ত্তিক, ফান্তন ও আঘাঢ় মাসের পৌর্ণমাসীতে, তিনবার **নীরাজনা** বা আরাত্রিক করিতে হইবে; এবং অমাবস্তাতে ভূতবলি, ও পূর্ণিমাতে সেনানী বা কার্ত্তিকেয়ের ইজ্যা বা পূজা করিতে হইবে॥ ১॥ প্রত্যেক আড়াই বৎসরে নদীচারী হস্তীর ও প্রত্যেক পাঁচ বৎসরে গিরিচর হস্তীর দম্ভ কাটিতে হইবে—কিন্তু, দেখিতে হইবে যেন হস্তীর দম্ভমূলের পরিণাহ বা পরিক্ষেপমানের দ্বিগুণ দম্ভভাগ ছাড়িয়া দিয়া দম্ভ কাটা হয় ॥ ২ ॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্বে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে হস্ত্যধাক্ষপ্রকরণোক্ত হস্তিপ্রচার-নামক বাতিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৫৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## ত্রয়োস্ত্রিংশ অধ্যায়

৪৯শ-৫১শ প্রকরণ—রথাধ্যক্ষ, পত্তাধ্যক্ষ ও সেনাপতির কার্য্য

অশ্বাধ্যক্ষ প্রকরণে উক্ত বিধানসমূহদারা রথাধ্যক্ষের করণীয়ও ব্যাখ্যাত বলিয়া বুঝিতে হইবে ( অর্থাৎ সেই প্রকরণে অশ্বের জন্ম শালানির্মাণ, অশ্বের বিধা বা আহার্য্যাদি যাহা যাহা অভিহিত হইয়াছে, রথের জন্মও সে-সব ব্ঝিয়া লইতে হইবে )।

রথাধ্যক্ষকে রথ তৈয়ার ও মেরামত করার জ্ন্য কর্মান্ত বা কারথানা করাইতে হইবে।

দাদশাঙ্গুলাত্মক যে পুরুষ-পরিমাণ, সেই পুরুষ-পরিমাণের দশ পুরুষ উচ্চ এবং তথাভূত বার পুরুষ বিস্তৃত রথই (উত্তম শ্রেণীর রথ)। বিস্তৃতিতে এক এক পুরুষ কমাইয়া ছয় পুরুষ পর্যান্ত বিস্তৃত আরও ছয় প্রকার রথ হইলে, এই ছয় প্রকার রথ এবং পুরের দশ পুরুষ উচ্চ ও বার পুরুষ বিস্তৃত এক প্রকার, মোটেরু উপরু, এই সাত প্রকার রথ প্রস্তুত হইতে পারে।

বিভিন্ন-প্রকার কার্য্যের উপযোগী (নিম্নলিখিত) রথভেদ-সমূহ রথাধ্যক্ষ নির্মাণ করাইবেন, ষধা—(১) দেবরথ ( যাত্রা ও উৎসবাদিতে দেবপ্রতিমা সঞ্চারণ করাইবার উপযোগী রথ), (২) পুষ্পারথ ( বিবাহাদি মঙ্গলকার্য্যে ব্যবহারের উপযোগী রথ), (৩) সাংগ্রামিক রথ (যুদ্ধে ব্যবহারের উপযোগী রথ) (৪) পারিযাণিক রথ ( সাধারণ প্রসঞ্চারণের উপযোগী রথ), (৫) পর-পুরাভিযাণিক রথ ( শক্রর দুর্গাদি ভঞ্জনের উপযোগী রথ ) ও (৬) বৈগমিক রথ ( অখাদির চর্য্যাশিক্ষার উপযোগী রথ )।

(রথাধ্যক্ষ) বাণ, (ধহুরাদি) অস্ত্র, (তোমরাদি) প্রহরণ, আবরণ

( ঢাকিবার বস্তাদি ) ও অস্থান্য ( বন্ধাদি ) উপকরণ ফ্রব্যের রচনা এবং সারথি, রথিক ( রথব্যবহারী সৈনিকাদি ), ও রথোর ( রথবাহ অশ্বাদির ) স্ব স্ব কর্মে নিযুক্তিসম্বন্ধে সমস্ত বিষয় জানিবেন। আবার কর্ম্ম সমাপ্ত না হওয়া পর্যান্ত ( তিনি ) ভৃত ( নিয়মিতভাবে কার্য্যকারী শিল্পী ) ও অভৃতদিগের ( আগস্ক শিল্পীদিগের ) ভক্ত ও বেতনসম্বন্ধে, তাহাদের উপযুক্ত রক্ষণ ও তাহাদের অমুঠেয় কর্মসম্বন্ধে এবং তাহাদের দ্বারা রুত কর্মের অমুরূপ অর্থদানকর্ম ও মানদানকর্মনসম্বন্ধে সমস্ত তব্ব জানিয়া রাথিবেন।

ইহানারা অর্থাৎ রথাধ্যক্ষের ব্যাপারন্ধারা পত্তাধ্যক্ষের ব্যাপারও ব্যাখ্যাত হইল বুঝিতে হইবে। এই পত্তাধ্যক্ষ মৌলবল (রাজধানীরূপ মূল্প্থানে বাসকারী সৈন্ত ), ভূতবল (বেতনভোগী সৈন্ত ), শ্রেণিবল (জনপদবর্তী আয়ুধীয়গণ), মিত্রবল (মিত্ররাজার সৈত্ত ), অমিত্রবল (শত্রুরাজার সৈত্ত ) ও অটবীবলের (অটবীপালের অধিকৃত সৈত্তের) সারতা ও ফল্পতার বিষয় অবগত থাকিবেন।

তথা পত্তাধ্যক্ষ নিম্নযুদ্ধ ( গর্তাদি নীচ স্থানে যুদ্ধ ), স্থলযুদ্ধ ( খোলা ভূমিতে যুদ্ধ ), প্রাকাশযুদ্ধ ( দশুথে উপস্থিত থাকিয়া যুদ্ধ ), কূটযুদ্ধ ( কপটযুদ্ধ ), খনকযুদ্ধ ( ভূমি খননপূর্বক দেখানে অবস্থিত থাকিয়া যুদ্ধ ), আকাশযুদ্ধ ( উচ্চস্থানে বা ব্যোমখানে চড়িয়া যুদ্ধ ), দিবাযুদ্ধ ও রাত্তিযুদ্ধের শিক্ষাবিষয়ে নিপুণভাবে পরিচিত থাকিবেন। পত্তিদিগের স্বকর্মে নিয়োগ ও অনিয়োগ সম্বন্ধে সব বিষয় তিনি জানিয়া রাখিবেন।

সেনাপতি ( চত্রঙ্গদেনা ও মৌলাদিবলের নায়ক ) ( অখাধ্যক্ষাদি একৈক-দেনাঞ্বের অধিপতিদিগের ) সব কার্যাই জানিয়া রাখিবেন; এবং তাঁহাকে নিয় যুদ্ধাদি সর্বপ্রপার যুদ্ধ, (ধলুরাদি) প্রহরণ ও ( আয়ীক্ষিকী প্রভৃতি ) নানাপ্রকার বিভাতে শিক্ষিত হইয়া এবং হস্তী, অখ ও রথ চালনে অত্যন্ত নিপূণ হইয়া চতুরঙ্গ বলের বা সেনার অল্পান ( নানাবিধ কর্ত্ব্যা-করণ ) তাহাদের অল্পান-বিষয়ে সব তত্ত্ব জ্ঞানিয়া রাখিতে হইবে।

সেনাপতি তাঁহার (সেনাব্যায়ামাদির জন্ম) স্বভূমি, যুদ্ধের কাল, শত্রুর সেনা, অভিন্ন শত্রুব্যহের ভেদসাধন, ভিন্ন নিজব্যহের সন্ধান বা সংশ্লেষণ, সংহত বা একত্র মিলিত শত্রুসেনার বিঘটন, বিঘটিতদিগের বধ, শত্রুত্রগের ধ্বংস ও যুদ্ধযাত্রার কালসম্বন্ধে লব বিষয় বিচারপূর্বক লক্ষ্য করিয়া রাখিবেন।

িসৈক্তগণের শিক্ষাবিষয়ে রত থাকিয়া, (সেনাপতি) তাহাদের অবস্থান,

অভিযান ও প্রহরণ-ব্যবহার-বিষয়ে, তুর্য্ধবনি, ধ্বন্ধ ও পতাকারারা যুদ্ধে ব্যহাবন্ধ স্বসেনার জন্ম সংকেত ব্যবস্থা করিবেন॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে রথাধ্যক্ষ,
পত্তাধ্যক্ষ ও সেনাপতির কার্যানামক ত্রয়স্ত্রিংশ অধ্যায়
( আদি হইতে ৫৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## চতুন্ত্রিংশ অধ্যায়

#### ৫২শ-৫৩শ প্রকরণ—মুদ্রোধ্যক্ষ ও বিবীভাধ্যক

মুলোধ্যক্ষ (রাজকীয় চিহ্নযুক্ত লেখ্যাদি বা মূদ্র।সগন্ধে অধিকারী প্রধান রাজপুরুষ ) ( রাজ্যে প্রবেশকারী ও তথা হইতে নিক্রমণকারীকে ) এক মাযক খাজনা লইয়া মূদ্রা প্রদান করিবেন।

ম্দ্রাযুক্ত লোকই জনপদে প্রবেশলাভ ও তথা হইতে নিক্রমণ করিতে পারিবে।

জনপদবাসী কোন ব্যক্তি মূদ্রা না লইলে তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। কেহ কূট বা কপট মূদ্রা প্রদর্শন করিলে, তাহাকে প্রথমসাহসদণ্ড দিতে হইবে। অক্স জনপদভব ব্যক্তি **কূটমূজে।** দেখাইলে, তাহাকে উত্তমসাহসদণ্ড দিতে হইবে।

বিবীতাধ্যক্ষ (অর্থাৎ গোচারণার্হ তৃণযুক্ত প্রদেশের অবেক্ষণকারী অধ্যক্ষ) (লোকের) মূলা পরীক্ষা করিবেন (অর্থাৎ কেহ অমূল বা কূটমূলাহস্ত হইয়া বিবীতপথ দিয়া যাতায়াত করে কি না, তাহা জানিবার জ্ঞা মূলাপক্লীক্ষা করিবেন)।

( চোর ও অপসর্পের সঞ্চার-নিমিত্তক ) তুইটি ভয়যুক্ত স্থানের মধ্যে ( বিবীতা-ধ্যক্ষ ) বিবীত স্থাপন করিবেন। চোর ও হিংশ্র জন্তগণের অবস্থান-ভয়ে ( তিনি) নিমপ্রদেশগুলি ( অর্থাৎ গভীর থাতস্থানগুলি ) ও অরণ্যগুলিকে শোধিত রাথিবেন ( অর্থাৎ তদ্ধিবারণ-জন্ম পরীক্ষা করিবেন )।

যেস্থানে জলের অভাব, সেই স্থানে (বিবীতাধ্যক্ষ) কৃপ, সেতৃবন্ধ ও উৎস স্থাপন করিবেন এবং সেখানে পুষ্পবাধ ও ফলবাটও স্থাপন করিবেন।

লুকক ( শিকারী ) ও চণ্ডালেরা অরণ্যের মধ্যে ভ্রমণ করিতে থাকিবে, ( অর্থাৎ চোর ও শত্রুর প্রবেশ-পরিহারার্থ এইরূপ করিবে )।

চোর ও শত্রুদিগের আগমন লক্ষ্য করিলেই তাহারা নিজে ধরা না দিয়া শঙ্খ ও তুন্দুভির শব্দ উৎপাদন করিবে—যাহাতে ধরা না দিতে হয় তজ্জন্য তাহারা পর্বতে বা বৃক্ষের উপর আরোহণ করিবে, অথবা শীঘ্রগামী (অখাদি) বাহনে উঠিয়া (অন্তপালাদির নিকট) চলিয়া যাইবে।

(তাহারা) শক্র ও আটবিক জনদিগের সঞ্চার লক্ষ্য করিলে রাজার নিকট সেই সংবাদ মূদ্রাযুক্ত সূহকপোভ্রমার পাঠাইয়া দিবে, অথবা, (দিনের বেলায় এই বিপদ আসিলে) ধূমপরম্পরদারা ও (রাজিতে এই বিপদ আসিলে) অগ্নি-জ্ঞালন-পরম্পরদার। এই সংবাদ (রাজকুলে) পৌছাইয়া দিবার বন্দোবস্ত করিবে।

(বিবীতাধ্যক্ষ) দ্রব্যবনে ও হস্তিবনে যে আজীব (অর্থাৎ যবসাদি উপজীব্য পদার্থ) হইতে পারে তাহার স্থাপনা করাইবেন এবং তিনি বর্ত্তনী-নামক কর (যাহা তুর্গমার্গে চলাচল-জন্ম দেয় কর), চোররক্ষণ (অর্থাৎ চোর হইতে রক্ষণ-জন্ম দেয় কর, যাহার নাম পরবর্ত্তীকালে চোরোদ্ধরণিক-নামক কর হইয়াছিল), সার্থাতিবাহ্ম (অর্থাৎ সার্থ ব' বণিক্সংঘের অতিবাহনার্থ দেয় কর), গোরক্ষা (গোরক্ষানিমিত্তক দেয় কর) ও (আজীবপদার্গের ক্রয়বিক্রয়রূপ) ব্যবহারও স্থাপনা করিবেন॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে
মূদ্রাধাক্ষ ও বিবীতাধ্যক্ষ-নামক চতুদ্ধিংশ অধ্যায়
( আদি হইতে ৫৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### পঞ্চত্রিংশ অধ্যায়

## ৫৪শ-৫৫শ প্রকরণ—সমাহর্ত্তার ব্যাপার এবং গৃহপতি, বৈদেক ও তাপস-বেশধারী গৃঢ়পুরুষগণের কার্য্য

সমাহর্ত্তা (সর্বপ্রকার আয়স্থান হইতে রাজার্থের সম্যক্ আহরণকারী মহামাত্র) জনপদকে চারিভাগে বিভক্ত করিয়া, (প্রত্যেক বিভাগস্থিত) গ্রামসম্হকেওঁ উত্তম, মধ্যম ও অধমরূপে কল্পনা করিয়া ভাগ করিবেন, এবং সেগুলিই
প্রত্যেকটিয় ও গ্রামমগুলীর পরিমাণ নিবন্ধপুস্তকে লিপিবন্ধ করাইয়া রাখিবেন

এবং কোন্ কোন্ গ্রাম পরিছার ( অর্থাৎ রাজকর-মৃক্তি ) ভোগ করে, কোন্
গ্রাম (প্রতি বৎসর ) কতসংখ্যক আয়ুধীয় ( আয়ুধধারী দৈনিক ) পুরুষ প্রদান
করে, আবার কোন্ কোন্ গ্রাম রাজকরের পরিবর্ত্তে কত পরিমাণ ধান্য, (গবাদি)
পশু, হিরণ্য (নগদ টাকা ), কুপ্য (কাষ্ঠাদি দ্রব্য ) ও বিষ্টি (রাজকীয় কার্য্য
করার জন্য কর্মকর ) নিয়তভাবে প্রদান করে—তাহা ও পৃথক্ পৃথক্ নিবন্ধপুস্তকে
লিখাইয়া রাখিবেন।

সমাহর্তার নিযুক্ত গোপ-নামক রাজপুরুষ (উত্তম হইলে) পাঁচ পাঁচ গ্রামের এক এক বর্গের, অথবা, (অধম হইলে) দশ দশ গ্রামের এক এক বর্গের (স্থতরাং মধ্যম হইলে ছয় সাতটি গ্রামের এক এক বর্গের) কার্য্যসমূহ সম্বন্ধে চিন্তা করিবেন (অর্থাৎ এক এক জন গোপ পঞ্গ্রামী-চিন্তক, দশগ্রামী-চিন্তক ইত্যাদিরপ হইয়া কার্য্যভার গ্রহণ করিবেন)।

তিনি (গোপ) প্রত্যেক গ্রামের পরিমাণ (নদীপ্রভৃতি)-দারা সীমাবচ্ছেদ-পূর্ব্বক (নিবন্ধপুস্তকে) লিপিবদ্ধ করাইবেন এবং প্রত্যেক ক্ষেত্রের পরিমাণ ও ( ७९मश्रक्ष ) निम्निविधिष्ठ ष्यश्रीम्य वश्चद्र मःथा।नमहकादत निथाहेग्रा ताथित्वन, यथा—अम्क क्का कृष्ठे ( अर्था ९ ८ ४ क्का कर्रा के अरागी, अथवा य क्का রুষ্টপচ্য বা কর্ষণদ্বারা পচ্য ব্রীহিপ্রভৃতির উৎপাদক ), অমৃক ক্ষেত্র অরুষ্ট ( অর্থাৎ कर्यरात व्यायात्रा, व्यथवा यादा व्यक्ष्टेभाग नीवात्रानित उरभानक ), व्यक् क्षि স্থলভূমি ( অর্থাৎ অপেকাক্বত উক্তভূমি ), অন্ক ক্ষেত্র কেনার ( শালেয়াদির উৎপাদক ), অমৃক জমি আরাম বা উপবন ( বাগিচা ), অমৃক স্থান ষণ্ড (কদলী-প্রভৃতির ক্ষেত্র), অমৃক স্থান বাট (বা ইক্প্রভৃতির ক্ষেত্র), অমৃক জমি বন ( অর্থাৎ গ্রামবাসীর জন্য কাষ্ঠাদির উৎপাদক ), অমৃক স্থান বাস্তভূমি, •অমৃক স্থান চৈত্য ( অর্থাৎ বৌদ্ধাদির আয়তন, বা উদ্দেশবৃক্ষ ), অম্ক স্থান দেবগৃহ (দেবালয়), অমুক স্থান সেতৃবন্ধ ( অর্থাৎ যাহাতে জন বাঁধিয়া রাখি বার তড়া-গাদি আছে ), অমুক স্থান খাশানকেত্র, অমুক স্থান সত্ত্র বা অন্নদানশালা, অমুক ন্থান প্রাপা (বা পথিকদিগের পানীয়শালা), অমৃক স্থান (তীর্থাদি) পুণাস্থান, অন্ক স্থান বিবীত বা গোপ্রচার-প্রদেশ ও অমৃক স্থান ( শকটাদির যাতায়াত-জন্য ) পথ ( অর্থাৎ এইরূপ ভাবে নির্দ্ধেশপূর্বক নিবন্ধপুস্তকে লিখাইতে হইবে )। এইরূপ সংখ্যান-সহকারে (গ্রামের) উক্ত সীমা ও ক্ষেত্রগুলির মর্য্যাদা (চতুর্দিকৃষ্থিত সীমাবচ্ছেদক চিহ্ন), তৎসম্বন্ধ অরণ্য (ক্ষেত্রমধ্যস্থ চঁলাচলের) পথ, সেগুলির পরিমাণ, সম্প্রদান ( কে কাহাকে কত জমি দিয়াছে তাহার ইয়ন্তা), বিক্রয়, অবসুগ্রহ (ধান্যাদি ঋণরপে দিয়া ক্বকদিগের উপকারাদি করণ), ও পরিহারের (করমোক্রের) নিবন্ধনও ব্যবস্থা করিবেন (অর্থাৎ নিবন্ধপুস্তকে লিপিবন্ধ করিয়া রাখিবেন)। এবং (তিনি গ্রামবাসীদিগের) কোন্ গৃহ রাজকর দেয় না—তাহারও নির্দেশ (নিবন্ধপুস্তকে) লিপিবন্ধ রাখিবেন।

গ্রামন্থিত গৃহগুলিতে কোথায় কত ব্রাহ্মণাদি চতুর্বর্ণের লোক বাস করে, কত কৃষক, গোরক্ষক (গোয়ালা), বৈদেহক (বিণিক্), কারু (শিল্পী), কর্মকর ও দাস থাকে, (মোটের উপর) কত (মন্মুয়াদি) বিপদ ও চতুপ্পদ জন্ত থাকে এবং কোন্ স্থান হইতে কত হিরণ্য (নগদ টাকা), বিষ্টি (কর্মকর বা মজুর), শুঙ্ ও দণ্ড (সৈনিকসংখ্যা, মতান্তরে জরিমানা) উথিত হয়—তাহাও তিনি নিবদ্ধপুত্তকে লেখাইবেন।

(গোপ) প্রত্যেক কুলের (পরিবারের) লোকের মধ্যে কয়জন স্থীলোক, কয়জন পুরুষ, কয়জন বালক ও কয়জন বৃদ্ধ আছে তাহার পরিমাণ জানিয়া রাখিবেন এবং গ্রামের লোকদিগের (ব্রাহ্মণাদি) হিসাবে করণীয় কর্ম, চরিত্র, আজীব (জীবনধারণের বৃত্তি) ও ব্যয়-সম্বন্ধে সব বিষয় জানিয়া রাখিবেন।

এই প্রকার ভাবে জনপদের প্রত্যেক চতুর্থ ভাগের সব কার্য্যাবলী স্থানিক-নামক রাজপুরুষ চিম্বা করিবেন ( অর্থাৎ সব কার্য্যের প্রয়াবেক্ষণ করিবেন )।

গোপ ও স্থানিক-নামক রাজপুরুষদিগের এলাকা-স্থানে (কণ্টকশোধন-প্রকরণে উক্ত) প্রাদেষ্ট্-নামক অধিকারী পুরুষেরা নিজ নিজ কণ্টকশোধন কার্য্যের অমষ্ঠান করিতে পারিবেন এবং ( যাহারা স্বয়ং রাজকরের আদায়ক তাহাদিগের নিকট হন্টতে ) বলি বা রাজকর সংগ্রহ করিবেন ( অন্য ব্যাখ্যা— যাহারা বলী অথাৎ রাজার্থের উত্থাপনে বাধা দান করিবে তেমন লোকদিগকে প্রগৃহীত বা দমিত করিবেন )।

(সম্প্রতি সমাহর্তার আজ্ঞাধীন গৃহপতি, বৈদেহক ও তাপদের বেশধারী গৃঢ়পুরুষগণের গ্রাম ও জনপদে নিয়োজনসগদে বলা হইতেছে।) সমাহর্ত্তরার নিযুক্ত গৃহপতি-ব্যঞ্জন গৃঢ়পুরুষগণ যে-যে গ্রামে (চরের কার্য্যে) নিযুক্ত হইয়াছে, সেই সেই গ্রামের ক্ষেত্রসংখ্যা, গৃহসংখ্যা ও কুলসংখ্যা জানিয়া রাখিবে। (তাহারা আরও জানিবে যে,) কোন্ ক্ষেত্রের মান (আয়ামবিক্তারাদি-পরিচ্ছিয় পরিমাণ) কতথানি ও ইহাতে কি কি শশু কত পরিমাণে উৎপন্ন হয়; এবং কোন গৃহে কাহার ভোগ বা স্বস্থামিত্ব আছে ( স্বতরাং ইহার স্বামী

ভোগের জন্ম কতথানি কর দেয় ) ও কোন গৃহে লোকেরা পরিছার বা করমৃক্তি ভোগ করে, এবং কোন কুলে বা পরিবারে ( রান্ধণাদি ) কোন্ বর্ণের লোক
বাস করে ও তাহাদের ( মজন-কর্ষণাদি ) কর্ম কি করিতে হয় । সেই সেই কুলের
জান্তমান্তা অর্থাৎ ইহাতে বাস্তব্যকারী লোক ও দিপদ, চতুম্পদাদি জন্তর সংখ্যা
কত এবং (লোকদিগের ) আয় ও বায় কত—এই সব বিষয়ও তাহারা জানিবে ।
তাহারা আরও জানিবে যে কোন্ ব্যক্তি সেই সব গ্রামে আগে বাস করিয়া অন্তত্র
প্রবাসের জন্ম প্রস্থান করিয়াছে এবং কোন্ ব্যক্তি অন্তত্ত্ব আগে বাস করিয়া
সেই সব গ্রামে আসিয়া আবাস স্থির করিয়াছে এবং এইরপ করার কারণই বা
কি । এবং তাহারা জানিবে—এই সব গ্রামে কোন্ কোন্ অন্থপযুক্ত ( নর্জকীকুটুনী প্রভৃতি ) স্থীলোক ও কোন্ কোন্ অনভিপ্রেত ( বিট-কিতবাদি ) পুরুষ
আবাসার্থ আগমন ও প্রবাসার্থ তথা হইতে অন্যত্ত্ব গমন করে, এবং সেখানে
শক্রপ্রযুক্ত গুপ্রচরগণের কার্যপ্রবৃত্তিও কতথানি আছে ।

এই প্রকার (সমাহর্জনিযুক্ত) বৈদেহকব্যঞ্জন গৃঢ়পুরুষেরা, রাজার স্বদেশজাত (পণ্যাধ্যক্ষপ্রকরণে উক্ত) রাজপণ্যসমূহের এবং (খন্যধ্যক্ষপ্রকরণে উক্ত
শঙ্খহীরকাদি) খনিজাত দ্রব্য, (তড়াগাদিতে উৎপন্ন মৎস্যাদি) সেতৃজাত দ্রব্য,
(কুপাাধ্যক্ষপ্রকরণে উক্ত) বনজাতদ্রব্য, কর্মান্তে বা কারথানায় জাতদ্রব্য,
ও (সীতাধ্যক্ষপ্রকরণে উক্ত গ্রীহি প্রভৃতি) ক্ষেত্রজাত দ্রব্যসমূহের পরিমাণ ও
মূল্য (বাজার দর) জানিবে। তাহারা আরও জানিবে যে, পরদেশজাত এবং
জলপথ ও স্থলপথরারা আনীত (রত্মাদি) সারপণ্য ও (শাকাদি) ফল্পপণ্য
ক্রমবিক্রয়কর্ম-সম্বন্ধে কত পরিমাণে আসিয়াছে ও ইহাদের মূল্য কত। এবং
সেই সব দ্রব্যের ব্যবহার বা ব্যাপার কার্য্যে বিণিকেরা (শুল্লাধ্যক্ষপ্রকরণে উক্ত)
শুল্ক, (অন্তপালের নিক্ট দেয়) বর্ত্ত নী-নামক কর, (বিবীতাধ্যক্ষের গ্রাহ্য
সার্থাতিবাহনার্থ) আতিবাহিক কর, (রক্ষিপুরুষদিগের সংস্থানে দেয়) শুল্লাদেয়
কর, (নাবাধ্যক্ষদেয় নদীতরণাদিজন্য) তরদেয় কর, ভাগ (পণ্যসমূহের ট্র অংশ
অথবা, সহব্যবহারীদ্বিক্রের বিভাগে প্রাপ্য অংশ), ভক্ত (ব্যাপারীদিগের
বলীবর্দ্ধাদির তোজনংদি নিমিত্তক খরচ) ও পণ্যগৃহে (দ্রব্যাদি রাখিবার)
ভাড়া কত পরিমাণ দিয়াছে, তাহাও সব জানিবে।

এই প্রকার সমাহর্ত্নিযুক্ত তাপসব্যক্ষন গৃঢ়পুক্ষেরা ক্রমক, গোরক্ষক (গোয়ালা), বৈদেহক (বণিক্) ও (গোপাদি) অধ্যক্ষগণেরও শোচাশোঁচ ( ওদ্ধ অন্তদ্ধ ব্যবহার)-সম্বদ্ধে সব জানিবে। (উক্ত তাপসব্যক্ষন গৃঢ়পুরুষদিগের) পুরাণচোরের বেশধারী শিয়গণও চৈত্যে (বোদ্ধাদির আয়তন বা উদ্দেশবৃক্ষ), চতুম্পথ, শৃহাস্থান (নির্জ্জন স্থান), উদপান (কৃপাদিজলাধার) নদী, নিপান (কৃপানিকটস্থ জলাশায়), তীর্থায়তন (পুণ্যজলপ্রদেশ), আশ্রাম, অরণ্য, পর্বত ও বনগহনে অবস্থিত থাকিয়া চোর, শত্রু ও (শত্রুপ্রফু তীক্ষাদি) প্রবীর (সাহসিক) পুরুষদিগের সেথানে প্রবেশন, অবস্থান ও (তথা হইতে) গমনের প্রয়োজন কি, সেই সব বিষয় সমাক উপলব্ধি করিবে।

এইভাবে উত্থানযুক্ত বা উত্যোগী হইয়া সমাহর্তা জনপদবিষয়ে চিস্তা করিবেন; এবং (তন্নিযুক্ত গৃহপতিবাঞ্চনাদি) সংস্থা-নামক গৃঢ়পুরুষেরা জনপদসম্বন্ধে সব কার্য্য পর্য্যবেক্ষণ করিবে। এই সংস্থাগুলির উপর দৃষ্টি রাখিবার জন্য অন্য তৎসদৃশ সংস্থাপ্ত নিযুক্ত থাকিবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাম্ব্রে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক ধিতীয় অধিকরণে সমাহর্জ্প্রচার ও গৃহপতি-বৈদহক-তাপসব্যঞ্জনদিগের কার্য্য-নামক পঞ্চত্রিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৫৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# ষট, ত্রিংশ অধ্যায় ৫৬শ প্রকরণ—নাগরিকের কর্ত্তব্য

সমাহর্জা যেমন জনপদের কার্য্যসম্বন্ধে চিন্তা করেন, নাগরিকও (নগরের কার্য্যে নিযুক্ত মহামাত্র পুরুষও) তেমন নগরের কার্য্য সম্বন্ধে চিন্তা করিবেন (অর্থাৎ গোপ ও স্থানিকের সহায়তায় সর্বপ্রকার কার্য্যভার গ্রহণ করিবেন)। (নাগরিকের অধীনস্থ) গোপ-নামক অধিকারী পুরুষ (উন্তম) দশটি কুলের, (মধ্যম) বিংশতি কুলের ও (অধম) চল্লিশ কুলের চিন্তাভার গ্রহণ করিবেন। তিনি (গোপ) সেই সব কুলে বিভ্যমান স্ত্রীলোক ও পুরুষদিগের জাতি, গোত্র নাম ও কর্ম (ব্যবসায়) সহ তাহাদিগের সংখ্যা, আয় ও ব্যয় জানিয়া রাথিবেন (অর্থাৎ এই সব বিষয়ের হিসাব লিপিবদ্ধ রাথিবেন)।

এই প্রকার স্থানিক-নামক অধিকারী পুরুষ তুর্গ বা নগরের চতুর্ভাগের চিন্তাভার গ্রহণ করিবেন (অর্থাৎ চারিটি বিভাগ বা ভয়ার্ডে নগরকে বিভক্ত করিয়া নাগরিক ইহার প্রত্যেকটিতে এক জন স্থানিক নিযুক্ত করিবেন এবং

তাঁহার কর্ত্তব্য হইবে নগরবাসী স্ত্রীপুরুষগণের জাতি, গোত্র নাম ও কর্ম এক তাহাদের সংখ্যা, আয় ও ব্যয়ের হিসাব রাখা )।

(নগরে) থাঁহারা ধর্মশালার তত্ত্বাবধায়ক তাঁহারা পাষ্ট্রী (অর্থাৎ পাশুপাত-শাক্য-ভিক্ষ্ প্রভৃতি বিভিন্ন সম্প্রদায়ের) পথিকদিগকে (গোপ ও স্থানিকের নিকট) আবেদন করিয়া সেথানে বাস করিতে দিতে পারিবেন। এবং তাঁহারা থাঁহাদের সম্বন্ধে স্বয়ং ভালরূপ জানেন সেই সব তপস্বী ও শ্রোত্রিয়দিগকে (সেথানে নিজ্বদায়িত্বে) বাস করিতে দিতে পারিবেন।

কারুগণ ও শিল্পীরা (নিজের বিশ্বস্ত) স্বজনকে নিজ নিজ কর্মস্থানে বাস করিতে দিতে পারিবে। বৈদেহকেরাও (বণিকেরাও) স্বকর্মস্থানসমূহে (বিশ্বস্ত) তৎ-তৎপণ্য-ব্যবসায়ীদিগকে বাস করিতে দিতে পারিবে। (.কিন্তু), যে পণ্য-বিক্রয়ী অনির্দিষ্ট দেশে ও অনির্দিষ্টকালে পণ্যসমূহের বিক্রয়কারী ও যে অস্বীয় (অর্থাৎ পরকীয়) পণ্যের ব্যবহার বা ব্যাপার করে, (বৈদেহকদিগকে গোপ ও স্থানিকের নিকট) তাহাদিগের নাম জানাইয়া দিতে হইবে।

শোণ্ডিক (মভবিক্রেতা), পাক্রমাংসিক (প্রক্ষাংসবিক্রেতা), ওদনিক (অন্নবিক্রেতা) ও রূপাজীবা (বেশা) বিশেষ পরিচিত লোককে (নিজ নিজ খানে) বাস করিতে দিতে পারে এবং যে লোক অত্যধিক ব্যয় করে ও জীবনানপেক্ষী কর্ম করে, (অর্থাৎ অতিমাত্রায় মত্যাদিপান আরম্ভ করে), তাহাদিগকে সেই সব লোকের স্ট্রচনা (গোপ ও স্থানিকসমীপে) করিতে হইবে।

যে ব্যক্তি প্রচ্ছন্নভাবে (অর্থাৎ নিজ অপরাধ প্রকাশের ভয়ে অন্তকে না জানাইয়া) (শস্ত্রাদিলারা বা ছইব্যাধিপ্রভৃতিলারা উৎপাদিত ) ব্রণের চিকিৎসা করাইতে আদে এবং যে ব্যক্তি (রোগ ও মরণোৎপাদক) অপথ্য, দ্রব্য ব্যবহার করে বা প্রস্তুত করে, চিকিৎসককে গোপ ও স্থানিকের নিকট তাহাদিগের নাম নিবেদন করিতে হইবে এবং ( বাহার বাড়ীতে এইরপ অপকার্য্য করা হইবে সেই ) গৃহস্বামীকেও উক্ত রূপ নিবেদন করিতে হইবে; এবং তাহারা (চিকিৎসক ও গৃহস্বামী) তাহা করিলেই দোষমুক্ত বলিয়া গণ্য হইবেন। অন্তথা (অর্থাণ তদ্ধপ নিবেদন না করিলে) তাঁহারা উভয়েই অপরাধীর সমান দোষযুক্ত গণ্য হইবেন।

( গৃহস্বামী তদীয় গৃহ হইতে ) প্রস্থানকারী ও ( তদীয় গৃহে ) আগমুনকারীর নামও (গোপ ও স্থানিকের নিকট ) নিবেদন করিবেন। অগ্রথা সেই রাত্রিতে ষদি সেই লোকেরা (কোনও প্রকার চৌর্য্যাদি দোষে) দোর্যী হয়, তাহা ছইলে গৃহস্বামীকেও সেই দোষের ভাগী করিতে হইবে। যদি কোন রাত্রি ক্ষেমযুক্তই (অর্থাৎ চৌর্য্যাদি-রহিতই) থাকিয়া যায়, তথাপি (অনিবেদনকারী গৃহস্বামীকে) ৩ পদ দণ্ড দিতে হইবে।

স্থপথচারী ও উৎপথচারী লোকেরা (মতান্তরে মহামার্গচারী বৈদেহকাদিবাঙ্কন লোকেরা ও বিবীতপথচারী গোপালকাদিবাঞ্কন লোকেরা) নগরের বাহিরে
ত ভিতরে যে সব দেবগৃহ, পুণাস্থান, বন শ্বশানস্থান আছে সেথানে কোনও
ব্যক্তিকে ব্রণযুক্ত, (শন্ত্রাদি) আবাঞ্কনীয় উপকরণহস্ত, নিজ শক্তির অধিক
ভারযুক্ত ভাগুবাহী, ভীত বা ত্রস্ত, (রাত্রিজাগরণাদির ফলে) অত্যন্ত নিদ্রাপন্ন,
দীর্ঘপথসঞ্চারে ক্লান্ত, বা অজ্ঞাতপূর্ক বলিয়া দেখিতে পাইলে তাহাদিগকে
ধরিয়া ফেলিবে (অর্থাৎ গোপ ও স্থানিকের হস্তে সমর্পণ করার জন্ম গ্রেপ্তার
করিবে)।

এই প্রকারে (নগরের) অভ্যন্তরে যে সব শৃত্যগৃহ, শিল্পশালা, শৌণ্ডিকাবাস (মদের দোকান), ঔদনিকাবাস (অন্নবিক্রয়স্থান বা হোটেল), পাকমাংসিকাবাস (প্রক্রাংসানবিক্রয়স্থান), দ্যতবাস (জ্য়ারীর আড্ডা) ও পাষণ্ডাবাস (বৌদ্ধাদি সম্প্রদায়ের লোকদিগের আয়তন) আছে, সেই সব স্থানে (নাগরিকের অধীনস্থ গৃঢ়পুরুষেরা সত্রণাদি লোকের) অন্থেষণ করিবে (অর্থাৎ সেই সব স্থানে আয়েষবণের ফলে সেইরূপ দোষী লোক পাইলে তাহারা তাহাদিগকে নাগরিকাদির নিকট সমর্পণ করিবে)।

গ্রীষ্মকালে দিনের মধ্যম ছই চতুর্থ ভাগে ( অর্থাৎ দ্বিতীয় ও তৃতীয় প্রহরে সকলের পুক্ষেই তৃশ্ধদিনির্মিত গৃহে ) অগ্নি-প্রজালন নিষিদ্ধ। এই নিষেধের অমান্তকারীকে ট্র পণ **অগ্নিদণ্ড** দিতে হইবে। ( কিন্তু, তাহারা ) ( পাককর্মাদির জন্ম গৃহের ) বাহিরে অগ্নির আশ্রমন্থান ( চুল্লী প্রভৃতি ) করিয়া লইতে পারিবে।

কোনও লোক যদি পাঁচটি জলের ঘটা বাড়ীতে না রাথে (মতান্তরে ত্পুরবেলা ১২ইটা হইতে বৈকাল ৫ইটা প্রান্ত পাঁচ ঘটিকা জন্নির কার্য চালায়), তাহা হইলে তাহাকে ট্র পণ দণ্ড দিতে হইবে। (গৃহের ঘারদেশে) জলকুন্ত, জোগাঁ (দারুময় জলাধার), নিঃক্রোণী (অধিরোহিণী বা সিঁড়ি) পরত (ক্রুঠার), শূর্প (অভিমূথে ধুমপ্রসার-নিবারণ জন্ম কুলো), অঙ্কুশ (দক্ষমান বস্তর আকর্ষণ জন্ম ত্ক্), কচগ্রহণী (চিরুণীর মত বস্তবিশেশ,

যক্ষারা পটলম্বিত ত্পাদি অগ্নিদাহকালে অপসরণ করা যায়) ও দৃতি ( চর্মনির্মিত উদকপাত্রবিশেষ ) না রাখিলে ( গৃহস্বামীর ) हे পণ দণ্ড হইবে।

( গ্রীমকালে ) তৃণ ও কট ( চাটাই )-বারা নির্মিত ( গৃহসমূহ ) উঠাইরা ফেলিতে হইবে। আরিজীবীদিগকে ( অর্থাৎ বে সব কর্মকার অগ্নির সাহায়ে জীবিকা অর্জন করে তাহাদিগকে) একস্থানে বাস করিতে দিতে হইবে। রাত্রিতে অক্সন্থানে সঞ্চরণ না করিয়া গৃহস্থামীরা স্থ স্থ গৃহের ম্থবারে বাস করিবে। রথ্যাতে ( গাড়ীর রাস্তাতে ) সহস্র সহস্র জল-কুম্বপঙ্কি থাকিবে এবং চতুপথে ( চৌরাস্তায় ), ( নগরাদির ) বারদেশে ও রাজপরিগ্রহেও ( অর্থাৎ রাজকোষগৃহ, কুপাগৃহ, কোষ্ঠাগার ও গজশালা প্রভৃতিতেও ) তাহা থাকিবে।

যদি কোন গৃহস্বামী কোন বাড়ীতে অগ্নিদাহ দেখিয়া সাহায্যার্থ সেদিকে ধাবিত না হয়, তাহা হইলে তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। গৃহস্বামীর বাড়ীতে যে ব্যক্তি ভাড়া দিয়া বাস করে সে-ও যদি ঐ অবস্থায় ধাবিত না হয়, তাহা হইলে তাহার ৬ পণ দণ্ড হইবে। (গৃহস্বামীর) প্রমাদবশতঃ তদ্গৃহে আগুন লাগিলে তাহার ৫৪ পণ দণ্ড হইবে (কোন কোন ব্যাখ্যাকারের মতে এই দণ্ড হইবে প্রমাদী গৃহরক্ষকের প্রতি)।

যে ব্যক্তি (অক্সের গৃহে) অগ্নিসংদীপন করে, (ধরা পড়িলে) তাহাকে সেই অগ্নিধারাই বধ করিতে হইবে (কণ্টকশোধন অধিকরণের ১১শ অধ্যায়েও আদীপকের দণ্ড বিহিত আছে)।

রথ্যার (গাড়ীর রাস্তার) উপর ধৃলি (বা তচ্জাতীয় আবর্জনাদি) নিক্ষেপ করিলে, অপরাধীর ট্র পণ দণ্ড হইবে। (রথ্যাতে) পঙ্কমিপ্রিত জলবারা নিরোধ ঘটাইলে অপরাধীর ঠ্র পণ দণ্ড হইবে। রাজমার্গে উক্ত হুইপ্রকার দোষ (অর্থাৎ পাংস্ক্রাস ও পঙ্কমিপ্রিত জলবারা নিরোধ) ঘটিলে, অপরাধীর দিঞ্জণ দণ্ড হইবে। অর্থাৎ ঘণাক্রমে ঠ্র ও ই পণ দণ্ড হইবে)।

(রাজমার্গস্থিত) পুণাস্থান, উদকস্থান (কৃপতড়াগাদি), দেবগৃহ ও রাজপরিগ্রহে (রাজকোষগৃহাদিতে) বিষ্ঠা বিসর্জ্জন করিলে, অপরাধীর (ষথাক্রমে)
উত্তরোক্তর এক পণ অধিক করিয়া দণ্ড দিতে হইবে (অর্থাৎ রাজমার্গে > পণ,
পুণাস্থানে ২ পণ ইত্যাদিরূপে দণ্ড দিতে হইবে)। (কিন্তু,) তৎ-তৎ-স্থানে
মৃত্র পরিত্যাগ করিলে অপরাধীর দণ্ড পূর্বোক্ত দণ্ডের অর্দ্ধ হইবে।

( কিন্তু, ) সেই সব স্থানে ভৈষজ্য ( বিরেচনদ্রব্য-সেবন ), ( অতিসার প্রমেহাদি ) ব্যাধি ও ভয়নিমিত্তক বিঠামৃত্রত্যাগে অপরাধীরা দণ্ডণীয় হইবে না। বিড়াল, কুকুর, নকুল ও সর্পের মৃতদেহ নগরের মধ্যে কেলিয়া রাখিলে অপরাধীর ৩ পণ দণ্ড হইবে। গর্দ্ধভ, উট্র, অশ্বতর (থচ্চর), অশ্ব ও অক্যান্ত পশুর মৃতদেহ সেম্বানে নিক্ষেপ করিলে অপরাধীর ৬ পণ দণ্ড হইবে। মামুষের মৃতদেহ সেখানে ফেলিলে অপরাধীর ৫০ পণ দণ্ড হইবে।

মৃতদেহ লইয়া যাওয়ার জন্য নির্কিষ্ট পথ ব্যতীত অন্য পথে তাহা লইয়া গেলে, এবং নগরের যে দ্বার দিয়া শব নিক্রমণের ব্যবস্থা আছে সেই দ্বার ব্যতীত অন্য দ্বার দিয়া তাহা নিলে, অপরাধীর প্রথমসাহসদও হইবে। এবং দ্বাররক্ষকেরা (প্রতিষেধ না করিলে) তাহাদিগকে ২০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। (নির্কিষ্ট) শ্বশান ব্যতীত অন্যত্ত শব প্রোথিত ও দাহিত করিলে অপরাধীর ১২ পণ দণ্ড হইবে।

রাত্রির উভয় দিকে অর্থাৎ রাত্রির প্রথমভাগে ও শেষভাগে, (য়থাক্রমে) ছয় নালিকা (অর্থাৎ ২৪ মিনিট করিয়া ৬×২৪ = ১৪৪ মিনিট বা ২ট্ট ঘণ্টা) অতীত হইবার সময় একবার ও ছয় নালিকা অবশিষ্ট থাকিবার সময়ে আর একবার যামতুর্য্য (অর্থাৎ পথে জনসঞ্চারের নিরোধস্চক বাছাঘোষণা) করা হইবে (ইহার তাৎপর্য্য এই য়ে, রাত্রিতে এই তুইবার তুর্যানিনাদের মধ্যবত্তী সময়ে পথে জনসঞ্চার নিষিদ্ধ—ইহাই তাৎকালিক সাদ্ধ্য আইন)। এই তুর্যাশন্ধ শোনা গেলে পর, যদি কোনও লোক (এই নিষিদ্ধসঞ্চার সময়ের) প্রথম যামে (অর্থাৎ ত্রিযামা বা রাত্রির প্রথম ৪৮ মিনিটের মধ্যে) ও পশ্চিম যামে (বা তৃতীয় ৪৮ মিনিটের মধ্যে) রাজবাড়ীর নিকটে সঞ্চরণ করে তাহার প্রতি ১ট্ট পণ অকালে সঞ্চরণজনিত অপরাধের জন্ম দণ্ড বিহিত হইবে। এবং (সে যদি) এই নিষিদ্ধ সময়ের মধ্যম যামে বা মধ্যবর্ত্তী ৪৮ মিনিটের মধ্যে তাহা করে, তাহা হইলে তাহার উপর উক্ত দণ্ডের বিগুণ অর্থাৎ ২ই দণ্ড ধার্য্য হইবে। (এই দণ্ড নগরের মধ্যে সঞ্চরণ-বিষয়ক দণ্ড, কিন্তু,) নগরের বহির্দেশে এই অপরাধের জন্ম অপরাধীর উপর চতুগুণ অর্থাৎ ৫ পণ দণ্ড বিহিত হইবে।

(উক্ত নিষিদ্ধ সময়ে) যে স্থানে সঞ্চরণশীল লোককে সহজেই চোরাদি বলিয়া
আশকা করা যাইতে পারে এমন স্থানে চলিবার সময়ে কেহ ধরা পড়িলে, কিংবা
(অবগুঠনাদি) চিহ্নযুক্ত অবস্থায় সে ধরা পড়িলে, কিংবা তাহার পূর্বকৃত
চোর্ঘ্যাদিবৃত্তি প্রতীত হওয়ায় সে ধরা পড়িলে, তাহাকে (তাহার নাম, ধাম,
আগমনাদির কারণসংক্ষে) প্রশ্ন করিতে হইবে।

( এমন কোনও ব্যক্তি যদি ) রাজকীয় নিবাস ও কোশগৃহাদিতে ( অন্ত্রমতি ব্যতীত প্রবেশ করে ও নগররক্ষার জন্ম নির্মিত প্রাকারাদিতে আরোহণ করে, তাহা হইলে তাহার উপর মধ্যমসাহসদও বিহিত হইবে।

অসময়ে পথে সঞ্চরণশীল ব্যক্তিরা তথনই ধৃত হইবে না, যথন তাহারা স্তিকা (অর্থাৎ স্তিকায় শুশ্রুষা), চিকিৎসক (অর্থাৎ তাহাকে ডাকা), প্রেত (অর্থাৎ মৃতদেহের শাশানে নির্হরণ), প্রাদীপ্যান (প্রদীপ লইয়া নিজকে প্রকাশ করিয়া গমন), নাগরিকত্ব্য (নাগরজনের একত্রীকরণস্চক ত্র্যাধ্বনি), প্রেক্ষা (রাজার অম্বজ্ঞাত নাটকাদির প্রয়োগ-দর্শন) ও অগ্নির (অর্থাৎ নিজের বা পরের বাড়ীতে অগ্নিদাহের) কারণে বাড়ীর বাহিরে সঞ্চরণ করে এবং তাহাদের হন্তে (নাগরিকাদি-প্রদত্ত) মূলা বা মূলাযুক্ত ছাড়পত্র থাকিলে তাহারা অগ্রাহ্ হুইবে (অর্থাৎ গ্রেপ্তারের যোগ্য হুইবে না)।

চাররাত্রিতে ( অর্থাৎ মহোৎসবাদির জন্ম অমুমতসঞ্চারা রাত্রিতে ) ষে-সব মহন্ম প্রচ্ছরবেশে (নিজের স্বরূপ লুকাইয়া), অথবা, বিপরীত বেশে ( যথা স্ত্রীলোক পুরুষের বেশে ও পুরুষ স্ত্রীলোকের বেশে ) পথে চলে, কিংবা পরিব্রাজকের বেশে চলে, এবং যাহারা দণ্ড ও শস্ব হস্তে লইয়া চলে, তাহাদিগের দোষ পরীক্ষা করিয়া দণ্ড দিতে হইবে।

আক্ষণ-সঞ্চারেও থে লোক অবার্য (অর্থাৎ যাহার সঞ্চরণে অন্নমতি আছে) তাহাকে বারণ করিলে এবং যে লোক বার্য্য (অর্থাৎ বারণের যোগ্য ) তাহাকে বারণ না করিলে, রক্ষিপুরুষদিগকে অক্ষণসঞ্চারের যে দণ্ড বিহিত আছে (অর্থাৎ ১ট্ট পণ) তাহার দ্বিগুল (অর্থাৎ ২ট্ট পণ) দণ্ড দিতে হইবে। যে রক্ষিপুরুষ কোন দাসী স্ত্রীলোককে বলাৎকার-সহকারে গমন করিবে, তাহাকে প্রথমসাহসদণ্ড দিতে হইবে; (গণিকাদি) অদাসী স্ত্রীলোককে গমন করিলে তাহার উপর মধ্যমসাহসদণ্ড এবং কাহারও ভার্য্যার্রপে পরিগৃহীত স্ত্রীলোককে (সে দাসীই হউক, বা অদাসীই হউক না কেন) গমন করিলে উত্তমসাহসদণ্ড তত্বপরি প্রয়োজ্য হইবে; (কিন্তু), কোন কুলস্ত্রীকে গমন করিলে তাহাকে বধদণ্ডে দণ্ডিত করিতে হইবে।

ষদি (কোনও ব্যক্তি) যে কোন চেতনবিষয়ক ও অচেতনবিষয়ক রাত্রিদোষ (অর্থাৎ রাত্রিতে লক্ষিত দোষ) নাগরিকের (বা নগরাধিকারী শ্রেষ্ঠ রাজপুরুষের)
নিক্ট নিবেদন না করে, কিংবা (রক্ষিপুরুষাদির) কোনও প্রকার প্রমাদের
কারণ (ষ্থা মৃদ্ধ পানাদি) উপস্থিত হইলে তাহা তাঁহাকে না জানায়, তাহা

ছইলে তাহার উপর তদীয় অপরাধের অহরপ দণ্ড বিহিত হইবে ( এই বাক্যে কোন কোন ব্যাখ্যাকার 'নাগরিকক্ত' পদটিকে 'নগরবাসী যে কোন লোকের' এই অর্থে ব্যবহৃত বলিয়া গ্রহণ করিয়া 'আশংসতঃ' পদটিকে ইহার বিশেষণ বলিয়া ধরিয়াছেন, কিন্তু, প্রসক্ষপর্য্যালোচনায় এই ব্যাখ্যা সমীচীন মনে হয় না)। নাগরিক সর্ব্বদাই উদকন্থান (নদীকৃপতড়াগাদি), মার্গ (প্রবেশ ও নির্গমের রান্তা), ভূমি (স্থলভূমি), ছরপথ (স্থরক্ষাদি), বপ্র (প্রাকারাদির আধারভূত মৃত্তিকাত্পপ), প্রাকার (ছর্গের প্রাচীর) ও অক্যান্ত (অট্রালকপরিথাদিরূপ) রক্ষাসাধন প্রব্যসমূহের অবেক্ষণ করিবেন এবং নই (স্বামীর প্রমাদে যে প্রব্য হার্মাইয়া গিয়াছে), প্রস্মৃত (স্বামী যে প্রব্য ভূলিয়া গিয়াছে) ও অপসত (যে বিপদ বা চতুপ্পদাদি জন্তপ্রভৃতি স্বয়ং অন্তব্ত চলিয়া গিয়াছে) প্রব্যসমূহের রক্ষণ-কার্য্য চালাইবেন (অর্থাৎ যতক্ষণ সেই সব বস্তুর মালিক না পাওয়া যাইবে ততক্ষণ সেগুলিকে তিনি রক্ষা করিবেন)।

কারগোরে অবস্থিত বালক, বুদ্ধ, ব্যাধিগ্রস্ত ও অনাথ-( অসহায়-) জনদিগকে (রাজার) জন্মনক্ষত্রের দিনে ও পূর্ণিমাতিথিতে কারামৃক্ত করিয়া দিতে হইবে। পূণ্যকর্মাচরণশীল ব্যক্তিরা যদি কোনও আকন্মিক অপরাধে কারাদতে দণ্ডিত হন, তাহা হইলে তাঁহারা সময় বা সংবিৎ ( অর্থাৎ 'ভবিশ্বতে এইরূপ অপরাধ আর করিব না' ইত্যাদিরূপ প্রতিজ্ঞা)-দারা প্রতিবদ্ধ হইয়া নিজের দোবের অস্করপ নিক্রয় ( অর্থদণ্ড ) দিতে পারেন ( অর্থাৎ কারা-বাসের পরিবর্জে অর্থদণ্ড দিয়া নিক্কতি লাভ করিতে পারেন )।

প্রতিদিবস অথবা প্রত্যেক পঞ্চমদিনে কারাগারে আবদ্ধ লোকদিগকে (নিক্রয়-গ্রহণবারা) বিশোধিত করিতে হইবে (অর্থাৎ তাহাদিগকে বদ্ধনমূল করিয়া দিতে হইবে ) এবং এই বিশোধন তিনপ্রকার হইতে পারে, মথ (১) কয়েদীয়া (ভারবহনাদি) কায়িক কর্ম করিয়া, কিংবা (২) শারীরিক দও ভূগিয়া, অথবা, (৩) হিরণ্য বা নগদ টাকা প্রদান করিয়া বদ্ধন-মৃক্তি পাইতে পারে॥ ১॥

কোন ন্তন দেশ জয় করিয়া লাভ করিলে, কিংবা যুবরাজের অভি<sup>বেক</sup> হইলে, অথবা, পুত্রের জন্ম হইলে (রাজা) কারাবন্ধন হইতে কয়েদীদিগের মো<sup>ক</sup> বিধান করিতে পারেন ॥ ২ ॥

কোটিলীয় অর্থশাল্পে অধ্যক্ষপ্রচার-নামক বিতীয় অধিকরণে নাগরিকের "কর্ম্বর্য-নামক বট্তিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৫৭ অধ্যায় ) সমাপ্ত।
ভিতীয় অধিকরণ সমাপ্ত।

## ধর্ম্মস্থীয়—তৃতীয় অধিকরণ প্রথম অধ্যায়

#### ৫ ৭শ-৫৮শ প্রকরণ—ব্যবহারস্থাপনা ও বিবাদপদনিবদ্ধ

অমাত্যগুণোপেত তিনটি তিনটি ধর্মছ-নামক অধিকারী পুরুষ জনপদের সন্ধিস্থলে (অর্থাৎ তুই জনপদের মিলনস্থলে অবস্থিত অন্তপালত্বর্গে), সংগ্রহণে (দশগ্রামীর প্রধান অধিষ্ঠানে), দ্রোণন্থে (চতুঃশতগ্রামীর প্রধান অধিষ্ঠানে) ও স্থানীয়ে (অষ্টশতগ্রামীর প্রধান অধিষ্ঠানে) (ব্যবহারাধিকরণ খুলিয়া নিয়া) ব্যবহারবিষয়ক (অর্থাৎ ঝণাদানাদি ব্যবহারবিষয়-সম্বন্ধী) অর্থ (মামলা) বিচার করিবেন।

(উক্ত ধর্মন্থ বা অর্থন্তর্জা বিচারকেরা), যে যে ব্যবহার ভিরোহিত (অর্থাৎ যে ব্যবহারে দত্ত ও গৃহীত বিষয় প্রচ্ছন্ন থাকে), অন্তরগাারকৃত্ত (অর্থাৎ যে ব্যবহার গর্ভাগারে বা বাস্তকের মধ্যন্থিত গৃহে করা হইয়াছে), নক্তকৃত্ত (অর্থাৎ যে ব্যবহার রাত্রিতে করা হইয়াছে), অরণ্যকৃত্ত (অর্থাৎ যে ব্যবহার রাত্রিতে করা হইয়াছে), অরণ্যকৃত্ত (অর্থাৎ যে ব্যবহার ছন্ম বা হলসহযোগে কৃত হইয়াছে) ও উপহ্বরকৃত্ত (অর্থাৎ যে ব্যবহার অনান্ধিকভাবে গোপন করা হইয়াছে) দেগুলিকে প্রতিষিদ্ধ বলিয়া (অর্থাৎ ব্যবহারিকনীতির বিক্লন্ধ বলিয়া) মত দিবেন। যে ব্যক্তি এইরপ প্রতিষিদ্ধ ব্যবহার প্রয়োগ করিবে বা প্রযোজিত করিবে, তাহাকে প্রথমসাহসদত্ত ভোগ করিতে হইবে। গাঁহারা এইরূপ প্রতিষিদ্ধ ব্যবহার ভনিবেন, সেই সব সাক্ষ্মরা (মর্তাজ্বরে, ধর্মন্থেরা) প্রত্যেকে উক্ত দণ্ডের অর্দ্ধদণ্ড দিতে বাধ্য থাকিবেন। কিন্তু, গাঁহারা এইরূপ প্রতিষিদ্ধ ব্যবহারে শ্রদ্ধেয় বা নিন্ধপট ব্যক্তি, তাঁহাদের জন্ম কেবল সাধ্যন্রব্যের হানিই দণ্ড বলিয়া গৃহীত হইবে (অর্থাৎ উক্ত ক্ষতি ব্যতীত তাঁহাদের আর অতিরিক্ত কোন দণ্ড দিতে হইবে না।

(উক্ত প্রতিষিদ্ধ ব্যবহারসম্বন্ধে অপবাদবিধি নির্মণিত হইতেছে।)
তিরোহিত-ব্যবহার (প্রতিষিদ্ধ হইলেও) ইহা সিদ্ধ বলিয়া গৃহীত হইবে, যদি
ইহাতে পরোক্ষে আধিবারা (অর্থাৎ গৃহাদি বন্ধক রাখিয়া) ঋণগ্রহণ করা হয়,
এবং যদি ইহা (লোক সমাজের) নিন্দার বিষয়ীভূত না হয়।

অন্তরগারক্বত-ব্যবহার (প্রতিষিদ্ধ হইলেও) সিদ্ধ বলিরা গৃহীত হইবে, যদি ইহা অনিধাদিনী (গৃহের বাহিরে অনির্গমশীলা) স্ত্রী, কিংবা অনষ্টচেতন রোগীর দারা দারবিভাগ, নিক্ষেপ (বা ফ্রাস), উপনিধি ও বিবাহসংযুক্ত-নামক প্রকরণে উক্ত স্ত্রীধনাদি-সম্বন্ধে ব্যবহার হইয়া থাকে।

রাত্রিকত-ব্যবহার (প্রতিষিদ্ধ হইলেও) সিদ্ধ (অর্থাৎ আইন-সঙ্গত) বলিয়া গৃহীত হইবে, যদি সে সব ব্যবহার সাহস, অন্থপ্রবেশ (পরধনাদি স্বগৃহে আনয়ন), কলহ, বিবাহ ও রাজনিয়োগবিষয়ক ব্যাপার হয়, কিংবা যদি (বেশ্যাপ্রভৃতি) যাহারা রাত্রির প্রথমভাগে ব্রাবহার করে ইহা তাহাদের ব্যাপার হয়। অরণ্যকৃত-ব্যবহার (প্রতিষিদ্ধ হইলেও) সিদ্ধ বলিয়া গৃহীত হইবে, যদি সার্থ (বিলক-সংঘ), ব্রজবাসী (গোপালক), আশ্রমবাসী (বানপ্রস্থাদি), ব্যাধ ও চারণদিগের ('চার'-পাঠে গৃঢ়পুরুষদিগের) মধ্যে যাহারা অরণ্যচর (অর্থাৎ যাহাদিগকে অরণ্যেই প্রায়শঃ বাস করিতে হয় তাহাদিগের)-ঘারা ইহা ক্বত হয়। উপধিক্বত-ব্যবহার (প্রতিষিদ্ধ হইলেও) সিদ্ধ বলিয়া গৃহীত হইবে, যদি ইহা যাহারা গৃঢ়-পুরুষের কার্য্য করিয়া জীবিকা নির্কাহ করে তাহাদিগের ঘারা ক্বত হয়।

উপহ্বরক্ষত-ব্যবহার (প্রতিষিদ্ধ হইলেও) সিদ্ধ বলিয়া গৃহীত হইবে, যদি ইহা গোপনে সম্পাদিত সমবায়-বিষয়ক হয়।

উক্তাতিরিক্ত প্রকারের তিরোহিতাদি ব্যবহার সিদ্ধ বলিয়া গণ্য হইবে না।
মাহারা পরতন্ত্র (অর্থাৎ যাহারা অন্তের আশ্রের থাকে বলিয়া ব্যবহার-সম্বন্ধীয়
ব্যাপারে স্বাতন্ত্রাবিহীন), তাহাদের ব্যবহারও সিদ্ধ বলিয়া গণ্য হইবে না,
(এইরপ পরতন্ত্র ব্যক্তিদিগের ব্যবহারের উদাহরণ দেওয়া হইতেছে), মথা—
(১) (ব্যবহারনিপুণ্ ) পিতা বিভ্যমান থাকা কালে, পুত্রনারা কৃত ব্যবহার
অসিদ্ধ; (২) (কুট্মন্ডরণার্থ) পুত্র বিভ্যমান থাকা কালে, (নির্ত্ত-ব্যবহার)
পিতাদ্বারা কৃত ব্যবহার অসিদ্ধ; (৩) কুল হইতে নিম্পতিত প্রাতাদ্বারা,
(৪) (দায়বিভাগের পূর্বে ) অবিভক্ত-দায়াংশ কনিষ্ঠ ভাইনারা; (৫) (কুট্মন্ডরণার্থ) পতি ও পুত্র বর্ত্তমান থাকা কালে, স্বীদ্বারা; (৬) (স্বামীর অধীন)
দাস ও (আধিগ্রাহকের অধীন) আহিতকদ্বারা; (৭) মাহারা অপ্রাপ্ত-ব্যবহার
(না-বালক) ও মাহারা অতীত-ব্যবহার (অতিবৃদ্ধ) তাহাদিগের দ্বারা, এবং
(৮) যাহারা অভিশপ্ত (লোকনিন্দিত, মতান্তরে, মহাপাতক-দ্বিত), প্রব্রজ্বত
(সন্মানী ), ব্যঙ্গ (মৃক্বধিরাদি) ও ব্যবনী (স্বী-পানাদিতে আসক্ত) তাহাদিগের
দ্বারা কৃত ব্যবহারও সিদ্ধ বলিয়া গণ্য হইবে না। কিন্ত, এই প্রকার লোকেরা

যদি রাজকীয় প্রধানগণৰারা ব্যবহার-বিষয়ে অধিকার পাইতে অহমতি পায়, তাহা হইলে তাহাদের দারা ক্বত ব্যবহার সিদ্ধ হইতে পারে। (উক্তভাবে যাহারা ব্যবহারবিষয়ে অধিকার প্রাপ্ত হইরে) তাহাদিগের মধ্যেও, যে ব্যক্তি ক্রুদ্ধ, হংখী, মন্ত, উন্মন্ত বা অবগৃহীত (দণ্ড-দণ্ডিত) তাহার দারা ক্বত ব্যবহারও সিদ্ধ বলিয়া গণ্য হইবে না। যে ব্যক্তি এই প্রকার (প্রতিষিদ্ধ) ব্যবহার করিবে, বা করাইবে বা ইহা শুনিয়া তাহাতে সাক্ষী হইবে, তাহাদিগের উপর পৃথগ্ভাবে যথাবিহিত (অথাৎ পূর্ব্বোক্ত) দণ্ড অপিত হইবে।

দর্বব ব্যবহারই যদি (লোকদিগের) নিজ নিজ জাতিমধ্যে, নিজ নিজ দেশে ও নিজ নিজ কালে স্ব-স্থ-ক্রিয়াক্রমে কৃত হয়, এবং দেইসব ব্যবহার যদি সম্পূর্ণ (অথিপ্রত্যথীর সান্নিধ্যপ্রভৃতি) সম্দাচার সহ কৃত হয় ও যদি তাহা গুদ্ধ (অর্থাৎ পরোক্ষত্মাদিদোষ-রহিত) দেশক বা সাক্ষীর নিকট কৃত হয় এবং যদি তাহার রূপ লক্ষণ, প্রমাণ ও গুণ (স্কুম্পইভাবে) সাক্ষাৎকৃত হয়, তাহ। হইলে সেই ব্যবহার দিদ্ধ বলিয়া গণ্য হইবে।

সর্প্রপ্রকার ব্যবহারসম্বন্ধেই উত্তরকালে ক্বত (লেখ্যাদিরূপ) করণ (পূর্প্রকাল ক্বত লেখ্যাদি অপেক্ষায়) অধিকতর বিশ্বসনীয়; কিন্তু আদেশ (ক্রয়প্রতিগ্রহাদিরূপ অথের স্বত্বস্থীকার? মতাস্তরে, বিনিময়ের উপদেশ) ও আধি সম্বন্ধে এই নিয়ম খাটিবে না (অর্থাৎ এই তুইপ্রকার ব্যবহারে উত্তরকালক্বত লেখ্যাদিরূপ করণই অধিকতর বিশ্বসনীয় হইবে)।

( এই পর্যান্ত ব্যবহার-স্থাপনা উক্ত হইল।)

(ধর্মস্থ),—বেদক বা অভিযোক্তা ও অবেদক বা অভিযোজ্যের নিজ নিজ (উত্তর্মর্থ-অধমর্থ ভাবরূপ) অবস্থা স্থাপিত করিলে পর, তাহাদের দেশ গ্রাম, জাতি, গোত্র, নাম ও কর্মের (জীবিকার্থ বৃত্তির) বিষয় লিথিয়া ক্লুইয়া, তাহাদের দেক ও গৃহীত) ঋণ এবং ইহার দান ও গ্রহণের (শকাদি) সংবৎসর, ঋতু, মাস, পক্ষ, দিবস, করণ (সাধনোপায়) ও অধিকরণ (সাধন-স্থান) লিপিবজ করিবেন, এবং বাদী ও প্রতিবাদীর প্রশ্নগুলির অর্থের (গুরুলঘু-) ভাবক্রমে সেগুলিকে পত্রে নিবেশিত বা নিবজ করিবেন। এবং পত্রনিবিষ্ট বা লেখ্যারোপিত বিষয়গুলি (তিনি) পরীক্ষা করিবেন।

( সম্প্রতি পরোক্ত-দোষের হেতুগুলি বর্ণিত হইতেছে, যথা )—(১) যে ব্যক্তি পূর্বানিবদ্ধ পাদ ( বিবাদ-বিষয় ) পরিত্যাগ করিয়া অন্ত পাদের উল্লেখে সংক্রাম্ভ হয় ( অর্থাৎ যেমন কেহ পূর্বে 'বাক্পাকয়া' লেখাইয়া পরে 'দণ্ডপাকয়োর' কথা বলে );

(২) যে ব্যক্তি পরবর্তী উক্তির ছারা পূর্ব্বের উক্তি স্থসর্থন্ধ করিতে পারে না;
(৩) যে ব্যক্তি অন্তের অদৃষ্ণীয় বাক্য দৃষিত বলিয়া উল্লেখ করিয়া চূপ করিয়া
থাকে; (৪) যে ব্যক্তি স্থান বা সাক্ষীর বিষয় নির্দেশ করিবে বলিয়া প্রতিজ্ঞা
করিয়াও, তাহা নির্দেশ করিতে বলিলে আর নির্দেশ করে না; (৫) যে ব্যক্তি
হীন সাক্ষী বা অসাক্ষীকে সাক্ষী বলিয়া নির্দেশ করে; (৬) যে ব্যক্তি নির্দিষ্ট
সাক্ষী না উপস্থাপিত করিয়া অন্ত এক সাক্ষীকে উপস্থাপিত করে; (৭) যে ব্যক্তি
তাহার সাক্ষী উপন্থিত হইয়া স্থদৃষ্ট অর্থ বা ঘটনা ঠিক বলিলে পরও 'ইহা এইরূপ
নহে' বলিয়া অস্বীকার করে; (৮) যে ব্যক্তি বিষয়টি সাক্ষীদিগের বচনছারা
নির্ণীত হউক এরূপ ইচ্ছা করে না; এবং (৯) যে ব্যক্তি সম্ভাবণের অমূপযুক্ত
স্থানে সাক্ষীদিগের সহিত গোপনে কথা বলে, তাহারা পরেয়াক্ত (পরা+উক্ত
বিপরীত বচন-দোষের হেতু হয় অর্থাৎ বিপরীতবচনজ্বনিত অপরাধে পরাজ্বের
কারণ হয়)।

এইরপ পরোক্ত বা বিপরীত উক্তির জন্ম অপরাধীর উপর (পরাজিতের দেয় অর্থের) পঞ্চমাংশ (মতাস্করে, পঞ্চন্ত্রণ) দণ্ড বিহিত হইবে। (সাক্ষী না উপস্থাপিত করিয়া) যে ব্যক্তি স্বয়ং বাদী হইবে (অর্থাৎ নিজেই বিনা সাক্ষ্যে নিজের নালিশ চালাইতে চাহিবে) তাহার দণ্ড হইবে দশবদ্ধ (পরাজিতের দেয় অর্থের দশণ্ডণ, বা মতাস্তরে, দশমভাগ)। পুকষগণের (সাক্ষীদিগের ? অথবা, ব্যবহার-দ্রষ্টা ধর্মন্থের কর্ম্মকরপুক্ষগণের) ভৃতি বা বেতন হইবে (পরাজিতের দেয় অর্থের) অন্তমাংশ। তণ্ডুলাদিদ্রব্যের মূলভেদ অন্ত্রসরণপূর্কক (সাক্ষীদিগের আনয়নার্থ) আনয়নকারীদিগের (ভোজনাদিনিমিক্তক) পথের থরচ নির্দ্ধারিত করা হইবে। উক্ত উভয়বিধ (অর্থাৎ পুক্রবভৃতি ও পুথিভক্ত) থরচ পরাজিত পক্ষের দিতে হইবে।

কোন অভিযুক্ত ব্যক্তি অভিযোক্তার বিৰুদ্ধে (প্রকৃত মামলা নিস্তীর্ণ না হওয়া পর্যান্ত ) প্রভ্যান্তিযোগ বা পাল্টা মামলা আনিতে পারিবে না ; কিন্তু, কলহ, সাহস, সার্থ ও সমবায়-বিষয়ে প্রস্তাভিযোগ চলিতে পারে। (এক ব্যক্তিয়ারা) কেহ অভিযুক্ত হইলে, অপর কোন ব্যক্তি সেই বিষয়ে আর তাহার বিৰুদ্ধে (নৃতন) অভিযোগ আনিতে পারিবে না।

ষদি কোন অভিযোক্তা অভিযুক্তকর্ত্ব প্রত্যুক্ত (অর্থাৎ দত্তোত্তর) হইয়া সেই দিনই (স্বপক্ষস্থাপনের জন্ম) প্রতিবচন (উত্তর) না দেয়, তাহা হইলে স্বে পরোক্তদ্যের অপরাধী হইবে (অর্থাৎ পরাজিত হইকে)। কারণ, অভিযোক্তাই নিজের কার্য্য সম্প্রধারণ করিয়া মামলায় প্রবৃত্ত হয়, (এবং প্রত্যুক্তর তৎক্ষণাৎ দিতেও সমর্থ হয় ) কিন্তু, অভিযুক্ত ব্যক্তি তাহা করিতে পারে না ( অর্থাৎ তাহার কার্য্যাতি সম্প্রধারণীয়, সম্প্রধারিত নহে )।

( তৎক্ষণাৎ ) প্রতিবচনদানে অসমর্থ অভিযুক্তকে তিন হইতে সাত দিন পর্যান্ত তজ্জন্য সময় দেওয়া ঘাইতে পারে। তাহার পরে ( অর্থাৎ দাত দিনের পরে প্রতিবচন বা জবাব না পাওয়া গেলে ) তাহার উপর কমপক্ষে তিন পণ ও উদ্ধ পক্ষে বার পণ অর্থদণ্ড বিহিত হইতে পারে। তিন পক্ষ (বা দেড়মাস) পার হইয়া গেলেও যদি অভিযুক্ত ব্যক্তি প্রতিবচন না দেয়, তাহা হইলে তাহার উপর 'পরোক্ত' অপরাধের দণ্ড ( পঞ্চবদ্ধাদি ) বিহিত হইবে এবং তাহার যে-সব দ্রব্য আছে তাহাদ্বারা অভিযোক্তার প্রার্থিত ধন শোধ দিতে হইবে; কিন্তু, ( তদ্দারা ষথাপ্রার্থিত ধন পূরণ না হইলেও তাহার জীবিকার উপযোগী (হলাদি) উপকরণসমূহ অভিযোক্তার অধিকারে যাইবে না। অপসরণপর অভিযুক্তেরও প্রতি উক্ত দণ্ডবিধান করা হইবে। আবার, অভিযোক্তাও যদি নিষ্পতিত বা অপক্ত হয় ( অর্থাৎ পলাইয়া যায় ), তাহা হইলে তাহার অপসরণের সঙ্গে সঙ্গেই তাহার উপর পরোক্ত-অপরাধের ভাব আরোপ করা যাইতে পারে (অর্থাৎ সে তথনই পরোক্ত-দোষে অপরাধী হইয়া দণ্ডার্হ হইবে)। কোন ব্যক্তি মৃত হইলে বা বিপদ্গ্রস্ত হইলে, সাক্ষীরা ( তাহার পুত্রাদিমধ্যে ) যাহাকে বা যাহাদিগকে বিভাৰিত করিবে, সে বা তাহারাই তাহার ধনাদি ( দিবে বা নিবে )। অভিযুক্ত ব্যক্তি (পরাজিত হইয়া ধনাদি না দিতে পারিলে) অভিযোক্তা তাহার (অভি-যুক্তের) পরাজয়দণ্ড (রাজন্বারে) দিয়া অভিযুক্তকে কাজ করাইয়া লইতে পারিবে। অথবা, অভিযোক্তা যথেচ্ছভাবে ( অভিযুক্তের কোন বন্ধুবান্ধবকে ) আধিরপে অভিযুক্তের করণীয় কর্ম-করণার্থ গ্রহণ করিবে। অথবা, (অভিযোক্তা) নিজের অকল্যাণ পরিহারার্থ নিজ রক্ষার ব্যবস্থা-সহকারে উক্ত পরাজিত বা আধিপুরুষকে নিজের কর্ম করিতে প্রযোজিত করিবে; কিন্তু, সেই কর্মকারী বান্ধণজাতীয় হইলে, তাহাকে দিয়া দে সেই কার্য্য করাইতে পারিবে না।

(সম্যগ্ভাবে ব্যবহারদর্শনরূপ) রাজধর্ম, (রাহ্মণাদি) চারি বর্ণ ও (রহ্মচর্য্যাদি) চারি আশ্রমভূক্ত লোকের বা লোক-সমাজের আচার রক্ষণ করে বলিয়া, ইহা (স্বতঃ) ক্ষীয়মাণ সর্ব্বপ্রকার ধর্মের প্রবর্ত্তক বা উজ্জীবনকারক হয়॥১॥ প্রত্যেকটি বিবাদ-বিষয় চারি পদের উপর (নির্ণয় জন্ম) নির্ভর করিয়া থাকে, যথা—(১) ধর্ম (ধর্মশাস্ত্রোক্ত বিধি-নিষেধ), (২) • ব্যবহার (অর্থশাস্ত্রোক্ত ব্যবহার-বিধি), (৩) চরিক্ত (দেশাচার, লোকাচার প্রভৃতি) ও (৪) **রাজশাসন** (রাজাজ্ঞা)। এই চারি পাদ বা অঙ্গের মধ্যে পর পরটি পূর্ব্ব পূর্ব্বগুলিকে বাধা দিতে পারে॥ ২॥

এই ধর্মাদির মধ্যে, 'ধর্ম' সত্যে প্রতিষ্ঠিত থাকে (অর্থাৎ ধর্ম-পাদের অর্থ-বিষয়ের যাথাত্ম্য-নির্ণন্ন); 'ব্যবহার' সাক্ষিগণের সাক্ষ্যের উপর প্রতিষ্ঠিত (অর্থাৎ ব্যবহার সাক্ষীদিগের বাক্যথারাই সম্যক্ বিভাবনীয় হয়); 'চরিত্র' পুরুষদিগের পরস্পরাগত আচারের উপর প্রতিষ্ঠিত; কিন্তু 'শাসন' পাদের অর্থ রাজাদিগের আজ্ঞা (অর্থাৎ ক্যায়োপপত্তিযুক্ত যথাইদণ্ডপ্রণয়নাদিরূপ রাজ-নিয়োগের নাম শাসন)॥ ৩॥

ধর্মতঃ প্রজারক্ষক রাজার স্বধর্মপালন তাঁহাকে স্বর্গপ্রাপ্তির অধিকারী করে; এবং (প্রজাগণের) অরক্ষক, বা মিথ্যাদণ্ডের (অর্থাৎ অমথার্ছদণ্ডের) প্রণয়ন-কারী রাজা বিপরীত গতি (অর্থাৎ নরক) প্রাপ্তির অধিকারী হয়েন॥ ৪॥

কারণ, পুত্র ও শক্র—উভয়ের প্রতি তাহাদের দোষাত্মসারে সমভাবে রাজকর্ত্বক প্রণীত দণ্ডই কেবল ইহলোক ও পরলোক রক্ষা করিয়া থাকে॥ ৫॥

যে রাজা ধর্ম, ব্যবহার, সংস্থা (লোকাচার) ও চতুর্থ পাদ **স্থায়**—এই চারিটি অবলম্বন করিয়া শাসনকার্য্য পরিচালনা করেন, সেই রাজা চতুরস্তা (অর্থাৎ চতুঃসাগর পরিবেষ্টিতা ) মহী জয় করিতে পারেন (অর্থাৎ সার্ব্বভৌম সমাট হইতে পারেন) ॥ ৬ ॥

নির্ণয়বিষয়ে যে ব্যবহারিক শাস্ত্র ( অর্থাৎ রাজশাসন বা সাক্ষিবাক্য ),—
সংস্থা ( চরিত্র বা লোকাচার ) ও ( মানবাদি ) ধর্মশাস্থের সহিত বিরোধভাবাপর
হয়, সেই অর্থ বা নির্ণয়বিষয়, ( ধর্মস্থ বা রাজা ) ধর্মশাস্ত্রের বিধান-অমুসারে
বিনিশ্চিত করিবেন ॥ १ ॥

যদি কোন ধর্মযুক্ত রাজভায়ের সহিত ধর্মশাস্ত্রের বিরোধ ঘটে, তাহা হইলে সেই ক্ষেত্রে ভায় (রাজভায়ই) প্রমাণ (অর্থাৎ অর্থ-নির্ণয়ের হৈতু) বলিয় গৃহীত হইবে; কারণ, সেই ক্ষেত্রে ধর্মশাস্ত্রের পাঠ বা বচন লোপ পায় (অর্থাৎ প্রবক্তিত হয় না)॥৮॥

(১) দোষের পরিষার চিহ্নোপলন্ধি, (২) নিজের দোষ স্বীকার, (৩) স্থপন্থ ও পরপক্ষের ( অর্থাৎ বাদী ও প্রতিবাদীর ) অনুযোগ বা প্রশ্ন সম্বন্ধে ঋজুভাবে বা সরলভাবে উত্তর প্রদান, (৪) উপপত্তিমুক্ত কারণ-প্রদর্শন ও (৫) শপথ ব দিব্যক্রিয়াল এই পাঁচটি অর্থা-সাধক ( অর্থাৎ বিচার্য্য বিষয়ের নির্ণয়সাধনে সহায়ক ) হইয়া থাকে ॥ ৯ ॥

ধদি (বাদী বা প্রতিবাদীর মধ্যে কাহারও উক্তি প্রত্যুক্তিতে) পূর্বোত্তর অর্থের ব্যাঘাত বা বিরোধ দৃষ্ট হয়, উভয়ের মধ্যে কাহারও সাক্ষীদিগের উপর দোবারোপের কারণ উপস্থিত হয়, এবং তাহাদের কেহ চারের (গুপ্তচর বা রাজকীয় বন্ধনাগারিকের) হস্ত হইতে (প্রচ্ছন্নভাবে) পলাইয়া যায়, তাহা হইলে তাহার পরাজয় প্রদিষ্ট বা স্থাপিত হওয়ার যোগ্য (অর্থাৎ ধর্মস্থ তাহার বিরুদ্ধে বিচার-ফল ঘোষিত করিবেন)॥ ১০॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে ব্যবহারস্থাপনা ও বিবাদপদনিবন্ধ-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ৫৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## দ্বিতীয় অধ্যায়

# ৫৯শ প্রকরণ—বিবাহসংযুক্ত ; ভদন্তর্গত বিবাহধর্ম, স্ত্রীধনবিধি ও আধিবেদনিক

সর্ব্যপ্রকার ব্যবহার ( আইনগত বিধানাদি ) বিবাহের উপর নির্ভর করে ( অর্থাৎ বিবাহের পরই সর্ব্যপ্রকার ব্যবহারের আরম্ভ বিবেচিত হইয়া থাকে )।

(বিবাহ আট প্রকার,) তন্মধ্যে যে বিবাহে ক্যাকে অলক্ষত করিয়া (বরের হস্তে) প্রদান করা হয়, তাহার নাম ব্রোক্ষা বিবাহ।

যে বিবাহে (কন্তা ও বর) একসঙ্গে মিলিত হইয়া ধর্মাচরণ করিবে বলিয়া প্রতিশ্রুত হইয়া পরিণীত হয়, তাহার নাম প্রাজাপত্য বিবাহ।

যে বিবাহে (বরের নিকট হইতে) গোলয় গ্রহণ করিয়া <del>ক</del>ন্সা প্রদন্ত হয়, তাহার নাম **আর্য** বিবাহ।

যে বিবাহে যজ্ঞবেদিমধ্যে স্থিত ঋত্বিকের নিকট কন্তা প্রদন্ত হয়, তাহার নাম দৈব বিবাহ।

ষে বিবাহে বর ও কথা নিজেচ্ছায় (পিতামাতার অভিমত না লইয়া) অন্যোগ্যকে গ্রহণ করে, তাহার নাম **গান্ধর্ব** বিবাহ।

যে বিবাহে বর ( কন্তার পিতাকে বা কন্তাকে ) গুৰুধন দিয়া কন্তা গ্রহণ করে, তাহার নাম **আস্থ্রের** বিবাহ।

বে বিবাহে বলাৎকারে কন্তা গ্রহণ করা হয়, তাহার নাম রাক্ষস বিবাহ।

ষে বিবাহে স্থপ্তা কন্তাকে হরণ করিয়া নিয়া বিবাহ করা হয়, তাহার নাম **শৈশাচ** বিবাহ।

(এই আট প্রকার বিবাহের মধ্যে) ব্রাহ্মাদি প্রথম চারিটি বিবাহ ধর্ম্ম ব ধর্মান্তব্বল বলিয়া বিবেচিত হইবে, ষেহেতু এইগুলিতে পিতার অন্তমোদন থাকে। আর, অবশিষ্ট (গান্ধর্কাদি) চারিটি বিবাহও ধর্ম্ম বা ধর্মান্ত্রগত মনে করা ষায়, যদি এইগুলিতে পিতাও মাতাউভয়ের অন্তমোদন থাকে। কারণ তাঁহারাই (পিতাও মাতাই) কন্সার জন্ম দত্ত শুভ গ্রহণ করেন। এই উভয়ের মধ্যে এক জনের অভাবে অন্ত এক জন (অর্থাৎ পিতাবা মাতা) শুভ গ্রহণ করিতে পারেন।

(পিতা ও মাতার নিকট প্রদন্ত উক্তরূপ শুদ্ধ ব্যতিরিক্ত) অন্ত দ্বিতীয়-প্রকার শুদ্ধ (প্রীতিবশতঃ প্রদন্ত ধন ও আভ্ষণাদি) স্ত্রী-ই কেবল গ্রহণ করিবে (অর্থাৎ এই শুদ্ধ আর পিতামাতা পাইবেন না)। (বর ব্যতীত বরের অন্তান্ত বন্ধ্বান্ধবেরা) দকলে ধদি প্রীতিবশতঃ কন্তাকে কোন অলক্ষারাদি দ্রব্য উপহার-রূপে দেয়, তাহা হইলে এই প্রকার দানও নিবারিত নহে (অর্থাৎ ইহাধ কন্তাই পাইবে)।

(কন্সার গ্রহণীয়) স্ত্রীধন তুই প্রকার হইতে পারে, যথা—(১) রুপ্তি ( অর্থাৎ জীবিকার্থ প্রদন্ত ভূমি বা হিরণ্যাদি নগদ টাকা) ও (২) আবন্ধ্য ( অর্থাৎ শরীরে পরিবার ভূষণাদি দ্রব্য )। তন্মধ্যে কমপক্ষে ২০০০ পণ-পরিমিত অর্থবার বৃত্তি-রূপ স্ত্রীধন কল্পিত হইতে পারে। কিন্তু, আভরণাদি আবন্ধ্য-রূপ স্ত্রীধনের পরিমাণবিষয়ে কোন নিয়ম নাই।

্যদি কোন ভার্যা, নিজের এবং পুত্র ও পুত্রবধ্দিগের ভরণপোষণার্থ ও স্বামীর প্রবাসগমনবশতঃ জীবিকোপায়ের বিরহসংকট-নিবারণার্থ উক্ত স্ত্রীধন ভোগ করে (অর্থাৎ থরচ করে), তাহা হইলে তাহাতে সেই স্ত্রীর কোন দোষ হইনে না। আবার পথে (দস্যপ্রভৃতি) প্রতিরোধকারী, কোন ব্যাধি, তুর্ভিক্ষ ও অন্ত কোন ভয়ের প্রতীকারার্থ বা ধর্ম-কার্য্যসম্পাদনার্থ, পতি যদি সেই স্ত্রীধন বায় করে, তাহা হইলে তাহাতে পতিরও কোন দোষ হইবে না। যদি দম্পতি (স্ত্রী-পুরুষ), মিথুন (অপত্যময়) জন্ম দিয়া একসঙ্গে মিলিত হইয়া স্ত্রীধন তিন বৎসর পর্যান্ত ভোগ করে, তাহা হইলে ইহার জন্ম (প্রভার্পণের) অন্ত্রোগ চলিবে না;—কিন্ত, এই নিয়ম খাটিবে যদি সেই দম্পতি (ব্রাহ্বাদি প্রথফ চারি প্রকার) ধর্মিষ্ঠ বিবাহবিধিতে বিবাহিত হইয়া থাকে। গান্ধর্ম ও আস্ক্য

বিবাহবিধিতে বিবাহিত স্ত্রী-পুরুষ যদি উক্ত উভয়রপ স্ত্রীধন তেমন ভাবে উপভোগ করে, তাহা হইলে তাহা স্থদসহ তাহাদিগকে ফিরাইয়া দিতে হইবে। আর রাক্ষস ও পৈশাচ বিবাহবিধিতে বিবাহিত স্ত্রী-পুরুষকে উক্ত উপভূক স্ত্রীধনের জন্ম স্তেয়দগু (চুরির দণ্ড) ভোগ করিতে হইবে। এই পর্যাম্ভ বিবাহ-ধর্ম ব্যাখ্যাত হইল।

ভর্তা বা পতি মৃত হইলে, ধর্মকামা ( অর্থাৎ ধর্মাম্নসারে আচরণার্থিনী ) স্থী তথনই তাহার আস্থাপ্য ( বা নিয়তসংখ্যার জমাক্বত ) আভরণ ও উপভূকা-বিশিষ্ট শুব্ধ লাভ করিতে পারিবে ( অর্থাৎ এ-গুলির অধিকারিণী হইবে )। যদি এই হুইপ্রকার স্থীধন লাভ করিয়া সেই স্থী ভর্ত্তস্ত্বর গ্রহণে ইচ্ছুক হয়, তাহা হুইলে সেই স্থীধন স্থদসহ তাহাকে কেরত দিতে হুইবে। কিন্তু, যদি (মৃতপতিকা ) স্থী সন্থানকামা হুইয়া ( স্থভুরের আম্পলাম্যে ) নিবেশন বা ভর্ত্তস্ত্বর গ্রহণ ইচ্ছা করে, তাহা হুইলে সে স্থভুরের ও পতির দত্ত স্থীধন নিবেশ-কালে ( অর্থাৎ দ্বিতীয়বার পতিগ্রহণসময়ে ) পাইতে পারিবে। দীর্ঘপ্রবাস-প্রকরণে ( পরবন্ত্রী চতুর্থ অধ্যায়ে স্প্রস্তব্য ) নিবেশের কাল ব্যাখ্যাত হুইবে।

(কিন্তু,) শশুরের প্রাতিলোম্যে (অর্থাৎ শশুরের শাসন অতিক্রম করিয়া) যদি ত্রী ভব্তিস্তর গ্রহণ করে, তাহা হইলে শশুরের ও পতির দত্ত ত্রীধন আর সেনিজে পাইতে অধিকারিণী হইবে না। (শশুরের অহুমোদন ব্যতিরেকে) যেত্রীকে প্রলোভিত করিয়া নিয়া পুনর্কার বিবাহ দেওয়া হয়, তাহার (নৃতন)
জ্ঞাতিদিগকে (পূর্কা) জ্ঞাতিদিগের হস্ত হইতে যাহা যাহা সেই ত্রী (উপহারাদিরূপে) পাইয়াছে, তাহা ফিরাইয়া দিতে হইবে। ত্যায়সঙ্গতভাবে (বিবাহার্থ
উপগতা ত্রীর ত্রীধন (নৃতন) পরিগ্রহীতা (বা স্বামী) রক্ষা করিবে।

বিক্ষমানা ( অর্থাৎ দ্বিতীয়বার পতিগ্রাহিণী ) স্ত্রী পতির প্রাপ্য দায়ভাগ হইতে বঞ্চিত হইবে ( অর্থাৎ তাহাতে অধিকারিণী হইবে না )। কিন্তু, সে যদি ধর্মকামা হইয়া ( অর্থাৎ পুনর্কার বিবাহিত না হইয়া ) সম্ভাবে জীবনযাত্রা নির্কাহ কবে, তাহা হইলে সে ( পতির দায়ভাগ ) ভোগ করিতে পারিবে।

কোন স্থী যদি পুত্রবতী হইয়াও পুনর্কার ভর্ত্তর গ্রহণ করে, তাহা হইলে সে আর তাহার স্থীধনের অধিকারিণী থাকিতে পারিবে না (অর্থাৎ তাহাতে তাহার স্বত্ত থাকিবে না)। এবং সেই স্থীধন তাহার পুত্রেরা ভোগ করিবে। যদি সেই স্থী পুত্রদিগের ভরণজন্ম বিতীয় বার বিবাহ করিতে ইচ্ছুক হুয়, তাহা হইলে পুত্রদিগের জন্ম তাহাকে তাহার স্থীধন বাড়াইতে হইবে।

যে স্ত্রী বহু স্বামী হইতে অনেক-সংখ্যক পুত্রের মাতা হইয়াছে, তাহাকে তাহার তৎ তৎ ভর্জা হইতে প্রাপ্ত স্ত্রীধন তৎ তৎ ভর্জাত পুত্রদিগের জন্ত স্থাপিত রাখিতে হইবে। যথেচ্ছভাবে বিনিয়োগ করার জন্ত যে স্ত্রীধন সে পাইয়াছে, তাহার ভত্রপ্তর গ্রহণের পর তাহাও তাহাকে পুত্রদিগের হস্তে রাখিতে হইবে।

বে স্ত্রীর পুত্র নাই, অথচ যে পতিব্রতা হইয়া পতিশয্যা রক্ষা করে ( অর্থাৎ দ্বিতীয় পতি গ্রহণ করে না ), সে গুরুসমীপে অবস্থান করিয়া, যতদিন বাঁচিয়া থাকিবে ততদিন পর্যন্ত, তাহার স্ত্রীধন স্বয়ং ভোগ করিতে পারিবে; কারণ, স্ত্রীধন আপদের পরিহারার্থই প্রযোজ্য হইয়া থাকে। সেই স্ত্রীর মৃত্যুর পরে, সেই স্ত্রীধন দায়ভাগের অধিকারীরা পাইবে।

ভর্জার বাঁচিয়া থাকা কালে, যে স্ত্রী মারা যায়, তাহার স্ত্রীধন তাহার পুত্র ও কন্সারা ( অবিশেষে ) বন্টন করিয়া নিতে পারিবে । সেই স্ত্রীর যদি কোন পুত্র না থাকে, তাহা হইলে তাহার ছহিতারাই তাহার স্ত্রীধনে অধিকারিণী হইবে। কন্যা না থাকিলে, তাহার স্বামী ( সেই স্ত্রীধনের ) অধিকারী হইবে।

(কিন্তু,) তাহার (উক্ত মৃত স্থীর) পিতৃগৃহ হইতে আনীত শুল্প, কিংবা বিবাহকালে বান্ধবজনধারা যাহা কিছু প্রদন্ত হইয়াছে তাহা তাহার বান্ধবেরা পাইবে।

এই পর্যান্ত স্ত্রীধনসম্বন্ধীয় বিধি ব্যাখ্যাত হইল।

[ সম্প্রতি আধিবেদনিক দ্রব্যাদির ( অর্থাৎ স্বামীর দ্বিতীয় দারপরিগ্রহকালে প্রথম স্ত্রীকে প্রদত্ত অর্থাদি ) বিধান উক্ত হইবে। ]

ষে পুরুষের স্ত্রী স্তুপতাপ্রসব করে না (মতান্তরে, একবার মাত্র প্রসব করিয় আর গর্ভধারণ করিতে পারে না), অথবা যাহার পূত্র জন্ম হয় না, কিংবা যে স্ত্রী বদ্ধা। (অর্থাৎ গর্ভধারণে অসমর্থা), তাহাকে (সেই পুরুষকে), আট বৎসর পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিতে হইবে (অর্থাৎ স্ত্রী পূত্র প্রসব করে কি না—তাহা আট বৎসর না দেখিয়া সে বিতীয় দারপরিগ্রহ করিতে পারিবে না)। আর সেই স্ত্রী যদি কেবল মৃত পূত্রাদিই প্রসব করে, তাহা হইলে স্বামীকে দশ বৎসর পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিতে হইবে। এবং সে যদি কেবল কন্যাই প্রসব করিতে থাকে, তাহা হইলে তাহার স্বামীকে বার বৎসর পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিতে হইবে।

ৈ যথোক্ত সময় পর্যান্ত প্রতীক্ষার পর, যদি স্বামী পুত্রকাম হয়, তাহা হইলে সে ্ত্তিতীয় স্ত্রী পরিগ্রহ করিতে পারিবে। উক্ত সময়-নিয়মের অতিক্রম করিতে ( অর্থাৎ নির্দিষ্ট কালের পূর্ব্বেই দ্বিতীয় দ্বী গ্রহণ করিলে ), সে অধিবিদ্ধা বা পূর্ব্ব বিবাহিতা স্ত্রীকে তাহার প্রাপ্ত শুৰু, স্ত্রীধন ও আধিবেদনিক অর্ঘ বা মূল্য ( অর্থাৎ স্বামীকে পুনর্বার স্ত্রী-গ্রহণনিমিত্তক ক্ষতিপূরণস্বরূপ যে ধন প্রথম স্ত্রীকে দিতে হয় তাহার নাম আধিবেদনিক মূল্য, এস্থলে অর্থ-স্থানে 'অর্থ' পাঠ অধিকতর সমীচীন প্রতিভাত হয় ) দিবে। এবং এমত অবস্থায় সেই স্বামীকে ২৪ পণ পর্যান্ত রাজদণ্ডও দিতে হইবে।

(পূর্ব্ব বিবাহিতা) যে বা যে-যে স্ত্রীর শুল্ক ও স্ত্রীধন আছে, তাহাকে বা তাহাদিগকে তাহার বা তাহাদের সেই শুল্ক ও স্ত্রীধন দিয়া এবং যাহাদের শুল্ক ও স্ত্রীধন
নাই তাহাদিগকে শুল্ক ওস্ত্রীধনের পরিমাণা মুসারে আধিবেদনিক পারিতোষিক দিয়া,
এবং জীবন-নির্ব্বাহের জন্ত সম্চিত সম্পত্তি প্রদান করিয়া, স্থামী পরিণীতা পূর্ব্ব
পূর্ব্ব স্থী পরিত্যাগ করিয়া পর পর বহু পত্নী গ্রহণ করিতে পারে। কারণ, পূক্রজননের জন্তই স্থীলোকের স্কষ্টি হইয়াছে (অর্থাৎ পূর্ব্ব পত্নীরা অপুত্রবতী
হইলে স্থামীর পুন্ধিবাহ অন্তায় হইবে না)।

স্বামীর বহুসংখ্যক স্ত্রীরই যদি সম-সময়ে ঋতুকাল উপস্থিত হয় (অর্থাৎ তাহারা যদি একসময়েই পূস্পবতী হয়), তাহা হইলে স্বামী ( রান্ধাদি ) বিবাহের ক্রম অতিক্রম না করিয়া অর্থাৎ উক্তশ্রেণীর বিবাহে বিবাহিতা স্ত্রীর নিকট প্রথমতঃ সঙ্গমার্থ গমন করিবে, অথবা ( তুল্যপ্রকার বিবাহে বিবাহিতা স্ত্রীগণের মধ্যে ) যাহাকে পূর্বে বিবাহ করিয়াছে, প্রথমতঃ তাহার নিকট গমন করিবে, কিংবা (পরে বিবাহিতা হইলেও) যে স্ত্রীর পূত্র বাঁচিয়া আছে তাহার নিকট প্রথমতঃ গমন করিবে।

যদি স্বামী স্ত্রীর তীর্থ বা ঋতু প্রচ্ছন্ন বা অপ্রকাশিত রাখে, কিংবা যদি সে তাহার নিকট গমন না করে, তাহা হইলে তাল্পকে ১৬ পুঁণ দণ্ড দিতে হইবে।

পুরুষ (স্বয়ং সকাম হইলেও) পুত্রবতী, বাধর্মকামা, বাবদ্ধা, বা নিন্দু (অর্থাৎ মৃতপুত্রকা), বা নিবৃত্তরজন্ধা স্ত্রীর নিকট সঙ্গমার্থ ষাইবে না, ষদি এইরপ স্ত্রী সঙ্গম ইচ্ছা না করে। এবং পুরুষ অকাম হইলে, এইরপ (সকামা) স্ত্রীর নিকটেও ষাইবে না। যে স্ত্রী কুষ্ঠবাাধিগ্রস্তা বা উন্মন্তা পুরুষ সেই স্ত্রীর সহিত সঙ্গম করিবে না। কিন্তু, স্ত্রী পুত্রোৎপত্তি ইচ্ছা করিয়া এবং ভূত (অর্থাৎ কুষ্ঠী বা উন্মন্ত্র) স্বামীর নিকট সঙ্গমার্থ ষাইতে পারে।

ষে পতি নীচচরিত্র, যে পরদেশে প্রবাসকারী, যে রাজন্রোহাদি-পাপযুক্ত, যে

প্রাণঘাতী, যে (জাতি ও ধর্ম হইতে) পতিত ও যে ক্লীব (বা সম্ভানোৎপাদনে অসমর্থ)—তাহাকে তাহার (স্ত্রী) ত্যাগ করিতে পারে।

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে বিবাহসংযুক্ত-নামক প্রকরণে বিবাহধর্ম, স্ত্রীধনবিধি ও আধিবেদনিক-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় (আদি হইতে ৫৯ অধ্যায়) সমাপ্ত।

## তৃতীয় অধ্যায়

৬০শ প্রকরণ—বিবাহসংযুক্ত ; তদন্তর্গত শুশ্রামা, ভর্মা ( ভরণ ) পারুষ্য, দ্বেম, অভিচার ও উপকার-ব্যবহারের প্রভিষেধ

যে স্থীর খাদশ বংসর বয়স অতিক্রান্ত ইইয়াছে, সে প্রাপ্তব্যবহারা বলিয়া গৃহীত হইবার যোগ্য (অর্থাৎ পতিগৃহে পরিচরণকর্মে নিয়োজিত হওয়ার যোগ্য হইবে এবং সে রাজকীয় আইনকাঞ্নের বশবর্তিনী হইবে) এবং যোড়শ বর্গ অতিক্রম করিলে পুরুষও প্রাপ্তব্যবহার (সাবালক) হয়। উক্ত বয়স সীমা পার হইলে তাহারা যদি অভ্যান্ত্রা দোবে তৃষ্ট হয় (অর্থাৎ পরিচর্য্যাপরায়ণ না হয়), তাহা হইলে স্ত্রীর ১২ পণ দণ্ড এবং পুরুষের ইহার বিগুণ (অর্থাৎ ২৪ পণ) দণ্ড হইবে। (এই পর্যান্ত ভ্যান্ত্রা নিরুপিত হইল)।

যদি স্ত্রীলোকের ভর্মাণ্যার অর্থাৎ ভরণপোষণের জন্ম থরচের সীমাকাল নির্দিষ্ট না থাকে; তাহণ হইলে (পতি) সেই স্ত্রীকে কেবল গ্রাসাচ্ছাদনের থরচই দিবে; অথবা, তাহার গৃহে ভরণীয় জনের প্রয়োজনীয় দ্রব্যাদি অতিক্রম না করিয়া, স্ত্রীকে (ভরণপোষণজন্ম) বিশেষভাবে কিছু অধিক থরচও সে দিতে পারিবে। আর যদি ভরণপোষণের জন্ম থরচের সীমাকাল নির্দিষ্ট থাকে, তাহা হইলে সে সেই গ্রাসাচ্ছাদনের থরচই ইহার আবশুকতাহ্ররূপ মাত্রা বিচার করিয়া স্ত্রীকে দিতে পারিবে এবং ভজ্জন্ম তাহাকে একটা বন্ধ (বা চুজ্জিপত্রও) দিতে হইবে। যদি স্ত্রী তাহার ভঙ্ক, স্ত্রীধন ও আধিবেদনিক ধন (অর্থাৎ দ্বিতীয়-বিবাহার্থী পতিষারা পূর্বস্ত্রীকে পারিতোষিকরূপে প্রাদত্ত্ব ধন) গ্রহণ না করিয়া থাকে, তাহা হইলেও সে পূর্ব্রোক্ত রীতিতে গ্রাসাচ্ছাদন ও পতি হইতে বন্ধও পাইতে অধিকারিণী হইবে।

(বিবাদ উপস্থিত হইলে) স্ত্রী যদি খণ্ডরকুলেই (অবিভক্ত অবস্থায়) প্রবিষ্ট থাকে এবং যদি সে বিভক্ত অবস্থায়ও (সেথানে বা অগ্যত্র) বাস করে, তাহা হইলে পতির বিরুদ্ধে তাহার অভিযোগ চলিবে না। এই প্র্যান্ত ভর্ম (বা ভরণপোষণের থরচ) নিরূপিত হইল।

'হে (অর্দ্ধ-) নয়ে, হে সম্পূর্ণ নয়ে, হে অঙ্গহীনে, হে পিতৃরহিতে, হে মাতৃরহিতে—ইত্যাদিরপ অনির্দ্দেশ-বচন (সাক্রোশ বাক্য)-নারাই স্ত্রীকে বিনয়শিক্ষা দিতে হইবে (মতাস্তরে, এইরপ বচন প্রয়োগ না করিয়াই বিনয়গ্রহণ করাইতে হইবে)। অথবা (উক্ত অনির্দ্দেশবচনদারা বিনয়সিদ্ধি না ঘটিলে) বেণুদল, রজ্জ্ ও হস্ত—এইগুলির অন্যতমদারা (স্ত্রীর) পৃষ্ঠদেশে ার আঘাত করা চলিবে। উক্ত (বচনপ্রয়োগ ও আঘাতের) বিধান

ার আঘাত করা চালবে। ওজ (বচনপ্রয়োগ ও আঘাতের) বিধান অতিক্রম করিলে, স্বামীর উপর বক্ষ্যমাণ বাক্পারুয়া ও দণ্ডপারুয়া-প্রকরণে উক্ত দণ্ডের অর্দ্ধদণ্ড প্রযুক্ত হইবে।

স্বামীর বাহ্যবিহারের ( অর্থাৎ বেশ্যাদিতে আসক্তির ) কারণ উপস্থিত হইলে, দোষরহিতা ( অর্থাৎ পতিব্রতা ) স্ত্রীর ঈর্ব্যাবশতঃ তাহার প্রতি উক্তর্মপে ( অর্থাৎ স্ত্রীর প্রতি স্বামিকর্তৃক যে শাস্তির বিধান উক্ত হইয়াছে সেই ) শাসনই চলিবে। উক্ত বিধির অতিক্রম করিলে স্ত্রীর প্রতিও ( বাক্পারুষ্ম ও দণ্ডপারুষ্মপ্রকরণে ), নির্দ্দিষ্ট সম্পূর্ণ দণ্ড ( পুরুষের প্রতি বিহিত উক্তরপ অর্দ্ধদণ্ড নহে ) বিহিত হইবে। এই পর্যান্ত পারুষ্য ব্যাখ্যাত হইল।

ষে স্ত্রী স্বামীর প্রতি দ্বেষাচরণ করিয়া (অর্থাৎ তাহাকে না ভালবাসিয়া)
সাত ঋতুকাল পর্যান্ত তাহার নিকট শয়নার্থ উপস্থিত হয় না, সে স্ত্রী তৎক্ষণাৎ
(পুনর্বার দ্বেষাচরণ করিবে না বলিয়া বিশ্বাস উৎপাদনার্থ) তাহার আভরণার্ক দি
স্বামীর নিকট ন্তাসরূপে রাথিয়া, অন্ত স্ত্রীর সহিত (পূর্ব্বে) শয়নকারী স্বামীর
নিকট পশ্চান্তাপমহকারে সেবার্থ উপস্থিত হইতে পারে (অর্থাৎ এইরূপ আভরণন্তাস ও পশ্চান্তাপই তাহার দগুরূপে বিবেচিত হইবে)। (মতান্তরে ব্যাখ্যা—
এই অবস্থায় অন্ত পুরুষের কামনাকারিণী স্ত্রী নিজ স্বামীর নিকট নিজের স্ত্রীধন
প্রভৃতি অর্পণ করিয়া স্বামীর অন্তন্ত্রীসমাগম অন্তমত মনে করিতে পারে)।

ভর্জা বা স্বামী যদি স্ত্রীর প্রতি দ্বেষাচরণ করে ( অর্থাৎ তাহাকে ভাল না বাসে ), তাহা হইলে সে যে কোন ( শাস্তভদ্ধব্যবহারকারিণী ) ভিক্ষ্কী, কিংবা ীধন রক্ষাকারী কোন ব্যক্তি, বা (স্ত্রীর) জ্ঞাতিকুলের কাহারও নিকট একাকিনী ইইয়া বাসকারিণী সেই স্ত্রীর নিকট অমুতাপসহকারে স্বয়ং উপস্থিত হইতে পারে। অন্য স্ত্রীর সহিত মৈথুনের অপলাপ করা হইলে, অথবা, গৃঢ়দূতের কার্য্যে নিযুক্তা সবর্ণা (সমানজাতীয়া) কোনও স্ত্রীর সহিত সঙ্গম জানা গেলে, যদি স্বামী মিথ্যাবাদী হয়, তাহা হইলে সেই অপলাপকারী পুরুষকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

ভর্জা যদি স্ত্রীকে ছাড়িতে ইচ্ছুক না হয়, তাহা হইলে স্ত্রী দ্বেষপরায়ণা হইলেও মোক্ষ পাইতে পারিবে না ( অর্থাৎ পতিকে ছাড়িতে পারিবে না )। এবং স্ত্রী যদি স্বামীকে ছাড়িতে ইচ্ছা না করে, তাহা হইলে ভর্জা দ্বেষপরায়ণ হইলেও মোক্ষ পাইবে না ( অর্থাৎ স্ত্রীকে ছাড়িতে পারিবে না )। মোক্ষ বা ছাড়াভাড়িত থনই সম্ভবপর হইবে যথন উভয়ের পরস্পারের প্রতি দ্বেষ বা অরাগ সত্য বলিয়া ধার্য্য হইবে।

প্রীর বিপ্রকার বা অসদ্যবহারের জন্য পুরুষ যদি মোক্ষ ইচ্ছা করে, তাহা হইলে স্ত্রীকে স্বামীর নিকট হইতে গৃহীত (স্ত্রীধনাদি) সব দ্রব্য স্বামীকে ফিরাইয়া দিতে হইবে। আবার পুরুষের বিপ্রকার বা অসদ্যবহারের জন্য স্ত্রী যদি মোক্ষ ইচ্ছা করে, তাহা হইলে স্ত্রীকে আর তাহার নিকট হইতে গৃহীত স্ত্রীধন প্রভৃতি স্বামীকে ফিরাইয়া দিতে হইবে না। (এম্বলে সম্ববতঃ 'অস্মৈ' পাঠ সমীচীন হইবে এবং তাহা হইলে 'পুরুষের নিকট হইতে গৃহীত দ্রব্যাদি স্ত্রীকে ফিরাইয়া দিতে হইবে না',—এইরূপ ব্যাখ্যা হইতে পারে)। কিন্তু, ব্রান্ধাদি ধর্মবিবাহ-সহদ্ধে (স্ত্রীপুরুষের) মোক্ষ বিহিত নহে। এই পর্যান্ত স্বামী ও স্ত্রীর মধ্যে দ্বেষের কথা নির্ণীত হইল।

স্বামিদ্বারা প্রতিষিদ্ধ হইয়াও যদি স্ত্রী (অত্যের সহিত) দর্পসহকারে মত্যপান ও কামেক্রীড়া (মতান্তরে ব্যাথ্যা—দর্পক্রীড়া ও মত্যক্রীড়া) করে, তাহা হইলে তাহার উপর ০ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। (প্রতিষিদ্ধা হইয়াও) দিনের বেলায় স্ত্রী যদি স্ত্রীলোকছারা প্রযুজ্যমান নাট্যাদি দর্শন বা (উত্যানাদিতে) বিহারগমন করে, তাহা হইলে তাহার ৬ পণ দণ্ড হইবে। এবং স্ত্রীপুরুষবারা প্রযুজ্যমান প্রেক্ষায় (নাট্যাদি-দর্শনে) ও বিহারে গমন করিলে পর, তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। রাত্রিতে তাহার দ্বিগুণ দণ্ড (অর্থাৎ স্ত্রীপ্রেক্ষা ও বিহারগমনে ১২ পণ ও পুরুষপ্রেক্ষা ও বিহারগমনে ১২ পণ দণ্ড ) হইবে।

স্বামীকে স্থাবা (মদ-) মত্ত অবস্থায় রাথিয়া স্ত্রী যদি গৃহ হইতে নিজ্ঞান্ত হয়, অথবাঁ, স্বামীকে (গৃহবারে উপন্থিত হইলেও) ধারোদ্ঘাটন করিয়া না দেয়, তাহা হইলে তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। রাত্রিতে স্বামীকে গৃহ হইতে নিক্ষাসিত বা তাড়িত করিলে, স্ত্রীর উক্ত দণ্ডের দ্বিগুণ (অর্থাৎ ২৪ পণ) দণ্ড হইবে।

কোন স্ত্রী ও পুরুষের মধ্যে যদি মৈথুনজন্ত কামচেষ্টা বা গোপনে অসভ্য-ব্যবহারার্থ আলাপ লক্ষিত হয়, তাহা হইলে সেই স্ত্রীর ২৪ পণ দণ্ড একং সেই পুরুষের তদ্ধিগুণ (অর্থাৎ ৪৮ পণ) দণ্ড হইবে।

কেশ ও নীবী (কটিবন্ধ) অবলম্বন করিলে এবং দস্ত ও নথচিহ্ন প্রদান করিলে, স্ত্রীর প্রথমসাহসদও্ত ও পুরুষের তদ্ধিগুণ দণ্ড (অর্থাৎ মধ্যমসাহসদণ্ড) হইবে।

শঙ্কাম্পদ প্রদেশে সম্ভাষা বা আলাপ করিলেও, (প্রত্যেক পণ-দণ্ডের জন্ম)
একটি করিয়া শিফাতাড়ন বা বেত্রাঘাত দণ্ড দেওয়া ষাইতে পারে। গ্রামের
মধ্যস্থানে (অর্থাৎ গ্রামবাদীদিগের নয়নসমক্ষে) চণ্ডাল (অপরাধিনী) স্ত্রীলোকের
একৈকপার্শ্বে পাঁচ শিফা অর্থাৎ ৫ বেত্রাঘাত (পর্যান্ত) দিতে পারিবে। প্রতি
প্রহারের (বেত্রাঘাতের) বিনিময়ে এক এক পণ (নিক্রয়রূপে) দিলে, সেই
প্রহারদণ্ড হইতে নৃক্ত হইতে পারা ধাইবে। এই পর্যান্ত অতিচার নিশীত হইল।

নিবারিত হইয়াও স্ত্রী ও পুক্ষ যদি অন্তোত্মের উপকারার্থ ( প্রক্চন্দনাদি ) ক্ষুদ্রক দ্রব্য দান করে, তাহা হইলে স্ত্রীলোকটির উপর ১২ পণ দণ্ড বিহিত হইবে, আর যদি ( বস্থাদি ) স্থুলদ্রব্য দান করে, তাহা হইলে তাহার ২৪ পণ দণ্ড হইবে এবং হিরণ্য ( নগদ টাকা ) বা স্থবর্ণময় ( অলম্বারাদির ) দান করে, তাহা হইলে তাহার ৫৪ পণ দণ্ড হইবে। এবং পুরুষের পক্ষে তন্তুদ্দ্রব্যদানের জন্ম উক্ত দণ্ডের দ্বিগুণ দণ্ড তত্ত্পরি বিহিত হইবে। ( ল্রাভ্রুগিনীপ্রভৃতি ) অগম্য স্ত্রীপুরুষযুগলের সম্বন্ধেও উক্ত দণ্ডের অন্ধ্রন্থ বিহিত হইতে পারিবে।

ধেরূপ দণ্ড প্রতিধিদ্ধব্যবহার স্ত্রী-পুরুষসম্বন্ধে উক্ত হইল সেইরূপ. প্রতিধিদ্ধ-ব্যবহার পুরুষন্বয় সম্বন্ধেও বিহিত হইতে পারিবে। এই পর্যান্ত উপকারব্যবহারের প্রতিষেধ উক্ত হইল।

রাজধেষ-প্রকাশ, ( দর্পমন্তক্রীড়া দিরপ ) অতিচার ও ( স্বামীর নিকট হইতে ) নিজের নিষ্পতন—এই তিন অপরাধে, স্তীলোকের স্ত্রীধন ও তাহার ( পিত্রালয় হইতে ) আনীত শুদ্ধে স্বামিত্ব বা স্বত্ব রহিত হইয়া যাইবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে বিবাহসংযুক্ত-নামক প্রকরণে শুশ্রুষা, ভর্ম ( ভরণ ), পারুষ্য, দ্বেষ, অতিচার ও উপকারব্যবহারের প্রতিষেধ-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ৬০ অধ্যায় সমাপ্ত।)

# চতুর্থ অধ্যায়

# ৫৯শ প্রকরণ—বিবাহসংযুক্ত ; ভদন্তর্গত নিষ্পাতন, পথ্যসুসরণ, হুম্বপ্রবাস ও দীর্ঘপ্রবাস

পতিকুল হইতে নিম্পতিত বা নির্গত (প্রাপ্তব্যবহারা) স্ত্রীর উপর ৬ পণ দণ্ড বিহিত হইবে; কিন্তু, সে যদি পতিকুলে কোনও প্রকার বিপ্রকার বা পুরুষকৃত অপরাধবশতঃ বাহির হইতে চাহে, তাহা হইলে তহুপরি সেই দণ্ড বিহিত হইবে না। 'গৃহ হইতে নির্গত হইও না' এইভাবে নিবারিত হইয়া নিম্পতিত হইলে, তহুপরি ১২ পণ দণ্ড ধার্য্য হইবে। 'পতিকুল হইতে নির্গত হইয়া সে স্ত্রী যদি প্রতিবেশীর কোন ঘরে চলিয়া যায়, তাহা হইলে তাহাকে ৬ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

কোন স্ত্রী যদি প্রতিবেশীকে, ভিক্ষককে ও বৈদেহককে (বিণিক্কে) যথাক্রমে স্থাহে স্থান ও ভিন্ধা দেয় ও তাহাদের নিকট হইতে কোন পণ্যগ্রহণ করে, তাহা হইলে সেই অপরাধে তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। প্রতিসিদ্ধ ব্যক্তি-দিগের সম্বন্ধে যদি সেই স্থ্রী উক্তরূপ (স্থানদানাদি) কার্য্য করে, তাহা হইলে তাহার উপর প্রথমসাহসদণ্ড বিহিত হইবে। (নিন্পতিত) স্ত্রীলোকটি যদি নিজ গৃহের পরবর্ত্ত্রী গৃহও অতিক্রম করিয়া অন্য দূরবর্ত্ত্রী কোনও গৃহে গমন করে, তাহা হইলে তাহাকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

কোন পুরুষ অন্তের ভার্যাকে নিজগৃহে স্থান দিলে, তাহাকে ১০০ পণ দণ্ডে দণ্ডিত হইতে হইবে। কিন্তু, কোন প্রকার আপদসময়ে ঐরপ স্থান দিলে তাহা দ্যণীয় হইবে না। । (গৃহস্থীমীর) বারণ না মানিয়া, বা (বারণাজ্ঞা) না জানিয়া, যদি সেই স্থীলোক সেখানে প্রবেশ করে, তাহা হইলে গৃহস্থামীর কোন দোষ হইবে না।

পূর্কাচার্যাদিগের ( অণবা, কোটিল্যের নিজ আচার্য্যের ) এই মত যে,—পতিকৃত ( অবমাননাদিরপ ) বিপ্রকারবশতঃ যদি কোনও স্থীলোক, নিজপতির কোন জ্ঞাতি, স্থাবস্থ ব্যক্তি, গ্রামিক ( গ্রামপতি ), অস্থাবি ( স্থাধন-স্থের বা স্থীধনের বিচারক ), ভিক্কী ও স্ববান্ধব—এই সব ব্যক্তিদিগের কাহারও পুরুষবিহিত গৃহে, ( আশ্রয়ার্থ ) গমন করে, তাহা হইলে তাহার কোন দোষ হইবে না।

কিন্তু, কোটিল্য এইরপ মনে করেন যে, জ্ঞাতিকুলে ( অর্থাৎ প্রতির বা

নিজের বান্ধবকুলে ) অন্ত পুরুষ বিগুমান থাকিলেও, (সেই বিপ্রকৃতা ত্বী ) সেথানে যাইতে পারিবে। কারণ, সাধনী ত্রীলোকের ছল বা ব্যভিচরণ কোন প্রকারেই হইতে পারে না। আর ছল হইলেও, তাহা অক্লেশে স্বজ্ঞাত হইয়া পড়িবে (অর্থাৎ ত্রীকৃত ব্যভিচরণ স্বামী বা স্বামীকুলের লোকেরা সহজে জানিয়া ফেলিবে)।

মৃত্যু, ব্যাধি, বিপদ ও গর্ভ বা প্রসবের কারণ উপস্থিত হইলে, কোন স্ত্রী-লোকেরই জ্ঞাতিকুলে (পতি বা নিজের বান্ধবকুলে) গমন প্রতিষিদ্ধ নহে।

যে স্বামী উক্ত কারণে (প্রীর) জ্ঞাতিকুলে গমন বারণ করিবে, তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। যদি সেই প্রী জ্ঞাতিকুলে (কোনও ছলে) গৃঢ়ভাবে বাস করে, তাহা হইলে সে তাহার স্ত্রীধন হইতে বঞ্চিত হইবে (অর্থাৎ তাহার স্থামীই উহা নিজ সকাশে রাথিয়া দিবে)। আর তাহার জ্ঞাতিরা যদি তাহাকে (স্বগৃহে ছলপূর্বক) লুকাইয়া রাথে, তাহা হইলে তাহারা বিবাহের গুল্কের (বর হইতে কন্যার রান্ধবদিগের প্রাপ্য ধনের) অবশিষ্টাংশ পাইবে না। এই পর্যান্ত বিবাহিতা স্ত্রীর নিষ্পতন বা গৃহ হইতে নির্গমন নির্ণীত হইল।

পতিগৃহ হইতে (পতির অন্তমতি বিনা) নির্গত হইয়া কোনও স্ত্রী যদি গ্রামান্তরে চলিয়া যায়, তাহা হইলে তাহাকে ১২ পণ দণ্ডে দণ্ডিত হইতে হইবে এবং সে তাহার নিজের ( অপুনর্গমনের প্রতায়ার্থ) ন্যাসরূপে স্থাপিত আভরণ হইতেও বঞ্চিত হইবে ( অর্থাৎ স্বামী আর স্ত্রীকে তাহা ফিরাইয়া দিবে না )। অথবা, সঙ্গে যাওয়ার যোগ্য কোন পুরুষের সহিত (গ্রামান্তরে) প্রস্থান করিলে, তাহার ২৪ পণ দণ্ড হইবে, এবং স্বামীর অনুষ্ঠীয়মান সর্বপ্রকার যজ্ঞাদি ধর্ম-কার্য্যে সহচরণের হানিও তাহাকে ভোগ করিতে হইবে ( অর্থাৎ তাঁহাকৈ সহ-ধর্মচারিণীর কাজ হইতেও বঞ্চিত হইতে হইবে)। কিন্তু, সেই স্ত্রী যদি গৃহে ভরণপোষণ ও (অন্য স্থানে স্থিত পতিসমীপে) ঋতুগমনের জন্ম যায়, তাহা হইলে তাহার অপরাধ হইবে না। ( খ্রীলোকটিকে গ্রামান্তরে ) নয়নকারী পুরুষ যদি ত্বীলোকটির সমান শ্রেষ্ঠ জাতির লোক হয়, তাহা হইলে তাহার প্রথমসাহসদত্ত (২৫০ পুণ দণ্ড) হইবে। আর পুরুষটি স্ত্রীলোকটির অপেক্ষায় নীচ জাতির লোক হুইলে, তাহার উপর মধ্যমসাহসদত্ত (৫০০ পণ দত্ত) বিহিত হুইবে। এই অবস্থায় গ্রামান্তর নেতা লোকটি বান্ধবশ্রেণীভূক হইলে, সে আর দণ্ডনীয় হইবে না। আর বদি এই বান্ধবটি স্বামীর নিষেধ থাকা সত্তেও তাহার স্ত্রীকে গ্রামান্তরে महिन महेमा यात्र, जाटा हहेता जाटात उपत उस मध्य पर्य पर्य पर्य विहिज हहेता।

কোন স্ত্রী যদি মৈথুনের অভিসন্ধি করিয়া পথে, পথের অনেক দ্রবর্ত্তী স্থানে, বা গৃঢ়প্রদেশে অভিগমন করে, কিংবা কোন সন্দেহযুক্ত বা পতিছারা পতিষিদ্ধ লোকের সহিত পথান্থগমন করে, তাহা হইলে স্ত্রীসংগ্রহবিষয়ে উক্ত (কন্যাপ্রকর্ম-প্রকরণে উক্ত) দণ্ডবিধি সেই স্ত্রীপুরুষের উপর প্রযোজ্য হইবে। তালাবচর (অর্থাৎ নট), চারণ, মৎস্থবন্ধক (ধীবর), ল্বক (ব্যাধ), গোপালক ও শৌণ্ডিক (স্থরাবিক্রয়ী) এবং অক্তান্থ সেই প্রকার পুরুষদিগের সঙ্গে (স্ত্রীলোকের) পথানুসুসরণ (পথে একসঙ্গে অভিগমন) দোধের হইবে না; যদি এই সব লোকেরা সঙ্গে তাহাদিগের আপন স্ত্রীকে লইয়া চলে। নিষেধ থাকা সত্ত্বেও যদি কোন পুরুষ (উক্ত তালাবচরদিগের) স্ত্রীকে সঙ্গে নেয়, বা তাহাদের কোন স্থ্রী অন্থের সঙ্গে যায়, তাহা হইলে উক্ত পুরুষ ও স্ত্রী—উভয়ের উপর পূর্কোক্ত দণ্ডের অর্ধানগু প্রযুক্ত হইবে। এই পর্যান্ত পথানুসুসরণ (অর্থাৎ পথে অন্থের সহিত স্ত্রীলোকের অনুগমন) নির্ণীত হইল।

অল্প সময়ের জন্ম প্রবাদে বা দেশান্তরে গমনকারী শৃদ্র, বৈশ্য, ক্ষত্রিয় ব্রান্ধণের ভার্য্যারা উত্তরোত্তর এক বৎসর বাড়াইয়া লইয়া (অর্থাৎ যথাক্রমে ১, ২, ৩ ও ৪ বৎসর পর্যান্ত) স্বামীর প্রত্যাগমনকালের প্রতীক্ষা করিবে, যদি সেই স্থীরা অমুপজাত-প্রসবা (অর্থাৎ সন্থানবিহীনা) হইয়া থাকে, এবং যাহারা সম্পজাত-প্রসবা তাহারা আরও এক এক বৎসর কাল পর্যান্ত স্বামীর প্রত্যাগমন প্রতীক্ষা করিবে। আর স্বামী তাহাদের জন্ম (রুত্তিব্যয়ের) স্থবিধান করিয়া দিয়া থাকিলে, তাহারা উক্ত সময়ের দ্বিগুণ সময় পর্যান্ত (অর্থাৎ ২, ৪, ৬ ও ৮ বৎসর পর্যান্ত) পতির প্রত্যাগমন প্রতীক্ষা করিবে। যে স্থীদিগের গ্রামাচ্ছাদনের কোন প্রতিবিধান নাই, তাহাদিগকে তাহাদিগের স্থাবস্থ (অর্থাৎ সম্বন্ধ) বিবাহব্যবস্থাব স্থেমপুরুষেরা ভর্ষণ করিবে। অথবা, উক্ত দ্বিগুণ কালের পরে তাহাদিগের জ্ঞাতিরা ৪ বা ৮ বৎসর পর্যান্ত তাহাদিগকে ভরণ করিবে। তৎপর তাহারা প্রথমবিবাহে দক্ত স্ত্রীধন ক্ষেরত লইয়া তাহাদিগকে (তাহাদের ইচ্ছাম্বর্গপ দ্বিতীয়বার বিবাহার্থ নিজ্ঞাতিকুলে) যাইতে অমুমতি দিবে।

কোনও রাহ্মণ যদি অধীয়ান (বিভাধ্যয়নার্থী) হইয়া দেশান্তরে গমন করিয়া থাকে, তাহা হইলে তাহার অপ্রস্তি (অর্থাৎ প্রদন্তানরহিতা) স্ত্রী দৃশ বৎসর পর্যান্ত স্থানীর প্রতীক্ষা করিবে, এবং দে প্রস্তাতা (অর্থাৎ প্রসন্তানবতী) হইলে বার বৎসরি পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিবে। কোন রাজপুরুষ যদি (রাজকার্যার্থ) দেশান্তরে গমন করে, তাহা হইলে তাহার স্ত্রী আয়ুংক্ষয়কাল পর্যান্ত স্থামীর

প্রতীক্ষা করিবে। (তদনস্তর) যদি সেই স্ত্রী সবর্ণ অন্ত কোন ব্যক্তি হইতে পুত্রলাভ করে, তাহা হইলে সে লোকের অপবাদ লাভ করিবার পাত্রী হইবে না (অর্থাৎ সে দণ্ডনীয়া হইবে না )। তাহার কুটুম্বগণ যদি লুপ্ত-সমৃদ্ধিক হইয়া থাকে ( অর্থাৎ তাহাকে ভরণপোষণ না দিতে পারে ), তাহা হইলে বিবাহ-ব্যবস্থার স্থেয়পুরুষগণদ্বারা বিমৃক্ত হইয়া দেই স্ত্রী স্বেচ্ছায় দেহ্যাত্রার্থ অন্ত পুরুষকে (বিবাহে) বরণ করিতে পারে, কিংবা আপেশাত হইয়াও তদ্রপ ক রিতে পারে। (ব্রাহ্মাদি) ধর্ম-বিবাহদারা পরিগীত। হইয়া কোন (অক্ষতগোনি) কুমারী, না জানাইয়া দেশান্তরগত অশ্রয়মাণ ( অর্থাৎ যাহার সম্বন্ধে কোন থোঁজ পাওয়া যায় না এমন ) নিজ স্বামীর জন্ম সাতটি (মাসিক) ঋতুকাল পর্য্যন্ত প্রতীক্ষা করিবে এবং তাহার সংবাদ জানা হইলে এক বৎসর প্র্যান্ত প্রতীক্ষা করিবে। আর যদি স্বামী জানাইয়া বিদেশগামী হইয়া থাকে, কিন্তু তাহার আর কোন দংবাদ পা ওয়া না যায়, তাহ। হইলে দেই কুমারী পাঁচটি ( মাসিক ) ঋতুকাল পর্যান্ত তাহার জন্য প্রতীক্ষা করিবে এবং স্বামী শ্রায়মাণ (বা জ্ঞায়মান-বুক্তান্ত ) হইয়া থাকিলে, সেই কুমারী দশটি (মাসিক ) ঋতুকাল পর্যন্ত তাহার জন্ম প্রতীক্ষা করিবে। যদি সেই স্বামী সেই স্ত্রীকে একাংশ শুল্ক দিয়া থাকে, তাহা হইলে সে স্বামী অশ্রয়মাণ হইলে, স্ত্রী তিনটি (মাসিক) ঋতুকাল পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিবে এবং সে শ্রায়মাণ হইলে স্ত্রী সাতটি (মার্সিক) ঋতুকাল পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিবে। আর স্বামী যদি তাহাকে সম্পূর্ণ গুল্ক দিয়া থাকে, তাহা হইলে সে অশ্রয়মাণ হইলে, স্ত্রী পাঁচটি (মাসিক) ঋতুকাল পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিবে, আর সে শ্রয়মাণ হইলে দশটি (মাসিক) ঋতুকাল পর্যান্ত সেই স্ত্রী তাহার জন্ম প্রতীক্ষা করিবে। উক্ত সময়াবধি অতিক্রান্ত হইলে পর, ধর্মস্থদিগের অনুমতিক্রমে বিমৃক্ত হইয়া, সেই প্ত্রী যথাকামিত অন্ত পতি, (পুনরায় ) গ্রহণ করিতে পারিবে। কারণ, কোটিলের ইহাই মত যে, (প্রজননযোগ্য) ঋতু-কালের উপরোধ ধর্মবধ বলিয়া বিবেচিত হওয়া উচিত।

স্বামী যদি দীর্ঘকালের জন্য প্রবাসী হয়; বা প্রব্রজ্যা বা সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়া চলিয়া যায়, অথবা মারা যায়, তাহা হইলে তাহার (অপ্রজ্ঞাতা) ভার্য্যা সাতটি (মাসিক) ঋতুকাল পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিবে (অর্থাৎ পুনর্বিবাহ করিবে না)। আর যদি স্ত্রী প্রজ্ঞাতা হয় (অর্থাৎ পুত্রসন্তানবতী) হয়, তাহা হুইলে সে এক বংসর পর্যান্ত স্বামীর (প্রত্যাব্র্ত্তন) প্রতীক্ষা করিবে। তৎপর পৃত্তির সহোদর কোন ভাইকে সে (পুত্রজ্ঞননার্থ) বরণ করিতে পারে। পতির বহু ভাই থাকিলে,

যে ভাইটি পতির সমনন্তর-জাত, ধার্মিক এবং ভরণসমর্থ তাহাকে সে বিবাহ করিতে পারে, অথবা, এইরূপ সর্ব্বকনিষ্ঠ ভাই যদি অভার্য্য হয়, তাহাকেও সে বিবাহ করিতে পারে। (পতির) সহোদর প্রাতাদিগের অভাবে, সেই স্ত্রী তাহার অসহোদর ভাইকেও (অর্থাৎ বৈমাত্রেয় ভাইকেও) বিবাহ করিতে পারে, অথবা, পতির সপিও কোনও ব্যক্তিকে, বা পতিকুলে উৎপন্ন অন্ত কাহাকেও বিবাহ করিতে পারিবে। কিন্তু, সেই ব্যক্তি ইহাদের মধ্যে নিকটসম্বন্ধী হওয়া চাই। পুরুষপরিগ্রহবিষয়ে এইরূপ ক্রমই ন্তায়।

পতিসহোদরাদি) দায়াদ্র্যণকে অতিক্রম করিয়া অগু কাহারও সহিত সেই স্ত্রীর পরিণয় হইলে, বা জারপুরুবের গমন হইলে,—সেই জার ( স্ত্রীভোকা), সেই (বাভিচারিণী) স্ত্রী, স্ত্রীদায়ক ও স্ত্রীপরিগ্রহকারী ব্যক্তি—সকলকেই স্ত্রীসংগ্রহবিহিত দণ্ডে দণ্ডিত হইতে হইবে॥১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মন্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে বিবাহ-সংযুক্ত-নামক প্রকরণে নিষ্পতন, পথ্যতুসরণ, হ্রস্বপ্রবাস ও দীর্ঘ-প্রবাস নামক চতুর্থ অধ্যায় ( আদি হইতে ৬১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### পঞ্চম অধ্যায়

### ৬০ম প্রকরণ—দায়বিভাগ; তদন্তর্গত দায়ক্রম

প্রশন্ত পিতামাতার পুত্রেরা তাহাদের পিতা ও মাতা জীবিত থাকা কালে (দায় বা কুলসাধারণ দ্রব্যসম্বন্ধে) ঈশ্বর বা স্বামী (অর্থাৎ কুলধনের মালিক) হইতে পারে না। সেই পুরদিগের সম্বন্ধে এই নিয়ম যে, পিতামাতার মৃত্যুর পরে তাহারা পিতৃত্যাক্ষ্য দ্রব্য বা সম্পত্তির বিভাগ করিতে পারিবে। তাহাদের নিজের অজ্জিত ধন (ভাইদের মধ্যে) বিভাগ বা বন্টন করা হইবে না। কিন্তু, পিতার অর্থহারা উপাজ্জিত কোন সম্পত্তি হইলে, এই সম্পত্তিও (পিতৃদ্রব্যবৎ) বিভাক্ষ্য হইবে।

পিতৃদ্রব্য বা পিতার সম্পত্তি বিভাগ না করিয়া মৃত ব্যক্তিদিগের পুত্র বা পৌত্রগণ চার্বি পুরুষ পর্যান্ত ইহার অংশ পাইবার অধিকারী থাকিবে। কারণ, চতুর্থপুরুষ পর্যান্ত পিণ্ড অবিচ্ছিন্ন থাকে। পিণ্ড ( চতুর্থপুরুষের পর ) বিচ্ছিন্ন হইলে, যাহারা তৎকালে জীবিত থাকিবে, তাহারা সকলেই সমান ভাগে সম্পত্তির বিভাগ প্রাপ্ত হইবে।

যাহাদের পিতৃদ্রব্য না থাকে, কিংবা যাহারা পিতৃদ্রব্য বিভাগ করিয়া নিয়াছে, তাহারা সহজীবী অর্থাৎ একত্র একারভুক্ত থাকিলে, পুন্য়ায় সম্পত্তি বিভাগ করিয়া লইতে পারিবে। কিন্তু, যাহার প্রায়ত্তে সম্পত্তি বাড়িবে, সে বর্দ্ধিত সম্পত্তির কিছু অংশ অধিক পাইবে ('ঋদ্ধাংশং'-ন্থলে 'বাংশং' পাঠও দৃষ্ট হয় তথন ব্যাখ্যা হইবে—"ধনপিণ্ডের একার্দ্ধ উত্থাপক পাইবে, অবশিষ্ট অর্দ্ধ অন্ত অংশীরা পাইবে")।

যাহার পুত্র নাই, তাহার সম্পত্তি (তাহার মৃত্যুর পরে) তাহার সহজীবী (একার ভুক্ত ) সহাদের ভ্রাতারা পাইবে, এবং তাহার কন্যাগণ থাকিলে তাহারাও (বিবাহাদির অপেক্ষিত ) দ্রব্য পাইবে। পুত্রবান্ পিতা মৃত হইলে, তাহার সম্পত্তিতে তাহার পুত্রেরাই অধিকারী হইবে এবং (পুত্রের অভাবে) তাহার (রান্ধাদি চারিটি) ধর্মিষ্ঠ বিবাহে জাত ছহিতারা অধিকারিণী হইতে পারিবে। (ছহিতাদিগের অভাবে) মৃত ব্যক্তির পিতা জীবিত থাকিলে, সে-ই সম্পত্তি পাইতে পারিবে। (পিতার অভাবে) ভ্রাতারা তাহা পাইবে এবং (ভ্রাতাদের অভাবে) সেই ভ্রাতাদিগের পুত্রেরা তাহা পাইবে।

পিতার মৃত্যুর পরে যদি তাহার বহু পুত্র থাকে এবং তাহারা যদি ( সহোদর বা অসহোদর ) ভাই হয় এবং সেই লাতাদিগের পুত্রেরাও যদি অপিতৃক, বহুসংখ্যক ও সহোদর বা অসহোদর ভাই হয়, তাহা হইলে তাহারা সেই মৃত পিতার
সম্পত্তি সমান অংশে পাইবে। ( যথা মৃত পিতার তিন পুত্র থাকিলে তাহারাও
যদি মারা যায় এবং পিতার সেই মৃত তিন পুত্রের যথাক্রমে যদি ৩, ঃ বা ৢ পুত্র
থাকে তাহা হইলে সম্পত্তির ছয় বিভাগ হইবে না, তিন বিভাগ হইবে এবং
প্রত্যেক ঠ অংশ সেই তিন পুত্রের পুত্রেরা পাইবে অর্থাৎ প্রথম পুত্রের ৩ পুত্র
ঠ অংশ, দ্বিতীয় পুত্রের ২ পুত্র ঠ অংশ ও-তৃতীয় পুত্রের ১ পুত্র তৃতীয় ঠ অংশ
পাইবে। আবার যদি উক্ত তিন পুত্রের মধ্যে অগ্যতম পুত্র বা পুত্রথয় বাঁচিয়া
থাকে, তাহা হইলে তাহারা তাহাদের ঠ অংশ প্রত্যেকে পাইবে এবং মৃত
ভাতার পুত্র বা পুত্রগণ অবশিষ্ট ঠ অংশ পাইবে)। সহোদর লাতারা সংখ্যায় বহু
হইলেও যদি তাহাদের ভিন্ন পিতা থাকে, তাহা হইলে তাহাদিগের দায়বিভাগ
পিতাদিগকে লক্ষ্য করিয়া বিহিত হইবে ( অর্থাৎ সহোদর লাতারা তাহাদের
নিজ্ব নিজ্ব পিতৃথনেই অধিকারী হইবে )।

কোনও ব্যক্তির পিতা, ভ্রাতা (বা ভ্রাতারা) ও ভ্রাতৃপুত্রেরা বর্তমান থাকিলে, যদি সেই ব্যক্তি অর্থগ্রাহী হয় (অর্থাৎ কুটুম্বভরণার্থ ঋণকারী হয়), তাহা হইলে (ঋণদাতারা) তাহাদিগের মধ্যে পূর্বটি বর্ত্তমান থাকিলে পরটিকে (ঋণশোধনের জন্ম) অভিযুক্ত করিতে পারিবে না (অর্থাৎ উত্তমর্শ পিতাকে প্রথমতঃ দায়ী করিতে পারিবে, পিতা না থাকিলে ভাইদিগকে, এবং তাহারা না থাকিলে ভ্রাতৃপুত্রদিগকে অভিযুক্ত করিতে পারিবে) এবং পুত্রদিগের মধ্যেও জ্যেষ্ঠ পুত্র বিভ্যমান থাকিলে কনিষ্ঠের বিক্তমে অভিযোগ আনিতে পারিবে না। (এই পর্যান্ত পিতার মৃত্যুর পরে দায়বিভাগ নির্মণিত হটয়াছে।)

পিতা জীবিত অবস্থায় নিজ সম্পত্তি পুত্রদিগের মধ্যে বিভাগ করিয়া দিতে চাহিলে, তিনি কোন একটি পুত্রকে বিশেষ ভাগ (অর্থাৎ অধিক বা ন্য়নাংশ) দিতে পারিবেন না (অর্থাৎ তিনি সম্পত্তি সমান অংশে পুত্রদিগের মধ্যে বিভাগ করিয়া দিবেন)। এবং পিতা অকারণে কোন এক পুত্রকে সম্পত্তির অংশ হইতে বঞ্চিত করিতে পারিবেন না। পিতার কোন সম্পত্তি বিগুমান না থাকিলে, জ্যেষ্ঠ ভ্রাতারা কনিষ্ঠ ভ্রাতাদিগকে অনুগ্রহ (অর্থাৎ ভরণ) করিবে; কিন্তু, কনিষ্ঠ ভ্রাতারা মিথ্যাবৃত্ত অর্থাৎ সন্থাব্যবহারাদি হইতে ভ্রপ্ত হইলে সেই অনুগ্রহ (ভরণ) না-ও করা যাইতে পারে।

পুত্রেরা প্রাপ্তব্যবহার ( অর্থাৎ সাবালক বা অতীতবোড়শবর্গ ) হইলে পিতৃধনের বিভাগ চাহিতে পারিবে। যে সব পুত্র প্রাপ্তব্যবহার হয় নাই তাহাদের প্রাপ্য অংশ, ঋণাদি-দেয় বিশোধিত করিয়া ( অর্থাৎ ঋণাদির থরচ বাদে ), ( মাতুলাদি ) মাতৃবাহ্মব, কিংবা গ্রামবৃদ্ধদিগের হস্তে ব্যবহারপ্রাপ্তি বয়স পর্যন্ত স্থাপিত হইতে পারে। দেশান্তরগত পুত্রের অংশও তদ্রপভাবে ( অর্থাৎ মাতৃবহু বা গ্রামাবৃদ্ধদিগের হস্তে ) রক্ষিত হইতে পারে।

বে-সব প্রাতা সমিবিট হইয়াছে ( অর্থাৎ অন্তর্মপ স্ত্রীর সহিত পরিণীত হইয়া গাহিস্থা ধর্ম পালন করিতেছে ) তাহাদিগের বিবাহার্থ বে পিতৃধন ব্যয়িত হইয়াছে তৎপরিমিত ধন, অসমিবিট বা অবিবাহিত প্রাতাদের বিবাহ জন্ম দিতে হইবে, এবং ক্যাদিগের প্রদান জন্ম ( অর্থাৎ বিবাহের জন্ম ) পর্যাপ্ত ধনও দিতে হইবে।

পিতৃত্বত ঋণ ও পিতৃপরিত্যাজ্য **রিক্থ** (সম্পত্তি) সমান অংশে (পুত্রদি<sup>গের</sup> মধ্যে) বিভক্তব্য।

পূর্ব্বাচার্য্যগণের (বা কোটিল্যের নিজ আচার্ব্যের) মতে, যাহারা নিজিঞ্চন (অর্থাৎ অর্থবিহীন) তাহারা জলভাজনও বিভাগ করিয়া লইতে পারিবে। কোটিল্যের মতে এইরূপ আচার্য্যবচন ছলত্নষ্ট। কারণ, কোন অর্থ বা বস্তু (যথা, জলভাজন) থাকিলেই তাহার বিভাগ সম্ভবপর হইবে, এবং যে অর্থ অসৎ বা অবিজ্ঞমান (যথা, নিঙ্গিঞ্চনদিগের অবিজ্ঞমান দ্রব্যাদি যাহা), তাহার বিভাগ সম্ভবপর নহে।

"এতথানি অর্থ বা সম্পত্তি সামান্ত বা সাধারণ ( অর্গাৎ সমগ্র সম্পত্তি— যাহা বিভাজা ) এবং প্রত্যেকের অংশ এতৎপরিমিত"—এই কথা প্রকাশ করিয়া সাক্ষীদিগের নিকট বলিয়া সম্পত্তির বিভাগ করাইতে হইবে। যে পিতৃধন বিষমভাবে বিভক্ত হইয়াছে, যাহা ( অংশীদিগের ) পরস্পরমধ্যে অপহতে বা গুপু রহিয়াছে, যাহা দেশ ও কালদারা অন্তরিত রহিয়াছে, কিংবা যাহা (বিভাগ সময়ে) অবিজ্ঞাত রহিয়া পরে উৎপন্ন বা প্রকাশিত হইয়াছে, সে-সব সম্পত্তি পুনর্জার বিভক্ত হইতে পারিবে।

যে সম্পত্তির কোন দায়াদ বা স্বস্থাধিকারী নাই, মৃত ব্যক্তির খ্রীর দেহাযাত্রার্থ ও মৃতব্যক্তির প্রেতকার্য্যার্থ (উর্দ্ধদেহিক কার্য্যার্থ) ধন রাথিয়া, রাজা সেই সম্পত্তি অধিকার করিতে পারিবেন। কিন্তু, সেই ধন শ্রেণাক্তিয়ের ধন হইলে, তিনি তাহা নিতে পারিবেন না। (তিনি) তাহা ত্রৈবিছা, (অর্থাৎ বেদত্রেয়বিৎ) ব্রাহ্মণদিগকে দান করিবেন।

পতিত ব্যক্তি, পতিত ব্যক্তি হইতে জাত ব্যক্তি, এবং ক্লীব—এই তিন জন (দায়বিভাগে) অংশভাক্ হইবে না। জড় (সম্পূর্ণভাবে মূর্থ) উন্মন্ত, অন্ধ ও কুটা (কুটরোগাক্রান্ধ) পুত্রেরাও অংশভাগী হইবে না। যদি এই জড়াদি ব্যক্তিদিগের বিবাহ হইয়া থাকে (এবং যদি তাহারা অপত্যবান্ হইয়া থাকে), তাহা হইলে তাহাদিগের যে পুত্রেরা অতদিধ (অর্থাৎ অজড়, অহ্মন্ত, অনন্ধ ও অকুটা), তাহারা তাহাদিগের ভার্য্যার অর্থসন্বন্ধে ভাগহারী হইতে পারিবে। (অজড়াদি-ব্যতিরিক্ত) অন্যান্ত (জড়াদি) পুত্রেরা কেবল গ্রাসাম্ভাদন পাইতে অধিকারী হইবে; কিন্তু, পতিত পুত্র তাহাও পাইবে না।

তাহারা (অথাৎ উক্ত জড়াদি ব্যক্তিরা) যদি দারপরিগ্রহ করিয়া থাকে, কিন্তু, যদি তাহাদিগের (পুত্রাদি-) প্রজনন-শক্তি লুগু হইয়া গিয়া থাকে, চাহা হইলে তাহাদিগের পত্নীতে (নিয়োগদারা) বাদ্ধবেরা (ক্ষেত্রজ) পুত্র উৎপাদন করিতে পারিবে এবং সেই পুত্রদিগের জন্য সম্পত্তির অংশ কল্পিত হইতে পারিবে।

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে দায়বিভাগ-প্রকরণে দায়ক্রম-নামক পঞ্চম অধ্যায় (আদি হইতে ৬২ অধ্যায়) সমাপ্ত।

# ষষ্ঠ অধ্যায়

#### ৬০ম প্রকরণ—দায়বিভাগ; ভদন্তর্গত অংশবিভাগ

(গৃহস্থের) এক স্ত্রীর বহু পুত্র থাকিলে, জ্যেষ্ঠপুত্রের অংশ নিম্নলিখিত প্রকাণে ধার্দ্য হইবে, মথা—ব্রাহ্মণের জ্যেষ্ঠপুত্র অজ ( চাগ ) পাইবে ( অর্থাৎ যজ্ঞার্থক্রিয়াজন্য ), ক্ষত্রিয়ের জ্যেষ্ঠপুত্র অশ্ব পাইবে ( অর্থাৎ যুদ্ধার্থ ক্রিয়ার জন্য ), বৈশ্যেজ্যেষ্ঠপুত্র গো পাইবে ( অর্থাৎ বাণিজ্যার্থ ক্রিয়ায় জন্য ), ও শৃদ্রের জ্যেষ্ঠপুত্র অর্থি ( মেষ ) পাইবে ( অর্থাৎ রুশ্বান্থর্থ ক্রিয়ার জন্য )।

উক্ত পশুগুলির মধ্যে যে-গুলি কাণজাতীয় ( অর্থাৎ একাক্ষ, পঙ্গু প্রভৃতি সে-গুলি ( যথাক্রমে ব্রাহ্মণাদির ) মধ্যমপুত্রের অংশ হইবে, এবং নানাবর্ণাক্লতি ও ঐ পশুগুলি (যথাক্রমে ব্রাহ্মণাদির) কনিষ্ঠপুত্রের অংশভূক্ত হইবে।

্চতুপদ জন্তদিপের অভাবে, জ্যেষ্ঠপুত্র রত্নপ্রব্য ছাড়া অক্যান্স সব দ্রব্যের হ্রী
অংশ অধিক পাইবে। কারণ, জ্যেষ্ঠপুত্র পিণ্ডদানরূপ পাশ (গলায়) পরিয়
রহিয়াছে (অর্থাৎ পিতৃপিণ্ডদানে তাহার আর্থিক কট না হয় এই জন্ম তাহা
অধিক অংশপ্রাপ্তি ক্যাষ্য)। এইরূপ বিভাগ উশনাঃ বা শুক্রাচার্য্যে
মতার্যায়ী (এই মতের বিরোধ না করায়, ইহা কোটিলারও অন্থমোদিত নিয়
বলিয়া প্রতিভাত হয়)।

পিতার ত্যাজ্য পরিচ্ছদাদিরপ সম্পত্তির মধ্যে যান (উত্তম শকটাদি ও আভরণ জ্যেষ্ঠপুত্তের অংশ হইবে। শয়া, আদন ও ভোজনের কাৎস্থপান মধ্যমপুত্তের অংশ হইবে। এবং রুক্ষধান্ত (তিলাদি), লোহময় দ্রব্য, গৃহের আসবাবপত্ত (মুসলাদি) ও গো-শকট কনিষ্ঠপুত্তের অংশ হইবে। ন্যান্ত দ্রব্যসমূহের, কিংবা একটিমাত্র দ্রব্যেরও, সমান বিভাগ (সর্বপুর্ত্তদের ধ্য ) করিতে হইবে।

ভগিনীরা পিতৃত্যাজ্য দায়দ্রব্যের অংশভাগিনী হইবে না। (কিন্তু,) তাহারা তার পরিচ্ছদাদি হইতে ভোজনের কাংস্থপাত্র ও আভরণের ভাগ পাইবার বিকারিণী হইবে।

ষদি জ্যেষ্ঠপুত্র পুরুষকার-বিহীন (অর্থাৎ প্রজননশক্তিরহিত) হয়, তাহা ইলে জ্যেষ্ঠপুত্রের প্রাণ্য সমগ্র অংশর ট্র অংশ মাত্র সে লাভ করিবে। সে অস্তায় বৃত্তি (উপজীবিকা) অবলম্বন করে, কিংবা ধর্মকার্য্য হইতে নিবৃত্ত াকে, তাহা হইলে সে জ্যেষ্ঠপুত্রের প্রাণ্য সমগ্র অংশর ট্র অংশ মাত্র লাভ বিবে। আর যদি সে কামাচার হয় (অর্থাৎ স্বেচ্ছায় আচরণ করে), তাহা ইলে তাহাকে কোন অংশই দেওয়া হইবে না।

উক্ত নিয়মন্বার। মধ্যম ও কনিষ্ঠপুত্রদিগের অংশনির্ণয়ও ব্যাখ্যাত হইল— ্ঝিতে হইবে। এই মধ্যম ও কনিষ্ঠপুত্রের মধ্যে যে একজন পুরুষকারযুক্ত ( অর্থাৎ গ্রজননশক্তি সম্পন্ন হইবে ), সে জ্যেষ্ঠপুত্রের প্রাপ্য অংশ হইতে ই অংশ লাভ দরিবে ( কিন্তু, তৎসঙ্গে তাহার যথাপ্রাপ্ত নিজাংশও সে পাইবে )।

কিন্তু, (গৃহন্তের) একাধিক স্ত্রীর পুত্রগণ থাকিলে, তন্মধ্যে যে পুত্রের জন্ম নর্বাত্রে হইয়াছে তাহাকেই 'জ্যেষ্ঠ' বিবেচনা করিতে হইবে; পরস্ক একটি স্ত্রী দংস্কৃতা (অর্থাৎ ব্রাহ্মাদিবিধিপূর্ব্ধক পরিগৃহীতা) ও অপর স্ত্রী অসংস্কৃতা (অর্থাৎ গান্ধর্বাদিবিধিপূর্ব্ধক পরিগৃহীতা) হইলে, কিংবা একটি স্ত্রী (অক্ষতযোনি) ক্যারূপে বিবাহিতা ও অপরটি (ক্ষতযোনি) ক্যারূপে বিবাহিতা হইলে (অর্থাৎ তৎ তাবে পুত্রদিগের মাতৃভেদ থাকিলে) এই নিয়ম চলিবে না (অর্থাৎ দংস্কৃতা স্ত্রীর পুত্র উত্তরকালে জন্মগ্রহণ করিলেও এবং ক্যারূপে বিকাহিত স্ত্রীর পুত্র উত্তরকালে জন্মগ্রহণ করিলেও এবং ক্যারূপে বিকাহিত স্ত্রীর পুত্র উত্তরকালে জন্মগ্রহণ করিলেও তাহারা যথাক্রমে অসংস্কৃতা স্ত্রী ও ক্ষতযোনির পূর্ব্বজাত পুত্রের অপেক্ষায় 'জ্যেষ্ঠ' বলিয়াই গৃহীত হইবে)। এক স্ত্রীর যমজ পুত্র জন্মগ্রহণ করিলে, তন্মধ্যে যে পুত্রের জন্ম আগে হইবে তাহাকেই 'জ্যেষ্ঠ' বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে।

সূত, মাগধ, ব্রাত্য ও রথকারদিগের নানা স্ত্রীতে জাত পুত্রদিগের মধ্যে তাহাদিগের ঐশ্বর্য (প্রভবিষ্ণৃতা) লক্ষ্য করিয়া সম্পত্তি বিভাগ হইবে (অর্থাৎ যে পুত্রটি সর্ব্বাপেক্ষা ঐশ্বর্যাবান্ হইবে, সে-ই পিতার সমগ্র সম্পত্তির অ্বধিকারী হইবে) এবং অবশিষ্ট পুত্রেরা সেই (ঐশ্ব্যবান্) পুত্রের উপরই জীবিকার্থ নির্ভর

করিবে। যদি তাহারা অনীশ্বর হয় (অর্থাৎ তাহাদের মধ্যে যদি কোন পুত্রই ঐশ্বর্গাবান্ না থাকে ), তাহা হইলে তাহারা সকলেই পিতৃ-সম্পত্তি সমানভাবে বিভাগ করিয়া লইতে পারিবে।

যদি কোন ব্রাহ্মণ তাঁহার চারিবর্ণের চারি স্ত্রী হইতেই পুত্র লাভ করেন, তাহা হইলে (পিতৃথন হইতে জ্যেষ্ঠাংশ বর্জন করিয়া, অবশিষ্ট সম্পত্তি দশভাগে বিভক্ত করিয়া ব্রাহ্মণীর গর্ভজাত পুত্র ৪ অংশ, ক্ষত্রিয়ার পুত্র ৩ অংশ, বৈশ্যের গর্ভজাত পুত্র ১ অংশ পাইবে।

উক্ত বিধানাত্মনারে ক্ষত্রিয় ও বৈশ্যের যথাক্রমে ত্রিবর্ণজাত ও দ্বির্বজাত পুত্রদিগের মধ্যেও পিতৃধন বিভাগের নিয়ম ব্যাখ্যাত হইল—ব্বিতে হইবে ( অর্থাৎ ক্ষত্রিয়ের পক্ষে তাহার ক্ষত্রিয়া, বৈশ্যা ও শূলা স্ত্রীর গর্ভজাত পুত্র যথাক্রমে ৩ অংশ, ২ অংশ ও ১ অংশ পাইবে; এবং বৈশ্যের পক্ষে তাহার বৈশ্যা ও শূলা স্ত্রীর গর্ভজাত পুত্র যথাক্রমে ২ অংশ ও ১ অংশ পাইবে)।

রান্ধণের অনন্তরা স্ত্রীতে (অর্থাৎ ক্ষত্রিয়া স্ত্রীতে) জাত পুত্র সবর্ণা ব্রাহ্মণী স্ত্রীতে জাত পুত্রের সমান অংশ পাইবে (অবশ্য জ্যেষ্ঠাংশ বর্জ্জনপূর্বক ইহা পাইবে)। এবং ক্ষত্রিয়ের ও বৈশ্যের অনন্তরা স্ত্রীতে (অর্থাৎ যথাক্রমে বৈশ্যা স্ত্রীতে ও শূদ্রা স্ত্রীতে) জাত পুত্র (যথাক্রমে সবর্ণা ক্ষত্রিয়া স্ত্রীতে জাত পুত্রের ও সবর্ণা বৈশ্যা স্ত্রীতে জাত পুত্রের ভাগের অর্ধাংশ পাইবে (অবশ্য জ্যেষ্ঠাংশ বর্জ্জনপূর্বক তাহা পাইবে। অথবা, ইহাদের যে পুত্র পুক্ষবকারযুক্ত (অর্থাৎ প্রজননশক্তিসম্পন্ন) হইবে, সে (অর্ধাংশ স্থলে) সমান অংশও পাইতে পারিবে।

সবর্ণা ও অসবর্ণা এই তুই স্ত্রীর মধ্যে ষদি একজনই কেবল পুত্র লাভ করিয়া থাকে, তাহা হইলে সেই একমাত্র পুত্রই পিতার সব সম্পত্তির অধিকারী হইবে, এবং তাহাকে নিজের বন্ধুদিগকে ( অর্থাৎ পিতৃভরণীয় বান্ধবদিগকে ) ভরণ করিতে হইবে।

কিন্তু, রান্ধণের পরাশর পুত্র (অর্থাৎ শূলা স্ত্রীর গর্ভজাত পুত্র) একমাত্র পুত্র হইলেও (সব সম্পত্তির অধিকারী না হইয়া) কেবল ঠ অংশ পাইবে। বাকি ঠ অংশ পিতৃদপিও, (তদভাবে) কোন অন্তরঙ্গ তৎকুলোৎপন্ন সমানোদক ব্যক্তি পাইতে পারিবে, যেন তাহারা স্থধাদান (পিওদান) কার্য্য করিতে সমর্থ হয়। উক্ত সপিও ও কুল্য ব্যক্তি না থাকিলে, উক্ত ঠ অংশ সম্পত্তি পিতার আচার্য্য বা পিতার শিক্সও পাইতে পারিবে।

(উক্ত সকলপ্রকার অধিকারীর অভাবে) সেই ব্রাহ্মণের নিজ ক্ষেত্রে ( সবর্ণা

į

দ্বীতে) তাহার কোন মাতৃবন্ধ বা সগোত্র কোন পুরুষকে (নিয়োগবিধিতে) প্রয়োগ করিয়া যে ক্লেক্তাজ পুত্র উৎপন্ন হইবে, সেই পুত্রকেই পিতৃধন দেওয়া বাইতে পারিবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে দায়বিভাগ-প্রকরণে অংশবিভাগ-নামক ষষ্ঠ অধ্যায় (আদি হইতে ৬৩ অধ্যায়) সমাপ্ত।

#### সপ্তম অধ্যায়

## ৬০ম প্রকরণ—দায়বিভাগ; তদন্তর্গত পুত্রবিভাগ

( এই অধ্যায়ে পুত্রভেদ ও পুত্রদিগের মধ্যে ম্থ্যাম্থ্যজ্বভাব নিরূপিত হইবে।)
পূর্বাচার্যগণের ( অথবা, কোটিল্যের নিজ আচাহের্সর ) মতে, কোন পতি নিজ
স্বীতে অন্য পুরুষের বীজ বা রেতঃ উৎস্ট করাইয়া পুত্র উৎপাদন করিলে সেই
পুত্র সেই ক্লেক্রী পতির পুত্র বলিয়াই গৃহীত হইবে ( অর্থাৎ বীজ উৎসজ্জনকারী
পুরুষের পুত্র বলিয়া সেই পুত্র পরিগণিত হইবে না )।

অন্যান্য আচার্য্যদিগের মতে, (এইরূপ স্থলে) মাতাকে কেবল ভ্স্নারূপে (অর্থাৎ চর্মপ্রসেবিকার ন্যায় বীজাধারমাত্র বলিয়া অপ্রধানরূপে) মনে করিতে হইবে; স্থতরাং (অন্যের বীজ্বারা উৎপন্ন পুত্র তাহার ক্ষেত্রী পতির পুত্র বলিয়া গৃহীত হওয়ার যোগ্য নহে) তাহাতে যাহার রেতঃ বা বীজ উৎস্টু হইবে, পুত্রটি সেই বীজ্বী পুরুষের পুত্র বলিয়া গৃহীত হইবে।

কিন্ধ, কোটিল্য মনে করেন যে, বীজ ও ক্ষেত্র উভয়টিরই কার্যার্থ সমবৈত-ভাবে বিভ্যমান থাকায়, সেই পুত্র বীজী ও ক্ষেত্রী উভয়ের পুত্র বলিয়া গৃহীত হইবে।

কৃতদারক্রিয়া অর্থাৎ পরিণীতা স্ত্রীতে স্বয়ং উৎপাদিত পুত্রকে ঔরস আখ্যা দেওয়। হয়। পুত্রিকাপুত্র (অর্থাৎ বিবাহদানকালে 'ইহার যে পুত্র হইবে সে আমার পুত্র হইবে' এইরপ পরিভাষিত হইলে, বরকে যে কন্যা পিতা দান করেন সেই কন্যার নাম 'পুত্রিকা' এবং তৎপুত্রই 'পুত্রিকাপুত্র') ওরস পুত্রের তুল্য বলিয়া পরিগণনীয় হইবে। কোন পতির, সগোত্র বা অন্যগোত্র পুরুষ যদি তাহার ক্ষেত্রে (স্ত্রীতে) পুত্রোৎপাদনার্থ নিযুক্ত

হয়। বীজসেকা জনকের যদি অন্ত ঔরস পুত্র না থাকে, তাহা হইলে এই ক্ষেত্রজ্ঞ পুত্রই দিপিতৃক (অর্থাৎ 'বীজী' ও 'ক্ষেত্রী' এই উভয়-পিতৃক হইয়া), বা দিগোত্র (অর্থাৎ বীজী ও ক্ষেত্রী এই উভয়-পিতৃক হইয়া), বা দিগোত্র (অর্থাৎ বীজী ও ক্ষেত্রী এই উভয়গোত্র হইয়া) হই জনেরই স্বধাদায়ী (অর্থাৎ পিগুদায়ী) ও রিক্থভাক্ (অর্থাৎ দায়হর বা পিতৃ-সম্পত্তির অধিকারী) হইবে। (মাতার) বান্ধবদিগের গহে (বিনা নিয়োগে) অন্ত কাহারও দারা গুঢ়ভাবে উৎপাদিত পুত্র পূঢ়জ্ঞ বলিয়া আখ্যাত হয় এবং এই পুত্র 'ক্ষেত্রজ্ঞ' পুত্রের ন্যায় বিবেচিত হইবে। (মাতাপিতার ন্যায়) বন্ধুদারা পরিত্যক্ত পুত্রকে যদি অন্ত কেহ তাহার সংস্কার (অর্থাৎ শাস্ত্রোক্ত বিধিদারা লালনপালন) করে, তাহা হইলে সেই পুত্রের নাম হইবে অস্পবিদ্ধ এবং সেই পুত্র সেই সংস্কারকারীরই পুত্র বলিয়া গৃহীত হইবে। (বিবাহের পূর্বে) কন্যাভাবে থাকা সময়ে প্রস্থত পুত্রকে কানীন বলা হয়। গর্ভবতী স্ত্রীর বিবাহান্তে জাত পুত্রকে সহোঢ় বলা হয়। পুনর্কার বিবাহিতা স্থীর গর্ভজাত পুত্রকে স্কাঞ্যা দেওয়া হয়।

স্বয়ংজাত (বা উরস) পুত্র পিতার, সংস্কৃত্তীর ও তদ্দৃদিগের দায়ভাগী হইতে পারে। আর পরজাত (ক্ষেত্রজ প্রভৃতি) পুত্র কেবল সংস্কারকারীরই দায়ভাগী হইতে পারে; কিন্তু, পিতৃবন্ধুদিগের দায়াদ বা দায়ভাগী হইতে পারে না।

মাতা ও পিতাধারা (সমস্ত্র) উদকগ্রহণপূর্বক (অন্তর পুরুষকে) দত্ত পুত্রের নাম দত্ত্ব বা দত্তক এবং এই পুত্র স্বয়ংজাত পুত্রের ন্যায় বিবেচিত হইবে।

যে পুত্র 'আমি আপনাদেরই পুত্র' এই বলিয়া স্বয়ং নিজেকে পুত্ররূপে অন্তের হস্তে অর্পণ করে, অথবা 'এই পুত্র আপনাদেরই পুত্র' এই বলিয়া তাহার বন্ধুরা ( বান্ধবেরা ) যাহাকে অত্যের হস্তে পুত্ররূপে অর্পণ করে, এই উভয়প্রকার পুত্রকে উপাত্ত বলা হয়।

'তুমি আমাদেরই পুত্র' এই বলিয়া যাহাকে পুত্র বলিয়া অঙ্গীকার করা হয়, তাহার নাম ক্ষান্তক। (মূল্য দিয়া পিতামাতার নিকট হইতে) ক্রয় করিয়া পুত্ররূপে যাহাকে গ্রহণ করা হয়, সেই পুত্রকে ক্রীন্ত বলা হয়। (উক্তপ্রকার পুত্রেরা থালা কালে) পরে কাহারও উরস পুত্র জন্মগ্রহণ করিলে, যাহারা তাহার স্বর্ণ পুত্র তাহারা পিতার সম্পত্তি & জংশে অধিকারী হইবে (আর & জংশ

প্তরসপুত্র পাইবে)। তাহার অসবর্ণ পুত্রেরা (এইরূপ অবস্থায়) কেবল গ্রাসাচ্ছাদনমাত্র পাইবার অধিকারী হইবে।

বান্ধণ ও ক্ষত্রিয়ের পক্ষে তাহাদিগের অনস্তরজাতীয়া স্ত্রীতে ( অর্থাৎ বান্ধণের পক্ষে ক্ষত্রিয়া ও ক্ষত্রিয়ের পক্ষে বৈশ্যা স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রেরা সবর্গ বিলিয়া গৃহীত হয়; এবং একান্তরজাতীয়া স্ত্রীতে ( অর্থাৎ বান্ধণের পক্ষে বৈশ্যা ও ক্ষত্রিয়ের পক্ষে শৃত্রা স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রেরা তাসবর্গ বিলিয়া গৃহীত হয়।

ব্রাহ্মণের বৈশ্যা স্ত্রীতে উৎপন্ন পুত্র **অন্ধর্ম্ন** বলিয়া আথ্যাত হয়, এবং তাঁহার (ব্রাহ্মণের) শূলা স্ত্রীতে উৎপন্ন পুত্র **নিষাদ** বা **পারশব** বলিয়া কথিত হয়। ক্ষত্রিয়ের শূলা স্ত্রীতে উৎপন্ন পুত্র **উগ্র** নামে পরিচিত হয়।

বৈখ্যের শূলা স্ত্রীতে উৎপন্ন পুত্র শূলই থাকিয়া যায় (জাত্যস্তর প্রাপ্ত হয়না)।

( ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্ব )—ইহাদের মধ্যে যাহারা উপনয়নাদি বিধির অতিক্রমপূর্বকি দারপরিগ্রহাদি করিয়া সবর্ণা স্ত্রীতে পুত্র উৎপাদন করে, তাহাদের সেই পুত্রেরা ব্রান্ত্য সংজ্ঞায় অভিহিত হয়। এই প্যান্ত অন্থলোম জাতির কথা বলা হইল ( অর্থাৎ উচ্চ বর্ণের পুরুষ হইতে নীচ বর্ণের স্ত্রীতে উৎপন্ন পুত্রের নির্ণয় করা হইল )।

( সম্প্রতি প্রতিলোম জাতির বিষয় বলা হইতেছে।)

শূল হইতে ( বৈষ্ঠা স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রের নাম **অযোগব**, ( ক্ষত্রিয়া স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রের নাম ক্ষান্ত ও ( বাহ্মণী স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রের নাম চণ্ডাল। বৈষ্ঠ হইতে ( ক্ষত্রিয়া স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রের নাম মাগধ এবং ( বাহ্মণী স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রের নাম বৈদেহক। ক্ষত্রিয় হইতে ( বাহ্মণী স্ত্রীতে ) উৎপন্ন পুত্রের নাম সুত্ত।

কিন্তু, (মনে রাখিতে হইবে ষে,) পুরাণে বর্ণিত স্থত ও মাগধ উক্ত প্রতিলোমজ স্থত ও মাগধ হইতে ভিন্ন ব্যক্তি এবং তাঁহারা ব্রাহ্মণ ও ক্ষত্রিয় হইতেও বিশেষভাবে শ্রেষ্ঠ।

উক্ত প্রতিলোম জাতিসমূহ ( অর্থাৎ নীচ বর্ণের পুরুষ হইতে উচ্চবর্ণের স্ত্রীতে উৎপন্ন পুত্রগণ ) রাজার (বর্ণাশ্রমরক্ষারূপ) স্বধর্মের ব্যতিক্রম ঘটিলেই সম্ভূত হয়।

(ক্ষত্রিয়-শ্রার পুত্র) 'উগ্র' হইতে ( ব্রাহ্মণ-শূরার পুত্রী ) নৈষাদীত উৎপন্ন পুত্রের নাম কুকুটক। ইহার বিপর্যায়ে, (অর্থাৎ নিষাদ হইতে উগ্রক্তাতে ১৭ উৎপন্ন) পুত্রের নাম পুত্রুস। অষষ্ঠ হইতে বৈদেহিকাতে (বৈদেহক-কন্থাতে)
উৎপন্ন পুত্রের নাম বৈণ। ইহার বিপর্যায়ে (অর্থাৎ বৈদেহক হইতে অষষ্ঠাতে)
উৎপন্ন পুত্রের নাম কুশীলব। উগ্র হইতে ক্ষন্তাতে উৎপন্ন পুত্রের নাম
শ্বপাক।

উক্ত এই জাতিগুলি ও অন্যান্য বর্ণ-জাতির অন্তরালভব অবান্তর (সম্বরজ) জাতির উৎপত্তি বুঝিয়া লইতে হইবে।

বৈণ্য বা বেণ-জাতি কর্মদারা রথকার (রথনির্মাণকারী) বলিয়া স্থপরিচিত।
অন্তরাল জাতিগণের মধ্যে সমানজাতীয় বিবাহ হইতে পারে। (তন্মধ্যে
অন্বষ্ঠাদি) উৎক্রপ্ত জাতির পক্ষে (নিষাছাদি) নিরুইজাতীয়া স্ত্রীগামিত্ব ও
পূর্ব্বাচারের অন্থবর্তন স্বধর্ম বলিয়া স্থাপিত হইবে। চণ্ডাল জাতি ছাড়া ইহারা
সকলেই শুদ্রের ধর্মে ধর্মবান্ হইতে পারে।

কেবল এই ভাবে ( অব্যভিচারে ) ব্যাপ্রিয়মাণ রাজাই স্বর্গলাভ করিবেন, অন্তথা ( উক্ত প্রকারের ব্যভিচার ঘটাইলে তিনি ) নরকভোগ করিবেন।

সর্ব্যপ্রকার অন্তরালজাতির লোকের মধ্যে ( বিভক্তব্য পিতৃদ্রব্যের ) বিভাগ সমানভাবেই ( খ্রী-পুরুষের অবিশেষে ? ) হইয়া থাকে।

(জনপদাদি) দেশের, (ব্রাহ্মণাদি) জাতির, সজ্যের কিংবা গ্রামের যে-সব ধর্ম পরস্পরাসিদ্ধ, সেই ধর্ম অন্ত্সারেই তাহাদের মধ্যে দায়ধর্ম (বা দায়-বিভাগের নিয়ম) প্রকল্পিত হইতে পারিবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে দায়বিভাগ-প্রকরণে পুত্রবিভাগ-নামক সপ্তম অধ্যায় ( আদি

হৈইতে ৬৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# वर्धेस वधार्

## ৬১ প্রকরণ—বাস্তক ; ভদন্তর্গত গৃহবাস্তক

বাস্তসম্বন্ধীয় বিবাদসমূহের নির্ণয়ে সামন্তবা প্রতিবেশীই প্রত্যয় বা প্রমাণ-শ্বরূপ গৃহীত হইবার ধোগ্য।

'বাস্ত্র' বলিলে গৃহ, (কেদারাদি) ক্ষেত্র, আরাম (উপবন বা বাগান), সেতৃবন্ধ (সীমাবন্ধ, বা পুস্পফলাদির বাট), তড়াগ ও (জলের) আধার বুঝা যায়।

প্রত্যেক গৃহস্থদ্ধে ইহার কর্ণ বা কোটিতে নিখাত কীলের ( স্থূণ বা খুঁটির ) লোহময় স্বত্র বা তারের সম্বন্ধকে সেতু নাম দেওয়া হয় ( অর্থাৎ এই সেতুই দীমাছোতক চিহ্ন)। গৃহনির্মাণ করাইতে হইলে, এই সেতু বা দীমাভোগের অন্তর্মণই তাহা করাইতে হইবে ( অর্থাৎ ভ্রুক্ত দীমার অতিক্রম করা চলিবে না )।

( যদি কোন গৃহের পূর্ব্বকৃত সেতৃ বা সীমাবন্ধ না থাকে, তাহা হইলে ) পরের কুডা ( ভিত্তি বা প্রাচীর ) হইতে সরাইয়া ২ অরত্থি-পরিমিত বা ৩ পদ-পরিমিত পাদবন্ধন বা নেমিবন্ধ ( স্বভূমির কুডো ) নির্মাণ করাইতে হইবে।

কেহই স্বগৃহের জন্ম প্রয়োজনীয় **অবস্কর** (মলম্ত্রের বিসর্গন্থান), **ভ্রম** (জলনির্গমের দার), কিংবা উদপান (কৃপ) তদ্যোগ্যপ্রদেশ হইতে অন্তর নির্দাণ করাইতে পারিবে না। কিন্তু, স্থতিকাকৃপ অর্থাৎ স্থতিকান্ধান ও জলপতনের কৃপ বা গর্ভ যেখানে-সেখানে করান যাইতে পারে এবং ইহার স্থিতিকাল দশ দিনের বেশী হইতে পারিবে না।

এই বিধির অতিক্রম বা উল্লভ্যন করিলে অপরাধীর উপর প্রথমসাহসদও বিহিত হইবে।

উক্ত স্তিকাবিষয়গত বিধিষারা, (উপনয়নবিবাহাদি) মঙ্গলক্রিয়াতে ব্যবহারের জন্ম ইন্ধন বা জালাইবার কাষ্টাদির বিদারণার্থ স্থানবিধি (অর্থাৎ গৃহের যথেষ্ট দেশে তৎকার্য্য সম্পাদনের ব্যবস্থা) ও আচমন জলের নির্গমনপথের বিধিও ব্যাখ্যাত হইল—ইহা বুঝিতে হইবে (অর্থাৎ মঙ্গলক্রিয়াগুলির সমাপ্তিতে আর এই ব্যবস্থা বলবতী বলিয়া অমুমিত হইবে না)।

তিন পদ-পরিমিত গভীরভাবে থাত (মতাম্বরে, পরকীয় কুডা হইতে তিনপদ

দ্রে অপক্রাস্ত), অথবা, ১ই অরত্মি-পরিমিত ভূমিভাগে প্রবেশিত ( মতান্তরে, পরকীয় কুড়া হইতে দ্রে স্বভূমিতে অন্তঃপ্রবেশিত), গাঢ়ভাবে ( গভীর ও ঘনভাবে ) প্রসরণশীল জলমার্গ বা সর্বপ্রকার ( মলিন ) জলপ্রবাহের পতনস্থান নির্মাণ করাইতে হইবে। এই বিধির অতিক্রমকারী পুরুষকে ৫৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

একপদ-পরিমিত গভীরভাবে থাত বা এক অরত্মি-পরিমিত স্থানে নিবেশিত চক্রিস্থান (বলীবর্দ্দাদির জন্ম স্থান), চতুম্পদস্থান (গজাদির জন্ম স্থান), অগ্নিষ্ঠ (চুলী), উদগ্রেরস্থান (বড় জলপাত্রের জন্ম স্থান), রোচনী (আটা প্রভৃতি পেষণের জন্ম রোচন-কর্মাযন্ত্র) ও কুট্টনী (উল্থল) নির্মাণ করাইতে হইবে। এই বিধির অতিক্রমে অপরাধীকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

দর্বপ্রকারের ছুইটি বাস্তর মধ্যে, কিংবা পরস্পরসন্নিকৃষ্ট ছুইটি শালার মধ্যে এক কিছু-পরিমিত ( অর্থাৎ একহন্ত আট আঙ্গুল-পরিমিত ) স্থান বা তিন পদ-পরিমিতস্থান অন্তর্বিকা বা অন্তরাল হিদাবে রাখিতে হইবে । উক্ত প্রকার শালাদ্বরের পটলপ্রান্তের অন্তরাল ৪ আঙ্গুল হইতে পারে, অথবা ইহাদের পটলপ্র পরস্পরের উপর আরুত্ত থাকিতে পারে । উক্ত অন্তরিকাতে বা অন্তরালে, কিছুমাত্র-পরিমিত ( অর্থাৎ আট আঙ্গুলসহিত এক হন্ত-পরিমিত ) একটি আণিদ্বার বা ক্ষুবার করাইতে হইবে, এবং ইহা থগুন্টুতের সংশ্লার জন্ম ব্যবহৃত হইবে এবং ইহাতে মানুবের গতাগতির পথ যেন স্কর না হয় । প্রকাশের ( বা আলোর ) জন্ম ( ঘরের ) উপরিদিকে ছোট বাতায়ন নির্মাণ করাইতে হইবে । গৃহস্বামীরা একত্র মিলিত হইয়া একমত হইলে নিজ নিজ ইচ্ছামুসারেও ( বাড়ীর মধ্যে অন্তর্বিকা, বাতায়ন প্রভৃতির ) নির্মাণ করাইতে পারের ; কিন্তু নিক্ষদিগের অনভিমত বিষয় বারণ করিতে হইবে ।

বৃষ্টিজনিত পীড়ার পরিহারার্থ বানলটা বা গৃহের বরগুকের (বসিবার জগ্য নির্দ্মিত মৃত্তিকাময় স্থূপবিশেষের) উপরিভাগের অবচ্ছাদনীয় অংশ কটদারা (তৃণবিশেষদারা) আচ্ছাদিত করাইতে হইবে এবং ইহার চতুদ্দিকে স্থিত ছোট ভিত্তি বা প্রাচীরগুলিও কটদারা আচ্ছাদিত করিতে হইবে। এই বিধির অতিক্রমকারীকে প্রথমসাহসদও দিতে হইবে।

(কোন ব্যক্তি যদি নিজগৃহে) এমন ভাবে দ্বার ও বাতায়ন (জানালা)
নির্মাণ করে যে, সে-গুলি অন্তের গৃহজনের প্রতিলোম বা প্রতিকৃল হইয়া, বাধা
বা উপত্রব উৎপাদন করে, তাহা হইলে তাহাকেও প্রথমসাহসদত্তে দৃতিত হইতে

হইবে। কিন্তু, এইরূপ দার ও বাতায়ন-নির্মাণ যদি রাজমার্গ ও রখ্যার ( রাস্তার ) অভিমুথ করিয়া রাখা হয় তবে পরবাধাতে দোষ গৃহীত হইবে না।

(কাহারও নিজ বাড়ীতে) যদি থাত (গর্জাদি), সোপান (সিঁড়ি), প্রাণালী (জলনির্গমপথ), নিশ্রেণী (অধিরোহণী বা উক্তম্বানে উঠিবার জন্য কাষ্ঠাদিনির্দ্মিত সিঁড়ি) ও অবস্করে (মলমূত্রাদি বিদর্গম্বান) এমন ভূমাংশে নির্দ্মিত হয় যে, তদ্ধারা বহির্জনের বাধা বা কষ্ট উৎপন্ন হইতে পারে, কিংবা অন্যের স্বভূমির উপভোগে বাধা-প্রাপ্তি ঘটে, তাহা হইলেও অপরাধী গৃহস্বামীর উপর প্রথমসাহসদও বিহিত হইবে।

অন্তের বাড়ীর কুডা বা ভিত্তি যদি কাহারও বাড়ীর জলাবদেকের দরুণ উপহত হয় (অর্থাৎ হানিগ্রস্ত হয়), তাহা হইলে অপরাধী গৃহপতিকে ১২ পন দণ্ড দিতে হইবে। এবং পরকুডো যদি অপর গৃহস্থের মৃত্র ও পুরীষদ্বারা উপঘাত ঘটে, তাহা হইলে অপরাধী গৃহপতিকে পূর্বোক্ত দণ্ডের দিগুণ (অর্থাৎ ২৪ পন) দণ্ড দিতে হইবে।

(বর্ষা ঋতুতে পর্জ্জন্য দেব) বর্ষণ করিতে থাকিলে, (গৃহন্থের বাড়ীর) প্রণালীর (জলনির্গমপথের) মৃথ মৃক্ত করিয়া দিতে হইবে (অর্থাৎ থোলা রাথিতে হইবে), তাহা না হইলে গৃহস্বামীকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

ষে অবক্রীত ব।ক্তি (মূল্যদান-স্বীকারে) গৃহস্থের গৃহে ভাড়াটীয়া হিসাবে বাস করে, সে ব্যক্তিকে বাসবিধয়ে প্রতিষেধ করিলেও যদি সে সেইখানে বাস করে, তাহা হইলে তাহারও ১২ পণ দণ্ড হইবে। আবার যদি অবক্রেতা মালিক অবক্রয়ণ অর্থাৎ তদগৃহে বাস করার মূল্য বা ভাড়া (পরিভাষিত কালের অতিক্রমণ ঘটিতেই) ত্যাগ করিয়া (অবক্রীতকে) বাড়ী হইতে উঠুাইয়ৢ দেয়, তাহা হইলে তাহারও (অর্থাৎ মালিকেরও) ১২ পণ দণ্ড হইবে কিছ, অবক্রীত বা ভাড়াটীয়া ব্যক্তির যদি (বাক্ ও দণ্ড-) পাকষ্য, স্তেয় (চৌর্য্য), সাহস, সংগ্রহণ (বলাৎকারে স্বীব্যভিচার) এবং মিথ্যাভোগদখলের দোষ থাকে, তাহা হইলে অবক্রেতার বিক্লছে কোন দোষ বর্ত্তিবে না। যদি অবক্রীত ব্যক্তি (নির্দিষ্ট বর্ষ পর্যন্ত অবক্রেতার গৃহে বাস না করিয়া) যথেচ্ছভাবে গৃহ ছাড়িয়া যায়, তাহা হইলে তাহাকে দেই বর্ষের বাকি অবক্রয় বা গৃহবাসের মূল্য মালিককে দিতে হইবে।

( ছুই বা অধিক লোকের মধ্যে ) যে গৃহ সাধারণ, তাহাতে যে লোক সাহায্য দিবে না এবং যে লোক সেই গৃহে সামান্ত ( সাধারণ ) উপভোগের রোধ করিবে —তাহাদিগের প্রতি ১২ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। যদি কেহ সেই গৃহে অন্তের সাধারণ ভোগ বিনষ্ট করে, তাহা হইলে তাহাকে উক্ত দণ্ডের দ্বিগুণ ( অর্থাৎ ২৪ পণ ) দণ্ড দিতে হইবে।

(বছ অংশীদারদিগের সামাত্য বাস্কগৃহে) কোন্ঠক (কোঠাঘর; মতান্তরে, গৃহদার; অত্যমতে গোমহিষাদির জলপানার্থ রহৎ পাত্রবিশেষ), অঙ্গন, বর্জ্জ (মলম্ত্রপরিত্যাগ-স্থান; 'বর্জ্জ' স্থানে 'বর্চ' পাঠও দেখা ষায়; কিন্তু, বর্চন্ শব্দের (বর্চ-শব্দের নহে) অর্থও তাদৃশ হইতে পারে) এবং অগ্নিশালা (রন্ধনগৃহ, বা যজ্জীয়াগ্লি রক্ষা করার স্থান) ও কুট্টমশালা, এবং যে-সব স্থান বাড়ীতে অনাবৃত—এই সবগুলির সামাত্য বা সাধারণ ভোগই বাঙ্খনীয় (কেহ কেহ 'কোন্ঠক ও অঙ্গন ব্যতীত অত্যাত্য সকল অনাবৃত স্থানের'—এইরূপ ব্যাখ্যা করেন)॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মান্তীয় নামক তৃতীয় অধিকরণে বাস্তকের অন্তর্গত গৃহবাস্তক-নামক অষ্টম অধ্যায় ( আদি হইতে ৬৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### নবম অধ্যায়

## ৬১ম প্রকরণ—বাস্তুক; ভদন্তর্গত বাস্তবিক্রয়

জ্ঞাতি, সামন্ত (নিকটগৃহবাসী) ও (ঋণপ্রয়োগকারী) ধনিক—এই তিন প্রকার ব্যক্তিরা ক্রমে (অর্থাৎ পূর্ব্বাভাবে পরপরটি) ভূমি ও (গৃহাদি) সম্পত্তি খরিদ করা বিষয়ে উপযুক্ত ('অভ্যাবহেয়ুং'—এই পাঠে থরিদ করিতে অধিকারী) বলিয়া গণ্য হইবে।

নিকটবর্ত্তী চল্লেশটি সামন্তের কুলের লোকেরা (উপস্থিত থাকিয়া) (বিক্রেতব্য) গৃহের সম্মুখে "এই বাড়ী বিক্রয় করা হইবে" বলিয়া উচ্চেঃস্বরে ঘোষণা করিবেন। (এবং তাহারা) এই বাড়ীসম্বন্ধীয় ক্ষেত্র, আরাম (বাগানবাড়ী), সেতৃবন্ধ (সীমাবন্ধ), তড়াগ ও অক্তান্ত জলাধারের সীমাতে অবস্থিত হইয়া, সামস্ত ও গ্রামবৃদ্ধদিগের নিকট তৎ তৎ স্থানাদির সেতু (সীমা) ও ভোগবিষয়ে সব কথা (বিস্তৃতভাবে) শুনাইবেন। "এইরূপ মূল্যে কে এই সম্পত্তি ক্রয় করিবেন" এই কথা তিনবার উল্ঘোষণাসহকারে প্রাবিত হইলে, যদি জ্ঞাতি প্রভৃতি কেহ ব্যাহত না, করেন অর্থাৎ বিক্রয়ে আপত্তি না জানান, তাহা হইলে যিনি ক্রেতা দাঁড়াইবেন তিনিই (সম্পত্তিটি) থরিদ করিতে পারিবেন।

ক্রেতাদিগের সংঘর্ষে যদি সম্পত্তির (বিক্রেত্নির্দিষ্ট মূল্য অপেক্ষায়ও) অধিকতর মূল্য বাড়িতে থাকে, তাহা হইলে সেই মূল্যবৃদ্ধির অংশ গুরুসহিত রাজকোশে জমা দিতে হইবে। বিক্রয় বিষয়ে যিনি প্রতিক্রোপ্তা অর্থাৎ মূল্যবর্দ্ধনকারী ক্রেতা, তিনি শুরু দিতে বাধ্য থাকিবেন।

গৃহস্বামীর অহপস্থিতিতে এই প্রতিক্রোকা বা মূল্যবৃদ্ধির ডাক উঠাইলে, অপরাধীর ২৪ পণ দণ্ড হইবে। যদি প্রতিক্রোপ্টা সাত দিনের পরও উপস্থিত না হয়েন তাহা হইলে প্রতিক্রেন্ট্ট (অর্থাৎ যাহার সম্পত্তি ডাকে বিক্রীত হইতেছে সেই গৃহস্বামী) তাহার সম্পত্তি (অত্যের নিকট) বিক্রয় করিতে পারিবে। কোন বাস্তুসম্পন্ধ প্রতিক্র্ত্ত (গৃহস্বামী)-দারা ক্রত কোন অতিক্রম ঘটিলে (অর্থাৎ প্রতিক্রোষ্টাকে অনাদর করিয়া অন্যের নিকট সম্পত্তি বিক্রয় করিলে), তাহার উপর ২০০ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। (বাস্তু ব্যতীত) অন্যান্য বস্তুর (অর্থাৎ চতুম্পদাদির) বিক্রয়সম্বন্ধে এইরূপ অতিক্রম ঘটিলে, অপরাধীর উপর ২৪ পণ দণ্ড ধার্য্য হইবে। এই পর্যান্ত বাস্ত্রবিক্রয়ের বিষয় ব্যাখ্যাত হইল।

ত্বই গ্রামের দীমাদম্বন্ধে বিবাদ উপস্থিত হইলে, তাহা নিকটবর্ত্তী পাঁচগ্রাম বা দশগ্রামের (ব্যবহারাভিজ্ঞ) লোকেরা (গিরিনদী প্রভৃতি) স্থাবর দীমা বা (তৃষভশ্মাদি) ক্লত্রিম দীমান্বারা নির্ণয় করিবেন।

(নিকটবর্ত্তী গ্রামের অভাবে দীমাবিবাদসংশ্লিপ্ট গ্রামন্বয়ের মধ্যে) ষে-দব রুষকবৃদ্ধ ও গোপালকবৃদ্ধেরা পূর্বে বিবদমান গ্রামে (ভূমাদি) ভোগ করিয়াছে, অথবা, অন্থ যাহারা সেই দেশে বাদ করিয়াছে, এবং নপ্ট সেতু বা দীমাদম্বন্ধে যাহাদের অভিজ্ঞতা আছে ('বাহাাঃ'-পার্চে, 'দেই গ্রামন্বয়ের বহির্দ্দেশস্থ লুন্ধকাদি লোকেরা' এইরূপ ব্যাখ্যা হইতে পারে)—তাহারা বহুসংখ্যায় উপস্থিত হইয়া, অথবা, তাহাদের মধ্যে যে কোন এক জন, (রক্তবন্ধাদিধারিণী ক্ষীলোকাদির বেশে) বিপরীতবেশধারী হইয়া পূর্বের দীমাসেতু বা দীমাবন্ধ-নির্দ্দেশপূর্বক দীমা নির্ণয় করিয়া দিবে। যদি পূর্বের নির্দ্দিন্ত দীমাচিহ্ন না দেখা যায়, তাহা হইলে (ইহার মিথ্যা নির্দ্দেশকারীর) ১০০০ পদ দণ্ড হইবে। আর যদি পূর্বের দীমা ষ্থানির্দ্দিন্ত-ভাবে নির্ণীত হয়, তাহা হইলে দীমা অপহরণকারী ও দীমা ছেদনকারী অপরাধী-দিগের উপর সেই দণ্ডই (অর্থাৎ ১০০০ পদ) বিহিত হইবে।

(বে-সব ক্ষেত্রাদির) সেতৃ বা সীমাবন্ধ ও ভোগদখল নই বা অত্যন্ত অবিজ্ঞাত, রাজা (স্বয়ং) সকলের উপকারের আহগুণো ইহার সীমা বিভাগ করিষ্ট্রা দিবেন। ক্ষেত্রসম্বন্ধে বিবাদ উপস্থিত হইলে ইহা নিকটবর্ত্তী গ্রামের বৃদ্ধগণ মীমাংসা করিয়া দিবেন। তাঁহাদিগের মধ্যে এই বিষয়ে মতদ্বৈধ উপস্থিত হইলে, যে-পক্ষ বছ শোচসম্পন্ন ও অন্নমত বা পূজনীয় লোকেরা জয়-নির্দেশ করিবেন, সে-পক্ষের জয় নির্দীত হইবে। অথবা, তাঁহারা মধ্য বা সম পক্ষ অবলম্বন করিয়া বিভাগ নির্দিষ্ক করিবেন। এই উভয় উপায় যদি বিবাদীরা না মানিয়া লয়, তাহা হইলে রাজ্ঞা বিবাদবিষয়ভূত বাস্ত (ক্ষেত্রাদি) স্বয়ং অধিকার করিয়া লইবেন এবং যেস্থলে কোন বাস্তব স্বামী নির্দ্ধারিত হয় না, তাহাও তিনি স্বয়ং অধিকার করিতে পারিবেন। অথবা, তিনি (রাজা) (অপগতস্বামীর দায়গ্রহণে উপযুক্ত লোকদিগের মধ্যে) যথোপকার সেই বাস্ক্র বিভাগ করিয়া দিবেন।

ষে ব্যক্তি (অত্যের) কোনও (ক্ষেত্রাদি) বাস্ত বলপূর্ব্বক নিজ অধিকারে আনিবে, তাহার উপর স্তেয়দণ্ড (চোরোচিত দণ্ড) বিহিত হইবে। ধদি সে (ঋণাদির) কারণবশতঃ তাহা অধিকার করে, তাহা হইলে সেই (ক্ষেত্রাদি) বাস্তর সংস্কার জন্ম (বাস্তব্যামী) যে শারীরিক প্রয়াস করিবে ও যে ক্ষেত্রসমূখ ফল আজীব-রূপে প্রাপ্ত হইবে, তাহার গণনা করিয়া (ঋণাদি পরিশোধনের পর) অতিরিক্ত অর্থাংশ ভূস্বামীকে সে ফিরাইয়া দিবে। যদি বেঙ্ সীমা অপহরণ করে (অর্থাৎ অত্যের ভূমি নিজসীমাতে ভক্ত করিয়া লয়) তাহা হইলে তাহাকে প্রথমসাহসদণ্ড দিতে হইবে। আর সীমাচিক ভঙ্গ করিলে তাহাকে ব্লু পদণ্ড দিতে হইবে।

উক্ত গৃহাদির সীমাবিবাদের বিধানধারা, তপোবন, বিবীত, মহাপথ, শ্মশান, দেবকুল (মন্দির), যজনস্থান, ও পুণ্যস্থানের বিবাদও নির্ণীত হইতে পারিবে বলিয়া ধরিয়া লইতে হইবে। এই পর্য্যস্ত মর্য্যাদা বা সীমাবিষয়ক নির্ণয় স্থাপিত হইল।

দর্শপ্রকার বিবাদই সামন্ত বা প্রতিবেশীর প্রত্যের বা প্রমাণদার। মীমাংসিত গইবে। বিবীত (গবাদিপ্রচারভূমি), স্থল (ছিল ও অপনীতত্র্ণ পরিষারভূমি), কেনার (পালিক্ষেত্রাদি), যও (কদলীপ্রভূতির বন), থল (ধাল্যবপনের স্থান), বেশা (গৃহ) ও বাহনকোর্ছ (গবাশাদির পানপাত্রভূমি)—এইওলি লইয়া বিবাদ উপস্থিত হইলে ইহাদিগের মধ্যে পূর্ব্বপূর্বটি পরপ্রটির নিমিত্ত কোন বাধা সহিবে না অর্থাৎ বিবাদনির্গয়ে উত্তরটির অপেক্ষায় পূর্ব্বটির প্রাধান্য রক্ষিত হওলা চাই।

বন্ধারণা (ব্রাহ্মণগণের বাসযোগ্য অরণ্য), সোমারণা, দেবস্থান, যজনস্থান (যজস্থান), ও পুণাস্থান ব্যতীত আর সমস্ত ভূভাগই স্থলপ্রদেশ (অর্থাৎ ক্ষেত্র-যোগ্য প্রদেশ) বলিয়া পরিজ্ঞাতব্য।

কেহ নিজের আধার (জলখাত), পরিবাহ (জলানয়ন-প্রণালী) ও কেদারের (শালিধাক্যাদির ক্ষেত্রের) উপভোগদারা, অক্সের ক্ষেত্রে উপ্ত ধাক্যবীজের হানি ঘটাইলে, তাহাকে উপঘাত অসুসারে (ক্ষতিপূর্ণার্থ) ধাক্যমূল্য দিতে হইবে। কেদার, আরাম (বাগান) ও সেতৃবন্ধ, (দীমাবন্ধ, অথবা ভূম্যাদির জন্ম বন্ধ তড়াগাদি) সঙ্গন্ধে পরস্পরের মধ্যে উপঘাতজ্ঞনিত বিবাদ উপস্থিত হইলে, হিংসাকারী ব্যক্তিকে ক্ষতির মূল্যের দিগুণ মূল্য দণ্ড দিতে হইবে।

উত্তরকালে উৎপন্ন নীচ (ভূমিস্থিত) তড়াগদারা সিক্ত কেদার (পূর্ব্বকালে উৎপন্ন) উপরি (ভূমিতে স্থিত) তড়াগের জলদারা প্লাবিত বা পূরিত হুইতে পারিবে না। (পরে নিবিষ্ট) উপরি (ভূমিতে অবস্থিত) তড়াগ, (পূর্ব্বসিদ্ধ) নীচ (ভূমিতে স্থিত) তড়াগে জলপ্রবাহের ক্ষতির বাধা উৎপাদন করিতে পারিবে না। কিন্তু, সেই নীচস্থিত তড়াগ যদি গত তিন বৎসর যাবৎ ক্ষবিকর্মে জলদারা সহায়তা না করিয়া থাকে, তাহা হুইলে এই বিধি খাটিবে না (অর্থাৎ নীচ তড়াগে জলপ্রের স্রাব বারিত হুইতে পারে)। এই বিধির অতিক্রমকারীর উপর প্রথমসাহসদও বিহিত হুইবে। এবং দণ্ডরূপে অপরাধীর তড়াগ হুইতে জল সরাইয়া দিতে পারা যাইবে।

ষে দেতৃবন্ধ গত পাঁচ বংসর পর্যান্ত উপরতকর্মা রহিয়াছে ( অর্থাৎ কোনও ক্রন্থাদি কার্যো ব্যবহৃত হয় নাই), দেই দেতৃবন্ধে স্বামিত্ব লুপ্ত বা নষ্ট হইবে। কিন্তু, যদি কোনও আপদের (পরচক্রের আক্রমণাদির)জন্ম ইহা উপেক্ষিত রহিয়া থাকে, তাহা হইলে ইহার স্বামিত্ব লোপ পাইবে না।

ষদি কোন ব্যক্তি তড়াগ ও সেতৃবন্ধের নৃতন নির্মাণ করে, তাহা হইলে সে পাঁচ বৎসরব্যাপী পরিহার বা করমোক্ষ ভোগ করিতে পারিবে। আরু ষদি (পূর্ব্বতন তড়াগাদি) ভর হইয়া গেলে বা পরিত্যক্ত হইলে, কেই সে-গুলির নব সংস্কার করে, তাহা হইলে সেই সংস্কারক চারি বৎসরের জন্ম পরিহার বা করমোক্ষ ভোগ করিতে পারিবে। তৃণস্তগদির ছেদনাদিন্বারা স্থলাদির নবপ্রবর্ত্তনহেতৃ তিন বৎসরের জন্ম পরিহার বা করমোক্ষ কেহ ভোগ করিতে পারিবে। কোন স্থলপ্রদেশের স্বামিত্বের আধান রাখা হইলে, বা ইহার বিক্রয় করা হইলে, আধান-রক্ষক বা ক্রেতা তৃই বৎসরের জন্ম পরিহার বা করমোক্ষ ভোগ করিতে পারিবে।

ষে-সব কেদার (শালিধান্তাদির ক্ষেত্র), আরাম (বাগান) •ও ষণ্ডবাপ (কদলীপ্রভৃতির বাপস্থান), থাত হইতে প্রবর্ত্তিত জল, নদীর জল নদীনেতৃবন্ধের জল, কিংবা তড়াগের জলধারা নিষ্পাদিতশশু হয়, তাহা অধিকশশুপ্রকার-নিষ্পাদক ও অধিকভাগদায়কের নিকট, অথবা অগু কোন কর্মণ্য ক্বাকের নিকট যথোপকারভাবে (অর্থাৎ উৎপন্ন ফলোদয়ের যথাযথ ভাগদানের চুক্তিতে) (কুয়াদির জন্ম) দেওয়া যাইতে পারে।

যাহারা কোন ক্ষেত্রাদি সম্বন্ধে প্রাক্রাপ্রাপ্তাক্তা। (অর্থাৎ ইহা খরিদ করিয়া উপভোগকারী), বা অবক্রয়োপভোক্তা। (অর্থাৎ ক্ষেত্র ফলযুক্ত হউক বা না হউক, এতাবৎ ফল ক্ষেত্রয়ামীকে নিয়তই দিবে এই চুক্তিতে উপভোগকারী), বা অধুপেভোক্তা। (অর্থাৎ ক্ষেত্রাদি বন্ধক রাখিয়া উপভোগকারী), বা ভাগোপভোক্তা। (অর্থাৎ ক্ষেত্রে উৎপন্ন শস্তের ভাগ বা অংশ-বিশেষদানের চুক্তিতে উপভোগকারী), বা নিস্প্রাপ্তাক্তা। (অর্থাৎ ফতথানি ভাগ পারিবে ততথানি দিবে—এই চুক্তিতে উপভোগকারী).
—তাহারা ক্ষেত্র তড়াগাদির উপঘাতাদির প্রতিবিধান করিবে। যদি তাহারা। (উপঘাতাদির) প্রতীকার না করে, তাহা হইলে তাহারা ক্ষতির মূল্যপরিমাণের দিগুণ অর্থদণ্ড দিবে।

নিজের বার বা পর্যায় উপস্থিত না হইলেও, যে-ব্যক্তি সেতু হইতে (ক্ষেত্রাদি সেকের জন্ম) জল খুলিয়া নিবে, তাহার ৬ পণ দণ্ড হইবে; এবং অন্তের বার বা পর্যায় উপস্থিত হইলেও, যে-ব্যক্তি তাহাকে প্রমাদবশতঃ জল নিতে ৰাধা দিবে তাহারও সেই (৬ পণ) দণ্ডই হইবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশান্তে ধর্মন্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে বাস্ত্রুকের অন্তর্গত বাস্তবিক্রয়-নামক নবম অধ্যায় ( আদি হইতে ৬৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### দশম অধ্যায়

# ৬১ম-৬২ম প্রকরণ—বাস্তুক ; ভদন্তর্গত বিবীত ও ক্ষেত্রপথের হিংসা এবং সময় বা নিয়মের অকরণ

ক্ষি-) কর্ম্মের উপযোগী পূর্ব্বান্তবৃত্ত জলমার্গরোধকারীর এবং নৃতন করিয়া অন্তচিত তদ্রপ জলমার্গনির্মাণকারীর উপর প্রথমদাহদদণ্ড বিহিত হইবে।

যে পুরুষ পরের ভূমিতে সেতু (জলবন্ধ), কুপ, পুণ্যস্থান, চৈত্য ও দেবগৃহ
নির্মাণ করাইবে, বা পূর্ব্বান্থবৃত্ত (অর্থাৎ পূর্ব্বপুরুষদ্বারা ধর্মার্থে বিস্তুই) ধর্মসেতু
(অর্থাৎ সেতুকুপাদি) বন্ধক রাখিবে বা বিক্রয় করিবে, কিংবা ইহার আধান ও্
বিক্রয় করাইবে, তাহার উপর মধ্যমসাহসদণ্ড বিহিত হইবে; এবং ইহার
সাক্ষীদিগকে উত্তমসাহসদণ্ড দিতে হইবে। কিন্তু, সেই সব সেতুকুপাদি ভাঙ্গিয়া
যাওয়ায় যদি মালিককর্ভ্ক পরিত্যক্ত হইয়া থাকে, তাহা হইলে তৎসন্বন্ধে এই
বিধি খাটিবে না।

(কোন সেতুক্পাদির) মালিক না থাকিলে, গ্রামবাসীরা বা (অগ্রামবাসী) পুণাশীল ব্যক্তিরা সে-গুলির সংস্কার করাইতে পারিবেন।

রাস্তার প্রমাণ কতথানি হওয়া উচিত এই বিষয়টি তুর্গনিবেশ-প্রকরণে (দ্বিতীয় অধিকরণের চতুর্থ অধ্যায়ে) ব্যাখ্যাত হইয়াছে। কোন ব্যক্তি ক্ষুদ্রপশু ও মছয়ের জন্ম ব্যবহৃত পথ রোধ করিলে, তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। (গবাখাদি) মহাপশুর পথ রোধ করিলে, তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। হস্তী ও ক্ষেত্রের পথ রোধ করিলে, তাহাকে ৫৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে। কেতু ও বনের পথ রোধ করিলে তাহার উপর ৬০০ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। শ্রাশান ও গ্রামের পথ রোধ করিলে, তাহার ২০০ পণ দণ্ড হইবে। শ্রোণম্থের পথ রোধ করিলে, তাহার দণ্ড হইবে। ক্যাশান ও গ্রামের পথ রোধ করিলে, তাহার ২০০ পণ দণ্ড হইবে। শ্রোণম্থের পথ রোধ করিলে, তাহার দণ্ড হইবে ৫০০ পণ। স্থানীয়, রাষ্ট্র ও বিবীতের পথ (মতান্তরে, 'স্থানীয়' ও রাষ্ট্রে বা জনপদে নিবেশিত বিবীতের পথ—এইরূপ ব্যাখ্যা) রোধ করিলে, তাহার উপর ১০০০ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। যদি উক্ত স্ব পথের অতিকর্ষণ ঘটায় ( অর্থাৎ রাস্তাগুলির একদেশ অপহরুণ করিয়া ইহাদের প্রমাণ কমাইয়া ফেলে) তাহা হইলে (অপরাধীর উপর) প্রেকাক্ত

দণ্ডসমূহের চতুর্থাংশ দণ্ড বিহিত হইবে। এবং সেই সব পথে ক্ষবিকাষ্য করাইলে পূর্ব্বোক্ত দণ্ডসমূহই বিহিত হইবে।

বীজবপনসময়ে যদি কোন ক্ষেত্রসামী তাহার ক্ষেত্র (কোন কর্ষককে রুষিকার্য্যের জন্য) অর্পণ না করে, কিংবা কেহ যদি ক্ষেত্র কর্ষণ করিবে বলিয়া স্বীকার করিয়াও ক্ষেত্র ত্যাগ করে, তাহা হইলে এইরূপ অপরাধীর ১২ পণ দণ্ড হইবে। কিন্তু, যদি এই (ক্ষেত্রের অনর্পণ ও ত্যাগ) (ক্ষেত্রের) কোনরূপ দোষ, উপনিপাত (রাজা বা চৌরাদির উপদ্রব) ও অবিষহ্থ বিষয়ের (মহাব্যাগাদির) কারণে ঘটিয়া থাকে, তাহা হইলে উক্ত দণ্ড বিহিত হইবে না।

যাহারা করদায়ক, তাহারা অন্য করদায়কের নিকটই (নিজ ক্ষেত্রাদির) আধান ও বিক্রয় করিতে পারিবে। যাহারা ব্রহ্মদেরের (অর্থাৎ রান্ধণভোগ্য ক্ষেত্রাদির) ভোগ করেন, তাহারা অপর ব্রহ্মদেয় ভোগকারীর নিকট (তথাবিধ ক্ষেত্রাদির) আধানও বিক্রয় করিতে পারিবে। এই বিধির ব্যতিক্রমে, তাহাদিগকে প্রথমসাহসদও দিতে হইবে। যে করদায়ী পুরুষ অকরদায়ী গ্রামে (নিবাসার্থ) প্রবেশ করে, তাহাকেও উক্ত দও ( মর্থাৎ প্রথমসাহসদও ) দিতে হইবে।

আর ষদি (সেই করদায়ী পুরুষ) করদায়ী গ্রামে (নিবাসার্থ) প্রবেশ করে, তাহা হইলে (নিবাসের) গৃহ ব্যতীত, অন্ত সব দ্রব্যে (ধান্তচতুপ্পদাদিতে) তাহার প্রাকাষ্য বা স্বামিত্ব অক্ষ্ম থাকিতে পারিবে। কিন্তু, উচিত ব্রিলে (ক্ষেত্র-বিক্রেতা) তাহাকে গৃহও দিতে পারে।

যদি কেহ তাহার অনাদেয় ( অর্থাৎ অসংস্কৃত ) ক্ষেত্রাদি অরুষ্ট অবস্থার রাথে, তাহা হইলে অন্ত ব্যক্তি (সেই ক্ষেত্রাদি) পাঁচ বংসর পর্যাস্ত কর উপভোগ করিয়া পূর্বস্বামীকে ফিরাইয়া দিতে পারিবে, কিন্ধ, সেই ক্ষেত্রাদির সংস্কার জন্ত সে (ব্যয়সাধ্য ) যে-সব প্রয়াস করিয়াছে, তাহার ম্ল্য ( মালিকের নিকট হইতে ) গ্রহণ করিতে পারিবে ।

(ব্রহ্মদেয়ভোগী প্রভৃতি যাহারা) অকরদ, তাহারা অন্তত্ত বাদ করিলেও (নিজ নিজ ভূম্যাদির) ভোগস্বত্ব বক্ষা করিতে পারিবে।

গ্রামের কার্যান্ধন্য যদি গ্রামিক (বা গ্রামম্থ্য) দেশাস্তরে যাইতে বাধা হয়েন, তাহা হইলে (উপজীবিকার জন্ম) সেই গ্রামে বাসকারী লোকেরা পালাক্রমে তাঁহারর অন্থগমন করিবে। তাহারা যদি তাঁহার অন্থগমন না করে, তাহা হইলে তাহা দিগের প্রত্যেককে প্রতিযোজনের জন্ম ১ বুণ দণ্ড দিতে হইবে।

যদি গ্রামিক বা গ্রামম্থা, চোর ও পরদাররত লোক ছাড়া অন্ত লোককে গ্রাম হইতে তাড়াইয়া দেন, তাহা হইলে তাঁহাকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে এবং সেই অপরাধের জন্ত গ্রামবাসীদিগের সকলকে মিলিয়াও উত্তমসাহসদণ্ড দিতে হইবে।

(গ্রামিকদারা) গ্রাম হইতে নিজাসিত ব্যক্তির, গ্রামে পুনঃ প্রবেশের দণ্ডবিধি, অধিগম বা পরগৃহাভিগমনবিষয়ে উক্ত দণ্ডবিধিদারা ব্ঝিয়া লইতে হইবে।

প্রত্যেক ১০০ ধহু:-পরিমিত স্থানের পর পরই, শিলা বা দারুনিশ্বিত স্তম্ভদারা গ্রামের চতুম্পার্ধে প্রাকার রচনা করাইতে হইবে।

পশুদিগের সঞ্চার ও থাদনার্থ ( গ্রামবাদীরা ) বিবীত ( তৃণস্তথজলযুক্ত স্থান ), মালভূমি ( উন্নতভূমি ) ও বনভূমি ব্যবহার করিতে পারিবে।

(বিবীতাধ্যক্ষেরা), বিবীতে (চরিয়া) যে সব উট্র ও মহিষ তৃণাদি ভক্ষণের পর (মালিকের ঘরে) ফিরিয়া যায় তাহাদের প্রত্যেকের বিবীত চরণম্ল্যরূপে है পণ করিয়া কর সংগ্রহ করিবেন। গরু, ঘোড়া ও গাধার জন্ম ह পণ লইতে হইবে। (এবং) অক্যান্য ছোট পশুর জন্ম ক্রিড পণ গৃহীত হইবে।

যদি (উক্ত পশুগুলি বিবীতে) ভক্ষণ করিয়া দেখানেই বসিয়া থাকে, তাহ। হইলে উক্ত দণ্ডেরই বিগুণ (অর্থাৎ অর্ধ পণাদি) দণ্ড বিহিত হইবে। আর (যদি পশুগুলি সেই বিবীতেই) বাস করে (অর্থাৎ রাত্রিতেও থাকে), তাহা হইলে দণ্ডের পরিমাণ চতুগুণ হইবে। কিন্তু গ্রামদেবতার নামে (রুতোৎসর্গ) বৃষ, বা যে-ধন্নর প্রস্বান্তে দশ দিবস অতিক্রান্ত হয় নাই সে ধন্ত, উক্ষা (বৃদ্ধ যাঁড়) ও বীর্যানেচক বৃষসম্বন্ধে উক্ত দণ্ড বিহিত হইবে না।

্যদি কোন গৃহস্বামীর উই্মহিষাদি পশু) অন্তের (ক্ষেত্রজান্ত) শশু ভক্ষণ করে, তাহা হইলে সমগ্র ক্ষেত্রে নিষ্পাত্মান ফলের পরিমাণের পর্য্যালোচনা করিয়া কতথানি শশুের হানি ঘটিয়াছে, তাহা নির্ণয় করার পরে হানির দ্বিগুণ ( শশু-মালিককে পশুমালিকের দ্বারা ) দেওয়াইতে হইবে।

ক্ষেত্রস্বামীকে না জানাইয়া যদি কৈহ তাহার ক্ষেত্রে (নিজ পশু) চরায়, তাহা হইলে তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। (আবার সেখানে) নিজ পশুকে একবারে ছাড়িয়া রাখিলে, তাহাকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে। ক্ষেত্রপালকদিগের (উপরি উক্ত দোষ ঘটিলে) উক্ত দণ্ডসমূহের অর্দ্ধন্ত দিতে হইবে (মতাস্তরে, 'পালিনাং'—স্থলে 'বালানাং' পাঠ সমীচীন বলিয়া গুত হয়,

তথন অর্থ এইরূপ হইবে—'পশুগুলির বয়স যদি কম হয়')। সেই দগুই (অর্থাৎ শশুভক্ষণের জন্য যে দণ্ড বিহিত আছে, সেই দণ্ডই) (কদলী প্রভৃতির) যণ্ড (ক্ষেত্র)-ভক্ষণেও বিহিত হইবে। বাট বা বৃতি (বেড়া) ভাঙ্গিয়া ক্ষেত্রে প্রবেশের জন্যও পূর্ব্বোক্ত দণ্ডের দ্বিগুণ দণ্ড বিহিত হইবে। গৃহ, থলভূমি (ধান্যবপনের স্থান) ও ধান্যের বলয় বা গোলারাশিতে অবস্থিত ধান্য ভক্ষণের জন্যও সেই দণ্ড (অর্থাৎ পূর্ব্বোক্ত দণ্ডের দ্বিগুণ দণ্ড) বিহিত হইবে। (উক্ত সর্ব্ববিধ অবস্থাতেই) নষ্ট ধান্যাদির (নিক্রম্বরূপ) প্রতীকারও (অর্থাৎ ক্ষতিপূরণ) বিধান করিতে হইবে।

অভয়বনের মৃগেরা (অর্থাৎ যে-মৃগেরা এমন আশ্রমাদির বনে চরে যেথানে ইহারা প্রশীড়িত বা হতাহত হয় না) অন্যের ক্ষেত্রে ভক্ষণার্থ ধরা পড়িলে মৃগন্ধামীকে জানাইয়া সেই মৃগদিগকে তেমনভাবে প্রতিষেধ বা বারণ করিতে হইবে, যাহাতে ইহারা কোনপ্রকার বধ বা অন্যপ্রকার আঘাত প্রাপ্ত না হয়।

পশুসমূহকে রশ্মি বা রঙ্কু ও প্রতোদ ( চাবুক বা যাষ্ট্র )-দারা ( শশুভক্ষণাদি হইতে ) বারিত করিতে হইবে। যদি অগুপ্রকারে ইহাদিগের উপর হিংসা করা হয়, তাহা হইলে অপরাধীকে দওপারুশ্ব-প্রকরণে উক্ত দও ভোগ করিতে হইবে। কিছু, যেসব পশু বারণকারীর প্রতি আক্রমণার্থ উন্মূথ হয়, কিংবা পূর্ব্বেও যে-সব পশু অল্যের হিংসা করিয়াছে বলিয়া দেখা বা জানা গিয়াছে, ইহাদিগকে সর্ববিকার ( অর্থাৎ বন্ধন ও অবরোধনাদি ) উপায়দ্বারা দমিত করা ঘাইতে পারে। এই পর্যান্ত ক্ষেত্র ও পথের হানিবিষয়ক বিধি বর্ণিত হইল।

যদি কোন কর্ষক বা রুষক গ্রামজনসমুদায়ের কার্য্য অঙ্গীকার করিয়া সেই কার্য্য অন্থান না করে, তাহা হইলে সমগ্র গ্রামই তাহার উপর বিহিত দণ্ডের অর্থাদি গ্রহণ করিবে (অর্থাৎ রাজসরকারে সেই দণ্ড জমা দেওয়া হইবে না)। যদি সেই কর্ষক সমুদায়কার্য্য না করে, তাহা হইলে সে তাহার লভ্য কর্মবেতনের দিগুণ দণ্ড দিবে, (সমুদায়কার্য্যার্থে) যদি সে সকলের দেয় হিরণ্য (নগদ টাকা) বিচার করিয়া নিজের দেয় অংশ না দেয়, তাহা হইলে প্রত্যেকের দেয় অংশের দিগুণ হিরণ্য তাহাকে দণ্ডরূপে দিতে হইবে; আবার প্রবহণে বা গোষ্ঠী-ভোজনাদিতে ভক্ষা ও পেয় এবেরর নিজ অংশ না দিলে তাহাকে দিগুণ অংশ দিতে হইবে।

গ্রামের সার্বজনিক **প্রেক্ষা**তে (অর্থাৎ দর্শনযোগ্য নাটকাদিতে) যে ব্যক্তি তাহার নিজের দেয় অংশ (বা চাঁদা) না দিবে, সে নিজের স্বজন সইয়া সেই দৃষ্ঠাদি দেখিতে পারিবে না। যদি কেহ্ প্রচ্ছন্নভাবে থাকিয়া (গীতাদি) শ্রবণ করে, বা (নাটকাদি) দর্শন করে, এবং যদি কেহ্ সকলের হিতকর কার্য্যে (স্বদেয়াংশ না দিয়া) প্রতিবন্ধ উৎপাদন করে, তাহা হইলে তাহাকে স্বদেয় অংশের বিগুণ অর্থ দংজাপে দিতে হইবে।

যদি (গ্রামের) যে কোন এক ব্যক্তি সকলের হিতকর কোন কথা বলেন, কাহা হইলে (সকল সাময়িককেই) তাঁহার আজ্ঞা মানিয়া চলিতে হইবে। না মানিলে, অপরাধীর ১২ পণ দণ্ড হইবে। অথবা, সেই (সর্বজনের হিতকথার) বক্তাকে যদি (অফা সাময়িকেরা) একত্র মিলিত হইয়া উপহত বা হত করে, তাহা হইলে তাহাদিগের প্রত্যেকের উপর, উক্ত আজ্ঞার অকরণজনিত অপরাধে বিহিত দণ্ডের দিগুণ (অর্থাৎ ২৪ পণ) দণ্ড বিহিত হইবে। আর সাক্ষাৎ ঘা তকদিগের উপর সেই দণ্ডই অধিক পরিমাণে প্রযুজ্য হইবে।

উক্ত সাময়িকগণের মধ্যে ব্রাহ্মণজাতীয় লোক হইতে আরম্থ করিয়া তৎক্রমে, তলজ্জাবচনত্বরূপ জ্যেষ্ঠতা নিয়মিত বা ব্যবস্থাপিত হওয়া উচিত। সাময়িকদিগের (অর্থাৎ এক কার্য্যে মিলিত হইয়া কর্মকারীদিগের) মধ্যে বাঁহারা ব্রাহ্মণ, তাঁহাদিগের মধ্যে বাঁহারা প্রবহণ বা প্রীতিভোজনাদি ক্রিয়াতে ঘোগদান করিতে অনিজ্জুক, তাঁহারা (নিজদেয়াংশ) না-ও দিতে পারেন। (ইচ্ছা হইলে) তাঁহারা নিজ অংশভার গ্রহণ করিতে (অর্থাৎ অর্থসাহায্যাদি দিতে) পারেন। উক্ত বিধিদারা দেশ, জাতি ও কুলসংঘ্রে সময় বা নিয়মের উল্লজ্ঞানের

যে-সব সাময়িকেরা ( একত্র মিলিত হইয়া ) দেশহিতকর সেতু ( জলবন্ধ ), পথে একসঙ্গে ( কোনও দেশহিতকর কার্য্য করার জন্য ) সঞ্চরণ, গ্রামের শোভা ও ( গ্রামের ) রক্ষা বিধান করিবে, রাজা তাহাদিগের প্রিয়ী ও হিতাচরণ করিবেন॥ ১॥

বিধিও ব্যাখ্যাত হইল বলিয়া বুঝিতে হইবে।

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে বাস্তকের অন্তর্গত বিবীত ও ক্ষেত্রপথের হিংসা ও সময়ের বা নিয়মের অকরণ-নামক দশম অধ্যায় (আদি হইতে ৬৭ অধ্যায়) সমাপ্ত।

#### একাদশ অধ্যায়

#### ৬৩শ প্রকরণ-স্মানগ্রহন

১০০ পণ (ঋণ লইলে) ইহার মাসিক বৃদ্ধি বা স্থদ ১ পণ স্থির হইলেই, ইহা ধর্মসঙ্গত হইবে। (পণ্যাদির ক্রমবিক্রম) বাবহারের প্রয়োজনে, বৃদ্ধি বা স্থদ প্রতি একশত পণে মাসিক ৫ পণ হইতে পারে। কাস্তার বা হুর্গমপথে যাহারা কারবারাদি করে, তাহাদের মধ্যে বৃদ্ধি বা স্থদের হার পণশতে মাসিক ১০ পণ হইতে পারে। যাহারা সন্ত্রপথে যাতায়াত করিয়া কারবারাদি করে, তাহাদের মধ্যে বৃদ্ধি বা স্থদের হার পণশতে মাসিক ২০ পণ হইতে পারে।

কেহ যদি উক্ত বৃদ্ধি বা স্থদের নির্দিষ্ট হারের অধিক বৃদ্ধি বা স্থদ নেয়, বা অন্তকে তাহা লইতে প্রযোজিত করে, তাহা হইলে তাহার উপর প্রথমসাহসদও বিহিত হইবে। এইরূপ স্থদগ্রহণ-ব্যাপারে যাহারা সাক্ষী, তাহাদের প্রত্যেকের উপর প্রথমসাহসদত্তের অক্ষাংশ দওরূপে বিহিত হইবে।

রাজা যদি **ধনিক** (উত্তমর্ণ) ও **ধারণিক** (অধমর্ণ)—এই উভয়ের খোগ ও ক্ষেমবহনে (ব্যসনাদি কারণবশতঃ) অসমর্থ হয়েন, তাহা হইলে তাহারা পরস্পরের চরিত্র বা বৃত্ত বিচার করিয়া ঋণব্যবহার করিবে।

বৃদ্ধির জন্য ধান্য প্রযুক্ত হইলে ( অর্থাৎ কাহাকেও ধান্য ধার দেওয়া হইলে ), ইহার বৃদ্ধি বা অন্দ শশ্যনিম্পত্তি বা শশ্যমলের পরিপাক হওরা পর্যন্ত ই অর্ধগুণের অধিক হইতে পারিবে না ( অর্থাৎ ১ মণ ধান্য ঋণরূপে গ্রহণ করিলে ১ই মণ ধান্য শোধ দিতে হইবে ) । তাহার পরে ( অর্থাৎ শশ্যনিম্পত্তিকালের পরে ) মূলধান্তের বৃদ্ধি বা एদ মূল্যদারা ( অর্থাৎ আসল ও অ্বদ একত্রিত ১ই গুণে পরিণত হইলে ইহার মূল্য নির্দ্ধারণ করিয়া তত্বপরি ) নির্দ্ধারিত হইয়া বাভিবে (ধান্তের স্বর্ধান্ত ধান্তাদির করিয়া তত্বপরি ) নির্দ্ধারিত হইয়া বাভিবে (ধান্তের স্বর্ধান্ত ধান্তাদির নগদ মূল্য না দিয়া ক্রেতা ইহা মঙ্কৃত রাথিয়া ক্রমশং বিক্রেয় করিয়া প্রব্যের মূল্য স্থদসহ আদায় করিতে চাহে, এমত অবস্থায় ) প্রক্রিপ্ত বা মঙ্কৃত করিয়া রক্ষিত ধান্তের বৃদ্ধি বা স্থদ উদয়ের ( অর্থাৎ বিক্রম হইতে প্রাপ্ত লাভের ) অর্ধ্ধ পর্যন্ত ধরা যাইতে পারে । এই বৃদ্ধি যদি ( সময়ে পরিশোধিত না হইয়া ) জমা অবস্থায় পতিত থাকে, তাহা হইলে ইহা প্রতিবর্ষে একবার সম্পূর্ণভাবে ( হিসাবনিকাশগারা ) দেয় হইবে ।

বছদিন প্রবাসে থাকিয়া, বা জড়ভাবাপন্ন হইয়া, কেহ ঋণ শোধ না করিতে পারিলে—( অনেক দিন পরে তাহা শোধিত হইলেও ) সেই অধমর্ক মৃল্যের ( আসল ধাক্যাদিম্ল্যের ) দ্বিগুণ পর্যন্ত দিতে বাধ্য থাকিবে। যে ব্যক্তি (পূর্বে) স্থদের কথা নির্ণিয় না করিয়া স্থদপ্রাপ্তি সাধন করিতে চায়, বা ( কম স্থদের কথা নির্দ্ধারিত করিয়াও পরে ) স্থদের হার বাড়াইতে চায় বা স্থদমিশ্রিত করিয়া মৃল্য বা আসল টাকার কথা অধমর্ণকে শুনাইয়া দেয়, সেই উত্তমর্ক বাক্তির উপর মৃল্যধনের চত্তুর্ণ দণ্ড বিহিত হইবে। ( অল্ল ধার দিয়া, অধিক দেওয়া-রূপ ) তুচ্ছ কথা সাক্ষিবারা শ্রাবিত হইলে, সেই সাক্ষীর উপর (শ্রাব্যমাণ ) অভূত (মিথ্যাভূত) ধনের চত্তুর্ণ দণ্ড বিহিত হইবে। এই দণ্ডের তিন ভাগ আদায়কারী ( অধমর্ণ ) দিতে বাধ্য থাকিবে এবং অবশিষ্ট এক ভাগ প্রদানকারী ( উত্তমর্ণ ) দিতে বাধ্য থাকিবে।

কোন বালক ( অর্থাৎ অপ্রাপ্তব্যবহার বালক ) যদি ( দ্বাদশবর্ষাদি ) দীর্ঘ-কালব্যাপী যজে, কিংবা ব্যাধির আক্রমণে, অথবা গুরুক্লে ( অধ্যয়নার্থ ) উপরুদ্ধ থাকে, কিংবা কোন লোক ( বালক না হইয়াও ) যদি অসার ( অর্থাৎ লোকযাত্রায় অশিক্ষিত; মতাস্তবে, নিঃম্ব ) হয়, তাহা হইলে তাহাদের উপর পতিত ঋণ বৃদ্ধি বা স্থদের যোগ্য হইবে না। ঋণ ( অধমর্ণ-কর্তৃক সম্পূর্ণভাবে ) ম্চ্যমান হইলেও, যদি উত্তমর্ণ তোহা গ্রহণ না করে, তাহা হইলে সেই উত্তমর্ণের উপর ১২ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। যদি কোন কারণবশতঃ উত্তমর্ণ সেই ঋণ শোধিত বলিয়া গ্রহণ না করে, তাহা হইলে সেই ঋণের টাকা র্দ্ধি বা স্থদশূল্য অবস্থায় অন্ত কোন ( শ্রেয় বা মধ্যম্থ ) ব্যক্তির নিকট গচ্ছিত থাকিবে।

ষদি উত্তমর্প বা ধনিক দশ বৎসর পর্যান্ত নিজদত ঋণ উপেক্ষা করিয়া থাকে, তাহা হইলে (অধমর্ণের নিকট হইতে) সেই ঋণ আদায় করার স্মধিকার তাহার আর থাকিবে না; কিন্তু, যদি এই ঋণের ধন কোন বালক, বৃদ্ধ, ব্যাধিগ্রন্ত, বিপদ্গ্রন্ত, প্রবাদে গত, দেশত্যাগী ও রাজ্যবিভ্রম বা রাজ্যবিপ্রবগ্রন্ত ব্যক্তিদিগের প্রাপ্য হয়, তাহা হইলে তাহারা দশ বৎসর অতীত হইয়া গেলেও সেই ধন আদায় করিতে পারিবে।

মৃত ( অধমর্ণ ) ব্যক্তির পুত্রগণ পিতার ঋণ ( স্থদ সহ আসল ধন ) শোধ দিতে বাধ্য হইবেক। অথবা, মৃতব্যক্তির সম্পত্তি যে-সব দায়ভাগীরা লাভ ছিরিবে তাহারা, এবং যাহারা সেই ঋণের সহগ্রাহী ( অর্থাৎ যাহারা নিজ্জ নিজ্জ দায়িত্বে একত্ত হইয়া ঋণ গ্রহণ করিয়াছে ) তাহারা, কিংবা যাহারা ঋণের ধনের

জন্ম প্রতিভূ (জামীন) তাহারা—ঋণ শোধ দিতে বাধ্য হইবেক। (ঋণশোধ-বিষয়ে) অন্য কোন প্রকার প্রাতিভাব্য (অর্থাৎ জামীন হওয়া) থাটবে না। বালকের প্রাতিভাব্য অসার বা বলহীন বলিয়া বিবেচ্য। কিন্তু, যে ঋণের পরিশোধ-জন্ম কোন স্থানবিশেষ বা কালবিশেষের নির্দেশ নাই, মৃত ব্যক্তির সম্পত্তিগ্রহণকারী পুত্র, পোত্র বা অন্য দায়াদ তাহা দিতে বাধ্য থাকিবে।

কেহ (কাহারও পক্ষে) জীবনবিষয়ে, বিবাহবিষয়ে (অর্থাৎ স্ত্রীধনাদি-বিষয়ে) ও ভূমিবিষয়ে (অর্থাৎ ভূমির ক্রয়বিক্রয়বিষয়ে), দেশ ও কালবিশেষের অনির্দেশ সহকারে জামীনের কার্য্য গ্রহণ করিলে, (তাহার অভাবে) তাহার পুত্র ও পৌত্রগণ (সর্বাদা ও সর্বত্র পরিশোধ-জন্য) তাহা (সেই প্রাতিভাব্য) রক্ষা করিতে বাধ্য থাকিবে।

কোন ধারণিক বা অধমর্ণ একাধিক ব্যক্তির নিকট ঋণ করিয়া থাকিলে তাহার বিরুদ্ধে তৃইজন ধনিক বা উত্তমর্ণ যুগপৎ অভিযোগ করিতে পারিবে না; কিন্তু অধমর্ণ যদি বিদেশে প্রস্থান করে, তাহা হইলে এই বিধি খাটিবে না ( অর্থাৎ তাহার বিরুদ্ধে তৃইজন উত্তমর্ণ একসমযে অভিযোগ করিতে পারিবে )। বহু প্রকার ঋণসমবায়ে গৃহীত ঋণের পোর্বাপর্য্য অন্থসারে অধমর্ণ ইহা শোধ করিবে, অথবা সর্বাত্রে রাজার ও শোত্রিয় বান্ধণের প্রাপ্য ঋণ শোধ করিবে।

স্বামী ও স্ত্রী, পিতা ও পুত্র, এবং অবিভক্ত (অর্থাৎ একান্নবর্ত্ত্রী) ভ্রাতৃগণ— ইহাদের পরস্পরকৃত ঋণ অসাধ্য (অর্থাৎ ইহা ব্যবহারদ্বারা নির্ণীত হওয়ার যোগ্য নহে)।

কৃষকেরা ও রাজপুরুষেরা স্ব স্ব কর্ম করার সময়ে (কৃত ঋণের জন্ম) গ্রহণযোগ্য বা গ্রেপ্তারযোগ্য নহে। পতির ঋণশোধের জন্ম যে স্ত্রী অঙ্গীকার করে মাই সেই স্ত্রীও পতির ঋণের জন্ম গ্রেপ্তারযোগ্যা নহে; কিন্তু, (স্ত্রীপ্রধান) গোপালক ও অর্জনীতিক (কৃষিকর্মে সিদ্ধ সীতা-ফলের অর্জভাগী) লোকের স্ত্রীরা (পতির ঋণশোধ অঙ্গীকার না করিলেও) গ্রহণযোগ্যা বা গ্রেপ্তারযোগ্যা হইতে পারিবে।

আবার স্ত্রীকৃত ঋণের প্রতিবিধান না করিয়া, পতি যদি প্রবাসে চলিয়া যায়, তাহা হইলে সেই পুরুষ (ঋণশোধের অঙ্গীকারে আবদ্ধ না থাকিলেও) গ্রহণ-যোগ্য বা গ্রেপ্তারযোগ্য হইতে পারিবে।

(অধুমূর্ণ, উত্তমর্ণবর্ণিত ঋণ) স্বীকার করিলে, নির্ণয়ের উত্তম উপায় সিদ্ধ হুটল—মনে করা যাইবে। কিন্তু, ঋণ অধমর্ণকর্তৃক অস্বীকৃত হুইলে, সাক্ষীরাই বিবাদনির্ণয়ের প্রমাণ বলিয়া বিবেচ্য; কিন্তু, সাক্ষীরা বিশ্বাসার্ছ ও (বাহ্ছ ও আভ্যন্তর) শৌচযুক্ত, এবং (বাদী ও প্রতিবাদীর ?) অপ্রমত লোক হওয়া চাই এবং তাহারা সংখ্যায় কমপক্ষে তিনজন থাকিবেই। ঋণসম্বন্ধে নির্ণয়জ্য উভয় পক্ষের অসমত তুই জন সাক্ষীও প্রমাণ হইতে পারে; কিন্তু কথনই কেবল একজন সাক্ষী প্রমাণ বলিয়া গৃহীত হওয়ার যোগ্য নহে।

(সাক্ষ্যদানসম্বন্ধে) শ্রালক, সহায়ক, অন্বর্থী (অর্থীর বা অভিষোক্তার অমুজীবী), ধনিক (উত্তমর্ণ), বৈরী (শক্রু), ক্তঙ্গ (অঙ্গহীন), ও (পূর্বের রাজদণ্ডে) দণ্ডিত ব্যক্তি অনুপযুক্ত (অর্থাৎ ইহারা সাক্ষ্যদানে প্রতিষিদ্ধ)। (পিতা, পুত্র ও অবিভক্ত ভ্রাতারা—) যাহারা ব্যবহারের অনুপযুক্ত বলিয়া পূর্বের নির্দিষ্ট হইয়াছে, তাহারা (মতান্তরে ব্যাখ্যা "সাক্ষীরা বিশ্বাসম্বোগ্যা, ওচি ও অনুমত জন হইবে"—এইভাবে পূর্ব্বর্ণিত ব্যক্তিরাও যদি ব্যবহারসম্বন্ধে অনভিক্ত হয়, তাহা হইলে তাহারা) এবং রাজা, শ্রোত্রিয় ব্যহ্মা, প্রামন্ত্রক 'সমগ্র গ্রামের বেতনোপজীবী), কুষ্ঠরোগগ্রন্ত, ব্রণাক্রান্ত, পতিত, চণ্ডাল, কুৎসিত কর্মকারী, অন্ধ, বিধির, মৃক ও অহংবাদী (অহংকারী ব্যক্তি; মতান্তরে ব্যাখ্যা "আমি সাক্ষ্য দিব বলিয়া যে স্বয়ং আগত"), স্থীলোক ও রাজপুক্ষরেরা সাক্ষ্যদানবিষয়ে প্রতিষদ্ধ লোক। কিন্ত, ইহারা নিজ নিজ বর্গের (ব্যবহার-নির্ণয়ে) সাক্ষী হইতে পারিবে।

পারুয়, ৻স্তয় (চুরি) ও সংগ্রহণে (স্বীলোকের উপর ব্যভিচারে), বৈরী (শক্র), শালক ও সহায়ক ছাড়া অবশিষ্ট নকলেই সাক্ষী হইতে পারিবে। রহস্থব্যবহারে (গুপ্ত মামলায়) একটি মাত্র স্ত্রীলোক বা একটি মাত্র পুরুষও সাক্ষী হইতে পারিবে, কিংবা একটি উপশ্রোতা (অর্থাৎ সমীপস্থিতিবশৃতঃ মে বিষয়টা নিজে গুনিয়াছে) ও একটি উপশ্রহা (অর্থাৎ যে হঠাৎ বিষয়টা দেখিয়া ফেলিয়াছে) সাক্ষী হইতে পারিবে; কিন্তু, রাজা ও তাপস এই ব্যাপারে সাক্ষ্য দিতে পারিবেন না।

নিগ্রহের ভয় না থাকায়, (স্বেচ্ছায়) স্বামী ভ্তোর পক্ষে, ঋত্বিক্ ও আচার্য্য শিয়ের পক্ষে, ও পিতামাতা পুত্রের পক্ষে সাক্ষ্য দিতে পারিবেন। আবার এই স্বামিপ্রভৃতির পক্ষে ভ্তাপ্রভৃতিও তাহা করিতে পারিবে। ইহাদিগের পরস্পরের মধ্যে অভিযোগ উপস্থিত হইলে, যদি উত্তমেরা (অর্থাৎ স্বামিপ্রভৃতি) অভিযোগে পরাজিত হয়েন, তাহা হইলে তাঁহারা পরাজিত ধনের দশগুণ (অবর বা অধমদিগকে) দিতে বাধ্য হইবেন; এবং যদি অবর বা অধমেরা

( অর্থাৎ ভূত্যপ্রভৃতি ) অভিযোগে পরাজিত হয়, তাহা হইলে তাহারা পরাজিত ধনের পাঁচগুণ (উত্তমদিগকে) দিতে বাধ্য হইবে। এই পর্যাস্ত সাক্ষীর অধিকার ব্যাখ্যাত হইল।

সাক্ষীদিগকে ব্রাহ্মণ, জলকলশ ও অগ্নির সকাশে উপস্থাপিত করিতে হইবে।
সেই স্থানে ব্রাহ্মণ-সাক্ষীকে এইরপ বলিতে হইবে, যথা,—"সত্য কথা
বলিবে"। রাজন্ত (বা ক্ষত্রিয়) ও বৈশ্ত-সাক্ষীকে বলিতে হইবে, যথা—,
"অন্তথাবাদে, অর্থাৎ যদি সত্য কথা না বল, (তাহা হইলে) তোমার ইষ্ট
( যজ্ঞাদি)-ফল ও থাতাদিখননের ফল লাভ করিতে পারি বে না এবং
(ভবিন্ততে) তোমাকে ভিক্ষার্থী হইয়া ভিক্ষাপাত্র হস্তে লইয়া শক্রকুলে যাইতে
হইবে।" এবং শৃদ্র-সাক্ষীকে বলিতে হইবে, যথা,—"তোমার জন্ম হইতে মরণ
পর্যান্ত সময়মধ্যে তুমি যে পুণ্যকর্মজনিত ফল অর্জন করিতে আশা কর, তাহা
রাজা প্রাপ্ত হইবেন এবং রাজার যভ পাপ, তাহা তোমাকে স্পর্শ করিবে।
(অসত্যকথনে) দণ্ডও অন্ত্যায়ী বা কালান্তরভাবী হইবেই। যথাদৃষ্ট ও যথাশ্রুত
বিষয় (এখন ল্কান্থিত থাকিলেও) পরে জানিতে পারা যাইবে। তোমরা
সকলে একত্র মন্ত্রণা বা পরামর্শ করিয়া সত্যকে উদ্ধার কর।"

তাহার। যদি সাত দিন সময়ের মধ্যে সত্য উদ্ধার করিতে না পারে, তাহা হইলে সেই সপ্তাহের পরে (প্রতিদিনের জন্ম ?) তাহাদিগের উপর ১২ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। তিন পক্ষ অতীত হইয়া গেলে তাহাদিগকে অভিযোগদ্রব্য (অর্থাৎ দণ্ডসহিত অভিযোগের বিষয়ীভূত ধনাদি) দিতে হইবে।

নাক্ষীদিগের মধ্যে ভেদ, বা অন্তোন্তের বচনে বিদংবাদ, উপস্থিত হইলে, ষে পক্ষে অধিক্সংথ্যক উচিও অন্তমত সাক্ষীরা মত দিবে, সেই পক্ষে ব্যবহারের জয় নির্ণীত হইবে। উভয় পক্ষের সাক্ষীদিগের কথাতে গুণদাম্য লক্ষিত হইলে, উভয়-সম কোন মধ্য প্রকার বা উপায় অবলম্বিত হইবে। ইহাও সম্ভব-পর না হইলে, বিদংবাদিত ত্র্ব্য (অর্থাদি) রাজা স্বয়ং অধিকার করিবেন।

অভিযোক্তা যে ধনের জন্ম অভিযোগ আনে, সাক্ষীরা যদি তদপেক্ষায় কম ধনের বিষয় বলে, তাহা হইলে যতথানি অভিরিক্ত ধন দে দাবী করে ইহার পাঁচ (?) গুণ রাজাকে দিতে সে বাধ্য হইবে। আর যদি সাক্ষীরা তথপ্রাথিত ধনের অপেক্ষায় অধিক ধনের বিষয় বলে, তাহা হইলে অভিরিক্ত ধন রাজা অধিকার' করিবেন। অভিযোক্তার মূর্যভায় লেথক যদি (ঋণগ্রহণকালে) অক্তথা প্রবণ করিয়া থাকে, অথবা, দে অন্তথা লিখিয়া থাকে, অথবা লেথকের

কাহারও বন্ধুমরণাদি-জনিত শোকে চিত্তের অন্তথা অভিনিবেশ হইয়া:থাকে, তাহা হইলে এই সব বিষয় সমাক্ বিবেচনা করিয়া সাক্ষীর বাক্যে প্রত্যয় স্থাপন করিয়া ব্যবহার নির্ণীত হুইবে।

উশানাঃ বা শুক্রাচার্য্যের মতাবলম্বীরা মনে করেন যে ( অভিযোগ-বিষয়ে ) কেবল নিজ মূর্যতার দক্ষণ সাক্ষীরা পৃথক্ পৃথক্ ভাবে প্রশ্নের উত্তরের সময়ে, দেশ, কাল ও কার্য্যসম্বন্ধে বচনবিসংবাদ ঘটাইলে, তাহাদের উপর প্রথম, মধ্যম ও উত্তম-সাহসদ্ও প্রযুক্ত হইতে পারিবে।

যদি কৃট সাক্ষীরা (অর্থাৎ কপট সাক্ষীরা) অর্থ-সংস্কে অসত্য কল্পনা করিয়া বলে, কিংবা সত্য অর্থকে নষ্ট করিয়া (অর্থাৎ হীন করিয়া) বলে, তাহা হইলে তাহাদিগকে কল্পিত ও নাশিত অর্থের দশগুণ দণ্ড দিতে হইবে—ইহা মকুর মতাবলম্বীরা মনে করেন।

মূর্যতাবশতঃ যাহারা (সাক্ষ্যদানে) বিসংবাদ ঘটাইবে, তাহাদিগের উপর` বিচিত্র বধদণ্ড বিহিত হইবে—ইহা রহস্পতির মতাবলম্বীরা মনে করেন।

(কিন্তু,) কোটিল্য উক্ত মতগুলি সমর্থন করেন না। কারণ, (তাঁহার মতে) যে দব সাক্ষী প্রব (বা নিশ্চিত বিষয়ে বক্তা) তাহারাই (আদালতে) শ্রুত হওয়ার যোগ্য ( প্রুবং হি সাক্ষিভিঃ শ্রোতব্যম্"—এইরূপ পাঠান্তরে ব্যাখ্যা— "সাক্ষীরা নিশ্চিত সত্য কথাই শুনিয়া থাকিবে")। যদি তাহারা সত্য শুনিয়া থাকিলেও (আদালতে) অমুপস্থিত হয় (উক্ত পাঠান্তরামুসারে ব্যাখ্যা—"যদি তাহারা ঠিকভাবে বিষয় না শুনিয়া থাকে"), তাহা হইলে তাহাদিগের উপর ২৪ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। আর যাহারা অপ্রুব সাক্ষী তাহাদিগকে তদর্শ্ধত অর্থাৎ ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

যাহার। দেশ ও কাল সম্বন্ধে বেশী দূরে অবস্থিত নহে, এমন ব্যক্তিদিগকে (অভিযোক্তা) সাক্ষ্যকার্য্যে আনিবে। আর যাহারা দূরে অবস্থিত, অথবা (সমীপস্থ হইলেও) আহত হইয়া অনাগত, তেমন ব্যক্তিদিগকেও প্রাভ্ বিবাক বা ক্যায়াধীশের আজ্ঞামূসারে (সে) সাক্ষ্য দিতে আনাইতে পারিবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে ঋণগ্রহণ-নামক একাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৬৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### ম্বাদশ অধ্যায়

#### ৬৪ম প্রকরণ—উপনিধিবিষয়ক

ঋণশোধের যে বাবস্থা পূর্ব্বে অভিহিত হইয়াছে, উপনিষ্টি ( ত্যাস বা নিক্ষেপ অর্থাৎ শিলমোহরযুক্ত বস্ত্রাদিতে আবদ্ধ বস্তু)-সম্বন্ধেও সেই ব্যবস্থা বৃঝিতে হইবে। নিম্নবর্ণিত বিভিন্নপ্রকার বিপদ হইতে স্বয়ং ত্রাণ পাইয়াও, উপনিধিরক্ষককে উপনিধি প্রত্যর্পণ করিতে হইবে না,—যথা, শক্রুসৈন্ত ও আটবিকগণদারা হুর্গ ও রাষ্ট্রের বিলোপ ঘটিলে, অথবা প্রতিরোধকারী চোরভাকাতদারা গ্রামের সার্থ বা বণিকসংঘ ও ব্রজের (পশুবাতের) বিলোপ ঘটিলে, চক্রের ( রাজ্যের কিংবা সেনার ) নাশ ( অথবা, আভ্যন্তরিক ষড়মন্ত্রে নাশ ) ঘটিলে, গ্রামমধ্যে অগ্নি বা জলপ্লাবনের বাধা ঘটিলে, ( অগ্নাদিতে ) অনির্হার্য দ্রব্য ব্যতীত নির্হার্য ( বাহিরে আনিয়া রক্ষার যোগ্য ) কৃপ্যাদি দ্রব্য কতক অংশে বাঁচাইতে পারিয়া কিঞ্চিৎ মোচন করিতে না পারিলে, এবং তৎতৎ দ্রব্যনিচয় অগ্নির জ্ঞালাদারা বেষ্টিত হইলে ( অর্থাৎ এইপ্রকার অবস্থাবিশেষে উপনিধি প্রত্যর্পণ না করিলেও দোবের হইবে না )।

( দ্রব্যম্বামীর সম্মতি ব্যতিরেকে ) উপনিধিরক্ষক যদি উপনিধি ভোগ করে, তাহা হইলে সে দেশ ও কালের অন্তর্মপ, ভোগজনিত বেতন বা মৃল্য (দ্রব্যম্বামীকে) দিতে বাধ্য থাকিবে। এবং সেই অপরাধে ১২ পণ দণ্ডও তাহাকে ( রাজঘারে ) দিতে হইবে। কিন্তু, উপনিহিত দ্রব্যের উপভোগজন্য ইহা নই হইলে ( হারাইয়া গেলে ) এবং বিনই হুইলে ( সম্পূর্ণ নাশপ্রাপ্ত হইলে ), ভোক্তাকে উপনিধি ফিরাইয়া দিতে হইবে। এবং ( অভিযোগ উপন্থাপিত হইলে ) তাহাকে ২৪ পণ দণ্ডও দিতে হইবে। অন্ত কোন কারণে উপনিধি অন্যম্বানে চলিয়া গেলেও, তাহাকে অন্তর্মপ ( অর্থাং ২৪ পণ ) দণ্ড দিতে হইবে। উপনিধিরক্ষক যদি মারা যায়, বা আপদগ্রস্ত হয়, তাহা হইলে ( দ্রব্যম্বামীর পক্ষে ) আর উপনিধি ফিরাইয়া পাওয়ার অভিযোগ চলিবে না।

ষদি (উপনিধিরক্ষক) উপনিধির আধান, বিক্রয় বা অপলাপ করে, তাহা হইলে তাহাকে উপনিহিত দ্রব্যের মূল্যের ট্ট অংশ দিতে হইবে ( ৺গণপতি শাস্ত্রীর মতে অমৃব্যুদ—"উপনিধাতাকে উপনিহিত দ্রব্যমূল্যের চতৃগুর্ণ উপনিধিরক্ষক দিতে বাধ্য হইবে এবং ইহার ট্ট অংশ রাজ্বারে দণ্ডরূপে দিতে হইবে")। কিন্তু, উপনিধির বিনিময় বা অন্তত্ত সংক্রমণ করিলে, তাহাকে উপনিহিত দ্রব্যের মূল্যের সমান অর্থদণ্ড দিতে হইবে।

উক্ত (উপনিধিবিষয়ক) বিধানছারা, আধির প্রণাশ, উপভোগ, বিক্রয়, আধান ও (বিনিময়াদিছারা) অপহরণও ব্যাখ্যাত হইল বুঝিতে হইবে (অর্থাৎ উপনিধি ও আধিসম্বন্ধে উক্ত বিধানগুলি সমানভাবে প্রযোজ্য)।

( আধিরক্ষকের ) উপকারে আসিতে পারে এমন আহিত দ্রব্য ( যথা গবাদি ) নষ্ট হইতে পারিবে না ( অথাৎ বিনিময়ে প্রদন্ত ধন ফিরাইয়া পাইলে ধনিক তাহা আধাতাকে ফেরত দিতে বাধ্য থাকিবে )। এই উপকারযুক্ত আধির মূল্য ( স্বদ্ধারা ) বর্দ্ধিত হইবে না। আর, উপভোগরূপ উপকারশৃত্য আধি অপ্রত্যপণীয়ও থাকিয়া যাইতে পারে এবং ইহার মূল্যও বাড়িতে পারে, কিন্তু, উপভোগের ) অন্তজ্ঞা ও অন্তমতি থাকিলে, ইহার মূল্য ( স্বদ্ধারা ) বাড়িবে না ( অর্থাৎ অন্তমতিসত্ত্বেও ধিন ধনিক আধি ভোগ না করে, তাহা হইলে সেৎদোষ তাহার )।

(আধি ফেরত নেওয়ার জন্য) তাধমর্ণ উপস্থিত হইলে, যদি উত্তমর্ব বাধনিক তাহা প্রতার্পন না করে, তাহা হইলে তাহার ১২ পন দণ্ড হইবে। অথবা যদি ধনপ্রযোক্তা উত্তমর্ন (গৃহে) উপস্থিত না থাকে, তাহা হইলে অধমর্ণ আধির নিক্রয়-ম্ল্য প্রামবৃদ্ধদিগের নিকট গচ্ছিত রাখিয়া আধি ফিরাইয়া লইতে পারিবে। অথবা, (আধির বিক্রয়বারা লব্ধ ম্ল্য দিয়া, উত্তমর্ণ হইতে আধি মৃক্ত করিতে অভিলাষী হইলে অধমর্ন ) সেই আধি (ফেরত না পাইলে), তাহা বিনাবৃদ্ধিতে (অর্থাৎ স্থদ বন্ধ করিয়া) তৎকালে প্রচলিত মৃল্যে আধির মূল্য নির্দ্ধারিত করিয়া তাহার (সেই উত্তমর্ণের) নিকটই রাখিতে পারে। অথবা, আধির নাশ ও বিনাশ (ক্ষয়) যাহাতে না হয়, তাহার বিস্থা করিয়া আধি রক্ষিত থাকিতে পারে। অথবা, (উত্তমর্ণ) আধির বিনাশভয়ে ধারণক বা আধাতার সন্নিধানেই, ধর্মস্থদিগের অন্তল্ঞা লইয়া উচ্চম্ল্যে ( আধি ) বিক্রয় করিতে পারে। অথবা, (উত্তমর্ণ) আধিপাল-নামক রাজ-কর্মচারীর প্রতায় উৎপাদন করিয়া অর্থাৎ তাঁহার অনুমতি লইয়াও ( আধি বিক্রয় করিতে পারে)।

কিন্ত, (ভূমিবৃক্ষাদিরপ) স্থাবর সম্পত্তির আধি, (আধিগ্রাহক) নিজের (কর্ষণাদি) পরিশ্রমদারা ভোগ করিতে পারে, অথবা, আধাতার শ্রমত্বারা আধি হইতে নিম্পন্ন ফলও ভোগ করিতে পারে। (উত্তর্মর্শ) আধিকে যদি কোন ব্যাপারে প্রক্রিপ্ত করিয়া তাহা হইতে বৃদ্ধিরূপ মূল্য পায়, তাহা হইলে সেই লাভ-সহকারে উপভূজ্যমান আধি, তাহার নিজ প্রযুক্ত মূল্য ক্ষয় না করিয়া, অর্থাৎ নিজের প্রযুক্ত ধন আদায় করিয়া, (অধমর্ণকে) প্রত্যর্পণ করিবে।

( অধমর্ণের ) বিনা অনুমতিতে আধির উপভোগকারী ( উত্তমর্ণ ) আধি হইতে উৎপন্ন মূল্য বা লাভসহিত আজীবরূপে উপভূজামান আধি আধাতাকে প্রত্যর্পণ করিবে এবং রাজদ্বারে অপরাধ জন্ম দণ্ডও দিবে। আধিসম্বন্ধে অবশিষ্ট বা অন্বক্ত বিধান উপনিধিবিধান হইতেই জ্ঞাতব্য বিবেচিত হইবে।

এতদারা আদেশ ও আরাধিও ব্যাখ্যাত হইল ( এক নির্দিষ্ট জনকে কোন দ্রব্য দেওয়ার জন্ম আদেশ থাকিলে, অন্তের নিকট যদি তাহা দেওয়া হয়, তাহা হইলে ইহার পারিভাষিক নাম আদেশ; এবং কোন দ্রব্য একজনের নিকট কিছুকালের জন্ম রাখিয়া, ইহা অন্ত লোকদারা ফেরত চাহিলে, ইহার নাম হয় অয়াধি)। অয়াধি হস্তে লইয়া কোনও লোক যদি নির্দিষ্ট স্থানে পৌছিবার আগে সার্থ বা বণিক্সংঘের সহিত, চোরগণদারা ম্বিত হইয়া পরিত্যক্ত হয়, তাহা হইলে সেই লোক অয়াধি প্রত্যর্পণ না-ও করিতে পারিবে। অথবা, যদি অয়াধিহস্ত লোকটি পথের মধ্যেই মৃত হয়, তাহা হইলে তাহার দায়ভাগী (পুত্রাদি) সেই অয়াধি প্রত্যর্পণ না-ও করিতে পারিবে। আদেশ ও অয়াধি-সঙ্গন্ধে অয়্যক্ত বিধান সকল উপনিধিবিধান হইতে জ্ঞাতব্য বলিয়া বিবেচিত হইবে।

(নিজের প্রয়োজনে) কেহ কাহারও নিকট হইতে কোন বস্তু চাহিয়া নিলে, কিংবা ইহা ভাড়া নিলে সেই বস্তুটি যেমন নিয়াছে তেমনই তাহাকে ফেরত দিতে হইবে। প্রদৃত্ত বস্তুটি যদি দেশ ও কালের উপরোধবশতঃ, অথবা, কোন দোষ ও উপনিপাত (দৈখী আপদ) বশতঃ হারাইয়া যায়, বা একেবারে বিনষ্ট হয়, তাহা হইলে তাহা আর ফেরত দিতে হইবে না। এই বিষয়ের অবশিষ্ট বিধান উপনিধির বিধানের সমান বলিয়া বিবেচ্য হইবে।

সম্প্রতি খূচরা ভাবে দ্রব্যবিক্রয়ের ব্যাপারীদিগের বিষয় বলা হইতেছে।
খূচরা ব্যাপারীরা দেশ ও কালাফুসারে (মাল) বিক্রয় করিতে প্রবৃত্ত হইয়া
মালের যথোৎপদ্ম মূল্য ও কিছু লাভ (পণ্যস্বামীকে) দিবে। এই বিষয়ের অবশিষ্ট
নিয়ম উপনিধির নিয়মের সমান বুঝিতে হইবে।

দৈশ ২০ কালের অতিক্রমবশতঃ মালের মূল্য কম হওয়ায় ক্ষতি হইলে বৈয়াপুভ্যকরেরা (খুচরা বিক্রেতারা) মাল ব্ঝিয়া পাইবার সময়ের যে অর্ঘ (মূল্যহার) ছিল তদমুসারেই মালের মূল্য ও উদয় (লাভ) (পণ্যস্বামীকে) দিবে।

(পণ্যস্বামী) মাল বিক্রয়ের ষে অর্থ (মূল্যের হার) নির্দিষ্ট করিয়া দিবে, তদমুসারে মাল বিক্রয় করিলে, (বৈয়াপৃত্যকরের।) উভয় অর্থ, অর্থাৎ মূল্য ও উদয়, নিজে পাইবে না, (তাহারা) মালের মূলাই কেবল (পণ্যস্বামীকে) দিবে (অর্থাৎ কেবল লাভটা স্বয়ং নিবে)। যদি মালের অর্থ বা দর পড়িয়া য়ায় বিলিয়া হানি বা লোকসান হয়, তাহা হইলে সেই কম দরেই, তাহারা মালের মূল্যও পণ্যস্বামীকে কম দিবে।

সংব্যবহারিকেরা (অর্থাৎ বাহারা পরপণ্যের ক্রয় ও বিক্রয় করিয়া জীবিকা অর্জ্জন করে তাহারা) যদি বিশাসভাজন হয় এবং রাজাধারা প্রতিষিদ্ধ না হয়, তাহা হইলে কোনও দোষের জয়, বা আকস্মিক বিপদবশতঃ পণ্য নয় হইলে (অর্থাৎ হারাইয়া গেলে), বা একেবারে নয় হইলে, তাহাদিগকে পণ্যের মূল্য (পণ্যস্বামীকে) না দিলেও চলিবে। কিন্তু, দেশান্তরে বা কালান্তরে বিক্রয়ার্থ অর্পিত পণ্যসমূহের মূল্য ও উদয় (লাভ), (কালপরিবাসনিমিন্ত) ক্রয় ও (কর্মকরাদির ভক্তবেতনাদিনিমিন্ত) পরিবায় হিসাব করিয়া (অর্থাৎ তদ্ব্যতিরিক্ত উদয় গণনা করিয়া), তাহারা পণ্যস্বামীকে দিতে বাধ্য থাকিবে। নানাপ্রকার পণ্যের সমবায়-(একত্রীকরণ-) ধারা কারবার করিলে সেই সমস্ত পণ্যের প্রত্যেকটির বিক্রয়লন্ধ লাভাংশ (পণ্যস্বামীকে) তাহারা দিতে বাধ্য থাকিবে। বৈয়াপৃত্যকরদিগের বিক্রয়সম্বন্ধে অ্বশিষ্ট বিধান উপনিধিবিধানদারা ব্যাখ্যাত ব্রিতে হইবে। এতক্বারা বিরয়াপ্ত্যবিক্রয় ব্যাখ্যাত হইল।

নিক্ষেপও (অর্থাৎ অলঙ্কারাদির নির্মাণার্থ কারুর নিকট নিক্ষিণ্যমাণ স্বর্ণাদিও) উপনিধিদ্বারা ব্যাখ্যাত হইবে। একজন ষে দ্রব্য নিক্ষেপরপে (কোন কারুপ্রভৃতিকে) দিয়াছে, তাহা ষদি (সেই কারুপ্রভৃতি) অপর একজনকে অর্পন করে, তাহা হইলে তাহাকে সেই দ্রব্যহানি পূরণ করিতে হইবে (অর্থাৎ মূল নিক্ষেপ্তাকে সে তাহা পূনরায় দিতে বাধ্য থাকিবে)। নিক্ষেপের অপহরণ ঘটিলে, (কারুপ্রভৃতির) পূর্ব অপাদান (চরিত্র) ও নিক্ষেপ্তার (স্কুলতা) প্রমাণরূপে পর্য্যালোচনা করিয়া সেই বিষয় নির্ণয় করিতে হইবে। কারণ, কারুগন অপ্তচি বা সত্যহীন এবং তাহাদের নিকট ষে নিক্ষেপ রাখা হয়, সেবিষয়ে তাহারা কোন সাক্ষী বা লেখ্য প্রমাণরূপে রাথে না। সাক্ষ্যাদিরহিত কোন নিক্ষেপ কোন কারুবারা অপলপিত হইলে, সেই কারুব বিষয় গুঢ়ভাবে

গৃহভিত্তিতে লুকায়িত সাক্ষীদিগকে **নিক্ষেপ্তা** রহস্ত উদ্ঘাটন করিয়া জানাইয়া দিবে, অথবা, বনাস্তে মত্যগোষ্ঠী রচনায় বিশ্বাস উৎপাদন করিয়া ভাহাদিগকে সেই কারুর অপলাপ জানাইয়া দিবে।

অথবা, কোনও বিজনস্থানে কোন বৃদ্ধ, ব্যাধিগ্রস্ত বা বৈদেহক ( বণিক্ ) সেই कांकन ट्रन्छ हिन्दिरित्मश्युक खरा निरक्ष्मित्राभ ताथिया हिनया याहेरत । ( ७९भन ) তাহার কথান্থসারে তাহার পুত্র বা ভ্রাতা কারুসমীপে আসিয়া সেই নিক্ষেপ रफत्रक চাহিবে। यमि रम देश प्रमु, जाहा हहेला जाहारक **ए**চि विनिद्या विद्यितिक হইবে। অন্তথা তাহাকে সেই নিক্ষেপ (নিক্ষেপ্তা হন্তে) প্রতার্পণ করিতে इट्रेंद, এবং রাজসরকারে চুরিদণ্ডও দিতে হুইবে। অথবা, কোন শ্রদ্ধেয় ব্যক্তি প্রব্রজ্ঞা বা সন্ন্যাস গ্রহণে অভিমুখ হইয়া চিহ্নযুক্ত কোন দ্রব্য তাহার (কাশ্রর) হত্তে নিক্ষেপরপে রাখিয়া প্রস্থান করিবেন। তৎপর কিছুকাল পরে সেই ব্যক্তি আসিয়া সেই দ্রব্য ফেরত চাহিবেন। যদি ( কারু ) তাঁহাকে সেই দ্রব্য প্রত্যর্পণ করে, তাহা হইলে সে শুচি, অগ্রথা তাহাকে নিক্ষেপণ্ড ফেরত দিতে হইবে. এবং (রাজসরকারে) তাহাকে চুরিনগুও দিতে হইবে! অথবা, সেই ব্যক্তি নিজের চিহ্নকত দ্রব্যসহ তাহাকে (কারুকে) প্রত্যানীত করিবেন (অর্থাৎ তাহাকে গ্রেপ্তার করাইবেন )। অথবা, মূর্যপ্রায় কোন লোক রাত্রিতে ( রত্নাদি ) কোন সারন্তব্য, রাজার নিকট অর্পণ করার অভিলাষী (পুলিশ) কর্মচারীর ভয়ে ভীত হইয়া, তাহার ( কারুর ) হস্তে নিক্ষেপরপে রাথিয়া চলিয়া যাইবে। সেই লোক রাজদায়ীর আকাজ্জিত সার দ্রব্যের উপহার না দেওয়ায়, বা অন্য কোন কারণে कात्रागादा ज्यावक रहेशा निकिश्व खरा চाहित्य। यनि म (काक ) जारा ফিরাইয়া দেয়, তাহা ইইলে তাহাকে শুচি মনে করা যাইতে পারে, অন্তথা তাহাকে नित्कर्भ रक्षत्रेष्ठ मिर्ट इट्टेर्स अवः रखन्य ( ताजनतकारत ) मिर्ट इट्टेर्स ।

(নিক্ষিপ্ত দ্রব্যের ও নিক্ষেপগ্রাহিক কারুর সম্বন্ধে) অভিজ্ঞানপ্রান্ধন পূর্ব্বক, তাহার (কারুর) গৃহে অবস্থিত (তৎপুত্রাদি) জনের নিকট, পূর্ব্বো ক্ত উভয় দ্রব্য (অর্থাৎ প্রব্রজিতের ক্বত-লক্ষণ দ্রব্য এবং বালিশপ্রায় লোকের সার দ্রব্য) চাহিতে হইবে। এই ছই দ্রব্যের অন্তত্তরটীর অপ্রত্যর্পণে পূর্ব্বোক্ত দণ্ড তাহ ক্ষেও কারু-পুত্রাদিকেও) দিতে হইবে (অর্থাৎ নিক্ষেপ ও স্তেয়দণ্ড দিতে হইবে)।

(ধর্মস্থ) তাহার (কারুর) উপভূজামান দ্রব্যসমূহের আগম (প্রাপ্তির মূল হেতৃ) জিল্লাসা করিবেন। এবং তাঁহাকে সেই দ্রব্যের ব্যবহারের সত্যাসত্য ক্ষমান করিতে হইবে এবং অভিযোজার আর্থিক সামর্থাও বিচার করিতে হইবে। ইহাদারা (অর্থাৎ নিক্ষেপের অপলাপদগন্ধীয় বিধানধার।) গোপনে ক্রিয়মাণ সমবায়ের (মিলিভব্যবহারের, যথা ঋণদান-গান্ধর্মবিবাহা দির) অপলাপেও সভ্যাসভ্য নির্ণয়ের উপায় বুঝিতে হইবে।

অতএব, যে কোনও ব্যক্তি নিজ ও পর পুরুষের সহিত কোন কার্য্যব্যবহারে, কার্য্যটিকে সাক্ষিযুক্ত ও আচ্ছন্ন ( অল্কায়িত ) অবস্থায়, দেশ ও কালের এবং সংখ্যা ও বর্ণের পরিচয়সহকারে সম্যক্ রূপে কথনবারা বর্ণি ত করিবেন॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাম্বে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিক রণে ঔপনিধিক-নামক দাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৬৯ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### ত্রয়োদশ অধ্যায়

#### ৬৫ম প্রকরণ—দাস ও কর্ম্মকরবিষয়ক বিধি

পেটের দায়ে যে জন কাহারও দাস হইয়াছে—তাহাকে ছাড়া, অগ্র কোন আর্যারজীবিত অপ্রাপ্তব্যবহার (অর্থাৎ না-বালক) শৃদ্রকে যদি তাহার কোন স্বজন (আ্রায় লোক) (অন্তের নিকট) বিক্রয় করে বা বন্ধক রাথে, তাহা হইলে সেই স্বজনের ১২ পণ দণ্ড হইবে। সেই প্রকার কোন বৈশ্যকে তেমন করিলে, সেই স্বজনের তৎ-দ্বিগুণ অর্থাৎ ২৪ পণ দণ্ড হইবে। সেই প্রকার কোন করিলে, সেই স্বজনের তৎ-ত্রিগুণ অর্থাৎ ৩৬ পণ দণ্ড হইবে। সেই প্রকার কোন বান্ধণকে তেমন করিলে, সেই স্বজনের তৎ-ত্রিগুণ অর্থাৎ ৩৬ পণ দণ্ড হইবে। সেই প্রকার কোন বান্ধণকে তেমন করিলে, সেই স্বজনের তচ্চতৃগুণ অর্থাৎ ৪৮ পণ দণ্ড হইবে। বিক্রয়কারী বা আধানকারী লোকটি (স্বজন না ইইয়া) পরজন হইলে, (সেইরূপ অপরাধে) তাহার উপর যথাক্রমে প্রথম, মধ্যম বা উত্তমসাহসদণ্ড, কিংবা বধদণ্ড বিহিত হইবে। আর যে ব্যক্তি (তেমন শ্রাদিকে) ক্রয় করে বা নিজ্বের নিকট বন্ধক রাথে, বা এই কার্য্যে সাক্ষী থাকে তাহারও উপর উক্ত সাহসদণ্ড বা বধদণ্ড বিহিত হইবে।

ক্সেচ্ছ (অনাগ্য) জাতির লোক নিজের সন্তান বিক্রয় করিলে বা বন্ধক রাখিলে, তাহার কোন দোষ হইবে না। কিন্তু, আর্থ্যি জনের দাসভাব হইতে পারে না (অর্থাৎ আর্থ্য কখনই দাস হইতে পারিবে না)।

অথবা, স্বকুলের বন্ধন-প্রাপ্তির সম্ভাবনায় ( অর্থাং এই কুক্সপ্রাপ্তিতে ) এবং

বহুসংখ্যক আর্ষ্যের আপদ উপস্থিত হইলে, আর্ষ্য জনকেও বন্ধক রাখা যাইতে পারে। কিন্তু, বন্ধক ছাড়াইবার জন্ম প্রয়োজনীয় অর্থ পাইলে (অর্থাৎ ধনিকের ধন প্রত্যর্পণ করার স্থযোগ আদিলে) আহিতপূর্ব্ব বালককে, অথবা স্বয়ং আধীভাব স্বীকার করিয়া সহায়তাদাতা অবালককে প্রথমতঃ নিজ্জেয়মূল্য দিয়া ছাড়াইয়া লইতে হইবে।

বে ব্যক্তি (ধনাদি গ্রহণ করিয়া অন্তের নিকট) নিজেকে আধিস্বরূপ রাখিয়াছে, সে একবার মাত্র অপস্তত হইলেই, তাহার দাসভাব হইতে সে মৃক্তি পাইবে ('তাহার জীবন পর্যন্ত সে দাসই থাকিবে'—এইরূপ অন্তবাদ সমীচীন মনে হয় না)। যে ব্যক্তি অন্তবারা আহিত বা আধিতে আবদ্ধ আছে সে হইবার (ধনিক হইতে) অপস্তত হইলে দাসভাবমৃক্ত হইবে। উক্ত আত্মাধাতা (অর্থাৎ নিজকে নিজে আধানকারী) ও অন্তবারা আহিতক—উভয়েই যদি অন্ত দেশের দিকে চলিয়া যায়, তাহা হইলে উভয়েই দাসভাবমৃক্ত বলিয়া বিবেচিত হইবে।

( স্বামীর ) বিস্ত যে দ্বাস অপহরণ করিবে, তাহাকে, আর্য্যের দ্রব্য অপহরণকারী ( সাধারণ ) চোরের উপর প্রযোজ্য দণ্ডের অর্দ্ধদণ্ড দিতে হইবে। ( আর্ধি-গ্রাহকের অধিকার হইতে ) নিষ্পতিত ( পলাতক ), প্রেত ( মৃত ) ও ( মন্ত্রদাতাদিতে ) ব্যসনযুক্ত দাসের মূল্য আধাতাকে ( ফিরাইয়া ) দিতে হইবে ( অর্থাৎ এই মূল্য আধাতা আধিগ্রাহককে দিবে )।

যদি কোন আ থিগ্রাহক আহিত দাসঘারা প্রেত (মৃতজনের) দেহ, মল, মৃত্র বা উচ্ছিষ্ট গ্রহণ করায় (বা উঠায়) এবং আহিত স্ত্রীলোকঘারা (সে) বিবঙ্গ পুক্ষকে স্থান করায়, বা তাহাদের উপর দণ্ডপাত করায়, বা তাহাদিগের উপর বাঁভিচারজন্মিত উপভোগ সাধন করে, তাহা হইলে সেই আধিগ্রাহক আর তাহার বন্ধক রাখা জন্ম দ্ব্য পাইবে না, অর্থাৎ এইরূপ দোষ তাহার প্রতিদেয় ম্ব্যুকে নাশ করিবে। যদি এইপ্রকার ছর্ব্যবহার (আহিতা) ধাত্রী, পরিচারিকা (ভ্রমাকারিণী), অর্জসীতিকা (রুষকর্ম-সিদ্ধ ফলের অর্জভাগিনী) ও উপচারিকার (বীজনাদি উপচান্নকর্মে নিযুক্ত স্ত্রীদিগের) উপর আচরিত হয়; তাহা হইলে ইহা (অর্থাৎ সেই ছর্ব্যবহার) তাহাদিগের (দাসীভাব হইতে) মোক্ষের কারণ হইবে। কোন উপচারক যদি (কোন আহিতা দাসীতে) সন্তান উৎপাদন, করে, তাহা হইলে তাহার (কার্য্য হইতে) অপসারণ (স্বতঃ) দি দ্ব হইবে।

আহিতা ধাত্রীকে তাহার অনিচ্ছায় স্ববশে আনিয়া (বে আধিগ্রাহক)
তাহার উপর ব্যভিচার করিবে, তাহাকে প্রথমসাহসদণ্ড দিতে হইবে। আর সেই
ধাত্রী যদি ভর্ত্বশেও থাকে, তাহা হইলে ব্যভিচারকারীর উপর মধ্যমসাহসদণ্ড
প্রদত্ত হইবে। যদি কোন আধিগ্রাহক আহিতা কল্যার উপর স্বয়ং ব্যভিচার
করে, বা অল্যবারা ব্যভিচার করার, তাহা হইলে সে আর আধানের মূল্য ফেরড
পাইবে না, বরং সেই কল্যাকে শুল্বস্বরূপ কিছু ধন দিতে সে বাধ্য হইবে এবং শুল্বমূল্যের বিগুণ দণ্ডও (রাজসরকারে) তাহাকে দিতে হইবে।

ষে কোন ( আর্য্য ) ব্যক্তি নিজেকে বিক্রয় করিলেও ( অর্থাৎ নিজে দাসভাব ঘটাইলেও ) তাহার সস্তানকে আর্থ্য বলিয়। জানিতে হইবে। ( আত্মবিক্রমী আর্যা ) স্বামিকার্য্যের ক্ষতি না করিয়া যদি স্বয়ং কিছু ধন উপার্জ্জন করে, তাহা হইলে সে সেই ধন এবং তাহার পিতার সম্পত্তি ( দায়াদরূপে ) লাভ করিতে পারিবে। এবং সে ( দাসভাবের ) মূল্য ফিরাইয়া দিতে পারিলে পুনর্বার আর্য্য ওপ্রাপ্ত হইতে পারিবে। ইহালারা উদরদাস ও আহিতক-সম্বন্ধেও এই নিয়ম ( অর্থাৎ আ্রোপার্জ্জিত ধন, পিতৃদায়ের লাভ ও আর্য্যুত্বের প্রত্যাপত্তি ) থাটবে বলিয়া বৃঝিতে হইবে।

আহিত ব্যক্তি আধিবক্ষণ সময়ে বে মূল্য নিয়াছে ( অথবা, যে ধনপ্রত্যর্পণের চুক্তিতে দে আহিত হইরাছে ) তদমুদারে নিজ্ঞায় বা মোক্ষমূল্য নিজারিত হইবে। (ধনদানে অশক্ত হইলে ) যাহার উপর দণ্ড প্রণীত হইয়াছে, দে কর্মধারা দণ্ডমূল্য নির্য্যাতিত (শোধ ) করিতে পারিবে।

আর্য্যাচারী যে ব্যক্তি যুদ্ধে বন্দী হইয়াছে, দে তাহার কর্ম ও কালের স্কুরূপ মূল্য দিয়া, বা তাহার বন্দী হওয়ার সময়ে যাহা থরচ হইয়াছে তাহার অর্দ্ধমূল্য শোধ দিয়াই মৃক্তিলাভ করিতে পারিবে।

যে ব্যক্তি তাহার গৃহে জাত, দায়ে প্রাপ্ত, (অন্ত কোনও তাবে) লব্ধ ও ক্রীতদাসগণের অন্ততমকে—যদি সে দাস বয়সে আট বৎসরের কম হয়, এবং বরুহীন
হয়—তাহার অনিচ্ছায় নীচ কর্ম করাইবার জন্ত বিদেশে বিক্রয় করে বা আধিভাবে
রাথে এবং গর্ভবতী দাসীকে তাহার প্রসবন্তশ্রমার দ্রব্যাদির প্রতিবিধান না করিয়া
অন্তের নিকট বিক্রয় করে বা আধিতে রাথে, তাহার উপর প্রথমসাহসদও বিহিত
হইবে। যে ব্যক্তি এইরপ দাস বা দাসীকে ক্রয় করিবে এবং যে এই কার্য্যের
সহায়ক (সাক্ষী) হইবে, তাহাদিগের উপরও সেই দও (অর্থাৎ প্রথমসাহসদও)
বিহিত হইবে।

ষে ব্যক্তি অহরপ নিক্রম-মূল্য পাইয়াও দাসকে আর্যান্ত লাভ করিতে দেয় না, ঠাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। সে যদি অকারণে দাসকে না ছাড়িয়া দেয়, তাহা হইলে তাহার সংক্রোধ বা কারাবাসদণ্ড হইবে (অথবা 'সকলে একত্র হইয়া তাহাকে সংক্রম করিয়া তিরস্কার করিবে'—এইরূপ ব্যাখ্যাও হইতে পারে)। দাসের দ্রব্যে তাহার জ্ঞাতিরা দায়ভাগী হইবে। জ্ঞাতিদের কেহ না থাকিলে, দাসের প্রভুই তাহার সম্পত্তিতে অধিকারী হইবে।

স্বামী যদি নিজ দাসীতে সম্ভান উৎপাদন করে, তাহা হইলে সেই সম্ভান ও তাহার মাতা—উভয়কেই দাসভাব হইতে মুক্ত বলিয়া জানিতে হইবে। যদি সেই দাসী, সম্ভানের মাতা হইয়া সেই প্রভ্র গৃহে আসক্তা থাকিয়া কুটুম্ববিষয়ক কার্য্যাদির চিম্ভা করে ( অর্থাৎ প্রভ্র গৃহে ভার্য্যার মত সংসারকার্য্য করে ), তাহা হইলে তাহার ভ্রাতা ও ভগিনী দাস্থনিম্ক বলিয়া বিবেচিত হইবে, ( এস্থলে 'মাতা' শব্দ 'ভ্রাতা' শব্দাদির সঙ্গে অন্বিত হইলে এইরূপ ব্যাখ্যা হইবে—"যদি সেই দাসী সেই প্রভ্র…… তাহা হইলে তাহার মাতা, ভ্রাতা……")।

( একবার বিক্রীত বা আহিত ) দাস বা দার্নাকে নিক্রম-মূল্য দিয়া ফিরাইয়া লইয়া যদি কেহ তাহাকে পুনরায় বিক্রয় করে বা আধিতে রাখে, তাহা হইলে তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে; কিন্তু, সেই বিক্রীত দাস বা দাসী যদি নিজেকে পুনরায় বিক্রেতব্য বা আধাতব্য মনে করে, তাহা হইলে এই দোষ ঘটিবে না। এই পধ্যন্ত দাসবিধি ব্যাখ্যাত হইল।

নিকটবর্ত্তী লোকেরা (প্রতিবেশীরা) কর্ম্মকরের কার্য্যে নিযুক্তিবিষয় জানিয়া রাথিবে। (কর্মকর) যথাসম্ভাষিত (চুক্তিরুত) বেতন প্রাপ্ত হইবে। যাহার বেতন পূর্ব্ধ হইতে অনির্দ্ধারিত আছে, তাহার কর্ম ও কর্মকাল অন্তুসারে সে বেতন লাভ করিবে। অসংভাষিতবেতন কর্মক (কর্মকর) নিজের উৎপন্ন শস্তের, গোপালক (গোয়ালা কর্মকর) নিজের উৎপন্ন ম্বতের ও বৈদেহক (কর্মকর) কারবারের জন্ম নিজের নির্দ্ধিত পণ্যের দশম (১০) ভাগ বেতনরূপে পাইবে। কিন্তু, (এই কর্মকাদিরা) সম্ভাষিতবেতন হইলে যথাসম্ভাষিত (যথানির্দ্ধারিত) বেতন পাইবে।

কিন্তু, কারু, শিল্পী, কুশীলব (নটাদি), চিকিৎসক, বাগ্জীবন (যে কথকতা বা বাক্-প্রয়োগদারা জীবিকা উপার্জ্জন করে), পরিচারকাদি (কর্মকরেরা)— যাহারা অ্নির্দিষ্ট বেতনের আশা করিয়া কার্য্য করিতে থাকিবে—তেমন বেতন পাইবে যেমন তজ্জাতীয় অন্তেরা সাধারণতঃ পাইয়া থাকে, অথবা যেমন তৎকর্ম-

কুশল ( অর্থাৎ বিশেষজ্ঞরা ) নির্দ্ধারণ করিয়া দিবেন। (বেতনবিষয়ক বিবাদ উপস্থিত হইলে ) সাক্ষীর প্রমাণাম্বসারে বেতন নির্ণীত হইবে সাক্ষীর অভাবে যেখানে সেইরূপ কর্ম করা হয়, সেখানে জিজ্ঞাসা করিতে হইবে ( অর্থাৎ বেতন-সম্বন্ধে সেখানকার ব্যবস্থা জানিয়া বেতন ব্যবস্থা করিতে হইবে )।

বেতন না দেওয়া হইলে, (নিযোক্তাকে) বেতনমূল্যের দশভাগ ( 50) দণ্ড দিতে হইবে। বেতন লইয়া গিয়া 'ইহা পাওয়া যায় নাই' এরূপ কথনপর কর্মকরের ১২ পণ, অথবা বেতনের এক-পঞ্চমাংশ দণ্ডরূপে দিতে হইবে।

ক নদীর প্রবাহ, অগ্নিজালা, চোর ও ব্যাল জন্তবারা উপরুদ্ধ হইয়া আপদ্গ্রস্ত কোনও ব্যক্তি যদি নিজের সর্বস্ব, পুত্র, স্ত্রী ও নিজকে দেওয়ার প্রতিজ্ঞায় কোন রক্ষাকারীকে আহ্বান করিয়া তাহার বারা বিপদ পার হইয়া যায়, তাহা হইলে সে রক্ষককে নিপুণজনবারা নির্দিষ্ট বেতন দিবে। এইভাবে সর্বপ্রকার ১ আর্তজনের দানবিষয়ের অন্নশম্বিধি ব্যাখ্যাত হইল বুঝিতে হইবে।

চিহ্নাদিম্বারা সঙ্গম বিভাবিত হইলে পুংশ্চলী (বেখা) (উপভোগকারী) পুন্দ্ব হইতে তাহার ভোগ (ভোগের জন্ম চুক্তিক্বত ভৃতি) প্রাপ্ত হইবে। কিন্তু, যদি সে তুর্মাতির বা অবিনয়ের বশে অতিমাত্র ভৃতি যাক্রা করে, তাহা হইলে সে স্মেণ পাইবে না (চাহিলেও পরাজিত বা দণ্ডিত হইবে)॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাম্বে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে দাস ও কর্মকরবিষয়ক বিধি-নামক ত্রয়োদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৭০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# চতুর্দ্দশ অধ্যায়

### ৬৬ম প্রকরণ—কর্ম্মকরবিধি ও সম্ভূয়সমুখান

যে ভূতক (কর্মকর) বেতন পাইয়াও কর্ম করে না, তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে এবং কার্য্য না করার কারণ দেখাইতে না পারিলে তাহাকে সংক্ষম করিয়া সেই কাজ করাইতে হইবে।

কর্ত্তব্য কর্ম করিতে অশক্ত হইলে, অথবা, তাহার করণীয় কর্ম কুৎসিত (নীচ) হইলে, অথবা, তাহার ব্যাধি বা কোনও বিপত্তি উপস্থিত হইলে, দে অনুশয় ( অর্থাৎ কর্ম না করার দোষ হইতে মৃক্তি বা রেহাই) লাভ করিতে পারে, অথবা অন্ত লোকদারা নিজ কর্ত্তব্য কর্ম করাইয়া দিতে পারে। অথবা, ভর্তা সেই ভূতকেরই থরচে তাহার কর্ম ( অন্ত লোকদারা) করাইয়া লইতে পারে।

"আপনি অন্ত লোকদারা কর্ম করাইবেন না, এবং আমিও অন্তের কাজ করিব না''—ভর্ত্তা ও ভৃতকের মধ্যে এইরূপ থাধাবাঁধি চুক্তি থাকিলে, ভর্ত্তা যদি সেই কর্মকরদ্বারা কার্য্য না করান এবং ভূতকও যদি সেই কার্য্য না করে, তাহা हरेल ভর্তারও ১২ পণ দণ্ড হইবে, ভৃতকেরও ১২ পণ দণ্ড হইবে। ভর্তার কার্য্য সমাপ্ত হইলে পর অক্সন্থানে কার্য্য করার জন্য বেতন গ্রহণ করিলে, ভূতক সেই কার্য্য আর নিজের অনিচ্ছায় করিবে না অর্থাৎ স্বেচ্ছায় সেই কার্য্য করিতে পারিবে। (চুক্তিমত) কর্ম করিবার জন্য উপস্থিত কর্মকরন্বারা (ভর্তা) যদি কর্ম না করান, তাহা হইলে সেই কর্ম সেই কর্মকরন্বারা ক্বত হইয়াছে এইরূপ বুঝিতে হইবে। ইহাই পূর্বাচার্য্যগণের (অথবা মদীয় **আচার্য্যে**র) মত। কিছ, কৌটিল্য এই মত পোষণ করেন না। তাঁহার মতে, ক্বত কর্মের দক্ষণই বেতন হইতে পারে, অক্বত কর্মের জন্য বেতন হয় না। ভর্তা ধদি কোন কর্মকরধারা অল্ল কর্ম করাইয়া অবশিষ্ট কর্মণ তাহার ধারানা করান, তাহা হইলেও সেই কর্মকরের কর্ম রুত হইয়াছে বুঝিতে হইবে। যদি কর্মকর নির্দিষ্ট দেশের ও নির্দিষ্ট সময়ের ব্যতিক্রম করিয়া কর্ম করে, অথবা, যদি সে কর্মের অন্যথাভাব ঘটায়, তাহা হইলে (ভর্তা) নিজ ইচ্ছার বিরুদ্ধে সেই কর্ম ক্লত হইয়াছে বলিয়া তাহা অহুমোদন না-ও করিতে পারেন। ভর্তার সম্ভাষিত বা ক্ষিতরপ্রকর্ম না করিয়া যদি কর্মকর অতিরিক্ত কিছু করে, তাহা হইলে ভর্কা কর্মকরের সেই পরিশ্রম বৃথা ভাবিবেন না (অর্থাৎ সেই অধিক কর্মের জন্য

তাহাকে যৎকিঞ্চিৎ বেতন দিবেন)। (এই স্থলে 'ন মোঘং'—পাঠস্থানে কেবল. 'মোঘং' পাঠগু দৃষ্ট হয়—তথন ব্যাখ্যা এইরূপ হইবে—"কর্মকরের সেই পরিশ্রম ব্যর্থ বলিয়া গ্রহণ করিবেন")।

সংঘবদ্ধ ভৃতকদিগের সম্বন্ধেও উক্ত বিধিগুলি প্রযুক্ত হইবে (অন্ত ব্যাথ্যা—
সংঘ্রদার ভৃত কর্মকরদিগের ইত্যাদি; কিন্তু, এই ব্যাথ্যা সমীচীন বোধ হয় না)।
সংঘ্রভাদিগের কর্মের আধি বা সমাপ্তির চুক্তি সাতদিন পর্যান্ত (অতিরিক্ত-ভাবে) থাকিতে পারে। তদনস্তর (অর্থাৎ সেই সাতদিনেও কর্ম সমাপ্ত না
হইলে) অন্ত ভৃতকসংঘের নিকট (ভর্তা) সেই কর্ম উপস্থাপিত করিতে
পারিবেন, এবং তদ্ধারা কর্ম-সমাপ্তি করাইতে পারিবেন। ভর্তার নিকট না
বিলিয়া সংঘ তাহার কোন অবয়বকে (অর্থাৎ ভৃতককে) বর্জন করিতে পারিবে
না, কিংবা কাহাকেও নৃতনভাবে আনিয়া উপস্থাপিত করিতে পারিবে না। যদি
সংঘ এই নিয়মের অতিক্রম করে, তাহা হইলে ইহার উপর ২৪ পণ দণ্ড ধার্ম্য
হইবে। আর যে ভৃতক সংঘ্রারা বর্জ্জিত বা পরিত্যক্ত হইয়াছে, তাহার উপর
ইহার অর্ধ্ধ (১২ পণ) দণ্ড ধার্ম্য হইবে। এই পর্যান্ত ভৃতক বা কর্মকরদিগের
বিষয় বলা হইল।

পূর্ব্বোক্ত সংঘাস্তভুক্ত ভূতকেরা, অথবা, যাহারা দল বা কোম্পানী করিয়া বাণিজ্যাদি করে তাহারা, পূর্ব্বকৃত চুক্তিতে কথিত বা নির্দ্দিট হারে বেতন ভাগ করিয়া লইবে, কিংবা সমান অংশে তাহা ভাগ করিয়া লইবে।

অথবা, রুষকগণ ও বৈদেহকগণ, ( যথাক্রমে ) শক্তের অর্থাৎ ফদলের আরম্ভ হইতে অন্ত পর্যান্ত এবং পণ্যের উৎপত্তি ( বা ক্রয় ) হইতে অবদান ( দৃষ্পূর্ণ তৈয়ারী বা বিক্রয় ) পর্যান্ত যে কর্মকর ( দংঘের যে কোন একজন ) উপন্থিত থাকিয়া কাজ করিয়া অবদাদ প্রাপ্ত হইয়াছে ( ৮গণপতি শাস্ত্রীন্র মতে 'দীর'—'ব্যাধিত' হইয়া পড়িয়াছে ) তাহাকে তাহার দ্বারা রুত কর্মের পরিমাণালুদারে অংশ দিবে । দেই সক্স কর্মকর যদি অন্ত প্রুষধারা নিজের কার্য্য করায়, তাহা হইলে দে তাহাকে ( সেই কর্মকরকে ) তাহার প্রাণ্য দম্পূর্ণ অংশ দিবে । কিন্তু, উদ্ধৃত (প্রস্তুত) পণ্য দংদিদ্ধ ( বাণিজ্যার্থ ব্যবস্থাপিত ) হইলে, দার কর্মকরকে তথনই তাহারা তাহার প্রাণ্য অংশ দিবে । কারণ, ( বাণিজ্য- ) পথে সিদ্ধি ও অদিদ্ধি সমান ধরা যাইতে পারে ( অর্থাৎ বিক্রয়লক আয় দিকও হইতে পারে, অসিদ্ধিও হইতে পারে,

( সস্ত্রসমূখানের ) কর্ম আরব্ধ হইলে, যদি কোন ( কর্মকর ) স্বস্থ থাকিয়াও

অপক্রান্ত হয় ( অর্থাৎ কর্ম ছাড়িয়া চলিয়া যায় ), তাহা হইলে তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। অপক্রমবিষয়ে কোন কর্মকরের স্বাচ্ছন্দ্য চলিবে না ( অর্থাৎ কর্ম ছাড়িয়া যাওয়া তাহার নিজের উপর নির্ভর করিবে না।

যে (কর্মকর ) চুরি করিবে, তাহাকে (প্রথমতঃ ) অভয়-দানপূর্বক তদীয় (সম্ভাষিত ) অংশ প্রদানের স্থা-কার করিয়া ধরিয়া আনাইতে হইবে এবং (স্বাদি কাজ করে তাহা হইলে) তাহাকে তাহার প্রাপ্তব্য অংশও দিতে হইবে এবং অভয়ও দিতে হইবে (ইহা কোম্পানী তাহাকে দিবে)। সে যদি পুনরায় চুরি করে, কিংবা অন্তত্ত্ব চলিয়া যায়, তাহা হইলে তাহার প্রবাসন (অর্থাৎ কোম্পানী হইতে বহিন্তরণ) শান্তি হইবে। কিন্তু, সেই কর্মকর (কোম্পানীর লোক) যদি কোন বড় অপরাধ করে, তাহা হইলে তাহার প্রতি দৃশ্যবৎ আচরণ করিতে হইবে (অর্থাৎ দৃশ্যের প্রতি যে আচরণের বিধান আছে তদ্ধপ আচরণ তাহার প্রতি করিতে হইবে)।

(কোনও যজ্ঞের) যাজকেরা (ঋত্বিকেরা) নিজ নিজ বিশিষ্ট কার্য্যের জন্ম যাহা পাইবেন তাহা ব্যতীত যথাসম্ভাষিত (কার্য্য-) বেতন সকলে সমানভাবে ভাগ করিয়া লুইবেন।

অগ্নিষ্টোমাদি যজ্ঞে দীক্ষাকার্য্য সমাপন করিয়া কোন যাজক সন্ন (ব্যাধি প্রভৃতি জন্য কার্য্যে অবসন্ন) হইয়া পড়িলে, তিনি নিজ অংশের পঞ্চম (ই) ভাগ পাইতে পারেন। (এই সব যজ্ঞে) সোমবিক্রয়ের পরে (ছাড়িয়া গেলে), তিনি চতুর্থ (ই) ভাগ পাইবেন। মধ্যম উপসদের প্রবর্গে বিছাসন-নামক (যজ্ঞাক্ষের) পরে, তিনি তৃতীয় (ই) ভাগ পাইবেন। মধ্যোপসদনের পরে, তিনি অর্দ্ধি (ই) ভাগ পাইবেন। মুভ্যাহে (সোমের অভিযবদিনে) প্রাতঃসবনের পরে, তিনি পাদহীন (ই) ভাগ পাইবেন। মাধ্যক্ষিন সবনের পরে, তিনি সম্পূর্ণ অংশ পাইবেন। কারণ, (এই মাধ্যক্ষিন সবনের পরই) সব দক্ষিণা প্রাপ্তব্য হয়। ইহার বারা অহুর্গাক ক্ষিণাও ব্যাখ্যাত হইল ব্রিতে হইবে। সন্ন যাজকদিগের কর্ম অবশিষ্ট ভৃতকেরা (অবশিষ্ট দক্ষিণারূপ ভৃতি লইয়া) দশ অহোরাত্র পর্যন্ত করিয়া দিবেন। অথবা, নিজের বিশ্বাসী অন্ত যাজকেরা সেই অবশিষ্ট কর্ম করিবেন।

কিন্তু, যক্তকর্মের অসমাপ্তির অবস্থায়, যজমান স্বয়ং সন্ন (অর্থাৎ ব্যাধি-প্রভৃতিজ্ঞা অবসাদগ্রস্ত) হইয়া পড়িলে, **ঋত্বিকেরা**ই কর্ম সমাপ্ত করাইয়া দক্ষিণা গ্রহণ করিবেন। কিন্তু, যজ্ঞকর্ম অসমাপ্ত থাকিতে, যাজ্য ও যাজকের মধ্যে—একজন অপর জনকে ছাড়িয়া গেলে, অপরাধীকে পূর্ব্বসাহসদণ্ড ভোগ করিতে হইবে।

(উক্ত যজ্ঞাদি) কর্ম্মে নিশ্চিভই দোষের উদয় হইতে পারে, এই কারণে (যজ্ঞকর্মে) যাজ্য ও যাজকগণের মধ্যে নিম্নলিখিত পুরুষদিগকে (পরস্পর ছাড়াইয়া দিলে) কোন দোষ হইবে না. যথা—যে (ব্রাহ্মণ) পুরুষ শত গরুরাখিয়াও অগ্ন্যাধান করে না, যে পুরুষ হাজার গরুরাখিয়াও যজন করে না, যে সুরুষ হাজার গরুরাখিয়াও যজন করে না, যে সুরাপায়ী, যে শুদ্রাকে (ভার্যাার্মপে) ঘরে ভরণ করে, যে ব্রাহ্মণকে হত্যা করিয়াছে, যে গুরুতন্মগামী অর্থাৎ গুরুপত্মীতে ব্যভিচার করিয়াছে, দে অসতের নিকট হইতে (বা প্রতিধিদ্ধ দ্বব্যের) প্রতিগ্রহ লইতে আসক্ত, যে নিজে চোর, 'এবং যে কুৎসিত বা নিন্দিত যাজ্যের যাজক॥ ১-২॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে কর্মকরবিধি ও সম্থ্য-সন্থান-নামক চতুর্দশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৭১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### পঞ্চদশ অধ্যায়

৬৭ম প্রকরণ—বিক্রীত ও ক্রীত দ্রব্যসম্বন্ধে অনুশয় বা বিসংবাদ

(বিক্রেতা) কোন পণ্য বিক্রয় করিয়া তাহা দিতে না চাহিলে, তাহার ১২ পন দণ্ড হইবে। কিন্তু, সেই পণ্য সম্বন্ধে কোনও 'দোষ', বা 'উপনিপাত' উত্থিত হইলে, বা ইহা 'অবিষহ্য' হইলে, তাহার কোনও দণ্ড হইবে না।

বিক্রীত পণ্যের কোনরূপ দোষ থাকিলেই ইহা 'দোষ' বলিরী জ্ঞাত হইবৈ।
(এই বিষয়ে) রাজা, চোর, অগ্নি ও জলনিমিত্তক কোন বাধা দৃষ্ট হইলে
তাহাকে উপ্রনিপাত বলা যায়। (বিক্রীত পণ্যের) অত্যধিক মাত্রায়
গুণহীনতা থাকিলে, বা ইহা আর্ভজন বা অস্বস্থমানস জনদারা রুত হইলে ইহা
অবিষয়ে বলিয়া বর্ণিত হইতে পারে।

বৈদেহক বা ক্রয়-বিক্রয়ের ব্যাপারী দিগের সন্ধন্ধে একদিন প<sup>র্যান্ত</sup> অনুস্থায় ধরা হইবে ( অর্থাৎ এই বিষয়ে কোনও প্রকার বিসংবাদ উপস্থিত হইলে তাহা একদিনের মধ্যেই মিটাইতে হইবে)। কর্ষকদিগের সন্থন্ধে তিন দিন অনুস্থায়ের মিয়াদ। গোরক্ষকদিগের পাঁচ দিন। বামিশ্র (অর্থাৎ সঙ্কর জাতি) ও উত্তম বর্ণের লোকদিগের বৃত্তি বা জীবিকার হেতুভূত (ভূম্যাদি) দ্রব্যের বিক্রয়-সম্বন্ধে সাত দিন অহশয়কালের ইয়তা।

সময়ের অতিপাত সহা করিতে পারিবে না এমন সব (পুষ্পক্ষীরাদি) পণ্যসম্বন্ধে '(বিলম্ব ঘটিলে) ইহা অন্যস্থানে বিক্রীত হওয়ার যোগ্য থাকিবে না' ইহা বিবেচন। করিয়া অবিরোধপূর্বক অন্তশয়কালের ইয়ন্তা নির্দেশ করিয়া দিতে হইবে। এই নিয়মের অতিক্রম করিলে, অপরাধীকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে, অথবা (বিক্রেয়) পণ্যের 🕉 মূল্য দণ্ডরূপে দিতে হইবে।

(ক্রেতা) কোনও পণ্যক্রয় করিয়া তাহা নিতে না চাহিলে, তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। কিন্তু, সেই পণ্যসম্বন্ধে কোনও 'দোষ' বা 'উপনিপাত' উথিত হইলে, বা ইহা 'অবিষহ' হইলে, তাহার কোনও দণ্ড হইবে না। বিক্রেতার সম্বন্ধে ষেরূপ অফুশয় উল্লিখিত হইয়াছে, ক্রেতার সম্বন্ধেও সেরূপ অফুশয় ব্যবস্থাপিত বলিয়া বৃঝিতে হইবে।

(চতুর্বর্ণের মধ্যে) প্রথম তিন বর্ণের (অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রির ও বৈশ্রের) বিবাহবিষয়ে পাণিগ্রহণবিধি পর্যান্ত অর্থাৎ পাণিগ্রহণের পূর্ব্ব পর্যান্ত (কন্যান্ত নিমান্ত ) উপাবর্ত্তন (অর্থাৎ বরকন্যার প্রত্যাহরণ) সিদ্ধ হইতে পারে (অর্থাৎ পাণিগ্রহণান্তে উপাবর্ত্তন অসিদ্ধ হইবে)। সার শূদ্র সম্বন্ধে উপাবর্ত্তন প্রকর্মার পরে প্রথম যোনিক্ষতির কাল পর্যান্ত ব্যবন্থিত হইতে পারে (অর্থাৎ প্রকর্মের পরে উপাবর্ত্তন অসিদ্ধ হইবে)। (প্রথম তিন বর্ণের লোকের মধ্যে) পাণিগ্রহণ হইয়া গোলেও স্ত্রী-পূর্কষের প্রথম একত্র শয়নসময়ে কাহারও (যোনিক্ষতি বা ক্লীব্রাদি) কোন দোষ লক্ষিত হইলে, উপাবর্ত্তন সিদ্ধ হইতে পারে (অর্থাৎ বিবাহসম্বন্ধ ভার হইতে পারে)। কিন্ত, সন্থানের পিতা-মাতা হইলে তাহাদের উপার্বর্তন ঘটিতে পারিবে না।

উপশয়নবিষয়ে কন্সার কোনও দোষ থাকিলে, তাহা প্রকাশ না করিয়া কেহ যদি কন্সার বিবাহ দেয়, তাহা হইলে তাহাকে ৯৬ পণ দণ্ড দিতে হইবে এবং শুদ্ধ ও স্ত্রীধন তাহাকে ফিরাইয়া দিতে হইবে। আবার বরের কোন দোষ থাকিলে উহা প্রকাশ না করিয়া, কোন বর বিবাহ করিলে তাহাকে দিগুণ অর্থাৎ ১৯২ পণ দণ্ড দিতে হইবে এবং (বরপক্ষ) যে শুদ্ধ ও স্ত্রীধন কন্সাকে দিয়াছে তাহা নষ্ট হইবে (অর্থাৎ তাহা আর বিবাহভক্ষের পরে বরপক্ষ ফিরিয়া পাইবে না)।

(দাসদাসী প্রভৃতি) দ্বিপদ ও চতুষ্পদ জন্তুর (বিক্রয়সময়ে) যদি কোন

ব্যক্তি, ইহারা যে কুষ্ঠরোগাক্রান্ত ও অগুচি তাহা না জানাইয়া, বরং ইহারা উৎসাহ, স্বাস্থ্য ও শোচসম্পন্ন এইরূপ আখ্যান করে, তাহা হইলে তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। চতুষ্পদ জন্তদিগের উপাবর্ত্তনের সময় তিন পক্ষ পর্যান্ত দেওয়া যাইতে পারে। আর মান্তবের উপাবর্ত্তনের সময় এক বংসর পর্যান্ত দেওয়া যাইতে পারে। কারণ, সময়ের মধ্যেই ইহাদের শোচ ও অশোচ (অর্থাৎ ইহাদের ভাল ও মন্দভাব) জানা যাইতে পারিবে।

ধর্মস্থগণ যাহাতে দাতা ও প্রতিগ্রহীতা উপহত না হয়, সেইরূপ ভাবেই দান ও ক্রয়বিষয়ে অনুশয়ের বাবস্থা করিবেন ॥ ১ ॥

ে কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে বিক্রীত ও ক্রীতন্ত্রব্য-সঙ্গন্ধে অতৃশয়-নামক পঞ্চদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৭২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### (ষাডুশ অধ্যায়

# ৬৮ম-৭০ম প্রকরণ—প্রতিজ্ঞাত জব্যের অদান, অস্বামিবিক্রয় ও স্বস্বামিসম্বন্ধ

দান করার জন্ম প্রতিজ্ঞাত বস্তু না দেওয়া হইলে, সেই অপ্রদান, ঋণের অপ্রদানের সমান বিবেচিত হইবে ( অর্থাৎ এই উভয় বিষয়ে নিয়ম সমান বুঝিতে হইবে )।

(কোন বস্তুর দান বিষয়ে) অনুশয় (বা বিবাদ বা মনোবাদ) উপদ্ধিত হইলে দত্ত বস্তু যদি অব্যবহার্য্য (ব্যবহারের অযোগ্য) হয়, তাহা ইইলে ইহা একত্ত্র (একজনের নিকট) রাখিতে হইবে। যদি কেহ তাহার সর্বস্বস্ক, পুত্র-দার, এমন কি নিজকেও অন্তের নিকট দান করিয়া অনুশয়গ্রস্ত হয়, তাহা হইলে তাহাকে সেইসব বস্তু ফিরাইয়া দিতে হইবে। প্রতিগ্রহীতাদিগকে সাধু ব্যক্তি মনে করিয়া কোন ধর্মার্থ দান প্রতিজ্ঞাত হইলে, তাহারা অসাধু প্রতিপন্ন হওয়ায় যদি অনুশয় উপস্থিত হয়, কিংবা সেই 'ধর্মদান' ধর্মোপঘাতী কর্মে দেওয়া হইলে যদি অনুশয় উপস্থিত হয় তাহা হইলে এইরপ ধর্মদান (একজনের নিকট রক্ষিত থাকিবে)। (আবার) যে ব্যক্তি উপকার করিতে পারিবে না, কিংবা যে ব্যক্তি অপকার করিতে পারে—এমন

ব্যক্তির প্রতি 'অর্থদান' প্রতিজ্ঞাত হইলে, যদি অনুশয় উপস্থিত হয়, তাহা হইলে এইপ্রকার অর্থদানও (একজনের নিকট রক্ষিত থাকিবে)। আবার অনর্থ বা অনুপর্ক ব্যক্তির প্রতি কোন 'কামদান' প্রতিজ্ঞাত হইলে, যদি অনুশয় উপস্থিত হয়, তাহা হইলে সেইপ্রকার কামদান (একজনের নিকট রক্ষিত থাকিবে)। যাহাতে (উক্তদানের অনুশয়সম্বন্ধে) দাতা ও প্রতিগ্রহীতা উভয়ে উপহত বা হানিগ্রস্ত না হয়, সেইরূপভাবেই কুশল ধর্মন্থ ব্যক্তিরা অনুশয়ের নির্ণয় করিবেন।

দণ্ডের ভয়ে, নিন্দার ভয়ে, অথবা (রোগাদি) অনর্থের ভ্য়ে যে 'ভয়দান' করা হয়, তাহার প্রতিগ্রহীতা ও দাতা—উভয়ের প্রতি স্তেয়দণ্ড বিহিত হইবে। অপরের প্রতি হিংসা বা মারণাদিবিষয়ে যে 'রোবদান' (ক্রোধপূর্কাক দান) দেওয়া হয়, ইহার প্রতিগ্রহীতা ও দাতার প্রতিও উক্ত দণ্ড বিহিত হইবে। কোনও বিষয়ে কেহ যদি দর্পসহকারে রাজক্রত দানেরও অধিক দান করে, এবং তাহা যদি কেহ পরিগ্রহ করে, তাহা হইলে দাতা ও পরিগ্রহীতা উভয়ের উপর উত্তমসাহসদণ্ড বিহিত হইবে।

(মৃত পিতার) প্রাতিভাব্য অর্থ (অর্থাৎ জামিন থাকার অর্থ), কোনও বাকি দণ্ড, বাকি শুল্ক, অক্ষে বা জুয়াথেলায় হারিত অর্থ, স্থরাপানকত ঋণের অর্থ এবং কামদানের অর্থ (অর্থাৎ নটনর্ন্তকাদিতে প্রতিশ্রুত অর্থ) তাহার পুত্র বা দায়ভাগী অন্ত কেহ, তাহার সম্পত্তির অধিকারী হইলেও, শোধ না করিবার কামনা করিলে, তাহা না-ও দিতে পারে। এই পর্যন্ত দানবিষয়ে প্রতিজ্ঞাত অর্থের অদানসমৃদ্ধে ব্যাথাা করা হইল।

জ্বতঃপর অস্থামিকত বিক্রয়সম্বন্ধে (বিধান) বলা হইতেছে। কাহারও কোন দ্রব্য হারাইয়া গেলে বা অপহত হইলে যদি সেই দ্রব্যের স্থামী তাহা কাহারও নিকট দেখিতে পায়, তাহা হইলে সেই দ্রব্যম্থামী ধর্মস্থলারা সেই লোককে ধরাইয়া দিবে। অথবা, দেশ ও কালের বাধা উপস্থিত হইলে (দ্রব্য-স্থামী) স্বয়্য (সেই নষ্ট বা অপহত দ্রব্য) লইয়া (ধর্মস্থের নিকট) তাহা উপস্থাপিত করিবেন। ধর্মস্থ তথন সেই দ্রব্যস্থামীকে প্রশ্ন করিবেন—"তুমি ইহা কোথায় পাইয়াছ ?" যদি (দ্রব্যস্থামী) সেই দ্রব্য প্রাপ্তির সব ক্রম ধর্মস্থ-সমীপে ঠিক করিয়া প্রদর্শন করে এবং যদি সেই দ্রব্যের বিক্রেতা বলিয়া কাহাকেও প্রদর্শন কা করে, তাহা হইলে সেই দ্রব্য সেই স্থামীকে (অর্থাৎ ঠিক মালিককে) সমর্পাণ করিয়া (ধর্মস্থ) তাহাকে মৃক্তি দিবেন। (কিন্তু,) যদি বিক্রেতা বলিয়া কাহাকেও দেখান হয়, তাহা হইলে সেই বিক্রেতাকে (নষ্ট বা অপহত দ্রব্যের)
মূল্য (দ্রব্যস্বামীকে) এবং স্তেয়দণ্ড (রাজাকে) দিতে হইবে। যদি সেই
বিক্রেতা নিজের অপসরণের হেতু বিভাবিত করিতে পারে (অর্থাৎ সে নিজে অন্য একজন বিক্রেতার নিকট হইতে সেই দ্রব্য থরিদ করিয়াছে বলিয়া নির্দেশ করিতে পারে), তাহা হইলে সে বিনা দণ্ডে মৃক্তি পাইবে এবং যতক্ষণ পর্যন্ত প্রথম বিক্রেতার অপসার না পাওয়া যাইবে ততক্ষণ এই অন্সমন্ধান চলিবে। অপসারের ক্ষয় লম্ম হইলে অর্থাৎ সর্ক্রপ্রথম বিক্রেতাকে পাওয়া গেলে, তাহাকেই সেই নিট বা অপহত দ্রব্যের মূল্য ও স্তেয়দণ্ড দিতে হইবে।

নইপ্রবাবিষয়ে ( দ্রবাস্থামা ) যদি ( লেখ ও সাক্ষ্যাদিবারা ) ইহার স্বন্ধ সাবান্ত করে, তাহা হইলে সে ইহা ফিরিয়া পাইতে পারিবে। যদি ( দ্রবাস্থামী ) নইদ্রেরের স্বন্ধ সিদ্ধ করিতে না পারে, তাহা হইলে তাহাকে দ্রেরে ম্লাের এক -পঞ্চম ( हे ) অংশ দণ্ডরূপে দিতে হইবে। এবং সেই দ্রব্য ন্থারতঃ রাজার আধিকারে আদিবে। নই ও অপসত দ্রবাবিষয়ে ধর্মস্থের নিকট নিবেদন না করিয়াই যদি দ্রবাস্থামী স্বয়ং ইহা ছিনাইয়া নেয়, তাহা হইলে তাহার উপর প্রথম-সাহসদণ্ড বিহিত হইবে।

কাহার ও নাই বা অপস্থত দ্ব্য পাওয়া গেলে উহা শুক্সানে (শুক্ক আদায়ের অফিসে) রক্ষিত থাকিবে। তিন পক্ষকাল পর্যন্ত (অর্থাৎ ১ই মাস পর্যন্ত ) ইহার অভিসার বা অন্যামী মালিককে না পাওয়া গেলে, ইহা রাজার প্রাপ্য হইবে, অথবা, দ্ব্যস্থামী ইহার স্বকরণ থাগ্য করিতে পারিলে, ইহা সে প্রাপ্ত হইবে।

(দাসদাসীরূপ) বিপদের মোচনার্থ তংসামীকে ৫ পণ নিজ্যুরূপে দিতে হইবে। একখুরবিশিষ্ট (অশ্বগর্দভাদি) জন্তর জন্ত ৪ পণ, গোমহিষের জন্ত ২ পণ, ক্রুপশুর জন্ত ই পণ এবং রত্ন, সারদ্রব্য ও ফল্পুদ্রবা কুপোর জন্ত শতকরা ৫ পণ নিক্রয়মূল্য দিতে হইবে।

শক্রবাজ্যক ও আটবিক বারা হত দ্রব্য প্রত্যানয়ন করিয়া রাজা তাহা যথাষথভাবে (দ্রবাস্থামীকে) দিবেন। চোরদ্বারা হত দ্রব্য নাপাওয়া গেলে, (রাজা) তাহা প্রত্যানয়ন করিতে অসম ইহলে (তজ্জাতীয়) নিজ দ্রব্য হইতে তাদৃশ একটি দ্রব্য লইয়া (দ্রবাস্থামীকে) দিবেন। দেই দ্রব্য চোর গ্রাহী রাজ-পুরুষদ্বারা আহত হইলে রাজা তাহা প্রত্যানয়ন করিয়া দ্রবাস্থামীকে দিবেন। অথবা, সেই দ্রব্যের বিনিময়ে ইহার মূল্য তাহাকে দিবেন। অথবা, শক্রর দেশ হইতে বিক্রমপ্রদর্শনথারা আনীত দ্রব্যসমূহ (সৈনিক-প্রক্ষ প্রভৃতি) রাজার আদেশ লাভ করিয়া ভোগ করিতে পারিবে, কিন্তু, সেই দ্রব্যগুলি আর্যাজীবিত জন, দেব, ব্রাহ্মণ ও তপস্বিজনের ধন হইলে—সেগুলি অভ্রুক্ত অবস্থায় তাহাদিগকে ফিরাইয়া দিতে হইবে। এই পর্যান্ত অস্বামিবিক্রয়-সম্বন্ধে বলা হইল।

সম্প্রতি দ্রব্য ও দ্রব্যস্বামীর সম্বন্ধ নিরূপিত হইবে।

(কোনও দ্রব্যের স্বত্বসন্ধন্ধে প্রমাণ এইরূপ হইবে)—দ্রব্যের স্বত্বনির্গয়বিষয়ে দেশ বা সাক্ষ্য উচ্ছিন্ন হইলে—ইহার যথাযথ অবিচ্ছিন্ন ভোগই স্বামিত্বের প্রমাণ হইবে। যদি নিজের সম্পত্তি দশ বৎসর পর্যান্ত অন্তের ভূজ্যমান অবস্থায় থাকিলেও (তৎস্বামী) তাহা উপেক্ষা করে, তাহা হইলে সেই সম্পত্তিতে তাহার স্বত্বের হানি উপস্থিত হয়। কিন্তু, বালক, বৃদ্ধ, ব্যাধিগ্রন্ত, আপদ্গ্রন্ত ও প্রবাসে বাসকারী এবং যাহারা দেশত্যাগ করিতে বাধ্য হইয়াছে এবং যাহারা রাজ্যবিভ্রমে (অর্থাৎ রাজ্যের কোন উপপ্রব বা বিপ্রবে) যোগ দিয়ছে তাহারা—(স্ব-স্ব দ্রব্যের ভোগ দশ বৎসর পর্যান্ত ছাড়িয়া গেলেও)—স্বকীয় সম্পত্তিতে উপেক্ষার ফলে স্বত্বহীন হইবে না।

যদি কাহারও বাস্ত (-ভূমি) বিশ বৎসর পর্যান্ত উপেক্ষিত থাকিয়া অক্সবারা অবিছিন্নভাবে অধ্যুষিত হয়, তাহা আর দে (বাস্তস্বামী) ফিরিয়া পাইবার প্রার্থনা করিতে পারিবে না।

(বাস্তবামীর ভাইবদ্ধ্) জ্ঞাতিরা, **্রোত্তির** রান্ধণেরা ও পাষ্ণগ্রণ (অন্তধ্র্মসম্প্রদায়ের লোকেরা)—রাজা সমীপবর্তী না থাকা অবস্থায়—অন্তের বাস্ততে বাস করিলৈও ভোগবশতঃ তাহাতে স্বত্ব স্থাপন করিতে পারিবে না। আবার কোন ব্যক্তিই কোনও উপনিধি, আধি (বন্ধকে আবদ্ধ দ্রব্য), নিধি, নিক্ষেপ, স্ত্রীলোক, সীমা, রাজদ্রব্য ও শ্রোত্তিয়দ্রব্যে ভোগদারা স্বত্ব স্থাপন করিতে পারিবে না।

আশ্রমনিবাসীরা বা পাষণ্ডগণ পরস্পরের বাধা উৎপাদন না করিয়া বিস্তৃত থোলা জায়গায় বাস করিবেন। পরস্পরের মধ্যে অল্প বাধা উপস্থিত হইলেও ( তাঁহারা) তাহা সহু করিবেন। অথবা, দিনি পূর্ব্বাগত, তিনি( নবাগতকে ) নি বাসস্থান পালাক্রমে ছাড়িয়া দিবেন। যিনি তাহা দিবেন না, তাঁহাকে ( সেই হান হইতে ) ধহিষ্কৃত করা বাইতে পারিবে।

নানপ্রান্থ, যতি ( সন্ন্যাসী ) ও ব্রহ্মচারীর সম্পত্তিতে যথাক্রমে তাঁহাদের

আচার্য্য, শিশু ও ধর্মজ্রাতা বা সমানগুরুকুলবাদী অধিকারী হইবেন (অর্থাৎ আচার্য্যাভাবে শিশু, শিশ্বাভাবে ধর্মজ্ঞাতা ইত্যাদিক্রমে)।

(রিক্থাদিসহন্ধে) বিবাদ উপস্থিত হইলে তাঁহাদের (অর্থাৎ বানপ্রস্থাদির) কাহারও যত পণ (পরাজয়ে) দণ্ড বিহিত হইবে, তাঁহাকে তত রাত্রি পর্যান্ত উপবাস, অভিষেক (কান), অগ্নিকার্য্য (হোমাদি) ও (চান্দ্রায়ণাদি) মহারুক্ত ব্রত রাজার কল্যাণার্থ করিতে হইবে। হিরণ্য (নগদ টাকা) ও স্বর্ব বাঁহাদের নাই সেই পাষওেরাই (বিভিন্ন ধর্মসম্প্রদায়ভূক্ত লোকেরা) দাধু। তাঁহারা (পরাজিত হইলে) তাঁহাদের ধনের পরিমাণাস্কু উপবাসন্থারা রাজার কল্যাণার্থ ধর্মোপাসনা করিবেন। কিন্তু, পারুক্ত বেক্ষ্যমাণ বাক্পারুক্ত ও দণ্ডপারুক্ত), স্তেয় (চুরি), সাহস ও ব্যভিচারের জন্ম তাঁহারা মৃক্তি পাইবেন না। এইসব অপরাধে তাঁহাদের প্রতি যথোক্ত দণ্ড বিহিত হইবে।

প্রব্রজ্যার (সন্ন্যাসের) অবস্থাতে মিথ্যাচার ব্যক্তিদিগকে রাজা দণ্ডবিধানদারা বারণ করিবেন। কারণ, ধর্ম অধর্মদারা উপহত এবং উপেক্ষিত হইলে ইহা শাসনকারী রাজাকে নষ্ট করে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে প্রতিজ্ঞাত দ্রব্যের অদান, অস্বামিবিক্রয় ও স্বস্থামিসম্বন্ধ-নামক ষোড়শ অধ্যায় ( আদি হইতে ৭৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত ।

#### সপ্তদশ অধ্যায়

#### ৭১ম প্রকরণ—**সাহস**

সর্ব্যসমক্ষে বলাৎকারসহকারে যে (অপহরণাদি) কর্ম করা হয়, তাহার নাম সাহস। আর গোপনে যে প্রসভহরণাদি করা হয় ও পরকীয় দ্রবাদি হরণ করিয়া নিয়া যদি তাহার অপলাপ করা হয়—তাহা হইলে এই উভয়বিধ কর্ম স্থেয় বলিয়া কথিত হয়।

রত্ব, (বহুমূলা) সারবস্তা ফল্পবস্তা ও কুণ্যাদিসম্বন্ধে সাহস আচরিত হইলে অপরাধীকে তৎতদ্দ্রবোর মূলোর সমান দণ্ড দিতে হইবে—ইহা আঙ্গার্য মন্ত্রন্ধ মতাবলম্বীদের অভিপ্রায়। এই অবস্থায় অপরাধীকে তৎতদ্দ্রব্যের মূলোর

দিগুণ দণ্ড দিতে হইবে—ইহা আচার্যা **উণনাঃ** বা **শুক্রের** মতাবল দ্বীদিগের অভিপ্রায়। এবং এই অবস্থায় অপরাধান্ত্সারে দণ্ড বিহিত হইবে ইহাই কোটিল্যের মত।

পুষ্প, ফল, শাক, মূল, কন্দ, পকান্ন, চর্মভাণ্ড, বেণ্ভাণ্ড ও মুগায় ভাণ্ডাদি ছোট ছোট দ্রবাসক্ষে সাহস আচরিত হইলে, অপরাধীর নিমে ১২ পণ ও উর্দ্ধে ২৪ পণ পর্যান্ত দণ্ড হইতে পারে।

কালায়স (লোহ), কাষ্ঠ ও রজ্জ্নির্মিত দ্রবা, ক্ষ্মু পশু ও বম্মাদি স্থলক দ্রবাসপন্ধে সাহস আচরিত হইলে, অপরাধীর নিমে ২৪ পণ ও উর্দ্ধে ৪৮ পণ পর্যান্ত দণ্ড হইতে পারে।

আবার, তামভাণ্ড, ব্রভাণ্ড (পিরলের ভাণ্ড), কাংসভাণ্ড, কাচভাণ্ড ও গজনস্থনি মিত ভাণ্ড প্রভৃতি স্থলক দ্বাসম্মদে সাহস আচরিত হইলে, অপরাধীর নিমে ৪৮ পণ্ড উর্দ্ধে ৯৬ পণ পণ্যস্ত দণ্ড হইতে পারে। এই প্রকার দণ্ডের নামই পূর্ববি প্রথমসাহসদ্ভ।

আবার বড় বড় পশু, মহুয়, ক্ষেত্র, গৃহ, হিরণ্য (নগদ টাকা), স্বর্ণ ও স্ক্ষরস্থাদি স্থলক দ্রবাসগন্ধে সাহস আচরিত হইলে, অপরাধীর নিমে ২০০ পণ ও উর্দ্ধে ৫০০ পণ পর্যান্ত দণ্ড হইতে পারে। এই প্রকার দণ্ডের নাম মধ্যমসাহসদ্ও।

স্থীলোক ও পুরুষকে যে ব্যক্তি জোর করিয়া বাঁধিবে, বা অন্যন্তরা বাঁধাইবে, অথবা (রাজশাসনে) বন্ধ লোককে মৃক্ত করিবে, তাহার প্রতি নিমে ৫০০ পণ ও উদ্ধে ১০০০ পণ পর্যন্ত দণ্ড বিহিত হইতে পারে। এই প্রকার দণ্ডের নাম উত্তমসাহসদৃত্য। এইগুলিই হইল পূর্ব্বাচার্য্যদিগের মত (অথবা কেটিল্যের নিজ আচার্য্যের মত)।

"আমি এইরপ কাজ করিবই"—ইহা বলিয়া যে ব্যক্তি সাহস আচরণ করায়, তাহাকে বিগুণ দণ্ড দিতে হইবে। "যত টাকাই দরকার হইবে—এই কার্য্যে ততই দিব"—ইহা বলিয়া যে ব্যক্তি সাহস-কর্ম করায়, তাহাকে চতুগুণ দণ্ড দিতে হইবে। "এত টাকা নগদ দিব"—এই বলিয়া যে ব্যক্তি টাকার পরিমাণ নির্দেশ করিয়া সাহস-কর্ম করায়, তাহাকে তত টাকা এবং (তদতিরিক্ত উপযুক্ত) দণ্ডও দিতে হইবে। ইহা আচার্য্য বৃহস্পতির মতাবলম্বীদিগের অভিপ্রায়ণ

কিন্ত, কোটিল্য নিজে মনে করেন যে, সেই ব্যক্তি ( সাহসকারয়িতা ) যদি

নিজের ক্রোধ, চিত্তবিভ্রম ও মদ- (অজ্ঞান-) বশতঃ ইহা করাইয়াছে বলিয়া (ছলসহকারে) স্থাচিত করে তাহা হইলে তাহার উপর উল্লিখিত সাহসকর্মকারীর সমানদণ্ড বিহিত করা হইবে।

সর্বপ্রকার অর্থনণ্ডের বিধানেই শতকরা আটপণাত্মক **রূপ**-নামক অতিরিক্ত অর্থনিও (গ্রাহ্ম) বলিয়া জানিতে হইবে এবং একশত টাকার কম অর্থনিওবিধানে শতকরা পাঁচপণাত্মক ব্যাজী-নামক অতিরিক্ত অর্থনিও (গ্রাহ্ম) বলিয়া জানিতে হইবে॥ ১॥

প্রজাদিগের দোষবাহুলো ও রাজগণের অভিপ্রায়ের দোষবশতঃ রূপ ও ব্যাঙ্গী কাল্পিত হইলে, ইহা ধর্মান্তকূল নহে বলিয়া বুঝিতে হইবে। এইজন্ত শাঙ্গে প্রকত (অর্থাৎ যথাবিহিত) দণ্ডই ধর্মান্তকূল বলিয়া বিবেচিত হইবে॥ ২॥

> কৌটিলীয় অর্থশান্তে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে সাহস-নামক সপ্তদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৭৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# অষ্টাদশ অধ্যায়

#### ৭২ম প্রকরণ—বাক্পারুয়

বাক্পারুষ্য তিন প্রকার—উপবাদ (অঙ্গবৈক্পার্টি নিরেশপূর্বিক গালিবচন), কুৎসন (পাগল ইত্যাদি বলিয়া নিন্দা) ও অভিভূত সন (বধাদির ভয়প্রদর্শন)।

কাহারও শরীর, প্রকৃতি (স্বভাব বা ব্রাহ্মণাদি কুলে জন্ম), শ্রুত (বিছাবত্ত!), বৃত্তি (জীবিকা) ও জনপদ (জন্মের দেশ) অত্যের বাক্পার্কণ্ডের বিষয় হইতে পারে। তন্মধ্যে কাহারও শরীর লক্ষ্য করিয়া—'এই ব্যক্তি কাণ (একাক্ষ), এই ব্যক্তি খল্প' ইত্যাদিরপ অঙ্গবৈকল্য বর্ত্তমান থাকিলে তদ্বিষয়ে অন্য কেহ যদি এইপ্রকার শরীরের উপবাদ প্রয়োগ করে, তাহা হইলে তাহাকে ৩ পণ দণ্ড দিতে হইবে। যদি সে ব্যক্তি অপরের কাণ্ডাদি বর্ত্তমান না থাকিলেও মিধ্যা উপবাদ প্রয়োগ করে, তাহা হইলে তাহাকে ৬ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

ষদি কেহ অপর কোন কাণ ও খঞ্জাদি লোককে 'এই ব্যক্তি শোভননেত্র বা

শোভন দস্ত'—এইরূপ ব্যাক্ষন্ত সহকারে নিন্দা করে, তাহা হইলে তাহার উপর ১২ পণ দশু বিহিত হইবে। 'এই ব্যক্তি কুটা (কুঠরোগী), উন্মন্ত, বা ক্লীব'—এইরূপ উক্তিদারা কেহ অপর কাহারও কুৎসা রটাইলে, তাহারও সেই দশু (অর্থাৎ ১২ পণ দশু) হইবে।

নিজের সমান মর্যাদার লোককে কেহ যদি ( শারীর বৈকল্যের ) সত্যন্থ বা মিথাান্থ অবলম্বন করিয়া ব্যাজস্তুতি-সহকারে নিন্দা করে, তাহা হইলে তাহার উত্তরোত্তর ১২ পণ করিয়া বাড়াইয়া ( অর্থাৎ ১২ পণ, ২৪ পণ, ৩৬ পণ প্রভৃতি রীতিতে ) দণ্ড বিধান করিতে হইবে। নিজের অপেক্ষায় বিশিষ্ট লোকের প্রতি এইরপ ব্যবহারে অপরাধীর দণ্ড দ্বিগুণ হইবে। এবং নিজের অপেক্ষায় হীন লোকের প্রতি এইপ্রকার ব্যবহার করিলে তাহাকে অর্দ্ধদণ্ড দিতে হইবে। অত্যের স্ত্রীর প্রতি এই প্রকার ব্যবহার করিলে তাহার দণ্ড দ্বিগুণ হইবে। কিন্তু, এই কুৎসা প্রমাদ, মদ ও মোহাদিবশতঃ করিলে তাহার উপর অর্দ্ধদণ্ড বিহিত হইবে। কুষ্ঠ ও উন্মাদপীড়াবিষয়ে চিকিৎসক ও নিকটবর্ত্তী লোকেরাই প্রমাণ। কাহারও ক্লীবত্বের প্রমাণ হইবে স্থালোক, মৃত্রে ফেনাভাব ও জলে বিষ্ঠার নিমক্ষন।

প্রকৃতির (জাতির) উপবাদসম্বন্ধে ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্ব, শূদ্র ও অন্তাবসায়ীর (চণ্ডাল প্রভৃতির) মধ্যে পরবর্ত্তী জাতির লোক যদি পূর্ববর্তী জাতির লোকের নিন্দা করে অর্থাৎ অন্তাবসায়ী শৃদ্রের, শৃদ্র বৈশ্বের, বৈশ্ব ক্ষত্রিয়ের ও ক্ষত্রিয় ব্রাহ্মণের নিন্দা করে, তাহা হইলে সেই ক্রমেই তাহাদের তিন পণ ও তিন তিন পণ করিয়া বাড়াইয়া, দণ্ডের ব্রুবস্থা করিতে হইবে (অর্থাৎ যথাক্রমে ৩ পণ, ৬ পণ, ৯ পণ ও ১২ পণ দৃত্র হইবে)। আবার পূর্কবর্ত্তী জাতির কেহ যদি পরবর্ত্তী জাতির অন্তা কাহাকে তদ্রপ নিন্দা করে, (অর্থাৎ শৃদ্র অন্তাবসায়ীকে, বৈশ্ব শৃদ্রকে, ক্ষত্রিয় বৈশ্বকে ও ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয়কে ), তাহা হইলে যথাক্রমে ছই ছই পণ করিয়া দণ্ড কম হইবে (অর্থাৎ যথাক্রমে ৮ পণ, ৬ পণ, ৪ পণ ও ২ পণ দণ্ড হইবে)। 'এই ব্যক্তি কুব্রাহ্মণ' ইত্যাদিরূপ নিন্দা করিলেও উপরি উক্ত রীতিতে অপরাধীর (ব্রাহ্মণক ইত্যাদি লক্ষ্য করিয়া) সেইরূপ দণ্ড (অর্থাৎ ২ পণ ২ পণ করিয়া কমাইয়া দণ্ড ) বিধান করিতে হইবে।

ইহান্বারা কেই বাগ্জীবনদিগের শ্রুতের (বিছার) উপবাদ করিলে, কারু ও কুশীলবদিগের বৃত্তির (জীবিকার) উপবাদ করিলে, এবং প্রাগ্-ছূর্ণক (পূর্ব্ব-দেশত্ব হুণ জাতির) ও গাজার দেশবাসী প্রভৃতির জনপদ উদ্দেশ্য করিয়া

উপবাদ করিলে, তাহাকেও প্রকৃতির উপবাদে বিহিত দণ্ড ভোগ করিতে হইবে— ইহা ব্যাখ্যাত হইল।

যে ব্যক্তি 'আমি তোমাকে এইরপ করিব (হাত-পা ভাঙ্গিয়া দিব ইত্যাদি প্রকার )'—এইভাবে ব্যবহার করিবে বলিয়াও তাহা না করিয়া (কেবল) তর্জ্জন করে, সে ব্যক্তি সেই কার্য্য করিলে (দণ্ডপারুয়-প্রকারণে উক্ত) যে দণ্ড পাইবার উপযুক্ত, তাহাকে সেই দণ্ডের অর্দ্ধ দণ্ড দিতে হইবে। (উক্তর্রূপ পাদভঙ্গাদি-করণে) অশক্ত হইয়া যদি সেই ব্যক্তি কোপ, মদ ও মোহবশতঃ এইরপ করিবে বলিয়াছে, এই প্রকার হেতু দেখায়, তাহা হইলে তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

শক্রতার ভাবপোষণকারী হইয়া কোন ব্যক্তি যদি (নিজের তর্জ্জনান্ত্রসারে অপরের পাদভদ্বাদি করণরূপ) অপকার বিধান করিতে সমর্থপ্ত হয়, তাহা হইলে তাহাকে তাহার জীবিকার (আয়) অন্ত্রসারে দণ্ড দিতে হইবে (কেহ কেহ এইরূপ ব্যাখ্যাও করেন—'তাহাকে যাবজ্জীবন তর্জ্জিত লোকের রক্ষার্থ জামিন দিতে হইবে')।

কেহ ষদি নিজ দেশ ও গ্রামের আক্রোশন (নিন্দা) করে, তাহা হইলে তাহাকে প্রথমসাহসদণ্ড দিতে হইবে; (নিজের) জাতি ও সংঘের নিন্দা করিলে তাহাকে মধ্যমসাহসদণ্ড দিতে হইবে; এবং দেখতা ও **চৈত্যের** (দেবায়তনের) নিন্দা করিলে, তাহাকে উত্তমসাহসদণ্ড দিতে হইবে॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রে ধর্মস্থীয়–নামক তৃতীয় অধিকরণে বাক্ণারুষ্য-নামক অস্তাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৭৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# উনবিংশ অধ্যায়

#### ৭৩ম প্রকরণ—**দণ্ডপারুয়্য**

কাহাকেও স্পর্শ-করণ, কাহারও উপর দণ্ডাদি উঠান ও কাহাকেও প্রহার-করণ—এই তিন প্রকার দণ্ডপারুষ্য হইতে পারে।

কাহারও নাভির নীচে স্থিত শরীরভাগের উপর হস্ত, পন্ধ, ভশ্ম ও ধূলিঘারা স্পর্শ করিলে, স্পর্শকারীর ৩ পণ দণ্ড হইবে। অপবিত্র হস্তাদিঘারাই একং পাদদ্বারা ও নিষ্ঠাবন (থ্-থু)-দ্বারা স্পর্শ করিলে, অপরাধীর ৬ পণ দণ্ড হইবে। বমন, মৃত্র ও মলাদিঘারা স্পর্শ করিলে, তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। নাভির উপরে স্থিত শরীরভাগে উক্তরূপে তুদ্বার্য্য করিলে, অপরাধীর উক্ত দণ্ডের বিগুণ দণ্ড হইবে। এবং মাথার উপর সেইসব চুষ্টকার্য্য করিলে, তাহার চতুগুণ দণ্ড হইবে। (উক্ত বিধি সমম্য্যাদা-বিশিষ্ট লোকের প্রতি অপরাধে বুঝিতে হইবে)। যদি এইপ্রকার ব্যবহার বিশিষ্ট জনের প্রতি আচরিত হয়, তাহা হইলে অপরাধীর দ্বিগুণ দণ্ড হইবে। এবং হীন জনের প্রতি তদ্ধপ আচরণে অপরাধীকে অর্দ্ধদণ্ড দিতে হইবে। অপরের স্ত্রীর প্রতি এইরূপ অন্যায় আচরণ করিলে অপরাধীর দিওণ দও হইবে। কিন্তু প্রমাদ, মদমততা বা মোহ-(অজ্ঞানতা-) বশতঃ এইরপ আচরণ করিলে, অপরাধীর প্রতি অর্দ্ধ দণ্ড প্রযুক্ত হইবে। যদি কেহ অন্ত কাহারও পাদ, বস্তু, হস্ত বা কেশ ধরিয়া টানে, তাহা হইলে সেই অপরাধীকে যথাক্রমে, ৬ পণ, ১২ পণ, ১৮ পণ ও ২৪ পণ (অর্থাৎ যথোত্তর ৬ পণ করিয়া অধিক ) দণ্ড দিতে হইবে। যদি একজন অন্ত জনের উপর পীড়ন ( অবমর্দ্দন ), তাহাকে (হস্তবারা) আবেষ্টন, (তাহার মুখাদিতে কজ্জলাদি) লেপন, তাহার (ভুম্যাদিতে) কর্ষণ বা তাহার শরীরে উঠিয়া উপবেশন করে, তাহা হইলে তাহার প্রতি প্রথমসাহসদত্ত থিহিত হইবে। কেহ অপরকে ভূমির উপর পাতিত করিয়া অপক্রান্ত হইলে (পলাইয়া গেলে) তাহার প্রতি প্রথমদাহদদণ্ডের অর্দ্ধ দণ্ড বিহিত হইবে।

শূদ্র ব্রান্ধণের যে অঙ্গে অভিঘাত করিবে তাহার সেই অঙ্গ ছেদন করিয়া দিতে হইবে। সে (ব্রান্ধণের উপর কোন) হস্তাদি উত্তোলন করিলে, তাহাকে (কণ্টকশোঘেন অধিকরণে) একাঙ্গবধনিজ্ঞায়-নামক প্রকরণে উক্ত দণ্ড দিতে ছইবে। (উত্থাপিত হস্তাদিবারা ব্রান্ধণের) অঙ্গ শুর্শ করিলে অর্জ নিক্লয়- দণ্ড তাহাকে দিতে হইবে। ইহাদারা **চণ্ডাল** ও অন্যাগ্য নীচ জাতিসম্বন্ধেও বিধি বুঝিয়া লইতে হইবে—এইরূপ ব্যাখ্যাত হইল।

হ শুদারা উত্থমন করিলে, অপরাধীর উপর কুমপক্ষে ৩ পণ ও উর্দ্ধপক্ষে ১২ পণ দণ্ড বিহিত হইতে পারে। পাদবারা তাহা করিলে, দণ্ড দিগুণ হইবে। (কণ্টকাদি) ছঃখোৎপাদক দ্রব্যদারা তাহা করিলে প্রথমসাহদদণ্ড প্রযুক্ত হইবে। প্রাণ নাশের সম্ভাবনা ঘটাইতে পারে এমন দ্রব্যদারা তাহা করিলে মধ্যমসাহদদণ্ড বিহিত হইবে।

যদি কেহ কাষ্ঠ, লোই, পাষাণ, লোহদণ্ড ও রজ্জ্—এইসব দ্রব্যের যে কোনটি দারা অন্তের শোণিতশূন্য তুঃখ উৎপাদন করে, তাহা হইলে তাহাকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে। শোণিত উৎপাদিত হইলে তাহার দ্বিগুণ ( অর্থাৎ ৪৮ পণ ) দণ্ড হইবে, কিন্তু, সেই শোণিত ( কুষ্ঠাদি ) কোন দ্বণীয় কারণে উৎপাদিত হইলে আর অপরাধীর দ্বিগুণ দণ্ড হইবে না।

যে ব্যক্তি অন্য কাহাকে রক্তপাত ব্যতিরেকেও এমন ভাবে আঘাত করে যে, সে ( আহত ব্যক্তি ) প্রায় আধমরা হইয়া পড়ে; অথবা যে ব্যক্তি অন্যের হস্তপাদ বাঁকাইয়া দেয়, তাহার উপর প্রথমসাহদদও বিহিত হইবে। এবং কাহারও হস্ত, পাদ ও দস্ত ভাঙ্গিয়া দিলে, কাহারও কর্ণ ও নাসা ছেদ করিলে, ও তুই ত্রণ ব্যতীত অন্য ত্রণ ফাট।ইয়া দিলেও, তাহার উপর সেই ৮ওই ( অর্থাৎ প্রথমসাহদদওই ) প্রযুক্ত হইবে।

আর উক্ত ও গ্রীবা ভাঙ্গিয়া দিলে, নেত্র ভেদ করিয়া দিলে, বা কথা বলা, শরীর সঞ্চালন ও ভোজনের উপরোধ ঘটাইলে, তাহাকে মধ্যমসাহসদও দিতে হইবে এবং সেই আহত ব্যক্তির নষ্ট শক্তি ফিরিয়া পাইয়া যথাবৎ কার্গে পটুতা লাভ না হওয়া পর্যান্ত অপরাধীকে শক্তির প্রত্যাপত্তির জক্ত সমন্ত কার বহন করিতে হইবে। আর যদি সেই আহত ব্যক্তি মারা যায়, তাহা হইলে অপরাধীকে কণ্টকশোধনবিধির অধীন করিতে হইবে।

যদি মহাজন বা জনসমূহ একত্রিত হইয়া একজন ব্যক্তিকে মারে, তাহা হইলে তাহাদের প্রত্যেককে (একজনকে একজন মারিলে অপরাধীর প্রতি বিহিত দণ্ডের) দিগুল দণ্ড দিতে হইবে।

অনেককালের অতীত কলহ বা অতীতে সংঘটিত ছন্ধার্য্যে অপরাধীর সহিত যোগদান—এই তুই দোষ অভিযোগের বিষয়ীভূত হইবার যোগ্য নুহে—ইহাই পূর্ব্বাচার্য্যদিগের বা কোটিল্যের নিজ আচার্য্যের মত। কিন্তু, কোটিল্যের মতে অপরাধীর কোনও কালেই ( দোষ হইতে ) মোক্ষণ হইতে পারে ন । ( অর্থাৎ সে অভিযোগের বিষয়ীভূতই থাকে )।

কলহবিষয়ে যে সর্বাগ্রে ( রাজ্বারে ) আবেদন করিবে, তাহারই জন্ন হওয়া উচিত, কারণ, সে অন্সের অত্যাচার সহ্ন করিতে না পারিয়াই (রাজ্বারে ) দৌড়াইয়া আসিয়াছে। ইহাই পূর্বাচার্য্যদিগের বা কোটিল্যের নিজ আচারে র্যান্ত্র মত। কিন্তু, কোটিল্যু মনে করেন যে, কেহ আগেই আন্ত্রক, বা পরেই আন্তর্ক অপরাধবিষয়ে সাক্ষিগণই প্রমাণ। সাক্ষী না থাকিলে, ঘাতদর্শনই প্রমাণ, অথবা ( ঘাতদর্শনাভাবে ) অক্যান্ত লক্ষণবারাই তত্তনির্ণয় করিতে হইবে । কোনও ঘাতবিষয়ে অভিযোগ উপস্থিত হইলে প্রতিবাদীকে সেই দিনই জবাব দিতে হইবে, তাহা না দিলে, তাহার পরাজয় নির্দিষ্ট হইবে।

তুই ব্যক্তির কলহ করা সময়ে, যদি অপর কেহ তাহাদের কোনও দ্রব্য অপহরণ করে, তাহা হইলে অপহরণকারীর দশ পণ দণ্ড হইবে।

( কলহকারীদিগের কেহ ) যদি ক্ষদ্র ক্ষ্ম দ্রব্য নষ্ট করে, তাহা হইলে তাহাকে মালিকের সেই দ্রব্য দিতে হইবে এবং সেই দ্রব্যের মূল্য-পরিমিত অর্থদগুও দিতে হইবে।

আর (তদবস্থায়) কোন স্থূল বা বড় দ্রব্য নই করিলে, তাহাকে মালিকের সেই দ্রব্য ও সেই দ্রব্যের মৃল্যের বিগুণ অর্থদণ্ড দিতে হইবে। আবার সে ধদি কাহারও বস্ত্র, আভরণ, হিরণ্য (নগদ টাকা) ও স্বর্ণ নির্মিত ভাও বা জিনিষপত্র নই করে, তাহা হইলে তাহাকে মালিকের সেই সেই দ্রব্য ও প্রথমসাহসদণ্ড দিতে হইবে।

অর্টের গৃহকুর্তী অভিঘাতবারা নাড়িলে (অর্থাৎ ধাকা প্রভৃতি দারা হেলাইলে) অপরাধীর ও পণ দণ্ড হইবে। ইহা ফেলিয়া দিলে বা ফাটাইলে, অপরাধীর ও পণ দণ্ড হইবে এবং তাহাকে সেই কুজ্যের মেরামতাদি করিয়া দিতে হইবে। অত্যের বাড়ীতে কেহ যদি কোন ফুথোৎপাদক দ্রব্য প্রক্ষেপ করে, তাহা হইলে তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। প্রাণবিয়োগের ভয় যাহা হইতে সম্ভাবিত হইতে পারে এমন দ্রব্য প্রক্ষেপ করিলে, তাহার উপর প্রথমসাহসদণ্ড বিহিত হইবে।

ষদি কেহ কাষ্ঠাদিবার। ক্স পশুদিগের ছঃখ উৎপাদন করে, তাহা হইলে তাহাকে ১ পূন বা ২ পন দণ্ড দিতে হইবে। এই কার্য্যে যদি শোণিত উৎপাদিত হয়, তাহা হইলে তাহার বিগুণ দণ্ড হইবে। কেহ যদি (গবাদি) বড় বড় পশুং

এইরূপ ছ:খ উৎপাদন করে, তাহা হইলে অপরাধীর উক্ত দণ্ডের দিগুণ দণ্ড দিতে হইবে এবং সেই পশুগুলির চিকিৎসাদিদ্বারা স্বাস্থ্যলাভের থরচও তাহাকে বহন করিতে হইবে।

নগরের উপবনস্থ পুষ্পা, ফল ও ছায়াযুক্ত বনস্পতিসমূহের প্ররোহ (পল্লব) ছেদ করিলে অপরাধীকে ৬ পণ দণ্ড দিতে হইবে। ইহাদের ক্ষুদ্র শাখাছেদ করিলে, তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। আর পীন (মোটা) শাখাছেদন করিলে, তাহার ২৪ পণ দণ্ড হইবে। সেই সব বৃক্ষের স্কন্ধ ছেদ করিলে তাহার উপর প্রথমসাহসদণ্ড বিহিত হইবে। আবার বৃক্ষগুলিকে উন্মূলিত করিলে তাহার উপর মধ্যমসাহসদণ্ড প্রযুক্ত হইবে।

পুষ্প, ফল ও ছায়াযুক্ত গুল্ম ও লতার প্ররোহাদি ছেদন করিলে, অপরাধীকে উক্ত দণ্ডের আর্দ্ধ দণ্ড দিতে হইবে। পুণ্যস্থান, তপোবন ও শ্বশানস্থ বৃক্ষসংক্ষেও প্ররোহাদি ছেদন ঘটাইলে, অপরাধীর তদ্রপ দণ্ড ( অর্থাৎ অর্দ্ধ দণ্ড ) হইবে।

দীমানির্ণয়ের বৃক্ষ, চৈত্যস্থিত বৃক্ষ, আলক্ষিত বা রাজকীয় বলিয়া চিহ্নিত বৃক্ষ এবং রাজবনস্থিত বৃক্ষসম্বন্ধে (উক্তর্রপ অপরাধ করিলে), অপরাধীকে উক্ত সেই দেণ্ডের দিগুণ দণ্ড দিতে হইবে॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে দণ্ডপারুগু-নামক উনবিংশ অধ্যায় (আদি হুইতে ৭৬ অধ্যায়) সমাপ্ত।

### বিংশ অধ্যায়

৭৪ম-৭৫ম-প্রকরণে—দূতে ও সমাহবয় এবং প্রকীর্ণ ব্যু পরিশিষ্ট

দ্যুভাধ্যক্ষ একমুখ দ্যুভের ব্যবস্থা করিবেন অর্থাৎ কোনও এক নির্দিষ্ট স্থানেই জ্য়ারীরা জ্য়া থেলিতে পারিবে এরূপ ব্যবস্থা করিবেন। (নিন্দিষ্ট স্থান ব্যাতিরিক্ত) অন্ত স্থানে জ্য়া থেলায় প্রবৃত্ত লোকের ১২ পণ দণ্ড হইবে। নির্দিষ্ট স্থানে থেলা বসাইলে, যাহারা প্রচ্ছরভাবে চোরাদির জীবিকা অবলম্বন করে তাহাদিগকে চিনিয়া লওয়া সম্ভবপর হয়।

দ্যুতবিষয়ে অভিযোগ উপস্থিত হইলে, (দ্যুতে) জয়লাভকারীর উপর প্রথমসাহসদণ্ড এবং পরাজিতের উপর মধ্যমসাহসদণ্ড বিহিত হইবে ুকারণ, এই মূর্যপ্রায় (পরাজয়প্রাপ্ত) লোকটি জয়ের কামনা করিয়া পরাজয় সহু করিতে পারিতেছে না। ইহাই প্র্বাচার্যাদিগের বা কোটিল্যের নিজ আচার্য্যের মত। কিন্তু, কোটিল্য এই মত পোষণ করেন না, কারণ, তিনি বলেন যে, পরাজিত ব্যক্তির উপর দিগুণ দণ্ডের বিধান করিলে, কেহই (জেতার দোষ হইলেও) রাজসমীপে উপস্থিত হইবে না। কারণ, কিতবেরা বা জুয়ারীরা প্রায়ই কপট খেলা খেলে (স্বতরাং পরাজিতের রাজসমীপে অভিযোগ করা ব্যতীত ছুই জয়ীর হাত হইতে নিস্তার থাকিবে না)।

কিতবদিগের কার্য্যপর্য্যবেক্ষণকারী অধ্যক্ষেরা শুদ্ধ (কৃটশৃষ্ঠ ) কাকণী বিক্তবদিগের কার্য্যপর্য্যবেক্ষণকারী অধ্যক্ষেরা শুদ্ধ (কৃটশৃষ্ঠ ) কাকণী ও অক্ষ ছাড়া অন্ত কাকণী ও অক্ষ কেহ যদি বদল করে, তাহা হইলে তাহার ১২ পণ দণ্ড হইবে। কপট খেলা ধরা পড়িলে, অপরাধীর প্রথমসাহসদণ্ড হইবে এবং তাহার জিত ধন ছিনিয়া নিতে হইবে। (অক্ষাদির রেখাদি-সম্বন্ধে গোলমাল করিলে) সেই বঞ্চনার জন্য তাহার উপর চুরিদণ্ডও প্রযোজ্য হইবে (ও তৎসঙ্গে প্রথমসাহসদণ্ড বিহিত থাকিবেই)।

দরকারী দ্তোধ্যক্ষ জিতধন ব্যক্তি হইতে শতকরা পাঁচ পণ হিসাবে অর্থাৎ জিতধনের ইত অংশ আদায় করিবেন; এবং কাকণা ( কপদ্দক ), অক্ষ ( পাশা ), অরল ( চর্মনির্মিত পাশা চালার ছক বিশেষ ) ও শলাকা ( হস্তিদন্তাদিময় গুটি বিশেষ ) সরবরাহ করার ভাড়া, এবং জল ও খেলার স্থান করিয়া দেওয়ার খরচ আদায় করিবে। তিনি খেলার দ্রব্যসমূহের আধান (বন্ধক-রাথা কার্য ) ও বিক্রেয় অন্থমোদন করিবেন। তিনি যদি অক্ষদোষ, ভূমিদোষ ও হস্তচাতুর্যরূপ দোষের প্রতিষেধ না করেন, তাহা হইলে তাঁহাকে ( নিজের আদেয় দ্রব্যভাগের ) দিগুণ দিও ছইবে।

ইহাদারা স্থাহবয়েও ( অর্থাৎ মন্ত্রমেষকুকুটাদির লড়াই দারা জুয়া থেলাতেও) এইরূপ বিধান প্রবর্ত্তিত থাকিবে—ইহা ব্যাখ্যাত হইল। কিন্তু, বিভা ও শিল্পবিষয়ক সমাহবয়ে এইসব নিয়ম থাটিবে না।

সম্প্রতি প্রকীর্ণ (বিক্ষিপ্ত ) বা পরিশিষ্ট-বিষয়ে বিধান বলা হইতেছে। যদি কোনও লোক কোনও বন্ধ অপরের নিকট হইতে যাচিয়া নিয়া বা ভাড়া নিয়া; অথবা ইহা বন্ধক রাখিয়া, অথবা, ইহাখারা অক্সবস্ত তৈয়ার করার জন্য ইহা নিক্ষেপরূপে রাখিয়া, নির্দিষ্ট দেশ ও সময়ে তাহা না দেয়, তাহা হইলে তাহাকে ১২ পণ দুগু দিতে হইবে। (রাত্রির নির্দিষ্ট) যামে ও (দিবসের নির্দিষ্ট) ছায়ানালিকার একত্র সমাগমের ব্যবস্থা থাকা সত্ত্বেও স্থান ও সময়ের অতিক্রম করিলে, অতিক্রমকারীর ১২ পণ দণ্ড হইবে। (ইহা সময়ের অনপাকর্ম প্রকরণের পরিশিষ্ট)। গুলাদেয় ও তরদেয়রূপ শুদ্ধ গ্রাহ্মণের নিকট হইতে আদায়কারীর ১২ পণ দণ্ড হইবে। সম্মুখের বাড়ীর ও সংলগ্ন বাড়ীর (শ্রোত্রিয়াদিকে) অতিক্রম করিয়া অন্তকে নিমন্ত্রণ করিলে নিমন্ত্রণকারীরও ১২ পণ দণ্ড হইবে।

বৈ ব্যক্তি সন্দিষ্ট ( অন্তকে দেওয়ার জন্ম নির্দিষ্ট বা প্রতিশ্রুত ) বস্তু (তাহাকে) দেয় না, যে ব্যক্তি ভ্রাতার স্ত্রীকে হাত ধরিয়া ( শিষ্টতা ) লঙ্ঘন করে, যে ব্যক্তি অন্তের রক্ষিতা বেখ্যার নিকট ষায়, যে ব্যক্তি অন্তের নিন্দার বিষয়ীভূত দ্রব্য ক্রয় করে, যে ব্যক্তি মৃদ্রাযুক্ত ( শিলমোহরযুক্ত ) গৃহ উদ্ভিন্ন করে ( বলপূর্বক খোলে ) এবং যে ব্যক্তি সামন্তগণের ( প্রতিবেশিগণের ) ৪০ কুলের বাধা উৎপাদন করে তাহাদিগের ( তত্তৎ অপরাধের জন্ম ) ৪৮ পণ দণ্ড হইবে।

যে জন কুলের নীবী ( ম্লধন ) নিয়া তাহার অপব্যয় করে, যে জন স্বচ্ছন্দে ( স্বতন্ত্রভাবে ) বাসকামা বিধবার উপর বলাৎকারসহকারে ব্যভিচার করে, যে জন নিজে চণ্ডাল হইয়া আর্য্য রমনীকে স্পর্শ করে, যে জন আপৎকালে নিকটবর্ত্তী জনের সহায়তার জন্ম অগ্রসর না হয়, যে জন বিনা কারণে ( অন্মের নিকট ) ধাবন করে, এবং যে জন শাক্য ( বৌদ্ধ ), আজীবিক ( তন্নামক ধর্মসম্প্রদায় বিশেষের সভ্য ), বৃষল ( শৃদ্র ) এবং প্রব্রেজিভদিগকে ( গার্হস্বর্ধর্মভ্যাগপূর্বক প্রব্রজ্যাগ্রহণকারীদিগকে ) (যজ্ঞাদি ) দেবকার্য্যে ও ( শ্রাদ্ধাদি ) পিতৃকার্য্যে ভোজন করায়—তাহাদিগের প্রত্যেকের উপর ১০০ পণ দণ্ড বিহিত হইবে ।

যে ব্যক্তি (ধর্মস্থাণদারা) অন্তজাত না হইয়া কাহাকে শপথ করাইয়া (কোন ব্যবহার বিষয়ে) জিজ্ঞাসাবাদ করে, যে ব্যক্তি স্বয়ং অযুক্ত (অনুধিকারী) হইয়া যুক্তের (নিযুক্ত অধিকারীর) কর্ম করে, যে ব্যক্তি স্ক্র্মপণ্ড ও ব্যদিগের পুষ্টে নষ্ট করে, এবং যে ব্যক্তি উষধদারা দাসীর গর্ভপাত ঘটায়—তাহাদিগের প্রত্যেকের উপর প্রথমসাহসদণ্ড প্রযুক্ত হইবে।

পিতা ও পুত্র, স্বামী ও স্ত্রী, ল্রাতা ও ভগিনী, মাতুল ও ভাগিনেয়, অথবা আচাধ্য ও শিশ্ব—ইহাদের পরস্পরের মধ্যে কেহ পতিত না হইলেও যদি অপর জন তাহাকে ত্যাগ করে, কিংবা ( সাহায্যার্থ ) সার্থের ( শ্রেণীবন্ধ বণিক্দিগের ) সহিত প্রস্থিত ব্যক্তিকে যদি কোন ( সার্থম্খ্যাদি ) গ্রামের মধ্যে ত্যাগ করে, তাহা হইলে তাহাদিগের প্রত্যেককে প্রথমসাহসদণ্ড দিতে হইবে এবং ( তাহাকে ) তুর্গম অরণ্যে ত্যাগ করিলে অপরাধীকে মধ্যমসাহসদণ্ড দিতে হইবে।

এবং কেছ যদি তাহাকে সেই কারণে (অরণ্যে ত্যাগনিমিত্ত) ভয় দেখাইয়া মারিয়া পলাইয়া যায়, তাহা হইলে অপরাধীকে উত্তমসাহসদগু দিতে হইবে। অক্তান্ত সহযাত্রীদিগের প্রত্যেকের উপর ইহার অর্দ্ধন্ত প্রযুক্ত হইবে।

যে ব্যক্তি অন্ত অবন্ধনীয় পুরুষকে বাঁধে বা অপরধারা বাঁধায়, যে ব্যক্তি বন্ধন-বন্ধকে মুক্তি দেয়, অথবা যে ব্যক্তি **অপ্রাপ্তব্যবহার** বালককে ( না-বালককে ) বাঁধে বা অপরবারা বাঁধায়—তাহাদিগের প্রত্যেকের উপর ১০০ পণ দণ্ড বিহিত হইবে। পুরুষের অপরাধের বৈশিষ্ট্য অনুসরণ করিয়া দণ্ডবৈশিষ্ট্য প্রযুক্ত হইবে।

যে ব্যক্তি **তীর্থকর** (তীর্থস্থান বা জলাবতরণের স্থাপয়িতা, কিংবা জৈন **তীর্থ**কের ?) তপস্থী, ব্যাধিগ্রন্ত, ক্ষধায়, পিপাসায় বা পথগমনে ক্লান্ত, অন্ত জনপদ হইতে আগত ও বহুবার দণ্ডভোগকারী এবং যে ব্যক্তি অকিঞ্চন (নির্ধন)—তাহারা সকলেই অন্তগ্রহের পাত্র বলিয়া বিবেচিত হওয়ার যোগ্য।

ষে দব দেব, ব্রাহ্মণ, তপস্থী, স্থী, বালক, বৃদ্ধ ও ব্যাধিগ্রস্ত লোক অনাথ ( অর্থাৎ যাহাদের ষোগক্ষেমচিস্তক নাই ) এবং নিজ হুঃখনিবেদনের জন্ম রাজ্বারে অভিদরণ করিতে অক্ষম বা অনিচ্ছুক, ধর্মস্থগণ ( স্বয়ং ) তাহাদের কার্য্য পরিদর্শন করিবেন এবং তাঁহারা দেশ, কাল ও ভোগের ছল তুলিয়া অতিমাত্রায় তাহাদিগের (ধনাদির) হরণ করিবেন না ( অর্থাৎ তাহাদের কার্য্য নষ্ট করিবেন না )।

পুরুষেরা বিচ্চা, বৃদ্ধি, পৌরুষ, কুল ও কর্মের অতিশয়বশতঃ, অর্থাৎ গৌরবা-ধিক্যবশতঃ, (রাজধারে ধর্মস্থগণের) পূজা পাওয়ার যোগ্য।

এইভাবে **ধর্মান্থগণ** ছল প্রয়োগ না দেখাইয়া কার্য্য সম্পাদন করিবেন— (তাহা হইলেই 'তাহারা) সকল বিষয়েই সমদর্শী হওয়ায় (সকলের) বিশ্বাস-পাত্র ও লোকের প্রিয় হইতে পারিবেন ॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাল্পে ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণে দ্যুত ও সমাহবয় এবং প্রকীর্ণ-নামক বিংশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৭৭ অধ্যায় ) সমাপ্ত। ধর্মস্থীয়-নামক তৃতীয় অধিকরণ সমাপ্ত।

# শব্দনির্ঘণ্ট

| অংশবিভাগ ২৫২                             |                                  |                           |
|--|----------------------------------|---------------------------|
|  | শতীতবাবহার ২৩•                   | অস্বাধি ২৪৪, ২৮০          |
| হাক্ষ ৩০৬                                | अशर्वत्वन ৮                      | <b>जनि</b> र्फागतहन २८১   |
| <b>অক্ষণসঞ্চার</b> ২২৭                   | অথর্বমন্ত্র ২০                   | অনিকাসিনী ২৩০             |
| ্ <b>শ্রক্ষপ</b> টল <b>৭</b> ৬, ৮৭<br>্র | <b>সদিতি ৪৬</b>                  | অনীকস্থ ৬৪, ৬৯, ২০৮,      |
| ञक्षभाना ১२७, ১२৯                        | অধ্যৰ্ণ ২৭৩, ২৭৯                 | २১७, २১৪                  |
| वकोव ( दृक्क ) ७७                        | অধিকরণ ৯৯, ১০১                   | অমুগ্রহ ৬৫, ২২০           |
| অক†স্তি ১ <b>০</b> ৭                     | গধিকরণী ১৩৯                      | অমুখান ৫৫                 |
| অকৃত (ক্ষেত্র) ৬৪                        | অধিনিল্লা ২৩৯                    | অমুনয় ১০৪                |
| <b>অ</b> কৃতা ৩৽, ৩৩                     | অধিমাস ৮৪, ১৬৭                   | অমুবাসন ২০৪               |
| অকুষ্টপটা ২১৯                            | অধিমাসক ৮৮                       | অনুমান ৩৮                 |
| ञ्गेस्रा ४८                              | अधिशेन 8>                        | অমুমেয় ১৯                |
| <b>ग</b> ित्रजीती २२ <b>৫</b>            | অধীয়ান ২৪৬                      | অমুশয় ২৮৮, ২৯১, ২৯২, ২৯৩ |
| অগ্নিদণ্ড ২২৫                            | <u> অধ্যপভোক্তা ২৬৬</u>          | অমুশয়বিধি ২৮৭            |
| অগ্নিশালা ২৬২                            | ন্মনস্তরজাতীয়া ২৫৭              | অনুপ ৬৮                   |
| অগ্নিষ্টোম ২৯০                           | অনস্তরা ২৫৪                      | অনেকমুখ ১৪৭               |
| व्यक्षिष्ठं २७०                          | <b>সম্ভ</b> পাল ২৮, ৪২, ১৪৯, ১৭০ | অপদান ১৭, ২৮১             |
| অগুরু ১১৩                                | <b>সম্ভণানচুৰ্গ</b> ৬৩           | অপবর্ত্তক ১১০             |
| গঙ্গ ৬৯                                  | অন্তৰ্বংশিক ২৭, ৫৯               | অপবিদ্ধ <b>ু</b> ৫৬ •     |
| অঙ্গবিদ্যা ২৬                            | অস্তরগারকৃত ( ব্যবহার ) ২২৯      | অপবাজিতা ৭৭               |
| ञकूल ১৬२                                 | অন্তরার <b>ন্তশে</b> ষ ৮৫, ১৪১   | অপরাম্ভ ৬৯, ১৭৬           |
| অজবিন্দু ১৪                              | অস্তরিকা ২৬০                     | অপশব্দ ১০৭                |
| <b>बढेवीशाल</b> ४२,७१, ১४৯, २১७          | অন্তঃকোপ ৪৪                      | অপসর্গ ২৯, ৩৽, ৩৬, ৪৫     |
| অট্টালক ৭২                               | অন্তঃপুর ৫৬                      | অপসার ৭৯, ২৯৫             |
| অণিয়ার ৭৪                               | স <b>ন্তঃপুরভাজনী</b> ১৫৯        | অপসারক ১১৭                |
| জভট ১৯ <b>৭</b>                          | অন্তঃপুরভাজনীয় ১৬ <b>•</b>      | অপসারণ ১৩৫                |
| <b>অন্ত্যের</b> ৮৩, ১৩৯, ১৭৩, ২১৪        | অ <b>ন্তা</b> বসায়ী ৪২          | অপহাব ৯৩                  |
| <b>অভিচা</b> র ২৪•, ২৪৩                  | অগ্ৰন্ত ৮৫, ১৪১                  | অপ্রতিহত <b>૧</b> ૧       |

**3**<6

| _                           |                        |                             |
|-----------------------------|------------------------|-----------------------------|
| অপ্রাপ্তব্যবহার ৬৬, ২৩০ 🕦   | অযোগৰ ২৫৭              | আকরাধ্যক্ষ ১১৯              |
| অবক্রন্ম ২৬১                | অরণাকৃত ২২৯            | আকরিক ১২২                   |
| অবক্রয়ণ ২৬১                | অরত্নি ১৬২             | আকার ৩৭                     |
| অবক্রয়োপভোক্তা ২৬৬         | অরল ৩০৬                | আকাশযুদ্ধ ২১৬               |
| অবক্রীত ২৬১                 | অরিষ্ট ১৮২             | আক্ৰম ৪৪                    |
| অবক্রেতা ২৬১                | অৰ্জুন ১৪              | আখ্যাত ১০৩                  |
| অবগৃহীত ২৩১                 | व्यर्थ ५९, ४२, २२२     | আখ্যান ১০৪                  |
| অবঘাটক ১০৯                  | অর্থক্রম ১০৩           | আখ্যায়িকা ১৩               |
| অবচ্ছেদন ১৩৮                | व्यर्थान २०४           | আগন্ত (লবণ) ১২৪             |
| অবনিধান ১০০                 | অর্থনা ১০৪             | जाहार्या ६७, २७, २६১, २६८,  |
| অবস্তী ১৭৬                  | অর্থশাস্ত্র ১৩         | ২৮৮, ২৯৭, ৩০৩,৩০৬০          |
| অবলেপ্য ১৩৫, ১৩৬            | অর্থসাধক ২৩৪           | আজীবিক ৩০৭                  |
| অবপাত ৭৩                    | অর্থোপধা ২২            | আজা ১০৪                     |
| অবরুদ্ধ ৩২                  | অৰ্দ্ধকাকণী ১২০        | আটবিক ২৮, ৩২, ৪৪            |
| জ্বস্কর ২৫৯, ২৬১            | অর্দ্ধগুচ্ছ ১০৯        | আঢ়ক ১৬০                    |
| অবস্তার ৯৩                  | অর্দ্ধপণ ১২৩           | আণি ৭৩                      |
| অবস্রাবণ ১০০                | অদ্ধমাণবক ১০৯          | <b>আণিদ্বার</b> ২৬ <b>০</b> |
| ञ्चितिस्य २०১               | व्यर्कमायक ১२७         | আতিবাহিক ১৪৮, ২২১           |
| ख(तमक २७)                   | অৰ্দ্ধদীতিক ১৭৮, ২৭৪   | আশ্বধাতা ২৮৪                |
| অভয়বন ২৭০                  | অর্দ্ধহায় ১০৯         | আক্মোপনিধান ১০৭             |
| অভ্যবপত্তি ১০৪              | অশ্রোত্রির ৪১          | আত্যয়িক ৪১, ৫৪             |
| অভিত্যক্ত ৭৯                | অশ্ব (সেনা) ৭৮         | আদেশ ২৫, ২৮০                |
| <b>অভিভ্</b> ৎ मन २৯৯       | অখাধ্যক ২০১            | আধি ২৭৯                     |
| অভিযুক্ত ২৩২                | অধিনীকুমার (-শ্বয়) ৭৭ | আধিগ্রাহক ২৮৪               |
| অভিযোক্তা ২৩২               | অশ্বক ১৭৬              | আধিপাল ২৭৯                  |
| অ <b>ভিশস্ত</b> ২৩ <b>৽</b> | অষ্ট্ৰভাগপণ ১২৩        | আধিপুরুষ ২৩৩                |
| অভূাদ্ধার্য্য ১৩৬           | অসন্নিবিষ্ট ২৫০        | আধিবেদনিক ২৩৮, ২৩৯, ২৪०     |
| অব্লশীধু ১৮৫                | व्यमदर्भा २८४ .        | আশ্বীক্ষিকী ৭               |
| व्यवतीर ১৪, १७              | অস্বামিবিক্রয় ২৯৩     | আপতনীয় ৮৪                  |
| व्यक्ष्य ३८१                | অসিষষ্টি ১৫৫           | আপমিত্যক ১৪১                |
| অমাত্য ১৯                   | অহর্গণদক্ষিণা ২৯•      | আপরাস্তক ১১৮                |
| व्यमिख्यम २२७               | অহিভয় ১৬              | व्यावका २०७                 |
|                             |                        |                             |

আবিক ১১৬

#### শব্দনির্ঘণ্ট

| আবেশনা ১৩৩              | আহিত ৬৬, ২৮৪               | উদাহরণ ১৩                    |
|-------------------------|----------------------------|------------------------------|
| আভ্যস্তরগুল্ক ১৭১       | আহিতক ২৩•                  | উপকরণ ১৫৬, ২১৩               |
| আন্তি ৪৭                | আহিতা ২৮০                  | উপকন্তী ( তুলা ) ১৩৫         |
| আয় ৮৫                  | ইঙ্গিতি ৩৭                 | উপগত (পুত্র) ২৫৬             |
| আয়তিপ্ৰদৰ্শন ১০৬       | ইতিবৃত্ত ১৩                | উপজ্ব ২০৭                    |
| আয়মান (দ্রোণ) ১৬০      | <b>ইতিহাস ৮,</b> ১৩        | উপজা ১৯৭                     |
| আ্যমা ২১৩               | इं <u>ल</u> ् ३३, 8०, ४१   | উপজাপ ৩২                     |
| আয়মানী ( তুলা ) ১৫৯    | इंज़क्व १९                 | উপাদ্ৰষ্ট্য ২৭৫              |
| আয়শরীর ৮৩              | ইনুদু∕ক†শ ৭২               | উপণিকুত (বাবহার) ২১৯         |
| আযুক্ত ২২৯              | इंसुष्ड्म ३०२              | উপনয়ন ১২                    |
| আয়ুধাগার ৭৮            | ইন্দ্রজালবিদ্যা ২৬         | উপনিধি ২৭৮                   |
| আয়ুধাগারাধ্যক ১৫২      | इंक्नगोल >>>               | উপনিপাত ২৯১, ২৯২             |
| আরকূট ১২৩               | <b>३ क्रि</b> युजय ১৩      | উপপ্ৰদান ১০৭                 |
| আর্ট্র (দেশ) ২০৪        | इलानमन २८                  | উপবাদ ২৯৯                    |
| आत्रानिक २৮             | উৎকৰ ১৪২                   | উপভোগ ৯৩                     |
| আবোহজ ১১৫               | উৎকীৰ্ণিকা ( তুলা ) ১০৫    | উপযুক্ত ৮০, ৯৬, ৯৮, ৯৯, ১০°  |
| আ্যা ৩৬, ১৮২, ২৮৩, ২৮৫  | উত্তমৰ্গ ২৭৩, ২৭৯          | উপশয়ন ২৯২                   |
| 9.9                     | উত্তমসাহসদণ্ড ৮०, ৯০, ১৩৪, |                              |
| আৰ্য্যজন ১৮১            | )90, )90, )be, )bà,        |                              |
| আয্যজীবিত ২৮৩, ২৯৬      | २००, २३१, २२१, २७৯,        |                              |
| আ্যাম্যাদা ১০           | २৮७, २৯४, २৯४, ७०১.        | উপদর্গপ্রমোক্ষ ৯২            |
| আ্বা ৪৮                 | ৩০৮                        | উপশ্বন্দন ৭৩                 |
| আয (বিবাহ) ২৩¢          | উত্তরাধ্যক ১০১             | উপস্থান ৫৩, ১৪১              |
| আলীঢ়প <b>ু</b> ত ২০৫   | উত্তরায়ণ ১৬৬              | উপহ্বর্কৃত (বাবুগার ) ২২৯    |
| আশ্রম (চারি) ৯,১১       | উত্থান ৫২, ৫s, ৫৫          | উভয়বেতন ২৯, ৪৩              |
| আ্শ্রমধর্ম ২৬           | উৎসঙ্গ ১৪০                 | উরভ ৪৬                       |
| অ্বাসৰ ১৮২              | উদপ্তরস্থান ২৬০            | উল্লেখন ১৩৮                  |
| জাসার ৪৪                | উদপান ৭৩                   | <b>উশ्ना</b> ः २९२, २११, २२४ |
| आयुद्ध ( विवाह ) २०¢    | উদয় ৯৮                    | উষ্ণশোষণ ১৭৯                 |
|                         | উদরদাস ২৮৫                 | উপালম্ভ ১০৪                  |
| আস্থাপ্য ২৩৭            | উদ্বৰ্ত্তন ১৭৪             | উপাবৰ্ত্তন ২০২, ২৯২, ২৯১     |
| আহরণীয় ৮৫              | উদাসীন ( রাজা ) ২৯         | উর্দ্ধচয় (বপ্র) ৭১          |
| আহাধাব্দ্ধি (পুত্ৰ ) ৪৮ | উদাস্থিত ২৪                | উৰ্শ্মিমাৰ্গ ২০৫ •           |
| জাহিচ্ছত্রক ১১১         | 7 1113                     |                              |

# কোটিলীয় অর্থশান্ত্র

| উর্ণা ১৭৩, ২০০                | করণীয় ৮৪                    | কারু ১৫৩                |
|-------------------------------|------------------------------|-------------------------|
| উর্ণাকারু ৭৬                  | করপ্রতিকর ১৯৬                | কারাশ ৫৭                |
| ঝণগ্ৰহণ ২৭২                   | করাল (রাজা) ১৪               | কাৰ্দমিক ১০৮            |
| श्वश्रवन ৮                    | কলমিতিকা ১১৬                 | কার্ত্তান্তিক ৩২        |
| ঋত্বিক ৫৩, ২৯০                | কলা ১৬৫                      | কাৰ্কটিক ৬১             |
| এकमूथ ১২२, ১৪৫, ১৭৯, ७०৫      | কলিক ৬৯                      | কাৰ্শ্মিক ৯০            |
| একান্তরজাতীয়া (স্ত্রী ) ২৫৭  | কল্প ৮                       | কাৰ্দ্মান্তিক ২৭, ৭৬    |
| ঐক্রদার ৭৭                    | কল্পক ২৮                     | কালিকা ১১৫              |
| <b>अविधिवर्ग ১</b> ৫১         | क्:म ১৬०                     | कां निक्र ১२४           |
| <b>উপবা</b> হ্য ২১২           | করাশ (দেশ) ৬৯                | কালিঙ্গক ১১৮            |
| <u>উ</u> পবাহ্যক ২ <b>০</b> ৫ | কর্ম্মকর ৬৫, ১৪৬, ২৮৬        | কালেয়ক ১১৪             |
| <del>উপবেণুক ২০</del> ৫       | কর্ম্মকরবিধি ২৮৮             | কাশিরাজ ৫৭              |
| উদক ( ছুৰ্গ ) ৭০              | কর্ম্মনিষদ্যা ৭৬             | कार्श ५७०               |
| <b>उपनिक</b> २२०              | কৰ্ম্মসচিব ৪০                | কাষ্ঠতুলা ১৬০           |
| <b>ওদা</b> য্য ১০৩            | কর্মাস্ত ২৩, ৩২, ৬৫, ৬৮. ৮৩, | কাষ্টবাট ৮৩             |
| উপচারিক ২১৪                   | <b>२२</b> ১                  | কাশিক ১১৮               |
| উপশায়িক ২১৪                  | क्ष ३८७                      | কাশ্যপ ১৭৯              |
| <del>ওপস্থা</del> য়িক ২১৪    | ক্রথিম ১৪১                   | কাশী ১১৮                |
| উপায়নিক ১৪•                  | ক্ষন্ত ২৫৭                   | ক্ষ†ত্ৰধৰ্ম ২০          |
| উর <b>স (পুত্র) ২</b> ৫৫      | ক্ষত্রিয় ৯                  | কিন্তু ১৮৩              |
| ভূ <b>শন</b> স ৮, ৪০, ৮৯      | काकनी ১२७, ००७               | কিরাত 🔓                 |
| কটবাৰক ১১৭                    | কাচমণি ১১২                   | किलाउँ ১৯৯              |
| কটুকবৰ্গ ১৪৩                  | কাঞ্চনকারু ১২৯               | কিছু ১৬৩                |
| ্<br>কড় <del>স্</del> বর ২১; | কাঞ্চনিক (রস ) ১১৯           | ক্ৰিমিতাৰ ১৪২, ১৭২, ১৭৪ |
| কণকুণ্ডক ২০০                  | কানীন ২৫৬                    | ক্ৰীন্ত ( পুত্ৰ ) ২৫৬   |
| কণ্টকপ্রতিসর <b>৭</b> ৩       | কাস্ত্রনব (দেশ) ১১৫          | कूकूंठेक २८१            |
| কণ্টকশোধন ২২, ২২•             | কাপটিক ২২, ২৪                | কুট্টনশালা ২৬২          |
| कर्खानी ১৪৬                   | কাপিশায়ন ১৮৩                | क्रुंजी २७०             |
| कन्धा ১००                     | কাম ১৩                       | কুট্টাক ১৭৬             |
| कप्रमी >>e                    | কামদান ২৯৪                   | কুট্টিম ৭৯              |
| কন্তাপুর ৫৭                   | কামোপধা ২২                   | কুড্য ২৫৭               |
| ক্তব্ৰ ৩১, ১৪৭                | কাম্বোজ ২০৪                  | কুড়্ব ১৬•              |
| করণ ৯৮, ১২৯                   | কারণিক ৯০                    | क्रमन २००               |

| met on the              |                                |                                 |
|-------------------------|--------------------------------|---------------------------------|
| कुश ४४, ५९२             | কোকিলসঞ্চারী ২০৬               | গায়ন ২৮                        |
| কুপাগৃহ ৭৬, ৭৮          | কোশকার ১১৩                     | গার্হপত্য ( ধমুঃ ) ১৬৩          |
| কুপাাধাক ১৫٠            | কোশনির্হার ১৪১                 | <b>多を 7・2</b>                   |
| কুস্ত ১৬•               | কোষগৃহ ৭৮                      | গুণকর্ম ১২৯                     |
| কুম্ভকুক্ষিক (বপ্র ) ৭১ | কোষ্ঠাগার ৭৮                   | গুণসংকীৰ্ত্তন ১০৬               |
| কুমারপুর ৫৭             | কোষ্ঠাগারাধাক্ষ ১৪০            | গুরুকুল ২৭৩                     |
| কুমারাধ্যক্ষ ৫৭         | ०८८ चीकः                       | গুরুতল্পগামী ২৯১                |
| কুমারী <b>পু</b> র ৭৪   | (कोर्षिना १, ১১, ১७, ১৮, २७,   | <b>खन्मात्त्रा</b> ১৪৮, २२১     |
| কুল ( পরিমিত ) ৭৭       | ৩৯, ৪০, ৪৭, ৮৯, ৯৯, ১০৭        | গৃঢ়জ ( পুত্র ) ২৫৬             |
| কুলসংঘ ৪৯, ২৭১          | २ <b>६८, २८१, २</b> ०५, २००,   | গৃহকপোত্ত ২১৮                   |
| कुना १८                 | २११, २৮৮, २৯৮, ७०७, ७०४        | গৃহপত্তিক ২৪                    |
| কৃশিক্যা ( তুলা ) ১৩৫   | কৌণপদস্ত ১৭, ৪৬                | গৃহপতি ( -বেশধারী ) ২২০         |
| কুশীলৰ ৬৭,২৫৮           | কোমারভূতা ৪৭                   | গৃহব†স্তুক ২৫৭                  |
| क्रक ८१                 | (कोटलग्न ১०৮                   | গৃহস্ত (ধর্ম) ৯                 |
| কুদ্ধবৰ্গ ৩৩            | কৌশিক ৪৬                       | গোপ ৬৪, ২১৯, ২২১                |
| ক্দুক ৩৩                | কৌশেয় ১১৮                     | গোপুর ৭৪                        |
| কৃত্ৰকৰ্ম ১২৯           | কৌষ্ঠেয়ক ১৪০                  | গোক্ত ৬৮, ১৬৪                   |
| কুরকল্প ১৫৫             | ्रक्रेक ७५                     | গোশীর্য ১১৩                     |
| কৃটমুদ্রা ২১৭           | त्काल <b>&gt;</b> 8२           | গৌড়িক ১২৭                      |
| क् <b>ট्यूक्ष</b> २১७   | ক্ষৌম ১১৮                      | গ্রাম ৬৩                        |
| কূর্টিকা ১৯৯            | খনকযুদ্ধ ২১৬                   | গ্রামদেবতা ২৬৯                  |
| কুর্পাস ১৫৬             | <b>भं</b> ल २७४, २ <b>१</b> ०  | গ্ৰামবৃদ্ধ ৬৬ '                 |
| কৃতক্ষেত্র ৬৪           | <b>গড়্গী ১</b> ৫৬             | গ্রামভূতক ২৭৫ 🕡                 |
| কুন্ত্য ৩০, ৩৩          | গণ্ডস্টিত ২৬০                  | গ্ৰামিক ২৪৪ ২৬৮                 |
| কৃষ্টপদা ২১৯            | থারী ১৬॰                       | গ্রামের (দেশ) ১১৩, ১১৪          |
| क्र शु ५७, ১৯२          | থাৰ্কটিক ৬১                    | ব্রেরেয়ক ২১৩                   |
| (কচলক ১১৬               | গণিকা ধাক্ষ ১৮৭                | গটিকা ১৬১                       |
| কেদার ৮২                | গণিকামাতৃকা ১৭৩                | যন (কর্ম) ১৩৫                   |
| কেদারভূমি ৭৭            | গণ্ডিকা ১২৭                    | গ্নস্থণীর ( কর্ম্ম ) ১৩৫        |
| ক্ষেত্ৰজ্ব ২৫৫, ২৫৬     | গর্ভসংস্থা ৫৬, ৫৭              | घान <b>১৯</b> ৯                 |
| ক্ষেত্ৰ ৪৯              | গাঢ়পেটক ১৩৬                   | গাণপিণ <b>াক ২</b> ••           |
| ्रक्वी २६६              | গা <b>ন্ধर्ব ( বিবাহ</b> ) २७¢ | <b>Б७१ल २৯, २३৯, २८७,  २८</b> १ |
| ক্ষেপণকর্ম ১২৯          | গান্ধার ৩০০ 🕳                  | ৩৽৩, ৩৽৭                        |
| - 1 111 m               |                                |                                 |

# কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্র

| চতুরস্তা ( মহী ) ২৩৪            | জ্ঞাগ্ৰ ২২১                  | পুষ্টু কারু ১২৯           |
|---------------------------------|------------------------------|---------------------------|
| हन्मन ১১७                       | জনমেজয় ( রাজা ) ১৪          | ত্সরু ১৫৫                 |
| চক্রশালা ৭৩                     | জম্ভকবিতা ২৬                 | তাদাজিক ১০০               |
| চন্দ্রোত্তরা ১১৫                | জয়ন্ত ৭৭                    | তাপস ২৪                   |
| চমসী ১৪৩                        | জলসারণী ১৭৮                  | তাপসবাঞ্জন ৪৩             |
| চরিত্র ২২০                      | জাঙ্গলবিদ্ २०१               | তাপী ১২৮                  |
| চরিত্র ( পাদ ) ২৩৩              | জাতদ্রোণিকা ( শোভা ) ২১১     | তামধাতৃ ১২১               |
| চরিত্রামুগ্রহ ৯২                | জানপদ ৩১                     | তাম্রপর্ণিক ১০৮           |
| চর্দ্ম ১১৫                      | জামুভঞ্জনী ৭৩                | তার্ণদ ১১৩                |
| <b>हलरत्र ১</b> ८८              | জাবক ১১৩                     | তালজভব (রাজা) ১৪          |
| চাতুরস্ত ১৪                     | জামদগ্রা ১৪                  | তালাবচর ৭৬, ১৯১, ২৭৬      |
| চাক্রমাস ১৬৬                    | জামুনদ ১০৬                   | তিতল ২০৫                  |
| চাররাত্রি ২২৭                   | জালুথ (রাজা)৫৭               | তিরোহিত ২২৯               |
| চারিত্র ৮৭                      | জীবঞ্জীবক ৫৬, ১৮৬            | ত্রিকচালী ২০৫             |
| চার্ণের ১০৮                     | জীবন্তী ৫৬                   | ত্রিপুটক ১০৮, ১৩৫         |
| চালনিকা ১৪৬                     | জোঙ্গ ১১৪                    | ত্রিপুটকাপসারিত ১৩৫       |
| চীনপট্ট ১১৮                     | জোঙ্গক ১১৪                   | তীক্ষ ২৪, ২৭              |
| চীনসী ১১৬                       | <i>জোঙ্গ</i> নী ১ <b>৩</b> ৬ | তীক্ষধাতু ১২১             |
| চূর্ণবাস ৬১                     | জোতিষ ৯, ২০                  | তীর্থকর ৩০৮               |
| ८ वि ७३                         | ভমর ৮৫                       | <b>তুট ১৬</b> ৫           |
| हिला ११, ११, २३३, २३२,          | ডক্ষোন্তব ১৪                 | তুলা ১৫৮                  |
| २७१, ७०১, ७०१                   | ডিম্ব ৪৮                     | তুরূপ ১১৩                 |
| চোদনা ( ১লখবিশেষ ) ১০৪          | তপনীয় ১৩০                   | তুষারপায়ন ১৭৯            |
| চোরগ্রহ ৯২                      | তপনীয়কার ১২৯                | <b>ভূ</b> ৰ্য্য <b>৫৩</b> |
| চোররজ্জু ৮২                     | তপ্তব্যাজী ১৬১               | তৃণবাট ৮৩                 |
| চোররক্ষণ ( কর ) ২১৮             | ত্তর ৮২, ১৯৫                 | তৈলপণিক ১১৪               |
| চৌরোদ্ধরণিক ২১৮                 | ্ ভরদেশ্ব ১৪৮                | কৈবিছা ৫৪, ২৫১            |
| চৌল ১৬৯                         | তরলপ্রতিবন্ধ ১০৯             | দক্ষিণায়ন ১৬৬            |
| ছারাপৌরুষ ১৬২                   | তরশুক্ষ ১৯৪                  | <b>फ्</b> ख २०७           |
| ছায়ামান ৫২                     | তকু´(-ভ্ৰামী) ১১২            | मखक २८७                   |
| ছন্দোবিচিতি ৯                   | ত্রপুধাতু ১২১                | <b>দণ্ড</b> ৩১, ৩২, ১৬৪   |
| कक्रमविवर्णशांत्र ১৫১           | ত্ৰয়ী ৭, ৮                  | দ্ভনীতি ৭, ৮, ২০          |
| ক্রন্তবাক <b>রিক</b> ৬ <b>৪</b> | ত্তু কৰ্ম ১৩০ 💄              | দুগুপারুয়া ১৮৯, ২৪১, ৩০  |

| দণ্ডপাল ২৮                    | দেবতাধ্যক্ষ ৮১                  | নক্তকৃত ( ব্যবহার ) ২২১ |
|-------------------------------|---------------------------------|-------------------------|
| দণ্ডপ্র ঐকারিণী ১৭৩           | দেবদাসী ১৭৩                     | নক্তমালা ১০৯            |
| नमा ( रुखी ) २১১              | দেবর্থ ২১৫                      | নগরদেবতা ৭৬             |
| দশগ্ৰামী ২১৯                  | দেবসভা ১১৩                      | नक्तीवक ১৫৯             |
| <b>म</b> नवर्भिक ७२           | দেবসরোবর ১৯২                    | নবশস্তা ১৮০             |
| দশাৰ্প ৬৯                     | <b>प्रमुक २०</b> ১              | নলতুলা ১১৬              |
| দ্ৰবায়বৰ্গ ১৪৩               | (च्य २८०, २८), २४२              | নষ্ট (গোধন) ১৯৭         |
| <b>ज</b> वावन २७, ७৫, ७१, २১৮ | দৈব ( বিবাহ ) ২৩৫               | নাক্ষত্রমাস ১৬৬         |
| দাণ্ডক্য (রাজা) ১৪            | ছৈপায়ন ১৪                      | নাগবনপাল ৬৮             |
| দাতুহে ১৮৬                    | দে  ক্স ১১৪                     | নাগরায়ণ ২১২            |
| দান ৩২, ৩৬                    | দ্রোণমুখ ৬৩, ২১৯                | নাগরিক ২৭,💃২২২          |
| দাপক ৯১, ৯৬                   | দৌবারিক ২৭                      | নাড়িকা ১৬৫             |
| দায় ২৪৮                      | <b>४निक २७२, २</b> १२, २१४, २१৯ | नान्गीवक्ष ১৫৯          |
| দায়ক্রম ২৪৮                  | ধমুঃ ১৬৩                        | নাবধ্যক্ষ ১৯২           |
| भाग्नसम्बं २०४                | ধ্যুগ্ৰহ ১৬২                    | নাভাগ ১৪                |
| <b>मोश्रोम २</b> ०১           | ধনুমু স্থি ১৬২                  | নাম ( পদ ) ১৽৩          |
| क्षम ३४७, २७०, २৮४            | ধরণ ১৫৭                         | নায়ক ২৭                |
| <b>मामिति</b> थि २५७          | <b>धर्मा</b> ১৫, ৪৯, २७७        | নারোষ্ট্র ২০৬, ২১২      |
| দ্বার ৭৩                      | ধৰ্মদান ২৯৩                     | नोनिको ६२, ১५७          |
| ষারাদেয়গুল্ক ১৭২             | ধর্মোপধা ২:                     | ন্ত্ৰায় ২৩৪            |
| দিগ্দেবতা ৭৭                  | ধর্মশান্ত্র ১৩                  | নিক্ষপাধাণ ১২৮          |
| দ্বিপিতৃক ২৫৬                 | ধর্ম্মদেতু ১১৮                  | নিক্ষেপ ২৮১             |
| <b>द्रक्</b> ल ১১१            | <b>धर्षा</b> ञ्च २२৯, २৯৪, ७०৮  | নিক্ষেপভাজন ৯১          |
| ছুৰ্গপাল ২৮                   | <b>धर्म्म</b> ञ्जीय २२, २२৯     | নিক্ষেপ্তা ২৮২          |
| ছুৰ্দ্ধি (পুত্ৰ) ৪৮, ৪৯       | ধ্বজ ৪৬                         | নিত্য (ব্যয় ) ৮৬       |
| <b>कू</b> र्यग्रांथन ১৪       | ধাতুশাস্ত্র ১১৯                 | নিত্যাধিকার ১০২         |
| मूख ८२                        | ধান্তবৰ্গ ১৪২                   | নিত্যোৎপাদিক ৮৬         |
| দৃতকর্ম ৪৪                    | ধারণক ২৭৯                       | নিধাতৃক ৯১              |
| <b>म्</b> ठम्थ ४२             | ধারণিক ২৭২, ২৭৪                 | নিধায়ক ৯৬              |
| <b>पृ</b> ष्ठा २ ०            | ধাৰন ( হুৰ্গ ) ৭০               | निन्म १०४               |
| मृाख ७०६                      | ধীসচিব ৪০                       | निन्पू २७৯              |
| মূতাধ্যক্ষ ৩০৫                | <b>अ</b> न्द ( माक्को ) २११     | , নিপাত ১০৩             |
| (प्रवह्न > > >                | त्शात्रन २०७                    | निवस्नक २२, २५          |
| 4.1.6.1 -                     |                                 |                         |

# কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্র

| নিবন্ধপুস্তক ৬৯, ৮৭, ২১৮, ২২০ | পণমাত্রা ১২৩            | পরিরয় ১৬২                     |
|-------------------------------|-------------------------|--------------------------------|
| निवर्खन ১७8                   | প্ৰা 88                 | পরিস্তোম ১১৬                   |
| নিবেশন ২৩৭                    | পণ্যগৃহ ৭৮              | পরিহাপণ ৯৩                     |
| निम्नयुक्त २১७                | পণ্যপত্তন ১৯৩           | পরিহার ৬৫, ২১৯, ২২৽            |
| নিমিত্তশাস্ত্র ২০             | পণ্যপত্তনচারিত্র ১৪৯    | २२ <b>১,</b> २७ <b>৫</b>       |
| निम्बर ১৬৫                    | পণ্যবাছল্য ৯২           | পরিহারক্ষয় ৯৩                 |
| নিয়ামক ১৯৩                   | পণ্যাধ্যক ১৪৭           | পরীহার ১০৫                     |
| নিক্সক্ত ৮                    | পতিত ২৫১                | পরোক্ষ দোষ ২৩১, ২৩২            |
| निय्यंगी २७১                  | পত্তন ৬৫, ১৯২           | পরোক্ষ ২॰, ৩৮                  |
| नियान २८१                     | পত্তনাধ্যক্ষ ১৯২        | প্ৰ্যুসিত ৮৫                   |
| নিক্সয় ১৮৮                   | পথ্যদন ১৪৯              | প্ৰ ১৫৭                        |
| निक्कग्न-मूला २৮৪, २৮৬, २৯৫   | পথ্যাকুসরণ ২৪৪, ২৪৬     | <b>भवक ১৯</b> ॰                |
| নিষ্পতন ২৪৪, ২৪৫              | পত্তাধাক ২১৫, ২১৬       | পাকমাংসিক ২২৩                  |
| निकामा ७६ ১१১                 | পত্তোৰ্ণা ১১৮           | পাণ্ড্যকবাটক ১০৮               |
| निঃশ্রেণী ২২৪                 | পদ ১০৩, ১৬२             | পাদপণ ১২৩                      |
| নিস্ষ্টার্থ ৪১                | পদাতিক ৭৮               | পাপেয় ২০৫                     |
| নিস্ষ্টি ১০৫                  | পরপুরাভিযানিক (রথ)২১৫   | পারগ্রামিক ৫১                  |
| নিস্টোপভোক্তা ২৬৬             | পরস্পরোপকারসন্দর্শন ১০৬ | পারাশর ৩৮, ৪৬, ৮৯, ২৫৪,        |
| নিস্ত্রিংশ ১৫৫                | পরাশর ১৭                | <b>२</b>                       |
| নীচৈৰ্গত ২০৫                  | পরিক্ষেপ ৭৩             | পারসমুদ্রক ১১•                 |
| নীবী ৮৪, ৮৬, ৯০, ৩০৭          | পরিকুট্টন ১৩৮           | পার্ম্ব ( আয় ) ৮৫, ১৪০        |
| নীবীগ্রাহক ১০১                | পরিথা ৭১                | পারিবেলী ১৩৫                   |
| नीताङना २ <sup>५</sup> ८      | পরিস ৭৪, ৮৩, ১২৫        | পারিহীনিক ১৪°                  |
| নেপাল ১১৭্                    | পরিণাহ ২০৩, ২০৯         | পারীহ্ণিক (কর) ১২৪             |
| নৈগম ১৬৭                      | পরিদান ১০৫              | পাশিক্য ১০৮                    |
| নৈমিত্তিক ৩২                  | श्त्रिटमम् ५७८          | পাষণ্ড ৪৩, ৫১, ৫৪, ৭৭,         |
| পক্ষিবাট ৮৩                   | পরিপূর্ণতা ১০৩          | २२७, २৯७                       |
| পঞ্জামী ২১৯                   | পরিবর্ত্তক ১৪১          | পারিকশ্মিক ৬৯                  |
| পঞ্চাক্ত ৩৯                   | পরিবর্ত্তন ৯৪           | পারায়ণ ২১৩                    |
| পঞ্চনদ ৬৯                     | পরিব্রাক্তক ৯           | भातियाभिक ( त्र <b>थ</b> ) २२० |
| পট্টন ৮২                      | পরিব্রাজিকা ২২, ২৭      | পারিহীণিক ৮৫                   |
| পট্টস ১৫৫                     | পরিমর্জন ১৩৮            | পাক্ষয় ২৪•, ২৪১               |
| भूष ১२७                       | পরিমিতার্থ ৪১           | व्याकामा २७৮                   |
|                               |                         |                                |

| পাকি:গ্রাহ ৪৪        | পৃষতকার ১২৯                 | প্রতিভূ ২৭৪                       |
|----------------------|-----------------------------|-----------------------------------|
| পাৰ্বত ( ছুৰ্গ ) ৭০  | পেটক ১৩৬                    | প্ৰতিবন্ধ ৯৩                      |
| পিন্ধ ১৩৭, ১৩৮       | পৈশাচ ( বিবাহ ) ২৩৬         | প্রতিবর্ণক ১৬৮                    |
| পিণ্ডকর ১৪০          | পৌণ্ডুক ১১৭                 | প্রতিলেখ ১০৬                      |
| পিগুারক ১৯৬          | পৌণ্ড্রিকা ১১৮              | প্রতিষেধ ১০৪                      |
| পিশুন ১৭, ৩৯, ৪৬     | পৌতৰ ১৫৭                    | প্রতিষিদ্ধব্যবহার ২২৯, ২৪৩        |
| পুণ্ডু (দেশ) ১১৮     | পৌতবাধ্যক্ষ ১৩৪, ১৫৭        | প্রত্যক্ষ ২০, ৩৮                  |
| পুত্ৰবিভাগ ২৫৫       | পৌনৰ্ভব ২৫৬                 | প্ৰত্যাখ্যান ১০৪                  |
| পুত্রিকা ২৫৫         | পৌর ৩১                      | প্রত্যভিযোগ ২৩২                   |
| পুত্ৰিকাপুত্ৰ ২৫৫    | পৌরবাবহারিক ২৭              | প্রতীবাপ ১২১                      |
| পুনর্বিবাহ ২৩৯       | পৌক্ষ ১৬৩, ১৬৫              | প্রতোদ ২৭০                        |
| পুনরক্ত ১০৭          | প্রকর ১৮০                   | <b>थ</b> ानी १२                   |
| পুরমূখা ৪২, ১৪৯      | প্রকর্ম্মাস ১৬৬             | প্রথমসাহসদণ্ড ৯০,৯১,১৩৪,১৮৯,      |
| পুরাণ ১৩             | প্ৰকাণ্ডক ১০৯               | ১৯৩, ১৯৮, २००, २ <b>১</b> ৭, २२७, |
| পুরাণচোর ২২২         | প্ৰকাশযুদ্ধ ২১৬             | २२१, २७৯, २४४, २४৫, २৫৯,          |
| পুরোহিত ২০, ২৭, ৫৩   | প্রক্রয় ১২২                | २७১, २७८, २७৫, २७৮, २१२,          |
| পুলাক २००, २००       | প্রক্রযো <b>পভোক্তা</b> ২৬৬ | २११, २४४, २৯४, २৯४, ७०১,          |
| পুक्षम २०४           | প্রগ্রীব ৭৯, ২০২, ২০৮       | ৩০২, ৩০৩, ৩০৫, ৩০৭                |
| পুষ্পনাট ৮২          | প্রচার ৮৪, ৮৭, ২০০          | প্ৰদীপ্যান ২২৭                    |
| পুস্পরথ ২১৫          | প্রচার সমৃদ্ধি ৯২           | व्यप्तिष्ठे। २१, ১२६              |
| পুস্পভিকীর্ণ ২০৬     | প্রজাপতি ১৭৯                | <b>अ</b> फ्रष्ट्रे २२०            |
| পুস্ত ৯•             | প্রাক্তাপনা ১০৫             | প্ৰধান ৩৩                         |
| পুস্তভাগু ৮৯         | <b>अगानी</b> २७३            | প্রধাবিতিকা ৭২                    |
| পূগ ৩১               | প্রহ্বণ ১৮৫                 | প্ৰপা ২১৯                         |
| পৃতিকিট ১৩৬          | প্রতিক্রয়কারী ১৬৯          | প্রথাম ১৬॰                        |
| পূৰ্ণক ১১৪           | প্রতিকুষ্ট ২৬৩              | প্রয়োগ ৯৩                        |
| পূর্বগ ২০৫           | প্রতিক্রোশ ২৬৩              | প্ৰয়োগ অত্যাদান ১৪১              |
| পূর্ব্বদেশীয় ৬৯     | প্রতিলোষ্টা ২৬৩             | প্ৰবৰ্গ্যেদ্বাসন ২৯০              |
| পূर्यमारमाख २२), २०४ | প্রতিগণিকা ১৮৭              | প্রবৃহণ ২২, ২৭১                   |
| পুর্বোচায় ২৩        | প্রতিগ্রহীতা ৯৬             | প্রবাল ১১২                        |
| পৃচ্ছা ১০৪           | প্ৰতিগ্ৰাহক ৯১              | প্ৰবাসন ২৯০                       |
| পৃষত ৫৬              | প্রতিচ্ছন্না (শোভা ) ২১০    | প্ৰবিষ্ট ৮৪                       |
| পৃহত্তকাচকর্ম ১৩•    | প্ৰতিদূত গ                  | প্রবীর ২২২ 🤚                      |
| *                    |                             |                                   |

### ৩১৮ কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্র

| প্রবেগ্যগুরু ১১৭২       | रन १॰                                 | বানলটী ২৬•               |
|-------------------------|---------------------------------------|--------------------------|
| প্রক্তিত ২৪, ১৯৪, ২৩৽,  |                                       | বার ২৬৬                  |
| 9.9                     | বন্দাকা ৫৬                            | বারক ১৬১                 |
| প্রবন্ধিতা ১৭৩          | तक्त २8०                              | বারি ২১১                 |
| প্রবজ্ঞা ২৪             | <b>तकान २</b> ५७                      | বারিকাঞ্জ ২০৬            |
| প্রশংসা ১০৪             | বন্ধনাগার ৭৮, ৭৯                      | বারী ২১১                 |
| প্রশাস্তা ২৭            | নপ্র ৭১                               | বাৰ্দ্তা ৭, ১০           |
| প্রশোধা ৮৫              | নরত্রা ১৭৫                            | বাৰ্হস্ত্য ৭, ৪০, ৮৯     |
| প্রটোহী ১৯৭             | বৰ্গ ১০৭                              | বাহিরিক ৭৮               |
| প্রসন্না ১৮০            | বৰ্জ ২৬২                              | না্ত ১৬৪                 |
| প্রসাধক ২৮              | বৰ্ণ ৯, ১১                            | বাহদস্তীপুত্র ১৮         |
| প্রস্তরধাতৃ ৮২, ১২০     | वर्षक ১२१                             | বা <b>জবি</b> হার ২৪১    |
| প্রস্তু ১৬•             | वर्ह्नी ৮२, ১৪৮, ১৭०, २১৮             | ন†জন্ত্ৰ ১৭১             |
| প্রাকার ৭১              | >>>                                   | নাহনৰ ১১৬                |
| প্রাপ্-ভূনক ৩০০         | तर्फ्रभावक २०६                        | वाञ्जीक २०८              |
| প্রাক্সাপতা ১৬২, ২৩৫    | বলি ১৪০                               | বাসগৃহ ৫৫                |
| প্রাড্বিবাক ২৭৭         | नक्दर्ग ১৫১                           | বাসিতক ১৩৫               |
| প্রাথবাবহার ২৫০         | त्सन २०৫                              | नान्छ २৫৯                |
| প্রাতিভাব্য ২৭৪, ২৯৪    | বল্লীবৰ্গ ১৫০                         | নাস্থবিক্রয় ২৬২         |
| প্রাবৃত্তিক ( লেখ ) ১০৪ | বন্ধর ৭৭                              | विक २०৯, २১०, २১२        |
| প্রামিতাক ১৪১           | নহ ১৬০                                | বিক্রম ৪৬, ৫৩            |
| প্রাক্তিত ১৪২           | বহুমুখ ১৮১                            | বিক্ষেপ ১৪৭              |
| প্রাস ৫৯ °              | বাক্পাক়শ্য ১৮৯, ২৪১, ২৯৯             | বিক্ষেপশেষ ৮৫            |
| (প্রক্ষা ২২৭, ২৪২, ২৭০  | ৰাক্য ১০৩                             | বিচিত্ৰবধ ৮১             |
| े, अब २२६               | ৰাগ্ <mark>জীবন ২৮, ৫১, ৬৭, ১৯</mark> | विजरुष्क्रम ১००          |
| ফলকহার ১১ <b>॰</b>      | ১৮৬ <u>,</u> ৩০০                      | বিতক্তি ১৬২              |
| ফলবাট ৮২                | বাক্তক ১১৭, ১১৮                       | বিনয় ১২                 |
| कलाम ১৮¢                | নাট ২৭•                               | निमृत्रथ ८१              |
| कलाभ्रवर्ग ১९२          | वां उनांधि २१, ८७                     | विरामक ১৪                |
| ফৰ্ব্ব ( দ্ৰব্য ) ৮০    | নাৎসক ১১৮                             | विथा ১৪४, २०১, २०৪, २०२, |
| বজ্র ৮২, ১১২            | ৰাভাপি ১৪                             | 230                      |
| नुख ध्रुष ১৫९           | বাদ ৯৭                                | विनम्र ১৯৮               |
| ৰশিক্পথ ৬৫, ৬৭, ৮১, ৮৩  | বানপ্রস্ত ৯, ৬৬, ২৯৬                  | বিশ্বমানা ২৩৭            |
|                         |                                       |                          |

| বিপ্রাট্, ১৬২                 | বৈজয়ন্ত ৭৭                 | ব্ৰঙ্গবাসী ৩০            |
|-------------------------------|-----------------------------|--------------------------|
| বিবীত ২১৭, ২১৯, ২৬৪, ২৬৭,     | বৈণ ২৫৮                     | ব্রহ্মচারী ৯, ২৯৬        |
| २७৯                           | বৈণাৰ ১২৬                   | ব্ৰহ্মদেয় ৬৪, ২৬৮       |
| বিবীতাধাক্ষ ২১৭               | दिवामहरू २८, ३७৯, २२०, २२७, | ব্রহ্মারণ্য ৬৮, ২৬৪      |
| বিশালাক্ষ ১৬, ৩৮, ৪৬          | २ <b>৫</b> १, २৮৯           | ব্ৰান্ত্য ২৫৩, ২৫৭       |
| বিশিখা ১২৬, ১৩৩               | বৈদেহকব্যঞ্জন ৪৩            | ব্ৰাহ্ম ২৩৫              |
| विषटेवछ ७०                    | বৈজপ্রত্যাখ্যাতসংস্থা ৫৬    | ব্রাহ্মদার ৭৭            |
| বিচ্চি ৬৭, ৮৩, ৮৮, ১২৫. ১৪৬,  | বৈছ্যত ( ভম্ম ) ৫৬          | ভক্ত ৫১, ১৪৮             |
| २ ५ ५, २२ •                   | रेनमूर्या ১১०               | ভগ্নোৎস্টুক ১৯৭          |
| বিসরঃ ১৯২                     | বৈধয়ণ ১২৫, ১৪৭, ১৮৫        | ভদ্রশীয় ১১৪             |
| विभी ১১৫                      | বৈবন্ধত ৩১                  | ভদ্ৰসেন ৫৭               |
| বিস্থাবণ ১৩৬                  | বৈয়াপৃতাকর ২৮০             | ভয়দান ২৯৪               |
| रीजी २००                      | বৈয়াপৃতাবিক্রয় ২৮১        | ভয়োপধা ২২               |
| বীজোত্তরা ১৮৪                 | <u>বৈরস্ত্য ৫৭</u>          | ভং সনা ১০৪               |
| বুদ্ধিমান ( পুত্ৰ ) ১৮        | देवञ्चदन ११                 | ভৰ্ম ২৪০                 |
| ব্যুষ্ট ৮৩, ৯১                | ব্য <b>তিকীৰ্ণমাংসা</b> ২১১ | ভৰ্মণ্যা ২৪০             |
| বৃত্ত ১২৩                     | নায় ৮৬                     | ভাগ ৮৩, ২২১              |
| বৃত্তপুচছা ১১৬                | ব্যয়প্তাশ্য ১৪১            | ভাগদেষ ৩১                |
| বৃত্তি ২৩৬                    | ন্যয়শরীর ৮৩                | ভাগানুপ্রবিষ্টক ১৯৭      |
| वृिक २१२                      | ব্যবহার ৮৭, ৯৩, ২২৯, ২৩৩    | ভাগোপভোক্তা ২৬৬          |
| नुषल ७०१                      | ব্যবহারিক ১৬০               | ভাজনী ১৫৯                |
| वृषली २१                      | ব্যবহারিকী ১৫৯              | ভাজনীয় (দোণ) ১৬০        |
| वृक्षिमङ्ग ১८                 | ব্যাকরণ ৮                   | ভাটক ১৪৯                 |
| বৃহম্পতি ১, ৪৭, ১৭৭, ২৭৭, ২৯৮ | ব্যাঘাত ১০৭                 | ভাগুবাহিনী ৭১            |
| বৃহস্পতিসবন ২৯০               | नाजी ४०, ४७, ১२४, ১৪२,      | ভাণ্ডাগার ৭৬             |
| কুংহিত ২০৬                    | २৯৯                         | ভার ১৫৯                  |
| বেণুবৰ্গ ১৫০                  | ব্যধিত শেষ ৮৫, ১৪১          | ভারদ্বাজ ১৬, ৩৮, ৪৫      |
| বেতন ৫১                       | वाविमःञ्चा ०७, ०१           | ভিক্ষুকী ২৪, ২৮          |
| বেতনোপগ্রাহিক ১৯৬             | ব্যাম ১৬৩                   | ভিঙ্গিদী ১১৭             |
| (वषक २७)                      | বাামিশ্র ২৯১                | ভিণ্ডিপাল ১৫৪            |
| (वस्नक ১७৫                    | वाग्ल २১७                   | ভিন্নমস্তকা ( তুলা ) ১৩৫ |
| বেল্লকাপসারিত ১৩৬             | ব্ৰজ ৬৫, ৮১, ৮২             | ভীতবৰ্গ ৩৪               |
| रेवकृञ्चक ১२२, ১৫२            | ব্ৰজপথ্যগ্ৰ ১৯৭             | ভূক্তথী ৭৫               |

# কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্র

| ভূমিগৃহ ৫৫                                 | মলমাস ১৩৭             | মুহূর্ত্ত ১৬৫         |
|--|-----------------------|-----------------------|
| ভূমিচিছদ্র ৬৮                              | মস্রক ১০৮             | ম্কমুৰা ১৩৬           |
| ভূমিধাতু ৮২, ১২•                           | মহাজন ৩০৩             | মূলহর ১০০             |
| ভূঞ ১৪                                     | মহানস ৭৬, ১৮৮         | মূ্যা ১৩১, ১৩৬        |
| ভূতক ৬৪                                    | মহানৌকা ১৯৩           | মৃগবন ৬৬              |
| ভৃতবল ২১৬                                  | মহাবিসী ১১¢           | মেকল ১৫৮              |
| ভেদ ৩২, ৩৬                                 | মহামাত্র ২২, ২৭, ৯০   | (मनक ১৮२              |
| ভোগ ১৮৮, ২৮৭, ২৯৬                          | মাগধ ২৫৩, ২৫৭         | মৈরেয় ১৮৩            |
| ভোজবংশীয় ১৪                               | মাগধিকা ১১৮           | মোক ২৪২               |
| ভ্ৰম ২৫৯                                   | মাভূকা ১৮৮            | মোহনগৃহ ৫৫            |
| মগধ ১৫৮                                    | মাৎস্তম্যায় ১৯, ৩১   | মৌখনম্বন্ধ ১০৬        |
| मक्पृष्ठं ( राज्य ) ११                     | মাধ্যন্দিন ২৯০        | <i>(</i> भोनवन २)७    |
| মণ্ডলাগ্ৰ ১৫৫                              | মাধুর ১১৮             | মৌহুর্ত্তিক ৩২, ৫০    |
| মণিধাতু ১২২                                | भाषुर्ग ১००           | ্লেচছ ২৮৩             |
| মণিসোপানক ১১০                              | মান্ব ৭, ৮৯           | শ্লেচ্ছজাতীয় ২৯      |
| মতি-সচিব ৪০                                | মানব্যাজী ১৪৮         | যজুর্বেদ ৮            |
| মৎস্তাণ্ডিকা ১২০, ১৪২                      | মাণস্থাৰ (ব্যাজী) ১৬১ | যতি ২৯৬               |
| মদিরা (দেবতা) ৭৭                           | মার্গায়ুক ২১২        | यवस्या ১७२            |
| মধু ১৮৩                                    | মান্ত্ৰীক ১৪২         | যম ৩১                 |
| মধ্যম ২৯                                   | মানিবৰ্গ ৩৫           | यमक २००               |
| মধ্যমরাষ্ট্রক ১১২                          | भारतस्क ১১०           | যৃষ্টি ১১০            |
| মধ্যমসাহসদণ্ড ৮০, ১৩৪, ১৭৫,                | মাৰক ( সিকা ) ১২০     | যানপাত্ৰ ৫১           |
| ১৮৬, <sub>(`</sub> २२१, २8 <b>৫,</b> ●२७१, | মাহানসিক ৫৩, ৫৯       | যানসিক ২০০            |
| २११, २৯৮, ७०১, ७०७,                        | নাহিষক ১১৮            | <b>যামতু</b> য্য ২২৬  |
| ૭૦૯, ૭૦૧                                   | মাহেক্র ১০৮           | यूकाभश ১७२            |
| মধ্যোপসদন ২৯٠                              | মিত্র ২৯              | যুক্ত ৮০, ৯৬          |
| मञ् ७১, २११, २৯१                           | भिन्दवल २১७           | যুক্তপ্রতিবেধ ৯২      |
| মন্ত্র ৩৭, ৩৮                              | मूशा १৮, ১०১          | যুগপি <b>ঙ্গন</b> ১৯৯ |
| মন্ত্রিপদ ২৩                               | মৃগুক্ষার ৭৪          | যুবরাজ ২৭             |
| মক্সিপরিষদ্ ৪০, ৫৩, ৬২                     | मूजा ९৮, ১৬৮, ১৭०     | যোগক্ষেম ৩১           |
| মক্ত্রিপরিবদধ্যক্ষ ২৮                      | মুক্রাধ্যক্ষ ২১৭      | যোগপান ৪৮             |
| মন্ত্রভেন ৩৮                               | মৃক্ক (পূপা) ৫৬       | যোগশান্ত ৮            |
| মন্ত্ৰী ১৮, ২৭, উ৮                         | মুস্তি '৭৫            | যোজন ১৬৪              |
|  |                       |                       |

| योनमञ्जूष २०७                          | লক্ষণাধ্যক্ষ ৮১, ১২৩   | भाजन ८८, ১०२, ১०१              |
|--|------------------------|--------------------------------|
| রক্ষোপজীবিনী ১৯১                       | লক্ষণশাস্ত্র ২৬        | শাসনহর ( দৃত ) ৪১              |
| রজ্জু ১৬৩                              | लङ्ग्न २०७             | শিক্য ১৫৮                      |
| রজ্ভাও ১৫১                             | लन ১৬৫                 | শিক্ষা ( বেদা <b>ক</b> ) ৮     |
| त्र <b>ब्ड</b> ू ४२                    | लवगवर्ग ১८२            | শিক্ষাতাড়ন ২৪৩                |
| রত্নাবলী ১১০                           | नश्रत्र। ১১१           | শিখামান ১৬১                    |
| র্থ ৭৮                                 | लग्नन ১১৯              | শিব ৭৭                         |
| त्रशांशुक्क २১৫                        | লাভ ( ব্যয় ) ৮৬       | শিলাজতু ১২০                    |
| त्रशा १৫, २२৫                          | লাভোৎপাদিক (ব্যয়) ৮৬  | শিল্পী ১৫৩                     |
| রশ্মিকলাপ ১০৯                          | विका ১৬२               | নিঙ্গিত ২০৬                    |
| त्रमान २८, २१                          | विभि ১२                | শীতোদক ( দেশ ) ১১৩             |
| রসধাতু ৮২                              | লৃধবৰ্গ ৩৪             | नीर्वक ১०৯                     |
| রাক্ষস ( বিবাহ ) ২৩৫                   | লেথক ১০১               | শুক্রবর্গ ১৪২                  |
| রাজনিবেশ ৭৬                            | লোক্ষাত্রা ১১          | শুক্র ( গ্রহ ) ১৭৭             |
| রাজপুত্র ৫০                            | লোকায়ত ৮              | শুক্রাচার্য্য ২৫২              |
| রাজবল্পভ ৬৭, ৮৯                        | <b>लाश्कानिका ১</b> ৫৫ | শুক্ষশাস্ত্র ১১৯, ১৭৬          |
| রাজশাসন ২৩৪                            | লোহধাতু ( সংজ্ঞা ) ১৫২ | শুক্ষাধ্যক্ষ ১৬৭               |
| রাজর্ষি ১৫                             | লোহাধ্যক ১২৩           | শুরশালা ১৬৭                    |
| রাজ্যবিভ্রম ২৭৩, ২৯৬                   | লৌহিত্য ১১৪            | গুৰাপসারিত ১৩৫                 |
| রাবণ ১৪                                | শতত্মি ৭৫              | শূদ্ৰ ৯                        |
| রাষ্ট্র ১৪•                            | শত্রু (রাজা) ২৯        | শৃঙ্গিবের ২০১                  |
| রাষ্ট্রমূখ্য ৪২, ১৪৯                   | শ্ম ১৬২                | শৃঙ্গিশুক্তজ ১২৬               |
| त्रिक्थ २८०                            | শরভপ্পুতি ২০৫          | ( 8 8 b, b e                   |
| রিক্থভাক্ ২৫৬                          | শল ১৬২                 | ट्रे <b>ब्य</b> २११            |
| রূপ ১২৩, ১৩২, ২৯৯                      | শলাকা ৩০৬              | শ্বপাক ২৫৮                     |
| রূপদর্শক ৮০, ১০১, ১২৩                  | শলাকাপ্ৰতিগ্ৰাহক ১৪৬   | শ্বেকা ৫৬                      |
| রূপদাসী ১৮৯                            | শশুসম্পদ্ ৯২           | খেতস্থরা ১৮৪                   |
| <b>ज्ञभाकी</b> या <i>६</i> ৮, ১৯১, २२७ | শাকবৰ্গ ১৪৩            | গ্রামিকা ১১৫                   |
| রূপিক ৮৩, ১২৪, ১২৫                     | শাকল ১১৩               | শ্রমণ ৩০                       |
| রূপ্যধাতু ১২•                          | শাক্য ৩•৭              | 🗐 ৭৭                           |
| क्रशामांवक ১৫१                         | শাকুলা ১১৫             | শ্রেণিবল ২ 🎖 ৬                 |
| রোচনী ১৪৬, ২৬•                         | শাতকুভ ১২৬             | (आखित १), १८, ७८, ५४, ५४०,     |
| রোবদান ২৯৪                             | শাসক ১৯৩               | २ <b>৫</b> ১, २৯७ <sup>°</sup> |
| · · ·                                  |                        |                                |

#### কৌটিলীয় অর্থশান্ত্র

| যড়ঙ্গ (বেদবিদ্যা) ২•  | সন্নিধান ১০০                | <b>দাম ৩২, ৩৬, ১</b> •৬   |
|------------------------|-----------------------------|---------------------------|
| বড্ভাগ ১৪•             | সন্নামিনী ১৩৫               | সামবেদ ৮                  |
| ষ্ভ ৭৭                 | সন্নিবিষ্ট ২৫০              | मामञ्ज २६৯, २७२, २७४, ७०५ |
| বস্তাংশ ৩১             | <b>मवर्गा</b> २ <b>৫</b> 8  | সামস্তরাজ ৪৬              |
| সংক্রমক ৭৪             | সভারাষ্ট্রক ১১২             | সাম্র ১১৬                 |
| म्राटका ১৪१            | সমকক্ষ্যা ২১১               | সামূলী ১১৬                |
| সংখ্যান ১২             | সমভন্নতলা ২১১               | সামেধিক ২৫                |
| সংখ্যায়ক ৬৪           | मगत्र २२४, २७१              | मात्रमाक्षवर्ग ১৫०        |
| সংগ্ৰহণ ৬৩, ২২৯, ২৬১   | সমবৃত্তা ১৫১                | मार्थ ৫১, ১৭०, २७०, २१৮,  |
| <b>সং</b> च ¢১         | সম্পূটিকা ১১৭               | २৮०, ७०१                  |
| সংগভৃত ২৮৯             | मभा <del>ख</del> ७२, ১৮৪    | সার্থাতিবাহ্ণ ( কর ) ২১৮  |
| সংঘাতা ১৩৫             | সমাহর্ত্তা २२, २१, ৮১, २১৮, | সাহস ২৯৭                  |
| সংপ্লব ১০৭             | २२२                         | সিক্থক ১০৮                |
| সংবৎসর ১৬৬             | সমাহ্বর ৩০৫                 | সিদ্ধ ৮৪                  |
| <b>मः</b> वि९ ७७       | मिष्करवांश २०               | निकृ २०8                  |
| সংব্যবহারিক ২৮১        | <b>সমূদর</b> ৮১, ৯২         | <b>मिः</b> श्निका ३८३     |
| সংযান ২১২              | সমুজপার ১১৪                 | সিংহায়ত ২০৬              |
| <b>সং</b> यानीय १¢     | मथक ১००                     | <b>শীতা ১৪</b> •          |
| সংযুহা ১৩৫             | সম্বক্ষোপাখ্যান ১০৬         | দীভাত্যয় ১৭৩             |
| সংশিপ্তপকা ২১১         | সম্ভারিকী ১৮৪               | সীতাদেবী ১৭৯              |
| <b>मःष्ट्</b> २७, २৮   | সন্তুরসমুখান ২৮৮            | সীতাধাক্ষ ১৭৬             |
| <b>मःश्वा</b> २२२, २७8 | সর্বতোভদ ১৫৩                | সীমাদেতু ২৬৩              |
| সংস্থান ৮৯<br>-        | সর্বব্রেগ ১০৬               | সীসধাতু ১২১               |
| স্কট্কক্ষা ১৫2         | সহকারহারা ১৮৪               | <del>হ</del> ত্যাহ ২৯•    |
| সভব ৬৬, ২৫৮            | मह्याही २१७                 | স্থবৰ্গ ১৫৭               |
| সঞ্চার ২৮              | <b>मह्बी</b> वी २००         | <b>স্থৰৰ্ণকু</b> ড্য ১১৪  |
| সঞ্জাত ৮৪              | সহস্রাক ৪১                  | স্থৰ্বপাক ৫•              |
| সঞ্জাতলোহিতা ২১•       | সহোঢ় (পুত্ৰ ) ২৫৬          | व्यवर्गाश्राक ३२७         |
| সত্ৰ ২১৯               | <b>माक्षी</b> २१¢           | স্বৰ্ণমাৰক ১৫৭            |
| मजी २১, २८, २८, २७, ७১ | সাংখ্য ৮                    | স্বৰ্চিকা ১৩৬             |
| मस्रमिका >>१           | সাতিনা ১১৬                  | স্থাধাক ১৮১               |
| সর ২৮৯, ২৯•            | সাস্ত ১•ৄ৪                  | स्वाद्ध ७०                |
| সম্ভিধান্তা ২২. ২৭. ৭৮ | <b>जान्नाक २०</b> ०, २,२    | স্চৰ ৯৭                   |

| হত ২৫৭                            | সৌভিক ১৯•                    | স্বর্ণভূমি ১১৪          |
|-----------------------------------|------------------------------|-------------------------|
| রূত্র ১১•                         | সৌমিতিকা ১১৬                 | वयाभि मयक २०७           |
| স্ক্রাধ্যক্ষ ১৭৩                  | সৌরমাস ১৬৬                   | স্বাধান্য ৫৩            |
| সুনা ১৮৭                          | ক্ষৰাবার ৬৯                  | স্রোতসীর ১০৮            |
| স্নীধাক্ষ ১৮৫                     | (खुरा २৯१                    | শ্রোবসম্বন্ধ ১০৬        |
| সূৰ্য্য ১৭৭                       | ন্ত্ৰীধন ২৩৬                 | <b>इ</b> ज़ि ১५৯        |
| সেতু ২৫৯                          | স্থীব্যবহারী ১৯০             | হলমুখ ১৫৪               |
| <b>म्पूरक्ष</b> ७४, ७१, २४৯, २७२, | ন্ত্ৰীসংগ্ৰহ ২৪৬, ২৪৮        | হস্তপুরণ ১৪২            |
| २७०                               | স্থলব্যবহার ১৪৯              | হস্তি∹থ ৭৪              |
| সেনানী ২১৪                        | ञ्चलयुष्क २১७                | হস্তিপ্রচার ২১১         |
| দেনাপতি ২১, ২১৫, ২১৬              | <b>क्वानिक ७</b> ८, २२०, २२२ | হস্তিবন ২৩, ৬৫, ৬৭, ২১৮ |
| সেনাভক্ত ১৪০                      | স্থানীয় ৬২, ৭০, ২২৯, ২৬৭    | श्खाधाक २०৮             |
| সৈনাপত্যদার ৭৭                    | স্থাবরবিষবর্গ ১৫১            | হস্তী ৭৮                |
| সৈন্ধবিকা ১৩১                     | স্থিতয়ন্ত্র ১৫৩             | হাটক ১২৬                |
| <b>দোপান</b> ক ১১ <b>॰</b>        | ন্মেহ ১৪২                    | হারহুরক ১৮৩             |
| त्मांबाद्यमा ७৮, २७८              | ম্পাক্ট্র ১০৩                | হিমবৎ (প্রদেশ) ১৭৭      |
| मोवर्कन >8२                       | স্পৃক্তনা ১৫৪                | হিরণা ৩১, ২২৮           |
| সৌবর্ণকুড্যক ১১৭, ১১৮ 🕠           | শ্বটিক ১১১                   | হিরণেশপায়ন ৯৩          |
| स्रोवर्गिक <b>১</b> २७, ১७७       | স্বাদান ২৫৪                  | ₁সারিত ১৩৬              |
| সৌবীর ১৪, ৫৭, ২০৫                 | श्रवानाग्री २०७              | হ্ৰাদীয় ১০৮            |
|                                   |                              |                         |

# कि विशेष व्याप्त

প্রাচীন ভারতের রাজনীতি ও অর্থনীতিবিষয়ক গ্রন্থ

# দ্বিতীয় খণ্ড

কলিকাতা প্রেসিডেন্সি কলেজের সংস্কৃতবিভাগের ভূতপূর্ব প্রধান অধ্যাপক ও

ক্**লি**কাতা ও ঢাকা বিশ্ববিষ্<mark>ঠালয়ের প্রাক্তন অধ্যাপক</mark>

**ডক্টর রাধাগোবিন্দ বসাক এম. এ., পি-এইচ. ডি,** 

বিস্থাবাচস্পতি কর্ত্ত্ক

বঙ্গভাষায় কৃতামুবাদ

জেনারেন প্রিণ্টার্স য়াণ্ড পাব্লিশার্স প্রাইভেট নিমিটেড ১১৯. ধ্রমজেলা প্রীট : কলিকাতা-১৩ ্প্রকাশক: শীস্থ্রপিৎচন্দ্রদান জেনারেল প্রিন্টার্স রাজি পারিশার্স প্রা: পি: ১১৯. ধর্মভুলা স্ট্রীট, ক লিকা তা

> দ্বিতীয় সংস্করণ কার্তিক, ১৩৭২

এন্থকারকণ্ডক সর্ববিদ্ধ শংরক্ষিত [ মুল্য পরেনর টাকা মালা-]

বাবসা-ও-বাণিজ্ঞা প্রেস ৯/৩ রমানাথ মজুমদার শ্রীট, কলিকাভা-১ ভীবিভাস কুমার গুহঠাকুরতা কর্তৃক মুক্তিত

#### মুখবন্ধ

বিগত ১লা ভাদ ( ১৯৫৭), ইং ১৮ই আগই ( ১৯৫০), এই গ্রন্থের প্রথম ধণ্ড মুক্তিত হইয়) প্রকাশিত হইয়ছিল। শ্রীভগবানের ইছায় ইহার দিতীয় ওশেষ ধণ্ড এখন মুক্তিত হইয়া প্রকাশিত হইল। স্রখীসমাছ ও শিক্ষাবিভাগের মনীবীয়) প্রথম ধণ্ড হল্ডে পাইয়া আনন্দিত হইয়া অসুবাদককে পত্রাদি লিধিয়া অভিনন্দিত ও উৎসাহিত করিয়াছেন। তজ্জ্য আমি তাঁহাদের নিকট অভান্ত রুতজ্ঞ। বুঝা গিয়াছিল যে, সংস্কৃতভাবায় লিখিত এই অতিপ্রাচীন কোঁটিলীয় অর্থাারের একধানি বঙ্গামুবাদ প্রকাশিত হওয়ায় প্রয়োজন সকলেই উপলব্ধি করিতেন।

সম্প্রতি দ্বিতীয় ও শেষ থণ্ডের অসবাদ প্রকাশিত করিতে পারিয়া নিজকে অনেকটা উদ্বেগমুক্ত বোধ করিতেছি। এখন সমগ্র গ্রন্থানির পঠন পাঠনে সকলেরই কিছু-কিঞ্চিৎ সাহায্য হইতে পারিবে এরূপ আশা করিতে পারি। পুনরায় বলিতে হইতেছে যে, এই স্থকঠিন এত্বের অস্থবাদ দর্বত্ত যবায়খভাবে করিতে পারিয়াছি বলিয়া সম্পূর্ণ বিশ্বাস আমার মনে আসে না। তথাপি ইহা বঙ্গান্থবাদের প্রথম চেষ্টা বলিয়া বিদ্বৎসমাজের নিক্ট ইহা লইয়া উপন্থিত হইয়াছি।

ভারতের এই গণতান্ত্রিক সর্বাদীন স্বাধীনতার দিনে এই প্রাচীন রাজনীতি ও অর্থনীতিবিষয়ক গ্রন্থভানির সহিত পণ্ডিতসমান্তের পরিচয় বাকা অভাবিশ্বকীয় মনে করা যাইতে পারে। কিন্তু, অতীব হংগের বিষয় এই যে, যে-সময়ে সুলকলেক ও বিশ্ববিজ্ঞালয়ে সংস্কৃত ভাষায় লিখিত প্রয়োজনীয় গ্রন্থবিলীর পঠন ও সমালোচনার অভান্ত দরকার অহুভূত হয়, সে-সময়েই দেখা যাইডেছে যে, কলেজাদিতে সংস্কৃত ভাষা ও সাহিত্য পাঠ করিছে বিমুখ হইয়া ছাত্র-ছাত্রীর। অন্তত্তর পাঠ্য বিষয় বাছিয়া লইতেছে। যে সব গ্রাপ্তার সন্ধারনা আছে, দেশকে আপন মনের কাছে পরিদারভাবে চিনিতে পারা যাইবার সন্ধারনা আছে, সে-দিকে এইন্ধল বিরাগ দৃষ্ট হইলে আমাদের মত রক্ষজনের মনে হংখ ও ক্ষোভের উৎপত্তি না হইয়া পারে না। এমনও দিন গিয়াছে ধখন আমার অধ্যাপনা-কার্যো ব্যাপ্ত থাকা সময়ে বি-এ ও আই-এব প্রত্যেক সংস্কৃত শ্রেণীতে শতাধিক ছাত্র-ছাত্রী পাঠ করিত, দশ বংসর পূর্কে সেই কার্য্য হইতে অবসর গ্রহণের সময়ে আমি লক্ষ্য করিয়াছিলাম যে, সেই সংখ্যা ২০০০ জনে পর্যাবনিত হইয়াছিল; আবার এখন ভানিভেছি যে, তাহা আরও কম হইয়া পড়িয়াছে ক্রেছেই শিক্ষাকর্হণক্ষিয়গণের এদিকে একটু তীক্ষ দৃষ্টি পতিত হউক—এই ভর্মা

ইহা এ স্থলে উল্লেখ করিতে বাধ্য হইলাম। বাড়ীতে পিতামাতা ও অস্তান্ত অভিভাবকগণ্ড যদি শিক্ষার্থীদিগকে সংস্কৃত ভাষা ও সংস্কৃত সাহিত্যের প্রতি অস্তবাগ বাড়াইতে পারেন, ভাহা হইলেও, হয় ত, সংস্কৃতশিক্ষার্থীর সংখ্যা বৃদ্ধি পাইতে পারে।

গ্রান্থের এই দিন্তীয় খণ্ডের দকে পরিশিষ্টাকারে, কোটিলীয় অর্থশান্তে প্রচলিত রাজনীতি ও অর্থনীতিবিধরক কতকগুলি পারিভাষিক শক্তের ব্যাধ্যা প্রান্ত হওয়। উচিত হইবে—প্রথম খণ্ড প্রকাশ করার সময় হইতেই আমি এই ইচ্ছা মনে পোষণ করিভেছিলাম। আমার অতীব প্রজ্ঞের পণ্ডিত-বকু অধ্যাপক ডইর উপেজনাথ ঘোষলা, এম্. এ, পি-এইচ, ডি, মহোদয় অন্থবাদের প্রথম খণ্ডের সমালোচনা কালে 'মডার্গ রিভিউ'-পত্রিকাতে (গভ জান্থরারী সংখ্যার) লিখিয়ছেন যে, সেরূপ শক ব্যাধ্যার প্রান্তেন মনীষীয়া অন্থভব করিবেন। তাই, তদীয় মত গ্রহণ করিয়া ভাহা পরিশিষ্টে সন্ধিবেশিত হইল। আশা করি, ইহা দ্বারা বাকালা ভাষাতে অনেক নৃতন নৃতন শক গৃহীত হইতে পারিবে।

শেববারের মত আমার সহযোগী বন্ধুদিগকে ও আমার প্রাক্তন প্রিয় ছাত্র শ্রীমান্ হয়েশচক্র দাসকে এই গ্রন্থ প্রকাশ বিষয়ে নানারূপ উপদেশ ও সহায়তা-প্রদানের জন্ম ধন্ধবাদ দিয়া এই মুখবন্ধ শেষ করিলাম। ইতি—

কলিকাতা, ৬৯ নং বালিগঞ্জ গার্ডেনস্, বালিগঞ্জ, কলিকাতা-১৯ দোলপূর্ণিমা ১ই চৈত্র, বাং ১৩৫৭ সন, ২৩ মার্চ্চ, ইং ১৯৫১ সাল।

শ্ৰীরাধাগোবিক বসাক

# কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্র

### [ বিতীয় খণ্ড ]

# অধ্যায়-সুদী

# কণ্টকশোধন-চতুর্থ অধিকরণ

| বিষয়  | 9        | हाहेए |
|--|----------|-------|
| প্রথম অধ্যায় —কাক্ষদিক হইতে রক্ষণ                                   | •••      | >     |
| দিতীয় অধ্যায়—বৈদেহক বা বাণিজকদিগ হইতে রক্ষণ                        | •••      | ٩     |
| চুতীয় অধ্যায় —উপনিপাত বা দৈবী বিপদের প্রতীকার                      | •••      | >•    |
| ূথ অধ্যায়—গূঢ়ভাবে জীবিকাকারীর প্রতীকার                             | ***      | ১৩    |
| শঞ্চন অধ্যায় — সিদ্ধবেষধারী গুঢ়পুরুষদারা তুইজনের প্রকাশ            | •••      | 24    |
| র্চ্চ অধ্যায়—শঙ্কা, চুরির মাল ও ।কর্মদ্বারা চোরধরা                  | •••      | ንኦ    |
| গর্ম অধ্যায় —আশু বা অকাণ্ডে মৃতজনের পরীক্ষা                         | ***      | ঽঽ    |
| ছট্ট অধ্যায় — ৰাক্য ও কর্মদ্বারা অসুষোগ ( ব। তদন্তকরণ )             |          | ⇒ q   |
| মে অধ্যায় – সর্বপ্রকার অধিকরণের রক্ষণ বা নিয়ন্ত্রণ                 | •••      | २३    |
| শ্ম অধ্যায়—একাঙ্গবধ ও ইহার নিজ্ঞয়                                  | •••      | ৩৪    |
| <sup>একাদশ</sup> অধ্যায় — <del>গু</del> দ্ধ ও চিত্ৰ দণ্ডের বিধান    | •••      | ৩৬    |
| গদশ <b>অধ্যায়—কন্তাপ্ৰকৰ্ম</b>                                      | •••      | ৩১    |
| <u> এয়েদশ অধ্যায়—অতিচাবের দণ্ড</u>                                 | •••      | 8२    |
| যোগবৃত্ত —পঞ্চম অধিকরণ   |          |       |
| <sup>প্রধম</sup> অধ্যায় —দগুকর্ম বা উপাং <del>গু</del> বধের প্রয়োগ | •••      | 8 p.  |
| ৰিতায় অধ্যায়—কোশাভিসংহরণ বা নির্দ্দিষ্ট কোশ অপেক্ষায় খ            | रिंक     |       |
| কোশসংগ্ৰহ  | •••      | 8.0   |
| ্টীয় অধ্যায়—ভূতাভরণীয় ( স্চিবাদি রাজভূত্যদিগেব ভরণপে              | াষণ )    | ৬০    |
| ভূথ অধ্যায়—সচিবাদি অন্থজীবিগণের রস্ত বা বাবহার                      | •••      | હ     |
| क्षम ज्यसात त्रमहाठाविक (वादश्वात ज्यस्त्रीत, ज्यवा त्रमहिटन         | বে আচরণ) | ৬१    |
| ষ্ঠ অধ্যায়—( রাজার অস্বান্থারূপ বিপদের ) প্রতিসন্ধান                |          |       |
| ( প্রতীকার ) ও একৈখণ্য   |          | 95    |

| বিষয়  |            | পৃষ্ঠাত     |
|--|------------|-------------|
| মণ্ডপ্রোনি – ষষ্ঠ অধিকরণ   |            |             |
| প্রথম অধ্যায় 🗝 রাজাগ্রভৃতি ) প্রকৃতির গুণসম্পৎ  | • • •      | ነነ          |
| দ্বিতীয় অধ্যায় –শান্তি ও ব্যায়াম ( উদ্যোগ )   | • • •      | 64          |
| ষ্যভ্গুণ্যসপ্তম অধিকরণ   |            |             |
| প্রথম অধ্যায় – যাড্গুণ্যের বিশেষবর্ণন ও ক্ষয়, স্থান ও বৃদ্ধির '                                    | নিশ্চয়    | ৮৬          |
| দ্বিতীয় অধ্যাধ্য—সংশ্রয়বৃত্তি  | •••        | 2.2         |
| তৃতীয় অধ্যায়—সম, হীন ও অধিকের গুণাভিনিবেশ এবং  হীনের দহিত সন্ধি                                    | •••        | <i>ە</i> د  |
| চতুর্থ অধ্যায়বিগ্রহ করিয়া আসন, সন্ধি করিয়া আসন, বি  | য়হ        |             |
| করিয়া যান, সন্ধি করিয়া যান ও একত্রিত হইয়া প্রায়া   | 9 <i>-</i> | <b>2</b> 4  |
| পঞ্চম অধ্যায় —যাভব্য ও অমিত্তের আক্রমণবিষয়ক সম্প্রধারণ;  | প্রকৃতিব   | গীর         |
| ক্ষয়, লোভে ও শিরাগের হেতু: সমবায়বন্ধ রাজগণের   | বিচার      | 765         |
| ষষ্ঠ অধ্যায়—সন্ধিবদ্ধ রাজদ্বয়ের প্রয়াণ, এবং পরিপণিত, অপরিণ  | াণিত ও     |             |
| অপস্ভ সন্ধি  |            | > 0.4       |
| সপ্তম অধ্যায়—হৈধীভাবে অহুঠেয় সন্ধি ও বিক্রম  | •••        | 7:8         |
| অষ্টম অধ্যায়—যাতব্যসম্বন্ধী ব্যবহার ও অনুগ্রাহ্য নিত্রের বিশেষ                                      | •••        | 5 0         |
| নব্য অধ্যায়—মিত্রসন্ধি, হিরণ্যসন্ধি, ভূমিসন্ধি ও কর্মসন্ধি —<br>(তন্মধ্যে) মিত্রসন্ধি ও হিরণ্যসন্ধি |            | <b>)</b>    |
| দশম অধ্যায়—ভূমিস্ক্ষি   | •••        | 752         |
| একাদশ অধায় —অনবসিত সন্ধি  | •••        | 207         |
| দাদশ অধ্যায়কর্মান্ধি  |            | <u> ১৩৬</u> |
| ক্রয়োদশ অধ্যায় —পর্ফিগ্রাহচিত্র বা শক্রর পৃষ্ঠগ্রহণসথদ্ধে অন্তষ্ঠ                                  | দের        |             |
| বিচার  | •••        | 280         |
| চতুর্দশ অধ্যায়—হীনশক্তিপূরণ   | •••        | 780         |
| পঞ্চশ অধায় —বল্বান্ শক্তর দহিত বিগ্রহ করিয়া ছর্গপ্রবেশের   | হেই ও      |             |
| দ <b>ও</b> দ্ধার উপন্ত রাজার ব্যবহার   | •••        | >4.0        |
| বোড়শ অধ্যায়—দণ্ডোপনায়ী বিজিপীবুর ব্যবহার  | •••        | 264         |
| স্তাদশ অধায় — সন্ধিকর্ম ও সন্ধিনোক  | •••        | 269         |
| অংটাদশ অধ্যায় — মধ্যম, উদাসীন ও মণ্ডলম্ব অভা রাজার প্রতি<br>বিজ্ঞিলীয়র বাবছার                      |            | 5@\$        |

#### ব্যসনাধিকারিক—অন্তম অধিকরণ বিষয়

| विस्य  | পৃষ্ঠাক      |
|--|--------------|
| প্রথম অধ্যায় – <b>প্রকৃতি</b> ব্যসনবর্গ                                 | ১৭২          |
| হিতীয় অধ্যায়—রাজা (বিজিসীযুও মিত্রাদি রাজা)ও রাজ্য (অমাত্যা            | <del>,</del> |
| প্রকৃতিপঞ্চক )— এই ছই বর্গের ব্যসনের গুরুলযুতা-বিচার                     | ንነነ          |
| ভূতীয় অধ্যায়—পুরুষবাসন বা শাধারণ পোকের বাসনদোবসমূহের                   |              |
| নিরূপণ   | 200          |
| চতুর্থ অধ্যায়—পীড়নবর্গ ( দৈবী ও মাস্থ্ৰী বিপদের পীড়ন ), স্তন্তবর্গ    |              |
| (রাজগামী অর্থের উপরোধ) ও কোশসন্ধিবর্গ ( রাজার্থের কোস্                   | Ī            |
| অপ্রবেশ )  | ንሥፅ          |
| পঞ্চম অধ্যায়বল বা সৈত্যের বাসনবর্গ ও মিত্রের বাসনবর্গ নিরূপণ            | 725          |
| অভিযাস্থংকৰ্দ্ম—নবম অধিকরণ   |              |
| প্রথম অধ্যায়—শক্তি, দেশ ও কালের বলাবলজ্ঞান ও যাত্রাকাল · · ·            | : 50         |
| ছিতীয় অধ্যায় – বল বা দেনার উপাদানকাল ( মথোপ্যোগী কার্য্যে              |              |
| বিনিয়োগের কালনিরূপণ ৷, সেনার সন্নাহগুণ এবং প্রভিবলকম                    |              |
| ( শব্জর বলাম্থসারে নিজ্ঞসেনাগঠনের উপায়নির্দ্ধারণ )···                   | 204          |
| তৃতীয় অধ্যায় পশ্চাৎকোপচিস্তা এবং বাহু ও অভান্তর প্রকৃতির কোপ-          |              |
| প্রভীকারনিরপুণ   | ₹0;          |
| চডুর্থ অধ্যায় – ক্ষয়, বায় ও পাভের বিচার · · ·                         | 2.56         |
| পঞ্চম অংধায়—বাহ ও অভাস্তর আপদের নিরূপণ                                  | 2 2 6        |
| ষষ্ঠ অধ্যায়—দৃষ্য ও শত্রুদ্ধারা উৎপাদিত ( বাহ্ন ও অভ্যন্তর ) আপদের      |              |
| নিরূপণ   | 3 2 3        |
| <b>দওম অধ্যার—অর্থ, অনুর্থ ও সংশ্রহুক্ত আপ্দের</b> নিরূপণ এবং            |              |
| সামাদি উপায়বিশেষের প্রয়োগবারা ইহাদের প্রতীকার 😶                        | 222          |
| সাংগ্রামিকদশম অধিকরণ   |              |
| প্রথম অধ্যায় কলাবার বা সেনাবাসকানের নিবেশ                               | ২৩৭          |
| দিতীয় অধ্যায়—ক্ষাবারের দিকে রাজার প্রযাণ ও বলবাসন ও পরকটের             |              |
| সময়ে নিজসেনারক্ষার উপায় · · ·  | ২৩১          |
| ভূতীয় অধ্যায়—কৃট্যুদ্ধের বিকল্প বা ভেদ; নিজসৈল্ডের প্রোৎসাহন,          |              |
| ব্ছোদিবচনালারা পরবলাপেক্ষায় স্ববলের ব্যবস্থাপন 😶                        | २८३          |
| চতুর্থ অধ্যার — যুদ্ধবোগ্য ভূমি এবং পত্তি, অখ, রথ ও হন্তীর কার্যানিক্সপণ | ₹8৮          |

| ্ট<br>ট বিষয়              |  |               | পৃষ্ঠাত্ব    |
|----------------------------|--|---------------|--------------|
| ়<br>পঞ্চম আধায়ি—পক্ষ, কক | s ও উবস্থাবিশেষে সেনার সংখ্যাহসারে         | 1             |              |
| ব্যহরচন                    | া; দার ও অসার ধ্রের বিভাগ; এব              | <b>1</b> *    |              |
|                            | ৰ, রথ ও হস্তীর যুদ্ধ                       |               | ₹¢\$         |
| ষষ্ঠ অধ্যায—দশুবাহ, ভে     | াগবাহ, মঙলবাহ ও অদংহতবাহের র               | চনা এবং       |              |
| দগুরুহাদির প্র             | খতিবৃাহস্থাপন <u> </u>                     | •••           | २०१          |
| •                          | দংঘ <b>র্ত্ত—একাদশ অধিকরণ</b>              |               |              |
| প্রথম অধ্যায়—ভেদের খ      | মর্থাৎ সংঘবিশ্লেষোপায়ের প্রয়োগ ও উ       | লাংগুবধ       | २७२          |
|                            | আবলীয়স—দ্বাদশ অধিকরণ                      |               |              |
| প্ৰথম অধ্যায় দৃতকৰ্ম      |  |               | ঽ৳৳          |
|                            | া মতিশক্তিদার৷ শত্রুগ্রনিরূপণ              | •••           | 293          |
| ততীয় অধ্যায়—সেনামথা      | দিগের ও অস্তান্ত মহামাত্রদিগের বধ          | ૭             |              |
| রাজমগুলের গে               |  |               | ২18          |
|                            | াও বিষের গৃঢ়প্রয়োগ ও বীবধ, আসা           | র ও           |              |
| প্রদারের নাশ               | 2.   |               | ২৭৭          |
|                            | য় ও দণ্ডধারা অতিসন্ধান ও একবিজয়          |               | ২৮১          |
|                            | দক্ষোপায়—ত্রয়োদশ অধিকরণ                  |               |              |
| ্পলম অলগেয়— উপজ্ঞাপ       | বা শক্র হইতে তৎপক্ষীয়গণের ভেদের           | উপায়         | 276          |
| ভিক্তীয় অধ্যায় — যোগবা   | মন বা কপট উপায়দার। ছুর্গ হইতে শ           | <b>क</b> त्र  |              |
| নিজ্ঞামণ                   | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,    |               | マシン          |
|                            | প্রণিধি বাশক্রে রাজ্যে গৃচপ্রক্ষের নি      | বাদনবিধি      | ₹≱8          |
| চতথ অধ্যারপ্যাপাদ          | নকৰ্ম শেক্ৰহুৰ্গের চতুস্পাৰ্ফে সৈন্তনিবা   | সন) ও         |              |
| অব্যদ্ধ ( শক্ত             |  |               | * * *        |
|                            | ন বালক বাবিজিত ভূমিতে <b>শান্তিস</b> া     | প্ৰ           | ৩০৭          |
| _                          | পনিষদিক—চতুদিশ অধিকরণ                      |               |              |
|                            | প্রয়োগ বা শক্রবধনিমিত ঔবধপ্রয়োগ          | •••           | <b>93+</b>   |
|                            | প্রশন্তন বা বঞ্চনবিষয়ে অস্তুতোৎপাদন       |               | ७७७          |
|                            | বা শক্তর প্রবঞ্চনবিষয়ে ভৈষজ্য ও মন্ত্রে   | র প্রয়োগ     | ৩২০          |
|                            | র উপর প্রযুক্ত উপঘাতের প্রতীকার            | ***           | <b>ত</b> হ গ |
|                            | স্তব্জি-পঞ্চশ অধিকরণ                       |               |              |
|                            | ( তম্ব বা অর্থশাত্ত্বের অর্থ-নির্ণয়েয় উপ | <b>া</b> যোগী |              |
| যুক্তিসমূহ)                |  |               | ৩২১          |
| পরিশিষ্ট                   | ***  | ***           | 997          |
| শক্-নিৰ্ঘণ্ট               | •••  |               | V81          |

# কণ্টকশোধন—চতুর্থ অধিকরণ

#### প্রথম অধ্যায়

#### ৭৬ম প্রকরণ—কারুক দিগ হইতে রক্ষণ

অমাত্যগুণসম্পদ্যুক্ত তিন তিন প্রাদেষ্টা (কণ্টকশোধনে ব্যাপৃত মহামাত্রবিশেষ) একত্রিত হইয়া কণ্টকশোধন কার্য্য করিবেন (অর্থাৎ প্রজ্ঞা-প্রীড়ক কারুকবৈদেহকাদি ও চোরাদির প্রীড়া হইতে প্রজাবর্গের রক্ষার বিচার-ব্যবস্থা করিবেন)।

দেই প্রকার কার্করাই অন্তের নিক্ষেণ (ধনাদির তাস) রাখিবার যোগা হইবে,—বাহাদের কার্য্যবহার তায়সঙ্গত অর্থাৎ যাহার। ওচিন্ততার, যাহার। (নিয়য়) কার্ন্দিগেরও শিক্ষাদাতা, যাহার। (সর্বাদমক্ষে) নিক্ষেপের (গ্রহণ ও প্রতার্পণবিষয়ে) কার্যা করিয়া থাকে, যাহার। নিজের বিভদ্বারাও কার্ক্রকর্ম করিতে সমর্থ হয় এবং যাহার। ক্রেণীর বিশ্বাসপাত্ত অর্থাৎ কার্ক্রেণীর বাবস্থা মাত্ত করিয়া চলে। নিক্ষেপ-গ্রহীভার বিপত্তি (অর্থাৎ মৃত্যু বা বহুকালর।পৌ প্রবাস্থাদি। ঘটিলে শ্রেণীকেই নিক্ষেপ (ভাগাম্পারে) দিতে হইবে। কার্ক্রকরা দেশ, কাল ও কার্য্যবস্তু নিশ্চিত করিয়া কর্ম গ্রহণ করিয়ে। দেশ, কাল ও কার্য্যবস্তু সমন্ধে কোন নির্দ্দেশ ছিল না, এই বাপদেশে (ছলে) কোনও কার্য্ব সমন্ধে কোন নির্দ্দেশ কার্টিয়া লওয়া যাইতে পারিবে, এবং বেতনের দ্বিগুণ অর্থণিও তাহাকে দিতে হইবে। কিন্তু, যথোচিত অবস্থা হইতে (ব্যালাদিনিমিন্ডক)কোনও ভ্রংশ ও (দৈবজনিত) উপপ্রবাদি ঘটিলে, (কার্যর) কোনও অপরাধ হইবে না।

কারুর। কোনও প্রকারে কোনও বস্তু দম্পূর্ণ নষ্ট করিলে বা ইহার কোনও হানি করিলে, ইহার ক্ষতিপূরণ করিতে বাধা থাকিবে—( অবশ্য কোনও ঝালাদিজনিত ভ্রংশ ও দৈবাদিজনিত উপগ্লব ঘটিলে ভাহাদের কোন অপরাধ ইইবে না)। যদি ভাহারা কার্য্যের অন্তথাকরণ ঘটায়, ভাহা হইলে ভাহা-দিগের বেতন লোপ হইবে এবং বেতনের দ্বিগুণ অর্থদণ্ড হইবে।

ভক্তবামগণ (ব্যানিশাণ জন্ত) দশ (পলাদি-পরিমিত) স্ত্র লইয়া,

কাঞ্চিক বা আরাদির মাড় ব্যবহারে বস্তের ওজন বাড়িলে) একাদশ ( পলাদি-পরিমিত ) স্ত্র বাড়াইতে পারিবে ( অর্থাৎ দশপল স্ত্র লইয়া একাদশপল ওজনের বস্ত্র তাহাকে তৈয়ার করিয়া দিতে হইবে )। এই বৃদ্ধির ছেদ ঘটাইলে, যতথানি ছেদ ঘটিবে তাহার বিগুণ দণ্ড তাহাকে দিতে হইবে।

স্ত্রনারা বন্তবয়নের বেতন ( মজুরী ) স্ত্রের মূল্যের সমান হইবে, আর, কেনীম ও কৌদের বন্ত্রের বর্ষনবেতন স্ত্রমূল্যের দেড়গুণ হইবে। পিজোর্গা ও কথল ( পশম )-দ্বারা নিশ্বিত হক্লের বর্ষনবেতন স্ত্রমূল্যের দিওণ হইবে। যতথানি মানের ( মাপের ) বন্ধ দিতে ইইবে, তল্পবায় তাহা ইইতে হীন বা কম মাপের বন্ধ প্রস্তুত্ত করিলে, যতথানি মাপ কম হইবে তদমুসারে তাহার বান্বেতনও কম হইবে, এবং যতথানি মাপ কম, ততথানির যাহা মূল্য ইইবে ইহার বিগুণ অর্থদণ্ড তাহাকে দিতে ইইবে। তুলাইনৈ অর্থাৎ ওলনে বন্ধ কম ইইলে, হীনভাগের যাহা মূল্য ইইবে, ( তল্পবায়নে ) তাহার চতুগুণ অর্থদণ্ড দিতে ইইবে। যদি তল্পবায় নিশ্বিত স্ত্র পরিবর্ত্তন করিয়া অন্ত স্ত্র দিয়া বন্ধ তৈয়ার করিয়া দেয়, তাহা ইইলে স্ত্রমূল্যের দিওণ অর্থদণ্ড তাহাকে দিতে ইইবে। ইহারারা দিস্ত্র ( দোস্তী ) বন্ধবন্ধন ব্যাখ্যাত ইইল। ( ১০০ পলপারিমিত ) উর্ণা হইতে ওলনে ৫ পল পিঞ্জন ( ধুনাই )-নিমিন্ত ছেল ইইতে পারে ( অর্থাৎ ১০০ পল তুলাতে ধুনাই করার পর ৯৫ পল টিকিয়া যাইতে পারে \ আর বন্ধনকার্য্যেও ৫ পল রোমজেদ ইইতে পারে ( অর্থাৎ মোটের উপর প্রতি ১০০ পলের উর্ণাতে ১০ পল পর্যান্ত ওজন কম হইতে পারে )।

রঞ্জকেরা কাঠফলক ও মহণ প্রস্তবে বন্ধ (আছড়াইয়া) শোধিত করিবে। অন্ত কোন (কঠিন) দ্রব্যের উপর নির্ণেজনকারী বা শোধনকারী রক্ষকদিগকে, বন্ধের উপঘাত বা নাশ ঘটিলে, ইহার ক্ষতিপূরণ ও (অতিরিস্তা) ৬ পণ দণ্ড দিতে হইবে। মুদগরচিহ্নযুক্ত বন্ধ বাতীত অন্ত বন্ধ পরিধান করিলে রক্ষকদিগকে ৩ পণ দণ্ড দিতে হইবে। অন্তের বন্ধ (যাহা ধুইতে দেওয় হইবে তাহা) বিক্রয় করিলে, ভাড়া দিলে ও বন্ধক রাখিলে (রক্ষককে) ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। (অনোর বন্ধ) পরিবর্ত্তন করিয়া অন্ত একটা দিলে (রক্ষককে) সেই বন্ধের মূল্যের দিগুণ দণ্ড ও দেই বন্ধও দিতে হইবে। তাহাকে শুশামূক্লের মত খেত বন্ধ একদিনের মধ্যে ধুইয়া দিতে হইবে; শিশাপট্টের মত ক্ষত্ব আরও একদিন পরে অর্থাৎ গুইদিনের মধ্যে ধুইয়া দিতে হইবে, ধ্যতি স্থেরর মত বর্ণযুক্ত (ধবদ) বন্ধ ধুইয়া দিতে আরও একদিন অর্থাৎ

মোটের উপর তিন দিন সে পাইতে পারে; এবং প্রমার্চ্ছিত খেত অর্থাৎ অত্যন্ত খেতবর্ণের বন্ধ ধূইতে সে আরও একদিন অর্থাৎ মোটের উপর চারি দিন নিতে পারে।

(বন্ধবঞ্জনার্থক কান্ধে রন্ধক) অল্প বা হান্ধা রঙের দ্বারা রঞ্জনীয় বন্ধ পাঁচ দিন পরে প্রতার্পণ করিতে পারে; নীলীদ্বারা রঞ্জনীয় এবং (কুদুমাদি) পূপা, লাক্ষা ও মঞ্জিষ্ঠাদ্বারা রঞ্জিত বন্ধ ছয় দিন পরে প্রতার্পণ করিতে পারে; এবং যে বন্ধ প্রশস্ত ও বহুশিল্পকার্যায়ৃক্ত, অতএব যাহা যরসহকারে (রঙ্দারা) সংস্কার্য্য, তাহা সাত দিন পরে প্রত্যর্পণ করিতে পারে। এই বিহিত সময়ের পরে দিশে (রঞ্জকেরা) বেতনহানি প্রাপ্ত হইবে অর্থাৎ মন্থুরী পাইবে না।

(বন্ধ-) রঞ্জনসম্বন্ধে বিবাদ উপস্থিত হইলে, শ্রন্ধাভাজন ও কুশল ( অর্থাৎ রাগ্জণের পরীক্ষায় নিপুণ) ব্যক্তির। বেতন নির্দ্ধারণ করিয়া দিবেন।

প্রশন্ত রক্ষের বন্ধ রঙ্ করার জন্ত ২ পণ বেতন হইতে পারে; মধাম রক্ষের জন্ত ২ পণ ও অধম রক্ষের জন্ত ১ পণ বেতন হইতে পারে।

স্থল বা মোটা কাপড় ধুইবার বেতন এক নায় বা ছাই মায় মুদ্রা। রঞ্জনীয় কাপড়ের জন্ত (রঙ্ করার) বেতন ইহার দ্বিগুণ হইতে পারিবে। প্রথম নেজনে অর্থাৎ প্রথম ধোলাই করাতে কাপড়ের থরিদ মূল্যের ह অংশ মূল্য ক্ষয় হয়; এবং দ্বিতীয়ে (প্রথম ধোলাই করার পরে যে মূল্য হইবে তাহার) ह অংশ ক্ষয় হয়। ইহাদারা পরবর্তা ধোলাই করার পরে কাপড়ের মূল্য (উজেরীতিতে) ক্ষয় হইতে থাকিবে ইহা বাাথাতি হইল।

রজ্ঞকদিগের সম্বন্ধে যে বিধি প্রদন্ত হইল—ভাহাদ্বার। তুরবায়া অর্থাৎ স্চীশিল্পীদিগের বিধিও বুঝিয়া লইতে হইবে।

দশুতি স্থব্কারদিগের বিষয়, অর্থাৎ তাছাদের প্রভারণা-পরীহারের উপার বলা হইতেছে। যাহার। অগুচির অর্থাৎ নীচ ভূতদাদাদির হস্ত হইতে (সরকারী সৌবর্ণিককে) না জানাইয়া (ভূবণাদির) আকারযুক্ত স্ববর্ণ ও রূপা ক্রম করিবে, তাছাদিগকে ১২ পণ দশু দিতে হইবে। আব যাহার। ভূবণাদির আকার নষ্ট করিয়া অর্থাৎ গহন। গালাইয়া স্ববর্ণ ও রূপ্য ক্রম করিবে, তাহাদিগকে ২৪ পণ দশু দিতে হইবে। এবং ইহা চোরের হাত হইতে ক্রয় করিলে ভাছাদিগকে ৪৮ পণ দশু দিতে হইবে। যদি ভাহারা গোপনে গহনাদির বৈরূপা ঘটাইয়া অর্থাৎ ইহা গালাইয়া অল্ল মুব্দো স্বর্ণ ও রূপা ক্রম করে, তাহা হইলে ভাহাদিগকে চুরির দশু পাইতে হইবে। নির্দ্ধিত ভাশু বা মালসম্বন্ধে

পরিবর্তনাদিরূপ প্রভারণেও ভাহাদিগের উপর **ত্তেরদণ্ড** অর্থাৎ চুরির দণ্ড। বিহিত হইবে।

যদি (কোন স্থানিক) একটি স্থাবৰ্ণ-নামক মুদ্রা হটতে একমাৰ-পরিমিত অংশ (অর্থাৎ ইহার 🖧 অংশ) অপহরণ করে, তাহা ইইলে তাহার ২০০ পণ দশু হইবে। এবং যদি (সে) একটি রৌপামর ধরণ-নামক মৃদ্রা হইতে একমাৰ-পরিমিত অংশ (অর্থাৎ ইহার 💃 অংশ) অপহরণ করে, তাহা ইইলে তাহার ১২ পণ দশু হইবে। এইভাবে সে বদি অধিক অংশ (যবা ২ মাষ) অপহরণ করে, তাহা হইলে তাহার দশুও রুদ্ধি পাইবে—এইরূপ ব্যাথাত হইল।

যদি (কোন স্বৰ্ণকার) অসার বা হীনবর্ণের ধাতুর (সোনা বা রূপার) উপর বর্ণেৎকর্ম অর্থাৎ উত্তম রঙ্ সাধিত করে, বা উত্তম ধাতুতে অসার-ধাতুর যোগ সাধন করে, তাহা হইলে তাহাকে ৫০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। এই প্রই প্রকার প্রভাবণের পরীক্ষাকার্যো, যদি ধাতুর রঙ্ (অগ্নি প্রভৃতিতে প্রক্ষেপের কলে) নই হইরা যায়, তাহা হইলে বৃঝিতে হইবে যে, ( স্বর্ণকার আদল ধাতু হইতে) অপহরণ করিয়াছে।

একটি রূপ্যধরণ (রূপার মুদ্রাবিশেষ) প্রস্তুত করিবার বেতন বা মজুরী এক (রূপা) মাষ হইবে, আর একটি স্থবর্গ (স্বর্গময় মুদ্রাবিশেষ) প্রস্তুত করিবার বেতন ইহার ও অংশ হইবে। (শিল্পীর) শিক্ষাবিশেষ অর্থাৎ শিল্পবৈচিত্রা থাকিলে বেতনবৃদ্ধি দ্বিগুণ হইবে। এতদ্বাধা গুরু কার্যা করিলে অধিক বেতন হইবে—ইহা ব্যাখ্যাত হইল।

তান, রস্থ (সীসা ? ), কাসা, বৈক্লস্তক ও আরকুট (পিত্তল )- দ্বারা নিশ্মিত দ্বোর মজুরী শতকরা ৫ পণ হইবে। (কর্মসময়ে) তাত্রপিণ্ড হইতে ১৯ অংশ ক্ষয় হইতে পারে। (কর্মকরণে এই সব ধাতু হইতে) এক পল কম হইলে, হীনাংশের দ্বিগুণ দণ্ড শুইবে। ইহাদ্বারা ক্ষয় অধিক হইলে দণ্ডও অধিক হইবে—ইহা বাাথাতি হইল।

আবার সীস ও ত্রপুলিও হইতে (কর্মকরণসময়ে) ২% অংশ ক্ষয় হইতে পারে। (এই ধাড়দার) দ্রবানির্মাণে) একপল-পরিমিত ওজনে এক কাকণা মজুরী হইবে। কালায়স বা লোহ হইতে (দ্রব্য নির্মাণসময়ে) 
ই অংশ ক্ষয় ইইতে পারে। ইহা দ্বারা একপল-পরিমিত ওজনের দ্রবানির্মাণে দুই কাকণা বেতন বা মজুরী হইবে। এইভাবে অধিক পরিমাণ দ্রব্যকরণে অধিক বেতন হইবে—ইহা ব্যাখ্যাত হইল।

বদি রূপদর্শক (মুদ্রাপরীক্ষক ) প্রচলিত অদ্বনীয় পণব্যবহারে দোষ ধরেন এবং দ্ধনীয় পণকে অদ্বনীয় মনে করিয়া চালান, তাহা হইলে তাঁহার ১২ পণ দও হইবে। ইহানারা উচ্চ মূল্যের মুদ্রা সম্বন্ধেও তাঁহার দওর্দ্ধি ব্ঝিয়া লইতে হইবে—ইহা ব্যাখ্যাত হইল।

পণযাত্রা অর্থাৎ পণ নির্মাণ করিয়া ইছার ব্যবহার চালাইতে হইলে (সরকারপক্ষকে) বাজীর (অর্থাৎ শতকরা ৫ পণ গুজের) সাহায্য লইয়া তাহা চালাইতে হইবে। যদি (লক্ষণাধাক্ষ) প্রতি পণে একমায় করিয়া (খ্য) লইয়া পণ (বাজারে) চালাইবার আদেশ দেন, তাহা হইলে তাঁহাকে ১২, পণ দণ্ড দিতে হইবে। এইভাবে অধিক উপজীবন লইলে (বা গোপনে টাকা খাইলে) তাহার দণ্ডও বৃদ্ধি পাইবে—ইহা ব্যাধ্যাত হইল।

যদি কেই কৃট বা জালী মুদ্রা তৈয়ার করায়, বা ইহা স্বীকার করিয়া নের, অথবা ইহা (বাজারে) চালায়, তাহা হইলে তাহার ১০০০ পণ দণ্ড হইবে। যদি দে ইহা রাজকোথে অক্ট মুদ্রার সহিত মিশাইয়া ফেলে, তাহা হইলে তাহার বধদণ্ড হইবে।

সরকে ব; অচ্ছিল্ল অধ্বগ-পঙ্জিতে (অর্থাৎ প্রের মধ্যে) ধ্লিধাবক (নীচ কর্মকরগণ) যদি কোন সার বস্ত পায়, তাহা হইলে ইহার ও অংশ ভাহার। পাইবেন-কিন্তু, রম্ব পাইলে রাজাই ইহার সম্পূর্ণ অধিকারী হইবেন। রম্ব অপহরণকারীর উপর উত্তমন্যাহদণ্ড প্রযুক্ত হইবে।

কোনও ধাত্র খনি, রন্ধ ও (ভূমিপ্রোথিত ) নিধি-বিষয়ে কেছ (রাজ্বারে)
নিবেদন করিলে, সেই নিবেদনকারী ইহার ई অংশ পাইবে। কিন্তু, সেই
লোক যদি ( সরকারী ) ভূতক (ভূত্য ) হয়, তাহা হইলে সে ঠুই অংশ পাইবে।
একশত সহস্র ( ১০০০০০ এক লক্ষ ) পণের অধিক মূল্যবান্ নিধি প্রাপ্ত
হইলে, ইহা সম্পূর্ব রাজ্যামী হইবে। ইহা হইভে কম মূল্যের নিধি হইলে
নিবেদয়িতা ( রাজকোষে ) ই অংশ দিবে ( 'রাজা নিবেদয়তাকে যাত্র ই অংশ
দিবেন'—এইরূপ অক্সবাদও হইতে পারে )।

যদি কোন সদ্বন্ধ জনপদবাদী কোনও নিধি প্রাপ্ত হইয়া, (প্রমাণাদিছারা) তাহা তাহার পূর্বপুরুষদিগের রক্ষিত নিধি এই বলিয়া স্বন্ধ সাব্যন্ত করে, তাহা হইলে সেই নিধি (এক লক্ষ পণের অধিক মূল্যের হইলেও) সেই ব্যক্তি সম্পূর্ণ তাহা নিজেই পাইবে। ধদি সে ( নাক্ষী বা লেখাদিঘারা) নিজ স্বামিদ্ধ প্রমাণিত

না করিয়া ইহা পাইতে চাহে, তাহা হইলে তাহার ৫০০ পণ দণ্ড ইইবে। আর দে ইহা গোপনে অধিকার করিয়া নিলে তাহাকে ১০০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

যে রোগে রোকীর প্রাণনাশ হইবার সন্তাবনা আছে, চিকিৎসক যদি তেমন রোগের চিকিৎসা, রাজদারে নিবেদন না করিয়া, আরম্ভ করে এবং যদি রোকী সেই রোগেই মারা যার, তাহা হইলে তাহার প্রতি প্রথমসাহসদগু প্রযুক্ত হইবে। চিকিৎসাকর্মের দোষে রোগী মারা গেলে, (চিকিৎসাকের) মধ্যমসাহসদগু হইবে। (রোকীর) মর্মানা অন্তাদিদারা বিদ্ধ করার যদি কোনও বৈশুণাঘটে, তাহা হইলে চিকিৎসককে 'দণ্ডপারুয়' প্রকরণে উক্ত কোনও উচিত দণ্ড পাইতে হইবে।

বর্ধা ঋতুর রাত্রিতে কুশীলে বেরা (নট-প্রভৃতিরা) একছানে বাস করিবে (অর্থাৎ একছান হইতে স্থানাস্তরে যাইয়া তামাশা প্রবর্ত্তিত করিবে না)। কেহ (তামাশা দেখিয়া প্রসন্ধ হইয়া) মাত্রা অতিক্রম করিয়া তাহাদিগকে (ধনাদি) দিশে, এবং তাহাদিগের কর্মের অতিস্ততি করিলে, তাহা তাহারা বর্জন করিবে। এই নিয়ম উল্লেখন করিলে তাহাদিগকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে। তাহারা কোন স্থানে দেশ, জাতি, গোত্র, চরণ (কোনও শাধা-বিশেষের অধায়নকারী) ও মৈণুনসম্বন্ধে অপহাস-প্রভৃতি পরিত্যাগ করিয়া ইচ্ছামত (প্রেক্ষকদিগের) চিত্তবিনাদন করিতে পারিবে।

কুশীলবদিগের উপর প্রযোজ্য বিধিদার। চারণ ও ভিক্কদিগের বিধানও ব্যাখ্যাত হইল বুঝিতে হইবে।

তাহাদিগের স্বেচ্ছায় কৃত কর্ম্মদারা অক্টের চিত্তবিঘাত বা মর্ম্মহাত উপস্থিত হুইলে, তাহাদিগের উপর যত পণ দণ্ড (ধর্মন্থেরা) বিধান করিবেন, (তাহা না দিতে পারিলে) ততসংখ্যক শিক্ষা বা বেঞ্জপ্রহার ভাহারা দণ্ডরূপে প্রাপ্ত হুইবে।

শিল্পীদিগের অবশিষ্ট অর্থাৎ উক্তাতিরিক্ত কর্ম্মের সম্পাদননিমিক যে বেতন হওয়া উচিত, তাহা (উক্তরীভিতে) বঝিয়া ব্যবস্থা করিতে হইবে।

এইভাবে আচোর বলিয়া আখ্যাত ছইরাও বাস্তবিক চোরকর্মচারী বণিক্, কারু, কুশীলব, ভিক্ক ও কৃছক ( ঐক্তজালিক ) ও এই প্রকার অভ্যান্ত কার্থ্য-কারীদিগকে ( রাজ্য ) দেশের (লোকের ) পীড়া উৎপাদন করা ছইতে বারণ করিবেন ॥ ১ ॥

কৌটিলীয় অর্থশাল্লে কন্টকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে কারুকদিগ হইতে বক্ষণ-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে १৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### দ্বিতীয় অধ্যায়

#### গ্ৰাম প্ৰক্ৰণ--বৈদেহক বা বাণিজকদিগ ছইডে রক্ষণ

রোজকীয় কর্মচারী ) সংস্থাধ্যক্ষ ( অর্থাৎ মজুতমালের সংস্থান-পরীক্ষক ) পণ্যশালাতে ( দোকান ও কারথানাতে ) অবস্থিত যে দকল পুরাতন ক্রবাডাণ্ডের সম্ব নির্দ্ধণিত হইয়াছে দেগুলির আধান (নিবেশন) ও বিজ্ঞয় বাবন্ধিত করিবেন। এবং (তিনি) তুলাভাগু ও মানভাগু ( অর্থাৎ পরিমাণী ও দ্রোণাদি ) পরীক্ষা করিবেন—ভাহা না হইলে ( ওজন ও পরিমাণ বিষয়ে ) প্রেণিত্ব-দোষ উপস্থিত হইতে পারে।

পরিমানী ও দ্রোণরূপ মানবিশেবে অর্জ্ন পল কম বা বেশী হইলে, ইহা দোষের মধ্যে গণ্য হইবে না। কিন্তু, একপল পর্যান্ত কম বা বেশী হইলে, (দোবীর) ১২ পণ দণ্ড হইবে। এতগারা একপলের উর্দ্ধে কম বা বেশী হইলে, তদক্ষসারে সে দণ্ডও বৃদ্ধি পাইবে — ইহাও ব্যাখ্যাত হইল।

তুলাবিষয়ে এককর্ষ কম বা বেশী হইলে, ইহা দোষের হইবে না। কিন্তু, ছই কর্ম কম বা বেশী হইলে, (দোষীর) ৬ পণ দণ্ড হইবে। এইভাবে, এক কর্ষের উর্দ্ধে কম বা বেশী ইইলে, তদকুদারে দণ্ডের বৃদ্ধিতে হইবে।

আঢ়কবিষয়ে অর্দ্ধ কর্ষ কম বা বেশী হইলে, ইহা দোষের হইবে না। কিন্তু, এককর্ষ কম বেশী হইলে, (দোষীর) ৩ পণ দণ্ড হইবে। ইহাদ্বারা এককর্ষের উর্দ্ধে কম বা বেশী হইলে, তদমুসারে দণ্ডবৃদ্ধি বৃথিতে হইবে।

অন্তান্ত (অনুক্ত ) তুলা ও মানবিশেষের হীনতাও অতিরিক্ততা বিষয়ক বিধান (উক্ত রীতিতেই) অনুমান করিয়া লইতে হইবে।

যে (বৈদেহক বা বাণিজক) অতিরিক্ত তুলা ও মানদ্বারা ( দ্রুবা ) কর করিয়া, হীন তুলা ও মানদ্বারা ( ইহা ) বিক্রয় করে, ভাষাকেও পূর্ব্বোক্ত ( ১২ পণাদি ) দণ্ড দ্বিশুণ মাত্রায় দিতে হইবে।

যে (বৈদেহক ) গণনাদ্বারা বিক্রোতব্য প্রণ্যের মূল্যের অষ্টভাগ ( ই ভাগ )
অপহরণ করিবে, ভাহাকে ৯৬ পণ দও দিতে হইবে।

যে ( বৈদেহক ) কাৰ্চ, লোহ বা মণিময়, কিংবা রজ্জ্ব, চর্ম্ম বা মুন্মায়, কিংবা স্থ্যু, বঙ্কল বা রোমময় নিকৃষ্ট দ্রব্যকে উৎকৃষ্ট দ্রবা বলিয়া বিক্রয় ও আধান করে, ভাছাকে সেই দ্রব্যের মূল্যের আটগুণ দণ্ড দিতে ইইবে।

বে (বৈদেহক) হীনমূল্যের অসার ক্রব্যকে সার ক্রব্য বলিয়া, ও হীনমূল্যের

অন্ত দেশে উৎপন্ন দ্রব্যকে অপর দেশের উৎপন্ন বলিয়া এবং হীনমূল্যের শোভঃ বা ঔচ্ছলাযুক্ত ( ক্লব্রিম মুক্তা প্রভৃতি ) দ্রবা, কমমূল্যের ক্রব্রিম দ্রব্যা প্রিভা দ্রব্য, ও দ্রব্য রাধিবার সমূদ্য বা পেটারী পরিবর্জন করিয়া দ্রব্য দেখাইয়া, ইহার বিক্রন্ন বা আধান করিবে, ভাহাকে ৫৪ পণ দণ্ড দিভে হইবে ৷ বদি ( ন ) উপরি উক্ত দ্রব্যগুলি হইতে একপণ মূল্যের দ্রব্য বিক্রন্ন ব) আধান করে, ভাহা হইলে ভাহাকে উক্ত দণ্ডের হিণ্ডণ দণ্ড দিভে হইবে, আর সেই দ্রব্য দ্রই পণ মূল্যের হইলে, ভাহার ২০০ পণ দণ্ড হইবে ৷ এইভাবে ও পণ—৪ পণাদি করিয়া পণামূল্য রুদ্ধি করিয়া বিক্রন্থ বা আধান করিশে, ভাহাকৈ ভদম্পাবে দণ্ডবৃদ্ধিও ভোগ করিতে হইবে ৷

যদি কারু ও শিল্পীয়া পরশার মিলিত হইয়া ( ভাণ্ডাদি তৈয়ারকরণবিষয়ে ) কর্মগুণের অপকর্ষ বা হানি উৎপাদন করে, (জীবিকার জন্ত মজুরী লওয়া বিষয়ে) অধিক লাভ গ্রহণ করে, কিংবা ( মূল্যবৃদ্ধি লইয়া ) বিক্রন্ত করিয়া (ক্রেভার ) ক্ষতি করে, ও ( মূল্যহ্রাদ করিয়া ) ধরিদ করিয়া (বিক্রেভার ) ক্ষতি করে—তাহা ইইলে তাহাদিগের প্রত্যেকের উপর ১০০০ এক সহত্র পণ দণ্ড বিহিত হইবে।

যদি বৈদেহকের। একমত হইরা পণা হাতছাড়া নাকরে এবং অযুক্ত ব। অস্কৃতি মূশ্যে বিক্রম বা ক্রয় করে, তাহা হইলে তাহাদিগের প্রত্যেকের :০০০ পণ দও দিতে হইবে।

যদি ( পণ্য প্রব্যের ) কোন তুলাধারক বা ( প্রস্থাদিদারা ! মাপকারী কণ্মচারী তাহার হাতের চালাকি দোবদারা তুলা বা মানের পার্থকা করিয়া বা পণ্য প্রবার মূল্য নির্ণয়ে দোব ঘটাইয়া একপণ মূল্যের দ্রবা হইতে ই অংশ পর্যস্থ ক্ষতি করে, তাহা হইলে তাহার ২০০ পণ দণ্ড হইবে । ইহাদ্বারা ( ই অংশাদি কম দিয়া অধিক ক্ষতি করাইলে ) মুইশত পণের অধিক দণ্ডর্দ্ধি হইবে—এইরূপ বাাধাত ইইল ।

ধান্ত, ক্ষেত্রবা ( তৈশন্তালি ), ক্ষার দ্রবা, লবণ, গদ্ধদ্রব্য ( চন্দনাদি ) ও তৈবজা দ্রব্যের সমানবর্ণবিশিষ্ট হীনমুন্সের ধান্তাদিসহ সেওলি মিশ্রিত করিরা কারবার করিলে, ( বৈদেহকের ) ১২ পণ দণ্ড হইবে। ( দোকানের বিক্রেতার। ) বতধানি লভাংশ অপ্নয়ত জীবিকারূপে পাইতে পারিবে, তাহা প্রতিদিনে কডখানি তাহার সন্ধন্ধে উৎপন্ন হইবে সে বিষয়টা গণনা করিরা বণিক্কে ( কাহারও মতে 'বণিক্'—'সংস্থাধ্যক্ষ'), নির্ণয় করিয়া ( লিখিয়া ) রাখিতে ইইবে। ক্রেতাও বিক্রেতার ক্রিয়াতে, অর্থাৎ ক্রম্ন ও বিক্রন্বির্য়ে ( সংস্থাধ্যক্ষ

নিজে তাহা করিলে, ) যদি কোনও লাভ আপতিত হয়, তাহা হইলে দেই লাভে কোন অংশীদার কেই হইবে না, অর্থাৎ দেই লাভটা কেবল রাজগামী হইবে।
এই কারণে, (বৈদেহকগণ সরকারী সংস্থাধাক্ষের) অম্ব্যতি প্রাপ্ত হইয়া ধান্ত ও পণোর নিচয় করিবে। তাহাদের অন্তভাবে নিচিত দ্রবা পণ্যাধাক্ষ গ্রহণ করিবেন (অর্থাৎ ইহা বাজেয়াপ্ত হইবে)। (সেই জন্ত অথবং, অম্ব্যয়তন্তব্যস্ক্ষ্মারা) ধান্ত ও পণাবিজ্যাবিষয়ে (পণ্যাধাক্ষকে) এমন ভাবে ব্যবহার করিতে হইবে, যাহাতে প্রজাবর্গের উপকার সাধিত হয়। (বৈদেহকেরা) অম্ব্যুতি পাইয়া যে দর দিয়া পণ্য ধরিদ করিবে, পণ্য অদেশজাত হইলে, ভাহার উপর ভাহারা শতকরা ও পণ লাভ লইতে পারিবে। ক্রয় ও বিজ্যাবিষয়ে ইহার উর্দ্ধে মূল্য বাড়াইয়া লাভ গ্রহণ করিলে, ভাহাদিগকে প্রতি শত পণে ও পণ বেশী লাভ করিলে ২০০ পণ্য দত্ত ইবৈ। ইহাছারা অর্থ বা মূল্য বাড়াইয়া বেশী লাভ করিলে ভাহাদিগকে দত্তবৃদ্ধি দিতে হইবে – ইহাও বাধ্যাত হইল।

বাপারীর। একত্র মিলিত হইয়। (সংস্থাধ্যক্ষ হইতে ? ) মাল থরিদ করিয়।
ইহা বিক্রয় করিতে না পারিলে, (তিনি) অলু ব্যাপারীদিগকে সেই মাল
একত্র মিলিত হইয়া থরিদ করিতে দিবেন না। (জল বা অগ্যাদিলার।)
ভাহাদের পণাের উপথাত বা নাল উপদ্বিত হইলে, তিনি (পণাাধ্যক্ষ)
বিক্দিগের উপকার করিবেন—অবশ্য বদি তাঁহার হস্তে পণোর বাছলা থাকে।
('পণাবাহলাাৎ' পদটিকে পরবর্তী বাকাের সহিত্ত সংযোজিত কয়া ঘাইতে
পারে অথাৎ) রাজপণাের বাছলা থাকে বলিয়াই পণ্যাধ্যক্ষ সর্বপ্রকার পণা
ই
একমুশে অথাৎ এক বাাপারীর হাত দিয়াই বিক্রয় করিবেন। সেই
পণাগুলি অবিক্রীত থাকিলে, অলু ব্যাপারী আর সেই মাল বিক্রয় করিতে
পারিবে না। প্রতিদিনের বেতন পাইয়া (তাহারা) এমনভাবে সেই পণাগুলি
বিক্রয় করিবে যাহাতে প্রজাবর্গের উপকার সাধিত হয়।

কিন্তু, দেশান্তর হইতে আনীত ও কালান্তরে প্রস্তুত অর্থাৎ অনেক কাল পূর্ব্বে প্রস্তুত পণ্যসমূহের প্রক্ষেপ তেওঁদ্দুব্যের উৎপত্তির জন্ত প্রয়োজনীয় দ্বান্তেরের মূলা ), দ্রবানির্দাণের কালাদিজনিত থরচ শুক্ত ব্যয়, র্ছি ( মুদ ), অবক্রয় ( গাড়ীভাড়া ইত্যাদির থরচ ) ও অন্তান্ত ব্যয় গণনা করিয়া, অর্থ-বিধানে অভিন্ত ( অর্থাৎ মূল্য-নির্দারণে পটু ) ব্যক্তি ইহার মূলা নির্দারণ করিবেন ॥ ১ ॥ কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রে কন্টকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে বৈদেহক বা বাণিজকদিগ হইতে রক্ষণ-নামক দিতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ৭৯ অধ্যায় ) সমান্তা।

# তৃতীয় অধ্যায়

#### গ্রদ্ম প্রকরণ—উপনিপাত বা দৈবী বিপদের প্রতীকার

( মপুশ্বসমাজে গুইপ্রকার কন্টক হইতে পারে — মাসুষ ও দৈব, তমাধা ) দৈবকৃত মহাভার আটপ্রকারের হইতে পারে - যথা, অগ্নি, জল, ব্যাধি, তুর্ভিক্ষ, মূষিক, ব্যাল ( ক্রুম্বভাব ব্যাদ্রাদি), দর্প ও রাক্ষ্য। এই সব মহাভার হইতে রাজ্য জনপদকে রক্ষা, করিবেন।

গ্রীম্মকালে গ্রামবাদীরা (পাকাদির) চুল্লী (পৃহের) বাহিরে করিবে।
অথবা, (গোপা-নামক) দশকুলীরক্ষকের নির্দেশাসুদারে তাহা করিবে।
নাগরিকপ্রণিধি-নামক প্রকরণে (২য় অধিকরণে ৩৬শ অধ্যায়ে) অগ্নিভয়ের
প্রতীকারের বিধন্ন ব্যাখ্যাত হইয়াছে। নিশাস্তপ্রণিধি-নামক প্রকরণে
(১ম অধিকরণে ২০শ অধ্যায়ে) রাজার পরিগ্রহ (অন্তঃপুরস্থ রমনীগণ
ও পরিজন )-সম্বন্ধে বণিত বিধয়েও অগ্রিপ্রতিষধে ব্যাখ্যাত ইইয়াছে।

(রাজা) বলি (ভৃতিবলি), হোম (রক্ষাহোম) ও স্বস্তিবাচনদার। (পূর্ণিমাদি) পর্বাদিবদেও অগ্নিপুজা করাইবেন।

বর্ধাকালের রান্তিতে নভাদি-জলপ্রায় দেশের নিকটবর্তী গ্রামবাসীর। জলপ্রবাহের দল্লিকট তট পরিভ্যাগ করিয়া বাস করিবে। এবং ভাহারা (ভরণার্থ) কাষ্ঠ, বেণু ( বাশ ) ও নৌকা সংগ্রহ করিয়া রাখিবে।

শুলপ্রবাহে ভাসমান লোককে অলাব্, দৃতি (চর্মাভস্তা), প্লব (ভেলা).
গণ্ডিকা (রুক্ষের প্রকাণ্ডক) ও বেণিকা (জলভরণের সাধনবিশেষ)-ছারা
বাঁচাইবে। যাহার। এইরূপ ভাসমান লোককে রক্ষা করিতে অগ্রসর না হইবে,
ভাহাদের উপর ১২ পণ দণ্ড বিহিত হইবে; কিছু, যদি ভাহার। (ভরণসাধন)
প্রবিহীন হয়, ভাহা হইলে ভাহারা দণ্ডনীয় হইবে না।

অমাবত্যাদি পর্বদিনে (রাজা) জলবিপদের প্রশামনজন্ত নদীপ্রতা করাইবেন।

মান্ত্রাম্যারক্তানী মান্ত্রিকেরা. অথবা, অথব্যবেদনিপুণ পণ্ডিতেরা অতিবর্ষণের প্রশামনার্থ অভিচারমন্ত্রাদির আচরণ করিবেন।

( আবার ) বর্ষার প্রতিবন্ধ উপস্থিত হ*ইলে*, ( রাজা ) ইন্দ্র, **গলা,** পর্বত ও মহাক**ন্থে**র ( সমুদ্রের, কিংবা বঙ্গণদেবের ) পূজা করাইবেন। মাস্থ্যকর্মধারা উৎপাদিত ( অর্থাৎ কৃত্রিম ) ব্যাধির ভয় ঐপনিষ্টিক প্রকরণে উক্ত প্রতীকারোপায়দ্বারা প্রশমিত করিতে হইবে। আর চিকিৎসকেরা ঔষধদ্বারা অকৃত্রিম ব্যাধির ভয় প্রতীকার করিবেন, কিংবা দিদ্ধ ও তাপসেরা কা ব্যিকের্ম ও প্রায় শিচ ভ ব্রতাদিদ্বারা ইহাব প্রতীকার করিবেন।

ইহাছারা মরকের প্রতীকারও বাাধ্যাত হইপ। (মরকের প্রশমনার্থ রাজা প্রজালোকছারা) (গঙ্গাদি) তীর্থে সান, মহাকচ্ছের (সমূদ্রের বা বরুণদেবের) পূজা, শাশানে গোদোহন, (ততুল ও সক্ষারা নিশ্মিত) কবন্ধদহন ও কোন দেবতার পূজা উপলক্ষে রাত্রি জাগরণ করাইবেন।

পশুর ব্যাধি ও মরক উপস্থিত হইলে, পশুগুলিকে অভস্থানে রাধাইবেন, এবং নীরাজনজব্যদ্বারা নীরাজন করাইবেন ও পশুদিগের স্বস্থাদবভার পূজার বাবস্থা করাইবেন।

গুভিক্ষ উপস্থিত হইলে, রাজা বীঞ্চ ও ভক্তদার। প্রজাবর্গের অক্ক্র আচরণ করিয়। তাহাদিগের প্রতি অন্থগ্রহ দেখাইবেন। অথবা, তিনি ভক্ত (ভাতা) দিয়া (প্রজাঘারা) গুর্গকর্ম ও সেতুকর্ম করাইবেন। (তাহা না করাইতে পারিসে) তিনি কেবল ভক্তই বাটিয়া দিবেন, অথবা (গুভিক্ষক্লিষ্ট) প্রজাবর্গকে নিকটবর্তী (প্রভূতধান্ত) দেশে পাঠাইয়া দিবেন, অথবা (প্রজারক্ষার্থ) নিজের কোন মিত্তকে আপ্রয় করিবেন, অথবা (ধনী প্রজার) কর্শন (করাদিদার। তাহার নিকট হইতে অর্থসংগ্রহ) বা বমনের (তাহার সঞ্চিত অর্থ হইতে আদায়ের) বাবদ্বা করিবেন।

অথবা, (রাজা) জনপদবাদী দিগকে দক্ষে লইয়। শত্মমন্ত্র অন্তদেশে চলিয়।

যাইবেন। অথবা, (তিনি) দমূদ্র, দরোবর ও তড়াগের তীর (বাদার্থ)

আশ্রয় করিবেন। অথবা, (তিনি) যেখানে জলদেতু বিস্থমান আছে দেখানে
ধান্ত, শাক, মূল ও ফলের আবাপ করাইবেন। অথবা, (তিনি) মৃগ, পশ্ব,
পক্ষী, বাালজন্ত্র ও মৎস্যধরার কার্যা করাইবেন।

মৃথিকের ভর উপস্থিত হইলে, (গৃহে) বিভাগ ও নকুলের উৎসর্গ করিতে হইবে ( অর্থাৎ বিভাল ও নকুল ছাজিয়া দিতে হইবে )। সেই বিভাল ও নকুলকে ধরিলে বা মারিলে অপরাধীর ১২ পণ দও হইবে। কেহ ( অপরের অনিষ্টকারী) নিজের কুকুরকে আটক না করিলে তাহার ১২ পণ দও হইবে; কিছ, যাহারা বনচর, তাহাদের কুকুর অনিগৃহীত থাকিলে অর্থাৎ বাঁধা না থাকিলে ভাহাদের দও হইবে না!

সুহিরক্ষের ক্ষীরদ্বারা লিও ধান্ত ছড়াইয়া দিতে হইবে, অথবা, ঔপনিধ্দিক প্রকরণে উক্ত ওবধিযোগযুক্ত ধান্ত ছড়াইয়া দিতে হইবে (এই ধান্ত ধান্ত ধান্ত মৃথিকের মৃত্যু ঘটিতে পারে)। অথবা, (রাজা) মৃথিক-কর-নামক কর বসাইবেন (অর্থাৎ অনুক বাড়ী হইতে এতটি মৃথিক ধরিয়া দিতে হইবে এইয়প্রাব্দা করিবেন)। অথবা, সিদ্ধ ও তাপসেয়া (মৃথিক-শমনার্থ) শান্তিকগ্ম করিবেন। এবং (পূণিমাদি) পর্কদিনে (তিনি) মৃথিক পুজা করাইবেন।

এডদ্বারা শলভ, পক্ষী ও কমির ভয়ের প্রতীক্রেও ব্যাখ্যাত হইল।

ব্যাল বা ব্যাখাদি হিংস্ৰজন্ত্ব ভয় উপস্থিত হইলে, ঔপনিবদিক প্ৰকরণে উজ মদনরস্থার। যুক্ত করিয়া শশুর শব (ইহাদের ভক্ষণার্থ জন্মলে) ছাড়িয়া রাখিতে হইবে। অথবা, সেই পশুশবের পেট মদন বা ধৃত্রা ও কোদ্রবদার। পূর্ব করিয়া রাখিতে হইবে।

অথবা, বাধ ও চণ্ডাপের। কৃটপঞ্জর ও তৃণাদিছের অবপাত বা পাতনগর্থ বাবহার করিবে। (তাহারা) কবচদার। আরুত হইরা, হাতে শল্পগ্রহণপূর্শক বাালদিগকে বধ করিবে। (ব্যালদারা আক্রান্ত মহয়ের মাহায়ার্থ)যে অগ্রসর ইইবে না, তাহার ১২ পণ দও ইইবে। আর যে বাজ্জি ব্যালজ্জ মারিয়া আনিবে, ভাহার তভগানি (অথাৎ ১২ পণই) পুরস্কার লক্ক ইইবে।

আর, ( রাজা ) পর্বদিনে (অমাবস্থাদি তিথিতে) পর্বব**ঙপূজা করাই**বেন। এতদ্বারামুগ ও পদ্দীর দল বাধিয়া আক্রমণের প্রতীকারও ব্যাধ্যাত হইল।

দর্পের ভর উপস্থিত হইলে, জান্দলীবিস্তাবিৎ অর্থাৎ বিষবৈশ্যের। মন্ত্র ও ওথিছারা বিষপ্রতীকরে করিবে। অথবা, (লোকেরা) একত্রিত হইরা, সমীপে অর্থাৎ দৃষ্টিগোচরে আপতিত দর্পদমূহ মারিয়া ফেলিবে। অথবা, জ্যথবিবেদে অভিজ্ঞ অভিচারকর্মপট্ট পণ্ডিতেরা অভিচারমন্ত্রহারা দর্শবিধ করিবেন। পর্বগুলিতে (রাজা) নাগপূজা করাইবেন। ইহাদ্বারা জলচর প্রাণীর ভয় হইতে রক্ষা পাওয়ার উপায়ও ব্যাখ্যাত হইল। রাক্ষ্যের ভর্মান্ত্রহ ইলা, অথববিদ্যাবিধ (আভিচারিকেরা), অথবা মায়াবোগাভিজ্ঞ (মান্ত্রিকেরা), (রাক্ষ্যনাশক) কর্ম্মের অপ্রচান করিবেন। এবং (অমাবস্থাদি) পর্বাদিবদে (রাজা) বেদিকা, ছত্ত, উল্লোপিকা (খাছবিশেষ), হস্তপভাকা ও ছাগমাংসের উপহার্থারা কৈন্ত্রস্থাকা (শাশানভূমিতে রাক্ষ্যপূজা) করাইবেন। দর্বপ্রকার রাক্ষ্যাদির ভয় উপস্থিত ইইলে, "ভোমাদের জন্ম চক্ষ পাক করিতেছি"—এইরপ বলিয়া দিবায়াত্র লোকেরা সঞ্চবণ করিবে।

এবং সর্ব্যপ্রকার ভয় উপস্থিত হইলে, রাজা ভয়পীড়িত প্রজাবর্গকে পিতার ভাষ রক্ষাপ্রতাহ প্রদর্শন করিবেন।

অতএব, দৈবী আপদের প্রতীকারকুশল মায়াযোগবিৎ ( মন্ত্রোগে অভিজ্ঞ )
সিদ্ধ ও তাপদেরা রাজাদারা পূজিত বা সংকৃত হইয়া দেশে বাস করিবেন ॥ ১॥ ৫

কোটিশীর অর্থশাত্ত্রে কন্টকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে উপনিপাতের প্রতীকার-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ৮০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# চতুৰ্য অধ্যায়

## ৭১শ প্রকরণ—গৃঢ়ভাবে জীবিকাকারীর প্রভীকার

সমাহর্তপ্রণিধি-নামক প্রকরণে (২য় অধিকরণ, ৩৫শ অধ্যায়ে) জনপদের রক্ষণবিষয়ক উপায় উক্ত হইয়াছে। (সম্প্রতি) জনপদের মধ্যে অবস্থিত প্রক্ষর কন্টকের শোধন বা প্রতীকার-বিষয়ে উপায় বলা হইবে।

(জনপদের গৃঢ় কন্টকদিগকে বা প্রজাপীড়কদিগকে জানিবার উদ্দেশ্যে) সমহর্তা সমগ্র জনপদে সিদ্ধ, তাপস, প্রব্রজিত (সন্ন্যাসী), চক্রচর (নিরস্তর এদিক ওদিক ঘুর্ণনকারী অর্থাৎ যে একস্থানে স্থায়ী নহে ), চারণ (ভাট ), কৃহক ( ঐক্তজালিক ), প্রাক্তন্সক ( স্বেচ্ছায় পূর্ণনশীল ), কার্ডান্তিক ( ধ্মপট দেখাইয়া জীবিকাকারী ), নৈমিত্তিক ( শকুনিস্চক ), মৌহুর্ত্তিক (জ্যোতিধী ), চিকিৎসক, উন্মন্ত, মূক (বোবা), বধির, জড় (মূর্গ, হাবা), অন্ধ, বৈদেহক (ব্যাপারী 🐰 কাক্ষশিল্পী, কুশীলব (নটনর্ত্তকাদি), বেশ (বেশ্যালয়চারী), শৌত্তিক ( স্থবাবিক্তেতা ). আপূর্ণিক ( পিষ্টকাদিমিষ্টিকারক ), প্রমাংসিক ( পাক্কর। মাংসবিক্রেতা ) ও ঔদনিকের (ওদন বা পকার বিক্রেতার) বেষধারী গুপ্তচত্ত দিগকে নিযুক্ত করিবেন। এই প্রণিহিত লোকের। গ্রামবাদীদিগের (কিংব। গ্রামমুখাদিগের) ও অধ্যক্ষদিগের শুচিতা ও অশুচিতা-সম্বন্ধে অন্তর্মদ্ধান করিবে। (সমাহর্ত্তা) ইহাদিগের মধ্যে যাহাকে গুঢ়ভাবে জীবিকাকারী বিশিয়া সন্দেহ করিবেন, সমানজাতীয় স্ত্রি-নামক গুচুপুরুষদ্বার। তাহার উপর অপদর্পণ-কার্য্য (গুপ্তচরের কার্যা) চালাইবেন। দেই দত্রী, 'ধর্দ্মন্থকে' বা প্রদেষ্টাকে (গুঢ়াজীবী বলিয়া সন্দেহ করিলে) তাহার বিখাস উৎপাদন করিয়া এইব্লপ বলিবে—"আমাৰ এই বন্ধটি ( আদালতে ) অভিযুক্ত হইয়াছে (এইবাকে: 'গ্রদেষ্টারং বা' অতিরিক্ত শব্দ বলিয়া মনে হয় )। তাছার এই অনর্থ বা বিপদের প্রতীকার করিয়া দিউন, এবং ডজ্জ্য এই ধন প্রতিগ্রহ করুন।" যদি দেই (ধর্মদ্ব বা প্রদেষ্টা) তাহাই করেন তাহা হইলে তাঁহাকে উপদাগ্রাহক , (উপায়নগ্রহণকারী) বলিয়া বুঝিয়া (রাজা) তাঁহাকে নির্কাসিত বা পদ্যুত করিবেন।

এই নিয়মদারা প্রদেষ্টাদিগের কার্যাও বিবেচিত হইবে।

সত্রী প্রামন্ট ( রামম্থা ) বা ( গ্রামের ) অধ্যক্ষকে বলিবেন - "এই জাক্ম ( গুই বা বদমাশ ) প্রভূতদ্রবাবিশিষ্ট ( ধনী ) ব্যক্তি, তাহার এই অনর্থ বা বিপদ উপস্থিত হইয়াছে। এই বাপদেশে তাহার যথাসর্ক্স অধিকার করিয়া লওয়ার ব্যবহা করা হউক"। যদি সেই গ্রামকৃট বা অধ্যক্ষ তাহাই করেন, ভাহা হইপে তাঁহাকে উৎকোচগ্রাহী বলিয়া বুলিয়া লইয়া প্রবাসিত করা হইবে।

অথবা, কুত্রিমভাবে অভিযুক্ত বলিয়া পরিচিত সত্রী, যাহারা কুট্সাক্ষী (অর্থাৎ মিখ্যা-সাক্ষ্যদায়ী ) বলিয়া আশক্ষিত তাহাদিগকে অনেক ধন দেওয়ার প্রলোভন দেখাইয়া কার্যা করাইতে চাহিবে। যদি তাহারা সেই ভাবেই কার্যা করিতে চাহে, ভাহা হইলে তাহাদিগকে কুট্সাক্ষী বলিয়া নিশ্চিডভাবে জানিয়া প্রবাসিত করা হইবে। এতগ্বারা কুট্প্রোবণকারীরাও (অর্থাৎ যাহারা সাক্ষ্যজন্ম মিখ্যা কথা অপরকে প্রবণ করায় তাহারাও) ব্যাখ্যাত হইল।

অথবা, সত্রী বাহাকে মন্ত্রবাগ ও ঔষধাদি-প্রয়োগদারা, কিংবা শ্মশানে করণীয় কর্মধারা সংবাদনকারী (বলীকরণ-কর্ত্তা) বলিরা মনে করিবে, তাহাকে সে এইরূপ বলিবে — "আমি অমুকের ভার্যা, পুত্রবধূ বা কন্তার প্রতি কামাসক্ত ইইয়াছি। তুমি তাহাকেও আমার প্রতি কামাসক্তা করিয়া উঠাও। এইজন্ত তুমি এই ধন পও।" যদি সেই লোক তাহাই করে, তাহা ইইলে তাহাকে 'সংবানকারক' বলিয়া ব্রিয়া লইয়া প্রবাসিত করিতে ইইবে।

ইহাদ্বার। যে ক্রন্ডাশীল (অর্থাৎ পিশাচাদির আবেশনকারী) ও অভিচারশীল (অভিচার-মন্তপ্রয়োগে মারণশীল) তাহারাও ব্যাখ্যাত হইল। অথবা, সত্রী যাহাকে বিষট্তয়ারকারী, বিষক্তেতা, বিষবিক্রেতা, কিংবাকোন ভৈষ্ক্তা ও আহারের ব্যাপারী বা ব্যবহারীকে রসদ (বিষদায়ী) বলিয়ামনে করিবে, তাহাকে সে এইভাবে বলিবে—"অমুক ব্যক্তি আমার শক্ত, তুমি

(বিষপ্রয়োগে ) তাহার উপঘাত ঘটাও এবং তোমার এই কার্যোর জন্ম এই ধন

লও।" যদি সেই ব্যক্তি সেইভাবেই কাব্দ করে, তাহা হইলে ভাহাকে 'রদদ' বলিয়া বুঝিয়া লইয়া প্রবাসিত করা হইবে।

ইহাদারা মদনথাগের ( মদজনক ঔষধদানের ) ব্যবহারীও ব্যক্তান্ত হইল। বিদি স্ত্রী কাহাকেও মনে করে যে, সেই ব্যক্তি প্রায়শঃ নানাজাতীয় লোহ (ধাতুক্রব্য) ও ক্ষার এবং অক্ষার, ভক্তা, সংদংশ ( সার্বাশ ), মৃষ্টিকা ( হাতুরী ), আধিকরণী ( লোহার অভিঘাতের জন্ম ভূমিতে প্রোথিত আধার ), বিশ্ব (প্রতিমা বা ছবি ), টক (ছেনী ) ও মুষা (ধাতু গরম করিবার পাত্রবিশেষ ) ধরিদ করে, এবং তাহার হাত ও বস্ত্র মনী, ভক্ম, ও ধুমদারা লিও, এবং সে কর্মার বা কর্মকারের কর্ম্মোপকরণমুক্ত — অতএব, এই ব্যক্তি কুটরূপ ( জালমূজা ) তৈয়ারকারী — তাহা হইলে সেই স্ত্রী নিজে তাহার শিন্ত হইয়া, অথবা পরস্পরের ব্যবহার চালাইয়া তাহার সহিত মিশিবে এবং সে যে কি প্রকারের লোক ( অর্থাৎ কুটরূপকারক ) তাহা ( রাজসমীপে ) জানাইয়া দিবে । যদি বে ব্যক্তি কুটরূপকারক বলিয়া প্রজ্ঞাত হয়, ভাহা হইলে তাহাকে প্রথাসিত করা হইবে !

এভদ্বারা যে ব্যক্তি । অর্ণাদির ) বর্ণের হানিকারক ( অর্থাৎ স্থানিকাদিরার। সর্শের রাগনাশকারী ) এবং যে ব্যক্তি কূটস্থর্ণের ব্যবহারী ভাষারাও ব্যাব্যাভ ইইল।

প্রজাজনের উপর উপদ্রবকারী উপরি উক্ত (ধর্মস্বপ্রভৃতি) এয়োদশ প্রকারের গুঢ়াজীবীকে প্রবাদিত করিতে হইবে, অথবা তাহাদের দোববিশেব বিবেচনা করিয়া তাহাদের অপরাধের নিজ্ঞয়জন্ত অর্থদণ্ড বিধান করিতে হইবে॥১॥

কোটিলীয় অর্থশাল্তে কউকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে গৃচ্ভাবে জীবিকাকারীর প্রতীকার-নামক চতুর্থ অধ্যায় ( আদি হইতে ৮১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### পঞ্চম অধ্যায়

৮০ম প্রকরণ –সিদ্ধবেষধারী সৃচ্পুরুষধারা ত্তজনের প্রকাশন

সত্রী নামক গুতৃপুরুষদিগের নিয়োগের পরে, সিদ্ধবেষধারী মাণবের। (ছুট ধুব্কেরা) মাণববিস্থাসমূহদারা (অর্থাৎ সংমোহিনী বিভাদার) (সমাজের কন্টক ছুইলোকদিগকে) প্রলোভিত করিবে। (তাহারা)নিদ্রিত করাইবার, অন্তর্জান ঘটাইবার ও (বন্ধ) দ্বার খ্লাইবার মন্ত্রদারা চোরদিগকে এবং সংবনন বা বদীকরণের মন্ত্রদারা পরদার-ব্যভিচারীদিগকে (প্রশোভিত করিবে)।

দিদ্ধশাভন্তনিত উৎসাহে উৎসাহায়িত সেই প্রতিরোধক (চোর) ও পারতল্পিকগণের (পারদারিকগণের) একটি বড়দেশ সঙ্গে শইয়া, রাজিতে (সেই দিদ্ধবাঞ্জন গৃচপুরুষেরা) এক গ্রামবিশেষে যাইতে উদ্দেশ করিয়া, অন্ধ্রামে—যাহাতে পূর্বে হইতেই কৃতসংকেত (স্বব্দংগত) নী ও পুরুষসমূহ উপস্থিত আছে,—যাইয়া বলিবে—"এই স্থানেই আমার বিভার প্রভাব লক্ষ্য কর, অন্ধ্রামে যাওয়া অত্যন্ত কইকর।" তৎপর (ভাহারা) দ্বার খোলার মন্ত্রামার দ্বার খুপিয়া লইয়া, "ইয়াতে তোমরা প্রবেশ কর" এইরূপ বলিবে। অস্তর্দ্ধান-মন্ত্রামা জাগ্রত রক্ষিপুরুষদিগের মধাদিয়া সেই (চোর ও পারতল্পিক) মাণবদ্দিগকে পার করাইবে (অর্থাৎ সেই রক্ষীয়া তাহাদিগকে দেখিতে গাইল না বলিয়া ছল করিবে)। নিদ্রিত করাইবার মন্ত্রামা রক্ষীদিগকে (খুমের অভিনয়ে) নিদ্রিত করাইয়া, তাহাদিগকে মাণবগণদ্বারা শ্রার উপর দিয়া সঞ্চারিত করিবে। বশীকরণ-মন্ত্রার। (পূর্বসংকৈতিত) প্রদারচ্ছলধারিনী বনিতার। সেই মাণবগণের সক্ষপ্তর উৎপাদন করাইবে।

(সিদ্ধবাঞ্জন গৃচপুক্ষবদিগের) বিভাপ্রভাব প্রতাক্ষভাবে উপলব্ধ হইলে পর. (তাহারা) তাহাদিগকে স্মরণার্থ (মগ্রসিদ্ধির অক্ষৃত) প্রশ্চরণাদি এড সম্পাদনের জন্ম আদেশ করিবে।

অথবা, ( তাহারা ) তাহাদিগকে ( গৃহীতমন্ত্র মাণবদিগকে ) দেই সব গৃহে চুরিকণ্ম করাইবে বেখানে অবস্থিত দ্রবাসমূহ স্থামিচিক্রণুক্ত করিয়া রক্ষিত হইয়াছে। অথবা, কোনও স্থানে তাহারা চুরির জন্ম প্রবেশ করিলে ভাহাদিগকে ( তাহারা ) ধরাইয়া দিবে।

অথবা, স্থামিচিহ্যুক্ত (চোরিত) দ্রবাসমূহের জ্বয়, বিজ্ঞার ও আধি বা বন্ধক রাখার সময়ে, কিংবা ভাহাদিগকে ভেষজ্যোগযুক্ত স্থরাপানে মন্ত থাকার অবস্থায়, তাহাদিগকে গ্রাইয়া দিবে। তাহারা ধরা পড়িলে পর, ভাহাদিগকে ভাহাদের পূর্বায়ত চুরিরূপ অবদানের কথা ও চুরিতে কাহারা সহায়ম্বরূপ সঙ্গী ছিল সে-বিষয় জিজাসাবাদ করা হইবে।

অথবা, পুরাতনটোর দিগের বেষধারী গুণ্ডচরের! চোরদিগের মধ্যে অক্ল-প্রবিষ্ট হইয়া ( অর্থাৎ তাহাদের মহিত মিলিয়া গিয়া ) তাহাদিগের ছারা পূর্ব্বোক্ত রীতিতে চুরি করাইবে এবং তাহাদিগকে ধরাইয়া দিবে। এইভাবে গৃহীত বা ধরা-পড়া চোরদিগকে সমাহর্ত্তা পুরবাসী ও জনপদবাসী-দিগের নিকট দেখাইবেন এবং বলিবেন—"আমাদের রাজা চোরধরার বিছা অধ্যয়ন করিয়াছেন। তাঁহার উপদেশাস্থ্যারে এই চোরগুলি ধরা পড়িয়াছে। আমি পুনরায়ও (এইরূপ চোর) ধরিব। তোমাদিগের পাপকর্মাচরণকারী ব্যুন্দিগকে (চুরিপ্রভৃতি পাণকর্ম হইতে) বারণ করিয়া দেওয়া উচিত।"

এই স্থানে ওওচেরের উপদেশজনে তিনি (সমাহর্তা), যদি কাহাকেও কংহারও (অতাল্লমূল্য) শমাঃ (বলীবর্দের যুগের কীলক) ও প্রতাদের রাথালের গোতাডন যৃষ্টির) অপহরণকারী বলিয়া জানিতে পারেন, তাহা হউলে তাহাদের (পোরজানপদদিগের) সন্মুথে তিনি তাহাকে দেখাইয়া এইরূপ প্রজ্ঞাপিত করিবেন—"এই প্রকার দামান্ত দ্বোর চুরি বিষয়ের পরিজ্ঞানও বাজারই প্রভাব"।

আবার, প্রাণচোর, গোপালক, ব্যাধ ও চণ্ডালের বেষধারী গুপ্তচরেরা, বনচোর ও আটবিকদিগের মধ্যে অস্প্রবিষ্ট হইলা তাহাদিগকে প্রভৃত কৃট (কৃষকের লাসলের ফাল), হিরণা ও কুপ্যনিশ্বিত ভাণ্ডবিশিষ্ট গার্থে (বিশিক্ষংছে), ব্রজে (গোষ্ঠ) ও গ্রামে (চৌর্য্যাদিকার্য্যে) উল্লোক্ষিত করিবে। (চৌর্য্যাদি জন্ত ) আক্রমণ আরম্ব হইলে পর, (তাহারা) তাহাদিগকে ওপ্তানিগ্রাম থাতিত করিবে। অথবা, মোহজনক, বিষযুক্ত পণা থাওয়াইয়া (কিংবা, 'পথের মাঝে দেইরূপ থাত যাওয়াইয়া'), (তাহারা) তাহাদিগকে মারিয়া ফেলিবে। আবার মধন ভাহারা মৃষিতদ্রব্যের বোঝা লইমা চলিয়া দীর্ঘপ লক্ষনে পরিশ্রান্ত হইয়া নিদ্রিত হইয়া পড়িবে, কিংবা কোন প্রহরণ বা তৃষ্টিভোজনে বীর্য্যাৎ মন্ত্রপানে মন্ত হইয়া পড়িবে, তথন জাহাদিগকে ধরাইয়া দিবে।

আবার, সমাহর্জা পূর্ববং ( অর্থাং পূর্বেলাক্ত রীভিতে ) তাহাদিগকে ধরিয়া লইষা, রাজার সর্বাক্তভা ধ্যাপন করাইয়া, তাহাদিগকে রাষ্ট্রাসীদিগের সম্মুখে উপস্থিত করাইয়া দেখাইবেন ॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থণাল্লে কণ্টকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে নিজবেষধারী গুঢ়পুরুষধারা মাণবক-প্রকাশন-নামক পঞ্চম অধ্যায় ( আদি হইতে ৮২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# ষষ্ঠ অধ্যায়

## ৮১শ প্রকরণ—শব্দা, চুরির মা**ল ও কর্মদারা চোরধর**।

দিশ্বপুরুষের বেষধারী শুপ্তচরগণের প্রধোগের পর (অর্থাৎ সিশ্ধবেষধারীরং চোরাদি ধরিতে অসমর্থ হউলে, তাহাদের ক্রিয়ার পরে ) শহা, চুরির মাল ও (সন্ধিচ্ছেদাদি কর্মের) চিক্ছারা চোরাদির অভিগ্রহ বা গ্রহণ (সম্প্রতি) বলা হউতেছে।

শঙ্কা বা সন্দেহবশতঃ নিম্নবণিত পুরুষগুলিকে ধরা বাইতে পারে, যথা,— ষাহার দায় ( অথাৎ কুলক্রমাগত সম্পত্তি ) ও কুটুম্ব । অর্থাৎ নিজের কৃষিপ্রভৃতি বুন্তি) ক্ষীণ হইয়াছে; যাহার ভৃতি বা বেতনাদিরূপ আয়ু অল্প ( অর্থাৎ ভক্তব্যয়ে অপগ্যাপ্ত); যে নিজের দেশ, জাতি, গোত্র, নাম ও (ব্যবসা) কর্ম-সম্বন্ধে বিপরীত পরিচয় দিয়া (অক্তকে) বঞ্চনা করে; যে জীবিকার্থ প্রচ্ছনভাবে কর্ম করে; যে মাংস, সুরা, ভক্ষাবন্ধ, ভৌজনের অস্তান্ত দ্ব্য, গন্ধ, মাল্যা, বস্ত্র ও অলঙ্কার-ব্যবস্থারে বেশী আসক ; যে অভাধিক বার করে ; যে বেশ্যা, জুয়ারী ও মছাপায়ীর সৃহিত ব্যবহারে প্রস্কুত্ব যে বার বার বিদেশে যাতায়াত করে; যে কোখায় থাকে ও কোখায় যায় তাহা অস্তেও জানিতে পারে না; যে বিকালে ( অস্থচিত সময়ে ) বিজন অরণ্যে ও গৃহারামে ( বাড়ীর বাগানে ) চরণশীল ; ধে অস্তের অগোচর স্থানে কিংবা আমিষযুক্ত ( অর্থাৎ আক্রমণ্যোগ্য ধনিপ্রভৃতি-যুক্ত ) স্থানে বহুবার উপস্থিত হইয়া বহুপ্রকারের জল্পনা-কল্পনা করে; যে তাহার অভিনৰ ক্ষত ও ত্রণের কারণ দুকাইবার উদ্দেশ্যে গুচভাবে সেই ক্ষত ও ত্রণের প্রতীকার করায়: যে নিভাই গৃহের মধ্যে অবস্থান করে; যে কাহাকেও সন্মুখে আদিতে দেখিলে ফিরিয়া যায়; যে স্ত্রী-পরায়ণ থাকে; যে অপুরের পরিজন ও ष्म्पादाद औ, स्त्रा ७ धृष्ट-विषया वाद वाद किड्यामावान करत ; य होशानि কুৎদিত কর্ম্মের উপযোগী শস্ত্র ও অক্তান্ত উপকরণসমূহের সংসর্গ বা পরিচয় রক্ষা করে; যে অর্ধরাত্তে প্রছন্নভাবে গৃহকুডেরে ( গৃহপ্রাচীরের । ছায়ায় সঞ্চরণ করে; যে উত্তম দ্রব্যের স্বরূপ বিঘটিত করিয়া অস্থানে ও অসময়ে তাহা বিক্রয় করে; যে ( অন্সের প্রতি ) শত্রুতার মনোভাব পোবণ করে; যাহার ব্যবসাকর্ম ও জাতি নীচ; যে নিজের প্রকৃত স্বরূপ লুকাইয়া চলে; যে নিজে অলিলী অর্থাৎ বেলচারী প্রভৃতি না হইয়াও তচিচ্ছ্যুক্ত ; যে লিঞ্চীর (অর্থাৎ বেলচারী প্রভৃতির) বেষধারী ইইয়াও তদীয় আচার ভক্ত করিয়া চলে; যে ইতিপূর্ব্বে চৌর্যাদিকার্য্যে পট্তা দেখাইয়াছে; যে নিজের (গর্ছিত) কর্মের জন্ত অধ্যাতি লাভ করিয়াছে; যে নাগরিক-নামক মহামাত্রকে দেখিলে নিজকে প্রকাইয়া অন্তত্ত সরিয়া পড়ে; যে নিজের মানপ্রমাস বন্ধ করিয়া (চুপ করিয়া) বসিয়া থাকে; যে ভীত থাকে; যাহার কণ্ঠধনি ও মুখবর্ণ শুক্ত ও ভিল্লপ্রকার; এবং যে শক্তপাদি কোন মহুম্বকে আসিতে দেখিলে ত্রাসমৃক্ত হয়;—কারণ, এই প্রকার লোকই ঘাতৃক, চোর, নিধির অপহারক, নিক্ষেপের অপহারক, ক্রোধের প্রয়োগে হুলার্য্যকারী, কিংবা গৃচভাবে অন্ত কোনও হুলার্য্য করিয়া জীবিকার উপার্জ্জনকারীদিগের অন্ততম বলিয়া শক্ষিত হওয়ার যোগ্য (এই স্থলে 'বর-প্রয়োগ' শক্ষের ব্যাখ্যা উপাদের মনে হয় না; শ্যামশাস্ত্রীর সংক্ষরণে 'বর'-শক্তি গত দেখা যায় না, বর-শক্ষের ক্রোধা অর্থ প্রসিদ্ধ বলিয়া প্রতীত হয় না; 'যে নিধি ও নিক্ষেপের অপহরণ ও প্রয়োগ করিয়া জীবিকা চালায়'—এইরূপও ব্যাখ্যা করা যাইতে পারে)। এই পর্যান্ত শক্ষাজনিত অভিগ্রহের বিষয় ব্যাখ্যাত হইল।

এখন আবার রূপ বা চুরির মাল্যারা (চোরাদির) অভিগ্রহের বা ধরিয়া ফেলার বিষয় বলা ইইভেছে।

কোনও দ্রব্য (প্রমাদবশতঃ ) হারাইয়া গেলে বা তাহা চুরি হইয়া গেলে বাদি ইহা না পাওয়া যায়, তাহা হইলে (দ্রব্যমামী) দেই দ্রব্যমন্ত্রে তজ্জাতীয় দ্রের ব্যাপারীদিগকে সংবাদ দিবে (অর্থাৎ কখনও যদি ইহা তাহাদের কাছে আদিয়া পড়ে সে-দিকে তাহাদের মনোযোগ আকর্ষণ করার জন্ত এরূপ করিতে হইবে)। যদি তাহারা দেই নিবেদিত দ্রব্য পাইয়াও ইহা ল্কাইয়া রাখে, তাহা হইলে তাহারা চুরিকর্মে সহায়তাদানের দোষভাগী হইয়া দওনীয় হইবে। যদি তাহারা এই দ্রব্য অমুক্রের দ্রব্য সে-কথা না জানে, তাহা হইলে সেই দ্রবাটি অর্পণ করিলেই দোষমুক্ত হইতে পারিবে। সংস্থাধান্দকে (পণ্যসংস্থানের অধিকারী পুরুষকে) না জানাইয়া, তাহারা পুরাতন জিনিসপত্রের আধান (বন্ধক রক্ষণ) বা বিক্রেয় করিতে পারিবে না।

সেই নিবেদিত দ্রব্য তাহাদের কাহারও কাছে আসিয়া পড়িলে, সে তদ্বাের আনয়নকারীকে ইহার আগম বা প্রাপ্তিবিষরে জিজ্ঞাসা করিবে—"তুমি এই দ্রব্য কোবার পাইরাছ ?" যদি সেই রূপা ভিগৃহীত লোকটি এইরূপ বলে—"ইহা দায়াদভাবে লক হইরাছে, ইহা অমুকের কাছ হইতে পাওয়া গিয়াছে, ইহা ধরিদ করা হইয়াছে, ইহা নৃতন প্রশ্বত করান হইয়াছে, ইহা আধিতে আবক রাধা হইয়াছিল বলিয়। এতকাল প্রছের ছিল, ইহা অমুক ছানে ও অমুক সময়ে লওয়: 
হইয়াছিল, ইহার অর্থ (মূলা) এত, ইহার প্রমাণ, লক্ষণ ও প্রকৃতিমূল্য এত"
( 'ক্ষণমূল্যং'-পাঠে 'ইহার বর্তমান সময়ের মূল্য' এইরূপ ব্যাঝ্যা হইতে পারে ৷,—
তাহা হইলে সেই দ্রব্যের আগনের সমাধান হইলে, তাহাকে ( অচোর বলিয়: )
মুক্তি দেওয়া যাইতে পারে ৷

যাহার দ্রব্য হার।ইয়া গিয়াছে সেই নাষ্ট্রিক ( অভিযোজা ) যদি রূপাভিগৃহীত লোকের সমাধানের ন্যায় নিজ সমাধান প্রদান করে, তাহা হইলে এই উভয়েব মধ্যে সেই দ্রব্য তাহারই হইবে যে ইহা পূর্ব্ব হইতেই এবং বছকাল যাবৎ ভোগ করিতেছে এবং যাহার সাক্ষী বিখাসভাজন । কারণ, দেখা যায় যে চতুপাদজ্ঞদিগের মধ্যেও রূপাদৃশ্য ও চিহ্নদাৃশ্য থাকে, স্বতরাং ইহা আশ্চর্যোর বিষষ্ট্রহবে না সে, একই মূলদ্র্য হইতে একই কার্মকর্ম্বারা উৎপন্ন কুপানিশ্বিত ভূষণ ও অক্যান্য ভাতের মধ্যে রূপ ও চিহ্নের সাদৃশ্য আছে ( অর্থাৎ চোরিত দ্রব্যেশ স্থামিম্বর্নির ভভটা সহজ্ঞ কার্যা নহে )।

রূপাভিগৃহীত লোক যদি বলে—"এই দ্রব্য আমি অমুকের নিকট হইওে থাচন। করিয়া লইয়াছি, আমি ইহা অমুকের নিকট হইতে ভাড়া লইয়াছি, ইহা অমুক ব্যক্তি আমার নিকট আধিরূপে রাখিয়াছে, ইহা অমুক ব্যক্তি কোল দ্রব্যাদি প্রস্তুত করার জন্ম নিক্ষেপরূপে রাখিয়াছে, ইহা অমুক ব্যক্তি বিখাদ-দহকারে আমার কাছে রাখিয়াছে, কিংবা ইহা আমি কুতক্ষের ভৃতিরূপে পাইয়াছি", ভাহা হটলে দেই দ্রবাদ্যরে দেই ব্যক্তিকে জিজ্ঞাদা করিয়া দত্য নির্ণীত হইলে ভাহাকে (রূপাভিগৃহীত ব্যক্তিকে) ছাভিয়া দিতে হইবে।

অথবা, যদি অপদার (অথাৎ যে ব্যক্তির নিকট হইতে দেই দ্বব্য পাওয়: গিয়াছিল বলিয়) রূপাভিগৃহীত ব্যক্তি নির্দেশ করিয়াছে দেই ব্যক্তি ) "ইহঃ এইভাবে আমার নিকট হইতে পাওয়া য়য় নাই" এইরূপ উক্তি করে, তাহঃ হইলে রূপাভিগৃহীত লোকটিকে—'অপর লোক কি কারণে দেই দ্রুবা তাহাকে দান করিয়াছে, দে নিজেও কি কারণে ইহা গ্রহণ করিয়াছে, এবং ইহার অভিজ্ঞানের চিহ্ন কি কি'—এই দমস্ত বিষয়,—দ্রব্যের হস্তান্তর করা দম্বন্ধে যে দানকারী, যে দাপক অর্থাৎ ইহা যে দেওয়াইয়াছে, যে নিবন্ধক বা লেথক, যে প্রতিগ্রহকারী, যে লেখনের উপদেশকারী ও যে সাক্ষী,—তাহাদিগের ঘারা প্রমাণিত করিবে।

উন্মিত (বিশ্বত ), প্রনষ্ট ( হারান ), বা নিম্পতিত ( ছন্নস্থান হইতে অপস্তত )

কোন দ্রব্য পাওয়া গেলে পর, ইহার সম্বন্ধে যদি অভিযোক্তা দেশ, কাল ও লাভের চিহ্ন প্রমাণ করে, তাহা হইলে সেই দ্রব্যসম্বন্ধে তাহার শুদ্ধি বৃথিতে হইবে । সেই কেবাসম্বন্ধে তাহার শুদ্ধি বৃথিতে হইবে ) । সেইনি দেশাদিবিষয়ে প্রমাণ না দিতে পারে, অর্থাৎ যদি সে অশুদ্ধ হয়, ভাহা হইলে সেই দ্রব্যের সমান-মূল্যের অন্য এবং তম্মূল্য-পরিমিত অর্থ্ও তাহার দওরূপে ধার্যা হইবে । অন্যথা, তাহাকে শ্বেয়দণ্ডে বা চুরির দণ্ডে দণ্ডিত হইতে হইবে । এই পর্যান্ত চুরির মালদারা অভিগ্রহণের বিষয় বলা হইল ।

সম্প্রতি আবার কর্মদার। অভিগ্রহণের বিষয় বলা হইতেছে। যদি দেখা যায় যে, চুরির বাড়ীর অদ্বার বা পশ্চাদ্ধার দিয়া প্রবেশ ও নিদাসন ঘটিয়াছে, অথবা সদি বা সিঁধ বা বেধদাধন বীজ্বারা দার ভাঙ্গা হইয়াচে, উচ্চ বাড়ীর জাল, বাতারান ও নীক্র (বা বলীক অর্থাৎ ছাদের ধার) বেধ করা হইয়াছে, অথবা উঠা ও নানার জ্বল কুড়া বা প্রাচীবের (ইইক উঠাইয়া ) তাহা বেধ করা হইয়াছে, অথবা একমাত্র উপদেশদ্বারাই উপলব্ধির বিধয়ীভূত, গৃত্তবের নিক্ষেপ গ্রহণ করিবার উপায় স্বরূপ, এবং অভান্তর ছেদে উৎপন্ন ধূলিরাশির লোপদাধনের উপদেশ্লী প্রাচীবের নিকটবর্তী স্থানে খনন করা হইয়াছে, তাহা হইলে ব্রিচে হটবে যে, চুরি-কর্মাটি আভান্তর জনের সহায়তার করা হইয়াছে।

আতান্তর জনদারা চুরিকর্ম সাধিত হইয়াছে এইরপ আশ্রার স্থলে নিয়লিখিত আসর বা আভান্তর লোকগুলিকে পরীক্ষা করিতে হইবে, যথা—বে
( জ্রাখেলা প্রভৃতি ) বাসনে আসক্ত, যে জ্রুর বা ভাক্তাম্মা লোকের সহায়ক, যে
চোরের উপকারার্থ ভাহার সংসর্গ করে, যে গ্রীলোক দরিদ্রকুলজাত অথবা যে
গ্রীলোক অপর লোকের উপর আসক্ত, অথবা যে ভ্রুতালোক সেইরূপ আচরণকারী
অর্থাৎ অপরের গ্রীর উপর আসক্ত, যে অতিনাব্রায় নিদ্রা যাইতেছে, যে নিদ্রার
অভাবে ক্রান্ত, যে মানসিক কপ্তৈ ক্রান্ত বা হংখী, যে ভীত-ভীত, যাহার মুথবর্ণ
শুক্ষ ও যাহার স্বর ভেদযুক্ত, যে চঞ্চল, যে অতান্ত প্রলাপ বকিওছে, যে উচ্চস্থানে
উঠিতে নিজ্প গাত্র উদ্বেগযুক্ত করিতে বাধ্য হয়, যাহার শরীরের বন্তথানি কাটিয়া
গিয়াছে, ঘর্ষণযুক্ত হইয়াছে, ফাটিয়া গিয়াছে বা ছিছিয়া গিয়াছে, যাহার
উব্বেগযুক্ত হাত ও পাদে দাগ দেখা যায়, যাহার কেশ ও নধ ধূলিময়, যাহার
কেশ ও নথ কাটা ও ভূম বা বাঁকা, যে সমাগ্ভাবে স্নান করিয়া (গাত্রে
চন্দনাদির ) অস্থলেপন করিয়াছে, যে শরীরে তৈল মালিশ করিয়াছে, যে সগুঃ
হাত ও পাদ ধ্যেত করিয়াছে, ধূলিতে ও পক্তে যাহার পাদের চিছ্নিক্রেপের ভূল্য

চিহ্নক্রিপ পরিলক্ষিত হয়, অথবা যে ( মুষিতগৃহের ) প্রবেশ ও নির্গমন্থানের মালা ও মন্তের গন্ধের ভায় গন্ধবিশিষ্ট, কিংবা তৎস্থানস্থিত বস্তথত, চন্দান্দি বিলেপমন্তব্য, বা স্বেদের ( বান্সের ) ভায় তৎতদ্বস্তম্মুক্ত ( অর্থাৎ গৃহের আসম্মবর্তী এই সব পুরুষদিগের পরীক্ষা করিতে হইবে )। এই প্রকার পুরুষদিগকে পরীক্ষা করিয়া জানিতে হইবে—কে চোর বা কে পরদারব্যভিচারী।

বাড়ীর বাহিরের লোক চোর হইলে প্রদেষ্টা, গোপ ও স্থানিকের সহায়ত। সাইয়া সেই চোরের ভলাশ করিবেন, এবং নাগরিক ছর্গ বা নগরের মধ্যে উপরি নির্দ্ধিষ্ট উপায় অবলম্বন করিয়া চোরের থৌজ করিবেন॥১॥

কোটিলীয় অর্থশান্তে কন্টকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে শঙ্কা, রূপ ও কর্মধার: চোরাভিগ্রহ-নামক বন্ধ অধ্যায় ( আদি হইতে ৮৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### সপ্তম অধ্যায়

৮২ম প্রকরণ—আশু বা অকাণ্ডে মুক্ত জনের পরীক্ষা

আশু বা অকাণ্ডে য়ত বাক্তির শরীর তৈলদার। সিঞ্চিত করিয়া তাহাকে পরীক্ষা করিতে হইবে।

যে মৃত ব্যক্তির মৃত্র ও মল নির্গত হইয়াছে, যাহার উদর ও ছক্ বায়ুদার। পূর্ণ হইয়াছে, যাহার হাত ও পাদ ফুলিয়া গিয়াছে, যাহার নেত্রদ্ধ উদ্দীলিত এবং যাহার কণ্ঠদেশে চিহ্ন বা দাগ রহিয়াছে, তাহাকে কণ্ঠশীড়নদারা উদ্ধান (উর্দ্ধান )-নিরোধপূর্বক মারা হইয়াছে বলিয়া জানিতে হইবে।

উপরি উলিখিত লক্ষণযুক্ত ( মৃত ) ব্যক্তির বাছ ও উরুদেশ সংকুচিত দেখা গেলে, সেই ব্যক্তি উদ্ধনে ( ফাঁসিতে ) মারা গিয়াছে ব.লয়া জানিতে হইবে।

বে (মৃত) ব্যক্তির হাত, পাদ ও উদর ফুলিয়া গিয়াছে, যাহার নেত্রন্ধ ভিতরে ড্বিয়া গিয়াছে, এবং যাহার নাভি উর্দ্ধগত হইয়াছে, সেই ব্যক্তিকে শূলে চড়াইয়া মারা হইয়াছে বলিয়া জানিতে হইবে।

ষে (মৃত) ব্যক্তির গুদ ও অক্ষি শস্ক বা কঠিন হইরা গিয়াছে, যে জিহব।
দংশন করিয়া আছে, এবং যাহার উদর ফুলিরা গিয়াছে, দেই ব্যক্তিকে জ্লে
ভূষাইয়া মারা ইইয়াছে জানিতে ছইবে।

বে (মৃত) বাক্তি রক্তদারা আন্ত্র হইরাছে, বাহার গাত্র ভাঙ্গিরা বা ছিঁ ড়িরা গিরাছে, সেই ব্যক্তি কাঠাঘাতে বা রশিপ্রহারে হত হইরাছে জানিতে হইবে।

যে ( মৃত ) ব্যক্তির গাত্র ভাঙ্গিয়া ও কাটিয়া গিয়াছে, তাহাকে ( প্রাদাদাদি হইতে ) পতিও বলিয়া জানিতে হইবে।

থে (মৃত) ব্যক্তির হাত, পাদ, দস্ত ও নথ কপিশ-বর্ণ ক্ষতি হয়, যাহার (শরীরের) মাংস, রোম ও চর্ম শিথিল হইয়াছে এবং যাহার মুখ কেনদ্বারা মাথা দেখা যায়, তাহাকে বিষ্যার। হত বলিয়া জানিতে হইবে।

যদি উপরি উক্ত লক্ষণযুক্ত ( মৃত ) ব্যক্তির কোন দইস্থান হইতে রক্ত নির্গত হইতে দেখা যায়, তাহা হইলে ভাহাকে দর্প বা অন্ত কোন (বিষযুক্ত ) কীট্থারা দুই হইলা হত বলিয়া জানিতে ইইবে।

যে (মৃত) ব্যক্তির বস্ত্র ও গাত্র এদিকে-ওদিকে বিসারিত দেখা যায় এবং যাহার অত্যন্ত বমন বা বিরেচন (মলনির্গমন) লক্ষিত হয়, তাহাকে মদকর রসযোগদারা হত বলিয়া জানিতে হইবে।

অথবা, উপরি উক্ত কারণগুলির মধ্যে অগুতম কারণে হত ব্যক্তিকে এমনও ননে করা যাইতে পারে থে, (অগু কেহ) তাহাকে হতা। করিয়া পারে রাজদণগুলুরে তাহাকে উদ্বন্ধনার। স্বয়ং মৃত বলিয়া প্রতিভাত করার জন্ম তাহার কণ্ঠদেশে উল্লখন-চিহ্নছেদ প্রদর্শন করাইয়া দিয়াছে।

বিষদারা হত ব্যক্তির (উদরস্থ) থাছজবোর অবশেষ হুগ্ণদারা। বোদায়নিক) পরীক্ষা করাইতে হইবে ('প্রেম্ভি:' এই পাঠস্থানে 'ব্য়েডি:' পাঠ প্রত হইলে, পক্ষিদারা দেই দ্রব্যাংশ থাওয়াইয়া বিষের নির্ণার করিতে হইবে)। (হত ব্যক্তির) হৃদয়ের কতক অংশ উঠাইয়া লইয়া ইহা অগ্নিতে বিক্ষেপ করিলে যদি দেখা যায় যে, ইহা চিট, চিট, শক্ষ করে এবং ইহা (বর্ষার) ইক্রম্বস্থ ক্লায় নানা বর্ণের রঙ্ধারণ করে, ভাহা হইলে ইহা বিষযুক্ত বলিয়া ব্নিতে হইবে। অপবা, যদি মৃত ব্যক্তি দক্ষ হইলে ভাহার হৃদয় অলগ্ধ দেখা যায়, ভাহা হইলে দেরূপ দেখার ফলে ইহা বিষযুক্ত ব্নিতে হইবে।

অথবা, মৃত ব্যক্তির যে সব ভূত্যজন তাহার বাক্পারুয় ও দণ্ডপারুয়াদাবা পীজিত হইয়াছে তাহাদিগকে অন্তেবণ করিতে হইবে ( যদি বা তাহারাই তাহার ইডাাদাধন করিয়া থাকে )। অথবা, ( মৃত ব্যক্তি-সম্বন্ধে সম্পর্কিত ) কোন বীলোক যদি ( বিশেষ ) হঃধদারা পীজিত, কিংবা অন্ত পুরুষের প্রতি আসক্ত শাকে, তাহারও অস্থসদ্ধান করিতে হইবে, এবং ( মৃত ব্যক্তির ) কোন বাদ্ধক্র যদি তাহার মৃত্যুতে তাহার সম্পত্তির দায় নির্ম্ব হইয়া তাহাতে বর্তিবে এইরূপ মনে করে, কিংবা মৃত ব্যক্তির কোন স্ত্রীজন তাহার নিজভোগ্য হইবে – এইরূপ মনে করে, তাহা হইদে তাহাকেও অহুসন্ধান করিতে হইবে। এইভাবে হত হইয়া পরে উদ্ধানে উল্লেখিতব্যক্তির সম্বন্ধেও এইসব তথ্য অহুসন্ধান করিতে হইবে।

অধবা, স্বয়ং উদ্বন্ধনে মৃত ব্যক্তির কি অযুক্ত অর্থাৎ মাত্রাতিরিক্ত কষ্টপীড়নাদি হুইয়া থাকিবে তদ্বিধয়েও অহুসন্ধান করিতে ইইবে।

সেন্দ্রতি সাধারণভাবে প্রমারণের নিমিন্তসমূহ পর্য্যালোচিত হইতেছে।)
অথবা, সাধারণ জনগণের নিমিলিথিত রোষকারণগুলি ঘটিতে পারে— যথাত্ত্রীনিমিত্ত দোষ, দায়ভাগজনিত দোষ, ( রাজকুলে ) নিয়োগকর্মজনিত স্পর্জ্জা বা
সংঘর্ষ, প্রতিপক্ষের প্রতি ধ্বেষ, পণ্যসংস্থা বা বাণিজ্ঞাজনিত অপচারাদি দোর,
কিংবা সমবায় বা সংঘনিমিত্ত দোষ ( অর্থাৎ সংঘের প্রাধান্তভ্রসম্পর্কীয় দোষ )
বা ( পূর্ন্বোজ্জ \ বিবাদপদস্থন্দে অন্তত্তম কারণে সমৃত্তুত দোষ ( অর্থাৎ সাধারণ
জনগণের মধ্যে এইসব কারণেই পরস্পরের প্রতি রোষ সঞ্চারিত হয় )। এই
রোধের জন্ত এক ব্যক্তি অপর ব্যক্তির ঘাতের বা হত্যার কারণ হইয়া পড়ে।

যে ব্যক্তি শ্বরং হত, বা অন্ন কোন প্রযুক্ত পুরুষধার। হত, বা অর্থের জন্ম চোরের দারা হত, বা অন্ন ব্যক্তির প্রতি বৈরভাব-পোষণকারীদের দারা ভুলক্রমে হত হয়, তাহার হত্যা-সহদ্ধে নিকটবর্তী লোকের নিকট তথা অন্বেবণ করিতে হইবে। তাহাকে জিজ্ঞাসা করিতে হইবে—'কে মৃতব্যক্তিকে (জীবিতকালে) ডাকিয়াছিল, কে তাহার সঙ্গে ছিল, কাহার সহিত সে গিয়াছিল, কে তাহাকে হত্যাস্থানে আনিয়াছিল'?

আবার, যাহার। তাহার হতাভূমির কাছে কাছে যুরানিরা করিয়াছে তাহাদিগের প্রত্যেককে এক এক করিয়া জিজ্ঞাদা করিতে হইবে—'সেই ব্যক্তিকে এখানে কে আনিয়াছে, কে তাহাকে হত্যা করিয়াছে, কাহাকে তোমরা সশস্ত, কিন্তু, প্রভন্নচারী বা উদ্বিগ্ন দেখিয়াছ ?' তাহারা যে প্রকার বলিবে তদহুসারে জিজ্ঞাসাবাদ আরও চালাইতে হইবে।

মৃত ব্যক্তির শরীরে রত (মাল্যাদি) উপভোগদ্রব্য, (ছত্রাদি) পরিচ্ছদ, বন্ধ, (জটিশস্থাদি) বেব, বা অলস্কার (উত্তমরূপে) দেখিয়া—তৎ-তৎ দ্রব্যের ব্যবহারী বা ব্যবদাকারীদিগকে (মালাকারাদিকে) জিজ্ঞাসা করিতে হইবে—(মৃতব্যক্তির সহিত) কাহার মিত্রতাদি-সংযোগ ছিল, সে কোধার বাস করিত,

্দ্রখানে তাঁহার বাদের কোন কারণ ছিল কি না, সে কি কর্ম করিত, তাহার ্দানাদিকর্মান্ত্র্ঠানের ) বাবহার কেমন ছিল ? তাহার পরে (ঘাতকের) অনুষ্ঠণ করিতে হইবে॥ ১-২॥

যে পুরুষ কাম বা ক্রোধবশতঃ রক্ষ্ক, শস্ত্র বা বিষদ্ধারা স্বয়ং আত্মহত্যা করে, অথবা যে প্রী পাপদ্ধারা মোহিত হইয়া আত্মহত্যা করে—তাহাকে চণ্ডালদ্ধারা শেল দিয়া বাধাইয়া রাজমার্গে টানাইতে হইবে। তাহাদের ( দাহসংস্কারাদি ) শ্লানবিধি সাধিত হইবে না এবং তাহাদের জন্ম জ্ঞাক্তিক্যা (জলাঞ্চিল প্রভৃতিও) সৃধিত হইবে না॥ ৩-৪॥

যে বান্ধব তাহাদের ( আত্মঘাতীদিগের ) প্রেতকার্যের ক্রিয়াবিধি ।তর্পণাদি) সম্পাদন করিবে, সে (মৃত্যুর পরে) আত্মঘাতীর গতি প্রাপ্ত হইবে, অথবা, ্যহাকে (জাতিচ্যুত করিয়া) স্কনদিগের পরিতাক্ত করিতে হইবে॥ ৫॥

যে বাজ্জি পতিত পুরুষের সহিত্যাবহার করিবে, সে এক বংসরের মধোই বাজন, অধ্যাপন ও বিবাহাদি-সম্বন্ধ ইইতে পতিত হুইবে। আবার তাহাদের ফাছত ব্যবহার করিলে, অন্ত থাজিও এক বংস্বের মধে। তেমন পতিত হুইবে॥ ৬॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে কউকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে আশু বা অকাণ্ডে মত জনের পরীক্ষা-নামক সপ্তম অধ্যায় ( আদি হইতে ৮৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## অস্টম অধ্যায়

৮৩ম প্রকর্ণ—বাক্য ও কর্মারার। অনুযোগ (বা তদশু-করণ)

যে ব্যক্তি মুধিত বা অপক্রতধন হট্য়াতে তাহার স্থীপে এবং বাহিরের ও ভিত্রের লোকদিগের স্থীপে, দাক্ষীকে অভিশপ্ত বা (চার্য্যাদির জল্ল) সংশিক্ষ পক্ষরের দেশ, জাতি, গোত্ত, নাম, কর্ম্ম বা ব্যবসা, বিষয়সম্পত্তি, সহায় ও নিবাস-সম্বন্ধে প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিতে হইবে। এই বিষয়সমূহসম্বন্ধে সাক্ষীর ভাষণগুলিকে মুক্তি বা উপপত্তিসহকারে মিলাইয়া লইতে হইবে। অর্থাৎ প্রতিবাদীর বর্ণনার সহিত মিলাইতে হইবে)। তৎপর সংদিশ্ধ পুরুষকে, গ্রহণ বা গ্রেপ্তারের স্বয়য় পর্যান্ত তাহার পূর্ক্ষিনের কার্য্যকলাপ ও পূর্ব্ব রাত্তিতে নিবাসমন্বন্ধে প্রশ্ন করিতে হইবে। যদি অভিশপ্ত বা সংদিশ্ধ পুরুষের অপরাধ হইতে নিক্সতি পাওয়ার স্কান লাভ হয়, তাহা হইলে তাহাকে শুদ্ধ বা নিরপরাধ

বলিয়া ধরা হইবে। অন্তথা, সে যে কর্ম করিয়াছে বলিয়া অপরাধী তাহ। ধার্যা বলিয়া মনে করা ইইবে।

ঘটনার পরে তিন দিন পার হইয়া গেলে, **শক্ষিতক** বা সংদিশ্ধ পুরুষকে আর ধরা হইবে না ( অর্থাৎ তাহাকে গ্রেপ্তার করা হইবে না \, কারণ, তথন ( বিলম্বের জন্ম ) তাহাকে আর প্রশ্ন জিজ্ঞাসার অবসর থাকিবে না— কিন্তু, ( চৌধ্যাদির ) উপকরণ প্রাপ্ত হইদে তথনও তাহাকে ধরা যাইতে পারিবে।

যে ব্যক্তি অচোরকে চোর বলিবে তাহার প্রতি চোরের সমান দণ্ড বিহিত্ত ছইবে। এবং যে ব্যক্তি চোরকে লুকাইয়া রাখিবে তাহারও চোরসম দণ্ড হইবে।

অন্ত কোন চোর যদি অপর ব্যক্তিকে ( চুরি-সম্বন্ধে) সংদিশ্ধ বলিয়া অভিহিত করে, এবং যদি ইহা প্রতিপন্ন হয় যে, প্রথম ব্যক্তি তাহাকে শক্ততা ও দ্বেষে ভন্ত সেইরূপ বলিয়াছে, তাহা হইলে দ্বিতীয় ব্যক্তিকে শুদ্ধ বা নিরপরাধ বলিয়া ধরিতে হইবে। যে ব্যক্তি শুদ্ধ বা নিরপরাধ ব্যক্তিকে ( কারাবাসাদি ) শান্তি ভোগ করায়, ভাহার প্রতি প্রথমসাহসদশু বিহিত হইবে।

শঙ্কানিষ্পন্ন পুরুষকে ( অর্থাৎ চুরিপ্রভৃতি বিষয়ে যাহার উপর সন্দেহ হইয়াছে তাহাকে ) তাহার (চৌর্য্যাদি অপরাধবিষয়ে ) সাধনদ্রবা, তাহার মন্ত্রণাদাতা, সহায়কারী ও অন্তপ্রকারের সন্ধীদিনের সম্বন্ধে প্রশ্নদারা জিজ্ঞাসাবাদ করিয়া নির্ণাঃ করিতে হইবে। এবং (চৌর্যাদি) কর্মস্বন্ধেও,—'কে কে গৃহে প্রবেশ করিয়াছে. কি কি দ্রবা গ্রহণ করা হইয়াছে, এবং চৌরিত দ্রব্যের বিভাগে কাহার কত অংশ পডিয়াছে গৃ—এইসব প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিয়া দোষের সমাধান করিতে হইবে।

যে ব্যক্তি এইদব কারণবিষয়ে কোনরূপ চিন্তা না করিয়া, (ভয়াদিবশতঃ চুরিসম্বন্ধে) উলট-পালটভাবে কথা বলে, তাহাকে অচোর বলিয়া জানিতে হইবে। কারণ, ইহাও দেখা যায় যে, কোন লোক চোর না হইলেও, হঠাৎ চোরের রাজাতে পথ চলিয়া, চোরের বেব, শস্ত্র ও চুরির মালের, সমান বেধ, শস্ত্র ও মাল ভাহার কাছে রাখায়, অথবা সভ্যসত্যই চুরির মাল তৎসমীপে অবস্থিত পাওয়ায়, ভাহাকে গ্রেগ্রার করা হইয়াছে, যেমন হইয়াছিল (মহবি) মাভেব্যের বেলায়, —কারণ, এই মাওব্য (রাজপুক্ষকৃত ভাড়নাদি) কর্মজনিত (শারীরিক) ক্লেশের ভয়ে, নিজে অচোর হইয়াও, বলিয়াছিলেন, "আমিই চোর" (মহাভারতের আদিপর্ফোর ১১৬-১১৭ অধ্যায় দ্রাষ্ট্রব্য)।

এতএব, সমস্ত প্রকারের পরীক্ষা শেষ করিয়া অপরাধীকে দও দিতে ছইবে ৷ অল্প অপরাধ করিলে, বালক, বৃদ্ধ, ব্যাধিগ্রস্ত, মন্ত, পাগল, শুধা, তৃষ্ণা ও পথচলায় ক্লান্ত, অতিমাত্রায় ভোজনকারী ও অজীর্ণ রোগের রোগী বা বলহীন গোককে, (শারীরিক ক্লেশদায়ক) কর্ম করাইতে ইইবে না।

সমানশীলসম্পন্ন লোক, ব্যভিচারিনী (বা বেশ্যা) স্ত্রীলোক, প্রবাদের আধ্যান-কারী, কথক, বাসস্থানদাতা ও ভোজনদাতাশ্বরা (চোরাদির) অপসর্পনের বা গুচভাবে শংবাদসংগ্রাহের কার্য্য চালাইতে হইবে। এইভাবে (চোরাদিকে) প্রবন্ধিত করিতে হইবে (অর্থাৎ তাহাদিগকে ধোকা দিয়া ধরিতে হইবে)। অথবা, নিক্ষেপ বা স্থায়গত দ্বোর অপহরণবিধ্যে ঘেরূপ অন্তমন্ধানের উপায় বলা হইয়াছে, এইক্ষেত্রেও সেই উপায় অবলম্বন করিতে হইবে।

যাহার অপরাধ নিশ্চিত করা হইবে, তাহাকেই দশুকর্ম দিতে হইবে। কিন্ত, গভিনী এবং একমাদের কম কৃতপ্রদ্বা স্তীকে দশুকর্ম দিতে হইবে না। (পুরুষের অপেক্ষায়) স্ত্রীলোকের দশুকর্ম অর্দ্ধ-পরিমিত হইবে। অথবা, কেবল বাগদেশু প্রয়োগ করিতে হইবে।

বিদ্বান আশাণ ও তপস্থীকে সন্তিপুরুষদ্বারা ধরাইয়া এদিক্-ওদিক্ ঘ্রানরূপ দও দিতে হইবে। যে অধিকারী দওকর্মা ও ব্যাপাদন বা মারণদ্বারা উক্ত দঙ্গের নিয়ম অতিক্রম করেন বা করান, ভাহার উপর উত্তম্সাহসদও বিহিত হইবে।

লোকব্যবহারে চারিপ্রকার দণ্ডকর্ম প্রদিদ্ধ আছে যথা,—(১) ছয়টি দণ্ডাঘাত,
(২) সাতটি কশাঘাত, (৩) পৃষ্ঠে সংশ্লেষিত করিয়া ছইটি হাতের বন্ধন ও
তৎসহ মস্তকবন্ধন—এই ছুইপ্রকার বন্ধন, এবং (৪) নাসিকাতে (লবণজ্জ-)
নিষেচন।

অত্যাধিক পাশকারীদিগের জন্ত ( আরও অতিরিক্ত চতুর্দশপ্রকারের দশুকর্ম বিহিত আছে, যথা)—নয় হাত লম্বা বেত্রলতাদার। বারটি আঘাত, ছইপ্রকার উরুবেইন অর্থাৎ হুইটি রক্ষুদ্রারা উরুবন্ধন এবং তৎসহ শিরোবন্ধন, করঞ্জলতাদ্বারা কুড়িটি আঘাত, বত্রিশটি চপেটাঘাত, ছইপ্রকার রশ্চিকবন্ধন অর্থাৎ পৃষ্ঠদিকে বামহাত নিয়া বামপাদের সহিত বন্ধন ও দেইভাবে দক্ষিণহাত নিয়া দক্ষিণ-পাদের সহিত বন্ধন, ছইপ্রকার উল্লয্ন বা লটকান অর্থাৎ ছইটি হাত বাধিয়া পটকান ও ছইটি পাদ বাধিয়া পটকান, হাতের নগে স্ফটী প্রবেশন, যবাগু (যাউ) পান করাইবার পরে (মৃত্রনিরোধন করাইয়া) রাখা, অঙ্গুলির এক পর্বাধ্যন্ত অর্থিদারা দহন, (মৃত্রাদি) স্বেছত্রর পান করাইয়া একদিন পর্যান্ত (রৌছে বা অগ্রিসমীপে) তাপন, শীতকালের রাজ্রিতে (জলসিক্ত) বল্পজাদের শ্রায়ায় শোভ্যাইয়া রাখা—এই চতুর্দ্ধশ প্রকারের দণ্ডকর্ম পূর্ব্বাক্ত প্রসিদ্ধ

চারি প্রকার দণ্ডকর্মের সহিত মিলিত হইয়া অষ্টাদশ প্রকারের দণ্ডকর্মে পরিণত হয়।

এই দশুক্ষের (রজ্প্রভৃতি) উপকরণ, (দশুপ্রভৃতির) প্রমাণ বা মাপ, (বেত্র ও করঞ্লতা প্রভৃতি) প্রহরণ, (দশুনীয় লোকের) প্রধারণ বং স্থাপনাদির প্রকার, এবং (দশুনীয় লোকের শরীরের অস্কুণ্ডণ) দশুপ্রকারের নির্দ্ধারণবিষয় অরপ্রস্ট-নামক প্রসিদ্ধ শাস্ত্রকারের গ্রন্থ হইতে জানিয়া লইভে হইবে। (দশুনীয় লোককে এক এক দিন পর পর এক এক প্রকারের কায়িক প্রমের কার্য। করাইতে হইবে।

যে ব্যক্তি পূর্ব্বেও (চৌর্যাদি) অপরাধ-কর্ম করিয়াছে, যে ব্যক্তি অপহরণের প্রতিজ্ঞা করিয়া তাহা করিয়াছে, চোরিত দ্রব্যের একদেশ বা একাংশ যে ব্যক্তির নিকট পাওয়া গিয়াছে, যে ব্যক্তি চৌর্যাদি কর্ম করার সময়ে কিংবা চোরিত দ্রব্য বহন করিয়া নেওয়ার সময়ে ধরা পড়িয়াছে, যে ব্যক্তি রাজকোষ গুকাইতে চেষ্টা করিয়াছে, এবং যে বাজ্তি হত্যাদি ) গুরুতর অপরাধ করিয়াছে—ভাহাদিগকে রাজার আজ্ঞান্ত্রসারে সমগুভাবে (সমুদিতভাবে), বাস্তভাবে (একটি একটি করিয়া পুর্থগুভাবে) বা অভ্যক্তরূপে (জ্রেম ক্রমে) দগুকর্ম করাইতে হইবে।

যে কোন প্রকারের অপরাধ করিলেও ব্যাহ্মণকে (বধতাড়নাদিদ্বারা) পীড়ন করিতে হইবে না। সে যে অপরাধী ভাহার স্চনার্থ ভাহার ললাটপ্রদেশে অপরাধিচিক্ন লাগাইয়া দিতে হইবে,—ভাহার যে-জাতীয় ব্যবহার হইতে প্রচ্নাতি ঘটিয়াছে ভাহা যেন সকলেই জানিয়া লইতে পারে। (অপরাধান্ত্রসারে অভিশপ্ত চিক্ন হইবে—যথা,) চুরি করিলে কুক্সবের চিক্ন, মান্ত্র্য বধ করিলে কর্মের চিক্ন, গুরুভাগ্যা গমন করিলে ভগ বা স্ত্রীযোনির চিক্ন ও মন্ত্রপান করিলে মন্ত্র্যক্ষর বা মন্ত্রপভাগ্যা রামন করিলে ভগ বা স্ত্রীযোনির চিক্ন ও মন্ত্রপান করিলে মন্ত্র্যক্ষর বা মন্ত্রপভাগ্যার চিক্ন।

প্রপেকর্মকারী ব্রাহ্মণকে উক্তরূপ অঙ্কারা ব্রণিত বা চিহ্নিত করিয়া এবং তাহার অপরাধের বিষয় সের্ক্সমক্ষে) ঘোষণা করিয়া, রাজা তাহাকে রাজা হইতে নির্কাসিত করিবেন, অথবা আক্র বা ধনিময় প্রদেশে বাস করাইবেন॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে কউকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে বাক্য ও কর্মছার। অসুযোগ-নামক অষ্টম অধ্যায় ( আদি হইত ৮৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### নবম অধ্যায়

#### ৮৪ম প্রকরণ – সর্ব্ধ প্রকার অধিকরণের রক্ষণ বা নিয়ন্ত্রণ

সমাহর্জা ও প্রদেষ্টারা প্রথমতঃ অধ্যক্ষগণের ও অধ্যক্ষগণের অধীনস্ত পুরুষ বা কর্মচারিগণের সম্বন্ধ নিধ্যম ব্যবস্থা করিবেন। যদি খনির ও চলনাদি দারবস্তুর কর্মান্ত বা করিখানা হইতে (কোনও কর্মচারী) সারবস্তু বা রত্ন অপ্রব্যাক্তরে, তাহা হইলে তাহার শুদ্ধবাদ অধাৎ অনুক্রশ্মারণ দণ্ড হইবে।

যদি (কোনও কর্মচারী) কল্পবস্তর (অথাৎ কার্পাদাদি অসার বস্তর)
কর্মান্ত বা কারখানা হইতে কোনও কল্পদ্র, বা কাষ্টাদি দ্রবোর কর্মান্ত হইতে
কোনও আসবাবপত্র অপহরণ করে, তাহা হইলে ভাহার প্রথমসাহসদও হইবে।

শদি পণাভূমি ( পণাবস্তুর উৎপত্তি স্থান ) হইতে ১ মাধম্লা হইতে ট্র পণ বা ৪ মাধম্লার কোনও রাজপণা কেছ অপহরণ করে, তাহা হইলে ভাহার ১২ পণ দণ্ড ছইবে। চত্র্মাব মূলা ছইতে ট্র পণ বা ৮ মাধ মূলার রাজপণা ভূরি করিলে তাহার ২৪ পণ দণ্ড ছইবে। ৮ মাধ মূলা হইতে ট্র পণ বা ১২ মাধ মূলার রাজপণা ভূরি করিলে তাহার ৩৬ পণ দণ্ড ছইবে। ১২ মাণ মূলা ছইতে ১ পণ মূলার রাজপণা ভূরি করিলে ভাহাকে ও৮ পণ দণ্ড দিতে হইবে। ১ পণ মূলা হইতে ২ পণ মূলার রাজপণা ভূরি করিলে ভাহার প্রথমসাহসদণ্ড হইবে। ৪ পণ মূলার রাজপণা ভূরি করিলে ভাহার অধ্যমসাহসদণ্ড হইবে। ৪ পণ মূলার হাজপণা ভূরি করিলে ভাহার বিজ্ঞমসাহসদণ্ড হইবে। এবং ৮ পণ মূলার রাজপণা ভূরি করিলে ভাহার বিজ্ঞমণা ভূরি করিলে ভাহার বিজ্ঞমণা ভূরি করিলে ভাহার বিজ্ঞমণা ভূরি করিলে ভাহার বিজ্ঞমণা হুরি করিলে ভাহার কুলা, তির্ম্মিত ভাত ও উপক্ষর (আস্বাবপত্র) ভূরি করিলে অপরাধীর প্রতি পূর্কোরিছিত দণ্ডগুলিই ( অর্থাং ১২ পণাদি দণ্ডগুলিই ) প্রযুক্ত হইবে।

কোষাগার, ভাগুগার, অক্ষশালা ব্যবশাদিশোধনের স্থান ) হইতে ই মাধ অর্থাৎ ১ কাকণী মূল্য হইতে ১ মাধ মূল্যের কোনও দ্রুখাদি চুরি করিলে, (অপহরণকারী কর্মচারীর প্রতি ) পূর্কোল্লিখিত দণ্ডের বিভণ দণ্ড (অর্থাৎ ২৪ প্রণাদি দণ্ড ) বিহিত হইবে।

যে কর্মচারীরা (স্বাং অপহারক হইয়া) অন্ত পোকদিগকে চোর কল্পনা

করিয়া ভাহাদিগকে (প্রহারাদিদ্বর!) কট্ট দিবে, ভাহাদিগের প্রতি **চিত্রবধ** অর্থাৎ ক্লেশসহিত মারণদণ্ড বিহিত হইবে। ইহা রাজপরিপ্রহ বা রাজকীয় প্রদেশ-বিষয়ে ব্যাখ্যাত হইল।

কিন্তু, রাজকীয় প্রদেশের অভিবিক্ত বাহু প্রদেশবিষয়ে ( অর্থাৎ পৌরজান-পদক্ষেত্রাদিবিষয়ে ) যে কর্মচারী দিনের বেলায় প্রচ্ছন্নভাবে ক্ষেত্র, খলভূমি, গৃহ ও দোকান হইতে, ১ মাষ মূল্য হইতে টু পণ বা ৪ মাষ মূল্যের কোনও কুণা, ভন্নিশ্মিত ভাগু ও উপন্ধর (আসবাবপত্র) চুরি করিবে, ভাহাকে ৩ পণ দণ্ড দিতে হইবে: অথবা, (তৎপরিবর্ত্তে) গোময়দারা ভাহার দেহ লেপিয়া, ভাহার চৌর্য্য পটহযোষণাদ্বারা প্রকাশপূর্ব্যক ভাহাকে নগরের চতুর্দ্দিকে খুরাইভে হইবে। 🕏 পণ বা ৮ মাষ মূশ্যের দ্রব্য চুরি করিলে তাহাকে ৬ পণ দণ্ড দিতে ছইবে। অথবা, (ভৎপরিবর্ত্তে) তাহার দেহ গোময়ের ভন্মদারা প্রলিপ্ত করিয়া, ভাহার অপরাধ পটহন্ধারা ঘোষণা করিয়া ভাহাকে নগরের চড়ুর্দ্ধিকে খুরাইভে হইবেঃ 🐕 পণ বা ১২ মাৰ পৰ্যান্ত মূল্যের বস্তু চুরি কমিলে ভাহাকে ৯ পণ 🛭 দণ্ড দিতে হইবে। অথবা, ( ভংপরিবর্ত্তে ) তাহার দেহ গোময়-ভস্মদারা প্রালিপ্ত করিয়া, অথবা মুন্ময় শরাব ( শর) ) -দারা রচিত মেখলা তাহার ( গলায় বা কটিদেশ ) পরাইয়া, ভাহার অপরাধ পটহনিনাদে ঘোষণাপূর্বক ভাহাকে নগরের চতুর্দিকে গুরাইতে হইবে। ১ পণ বা ১৬ মাঘ পর্যান্ত মূল্যের দ্রব্য অপহরণ করিলে তাহাকে ১২ পণ দণ্ড দিতে হইবে ৷ অথবা, তৎপরিবর্ত্তে তাহার মস্তক মুণ্ডিত করিয়া দিতে হইবে, কিংবা ভাহাকে দেশ হইতে নিকাসিত করিতে হইবে। ২ পণ পর্যান্ত মূলোর দ্রবা চুরি করিলে ভাছাকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে। অথবা, ( তৎপরিবর্ত্তে ) তাহার মন্তক মুগুত করিয়া দিতে হইবে, কিংবা ইষ্টকৰগুদারা তাড়াইয়া তাহাকে দেশ হইতে নিফাসিত করিতে হইবে। ৪ পণ পর্যান্ত মূল্যের দ্রব্য অপহরণ করিলে ভাহাকে ৩৬ পণ মণ্ড দিতে হইবে। ৫ পণ পর্যাস্ত মূল্যের দ্রব্য চুরি করিলে ভাহাকে ৪৮ পণ দণ্ড দিতে হইবে। ১০ পণ পর্য্যন্ত মূল্যের দ্রব্য চুরি করিলে ভাহাকে প্রথমদাহদদণ্ড দিতে হইবে। ২০ পণ পর্যান্ত মূল্যের দ্রব্য চুরি করিলে ভাহাকে ২০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। ৩০ পণ পর্যান্ত মূল্যের দ্রব্য চুরি করিলে ভাষাকে ৫০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। ৪০ পণ পর্যাপ্ত মৃশ্যের দ্রব্য অপহরণ করিলে তাহাকে ১০০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। ৫০ পণ পর্য্যন্ত মূল্যের দ্রব্য চুব্লি করিলে তাহাকে বধদণ্ড পাইতে হইবে।

কেছ যদি দিনে বা রাজিতে, যামান্তরালে রক্ষাধীন বস্তু বলাৎকারে অপাহরণ

করে, এবং উক্ত মৃপ্যগুলির অর্ধ পর্যান্ত মৃল্যের দ্রবা অপহৃত হয়, তাহা হইলে অপহরণকারীকে উক্ত দণ্ডের দ্বিওণ দণ্ড দিতে হইবে ( যথা, ই মান মৃল্য হইতে । মান পর্যান্ত মূব্যা অপহৃত হইলে, চোরকে ও পণ স্থলে ৬ পণ দণ্ড দিতে হইবে )। আবার, যদি কেহ সশস্ত্র হইয়া দিনে বা রাজ্রিতে বলাৎকারপূর্ব্বক উক্তমূল্যের ই অংশ পর্যান্ত মূল্যের দ্রব্য অপহরণ করে, তাহা হইলে দেই অপহরণকারীকে উক্ত দণ্ডের দিগুণ দণ্ডই দিতে হইবে।

কোন কুট্মিক (গৃহপতি ), ( সরকারী বিভাগের) অধ্যক্ষ, প্রামাদির মুখ্য ও (গ্রামনগরাদির ) স্থামী বা পালক, কৃটশাসন (কপটলেথ) ও কৃটমুদ্রা (কপটশিলমোহরাদি) প্রস্তুত করেন বা করান, তাহা হইলে তাঁহাদিগকে ফ্রাক্রমে প্রথমসাহসদও, মধ্যমসাহসদও, উত্তমসাহসদও ও বধদওে দণ্ডিত হইতে হইবে। অথবা, তাঁহাদের অপরাধারসারে উপযুক্ত দণ্ড বিহিত হইবে।

যদি কোন ধর্মস্থ (বিচারক) আদাপতে উপস্থিত বিবাদী পক্ষের কোন পুরুষকে অঙ্গুলিনির্দ্ধেশপূর্ত্তক কোনরূপ ভর্জন করেন, বা কথাদ্বারা ভর্ৎসম। হরেন, বা অপদারিত করেন ( বাহির করিয়া দেন ), বা ভাহার নিকট হইতে উৎকোচাদি গ্রহণ করেন, ভাহা হইলে ভাহার ( সেই ধর্মন্তের) প্রতি প্রথমসাহস-**ণও বিধান করিতে হইবে । তিনি যদি সেই বিবদমান পক্ষের প্রতি বাকপারুয়** এর্থাৎ কঠোর বাক্য প্রয়োগ করেন, ভাহা হইলে ভাঁহার (ধর্মস্থের) পূর্ব্বদণ্ডের দিওণ দণ্ড ছইবে। যদি তিনি (ধর্মাস্থ), (বিচারকালে) জিজ্ঞাদাই জনকে জিজ্ঞাসা না করেন, জিজ্ঞাসার অনর্হ জনকে জিজ্ঞাসা করেন, জিজ্ঞাসা করিয়াও (উত্তর না লইয়া কাহাকেও) ছাডিয়া দেন, ( সাক্ষীকে বক্তবা ) লিধাইয়া দেন, াছাকে (বিশ্বত বক্তব্য) স্মরণ করাইয়া দেন, (বাক্যের শেষাংশের পূরণার্থ) আভাংশ বলিয়া দেন, তাহ। হইলে সেই ধর্মধকে মধ্যমদাহদণও দিতে হইবে। যদি তিনি (ধর্মান্ত) উপযুক্ত সাক্ষ্যদায়ীকে কিছু জিজাসা না করেন, অহুপযোগী শাক্ষীকে জিজ্ঞাসা করেন, বিনা সাক্ষো কোন বিষয় নির্ণীত করেন, ছলপূর্বক শাক্ষীকে ( অসত্যবাদী ) প্রতিপন্ন করেন, রূপা কাল কাটাইয়া সাক্ষীকে শ্রাম্ভ ক্রিয়া হটাইয়া দেন, উচিত জ্মপ্রাপ্ত বাক্যও তাক্তক্রম বলিয়া বিবেচনা করেন, সাক্ষিগণকে মতিসাহাষ্য ( বুদ্ধির সহায়তা ) প্রদান করেন, এবং বিচারিত হইয়া নির্ণীত কার্য্যও পুনরায় বিচারজ্ঞ গ্রহণ করেন, তাহা হইলে তাঁহার প্রতি উত্তমসাহসদও বিহিত হইবে। পুনর্কার এই প্রকার অপরাধ করিলে তাঁহার দিগুণ দণ্ড হইবে এবং তাঁহাকে ( ভায়াধীশের ) পদ হইতে চ্যুত করিতে হইবে।

যদি (বিচারালয়ে নিযুক্ত) লেখক কাহারও ঘারা উক্ত কোন বাকা ন' লিখেন, অন্তক্ত বাকা লিখেন, হুরুক্ত বাকা সাধু করিয়া লিখেন, স্ক্ত উত্তমরূপে উক্ত) বাকা অসাধু করিয়া লিখেন, অথবা প্রতিপন্ন অর্থকৈ বিকল্পিত করেন (অর্থাৎ সাধোর সিদ্ধিকে অভ্যথা করিয়া ভূলেন), ভাহা হইলে তাহার প্রতি প্রথমসাহসদত্ত বিহিত হইবে, অথবা তাঁহার অপরাধান্ত্রসারে দত্ত বিহিত হইবে।

যদি (আদালতের) ধর্মান্ত বা (কোজদারির) প্রাদেষ্টা দণ্ডের অন্থাপারুক (নিরপারার) জনের উপর হিরণাদণ্ড প্রয়োগ করেন, তাহা হইলে তাঁহাকে নিজের ক্লিপ্ত বা প্রায়ুক্ত হিরণাদণ্ডের দ্বিগুণ দণ্ড দিতে হইবে। জায়া দণ্ড হইছে প্রতিথানি পরিমিত দণ্ড হীন বা অধিক প্রথা লায়া দণ্ড হইতে অতিরিক্ত বা অধিক দণ্ড দিলে, যতথানি পরিমিত দণ্ড হীন বা অধিক প্রদন্ত হইবে, তাহার আটগুণ দণ্ড তাঁহাকে দিতে হইবে। যদি দণ্ডেব অনর্গ জনের উপর তিনি শারীরিক দণ্ড বিধান করেন, তাহা হইলে তাঁহাকেও শারীরিক দণ্ড ভোগ করিতে হইবে। অথবা, যদি সেই শারীর-দণ্ডের পরিবর্ধে অর্থদ্বারা নিজ্ঞান্ত দণ্ডের ব্যবস্থা হয়। তাহা হইলে তাঁহাকেও বা প্রদেষ্টাকে) নিজ্ঞান্ত দিতে হইবে। যদি তিনি জ্ঞান্য অর্থ নাশ করেন এবং অল্ঞান্য অর্থ সংগ্রহ করেন, তাহা হইলে নাশিত বা সংগৃহীত অর্থের আটগুণ অর্থ তাঁহাকে দণ্ডরূপে দিতে হইবে।

যদি কোন (রাজকর্মচারী) ধ্যাহ্রারা পরিকল্পিত চারক (হাজতথান) কিবো বন্ধনাগার (জেলখানা) হইতে অপরাধীকে নিঃসারিত করেন, অথব সেই রোধাগার ও বন্ধনাগারে অপরাধীর শ্রা, আসন, ভোজন ও মলমূত্র-ত্যাগের বাবহা করেন বা অভ্যন্তার করান, তাহা হইলে ভাহাকে উত্তরোভর তিন প্রের অধিক দও দিতে হইবে।

যে কর্মচারী (ধর্মছের) চারক বা সংরোধগৃহ হইতে অভিযুক্ত জনকে ছাড়িয়া দেন বা ভাহাকে পলাইয়া যাইতে সাহায্য করেন, তাঁহাকে মধ্যমসাহসদণ্ডে দণ্ডিত হইতে হইবে এবং অভিযুক্তের দেয় দেনাও তাঁহাকে শোধ করিয়া দিতে হইবে। এবং বে কর্মচারী (প্রদেষ্টার) বন্ধনাগার হইতে অপরাধীকৈ ছাড়িয়া দিবেন বা পলাইয়া যাইতে সাহায্য করিবেন, রাজা তাঁহার সর্বাস্থ করিবেন; এবং ভাঁহার উপর বধদণ্ড বিহিত হইবে।

यनि ( क्लान कर्यागदी ) वस्तानादात्र व्यथक्तक ना विलया मःक्रक क्रामीक

বাহির করান, তাহা হইলে তাঁহার ২৪ পণ দণ্ড হইবে। যদি তিনি সংশ্বদ্ধ করোদীয়ারা কোন কর্ম করান, তাহা হইলে তাঁহার দ্বিগুণ ( অর্থাৎ ৪৮ পণ ) দণ্ড হইবে। যদি তিনি সংক্ষম ব্যক্তিকে অস্ত স্থানে রাখেন, বা তাহার অন্নপানে কোনরূপ কই দেন, তাহা হইলে তাঁহার ৯৬ পণ দণ্ড হইবে। আর যদি তিনি সংক্ষম ব্যক্তিকে তাড়নাদিলারা কায়িক ক্লেশ দেন, বা তাহাকে উৎকোচ দিতে বাধ্য করান, তাহা হইলে তাঁহার মধ্যমসাহসদণ্ড হইবে এবং তাহাকে (কয়েদীকে) বধ করিলে তাঁহার এক সহত্র পণ দণ্ড হইবে।

কোন পরিগৃহীত বা ক্রয়ধিগত, কিংবা বন্ধক্ষার-আ্বন্ধ দাসীর বন্ধনাগারে সংক্রম থাকাকালে, যদি কোন কর্মচারী তাহার উপর ব্যভিচার করে, তাহা হটগে সেই অপরাধে ব্যভিচারীর উপর প্রথমসাহদদও বিহিত হইবে। দেই অবস্থার চোর বা ভামারিকের (বিশ্লবকারীর) ভার্যার উপর ব্যভিচার করিলে, ভাহার উপর মধ্যমসাহদদও বিহিত হইবে। এবং (বন্ধনাগারে) কোনও আর্য্যা বা কুলপ্রীর উপর ব্যভিচার করিলে তাহার উপর উত্তমসাহদদও বিহিত হইবে। দেই বন্ধনাগারে সংক্রম কোন ব্যক্তি যদি এই প্রকার ব্যভিচার করে, ভাহা হইপে ভাহার উপর ব্যভিচার করে, ভাহা হইপে ভাহার উপর ব্যভিচার করেন, ভাহা হইলে ভাহার উপরও দেই দও (অর্থাৎ ব্যক্রপ দও) বিহিত হইবে। এবং দেই অধ্যক্ষ যদি দাসীর উপর ব্যভিচার করেন, ভাহা হইলে করেন, ভাহা হইলে ভাহার উপরও দেই দও

(ধর্মস্থের) চারক (সংরোধাগার) ভেদ না করিয়া ধদি কোন কর্মচারী ক্ষেদীকে বাহিরে পলাইতে সাহাষ্য করেন, তাহা হইলে তাঁহার প্রতি মধ্যম-দাহসদগু বিধেয়; এবং ধদি ইহা ভেদ করিয়া সেই কার্য্য করেন, তাহা হইলে তাঁহার প্রতি বধদগু বিহিত হইবে। আর ধদি তিনি (প্রদেষ্টার) বন্ধনাগার হইতে সংক্রম জনকে বাহিরে পলাইতে সাহায্য করেন, তাহা হইলে তাঁহার উপর সর্কস্বহরণ ও বধর্যে দণ্ড বিহিত হইবে।

এইভাবে রাজা প্রথমত: নিজের রাজকার্য্যে ব্যাপ্ত কর্মচারিগণকে দগুধারা শোধিত করিবেন এবং তাঁহারা (কর্মচারীরা) নিজে শুদ্ধ হইয়া পোর ও জানপদ-দিগকে দগুধারা শোধিত করিবেন । ১ ॥

কৌটিপীয় অর্থশাস্ত্রে কটকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে সর্ব্বপ্রকার অধিকরণের বৃক্ষণ বা নিমন্ত্রণ-নামক নবম অধ্যায় ( আদি ছইতে ৮৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### দলম অব্যায়

## ৮৫ম প্রকরণ-একালবধ ও ইছার নিজন্ম

কোনও তীর্থস্থানে (চৌর্যাদি) অপরাধকারী, গ্রন্থিভেদক (গাঁটকাটা) বা সন্ধিল্ছেদক ও উর্ক্কর (অর্থাৎ বাড়ীর পটল বা ছাদাদির ছেদকারী)—এই তিন প্রাকার অপরাধীর প্রত্যেকের প্রথম অপরাধে সংদংশক্ষেদ (সাঁরাব দিয়া কাটা; মতান্তরে, অনুষ্ঠ ও কনিষ্ঠ অনুলির ছেদ) দণ্ড হইবে; অথবা, ইহার নিজ্নরূপে অপরাধীর ৫৪ পণ দণ্ড হইবে। দিতীয় বাবের অপরাধে তাহার দণ্ড হইবে (সর্ব্বাঙ্গুলির) ছেদন; অথবা, তৎপরিবর্ত্তে ১০০ পণ দণ্ড। তৃতীয় বাবের অপরাধে, দক্ষিণহন্তের ছেদনরূপ দণ্ড হইবে; অথবা, ৪০০ পণ দণ্ড। চৃত্র্ব্বব্রের অপরাধে তাহার ইচ্ছাত্মসারে (শুদ্ধ বা চিত্র) বধদণ্ড দেওয়া বাইতে পারে ।

কমপক্ষে ২৫ পণ মূল্য-পরিমিত কুরুট, নকুল, বিড়াল, কুরুর ও পৃকর চুরি করিলে, বা মারিয়া ফেলিলে, অপরাধীর ৫৪ পণ দও হইবে, অথবা, নাসাগ্র-ভাগের ছেদনরূপ দও হইবে। (চোরিত বা হিংসিত কুরুটাদি) চণ্ডালের দ্রুবা হইলে, অথবা দেগুলি অরণ্যচর হইলে, অপরাধীর তদর্জ (অর্থাৎ ২৭ পণ) দও হইবে।

পাশ (কাঁদ), জাল ও কুটগর্ত্তে (তুপাদিছার) আচ্ছাদিত গর্ত্তে) বন্ধ মুগ, অন্ত পশু, পক্ষী, ব্যাল (হিংশ্রজন্ত্ব) ও মৎশ্য-গ্রহণকারীকে দওরূপে তৎ তৎ দ্রব্য ও ইহার মূল্য দিতে হইবে।

মুগবন ও (চন্দনাদি পণ্যের) দ্রব্যবন হইতে মুগ বা দ্রব্যের অপছরণকারীকে ১০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। বিশ্ব (বিচিত্রবর্ণ ক্রকলাস-বিশেষ), (ক্রফ্সারাদি) বিহারপক্ষীর চৌর্যাকরণে বা (মারণাদি) হিংসায় অপরাধীকে ইহার ছিণ্ডণ (অর্থাৎ ২০০ পণ) দণ্ড দিতে হইবে।

সুলশিরকারী ও স্কাশিরকারী এবং কৃশীলব (চারণ) ও তপস্থিনের কোন ছোট ছোট দ্রব্য চুরি করিলে চোরকে ১০০ পণ দণ্ড দিতে ইইবে, এবং কোন বড় দ্রব্য চুরি করিলে ভাষাকে ২০০ পণ দণ্ড দিতে ইইবে এবং ভাষাদের (ছলাদি) ক্ষবিদ্রব্য চুরি করিলে ভাষাকে সেই ২০০ পণ দণ্ডই দিতে ছইবে।

প্রবেশের অস্থমতি না পাইয়া বদি কেছ দুর্গে প্রবেশ করে, অথবা গ্রাকারের

ছিত্র হইতে নিক্ষিও কোন দ্রব্য শইরা শলাইয়া যার, তাহা হইলে তাহার কন্ধরা-বধ ( অর্থাৎ বাড়ভল করিয়া দেওয়া ? ) ( মতাস্তরে, পালম্বরের পশ্চাদ্বর্তী শিরা-ধরের ) ছেদ দও হইবে, অথবা ( তৎপরিবর্ত্তে ) ২০০ পণ নিক্রাদ্রদণ্ড হইবে।

চক্রমুক্ত ( শকটাদি, 'চক্রমুক্তাং'—এইরূপ পাঠে 'নাবং' পদের বিশেষণ ), নোকা বা ক্রপণ্ড হরণকারীর দণ্ডরূপে তাহার একপাদ কাটিরা দেওয়া হইবে, অথবা ( তৎপরিবর্ত্তে ) তাহাকে ৩০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

যে পুরুষ জুয়াখেলায় কৃট কাকণী (কোড়ী), আক্ষ (পাশা), আরপা (চামড়ার তৈয়ারী চৌকড়ী) ও শলাকার চাল দেয়, কিংব। হস্তকোশলে বিষম কার্য্য করে, ভাছার এক হস্ত কাটিয়া দিতে হইবে, অথবা (তৎপরিবর্ত্তে) ভাছাকে ৪০০ পণ নিক্রমণও দিতে হইবে।

চোর ও পরব্রীর উপর ব্যক্তিচারী পুরুষের, এবং তৎকার্ষ্যে সাহায্যকারিনী দ্বী ধরঃ পড়িলে ভাহার, কর্ণ ও নাসিকাচ্ছেদনরূপ দণ্ড হইবে, অথবা ভাহাকে ৫০০ পর্ণ নিজ্ঞানত দিতে হইবে। কোন পুরুষ এই কার্য্যে সাহায্যকারী হইলে ভাহার দ্বিগুণ (অর্থাৎ ১০০০ পন) দণ্ড হইবে।

একটি ( গোমহিষাদি ) বড় পশু, একটি দাস বা দাসীকে যে অপহরণ করিবে, কিংব। মুডবান্ডির বস্ত্রাদি দ্রব্য যে বিজ্ঞায় করিবে, ভাঙার ছইটি পাদই কাটিয়া দিতে হইবে, অথবা ভাঙাকে ( ডৎপরিবর্ত্তে ) ৬০০ পণ নিক্ষায়দগু দিতে হইবে।

বদি কেছ (নিজের অপেক্ষায়) উত্তয় বর্ণের কোন লোককে ও গুরুজন-দিগকে হস্ত বা শাদঘারা লঙ্ঘন ( তাড়নাদি ) করে, এবং রাজার যান ও বাহনা-দিতে আরোহণ করে, তাহা হইলে তাহার একটি হাত ও একটি শাদ কাটিয়া দিতে হইবে, অথবা ( তৎপরিবর্ত্তে ) তাহাকে ১০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে।

নিজকে প্রাক্ষণ বলিয়া পরিচয়-প্রদানকারী কোনও শুদ্র বদি কোন দেবদ্রবা পুকাইয়া অপহরণ করে, ও যদি কেহ (জ্যাতিবী সাজিয়া) রাজার (ভবিশ্বৎ কোন) অনিষ্ট প্রকাশ করে, এবং যদি কেহ অপরের ছইটি নেত্রই ফাটাইয়া নষ্ট করিয়া দেয়, তাহা হইশে অন্ধ করিয়া দেওয়ার গুরুষমুক্ত অঞ্চনদারা তাহার অন্ধদ বিহিত ছইবে, অধবা (তৎপরিবর্ত্তে) তাহাকে ৮০০ পণ নিক্রয়দণ্ড দিতে হইবে।

বে পুরুষ চৌরকে বা পরদারের উপর বাভিচারীকে বন্ধন হইতে ছাড়িয়া দেয়, বা রাজার শাসন কম বা অধিক করিয়া দিখে, বা কাহারও কন্তা বা দাসীকে অলভারসহিত অপহরণ করে, বা কৃট বা ছলপূর্বক ব্যবহার করে, এবং অভক্ষা পশুর মাংস বিজয় করে, ভাহার বাম হল্প ও উভর পাদ কাটিয়া দিতে ছইবে, অথবা ( তৎপরিবর্ত্তে ) তাহাকে ২০০ পণ নিজ্ঞস্পন্ত দিতে হইবে। মাসুবের মাংস বিক্রয়কারীর উপর বধদণ্ড বিহিত হইবে।

দেবতাসম্বন্ধী কোনও পশু, প্রতিমা, মহন্ত, ক্ষেত্র, গৃহ, ছিরণ্য (নগদ টাকা), শ্বর্য, রত্ন ও শশু অপহরণকারীর উপর উত্তমসাহসদও বিহিত হইবে, অথবা শু**দ্ধবন্ধ** ( অর্থাৎ অক্লেশমারণ ) দও হইবে।

দশুবিধানকার্য্যে প্রদেষ্টা (বিচারক), রাজা ও ( অনান্ডাদি ) প্রকৃতিবর্গের
মধ্যক্ত হইরা, অগরাধী পুরুষ তাহার অপরাধ, অপরাধের কারণ, এবং এই
সকলের গুরুত্ব ও শত্ত্ব, ভবিত্বৎ ও বর্ত্তমান পরিণাম, এবং দেশ ও কালের
সমাক্ পর্যালোচনা করিয়া দশুের উত্তমত্ব, মধ্যমত্ব, ও প্রথমত্ব বিধান করিবেন
(অর্থাৎ বিচারাত্রসারে উত্তম, মধ্যম বা প্রথমসাত্রসদশ্তের বিধান করিবেন) ৪১-২৪

কোটিলীয় অর্থশাল্তে কউকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে একালবধ ও ইহার নিজ্ঞাননামক দশম অধ্যায় ( আদি ছইতে ৮৭ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### একাদল অধ্যায়

#### ৮৬ম প্রকরণ—শুদ্ধ ও চিত্র দণ্ডের বিধান

কলহমধ্যে যে ব্যক্তি পুরুষকৈ হত্যা করিবে ভাহার উপর চিত্তবধ ( অর্থাৎ ক্রেশদানপূর্বক মারণরূপ ) দশু বিহিত হইবে। ( শক্রাদিলারা প্রহৃত ) পুরুষ শাতদিনের মধ্যে মারা গেলে, অপরাধীর উপর শুদ্ধবি মার। গেলে অপরাধীকে কর্মা ) দশু বিহিত হইবে। এক পক্ষের মধ্যে পুরুষটি মার। গেলে অপরাধীকে উত্তমসাহসদশু দিতে হইবে। এবং এক মাসের মধ্যে সে মারা গেলে, অপরাধীকে ৫০০ পণ দশু দিতে হইবে, এবং আহত পুরুষের চিকিৎসাদির ব্যয়প্ত তাহ্যকে বহন করিতে হইবে।

শুস্তবারা প্রহারকারী অপরাধীর উত্তমদাহসদও হইবে। নিজ বলদর্শে প্রহারকারীর হস্তচ্ছেদরূপ দও হইবে। (ক্রোধের) মোহে প্রহারকারীর ২০০ শণ দও হইবে। বধকারী অপরাধীর বধদও হইবে।

প্রহারধারা (স্ত্রীলোকের) গর্ভপাত ঘটাইলে অপরাধীর উত্তরসাহসদও হইবে। ঔষধ্বারা গর্ভপাত ঘটাইলে অপরাধীর মধ্যমসাহসদও হইবে। ক্লেশ-জনক কর্ম করাইয়া গর্ভপাত ঘটাইলে অপরাধীর প্রথমসাহসদও হইবে। যে বলাৎকারসহকারে স্থী ও পুরুষের হত্যাকারী, যে বলাৎকারপুর্ব্ধক রীলোককে উঠাইরা লইয়া যার, যে বলপুর্ব্ধক অন্ত লোকের ( কর্ণনাসাদির ছেদছারা ) নিগ্রহকারী, যে (নিজের হত্যা বা চুরি করার ইচ্ছার কথা ) পূর্ব্ধেই ঘোষণা করে, যে বলসহকারে ( নগর ও গ্রামাদির ) দ্রব্যাপহারী, যে (ভিডিসদ্ধি) ছেদ করিরা চৌর্যাকারী, যে পথের মধ্যে অবস্থিত পাছশালা প্রভৃতিতে চুরি করে, যে রাজার হন্তী, অশ্ব ও রথের অনিষ্টকারী অথবা চৌর্যাকারী—ভাছাদিগকে শূলে চড়াইয়া মারিতে হইবে । এবং যে এইসব অপরাধীর মৃতদেহের দাহকার্য্য সম্পাদন করে, কিংবা ভাহাদিগকে উঠাইয়া লইয়া যায়, সে-ও সেই দওই ( অর্থাৎ শ্লারোপণদারা মারণই ) প্রাপ্ত হইবে, অথবা ভাহার উপর উত্তমন্যাহদণ্ড প্রদন্ত হইবে।

হিংশ্র ( ঘাতক ) ও চোরকে যে অন্ন, বাসস্থান, অস্থাস্থ দ্রব্যাদি, অন্নি বা মন্ত্রণ। দিবে, বা তাহাদের ভূতাকার্য্য করিবে, তাহার প্রতি উন্তমসাহসদগুর্বিধের। যদি সে না জানিয়া এমন কার্য্য করে, তাহা হইলে তাহাকে তিরস্বারদণ্ড দিতে হইবে। যদি হিংল ও চোরের পুত্র ও ত্রী হিংল ও চুরিকার্য্যে মন্ত্রণা না দের, তাহা হইলে তাহাদিগকে নিরপরাধ বলিয়া ছাড়িয়া দিতে ইইবে, আর যদি তাহার্য মন্ত্রণ। দিয়া থাকে বলিয়া প্রতিপন্ন হয়, তাহা হইলে তাহাদিগকে গ্রেপ্তার করিতে হইবে (ও তত্নপরি উচিত দণ্ড দিতে হইবে )।

রাজ্যকামনাকারী, অন্তঃপুরের প্রধর্ণকারী, আটবিক ও রাজার অমিত্রদিগের উৎসাহজননকারী, কিংবা হুর্গ, জনপদ ও রাজদেনার কোণােংপাদনকারীকে মন্তকে ও হন্তে জ্বলন্ত প্রদীপ ( অঙ্গার ) স্বাপনপূর্মক ঘাতিত করা 
ইইবে । (তন্মধা ) কেহ ব্রাহ্মণ থাকিবে ভাহাকে অন্ধকারগৃহে আটক করিয়া রাধিতে ইইবে ।

অথবা মাতা, পিতা, পুত্র, ভ্রাতা, আচার্য্য ও তপস্বিজনের হত্যাকারীকে 

স্ক্ ছাড়াইরা মন্তকের উপর অগ্নিরক্ষাপূর্বক ঘাতিত করিতে হইবে ('স্ক্ছির:'

—এইরূপ পাঠে—'শরীরত্বক্ ও মন্তকের উপর'—এইরূপ অন্থবাদ হইবে)।
তাহাদিগের (মাতা-পিতা প্রভৃতির) আক্রোশ বা নিন্দা করিলে, (তদপরাধে)

দেই পুরুষের জিহ্বাচ্ছেদরূপ দণ্ড বিহিত হইবে। সে যদি ভাহাদের কোন অক

নথাদিঘারা ছিঁ ভিরা ফেলে, তাহা হইলে ভাহার দেই অক হইতে ভাহাকে বিযুক্ত
করিতে হইবে (অর্থাৎ ভাহার সেই অক কাটাইরা দিতে হইবে)।

যদি ছঠাৎ কোনও পুরুষ অন্তকে হত্যা করিয়া ফেলে, ও পশুৰুষ বা অধ চুরি

করে, তাহা হইলে তাহার ওজবধ (অর্থাৎ অফেশনারণ) দও হইবে। এই ছলে পত্তবুথে কমপক্ষে দশটি পশু থাকা চাই ইহা ব্ঝিতে হইবে।

যে জলধারণকারী দেতু (উদকবন্ধ) ভগ করিবে, তাহাকে দেই দেতুর জলেই নিমজনরূপ দণ্ড দিতে হইবে। উদকবিহীন সেতুর ভলকারীকে উত্তর-সাহসদণ্ড দিতে হইবে। যদি সে প্রথম হইতে ভগ বলিয়া সংস্কাররহিত জ্ববস্থার পরিত্যক্ত কোন দেতু ভগ করে, তাহা হইলে তাহার মধানসাহসদণ্ড হইবে।

অন্ত কাহাকেও বিষপ্রদান করিয়াছে এমন পুরুষকে ও পুরুষইত্যাকারিনী স্ত্রীকে জলে ভ্রাইয়া মারিতে ইইবে—কিন্তু, সেই স্ত্রীলোকটি যদি গর্ভিনী না হয়। স্ত্রীলোকটি গর্ভিনী হইলে, প্রসবের পরে কমপক্ষে একমান অতীত ইইলে ( সেই অপরাধে ) তাহাকে জলে ভূবাইয়া মারিতে হইবে।

পতি, গুরু ও নিজ সন্তানের হত্যাকারিণীকে, অগ্নি ও বিষ প্রদায়িকাকে, অর্থবা, সন্ধিচ্ছেদপূর্কক চৌর্য্যকারিণীকে গরুর পদাঘাতদারা মারিতে ইইবে।

বিবীত (গোচারণক্ষেত্র), ক্ষেত্র, **খল** (ধান্তথলনের ভূমি), গৃহ, (কাষ্ঠাদি) দ্রব্যুবন ও হস্তিবনে অগ্নিদানকারীকে অগ্নিদারা দাহিত করিতে *হইবে*।

রাজার নিন্দাকারী ও মন্ত্রভেদকারী, অনিষ্টবার্ত্তার প্রদারণকারী এবং ব্রামণের পাকশালা হইতে অন চুরি করিয়া ভোজনকারীর জিহ্বা উৎপাটিত করিতে ছইবে।

যদি প্রহরণ (আয়্ধ) ও আবরণ (কবচ) হরণকারী ব্যক্তি আয়্ধজীবী না হয়, তাহা হইলে তাহাকে বাণহারা ঘাতিত করিতে হইবে। যদি সে স্থঃং আয়ুধজাবী হয়, তাহা হইলে (চৌর্যাপরাধে) তাহার উত্তমসাহসদও ইইবে।

কাহারও উপস্থ ও অগুকোশকর্ত্তনকারীর উপস্থ ও অগুকোশচ্ছেদনরূপ দণ্ড বিহিত হইবে।

কাহারও জিহ্বা ও নাসিকাচ্ছেদকারীকে সংদংশ ( সাঁরার ) দ্বারা চাশিরা বা কাটিরা হত্যা করিতে হইবে ( 'সংদংশ' শক্তের—'কনিষ্ঠকা ও অঙ্গুষ্ঠচ্ছেদন' — এইরূপ ব্যাখা। এশ্বলে উপাদের মনে হয় না )।

এই সকল ক্লেশদণ্ড (মহ প্রভৃতি) মহাত্মাদিগের শাত্রে অহজ্ঞাত হইয়া বিহিত আছে। কিন্তু, অক্লিষ্ট (অর্থাৎ অহঙ্কর বলিয়া ছোট ছোট) পাণে শুদ্ধবধ্ব (অক্লেশ্মারণই) ধর্মদক্ত বলিয়া স্মৃত হইয়াছে। ১॥

কৌটিশীর অর্থশান্তে কউকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে শুদ্ধ ও চিত্র দণ্ডের বিধান-নামক একাদশ অধাায় ( আদি ছইতে ৮৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## দ্বাদশ অধ্যায়

#### ৮।ম প্রকরণ—কল্যাপ্রকর্ম

বদি কোন পুরুষ নিজের সমানজাতীয়া অপ্রাপ্তরজ্জা কোনও কন্তাকে দূষিত করে, তাহা ইইলে তাহার হস্ত কাটিয়া দিতে হইবে, অধবা তাহার ৪০০ পণ দণ্ড হইবে। সেই কন্তা যদি (যোনিক্ষতাদিবশতঃ) মরিয়া বায়, তাহা হইলে অপরাধী পুরুবের বধদণ্ড বিহিত হইবে।

যদি সেই ক্সাঞ্জাপ্তরক্ষা হয়, তাহা হইলে অপরাধী পুরুবের মধামাও ও তর্জনী-নামক অঙ্গুলির ছেদ বিহিত হইবে, অথবা তাহার ২০০ পণ দও হইবে, এবং ক্সার শিতাকে দে ক্ষতিপূরণ দিতে বাধ্য হইবে।

পুরুষের প্রতি কামনারহিত কন্তার প্রকর্মবিষয়ে পুরুষ ইচ্ছাপৃতি পাড করিতে পারিবে না। কন্তা তৎপ্রতি কামনাযুক্তা হইলে, (প্রকর্মের দোবে) পুরুষের ৫৪ পণ দণ্ড হইবে, এবং দেই স্ত্রীলোকটিরও ইহার অর্দ্ধ ( অর্পাৎ ২৭ পণ) দণ্ড হইবে।

অন্তের নিকট হইতে শুষ্কগ্রহণবশতঃ প্রতিবন্ধ কৃতার উপর দোষকারী পুরুষের হস্তচ্ছেদনরূপ দণ্ড হইবে, অথবা ৪০০ পণ দণ্ড হইবে, এবং যে পরিমাণ শুষ্ক অন্ত লোকটি দিয়াছে তাহা তাহাকে ফিরাইয়া দিতে হইবে।

সাত মাস ক্রমাগত ঋত্যুক্তা, অথচ বরণের পরে যে কস্তা ( ভাবী ) পতিকে পায় নাই, তাহার উপর প্রকর্মকারী পুরুষ বথেচ্ছভাবে ভোগপূর্ত্তি করিতে পারিবে এবং সেই অপরাধে তাহাকে কল্তার পিতার ক্ষতিপূরণ করিতে হইবে না। কারণ, ঋতুরূপ তথ্বের প্রতিরোধবশতঃ ( অর্থাৎ কল্তার সাতঋতুকালপর্যান্ত অভোগ ঘটাইবার অপরাধে ) পিতা কল্তার উপর প্রভুষ্থ হইতে রহিত হইবে।

তিন বংগর পর্যান্ত ক্রমাগত ঋতুগামিনী কভার বিবাহ না হইলে, তংগক্ষকারী পুরুষ তুলাজাতীয় হইলে তাহার দোব হইবে না। তিন বংশবের অধিক সময় পর্যান্ত ঋতুগামিনী কভার সহিত সক্ষকারী পুরুষ শ্রমানজাতীয় হইলেও তাহার কোন দোব হইবে না, তবে সেই পুরুষ ক্রোর অভ পিতৃনির্দ্ধিত অলহারাদি নিতে পারিবে না। সেই পুরুষ পিতৃর্ধারের গ্রহণ করিলে সে চৌর্যান্ত প্রাথ হইবে।

অপরের উদ্দেশ্যে রক্ষিত। কস্তাকে "দেই পুরুষ আমিই"—এইরূপ বলির। অস্ত কেত ভাহাকে বিবাহ করিলে ভাহার ২০০ পণ দণ্ড ইইবে। এবং দেই শ্রীর কামনা না ধাকিলে, দেই পুরুষ বথেক ভোগ লাভ করিতে পারিবে নাঃ

এক কন্তা দেখাইয়া (বরের) সমানজাতীয়া অন্ত কন্তা শ্রেদান করিলে প্রদানকারীর ১০০ পণ দশু হইবে, আর ভাহাকে হীনজাতীয়া অন্ত কন্তা প্রদান করিলে ইহার দ্বিশুণ (অর্থাৎ ২০০ পণ) দশু হইবে।

প্রকর্ম বা ব্যক্তিচারবিষয়ে অকুমারী (অর্থাৎ বিবাহিতা) কুল্লার ৫৪ শণ দও হইবে। পূর্ব বরের নিকট হইতে শক শুরু ও তাহার (বিবাহকার্য্যের) বায় অপরাধকারিনী কলা পূর্ব প্রতিগ্রহীতাকে ফিরাইয়া দিবে। যদি দেই কলা পরে আবার (অর্থাৎ ভূতীয়বার) কাহারও দ্বারা স্বীকৃতা হয়, ভাহা হইলে ভাহাকে দেই অপরাধন্ধনিত দও দিশুণ (অর্থাৎ ১০৮ পণ) করিয়া দিতে হইবে।

অন্ত ত্রীশোকের শোণিতছার। উপলিপ্ত করিয়া নিজবন্ত দেখাইলে ( অর্থাৎ এইভাবে ক্ষতবানিত্ব প্রদর্শন করিলে), ত্রীলোকের ২০০ পণ দণ্ড হইবে এবং এই বিষয়ে মিখা। বচনকারী পুরুষেরও দেইরূপ ১০০ পণ দণ্ড হইবে। এবং ক্যাপক্ষ (পূর্ববরপক্ষকে) তার ও বিধাহের ব্যয় পূরণ করিয়া দিতে বাধা শাকিবে। যে ত্রী পুরুষের কামনা করে না সেই ত্রীকে কেই যথেক্ছভাবে ভোগ করিতে পারিবে না।

যদি কোনও সমানজাতীয়া স্থী কামনাযুক্তা হইয়া ( কাছারও দ্বারা ) প্রকৃত বা বাজিচারিত হয়, তাহা হইলে সেই স্থী ১২ পণ দণ্ড দিবে। ( অন্ত ) কোনও স্থী এই ব্যাপারে সেই স্থীর প্রকর্ত্তী বা যোনিক্ষতিকারিশী হইলে, তাহাকে ( অপরাধকারিশীকে ) দিওপ ( অর্থাৎ ২৪ পণ ) দণ্ড দিতে হইবে।

কামনাবিহীন হইপেও যদি নিজের অন্ধরাগার্থ কোনও স্থী প্রকর্মরত। হর, তাহা হইলে তাহার ১০০ গণ দণ্ড হইবে, এবং সে সেই পুরুষকেও শুভ দিতে বাধ্য হইবে। যদি কোনও স্থী খেচ্ছার পুরুষের সঙ্গ করে, তাহা হইলে ভাহাকে রাজদাসী হইতে হইবে।

: গ্রামের বাছিরে প্রকর্ম করাইলে শ্রীকে বিশুণ ( অর্থাৎ ২৪ পণ ) দণ্ড দিতে ছইবে, এবং এই বিষয়ে পুরুষটি কোন মিধ্যাকথা বলিলে ভাহার বিশুণ কণ্ড বিষয়ে হইবে।

বলাৎকারসহকারে কোন পুরুষ কল্পা অপাহরণ করিলে ভাহার ২০০ পণ দণ্ড

হইবে, এবং সেই কন্সা স্কর্ণনির্দ্ধিত অলঙারাদিভূবিতা থাকিলে অলঙারণকারী পুরুষের প্রতি উত্তযসাহসদত বিধেয় হইবে। অপহরণকারীদিগ্রের সংখ্যা বহু হইলে, ভাহাদিগের প্রত্যেককে পৃথক্ পুথক্ ধ্রোক্ত দণ্ড দিতে হইবে।

কোনও গণিকার কভার উপর কোনও পুরুষ বলাংকার করিলে তাহাকে ১৪ পান দক্ত দিতে হইবে। আর (পুরুষটি) কভার মাকে ক্তর্জাণে বোড়শশুন ভোগের টাকা (বেশ্চার উপডোগের ম্লোর নাম ভোগ বলিয়া অর্থপাল্লে অভিহিত হয়) দিতে বাধ্য থাকিবে।

দাস বা দাসীব যে কন্তা স্বয়ং অদাসী তাহাকে কোন পুরুষ প্রকর্মধারা দ্বিত করিলে, সেই পুরুষকে ২৪ পণ দণ্ড দিতে হইবে, এবং সে সেই কন্তাকে শুষ্ক ও আভরণ প্রদান করিতে বাধ্য থাকিবে। যদি কোন পুরুষ কোনও দাসীকে দাস্মৃক্ত করিবার নিজ্ম বা মোক্ষণার্থ অর্থ প্রদান করিয়া তাহাকে দ্বিত করে, তাহা হইদে সেই পুরুষের ১২ পণ দণ্ড হইবে, এবং সেই স্ত্রীকে সে বন্ধ ও আভরণ দিতে বাধ্য থাকিবে।

কোনও ক্সাকে দূষিত কর। বিষয়ে যে পুরুষ সাহায্য ও স্থান দান করিবে, তাহাকেও প্রকর্মকারী দোধী পুরুষের সমান দও ভোগ করিতে ইইবে।

যে স্ত্রীর পতি প্রবাদে আছে দে ত্রী (পতির ক্ষম্পন্থিতিতে) ব্যক্তিচারিশী হইবে, ডাহার পতির (ত্রাতা প্রভৃতি) বান্ধব বা পতির ভূতা তাহাকে নির্মিত রাধিবে। এইভাবে রক্ষিতা ত্রী পতির আগমন পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিবে। ঘদি (প্রত্যাবৃত্ত) পতি দেই ত্রীকে ক্ষমা করে, ভাহা হইকে উভয়কে (অর্থাৎ জার ও দেই ত্রীকে) ছাড়িয়া দিতে হইবে (অর্থাৎ ভাহাদের উপর কোন দশুবিধান করিতে হইবে না)। পতি তাহাকে ক্ষমা না করিলে, (দেই অপরাধে) দেই ত্রীর উপর কর্ণ ও নাদাক্ষেদরূপ দশু প্রদেয় হইবে। এবং দেই জার বধদশু প্রাপ্ত হইবে।

যদি কেছ ( সেই জারের ব্যক্তিচার গোণন করার জন্ত ) তাহাকে চোর বশিয়া প্রতিপন্ন করার চেটা করে, তাহা হইলে তাহাকে ৫০০ পণ দণ্ড দিতে হইবে। যদি কোনও ( রক্ষিপুরুষ ) হিরণা বা নগদ টাকা ( উৎকোচরূপে ) লইরা তাহাকে ( জারকে ) ছাড়িয়া দেয়, তাহা হইলে সেই রক্ষিপুরুষ গৃহীত হিরণোর আটগুণ টাকা দণ্ডরূপে দিবে।

কোন স্ত্রী অপর পুরুষের সহিত প্রকর্মণোবে দ্বিত আছে—ইছা ভাষাদের উত্তরের পরস্পরের কেশ আকর্ষণধার। কামক্রীড়া হইতে বুকা বাইতে পারে। এবং এই সংগ্রহণ বা ব্যভিচার, ভাহাদের কামোন্দীপক চন্দমাদি শারীর উপভোগের চিহ্নারা, অথবা ভবিষয়ক ইন্দিডভ পুরুষদারা, অথবা সেই পরায়ুষ্ট খ্রীলোকটির নিজের কথাদারাও জানা যায়।

(কি অবস্থায় পরস্থীগ্রহণ দণ্ডবোগ্য হইবে না—এখন তাহা বলা হইতেছে।)
যদি কোন পুৰুষ, শত্রুচজের আটবিক্দারা অপহাতা, নদীপ্রবাহে নীতা, বা
অরণাে বা গ্রন্তিক্ষনময়ে পরিতাক্তা, কিংবা (রোগ ও মূর্জাদির কারণে অমৃতান্
বস্থায়) মৃতা বলিয়া নিক্ষিণ্ডা অপরের স্ত্রীকে বিগদ ও মরণ হইতে উদ্ধার করে,
তাহা হইলে সে তাহাকে বথাসন্থাবিতরূপে ( অর্থাৎ পরস্পারের সন্ধতিক্রমে ভার্যা বা দাসীভাবে ) উপভাগ করিতে পারে। কিন্তু, সেই উদ্ধৃতা রমনী উচ্চকুলসম্ভূতা,
বা (সমানজাতীয় উদ্ধারকারীের প্রতি ) কামনারহিতা, কিংবা অপতাবতী হইলে,
তাহার পতির নিক্ট হইতে নিজ্ঞয় ( অর্থাৎ বিপদ হইতে উদ্ধরণের মূল্যরূপ পুরস্কার ) গ্রহণ করিয়া সেই উদ্ধারকর্ত্তা তাহাকে পতির নিক্ট অর্পণ করিবে।

চোরের হত, নদীপ্রবাহ, ছর্ভিক্ষ, দেশবিপ্লব ও কান্তার-প্রদেশ হইতে উদ্ধার করিয়া কোন পূরুষ অপরের নষ্টা ( অপহতা ) ও মৃতা বলিয়া পরিত্যকা স্ত্রীকে যথানস্থাবিতভাবে ভোগ করিতে পারে । কিন্তু, সেই স্ত্রী রাজকোপবশতঃ বা স্বন্ধনারা পরিত্যকা হইলে, এবং সে উন্তন্মবংশব্দাতা, কামনারহিতা ও পূর্কেই অপত্যবতী হইলে, সে তাহাকে ভোগ করিতে পারিবে না । পরন্ত, নে অক্সন্ধানিক্রমূল্য লইয়া তাদুলী স্ত্রীকে পতিগৃহে পাঠাইয়া দেওয়াইবে ॥ ১-৩ ট

কোটিলীয় অর্থশাল্তে কন্টকশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে ক্যাপ্রকর্ম-নামক দ্বাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ৮৯ অধ্যায় ) স্মাপ্ত।

#### এয়োদশ অধ্যায়

#### ৮৮ম প্রকরণ-অভিচারের দণ্ড

( সম্রতি শ্বধর্মের ব্যতিক্রমকারী কউকের শোধন বলা হইতেছে। )

বে লোক কোনও আন্ধাকে অপেয় দ্রব্য পান করায়, বা অভক্ষা দ্রব্য ভোজন করায়, তাহার প্রতি উত্তমদাহদদও প্রযুক্ত হইবে। ক্লিন্তিয়কে তাহা করাইলে, তাহার প্রতি মধ্যমদাহদদও প্রযুক্ত হইবে। বৈশ্যকে তাহা করাইলে, তাহার প্রতি প্রথমদাহদদও প্রযুক্ত হইবে। এবং শুক্তকে তাহা করাইলে, তাহার প্রতি ধ্রবদাহদদও প্রযুক্ত হইবে।

যদি প্রাক্ষণাদি বর্ণের কোন লোকের। নিজেই (অপরের প্রেরণা ব্যতীত) সেইরপ অভক্ষা ভক্ষণ ও অশের শান করে, তাহা হইলে তাহাদিগকে বিষয় বা দেশ হইতে নিজাসিত করিতে হইবে।

বদি কেছ দিনের বেলায় অপরের গৃছে প্রবেশ করে, তাহা ছইলে তাহার প্রতি প্রথমদাহসদও প্রযুক্ত হইবে : রাত্তিতে প্রবেশ করিলে তাহার মধ্যমসাহস-দও ছইবে। (কিন্তু), দিনের বেলায় অববা রাত্তিতে সে যদি শক্ষদহিত অন্তের গৃহে প্রবেশ করে, তাহা হইলে তাহার প্রতি উত্তমসাহদদও প্রযুক্ত হইবে।

ষদি ভিক্ষ ও বৈদেহক ( বাণিজক, যথা ফেরীওরালা ) এবং মদিরাদি-পানে মন্ত ও উন্মানগ্রন্থ লোক বলপূর্বক, এবং আপদের সময়ে অতিনিকটবর্তী বন্ধু-বান্ধব, অপর কাহারও গৃহে প্রবেশ করে, তাহা হইলে ভাহারা দগুনীর ছইবে না—কিন্তু, কেহ বদি ভাহাদিগকে ভিতরে প্রবেশ করিতে নিষেধ করিয়া থাকে ভাহা হইলে তাহারা অবস্টাই দগুনীয় হইবে। যদি কোনও লোক রাত্তির এক-যাম অপগত হইলে নিজের গৃহের (বহিঃদ্বিত) প্রাকার ও প্রাচীরাদিতে আরোহণ করে, ভাহা হইলে ভাহার প্রতি প্রথমসাহসদগু প্রযুক্ত হইবে, পরের বাড়ীর প্রাকার ও প্রাচীরাদিতে উঠিলে মধ্যমসাহসদগু প্রযুক্ত হইবে; এবং প্রামের ও উপবনের ( বাগান বাড়ীর ) বাট বা বেড়া ভাছিলে ভাহার প্রতি দেই দগুই ( অর্থাৎ মধ্যমসাহসদগুই ) প্রযুক্ত হইবে ।

সার্থিকের। (বাণিজ্ঞাজন্ত বিদেশে যাত্রাকারীরা) কোনও গ্রামযধ্যে বাদকালে তাহাদের (নিজপার্থস্থ) সারদ্রবাদমূহের তালিকা (গ্রামাথাক্ষের নিকট) জানাইয়া তথার বাদ করিবে। এই ব্যাপারীদিগের কোন দ্রাব্য রাত্রিতে চোরিত বা অন্তর্ক নীত হইয়া, যদি সেই গ্রামের বাহিরে চলিয়া না যায়, তাহা হইলে গ্রামম্বামী বা গ্রামাথাক্ষ সেই দ্রব্য (দ্রব্যাধিকারী সার্থিককে) দিবেন। অথবা, গ্রামদীমান্তে তাহাদের কোন দ্রব্য মৃথিত বা অন্তর্ক নীত হইলে, বিবীতাধাক্ষকে তাহা দিতে হইবে। বিবীতবিহীন প্রাদেশে দ্রবা চুরি গোলে বা অন্তর্ক নীত হইলে, চোররজ্ফুক-নামক চোরোজ্বনিক রাজপুক্র ভাহা দিবেন। তথাপি যদি (সার্থিকদিগের) দ্রব্য অথক্তে না হয়, তাহা হইলে (তৎ তৎ সীমান্থামীর) যদি দ্রব্যের বিচয় বা অন্তর্থণ করিতে চাহেন, তবে গ্রামবাদীয়া ভাহা করিবার অবসর দিবেন। এই ভাবে সীমার অবরোধ অসম্ভব হইলে, পঞ্চপ্রামীও দল্প্রামীর অধ্যক্ষের। সেই চোরিত ও অন্তর্ক অপনীত ক্রব্যের প্রত্যানয়ন—্যারা ভাহা দেওয়াইবেন।

যদি কাহারও বাড়ী হর্বক হওয়ায়, শকট উর্জ্বন্ধাদি বহিত হওয়ায়, শস্ত আবরণ-রহিত থাকায়, এবং গর্জ, কৃপ ও কৃট অবপাত ( অবপতিত হন্ধাদি ধরিবার জন্ম প্রস্তুত্র কাহারও উপর কোন হিংসা বা অনিষ্ট আপতিত হয়, তাহা হইলে দোধী লোকের প্রতি মন্তব্যক্ষাক্য-বিহিত দতের প্রয়োগ করিতে হইবে।

বৃক্ষচ্দেদন-সময়ে, (গবাদি) দমা পশুর নাদারজ্ছ হরণ (ধরণ বা ধোলা) সময়ে, চতুম্পদ জন্তদিগের মধ্যে যে পশুর দমন সিদ্ধ হর নাই দেই বাহনের
চালনের অভ্যাস-সময়ে, কলতপ্রবৃত্ত লোকদিগের পরস্পরের প্রতি কার্চ, লোই,
প্রস্তের, দশু, বাণ ও বাহথিকেপের সময়ে ও হস্তীতে গমন-সময়ে, কাহারও কোন
সংঘট্টনজনিত অনিষ্ট আপতিত হইলে, যদি দোষী লোক (আরোহী প্রস্তৃতি)
সংঘট্টনের পূর্বেই "সরিয়া যাও, সরিয়া যাও" বলিয়া চীৎকার করিয়া থাকে,
ভাহা হইলে দে দশুনীয় হইবে না।

ষ্ণি ( হস্তীর পাদপেষণাদিদ্বারা মারা যাওয়ার ইচ্ছায় ) কেছ ( হস্তীর গমনশবের অভিমুখে শ্রান থাকিয়া ) হস্তীকে ক্রোধিত করিয়া হত হয়, তাহা হইলে
( তদীয় উত্তরাধিকারী বাদ্ধর ) হস্তীকে এক দ্রোণ-পরিমিত অন্ন. ( মৃষ্ঠ ) কৃত্ত,
মালা ও ( সিন্দ্রচন্দনাদি ) অন্ধলেপন-দ্রুয় এবং হস্তীর দস্ত-মার্জনার্থ বস্ত্র হস্তীর জন্ত দিবে। ইহা হস্তীর জন্ত 'পাদপ্রকালন'-রূপ পূজাবিশেষ, করিণ,
অস্বনেধ্ যুক্তের সমাপনাস্ত্রে পবিত্র স্থানে যে পুণ্য হয়, হস্তীর পাদতলে পড়িয়া
মৃষ্ঠা ঘটিলে তৎত্ল্য পুণ্য অক্তিও হয়। কিন্তু, হস্তীচালকের উদাসীন্তে কাহারও
মৃষ্ঠা ঘটিলে, চালকের প্রতি উত্তর্শাহসদণ্ড প্রদন্ত হবৈর।

যদি কোন লোকের নিজের শৃল্পুক্ত ( গবাদি ) পশুহারা, কিংবা দাঁতমুক্ত (কুর্যাদি ) পশুহারা অন্ত কোনও লোক হিংসিত হর এবং পশুর স্থামী যদি ভাহাকে পশুর হিংসা হইতে মোচন না করে, তাহা হইলে মালিকের উপর প্রথমনাহসদও প্রযুক্ত হইবে। যদি হিংসিত ব্যক্তিকর্ত্তক "তোমার পশুর হিংসা হইতে আমাকে রক্ষা কর" এইরূপ ভাবে চীংকারপূর্বক মালিক অন্তর্কক হইরাও রক্ষা না করে, তাহা হইলে তাহার প্রতি উক্ত দণ্ডের হিঙল দণ্ড প্রযুক্ত হইবে। যদি কোন দোক শৃল্পুক্ত ও দন্তম্বক্ত শশুহারা অন্তোন্তের বধ ঘটার, তাহা হইলে সেই মালিক ( মারিত পশুর মালিককে ) সেই মূল্যের একটি পশু ও ইহার মূল্যা-শরিমিত অর্থ দশুরূপে দিবে।

ৰদি কেছ দেবভার নামে উৎস্ট কোন ঋষভ ( যত ), উক্ষা ( পুংগৰ ) বা

গোকুমারী (গোজী)-দারা হাল বাহন করার, তাহা হইলে তাহার প্রতি ৫০০ শত পণ দণ্ড বিধের। এবং যদি সে এই প্রকার পশুকে অন্ত স্থানে ভাড়াইরা লইরা যায়, তাহা হইলে তাহার উপর উত্তমসাহদণ্ড প্রযুক্ত হইবে।

শোম, ছম্ম, বহনকার্য্য ও শাবপ্রসবন্ধারা উপকারসমর্থ ক্তু (মেধ্রাদি) পশুর অপহরণকারীকে সেই মূল্যের একটি পশু ও ইহার মূল্য-পরিমিড অর্থ দগুরূপ দিতে হইবে। সেইরূপ পশুকে যে অক্সন্ত সরাইরা নেয়, ভাহার প্রতিও ডক্সণ দগু প্রযুক্ত হইবে; কিন্তু, দেবকার্য্য ও পিতৃকার্য্যের জন্ত পশুর প্রবাসন ঘটাইলে, সে আর দগুনীয় হইবে না।

যদি কোন শকটের ( বলীবর্দের ) নাদারক্ষ্ ছিন্ন হয়, অথবা ইছার যুগ ভালিয়া যায়, অথবা ( বলীবর্দ ) ভির্মাগ্রাবে ( তেরছা ) কিবো প্রতিমুখে গমন করে, অথবা পশ্চান্দিকে যায়, অথবা যদি অন্ত গাড়ী, পশু ও মাস্থ্রের ভিড় হয়, এরপ অবস্থায় কোন চালক হিংসিত হইলে, শাকটিকের কোন দশু বিধের হইবে না। অন্তথা হইলে, মাস্থ্র ও অন্ত প্রাণীর হিংসাজন্ত দোষীকে (শাকটিকাদিকে ) রাজা যগোজ্ঞ দশু প্রদান করিবেন। এবং মান্থ্র ও অন্ত বড় ( পশুরূপ ) প্রাণীর উপর হিংসা না ঘটিয়া যদি ( অজাদি ) ছোট প্রাণীর উপর আঘাত বা চোট লাগে, ভাছা হইলে দোষীকে তেমন একটি প্রাণীও ( দশুরূপে ) দান করিতে হইবে।

( শকটনিমিত্তক প্রাণিহিংদাবিষয়ে ) যদি দেখা যায় যে, শকটের চালক বালক ( অর্থাৎ অপ্রাণ্ডব্যবহার ), ভাহা হইলে যানন্ধিত মালিকের দণ্ড হইবে। শকটে যদি শকটন্বামী না থাকেন, ভাহা হইলে যানন্ধ ব্যক্তিই দণ্ডনীয় হইবে, অববা প্রাণ্ডব্যবহার হইলে গাড়ীচালকই দণ্ডনীয় হইবে। যান যদি বালক বা অপ্রাণ্ডব্যবহার চালকদারা অধিষ্ঠিত হয়, এবং ইহাতে কোন পুরুষই যানন্ধ না থাকে, ভাহা হইলে রাজা সেই যান আত্মাণ করিবেন।

যদি কোন পুরুষ অন্তের প্রতি কৃত্যা ও অভিচারদ্বারা কোন (মারণস্তম্বনাদিরূপ) অনিষ্ট ঘটায়, তাহা হইলে সেই কৃত্যা ও অভিচারকারীর উপরও
তদ্ধপ অনিষ্ট ঘটাইতে পারা যাইবে। বান্তবিক পক্ষে, ভার্ঘ্যা মৃদি পতিকে
না চাহে ও কল্যা যদি পতিকে না চাহে, তাহা হইলে সেই পতি, এবং ভর্ত্ত্যা
বদি লীকে না চাহে, তাহা হইলে সেই লী বশীকরণাদির প্রশ্নোগ (বিনা
অপরাধে) ক্রিভে পারে। অভ্যথা, বশীকরণাদিজনিত হিংসা বা অনিষ্ট ঘটিলে,
অনিষ্টকারীর মধ্যমসাহসদও হইবে।

মাতা ও পিতার ভগিনী ( অর্থাৎ মাসী ও পিসী ), মাতুলানী ( মামী ), আচার্ঘাপত্নী, পুত্রবর্ধ, নিজের কন্তা ও নিজের ভগিনীর উপর ব্যক্তিচারকারীর ত্রিলিকছেনন ( অর্থাৎ উপন্থ ও ঘুই অগুকোব ছেদন ) ও প্রাণদণ্ডের বিধান হুইতে পারিবে। যদি মাসী-পিসী প্রভৃতি কামপরারণা হুইয়া ব্যক্তিচার করার, তাহা হুইলে তাহাদেরও দেইরূপ দণ্ড হুইবে ( অর্থাৎ স্তন্তর্বর ও ভগঙ্গেদনপূর্বক ব্যক্ত হুইবে )। দান, চাকর ও আধিরূপে রক্ষিতপুক্ষবদ্বারা ইহার। সেইভাবে ভ্রুণ হুইলে, তাহাদের ( ও ভুলান্তারে দাসাদিরও ) পূর্ববৎ দণ্ড হুইবে।

স্তন্তাবস্থায় স্থিত প্রাশ্বনীর উপর বাভিচারকারী ক্ষত্রিরের উভ্যানাহসদও ও বৈশ্যের সর্ববস্থহরণ বিধেয়। প্রাশ্বনীগমণকারী পূত্রকে কটারিছারা (অর্থাৎ ওক ঘাসদ্বারা ভাহাকে মুড়াইয়া অগ্নিদীপনদ্বারা) দক্ষ করা হইবে। রাজার ভার্যার উপর বাভিচারকারী (প্রাশ্বাদি) সকলেরই কুত্তীপাক-দও বিধের (অর্থাৎ ভাহাকে ওপ্রকটাহে ভাজিয়া মারিতে হইবে)।

চণ্ডালীকে গমন করিলে, পুরুষকে মাথায় বন্ধনিচিত্মক করিয়া অন্ত দেশে চলিয়া যাইতে হইবে। সেই পুরুষ শূদ্র হইলে, তাহাকে চণ্ডালশ্রেনীভূক্তও করা যাইতে পারে। কোন চণ্ডাল কোনও আর্যাধিকে (ব্রাহ্মনী, ক্ষত্রিয়া বা বৈখ্যাকে) অভিগমন করিলে, তাহার প্রতি বধদণ্ড প্রযোজ্য হইবে এবং ব্রীলোকটির কর্ণনাসার ছেদন বিধের হইবে।

প্রব্রজ্ঞিতা বা সর্নাসিনীর গমনে, পুরুষের ২৪ পণ দণ্ড হইবে, এবং দেই প্রব্রজ্ঞিতা যদি বয়ং কামবশা হইয়া ব্যভিচার করায়, তাহা হইলে তাহাকেও দেই দণ্ড (২৪ পণ) দিতে হইবে।

বেষ্ণার উপর বলাংকারসহ্কারে উপভোগ করিলে, পুরুষের ১২ পণ দণ্ড হইবে।

বহুসংখ্যক পুরুষ যদি একই খ্রীর উপর উপভোগ করে, তাহা হইলে তাহাদের প্রত্যেকের উপর পুগগ্ভাবে ২৪ পণ দশু হইবে।

স্ত্রীলোকের যোনি ব্যতীত অস্তম্বানে (গুদানিতে) গমন করিলে, পুরুষের প্রতি প্রথমসাহসদও বিধের। পুরুষের উপর উপভোগ করিলেও (উপভোগ-কারী) পুরুষের প্রতি দেই দও (অর্থাৎ প্রথমসাহসদও) বিধের।

গবাদি তির্যাগভরে যোনিতে গমনকারী ছরাছার ১২ পণ দশু হইবে, এবং দেবতার প্রতিমাতে গমনকারীর প্রতি তদ্ভিগ ( অর্থাৎ ২৪ পণ ) দশু বিষেয় । ১ ১ দণ্ডের অবোগ্য ব্যক্তির উপর দণ্ড বিধান করিলে, রাজাকে ত্রিশগুণ দণ্ড দিতে হইবে, এবং সেই দণ্ডের ধন জলমধ্যে বরুণদেবতার উদ্দেশ্যে প্রদান করিতে হববে, এবং তৎপর বাঙ্গাণগণকে (তাহা) দেওয়া হইবে। ২ ॥

এই প্রকার প্রদানদারা রাজার দণ্ডবিধানের ব্যতিক্রমজনিত দেই পাপ শোধিত হয়, কারণ, বরুণই মার্মবের উপর অন্তচিত ব্যবহারকারী রাজগণের শাসক হয়েন। ৩।

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে কউক্শোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণে অতিচারের দণ্ড-নামক ত্রােদশ অধাায় (আদি হইতে ১০ অধাায়) সমাপ্ত। কুল্টকুশোধন-নামক চতুর্থ অধিকরণ সমাপ্ত।

# যোগরন্ত—পঞ্চম অধিকরণ প্রথম অধ্যায়

#### ৮১ প্রকরণ--দণ্ডকর্ম বা উপাংশু বধের প্রস্নোগ

ছগ ও রাষ্ট্রের কন্টকের শোধন ( চতুর্থ অধিকরণে ) উক্ত হইয়াছে। রাজ; ও রাজ্যের ( বা অমাত্যাদি প্রকৃতির ) কন্টকশোধন ( এই প্রকরণে ) বলা হইবে। ( সম্প্রতি রাজকন্টকসমূহের কথা বলা হইয়াছে। )

য়ে মুখ্যের। (মন্ত্রী, পুরোহিত, সেনাপতি, যুবরাজ প্রভৃতি প্রধান পুরুষেরা)
রাজাকে নীচে রাথিয়া রাজকার্য্য করিতেছেন, অথবা বাঁহার। রাজার শক্তর সহিত
মিলিত হইয়াছেন, তাঁহাদের উপর নিদ্ধিলাভ করিতে হইলে (অর্থাৎ তাঁহাদিগকে ।
নিরাক্ত করিতে হইলে ) রাজার পক্ষে, গৃচপুরুষগণের প্রণিধি বা নিয়োগ
বা নিয়োগ ও কতাপক্ষের (অর্থাৎ শক্তর কার্যাবশতঃ যাহারা ক্র্ম্ম, লুম্ম, ভীত
বা তজপ হইয়াছে তাহাদের ) স্বীকার (অর্থাৎ নিজপক্ষে আনয়ন )—এই ছই
কার্য্য বিহিত। তাহাদের উপজাপকার্য্য ও অপসর্পণকার্য্য পূর্ব্বে (১০১২) বল;
হইয়াছে এবং পারপ্রামিক-নামক প্রস্তাবে (১৩০১) পরে বলা হইবে।

থে সব বল্পভেরা ( অধ্যক্ষেরা ). এবং একত্র মিলিত হইয়া কার্য্যকারী থেসব মুখোরা রাজ্যের উপঘাত বা নাশ আনয়ন করেন এবং দৃষ্য (উপঘাতের যোগ্য) হইলেও বাঁহাদিগকে প্রকাশ্যভাবে নিবারণ করা সম্ভবপর হয় না, তাঁহাদিগের প্রতি ধর্মক্রচি (অর্থাৎ রাজ্যের মঙ্গশাকাজ্জী) রাজা উপাংশুদণ্ডের (গোপনভাবে হত্যার) প্রয়োগ করিতে পারেন।

দত্রী (গৃচপুরুষবিশেষ), কোন দুখা মহামাত্রের (বা মহামাত্যের) জাতা বিদি মহামাত্রারা অবস্থায়ংশ বলিয়া অসম্মানিত বোধ করে, তাহা হইলে তাহাকে (মহামাত্রের বিরুদ্ধে) প্রোৎসাহিত করিয়া রাজার নিকট আনিয়া দেখাইবে। রাজা তাহাকে দৃয়ের উপভোগযোগ্য জব্য অধিকপরিমাণে দান করিয়া, দৃয়ের বিরুদ্ধে বিক্রম দেখাইতে প্রয়োজিত করিবেন। শস্ত্র বা বিষপ্রয়োগদারা সেই ভাই মহামাত্রের উপর বিক্রম প্রদর্শন করিলে অর্থাৎ ভাইকে মারিয়া কেলিলে, আভ্যাতক বলিয়া তাহাকেও রাজা সেই স্থানেই দাতিত করিবেন।

ইহামারা ( মহামাত্রের ) পারশব-পুত্র ( অর্থাৎ নীচবর্ণা স্ত্রীর গর্ভনাত পুত্র ) ও পরিচারিকার পুত্রের বিষয়ও ব্যাখ্যাত হইল, অর্থাৎ দত্তীর উপজাশে দেইরূপ পুত্রকেও শিতার বিরুদ্ধে প্রোৎদাহিত করিয়া পিতৃঘাতী হইলে পর রাজা ভাহাকেও মারাইবেন।

সত্রিদ্বারা প্রোৎসাহিত লাতা দৃশ্বমহামাত্রের নিকট নিজের প্রাপ্য দায়ভাগ বাচনা করিবে। রাত্রিতে দৃশ্বমহামাত্রের দারদেশে শরান বা অন্ত কোন স্থানে অবস্থানকারী সেই ভাতার সম্বন্ধে তীক্ষ-নামক গুণ্ডচর (তাহাকে নিজে মারিরাও) এইরূপ ঘোষণা করিবে যে, এই দায়কামী লাতা ( মহামাত্রদ্বারা ) হত হইরাছে। ভংপর রাজা হত লাতার পক্ষ অবলম্বন করিয়া ইতর পক্ষকে ( অর্থাৎ লাত্রহন্ধা বলিয়া উদ্পোধিত মহামাত্রকে ) নিগৃহীত (বা ঘাতিত ) করিবেন।

অথবা, সত্ত্রীরা দৃষ্যহামাত্তের সমীপে থাকিয়া দায়ভাগ-বাচনকোরী ভাইকে বাতনের ভর দেথাইয়া ভর্মনা করিবে। পূর্কোজপ্রকারে, রাত্তিতে দৃষ্যমহামাত্তের বারদেশ ইত্যাদি বিষয় সমান থাকিবে।

(পিতা-পুত্র বা ভাই-ভাই সম্বন্ধে সম্বন্ধবান্) ত্ইটি মহামাত্রের মধ্যে বিনি পুত্র, ভিনি যদি পিতারু কোনও স্ত্রীর উপর, অথবা বিনি পিতা, তিনি যদি পুত্রের স্ত্রীর উপর, অথবা এক ভাতা অপর প্রাকার স্ত্রীর উপর বাভিচার করেন, তাহা হইলে কাপটিক-নামক গুণ্ডচেরের (১১১১ প্রন্থর) ধারা উভরের মধ্যে কলহ বাধাইয়া পূর্বেরীভিতে উভরের মারণ ঘটাইতে হইবে, অর্থাৎ উভরের মধ্যে একজনদারা দিতীরের ঘাত সাধিত হইলে, প্রথমের উপরও যাভের বাবস্থা পূর্ববৎ করনীর হইবে।

দৃশ্যমহামাত্রের বে পুত্র নিজ (শোর্ষ্যাদিগুণে) অভিমানী, ভাহাকে সত্রী এইভাবে উপজ্ঞপিত করিবে—''ভূমি রাজার পুত্র, শত্রুর ভরে ভূমি এই মহামাত্রের) স্থানে স্থাসরূপে রক্ষিত হইরাছ"। এই কথার বিশ্বাসকারী হইলে তাহাকে রাজা গোপনে এই বিশ্বা সংকৃত করিবেন—''ভূমি যোবরাজ্যে অভিষক্ত হওরার কাল বা বর্ষপ্রপ্রাপ্ত হইরাছ সভা, কিন্তু, এই (রাজ্যকামী) মহামাত্রের ভরে ভোমাকে আমি রাজ্যে অভিষক্ত করিতে পারিভেছি না।" সত্রী ভাহাকে সেই মহামাত্রের বধে নিয়োজিত করিবে। পিতাকে বধ করিরা বিক্রম দেখাইলে পর, (রাজা) তাহাকে পিতৃষাত্রুক বিদ্যা ঘোষিত করিরা ঘাতিত করিবেন।

্ (গুণ্ডচরের কার্যাকারিনা ) ভিক্কী দৃয় ( অমাত্যাদির ) ভার্যাকে, নিজের

বশীকরণের শক্তিসম্পন্ন ওযধির পরিজ্ঞান জানাইয়া, (তৎপরিবর্ত্তে) বিষদার: তাহাকে বঞ্চিত করিবে থেন তদ্ধার) তাহার পতির মৃত্যু ঘটে )। এই প্রকার বঞ্চনকার্য্যকে জ্মাপ্য-প্রায়েশ বলা হয় । কোনও সংস্করণে "আন্তঃ"-পাঠও দেখা যায়।)

অট্রীপাল বা পারপ্রামিকদিগকে বধ করার জন্ত, বা কান্তাত বা বনস্থলীদার: অন্তরিত প্রদেশে রাষ্ট্রপাল কিংবা অন্তপালকে স্থাপন করার জন্ত, বা কোপছন্ট নগরস্থান ( অর্থাৎ ভন্নগরবাদীদিগকে। নিরমন করার জন্তু, বা প্রভাস্তপ্রদেশে প্রভ্যাদেয় সহিত ( অর্থাৎ শক্রদারা পূর্কে গৃহীত, অ ৩এব, পুনরায় গ্রহীতব্য ভূম্যাদি সহিত ) সার্থগণদারা অভিবহনযোগ্য দ্রব্যাদি গ্রহণ করার জন্ত, ( রাজা ) দৃয়মহামাত্রকে অল্পসংখ্যক সেনার সহিত ও তীক্লাদি গুচপুরুষযুক্ত করিয়া পাঠাইবেন ৷ তৎপর রাত্রিতে বা দিবাতে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলে, তীক্ষণণ প্রতি-রোধকের ( পূর্থনকারী দক্ষ্যর ) বেশধারী হইয়া ( সেই দৃষ্টমহামাত্রকে ) বধ করিবে এবং প্রচার করিবে যে, এই ব্যক্তি যুদ্ধে হত হইয়াছেন। অপবা, যাত্র। ( শক্রর প্রতি অভিযান ) ও বিহারের ( ক্রীড়াদির ) জন্ম প্রস্তুত হইয়৷ ( রাজ্য) দৃশ্যমহামাত্রদিগকে দর্শনার্থ আহ্বান করিবেন। সঙ্গে গুচ্ভাবে শন্তরক্ষণশীল তীক্ষ-নামক গুণ্ডচরদিগের সহিত তাঁহার। (মহামাত্রেরা, রাজকুলে) প্রবেশ করিলে, (রাজসমীপে) প্রবেশলাভার্থ মধাম কক্ষ্যাতে (সঙ্গে কোন শস্তাদি আছে কি না ভদ্বিয়ে ) নিজ শরীরের অন্তেখণ করাইতে স্বীকার করিবেন। ভৎপর দৌবারিককর্ত্ব অভিগৃহীত ( গ্রেণ্ডারে আবদ্ধ ) তীক্ষণণ প্রকাশ করিবে যে, তাহারা দৃষ্য ( মহামাত্রগণকারা দশস্ত করাইয়া ) প্রযুক্ত হইয়াছে। তাহারা ( তীক্ষেরা ) সেই বিষয়টা ( অর্থাৎ মহামাত্রগণকন্ত্র কাজার বধচেষ্টার কথাটা ) শ্রচারিত করিয়া (সেই দোষের জন্ত) দুয়াদিগকে বধ করিবে। কিছু, সেই তীক্ষগণের পরিবর্ত্তে অন্তলোক ( রাজাদেশে ) বধ্য হইবে।

অথবা, ( তুর্গাদির ) বাহিরে ( পরিদর্শনার্থ ) নির্গত ইইয়া, (রাজা ) নিকটবর্তী আবাদে বাসকারী দৃষ্যমহামাত্রদিগকে বিশেষ সংকারাদি প্রদর্শন করিবেন। রাত্রিতে মহারাণীর বেশধারিণী কোন এই স্ত্রীকে তাঁহাদের আবাদে ধত করাইবেন। যেন বিচয়বান্ত শোকেরা মহারাণীকেই আয়েষণ করিতেছে )। ইছার পরে পূর্বে রীতির সমান কর্ম জ্ঞাতব্য ( অর্থাৎ দেবীকামুক বলিয়া খ্যাপিত করিয়া মহামাত্রদিগের বধসাধন করাইতে হইবে )।

"ভোষার বন্ধনকারী বা ধান্তপ্রস্ততকারী বেশ ভাল পাক করে" এইভাবে

প্রশংসা করিয়া (রাজা) দ্য়য়হামাত্রের নিকট ভক্ষণের জিনিস বাচনা করিবেন, অথবা (প্রর্গের) বাহিরে কোন পথে গেলে কোনও স্থানে (তাঁহার নিকট) পানীয় বাচনা করিবেন। (তৎপর) সেই (ঝায়দ্রের ও পানীয়) উভয় বস্তুতে (গোপনে) বিব যোজনা করাইয়া—ইহার প্রথম আস্বাদনে সেই মহামাত্রহরকে (ভক্ষভোজাদায়ী মহামাত্র ও পানীয়দায়ী মহামাত্রকে) থাওয়াইবেন (তাঁহারাও মারা যাইবেন)। এইকথা (অর্থাৎ স্থাণ ও ভক্ষকার উভয়েই মহামাত্রহরকে বিব পাওয়াইয়াছে এই বিবয়) প্রচার করিয়া, ভাহারা উভয়েই বিবপ্রদানকারী বলিয়া রাজা তাহাদিগকে বধ করাইবেন। অববা, আভিচারিক কার্যে প্রজাদ্ (দ্য়া) মহামাত্রকে সিদ্ধপুরুষের বেশধারী গুওচর এই কথা ব্র্থাইবে যে, তিনি সদি স্লক্ষণমৃক্ষ গোধা, কর্মা, কর্মটা ও ক্টের (হরিণবিশেবের) অলভমকে (অভিচার-কর্ম্মদারা পাক করিয়া) বান, ভাহা হইলে ভিনি সব মনোরও প্রাপ্ত হইবেন। এই কথাতে বিশ্বাসকারী মহামাত্র যথন (শাশানাদিতে) অভিচারকর্মের হাইবেন, তথন (ভিনি) ভাহাকে বিরপ্রয়োগ হারা, অথবা লোহন্যুম্পের আঘাতহারা ঘাতিত করিবেন এবং ইহাই প্রসিদ্ধ করাইবেন যে, তিনি অভিচারকর্মের বৈওলাবশতঃ (পিশাচাদিছারা) হত হইয়াছেন।

অথবা, চিকিৎসকের বেশধারী গুপ্তচর দৃষ্য (মহামাত্রের ) নিজের হুরাচার হুইতে উৎপদ্ধ ব্যাধি কিংবা অসাধাব। প্রাতীকারহীন ব্যাধি তাঁহার হুইরাছে বিশিয়া স্থির করিয়া, তাঁহাকে ঔবধ ও ভোজনদ্রব্যের সঙ্গে থিব প্রয়োগ করিয়া মারিয়া কেশিবে।

অথবা, স্দ (মাংসাদিণাচক) ও আরালিক ( তণুলাদিণাচক)—এই উভয়ের বেশধারী গুওচরেরা দৃছ (মহামাত্রের) বিরুদ্ধে (গোপনে) নিযুক্ত থাকিয়া বিবপ্রয়োগে তাঁহাকে মারিয়া ফেলিবে।

এই পর্যান্ত উপনিষৎ বা ওপ্তবিধিতে (দৃষ্যাদির) প্রতিবেধ বা নিগ্রহ অভিহিত হইল।

এখন এক প্রথম্নে ছুক্টি দ্যোর নিপ্রহানমার এইরূপ বলা হইতেছে। যে স্থানে কোন একটি দ্যাকে নিগৃহীত করিবার আবশ্যক হয়, সে-স্থানে (রাজা) অন্য একটি দ্যাকে কন্তবল (সল্পন্থাক সৈন্ত)ও তীক্ষ্ণ-নামক ওওচরদ্বারা যুক্ত করিয়া পাঠাইবেন। ভাষাকে এইরূপ বলিয়া দিতে হইবে—"অমুক ছুর্গে বারাষ্ট্রে যাও—সেধানে ঘাইয়া সেনাতে উপযুক্ত লোক ভর্তি করাও, অথবা টাকা উঠাও, অথবা বল্লভ বা অধ্যক্ষর ছইতে টাকা সংগ্রহ করাও, অথবা অধ্যক্ষর

কন্তাকে বলাৎকার-সহকারে অবিকার কর, অথবা হার্গকর্ম, সেতৃকর্ম, বলিক্লথকর্ম,
শ্রুনিবেশনকর্ম ( অথাৎ শ্রুজানে গৃহাদি নিবেশনকর্ম ), থনিকর্ম, স্থারনকর্ম
( দারু প্রছৃতি বনের কর্ম )ও ইন্তিবনকর্মসমূহের অন্তডম কাজ করাও, অথবা
রাষ্ট্রপালের ও অন্তপালের কর্ম করাও। অথবা, যে লোক ভোমার এইমব
কাজে বাধা দিবে, অথবা ভোমাকে কোনও সাহায্য প্রদান না করিবে, ভাহাকে
বাধিয়া আনিবে।" এই প্রকারেই তিনি সেই ছানের লোকদিগকে ( বাহারা
সেখানকার দ্যোর পক্ষপাতী ভাহাদিগকে ) ( বাচিক সংবাদ ) পাঠাইবেন—
"অমুক (প্রেয়মণ) লোকটির অবিনয় যেন ভোমরা প্রতিরোধ করিও।"
( সৈন্ত ও টাকা উত্থাপনরূপ) কলহবহুল কারণ উপস্থিত হইলে, অথবা (প্রেবিভ
দ্যুলারা আরক কর্মের ) বিঘ উপস্থিত হইলে পর, যদি সেই (প্রেবিভ দ্যু)
বিবাদপরায়ণ হয়, ভাহা হইলে ভাহাকে ( ভাহার সন্ধী ) তীক্ষণণ গোপনে
শন্তপ্রয়োগদারা বধ করিবে। আবার ( রাজনিষ্ক্ত লোককে ইহারা বধ
করিয়াছে, এই ছল প্রকাশ করিয়া ) সেই অপরাধে ( ভৎস্থানের ) অন্ত দ্যোরাও
নিয়মিত বা মারিভ হইবে ।

অথবা, দৃহ্য নগর, গ্রাম বা কুলে (পরিবারে), যদি দীমা, ক্ষেত্র, ধপন্থান ( অর্থাৎ ধান্ত মাড়িবার ধামার ) ও গৃহদীমাস্বন্ধে, ( স্থবণিদি মূলবান্ ) দ্রবা. (বন্ধাদি ) উপকরণ, শশ্য ও ( যানাদি ) বাহনের উপঘাতবিষয়ে, কিংবা শ্রেক্ষাকার্য্য ( অভিনয়াদি তামাশা ) ও বিবাহাদি উৎপবসম্বন্ধে কোনও কলহ উৎপন্ন হয়, কিংবা তীক্ষ-নামক গুপ্তচরগণদ্বারা ইহা উৎপাদিত হয়, তাহা হইলে তীক্ষেরা ( প্রচ্ছন্নভাবে দৃষ্যদের উপর ) শস্ত্র-প্রয়োগপূর্বক তাহাদিগকে মারিয়া কেলিয়া এইয়প প্রচার করিবে, "অমুক ব্যক্তির সহিত কলহ করিয়া ইহাদের এইয়প গতি হইয়াছে।" পরে অন্ত বাক্তিদের দম্বন্ধে মারণদোৰ প্রচার করিয়া, তাহাদিগকেও সেই অপরাধের জন্ত ( রাজা ) নিয়মিত করাইবেন।

অথবা, যে পৃছাগণের কলহের মূল পাকিয়া গিয়া দৃঢ় ছইয়াছে, ভাহাদের ক্ষেত্র, ধল ও বাড়ীঘর অগ্নিধারা জালাইয়া দিয়া, কিংবা ভাহাদের বন্ধুবাদ্ধবের (বানাদি) বাহনসমূহে শন্তপাতদারা ভাহা নাশ করিয়া, পূর্ববিৎ দেই তীক্ষেরা বলিবে, "আমরা অমুক বাজিদারা এই কাজ করিতে প্রযুক্ত হইয়াছি।" তৎপর সেই দোবের জ্জ রাজা ( দৃশ্বগণকে ) নিয়মিত করাইবেন।

হুর্গে ও রাষ্ট্রে বাসকারী দৃছগণকে সঞ্জি-নামক গুণ্ডচরের। চেটা করিয়া ভাষাদের মধ্যে মিলন ঘটাইয়া পরস্থারের বাড়ীতে ভোঞ্চনার্থ নিমন্ত্রণ এইণ করাইবে। সেধানে বিষদায়ী চরের। বিষপ্রদানে নিমন্ত্রিত ব্যক্তিদিগের মৃত্যু ঘটাইবে, পরে সেই দোবের জন্ত অপের দুয়ুগণকে রাজা নিয়মিত করাইবেন।

অথবা, (গুণ্ডচরের কার্য্যে নিযুক্তা) ভিক্কী কোন দ্য়ারাইমুধ্যকে (উচ্চ-শান্ত্র বাজিকে) এই বলিয়া উপজ্ঞাপদ্ধারা বশীভূত করিবে যে, অপর দ্য়রাইন্থ্যের স্ত্রী, পুত্রবধূ বা কন্তা তাঁহাকে কামনা করেন। সেই ব্যক্তি এই কথা বিশ্বাস করিলে পর, (সেই ভিক্কুকী) তাঁহার নিকট হইতে (অপর দ্য়রাইন্যুধ্যর স্ত্রী প্রভৃতির জন্ত) কোন আভরণ লইয়া আসিয়া তাঁহার স্বামীকে (অর্থাৎ অপর দ্য়রাইমুধ্যকে) দেখাইবে। (এবং সে এইরপ্র বলিবে)—"অমুক মুখ্য যৌবনমদে দৃপ্ত হইয়া আপনার স্ত্রী, পুত্রবধূ বা কন্তাকে কামনা করিতেছেন।" তৎপর উভ্রের কলহ উপস্থিত হইলে পর, (তীক্ষপুরুষ্বেরা রাত্রিভে তাঁহাকে গোপনে বধ করিয়া, এই বধের দোষ অপর দ্য়ের উপর চাপাইয়া দিয়া তাঁহার উপরও রাজসত্তর বাবস্থা করাইবে) ইত্যাদি পূর্ক্বৎ জ্ঞাতবা।

কিন্ধ, দণ্ডোপনত ( গা>৫-তে উক্ত সংস্নোদারা বশীভূত ) রাজারা দৃশ্ব হইলে, 
টাহাদিগের সম্বন্ধে (বিজিপীয়ুর) যুবরাজ বা স্নোপতি কোনদ্ধপ কিঞ্চিৎ
অপকার সাধন করিয়া, (দেশ হইতে) বহিগত হইয়া (.ভাহাদের প্রতি) বিজ্ঞম
প্রদর্শন করিবে। তৎপর রাজা দৃশ্বভূত অন্ত দণ্ডোপনত রাজাদিগকে স্বন্ধসংখাক
দৈশ্ব ও তীক্ষ্ণ-নামক গুচুপুরুবদারা যুক্ত করিয়া অপর্রদিগের প্রতি (মৃদ্ধাদির জন্ত )
প্রেরণ করিবেন। এইভাবে সর্বপ্রকার উপায়ই স্মানপ্রার (অর্থাৎ ছইপ্রকার
দৃশ্বের মধ্যে কলহ বাধাইয়া দিয়া, একের দারা অন্তের বধসাধন হইলে, তাহাকেও
সেই অপরাধে বধকরা ইত্যাদি পূর্ব্বোক্ত রীতিতে উপায়প্রয়োগ স্মান হইবে)।

সেই মারিত ( দণ্ডোগনত ) দৃয়ারাজাদিগের যে যে পুত্রেরা ( বিজিগীয়ুর )
নিন্দা করিবেন, তর্মধ্যে যে পুত্রটি নির্কিকার ( অর্থাৎ রাজ্ঞােহের চিন্তাারহিত )
থাকিবেন, তিনিই পিতার সম্পত্তির অধিকারী হইবেন। এইভাবে তাঁহার রাজ্য
হইতে সর্বপ্রকার পুরুষদােষ ( রাজ্ঞােহাদি ) দৃরীভূত হওয়ায়, সেই রাজা ভদীয়
পুত্রপৌত্রগণেও অন্ধর্মতি ইইবে ।

ক্ষমাশীল রাজা বর্তমানে ও ভবিয়তে কোন আশকা না রাখিয়া নিজপক্ষে ও পরপক্ষে এই গৃঢ় দঙ্কের প্রয়োগ করিবেন ॥ ১॥

কৌটিশীয় অর্থশাল্পে যোগর্ভ-নামক পঞ্চম অধিকরণে দাওকর্দ্ধিক-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ৯১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### দ্বিতীয় অধ্যায়

### ১০ম প্রকরণ—কোশাভিসংহরণ বা নির্দিষ্টকোশ অপেক্ষায় অধিক কোশ সংগ্রহ

বাজার কোশ অল্ল হইয়া পড়িলে, এবং অতর্কিতভাবে তাঁহার অর্থকজুড়া উপস্থিত হইলে, রাজা কোশসংগ্রহ করিতে পারেন ( অর্থাৎ অর্থসঞ্চয়ের উপায় অবলখন করিয়া রাজকোশ বাড়াইতে পারেন )। যদি কোনও মহান্ বা বড় জনপদ স্বল্লখনপ্রমাণবিশিষ্ট হয়, অথবা যদি ইহার শস্ত্রজীবন রৃষ্টিজলের উপর নির্ভির করে ('অদেবমাতৃক' পাঠ ধরিলে অর্থ হইবে—'হাহার শস্ত্রজীবন নদী প্রভৃতির জলের উপর নির্ভির করে') এবং ইহাতে প্রচুর ধান্ত উৎপন্ন হয়, তাহা হইলে রাজা সেখানকার জনপদবাসীদিগ হইতে ধান্তের এক-তৃতীয়াংশ বা এক-চ্ছুর্থাংশ যাচনা করিয়া লইবেন ( অর্থাৎ বলাৎকারসহকারে লইবেন না); কিন্তু, কোনও জনপদ যদি মধ্যম বা অবর ( অর্থম ) শ্রেণীর হয়, তাহা হইলে সেখান হইতে উৎপন্ন ধান্তের পরিমাণ ব্রিয়া ইহার অংশ গ্রহণ করিবেন।

হুর্গকর্মা, সেতুকর্মা, বাণিক্পথ, শৃশুনিবেশ, ধনি, দ্রব্যবন ও হাজ্ববন—এই সাওপ্রকার কার্যাদ্বারা যে প্রভান্তপ্রদেশ স্বল্পধনপ্রমাণবিশিষ্ট হইয়াও (রাজা ও প্রজার ) উপকার সাধন করে, রাজা সেই প্রভান্তপ্রদেশ হইতে (কোশবৃদ্ধির জন্ত কোশ ) যাচনা করিবেন না।

ন্তন জনপদনিবেশকারী রুষককে তিনি ধান্ত, পশু ও হিরণ্যাদি (নগদ টাকা প্রভৃতি) দিবেন। তিনি দেখানে উৎপন্ন ধান্তের চতুর্থাংশ, হিরণ্য বা নগদ টাকাদ্বারা ক্রয় করিবেন; কিন্তু, তিনি দেখিবেন যেন ক্রয়কের বপনের বীজ ও খাইবার ডক্ত বা অন্ন কম না পড়ে, অর্থাৎ বীজ ও ভক্তাবশিষ্ট ধান্তেরই ধরিদ বিধেয় হইবে।

অরণ্যে স্বয়ং উৎপক্ষ (ধাক্তাদি) ও শ্রোতিগ্নহারা উৎপক্ষ শস্তাদি ধনও রাজ্য পরিহার করিবেন, অর্থাৎ ভারা হইভে ভাগ গ্রহণ করিবেন না। সেই ধাক্তাদিও সম্প্রহসহকারে, অর্থাৎ বীজ ও ভক্ত রক্ষা করিয়া, ধরিদ করিবেন।

স্থাবা, তাঁহার (শ্রোত্রিয়ের) স্থাব্য পর্যাৎ যদি শ্রোত্রিয় নিজে কৃষি না ক্রেন, তাহা হইলে সমাহর্তার পুরুষের। (কম্ম চারীরা) গ্রীমকালে কর্ষকগণদারা বশনকার্যা করাইবেন। কর্ষকের প্রমাদবশতঃ বদি উক্ত বীজাদি নষ্ট হয়, তাহা হইলে ভাঁহার। নই বীজাদির দিওণ অত্যর বা দগুবিধান করিয়া (পুনর্বার) বীজবণন-সমরে বীজসম্বনীয় লেখা (সংবিং-লেখা) করিয়া লইবেন। বীজ দলিত ইইডে থাকিলে ভাঁহারা কৃষককে কাঁচা ও পাকা শভ্য গ্রহণ করিতে নিষেধ করিবেন; কিছা, দেবপূজা ও পিতৃপূজার জন্তা, অধবা গক্ষর জন্তা শাক্ষ্মি ও হন্ডছিন্ন ধান্তমূপ্তি নোভিত পারিবে। ভাঁহার। (সমাহর্তপুক্রেরা) ভিক্ক ও গ্রামভ্তকের (অর্থাৎ নাগিত-রজকপ্রভৃতির) জন্তা ধান্তবাশির তলগত অর্থাৎ নীচের ধান্ত পরিত্যাগ করিবেন।

যদি কৃষক স্থাশেশের পরিমাণ লুকার (অর্থাৎ করমুন্তির জন্ত ধান্ত চুরি করিরা রাখে., তাহা হইলে অপক্ত ধান্তের আট গুণ ভাহার দণ্ড বা গুরিমানা ছটবে। ববণস্থিত অর্থাৎ একপ্রামবাসী কেহ যদি অন্তের শক্ত অপহরণ করে, তাহা হইলে তাহার পঞ্চাশ-গুণ সীতাভ্যের অর্থাৎ অপক্ত ক্ষেত্রশক্ষের পঞ্চাশ-গুণ দণ্ড হইবে। কিন্তু, সে যদি বাহা বা প্রামান্তরবাসী হয়, তাহা হইলে এই অপরাধে ভাহার বধদণ্ড হইবে।

তাঁহারা (পূর্ণ মাত্রার উৎপন্ন) ধান্তের চতুর্থাংশ, এবং বস্ত ধান্তের ও ডলা, লাক্ষা, ক্ষোম, বন্ধ (রক্ষত্ক), কার্পান, রোমজাত, কোশেরক (রেশম), ঐবধ, গন্ধ (চন্দনাদি , পুন্দা, ফল ও শাকপণাের এবং কাঠ, বংশ, মাংস ও ও ভক্ষমাংসের ষঠাংশ গ্রহণ করিবেন। (উাহারা) (ছন্তিপ্রভৃতির) দাঁত ও (গবাদির) চর্মের অর্জাংশ গ্রহণ করিবেন। রাজপক্ষের আজ্ঞানা শইয়া এই সব দ্বা বিক্রয়কারীর উপর পূর্ব্ধ বা প্রথমসাহসদও বিধেয় হইবে।

এই পর্যান্ত কর্মকদিগ হইতে প্রেণায় বা রাজপক্ষে কর্মাচন। উক্ত হইল।

শ্বর্ণ, রোণ্য, হীরক, মণি, মুক্তা, প্রবাল, অশ্ব ও হস্তী—এই দব পণ্যের বাবহারীকে পঞ্চাশভাগের এক ভাগ করন্ধপে দিতে হইবে। প্রে, কাপড়, তাত্র, রস্ত (ধাতৃবিশেষ), কাঁস, গন্ধ, ভৈষজা, শীধু (প্ররা)—এই দব পণ্যের ব্যাপারীকে চম্বারিংশৎ ভাগের এক ভাগ করন্ধপে দিতে হইবে। ধান্ত, রস (তৈলম্বভাদি) ও শেহজাভ প্ণাের ব্যবহারীকে ও শকটের কারবারীকে ত্রিশ ভাগের এক ভাগ করন্ধপে দিতে হইবে। কাচের ব্যবহারীকে ও বড় বড় কান্সকে উপার্জনের বিংশতি ভাগের এক ভাগ করন্ধপে। দতে হইবে। ছোট ছোট কান্সকে ও বন্ধকী বা কুলটা স্ত্রীকৈ পোষণ করিয়া উপার্জনকারীকে দশ ভাগের এক ভাগ করন্ধপে দিতে হইবে। কাঠ, বেণু, পাষাণ, মুক্তিকাভাও, পক্ষমে ও শাক—এইসব পণ্যের ব্যবহারীকৈ পাঁচ ভাগের এক ভাগ করন্ধপে দিতে হইবে। কূশীলব (নটনর্জকাদি)

ও বেশ্যদিগের স্বোণার্জিত অর্থের অর্থাংশ করম্বণে দিতে হইবে। বাণিজ্যাদি কর্মে অব্যাপৃত বণিক্দিগের প্রত্যেক জন ছইতে এক হিরণা (এক টাকা) করমপে সংগ্রহ করিতে হইবে। ইছাদের (অব্যাপারম্নপ) কোনও অপরাধ উপেক্ষা করা হইবে না, অর্থাং ভাহাদের দের হিরণ্যকর অবশ্যই সংগৃহীত হইবে। বে-হেতু ভাহারা নিজের ভৈয়ারী পণ্যাদি অপরের ক্বত বলিয়া ছল করিয়া বিজ্ঞা করে (রাজদেয় কর এড়াইবার জন্ত)।

এই পর্য্যন্ত ব্যবহারী বা ব্যাপারীদিগের নিকট হইতে প্রণয় বা অথ্যাচন। নিরূপিত হইল।

ক্ষুট ও শৃকর-পোষকের। ( স্বর্জিত ) জন্তুদিগের অর্জভাগ রাজকররূপে দিবে। ক্ষুদ্র পশু ( ছাসাদি :- পোষকের) এক-ষষ্ঠাংশ দিবে। ক্ষুদ্র মহিষ, অ্যতর ( থচ্চর ), গর্জভ ও উট্রপালকের। এক-দশম ভাগ দিবে। বন্ধকী বা কুলটা স্ত্রী-পোষকেরা রাজার অ্যুমভিপ্রাপ্ত ( কিংবা রাজকিক্ষরীভূত ) প্রমন্ধ্রপন্ধিবনব্জী প্রীদারা রাজকোশের নিমিত্ত ধন-স্কর্ম করিবে।

এই পর্যান্ত যোনিপোষকগণ-সন্থদ্ধে প্রণয় বা রাজার্থ জ্বন্ধ যাচনা ব্যাখ্যাত ছইল।

এইপ্রকার করপ্রণয় একবার মাত্রই হওয়া চলে, তুইবার নহে। উপরি উক্ত প্রশালীতে (কোশর্মির জন্তু) কর-প্রণয় না করা হইলে, সমাহর্ত্তা কোন প্ররোজনীর কার্য্যের বাপদেশ (ছল) করিয়া প্রবাসী ও জনপদবাসীদিগের নিকট (রাজার্থ ধন) মাগিয়া লইতে পারেন। এই কার্যো (সমাহর্ত্তার) সংকেতিত পুরুষেরা সর্ব্বাপ্রে অধিক মাত্রাের ধন দিবে। এই প্রকারে রাজা পৌর ও জানপদ জনগণ হইতে ধন যাচনা করিবেন। যে সমস্ত পৌর ও জানপদেরা (এই কার্যে) আল ধন প্রদান করিবে কাপটিক নামক গুঢ়পুরুষের। তাহাদিগের কুৎসা বা নিন্দা করিবে। বাঁহারা ধনী লোক তাঁহাদের সায় বা ধনবল বুঝিয়া (রাজা) তাঁহাদের নিকট (ধন) যাচনা করিবেন। অথবা, রাজা হইতে প্রাপ্ত উপকার আরণ করিয়া, কিবো রাজার আপন বশবন্তী বিদিয়া, আঢ্যজনেরা যাহাই দিবেন, (রাজা ভাহাই গ্রহণ করিবেন), এবং তিনি তাঁহাদের নিকট হইতে প্রাপ্ত হিরণ্য বা নগদ টাকার পরিবর্ত্তে তাঁহাদিগকে (অধ্যক্ষাদি) পদ, ছত্ত্র, (উক্ষীষাদি) বেষ্টন, ও (কনকবলরাদি) বিভূষণ প্রসান করিবেন, অর্থাৎ এই সব ক্রব্য প্রদান করিয়া ভাহাদিগের প্রতি সৎকার দেখাইবেন। কোনও পায়ন্তের (ধর্ম-সম্ভাদ্যের ) জন্ম ও কোনও (বৌদ্ধ) সংক্রের ক্রব্য, অথবা শ্রোক্রিগণের ভোগাতিরিক্ত (মন্দির)-দেবতার দ্রব্য রাজার পক্ষে ক্রত্যকারীরা (কার্য্যস্থাদক পুরুবেরা)
'ইছা অমৃক প্রেতব্যক্তির হন্তে, কিংবা বাছার গৃহ দগ্ধ হইয়াছে ভাছার হস্তে রক্ষার্থ স্তাস বা নিক্ষেণজণে রক্ষিত ছিল'—এই বাপদেশে গ্রহণ করিয়া (রাজস্মীশে) অর্পণ করিবে।

**দেবভাষ্যক্ষ হর্**গের ও রাষ্ট্রের দেবভাগণের ধন যথায়ধভাবে ( শত্রুভয়ে ) একস্থানে একত্রিত রাখিবেন এবং দেইভাবেই রাজাকে আনিয়া দিবেন। কোনও প্রসিদ্ধ পুণাস্থানে ভূমিভেদপূর্বক দেবতা নির্গত হইয়াছেন-এই বাপদেশে সেখানে রাত্রিতে (অর্থাৎ নির্জ্জনে) একটি দৈবতচৈতা বা দেবতার বেদি উপাপিত করিয়া (উক্ত দেবভাধ্যক্ষ) সেখানে যাত্রা (উৎস্বাদি ও সমাজ ( জন্মেলা )- দ্বারা দৈবতার্থ ধনদ্বারা জীবিকানিন্ব্যাহ করিবেন, অর্থাং দেই স্থানে যাত্রিলোকের প্রদত্ত ধন রাজসমীপে গোপনে অর্পণ করিবেন। (ভিনি) ইহাও খ্যাপনা করিতে পারেন যে, দেই চৈত্যের উপবনে একটি বৃক্ষ অকালে ( স-ঋতুর ব্যতিরিক্ত কালে) পুষ্প ও ফলযুক্ত হইয়াছে এবং ইহা হইতেই দেখানে দেবতার অভিগমন নিশ্চিত হইয়াছে, ইহা খ্যাপিত করাইবেন। অথবা, দিন্ধ-পুরুষের বেশধারী গুচপুরুষেরা ( শ্মশানাদির নিকটবর্ত্তী ) কোনও রক্ষে প্রতিদিন এক একটি মাহ্র্য ভক্ষণার্থ কররূপে দিতে হইবে—এই মর্মে রাক্ষ্যের ভয় উৎপাদন করিয়া, পৌর ও জানপদ জন হইতে বহু টাকা শইয়া সেই ভয়ের প্রতীকার করিবে, অর্থাৎ রাক্ষনভয়ে স্বজীবনার্থ প্রদত্ত টাকা রাজ্ঞাকে গোপনে অর্পণ করিবে। অথবা, কোনও স্নড়ঙ্গযুক্ত কুপে অস্তশ্চিদ্রযুক্ত নাগম্ভিতে অনিয়মিত অর্থাৎ তিন বা পাঁচ সংখ্যা-পরিমিত মন্তকযুক্ত নাগ ( দর্শকরন্দকে ) দেখাইয়া তাহাদের নিকট হইতে হিরণা বা টাকা উপহারদ্ধণে লইবে (এবং সেই টাকা বাজসমীপে অর্পণ করিবে )। চৈত্যের কিংবা বন্ধীকের কোনও ছিছে ( হঠাৎ ) কোন দর্প দেখা গেলে, দেই দর্পকে ( আয়ন্তীকরণের মন্ত্র ও ওষধিছারা) নিরুজগতি করিয়া শ্রদ্ধালু লোককে দেখাইবে ( অর্থাৎ বলিবে যে দেবতার প্রভাবে সর্পের দংজ্ঞা প্রতিবন্ধ হইয়াছে 😥 যাহারা অপ্রদাস্ ভাছাদিগকে আচমন (ভোজন) ও প্রোক্ষণ ( স্থানাদি) দ্বব্যে (সঙ্গমান্তায়) বিব মিশাইয়া মোহিড করিয়া, 'ইছা দেবভার অভিশাপ' এই বলিয়া প্রচার করিবে। অধবা, অভিত্যক্ত বা বধাজনকৈ সর্পদ্বারা দট করাইয়া (দেবতার অভিশাপ चित्रा श्राप्ता कतिरव )। व्यथना, क्षेत्रनिविधिक व्यथिकत्रता श्राप्त विवासिकारणद -প্রতীকার্মারা ( রাজার কোশবৃদ্ধির জন্ত ) কোশনকরের ব্যবস্থা করিবে।

অথবা, বণিকের বেশধারী গুঢ়পুরুব (বিজয়ার্থ) অনেক পশাস্তবা ও অনেক সহায়ক (কর্মচারী) সচ্চে লইয়া। ক্রেরিক্রয়-) ব্যবহার আরক্ষ করিবে। ধবন সে পণাের অনেক মূল্য সঞ্চয় করিবে এবং (তাহাকে বিশাস করিয়া ভাহার নিকট) অক্তেরা নিক্রেপ বা টাকা আমানত রাখিবে এবং বৃদ্ধির জ্ঞ্জ ভাহাকে প্রয়োগ বা টাকা ধার দিবে এবং সেই কারণে সে অভান্ত ধনাধিকারী হইয়া বসিবে, তথন (রাজা) রাজিতে ভাহার সেই উপচিত ধন চুরি করাইবেন (অর্থাৎ ভদ্যারা নিজ ক্যাশ আংশিক বৃদ্ধি করাইবেন)।

এই প্রকারে সরকারী মুদ্রাপরীক্ষক ও রাজকীয় স্কর্থকারদ্বারাও (রাজা) রাজকোশসংর্গন করাইবেন ( অর্থাৎ রূপদর্শক ও স্কর্থকারের নিকট বথাজনে পরীক্ষণার্থ রক্ষিত মুদ্রা ও অলফারাদি-নির্মাণের জন্ত রক্ষিত স্কর্থাদি জব্য রাজারাজিত চুরি করাইবেন ), তাহাও ব্যাধ্যাত হইল।

অথবা, বণিকের বেশধারী গুপ্তপুরুষ নিজের ক্রেরিক্রাব্যবহারের প্রাদিদ্ধি ঘটিলে. প্রাহ্বরণ বা ভৃষ্টিভোজের চল করিয়। (অল্পের নিকট হইতে) অনেক রূপাজাত ও স্বর্ণজাত ভাও যাচিয়া বা ভাড়া লইয়া সংগ্রহ করিবে। সমাজ বা বহুপোকের সমাগমে নিজের সমস্ত পণ্যভাও দেখাইয়া নগদ টাকা ও স্বর্ব ঋণরূপে গ্রহণ করিবে। এবং নিজের বিক্রেয় দ্রবেয়র মূল্যও (দ্রব্য সর্বরাহ করার পূর্বেই) গ্রহণ করিবে। এই উভন্ন প্রকারের ধন (অর্থাৎ সেই রূপ্যাদি ভাও ও মূল্যের টাকা) রাত্তিতে (রাজা) চুরি করাইবেন।

সাধ্বী স্ত্রীশোকের বেশধারিণী (রাজকীয়) গুঢ়স্ত্রীসপদার। (রাজদ্বৌ) দ্যাজনদিগকে উন্মাদিত করাইয়া, তাহাদের (সেই স্ত্রীলোকদিগের) বাড়ীতেই ভাহাদিগকে গ্রেপ্তার করাইয়া (ভাহারা) ভাহাদের সর্বস্থ কাড়িয়া লইবে।

অথবা, দ্যাপুরুষের নিজকুলের লোকদিগের । কোনও দায়াদি বিষয়সম্বন্ধে )
বিবাদ উপস্থিত হইলে, রাজপ্রেয়ুক্ত বিষদায়ী গৃচপুরুষের। ( এক পক্ষের লোকের
প্রতি ) বিষ প্রয়োগ করিবে । অপর পক্ষকে দেই দোষে দোষী বলিয়া প্রচার
করিয়া তাহাদিগের সর্বস্থ অপহরণ করাইবে । অথবা, কোনও অভিভয়ক্ত বা
বধা বাজি দৃষোর নিকট উপস্থিত হইয়া তাহার কাছে এমন ভাবে কোনও পণ্য
বা নগদ আমানত টাকা, বা কোনও ঋণপ্রয়োগের টাকা, ব। কোন দায়ভাগের
বন্ত চাহিবে, যেন সকলেই বিশ্বাস করে যে, উভয়ের মধ্যে এই সব বন্তবিষয়ে কোন
সক্ষম রহিয়াছে । অথবা, সে দ্যুকে তাহার 'দাস' বলিয়া প্রখ্যাত করিবে ।
ক্ষমবা, তাহার (দ্যোর) স্থী, পুত্রবধ্ কিবো ক্ষ্যাকে নিজের 'দাসী' বলিয়া

কিংবা নিজের 'ভার্ব্যা' বলিয়া ব্যাপদেশ করিবে। রাত্রিভে দ্ব্যের গৃহদারে শয়নকারী, অথবা অন্তত্ত বাসকারী দেই অভিত্যক্ত বা বংগজনকৈ তীক্ষ-নামক গৃচপুরুব হত্যা করিয়া এইরূপ প্রচার করিবে বে, এই কামুক ব্যক্তি এই ভাবে ( দূহাদারা ) হত হইয়াছে। দেই অপরাধে দ্বাদিগের দর্কার অপহরণ করা হইবে।

অথবা, সিদ্ধপুরুষের বেশধারী গৃঢ়পুরুষ কোনও দ্যাকে মায়াবিছাদারা প্রালাভিড করিয়। বলিবে—"আমি অক্ষয় টাকার নিধিপ্রদর্শন, রাজাকে বশে আনম্বন জীলোকের হৃদয় আকর্ষণ, শক্রর ব্যাধি উৎপাদন এবং (লোকের) আয়ুর্বিজ্ঞারক ও পুক্র-সন্তানপ্রাপ্তিকারক কর্ম সব জানি"। যদি সে এই সব কথা বিশাস করে তবে রাত্রিতে কোন (শাশানের) কোন চৈত্যস্থানে নিয়া তাহাদারা প্রভৃত হ্রয়া, মাংস ও গরুরুরের উপহার দেওয়াইবে। একটি রূপ (অর্থাৎ নগদ এক টাকা) পূর্কে কোন স্থানে নিথাত রাখিবে। যেখানে কোনও প্রেত ব্যক্তির অক্ষ বা মৃতশিশু রহিয়াছে সেধানে সে পূর্ক্রিণাত টাকা দেখাইয়া বলিবে বে, ইছা বড় অল্প টাকা (কারণ, তাহার উপহারও অল্পরক্ষের হুইয়াছে)। "যদি থ্ব বেশী হিরণা (নগদ টাকা) তুমি চাহ—তাহা হইলে পুনর্কার (বড়) উপহার আন, এবং এই টাকাদারা স্বয়ং আগামী কল্যের জন্ম প্রভৃত উপহারজ্বর ধরিদ করিয়া আন" ইহাও সে বলিবে। সেই টাকা দিয়া উপহারজব্যের ক্রয়কালে তাহাকে গ্রেপ্তার করা হইবে (এবং সেই অপরাধে সেই দুয়ের সর্ক্রশ্ব অপহরণ করাইবে)।

অথবা, মাতার বেশধারিনী গুচ্নী কোনও দ্যাকে "ভোমান্বার। আমার পুত্র হন্ত হইরাছে" এই দোবারোপ করিয়া দেখাইরা দিবে। তৎপর সেই দ্যোর রাত্রিকাশীন যাগ (হবন) বা বনে কৃত যাগ, অথবা বনক্রীড়া আরম্ভ হইলে, তীক্ষ-নামক গুচ্পুরুবের। প্রথম হইতেই) মরণসন্দিত বধ্যপুরুষকে হত্যা করিয়া আনিয়া তৎসমীপে (সেই যাগাদিভানে) নিহিত করিবে (এবং সেই অপরাধ ঘোষণা করিয়া সেই দ্যোর সর্কাষ অপহরণ করাইবে)।

অথবা, কোন দূষ্যের বেতনভোগী ভত্তার বেশধারী গৃঢ়পুরুষ নিজের বেতনের টাকাতে কুট বা কপটমুদ্রা মিশাইয়া দৃষ্যের দত্ত বলিয়া (রাজদারে) দেখাইবে (এবং দেই অপরাধে তাঁহার পূর্ববং শান্তির বিধান করাইবে)।

অথবা, কর্মকারের বেশধারী গৃচপুরুষ (কোন দ্যোর) বাড়ীতে কর্ম করিতে ঘাইয়া, চুরি করিয়া কৃটরূপ বা কপটমুদ্রা তৈয়ার করার উপকরণ -প্রক্রতারে রাখিয়া দিবে ( এবং সেই অণরাধে তাহার পূর্ববং শান্তির বিধান করাইবে )।

অথবা, চিকিৎসকের বেশধারী গুচপুরুষ (কোন দ্বোর কাছে) বিষনাশক গুরুষির ছলে বিব রাখিয়া দিবে (অথবা) পীজানাশক গুরুষির ছলে পীজাবর্জক গুরুষি রাখিয়া দিবে এবং সেই অপরাধে তাহার পূর্ববং শান্তির বিধান করাইবে)।

অথবা দ্যোর বন্ধুরূপে কোনও নিকটচারা সত্রী গৃঢ়পুরুব (তংগৃছৈ গোপনে) রক্ষিত অভিষেক্তরা ও শত্রুর লেখাের কথা কাপটিক গৃঢ়পুরুবদারা (রাজসমীপে) প্রকাশ করিবে এবং ইহার কারণও বলিবে (অর্থাৎ এই বলিবে যে, এই দ্যানাজাকে হতা৷ করিয়ে তৎস্থানে শত্রুর অভিষেক করাইবার চেষ্টা করিতেন্তে )।

এই ভাবে রাজা (রাজকোশবর্জনের জন্তু) দ্যাও অধার্মিক ব্যক্তিদিগের উপরই এই সব উপায় প্রয়োগ করিবেন – অন্তের উপর নহে, অর্থাৎ ধার্মিক শোকের উপর নহে।

বেমন বাগান হইতে পক পক ফলই গ্রহণ করা উচিত, তেমন (রাজাও) রাজ্য হইতে (দোষপরিপাকযুক্ত হুইব্যক্তি হইতে) ধন সংগ্রহ করিবেন। বাগান হইতে কাঁচা ফল সংগ্রহ করা উচিত নহে, রাজাও নিজের নাশের আশস্কায় প্রাজার কোপজনক কাঁচা বা অদোষযুক্ত ধন সর্বাদা বর্জন করিবেন ॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশান্ত্রে যোগবুত-নামক পঞ্চম অধিকরণে কোশাভিদংছরণ-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# তৃতীয় অধ্যায়

### ১১ম প্রকরণ—ভৃত্যভরণীয় (সচিবাদি রাজভৃত্যদিগের ভরণ-পোষণ)

. (রাজা) তুর্গ ও জনপদের শক্তি অত্বসারে রাজ্যের সমগ্র সম্পার বা আরের
এক-চতুর্থাংশবারা (সচিবাদি) রাজভূত্যদিগের কর্ম সম্পাদন করাইবেন;
অথবা, (বেশী অর্থবারা) প্রয়োজনীয় কার্যসাধনে সমর্থ ভূত্যগণ পাওয়া গেলে,
আরের চতুর্থাংশের অধিক ব্য়য়ারাও ভূত্যকর্ম শ্বাপনা করিবেন। (তবে)
জীহার উচিত হইবে (সর্বাদাই) আয়পরীরের উপর দৃষ্টি রাণা; এবং কথনঃ

তিনি ( ভূত্যভরণের জন্ত অর্থব্যয়ের অত্যাবশ্যকতা হইলেও ) ধেন ( দেবণিত্-কার্য্যালিরূপ , ধর্মের ও ( হুর্গনেতৃকর্মালিরূপ ) অর্থের নিরোধ না করেন।

শৃষ্কি, আচার্য্য, মন্ত্রী, পুরোহিত, সেনাপতি, যুবরাঞ্চ, রাজ্মাতা ও রাজ্ম মহিনী (পাটরানী)— ইহারা (প্রত্যেকে প্রতিবর্ষে) ৪৮,০০০ আটচরিল হাজার (পণমুদ্রা) বেতনরূপে পাইবেন। এতাবৎ বেতনদ্বারা ভরণপোবণ-বিধয়ে উহাদের নানাবিধ ভোজ্য-ভোগ্যের আস্বাদ সম্ভাবিত হইবে এবং (রাজার প্রতি) ভাঁহাদের কোনরূপ কোপকারণও থাকিবে না।

দৌবারিক, অন্তর্বংশিক ( প্রধান অন্তঃপুররক্ষক ), প্রশান্তা ( প্রশাসনকারী প্রধান বিচারক ; অথবা, মতান্তরে, আয়ুধাধ্যক্ষ ), সমাহর্তা ও সন্ধিধাতা—ইছারা ( প্রত্যেকে প্রতিবর্ধে ) ২৪,০০০ চবিশ হাজার ( পণমুক্তা) বেতনরূপে পাইবেন। এতাবং বেতনপ্রাপ্ত হইলে ইছারা কর্মযোগ্য থাকিবেন।

কুমার ( যুবরাজ ব্যতীত অক্যান্ত রাজপুত্র ), কুমারমাতা ( মহাদেবী অর্থাৎ পট্টমহিবী ব্যতীত রাজার অন্ত রাণী ), নায়ক ( দেনানায়ক, অথবা এখানে 'নাগরিক' পাঠ গ্রহীতব্য ? ), পৌরব্যবহারিক ( পুরবানীদিগের জন্ত ব্যবহারাধ্যক্ষ ), কার্মান্তিক ( কুবিপ্রভৃতিকর্মান্ত-নিমুক্ত মুখাপুক্ষ ), মন্ত্রিপরিবংশাল ( মন্ত্রিপরিবদের অধ্যক্ষ ), রাষ্ট্রপাল ও অন্তপাল—ইহাদের (প্রভাবেক প্রতিবর্ধে ) ১২,০০০ বার হাজার ( পণমুদ্রা ) বেউনরপে পাইবেন । কারণ, এতাবং বেজন পাইলে ভাঁহারা রাজার পরিকর্বলভূত থাকিয়া তাঁহার (প্রধান ) দহারকও থাকিবেন ।

(শিল্প) ক্রেণীর মুখোরা, হন্তিমুখ্য, অথমুখ্য ও রথমুখ্যেরা এবং (কন্টক-শোধনাদিকত ) প্রদেষ্টারা (প্রত্যাকে প্রতিবর্ধে) ৮,০০০ আট হান্ধার (পণমুদ্রা) বেতনরূপে পাইবেন। কারণ, এতাবং বেতন পাইলে তাহারা স্বর্গকে অর্থাৎ নিজবর্গের অন্তান্ত কর্মচারীদিগকে অন্তর্কল রাখিতে পারিবেন।

পত্তি বা পদাতি সেনার অধাক্ষ, অখাধাক্ষ, রথাধাক্ষ ও গজাধাক্ষ এবং দ্রব্যনস্থাল ও হস্তিবনপাল—ইহারা (প্রত্যেকে প্রতিবর্ধে ) ৪,০০০ চারি হাজার (পণমুদ্রা ) বেতনরূপে পাইবেন।

রথিক বা রথচর্ব্যাশিক্ষক, গঞ্জশিক্ষক, চিকিৎসক, অখশিক্ষক ও বর্দ্ধকি (মহাতক্ষা বা মুখ্য ছুতার) এবং বোনিপোষক (কুকুটশ্করাদি-পালকদিগের অধ্যক্ষ)—ইহারা (প্রত্যেকে প্রতিবর্ধে) ২,০০০ ছই হান্ধার (পণমুক্তা) বেতনরূপে পাইবেন।

কার্ত্তান্তিক (হন্তরেখাদির পরীক্ষাদ্বারা অতীত ও অনাগত-বিবরের আদেষ্টা), নৈমিত্তিক ( শাকুনবিভাবিচক্ষণ ), জ্যোতিবিক, পুরাণকথার বক্তা, স্ত (সারধি) ও মাগধ ( ন্বতিপাঠক ) এবং পুরোহিতগণের পরিকর্মীরা ( ভূত্যেরা ) ও ( ন্তরা-স্না-স্ত্রাদির ) অধ্যক্ষেরা ( প্রত্যেকে প্রতিবর্ধে ) ১,০০০ এক হাজার ( পণমুদ্রা ) বেতনরূপে পাইবেন ।

( চিত্রকরাদি ) শিল্পী, পদাতি সৈন্তের পুরুষ, সংখ্যায়ক (গণনাব্যাপৃতক ) ও প্রেথকাদি (প্রত্যেকে প্রতিবর্ধে) ৫০০ পাঁচ শত (পণমুদ্রা) বেতনরূপে পাইবেন।

কুশীপবের। (নটনর্জকেরা) (প্রত্যেকে প্রতিবর্ষে) ১৫০ আড়াই শৃত্ত (পণমূলা) বেতনরূপে পাইবেন। ই'হাদিগের মধ্যে যিনি ত্র্যাকর (প্রধান বাস্তকর) তিনি ইহার বিগুণ অর্থাৎ ৫০০ পাঁচ শত (পণমূলা) বেতনরূপে পাইবেন।

কারুশিল্পীরা (কারুকরেরা) (প্রভ্যেকে প্রতিবর্ষে) ১২০ একশত কৃড়ি (পুণমুদ্রা) বেতনরূপে পাইবেন।

চতৃষ্পদ ও দ্বিপদ (পক্ষী ? মহগ্য ?) জন্ধদিগের পরিচারক, পারিক্ষিক (প্রসাধনকার্য্যে ব্যাপৃত ভূত্য), উপস্থায়িক (উপস্থান বা দেবার রত পুরুষ), পালক (রক্ষক) ও বিষ্টিবন্ধক (বিষ্টি বা কর্মকর-সংগ্রহকারী)—ইছারা (প্রভ্যেকে প্রতিবর্ষে) ৬০ ধাইট (পণমুদ্রা) বেতনরূপে পাইবেন।

আর্য্য (শীলাদিসম্পন্ন সংপ্রকষ ), যুক্তারোহ ( ছর্জান্ত অথাদির আরোহক ), মাণবক ( বেলাদিপঠনম্বারা বিয়ার্থা ) ও শৈলখনক (প্রস্তবশিল্পী ) এবং সকলের সেবাছখ-দায়ী ( গান্ধর্কাদিবিস্থার ) আচার্য্য, ও ( ধর্মার্থাদিশান্তবিৎ ) বিশ্বান—
ই হারা (প্রত্যেকে প্রতিবর্ধে ) ধ্যোপযুক্ত পূজা ও বেতনাদি পাইবেন ; ওাঁছাদের বেতন ৫০০ পাঁচ শত ছইতে ১,০০০ এক হাজার ( পণমূদা ) পর্যান্ত ছইতে পারিবে।

প্রতিবাজন গমন করিলে মধ্যম শ্রেণীর দৃত দশ পণ বেতন পাইবেন। দশ বোজনের অধিক এবং একশত বোজন প্রয়ন্ত গমনসমর্থ ( দৃত ) ইহার দ্বিশুপ বেতন অর্থাৎ প্রতিযোজন কুড়ি পণমুদ্রা পাইবেন।

রাজা রাজসুর বজ্ঞে আনীত সমানবিখ্যাসম্পর (পুরোহিতাদিকে) ভাঁহাদের সাধারণ বেজনের তিনগুণ বেজন দিবেন; এবং রাজার সারধি অর্থাৎ রাজস্ক্রযজ্ঞে রাজাকে রথে আন্তর্নকারী সারধি ১,০০০ এক হাজার পণমুজা পাইবেন।

কাপটিক, উদান্থিত, গৃহপতিব্যঞ্জন, বৈদেহকব্যঞ্জন ও ভাপস্ব্যঞ্জন গৃঢ়-পুরুবেরা (প্রত্যেকে প্রতিবর্ষে ) ১,০০০ এক হাজার (পণমূদ্রা) বেতনক্ষণে পাইবে। গ্রামস্থতক (গ্রামের সরকারী ভূত্যের।—মতান্তরে, গ্রামের সকলের কার্য্যকারী রজকনাপিতাদি ভূড্যেরা ), সত্রী, তীক্ষ্ণ, রসদ ও ভিক্কী-নামক গুণ্ডচেরেরা ( প্রত্যেকে প্রতিবর্ষে ) ৫০০ পাঁচ শত (পণমূক্রা) বেতনরূপে পাইরে। গুঢ়পুরুবদিগের অধীন দঞ্চারী পুরুবগণ ১৫০ আড়াই শত (পণমুদ্রা)

( প্রত্যেকে প্রতিবর্ষে ) পাইবে ।

পূর্কোক্ত দক্রেই প্রয়াদের অঞ্চরূপ যথোক্ত বেতনের অধিক বেতনও পাইতে পারে।

( উপযুৰ্ত্ত ভূতকগণের ) প্ৰভ্যেক শতবৰ্গ ও সহস্ৰবৰ্গের জন্ম ( রাজ-নিযুক্ত ) অধ্যক্ষেরা, ভক্ত ও বেতন দান, রাজার আদেশ প্রচার ও তাহাদিগের সমুচিত কর্ম্মে নিয়েঞ্জন করিবেন। (কোনও বর্গের) সমুচিত কার্যা বা ব্যাপার না থাকিলে, ( অধ্যক্ষেরা ) তাহাদিগকে রাজার পরিগ্রহ ( অন্তঃপুর, অধ্বা রাজ-বাড়ীর সব সম্পত্তি, অথবা রাজমহল ), হর্গ ও রাষ্ট্রের রক্ষণ ও অবেক্ষণকার্যো নিযুক্ত করিবেন। (ভূতকবর্গেরা) নিতাই তাহাদিগের মুখ্যের বা প্রধানের অধীন থাকিবে এবং ভাছাদিগের মুখ্যসংখ্যাও বহু থাকিবে।

রাজকার্য্য করিতে থাকা অবস্থায় মৃত ভৃতকদিগের পুত্র ও স্ত্রী ভক্ত ও বেডন পাইবে। (মুক্ত ভূতকদিগের পোষ্যভূত। বাল, বৃদ্ধ ও ব্যাধিগ্রন্থ জনের প্রতি (রাজার) অন্থগ্রহ দৃষ্টি রক্ষিত হওয়া উচিত। (মৃত ভৃতকদিগের) প্রেডকার্য্য ( অস্ত্যেষ্টি ক্রিয়া ), ব্যাধির চিকিৎসাক্রিয়া ও প্রসবাদি স্ভিকা-ক্রিয়াতে (রাজা) অর্থপ্রদানরূপ সংকার প্রদর্শন করিবেন।

অল্পকোশ্যুক্ত রাজা ( সহায়তাদানযোগ্য বাক্তিদিগকৈ ) কুপা, পত ও কেত্র দান করিবেন, এবং হিরণ্য (নগদ টাকা) অঙ্গই দিবেন। (রাজা) যদি শৃস্তস্থানে গ্রাম নিবেশ করিতে ব্যাপৃত হয়েন, ভাষা হইলে তিনি ( তংসম্পর্কে দানীরদিগকে ) হিরণ্যই দিবেন—গ্রাম দিবেন না ; কারণ, নিবেশিত ( গ্রামের নিবেশনজন্ত হিরণ্য-বার গণনাপূর্বক ) ইহাতে দঞ্চাত আমদানীর ব্যবহার তাঁহাকে স্থাপিত করিতে হইবে।

এইভাবে স্বায়ী ও অস্থায়ী ভূতকদিগের বিচ্চা ও কমের প্রকর্ণাস্থসারে ভাছাদিগের ভক্ত ও বেতনের (নানাধিকতারূপ)বিশেষ ভিনি করিবেন। প্রত্যেক ষষ্টি পণ বেতনের জন্ত এক এক আড়ক-পরিমিত ভক্ত (ভাতা) দেওয়।

ছিন্ন করিয়া ভূতকগণের হিরণাপ্রাথির অহরূপ ভক্তদানের ব্যবস্থা তিনি করিবেন।

(ক্ষমাবশ্যাদি অনধ্যায়রূপ) দদ্দিদেব ব্যতীত অন্তান্ত দিবলৈ প্রভাহ স্থোদের (শল্পচর্যা) শিলে যোগা পভি, অন্ধ, রথ ও গজনেনাকে ব্যায়ামাদি। করিতে হইবে (এই স্থানের সংশ্বত ম্লাংশে 'ক্র্যু:' পদের অকর্মকভাবে প্রয়োগ সমীচীন বলিয়া প্রভিভাত হয় না)। রাজা এই চড়ুরক সেনার প্রভি নিতার্ট যুক্ত থাকিবেন। এবং তিনি সতভই তাহাদিগের শিল্পদর্শন করিবেন। শেল্পদর্শনের পরে ) তিনি সব শল্প ও কবচ রাজমুদ্রাযুক্ত কয়িয়া আয়্থাগারে প্রশে করাইবেন। রাজমুদ্রাহারা অহ্মতি না পাইলে, সকলকেই শল্পবিহীন হইয়া চলিতে হইবে। যে বাক্তি শল্প ও আবরণ হারাইবে বা বিনম্ভ করিবে তাহাকে ইহার দ্বিগুণ মূল্য দিতে হইবে। রাজা (আয়ুধশালাতে) বিধ্বন্ত অর্থাৎ নই ও বিনম্ভ আগ্রের গণনাও করিবেন।

দার্থচারী ( দলবন্ধ হইয়। পরদেশ হইতে আগত ) ( ব্যাপারী দিগের ) শস্ত্র ও আবরণ ( কবচ ) অন্তপালগণ গ্রহণ করিবেন ; কিন্তু, বাহারা মুদ্রা দেখাইবেন তাহাদিগকে অবারিতভাবে ছাড়িয়া দিবেন । অথবা, ( রাজা মুদ্ধবাত্রায় উপ্তত হইয়া) নিজ্ঞ দেনাকে উন্তোজিত বা কার্য্যে সমাহিত করিবেন । তৎপর বৈদেহকের বেশধারী গৃচপুরুবেরা ( য়ুদ্ধের উপকরণভূত ) সর্কবিধ পণ্য যাত্রাকালে ( অন্তবিহীন ) যোগ্ধাদিগের নিকট, দিগুণমূল্য সহ ( য়ুদ্ধান্তে ) কিরাইয়া দিবার চুক্তিতে দিবে—এইভাবে রাজপণ্যের বিক্রয় ও ( আয়ুদীয়গণের জন্ত ) প্রদত্ত বেজনের প্রত্যাপত্তিও সাধিত হইবে ।

যথোক্ত প্রকারে আয় ও ব্যয় অবেক্ষণকারী রাজা কোশ ও দণ্ডের ব্যসন-প্রাপ্ত হয়েন না, অর্থাৎ উাহার কোশাভাব ও সেনাভাব ঘটে না। এই পর্যাপ্ত ভক্ত ও বেতন-সম্বন্ধে নানারূপ বিচার করা হইল।

সত্রী, বেশ্যা, কান্ধ, কুশীলব ও প্রাচীন সৈনিক পুরুষেরা সাবধানতা অবলম্বন করিয়া আয়ুধ্ধারী সৈনিকগণের শৌচ (চরিত্রশুদ্ধি) ও অশৌচ (চরিত্রভ্রংশ) জানিবেন ঃ ১ ঃ

কৌটিলীয় অর্থশারে যোগবৃত্ত-নামক পঞ্চম অধিকরণে ভূতাভরণীয়-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ৯৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# চতুৰ্য অধ্যায়

#### ১২म श्रकश-निकाणि अनुश्रीविश्रमंत्र दृष्ट वा व्यवहात

লোকথান্তান্তি (লোকিক ব্যবহারে অভিজ্ঞ) ( রাজান্ত্রনীরী অমাত্যাদি ), আন্তর্গদম্পন্ন (মহোকোলিন্ত ও দৈববৃদ্ধিপ্রভৃতিযুক্ত ) ও দ্রব্যপ্রদাসপান ( আর্থাৎ অমাত্যাদি শক্ষর্যাদির যোগ্যগুণযুক্ত ) রাজাকে রাজার প্রিয় ও হিত্রী পুরুষরারা আপ্রয় করিবেন। অথবা, এমন রাজা না পাইলেও, বাঁহাকে এমন মনে করিবেন—'আমি যেমন আপ্রয়প্রার্থী, তিনিও বিনরলাভেচ্ছু অর্থাৎ বিশ্বারন্ধমংযোগপ্রার্থী এবং আভিগামিক বা চিন্তাকর্ষক গুণধারা সমন্বিত'—ভাহা হউলে, সেই রাজা দ্রব্যপ্রকৃতিহীন অর্থাৎ উপযুক্ত অমাত্যাদি-রহিত হইলেও ভাহাকে (ভাঁহারা) আপ্রয় করিবেন। কিন্তু, (ভিনি) কথনই আত্মসম্পদ্রহিত রাজাকে আপ্রয় করিবেন না। কারণ, আত্মসম্পদ্রহিত রাজা নীতিশাল্তের প্রতি নিজের দ্বেষ বা অনহুরাগ্রশতঃ, কিংবা অনর্থের উৎপাদক (মৃগ্রাদি) বাসনের প্রতি নিজের আসক্ষিত্রশতঃ, (পিতৃপৈতামহ) মহৎ রাজ্যের্থা প্রাপ্ত হইয়াও ( বেশী দিন ) শ্বিতিলাভ করেন না অর্থাৎ নই হইয়া থান।

রাজা আত্মসম্পন্ধ হইলে, অবসর পাভ করিলেই (অপুজীবী) তাঁহাকে শান্তবিষয়ে পৃচ্ছাদ্যন্ধে উপদেশ প্রদান করিবেন। করিব, শান্তের সঙ্গে তদীর উপদেশের সংবাদ বা মিলন হইলে (রাজা তাঁহাকে নীতিবিৎ মনে করার), তিনি কোন অধিকারীর পদে স্থায়ী নিয়োগ প্রাপ্ত হইবেন। মতিসাধ্য কার্য্যে অর্থাৎ বৃদ্ধিবিচারের কার্য্যে জিজ্ঞাসিত হইরা (অস্থজীবী), প্রবীণ ব্যক্তির মত পরিবংকে তর না করিরা, বর্ত্তমানে ও ভবিশ্যতে উপকার-সমর্থ ধর্ম ও অর্থ-সংমৃত্যু উপদেশ রাজাকে প্রদান করিবেন। যদি রাজা কোনও অস্থজীবীকে (অমাত্যাদি কর্মের জন্তু) প্রার্থনা করেন, তাহা হইলে তিনি রাজার সহিত এইরূপ পণ বা চুক্তি করিবেন — "আপনি অবিশিষ্ট বা গুণোৎকর্বহীন লোকের নিকট ধর্ম ও অর্থ-সংস্কৃত্য করিবেন — "আপনি অবিশিষ্ট বা গুণোৎকর্বহীন লোকের নিকট ধর্ম ও অর্থ-সহদ্ধে কোন প্রশ্ন, বলবান্ (শক্রর) সহিত সংমৃক্ত ব্যক্তিদিগের উপর দগুধারণ, এবং আমার সম্বন্ধেও তৎক্ষণাৎ কোন দগুধারণ করিবেন না। আপনি আমার পক্ষ ( স্বর্গ), বাবহার ও গুন্তু ( রহস্তু ) নষ্ট করিবেন না। আমি সংজ্ঞাদ্বারা ( অক্ষিসঞ্চালন প্রভৃতিদ্বারা) আপনার কাম ও জ্যোধ্যনিত ( অস্কৃতিত ) দগুপ্রদান-সমরে আপনাকে বারণ করিব (অর্থাৎ আমার এই প্রকার ব্যবহার আপনি রোধ করিবেন না)।"

আযুক্ত ( অর্থাৎ অধিকারিপদে নিযুক্ত ) ব্যক্তিদিগের শুম্র ব্যবস্থিত ভূমিডে অনুমতি পাইয়া ( রাজান্মজীবী) প্রবেশ করিবেন ( 'আদিষ্টঃ প্রদিষ্টায়াং'--এইরূপ পাঠে কার্য্যে আদেশ লাভ করিলে, প্রদর্শিত ভূমিতে' এইরূপ অমুবাদ হইতে পারে)। (তিনি) রাজার পার্মে, নাতিনিকটে কিংব। নাতিদুরে উপবেশন করিবেন। (অপুজীবী) শ্রেষ্ঠ আদন গ্রহণ, রণড়া করিয়া কথন, অলীন পরোক্ষবিষয়ক, অবিশাস্থ অসভা বাকা প্রয়োগ, পরিহাসের অনবসরে উচ্চ ছাসি, এবং শব্দযুক্ত বায়ুর্ভি ও নিষ্ঠীবন ( কফ বা পুধু ফেলা ) করিবেন না। ( রাজসন্নিধানে ) অন্তের সহিত গোপনে কথা বলা, জনবাদ বা কিংবদন্তী-সম্বন্ধে ছুম্মেক্তি অর্থাৎ চুই বিভিন্ন প্রকারের উক্তি, রাজার বেশ ও উদ্ধত কুহক বা মায়াবীদিগের বেশধারণ, রাজার নিকট হইতে প্রাপ্ত রম্বাদির আভিশয় প্রকাশ করার প্রার্থনা, একটি অফি ও ওষ্ঠ বাঁকান, জকুটিভঙ্গ,রাজা কথা কহিছে খাকিলে মধ্যে কথা কহা, বলবান শত্রুর সহিত সংযুক্ত লোকদিগের সঙ্গে বিরোধ, স্ত্রীলোক, ত্রীলোকদর্শী ( অন্তর্বংশিক ) লোক, সামন্তর্গণের দূত, ( রাজার ) দৃর, (অংশক্ষ্ত) উদা্দীন জন, তিরক্বত ও অনর্থকারীদিণের সহিত দ্বা, একার্থচারিতা (এক বিষয়ই ধরিয়া রাখা), এবং দলবন্ধতা -(এই সব বৃত্তি) वर्षका कवित्वन ।

( অমাত্যাদি অক্সীবীজন ) কালবিলম্ব না করিয়া রাজার প্রয়োজনীয় বিষয় ভাঁহাকে বলিবেন, নিজের প্রয়োজনীয় বিষয় ভাঁহার প্রিয় ও হিত্যী লোকের সহায়তায় বলিবেন, এবং দেশ ও কালের বিচার করিয়া পরের প্রয়োজনীয় বিষয় বলিবেন; কিন্তু তিনি যাহা বলিবেন তাহা ধর্ম ও অর্থসংযুক্ত হওয়া চাই। ১।

রাজাবারা পৃষ্ট হইলে, এবং রাজা ভাহা শুনিতে ইচ্ছুক হইলে ( অস্কুজীনী জন) অসুমতি প্রাপ্ত হইয়া গোপনে রাজাকে প্রিয় ও হিতকর বাকা বলিবেন, অহিতকর প্রিয় বাকা বলিবেন না, অথবা, হিতকর কথাও বলিবেন না॥ ২॥

অথবা, (তিনি) উত্তর দেওয়ার সময়ে (তর হইলে) মৌনাবলম্বন করিবেন, রাজার ছেয়াদির কথা বর্ণনা করিবেন না। তাহা করিয়া (অর্থাৎ রাজজন্দের অন্থর্তন না করায়) বাঁছারা ( রাজার মন হইতে ) বহিছত হইয়াছেন, ভাঁহারা ক্রিফ্র হইলেও রাজার অপ্রিয় হইয়া উঠেন ॥ ০ ৪

দেখা গিরাছে যে, (রাজার) চিত বুঝিয়া বাঁছারা রাজজ্পের অসুবর্তন করেন, তাঁহারা অনর্থকারী হইলেও রাজার প্রিয় হয়েন। রাজার হসনীয় বিষয়ে (অসুজীবী) হাসিবেন, কিন্ধু, ঘোর হাস্ত (অট্রাস্থ) বর্জন করিবেন। ৪। অপর ব্যক্তিদ্বারা (ডিনি) কোন ঘোর বা ভরাবহ দংবাদ রাজাকে জানাইবেন এবং স্বয়ং ঘোর দংবাদ বলিবেন না। এবং নিজের সম্বন্ধে কোন ঘোর বিষয় আপতিত হইলে, (ডিনি) তাহা পৃথিবীর ন্তায় ক্ষমাযুক্ত হইয়া সঞ্ করিবেন ॥ ৫॥

( অহন্দীবী জন ) সততই সব-বিষয় জানিয়া রাধিয়া আগে আত্মরক্ষা করিবেন, কারণ, রাজার আশ্রয় লাভকারী জনদিগের বৃত্তি বা ব্যবহার অগ্নিতে খেলার ক্লায় বিবেচিত হয়॥ ৬॥

অগ্নি শরীরের একদেশমান্ত দহন করে, অথবা, বিশেষ অবস্থাপ্র হইলে, ইহা দমন্ত শরীরও দহন করিতে পারে; কিন্তু, রাজা পুত্র ও কলত্র দহিত দমত্র পরিবার নষ্ট করিতে পারেন, অথবা (রাজা অন্তর্কুল হইলে) ইহাকে উন্নতও করিতে পারেন। গ্র

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে যোগবন্ত-নামক পঞ্চম অধিকরণে অস্থজীবি-বৃত্ত-নামক চতুর্থ অধ্যায় ( আদি হইতে ১৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### পঞ্চম অধ্যায়

#### ৯৩ম প্রকরণ—সময়াচারিক ( ব্যবস্থার অনুষ্ঠান অথবা সময়বিশেষে আচরণ )

রাজকার্য্যে নিযুক্ত (সমাহর্তৃপ্রকৃতি) রাজপুরুষ ব্যয়বিশুদ্ধ আয় দেখাইবেন (অর্থাৎ ব্যয় পুরকৃ-প্রদর্শনপূর্বক আয় প্রদর্শন করিবেন)।

( হুর্গাদিসম্বন্ধীয় ) অভ্যন্তর বিষয়ক ও (জনপদাদিসম্বন্ধীয় ) বাছ বিষয়ক কার্য্য এবং গুছ, প্রকাশ্য, আতায়িক (কালবিলম্বানহ ) ও উপেক্ষিতব্য (উপেক্ষা বা ফেলিয়া রাখিবার যোগা ) কার্যা-সম্বন্ধে 'ইহা এই প্রকার করা ইইয়াছে'—এইরূপ ভাবে বিশেষ করিয়া (তিনি) (রাজসমীপে) নিবেদন করিবেন (এবং ইহা নিবন্ধপুস্তকে লিখিত রাখিবেন )।

এবং ( রাজা ) মুগয়া, দৃতি, মন্ত ও স্ত্রীলোকে আসক্ত হইলে, ওঁাহাকে ( সেই রাজপুরুষ ) প্রশংসাবচনের প্রয়োগে অপ্রবর্তন করিবেন; এবং তাঁহার নিকটবর্ত্তী থাকিয়া তাঁহার ব্যাননসমূহের উপঘাত বা নাশবিষরে যত্ন নিবেন; এবং তাঁহাকে শক্তর উপজাপ ( ভেদ ), অভিসন্ধান ( বড়য়ন্ত্র বা প্রবঞ্চনা) ও উপধি (ছলপ্রয়োগ) হইতে রক্ষা করিবেন।

এবং (রাজার) ই ক্লিড (আচরণ বা চেষ্টা) ও (মুখবাগাদি) আক্রের (তিনি) সর্বাদা (স্ক্লাদৃষ্টিতে) সক্ষা করিবেন। করিব, প্রাক্তজনেরা মন্ত্রগোপনের জন্ত, ইক্লিড ও আক্রেরারাই (নিজদিগের) কাম (অফ্রাগে), দেশ (বিরাগ ), হর্ম, দৈন্ত (নিরানন্দ), ব্যবদার (কার্যা-নিশ্চর), তর ও দ্বন্দবিপর্যার (মুখহাখাদি দ্বন্দ্রভাবে বিপর্যান্ত বা বিচলিত হওরার ভাব ) স্টিত করেন ( অর্থাৎ ইক্লিড ও আকার অত্যন্ত হর্লক্ষ বলিয়া তদ্বনি অবধানবিশেষের প্রয়োজন হয়)।

রাজা তৃষ্ট হইয়াছেন - এইরূপ প্রতীতি নিম্নলিখিত চিহ্নদর্শনে উদিত হইতে পারে, যথা-কাহাকেও দর্শন করিলেই যদি (রাজা) প্রদল্প ইয়েন ; কাহারও বাক্য তিনি যদি আদরপূর্বক শুনিয়া গ্রহণ করেন; কাহাকেও উপবেশনার্থ তিনি যদি আসন প্রদান করেন ; কাছাকেও তিনি যদি বিবিক্ত বা একাস্ক স্থানে দেখা দেন : শতার কারণ থাকিলেও তিনি যদি ( বিখাসবশতঃ কাহারও নিকট ) বেশী শক্ষিত না হয়েন ; কাহারও দহিত কথা কহিতে তিনি যদি স্থ অকুভব করেন; অপরের বিজ্ঞাপ্য বিষয়েও অর্থাৎ দাহা অপরের অবশ্য জানিতেই হইবে এইদ্ধপ বিষয়েও তিনি যদি (প্রিয়পুরুষদিগের সহিত তদ্বিরে আলাপ করিবার জন্তু ) অপেক্ষা করেন ; উক্ত হিতকর কথা ( কর্কশ হইলেও ) তিনি যদি সহ। করেন : হাস্থবদনে তিনি যদি কাহাকেও কোনও কার্য্য করিতে নিযুক্ত করেন ; কাছাকেও হাত দিয়া তিনি যদি স্পর্ণ করেন ( অর্থাৎ স্পর্শপর্বক কথা বলেন ); কেছ কোন প্লাখনীয় কর্ম করিলে তিনি ধদি সম্মুখেই ছাল্য করেন; কাছারও গুণের কথা তিনি যদি পরোক্ষে বলেন; ভোজন-দময়ে (অথবা বিশেষ ভোজাদিতে ) কাহাকেও তিনি যদি (নিমন্ত্রণার্থ) স্মরণ করেন ; কাছারও স্থিত তিনি যদি বিহারজন্ত (ক্রীড়াদির জন্ত ) বাহির হয়েন ; কাহারও বিশদ উপস্থিত হইলে তিনি যদি তাহাকে তৎপ্রতীকারের জন্ত দর্মপ্রকার মহায়তা প্রদান করেন; তিনি যদি তাঁহার দিকে অমুরাঙ্গী ব্যক্তিদিগের প্রতি সংকার প্রদর্শন করেন; তিনি যদি কাহাকেও নিজের গুছ বা রহস্যও বলেন; তিনি বুদি কাহারও (উচ্চপদাদির দ্বারা) সম্মান বুদ্ধি করেন; তিনি যুদি কাহাকেও ( ইন্সিত ) অর্থপ্রদান করেন ; এবং তিনি যদি কাহারও অনর্থ নিবারণ করেন। ( এই সব লক্ষণদারাই রাজার তৃষ্টি জ্ঞাত হওয়া যায়। )

রাজা অতুষ্ট হইলে পূর্ব্বোজ নবই বিপরীত হইয়া বায় ৷ রাজার অতুষ্টি পরিজ্ঞাত হওয়ার জন্ত আরও অধিক কতকগুলি চিহ্ন বলা হইতেছে, বধা— (কাহারও) দর্শনমাত্রে কোপ উপস্থিত হয়; তাহার বাক্য শুনেন না, কিংবা তাহাকে (কহিছে) নিষেধ করেন; তাহাকে বিদিবার জন্ত আদন দেন না; কিবো তাহার দিকে দৃষ্টিপাতত করেন না; (মুধের) বর্ণ ও (গলার) স্বর্গ করেন; একনয়নছারা অবশোকন করেন, এবং জকুটিভন্ধ ও ওঠের বক্তীকরণ ঘটান; শরীরে ঘর্মোৎপত্তি হয়; অকারণে খাসত হাসির উৎপত্তি হয়; নিজে নিজে বা অভ্যের সহিত কথা কহেন; অকন্মাৎ চলিয়া যান; (তাহাকে বাদ দিয়া) অন্তের প্রতি সমাদর করেন; ভূমিতে বা নিজ গাত্তে নেখাদিঘারা) বিশেখন করেন অর্থাৎ তাহাতে নথচিক্ বদান; অন্তকে তাড়ন করেন: তাহার বিষ্ঠা, বর্ণ (জাতি)ও দেশের নিন্দা করেন; তৎডুল্য ক্রিয়ার নিন্দা করেন; তাহার দোধের্র মত দোবের নিন্দা করেন; তত্তিকরার জনের প্রশংসা করেন; তাহার দোধের্র মত দোবের নিন্দা করেন; তত্তিকরার জনের প্রশংসা করেন; তাহারর কে উৎকৃষ্ট কার্যাও গণনা করেন না; তাহাদ্বারা কত উৎকৃষ্ট কার্যাও গণনা করেন না; তাহাদ্বারা কত ছঙ্গার্ধার সর্বত্ত প্রচার করেন; চলিয়া বাওয়ার সময় তাহার পৃষ্ঠদিকে অরলোকন করেন; কোনও কার্য্যোপলক্ষে সমীপে আসিলেও তাহাকে ত্যাগ করেন; ভাহার সহিত মিধ্যা বা ভাবশৃত্য বাকা বলেন; এবং তাহার প্রতি অন্য রাজনেবকদিগের বাবহারের অন্যথা ঘটান।

(রাজাত্মজীবী), (পশুপক্ষ্যাদি) অমাত্ম্বদিগেরও রুত্তি বা ব্যবহারের বিকার (ভেদ) পক্ষ্য করিবেন (অর্থাৎ মাত্ম্ব ও অমাত্ম্য উভয় প্রকার জীবের রুত্তিবিকার লক্ষ্য করিবেন)।

এই (জলদেচক অন্ত) উপর দিক দিয়া জল দেচন করিতেছে—ইহা দেখির। কান্ত্যায়ন (পৌপ্রদেশের দোমদন্ত রাজার মন্ত্রী রাজাকে ছাড়ির।) প্রব্রজ্যা গ্রহণ করিয়াছিলেন।

ক্রেষ্ণি পক্ষী বাম দিক দিয়া চলিয়া গেল—ইহা দেখিয়া ভার্যান্ত গোতের

> । পৌজুছিল সোমণত কোনও অপহারে নিম্পুত্রকে বন্ধনাগারে পাঠাইতে চাহিয়া
মন্ত্রী কাজ্যারনের সহিত পরামর্শ করিরাছিলেন। আকার ও ইল্লিডে গালপুত্ররে বন্ধনারেরঃ
ইহা জানিতে পাহিয়া রাজপুত্রকে অন্তত্র সরাইরা দেন। হাজা বৃথিলেন কাত্যারনই
মগ্রভেদ ঘটাইরাছেন। কাজ্যারনের বর্ধনাধনের জন্ম রাজা অনেবকদিশকে আদেশ
করিলেন। কোন জনসেচক রাজার আদেশ শুনতে পাইয়া সে-দিন কাত্যায়নের সমুবেই
উপহ দিক্ হুইতে জল সেচন আবহু করে। কাত্যায়ন বৃথিলেন বে, যে জনসেচক মন্ত্রীর গালে
কলনিন্দু পতিত হুইবে এই ভরে গত দিন পথান্ত ধীবে ধীরে অন্ত্রেকে করিত, সে কেন গে-দিন
এমনভাবে জনসেচন করিতেছে—সন্তব্য তাহার প্রতি রাজার কোনও কোপের কথা এই
কলকেচক অবস্তুই জানিয়াছে—তাই ভাহার বৃত্তি-বিকারণ উপহিত হুইরাছে। ইহা নিশ্লিড
বৃত্তিরা কাত্যারদ রাজ্যবন্ধার ত্যাস করিরা চলিয়া বান ।

কণিক' (কোসল দেশের পরস্তপ রাজার অর্থশাম্ববিচকণ মন্ত্রী, রাজাকে ছাড়িয়া) প্রব্রজা গ্রহণ করিয়াছিলেন।

( অর ) তৃণচ্ছর দেখিরা চারারণ গোত্তের দীর্ঘ-নামক<sup>্</sup> ( মগধদেশের বালক রাজার মন্ত্রী, রাজাকে ছাড়িয়া ) প্রব্রজ্যা গ্রহণ করিয়াছিলেন।

'শাড়ি (বস্তু) ঠাণ্ডা বোধ হয়' ইহা শুনিয়া হোটমুশ্ (অবন্তিদেশের অংশুমান রাজার মন্ত্রী, রাজ্য ছাড়িয়া) প্রব্রজ্যা গ্রহণ করেন।

হন্তী ( তাঁহার প্রতি ) জল সিঞ্চন করিতেছে দেখিয়া **কিঞ্চক্ষ** ( বন্ধাধিপ শতানন্দের অন্তন্তীবী রাজপুরুষ, রাজ্য ছাডিয়া ) প্রব্রজ্যা গ্রহণ করেন।

(রাজপুত্র) নিজের রথের অথকে (শীপ্রগামী বলিয়া) প্রশংসা করিতেছেন
—ইহা শুনিয়া, (উচ্ছয়িনী রাজ্যের রাজ্য প্রস্থোতের পুত্রের অধ্যাপক) আচার্যা
পিশুন বাজ্য ছাড়িয়া প্রব্রজ্যা গ্রহণ করেন।

- >। জৌঞ্চি প্রতিদিন কণিছের রাজকুলে গমনসময়ে দুম্পি দিকেই উড়িত। একদিন রাজার নিজের অন্তঃপুরে অবস্থান কালে মন্ত্রী সেখালে উপত্তিত হওরায় রাজা মন্ত্রীর উপর কুদ্দ হুইরা ঠাহার নিশা করেন। ক্রেণি তাহা গুনিরা বিতীয় দিন মন্ত্রীর রাজসমীশে বাইবার সময়ে বাহা দিকে উড়ে। গুলারা রাজকোপ অনুমান করিয়া কণিত্ব রাজাকে পরিত্যাগ করিয়া চলিরা থান।
- ২। আচাষ্য দীর্ঘ মগধের বালক রাজার পিতার থিক বজু ছিলেন ও অত্যন্ত মাননীরও ছিলেন। রাজ্মাতাও দীর্ঘকে অত্যন্ত সন্মান প্রদর্শন করিতেন। মাতাকে আচার্য্যের সেবাপরারণ দেখিয়া রাজা প্রাপ্তবন্ধ হউলে মাতাকে কারণ জিজ্ঞানা করিয়া গুনিলেন যে, দীর্ঘ বিদ্যান্দ্র বিদ্যান্দ্র
- ৩। ঘোটমূব অবহিদেশের অংশুমান রাজার পুত্রের নীতিবিস্তার অহ্যাপক ছিলেন। রাজা কোনও কারণে অধ্যাপকের উপর অপ্রসন্ন হওয়ান, রাজপুত্র ইন্ধিতবারা তাহার গুরুকে তাহা পরিস্তাত করাইলেন। প্রতিদিন লানান্তে রাজপুত্র বন্ধ নিস্পীতিত ক্রিয়া তাহা কঠে ধারণ ক্রিয়া চলেন। পেই দিন বন্ধ ঠাপ্তা বলিয়া তিনি বিস্তাক্ত চলিতেছেন—ইহা দেখিয়া ঘোটমূথ নিজের প্রতি বাজার ভাবনিকার অসুমান করিয়া বাজ্য ছাতিরা চলিয়া যান।
- ৪। আচার্য্য কিঞ্জক প্রতিদিন রাজকুলে গ্রন্থবার রাজার উপথায় হস্তাকে উপলাদন
  করিরা ভিতরে প্রবেশ করেন। একদিন দেই হাতাতে আবোহণ করিরা রাজা আচার্য্যকর্মজ লোহের এয়ণ করেন। হস্তা ভালা বৃথিতে পারিয়া আচার্যকে জলসেচন করে—এই
  ইক্লিভ্রারা কিঞ্জক নিজের প্রতি রাজার ন্যানিকার বৃথিয়া রাজাকে ছাডিয়া চলিয়া বান।
- শাচার্য্য শিশুন উল্লেখিনীর রাজা প্রস্তোতের পালক-নামক পুরের জন্ত নীতিপারের
  অধ্যাপক নিবুজ ছিলেন। অধ্যাপন সমাধ্য হইলে রাজা শিশুনের ধন অপাহরণ করাইধার

কুকুরের শব্দ শুনিরা পিশুনপুত্রেশ ( রাজ্য পরিস্তাগ করিরা) প্রব্রজ্য গ্রহণ করেন।

রাজা বদি (অমুজীবী পুরুষের) অর্থ ও মান নাশ করেন, তাহা হইলে (অমুজীবী) সেই রাজাকে পরিত্যাগ করিতে পারেন। অথবা, (তিনি) রাজার শ্বীল বা স্বভাব ও নিজের অপরাধ বিচার করিয়া (রাজাকে না ছাড়িতে হইলে রাজকোপের) প্রতীকার করিবেন, কিংবা (রাজার প্রসাদ উৎপাদনের জন্ত ). ভাঁহার সন্নিকৃষ্ট কোনও মিত্র রাজার আশ্রায় নিবেন।

কিঞ্চ, ( অপ্রজীবী ) দেখানে ( রাজসন্নিধানে ) থাকিয়া রাজার মন্ত্রিগণারা নিজের দোবের মার্জনা ঘটাইবেন এবং তাছার পরে তিনি রাজার আশ্রম্পে বাকিতে পারেন অথবা, রাজা মারা গেলে, পুনরার (রাজপুরে ) কিরিয়া আসিতেও পারেন। ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে যোগবৃত্ত-নামক পঞ্চম অধিকরণে সময়াচারিক-নামক পঞ্চম অধাায় ( আদি হইতে ১৫ অধায় ) সমাপ্ত :

## ষষ্ঠ অধ্যায়

৯৪ম-৯৫ম প্রকরণ---(রাজার অস্বাস্থ্যরূপ বিপদের) প্রভিসন্ধান (প্রভীকার) ও একৈশ্ব্য্য

অমাত্য এইভাবে রাজার বাসনের (মৃত্যু বা অস্বাস্থ্যের) প্রতীকার করিবেন । রাজার মরণরূপ বিপদের ভর উপস্থিত হইবার পূর্কেই, তিনি রাজার প্রিয় ও হিতকর জনের সহিত প্রামর্শ করিয়া, একমাস বা ছইমাস অস্তর রাজার দর্শনের

কথা ৰপুত্ৰের নিকট মন্ত্রণঃ করেন। আগ্নেয়ের প্রতি লোহপরিহার জন্ত রাজপুত্র রথমুক্ত অবের একদিনে ৩০০ শত বোজন গমন করিবার সামর্থ্যের কথা প্রশংসা করেন। সেই ইঞ্জিত বুমিয়া শিশুন রাজ্য পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া যান।

৯। আচাই। শিশুনের পুত্র অয়বয়য়েই অত্যন্ত নীতিশাপ্তবিৎ হইয়া উঠেন। তাহার বিজ্ঞানতার লক্ষ্য বালাও তাহার অনুনরণ করিয়া চলিতেন। তিনি তথসও বালক, অতএখ মন্ত্রীর পদ পাওয়ার অবোগা। রাজা তাহাকে প্রাপ্তবয়ন মা হওয়া পর্যন্ত রাজকুলে বাঁবিয়া রাখিবার মন্ত্রণা করিলেন—ভাহা মা হইলে তিনি অল্পত্রও চলিয়া বাইতে পারেন। এই মন্ত্রণা গুলিয়া এক কুল্র পিশুনপুত্রের কাহে পুব ব্লন আরম্ভ করে। এই বিল্বত হইতে তিনি রাজার নিজের প্রতি বনোবিকার ব্রিয়া রাজার হাড়িয়া চলিয়া বান।

ব্যবহা করিবেন এবং এই অগদেশ বা ব্যাক্ত প্রচার করিবেন বে, তিনি এখন দেশের শীড়া নিবারণের জন্ত, শক্রব নাশের জন্ত, এবং আয়ু:বর্দ্ধন ও পুরুলাভের জন্ত নানারূপ কর্মের অগ্নন্তান করিতেছেন এবং এইরূপ ছল করিয়া, রাজ্বলারের ঠিক সময় উপস্থিত হইলে, প্রকৃতিবর্গের নিকট রাজব্যক্তম অথাৎ রাজচিত্যুক্ত অপর একজন আগুজনকে দেখাইবেন, এবং মিত্র ও অমিত্রের দূত-সমিধানেও তাঁহাকে (সেই রাজবাঞ্জন অপর লোকটিকে) দেখাইবেন। এবং (এই রাজবাঞ্জন ব্যক্তি বা অবাস্তব রাজা) অমাতা-মুখেই তাঁহাদের সহিত্ত বর্মেরাচিত সন্তাবণ করিবেন। (তিনি) দোবারিক ও অন্তর্বংশিকমুখে খণ্ডোক্ত (১ম অধিকরণে ১৯ অধ্যায়ে উক্ত) রাজপ্রণিধি বা রাজকরণীয় কার্যাসমূহ করাইবেন। তিনি অমাত্যাদি প্রকৃতির সম্মতিক্রমে অপকারী লোকের প্রতি কোণ বা প্রসাদ প্রদর্শন করিবেন এবং উপকারী জনের প্রতি কেবল প্রসাদই দেখাইবেন।

তুর্গগত ও প্রত্যম্ভপ্রদেশগত রাজার কোশ ও দও (দেনা), আগুপুরুষদারা অধিষ্ঠিত হইলেও, কোনও ব্যাক্তে অমাত্য তাহা একস্থানগত করাইবেন, এবং কোনও ছলে (রাজবংশের) কুশীন, রাজকুমার, ও রাজ্যমুখাদিগকে (তিনি) একটিত করাইবেন।

অথবা, যে মুখা ছুৰ্গ ও অটবীতে থাকিয়া, পক্ষবান্ অৰ্থাৎ সহায়যুক্ত হইয়া রাজ্ঞার প্রতি বিকারগ্রন্থ হইয়াছেন, তাঁহাকে (তিনি) অন্তুক্লিত করাইবেন। অথবা তাঁহাকে তিনি বহু বিপদ্যুক্ত বাজাতে বা শক্রর প্রতি অভিযানে পাঠাইবেন, অথবা (সাহায্যদানার্থ) কোন মিক্রসন্লিধানে পাঠাইবেন।

(তিনি) যদি কোন সামস্ত রাজা হইতে আবাধ (বিশন্তি) উপলব্ধি করেন, তাহা হইলে (তিনি) কোনও উৎসব, বিবাহ, হস্তিবন্ধন কার্য্য, অথ, পণ্য ও ভূমি আদানের অপদেশ (ছল) করিয়া তাঁহাকে (সেই সামস্তকে) আনাইয়া অহভূশিত করিবেন, অথবা, নিজ মিত্রদারা তাঁহাকে অপ্নকৃলিত করাইবেন।
(তিনি)তদারা (সেই মিত্রদারা) তাঁহার সহিত দেখিবহিত সন্ধি করাইবেন।

অথবা, (তিনি) আটিবিক ও (নিজ রাজার) শত্রুর সহিত তাঁহার (সেই সামস্কের) শত্রুতা ঘটাইবেন। অথবা, (তিনি) তাঁহার (সেই সামস্কের) নিজ কুণীন কাহাকে কিংবা তাঁহার অবক্লম কোন (পুরাদিকে) ভূমির এক-দেশ প্রদান করিয়া তদ্বারা তাঁহাকে দমিত রাখিবেন। (এইরূপ প্রতীকার রাজার জীবদ্দশার অমাত্য করাইবেন।) অথবা, ( রাজার মৃত্যু ঘটিলে, অমাত্য ) রাজবংশের কুলীন, রাজকুমার ও ( রাজ্যে ) মুধ্যগণকে উপগৃহীত বা অন্তক্লিত করিয়া, ( রাজ্যে ) অভিহিন্ত এক কুমারকেই দেখাইবেন ( সর্বাসনক্ষে উপদ্বিত করাইবেন )। অথবা, দাত-ক্ষিক প্রকরণে ( থম অধিকরণে ১ম অধ্যায়ে ) উক্ত রীতি অবলম্বন করিয়া রাজ্যের কন্টকসমূহের উদ্ধার বা নাশসাধন করিয়া রাজ্য করাইবেন। ( শ্ববিধ্রে অমাত্যের কর্ত্তব্য এইরূপ হইবে। )

(এখন পরবিষয়ে অমাতোর কর্ত্তব্য বলা ছইতেছে।) যদিবা সামস্তাদির মধ্যে অন্ততম কোনও মুখ্য (এইরূপ বাবস্থায়) কুলিত হয়েন, তাহা ছইলে (অমাতা) তাঁহাকে বলিবেন—"( এই যুবরাজ ত বালক, স্থতরাং রাজ্যপ্রাপ্তির অযোগ্য) আইস, তোমাকেই রাজ্য করিয়া দিতেছি"। এবং এইরূপ বলিয়া তাঁহাকে ডাকাইয়া আনাইয়া হত্যা করাইবেন। অথবা, (তিনি) আপংপ্রতীকার প্রকরণে (৯ম অধিকরণে ৩য় অধ্যায়ে) উক্ত রীতিতে (তাঁহাকে) সাধিত বা সহস্তগত করিবেন।

অথবা, যুবরাজ বর্ত্তমান থাকিলে, ক্রমে ক্রমে তহুপরি রাজ্যভার আরোপণ করিয়া, (অথাডা, ) রাজবাসন (অর্থাৎ রাজার মরণরূপ বিপত্তির কথা) প্রকট করিবেন। (স্বভূমিতে) রাজব্যসন ঘটিলে, (অমাডা) শক্রবাজন (অর্থাৎ শক্রর বেশধারী) মিত্ররাজার সহিত সন্ধি স্থাপিত করিয়া (অর্থাৎ শক্রর ভূমিতে নিজ্ব রাজার কোশ ও দত্তের রক্ষরে বাবস্থা করিয়া) চলিয়া আসিবেন। অথবা, নামন্তদিগের অন্তত্তম একজনকে সেই (পর) ফুর্গে স্থাপিত করিয়া চলিয়া আসিবেন। অথবা, কুমারকে রাজ্যে অভিবিক্ত করিয়া শক্রর প্রতি যুদ্ধের জন্ত প্রস্তুত্তম (এই অবস্থায়) যদি কোন শক্রঘারা তিনি আক্রান্ত হয়েন, তাহা হইলে (অভিবাশ্যৎকর্ম-নামক অধিকরণে) যথোক্ত উপায়দ্ধারা আপৎ-প্রতীকার করিবেন।

এইভাবে অমাত্য রাজ্যের একৈথগ্য (এক রাজবংশের আধিপত্য) পালন করাইবেন—ইহাই কৌটিল্যের নিজযত।

কিন্ধ, আচার্য্য ভারদ্ধান্দ এই মত সঙ্গত মনে করেন না ( অর্থাৎ অমাত্য এইভাবে রাজকুমারদারা কঠোর একচ্ছত্রতার ব্যবস্থা করিবেন না )। ( তাঁহার মতে) রাজা ত্রিয়মাণ হইলে, ( অমাত্য, ) রাজকুলীন, রাজকুমার ও রাজ্যমুধ্যদিগের পরস্থারের মধ্যে, অথবা অন্ত রাষ্ট্রমুখ্যগণের দহিত যুদ্ধ বাঁধাইয়া দিবেন;
এবং প্রকৃতিকোপ উৎপাদন করিয়া বিজ্ঞান্ধ পুরুবকে স্থাতিত করিবেন। এবং

(তৎপর) রাজকুশীন, রাজকুমার ও রাজ্যমুখ্যদিগকে গোপনে হতা। করাইয়া (তিনি) স্বরং রাজ্য অধিকার করিয়া বদিবেন। ধে-হেতু রাজ্যের ক্ষপ্র পিতাকে পুত্রদিগের প্রতি ও পুত্রগণকে পিতার প্রতি অভিয়োহের আচরণ করিতে দেখা যায়, অমাত্যের কথা ত বলাই বাহল্য, কারণ, তিনি (আমাত্য) রাজ্যের একমাত্র নিয়ামক। অভএব, স্বয়ং উপস্থিত (এই রাজ্য) কথনই (তিনি) উপেক্ষা করিবেন না। কারণ, লোকপ্রবাদও এইরূপ আছে বে, (রমণার্থ) স্বয়ং উপগত নী প্রত্যাধ্যাত হইলে পুরুষকে অভিশাপ প্রদান করে।

কার্যাকরার উপযুক্ত কাল যিনি আকাজ্জা করিয়া প্রতীক্ষা করিতেছেন, সেই কাল ভাঁহার নিকট একবারই উপস্থিত হয়; কিন্তু, কার্য্য করিবার জন্ত ইচ্ছুক হইলেও তাঁহার নিকট (উপযুক্ত ) কাল পুনরায় গুর্লত হয়॥ ১॥

(এবিধরে) কৌটিল্য বলেন—ইহা ( অমাত্যকর্ত্তক কুল্যাদিদ্বারা বিক্রমণের পর স্বাং রাজ্যাধিকার ) ( অমাত্যাদি ) প্রকৃতির কোপা উৎপাদন করে, ইহা ধর্মদংগত কার্য্য নহে এবং ইহা ঐকান্তিক নহে অর্ধাৎ নিয়তই কার্য্যদাধক নহে। ( স্বতরাং, অমাত্য, ) আত্মধন্দার রাজপুত্রকেই রাজ্যে স্থাপিত করিবেন। যদি কোন রাজপুত্র আত্মন্দার পাওয়া না যায়, তাহা হইলে ( ঝী-মন্তাদি ) ব্যসনে আনক্ত কুমারকে, রাজকন্তাকে, অথবা গভিনী দেবীকে ( রাজ্ঞীকে ) সমীপে রাখিয়া মহামাত্রগণতে ( মহামাত্য বা অষ্টাদশ তীর্থদিগকে ) একত্রিত করাইয়া ( অমাত্য বা প্রধানমন্ত্রী এইয়প ) বলিবেন—"এই রাজকুমারকে আপনাদের হন্তে নিক্ষেপ বা স্থাসক্রপে রাধিলাম ( আপনারা ইহার রক্ষাকর্ত্ত ।)। ইহার পিতাকে আপনারা লক্ষা করুন, ( তাঁহার ) পরাক্রম ও আভিজাত্য এবং আপনাদিশের নিজের গুণাবলীর প্রতিও দৃষ্টিপাত কর্মন। এই ( রাজপুত্র ) ত ক্ষজরূপী মাত্র, আপনারাই ( বান্তবিক ) স্বামিস্থানীয় । ( বলুন ত ) এই বিবরে কি করা যাইতে পারে ?"

এইপ্রকার কথনকারী অমাত্যকে বেশাপপুরুবের রা দেই স্থানে সংযেশিত পুরুবেরা, অথবা বাঁহারা বড় বড় রাজকার্য্যে নিযুক্ত তাঁহারা, অথবা বাঁহাদের সহিত পূর্বে গোণনভাবে পরামর্শ করা হইরাছে তাঁহারা ) বলিয়া উঠিবেন—"আপনার নেতৃত্বের অধীন এই রাজা বাতিরেকে অন্ত আর কে চাতুর্বর্ণ্যের প্রজাবর্গ পালন করিবার যোগ্য ?" সেই (প্রধান) অমাত্য "আছে। তাহাই হউক" এই বলিয়া কুমার, রাজকন্তা বা গতিনী দেবীকে (রাজ্ঞীকে) রাজপদে

অভিষিক্ত করিবেন এবং তাঁহাকেই নিক্তের বান্ধব ও সম্বন্ধীদিগের এবং মিত্র ও অমিত্রের দুতগণের নিকট রাজস্থানীয় বলিয়া দেখাইবেন।

দেই থেখান অমাত্য ) অভান্ত অমাতাদিগের ও আয়ুধ্ধারী দৈনিকপুরুষ্দিগের ভক্ত ও বেতনের কিছু বিশেব অর্থাৎ রন্ধি করাইবেন। এবং তিনি বলিবেন—"এই (রাজা) প্রাপ্তবয়স্ক হইয়া ইহা আরও বন্ধিত করিবেন।" এইভাবে (তিনি) হুর্গ ও রাষ্ট্রের মুখ্যগণকেও ভাকাইয়া বলিবেন, এবং মধোচিতভাবে মিত্রেও অমিত্রপক্ষকেও জানাইবেন; এবং কুমারের বিনয়কর্মে অর্থাৎ বিভাশিক্ষা-ব্যাপারে প্রবৃত্ত হইতে চেটাবান হইবেন। অথবা, রাজকভাকে সমানজাতীয় পুরুষের সহিত বিবাহ দিয়া তাহাতে (পুত্ররূপ) অপতা উৎপন্ধ করাইয়া তাহাকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিবেন। মাতার (রাজমাতার) চিতক্ষোভ না ঘটে, এইজন্ত, (তিনি) কুলীন, অথচ অল্লভেজন, মৌন্যাক্ষণযুক্ত (বেদাধ্যরুনরত) ছাত্রকে তৎসমীপে নিযুক্ত রাধিবেন (যেন তাঁহার দেবতার পূজা ও পুরাণপ্রবণাদি কার্য্যে তিনি সাহায্য করিতে পারেন); এবং ঋতুকালে তিনি তাঁহাকে রক্ষণাবেক্ষণ করিবেন। নিজের জন্ত তিনি কোন উৎকৃষ্ট উপভোগের সামন্ত্রী রাধিবেন না। কিন্তু, রাজার জন্ত যান, বাহন, আত্রণ, বন্ধ, শ্রী, গৃহ ও অন্তান্ত (শয়নাসন্দি) ভোগ্যদ্রবা তৈরার করাইয়া দিবেন।

রাজা যোবনপ্রাপ্ত হইলে অমাত্য তাঁহার চিত্ত পরীক্ষার জন্ম তাঁহার নিকট ( অমাত্যকার্য হইতে ) বিশ্রাম যাচনা করিবেন এবং রাজাকে অতুই দেখিলে ( অর্থাৎ তাঁহাকে যাইতে অহমতি দিলে ) তিনি তাঁহাকে পরিজ্ঞাগ করিবেন এবং তুই দেখিলে ( অর্থাৎ তাঁহাকে যাইতে নিষেধ করিলে ) তাঁহার আশ্রমে থাকিয়া কার্য্য করিতে থাকিবেন ॥ ২ ॥

(অমাত্যপদের কার্য্যে) অক্রচিপ্রাপ্ত হইলে তিনি পুত্রের রক্ষার্থ পূর্ব-রাজ্যণদ্বারা ছাপিত গৃচপুরুষ ও নিধিপরিপ্রহের কথা (অথবা গুচ্তাবে রক্ষিত সারক্রবাদির নিধির কথা) তাঁহাকে (রাজাকে) নিবেদন করিয়া (তপজার্থে) অরণ্যে চলিয়া বাইবেন, অথবা দীর্ঘকালে সম্পাদন্যোগ্য যজ্ঞ আরম্ভ করিবেন ॥ ৩॥

অথবা, অমাত্য নিজে অর্থ**লাস্ত্র**বিৎ হইয়া, রাজ্য যখন মুখ্যগণের স্বায়ন্তী-কৃত হইবেন, তথন তাঁহার প্রিয়জনের সহায়তা লইয়া তাঁহাকে **ইতিহাস** ও পুরাণ-ক্ষায়ার। (অর্থলাজ) বুঝাইবেন ॥ ৪ ॥ অথবা, অমাত্য নিজপুরুবের বেশধারী হইরা (কপট) বোগ আশ্রর করিয়া রাজাকে অবশে আনম্বন করিবেন এবং তাঁহাকে অবশে আনিয়া দাওকদ্বিক প্রকরণে উক্ত উপার অবশন্বন করিয়া দৃশ্বদিগকে দমিত রাধিবেন ॥ ৫ ॥ কোটিলীয় অর্থশান্তে বোগরত-নামক অধিকরণে রাজ্যপ্রতিসন্ধান ও একৈখর্যা-নামক বঠ অধ্যায় (আদি হইতে ৯৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# মণ্ডলযোনি--- বন্ঠ অধিকরণ

#### প্রথম অধ্যায়

#### ৯৬ম প্রকরণ—( রাজা প্রস্কৃতি ) প্রাকৃতির গুণসম্পৎ

্রেবম পাঁচটি অধিকরণে 'তন্তভাগ' অর্থাৎ শ্বরাষ্ট্রের অক্ষ্ণান নিরূপিত হইয়াছে। ধ্র্ম হইতে শেব পর্যান্ত বাকি অধিকরণগুলিতে 'আবাপভাগ' অর্থাৎ পরবাষ্ট্রের অক্ষ্ণান নিরূপিত ইইতেছে।)

স্থামী (রাজা), অমাতা, জনপদ, হুর্গ, কোশ, দণ্ড (বল বা সেনা) ও মিত্র এই সাতটিকে প্রাকৃতি বলা হয় (পরম্পরের প্রকৃষ্টভাবে উপকারদাধক বলিয়া ইহাদের নাম প্রকৃতি) :

এইগুলির মধ্যে ( প্রথমতঃ ) স্বামী বা রাজার গুণসম্পৎ উল্লিখিত হইতেছে।
সপ্রতি রাজার ধোলটি আভিগামিক শুণ বলা হইতেছে, যথা—রাজা
হইবেন—মহাকুলীন (উচ্চকুলসভূত), দৈবসম্পন্ন (পৌর্কদেহিক শুভকর্মবিশিষ্ট),
বৃদ্ধিসম্পন্ন ( শুশ্রবাদিজনিত বৃদ্ধিযুক্ত ), সঙ্গসম্পন্ন ( বিপদে ও সম্পদে ধৈর্যযুক্ত ),
বৃদ্ধদেশী ( বিস্তার্গজনের সেবী অর্থাৎ জ্ঞানাদিবিষয়ে অভিজ্ঞজনের মতগ্রহণকারী ). ধার্ম্মিক, সতাবাক্ ( সতাবাদী ), অবিসংবাদক ( সতাপ্রতিজ্ঞ অর্থাৎ
বচনে ও কর্মে একরপ ), কৃতজ্ঞ ( পরের উপকার স্মরণকারী ), স্কুললক
( বহুপ্রদ বা মহাদ্তো ), মহোৎসাহ (প্রকৃষ্ট ব্যবসায়শীল বা কার্য্যাৎসাহী ),
অদীর্যস্ত্রে ( কাজ ফেলিয়া রাধার প্রবৃত্তিশৃস্তা অর্থাৎ ক্ষিপ্র কার্য্যকারী ),
শক্রসামস্ত্র ( সহজে সামস্ত্রগণের বশকারী ), দৃত্র্দ্ধি ( দৃত্নিস্কর; এম্বনে
'দৃত্তিন্তি' পাঠও দৃষ্ট হয় ), অক্ষুদ্রপারিষ্ণক (গুণবান্ অ্যাতাাদি পারিষ্ণবর্গযুক্ত ) ও বিনয়কাম ( বিনয় বা শিক্ষার অভিলায়ী )।

রাজার (আটটি) প্রাক্তাশুণের উল্লেখ করা হইন্ডেছে, বণা—শুশ্রামা। (শারপ্রবণের ইচ্ছা), প্রারণ (শান্তের অবগম বা বোধ), প্রারণ (অর্থের অবগম বা বোধ), ধারণ (গৃহীত বিধয়ের অবিপরণ), বিজ্ঞান (বিষয়-বিশেষের জ্ঞান), উছ (কোন বিষয় বুঝিবার জ্ঞাত তর্ককরণ), আপোছ (দোববুক্ত পক্ষের পরিত্যাগ) ও জ্ঞাভিনিবেশ (গুণযুক্ত পক্ষে মনোনিবেশ)।

রাজার চারিটি **উৎসাহগুণের উল্লেখ** করা **হইডেছে**, বথা—শোধা (ভির্বাহিত্য), অমর্য (পাপাচরণে ক্ষমারাহিত্য বা অসহন), শীদ্রতা (শীদ্র-কার্যাসম্পাদনে তৎপরতা)ও দাক্ষ্য (সর্বকার্য্যে নিপুণতা)।

এখন রাজার **আত্মেদব্দের** কথা উল্লেখ করা ইইভেছে, যথা—রাজ্য হইবেন—বাগ্মী (অর্থযুক্ত ভাষণকারী), প্রগল্ভ (সভাতে ভাষণসময়ে কল-রহিত ), স্মৃতিমান ( অতীত বিষয়ের স্মরণরক্ষী ), মতিমান ( আগামী বিষয়ের মননকারী), বলবান (শারীরিক বলধারা), উদগ্র (উন্নতচিত্ত), স্ববগ্রহ (সহজে অকার্যা হইতে নিবারণ্যোগ্য), ক্লতশিল্প (হস্ত্যাদির আরোহণ ও প্রচরণাদিধারণরূপ শিল্পে অভ্যন্ত ১, বাসনে (নিজের ও শত্রুর বাসনাবসরে), দশুলায়ী ( অর্থাৎ ব্যাক্রমে সেনারক্ষক ও সেনাদারা উপশ্মকারী ), কাহারও দ্বারা ক্বন্ত উপকার ও অপকারদম্বন্ধে প্রতিকারবিধায়ক, সঞ্জাশীল ( অকার্যাকরণে শঙ্কায়ক্ত), আপদে ( ছণ্ডিক্ষাদি বিপন্তিতে ) ও প্রকৃতিতে ( স্থভিক্ষাদি রাজ্যের স্বাস্থ্যাবস্থায় ) (ধান্তাদির ) স্থবিনিয়োগকারী, দীর্ঘকালদম্বন্ধ ও দূরদেশদম্বন বিষয়ের দর্শনকারী, (স্থাসভাদির) দেশ, কাল, (উৎসাহাদি) পুরুষকার ও ক্ষিয়াবিষয়ের প্রাধান্তসম্বন্ধে বিবেচনাকারী, সন্ধিবিভাগী শেক্তর সহিত সন্ধি-প্রয়োগ বিষয়ে অভিজ্ঞ ), বিক্রমবিস্তাগী ( শত্রুর সহিত বিগ্রহবিষয়ে অভিজ্ঞ), ত্যাগবিভাগী ( স্থপাত্তে দানশীল ), সংযমবিভাগী ( অর্থাৎ চুকার্যা, হইতে, আ্থ-সংযমকারী), পণবিভাগী (অক্সরাজাদির সহিত পণ বা চুক্তি মাননকারী)ও পরচ্ছিত্রবিভাগী (শত্রুর বাসনাদি বৈগুণ্যের সঙ্গাকারী), সংর্ভ (গুড়ুমন্ত্রাদির রক্ষক ), দীনজনের প্রতি অসহনশীল, বক্ত জ্রকুটিতে অনবলোকনকারী, কাম, ক্রোষ, লোভ, স্বস্তু ( গর্বর্ব ), চাপল ( অবিবেকসহকারে কার্য্যকরণ ), উপভাপ (প্রজার প্রতি জোহাচরণ) ও পৈশুরু (খলের ব্যবহার)-শুরু, প্রিয়বাদী. হাস্সনহকারে উদগ্র বা কর্কশ বিষয়ের ভাষণকারী ও বিস্তার্ত্তভ্রের উপদেশা-কুদারে আচরণকারী :

**অমাত্যসম্প**ৎ পূর্ব্বেই ( বিনয়াধিকরণে উক্ত হইয়াছে।

সম্প্রতি জ্ঞানপদসম্পৎ বলা হইতেছে। জনপদ এইরূপ হইবে, যথা – যাহার মধ্যে ও প্রান্তদেশে ( প্রগদির ) স্থান থাকিবে; যাহাতে খদেশবাদীর ও পরদেশ হইতে আগত্তক লোকনিগের ধারণযোগ্য ধান্তাদিযোগ থাকা চাই; আশদ উপত্তিত হইলে ( পর্বতবনম্রগদি থাকার ) যাহাতে নিজের রক্ষা স্কর হয়; বাহাতে অক্সায়াদে ( ধানাদি নিম্পন্ন হওয়ায় ) লোকের জীবিকা স্লমাধা হয়;

যাহাতে ( নিজ্বাজার ) শত্রের প্রতি দ্বের আবরণ করার লোক আছে; বাহাতে রামস্তগণকে দমিত রাধার উপার সম্ভাবিত; যাহা পত্ব, পাবাণ, উবর, বিষম্বান, (চোরাদি) কন্টক, ( রাজবিরোধী ) শ্রেণী বা জনসংগ, হিংশ্র জন্ত, ও আটবী-স্থানশ্তা; যাহা ( নদীতভাগাদি থাকার । রমণীয়; যাহাতে সীতা ( কৃষ্ণভূমি ), ধনি, (কাষ্টাদি ) ক্রব্যবন ও হাজবেন বিভ্যমান আছে; যাহা গত্রুর হিতকর স্থান; যাহা পুরুষের পক্ষে হিতকর স্থান; যাহা ( পুরুকাদি হইতে ) গুপুপ্রসর; যাহাতে ( গোমহিবাদি ) পশুবাহল্য আছে; যাহা ( শুলাদির উৎপত্তি জন্তু ) দেবতার বর্ষণ হইতে কেবল প্রাপ্তজল নহে অর্থাৎ যাহা নদীধালাদিবহুল; যাহাতে জলপথ ও স্থলপথ —উভয় পথই আছে; যাহাতে বহুপ্রকারের মূলাবান্ ও বিচিত্র পণ্যবন্ধ পান্তরা যার; যাহা রাজার দণ্ড ( জরিমানা প্রভৃতি ) ও রাজকর সহ্য করিতে পারে; যাহাতে ক্ষকেরা খ্ব কর্মশীল; যাহাতে স্থামীরা ( মালিকগণ ) নির্কোধ নহে, অর্থাৎ বৃদ্ধিমান্ বা বিবেচক; যাহাতে নীচবর্ণের মান্ত্রক সংখ্যার বেশী বাস করে; এবং যাহাতে মান্ত্রের রাজভত্ত ও শুক্ষচিত্র ।

**তুর্গসম্পৎ পূর্**ব্বই ( হর্গবিধানপ্রকরণে ) উক্ত হইরাছে।

(এখন) কোশসম্পৎ বলা হইতেছে। রাজকোশ পূর্বরাজগণদ্বারা ও
নিজদ্বারা ধর্ম বা ভায়াপ্রসারে অভিনত (অর্থাৎ ধান্তবড়্তাগ ও পণ্যদশভাগ
প্রভৃতি বাহা শান্তবিহিত বলিয়া গৃহীত তঞ্চারা উপচিত) হওয়া উচিত। ইহাতে
প্রচুর স্থবর্প ও রজত বিভ্যমান থাকিবে। ইহাতে নানাবিধ ও বৃহৎ রম্ন ও
হিরাণ্য (নগদ টাকা) থাকিবে। ইহা দীর্ঘকাল পর্যন্ত অবস্থায়ী বিপদ এবং
অনায়তি (অর্থের ভবিশ্বৎকালীন অনাগম, স্নতরাং বায়বাছলা) সহ্য করিতে
সমর্থ হইবে।

(এখন) দণ্ড সম্পৎ বলা হইতেছে। দণ্ড বা সেনার গুণ এইরূপ হইবে, যথা—ইহা পিতৃপিতামহক্রমে আগত হওয়া উচিত—তাহা হইলে ইহা নিতা বা দ্বিরভাবে দেবাশীল হইবে। ইহা (রাজার) বশবর্তী থাকিবে। ইহার পুরু ও স্ক্রীকে রাজা ভরণ করিয়া তুই রাখিবেন। (অভিযানাদিতে) প্রবাদে থাকা সময়ে, ইহাকে আবশ্যকীয় ভোগারস্তবারা সম্পন্ন রাখিতে হইবে। ইহা সর্বত্তই প্রতিঘাত বা ভক্ত প্রাপ্ত হইবে না। ইহা হঃধকইসহনশীল এবং বহ মুদ্ধে পরিচিত থাকিবে। ইহা সর্বপ্রকার মুদ্ধের প্রহরণ বা আহুধবিস্থাতে বিশারদ হইবে এবং রাজার সহিত সমান রন্ধি ও ক্রয়ের জন্ত হিধাভাবশৃন্ত অর্থাৎ শক্রকত ভেষ প্রতিহত রাখিতে সমর্থ হইবে। ইহাতে ক্ষত্রিয় জাতির পোকই অধিক থাকিবে।

(এখন) মিত্রসম্পাৎ বলা হইতেছে। মিত্র পিতৃপিতামহক্রমে আগত, নিত্য বা আকৃত্রিম, বশ্য (বংশগত), অধৈষ্য আর্থাৎ দিধাতাবশৃষ্ঠ বা ভেদরহিত, মহান্ (অর্থাৎ প্রভূমন্ত্র ও উৎসাহশক্তিসম্পন্ন) এবং অবসরমত শীত্র উত্থানশীল বা উপ্লোগী হইবেন।

প্রসংক্ষমে অমিত্র বা শক্তর সম্পৎ (অর্থাৎ শক্ততে কি কি দোষ থাকিলে তিনি বিজিপীর্ঘারা পরাভূত হইতে পারিবেন তাহা ) বলা হইতেছে। শক্ত রাজবংশসভূত হইবেন না, তিনি লোভী ও ছই পারিবদবর্গযুক্ত হইবেন; তাঁহার অমাত্যাদি প্রকৃতি বিরাগভাজন থাকিবেন; তিনি অস্কায় বা শান্তরে প্রতিকৃপ আচরণ করিবেন; তিনি অসুক্ত (উআনবহিত বা উপেক্ষাকারী). বাসনমুক্ত ও উৎসাহশ্যু হইবেন; তিনি (পুরুষকারে বিশাসশ্যু হইয়া) কেবল দৈবের উপর নির্ভরশীল থাকিবেন; তিনি (বিবেচনা না করিয়াই) খাহা তাহা করিতে পারেন; তিনি (উচ্ছিন্ন হইলেও) গতি বা আশ্রয়বিহীন, সহায়বহিত. ধৈর্ঘাবিহীন, এবং নিত্য (স্বজন ও পরজনের) অপকারকারী হইবেন। কারণ, এই প্রকার সম্পদ্যুক্ত অর্থাৎ দোবযুক্ত শক্তকে সহজেই সমুক্তির বা নই করিতে পারা।

শেষোক্ত অরিকে বাদ দিয়া, অবশিষ্ট (রাজা প্রভৃতি) এই সাতটি প্রকৃতি, ভাহাদের নিচ্চ নিজগুণযোগমহ, উক্ত ইইল। তাহারা যদি প্রভ্যেকে প্রজ্যেকর অঞ্চৃত ইইয়া সম্বার্থ্যে ব্যাপৃত হয়, তাহা ইইলে তাহাদিগকে বাজসম্পত বলা যায়। ১।

আখ্যসম্পাদে যুক্ত নরপতি নিজ নিজ গুণসম্পদিহীন প্রকৃতিদিগকেও গুণসম্পাদ করিতে সমর্থ হয়েন। আর আখ্যসম্পদ্বহিত নরপতি গুণসম্পদে সমুদ্ধ ও অন্তর্মক্ত প্রকৃতিদিগকেও নই করিতে পারেন। ২ ।

সেই কারণে, যে আত্মসম্প্রদিহীন রাজার প্রকৃতিরাও দোবযুক্ত তিনি **চাতুরন্ত** সত্রাট্ (চতু:সমূপ্রপর্যান্ত বিস্তৃত ভূমির ঈশর) হইলেও অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গরার হত হয়েন, অথবা শক্রগণের বশগামী হয়েন। ৩।

কিন্তু, আত্মশপদ্যুক্ত নীতিজ্ঞ রাজা, অন্ধ ভূমির অধিকারী ছইলেও, প্রকৃতিসম্পদে যুক্ত থাকিলে, সমগ্র পৃথিবীও জয় করিতে পারেন ও (কথনও) হানিপ্রাপ্ত হয়েন না॥ ৪ ॥

কোটিলীর অর্থপাল্লে মগুলবোনি-নামক বর্চ অধিকরণে প্রকৃতিসম্পৎ-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ১৭ অধ্যায় ) সমারা।

# দ্বিতীয় অধ্যায়

#### ৯৭ম প্রকরণ-শাস্তি ও ব্যায়াম (উভোগ)

শম ( শান্তি ) কেনের ( অজিত বন্ধর যথায়থ উপভোগের ) কারণ, এবং ব্যায়াম ( কর্মোপ্তোগ ) যোগের ( অপ্রাপ্ত বন্ধর লাভের ) কারণ হইরা থাকে। আরভ্যমাণ কর্মের যাহা যোগসাধক, ভাহার নাম 'ব্যায়াম', ( অর্থাৎ ব্যবিষয়ে হর্গাদিকর্মের ও পরবিষয়ে সন্ধিপ্রভৃতি কর্মের এবং পুরুষ ও অন্তান্ত উপকরণের যোগ বা সন্ধন্ধের যাহা সাধক, ভাহাই 'ব্যায়াম' শক্ষের অর্থ )। আর যাহা সব কর্ম্মের ফল উপভোগের ক্ষেমের বা বিঘবিঘাতের সাধক, ভাহার নাম 'শম', ( অর্থাৎ যাহা পূর্ব্বান্ত কর্মাদির স্ববিষয়ে রজাদি ও পরবিষয়ে মিত্তাদিরূপ ক্লের উপভোগের ক্ষেম্মাধক বা বিঘনাশাধক, ভাহাই 'শম' শক্ষের অর্থ )। এই শম ও ব্যায়ামের কারণ হয় যাড গুণাও। অর্থাৎ সন্ধি, বিগ্রহ, যান, আ্যান, বংশ্রের ও বৈধীভাবরূপ ভয়টি গুণ )।

ভাহার (অর্থাৎ বাড্গুণ্যের) ফল (তিন্টি) ব্থা - ক্ষয় তেপচয় বা অবন্তি , স্থান (স্মান অবস্থায় অবস্থিতি) ও রুদ্ধি (উপচয় বা উন্নতি)।

(উক্ত উদর বা ফলের প্রাপ্তি ঘটাইবার জন্ম ছই প্রকার কর্ম আবশ্যক হর, বথা—মান্থর কর্ম ও দৈবকর্ম।) 'নয়' ও 'অপনয়' মান্থবকর্ম। 'অয়' ও 'অনর' দৈবকর্ম। বে-হেড্, দৈব ও মান্থব কর্মই লোক্যান্তা নির্কাহ করে। (ধর্ম ও অধর্মরূপ) অদৃষ্টদারা যে কর্ম করান হয় তাহা দৈবকর্ম। (ধর্মরূপ) অদৃষ্টদারা যে কর্ম করান হয় তাহা দৈবকর্ম। (ধর্মরূপ) অদৃষ্টাধা দৈব কার্য্যকারী হইলে, যে (অর্থলাভাদি) ইট কলের যোগ ঘটে তাহার নাম 'অয়'; এবং (অর্থর্মরূপ) অদৃষ্টাধ্য দৈব কার্য্যকারী হইলে, যে অনর্থাদি) অনিষ্ট কলের যোগ ঘটে, তাহার নাম 'অনেয়'। প্রভূশক্তি প্রভৃতি ত্রিশক্তিও তার্মেড্রুক ষাড্ওণ্যাদি প্রয়োগরূপ) দৃষ্ট্রারা যে কর্ম্ম করান হয় তাহা মান্থব কর্ম। সেই কর্ম করা গেলে, যদি যোগ (অপূর্বলাভ) ও ক্ষেম (কর্মকলের উপভোগ) নিক্ষা হয়—তাহা হইলে এই যোগও ক্ষেমের নিশ্বন্তির নাম করা। আর সেই কর্ম করা গেলে, যদি যোগক্ষেমের বিপত্তি বা অনিম্পত্তির ও তাহার হলৈ ইহার নাম 'অপনয়'। স্লভরাং 'যোগক্ষেমের নিশ্বন্তির ও তাহার বিশ্বন্তির পরিহারার্থ) সেই মান্থব কর্মই চিন্তাপূর্ব্বক করণীয়; কিন্ত, দৈবকর্ম (অপ্রভাক্ত বলিয়া) চিন্তা বা বিচারের অতীত বলিয়া পরিগণ্য।

রাজা আত্মগুণদাশার ও আমাত্যাদি পঞ্চ দ্রবাঞ্জাতর গুণদাশার এবং (সন্ধ্যাদির সমাক্ প্রয়োগজনিত) নরের আশ্রন্তত হইলে তাঁহাকে বিজিগীয়ুবলা যার (অর্থাৎ তথনই তিনি বাস্তবিক পক্ষে সামাদি উপার-চতুইরের প্রয়োগে শক্রকে বিজিত করিবার জন্ম সমাক্ ইচ্ছুক হওরার যোগ্য হয়েন )। তাঁহার (বিজিগীরুর) চতুদ্দিকে মণ্ডলীভূত এবং অন্তর বিনা (অর্থাৎ অন্য দেশ মধ্যবন্তা না থাকিলে) সংলগ্র ভূমির অধিপতি অরিপ্রকৃতি বলিয়া পরিজ্ঞাত। সেইভাবে এক ভূমি বা এক রাজ্য ব্যবহিত ভূমির অধিপতি মিঞ্জপ্রেকৃতি বলিয়া পরিজ্ঞাত।

পূর্ব্বোক্ত অরিদোবসম্পদে যুক্ত হইলে সামস্ত রাজাও শক্ত বলিয়া পরিগণিত। যে শক্ত (মৃগয়াদি) ব্যসনে আসক্ত তাহার উপর অভিযান বা
আক্রমণ করা উচিত। আশ্রয়বিহীন (অর্থাৎ ছর্গ ও মিত্রহীন) শক্ত, ও হর্বল
আশ্রয়্যুক্ত শক্তর উচ্ছেদসাধন করা উচিত। ইহার বিপরীত হইলে, (অর্থাৎ
শক্ত যদি আশ্রয়্যুক্ত ও সবল আশ্রয়প্রাপ্ত হয় তাহা হইলে) সেই শক্ত (অপকার
করিলে) তাহার পীড়ন ও কর্শন (ধন ও দণ্ডের রুশতা সম্পাদন) করা উচিত।
যাতব্য, উচ্ছেদনীয়, পীড়নীয় ও কর্শনীয় এই চারিপ্রকার ভেদে শক্তর
ভেদও চারিপ্রকার হইল।

( অরির প্রতি অভিযোগ বা আক্রমণকারী ) বিজিগীবুর সমূথ দিকে ভূমি বা রাজ্যের অন্তর বা ব্যবধান না থাকিলে তৎতৎ ভূমির অধিপতিরা যথাক্রমে এইরূপ নাম প্রাপ্ত হইবেন, যথা—( অরির অনন্তর ) মিক্রে, (তদনন্তর ) অরিমিক্রমিক্র। কেই অবস্থার বিজিগীবুর অনন্তর ) মিক্রমিক্র থি তদনন্তর ) আরিমিক্রমিক্র। কেই অবস্থার বিজিগীবুর অনন্তর পশ্চাঘন্তী রাজার সংজ্ঞা পার্কিগ্রাহ ( তিনি অরির হিতার্থে বিজিগীবুর পার্ফি বা পশ্চাভাগ গ্রহণ করেন বলিরা, বিজিগীবুর অরি ), তদনন্তর রাজার সংজ্ঞা আক্রম্প ( 'তুমি আদিরা আমার পার্কিগ্রাহকে বারিত কর' - এই বলিরা যাহাকে আক্রম্পন বা ডাকা হয়, —তিনি বিজিগীবুর মিক্রভূত ), তদনন্তর রাজার সংজ্ঞা পার্কিগ্রাহাসার ( তিনি পার্কিগ্রাহরে নাহায্যার্থ সরিরা আদেন ) এবং তদনন্তর রাজার নাম আক্রম্পাশার ( তিনি আক্রম্পের সাহায্যার্থ সরিয়া আদেন )। ( স্থতরাং বিজিগীবু সয়ং এবং সমুখদিকে পাঁচজন ও পশ্লাদ্দিকে চারিজন, সর্বস্থেত এই দশজন রাজাহারা গঠিত 'দশরাক্রমণ্ডল' হয় । )

বিজিপীযুর নিজ ভূমির জনস্তর রাজা যদি পভাবত: অমিত হর, অধবা

ঠাহার সমান বংশে উৎপন্ন বলিয়া দায়ভাগী হয়—তাহা হইলে এই উভয়কেই সহজ্ঞশব্দে বলা যায়। যে শক্ত নিজেই বিক্লম, কিংবা যিনি অপরের দ্বারা বিজিগীবুর বিরোধ উৎপাদন করান—ভাহাকে ( অর্থাৎ এই উভয়কে ) ক্লু জ্রিমন্দ্রক বলা যায়। ( এই গেল শক্তর অবাস্তর ভেদ। )

বিজিসীয়ুর নিজ ভূমির এক অন্তর ভূমির অর্থাৎ এক রাজ্যের ব্যবধানে স্থিত রাজা যদি স্বভাবতঃ মিত্র হয়, এবং মাতাপিতার সম্বন্ধে সম্বন্ধুক্ত ( অর্থাৎ মাতৃপপুত্র বা পিতৃস্বসার পুত্র ) হয় —তাহা হইলে উভয়কে সহজ মিত্র বলা যায়। যে মিত্র নিজের ধন ও জীবনের জন্ম বিজিসীয়ুর আশ্রেয় গ্রহণ করে — ভাহাকে ক্লিজিম মিত্র বলা যায়।

অরি ও বিজিগীরুর রাজ্যের অনস্তর (বিদিক্ভাগে স্থিত) রাজা—ি থিনি ( অরি ও বিজিগীয়ু ) উভয়ে দিয়িবদ্ধ বা বিগ্রহযুক্ত হইলেও উভয়কেই অমুগ্রহ প্রদর্শন করিতে সমর্থ এবং উভয়ে কেবল বিগ্রহযুক্ত হইলেও উভয়কেই নিগ্রহ দেখাইতে সমর্থ—ি তিনি মধ্যম রাজা বলিয়া অভিহিত হয়েন।

আবার অরি, বিজিগীয়ুও মধ্যমরাজার প্রকৃতি হইতে বাহিরে অবস্থিত ও (মধ্যম রাজা হইতেও কোশদণ্ডহিদাবে ) অধিকতর বলবান রাজা—বিনি অরি, বিজিপীয়ুও মধ্যম রাজা একত্তে সন্ধিবদ্ধ বা বিগ্রহযুক্ত হইলেও তাঁহাদিগকে অন্তরহ প্রদর্শন করিতে সমর্থ এবং তাঁহারা বিগ্রহযুক্ত হইলেও তাঁহাদিগকে নিগ্রহ দেখাইতে সমর্থ, তাহাকে উদাসীন (উর্দ্ধে আসীন—সর্বাণেক্ষা বলবন্তম) বলা হয়। এইভাবে (স্থাদশ্য) রাজপ্রাকৃতি নির্দিত হইল।

সংক্ষেপে চতুর্মগুল রাজার ( অর্থাৎ বিজিগীরু, অরি, মধ্যম ও উদাদীন রাজার ) বিষয় অন্থ প্রকারে বলা হইতেছে। অথবা, বিজিগীরু, ও ইহার মিজ ও মিক্র-মিজ—এই তিনটিকেও প্রকৃতি ধরা হয়। ইহাদের প্রত্যেকে অমাত্য, জনপদ, হুর্গ, কোল ও দণ্ড প্রকৃতির সহিত যুক্ত হইয়া অষ্টাদল অবয়বয়ুক্ত মগুল গঠিত করেন (ইহা বিজিগীয়ু-সম্বদ্ধ মগুল)। এইভাবে অরি, মধ্যম ও উদাদীনেরও পৃথক্ পৃথক্ অষ্টাদল অবয়বয়ুক্ত মগুল প্রত্যেকের গঠিত হইতে গারে, ইহাও ব্যাখ্যাত হইল। এই প্রকারে চারি মগুলেরই সংক্রেপে নিরূপণ করা হইল।

( তম্ম ) রাজপ্রকৃতি বারটি এবং ভাছাদের অমাত্যাদি দ্রব্যপ্রকৃতি বাটটি — স্বভরাং সর্বাস্থ্যতি ( ৭২ ) প্রকারের প্রাকৃতি ধরা হইল।

**এই मद প্রকৃতির বধাবথ সম্প**ৎ বলা হইরাছে। তাহাদের শক্তি ও সি**দ্ধিও** 

বলা হইতেছে শক্তি শক্ষার। বল এবং সি**দ্ধি শক্ষা**রা স্থ ব্ঝিডে হইবে।

শক্তি তিন প্রকার হয়। জ্ঞানবলের (অর্থাৎ জ্ঞানদার) যোগক্ষেমসাধনের সামর্থ্যের নাম ) মন্ত্রশক্তি। কোশ ও দওজনিত বলের নাম প্রভূপক্তি। এবং বিজ্ঞানগ্রেনাম উৎসাহশক্তি।

এই প্রকারে সিদ্ধিও ত্রিবিধ হয়। যে সিদ্ধি মন্ত্রশক্তিদারা সাধ্য, ইহার নাম সক্রিসিন্ধি; যে সিদ্ধি প্রভূশক্তিদারা সাধ্য, ইহার নাম প্রভূসিন্ধি; এবং দে সিন্ধি উৎসাহশক্তিদারা সাধ্য, ইহার নাম উৎসাহসিন্ধি।

উক্ত শক্তিদ্বারা অধিক উপচিত হইলে রাজা জ্যায়ান্ (উত্তম ) হয়েন।
সেই শক্তিগুলিরারা অপচিত (বা রহিত) হইলে তিনি হীন (অধম ) হয়েন।
এবং সেই শক্তিগুলির সমতা (অর্থাৎ অন্যনতা ও অনধিকতা থাকিলে) তিনি
সম (মধ্যম ) হয়েন। সেই কায়ণে, রাজা নিজের জন্ত শক্তি ও সিদ্ধি বাড়াইতে
ব্যাপৃত থাকিবেন। যে রাজা সাধারণ (অর্থাৎ উক্ত প্রকারে নিজের জন্ত শক্তি
ও সিদ্ধি বাড়াইতে অসমর্থ), তিনি (অমাত্যাদি) দ্রবাপ্রকৃতির জন্ত ক্রমান্বরে
(অর্থাৎ প্রথমত: অমাত্য প্রকৃতি, তৎপর জনপদ প্রকৃতির জন্ত ইত্যাদিক্রমে )
শক্তি ও সিদ্ধি বাড়াইতে ব্যাপৃত হইবেন, অর্থবা ইহাদের শৌচ (শুদ্ধ)
বিবেচনা করিরা ইহাদের জন্ত শক্তি ও সিদ্ধি বাড়াইতে ব্যাপৃত হইবেন। অথবা
(তিনি) দৃষ্য ও অমিত্রেদ্বারা শক্তর (শক্তি ও সিদ্ধির) অপকর্ষসাধনে বঙ্গ

(সম্প্রতি কিরুপ অবস্থায় শক্তব শক্তি ও সিদ্ধির অপকর্ষ সাধন করা উচিত হাইবে না তাহা বলা হাইতেছে।) বিজিপীয়ু রাজা যদি দেখেন—"আমার অমিত্র (শক্ত) শক্তিযুক্ত হাইরা বাক্পাক্ষয়, দগুপাক্ষয়, ও অর্থনুবণবারা আশন (অমাত্যাদি) প্রকৃতিবর্গকে উপহত অর্থাৎ বিরক্ত করিবেন; অথবা সিদিযুক্ত হাইরা স্বরং মুগায়া, দৃড়ে, মস্ত ও ত্রীবাসনে আসক্ত হাইরা প্রমাদপ্রাপ্ত হাইবেন; অথবা এইতাবে প্রকৃতিবর্গকে বিরক্ত করিয়া উপক্ষীণ (বা হর্কেল) হওয়ায় ও প্রমাদযুক্ত হওয়ায় আমার বশবর্তী হাইবেন (অর্থাৎ সহক্তে আমাধারা পরাজিত) হাইবেন, অথবা সর্কপ্রকার দেনার সাহায্যে আমাধারা যুক্তে অভিযুক্ত (আক্রাপ্ত) হাইয়া একাকী কোন এক হর্গে অবস্থিত থাকিবেন; (অথবা) তিনি সংহত (সংঘাতপ্রাপ্ত বা একত্রিড) সৈত্ত লাইয়াও মিত্র ও হর্গরহিত হওয়ায় (সহক্তে) আমার সাধ্য হাইবেন; অথবা তিনি নিজৈ অভ্যক্ত বলবান্ হাইয়া প্রকৃত্রেশ অস্থ্

দ্বার উচ্ছেদসাধন করিতে অভিসাবী ইইয়া, তাঁহার উচ্ছেদসাধন করিয়া আর আমাকে উচ্ছেদ করিবেন না; অথবা কোনও বলবান্ রাজালারা আমি মুদ্ধার্থ আহুত ইইলে, কার্যারভেই আমি বিপন্ন হইয়া পড়িলে আমাকে মধ্যমরাজার সহায়তা লইতে আকাজকী দেখিয়া (নিজেই মধ্যমরাজরপে) আমাকে সাহায়া প্রদান করিবেন, তাহা হইলে (অর্থাৎ এই সমস্ত কারণ উপস্থিত হইলে), আমিত্রেরও শক্তি ও সিদ্ধি কামনা করা যাইতে পারে।

ছাদশরাজপ্রকৃতি মগুলের নায়ক বিজিগীয়ু রাজা, একাস্তর-রাজ্যে অবস্থিত (মিত্র) গান্ধগণকে নেমিরূপে কল্পনা করিয়া, অনস্তর রাজ্যে অবস্থিত রাজগণকে অবরূপে কল্পনা করিবেন, এবং নিজকে ( রাজমগুলচক্রের ) নাভিক্রপে গণনা করিবেন । ১ ।

নায়ক (বিজিগীর) ও মিত্র—এই উভ্যের মধ্যে নিবেশিত ইইলে, বলবান্ শক্রও উচ্ছেদ বা পীড়নের ধোগ্য ইইবেন ( অর্থাৎ বিজিগীর তাঁহার উচ্ছেদ বা পীড়নসাধন করিবেন ) ॥ ২ ॥

কোঁটিলীয় অর্থপাত্তে মণ্ডলযোনি-নামক বৰ্চ অধিকরণে শম ও বাায়াম-নামক দিতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

**ग७नट्यानि-नामक यर्छ অधिकत्रर्ग मगार्थ ।** 

# ষাড্গুণ্য— সপ্তম অধিকরণ

#### প্রথম অধ্যায়

## ৯৮ম-৯৯ম প্রকরণ—ষাড্ শুণ্যের বিশেষ বর্ণন ও ক্ষয়, স্থান ও বৃদ্ধির নিশ্চয়

( স্বামিপ্রভৃতি ) সপ্ত প্রকৃতি ও ( দ্বাদশ ) রাজমগুল বাড্গুণ্যের (সন্ধিপ্রভৃতি ছয় গুণের ) যোনি বা কারণ হইয়া থাকে।

দদ্ধি, বিগ্ৰাহ, আসন, যান, সংশ্ৰয় ও দ্বৈধীভাব স্ইছাই ধাড্গুণা বা ছয়ট গুণ—ইছাই তদীয় **আচাৰ্য্যের** মত।

কিন্তু, বাতব্যাধির মতে প্রধানত: ) গুণ ছই প্রকার; কারণ, সন্ধি ও বিগ্রহধারাই বাড্গুণা সম্পাদিত হয় (অর্থাৎ আসন ও সংশ্রয় সন্ধিতে, বান বিগ্রহে এবং বৈধীভাব উভয়ে অস্তর্ভ হুইতে পারে)।

কিন্তু কৌটিল্যের নিজের মতে ইহার (অর্থাৎ সদ্ধি ও বিগ্রাহের) অবস্থা ভেদে (স্ক্রগভেদবশতঃ) গুণ ছয় প্রকারেরই হইয়া থাকে।

এই ছয় গুণের মধ্যে (ছই য়াজার মধ্যে ভূমি, কোশ ও দণ্ডের, দানাদি
সর্বে ) পণবন্ধনের নাম সন্ধি। শক্তর প্রতি অপকার বা লোহাচরণের নাম
বিশ্রেছ। (সন্ধি প্রভৃতির) উপেক্ষা বা অকরণের নাম আসেন।
(শক্তিদেশকালাদির) অত্যধিকযোগই (যানের কারণ হয় বলিয়া ইছাই) মান
নামে পরিজ্ঞাত। অভ্য বলবান্ রাজার কাছে (নিজ, নিজের জ্রীপুত্র ও নিজের
ন্তব্যাদির) অর্পণের নাম সংশ্রেয়। সন্ধি ও বিগ্রহের এককালীন উপধােগের
নাম বৈধীভাব (ছই বলবান্ শক্রর মধ্যে কেবল বাকাঘারা নিজকে সমর্পণ
করিয়া গৃড়চিত্তরতি লইয়া অবস্থানের নামও বৈধীভাব )। এইভাবে গুণ ছয়
প্রকারই হইয়া থাকে।

নিজকে শত্রুর অপেক্ষায় হীন (বা নির্বাল) মনে করিলে (বিজিপীয়ু তাহার সহিত) সদ্ধি করিবেন। নিজকে (শক্তি প্রভৃতিভার। অধিক) উপচয়ুহুজ মনে করিলে (তিনি শত্রুবিশেষের সহিত) বিগ্রাহ করিতে পারেন। "আমাকে কোনও শক্রু উপহত করিতে পারিবে না, আমিও শক্রুকে উপহত করিতে পারিব না,"—এইঙ্কপ অবস্থায় (তিনি) আসন গ্রহণ করিয়া থাকিবেন (অর্থাৎ শক্রুকে

তথন উপেক্ষা করা যায় )। ( অভিযাপ্তৎকর্ম-নামক অধিকরণে উক্ত শক্তিদেশ-কালাদি ) গুণের আধিক্যে নিজকে যুক্ত মনে করিলে ( তিনি ) যানে প্রবৃত্ত হুইতে পারেন। নিজকে শক্তিহীন মনে করিলে ( তিনি বলবভর রাজার ) সংশ্রম কামনা করিবেন। কোন কার্যো সহায়তার অপেক্ষা থাকিলে, তিনি দ্বৈধীভাব অবলম্বন করিবেন।

এইভাবে বিষয়ভেদে ছয়গুণই স্থাপিত বা নিরূপিত হইল। (এই অধ্যায়ের দ্বিতীয় প্রকরণ নিরূপিত হইতেছে।)

এই ছয়টির মধ্যে যে গুণটিকে অবলয়ন করিয়। (বিজিগীরু রাজা) মনে করিবেন—"এই গুণে অবস্থিত থাকিলে আমি নিজের তুর্গকর্মা, সেজুকর্মা, বিশিক্সথ, শুক্তানিবেশন, খনি, দ্রাব্যাবন ও হস্তিবনকর্মা প্রবৃত্তিত করিতে শক্ত হইব এবং শক্রয় এই সব কর্ম নই করিতে শক্ত হইব"—তিনি সেই গুণটির অহসেদ্ধান করিবেন। এই গুণার্ম্ভান (রুদ্ধির হেতু বলিয়া) বৃত্তি শক্ষারা অভিহিত হয়।

"আমার র্দ্ধি অভিনীত্র ঘটিবে, অথবা আমার র্দ্ধি অধিকতর ছইবে, অথবা আমার র্দ্ধি উত্তরোত্তর আরও উপচিত ছইবে এবং শক্রর র্দ্ধি বিপরীত ছইবে (অর্থাৎ ইছা অভিশীত্র ঘটিবে না, কমই ছইবে এবং উত্তরোত্তর স্থানপ্রাপ্ত ছইবে)"—এইরূপ ব্বিলে (বিজিগীয়ু) শক্রর র্দ্ধি উপেক্ষা করিতে পারেন। কিন্তু, উত্তরের র্দ্ধি তৃপাকালে উদিত ছইলে এবং তৃপাকলযুক্ত ছইলে, (তিনি শক্রর সহিত) সন্ধি করিবেন।

অথবা, (ছয় গুণের মধ্যে) যে গুণটি অবলম্বন করিলে নিজ (ছর্গাদি) কর্মের উপদাত লক্ষিত হইবে এবং অপরের (শক্তর) তাহা হইবে না, বিজিপীরু তাহা অবলম্বন করিবেন না। এই প্রকার গুণার্ম্ভান (ক্ষের হেড় বলিয়া) ক্ষয়-শক্ষারা অভিহিত হয়।

"আমি দীর্ঘকাল পরে ক্ষরপ্রাপ্ত হইব, আমার ক্ষয় অল হইবে, এবং আমার ক্ষয় বৃদ্ধির উদায় আনিবে এবং শক্রর ক্ষয় বিপরীত হইবে ( অর্থাৎ ইহা শীজ বটিবে, অধিক হইবে এবং ক্ষয় অধিক বাড়িবে ",—এইরূপ বৃথিলে ( দিজের ) ক্ষয়ও উপেক্ষা করা বার। কিন্তু, নিজের ও শক্রর উভয়ের ক্ষয় তুল্যকাশে উপস্থিত হইলে এবং তুল্যকলযুক্ত হইলে, (তিনি শক্রর সহিত) পদ্ধিক করিবেন।

অথবা, ( হর গুণের মধ্যে ) যে গুণটি অবলখন করিলে নিজ ( পুর্গাদি )

কর্মের রুদ্ধি বা ক্ষর কোনটাই দেখা যার না – তখন ( তদবন্থার থাকার দক্ষণ ) ইহার অনুষ্ঠান স্থান-শক্ষার। অভিহিত হয়।

অথবা, "আমার দান অল্পকালছায়ী এবং ইহা বৃদ্ধির উদর স্থানিবে এবং শক্রব দান ইহার বিগরীত হইবে (অর্থাৎ ইহা বছকালছায়ী এবং ক্ষরকর হইবে)"—ইহা বৃথিলে বিজিলীর নিজের স্থান উপেক্ষা করিজে পারেন। (নিজের ও শক্রর) উভয়ের স্থান তুলাকালে উপস্থিত হইলে এবং তুলাফলযুক্ত হইলে (তিনি শক্রব দহিত) সন্ধি করিবেন।

উপরি উল্লিখিত বিষয় তদীয় আচার্যোর সিদ্ধান্ত। কিন্তু, কৌটিশ্য বলেন বে, এই বিষয়সমূহ বিশেষভাবে উক্ত হয় নাই ( অর্থাৎ সাধারণভাবে উক্ত হইয়াছে )। (কাজেই সম্প্রতি তিনি সেগুলি বিশেষভাবে বলিতেছেন।)

(বিজিপীর কি অবস্থার দল্ধি করিয়া নিজের রন্ধি বা উরতিদাধন করিতে পারেন, তাহার কথা বিশেষভাবে বলা হইতেছে।) যদি (বিজিগীয়া) এইরূপ দেখেন - "সন্ধি করিয়া অবস্থিত হইলে. ( ১ ) আমি আমার মহাফলযুক্ত নিজ (ছুর্গাদি-) কর্মহারা শব্রুর (ছুর্গাদি-) কর্মের উপঘাত নোল বা মূলাছানি ) ক্রিতে পারিব; (২) অথবা (সন্ধি-বশতঃ) আমি নিজের মহাফলযুক্ত কর্মসমূহের উপভোগ করিতে পারিব ; কিংবা ( ৩ ) শত্রুর কর্মসমূহের উপভোগ করিতে পারিব; অথবা (৪) সন্ধিদারা বিশ্বাস উৎপাদনপূর্বক আমি যোগপ্রনিধি ( অর্থাৎ গুঢ়পুরুষ তীক্ষাদি-প্রয়োগ ) ও উপনিষৎ প্রণিধিদ্বারা ( অর্থাৎ বিষ-ধুমাদির প্রয়োগছারা ) শক্রর ( ছর্গাদি- ) কর্ম্ম নই করিতে পারিব ; অথবা (৫) (সন্ধিবশতঃ / অনায়াদে আমি শত্রুকর্মের অফ্ষানে কুশল জনসমূহকে (বীজ-দানাদিরূপ ) অহপ্রেহ ও (কর্মোক্রণাদিরূপ ) পরিহারের স্থকরতা প্রদর্শন করিয়া এবং নিজ কর্মসমূহের ফললাভের আতিশ্যাদারা (নিজদেশে) আরুট করিতে পারিব ; অথবা (৬) আমার শত্রু অতাধিক বলবান্ নিজ শত্রুর সহিত অধিক মাত্রায় (ধনাদিদানছারা) সন্ধিতে আবন্ধ হইয়া (ক্ষীণকোশ হইয়া) স্কর্মের উপযাত বা নাশপ্রাপ্ত হইবে ; অথবা (৭) বাঁহ্যর (যে তৃতীয় প্রেকর) সহিত বিগ্ৰহে প্ৰবৃত্ত হইয়া ( আমার শক্ত ) আমার সহিত সন্ধি করিতেছে, ভাঁহার সহিত তাহার (আমার শক্রর) বিগ্রহ আমি দীর্ঘকালম্বায়ী করিতে পারিব; অধবাটে) আমার সহিত সন্ধিতে আবন্ধ (আমার শক্ত) আমার ৰেষকাহীর জনপদ পীড়িত করিতে পারিবে; অথবা (১) আমার শক্ত**ছা**রা উপছত সেই (ফোকারীর) জনপদ আমার হুন্তে আসিবে এবং সেই কারণে আমি আমার নিজ কর্মসমূহে বৃদ্ধি (উন্নতি) লাভ করিব; অথবা (১০) আমার শক্ত নিজের কর্মারত্ত বিপদ্প্রান্ত হওয়ায় শক্টে পতিত হইয়া আমার কর্মে আক্রমণ করিতে পারিবে না এবং (১১) সে অন্ত শক্তর সাহায়ে স্কর্মারত্তে প্রবৃত্ত হইয়াছে (কিংবা বিষমে পতিত শক্ত অন্ত শক্তর সাহায়ে স্কর্মারত্তে প্রবৃত্ত হইয়াছে (কিংবা বিষমে পতিত শক্ত অন্ত শক্তর সাহায়ে স্কর্মারত্তে প্রবৃত্ত হইয়াও আমার কার্য্যে আক্রমণ করিতে পারিবে না—এইরূপ অস্থবাদও হইতে পারে ), এবং তজ্জন্ত এই উভয় শক্তর সহিত সদ্ধিতে আবদ্ধ হইয়া আমি সর্ক্রকর্মে বৃদ্ধি (উন্নতি) লাভ করিতে পারিব; অথবা (১২) শক্তর সহিত দদ্ধি করিয়া শক্তর সহিত সংমিলিত রাজমণ্ডলকে ভিন্ন করিতে পারিব; অথবা, সেই ভিন্ন (ভেদপ্রান্ত) রাজমণ্ডলকে নিজ বশে আনিতে পারিব; অথবা, (১৩) শক্তকে সেনাসাহায় প্রদানপূর্বক স্ববশে আনিয়া মণ্ডলের সহিত তাহার মিশনের লিশ্পাতে বিদ্বেষ আনাইতে পারিব; অথবা (১৪ বিদ্বেমপ্রাপ্ত হইলে সেই শক্তকে সেই মণ্ডলহারাই ঘাতিত করিতে পারিব"—ভাহা হইলে তিনি সন্ধিবারী নিজ বৃদ্ধি বা উন্নতিসাধন করিতে পারেব।

(বিজিপীযু কি অবস্থায় বিগ্রহ করিয়া নিজের রুদ্ধি বা উন্নতিসাধন করিতে পারেন, সম্প্রতি সেই কথা বিশেষভাবে বলা হইতেছে।) অথবা বিজিপীয়ু বদি এইরূপ দেখন—".>) আমার জনপদে আর্থজীবী (ক্ষান্তির) অনেক আছে, কিংবা এখানে শ্রেণীর (ক্ষান্তিকারী ও তৎকার্ম্নিতার) সংখ্যাও অধিক আছে। কিংবা ইহা শৈপত্র্গ, বন্দর্গ ও নদীর্গ্রারা এবং (যাভায়াতের) একটি মাত্র ঘার-দ্বারা প্রবক্ষিত—স্তরাং আমার এই জনপদ শক্রর আক্রমণ প্রতিহত করিতে সমর্থ হইবে; (২) অথবা, আমি আমার রাজ্যপ্রান্তে প্রতেশ প্রশ্রের পার্রারা রাজ্যপ্রান্তির (ত্র্গাদি-) কর্ম নন্ত করিতে পারিব; (৩) অথবা, আমার শক্র নানাপ্রকার ব্যানন ও পীড়নে হতোৎসাহ ইইয়াছে এবং এখনই তদীয় কর্মন্দ্র্যর উপযাত্রকাল উপস্থিত হইয়াছে; (৪) অথবা, বিগ্রহে প্রস্তুত্ব শক্রম জনপদ্বানীদিগকে আমি অন্ত পথ দিয়া স্বাইয়া দিতে পারিব"—ভাহা হইকে ভিনি বিগ্রহে অবন্থিত ছইয়া নিজের বৃদ্ধি বা উন্নতিসাধন করিতে পারেন।

(বিজিগীর কি অবস্থার আদন অবলয়ন করিয়। নিজের র্থিক বা উন্নতি-শাধন করিতে পারেন, সম্প্রতি বিশেষভাবে তালা বলা হইতেছে।) অধবা, বিজিগীরু যদি এইরূপ মনে করেন— 'আমার শত্রু আমার (হুর্গাদি-) কর্ম নই করিতে সমর্থ নহে, অথবা আমিও তালার (হুর্গাদি-) কর্ম নই করিতে সমর্থ নহি; শত্রুর ব্যসন্ত (উপস্থিত হুইরাছে), স্বতরাং (সমানবলশালী) কুকুর ও বরাহের স্থায় আমাদের উভয়ের কলহ উপস্থিত হইলেও, আমি স্বক্ষের অস্থঠানে রত হইলে রন্ধি বা উন্নতিপ্রাপ্ত হইব"—তাহা হইলে তিনি আসন অবলয়ন করিয়া নিজের রন্ধি বা উন্নতিসাধন করিতে পারেন।

( সম্প্রতি মানদার) বিজিপীযুর স্বর্গির কথা বলা হইতেছে।) অথবা, বিজিপীরু বলি এইরূপ মনে করেন—"অ্যমার শক্তর ( হুর্গালি-) কর্মের নাশ কেবল মানদারাই সাধ্য এবং আমার স্বকর্মের রক্ষাকার্য্য স্কুষ্ট্ভাবে বিছিও আছে"—তাহা হইলে তিনি যান্দারা নিজের র্গি বা উন্নতিসাধন করিতে গারেন।

(সম্প্রতি সমাশ্রয়ন্তর) বিজিগীধুর বুদ্দিলাভের কথা বলা ছইতেছে।) অথবা, বিজিগীধু বদি এইরূপ মনে করেন—"আমি শক্রর ( তুর্গাদি-) কর্ম নষ্ট করিতে সমর্থ নহি, অথবা স্বকর্মের নাশও নিবারণ করিতে সমর্থ নহি"—ভাহা ছইলে তিনি বলবান্ অন্ত রাজাকে আশ্রেয় করিয়া স্বক্রের অন্তর্ভান্দারা ক্লর ছইতে স্থান এবং স্থান ছইতে বৃদ্ধির আকাজ্ঞা করিবেন।

(সম্প্রতি দ্বৈধীভাবদারা বিজিপীরুর বৃদ্ধিলাভের কথা বলা হইতেছে।) অথবা, বিজিপীরু যদি এইরূপ মনে করেন—"এক শক্রর সহিত সন্ধি করিয়া অকর্ম প্রবর্ত্তিত রাখিতে পারিব এবং অন্ত এক শক্রর সহিত বিগ্রহ করিয়া তদীয় কর্মের নাশ করিতে পারিব"—তাহা হইলে তিনি দৈশীভাব অবলম্বন করিয়া (নিজের) বৃদ্ধি বা উন্নতিসাধন করিতে পারেন।

এইভাবে প্রক্রতিমণ্ডলে অবস্থিত (বিজিগীর রাজা) এই ছয়প্রকার গুণের প্রয়োগদ্বারা কর্মবিষয়ে, ক্ষয়ের অবস্থা হইতে স্থানের অবস্থা, এবং (তৎপর) স্থানের অবস্থা হইতে রুদ্ধির অবস্থা আকাজ্ঞা করিবেন॥১॥

কৌটিলীয় অর্থপারে বাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে বাড্গুণ্যসমূদ্দেশ ও
কর, স্থান ও বৃদ্ধির নিশ্চয়-নামক প্রথম অধ্যায়
( আদি হইতে ১১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## দ্বিতীয় অধ্যায়

#### ১০০ম প্রকরণ – সংশ্রেমনু ন্তি

পূর্বাধ্যায়ে কেবল একটি গুণ অবলম্বনপূর্বক কি প্রকারে বিজিয়ীর শ্বর্দ্ধি প্রাপ্ত হইতে পারেন তাহা নির্মাণিত হইয়াছে; সম্প্রতি তুইগুণদারা প্রাপ্ত লাভ সমান হইলে—ইছার কোন্টি অবলম্বনীয় তাহা বলা ছইতেছে।) বিজিয়ীর যধন দেখিবেন যে, সদ্ধি ও বিগ্রহ্দারা সমান র্দ্ধিলাভ ঘটে তথন তিনি সদ্ধি অবলম্বন করিবেন। কারণ, বিগ্রহে ক্ষয় (প্রাণিনাশ), বায় (ধনধান্তাদিবায়), প্রবাস (পরদেশে গমন) ও প্রতাবায় (শক্রপ্রুধদারা কৃত বিষপ্রয়োগাদিজনিত কষ্ট )—এই (অনর্পগুলি) সন্তাবিত হয়।

এই বিধিবার। যান ও আসনবার। সমানলাভের সন্থাবনায় আসনই অবলমনীয়— ইহা ব্যাধ্যাত হইল।

(আবার) দৈনীভাব ও দংশ্রম্বারা স্মানশাভের স্ভাবনায় দৈনীভাবই (তিনি) অবলম্বন করিবেন। কারণ, দ্বৈণীভাবের আগ্রয়কারী রাজা মুখাভাবে অকর্মে অসুষ্ঠানপর বলিয়া (তিনি) নিজেরই উপকার করেন। কিন্তু, সংশ্রম অবলম্বনকারী রাজা (আ্রাশ্রম্বাভার বিধেয় থাকিয়া) পরের উপকারই করেন, নিজের নহে।

(নিজের অভিযোক্তা) সামন্ত যতটা বলযুক্ত, তাহা হইতে অধিকতর বলসম্পান রাজাকে (তিনি) আশ্রয় করিবেন। তদপেক্ষায় অধিকতর বলসম্পান রাজাক। পাওয়া গেলে, সেই (অভিযোক্তা সামন্তকেই) আশ্রয় করিয়। তাঁহাকে না দেখা দিয়া (অর্থাৎ তৎসমীপবর্তী না থাকিয়া) কোশ, দণ্ড (সেনা) ও ভূমির যে কোনটা তাঁহাকে দিয়া, তাঁহার উপকার করিতে যত্রবান্ হইবেন। কারণ, রাজগণের পক্ষে বিশিষ্ট (অর্থাৎ বলবান্) রাজার সহিত সমাগম (বধবদ্ধনাদি) মহৎ অনর্থ উৎপাদন করে—কিন্তু, নিজ শক্রর সহিত বিগ্রহে প্রয়ন্ত বিশিষ্ট রাজার সহিত সমাগম নিষিক নহে।

(বিশিষ্টবলমুক্ত রাজা) যদি (বিনা সমাগমে) প্রসন্ন না হরেন, তাহা হইলে (বিজিগীরু) তাঁহার নিকট দণ্ডোপনত রাজার মত (অর্থাৎ যে রাজা দণ্ড বা সেনাপ্রদানপূর্বক সন্ধিতে আবন্ধ হইরাছেন তাঁহার মত) প্রণত ধাকিবেন। যথন বিজিগীয় দেখিবেন যে, (আশ্রয়ভূত বশবান্) রাজার শ্রাণাশ্বকারী কোন ব্যাধি, কিংবা তাঁহার রাজাে (অমাত্যানির) অন্তঃকোপ, কিংবা তাঁহার শত্রুবৃদ্ধি, কিংবা তাঁহার মিত্রব্যসন উপস্থিত ইইয়াছে এবং সেই কারণে তাঁহার (বিজিগীয়ুর নিজের) বৃদ্ধি বা উর্লিডর সন্থাবনা ইইয়াছে, তাহা ইইলে তিনি বিখাস্থােগ্য (নিজের) ব্যাধি বা কোন ধর্মকার্ধ্যের ছল করিয়া তাঁহার নিকট ইইতে সরিয়া পড়িবেন। (উপরি উক্ত অবস্থায়, বিজিগীরু) নিজের রাজ্যে অবস্থিত থাকিয়া (আহ্লুত ইইয়াও উক্তর্মপ ছল করিয়া তৎসমীপে) বাইবেন না। অববা, তাঁহাের নিকটে অবস্থিত থাকিলেও ভনীয় ছিলুবা দােব গাইলে ভাহাতে আঘাত করিবেন।

ছই বলবান্ রাজার মধ্যগত ছইয়া (বিজিমীয়ু নিজের) রক্ষাকার্যো সমর্থ রাজাকে (অর্থাৎ বলবান্ রাজহয়ের অন্ততরকে) আশ্রয় করিবেন। অর্থবা, তয়ধ্যে যে রাজাটি সমীপবর্ত্তী বা রাজ্যান্তরভারা ব্যবহিত নহেন, তাঁহাকে আশ্রয় করিবেন। অব্ধা, তিনি উভয়কেই আশ্রয় করিবেন এবং উভয়ের সহিত কপাল-সন্ধি করিয়া আশ্রয় করিবেন (অর্থাৎ উভয়ের প্রত্যেকের নিকট এইরূপ বলিবেন, 'আপনিই আমার রক্ষক—আপনার লারা রক্ষিত না হইলে আমাকে শত্রু উচ্ছয় করিয়া ফেলিবে'। এইরূপ উত্তিধারাই কপাল-সন্ধি সম্পাদিত হইয়া থাকে)। অর্থবা, তাঁহাদের উভয়ের মধ্যে একজন অপর জনের মূল অর্থাৎ ক্রবাদি নই করিয়েছেন, ইয়া বলিয়া (অর্থাৎ নিজে তাহা নই করিয়া তাহাদের একজনের উপর তদ্দেষ আরোপণ করিয়া)—উভয়ের মধ্যে পরম্পারের অপকারকরণের ছলজনিত ভেদ প্রয়োগ করিবেন। এবং এইভাবে তাঁহারা উভয়ে পরম্পার ভিয় হইলে তাঁহাদের উপর উপাংশুদণ্ড প্রয়োগ বা গোপনে বধ্যাধন করিবেন।

অথবা, (তিনি) পার্থে থাকিয়া উভয় বগবান্ রাজার মধ্যে বাঁহার নিকট ছইতে শীজ ভয়ের আশকা করিবেন তাঁহা ছইতে আত্মরক্ষার্থ (বিপত্তির) প্রতীকার করিবেন: অথবা, (তিনি) গ্র্গ আশ্রয় করিয়া হৈথীভাব অবশবন-পূর্বক অবস্থান করিবেন (অর্থাৎ, প্রাক্ষরভাবে সন্ধি ও বিগ্রাহ—উভয়ের অভিমূথ ইইবেন)।

অধবা, (তিনি এই অধিকরণের পূর্ব্ব অধ্যায়ে উজ্জ ) সন্ধির ও বিপ্রস্থের বিশেষবিধি অবসন্থনে চেটমান ইইবেন। উভয়ের দৃশ্য, অমিত্র ও আটবিকলিগকে (মানদানাদিখারা) (তিনি) নিচ্ছ বশে আনিবেন। উভয়ের মধ্যে একজনের আঞ্চল্প করিয়া অপরজনের ব্যসনসম্য়ে তাহাদের ঘারা অর্থাৎ দৃশ্যাদিখারাই তদীর রক্ষে প্রহার করিবেন। অথবা, উত্তর্গারা আক্রান্ত বা পীড়িত হইলে (তিনি) উত্তরের মণ্ডলকে আশ্রন্থ করিবেন। অথবা, তিনি মধ্যম বা উদাসীন রাজাকে আশ্রন্থ করিবেন। অথবা, (তিনি) তাঁহার সহিত (মধ্যম বা উদাসীন রাজার সহিত) মিলিত হইয়া উভ্রের একজনকে (মানদানাদিশ্বরা) ব্রব্ধে আনিয়া অপর জনের, অথবা উভ্রেরই উচ্ছেদ্দাধ্য করিবেন।

অথবা, উভয় রাজাঘারা উচ্ছিন্ন (বিজিগীয়ু) মধ্যম শও উদাসীন রাজার মধ্যে, কিংবা তাঁহাদের স্বপক্ষে অবহিত রাজাদিগের মধ্যে মিনি ভাররতি (অর্থাৎ ভারান্মমোদিত পথের অবস্থানকারী), তাঁহাকে আপ্রায় করিবেন। আবার, তুলাশীল রাজাদিগের মধ্যে যে রাজার অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গ নিজ রাজার প্রতি প্রতিস্থান্যুক্ত আছেন তাঁহাকে (আপ্রায় করিবেন); অথবা, বে রাজার অপ্রায়ে হিত হইয়া (তিনি) নিজকে উদ্ধার করিতে পারিবেন তাঁহাকে (আপ্রায় করিবেন); অথবা, বাঁহার দহিত নিজের পূর্বপূক্ষণণধারা অস্থ্যন্ত (বিবাহাদিবশতঃ) গতি বা ব্যবহার ছিল, বা অস্তপ্রকার অস্তরক সম্বন্ধ ছিল তাঁহাকে (আপ্রায় করিবেন); অথবা, বাঁহার কাছে বছসংখ্যক শক্তিমান্ মিত্ত আছেন তাঁহাকে (আপ্রায় করিবেন)।

ষিনি বাঁহার প্রিয়—এই উভরের মধ্যে কোনু জন কোনু জনের প্রিয় ছয়েন না ? ( অর্থাৎ গুইজনই পরস্পারের প্রিয় । ) ( এই অবস্থায় ) যিনি বাঁহার প্রিয়, ডিনি উঁ(হারই আঞ্রয় পইবেন—এই প্রকার আশ্রয়র ডিই প্রশস্ত ॥ ১ ॥

কোটিশীর অর্থশাল্পে যাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে সংশ্রয়রন্তি-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১০০ অধ্যায় ) সমাও।

## তৃতীয় অধ্যায়

১০১ম-১০২ম প্রকরণ—সম, হীন ও অধিকের গুণাভিনিবেশ এবং হীনের সহিত সন্ধি

নিজের শক্তি অপেক্ষা করিয়া বিজিপীর যাড্গুণোর প্রয়োগ করিবেন। সম (সমশক্তিনিজিবিশিষ্ট) ও জায়োন্ (অর্থাৎ অধিকশক্তিনিজিযুক্ত) রাজার সহিত তিনি বিপ্রান্ত করিবেন। হীন (হীনশক্তিনিজিযুক্ত) রাজার সহিত তিনি বিপ্রাহ্ত করিবেন। কারণ, যিনি (নিজে হীন হইয়া) জায়ান্ বা অধিকশক্তিনিজিবিশিষ্ট রাজার সহিত বিপ্রহে ব্যাপ্ত হয়েন, তাহার সেই যুদ্ধ পদাতির

সহিত হস্তীর বুদ্ধের স্থায় নাশের হেতৃ হইয়া দাঁড়ার। আর সমশক্তি বিভিন্ধীর রাজা যদি সমশক্তি অক্স রাজার সহিত যুদ্ধে প্রায়ন্ত হয়েন, তাহা হইলে সেই যুদ্ধ কাচা পাত্র কাচা পাত্রের সহিত আহত হইলে যেমন উভয়ের নাশ ঘটে, তেমন উভয়েই নাশপ্রাপ্ত হয়েন। আবার অধিকশক্তি বিভিন্ধীর রাজা যদি হীনশক্তি অক্স রাজার সহিত বিগ্রহে প্রবৃত্ত হয়েন, তাহা হইলে পাধাণের সহিত ক্ষের সংঘর্ব হইলে যেমন ক্ষেই ভালিয়া যায়, পাষাণ টিকিয়া থাকে, তেমন অধিকশক্তি রাজাই সিদ্ধিলাভ করেন।

জ্যারান্ বা অধিকশজ্বিরাজা বদি বিজিপীবুর সহিত সন্ধি ইচ্ছা না করেন, তাহা হইলে (বিজিপীবু) দত্তোপনজুরুত্ত ( ১২ অধিকরণে ১৫ অধ্যারে উক্ত ) প্রকরণে নিরূপিত উপার ও আবিজীবুস ( ১২ অধিকরণে ) নিরূপিত যোগের অমুষ্ঠান করিবেন।

সমশক্তি রাজা যদি তাঁহার সহিত সদ্ধি ইচ্ছা না করেন. তাছা হইলে তিনি (বিজিগীর) সেই সম রাজা যতথানি অপকার করিবেন, তিনিও ততথানি প্রত্যাপকার করিবেন। যে-হেতু তেজই সদ্ধির (মিলনের) কারণ হয়, এবং অতপ্ত লৌহ লৌহের সহিত মিলিত হয় না।

হীনশক্তি রাজা যদি সব বিষয়ে নত্রতা দেখাইয়া প্রণত থাকেন, তাহা হইলে তিনি (বিজ্ঞিনীর) তাঁহার সহিত সন্ধি করিতে পারেন। কারণ, (তাহা না হইলে )বনজাত বহিনের ভায় (সেই হীন রাজা) হংথ ও ক্লোধজনিত তেজোধারা বিজিনীরের প্রতি বিক্রম দেখাইতে পারেন। এবং (সেই কারণে সেই হীনশক্তি রাজা) রাজ্মওলের অপ্রতাহ বা কুপার বিষয় হইয়া পড়িবেন।

বিদি হীনশন্ডি বিভিগীয় অন্ন রাজার সহিত সন্ধিতে আবদ্ধ হইরা এই প্রকার দেখেন—"শক্রর অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গ অত্যন্ত লোভী, ক্ষীণ (ক্ষয়যুক্ত) এবং অপচারে (নানারূপ অকার্যো) রত ('দানমানাদিখারা অনাদৃত'—এইরূপ অহুবাদ সক্ষততর মনে হর না) হইরা প্রত্যাক্রমণ বা উচ্ছেদের ভয়ে (অথবা, শক্রকর্তৃক পুনরায় ভাঁহার বশে আনীত হইবার ভয়ে) আমার দিকে আসিতেছে না" তাহা হইকে তিনি (হীন হইকেও জাায়ান্ বা অথিকের সহিত) বিপ্রহে প্রযুক্ত হটতে পারেন।

বদি অধিকশক্তি বিজিগীর অন্ত রাজার সহিত বিগ্রহে প্রবৃত্ত হইয়া এইপ্রকার দেখেন—("শক্রর) অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গ পৃদ্ধ, দ্বীণ ও অপচাররত ('অপচরিত' শক্ষারা হুইচরিত্র অর্থও গৃহীত হইতে পারে ) হইয়া, অথবা তাহারা বুদ্ধে উদ্বিধ হইরাও আমার দিকে আসিতেছে না"—তাহা হইলে তিনি (অধিকশক্তি হইলেও হীনশক্তি রাজার সহিত) সন্ধি করিবেন। অথবা, (তাঁহাদের অর্থাৎ অমাত্যাদির) বিগ্রহের উদেগ শমিত করিবেন। অথবা, যদি তিনি দেখেন "আমার উপর ও শক্তর উপর একসময়েই ব্যসন উপদ্বিত হইয়াছে; কিন্তু, আমার ব্যসন বা বিশতি গুরুতর এবং শক্তর ব্যসন লঘুতর, স্তরাং শক্ত মহজেই নিজের বাসনের প্রতীকার করিয়া আমাকে আক্রমণ করিবে"—তাহা হইলে তিনি অধিকশক্তি হইলেও (হীনশক্তি শক্তর সহিত) সন্ধি করিবেন।

যদি অধিকশক্তি হইয়াও বিজিগীরে এই প্রকার বুঝেন বে, শত্রুর সহিত সদ্ধি কিন্তা বিগ্রাহ করিয়া শত্রুর অপচয় ও নিজের উপচয় কোনটাই সন্থাবিত হইবে না, তাহা হইলে তিনি আসন পরিগ্রাহ করিয়া অবস্থান করিবেন।

যদি হীনশক্তি হইয়াও বিজিগীয়ু এই প্রকার দেখেন যে, শক্তর ব্যুদন বা বিপত্তির প্রতীকারের সম্ভাবনা নাই, তাহা হইলে তিনি অভিযানে প্রবৃত্ত হইতে পারেন।

বদি অধিকশক্তি হইয়াও বিজিপীয়ু নিজের বাসন বা বিপত্তি প্রতীকার্য্য নছে এবং ইছা সমীপগত হইয়াছে – এইরূপ মনে করেন, ভাষা হইলে তিনি সংশ্রদ্ধ অবলয়ন করিবেন।

যদি অধিকশক্তি হইয়াও বিচ্ছিপীয়ু এইরূপ মর্নে করেন যে, এক রাজার সহিত দদ্ধিদ্বারা নিজ কার্যানিদ্ধি ও অন্ত রাজার মহিত বিগ্রহদ্বারা নিজ কার্যা-নিদ্ধি হইবে, তাহা হইলে তিনি দ্বৈধীতাব অবলম্বন করিবেন।

(প্রথম প্রকরণ সমাপ্ত ছইল।) এইভাবে সকল সমশস্কি রাজার পক্ষে ছয়গুণের উপযোগ বা প্রয়োগ নিরূপিত হইল। কিন্তু, তন্মধ্যে ( হীনের সম্বন্ধে ) কিছু কিছু বিশেষের কথা উপ্ত হইতেছে, যথা—

বলবান্ রাজা সৈন্তচক্র লইয়া আক্রমণ করিলে, নির্বল রাজা শীরই ধন, সেনা, আত্মা (নিজ) ও ভূমি-সমর্পণপূর্বক সন্ধি করিয়া ( তাঁহার নিকট ) উপনত ( সমীপে আনত ) হইবেন । ১॥

বলবান্ রাজাছার। নির্দিষ্ট সংখার দেনা ও ( নিজ্পক্তি বিবেচন! করিরা ) ধন লইরা, (সেই নির্বলে রাজা) স্বয়ং ওৎসমীপে উপস্থিত হইরা তাঁছার সেবারত হইবেন। এই প্রকার সন্ধি আত্মানিষ-সন্ধি-নামে পরিজ্ঞাত হর ( অর্থাৎ অ্বল রাজা নিজকে আমিবরূপে অর্থাৎ বলবানের ভোগারূপে ব্যবহার করিতে স্বীকৃত থাকেন ) ॥ ২॥

সেনাপতি ও কুমারকে শক্রর নিকট উপস্থিত ছইরা তৎসেবার নিবৃক্ত হইতে দিরা ( অবল রাজা দবলের সহিত ) বে দন্ধি করেন, তাহাকে পুরুষান্তর-ক্ষ্মির বলা হর ( অর্থাৎ সেনাপতি ও কুমারক্ষণ পুরুষবিশেবের অর্থাদারা বিহিত বলিরা ইহার এই নাম )। অবল রাজা নিজকে অর্থাণ করেন না বলিরা এই সন্ধির অপর নাম আত্মান্তর্ভকাল-সন্ধি ॥ ৩॥

শেক্তর কার্য্যাধনের জন্ত ) অবল রাজা স্বয়ং একাকী কোন স্থানে রাইবেন, অথবা তাঁহার দৈন্ত যাইবে এই চুজিতে ক্রিয়মাণ সন্ধিকে অদৃষ্টপুরুষন-সন্ধিবলা হয় (অর্থাৎ যে দন্ধিতে শক্রদেবার্থ কোন পুরুষকে স্বয়ং উপস্থিত হইতে ইয়না)। সেনাসুধ্য ও রাজা স্বয়ং এই সন্ধিতে রক্ষা পাইয়া যান বলিয়া ইহার অপর নাম দণ্ডমুখ্যাত্মরক্ষণ-সন্ধি॥ ৪॥

উপরি উক্ত পূর্বর হুইটি সন্ধিতে ( অর্থাৎ 'আআমিষ' ও 'পুরুষান্তর'-সন্ধিতে ) অবশ রাজা, ( উভয়পক্ষের ) মুখ্য বাক্তিদিগের কন্তাগণের সহিত বিখাদার্থ বিবাহবন্ধন ব্যবস্থা করিবেন, কিন্তু শেষ সন্ধিতে ( অর্থাৎ 'অদৃষ্টপুরুষ'-সন্ধিতে ) তিনি পুঢ়ভাবে অরিকে বশে আনিবেন। এই তিন প্রকার সন্ধিই দেশ্রোপনত-সন্ধি নামে পরিচিত॥ ৫॥

ষে সন্ধিতে হতাবশিষ্ট অমাত্যাদি প্রকৃতিকে বলবান্ শক্তর হন্ত হইতে কোশদানের চ্জিতে পরিমোচন কর। হর, তাহার নাম পরিফের-সন্ধি, এবং সেই সন্ধিই বদি অবলের অনায়ানে বহুবারে স্কন্ধে স্কন্ধে ( অর্থাৎ কিন্তিতে কিন্তিতে) অর্থ দেওয়ার চ্জিতে সম্পাদিত হয়, তাহা হইলে এই পরিক্রের-সন্ধিই তথন উপগ্রহ-সন্ধি নামে জ্ঞাত হইবে। এবং এই উপগ্রহ-সন্ধিতে যদি দের ধন অমুক দেশে ও অমুক কালে দেওয়া হইবে বলিয়া নিয়মিত থাকে, তাহা হুইলে এই উপগ্রহ-সন্ধিব নাম হয় অভ্যয়-সন্ধিন ৪৬-১।

স্থপূর্ধক নিয়মিত সময়ে কোশদানের চুক্তিতে অর্থাৎ সহনীয় দানের চুক্তিতে সম্পাদিত বলিয়া, এবং উত্তরকালে ইহা কন্তাদান-জনিত সদ্ধির অপেক্ষায় বেশী প্রশাস্ত বলিয়া, এই দন্ধির নাম স্থবর্গ-সন্ধিও হইয়া থাকে, কারণ, এই সন্ধিতে বিশ্বাসবশতঃ (শত্রু ও বিজ্ঞিনীয়ু) উভয়ের মধ্যে, স্থবর্গে স্থবর্গে মিপনের স্তায় একীস্তাব সম্ভাবিত হইতে পারে ॥ ৮॥

ইহার বিপরীত দন্ধিকে ( অর্থাৎ বে দন্ধিতে সমস্ত ধন তৎক্ষণাৎ দের বলির। চুক্তি করা থাকে তাহাকে ) কপাল-সন্ধি বলা হয়। তৎক্ষণাৎ অতিমাত্র ধন-গ্রন্থাধে চুঠ বলিয়া শাল্পে এই সন্ধি উপাদের বলিরা কথিত হয় না। (উপরি ব্ৰিত প্রিক্তরাদি চারিপ্রকার সন্ধির মধ্যে ) প্রথম প্রইটিতে ( অর্থাং 'পরিক্তর' ও 'উপগ্রহ'-সন্ধিতে ) রাজা কুপ্য ( অর্থাং বস্ত্রাদি অসার বস্তু ), অথবা বিষ্ফুক্ত হন্তী ও অর্থ দিবেন ( অর্থাং বিষ্যোগে যে হন্তী ও অর্থ অক্সকালের মধ্যেই মারা ধাইবে )। আবার ভূতীয় সন্ধিতে অর্থাং 'অত্যর বা স্থবর্গ-সন্ধিতে' তিনি দের ধনের অর্ধটা দিবেন এবং বলিবেন যে, তাঁহার সর্ব্বপ্রকার কর্মের কর উপস্থিত হইরাছে ( অর্থাং সেইজন্ত ধনাগম কম হয় )। চতুর্থ সন্ধিতে ( অর্থাং কপালস্কিতে ) তিনি ( মধ্যম বা উদাসীনকে আশ্রম করিয়া ) 'দেই দিতেছি' বলিয়া কাল কাটাইয়া অবস্থান করিবেন। কোশ দিয়া সম্পাদিত হয় বলিয়া এই চারি প্রকার সন্ধিতে কোশেশিসক্ত-সন্ধি বলা হয়। ১-১০ ৪

দেশ ও অমাত্যাদির প্রকৃতি-রক্ষার জন্ত ভূমির (জনপদের) একাংশ দানপূর্মক কৃত সন্ধির নাম আংশিষ্ট-সন্ধি। এই দন্ধি খুব ইট, যদি প্রদন্ত ভূমিথতে গৃঢ়পুরুব ও চৌরাদিদ্বারা উপভাত বা উপত্তব উৎপাদন করা সন্তবপর ইয়
(অর্থাৎ তাহা হইলেই প্রদন্ত দেশভাগ পুনরায় নিজের আরম্ভ হইবার সন্তাবনা
থাকে) ॥ ১১ ॥

মূল (রাজধানী) বর্জন করিয়া, যে বে ভূমি হইতে দব দারপ্রতা গৃহীত হইয়াছে দেই দেই ভূমি শক্রকে দিয়া দদ্ধি করিলে দেই দদ্ধিকে উ**দ্দিয়-সন্ধি**ন বলা হয়। এই দব ভূমিতে শক্রর বাদন উৎপন্ন হইবে বলিয়া (অতএব, ইছা ফিরিয়া পাইবার আশার) প্রতীক্ষা করিতে পারিলে এই দদ্ধি উল্লিত হইতে পারে॥ ১২॥

কোনও ভূমিতে উৎপদ্ধ (শস্যাদি) ফলের দানপূর্ব্বক যদি দেই ভূমি ছাড়াইর। লওরার চুক্তিতে সন্ধিকরা হয়, তাহা হইলে দেই সন্ধির নাম হয় অবক্রশ্ব-সন্ধি। কিন্তু যে সন্ধিতে ভূমি হইতে উৎপন্ন ফলাদির দান ছাড়াও অন্ত অতিরিক্ত বস্ত দেওরার চুক্তি থাকে—সেই সন্ধির নাম হয় পরদুষণ-সন্ধি। ১৩ ।

(পূর্ব্বোক্ত চারিপ্রকার সন্ধির মধ্যে) প্রথম গুইটি সন্ধি ( অর্থাৎ 'আদিষ্ট' ও 'উচ্ছিন্ন'-সন্ধি ) অবলম্বন করিয়। রাজা ( শত্রুর ব্যসনের ) প্রতীক্ষা করিয়। থাকিবেন এবং শেষের গুইটি সন্ধি (অর্থাৎ 'অবক্রয়' ও 'পরদ্বণ'-সন্ধি) অবলম্বন করিয়া, ভূমির ফল নিজে রাধিয়া আবলীয়ন ( ১২শ ) অধিকরণে উক্ত উপার-শৃহ্বারা শক্তর প্রতীকার করিবেন। ভূমিদান-বিষয়ক বলিয়া এই চারিপ্রকার সন্ধিকে দেশোপনত-সন্ধি বলা হয়॥১৪॥

এই ভাবে নিরূপিত এই ত্রিবিধ ( দণ্ডোপনত, কোশোপনত ও দেশোপনত )

होन-निक व्यवनीश्रान् ( निर्द्धन ) द्राष्ट्रा व्यकार्या, तम् । ७ नमञ् विद्यवना कदिशः व्यवन्त्रन कतिद्रितः । ১৫।

কৌটিলীয় অর্থান্তে বাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে সম, হীন ও অধিকের গুণাভিনিবেশ এবং হীনসন্ধি-নামক তৃতীয় অধ্যায় (আদি ছইতে ১০১ অধ্যায়) সমাপ্ত।

## চতুৰ্থ অধ্যায়

১০৬১০৭ প্রকরণ--বিগ্রাহ্ন করিয়া আসন, সন্ধি করিয়া আসন, বিগ্রাহ করিয়া যান, সন্ধি করিয়া যান ও একত্রিত হাইয়া প্রযাগ

(পূর্বাচার্য্যাণ) ব্যাধ্যা করিয়াছেন বে 'আসন' ও 'যান'—সন্ধি ও বিগ্রহেই অস্তর্ভুক্ত হইবে। 'হান', 'আসন' ও 'উপেক্ষণ'— এই শব্দ তিনটি আসনের পর্যায়বাচী শব্দ।

কিন্তু, ইহাতে যাহা বিশেষ তাহা বলা হইতেছে, যথা— (আসনরূপ) গুণের এক-দেশ বা অবরববিশেষকে 'হান' বলা হয় (অর্থাৎ শক্রর সহিত বিজিপীরুর সমান শক্তির অবহার নাম 'আসন', সেই শক্তির একদেশ (অল্লতা) হইলে, ইহার নাম হয় 'হান' এবং এই অবহার শক্র কর্ত্তক বিহিত অপকারের প্রত্যপকারবার। প্রতীকারের সামর্থা থাকে না)। নিজের বৃদ্ধির জন্ত এই গুণ অবলম্বিত হইলে ইহার নাম 'আসন'। উপায়গুলির প্রয়োগ না করার বা অল্প প্রয়োগ করার নাম 'উপেক্ষণ'।

সন্ধির ইচ্ছুক অরি ও বিজিসীর যদি পরস্পারের অপকারে অসমর্থ থাকেন, তাহা হাইলে তাঁহার। (অধিকশন্তিসম্পন্ন হাইলে) বিগ্রাহ করিয়া আসন অবলয়ন করিবেন, কিংবা (অক্সশস্তিসম্পন্ন হাইলে) সন্ধি করিয়া আসন অবলয়ন করিবেন।

অধবা, বিজিপীর যথন দেখিবেন যে, তিনি নিজের সৈন্তথারা বা মিত্রের বা আটবিকের সৈন্তথারা সমশক্তি বা অধিকশক্তি শক্তর কর্শনে সমর্থ হইবেন, তথন তিনি বাজ (অর্থাৎ জনপদগত)ও আভ্যন্তর (অর্থাৎ ফুর্গাদিগত) কৃত্যপক্ষকে (অর্থাৎ ক্ষেপ্রভীতাদিদিগকে) বর্জিত বা শমিত করিয়া, বিপ্রহ করিয়া 'আসন' অবস্থন করিবেন।

অথবা, যথন তিনি বেধিবেন যে, তাঁহার অমাত্যাদি প্রাকৃতিবর্গ উৎসাহপূর্ণ,
ঐকমত্যপূর্বক কার্যাকারী ও র্জিযুক্ত হইয়। অকর্মসমূহ অব্যাহতভাবে অক্সান করিবেন এবং শক্রর কর্মসমূহ নষ্ট করিবেন, তখন তিনি বিগ্রহ করিয়। আসন অবলয়ন করিবেন।

(আরও কি কি অবস্থায় বিজিগীয়ু বিগ্রহ করিয়া আসন অবলয়ন করিবেন जारा वना रहेराज्य ।) अथवा, विक्रितीय यथन मिथियन, "मञ्जूत अमाजामि প্রকৃতিবর্গ ছইচরিত্র (বা তিরস্কৃত বা অনাদৃত), (ছুর্ভিক্ষাদির দরুন) ক্ষপ্রাপ্ত, পুরু ও স্বচক্র ( নিজ সেনা ), চৌর ও আটবিকবারা ব্যথিত হইরা স্বরং বা মদীয় উপবাপের ফলে আমার (বিজিগীযুর) নিকট উপস্থিত হইবেন; অথবা, আমার বার্ত্তা ( কৃষি, পাল্ডপাল্য ও বণিজ্ঞা ) সম্পদ্যুক্ত এবং শক্রর বার্ত্তা বিপদ্যুক্ত এবং (সেই কারণে) তাঁহার অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গ ছতিকে উপহত হইরা আমাকেই আশ্রর করিবেন; (কিংবা) আমার বার্তা বিপদ্যুক্ত ও শত্তর বাৰ্ত্তা সম্পাদ্যুক্ত (তথাপি) আমার প্রকৃতিবর্গ ভাঁছার নিকট ঘাইবেন না এবং বিগ্রাহ করিয়া আমি ভাঁহার (শত্রুর) ধান্ত, পশু ও হিরণ্য অপহরণ করিতে পারিব; অথবা, শত্রুর দেশে জাত পণ্যনমূহ ( আমার দেশে আসিলে ) আমার দেশের পণ্যসমূহের (বিক্রান্তর) উপহাত বা হানি উৎপাদন করিবে বলিয়া আমি খদেশ হইতে দেগুলিকে নিবৰ্ত্তিত করিতে পারিব ( অর্থাৎ খদেশে প্রবেশ করিতে দিব না ) ; অথবা, ( শব্দ আমার সৃহিত) বিগ্রহে ব্যাপত হইলে, শব্দর বণিকৃপৰ হইতে আমার নিকটই সারবন্ধ ( অর্থাৎ হন্তী, অব প্রভৃতি মূল্যবান্ দ্রবাসমূহ ) আসিবে, ভাঁহার ( শক্রর ) নিকট নহে ; অথবা, আমার সহিত যুদ্ধে ব্যাপুড হইরা শত্রু আরু দুরা অমিত্র ও আটবিকদিগের নিগ্রহ করিতে পারিবে নী; অথবা শত্রু ভাহাদের ( দৃদ্ধাদির ) দহিতই বিগ্রহ করিতে বাধ্য হইবে ; (কিংবা) আমার মিত্রভাবী ( অর্থাৎ সম্পদ্বিপদের মিত্র—এই অধিকরণের ১ম অধারে বণিত ) যিত্রের প্রতি আক্রমণার্থ প্রযাণ করিয়া, শক্র খুব অল্প সময়ের মধ্যেই অল্ল ক্ষর ( নৈক্তাদির ক্ষয় ) ও ব্যয় (অর্থের ব্যয়) করিয়া মহানু ব্যর্থ লাভ করিবে ( কিন্তু, আমি এই অভিপ্রয়াণ রোধ করিতে পারিব ); অথবা, কোনও গুণমুক্ত ও উপাদের ভূমির জন্ত সেই দিকে দর্ব্ব সৈত দইরা, আমাকে অবজ্ঞা করিয়া, শত্রু বেপ্রকারে অভিযানে অঞ্সর না হইতে পারে সেই ব্যবস্থা আমি করিতে শারিব"—তথন তিনি শত্রুর বৃদ্ধিবিঘাত ও নিজের প্রতাপ প্রবর্শনের জঞ বিগ্রাহ্ন করিয়া আসন অবলয়ন করিবেন।

বে-হেতু ( সর্ব্ধ সৈন্ত শইয়া বাতব্যের প্রতি অভিপ্রয়াণে উদ্ধত শত্রুই প্রতি বিগ্রহ করিয়া আসন অন্তর্গ্রন করিলে ) সেই শত্রু ( কুপিত হইয়া বাতব্য শত্রুহ দিক হইতে ) প্রত্যাব্ত হইয়া তাঁহাকেই ( বিজ্ঞিগীয়ুকেই ) গ্রাস করিতে পারে ( স্নতরাং বিগ্রহ করিয়া শাসন অবলম্বন করা উচিত নহে )—ইহাই কোটিল্যের আচার্য্য মনে করিতেন।

কিন্ধ, কোটিল্য এই মত স্বীকার করেন না। ( তাঁহার মতে এই প্রকার শক্ত প্রত্যারত হইয়।) বাদনহীন বিজিগীযুর কিছু কর্শন ( অর্থাৎ কষ্ট প্রদান ) করিতে পারিবেন মাত্র। কিন্ত, ( বাধাপ্রাপ্ত না হইলে সেই শক্ত ) তাঁহার নিজ্
যাতব্যের রুজিয়ারা নিজে রুজ বা বলবন্তর হইয়। বিজিগীযুর উচ্ছেদ্সাধন করিতে পারেন।

এইভাবে শক্রর যাতবা ( আক্রমণের বিষয়ীভূত ) রাজা অবিনষ্ট থাকিয়া (আআশকারী) বিজিগীবুকে দাহায্য প্রদান করিতে পারিবেন। অতএব. দর্ববিদ্যা বান আরম্ভকারী শক্রর প্রতি বিগ্রহপূর্বক আদন অবলয়ন করাই ভাহার (বিজিগীবুর) প্রয়োজন।

বিগ্রহ করিয়া আসন অবলম্বনের খে-দব হেতু উক্ত হইয়াছে, তাহার বৈপরীত্য দর্শন করিলে, বিজিগীরু সন্ধি করিয়া আসন অবলম্বন করিবেন।

বিগ্রহ করিয়া আসন অবলম্বনের হেড্ছারা নিজ শক্তি উপচিত করিয়া, বিজ্ঞিগীরু শত্রুর সহিত বিগ্রহ করিয়া তাঁহার প্রতি যানপ্রবৃত্ত হইবেন, কিন্তু, যে শত্রু অন্ত যাতবোর প্রতি সম্পূর্ণ সেনা লইয়া আক্রমণার্থ অগ্রসর হইয়াছেন তাঁহার প্রতি বিগ্রহ করিয়া যান অবলম্বন করিবেন না ( অর্থাৎ তাঁহার প্রতি পূর্বোক্ত ভায়ে বিগ্রহ করিয়া আসন অবলম্বন করিবেন )।

অথবা বিজিগীর যথন দেখিবেন—"শক্ত বাসনমুক্ত হইয়াছেন; অথবা, জাঁহার আনাত্যাদি প্রকৃতির বাসন অবশিষ্ট প্রকৃতিগণদ্বারা প্রতীকারের অতীত হইয়াছে; অথবা, ভাঁহার প্রকৃতিরা আপন সৈন্তদ্বারা পীড়িত হইয়া তাঁহার প্রতি বিরক্ত হইয়া গিয়াছে এবং (সেই জন্ত) ইহারা কটপ্রাপ্ত হওয়ায় উৎসাহহীন ও পরশার ভিন্ন হইয়া পোডের বশবর্তী হইতে পারিবে; (এবং) শক্ত আয়ি, জন, ব্যাধি, মরক ও ছভিক্ষের জন্ত নিজের বাহন, (কর্মকর) পুরুষ ও কোবের রক্ষাবিধানসহক্ষে ক্রীণ হইয়া পড়িয়াছেন"—তথন তিনি বিত্রাহ করিয়া যানের অবশ্রুন করিবেন।

অধবা, বিজিগীর যধন দেখিবেন— "আমার (অগ্রবর্জী ) মিত্র ও ( পশ্চাঘডী

মিত্ররূপী ) আক্রন্দ উভয়েই শ্র, রন্ধ ও অহ্বরন্ধ প্রকৃতিহারা মৃক্ত আছেন, এবং শক্র তদ্বিপরীত-প্রকৃতিযুক্ত; এবং শক্র প্রকারে আমার পার্ফিগ্রাছ ও আসারও তন্ত্রপ বিপরীত প্রকৃতিযুক্ত; এবং আমি আমার মিত্রহারা আসারকে ও আক্রন্দহার। পার্ফিগ্রাহকে বিগৃহীত করিয়া (যাতবার প্রতি) যানে প্রবৃত্ত হইতে পারিবেশ—তথন তিনি বিগ্রহত করিয়া যানের অবলম্বন করিবেন।

অথবা, বিজিগীয়ু যখন দেখিবেন যে, অল্পকালের মধ্যেই তিনি কোনও ধল একাকীই সিদ্ধ করিতে পারিবেন, তখন তিনি পার্ফিগ্রান্থ আসারের সহিত বিগ্রহ করিয়া (যাতবার প্রতি) যান অবলম্বন করিবেন। ইহার বিপরীত হইলে (অর্থাৎ উপরি উক্ত বিগ্রহ করিয়া যান অবলম্বনের হেতুসমূহ বর্ত্তমান না বাকিলে) তিনি সদ্ধি করিয়া যান অবলম্বন করিবেন।

অথবা, বিজিগীর যথন দেখিবেন—"আমার পক্ষে একাকী (অসহার হইয়) যান অবলখন করা সম্ভবপর নহে, অবচ যান অবলখন করাও প্রয়োজনীয়" তথন তিনি সমশক্তি, হীনশক্তি ও অধিকশক্তি রাজগণকে সমবেত করিয়া তাঁহাদের সহিত একত্র মিলিত হইয়া যানে প্রারুত্ত হইবেন। বদি কেবল একদেশে যানের প্রয়োজন হয়, তাহা হইলে তাঁহাদের সহিত অংশ বিভাগ করিয়া এবং অনেক দেশে যানের প্রয়োজন হইলে অংশ নির্দিষ্ট না করিয়াই যানে প্রারুত্ত হইবেন। তাঁহাদের মধ্যে সমবায় বা একত্র মিলন না বটিলে (অর্থাৎ তাঁহাদের মধ্যে কোন রাজা সমবায় বা একত্র মিলন না বটিলে (অর্থাৎ তাঁহাদের মধ্যে কোন রাজা সমবায় বা একত্র মিলন না বটিলে হইতে তিনি দেয় সেনাংশ যাচনা করিয়া লইবেন। অথবা, তিনি একত্র হইয়া অভিগমনের চুক্তিতে (অর্থাৎ তুমি একত্রযোগে এখন আমার সাহায্য করিলে, অবসর উপস্থিত হইলে আমিও তোমার তেমন সাহায্য করিব—এইয়প চুক্তিতে) আবদ্ধ হইবেন। লাভ এব পরিজ্ঞাত হইলে অংশ (পূর্বেই) নির্দিষ্ট করিয়া এবং ইছা অঞ্জব পরিজ্ঞাত হইলে, (পরে) যাহাই লাভ হইবে তাহার অংশ নির্দিষ্ট করিয়া তিনি চুক্তিতে আবদ্ধ হইবেন।

( সকল রাজা মিলিত হইরা যান অবলন্ধন করিলে যে ধনাদি লাভ হইবে, তাহার বিভাগের নিরূপণ করা হইতেছে।) ( সহায়ার্থ প্রদন্ত ) সেনার বছত্ব ও অরত্ব অনুসারে লাভাংশ নির্দ্ধারণ করা—প্রথম পক্ষ। কোন্ রাজা কতথানি প্রায়া অবলন্ধন করিয়াছেন তদস্পারে তাঁহার লাভাংশের করানা করা উভম পক্ষ বলিরা পরিজ্ঞাত। অথবা, যিনি বাহা লুঠন করিয়া লাইবেন ভাহাই তাঁহার লাভাংশ হইবে এইরূপ কর্মা করাও এক পক্ষ। অথবা, অভিধানসময়ে

প্ররোজনীয় ধনসখলে বিনি যত ধন ব্যায়ার্থ প্রক্ষিত বা নিয়েজিত করিবেন তদহুসারে তাঁহার লাভাংশ কল্পনা করাও একটি পক্ষ বলিয়া বিবেচিত হয় । ১। কোটিলীয় অর্থশাল্রে বাভ্গুণা-নামক সপ্তম অধিকরণে, বিগ্রাহ করিয়া আসন, সন্ধি করিয়া আসন, বিগ্রাহ করিয়া যান, সন্ধি করিয়া যান ও একজিত হইয়া প্রযাণ-নামক চতুর্থ অধ্যায় (আদি হইতে ১০২ অধ্যায়) সমাপ্ত।

#### পঞ্চম অধ্যায়

১০৮-১১০—যাতব্য ও অমিত্রের আক্রমণবিষয়ক সম্প্রধারণ ; প্রকৃতিবর্গের ক্ষয়, লোভ ও বিরাগের হেতু ; সমবায়বদ্ধ রাজগণের বিচার

বাতব্য ও অমিত্রের উপর আপত্তিত দামস্তক্ষনিত বাসন তুল্য হইলে, যাতব্য ( অর্থাৎ অরিসম্পদ্যুক্ত বাসনী রাজা ) কিংবা অমিত্রের প্রতি অভিযান করণীয় এই প্রশ্ন উঠিলে, অমিত্রের প্রতিই অভিযান করিতে হইবে—ইহাই উত্তর হইবে। তাঁহাকে ( অমিত্রকে ) বশে আনিতে পারিলে, ( বিজ্ঞিগীয়ু ) যাতবাের প্রতি যান অবলম্বন করিবেন। কারণ, অমিত্রের দাধনবিষয়ে যাতবা রাজা ( বিজ্ঞিগীয়ুকে ) সাহাযা প্রদান করিতে পারেন; ( কিল্ক, ) বাতবাের দাধনবিষয়ে অমিত্র রাজা তাঁহার দাহাযা প্রদান করিবেন না ( যে-হেড্ অমিত্র বিজ্ঞিপীয়ুর নিতঃ অপকারী )।

শুক্রব্যসন্মৃত্য যাত্র্যের প্রতি কিংবা লঘুর্যসন্মৃত্য অমিত্রের প্রতি অভিযান বিধের । তদীয় আচার্ট্রের মতে, গুক্রব্যসন্মৃত্য বাতর্যের প্রতি প্রথমতঃ আক্রমণ করা উচিত, কারণ, তাঁহাকে সাধিত করা স্কর । কিন্তু, কেইটিলার এই মত পোষণ করেন না ; তাঁহার মতে লঘুর্যসন্মৃত্য হইলেও অমিত্রের প্রতি অভিযান প্রথমতঃ কর্মনীয় । কারণ, অমিত্র অভিমৃত্য বা আক্রান্ত হইলে, তাঁহার বাসন লখু হইলেও ইহা কটে প্রতিকার্য্য হইবে । ইহা সতা কথা বে, যাত্রের বাসন গুক্র হইলেও (আক্রমণের পরে ) ইহা গুক্রত্র হইয়া লাঁড়াইবে । তথাপি লঘুর্যসন অমিত্র যদি অনভিযুক্ত বা অনাক্রান্ত থাকেন, তাহা হইলে তিনি সহজে লঘুর্যসনের প্রতীকার করিয়া যাত্রের নিকট (সহায়ভাদানার্য ) করেসর হইবন (অর্থাৎ বাতর্যের সহিত্য বিশিষ্ট্র হানি

উৎপাদন করিবেন), অথবা, তাঁহার (বিজিপীবুর) পাঞ্চি বা পশ্চাহার এছণ করিবেন।

নিরবর্ণিত তিন প্রকার বাতব্য বৃগণৎ উপস্থিত হইলে, বথা (১) স্থারপূর্বক (প্রজা-) পালনকারী, কিছ গুরুবাসনমৃক্ত প্রথম বাতব্য, (২) অস্থারপূর্বক (প্রজা-) পালনকারী, কিছ গুরুবাসনমৃক্ত দ্বিতীয় বাতব্য, (৩) এবং বাহার প্রকৃতিবর্গ বিরক্ত এমন তৃতীয় বাতব্য—উল্লেদের মধ্যে কাহার প্রতি সর্বপ্রথম বান অবলম্বন করা উচিত ? এই ক্ষেত্রে বিরক্তপ্রকৃতিযুক্ত বাতব্য অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইবে। (কারণ), স্থায়র্ভি গুরুবাসনমৃক্ত বাতব্য অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইলে, তাঁহার প্রকৃতিরা তাঁহাকে অস্থায়ুন্তি করে অর্থাৎ তাহারা প্রাণপ্রণে তাঁহার সহায়তা করে। আবার, অস্থায়র্ভি গুরুবাসনমৃক্ত বাতব্য (অভিযুক্ত হইলে) তদীর প্রকৃতিরা তাঁহাকে উপেক্ষা করে (অর্থাৎ তাঁহার প্রতি অস্থ্যাপ বা বিরাগ কোনটাই প্রদর্শন করে না)। আবার বিরক্তপ্রকৃতি বাতব্য বলবান হইলেও (অভিযুক্ত হইলে) তাঁহাকে প্রকৃতিরা উচ্ছিন্ন করে। অতএব, বিরক্তপ্রকৃতি বাতব্যের প্রতিই অভিযান করা উচিত।

বে-বাতব্যের অমাত্যাদি প্রকৃতি ( গ্রভিক্ষাদিখারা ) ক্ষরপ্রাপ্ত ও লোভী তাঁছার প্রতি, অথবা যে বাতব্যের অমাত্যাদি প্রকৃতি অপচরিত্ত (অনাদৃত বা তিরক্ষত, অথবা গ্রন্টরিত্র) তাঁছার প্রতি অভিযান আগে বিধের ? বাঁছার প্রকৃতি ক্ষীণ ও লুক তাঁছার প্রতি অভিযান করা উচিত। কারণ, প্রকৃতিবর্গ ক্ষীণ ও লোভী হইলেই অনারাদে উপজাপ বা ভেদপ্রাপ্ত হয়, অথবা, পীড়া বা কর্দনের যোগ্য হয়; কিন্তু অপচরিত প্রকৃতিবর্গ উপজাপ ও পীড়ার প্রভাবে পড়ে না, তাছারা প্রধানপুরুষদিগের স্বীকারদারাই বশীভূত হইতে পারে, —ইছা তলীয় আচার্ব্যের মত। কিন্তু, ক্রেটিলার এই মত মানেন না। কারণ (তাঁছার মতে), ক্ষীণ ও লুক্ক প্রকৃতিরা নিজ রাজার প্রতি ক্রেহ্মুক্ত থাকায়, রাজার হিতসাধনে রত থাকে, অথবা, তাছার উপজাপ বা ভেদের বিসংবাদ ঘটায়, অর্থাৎ ভেদ অজীকার করে না—কারণ, তাছারা মনে করে রাজার প্রতি অস্থ্রাণ থাকিলে, সর্বজ্গের বোগ উপন্থিত হয়। অভএব, মে বাতব্যের প্রকৃতি অপচরিত (অনাদৃত বা তিরক্ষত, অথবা গ্রন্টরিত্র) তাঁহায় প্রতিই অভিযান করা উচিত।

অন্তায়রতি বাতব্য বদি বদবান্ হয়েন ভাঁছার প্রতি, অবব। ন্তায়রতি বাতব্য বদি হর্মল হয়েন ভাঁছার প্রতি, অভিযান করা উচিত ? অন্তায়রতি বদবান্ খাতব্যের প্রতিই অভিযান বিধেয়। (কারণ,) অপ্তারর্তি বশবান্ রাজা অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইলে, উাহার প্রকৃতিবর্গ তাঁহার প্রতি অন্থপ্রহ রাখে না অর্থাৎ তাঁহার সহায়তা করে না, বরং ( প্র্গাদি হইতে ) তাঁহাকে নিকাসিত করে, অথবা তাঁহার শক্রর সহিত মিলিত হয়। কিন্তু, স্থায়র্তি প্রকৃত রাজ্য অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইলে, প্রকৃতিরা তাঁহার প্রতি অন্থপ্রহ বা সহায়তা প্রদান করে, অথবা তাঁহাকে ( প্র্গাদি হইতে ) নিকাসিত হইতে দেখিলে তাঁহার সক্ষে গছে নিজ্যাও অন্থগ্যন করে।

(বিজিগীযুর পক্ষে প্রাকৃতিবর্গের ক্ষয়, লোভ ও বিরাগের হেড় নিবারণ করা উচিত-সম্প্রতি আটটি একাষয় শ্লোকদারা তাহাই নিরূপিত হইতেছে।) নিম্নবর্ণিত কারণগুলিদারা, অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গের ক্ষম, লোভ ও ( রাজার প্রতি) বৈরাগ্য উৎপর হয়,—বধা, ( বিভাদিসম্পর ) সক্ষনগণের প্রতি অবজ্ঞ। ও অসক্ষনের প্রতি অফুগ্রহ প্রদর্শন; অফুচিত ও অধর্ণাযুক্ত হিংদাকার্য্যের প্রবর্ত্তন এবং সমুচিত ও ধর্মযুক্ত আচরণের নিবর্ত্তন; অধর্মকার্য্যের প্রতি আদক্তি ও ধর্মকার্য্যের প্রত্যাখ্যান ; অনর্থক্সযুক্ত কার্য্যের করণ ও করণীয় কর্মের প্রণাশ বা উপঘাত; (ভূত্য বেতনাদি) দেয় বস্তুর অপ্রদান ও (অন্যের নিকট হইতে উপঢ়োকনাদি ) অদেয় বস্তর (বলপূর্ব্বক) গ্রহণ ; দঙাই ব্যক্তির প্রতি দণ্ডের অপ্রদান ও দণ্ডের অযোগ্য ব্যক্তির প্রতি দণ্ডপ্রদান ( "দণ্ডান্যং চওদগুলৈ:"—এইরূপ পাঠে-'দগুর্হের প্রতি উগ্রদগুপ্রদান'—এইরূপ অল্পুরাদ হটবে ); (চৌরাদি ) অগ্রাহ্ম বা ড্যাহ্ম পুরুষের স্বীকরণ ( নিছের পার্থে রক্ষণ) ও (গুলী ও পিড়পিডামছক্রমাগড় ) গ্রহণ্যোগ্য ব্যক্তিদিগের অসংগ্রহ ( অর্থাৎ দূরে রক্ষণ ); অনর্থকায়ক ( সন্ধি প্রভৃতি ) কার্য্যের সম্পাদন ও অর্থ বা ফলযুক্ত কার্য্যের বিশাভ; চৌর হইতে প্রজার অরক্ষণ ও সরং অপহরণ; পুরুষকারের ত্যাগ ও কর্মের স্মাক অকুষ্ঠানজনিত গুণের নিন্দা; প্রধান বা কর্মাধ্যকগণের উপর দোষারোপ ও ( পুরোহিতাদি) মাঞ্চ ব্যক্তিদিণের অবমাননা; (বিছাদিখারা) বৃদ্ধগুণের মধ্যে বিষমবৃত্তি ও অস্ত্য কর্ণনদ্বারা বিরোধ ঘটান; উপকারের অনিক্রয় (অর্থাৎ প্রত্যুপকারের অবিধান)ও নিত্যকরণীয় কার্ব্যের অকরণ ; এবং রাজার প্রমাদ ও আলম্বনতঃ যোগ ( অলন্তের লাভ ) ও ক্রেমের ( লভের পরিপালনের ) নাশ ( অর্থাৎ এই সমস্ত কারণদার। প্রকৃতির কর, শোভ ও বিরাগ উৎপন্ন হয় )। ১-৮।

(অমাতাদি) প্রকৃতি কীণ হইলে গোভ প্রাণ্ড হয়; লোভী হইলে

( রাজার প্রতি ) বিরাগযুক্ত হয় এবং বিরক্ত হইয়া শত্রুর সহিত মিলিত হয়, অধবা, স্বয়ং নিজ প্রভুকে হত্যা করে। ১॥

অতএব, রাজা কথনই প্রকৃতিবর্গের **ক্ষয়, লোভ ও বিরাগ্যের** ক্রেণ-গুলি উৎপাদন করিবেন না। দেগুলি উৎপন্ন হইলেও, ডৎক্ষণাৎ তিনি ইহাদের প্রতীকার করিবেন।

কীণ, সৃদ্ধ ও বিরক্ত—এই তিন প্রকার প্রকৃতির মধ্যে পূর্বটির অপেক্ষার পরটি অধিক গুরুতর। কারণ, কীণ প্রকৃতিবর্গ পীড়া ও উচ্ছেদের তয়ে তৎক্ষণাৎ সদ্ধি বা বিগ্রাহ বা ( ফুর্গাদি হইতে ) নিক্রমণ স্বীকার করিয়া লহে। লৃদ্ধ প্রকৃতিবর্গ লোভের জন্ম অসম্ভাই বাকিয়া শত্রুর দ্বারা প্রযুক্ত উপদ্ধাপের বশীভূত হইতে ইচ্ছুক হয়। ( এবং ) বিরক্ত প্রকৃতিবর্গ শত্রুর আক্রমণের সঙ্গে সঙ্গে (বিজিগীয়ুর প্রতি) আক্রমণের আয়ে।জন করে।

প্রকৃতিবর্গের হিরণা (নগদ টাকা) ও ধান্তের ক্ষর ঘটিলে ইহা (হস্তাখাদি)
সকলেরই নাশক হয় এবং ইহার প্রক্তীকারও কইসাধা হয়। (কিন্তু ) (হস্তাদি)
বাহন ও পুরুষের ক্ষয় ঘটিলে, হিরণা ও ধান্তবার) ইহার প্রকীকার সহজসাধা
হয়।

লোভ ( অমাত্যাদি প্রাকৃতিসমূহের ) একটিকে আগ্রায় করিয়া ঘটে, এবং ইহার (প্রবর্ত্তন ও নিবর্ত্তন ) মুখ্যগণের অধীন ; এবং ইহা শক্রর অর্থঘার। প্রতিহত বা প্রতিকৃত হইতে পারে, কিংবা ইহা ( মুখাপুরুষণ্ণারা ) স্বয়ং গৃহীতও হইতে পারে।

( কিন্তু, ) বিরাগ প্রধানদিগের নিগ্রহদার। সাধিত বা উপশমিত হইতে পারে। কারণ, প্রধানরহিত প্রকৃতিবর্গ ( বিজিগীবুর ) বশ্ব হয় ও অঞ্চের উপজাপের বিষয়ীভূত হয় না, কিন্তু, ইহা কথনও কোন আপৎ সহিতে পারে না ( অর্থাৎ আপৎ উপন্থিত হইলে, বিজিগীবুকে ত্যাগ করিতেও পারে )। পরন্ত, ইহা প্রকৃতিমুখ্যগণদ্বারা প্রগৃহীত বা বশীক্ষত থাকিলে, শক্রর অভেন্ত হইরা বহুধা রন্ধিত হইতে পারে এবং আপৎ আপতিত হইলে তাহা সহিতে পারে।

সামবায়িকদিগের (বিজিগীবুর অন্থগমনকারী রাজাদিগের) দক্ষি ও বিগ্রহের কারণ সম্যক্ পর্যাশোচনা করিয়া, তন্মধ্যে যিনি শক্তি ও শোচবুক্ত তাঁহার শহিত মিলিত হইয়া (বিজিগীবু) অভিযানে প্রবৃত্ত হইবেন। কারণ, (সামবারিক) শক্তিশালী হইলে, ভিনি পার্ফিগ্রাহ শক্তকে নিবারিত রাখিতে ও যুক্ষাঞ্জায় (সেনাধারা) সহায়ত। প্রাদান করিতে সমর্থ হয়েন: এবং শুচি বা নিষ্পট হইলে, তিনি ( ইন্সিত কার্য্যের ) সিদ্ধিতে বা অসিদ্ধিতে প্রাব্য পথাবলম্বী হয়েন।

এই সামবায়িকদিগের মধ্যে একজন অধিকতর শক্তিশালী হইলে এবং ছইজন সমশক্তিশালী হইলে—কোন্ পক্ষের সহিত মিলিত হইয়া (বিজিপীবুর) বান অবলম্বন করা উচিত ? সমানশক্তিশালী ছইটি সামবায়িকের সঙ্গে যাত্রা করা প্রশন্ত, কারণ, অধিক শক্তিশালীর সহিত মিলিত হইয়া যাত্রা করিলে, (বিজিপীবুরে) তাঁহার ঘারা অবগৃহীত বা বলীভূত হইয়া চলিতে হয়; আর সমশক্তিশালী ছই সামবায়িকের সহিত মিলিত হইয়া যাত্রা করিলে, বিজিপীবুর পক্ষে অতিসন্ধানের বশে আধিক্য লব্ধ হইলে, উভয়ের পরম্পারের মধ্যে ভেদ উৎপাদন করা সহজ হইতে পারে। উভয়ের মধ্যে একজন যদি ছই হয়, তাহা হইলে অক্তের সহায়তায় তাঁহাকে দমিত করা, কিংবা, (দ্যাদিঘারা) ভেদ প্রয়োগ করিয়া ভাঁহাকে নিগৃহীত করা সন্তবপর হয়।

সমশক্তি একজনের দহিত, অথবা হীনশক্তি ছুইজনের সহিত মিলিও হুইয়া তাঁহার যান অবলম্বন করা উচিত ? হীনশক্তি ছুইজনের সহিত মিলিও হুইয়া যাত্রা করা উচিত, কারণ, তাহারা উভয়ে (একসময়ে একটি একটি করিয়া) ছুইটি কার্য্য করিতে পারে এবং (বিজিগীযুর) বশবর্তী বাকিতে পারে।

( অস্তান্থ রাজার। বদি বিজিগীযুর সহিত মিলিত হইয়। যাত্রা অবলয়ন করিতে চাহেন, তাহা হইলে কিরুপ কার্য্য বিধেয় হইবে সম্প্রতি ভাহার নিরূপণ করা হইতেছে।) কার্য্যসিদ্ধি হইয়া গোলে—

বদি দেখা যায় যে, অধিকশক্তিশালী রাজ্য কৃতার্থ হইরা শুচিরছিড হইরাছেন, তাহা হইলে (বিজিগীরু) কোন অপদেশে বা ছলে গুঢ়ভাবে ( তাঁহার নিকট হইতে ) চলিয়া ধাইবেন; কিন্তু, সেই রাজা শুচিশ্বভাব থাকিলে, যতদিন তিনি না ছাড়িবেন ততদিন পর্যান্ত তিনি প্রতীশা করিবেন ॥ ১০॥

(বিজ্ঞিনীরু) সত্র ( তুর্গাদি সকটপ্রদেশ ) হইতে ( 'সত্রাৎ' স্থানে 'সমাৎ' পাঠ সকতের মনে হর—সেই পাঠ ধত হইলে 'সমাজি রাজা হইতে', এইরাণ অফ্রাদ হইবে ) বঙ্গপূর্বক নিজ কলত্র ( অর্থাৎ কলত্রাদি অস্তরক পারিবারিক জন ) সরাইয়া লইয়া নিজে অপশত হইবেন । কারণ, সমশজি রাজা লয়ার্থ হইলে, তাঁহার নিকট হইতে বিশ্বস্ত বিজিনীরুরও ভয় ( অনর্থাপ্তির ভয় ) হইতে পারে। >>।

সমশক্তি বাজা শকার্থ হইয়া অধিকশক্তিশালিছবোধে বিপরীত রুবি হইয়া পড়েন। বৃদ্ধিপ্রাপ্ত রাজাকে বিষাস করিতে নাই। (কারণ,) রুদ্ধি চিতের বিকার উৎপাদন করিয়া থাকে। ১২ এ

বিশিষ্ট বা অধিকশজিশালী রাজা হইতে অল্প অংশ পাইয়াই (বিজিলীরু) তুইমূব হইয়া চলিবেন, অববা, অংশ না পাইয়াও তুইমূবে ফিরিয়া ষাইবেন। তাহার পর ভদীর অঙ্কে অর্থাৎ ভদীর রক্তে আঘাত করিয়া তিনি দ্বিগুণ অংশ হরণ করিবেন। ১৩॥

কিন্তু, স্বতন্ত্রভাবে যানকারী বিজিপীর কার্যাসিদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া সামবায়িকদিগকে ( অর্থাৎ সহায়কারী অনুগামী রাজাদিগকে ) বিদার দিবেন। তিনি নিজে অল্পাংশ লাভ করিয়া নিজকে পরাজিত মনে করিবেন। কিন্তু, তথাশি ( সামবায়িকদিগকে অল্পাংশ দিয়া ) নিজের জয় চাহিবেন না। তাহা হইলেই তিনি রাজযগুলের প্রিয় হইবেন॥ ১৪॥

কোঁটিপীর অর্থশালে বাড্গুণা-নামক সপ্তম অধিকরণে যাতব্য ও অমিত্রের আক্রমণ-বিষয়ক সম্প্রধারণ, প্রকৃতিবর্গের ক্ষয়, লোভ ও বিরাগের হেতু এবং সমবায়বদ্ধ রাজগণের বিচার-নামক পঞ্চম অধ্যায় ( আদি হইতে ১০৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## ষষ্ঠ অধ্যায়

#### ১১১-১১২ প্রকরণ—সন্ধিবন্ধ রাজধন্মেরপ্রযাণ, এবং পরিপণিত, অপরিপণিত ও অপস্তত-সন্ধি

বিজ্ঞিনীর (রাজমণ্ডলের) দিন্তীয় প্রকৃতিকে অর্থাৎ অরিপ্রকৃতিকে (বক্ষামাণ প্রকারে) বঞ্চিত করিবেন; (এক সঙ্গে বিভিন্ন দানে অভিযানার্থ) তিনি তাঁহার কোন সামস্তকে সংহিত-প্রযাপ (অন্যোগকৃত সদ্ধিপূর্বক প্রধাণ) অবলম্বন করিতে প্রমৃক্ত করিবেন (এবং বলিবেন)—"তুমি এই দিকে (তোমার বাতব্যের প্রতি) অগ্রাসর হও, এবং আমি এই দিকে (আমার বাতব্যের প্রতি) অগ্রাসর হইব। উভয়ত্ত যে লাভ হইবে তাহা আমরা উভয়ে সমান ভাগে ভাগ করিয়া লইব।"

উজরের লাভ সমান হইলে, ( সমশক্তিদ্বশতঃ ) বিজিপীর তাঁহার সলে সন্ধি

করিবেন। আর পাতে বৈষম্য ঘটিলে (অর্থাৎ বিজিপীয়ুর লাভ অধিক হইলে)
তিনি তাঁহার প্রতি বিক্রম প্রদর্শন করিবেন (অর্থাৎ তাঁহার সহিত মৃদ্ধ করিবেন)। (এই পর্যান্ত সংহিতপ্রযাণ ব্যাব্যাত হইল।)

সম্প্রতি পরিপণিত ( অর্থাৎ যাহা দেশ, কাল ও কার্যান্সরোধে ক্রিয়ন্।)
-সন্ধি ও অগরিগণিত-সন্ধির বিষয় বলা হইতেছে।

"তুমি ঐ দেশে যাও, আর আমি এই দেশে যাইব"—এইভাবে দেশবিশেষের নির্দ্দেশপূর্বক যে সন্ধি করা হয়, ইহার নাম পরিপণিডক্তেশ-সন্ধি (ইহা পরিপণিত-সন্ধির প্রথম ভেদ)।

আবার, "তুমি এতথানি সময় পর্যন্ত কার্য্য করিতে থাক, আর আমি এতথানি সময় পর্যান্ত কার্য্য করিব"—এই ভাবে সময় নিয়মিত করিয়া যে সন্ধি করা হয়, ইহার নাম প্রিপণিতকাল-সন্ধি (ইহা পরিপণিত-সন্ধির বিতীয় ভেদ)।

আবার, "তুমি এতধানি কার্য্য সমাধা কর, আরে আমি এতধানি কার্য্য সমাধা করিব"—এই ভাবে কার্য্যবিশেষ নির্দেশ করিয়া যে সন্ধি করা হয়, ইহার নাম পরিপণিতার্থ-সন্ধি (ইহা পরিপণিত-সন্ধির তৃতীয় ভেদ)।

বিজিগীর যদি বা এইরপ মনে করেন—" আমার গলে পণাবদ্ধ ) শত্রুত্ত সামস্ত এরপ দেশে যাইবেন যাহাতে গিরিহর্গ, বনহুর্গ ও নদীহুর্গ আছে, যাহা অটবী বা কাস্তারহার ব্যবহিত ( অর্থাৎ যেখানে যাইতে হইলে জকলমর স্থান পার হইরা যাইতে হয় ), বেখানে অক্তন্থান হইতে ধান্ত, পুরুষ, তৈল-মুতাদি ভারবাছ দ্রব্য ও মিত্রবল আনা কঠিন, যেখানে তুণঘান, কাঠ ও জল পাওরা যায় না, যে স্থান অপরিচিত ও দূরবর্তী, যেখানে প্রকাজন অক্তভাবাগন্ন ( অর্থাৎ স্থামিভক্ত নহে ) এবং যেখানে সৈন্তের ব্যায়ামের উপযোগী ভূমি পাওরা যায় না);—এবং আমি ইহার বিপরীত প্রকারের দেশাভিমুধে যাত্রা করিব", তাহা হইলে দেশদন্তমে এইরপ কারণবিশেষ উপন্থিত হইলেই, তিনি 'পরিপণিডদেশ'নামক সন্ধি অবলয়ন করিবেন।

আবার বিজিপীর যদি বা এইরূপ মনে করেন—"( আমার সঙ্গে পণাবন্ধ )
শক্তভূত সামস্ত এরূপ কালে কার্র্যে ব্যাপৃত হইবেন যথন অধিক বর্বা, অধিক উক্ষতা ও অধিক শীত অহুভূত হইবে, যথন অত্যন্ত ব্যাধিপ্রকোপ দেখা বাইবে, যথন আহারোপভোগের প্রব্যাদি কর্প্রাপ্ত হইবে ( অর্থাৎ মিলিবে না ), যথন ভাঁহার সৈন্তের ব্যারাম উপরুদ্ধ হইবে এবং যে কাল ক্যাগাধনে আক্রান্ত্রে কালের বিবেচনার কম বা বেশী:—এবং আমি ভদ্বিপরীত কালে কার্ব্যে ব্যাপৃত-হইব", তাহা হইলে কালদম্বন্ধে এইরূপ কারণবিশেষ উপস্থিত হইলেই, তিনি 'পরিপণিতকাল'-নামক সন্ধি অবলখন করিবেন।

আবার, বিজিপীর বদি বা এইরূপ মনে করেন—" আমার সঙ্গে পণাবদ্ধ )
শক্রভূত সামস্ত এরূপ কর্ষি করিবেন, যাহা কোন শক্র উচ্ছেদ করিতে পারিবে,
যাহা অমাতাাদি প্রকৃতিবর্গের কোপ উৎপাদন করিবে, যাহা দীর্ঘকালে সমাধা
লাভ করিবে, বাহা সাধন করিতে প্রভূত জনক্ষয় ও অর্থবায় হইবে, যাহা ক্তু ও
বাহা ভবিশ্বতে অনর্থ ঘটাইবে, বাহা সাধনসময়ে কইবিধায়ক ও অর্ধবিত্তু, যাহা
মধ্যম ও উদাসীন রাজারও বিরোধী এবং বাহা মিত্রের উপঘাত বা নাশ
ঘটাইবে;— এবং আমি তদ্বিগরীত কার্য্য সাধন করিব," তাহা হইলে কার্যাসম্বন্ধে এইরূপ কারণবিশেষ উপস্থিত হইপে, তিনি 'পরিপণিতকার্যা'-নামক সন্ধি
অবলম্বন করিবেন। এইভাবে দেশ ও কাল, কাল ও কার্যা, দেশ ও কার্য্য এবং
দেশ, কাল ও কার্য্য ইহাদের অক্যোন্ত মিশ্রণে আরও চারি প্রকার পরিপণিত'সন্ধি ধার্য্য হইতে পারে। স্কতরাং পূর্কোল্লিখিত তিন প্রকারের সহিত এ-গুলি
মৃদ্ধু হইতে পারে। স্কতরাং পূর্কোল্লিখিত তিন প্রকারের সহিত এ-গুলি
মৃদ্ধু হইলে 'পরিপণিত'-সন্ধি সপ্রবিধ হইতে পারে। এইরূপ সন্ধি করা হইলে,
বিজ্ঞিনীর প্রথমেই নিজের কর্ম্যসমূহ আরম্ভ করিয়া সেগুলিকে ফলোদয় পর্য্যস্ক

অথবা, (পানাদি-) বাসন্যুক্ত, হরা, অবমাননা ও আলস্তম্মন্বিত, জ্ঞান-রহিত শক্তকে বঞ্চনা করিতে ইচ্ছুক বিজিপীয়ু দেশ, কাল ও কার্য্যের ব্যবস্থা না করিয়া, "আমরা উভয়েই সন্ধিতে আবদ্ধ হইলাম" এই কথামাত্রহারা বিখাল উৎপাদনপূর্বক শক্তভূত গামস্তের ছিদ্র বা দোব পাইপেই ইহাতে প্রহার করিবেন। ইহাই অপারিপাণিত-সন্ধি নামে অভিহিত হয়।

এই সম্বন্ধে ইহাই কর্ত্তব্য বলিয়া (সোক্ষারা) উক্ত হইতেছে, যথা—জ্ঞানী বিজিপীর এক সামস্তকে অন্থ সামস্তের সহিত যুদ্ধে নিয়োজিত করিয়া, তদ্বতিরিক্ত অন্থ যাতব্য সামস্তের চতুদ্দিকে অবস্থিত তৎপক্ষীয়গণকে উচ্ছিন্ন করিয়া ভাঁহার ( অর্থাৎ অন্থ যাতব্য সামস্তের ) ভূমি হরণ করিবেন । ১॥

সদির চারিপ্রকার ধর্ম হইতে পারে, যথ।—'অক্তচিকীর্না', 'কুডমেবণ', 'কুডবিদ্যণ' ও 'অবশীর্ণজিয়া'। বিজ্ঞম বা বিগ্রহেরও তিনপ্রকার ধর্ম হইতে পারে, যথা—প্রকাশযুদ্ধ, কৃটযুদ্ধ ও তৃষ্ণীংগৃদ্ধ। এইভাবে সদ্ধি ও বিজ্ঞানের বিভাগে বলা হইল। কোনও রাজার দলে এই দর্বপ্রথম দন্ধি করিতে গিরা বলি (বিজিনীরু) তাঁহার (সেই রাজার) প্রতি অপ্রবন্ধ-যুক্ত দামান্তির (অর্থাৎ দানযুক্ত দাম ও দামযুক্ত দানাদির) অপ্রতীনভারা দন্ধির চেষ্টা করেন এবং নিজের বলের তুলনার সমশন্তি, হীনশন্তি ও অধিক শক্তির দহিত (কোশদণ্ডাদির দান ও গ্রহণ্ডারা) ইহার ব্যবস্থা করেন, তাহা হইলে ইহাকে অক্সেড চিকীর্যান দন্ধির্ম্ম বলা হয়। কোনও রাজার দলে দন্ধি করিয়া যদি (বিজিনীরু) প্রায় ও হিতকর আচরণ-দ্বারা, উভরতঃ অর্থাৎ অপর পক্ষের মহিত মিলিত হইয়া, দেই দন্ধির পরিপালন করেন এবং বণাক্ষিত ভাবে দন্ধিনর্তের অপ্রবর্তন করেন ও 'বাহাতে কোনও প্রকারে তিনি শক্রর ভেদে না পতিত হয়েন' দেইরূপে আত্মরকণ করেন, তাহা হইলে ইহাকে কৃতক্রেমণ-সন্ধির্মর্ম বলা হয়।

কোনও রাজার দক্ষে সন্ধি করিয়া যদি (বিজিগীরু) দ্যাদিখারা শক্রর প্রতি প্রবঞ্চনা চালাইয়া, শক্তকে দন্ধানের অযোগ্য বলিয়া প্রতিপন্ন করিয়া পূর্বকৃত দন্ধির ব্যতিক্রম বা ভক্ষ করেন, তাহা হইলে ইহাকে ক্রভবিদুষণ-সন্ধিধ্য বলাহয়।

যদি ( বিজ্ঞিপীর ) দেখেন যে, ভাঁহার কোনও ভূত্য বা মিত্র কোন দোষবশতঃ
ভাঁহার নিকট হইতে চলিয়া গিয়াছে এবং তাহার পরে যদি তিনি পুনরায়
ভাহাদের সহিত সন্ধি করেন, ভাহা হইলে ইহাকে অবশীর্ণ ক্রিন্য়া-নামক সন্ধির্ণ বলা হয়।

এই অবন্ধীর্ণজ্ঞিয়াতে গতাগত ( অর্থাৎ একবারে চলিয়া গিয়া পুনরার আগত বা মিলিত হওয়) চারিপ্রকার হইতে পারে। (১) কোন কারণে পৃথক হইয়া যাওয়া ও কোন কারণে আদিয়া পুনর্মিলন; (২) তড়িপরীতকার্যা অর্থাৎ অকারণে যাওয়া ও অকারণে পুনরাগমন; (৩) কোন কারণে যাওয়া ও অকারণে পুনরাগমন; ও (৪) তড়িপরীত কার্যা অর্থাৎ অকারণে যাওয়া ও কোন কারণবশতঃ পুনরাগমন।

নিজ প্রভূব দোষরূপ কারণবশতঃ ধনি কেছ চলিয়া ধার এবং নিজ প্রভূব (প্রসন্নতাদি) গুণরূপ কারণবশতঃ পুনরার আগমন করে; (আবার) শত্রুর গুণদর্শনবশতঃ বনি সে চলিয়া যায় এবং সেই শত্রুরই দোষদর্শনবশতঃ (প্রভূ-সন্নিধানে) কিরিয়া আসে, তাহা হইলে এইরূপ গভাগতের সহিত পুনর্কার সন্ধি করা বিধেয়।

ৰদি কেহ আপন দোবে ( স্বামীকে ত্যাগ করিয়া ) বাইয়া ও আপন দোবেই

(শক্তকে ছাড়িয়া) স্থামিসন্নিধানে পুনরার স্থাসমন করে, অথবা, স্থামী ও শক্ত—এই উভরের গুণ বিবেচনা না করিয়া পরিত্যাগপূর্বক অকারণে চলিয়া গিয়া আবার পুনরায় আগমন করে, তাহা হইলে সেই চঞ্চব্দি জনের সহিত পুনরায় স্থান উচিত নহে।

যদি কেই স্থামীর দোষে ( শক্রমমীপে ) গত, এবং নিজের দোবে শক্রর নিকট ইইতে প্রত্যাগত হয়, তাহা হইলে কায়ণবশতঃ গত ও অকায়ণবশতঃ আগত বলিয়া তাহার সম্বন্ধে এইভাবে তর্ক বা বিচার করা উচিত, যথা—"তবে কি এই লোক শক্রঘারা প্রযুক্ত হইয়া, অথবা তাহার নিজের দোষেই আমার অপকার করিতে প্রস্তুক্ত হইয়াছে, অথবা দো আমার কোন অমিত্রকে আমার শক্রম উচ্ছেদকারী বলিয়া ব্রিতে পারিয়া নিজের প্রতিঘাত বা বধ আশক্ষা করিয়া চলিয়া আসিয়াছে, অথবা আমার উচ্ছেদকামী শক্রকে ত্যাগ করিয়া (পূর্বেপরিচয়জনিত) সদয়তাবশতঃ ফিরিয়া আসিয়াছে ।" যদি (বিজিগীয়) তাহাকে কল্যাণবৃদ্ধি মনে করেন, তাহা হইলে তাহাকে সংকার দেখাইয়া নিজ সয়িধানে রাখিবেন, এবং তাহাকে অন্তথাবৃদ্ধি মনে করিলে তাহাকে দ্বে বাস করাইবেন।

যদি কেছ নিজের দোষে ( স্বপ্রাভূকে ত্যাগ করিয়) শক্রমনীপে ) গড, এবং শক্রম দোষে তাহার নিকট হইতে ( প্নরায় ) আগত হয়, তাহা হইলে অকায়ণবশতঃ গত ও কায়ণবশতঃ আগত বলিয়া তাহার সম্বন্ধে এইভাবে তর্ক বা বিচার করা উচিত, ববা—"তবে কি এইলোক এখানে আদিয়া আমার ছিদ্র বা দোষ বিস্তার করিবে, অথবা এখানে আদিয়া তাহার বাস করা উচিত মনে করে, অথবা তাহার ( কপত্রাদি পরিবারক্ষ) জন পরদেশে বাকিতে ভালবাসে না, অথবা দে আমার মিত্রগণের সহিত সন্ধি করিয়াছে, অথবা দে শক্রগণয়ায়া বিপ্রকৃত বা অপকৃত হইয়াছে, অথবা দে লোভী ও নির্ভূর শক্রকে তয় করে, অথবা শক্রম সহিত সন্ধিতে আবদ্ধ অপর কাহাকে ভয় করে ( শেষোক্ত বাকাহ্মকে এক বাকা মনে করিলে অম্বাদ এইরূপ হইবে—'অথবা শক্রর সহিত সন্ধিতে আবদ্ধ কলাগেবৃদ্ধি বা অম্বাবৃদ্ধি মনে করিয়ে) তাহাকে ভালরূপে বৃথিয়া ( অর্থাৎ কল্যাগ্রুদ্ধি বা অম্বাবৃদ্ধি মনে করিলে তাহার প্রতি সংকার দেখাইবেন ও তাহাকে অক্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে তাহার প্রতি সংকার দেখাইবেন ও তাহাকে অক্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে তাহার প্রতি সংকার দেখাইবেন ও তাহাকে অক্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে তাহার প্রতি সংকার দেখাইবেন ও তাহাকে অক্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে তাহারে প্রতি সংকার দেখাইবেন ও তাহাকে অক্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে তাহাকে দুরে বাস করাইবেন )।

স্বামী বা প্রভুর ভ্যাগবিষয়ে এইগুলিই কারণ হইতে পারে, মধা,—ভিনি বদ্ধি কৃত উপকারের স্বীকার না করেন, বা বদি তাঁহোর শক্তিবমূহের হানি বা ক্ষুর श्रुहे, यि जिनि विश्वादक अञ्चान भगावश्रद यक मृत्रा-भविवर्ख विख्यस महन করেন, অর্থাৎ তিনি বিভাকে অবহেশা করেন, যদি তিনি (কাছাকেও কিছ দেওয়ার ) আশা দিয়া ( তাহা তাহাকে না দিয়া) নির্কোদ বা ছঃখদায়ী হয়েন. विन काँद्रोद्र (नाम ( नामाजन जेनम्बर्ग जेप्निवन के ) हाकना (नवा (नव. (অববা, যদি তিনি দেশ পাভ করিবার জন্ত পোলুপ হয়েন), বদি তিনি ( ভূত্যাদির উপর ) বিখাস স্থাপন ন। করেন, এবং বদি তিনি বলবান রাজ।-দিগের দহিত বিগ্রাহ করেন ( তাহা হইলে এইগুলিই তাঁহাকে পরিত্যাগ করার কারণ হইতে পারে )। ইহাই ডদীয় **আচার্য্যের** মত। কি**ন্ত, কৌটিল্য** মনে করেন যে, ভঃ, কার্য্যের অনারস্ত ও ক্রোধ—এই তিনটিই (প্রভৃত্যাগের হেড় হইতে পারে)। গভাগতসম্বন্ধে ইহাই লক্ষ্য রাখিতে হইবে যে. যে ব্যক্তি অধম রাজার অপকার করে তাহাকে ত্যাগ করা উচিত। যে শক্রুর অপকার করে তাছার দহিত দক্ষি বিধেয় হইবে। (আর) যে উভয়ের (অর্থাৎ স্বপ্রভুর ও শক্তর ) অপকার করে তাহার বিষয় সম্যক্ পরীক্ষণীর এবং পূর্ববং ইছা তর্ক বা বিবেচনার যোগা ( অর্থাৎ নে কল্যাণবৃদ্ধি হইলে তিনি ভাহাকে রক্ষা করিবেন व्यवर व्यक्तश्रीतृषि वहेंदन ভाष्टात्क मृद्र वाम क्याहेदवस )।

কোনও রাজা সন্ধির অযোগ্য হইলেও যদি তাঁহার সহিত দন্ধি কর। (বিজ্ঞিগীযুর শক্ষে) আবেশ্যক হয়, তাহা হইলে যে কারণে সেই রাজা প্রভাব-যুক্ত, বিজ্ঞিগীয়ু সেই কারণের প্রতিবিধান বা প্রতীকার করিবেন।

পরপক্ষীয় কোনও ব্যক্তি পূর্বে বিজিগীরুর আঞ্চিত থাকিয়া পুনরায় পরপক্ষে গমনের পর বিজিগীয়ুর নিকট পুনরাগত হইলে, এইরূপ গতাগত ব্যক্তির দহিত কিরূপ নিয়মে দল্ধি হইতে পারে তদ্বিয়ে বলা হইতেছে।)

অবশীর্ণ ক্রিয়াবিধিবিধয়ে ( ক্রটিভ সদ্ধির পুনঃস্থাপনবিধয়ে), এই বলা ইইতেছে যে, শত্রুপক্ষীয় গতাগত জন বিজিগীয়ুর নিজের উপকার সাধন করিলে, ভাহাকে তিনি নিজ হইতে দুরে (ভূত্যাস্তরের অবেক্ষণে) যাবজ্জীবন গুপ্তভাবে (সাশ্রের) বাদ করাইবেন॥ ২॥

ব্যবহিত থাকিয়া শুচি বশিয়া সিদ্ধ পরিজ্ঞাত হইলে ভাহাকে (বিজিনীরু) নিজের কাছে পরিচর্ব্যাকার্য্যে ব্যাপ্ত রাখিবেন, ভাহাতে সিদ্ধ হইলে ভাহাকে দশুকারী অর্থাৎ সৈম্ভকার্য্যে ব্যাপ্ত করিবেন, অথবা অমিত্র ও আটিকির প্রতি (বিক্রম প্রদর্শনে ) নিযুক্ত করিবেন, অথবা অন্তত্ত্র প্রত্যন্ত দেশে (কোনও কার্যার্থ ) পাঠাইবেন ॥ ৩ ॥

(উপরি উক্ত কার্য্যে নিযুক্ত হইয়) সিদ্ধিলাতে অসমর্থ হইলে .তাহাকে (পরদেশে) পণাবিক্তয়ে পাঠাইবেন, এবং তাহার এই দোবের ছলেতে শক্তর সহিত তাহার দদ্ধি থাকার কারণ দেখাইয়া তাহাকে দোবী সাব্যক্ত করিয়া শক্তদারা গোপনে এই ব্যক্তি রক্ষিত হইতেছে এই বলিয়া তাহাকে 'সিদ্ধ' বা বশংগত করিবেন (মোকটির ব্যাখ্যা কৃছ্কুজ্ঞেয় বলিয়া প্রতিভাত হয়; 'সিদ্ধ' বা 'কুর্যাৎ মারয়েৎ' ৺গণপতি শারীর এই ব্যাখ্যা সমীচান বলিয়া বোধ হয়না) য় য়

অধবা ভবিছতের মঙ্গলের জন্ত ( বিজ্ঞিনীয়ু ) তাছাকে গুপ্ত বধদারা উপশ্মিত করিবেন এবং উত্তরকালে বধ করিতে ইচ্ছুক গতাগতকে দেখিলেই ভাছার বধ-সাধন করিবেন। ৫॥

শত্রুর নিকট হইতে (প্রভাবিত্তন করিয়া) আগত ব্যক্তি শত্রুর সহিত সহবাসদার। উৎপাদিত দোষের হেতুরূপে বিবেচিড হইবার যোগ্য। শত্রুর সহিত সহবাসে সমানধর্মবিশিষ্ট হয়—অডএব, এইরূপ ব্যক্তি নিত্য উদ্বেগের হেতু বলিয়া দূষিত বা নিশ্চিত হইয়া বাকে ॥৬॥

প্রক্ষর বীজভক্ষণকারী কপোত যেমন শাদ্যশী রক্ষের উদ্বেগের কারণ হইয়া ভবিয়তেও ভয়াবহ হয়, সেইরূপ (এই প্রকার শত্রুপক্ষীয় ব্যক্তিও বিজি-গীয়ুর নিভ্য ভয়াবহ হইয়া থাকে)॥ १॥

( সম্রতি মুদ্ধের ধর্মসমূহ বলা ছইতেছে।) কোন নির্দিষ্ট দেশে নির্দিষ্ট সময়ে 'আমর। উভরে পরস্পরের প্রতি বিক্রম প্রদর্শন করিব' এই বলিয়া যে যুক করা হয়, তাহার নাম প্রেকাশযুক্ষ ॥ ৮॥

অত্যন্ত ভয়প্রদর্শন, ( ছুর্গাদির দাহ ও লুঠনজন্ত ) আক্রমণ, ও ( শক্রর প্রমাদ ও ব্যসন উপস্থিত হইলে ভাহার ) পীড়ন এবং এক স্থানের যুদ্ধ ভ্যাগ করিয়। অন্ত স্থানে আ্যাতপ্রদান—এইসব কুট্যুড়ের মাড়কা বা হেড্ হইয়া থাকে। আর ভুষ্টাংযুড়ের লক্ষণে ( বিষাদি- ) খোগের ও গুড়পুক্ষবারা উপজাপের ( শক্রম ভেদের ) প্রায়েজন অস্তভূত হয়॥ ১॥

কোটিলীর অর্থশান্তে যাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে, সন্ধিবন্ধ রাজন্ত্রের প্রেয়াণ এবং পরিপণিত ও অপরিপণিত অপস্তত-সন্ধি-নামক বুঠ অধ্যায় ( আদি ছইতে ১০৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### শশুম অধ্যায়

## ১১৩ প্রকরণ---দৈধীভাবে অনুষ্ঠেয় সন্ধি ও বিক্রম

বিজিপীর (নিজভূমির অনস্তর) দ্বিতীয় প্রকৃতিকে অর্থাৎ ভূম্যনম্ভর শক্তকে এইভাবে (সাহায্যার্থ) স্বীকার করিবেন। (পৃষ্ঠ ও পার্থদেশস্থিত অনম্ভর) দামন্তের সহিত মিলিও হইয়া (বিজিগীয়), যাতব্য সামন্তের প্রতি যাত্র। করিবেন। ( মিলনের প্রয়োজন বলা হইতেছে, যথা— ) যদি বা তিনি মনে করেন—"এট (উপগৃহীত) দামস্ত (যাতব্যের প্রতি আমার যাত্রাকালে) আমার পার্ফিগ্রহণ বা পশ্চাদ্দেশ হইতে আক্রমণ করিবে না ; আমার অন্ত পার্ফিগ্রাহকে নিবারণ করিবে; আমার যাতব্যের অসুসরণ করিবে না অর্থাৎ তাহার পক্ষ গ্রহণ করিবে না; (তাহার সহিত মিশনে) আমার সৈত্তবল দিওণ হইবে; আমার বীঝ (অর্থাৎ স্বদেশে উৎপন্ন ধান্তাদির প্রাপ্তি) ও আমার আসার (অর্থাৎ স্কর্মং-সৈল্লের আগমন) প্রবর্ত্তিত রাখিবে (অর্থাৎ ইহাতে কোনও বাধা দিবে না). এবং শক্তর ( এই বীবণ ও আসার সম্বন্ধে ) বাধা দিবে; আমার বাত্রাপণে বহ-প্রকার বাধাবিদ্ব উপস্থিত হইলে, প্রতিবন্ধকরূপ কন্টকসমূহ মন্দিত করিবে; ফুগ ও অটবী হইতে আমার দৈঞ্জের অপসরণকালে (ভাহাদের রক্ষার্থ) নিজ দণ্ড বা সেনা সঙ্গে করিয়া চলিবে: অথবা, অসহনীয় অনর্থ উপন্থিত হইলে, যাতব্যকে সন্ধিতে স্থাপিত করিবে অর্থাৎ যাতব্যের সহিত সন্ধি ঘটাইবে; এবং সে নিজে আমার নিকট হইতে যথাস্থায়িত লাভাংশ পাইরা আমার অন্ত শত্রুদিগকেও আমার প্রতি বিখাসমুক্ত করিবে।" ( তাহা হইলেই তিনি এইরূপ সামস্ভের সহিত মিলিত হইবেন।)

অথবা, (যদি বিজিগীরু এই প্রকার মিলনে অবিশ্বন্ত হয়েন, তাহা হইলে তিনি) দ্বৈতিব অবলম্বন করিয়া, এই (পৃষ্ঠ বা পার্শন্ত অনস্কর ) সামস্ক্রগণের মধ্যে অক্ততমের নিকট হইতে (নিজের দণ্ডাল্পছে) কোশদানদারা দণ্ড বা সেনা এবং (নিজের কোশাল্পছে) সেনাদানদারা কোশ লইতে ইচ্ছা করিবেন।

সেই সামন্তদিগের মধ্যে বিনি অধিকশক্তি ( তাঁহার নিকট হইতে কও ও কোশের প্রাথীচ্ছা থাকিলে, ) তাঁহাকে অধিক অংশ, সমশক্তিকে সমান অংশ ও হীনশক্তিকে হীন অংশ দেওয়ার চুক্তিতে সন্ধি করিলে—ইহাকে ( এই তিন প্রকার সন্ধিকে ) সমসন্ধি বলা হয়। ইহার বিপরীত অবস্থায় ( অর্থাৎ অধিকশক্তিকে সমান বা হীন অংশ, সমশক্তিকে অধিক বা হীন অংশ ও হীনশক্তিকে
অধিক বা সম অংশ দেওয়ার চুক্তিতে ) সন্ধি করিলে—ইহাকে ( এইপ্রকার
সন্ধিকে ) বিষমসন্ধি বলা হয়। এই তিনপ্রকার সমসন্ধি ও চয়প্রকার বিষমসন্ধির প্রত্যেকটিতে প্রতিজ্ঞাত অংশের অধিক লাভ হইলে, ইহাকে ( এই নর
প্রকার সন্ধিকে ) অভিসন্ধি বলা হয়।

লোভ ভিন প্রকার—বলসম, বলাধিক ও বলহীন। ভট্নিমিস্তক ভেদ শ্বষ্টভাবে বর্ণিত হইতেছে।)

হীনশক্তি বিজিগীয়, ব্যদনযুক্ত, শরীরাদির অপায় বা নাশবিধায়ক কাথ্যে আসক্ত ও অনর্থযুক্ত অধিকশক্তি সামস্তের সহিত, দও বা বলের অন্তর্ম্ম অধিকশক্তি দামস্ত তাঁহার ( ইনশক্তি বিজিগীয়ুর ) অপকারে সমর্থ হইলেই তাঁহার প্রতি বিজেম প্রদর্শন করিবেন। অন্তথা তিনি ( তাঁহার সহিত ) সন্ধিতে আবদ্ধ ইইবেন।

এইভাবে (ব্যসনাদিধারা অভিভৃত) হীনশক্তি বিজিপীয়, নিজের নইপ্রায় শক্তি ও প্রতাপের পূরণার্থ, সম্ভাবিত অর্থের সাধনে বাগ্র হইরা, এবং নিজ্
মূলস্থান ( দুর্গাদি ) ও পার্ফির রক্ষার্থ, অধিকশক্তি সামস্থের সহিত ( পূর্ব্বোক্ত )
বলসম লাভ হইতে অধিক অংশের চুক্তিতে সন্ধি করিবেন। এইভাবে পণিত
অধিকশক্তি সামস্ত হীনশক্তি বিজিগীযুকে কল্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে ভাঁহার প্রতি
অন্তগ্রহ প্রদর্শন করিবেন, অন্তথা বৃদ্ধিলে তহুপরি বিজ্ঞম প্রদর্শন করিবেন।

মুগরাদিব্যসন্যুক্ত অমাজ্যাদি প্রকৃতিবর্গের প্রকেপোদিরূপ রক্ষ বা দোষমুক্ত ও অনর্থযুক্ত অধিকশক্তি সামস্ভের সহিত, হীনশক্তি বিজিগীয় নিজ (উত্তম) হুর্গ ও (স্বহায়) মিত্রের যোগে গর্বিত হইরা, অরুদ্রে অগ্রসর ইইরা কোন শক্ষকে আক্রমণ করিতে ইচ্ছুক হইরা, অথবা বিনা যুদ্ধে অবশ্যসিদ্ধ লাভের গ্রহণে লোলুপ হইরা, বলসম লাভ হইতে হীন লাভের চুক্তিতে সন্ধি করিবেন। এইভাবে পণিত অধিকশক্তি সামস্ত ভাঁহার (হীনশক্তি বিজিগীয়) অপকারে সমর্থ হইলেই ভাঁহার প্রতি বিক্রম প্রদর্শন করিবেন। অন্তথ্য ভিনি (ভাঁহার সহিত) সন্ধি করিবেন।

অধবা, পণিত অধিকশক্তি দামন্ত, নিজে প্রকৃতিরক্সবিহীন ও অব্যসনী ইইলে আদেশকালে কর্মারস্করারী শক্তকে অধিকজনক্ষয় ও অর্থব্যয়ের সহিত বৃদ্ধ করিতে অভিলাবী হইয়া, আপন দৃষ্ধ দেনা দৃর করিতে ইচ্ছুক হইয়া, অধবা ( শক্তর ) দৃষ্ঠ দেনা নিজের কাছে আনিতে কামনা করিয়া, কিংবা নিজের পীড়নযোগ্য ও উচ্ছেদযোগ্য শক্তকে হীনশক্তি বিজিগীরুরারা বাধিত করিতে ইচ্ছা করিয়া, স্বরং দন্ধিগুণকে প্রধান মনে করিয়া অধবা স্বরং কল্যাণবৃদ্ধি থাকিয়া, হীনশক্তি বিজিগীরুর সহিত হীন লাভাংশ স্বীকার করিয়াও সন্ধি করিবেন। কল্যাণবৃদ্ধি হীনশক্তির সহিত মিলিত হইয়া ( বিজিগীরু ) অর্থলাভ করিতে প্রবৃত্ত হইবেন। অভ্যবা ( হীনশক্তি যদি তুইবৃদ্ধি হরেন তাহা হইলে ) ততুপরি বিক্রম প্রদর্শন করিবেন।

এই প্রকারে সমশক্তি বিজিগীর সমশক্তি সামস্ভের উপর ( তাঁহার কল্যাণ-বৃদ্ধিত্ব ও ত্বইবৃদ্ধিত্ব বিচার করিয়া) অতিসদ্ধান ( আক্রমণাদি ) অথবা অন্ধ্রাহ প্রদর্শন করিবেন।

অথবা, শক্রদেনার সহিত প্রতিযোধনে সমর্থ, ও ( শক্রর ) মিত্র ও আটবিকদিগের সহিত প্রতিযোধনে সমর্থ, শক্রর (শৈগগুহাদি) গুফ ভূমির ('বিভৃতীনাং'পাঠে তদীয় ঐর্থ্যাদি শক্তির ) জ্ঞাতা সামস্তের সহিত, ( সমশক্তি বিজিগীর )
আপন মূল ( রাজধানীরূপ মূল হর্গ ) ও পার্ফিরক্ষার জন্ত, বলসম লাভের সমান
লাভের চুক্তিতে দন্ধি করিবেন। এইভাবে পণিত সমশক্তি সামস্ত তাঁহাকে
( বিজিগীরুকে ) কল্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে তাঁহাকে অহ্প্রহ প্রদর্শন করিবেন,
অন্তথা বুঝিলে তহুপরি বিক্রম প্রদর্শন করিবেন।

অথবা, ( সমশক্তি বিজিগীরু ) অন্ত কোনও উপায়ে লাভযুক্ত হইলে, বাসনযুক্ত ও প্রকৃতিরক্সযুক্ত, এবং অনেক অন্ত দামস্ভবারা বিরোধিত সমশক্তি দামস্ভের
সহিত, বলসম লাভের অপেক্ষার হীন লাভের চুক্তিতে দন্ধি করিবেন। এইভাবে
পণিত সমশক্তি দামস্ভ তাহার অপকারে সমর্থ হইলে তর্পরি বিক্রম দেখাইবেন,
অন্তথা তাঁহার সহিত দন্ধি করিবেন।

অথবা. এইভাবে (ব্যসনাদিবারা অভিভূত) সমশক্তি বিজিগীয়, সামন্তের উপর নিজ কার্য্যের সিদ্ধি নির্ভরশীল মনে করিলে এবং নিজের সেনা গঠন করিতে হইবে মনে করিলে (সমশক্তি সামন্তের সহিত) বলসম লাভের অধিক লাভের চুক্তিতে সন্ধি করিবেন। এইভাবে পণিত সমশক্তি সামস্ত তাঁহাকে (বিজিগীযুকে) কল্যাণবৃদ্ধি মনে করিলে তাঁহার প্রতি অন্ধ্রহ, অন্তব্য বিজম প্রথদনি করিবেন।

অধবা, বাসনমূক ও প্রকৃতিরক্সমূক অধিকশক্তি, সমশক্তি বা হীনশক্তি

দামন্তকে নট করিতে অভিশ্বিষ্টি হইলে, এবং ভাঁহার ' দামন্তের ) নিল্ডিলদিন্ধিত্ব আরক্ষ কার্ঘার নাশ বিধান করিতে ইচ্ছুক হইলে, অথবা ভাঁহার
( দামন্তের ) যান্তাকালে ভাঁহার অগ্রভাগে প্রহার করিতে ইচ্ছা করিলে, অথবা
যাত্র্যা শক্র হইতে অধিকতর লাভ পাইবেন মনে করিলে, ( বিজিপীরু ) দেই
অধিকশক্তি অথবা হীনশক্তি দামন্তের নিকট অধিক অর্থ যাচনা করিবেন।
এবং দেইভাাব যাচিত হইয়া দেই দামন্ত যদি নিজ দেনার রক্ষার্থ অন্ত দামন্তের
হর্মধ হর্ম ও তদীয় মিত্র ও আটবিকদিগকে ( যাত্র্য ) শক্রর দেনাহার। মন্দিত
করিতে অভিলাধী হয়েন, অথবা অতান্ত দ্রদেশে অধিক দমন্ত্র পর্যাত্র্য )
শক্রব দেনাকে লোকক্ষর ও অর্থবায়হার। যুক্ত করিতে ইচ্ছুক হয়েন, অথবা
( যাত্র্য ) শক্রর দেনাদ্বারা নিজে বর্দ্ধিতবল হইয়া ভাঁহাকেই উচ্ছিন্ন করিতে
ইচ্ছুক হয়েন, অথবা ( যাত্র্য ) শক্রব দেনা গ্রহণ করিতে ইচ্ছুক হয়েন, তাহা
হইলে ভিনি ( দেই সামন্ত ) ( বিজিলীমুকে ) যাচ্যমান অধিক অর্থ দিবেন।

অথবা, যদি অধিকশক্তি (বিজিগীর) যাতবার উচ্ছেদের ছলে হীনশক্তি দামন্তকে নিজ হন্তে অর্থাৎ বশে আনিতে অভিলামী হরেন, অথবা (যাতব্য) শক্রর উচ্ছেদদাধন করিয়া তাঁহাকেও (দেই দামন্তকেও) উচ্ছিন্ন করিতে চাহেন, অথবা অর্থ অধিক দিয়া পরে তাহা অপহরণ করিতে চাহেন, তাহা হইলে তিনি (বিজিগীয়) বলদম লাভ অপেক্ষার অধিক লাভের চুক্তিতে দেই হীনশক্তি দামন্তের সহিত পণবদ্ধ হইতে পারেন। আবার দেই পণবদ্ধ দামন্ত তাঁহার (বিজিগীয়ুর) অপকারে দমর্থ হইলে ততুপরি বিক্রম প্রদর্শন করিবেন। অন্তবা ভাঁহার দহিত দদ্ধি করিয়া রহিবেন। অথবা, তিনি (দামন্ত) যাতবা শক্রর দহিত দদ্ধি করিয়া আদন অবলম্বন করিবেন। অথবা (তিনি) আপন দৃষ্য ও অমিত্রের দেনা তাঁহাকে (অধিকশক্তি বিজিগীয়ুকে) দিবেন।

অথবা, অধিকশক্তি (বিজিগীরু) ব্যসন্যুক্ত ও প্রকৃতিরক্সযুক্ত থাকিশে, হীনশক্তি দামস্তের সহিত বলসম লাভের চুক্তিতে পণবদ্ধ হইবেন। আবার দেইভাবে পণবদ্ধ সোমস্ত ) তাঁহার (সেই বিজিগীরুর) অপকারে সমর্থ হইলে তত্তপরি বিজ্ঞম প্রদর্শন করিবেন, অগুণা তাঁহার সহিত দন্ধি করিয়া রহিবেন।

অথবা, দেইভাবে ( বাসনমৃক্ত ও প্রকৃতিরক্রযুক্ত ) হীনশক্তি সামস্বের সহিত অধিকশক্তি ( বিক্রিনীরু ) বল্পম লাভের অপেক্ষায় হীন লাভের চুক্তিতে পণবদ্ধ ইইবেন। আবার দেইভাবে পণবদ্ধ ( সামস্ত ) তাঁহার ( দেই বিদ্ধিনীরুর ) অপকারে সমর্থ- হইলে তত্ত্পরি বিক্রমপ্রদর্শন করিবেন, অন্তথা তাঁহার সহিত

যিনি পণিত বা পণবদ্ধ হইবেন এবং যিনি পণকারী, তাঁহারা উভয়েই পূর্ম হইতেই (উপরি উক্ত) পণন-কারণগুলি বুঝিবেন। তৎপর সন্ধি বা বিগ্রহ, এই উভয়ের লাভ ও হানির বিষয় বিচার করিয়া— যাহাতে কল্যাণ অধিক, ডাহাই আশ্রয় করিবেন। ১॥

কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রে যাড়্ওণা-নামক সপ্তম অধিকরণে বৈধাভাবে অক্নষ্ঠেয় সন্ধি ও বিক্রম-নামক সপ্তম অধ্যায় ( আদি হইতে ১০৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### অষ্টম অধ্যায়

#### ১১৪-১১৫ প্রকরণ—ব্যতব্যসম্বন্ধী ব্যবহার ও আন্দ্রগ্রাহ্য মিত্রের বিশেষ

(বিজিপীযুর) কোন যাতব্য সামস্ত শ্বয়ং শক্রদারা অভিযাশ্যমান হইলে. সিন্ধি করার কারণ স্থীকার করিতে, অথবা তাহা উপহত করিতে চাহিয়া (নিজের) বিরুদ্ধে সমবায়বদ্ধ সামস্তগণের অন্তত্যের সহিত, তাঁহার ব্যবস্থিত লাভাংশের দ্বিতণ লাভ দেওয়ার চুজিতে পণবদ্ধ ইইবেন। এইভাবে পণন করিতে উন্থত হইয়া, (তিনি) সেই সামস্তবিশেষের নিকট লোকক্ষর, অর্থবায়, (দূরদেশে) প্রবাস, নানাক্ষপ বিন্ধ, শক্রর পক্ষে যোগ দিয়া ভাহার উপকার বিধান, ও শারীরিক ক্রেশ— এই হয়টি লোবের কথা ব্রাইয়া বলিবেন। সেই সামস্ত ভাহা স্থীকার করিয়া লইলে তিনি তাঁহাকে প্রতিক্রত অর্থদ্বারা যোক্তিত করিবেন। অথবা, অন্থান্ত শক্রম সহিত ভাঁহার বিরোধ উৎপাদন করিয়া সন্ধি ভঙ্ক করিবেন।

( সামবায়িক সামস্তগণের মধ্য হইতে পূর্ব্বোক্ত ) সামস্তবিশেব, আদেশকালে কর্মারক্তরারী শত্রুকে অধিক জনক্ষয় ও অর্থবায়ের সহিত ধুক্ত করিতে অভিলাধী ছইয়া, অথবা শত্রুর নিজের স্কষ্টভাবে আরন্ধ বাত্রাতে গুভক্ষ বিহত করিতে ইচ্ছুক হইয়া, অথবা ধাত্রাকাল্যধ্যে শত্রুর মূলে ( প্রগাদি রাজধানীতে ) প্রহার করিতে চাহিয়া, বাতবার সহিত ( অল্ল অর্থ লইয়া ) সন্ধিতে আবদ্ধ হইলে

পুনর্কার অধিক অর্থ বাচনা করিতে ইচ্ছুক ছইরা, নিঞ্চের অর্থকট হঠাৎ আপতিত হইতে দেখিরা, অথবা পণমান বাতবোর প্রতি (প্রতিশ্রুত অর্থদান-বিষয়ে) অবিশাসী হইরা, তৎকালে অল লাভের এবং উত্তরকালে প্রভূত লাভের আকাজ্ঞা করিবেন।

শমিত্রের উপকার ও শশক্রর হানি বিশেষভাবে কলযুক্ত হইবে এইরূপ বিবেচনা করিলে, কিংবা পূর্বাকৃত উপকারীকে আরও উপকার করিতে প্রবর্ত্তিত করিতে চাহিলে তিনি (সেই দামস্তবিশেষ) তৎকালে বেশী লাভ ত্যাগ করিয়া উত্তরকালে সন্তাব্য অধ্যলাভ আকাজ্ঞা করিতে পারেন।

অথবা, তিনি ( সামস্তবিশেষ ), দৃশ্য ও অমিত্রধারা, মূল ( প্র্গাদি রাজধানী ) হরণকারী অধিকশক্তি রাজার সহিত বিপ্রহে লিগু ( যাতবা ) সামস্তকে রক্ষা করিতে অভিলাধী হইয়া, অথবা কাহারও দারা সেই প্রকার উপকার করাইতে ইচ্ছা করিয়া, অথবা ( যাতব্যের সহিত বৈবাহিকাদি ) সম্বন্ধ চাহিয়া, তৎকালে ও উত্তরকালে কোনও লাভ গ্রহণ করিবেন না।

অথবা, প্রথমতঃ দিন্ধি করিয়া তাহা অতিক্রম করিতে চাহিয়া, অথবা শক্রর অমাত্যাদি প্রাকৃতিবর্গের কর্শন (রুত্তিকষ্ট) এবং মিত্র ও অমিত্রের সহিত কৃত সন্ধির বিশ্লেষণ করিতে অভিলাধী হইয়া, অথবা শক্র হইতে আক্রমণের আশক্ষা করিয়া তিনি (দেই দামস্তবিশেষ) অপ্রাপ্ত অর্থ কিংবা প্রতিক্রমত অর্থের অধিক অর্থ বাচনা করিবেন। যাচিত (যাতবা) সামস্ত তৎকালে ও উত্তরকালে দন্তাবা লাভ ও হানির ক্রম (অর্থাৎ ঘাচমানের উক্ত প্রকার) সম্যক্ পর্যালোচনা করিয়া দেখিবেন। পূর্ব্বোক্ত তিন প্রকারেও এইরূপ লাভ ও হানির বিচার করা উচিত—ইহাও ব্যাধ্যাত হইল।

অরি ও বিজিপীর স স ( ভ্রেকাজর) মিত্রদিগকে অপ্নগ্রহ করিতে চাহিলে. (নিম্নলিখিত ) শক্যারন্তী, কল্যারন্তী, ভ্রায়ন্তী, হিরক্মা ও অপ্নরন্তপ্রকৃতি মিত্র হইতেই বিশেব ( লাভ ) হইবে মনে করিবেন, অর্থাও তাঁহারাই তাঁহাদের অপ্রগ্রহের পাত্র হইবেন। ( তথাধা ) যিনি শক্তির অপ্রশ্নপ কার্য) আরম্ভ করেন, তিনি শক্যারন্তী মিত্র। যিনি দোষরহিত কর্ম আরম্ভ করেন, তিনি শক্যারন্তী মিত্র। যিনি দোষরহিত কর্ম আরম্ভ করেন, তিনি ভ্রিয়ন্তে কল্যাণ ফলের উৎপাদক কার্যা আরম্ভ করেন, তিনি ভ্রারন্তী মিত্র। বিনি আরম্ভ কার্যা সমাপ্ত না করিয়া ছাড়েন না, তিনি ভ্রিরক্মা মিত্র। আর বিনি প্রেরতিবর্গ হইতে ) অব্যব্দত সহায়তা পান বলিয়া, ( অপ্ন নৈদ্যাদি-দানম্বপ ) অপ্রগ্রহ পাইমাই কার্য্য

সাধন করিতে পারেন, তিনি **অসুরক্তপ্রাকৃতি** মিত্র। এই (পাঁচ) প্রকার মিত্রেরা সহারতাশ্রাপ্ত হইলে, অনামানে (বিজিপীরুর) প্রভৃত উপকার সাধন করেন। ইহার বিপরীত বাঁহার। (অর্থাৎ অশক্যান্নজীপ্রভৃতি মিত্রেরা) অনুগ্রহ লাভের অধ্যোগ্য বলিয়া বিবেচিত হইবেন।

যদি অরি ও বিজিপীয়ু—এই উভয়কে এক জনের উপরই (অর্থাৎ কোনও এক অন্ধ্রাছ মিত্র বা অমিত্রের উপরই ) অন্ধ্রাহ দেখাইবার প্রদক্ষ হয়, তাহা হইকে ধিনি ( অমিত্রকে তাগ করিয়া ) মিত্রের প্রতি, অথবা ( মিত্রকে উপেক্ষা করিয়া ) মিত্রের প্রতি, অথবা ( মিত্রকে উপেক্ষা করিয়া ) মিত্রতরকে অন্ধ্রাহ করেন, তিনি ( অর্থাৎ সেই মিত্রান্ধ্রাহী দা মিত্রতরান্ধ্রাহী ) বিশেষ লাভপ্রাপ্ত হয়েন। কারণ, তিনি ( কুডান্থ্রাহ ) মিত্র হইতে নিজের রন্ধি বা উন্নতি লাভ করেন। আর, অপরটি ( অর্থাৎ অমিত্রান্থ্রাহী ) পোকক্ষয়, অর্থবায়, প্রবাস ও শক্রের উপকারকরণ—এই সব দোষপ্রাপ্ত হয়েন। আরি, নিজের কার্যা সাধিত হইকে, শক্র ( স্বভাববশতঃ ) বিকরেপ্রাপ্ত হয়েন।

কিন্তু, (অরি ও বিজিপীযুকে) যদি মধ্যম রাজার উপর অন্থ্রাহ দেধাইতে ইয়, তাহা হইলে (উভয়ের মধ্যে) বিনি মিত্রেরপী বা মিত্রতরন্ধপী মধ্যমকে অন্থ্রহ করেন তিনি বিশেব লাভপ্রাপ্ত হয়েন। কারণ তিনি, মিত্র হইতে আত্মর্থিছ বা নিজের উন্নতি লাভ করিবেন। আর, অপরটি, লোকক্ষর, অর্থবায়, প্রবাস ও শক্রর উপকারকরণরূপ দোহপ্রাপ্ত হয়েন। কতায়গ্রহ হইয় মধ্যম বিদি বিকারপ্রস্ত হয়েন, তাহা হইলে অমিত্র বিশেব লাভপ্রাপ্ত হয়েন। কারণ, কেই অমিত্র প্রথমতঃ (বিজিপীযুর সহিত) একত্র প্রথমকারী, কিন্তু পরে বিকারবশতঃ তাহার নিজের সহিত একার্থভান্তার মধ্যম-অমিত্রকে প্রাপ্ত হয়েন। এই প্রকারে এতদ্বারা উদাসীনের প্রতি (বিজিপীযুর) অন্থ্রগ্রপ্রদর্শনের রীতিও ব্যাধ্যাত হইল ব্রিতে হইবে।

মধ্যম ও উদাসীন—এই উভরের পক্ষে সৈল্পের অংশ প্রদান করির।
(মিত্রাদির প্রতি) অন্ন্তাহ দেখাইবার প্রান্ধ উপদ্বিত হইলে, বিনি প্র,
অস্ত্রচালনে পটু, সংখসহনশীল ও প্রভ্তক্ত শৈল প্রদান করেন. তিনি
(অমৃক্তকারী বলিয়া) বক্ষিত হয়েন। কিছ, ইহার বিপরীতকারী (অর্থাৎ
দৃষ্টাদি সৈঞ্চদায়ী) বিশেষ শাভগ্রাপ্ত হয়েন।

কিন্ত, যে কার্যাসাধন করিতে যাইয়া অন্ত সেনা প্রতিহত হইয়াও পুনরায় সেই কার্যা ও অন্তান্ত কার্যাসাধন করিতে প্রবৃত্ত ইইবে ( মনে করা যায় ), তখন সেই কার্য্যে মোলবল, ভূতবল, শ্রেণীবল, মিত্রবল ও অটবীবল— এই পাঁচ প্রকার বলের মধ্যে অক্সতমকে সমুচিত দেশ ও কালের বিচার করিয়া, তিনি ( মধ্যম বা উদাসীন ) (মিত্রের অপ্রপ্রহার্থ ) দিতে পারেন। অথবা, দূরদেশে যাওয়া ও দীর্ঘকালের জন্ত সেনা দিতে হইলে, (তিনি ) কেবল অমিত্রবল ও অটবীবলট দিবেন।

কিন্তু, (তিনি) যে যিত্রকে এইরূপ মনে করিবেন—"এই।রাজা নিছের কার্য্য দিক্ষ করিয়া আমার দশু বা দেনাকে নিজ হস্তগত করিবেন; অথবা, ইহাকে অমিত্র ও আটবিকদিগের নিকট কিংবা বাসের অযোগ্য স্থানে ও বধাদি অকালে কার্য্য করিতে পাঠাইবেন; অথবা, (জরলাভের পর) আমার সেনাকে ফল বা লাভের অংশ হইতে বঞ্চিত করিবেন", তাহাকে, নিজ সৈপ্তের অন্তত্ত্ব কার্য্যে ব্যাপৃত থাকার অপদেশে (ছলে), কোন সেনাদানরূপ অন্তত্ত্বহ দেখাইবেন না। কিন্তু, যদি এই প্রকার রাজাকে অন্তত্ত্বহ দেখাইতেই হয়, তাহা হইলে, কেবল তৎকালে কার্যাদেশ্য দেনাই তাঁহাকে তিনি দিবেন। এবং কার্যা সমাপ্ত না হওয়া পর্যান্ত (তিনি) সেই সেনাকে (যোগান্থানে) বাদ করাইবেন, (তদ্বারা) যুদ্ধ করাইবেন এরং সেনা-বাদনসমূহ হইতে ইহাকে রক্ষা করিবেন। কতার্থ মিত্র হইতে কোনও ব্যাক্তে (পরে সেই সেনা তিনি) সরাইয় লইবেন। অথবা, (তিনি) তাঁহাকে (অন্তত্ত্বাহ্থমিত্রকে) দৃষ্য, অমিত্র ও আটবিক সেনা দিবেন। অথবা, (তিনি) যাতব্য শক্রর সহিত (সেই অন্তর্গ্যাহ্থ) মিত্রকে সন্ধিতে আবদ্ধ করিয়া তাহার নিকট হইতে বিশেষ লাভপ্রাপ্ত হইবেন।

(অন্তএব), লাভ সমান হইলে সন্ধি করা বিধেয়, এবং ইহা বিষম (ন্যুনাধিক) হইলে বিক্রম বিধেয়। সমানশক্তি, হীনশক্তি ও অধিকশক্তি রাজাদিগের সম্বাদ্ধে সন্ধি ও বিক্রম এইভাবে উক্ত হইল॥ ১॥

কেটিলীয় অর্থশান্ত্রে ধাড্গুণা-নামক সপ্তম অধিকরণে যাতবাসন্ধর্মী ব্যবহার ও অস্থগ্রাহুমিত্রের বিশেষ-নামক অষ্টম অধ্যায় (আদি হইতে ১০৬ অধ্যায়) সমাপ্ত।

### নবম অধ্যায়

## ১১৬ প্রকরণ—মিত্রসন্ধি, ছিরণ্যসন্ধি, ভূমিসন্ধি ও কর্মসন্ধি— (ভন্মধ্যে) মিত্রসন্ধি ও হিরণ্যসন্ধি

রাজাদিগের সংহিত বা মিলিত হইয়া প্রধাণ বা হাত্রাবিষয়ে, মিত্তলাভ, হিরণালাভ ও ভূমিলাভ ঘটিলে, তন্মধ্যে পর পর লাভটি অধিকতর শ্রেষ্ঠ, অর্থাং মিত্রলাভ অপেক্ষায় হিরণালাভ ও হিরণালাভ অপেক্ষায় ভূমিলাভ প্রশস্ততর। কারণ, ভূমিলাভ হইতে মিত্রপত হিরণা হই-ই পাওয়া যাইতে পারে। এবং হিরণালাভ হইতে মিত্রলাভও সন্তাবিত হয়। অপবা, ইহাদের মধ্যে যে কোনও লাভ সিদ্ধ হইয়া, যদি অবশিষ্ট হুইটির যে কোনটিকেও সিদ্ধ করিতে পারে, তাহা হইলে সে লাভও শ্রেষ্ঠ বলিয়া বিবেচিত হইবে।

"ত্মি ও আমি উভয়েই মিত্রকে লাভ করিব" ইত্যাদিরূপ পণনদার।
ক্রিয়মাণ সন্ধিকে সমস্কি বলা হয় ("ত্মি ও আমি উভয়েই হিরণ্য বা উভয়েই
ভূমিলাভ করিব" এইরূপ পণনদারা ক্রিয়মাণ সন্ধিও সমসন্ধি নামে পরিচিত )।
আবার, "তৃমি মিত্রকে লাভ করিবে, (আমি হিরণ্য লাভ করিব ; অথবা, তৃমি
হিরণ্যলাভ করিবে, আমি ভূমি লাভ করিব ; অথবা, তৃমি ভূমি লাভ করিবে,
আমি মিত্র লাভ করিব") এইরূপ পণনদ্বারা ক্রিয়মাণ সন্ধির নাম বিষমসন্ধি ।
এই উভর প্রকার সন্ধিতে (অর্থাৎ সমসন্ধি ও বিষমসন্ধিতে) পূর্বনিশ্চিত লাভ
হইতে যদি বিশেষ বা অধিক লাভ হয়, ভাহা হইলে ইহাকে অতিসন্ধি বলা
হয়।

(উক্ত) সন্ধিতে যিনি (নিত্যথাদি-) সম্পদ্-যুক্ত মিত্রকে প্রাপ্ত হয়েন, অথবা যিনি সেইরূপ সম্পন্ন মিত্রের আপৎকালে তাঁহাকে (সেই মিত্রকে) প্রাপ্ত হয়েন, তিনি অতিসন্ধিনিমিত্তক বিশেষ লাভপ্রাপ্ত হয়েন। কারণ, আপদই মিত্রন্থের স্থৈয় সম্পাদন করে অর্থাৎ মিত্রভাকে দৃঢ় করে।

মিত্রের বিপত্তির দশাতে, নিজের সার্মনিক অথচ অবশংগভমিত্র ও অসার্মনিক অথচ বশংগত—এই উভয়প্রকার মিত্রের মধ্যে কোনটির লাভ অধিকতর শ্রেয়: সাধন করে ? কোটিল্যের নিজ আচার্ব্যের মতে, নিভ্য মিত্র অবশংগত হইলেও, তাঁহার লাভই শ্রেয়:, কারণ, তেমন মিত্র উপকার না ক্রিতে পারিশেও, অপকার করিবেন না। কিন্ধ, কে টিল্য এই মত মানেন না। ( তাঁহার মতে ) বশ্য মিত্র স্থানিত্য হইলেও, তাঁহার লাভই শ্রেয়:, কারণ, এই প্রকার মিত্র বড়কণ উপকার করিতে পারিবেন, তডক্ষণ মিত্রই থাকিয়া যান। ( আর ) মিত্রের স্থভাবই হইল (মিত্রের) উপকার-করণ।

অথবা, ছইটি বশ্য মিত্রের মধ্যে যদি একটি মহাসম্পত্তিশালী অথচ অসার্ক্ষদিক হরেন, এবং অপরটি যদি অল্পসম্পত্তিশালী অথচ নিত্য হরেন—ভাহা হইলে কোনটির লাভ অধিকতর শ্রেরংসাধক ? কোটিলাের নিজ্ঞাচাের্যের মতে, যিনি মহাসম্পত্তিশালী, অথচ অনিত্য তিনিই অধিকতর শ্রেরংসাধক। কারণ, মহাভাগবিশিষ্ট অনিত্য মিত্র অল্পকালমধ্যে মহৎ উপকার করিয়া, (বিজ্ঞিনীযুর) ব্যয়স্থানের প্রতীকারও করিয়া থাকেন।

কিন্ত, কৌটিল্য এই মত সমর্থন করেন না । ( তাঁহার মতে) অল্লভোগবিশিষ্ট নিত্য মিত্রই অধিকতর প্রেরোবিধায়ক হরেন, কারণ, মহাভোগবিশিষ্ট
নিত্য মিত্র অধিক ( ধনাদিদ্বারা মিত্রের ) উপকার সাধন করিতে হইবে—এই
ভয়ে মিত্রতা ত্যাগ করেন, অথবা, উপকার করিয়া পরে তৎপরিবর্ত্তে নিজে
অধিক গ্রহণের চেষ্টা করেন। কিন্তু, অল্পভোগবিশিষ্ট নিতা মিত্র ( বিজিগীরুর )
সতত অল্প অল্প উপকার করিয়া অনেক কালপর্যান্ত মহৎ উপকারসাধন
করিয়া থাকেন।

ভর্মপ্রয়ে উত্থানশীল, অথচ প্রবল মিত্র, কিংবা অল্পপ্রয়েত্র-উত্থানশীল, অথচ অল্পশক্তি মিত্র অধিকতর প্রেয়:দাধক গ কোটিল্যের নিজ আচাতের্যার মতে ওক্ষসমূপ প্রবল মিত্র (শক্রব প্রতি) অধিক প্রতাপ প্রদর্শন করিতে পারেন এবং যথন তিনি (কটসহকারে) উপিত (ব) উৎসাহ প্রদর্শনে প্রস্তুত ) হইবেন, তথনই কার্য্যাধন করিতে সমর্থ হইবেন।

কিন্তু, কোটিল্য এই মত যুক্তিসকত মনে করেন না। (তাঁহার মতে)
শীন্ত উত্থানশীল তুর্বল মিত্রই অধিকতর শ্রেরংনাধক, কারণ, এই প্রকার শুখুসমুখ
অন্ধ্যক্তি মিত্র কার্য্যকাল অভিক্রম করেন না। অর্থাৎ কার্য্যের অবদর আগভিড
ইইলেই কার্য্যাধনে তৎপর হরেন) এবং তাঁহার নিজের তুর্বলভার কারণে,
ভাঁহাকে যথেচ্ছভাবে বিজিগীরুর উপদেশমত কার্য্য করাইতে পারা বায়, (কিন্তু),
অপর মিত্রটি (অর্থাৎ গুরুসমূখ প্রবল মিত্রটি) নিজের ভৌমশক্তি প্রকৃষ্ট থাকায়
ভেষন উপকারে আদেন না।

अथन विठाया विवस रहेन--- (व भिलंद रेम्ड नांनाशास विकिश तारे मिलं

ষ্পবা, যে মিত্রের দৈন্ত স্বশে নাই (অথচ এক স্থানে বর্ত্তমান আছে ) সেই মিত্র অধিকতর শ্রেমঃসাধক ? কোটিল্যের নিজ আচোর্টেয়র সিদ্ধান্ত এই যে, নানাত্মানে বিক্রিপ্ত সৈত্ত স্ববশে আছে বলিয়া পুনরায় ইহাকে একত্রিত কর। সম্ভবপর হয়।

কিন্তু, কৌটিকা এই মন্ত মানেন না। (তাঁহার মতে) যে মিত্রের সৈপ্ত অবশ্য (অবশবর্জী) হইলেও (একস্থানে আছে) তিনিই প্রশন্ততর। কারণ, অবশবর্জী সৈপ্তকে সামাদি উপায় প্রয়োগ করিয়া বশবর্জী করা যায়, কিন্তু, অপর সৈপ্তকে (নানাস্থানে বিক্ষিপ্ত সৈপ্তকে) অপ্তত্ত কার্য্যবশতঃ বিশেষভাবে ব্যাপ্ত শাকিলেও একত্রিত করা যায় না।

পুরুষদার। উপকারদাধক মিত্র অথবা হিরণাদারা উপকারদাধক মিত্র প্রশন্ততর ? কোঁটিলোর নিজ আচার্টেরের মতে পুরুষদারা উপকারকারী মিত্রই অধিকতর শ্রেরোবিধারক, কারণ, এই প্রকার 'পুরুষভোগ' মিত্র ( শক্রর উপর ) প্রতাপ প্রদর্শন করিতে সমর্থ হয়েন এবং কোন কার্য্য করিবার জন্ত দেই মিত্র উপিত বা উৎসাহযুক্ত হইলে, দেই কার্য্য স্কৃষিদ্ধ করিতে পারেন।

কিন্ত, কোটিল্য এই মন্ত স্বীকার করেন না। (তাঁহার মতে) হিরণ্যন্ত্রার। উপকারকারী মিত্রই প্রশন্তব্য, কারণ, হিরণাের সহিত যােগ নিত্য অর্থাৎ সর্বাদা উপযােগক্রম, আর দণ্ড বা সেনা কদাচিৎ উপযােগে লাগিতে পারে, আবার হিরণ্যন্তারা দণ্ড সংগৃহীত হইতে পারে এবং অক্তান্ত কামা বিষয়ও প্রাপ্ত হওয়া যায়, (কিন্তু, দণ্ডদার। হিরণ্য ও অন্তান্ত কামা বিষয় পাওয়া ছকর হয়)।

হিরণ্যদার! উপকারদাধক মিত্র, অথবা ভূমিদার। উপকারদাধক মিত্র প্রশন্ততর ? কৌটিলোর নিজ আচার্টেরের মতে 'হিরণ্যভোগ' মিত্র গতিমান্ ঘশিয়া (অর্থাৎ হিরণ্য যেধানে সেখানে বহন করিয়া নিভে পারা বায় বলিয়া) সর্বপ্রকার বায়ের উপযোগী ও সর্বপ্রকার আপদের প্রতীকারকরণে সমর্থ হইয়া ধাকে, (কিন্তু ভূমি গতিমতী নহে বলিয়া ভৎকরণে অসমর্থ)।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মতের সমর্থন করেন না। ( ওঁাহার মতে ) ভূমিশাভ করিতে পারিলে, তদারা মিত্র ও হিরণালাভ স্কর হয়—এই কথা পূর্ব্বেই বলা ছইয়াছে। অতএব, ভূমিধারা উপকারকারী মিত্রই প্রশন্ততর।

ছুইটি মিত্র সমানভাবে পুরুষসহায়তা দিতে চাহিলে, তমধ্যে বাঁহার শৌষ্যি, ক্লেশসহমশীলতা, অনুবাগ ও (যৌলাদি) সর্বর প্রকারের বল বা সৈক্লগানে দামর্থ্য লক্ষিত হইবে, তাঁহাকে অন্তান্ত পুরুষদার। দহারতাকারী মিত্রবর্গ ছইতে বিশিষ্ট বলিয়া মনে করিতে হইবে ।

তুইটি মিত্র সমানভাবে হিরণাসহায়তা দিতে চাহিলে, তথাধ্যে বাঁহার প্রার্থিত কর্ম দেওয়ার ক্ষমতা, প্রভূত অর্থ থাকার সম্ভাবনা, অল্প প্রয়াদে কার্যাসাধনে কৃশলতা ও সতত উপকারকারিতা লক্ষিত হইবে, তাঁহাকে সেই শ্রেণীর মিত্রের মধ্যে প্রশৃপ্ততর মনে করিতে হইবে।

এই প্রসঙ্গে ( অর্থাৎ মিত্রসন্ধিবিষয়ে ) বক্ষামাণক্ষপ ( মিত্র- ) নিরূপণ কর। হুইতেছে।

নিতা, বশংগত, লাঘবতাসহকারে উত্থানশীল, পিতৃপিতামহক্রমাগত, মহৎ ও বিধাভাবরহিত মিক্তকে ছয়গুণবিশিষ্ট সম্পন্ন মিক্র বলা হয় ॥ ১॥

অর্থসম্বন্ধ বিনা, পূর্বংগঠিত (যৌনাদি-) সম্বন্ধে সম্বন্ধ থাকার প্রণয়বশতঃ যে মিত্র (বিজিগীর কর্তৃক) রক্ষিত হয়েন এবং (বিজিগীরকেও) যিনি রক্ষা করেন —সেই মিত্রকে নিতঃ মিত্র বলা হয়॥ ২॥

( অর্থপ্রাপ্তিভেদে ) বশ্চ মিত্র তিন প্রকারের হইতে পারে—যথা, সর্বভাগ, চিত্রভোগ ও মহাভোগ ( তন্মধ্যে যে মিত্র, সেনা, কোশ ও ভূমিদারা বিজিকীবুর উপকারক তিনি সর্ববিজ্ঞাগ মিত্র; যিনি রক্তাদি সর্বপ্রকারের সার ও অসারব্যুরার। উপকারক তিনি চিত্রভোগ মিত্র; এবং যিনি কেবল সেনা ও কোশদারা উপকারক তিনি মহাভোগ মিত্র)। আবার ( অনর্থপরিহার-ভেদে ) বশ্চ মিত্র অপর তিন শ্রেণিতে বিভক্ত হয়—যথা, একতোভোগী, উভয়ভোভোগী ও সর্বভোগেগী ( ভন্মধ্যে যে মিত্র কেবল শক্ষর প্রতিকারক তিনি একভোভোগী মিত্র; আর যিনি শক্র ও তদীয় আসারের প্রতিকারক তিনি উভয়ভোভোগী মিত্র; আবার যিনি শক্র, তদীয় আসার ও আটবিকাদির প্রতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি প্রতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিকারক তিনি সর্ব্বতিবিভাগী মিত্র)॥ ৩॥

যে মিত্র বিজিগীয়ুর অবশবর্তী হইয়াও, শক্রবিষয়ে হিংসাপরায়ণ হইয়া ধনাদি তাহণ বা ধনাদি দান করিয়াই জীবন্যাত্রা নির্বাহ করেন এবং নিজে মূর্যে বা অটবীতে অপসরণ করিয়া (আ্আরক্ষা করিয়া চলেন), সেই মিত্রকে অবস্থা বিভঃ মিত্র বলা হয়॥ ৪॥

ধে মিত্ত শক্ষদার। বিগৃহীত বা আক্রান্ত, অথবা, পথ্যসন্মৃক্ত হইরাও উপকার করার জন্ত (বিজিগীবুর সহিত) সন্ধি করেন, তাঁহাকে **অঞ্জব বা**। অ**নিত্য বশ্য মিত্তে** বলা হয় ৪ ৫॥ ( সমুখান, পিতৃপৈতামহ ও মহৎ মিত্রের শক্ষণ প্রগম বলিরা লোকগুলিতে তাহা আর বিশেষভাবে উক্ত হয় নাই। সম্প্রতি অবৈধ্য মিত্রের লক্ষণ বলঃ ছইতেছে।)

বে মিত্র (মিত্রের সহিত) সমান প্রথছণে অপ্নতব করেন, বিনি সদাই তাঁহার উপকার করেন এবং বিনি বিকারগ্রস্ত হয়েন না ( অর্থাৎ অবাভিচারী থাকেন ) এবং বিপদে হৈদীভাবাপন্ন হয়েন না, সেই মিত্রকে আইম্বান্থ মিত্র বলা হয় এবং (মিত্রতার নিত্যসহন্ধ থাকে বলিয়া) তিনি মিত্রভাবী মিত্র বলিয়াও আখ্যাত হয়েন ॥ ৬॥

(সম্প্রতি উভয়ভাবী মিত্রের কথা বলা হইতেছে। এই মিত্রের ভিনপ্রকার ভেদ দেখা বায়। এই মিত্র কখনও বিজিপীযু ও শক্ত উভয়েরই অমুপকারকারী হয়েন, কখনও উপকারকারী হয়েন, এবং কখনও নিজের তুর্বলভার জন্ত উভরেরই সেবক হয়েন। তন্মধাে আবার প্রথমটি কখনও সামর্থ্য থাকিলে উপকার প্রদর্শনে অনিজ্বক হয়েন এবং কখনও ইচ্ছা থাকিলেও সামর্থ্যভাবে উপকার করেন না।)

(শেষোক্ত ছই প্রকারের মধ্যে প্রথম প্রকারের মিত্র নির্মাণত হইতেছে।)
বে মিত্র বিজিগীরুর সহিত মিত্রভাব থাকার নিতা, আবার শক্রর সহিত মিত্রভাব থাকার চল বা অনিতা হইরাও উভয়ের কাহাকেও (ধনাদিদ্বারা) উপকার করেন না—উদাদীন থাকেন, সেই মিত্র উভয়ভাবী মিক্ত বলিরা শরিচিত হয়েব ॥ ৭॥

আবার, ধে মিত্র বিজিগীবুর (ভূমির অনস্তর ভূমিতে থাকিয়া তাঁহার)
অমিত্র বা শত্রুত এবং (বিজিগীবুও তদীয় শত্রুর) মধ্যে অবস্থিত থাকিয়া
মিত্রভূত এবং বিনি উপকারার্থ ইচ্ছুক হইয়াও অসামর্থ্যবশতঃ অকুপকারী,
তিনিও উন্তর্গন্তী মিত্র বদিয়া আখ্যাত হয়েন। ৮।

আবার, যে মিত্র (বিজিগীবুর ) শত্রুও প্রিয়ও তাঁহার (শত্রুর ) রক্ষার পাত্র এবং সেই শত্রুর সহিত বাঁহার পূজ্য সম্বন্ধ বর্ত্তমান আছে, বিনি (শত্রুর সহিত মিত্রতার আবদ্ধ ) সাধারণ মিত্র হইয়া (বিজিগীবুরও ) অস্থ্রহকারী, সেই মিত্রও উভয়ক্তাবী শিক্ত নামে অভিহিত হয়েন ॥ ১॥

আবার, যে মিত্র উৎকৃষ্ট ভূমিসম্পন্ন (মতান্তরে প্রকৃষ্ট বা দূরবর্তী দেশে শ্বিত), সর্ববদা (শ্বিত লাভেই) সৰ্বই, বলবান্ ও অলস এবং ( দৃতোদি-) বাসনমূক্ত হওরার বিনি অবমানিত, তিনি (উপকারপ্রস্পন্নি) উদাসীন হরেন॥ ১০ ঃ আবার, যে মিত্র নিজের ত্বর্মলতাবশত: শত্রু ও বিজিনীবু—উভ্রের বৃদ্ধি
বা উন্নতির অসুবর্ত্তন করেন এবং যিনি উভ্রের অবিদ্যোভাজন, তাঁহাকেও
উভয়ভাবী মিত্র বলিয়া বৃঝিতে হইবে॥ ১১॥

কারণ না দেখাইয়। (অর্থাৎ বিনা কারণে) যে মিত্র (মিত্রকে) ছাড়িয়া যান, এবং যিনি অকারণে আবার তাঁহার নিকট ফিরিয়া আসেন, এমন মিত্রকে যে (বিজিপীর) স্বীকার করিয়া লহেন, তিনি মৃত্যুকে আলিছন করেন। অর্থাৎ এমন মিত্রের স্বীকারে তিনি নিজেই নষ্ট হয়েন। । ১২॥

অল্পকালে সভ্ত অল লাভ, অথবা অনেক কালে সভ্ত প্রভৃত লাভ অধিকতর শ্রেয়স্কর ? কোটিল্যের নিজ আচার্যের মতে, অল্পকালসভূত লাভ কার্যাসাধনের দেশ ও কালের স্নশংযোগ ঘটাইতে পারে বলিয়া ইহা অধিকতর শ্রেয়োবিধায়ক।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত সমর্থন করেন না। ( তাঁহার মতে ) বছকাশ-সন্তৃত প্রভৃত লাভ যদি (ধান্তাদির ) বীজের ন্তায় সমানধর্মবিশিষ্ট হইয়া বিনিপাত বা নাশের অতীত হয় অর্থাৎ বিনা প্রতিবন্ধে স্থাসিদ্ধ হইবার যোগ্য হয়, তাহা হইলে সেইপ্রকার মহান্ লাভই অধিকতর প্রেয় বিধান করে। কিন্তু, ইহার বিপরীত হইলে অর্থাৎ বিনিপাতী বা বিঘ্নবৃহল হইবার সন্তাবনা থাকিলে, পূর্ব্ব লাভটিই ( অর্থাৎ আচার্যোর অভিমত অল্পকালসন্তৃত অল্প লাভটিই ) অধিকতর শ্রোবিধায়ক।

এই প্রকারে, বিজিপীয়ু নিশ্চিত (মিক্র-হিরণা-ভূমিরূপ) লাভের বা লাভাংশে গুণবিশেষের উৎপত্তি বিবেচনা করিয়া, সামবায়িক সামস্তগণের সহিত সংহিত বা সন্ধিবন্ধ হইয়া, নিজ স্বার্থসিদিবিষয়ে ভংপর হইয়া, (শক্রর প্রতি) বানে প্রস্তুত হইবেন ॥ ১৩॥

কোটিলীয় অর্থশাল্পে বাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে মিত্রহিরণ্যভূমিকর্মসন্ধি-নামক প্রকরণের অন্তর্গত মিত্রসন্ধি ও হিরণ্যসন্ধি-নামক
নবম অধ্যায় ( আদি হইতে ১০৭ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### দশম অধ্যায়

# ১১৬ প্রকরণ—ভূমিসন্ধি

"তুমি ও আমি উভয়েই ভূমি লাভ করিব" এই প্রকার পণে **আবদ্ধ স**ন্ধির নাম ভূমিসন্ধি।

( এইভাবে সন্ধিতে আবন্ধ বিজিগীযুও সামস্ত -- ) উভয়ের মধ্যে, যিনি (প্রয়োজনীয় ধন ও জনরূপ ) অর্থ উপদ্বিত করাইয়া সম্পন্ন (ভূমিসম্পদ্যুক্ত ) ভূমি লাভ করিতে সমর্থ হয়েন, তিনিই বিশেষ বা অধিক লাভভাক্ হয়েন।

উভয়ের পক্ষে সমানপ্রকারের সম্পন্ন ভূমির লাভ হইলেও, যিনি বলবান শক্তকে আক্রমণ করিয়া ভূমি লাভ করেন, তিনি অতিসন্ধান বা বিশেষ লাভ করেন। কারণ, (তদ্বারা) তিনি ভূমি লাভ ত করেনই, শক্তরও কর্শন ও নিভ প্রতাপ বিভারও করেন। হর্কল শক্ত হইতে ভূমিলাভ সত্যসত্যই ক্লকর হয়। কিন্তু, এইপ্রকার ভূমিলাভও হুর্কল অর্থাৎ নিরুষ্ট। কারণ, এই অবস্থায় হুর্কল শাজার অনন্তর ভূমিতে অবস্থিত (তদীয় অমিত্রভ্ত—কিন্তু বিজিগীযুর) মিত্রভ্ত সামস্তও তথন (হুর্কলের প্রতি তাঁহার হিংসা দেখিয়া) অমিত্রভাবাপন্ন হইবেন।

হুইটি শক্ত সমান বলীয়ান্ হুইলে, যিনি স্থির ('স্থিত' পাঠেও 'সমান' অর্থ সক্ত হয় ) অর্থাৎ নিজ হুর্গাদিতে স্প্রতিষ্ঠিত শক্রকে উৎপাটিত করিয়া ভূমি লাভ করেন, তিনি বিশেষ লাভশালী হয়েন। কারণ, (শক্তর) হুর্গলাভ, তাঁছার নিজভূমি রক্ষা এবং অক্সান্ত অমিত্র ও আটবিকদিগের প্রতিঘাত করার পক্ষে সহায়তা করে।

চল বা অন্তির (অর্থাৎ হুগাদি-রহিড) অমিত্র হুইতে ভূমিলাভ সমান হুইলেও বিনি হুর্বলসামস্ত (অর্থাৎ বাহার সামস্ত হুর্বলতাবশভঃ সহজে বশংগত হয় সেইরূপ) অমিত্র হুইতে ভূমিলাভ হুইলে ইহাকে বিশেব লাভ বলিয়া ধরা যায়। কারণ, যে ভূমির সামস্ত হুর্বল, সেই ভূমি শীঘই (তল্লাভকারীর) যোগ ও ক্ষেম বর্জন করিয়া থাকে। আর যে ভূমির সামস্ত প্রবল, সেই ভূমি তদ্বিপরীত অর্থাৎ চিরকালে যোগক্ষেম বর্জন করে এবং (তল্লাভকারী বিজ্ঞিপীরুর) কোশ ও দও ক্ষীণ করে।

(বিজিগীযুর পক্ষে) সমৃদ্ধিপূর্ণ, অথচ নিত্য অমিত্রযুক্ত ভূমির লাভ, অথবা মন্দগুণবিশিষ্ট, অথচ অনিত্য মিত্রযুক্ত ভূমির লাভ অধিকতর শ্রেয়স্কর ? নিজ আচিতিব্যার মতে, সম্পাদ্যুক্ত নিত্য অমিত্রমুক্ত ভূমির লাভ প্রশৃক্ষতর। কারণ, সম্পার ভূমির হারা কোশ ও দণ্ড সম্পাদিত হইতে গারে। এবং এই ছই দ্রব্যঅর্থাৎ কোশ ও দণ্ড —অমিত্রগণের উচ্ছেদ্সাধনে সমর্থ হয়।

কিন্তু, কেটিল্য এই মত স্বীকার করেন না। (তাঁহার মতে) নিতা অনিত্রমুক্ত ভূমির লাভে বহুতর শক্রর লাভ ঘটে। আর বে শক্র নিত্য তিনি উপকার বা অপকারপ্রাপ্ত হইলেও শক্রই থাকিয়া বান (অর্থাৎ স্বাভাবিক শক্রতা পরিহার করেন না)। কিন্তু, যিনি অনিত্য শক্র, তিনি উপকার বা অপকারপ্রাপ্ত হইলে শাস্ত হইয়া বান। (নিত্যামিত্রা ও অনিত্যামিত্রা ভূমির লক্ষণ বলা হইতেছে।) বে ভূমির প্রত্যন্ত প্রদেশগুলি বহুতুর্গমুক্ত (অর্থাৎ বাহাতে বধ্যপ্রভৃতির অপমরণ মরল হয়) এবং চৌরগণ, মেল্ছ ও আটবিকগণদারা নিত্য পরিপূর্ণ, মেই ভূমি নিত্যামিত্রা ভূমি বলিয়া আধ্যাত হয়। আর বে ভূমি তিথিপরীত অর্থাৎ যে ভূমির সীমান্তপ্রদেশে বহুতর ছুর্গ নাই এবং চৌর, মেল্ছ ও আটবিকভারা পরিপূর্ণ নহে, তাহার নাম অনিভ্যামিত্রা ভূমি।

অল্পরিমিত। (নিজ রাজ্যের ) নিকটবণ্ডিনী ভূমির লাভ, অথবা মহৎ-পরিমিত। দ্রবর্তিনী ভূমির লাভ অধিকতর প্রেয়: মাধন করিতে পারে শু প্রত্যাসন্না ভূমি অল্ল হইলেও প্রশেশুতর। কারণ, ইহা সহজে প্রাপ্ত হওয়। যায় এবং ইহা সহজে রক্ষা করা যায় এবং (প্রয়োজন হইলে ) ইহাতে সহজে অপদরণ করা যায় (অর্থাৎ আপ্রায় লওয়) যায় )। কিন্তু, ব্যবহিতা বা দূরবর্তিনী ভূমি ইহার বিপরীত হয়।

দ্রবর্ত্তিনী ও সমীপবর্তিনী পভ্যভূমির মধ্যে যে ভূমি (পরের) দশুধারা রক্ষিত হয় দে ভূমি, অথবা যে ভূমি নিজ (দণ্ডাদিবারা) রক্ষিত হয় দে ভূমি অধিকতর শ্রেয়েবিধায়ক ? নিজ (দণ্ডাদিবারা) যে ভূমি রক্ষিত হয় দে ভূমিই প্রশাস্ততর। কারন, এই আত্মধারণা ভূমি নিজবারা সম্পিত কোশ ও দণ্ডযোগে রক্ষিত হয়। কিন্তু, (পরহারা সম্পিত কোশ ও দণ্ডযোগে রক্ষিত) দণ্ডধারণা ভূমি ইহার বিপরীত এবং ইহাতে কেবল পরসম্প দণ্ড (নিজরক্ষার্থ) বাদ করে বিশিয়া ইহাকে 'দণ্ডহান' মাত্র বলা ধার।

মূর্য ছইতে ভূমিলাভ অথবা প্রাজ্ঞ হইতে ভূমিলাভ অধিকতার শ্রেরত্বর ?
মূর্য ছইতে ভূমিলাভ প্রশন্ততর। কারণ, ভূমি ( মূর্য ছইতে ) সহজে পাওরা বার
ও সহজে রক্ষিত হয় এবং ইহা আর ফিরাইয়া দেওরার আশক। থাকে না।

কিন্তু, প্রাক্ত হইতে ভূমিশাভ ইহার বিপরীত হয়। কারণ, ইহা অমাজাদি প্রকৃতিবর্গের অন্তরাগযুক্ত থাকে, অর্থাৎ তজন্ম ইহা স্থধপ্রাপ্যও নহে, স্বক্ষাও নহে, এবং ইহা প্রভাদানের আশঙ্কাযুক্তও থাকে।

পীড়নীয় অরি হইতে অথবা উচ্ছেদনীয় অরি হইতে ভূমিপাভ অধিকতর শ্রেমন্তর? উচ্ছেদনীয় অরি ( তুর্গমিত্রাদির ) আশ্রমহৈতি হইরা অথবা তুর্কলের আশ্রম লাভ করিয়া, অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইলে নিজের কোশ ও দণ্ড লইয়া ( নিজ খান হইতে ) অপসরণের অভিলাবী হয়েন এবং দেইজন্ত প্রকৃতিবর্গ তাঁহাকে ছাড়িয়া দেন। কিন্ত, পীড়নীয় অরি তুর্গ ও মিত্রের সহায়তাপ্রাপ্ত হয় বিশিয়া তেমন অবস্থাপন্ন হয়েন না, অর্থাৎ তুর্গ ও মিত্রেরার ক্ষিত ইইয়া তিনি স্বপ্রকৃতিবর্গহার পরিত্যক্ত হয়েন না।

আবার, হুর্গদারা রক্ষিত হুইটি অরির মধ্যে যিনি স্থলহুর্গাঁর অর্থাৎ স্থলহুর্গযুক্ত তাঁহার নিকট হইতে, অববা যিনি নদীহুর্গাঁর অর্থাৎ নদীহুর্গযুক্ত তাঁহার নিকট হইতে ভূমিলাভ অধিকতর শ্রেরন্ধর ? স্থলহুর্গযুক্ত অরি হইতে ভূমিলাভ স্থকর হয় — কারণ, স্থলহুর্গকে বাধার বেইন করা ধার, অবমন্দিত করা ধার ও অবন্ধন্দিত বা আক্রান্ত করা ধার এবং ইহা হইতে শক্র মহক্তে নিঃস্তত হইতেও পারে না অর্থাৎ ইহা অনায়ানে উচ্ছেন্ত হয় । কিন্তু, নদীহুর্গ (উচ্ছেদ্বিবরে) দিশুণ ক্লেশ উৎপাদন করে এবং শক্রর পানধােগ্য জল (ইহাতে থাকে) এবং (এই জলদারা ধান্তফলপুলাদির উৎপত্তি হয় বলিয়া) ইহা শক্রর জীবনর্তি নাধন করে অর্থাৎ ইহা গ্রন্থছেত হয়।

নদীর্গ ও পর্বতন্ত্র্গে অবন্ধিত অরির মধ্যে নদীত্র্গযুক্ত অরি হইতে ছ্মিলাভ অধিকতর শ্রেমন্তর। কারণ, নদীর্গ হন্তী, স্তপ্তাদিদ্বর। গঠিত পথ, সেতৃবন্ধ ও নোকাদ্বর। তার্ঘ্য হইতে পারে, ইছার গান্তীর্য্য সর্বলা সমান থাকে না, এবং (ইছার তটাদি ভালিয়া দিয়া) ইছা হইতে জল নিঃদারিত করা যায় অর্থাৎ ইছা স্থসাধ্য হইতে পারে। কিন্তু, পর্বতন্ত্র্য স্পৃত্তাবে (শিলাবদ্ধাদিদ্বারা) রক্ষিত, ইছার উপরোধ কঠিন, ইছার উপর আবোহণও কইকর এবং ইছার এক খান (অল্লাদিশ্বারা) ভগ্ন হইলেও অবশিষ্ট সর্ব্ব দ্বান নষ্ট হন্ত্ব না এবং কোন মহাপকারী শক্ত ইছা আক্রমণ করিলে তহ্পরি শিলা ও বৃক্ষের পাতন সম্ভাবিত হন্ত্ব, অর্থাৎ ইছা কষ্ট্রসাধ্য তুর্গ।

নিরবোধী ( অর্থাৎ নৌকাদিতে অবস্থিত থাকিয়া যুক্কারী ) ও স্থলরোধী—
এই উভরের মধ্যে নিরবোধীদিগের নিকট হইতে ভূমিলাভ অধিকতর শ্রেমে

বিধায়ক। কারণ, নিম্নবোধীরা বিশিষ্ট দেশে ও বিশিষ্ট কালেই যুদ্ধ করিতে পারে, ( স্নতরাং ডাছারা স্থসাধা হয় ), কিন্তু, ত্থনাধীরা সব দেশে ও সব কালে যুদ্ধ করিতে পারে ( স্নতরাং ভাষারা হঃসাধা হয় )।

থনক-যোধী ( অর্থাৎ যাহারা ভূমিতে খাত করিয়া দেখান হইতে যুক্ক করে ) ও আকাশবোধী ( অর্থাৎ যাহারা অনারত স্থানে থাকিয়া যুদ্ধ করে ) — এই উভরের মধ্যে খনক-যোধীর নিকট হইতে ভূমিলাভ অধিকতর সাধ্য হয়। করেন, খনকেরা খাত ও শস্ত্র এই উভয় বস্তর সাহায্যে যুক্ক করে ( অতএব, তাহাদের দেশ ও কাল উপক্লক বলিয়া তাহারা স্থেসাধ্য হয় ), কিছ আকাশযোধীর। কেবলমাত্র শস্ত্র লইয়া যুদ্ধ করে ( স্নতরাং দেশ ও কালের উপরোধ নাই বলিয়া হাহারা হঃসাধ্য হয় )।

অর্থশাস্ত্রবিৎ ( বিজিপীয়ু ) এবংবিধ কতসন্ধি সামস্তগণ ও অস্তান্ত শক্ত হইতে পুথিবী ( ভূমি ) লাভ করিয়া বিশেষ বা উন্নতিপ্রাপ্ত হয়েন ॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে বাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে মিত্র-হিরণ্যভূমি-কর্মসন্ধি-নামক প্রকরণের অন্তর্গত ভূমিসন্ধি-নামক দশম অধ্যায়
(আদি হইতে ১০৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### একাদশ অধ্যায়

#### ১১৬ প্রকরণ— **অনবসিত-সন্ধি**

"তুমি ও আমি উভয়েই শৃভস্থানে (গ্রাম-নগরাদির) নিবেশ করিব"—এই প্রকার পণে আবদ্ধ দক্ষির নাম অমবসিশু-দক্ষি (এশ্বলে জনগদনিবেশ, খনিনিবেশ, দ্রব্যবননিবেশ, হস্তিবননিবেশাদি বিশেষ নিবেশের নির্দেশ-বাতিরেকে দাধারণভাবে কেবল 'শৃভানিবেশন' বলা হইয়াছে বলিয়া তক্ষনিভ দক্ষিকে 'অনবদান্ত বা বিশেষভাবে অনির্দারিত বা অনবধারিত'-সন্ধি বলা হইল)।

এইরূপ দলিতে পণবদ্ধ হুই রাজার (অর্থাং বিজিপীয়ু ও সামস্টের) মধ্যে যিনি প্রান্তেলনীয় (ধন ও জনরূপ) অর্থ উপস্থিত করাইয়া জনপদ নিবেশাদি-প্রকরণে উক্ত গুণদম্পর ভূমিতে নিবেশ বদাইতে পারেন, তিনি (অন্তত্তের অপেক্ষার) বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন।

ব্যোজন্ত গণশাল ভূমির মধ্যে যে ভূমি স্থলম্ক ( অর্থাৎ বাছাতে কেবল বৃষ্টির জলের উপর নির্ভর করিয়া শালাদির উৎপত্তি করাইতে হয় ) সেই ভূমি, অথবা যে ভূমি ঔদক ( অর্থাৎ যাহাতে নদী ও জলপূর্ণ তড়াগাদির অন্ধরার শালাদির উৎপত্তি সম্ভবপর হয় ) সেই ভূমি অধিকতর শোরসোধক । মহৎ বা বছ স্থাভূমি অপেকায় অল্প ঔদকভূমি প্রশাস্ততর, কারণ, ইহাতে সভত শালাদির উৎপত্তি হয় এবং ইহাতে ফলোৎপত্তি নিশ্চিত হইতে পারে।

হুইটি হুলভূমির মধ্যেও দেইটিই প্রশন্ততর যাহাতে (শার্দিক ও বাসন্তিক) পূর্বাপর শক্তপ্রব প্রভূত হুইতে পারে, যাহাতে অল্ল বর্ষণেও শক্তাদিকল পাকিতে পারে এবং যাহাতে (দন্তবজাও প্রস্তর্ময়তাদি দোষ না থাকায়) কর্ষণাদি কার্যা বিনা উপরোধে সম্পাদিত হুইতে পারে! আবার হুইটি ওদক ভূমির মধ্যে, সেইটিই প্রশন্ততর যাহাতে ধান্ত ( অর্থাৎ ব্রীহিশালিপ্রভৃতি শক্ত) উপ্ত হুর, কিন্তু যাহাতে ধান্ত উপ্ত হয় না ভাষা উপ্তম নহে ( অর্থাৎ আধান্তবাপ ভূমির অপেক্ষায় ধান্তবাপ ভূমির অপেক্ষায় ধান্তবাপ ভূমিই প্রশন্ততর )।

় এই উভয় ভূমির অক্সম্ব ও বহম্বসংখ্য বিচার করিতে গেলে, যে ভূমি ধান্তাদির উৎপত্তিবশতঃ কমনীয়, কিন্তু পরিমাণে অল্প, তদপেক্ষার যে ভূমি অধান্তযুক্ত বলিয়া কমনীয়, কিন্তু পরিমাণে অধিক, তাহাই প্রশস্ততর। কারণ, (ভূমির) অবকাশ বড় ইইলে, তাহাতে স্থলজ ও জলজ ওযধির উৎপত্তি হয়। এবং তাহাতে স্থলাদি কর্মাও অধিক সংখ্যায় করা যায়। কারণ, ভূমির গুণ কুত্রিম অর্থাৎ কিন্তামাধ্য, (স্তত্ত্বাং অধান্তকান্তভূমি বড় হইলে তাহা ইচ্ছামত ধান্তকান্তও করং ঘাইতে পারে)।

ধনিভোগ ( অর্থাৎ যে ভূমিতে খনির প্রাচ্ন্য বেশী সেই ) ভূমি ও ধান্তভোগ ( অর্থাৎ যে ভূমিতে ধান্তের প্রাচ্ন্য বেশী সেই ) ভূমির মধ্যে, ধনিভোগ ভূমি কেবল কোশরদ্ধিকারক, ( কিন্তু, ) ধান্তভোগ ভূমি কোশ ও কোষ্ঠাগারের রুদ্ধি করে। কারণ, তুর্গাদিকর্শ্যের আরম্ভ ধান্তের উপর নির্ভর করে ( স্থতরাং ধান্তভোগ ভূমিই প্রশন্ততর )। অথবা, খনিভোগ ভূমিও প্রশন্ততর ইইতে পারে, বৃদ্ধি ধনিতে উৎপন্ন বস্তুজাতের বিক্রয়জনিত কারবার বেশী হয়।

নিজ আচার্টের মতে, দ্রবনভোগযুক্ত ভূমি ও হস্তিবনভোগযুক্ত ভূমির মধ্যে দ্রবনভোগযুক্ত ভূমি দর্কপ্রকার হুর্গাদিকর্মের সাধন করিতে পারে বলিয়া এবং ইছা প্রচুর সঞ্চয়ের যোগ্য হয় বলিয়া ইছা অধিকতর শ্রেয়েরিধারক। আর ছন্তিবনভোগযুক্ত ভূমি ভবিপরীত।



কিন্ধ, কোটিল্য এই মত স্বীকার করেন না। ( টাঁহার মতে ) অনেক প্রকার দ্রব্যবন অনেক প্রকার ভূমিতে উৎপাদন করান যায়, কিন্ত হন্তিবন (কোনও কোনও বিশিষ্ট ছানে হয় বলিয়া, স্বেচ্ছায় তেমন ভাবে ) করান যায় না। আবার শক্রব সেনাবধের প্রধান উপকরণ হন্তী ( স্কুভরাং দ্রব্যবনভোগের অপেক্ষায় হন্তিবনভোগ প্রশৃত্ততর )।

বারিপথভাগ ও স্থলপথভোগ—এই উভারের মধ্যে বারিপথভোগ অনিতা অর্থাৎ কদাচিৎ সন্তব্পর, (কিন্তু,) স্থলপথভোগ নিত্য অর্থাৎ সার্কাদিক ( স্বত্রাং অধিকতর উপযোগী )। বিস্তব্যে কোন কোনও ব্যাখ্যাতা এইরূপ ব্যাখ্যা করেন—"এই ছুইপ্রকার পথভোগই যদি অনিতা হয়, তাহা হইলে বারিপথভোগ উত্তম, আর ছুইটিই যদি নিতা হয়, তাহা হইলে স্থলপথভোগ উত্তম"; কিন্তু, এই ব্যাখ্যা সঙ্গত মনে হয় না।

ভিন্নমুখ্যা ভূমি ( অর্থাৎ যে ভূমিতে মায়ন পরশার মিলিত না হইরা ভিন্নই থাকে দেই ভূমি ), অথবা, শ্রেণীমন্ত্র্যা ভূমি ( অর্থাৎ যে ভূমিতে মায়ন পরশার সংহিত বা শ্রেণীবন্ধ হইরাখাকে দেই ভূমি ) অধিকতর শ্রেন্তঃসাধক ? পরশার ভিন্ন মন্ত্র্যাধারা যুক্ত ভূমিই প্রশান্ততর, কারণ, এই প্রকার ভিন্নমন্ত্র্যা ভূমি ( বিন্ধিনীমূর পক্ষে ) সহচ্ছে ভোগ্যা হয় অর্থাৎ ইহা তাঁহার অধিকারভূক্ত করিয়ারাখা যায়, এবং ইহা অন্ত সকলের উপজাগের বিষ্মীভূতও হইতে পারে না, ( আবার ) বিপদের সময় আদিলে ইহা বিপদও সহা করিতে পারে না। কিন্তু, শ্রেণীমন্ত্র্যা ভূমি ইহার বিপরীত ( অর্থাৎ ইহা বশেও আদে না এবং অন্তের উপজাপেরও বিষ্মীভূত হয়, এবং আপদও সহা করিতে পারে ) এবং কৃপিত হইলে ইহা মহাদোবের কারণও হইয়া উঠে ( অর্থাৎ রাজারও উচ্ছেদসাধন করিতে পারে )।

এই ভূমিতে চাতুর্বন্যের নিবাদ দঘদে বিচার করিতে গেলে, বে ভূমি অবরবর্গ-বহুল, অর্থাৎ বাহাতে শুদ্ধ ও গোপালকাদির বাহুল্য অধিক, দেই ভূমিই প্রশান্ততর, কারণ, ইহা দর্কপ্রকারের (কর্ণণভারবহনাদি) কর্ম দহু করিতে দমর্থ হয়। কর্ষণবতী ভূমি (অর্থাৎ কর্ণণোগ্য ক্ষেত্রাদিদম্বিত ভূমি ঘদি বহুপরিমিত হয় এবং নিল্ডিজরণে ফলদায়ক হয়, তাহা হইলে দেই ভূমিও উত্তম। আবার, কৃষিকার্য্য ও অভাভ কার্য্য গোগণ ও গোরক্ষকগণের উপম নির্ভর করে বলিয়া 'গোরক্ষকবতী' ভূমিও প্রশন্ত ইইতে পারে। কিছ, ধনী ব্যক্তিরা ও বণিকেরা (ধাভাদি) পণাদ্রব্যের দক্ষর ও খণাদি দিয়া অভের

অহুত্রহ করিতে দমর্থ ইয়েন বলিয়া 'আঢ়াবণিগ্বতী' ভূমিও উত্তম বিবেচিত হইতে পারে।

উপরি উক্ত ভূমিবিবয়ক সব গুণের মধ্যে অপাশ্রয় বা আশ্রমদানে রক্ষাই প্রশক্তকর গুণ:

প্রত্যের আশ্রয়দায়িক। ভূমি কিংব। পুরুষের আশ্রয়দায়িক। ভূমি অধিকতর শ্রেরকর ? পুরুষের আশ্রয়দায়িক। ভূমিই (অর্থাৎ যাহাতে পুরুষের আশ্রয় পাওয়া সহজ্ব সেই ভূমিই ) প্রশান্ততর, কারণ, রাজ্য পুরুষদিগের যোগেই সম্ভবশং হয়। পুরুষশৃশ্ভ ভূমি বন্ধা। গাভীর মত, কি দোহন করিবে অর্থাৎ কোন্ উপযোগে আসিবে ?

যে ভূমিতে জনপদাদির নিবেশজন্য বহু লোকক্ষয় ও ধনব্যয় ইইবার সম্ভাবনা আছে, দেই ভূমি পাইতে অভিলাধী হইয়া (বিজিগীয়ু তৎপ্রাণ্ডির পূর্বেই ) নিয়-বণিত আটপ্রকার ক্রেডাদের মধ্যে অন্ততমের সহিত পণবদ্ধ হইবেন। ক্রেডাদ প্রকার ভেদ বলা হইতেছে, যথা—(১) ত্বল, (২) অরাজবীজী (যিনি কোনও রাজবংশে উৎপন্ন হয়েন নাই), (৩) নিরুৎসাহ, (৪) অপক্ষ (সহায় দেওয়ার পক্ষরহিত), (৫) অন্তায়বৃদ্ধি প্রজার উপর অন্তায় ব্যবহারকারী), (৬) ব্যসনী (মুগয়াদি ব্যসন্যুক্ত ), (৭) দৈবপ্রমাণ (দৈবের উপর নির্ভর করিয়া কার্য্যকারী), অথবা (৮) যৎকিঞ্চনকারী (যাহা মনে উঠে তাহাই করিতে প্রবন্ধ যিনি)।

যাহাতে নিবেশজন্ত মহালোকক্ষয় ও মহাধনবায় হইতে পাবে এমন ভূমিতে রাজবংশসভূত, হুর্বল ( সামন্ত, জনপদাদির ) নিবেশন করিলে, সমানজাতীয় অর্থাৎ নিজের সহায়তাদায়ী, অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গ সহিত, সোকক্ষয় ও ধনবায়-বশতঃ অবসাদ বা ক্ষয়গ্রস্ত হইয়া পজিবেন।

অবার, বলবান্ ( সামস্ত ) রাজবংশস্ভূত না হইলে লোকক্ষয় ও ধনব্যয়ের ভয়ে অসমানজাতীয় ( অর্থাৎ সহায়তাপ্রদানে অসম্থ ) অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গ-দ্বার। পরিতান্ত হয়েন।

কিন্তু উৎসাহবিহীন ( সামস্ত ), সৈভবলে বলীয়ান্ হইলেও, যথাযথভাবে দণ্ডের প্রণয়ন বা বিনিয়োগ করিতে না পারিয়া, নিজের দণ্ডসহিত পোকক্ষর ওধনবারের সক্ষে সক্ষে নিজেও নাশপ্রাপ্ত হয়েন।

আবার, কোশমুক্ত হইলেও পক্ষ-( অর্থাৎ স্বপক্ষীর মিত্র-) রহিত হওয়ায় ( সামশু ) লোকক্ষর ও ধনবায়ে অন্ত হইতে উপকারপ্রাপ্ত না হইরা কোনও প্রকারে ( সিদ্ধি ) লাভ করিতে পারেন না । ( প্রজার উপর ) অস্তায়ব্যবহারকারী ( সামস্ত ) পূর্বকৃতনিবেশন লোক-দিগকেও উঠাইয়া দেন। তিনি আবার কি প্রকারে অনিবিষ্ট স্থানে (জনপদাদির) নিবেশ করাইবেন ?

ব্যসনী সামস্তের পক্ষেও সেই একই কথা, অর্থাৎ তিনিও অনিবিষ্ট স্থানে নিবেশনে অসমর্থ ইইবেন, ইহাও ব্যাথ্যাত হইল।

(বে দামস্ত) দৈবপ্রমাণ অর্থাৎ দৈবের উপর্ব্ধ নির্ভরশীল, তিনি পুরুষকার-রহিত হওয়ার কোনও কার্যাই আরম্ভ করিতে দমর্থ হয়েন না, আবার কোন কার্যা আরম্ভ হইলেও তাহাতে তিনি বিপদ্প্রান্ত হয়েন—এই জন্ত তিনিও (ক্ষরবায়ে পতিত ইইয়া) নিজেই অবসাদপ্রাপ্ত হয়েন।

অবিমুখ্যকারী (সামস্ত) যথেক্ছভাবে যে কোন কার্য্য করেন বলিয়া কোনও সিদ্ধি লাভ করিতে পারেন না। ভাঁহাদের অর্থাৎ ( গুর্বকাদি আটপ্রকার রাজাদিগের ) মধ্যে এই যৎকিঞ্চনকারী সামস্তই সর্ব্বাপেক্ষা অধিক হানিসাধক হরেন। কারণ, নিজ জাচার্য্যের মতে যে সামস্ত যৎকিঞ্চিৎ আরম্ভকারী তিনি কদাচিৎ বিজিগীযুর কোনও ছিন্ত বা দোষ উপলব্ধি করিতে সমর্থ হইবেন।

কিন্তু, কৌটিল্য মনে করেন যে, তিনি বিজিপীরুর ছিন্তু (কখনও) ষেমন পাইতে পারেন, তেমন ( তথনই আবার ) নিজের বিনাশও প্রাপ্ত হইতে পারেন ( কারণ, বিজিপীরু তাঁছার অনেক দোষের সহিত পূর্ব্বেই পরিচিত আছেন বলিয়া তাঁছাকে অভিভূত করিতে সমর্থ হইবেন )।

ভূর্বলাদি আটপ্রকার সামস্তমধ্যে কোন সামস্তকে জেলভাবে না পাওয়।
গেলে, পার্ফিগ্রাহচিস্তা-নামক প্রকরণে ( এই অধিকরণের ১১৭ প্রকরণে ) যে
রীতি উক্ত হইবে সেই রীতি অবলম্বন করিয়া ( অর্থাৎ, শক্র হইতে বিশেষ বা
অধিক লাভের বিচার করিয়া ) ভূমিনিবেশের ব্যবস্থা করিবেন । ইহার নাম
অভিহিত-সন্ধি ( ভূমির দান ও গ্রহণের করাছারা উৎপন্ন হওয়ায় এই সন্ধি
অবিচাল্য থাকে বলিয়া ইহার এই প্রকার নাম হয় )।

আবার, ( নিজ অপেকায় ) বলবত্তর সামস্ত যদি গুণসম্পন্না অথচ ( ক্লেডার উপেক্ষাবশতঃ ) পুন: প্রাপ্তিযোগ্যা ভূমি ক্রয়ার্থ বিজিপীরুকে যাচনা করেন, তাহা হইলে সেই ভাবে যাচিত হইয়া তিনি ( 'অবসর উপস্থিত হইলে তৃমি আমাকে অস্থগ্রহ করিও' এই বলিয়া ) সৃদ্ধি স্থাপন করিয়া সেই ভূমি তাঁহাকে দিবেন অর্থাৎ তৎসমীপে বিক্রয় করিবেন। ইহার নাম **অনিভৃত-সন্ধি ( অর্থাৎ**, এই সন্ধি বিশাসরহিত-দন্ধি, কারণ, তুর্বদের সহিত প্রবেশের প্রতিজ্ঞান্ত সন্ধিও উল্লেখ্য হইলা থাকে )।

আবার কোন সমশক্তি সামস্ত সেই ভূমি ধরিদ করিতে চাহিলে, যাচিত সমশক্তি (বিজিপীর) নিম্নবর্ণিত কারণ বিশেষভাবে পর্য্যালোচনা করিয়। তাঁহার নিকট ভূমি বিক্রম করিবেন। সেই কারণ এইরূপ চিন্তনীয়, যথা—"এই ভূমি (বিক্রীত হইলেও) পরে ইহা আমার হাতেই ফিরিয়া আসিবে, অথবা আমার নিজ ভোগের বিষয়ীভূত থাকিবে, অথবা এই ভূমির সহিত সম্বন্ধ (অন্ত) শক্ত আমার বশে আসিবেন, অথবা এই ভূমির বিক্রম্বারা আমার কার্য্যসাধক মিত্ত ও হিরণ্যের লাভ সন্তবপর হইবে"।

এই প্রকারে হীনশক্তি ক্রেতার বিষয়ও বুঝিয়া লইতে হইবে, ইহা বলা হইল। এইভাবে, অর্থশাস্ত্রবিৎ (বিজিগীয়ু) মিত্র, হিরণা, জনবহুল ও জনশৃন্ত ভূমি লাভ করিয়া সামবায়িকদিগকে অভিসন্ধিত করিবেন অর্থাৎ সমবায়ে সহায়কারী অক্সান্ত সামস্তগণের অপেক্ষায় বিশেষ লাভপ্রাপ্ত হইবেন ॥ : ॥

কোটিলীর অর্থশাত্তে বাড্গুণা-নামক সপ্তম অধিকরণে, মিত্র-হিরণ্য-ভূমি-কর্মাসন্ধি-নামক প্রকরণের অন্তর্গত অনবসিত-সন্ধি-নামক একাদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ১০৯ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### দ্বাদল অধ্যায়

#### ১১৬ প্রকরণ—কর্মসন্ধি

"তুমি ও আমি উভয়েই হুর্গ নির্মাণ করিব"—এইপ্রকার পণে আবদ্ধ সদ্ধির নাম কর্ম্ম স্থানি । ( হুর্গনির্মাণ বাতীত সেতৃবদ্ধাদিনির্মাণও এইরূপ সন্ধিতে পণ্যিশেষ হইতে পারে।)

এইরূপ সন্ধিতে পণবদ্ধ ছই রাজার (অর্থাৎ বিজ্ঞিগীরু ও সামস্কের) মধ্যে বিনি কৈবকৃত অর্থাৎ স্বভাবহুর্গমন্থানে কৃত, অতএব শত্রুর হুর্ভেড এবং অঙ্কারার আরম্ভ ছুর্গ নির্মাণ করাইতে পারেন, ডিনি (অক্তরের অপেক্ষার) অধিকতর লাভযুক্ত হুইতে পারেন।

এই প্র্যমন্থানে ক্রুত প্র্যঞ্জির মধ্যেও স্থলপ্র্য অপেকায় নদীপ্র্য ও

তদশেক্ষায় শর্কাতপূর্গ অধিকভর শ্রেয়েবিধায়ক অর্থাৎ (ইছারা উন্তরোভর প্রশন্তভর)।

ষাভ গুণ্য

আবার, হইটি সেতৃবন্ধের মধ্যে, ষেটি 'আহার্য্যোদক' ( অর্থাৎ যাহাতে কেবল বর্ধা ঋতুর জলই প্রয়ম্মে একত্রিত করিয়া লইতে হয় সেই ) সেতৃবন্ধ, ভাহার অপেক্ষায় 'সহোদক' (অর্থাৎ যাহাতে স্বভাবতঃ সর্ব্যদা জল অবস্থিত বাকে সেই) সেতৃবন্ধ প্রশাস্ততর। আবার হুইটি সহোদক সেতৃবন্ধের মধ্যে, যেইটি পর্য্যাপ্তরূপে শাস্তবপনের স্থানবিশিষ্ট সেইটি প্রশাস্ততর।

আবার, ছই জবাবনের মধ্যে বিনি নিজের রাজ্যপ্রাস্থ্যে এমন জবাবনিটির ছেদনের ব্যবদ্ধা করান, যাহাতে সারযুক্ত অর্থাৎ প্রচুরফলোদরযোগা অটবী বা জকলমর ভূমি বিভামান আছে এবং যাহা নদীমাতৃক স্থান ( অর্থাৎ যাহাতে কবি-কার্যার্থ নদীজল সর্ববদা পাওরা যার ', তিনি অস্তত্যের অপেক্ষায় বিশেষ লাভ-প্রাপ্ত হয়েন। কারণ, নদীমাতৃক স্থান অতিহ্যথে ( প্রজাদিগের ) আজীবিকার উপ্যোক্তি হয় এবং ইহা ( গ্রভিক্ষাদি ) আপ্রদের সময়ে আশ্রয়ন্থান বলিয়া গৃহীত হয়।

কিন্ত, গুইটি হণ্ডিবনের মধ্যে যিনি নিজ রাজ্যপ্রান্তে এমন হন্তিবন নিবেশ করান, যাহাতে বহুশক্তিশালী জন্ত (হন্তী) আছে, যাহাতে কেবল হুর্বল বন-প্রদেশ আছে (অর্থাৎ যাহাতে কেবল নীচজনের। কোনও প্রকারে বাসন্থান লইতে পারে) এবং যাহাতে অনন্ত (প্রবেশ ও নির্গমবিবরক) ক্লেশবহুল স্থান আছে—ভিনি (অ্যান্তরাপেক্ষায়) অধিকতর লাভপ্রাপ্ত হয়েন।

এই প্রকার হন্তিবনের মধ্যেও বহু কুঠ অথাৎ অনেক শক্তিহীন হন্তিযুক্ত, অথবা অল্প শক্তিশালী হন্তিযুক্ত বন অধিকতর শ্রেয়ঃ দাধন করে ? তদীয় আচার্য্যের মতে, যে হন্তিবনটি শক্তিশালী অলহন্তিযুক্ত দেইটি অধিকতর শ্রেয়োবিধায়ক, কারণ, শক্তিশালী হন্তীর উপর মৃদ্ধ নির্ভর করে। শ্র হন্তী সংখ্যার অল্প হন্তলেও, বহু অশ্র (শক্তিহীন) হন্তীকে ভাগাইয়া দিতে পারে এবং বিশৃত্ধাপিত হন্তিসমূহ নিজপক্ষের অন্তান্ত দৈতকে নই করে।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত স্বীকার করেন না। (তাঁহার মতে) অশক্ত হন্তীও সংখ্যার অধিক হইলে প্রশক্তওর হইতে পারে, (কারণ,) তাহার। সৈন্তসমূহের মধ্যে নানা প্রকার (উপকরণাদির নয়ন ও আনয়নপ্রভৃতি) কর্ম করিয়া, বুদ্ধে নিজপক্ষের আশ্রেরসক্ষপ হইতে পারে, এবং (স্বসংখ্যার বাহলা-ঘারা) শক্তপক্ষের ভর উৎপাদন করিতে পারে ও সেই জন্ত শক্তকর্ভ্ক ধর্ষণের শ্বতীত হইতে পারে। কারণ, বহুসংখ্যক হস্তী কুর্চ বা শ্বশক্ত হইলেও, তাহাদিগের মধ্যে শিক্ষাকর্মদারা শোর্যাগুণ আহিত বা স্থাপিড করা বার, কিন্তু অলসংখ্যক হস্তী দ্র বা শক্ত হইলেও, তাহাদিগের মধ্যে সংখ্যাবছর আনা বার না।

আবার প্রইটি ধনির মধ্যে যিনি এমনটি খনন করাইতে পারেন যাহাতে প্রচুর সারযুক্ত দ্রব্য আছে, যাহাতে প্র্গম পথ নাই এবং যাহাতে অল্প ব্যয়ে কার্য্য আরম্ভ ইতে পারে, তিনি (অভতরের অপেক্ষায়) বিশেষ সাভপ্রাপ্ত হয়েন।

তমধ্যেও, কোনও থনিতে অল্পরিমিত অবচ মহাসারযুক্ত বস্তু, অবহা প্রভূতপরিমিত অবচ অল্পনারমুক্ত বস্তু লাভ করা অধিকতর প্রোয়স্কর ? তদীয় আচার্টের্যার মতে, অল্পারিমিত হইলেও মহাসারযুক্ত বস্তুই প্রশস্তুতর। কারণ, হীর্মক, মণি, মুক্তা, প্রবাল, স্থবর্গ ও রোপ্যধাতু, অল্পসারযুক্ত প্রভূতপরিমিত বস্তু অধিক মূল্যনারা গ্রাস কবিতে (অর্থাৎ খরিদ করিতে) পারে।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত সমর্থন করেন না। (তাঁহার মতে) মহাসার-যুক্ত (বছ্রমণি-প্রভৃতি) বস্তর ক্রেতা বহুকালে ও অল্পসংখ্যক পাওলা যায়, কিন্তু, নিতা প্রয়োজনীয়তার জন্ম অল্পসারযুক্ত বস্তর ক্রেতার সংখ্যা প্রভৃত বা বেশী (স্নতরাং প্রভৃত অল্পসাবযুক্ত বস্তু লাভই প্রশস্ততর)।

বণিকৃপথ নিবেশন বিষয়েও এই প্রকার (বিশেষ-লাভদশ্বরী) বিচার করিতে ইইবে—ইহা অভিহিত ইইল।

বশিক্পথের মধ্যেও বারিপথ অথবা স্থলপথ প্রশস্ততর । তদীয় **আচার্টেরর** মতে, বারিপথট (স্থলপথ অপেক্ষায়) প্রশস্ততর। কারণ, বারিপথ অন্নধনবায় ও অল্প পরিশ্রমে নিশ্মিত হইতে পারে এবং এই পথে প্রভৃত পণাদ্রব্যের নয়ন ও আন্যান সম্ভবপর হয়।

কিন্তু, কেইটিলা এই মত মানেন না। (তাঁহার মতে) বারিপথ (বিপদের সময়ে) গতি নিরোধ করিতে পারে, ইহাতে (বর্ধাদি) সর্ককালে বাতারাত কঠিন হয়। (ছলপথের অপেক্ষায়) ইহাতে অধিক ভয়ের কারণও থাকে, এবং (বিপদ উপস্থিত হইলে) ইহাতে প্রতীকারের উপায়ও না পাওয়া বাইতে পারে। কিন্তু, স্থলপথ ইহার বিপরীতধর্মবিশিষ্ট (স্নতরাং প্রশক্ততর)।

আবার, বারিপথও ছইপ্রকার হইতে পারে, যধা--- কুলপথ (জলের কিনারাতে যে পথ) ও সংযানপথ ( সমুক্রাদি নিরন্তর জলবার) গতাগতির পথ)--- এই থই পথের মধ্যে কুলপথ প্রশৃত্ততর, কারণ, ইছাতে পণ্যপট্রণ বহু থাকে। অথবা, নদীপথও প্রশন্ততর বলিয়া বিবেচিত হইতে পারে, কারণ, ইছাতে জল সতত থাকে এবং ইহাতে বাধাবিদ্ন সহ করা যায়, অর্থাৎ ইহাতে বাধাবিদ্ন অভ্যুৎকট থাকে না।

স্থলপথের মধ্যেও দক্ষিণাপথ অপেক্ষায় হৈমবন্ত পথ, অর্থাৎ উত্তর্জাপথ প্রশস্তাতর। তদীয় **আচিত্রিয়র** মতে, ইহাতে বহমুলাযুক্ত হন্তী, অধ্ব, (কন্ত্রী প্রভৃতি) গন্ধপ্রব্য, দক্ত, চর্ম, রূপা ও অ্বর্ণনিদ্মিত পণ্যপদার্থ পাওয়া যায়।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত অবলন্ধন করেন না। (ভাঁহার মতে) দক্ষিণাপথে কম্বল, চর্ম ও অম্বরূপ বিক্রেয় পদার্থ বাতীত শব্দ, হারক, মণি ও মুক্তা
এবং স্বর্গনিন্দিত পণাপদার্থ প্রভূততর পাওয়া যায়। অথবা, দক্ষিণাপথেও যে
বণিক্পথ বছধনিবিশিষ্ট ও মহামূল্য বিক্রেয়পদার্থযুক্ত, যাহাতে যাতায়াত নির্বিদ্ধে
করা যায়, যাহাতে (কার্যামাধনে) অল্প ব্যায়াম বা পরিশ্রম করিতে হয়—
তাহাই প্রশাস্ততর। অথবা, মেই বণিক্পথও এখানে প্রশাস্ততর গণ্য হইতে
পারে, যাহাতে ফল্ল বা অসার পণ্যও বথেই পাওয়া যায় এবং সেগুলির (ক্রয়বিক্রয়) বিষয়ও প্রভৃত দেখা যায়।

ইহাদারা পূর্ব্ব ও পশ্চিম দিকের বণিক্পথও ব্যাখ্যাত হইল বৃথিতে হইবে। আবার, বণিক্পথের মধ্যেও কোনও পথ চক্রপথ (শকটগম্য পথ )ও কোনও পথ পাদপথ—তন্মধ্য চক্রপথই প্রশস্তত্ব, কারণ, ইহাদারা বিপূল রক্মের (ক্রয়বিক্রয়-) ব্যবহার চলিতে পারে। অথবা, দেশকালের অন্থ্যারে ধরপথ (গদিভগম্য পথ) ও উষ্ট্রপথও প্রশস্তব্র হইতে পারে।

এই তুই প্ৰের বর্ণনাদার। 'অংদপণও' অথাৎ ক্ষদ্ধারা ভারবাহী বলীবর্দাদির প্রথও ব্যাখ্যাত হইল বুঝিতে হইবে।

শক্রর নিজ কর্মের লাভকে বিজিগীযুর পক্ষে 'ক্ষয়' বলিয়। জানিতে হইবে এবং ইছার বিপ্রায় ঘটিলে অর্থাৎ নিজ কর্মের সাফল্য ঘটিলে তাঁহার 'রৃদ্ধি' হইরাছে বৃঝিতে হইবে। যদি উভয়ের ক্মপথ সমানফলগুক্ত দেখা যায়, তাহা হইলে বিজিগীয়ু ইহাকে নিজের 'স্থান' অর্থাৎ স্ব-অবস্থায় অবৃদ্ধিত বলিয়। জানিবেন॥ ১।

আল্প আর ও অধিক ব্যার হইলে ইহাকে 'ক্ষর' বলিতে হইবে, ইহার বিপরীত অবস্থার নাম ( অর্থাৎ অধিক আয় ও অল্প ব্যার ) 'র্দ্ধি'। আর কর্ণাবিধরে আর ও ব্যার সমান হইলে, সেই অবস্থাকে (বিজিগীর) নিজের 'স্থান' বলিয়া জানিবেন ॥ ২ ॥ অতএব, হুর্গাদিকর্মবিহের (বিজিনীয়ু) অপ্প বানে আরক মহাকলবিশিষ্ট কর্মপ্রাপ্ত হইল্ল: (শক্তর অপেক্ষায়) বিশেষ লাভযুক্ত হইতে চেষ্টমান থাকিবেন। এই পর্যান্ত কর্মসন্ধিনমূহ নিরূপিত হইল ॥৩॥

কৌটিলীয় অর্থশান্তে বাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে, মিত্র-ছিরণ্য ভূমি-কর্ম্মক্ষি-নামক প্রকরণের অন্তর্গত কর্মসন্ধি নামক ঘাদশ অধ্যায়
( আদি ইইতে ১১০ অধ্যায় ; সমাপ্ত।

#### নুয়োদল অধ্যায়

### ১১৭ প্রকরণ—পার্ক্সিগ্রাহচিন্তা বা শত্রুর পৃষ্ঠগ্র**হণসম্বচ্ছে** অনুষ্ঠানের বিচার

বিজ্ঞিনীয় ও অরি—এই উভয়কে যদি কথনও একত্র মিলিত হইয়া, নিজ্
শক্তর প্রতি আক্রমণে ব্যাপৃত হইটি ভাঁহাদের (অর্থাৎ বিজিগীরু ও অরির )
নিজ অমিত্রভূত সামস্তের পাঞ্চি বা পশ্চান্তাগ গ্রহণ (বা আক্রমণ ) করিতে হয়, ভাইা হইলে (এই বিজিগীরু ও অরির মধ্যে) যিনি শক্তিসম্পন্ন অমিত্রের পার্কিগ্রহণ করিবেন, তিনিই (অপরের অপেক্রায়) বিশেষ লাভযুক্ত হইবেন। কারণ, শক্তিসম্পন্ন রাজাটি নিজের শক্রর উল্ছেদসাধন করিয়াই পার্কিগ্রাহকেরও উল্ছেদসাধনে সমর্থ হইতে পারেন ( ক্রতরাং যাহাতে এই রাজা নিজ শক্রর দ্বারা নিজের শক্তি অধিকতরভাবে না বাডাইতে পারেন তক্ষ্মণ্ড বিজিগীরু অবশ্রই সেই রাজার পার্কিগ্রহণ করিবেন—যাহাতে তিনি নিজশক্তি বাড়াইয়া তাঁহাকে আক্রমণ করিতে না পারেন)। কিন্ত, হীনশক্তি রাজা এইরূপ কোনও লাভপ্রাপ্ত হয়েন বলিয়া অর্থাৎ শক্রর উল্ছেদ ও পরে পার্ফিগ্রহকের উল্ছেদ করিতে অসমর্থ বলিয়া ভাঁহার পার্ফিগ্রহণে বিজিগীরু বা অরির কোনও বিশেষ লাভ হইবে না।

( হুইটি অমিত্রভূত সামস্তের মধ্যে ) যদি শক্তির তুপ্যতা দেখা যায়, তাহা হইলে যিনি (বিজিপীরু বা অরি) বিপূল ( দ্রবাসভারসহকারে যুদ্ধাদি ) আরম্ভবারী সামস্ভের পার্ফিগ্রহণ করেন, তিনি বিশেষ পাত্যস্কু হয়েন। কারণ, বিপূলারস্কু সামস্ভ নিজ অমিত্রের উদ্ভেদসাধন করিরাই পার্ফিগ্রাহকেরও উদ্ভেদসাধন সমর্থ হইতে পারেন, কিন্তু, অল্পারস্কু ( অর্থাৎ অল্পান্তর্গসন্তারস্কু ) সামস্ভ

নিজের বিক্ষিপ্ত দেনাচক্র দাজাইবার জন্ম বাস্ত বলিয়া তদীয় পার্ফিগ্রাছকের কোনও আশকা থাকে না স্তিরাং এমন রাজার পার্ফিগ্রাছণে বিশেষ লাভ নাই)।

( ছুইটি অমিত সামস্তের মধ্যে ) যদি ( যুদ্ধাদির উপকরণ-সামগ্রীর ) আরম্ভন্মতা দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে যিনি সম্পূর্ণ সেনাদি লইরা যুদ্ধানে প্রারম্ভ সামস্তের পাঞ্চিগ্রহণ করেন, তিনিই বিশেষ লাভবৃক্ত হরেন। কারণ, এই সামস্তের মূলস্থান শৃস্থ বা রক্ষকবিহীন হওয়ায়, তিনি তাঁহার ( পাঞ্চিগ্রাহকের ) স্থান্ধার্হয়েন ( অর্থাৎ পাঞ্চিগ্রাহকে তাঁহাকে সহজে নিজ বশবন্তী করিতে পারেন )। কিন্তু, যে সামস্ত একদেশ সেনা লইরা ( অর্থাৎ মূল্যানে সেনা রাথিয়া অবলিষ্ট সেনা সক্ষে করিয়া ) যুদ্ধানে প্রারম্ভ তিনি পাঞ্চিগ্রাহকের বিরুদ্ধে সর্বপ্রকার প্রতিবিধান করিয়া তৎকার্যে অগ্রসর হয়েন ( স্বতরাৎ এইপ্রকার সামস্তের পাঞ্চিগ্রহণে বিশেষ লাভ নাই )।

আবার, ( তুইটি অমিত্র সামস্কের মধ্যে ) যদি সেনাগ্রহণে সমতা ( অর্থাৎ সংখ্যার সৈন্তসমতা ) পরিদৃষ্ট হয়, তাহা হইলে যিনি চল অর্থাৎ স্থারহিত অমিত্রের প্রতি যানে প্রবর্গ সামস্কের পাঞ্চিগ্রহণ করেন, তিনিই বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন। কারণ, চল বা তুর্গরহিত অমিত্রের প্রতি যুদ্ধ্যানে ব্যাপৃত দামস্ত সহজে (শত্রুজ্জনিত) সিদ্ধি লাভ করিয়া, পাঞ্চিগ্রাহকের উচ্ছেদ্দাধন করিতে পারেন; কিন্তু, স্থিত অমিত্রের ( অর্থাৎ হুর্গদম্পার অমিত্রের ) প্রতি যানপ্রবন্ত সামস্ত তাহা করিতে পারেন না ( স্নতরাং ভাঁছার পাঞ্চিগ্রহণে বিজিগীরুর বিশেষ লাভ নাই )। আবার এই যানপ্রবন্ত সামস্ত (স্থিত অমিত্রের) প্রতিহত ইইতে পারেন; এবং ( স্থিত অমিত্রের ) প্রতি যানপ্রবন্ত সামস্তের পাঞ্চিগ্রহণ করা, হইলেও, পাঞ্চিগ্রাছক সেই 'স্থিতিমিত্র' ইইতে প্রতিমিত্রত ইইরে অবিন্ধিত অমিত্রেরা আক্রান্তও হইতে পারেন ( স্নতরাং এইপ্রকার সামস্তের পাঞ্চিগ্রহণে বিশেষ লাভ দূরে পাকৃক, পাঞ্চিগ্রাহকের হানিই সম্বব্রুর ইইরে )।

এতদ্বারা অর্থাৎ হুর্গসম্পন্ন অমিত্রের উপর আক্রমণকারী দামন্তের পাঞ্চিত্রহণকারীর বিষয় যেমন উক্ত হইল, দেইরূপ পূর্ববর্ণিত হীনশক্তির পাঞ্চিত্রাহী অক্সারন্তীর পাঞ্চিত্রাহী ও একদেশবল লইয়া প্রয়াত সামন্তের পাঞ্চিত্রাহী উক্ত বলিয়া পরিজ্ঞাত হইবে ( অর্থাৎ তাঁহারাও স্বশক্ত হইতে প্রতিনিবৃত্ত হইয়া অব্যক্তি অমিত্র-কর্তৃক অব্যবৃহীত বা আক্রান্ত হইতে পারেন )।

আবার, ( গুইটি অমিত্র সামস্ভের মধ্যে ) ধণি উভয়ের শত্রু থাকা বিষয়ে

ভুল্যতা দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে বিনি ধার্ম্মিক শক্রর প্রতি আক্রমণকারী সামস্তের পার্মিগ্রহণ করেন, তিনিই বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন। কারণ, ধার্মিক শক্রর আক্রমণকারী সামস্তকে স্বজন (ও শক্রজন ) কেইই ভালবাসে না অর্থাৎ তিনি তাহাদের ক্ষেন্ডাজন হয়েন (স্বতরাং এই সামস্ত নিজে সিদ্ধিলাভ করিভে পারেন না বলিয়া পার্মিগ্রাহের স্থলাধ্য হইতে পারেন)। আবার অধার্মিক শক্রর আক্রমণকারী সামস্ত (স্বজন ও প্রজনের) অতীব প্রিয় হয়েন (স্বতরাং তিনি পার্মিগ্রাহকের হঃসাধ্য হয়েন)।

ইহাদার। মূলহর, তাদান্থিক ও কদর্য্য শক্রর প্রতি আক্রমণকারী সামন্তের পাঞ্চিত্রহণের লাভালাভ বিবেচিত হইবে—ইহা ব্যাধ্যাত হইল (মূলহর, তাদান্থিক ও কদর্য্যের লক্ষণসম্বন্ধে ২য় অধিকরণের ৯ম অধ্যায় দ্রইব্য.) (অর্থাৎ মূলহর শক্রর অভিযোগে প্রবন্ধ সামন্তের যিনি পাঞ্চিত্রাহক হইবেন, তাঁহার বিশেষ লাভের সন্তাবনা; আবার কদর্য্য শক্রর অভিযোগী সামন্তের যিনি পাঞ্চিত্রাহক হইবেন, তাঁহারও বিশেষ লাভের সন্তাবনা, কারণ, এই প্রকার সামস্ত নিজ্ঞ শক্রকে উচ্ছেদ করিয়ে পাঞ্চিত্রাহকের উচ্ছেদ করিতে পারেন—স্পতরাং তাঁহাকে পৃষ্ঠ হইতে আক্রমণ করাই আত্মরক্ষারূপ লাভের জন্ম পাঞ্চিত্রাহকের পক্ষে উচিত কার্য্য হইবে)। অতিসন্ধানের (বিশেষ লাভের) যে-সকল হেতু ইতিপূর্কে উদ্লিখিত হইল, দেগুলি গুইটি মিত্র রাজার মধ্যে অন্তাবের প্রতি অভিযোগকারী সামন্তের পাঞ্চিগ্রহণ বিষয়েও বিবেচ্য।

মিত্র ও অমিত্রের প্রতি অভিযোগ বা আক্রমণকারীর মধ্যে যিনি মিত্রাভি-যোগী সামস্তের পার্ফিগ্রহণ করেন তিনি বিশেষ পাভযুক্ত হয়েন। কারণ, মিত্রের প্রতি আক্রমণকারী সামস্ত অভিহথে (মিত্রের সহিত দক্ষিপূর্বক) সিদ্ধি পাত করিবার পরে পার্ফিগ্রাহককেও উচ্ছিন্ন করিতে পারেন। আবার, মিত্রের সহিত সন্ধি করা সহজ, অমিত্রের সহিত তাহা করা যায় না (অর্থাৎ অমিত্রের সহিত সেই সামস্তের সন্ধি করিয়া সিদ্ধিলাত করা কঠিন বলিয়া তাঁহার পক্ষে পার্ফিগ্রাহকের কোনরূপ উচ্ছেদ করা সম্ভবপর নহে)।

আবার, মিত্র ও অমিত্রের উদ্ধার বা উচ্ছেদসাধনকারীর মধ্যে বিনি
আমিত্রের উচ্ছেদকারী সামস্তের পার্কিগ্রহণ করেন তিনিই পাণ্ডবান্ হরেন।
কারণ, আমিত্রের উন্মূপনকারী সামস্ত অপক্ষগণকৈ সংবদ্ধ বা অস্থপহত রাধেন
বিদিয়া (নিজ বন্ধ বাড়াইরা) পার্কিগ্রাহককেও উচ্ছেদ করিতে পারেন।
কিন্তু, অপর রাজা (অর্থাং বিনি মিত্রের উচ্ছেদকারী তিনি) নিজপকের

উপযাতসাধক বলিয়া (হীনবল হইরা) পাফিগ্রাহকের কোন ক্ষতিই করিতে পারিবেন না।

কিছ, মিত্র ও অমিত্রের উদ্ধারকারী সামস্তব্য যদি কোনও লাভ না প্রাপ্ত হইয়া প্রত্যাগমন করেন, তাহা হইলে যে অমিত্রভূত সামস্তটি বড় লাভ হইতে বিযুক্ত এবং বাঁহার পোকক্ষয় ও অর্থবায় অতাধিক, তাঁহার পার্ফিগ্রহণকারী রাজা বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন। আর, তাঁহারা (মিত্রামিত্রের উদ্ধারকারী সামস্তব্য ) যদি কোনও লাভপ্রাপ্ত হইয়া প্রত্যাগমন করেন, তাহা হইলে যে অমিত্রভূত সামস্তটি লাভ ও শক্তিবিষয়ে হীন হয়েন, তাঁহার পার্ফিগ্রহণকারী রাজা বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন। অথবা বাঁহার যাতব্য অরি, শক্রর (অর্থাৎ বিদ্ধিলীয়ু প্রভৃতির) সহিত যুদ্ধরূপ অপকারকরণে সমর্থ তাঁহার পার্ফিগ্রাহকও বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন।

আবার, সমানগুণবিশিষ্ট ছই পার্ফিগ্রাহকের মধ্যে যিনি সাধন্যোগ্য কার্য্যের আরম্ভে সৈন্তবলের উপাদানবিধরে (অক্সভরের অপেক্ষায়) অত্যধিক, তথা যিনি স্বরং কিতশক্ত অর্থাৎ ছর্গাদিতে অবস্থিত শক্ত (অর্থাৎ যথন অক্সভরটি চলশক্ত বা প্র্যাদিতে অনবস্থিত শক্ত ), অথবা যিনি (যাতব্যের) পার্শ্ববর্তী বা সমীপবর্তী আছেন, তিনি বিশেষ লাভ্যুক্ত হয়েন। আবার, (যাতব্যের) পার্শ্বয়ায়ী রাজা যাতব্যের অভিসরণ করিয়া তাঁহার সহিত মিলিত হইতে পারেন এবং (অপর আক্রমণকারীর) মূল্ফানের (রাজ্যানীর) বাধাবিগ্রও ঘটাইতে পারেন। কিন্তু, পশ্চাৎ বা দূর্জ্যায়ী রাজা (অপর আক্রমণকারীর) মূল্ঞানে বাধা দিতে পারেন না।

শক্তর চেষ্টা বা ব্যাপারের নিরোধকারী পার্ষিগ্রাহ তিন প্রকারের হইতে শারে, বথা—(১) (অভিযোগ বা আক্রমণকারী শক্তর) দামস্ত বা বিষয়ানস্তর রাজা, (২) তাঁহার পশ্চাদ্ভাগে অবস্থিত রাজা, ও (৩) তাঁহার তুইপার্শবর্ত্তী প্রতিবেশী রাজা ॥ ১ ॥

(অভিযোক্তা) বিজিগীর ও তাঁহার অরির মধাবতী ইইয়। অবস্থিত গুর্মল রাজাকে অক্তন্ধি বলা হয়। (এই রাজা পার্ফিগ্রাহক ইইবার অসুপযুক্ত) কারণ, বলবান কোন রাজা ইইতে প্রতিঘাত উপন্থিত ইইলে এই রাজা গুর্ম বা অটবীতে পলাইয়া বান (অর্থাৎ এই ভাবে তিনি তিরোহিত হয়েন বলিয়াই তাঁহার নাম 'অস্তার্কি')॥ ২ ।

(পূর্বেনাক্তলক্ষণবিশিষ্ট) মধ্যম রাজাকে বশে আনিতে অভিশানী অরি ও

বিভিনীবুর মধ্যে, তিনিই অধিক লাভযুক্ত হইবেন বিনি মধ্যমের পাঞ্চিগ্রহণ করেন এবং তাহা করিয়া কিছু লাভপ্রাপ্তির পরে অপগত হইরা, সেই মধ্যমঞ্চেনীয় মিত্র হইতে বিযুক্ত করিতে পারেন এবং বিনি নিজের অমিত্রকেও (সন্ধিদারা) মিত্র করিয়া লইতে পারেন। উপকারকারী শত্রুও সন্ধির যোগ্য হইতে পারেন, কিন্তু, অমিত্র রাজা মিত্রভাব হইতে বিরহিত বলির। তিনি সন্ধানের যোগ্য নহেন।

ইহাদার। (মধ্যমকে বশ করার ) রীতিতে উদাদীনকেও বশ করিতে হয়---এই কথাও বলা হইল।

কিন্ত, পার্কিগ্রহণে ও যুদ্ধাভিষানে প্রবৃত্ত রাজন্বরের মধ্যে (ভাঁহারই) সবিশেষ লাভ বা উরতি হইবে, যিনি মন্ত্রযুদ্ধ অবলম্বন করেন (অর্থাৎ যিনি মুদ্ধক্ষেত্রে অবভীর্ণ না হইরা মন্ত্রহারা অর্থাৎ দত্তী, রসদ, তীক্ষাদি গৃচ্পুক্ষবের প্রয়োগদারা শক্রনাশের চেষ্টা করেন)। কারণ, ব্যায়ামযুদ্ধে (অর্থাৎ যুদ্ধক্ষেত্রে অবভীর্ণ হইয়া অন্তর্শন্তের প্রয়োগদারা রুত্যুদ্ধে) অভাত্ত লোকক্ষয় ও ধনবার হর বলিয়া (অভিযোক্তা ও অভিযুক্ত) উভয়ের অর্থির বা অম্মন্তি ঘটে। আবার যুদ্ধে জয়লাভ করিরাও, দেনা ও কোববিষয়ে ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়া (জেতা) পরাজিতপ্রায় হইয়া থাকেন। ইহাই তদীয়

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত মানেন না। (তাঁহার মতে) যত মহুলক্ষ্ই হউক ও যত ধনবায়ই হউক, (ব্যায়ামযুদ্ধারাই) শত্রুর বিনাশ সর্বাদাই অভিমত বলিয়া গৃহীত হওয়া উচিত।

আবার, লোকক্ষয় ও ধনব্যয় সমান ইইলেও, যিনি ( বোদা বা প্রতিবোদা) প্রথমত: নিজের দ্যা সেনাকে ( অর্থাৎ রাজ্যের উপঘাতকারী ও রাজ্যোহাচরবে ব্যাপৃত সেনাকে ) ( শক্রদারা ) ঘাতিত করাইয়া নিক্টক হইয়া, পরে নিজের বশবর্জী সেনা লইয়া যুদ্ধ করেন, তিনি বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন।

আবার সর্বপ্রথম দৃশ্বলের ঘাতনকারী রাজদ্বরের মধ্যে তিনিই বিশেষ লাভযুক্ত হয়েন, যিনি সংখ্যায় অত্যধিক ও শক্তিশালী অত্যন্তদৃশ্ব নিজ সেনার বধ উৎপাদন করাইতে সমর্থ হয়েন।

এতদার। অমিত্রবল ও আটবিকবলেরও ঘাতন পূর্কবং সাধনীর বলিয়। ব্যাধ্যাত হইল :

হধন বিভিন্নীৰ সহং, পাঞ্চিগ্ৰাহ বা অভিযোক্তা ( আক্ৰমণকারী ), অধবা

বাতব্য হওয়ার অবস্থার পড়িবেন, তথন তিনি নিয়োক্তরূপ নেতৃত্বের কার্য্য করিবেন। ৩।

বিজিপীয়ু নিজের মিত্রের উপর আক্রমণকারী শক্ররাজার পার্ফিগ্রহণ তথনই করিবেন ( অর্থাৎ স্বয়ং পার্ফিগ্রাহের অবস্থাপর হইবেন), বথন ভিনি পূর্কে ( শক্রর পশ্চাছর্তী ) আক্রম্প-নামক ( নিজমিত্রভূত ) রাজাকে পার্ফিগ্রাহাসার-নামক ( তৎপরবর্তী ) রাজার সহিত যুদ্ধে ব্যাপুত করাইতে পারিবেন। ৪॥

বিজ্ঞিপীরকে নিজে অভিযোক্তার অবস্থাপন্ন হইতে হইলে, তিনি আক্রণ-নামক (স্বপৃষ্ঠবর্তী) মিত্রদারা পার্ফিগ্রাহকে নিবারিত করিবেন এবং আক্রন্দাসার-নামক (নিজ মিত্রভূত) রাজাদার। পার্ফিগ্রাহাসার-নামক (স্বশক্ষভূত) রাজাকে নিবারিত করিবেন। ৫॥

আবার, সন্মুখেও (বিধিসীয়ু) নিজ মিত্রকে অরিমিত্রের সছিত যুদ্ধ করাইবেন এবং অরিমিত্র-মিত্রকে নিজের মিত্রমিত্র-নামক রাজাহারা বারিত করিবেন ॥ ৬॥

বিদ্ধিপীয়ু স্বয়ং অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইলে, তিনি নিজ মিত্রদ্বারা নিজের আক্রমণকারী শক্তর পার্ফিগ্রহণ করাইবেন, এবং তাঁহার ( শক্তর) আক্রমণভূত রাজ্যকে নিজের মিত্রমিত্রদ্বারা পার্ফিগ্রহণ কার্য্য হইতে নিবারিত করিবেন। ১॥

এই প্রকারে, বিজিগীয়ু মিত্রপ্রকৃতিসম্পদে যুক্ত মণ্ডলকে ( রাজপরম্পরাকে ) নিজের সহারতার জন্ত পুরোদেশে ও পৃষ্ঠদেশে নিবেশিত বা স্থাপিত করিবেন । ৮।

(বিজ্ঞিপীর) সমগ্র রাজ্যগুলে নিভাই দৃত ও গৃঢ়পুরুবদিগকে বাস করাইবেন এবং শক্রদিগের সহিত (বাহিরে) মিত্রভাব দেখাইয়া ডাহাদিগকে একটি একটি করিয়া মারিয়া ডিনি স্বরং সংবৃত থাকিবেন অর্থাৎ নিজের আকৃতি ও ইঞ্চিত কাহাকেও বৃথিতে দিবেন না ৫ ১ ॥

সংবরণরহিত বিজিপীরুর কার্যাঞ্চল বিশেষভাবে প্রাপ্ত হইলেও তাহা নই হয়,
ইহাতে কোন সন্দেহ নাই। সমূদ্রে যে ব্যক্তির প্রব (নোকাদি তরণ-নাধন)
ভাকিয়া গিয়াছে, তাহার বেমন বিপদ ঘটে, অসংবৃত রাজারও জ্জ্রণ বিপদ ঘটে
(স্তরাং বিজিপীবুকে আকার ও ইঞ্চিত সংবৃত রাধিরা মন্ত্রগুণ্ডি বাধিতে
ইইবে ) (১০)

কৌটিলীর অর্থপাত্রে বাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে পার্কিগ্রাহচিতানামক ব্রুয়োদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ১১১ অধ্যার ) সমাপ্ত।

## চতুৰ্দশ অধ্যায়

### ১১৮ প্রকরণ—হীনশক্তিপুরণ

সামবারিক রাজগণবার। (অর্থাৎ বাঁহারা বছসংখ্যক হইরা মিলিড অবস্থার আক্রমণকারী হয় ভাঁহাদের বারা) অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইলে, বিজিপীর ভাঁহাদের মধ্যে বিনি প্রধান (ও ধর্মাত্মা) ভাঁহাকে বলিবেন—"তোমার সহিত আমার সদ্ধি বর্ত্তমান পাক্ক" (এবং সেই রাঞ্চা লোভী ইইলে তিনি ভাঁহাকে বলিবেন)—"এই হিরণ্য (বা নগদ টাকা) ভোমাকে দিভেছি এবং আমি ভোমার মিত্র বহিলাম—কান্তেই ভোমার রিদ্ধি হইল (অর্থাৎ আমার দের ধন ও আমার মিত্রভাব—এই ছইটি লাভবারা ভোমার দ্বিশুণ বৃদ্ধি হইল); স্বতরাং নিজের (ধন ও জন) কর করিয়া বাক্যমাত্রবারা মিত্রভাবাপর এই শক্রদ্দিগকে বৃদ্ধিত করা ভোমার উপযুক্ত কার্য্য হইবে না, কারণ, ইহারা বৃদ্ধিত হইয়া) ভোমাকেই পরে গরাভৃত করিবে"।

অথবা, (বিজিপীয়ু দেই সামবায়িকদিগের প্রধানকে সামঘার) তুই করিতে না পারিলে) এইরূপ ভেদের কথা তাঁহাকে বলিবেন—"যে প্রকারে অনপকারী আমাকে ইহারা সমবেত হইয়া আক্রমণ করিতেছে, দেই প্রকারে ইহারা উরত অবস্থাপ্রাপ্ত হইয়া একত্র মিলিত হইরা, অথবা তোমার ব্যদনের অবস্থা দেখিলে ভোমাকেও আক্রমণ করিবে, কারণ, উপচিত বল চিন্তকে বিকারগ্রন্থ করে. স্থতরাং তুমি তাহাদের দেই বল বিঘাতিত কর"।

এইভাবে দেই সামবায়িকগণ ভেদপ্রাপ্ত হইলে, তন্মধ্যে তাহাদের প্রধানকে শীকার করিয়া লইয়া (বিজেগীরু) হীনদিগের উপর আক্রমণ করিবেন। অথবা, হীনদিগকে শীকার করিয়া লইয়া, (তিনি) প্রধানের উপর আক্রমণ করিবেন। অথবা, বে প্রকারে নিজের কল্যাণ হইতে পারে, (তিনি) সেই প্রকারই করিবেন। অথবা, তাহাদের প্রভ্যেকের সহিত অক্তরাজগণদারা বিরোধ ঘটাইয়া বিসংবাদ বা অমিলন ঘটাইবেন।

অথবা, তিনি বহুতর ধন-প্রদানের প্রতিশ্রুতিঘার। প্রধানকে ভিন্ন করির।
আনিরা, (তাঁহার ঘারা) অস্তান্ত রাজার সহিও সন্ধি করাইবেন। তারপর
উভয়বেতন-নামক গৃচপুরুষেরা সেই প্রধানের অধিকতর ধনলাভের কথা প্রকাশ
করিরা দিয়া সামবারিকদিগকে এইরুণ বলিরা প্রধানধারা কারিত সন্ধির ভক

বটাইবে—"তোমবা তোমাদের প্রধানদার। অভ্যন্ত বক্ষিত হইয়াছ।" এইভাবে (সামবায়িকেরা ) প্রধানের প্রতি বিরুদ্ধভাবাপয় হইরা দ্বিত হইলে, (বিজিয়রু ) প্রধানের সহিত কত সদ্ধির ব্যভিচার করিবেন অর্থাৎ তাঁহাকে প্রতিক্রত ধন দিবেন না। অনস্তব (অর্থাৎ সদ্ধিদ্বণের পরে) উভরবেতন গৃচ্পুরুবেরা প্রয়ায় এই সামবায়িকদিগের মধ্যে (প্রধান হইতে) ভেদ আনয়ন করিবে এবং বলিবে—"আমরা পূর্কে বাহা প্রকাশ করিয়াছিলাম (অর্থাৎ অভীক্ষিত ধন না পাইরা ভোমাদের প্রধানটি সদ্ধি দ্বিত করিয়াছেন) তাহা সভ্যই প্রতিপন্ন হইল"। এই উপায়ে ভেদপ্রাপ্ত সামবায়িকদিগের অন্তত্মকে নিজের আত্রক্ষেয় আনিয়া ভিনি অন্তের উপর অভিযোগ বা আক্রমণের চেটা করিবেন।

যদি সামবায়িকগণের কোন প্রধান না থাকেন, তাহা হইলে (বিজিগীরু)
নিম্নে উল্লিখিত নয়প্রকার রাজাদের মধ্যে পরবর্ত্তীটির অভাবে পূর্ববর্ত্তীকে স্ববলে
আনিতে চেষ্টা করিবেন। সেই নয় প্রকার রাজা, যথা—(১) যিনি সামবায়িকদিগকে উৎসাহিত করিতে পারেন, (২) যিনি স্থিরকর্মা অর্থাৎ শত্রুর উদ্দেদরূপ
পরিণামকার্য্যের সমাধা না করিয়া পশ্চাৎপদ হইবেন না, (৩) বাহার অমাত্যাদি
প্রকৃতিবর্গ থ্ব অসুরক্ত, (৪) যিনি লোভবশতঃ রাজসংগে যুক্ত হইয়াছেন,
(৫) যিনি (রাজসংঘাতের) তায়ে ভাঁহাদের সহিত মিলিত হইয়াছেন, (৬) যিনি
বিজিগীরুর জায়ে তাঁহাদের সহিত যুক্ত হইয়াছেন, (१) যিনি নিজে রাজ্যের সহিত
ভাঁহাদের সম্বন্ধ রাখিতে ইচ্ছুক হইয়াছেন, (৮) যিনি বিজিপীরুর নিজ্ঞাত্ত (এখন সামবায়িকদিগের সহিত যুক্ত ), এবং (১) যিনি নিজের চল অমিত্ত অর্থাৎ তুর্গাদিরহিত নিজ্ঞাক।

(বিজিক্টারু) ভাঁছাদিগকে এই প্রকারে সাধিত করিবেন—উৎসাহরিতা সামবারিককে আত্মসমর্পণিদ্বারা ( অর্থাৎ 'আমি অমাত্যাদিসহ তোমার আরস্ত, আমাকে দব কার্য্যেই নিয়েজিত করিতে পার, কেবল আমাকে তৃমি উল্লিপ্ত করিতে পার, কেবল আমাকে তৃমি উল্লিপ্ত করিও না' ইত্যাদিরূপ বলিরা ), দ্বিরকর্মা সামবারিককে অন্থনরসহকারে প্রণামনারা (অর্থাৎ 'আমি ভোমার দ্বারা) জিত হইরাছি, তৃমি সর্বস্তপেই উৎকৃষ্ট' ইত্যাদি বলিরা নিজ মন্তক তৎসমীপে অবনত করিয়া ), অন্থরক্তপ্রকৃতি সামবারিককে কন্তাগ্রহণ বা কন্তাপ্রদান দ্বারা, লুক্ত সামবারিককে দ্বিতণ লাভাংশ প্রদানঘারা, সামবারিকগণের জয়ে ভীত হইরা ভৎসক্ষত সামবারিককে কোল ও সেনাপ্রদানদারা ( সাধিত করিবেন )। বিজিসীরকে ভরকারী সামবারিককে তিনি কোন প্রভিত্ব ( আমিন ) দ্বির ক্রিরা, নিজের উপর বিশ্বাস ক্রাইবেন ( অর্থাৎ 'জামি

বে ভোমার কোনও অপকার করিব না এই বিবন্ধে অমুক আমুক রাজা সাক্ষী থাকিবেন' এই বলিয়া বিশাস উৎপাদন করাইবেন )। রাজ্যপ্রতিসম্বন্ধ সাম-বারিককে একীভাব উপছাপিত করিয়া (অর্থাৎ 'তুমি ও আমি এক, আমার পরাজ্বরে তোমারও পরাজ্বর, স্থতরাং অন্ত রাজাদিগের সমবায়ন্ধারা আমাকে আক্ষমণ করা তোমার উচিত হইবে না' ইত্যাদি বলিয়া ), নিজমিত্র রাজা সামবায়িক হইপে তাঁহাকে উভরতঃ প্রিয় ও হিতবচনদ্বারা কিংবা ( পূর্ববাবস্থিত করপ্রাপ্তি প্রভৃতি ) উপকার ভাগে করিয়া ( অর্থাৎ পূর্ববিহিত করাদি না গ্রহণ করিয়া ), এবং চল ( ছুর্গাদি-রহিত ) অমিত্র সামবায়িককে অনপকার ( অপকার না করা ) ও উপকার করার কথাদারা বিশাসিত করিয়া ( বিজিগীয়ু ) নিজ অস্থক্স করিছে চেইমান হইবেন । অথবা, ( সামবায়িকগের মধ্যে ) বিনি শেভাবে ( রাজসংঘ হইতে ) ভেদপ্রাপ্ত হইতে পারেন, ( বিজিগীয়ু ) ভাঁহাকে সেইভাবেই শ্বশে আনিতে বছবান হইবেন । অথবা, সাম, দান, ভেদ ও দও — এই চারি উপায়ের প্রয়োগদ্বারা তাঁহাকে নিজের বশে আনিতে চেষ্টা করিবেন —বেমন আমরা ( অভিযাত্মৎকর্ম্ম-নামক ৯ম অধিকরণে ) আপৎপ্রকরণে ( ব্য অধ্যায়ে ) ব্যাখ্যা করিব তেমন ভাবে ।

অথবা, (বিজ্ঞিনীর) নিজের উপর আপতিত ব্যসনের উপঘাত বা নাশবিষ্টে 
ঘরায়ক্ত হইরা কোশ ও দও বা দেনাদ্বারা অমুক দেশে, অমুক কাশে ও অমুক 
কার্যো নাহায়া দেওরার প্রতিক্রাতিতে বিখাসমুক্ত সমবারিকদিগের সহিত সঞ্চি
বিধান করিবেন। এইভাবে ফুতসন্ধি হইয়া ক্রীণশক্তি হইলে নিজ্ঞকে উন্নততর
করিবার জন্ত শক্তিহীনতার প্রতীকার করিবেন।

(বিজিগীরু) নিজে পক্ষবিধরে হীন হইলে, বন্ধু ও মিত্ররূপ পক্ষ দ্বির করিঃ। স্টবেন এবং শত্রুর অভেন্ন হুর্গ নির্মাণ করাইবেন। বে-হেতু রাজা হুর্গ ও মিত্র-দ্বারা সমন্বিত হইলে স্বপক্ষীর ও ধরপক্ষীরগণেরও পূজ্য হয়েন।

মন্ত্রশক্তিছীন (বিজিপীরু) প্রাক্ত প্রুবদিগের অধিক সংগ্রহ করিবেন (অর্থাৎ তত্তৎ অধিকারপদে তাঁহাদিগকে বছলভাবে নিযুক্ত করিবেন) এবং বিভাতে বাঁহারা বৃদ্ধ বা নিঞ্চাত তাঁহাদিগের সংযোগ বা সংগতি করিবেন। এই প্রকার করিলেই (রাজা) তৎক্ষণাৎ কল্যাণপ্রাপ্ত হয়েন।

প্রভাব ব্য প্রাক্তুশ জি ছীন (বিজিনীর অমাত্যাদি) প্রাকৃতিবর্গের বোগ ও ক্ষেম দিন্দির জন্ত বন্ধবান্ হইবেন। (কারণ), জনপদই (প্রগাদি) সর্বকর্ষের মূল কারণ এবং ভাষা হইভেই (রাজার) প্রভাব অর্থাৎ কোশ ও সপ্তল্প ভেলঃ উৎপন্ন হর। আবার হুর্গ দেই প্রভাবের নিবাসন্থান এবং আপদ উপস্থিত হুইলে (রাজার) নিজয়কার স্থানও হুর্গ।

সেতৃবন্ধ নানাপ্রকারের শক্ষ উৎপাদনের মূলকারণ। কারণ, সেতৃবন্ধদারা রক্ষিত জলের সাহায়ে উপ্ত শক্ষাদির ক্ষেত্রে রৃষ্টিসাধ্য গুণের লাভ নিতাই লগ্ন রহিয়াছে ( অর্থাৎ সেতৃবন্ধের জলের সাহায়ে প্রত্যেক ঋতুতেই শক্ষাদির উৎপত্তি দন্তাবিত হয়)।

বণিক্পথ শক্রকে বঞ্চিত করিবার পক্ষে প্রধান কারণ। যে-ছেতৃ দেনা ও গৃচপুরুবদিগকে শক্রর দেশে প্রেরণ ও শান্ত, কবচ, যান ও বাছনের ক্ষরবিক্ষর-ব্যবহার বণিক্পথছারাই করা যায়। এবং (পরদেশেণংপন্ন পণ্যাদির স্বদেশে) প্রবেশ ও (নিজদেশে উৎপন্ন পণ্যাদির পরদেশে) নির্বরন বা প্রেরণ (বণিক্পথভারা সাধিত হয়)।

থনি সংগ্রামের ( অস্তাদি ) উপকরণসমূহের মূল করণ। দ্রব্যবন ( সারদারু-প্রভৃতির বন ) তুর্গকর্ম এবং যান ও রথনির্মাণের প্রধান কারণ।

হস্তিবন হস্তীর উৎপত্তির প্রধান কারণ।

বন্ধ (গোষ্ঠ বা গোশালা—এম্বলে শক্টি অস্তান্ত পশুর রক্ষাম্বানকেও উপলক্ষিত করে) গজ, অহা, গৰ্দভ ও উষ্ট্রের উৎপত্তির প্রধান কারণ।

উপরিউক্ত দ্রবাসমূহ যদি নিজের না থাকে, তাহা ছইলে বন্ধু ও মিত্রকুল ইইতে তৎসংগ্রন্থ করা (বিজিগীয়ুর উচিত ছইবে)।

উৎসাহশক্তিহীন (বিজিগীর) নিজের শাতাস্থদারে শ্রেণীপুরুষ (১ম অধিকরণে ১ম অধ্যার দ্রন্থরা), শ্রপুরুষ এবং শক্তর অপকরণশীল চৌরগণ, আটবিক ও দ্রেছজাতির পুরুষ ও গৃচপুরুষগণের দংগ্রহ করিয়া (নিজ উৎসাহশক্তির) পূরণ করিবেন। অথবা (বিজিগীর) শক্তর সহিত দন্ধিতে মিশিয়া ("পরমিত্তঃ" পাঠ হইলে — 'বাহিরে শক্তর মিত্ত মাজিয়া'—এইরূপ ব্যাখ্যা ইইতে শারে) প্রতীকার করিবেন, কিংবা আবলীয়স-নামক অধিকরণে বক্ষামাণ প্রতীকারসমূহ শক্তর উপর প্রয়োগ করিবেন।

এই প্রকারে (বিজিপীর, বন্ধু ও মিত্ররূপ) পক্ষ, (বিস্তার্কাদির সংযোগাদি-রূপ) মন্ত্র, ( হুর্গদেতৃবন্ধ প্রভৃতিরূপ) ক্রবা ও (শ্রেণীপুরুবাদিরূপ) বলঘারা শিশার বা প্রিডল্ডিক হইয়া নিজের শত্রুর প্রতীকারার্থ নির্গত হইবেন ৪১৪

কোটিলীর অর্থশান্তে যাড্গুণ্য-নামক দপ্তম অধিকরণে হীনশক্তিপূরণ-নামক চতুর্দ্ধশ অধ্যার (আদি হইতে ১১২ অধ্যার ) সমার্য।

## পঞ্চল অধ্যায়

## ১১৯-১২০ প্রকরণ--বিশ্ববান্ শক্তের সহিত বিগ্রহ করিয়া ছুর্গ-প্রেবেশের হেতু ও দণ্ডহারা উপনত রাজার ব্যবহার

কোনও তুর্বল রাজা কোনও বলবান রাজাকর্ত্বক অভিযুক্ত বা আঞান্ত হইলে আ্ফুরণকারী রাজার অপেক্ষায় অধিকতর বলশালী রাজাকে আঞায় করিবেন; এবং শেষোক্ত রাজাটি এমন হওয়া চাই যে অক্ত বলশালী (অভিযোক্তা) রাজাও মন্ত্রশক্তিধার) তাঁহাকে বঞ্চিত করিতে দমর্থ হইবেন না।

আশ্রয়দানে যোগ্য রাজারা যদি তুল্যদেনাশক্তিও তুল্যমন্ত্রশক্তিযুক্ত হরেন, তন্মধ্যে তাঁহাকেই ( হুর্কাল রাজা ) আশ্রম করিবেন, বাঁহার (অমাত্যাদি) আয়ন্তবর্গের বিশেষ ( মন্ত্র- ) সম্পৎ আছে এবং তত্তুলাতায়ও বাঁহার বৃদ্ধ- (বিস্তার্দ্ধ- ) সংযোগ বিশেষভাবে আছে।

যদি ( অভিযোক্তা রাজার অপেক্ষায় ) বিশেষ বলশালী কোনও রাজ। ( আশ্রয়ার্থ ) না পাওয়া যায়, তাহা হইলে ( ত্র্বল রাজা ) আক্রমণকারী বলবান্ রাজার ভূল্যশক্তি ও ভূল্যসংখ্যক-সৈত্তযুক্ত ( অভ্যান্ত রাজার ) সহিত একএ মিলিত হইয়া, ( প্রবল শক্রর সহিত ) ততদিন যুদ্ধরত থাকিবেন, যতদিন প্র্যান্ত ভিনি নিজের মন্ত্রশক্তি ও প্রভূশক্তির প্রয়োগে বিশেষ লাভযুক্ত না হইতে পারেন ( কোন কোনও ব্যাখ্যাকর্ত্তা 'অভিসম্পধ্যাৎ' পদের কর্ত্তা হইবে 'শক্রঃ'—এইরগ নির্দেশ করিয়াছেন—ইহা সক্ত মনে হয় না )।

তৃদাপ্রকারের মন্ত্রশক্তি ও প্রভূশক্তিযুক্ত রাজার। আশ্রয়দানার্থ উপস্থিত থাকিলেও, তন্মধ্যে ( তুর্বল রাজা ) তাঁহাকেই আশ্রম করিবেন, যিনি বিপুলারম্ব ( অর্থাৎ যিনি বিপুল দ্রব্যসামগ্রী সইয়া কার্য্যারক্তে প্রস্তুত আছেন )।

নিজের মত সমানশক্তি আশ্রয়ণাতাদের অতাবে, ( গ্র্বল রাজা ) বলবান্
অভিষোক্তা হইতেও হীনশক্তিসম্পন্ন, তমহানয়, উৎসাহী ও (অভিযোক্তার-)
শক্তপৃত রাজগণের সহিত মিলিত হইয়া তভদিন পর্যান্ত যুদ্ধরত থাকিবেন,
বভদিন পর্যান্ত তিনি নিজের মন্ত্রশক্তি, প্রভুশক্তি ও উৎসাহশক্তিদারা বিশেষ শাভযুক্ত না হইতে পারিবেন। আবার, তুলা উৎসাহশক্তিসম্পন্ন রাজাদিগের মধ্যেও তিনি তাঁহাকেই আশ্রয় করিবেন (বাঁহার সাহায়ে ) নিজের মৃত্যোগ্য ভূমিলাভের বিশেষ সভাবনা হইবে। এবং তুলা বৃদ্ধবোগ্য ভূমিলাভ অনেক রাজার নিকট হইতে হওয়ার সভাবনা হইলেও, তিনি ওাঁহাকেই আঞ্রন্ধ করিবেন, (বাঁহার সাহাব্যে) নিজের যুদ্ধবোগ্য কাললাভের বিশেষ সভাবনা হইবে। এবং তুল্য যুদ্ধবোগ্য ভূমি ও কাললাভ অনেক রাজার নিকট হইতে ঘটিলেও তিনি ভাঁহাকে আশ্রন্ধ করিবেন, (বাঁহার সাহাব্যে) যুগ্য (বলীবর্দ্ধ ধর-উট্রানি বাহন), শুস্ত ও কবচ (প্রভৃতি যুদ্ধোপকরণ) লাভের বিশেষ সভাবনা হইবে।

(আশ্রমণীয় ) সহায়ের অভাবে (ছর্বল রাজা) সেই প্রকার হর্গ আক্রমণ করিবেন, ষেধানে (অভিযোক্তা) অমিত্র রাজা প্রভিত্তসেনাযুক্ত হইলেও উছার (ছর্গাপ্রায়ী ছর্বল রাজার) ভক্ষাবন্ধ, (পল্ডভক্ষ্য) যবদ (ঘাদপ্রভৃতি), ইছন জোলাইবার কাঠ) ও জলাদির উপরোধ বা কোনও প্রকার ব্যাঘাত করিছে পারিবেন না, এবং নিজেও (যুগ্য ও পুরুষের) ক্ষয় ও (ধনাদির) ব্যয়প্রাপ্ত হইবেন।

উক্ত প্রকাবের অনেক হুর্গ আঞ্রয়বোগ্য পাওয়া গেলেও, তিনি ( হুর্বল হুর্গাঞ্জীর রাজা) তেমন চুর্গই আগ্রার করিবেন বাহাতে নিচর ( অর্থাৎ নিত্য- প্রবেজনীর তৈল-লবণাদি জব্যের দক্ষর) ও অপসার ( অর্থাৎ হুর্গ হইতে অবদরমত নির্গমনের পথ ) বর্ত্তমান আছে। কারণ, কৌটিল্যের মতে নিচর ও অপদারমূক্ত হুর্গই মন্ত্রজের উপমূক্ত হুর্গ বলিয়া ( রাজা ) তাহারই আঞ্রয় লইতে ইছঃ করিবেন।

নিম্নলিখিত কারণসমূহের মধ্যে যে কোনও একটি কারণ উপস্থিত ছইলে তিনি চুর্গ আশ্রয় করিবেন। যথা,—বদি তিনি (বিজিগীর) মনে করেন—
"(১) পশ্চাদেশ ছইতে আক্রমণকারী শত্রুকে আমি আসার (-নামক মিত্রু-)
রূপে, মধ্যমরূপে অথবা উদাসীনরূপে প্রতিপন্ন বা পরিণত করিতে সমর্থ ছইব
(পার্ফিগ্রাহ, হছেবল, মধ্যম বা উদাসীনকে অভিযোক্তার বিরুদ্ধে যুদ্ধ করিতে
প্রবৃত্তিত করিতে পারিব—এইরূপে ব্যাখ্যার উপর অপ্রবাদ প্রসন্ধত প্রতিভাত্ত
হর না); অথবা, (২) সামস্ক, আটবিক ও (অভিযোক্তার) বংশোৎপন্ন অবক্রম
কুমারাদির অপ্রতমন্থারা আমি তাঁহার (অভিযোক্তার) রাজ্য হরণ করাইতে
পারিব; অথবা, (৩) (অভিযোক্তার) কৃত্যপক্ষকে (সামাদি উপার্হ্বারা)
নিজের অপ্রকৃত্ব করিয়া আমি তাঁহার দ্বর্গে, রাষ্ট্রে বা স্ক্রমারে (সেনানিবেশে)
(বাজ্ ও আভ্যন্তর) কোপ উৎপাদন করিতে পারিব; অথবা, (৪) আমি
(সূচ্পুক্রবের সাহাব্যে) শল্প, অরি ও বিষ্প্রারোগের ব্যবস্থা (আবলীয়ের অধিকর্থন
রেইব্য) ও ঔপনিব্রদিক অধিকরণে উক্ত বোল্ডারা সমীপাগত অভিযোজনকৈ

আমার ইন্ছামুসারে বধ করাইতে পারিব; অধবা, (৫) আমি ভাঁছার স্বরংক্ত বিখাসা ঘাতক গুচুপুরুবগণের সাহাব্যে তাঁহার ( অভিবোঞ্জার ) লোকক্ষয় ও ধনব্যয় করাইতে সমর্থ হইব ; অথবা, (৬) আমি লোকক্ষয়, ধনব্যপ্ত প্রবাসদ্বার। উপতাপযুক্ত (ব্যথিত) তাঁহার (অভিযোক্তার) মিত্রবর্গ ও দৈল্পমধ্যে ক্রমে ক্রমে উপজাপ বা ভেদপ্রয়োগ করিতে সমর্থ হইব; অথবা, (1) আমি ভাঁছার বীবধ (নিজ দেশ হইতে আগত খাখসামগ্রী), মিত্রবল ও প্রসারের ( ববস ও ইন্ধন প্রাকৃতির ) নিরোধখারা তদীর স্ক্রাবারের (দেনানিবেশের )পীতঃ উৎপাদন করিতে সমর্থ হইব ; অথবা. (৮) আমি আমার নিজ দুও বা সেনা ছইতে কতক অংশ ( গোপনে তদীয় স্কলাবারে ) নিয়া, তাঁহার ( অভিযোজার ) ব্ৰদ্ৰ বা তুৰ্বলতালোৰ আবিকাৰ কবিয়া (পৰে) সমগ্ৰ দেনাসহকাৰে অগ্ৰনৰ হইয়া ভাঁহাকে প্রহার করিতে সমর্থ হইব ; অথবা, (১) আমি ( অভিযোজ্ঞার ) উৎদাহ প্রতিষ্ঠত ইইলে তাঁহার সহিত বর্ষেক্ষভাবে দন্ধি করিতে পারিব ; অথবা, (১০) আমার বিশ্বদ্ধে অভিযোগে বা আক্রমণে ব্যাপুত হওয়ায়, উাহার ( অভিযোক্তার ) প্রতি সব দিক হইতে ( সামস্তরাজগণের ) কোপ উদ্ভাবিত इंटेर्ड ; अथरा, (>>) छैं। हात्र मिल्रवर्णगृष्ट मृत्रश्चान ( द्राव्यधानी ) व्यामि निस्कृत মিজ্রেনা ও আটবিকরেনাদারা নষ্ট করিতে পারিব; অথবা. (১২) আমি এই ( পুর্পে ) অবন্ধিত ইইরাই আমার বড় দেশের যোগক্ষেম পূর্ণভাবে পালন করিতে পারিব: অথবা (১৩) আমার নিজের কার্য্যে অন্তত্ত্ব বিক্ষিপ্ত বা প্রেরিভ সৈন্ত ও আমার মিত্রকার্য্যে অন্তক্ত বিক্ষিপ্ত বা প্রেরিড সেনা আমি এইখানে ( গুর্গে ) খাকিলেই আমার সহিত মিলিত হইয়া (অভিযোক্তার) অলক্ষনীয় হইবে; অধ্বা, (১৪) নির্যুদ্ধে, খাত্যুদ্ধে ও রাজিযুদ্ধে অত্যস্ত নিপুণ মদীয় সৈভ পর্ব-গমনের শ্রম ( চুর্গে অবস্থানপূর্বক ) দূর করিয়া কার্য্যকাল সমাগত হইলে উভমভাবে কাৰ্য্য করিতে সমর্থ হইবে ; অথবা, (১৫) বিরুদ্ধ দেশ ও কালে এথানে আসিরা (অভিযোক্তা) সরংই লোকক্ষর ও ধনবারপ্রাণ্ড হইরা আরে টিকিবেন না, অর্থাৎ নষ্ট ছইবেন; অধবা, (১৬) আমাদের এই দেশ-ছর্গ, অটবী, ও অপদারের (নির্গমণ্ডের) বাছলাবশত:-শক্রর মহালোকক্ষর ও মহাধনবার-দ্বারা অভিগন্ধবা ( অর্থাৎ এখানে আসিতে হইশে শক্তর এতটা ক্ষতির সম্ভাবনা আছে ), ইহা পরদেশ হইডে আগত গোকদিগের পক্ষে ব্যাধিজনক দেশ, এবং ইছাতে সৈছের ব্যায়ামের উপযুক্ত ভূমি পাওরা ধাইবে না, স্নতরাৎ এখানে প্রবেশকারী অবশ্রুই বিপদুরান্ত ছইবে এবং বদি বা কেছ এখানে প্রবেশ করে

ভাহা **হইলেও ভাহাকে** নিৰ্গত হইতে ইইবে না"। এই প্ৰকার কারণসমূহ উপস্থিত ইইলে, বিজিপীয়ু হুৰ্গ আঞ্চন করিতে শারেন।

নিজ আচার্যোর মতে, উক্ত কারণগুলি উপস্থিত না হইলে ও শক্রর বলাধিকা উপলব্ধ হইলে, (বিজিগীয়ুর পক্ষে) গুর্গ ত্যাগ করিয়া চলিয়া যাওয়া উচিত। অথবা অগ্নিতে পতকের প্রবেশের জ্যার তিনি শক্রর উপর আক্রমণ চালাইবেন। কারণ, যিনি নিজ জীবনের আশা ত্যাগ করিয়া এই প্রকার কার্য্যকারী হরেন, তাঁহার পক্ষে কথনও অভ্যতর ফললাভও হয় (অর্থাৎ শক্র-পরাজর ও আত্মনাশ—এই উভয়ের মধ্যে শক্রপরাজয়ও ফলস্করপ প্রাপ্ত হওয়া হায়, বেমন পতক্রপতনে অগ্নিও কখন কখন নির্ব্বাণপ্রাপ্ত হয়)।

কিন্ত, কৌটিল্য এই মত স্থীকার করেন না। ( তাঁহার মতে ) নিজের নক্রর মধ্যে সন্ধির যোগ্যতার উপলব্ধি করিয়া ( বিজিগীর ) তাঁহার সহিত সন্ধি করিবেন। ইহার বিপর্যার ঘটিলে ( অর্থাৎ উভয়ের মধ্যে সন্ধি করার যোগ্যতা না থাকিলে ), তিনি শক্রর উপর বিক্রমন্থারা ( অগ্নিতে শতঙ্গ পতনের স্থার ) সিদ্ধিলাভ করিবেন ( 'সিদ্ধিং' পদের পরিবর্ত্তে কোনও কোনও পুস্তকে 'সন্ধিং' পাঠ দৃষ্ট হয় ), অথবা ( সন্ধির সন্তাবনা না থাকিলে ) স্থান ত্যাগ করিবেন। ( এই পর্যাপ্ত বলবান্ শক্রর সহিত বিগ্রহ করিয়া ত্র্গাদিতে উপরোধের হেতুসমূহ নিরূপিত হইল। )

(সম্প্রতি দক্ষারা উপনত বা অধঃকৃত রাজার বাবহার বলা হইতেছে।)
অববা (বিজ্ঞীসীয়ু) সদ্ধের (অর্থাৎ ধর্মবিজয়ী বলবান্ অভিবোজা) রাজার
নিকট নিজের দৃত প্রেরণ করিবেন। অথবা সেই সন্ধের রাজাঘারা প্রেরিত
দৃতকে অর্থ ও মান দিরা সংকৃত করিয়া এইরূপ ভাবে তাঁহাকে বলিবেন—
"তোমার রাজার জন্ম এই পণ্যাগার বা বহুমূলা উপহার অর্পিত হইতেছে,
আমার মহিষী ও কুমারদিগের বচনামুলারে তোমাদের রালী ও কুমারদিগের
জন্ম এই প্রান্ধত (উপচেকিন) অর্পিত হইল, আমার এই রাজা ও আমি বরং
তোমাদের রাজার নিকট অর্পিত হইল ও হইলাম।"

(এইভাবে দ্তাদিপ্রেষণদার) অভিযোক্তার আশ্রর পাইলে তিনি (বিজিপীরু) সেই (সংহিত) ভর্তার প্রতি সময়াচারিকের ভার (অর্থাৎ সেবকের ভার) ব্যবহার করিবেন। তিনি সেই অভিযোক্তার অল্পমতিক্রমে হুর্গাদিনির্মাণকার্য্য, আবাহ (অর্থাৎ পুত্রার্থ কভাগীকার) ও বিবাহ (কভাদান), পুত্রের বৌবরাজাভিবেক, অধ্পণ্য (অবক্রয়) ইন্টিগ্রহণ (গজবন্ধন), সত্র (ব্যঞ্জ),

বাত্রা (পুক্রর প্রতি অভিযান) ও বিহারগমন (উভানাদি জীভার গমন) করিবেন। এবং ীতিনি তাঁহার (বলবান বিজেতার) **অন্ন**মতিজনে নিজ-ভূমিতে অবস্থিত অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গের সহিত সন্ধি ও নিজদেশ হইতে অপুস্ত জনের প্রতি উপঘাত বা দগুবিধান করিবেন। তাঁছার নিজের পোর ও জানপদজনের) চুষ্টপ্রকৃতিক হইলে তিনি স্বয়ং ভায়ামুকুল আচরণ করিয়া ( অভিযোক্তার নিকট হইতে ) অন্ত ভূমি ( নিজবাসের জন্ত ) বাচিয়া লইবেন ( 'श्राप्तदृष्टिः'-পार्ट गृदीे ७ दहेल—हेटा 'ভृमिः' পদের বিশেষণ हहेत )। व्यवता ( সেই ছুইপ্রকৃতিক লোকদিগকে ) দুয়দিগের স্থায় মনে করিয়া তাহাদের প্রতি উপাংগুদুগুর (গুপুর্বধ) ব্যবস্থা করিয়া প্রতীকার করিবেন। অথবা, যদি ভাঁহার কোন নিজমিত্র হইতে (বিজেতা ) কোন অঞ্কুল ভূমি লইয়া ভাঁহাকে দেন, ভাহা হইলে তিনি (বিজ্ঞিগীয়ু) ভাহা গ্রহণ করিবেন না। (বিজ্ঞেতা) প্রভুর দৃষ্টির বাহিরে, তিনি ( অভিযুক্ত বা বিজিত বিজিপীরু) নিজের মন্ত্রী, পুরোহিত, সেনাপতি ও ধুবরাজের অন্তত্যের সৃহিত দেখা করিবেন ( অর্থাৎ বিজ্ঞেতার সন্নিধানে তাহা করিবেন নঃ )। এবং তিনি নিজের শক্তি অনুসারে অর্থাদিঘার। (বিক্তেতা স্বামীর) উপকার করিবেন। দেবপুঞ্জা ও স্বস্তিবাচন-বিষয়তে তাঁহার (ভর্তার) জন্ম আশীর্বচন বলাইবেন। সকলের নিকট তিনি ভর্তাকে আত্মসমর্পণের কথা ও সামীর গুণের বিষয় বলিবেন।

এইভাবে নিজ ভর্ত্তার প্রতি সেবাতে অবস্থিত থাকিয়া, দণ্ডোপনত ( অর্থাং দণ্ডদারা বিজিত বিজিগীয়ু) ( নিজ বিজেতার সহিত ) সংযুক্ত বলবান্ ( মহি-প্রভৃতির ) দেবক হইয়া, এবং । তাঁহার সহিত বিরোধকারী বলিয়া ) শক্ষিত লোকপ্রভৃতির বিরুদ্ধ হইয়া রহিবেন ॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশান্তে বাড্গুণ্য-নামক সপ্তম অধিকরণে, বলবান্ শক্তর সহিত বিরোধ করিয়া তুর্গপ্রবেশের হেতু ও দওম্বারা উপনত রাজার ব্যবহার-নামক পঞ্চদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ১১৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## ষোড়ল অধ্যায়

#### ১২১ প্রকরণ—দত্তোপনায়ী বিজিগীয়ুর ব্যবহার

পূর্বপ্রতিজ্ঞান্ত্রপারে (পণিত) হিরণা না দেওয়ায় উদ্বেগ উৎপাদনকারী যাতব্য রাজাকে বিজ্ঞিত করার ইচ্ছুক বলবান্ বিজিঞ্জিয় দেই দেশেই বিজয় অভিযানে প্রস্তুত্ত হইবেন যেখানে নিজ যাওয়ায় ভূমি বা পর পাওয়া হাইবে এবং নিজ সৈত্যের অক্স্কুল প্রভু বা সময় ও অক্স্ক রন্তি ( অর্থাৎ ভাহাদের উপস্কুত ভক্তোপকরণ ) পাওয়া যাইবে এবং যেখানে শক্র হুর্গ ও অপসার ( নির্গমন পর ) হুইতে রহিত এবং যেখানে শক্র বিজিগীয়য় প্রতি পার্ফিগ্রাহ প্রেরণ করিতে পারিবেন না এবং শক্র স্বাং আসার বা স্ক্রেলবিরহিত। ইহার বিপরীত পক্ষে ( অর্থাৎ উপরি উক্ত সুবিধা না থাকিলে এবং শক্রর নিজ সুবিধা থাকিলে ) তিনি সেই সংবর প্রতীকার করিয়। যাত্রা করিবেন।

বাতব্য রাজার। তুর্বল হইলে, তিনি (বিজিনীরু) ভাঁহাদিগকে সাম ও দানরূপ উপায়দারা উপনমিত বা স্বশে আনীত করিবেন এবং বশবান্ যাতবাদিগকে তেদ ও দগুধারা নিজের অধীন করিবেন। (সামাদি) উপায়সমূহের নিয়োগ (অর্থাৎ পুরুষবিশেষে এই উপায়ই প্রযোজা এইরূপ অবধারণ), বিকল্প (অর্থাৎ, এই উপায় অববা সেই উপায় প্রযোজা এইরূপ অনিশ্চয় জ্ঞান) ও সমুচ্চয় (অর্থাৎ, এই উপায় ও সেই উপায় প্রিলিত করিয়া প্রয়োগ)—এই তিন প্রকার ব্যবস্থাধারা অনস্তর ভূমিতে স্থিত অমিত্র ও একান্তর ভূমিতে শ্বিত বিরু প্রকৃতিকে সাধিত (উপনমিত বা স্বশে আনীত) করিবেন।

(উপনমিত বিজিগীর) প্রামে ও অরণ্যে বাসকারী বজের (অর্থাৎ গো-মহিবাদির) ও বণিক্পথের (বাণিজ্যের জন্ম বাবহৃত বারিপথ ও স্থলপথের) রক্ষণহারা এবং (অন্ম রাজার ভয়ে )পরিত্যক্ত ও স্বরং অপস্ত (পলাতক) ও (দ্যাদি) অপকারকারীদিগকে (অস্বেষণ করিয়া) আনরনবারা (হর্ষদ রাজার প্রতি) সাস্থ বা সামরূপ উপায়ের প্রয়োগ করিবেন। এবং (তিনি) ভূমিদান, দ্রবাদান, কন্মাদান ও (শক্র হইতে ভয়প্রসদ্ধ উপস্থিত হইলে) অজ্যুদানহারা (ভাঁহার প্রতি) দানরূপ উপায়ের প্রয়োগ করিবেন।

(উপনমিত বিজিগীর্) সামস্ত, আটবিক, (যাতব্য শত্রুর) নিজ কুলে উৎপন্ন কোনও জ্ঞাতি, বা তাঁহার কোনও অবক্লম বা নিয়ন্ত্রিত (পুরাদির) মধ্যে জন্তুতমকে নিজবশে আনিয়া, তাঁহার হারা বলবান্ যাত্রা শক্রর নিকট হইতে কোশ, দণ্ড বা দৈন্ত, ভূমি ও দায়ভাগ যাঁচনা করিয়া (দেই বলবান্ শক্রর প্রতি) ভেদরূপ উপায় প্রয়োগ করিবেন। আবার, প্রকাশযুদ্ধ (অর্থাৎ নির্দ্দিষ্ট দেশ ও কালে ক্রিয়মাণ যুদ্ধ), কৃট্যুদ্ধ (অনির্দিষ্ট দেশকালে ক্রিয়মাণ যুদ্ধ) ও ভূফীংযুদ্ধ (অর্থাৎ, বিষাদির যোগ ও গুচ্পুক্তবের উপজাপদ্ধারা দাধিত হাত্রন) এবং হর্গলভোপার-নামক (১৩শ) অধিকরণে বক্ষামাণ বিষদানাদি যোগহারা তিনি (বলবান্ যাত্রা শক্রর প্রতি) দণ্ডরূপ উপায়ের প্রয়োগ করিবেন।

এইভাবে (উক্ত দামাদি উপায়ের প্রয়োগধারা নিজের আয়ত্তীক্বত বা উপামমিত রাজাদিগের মধ্য হইতে) যাহারা উৎসাহশক্তিযুক্ত ও নিজ সৈন্তের উপাকারবিধায়ী ভাঁছাদিগকে (স্বকার্য্যে) নিয়োজিত করিবেন। এবং বাঁছারা নিজ প্রভূশক্তিদ্বারা যুক্ত ও কোশদ্বারা উপাকার করিতে সমর্থ, ভাঁহাদিগকেও (স্বকার্যো) নিয়োজিত করিবেন। এবং বাঁহারা প্রজ্ঞা বা মন্ত্রশক্তিযুক্ত ও ভূমিধারা উপাকারকরণে সমর্থ, ভাঁহাদিগকেও (স্বকার্যো নিয়োজিত করিবেন)।

উপনমিত (মিত্রীভূত) রাজগণের মধ্যে যে মিত্র পণাপত্তন, গ্রাম ও খনি হইতে উৎপন্ন ( মণিমুক্তাদি ) রছ, ( চন্দনাদি ) দারদ্রত্য ও ( শব্দাদি ) ফল্পের্য ও (বন্ধাদি) কুপাদ্রবাদ্ধারা, অথবা দ্রবাবন, হস্তিবন ও ব্রজ হইতে সমুখিত (রখাদি) যান ও (গজাদি) বাহনদারা অধিকভাবে (বিজিপীবুর) উপকার করেন, দেই মিত্রকে চিত্রভোগ মিত্র বলা হয় ( জাঁহার নিকট হইতে নানা-প্রকার ভোগ পাওয়া যায় বলিয়া তাঁহার এই প্রকার নাম )। আবার, বে মিত্র দও বা সেনা ও কোশদ্বারা (বিজ্ঞিসীয়ুর) মহৎ উপকার করেন, সেই মিত্রকে মহাভোগ মিত্র বলা হয়। এবং বে-মিত্র দণ্ড, কোশ ও ভূমিদারা (বিজিপীবুর) উপকার করেন তাঁহাকে **সর্কাতে**গণ মিত্র বলা হয়। (উপনমিত মিত্রীভূত রাজগণের মধ্যে ) যে মিত্র (বিশ্বিগীযুর উপকারার্থ) একটিমাত্র অমিত্রের প্রজীকার (অর্থাৎ তৎক্রত অনর্থের নিবারণ ) করেন, তাঁহাকে একভোভোগী মিত্র বলা হয়। যে মিত্র (বিজিপীবুর উপকারার্থ) তদীর অমিত্র ও তাঁছার আসারের ( অর্থাৎ শত্রু-মিত্রের ) অপকার করেন, তাঁহাকে উভয়তভাতভাগী মিত্র বলা ছয়। এবং যে যিত্র (বিজিগীবুর উপকারার্থ) ভদীর অমিত্র, আসার ( অমিক্র-মিত্র ), প্রতিবেশ ( পার্মন্ত শক্র ) ও আটবিকের সর্ব্যতোভাবে প্রতীকার করেন, ভাঁহাকে সর্ববৈডাভোগী যিত বলা হয়।

বদি কোনও পাঞ্চিগ্রাহক শব্দ, আটবিক, শব্দর অমাজ্যাদি মুখ্য পুরুষ কিংবা

অন্ত শক্তকে ভূমিদানখার। সাধ্য বা নিজবশে আনীত হওয়ার জন্ত প্রস্তুত মনে হয়, তাহা হইলে (উপনমিত বিজিপীয়ু ) জাঁহাকে গুণহীন ভূমি দিয়া স্বায়ত করিবেন। (কাহাকে কেমন গুণহীন ভূমি দেওয়া উচিত ভাহা এখন বলা হইতেছে।) যদি দেই (পাফিগ্রাহক প্রভৃতি) গ্র্গস্থিত হয়েন, তাহা হইলে তাঁহাকে দেই ছর্গের দহিত দম্বরহীন (অর্থাৎ দেশান্তরবাবহিত) ভূমিদারা তাঁহাকে বশে আনিবার চেষ্টা করিবেন। আটবিককে বশে আনিবেন উপজীবিকার যোগ্য ধান্তাদির উৎপত্তিহীন ভূমি দান করিয়া। শত্রুর সকুলীন ব্যক্তিকে তিনি পুনরায় ফিরিয়া পাইবার যোগ্য ভূমি দিয়া তাঁহাকে বশে আনিবেন। শক্র হইতে বলপূর্বক অপহত ভূমি দিয়া তিনি শক্রর উপরুদ্ধ পুত্রাদিকে স্ববদে আনিবেন। (নায়কবিহীন) শ্রেণীবলকে তিনি নিত্য (চোরাদি) অমিত্রপূর্ণ ভূমি দানে স্বংশ আনিবেন। (সনায়ক। মিপিতবলকে তিনি বৰবান সামভযুক্ত ভূমি ৰিয়া বশে আনিবেন ৷ যুক্তকেত্ৰে প্ৰতিলোমবাবহারী অর্থাৎ কৃট্যুদ্ধাদিকারী শত্রুকে উল্লিখিত উভয়রূপ ( অর্থাৎ নিতা অমিত্রযুক্ত ও বলবান সামস্তযুক্ত ) ভূমি দিয়া বশে আনিবেন। উৎসাহশক্তিযুক্ত শতকে এমন ভূমি দিয়া বশে আনিতে চেষ্টা করিবেন যাহাতে সৈন্তের ব্যায়ামের জন্ত যোগ্য স্থান পাওয়া যাইবে না। অরিপক্ষের কোনও পুরুষকে শৃন্ত অর্থাৎ ফলোৎপঞ্জি-বিহীন ভূমি দিয়া স্বৰশে আনিবেন। ধে রাজা যুদ্ধে উপতথ্য মাধবয়খার মতে ধিনি সন্ধি করিয়াও তাহা হইতে ভংশিত) অথবা যিনি পরদেশে নির্বাদিত ভাঁহাকে কৰ্দিত ( অর্থাৎ শক্র ও আটবিকাদির সেনাদ্বারা উৎপাদিত উপক্রবযুক্ত) ভূমি দিয়া অবশে আনিবেন। আবার, যে রাজা শক্তর সহিত প্রথমতঃ একবার মিলিত হইয়া পরে বিজিগীযুর দহিত মিলনের জন্ত প্রত্যাগত, তাঁহাকে এমন ভূমি দিয়া স্বৰ্ণে আনিবেন যাহাতে জননিবেশ করাইতে হইলে বছ লোকক্ষয় ও ধনবায় ছইবে। যে বাজা শক্তব ভয়ে স্বদেশ ছইভে পৰাইয়া গিয়াছেন তাঁহাকে ছুৰ্গাদিরূপ আশ্রয়বিহীন ভূমি দিয়া স্বৰণে আনিবেন। এবং তিনি (বিজিগীরু) কোনও ভূমির ভূক্তপূর্ব্ব নিজ মালিককে সেই ভূমিদার। বশে আনিবেন বাছাতে ( স্বভর্তা বাঙীত ) অন্ত কাহারও বাস ১ সম্ভবপর নছে।

( দওখারা উপনমিত ) রাজগণের মধ্যে যিনি (বিজ্ঞিগীরুর) মহান উপকার-সাধন করেন ও বিনি মনে কোনও প্রকার বিকার পোষণ করেন না ( বিজ্ঞিপীরু ) তাঁহার অন্তর্বর্তন করিয়া চলিবেন। কিন্তু, প্রতিকৃশ আচরণকায়ীকে উপাৎত্ব- দশুদারা সাধিত বা অন্নকৃতিত করিবেন। উপকারী রাজাকে উপনমিতা বিজিপ্রী নিজের উপকার করার শক্তি অন্নসারে তৃষ্ট রাখিবেন। এবং তাঁহার (উপকারী রাজার) প্রস্নাদের পর্যালোচনা করিরা তাঁহাকে অর্থ ও মান দান করিবেন। এবং তাঁহার বাসন বা বিপত্তি উপন্থিত ইইলে (তিনি) তাঁহাকে অন্থগ্রহ দেখাইবেন। এবং স্বয়ং উপন্থিত উপনত রাজগণকে (অন্নর্গপ্রশাশনার্থ তিনি) যথেচ্ছ দর্শন দিবেন ও (তাঁহাদের দিক্ হইতে নিজের কোনও বিপদের আশতা বৃথিলে ইহার) প্রতিবিধান করিবেন।

(তিনি) দণ্ডোপনত (অর্থাৎ দণ্ডাদি উপায়ধার) নিজের আয়ন্তীকৃত) রাজগণবিষয়ে অনাদর, দোষবচন, নিশা ও অতিস্তৃতির প্রয়োগ করিবেন না। এবং (বিপদে) অভর দিয়া (তিনি) তাঁহাদিগকে পিতার স্থায় অমুগ্রহ প্রদর্শন করিবেন। যে দণ্ডোপনত রাজা বিজিপীয়ুর অপকার করিবেন তাঁহার সেই দোষ প্রচার করিয়া তাঁহাকে (তিনি) প্রকাশভাবে ঘাতিত করিবেন। অববা, (এই প্রকাশদণ্ডের জন্ত) অন্থান্ত (দণ্ডোপনত) রাজগণের উদ্বিধ হওয়ার কারণ থাকিলে, (বিজিপীরু) দাণ্ডকমিক প্রকরণে (৮৯ প্রকরণে) উক্ত বিধান অবলয়ন করিবেন অর্থাৎ অপকারীর উপাংশুদণ্ড ব্যবস্থা করিবেন। তিনি সেই ঘাতিত (দণ্ডোপনত রাজার) ভূমি, দ্রবা, পুত্র ও স্ত্রীর উপর কোন অধিকারের অভিমান করিবেন না) অর্থাৎ তাহাদিগকৈ স্বয়ং অপহরণ করিবেন না। তিনি উাহার অকুলসম্ভূত ব্যক্তিদিগকে (অর্থাৎ পুত্রাদি যোগ্য আত্মীয়দিগকে) নিজ নিজ উচিত অধিকারে স্থাপিত করিবেন। (দণ্ডোপনয়নে কৃত যুদ্ধাদি) কর্মে যুভ রাজার পুত্রকে তিনি পিত্রাজ্যে স্থাপিত করিবেন।

বিজিগীরুর এই প্রকার আচরণদার। দণ্ডোপনত রাজগণ (কেবল দণ্ডোপনায়ী বিজিগীরুর নহে) তাঁহার পুত্র পোত্রদিগেরও অহ্বর্ত্তন করিয়া ধাকেন।

কিন্তু, যে বিজিপীর দণ্ড-প্রণত রাজগণকে মারিয়া বা (বন্ধনাগারে ) বাঁধিয়া তদীর ভূমি, দ্রাবা, পুত্র ও ত্রীকে আন্ধানং করেন, তাঁহার (বাদশরাজান্ধক) রাজমণ্ডল উবির হইরা ওাঁহার নাশের জন্ত উত্থাক্ত হয়েন। এবং যে-সকল আমাত্য বিজিপীয়র নিজ ভূমিতে ব্যাপ্তত আছেন তাঁহাবাও তাঁহার উপর উবেগয়ক্ত হইয়া (তাঁহার অপকারের জন্ত ) উত্থাক্ত রাজমণ্ডলকে আশ্রম করেন। জনবা, তাঁহারা (অমাত্যেরা ) ব্রহং তদীর রাজ্য অধিকার করিয়া বদেন, কিবো ভারার প্রাণ অধিকার করেন অর্থাৎ তাঁহার ব্যস্থান করেন।

অভএব, যে রাজায়া স্ব-শ্ব ভূমিতে সামপ্রয়োগনার। বিজিগীয়ু কর্ত্ব বক্ষিত হরেন, তাঁহারা (বিজিগীরু) রাজার প্রতি অনুকৃল থাকেন এবং তাঁহার পুত্র গৌত্রদিগেরও অন্নবর্ত্তন করেন ৪১॥

কৌটিলীর অর্থশান্তে বাড্গুণ্য-নামক সত্তম অধিকরণে দণ্ডোপনারী বিজ্ঞিগীরুর ব্যবহার-নামক বোড়শ অধ্যায় ( আদি হইতে ১১৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### সপ্তদৃশ অধ্যায়

#### ১২১-১২২ প্রকরণ—সন্ধিকর্মা ও সন্ধিমোক

শম, সন্ধি ও সমাধি—এই তিন শক্ষারা একই অর্থ অভিহিত হয়।
সেই অর্থ এইরপ—যাহাদ্বারা সন্ধিকারীদিগের মধ্যে (পণবন্ধবিষয়ক) বিশ্বাদ লক্ষ হয়, তাহাই শম, সন্ধি বা সমাধি (অর্থাৎ সভ্য, শপথ, প্রতিভূ (জামিন) বা (রাজপুত্রাদির) প্রতিগ্রহরূপ কারণদ্বারা বিশ্বাদের দৃটীকরণ ।

নিজ আচাতে ব্যার মতে, বে দক্ষি দত্যবারা ( অর্থাৎ ইহা এই প্রকারই হইবে, অন্তবা হইবে না, এইরূপ দত্যতাপূর্বক বচনবারা ) করা হয়, অধবা যাহা শপদ্ধারা ( অর্থাৎ পূজনীয় শিতা বা স্বর্ণাদির স্পর্শপূর্বক ) করা হয়, দেই দক্ষি চলদক্ষি ( অর্থাৎ অন্থির বলিয়া অনতিবিখসনীয় দক্ষি ) এবং যে দক্ষি প্রতিভূ ( অব্যতিক্রমের জন্ত জামিন )-সহকারে বা প্রতিগ্রহ ( অর্থাৎ ক্ষার বিশাসক্র রাজপুত্রাদির অর্পণ )-সহকারে করা হয়, দেই দক্ষি স্থাবরস্থি ( অর্থাৎ স্বায়ী বলিয়া অত্যন্ত বিশ্বসনীয় দক্ষি )।

কিন্ধ, কৌটিল্য এই মত মানেন না। (তাঁহার মতে) সতা ও শণধদারা হত সন্ধিই 'দ্বের', কারণ, সত্য ও শণধ ইহলোক ও পরলোক—উভয়ত্ত যাবর (অর্থাৎ সন্ধিকারীদিগের ইহলোকে সত্যভক্ষজনিত অপবাদ ও পরলোকে নরকণাতের ভর থাকে)। আবার, প্রতিভূ ও প্রতিগ্রহ কেবল ইহলোকের প্রয়োজনে আনে এবং তাহারা বলবভার অপেক্ষা রাথে (অর্থাৎ প্রতিভূ বলবান্ ইংশেই বিশ্বসনীর হয় এবং প্রতিগ্রহও তাহার রক্ষাকারীর প্রেমণাত্র হইতে গারিলেই বিশ্বসনীর হয়, অক্সধা নহে)।

সভাগ্রতিজ্ঞ ( নলাদি ) পূর্ব্ব পূর্ব্ব রাজারা "আমরা সন্ধিতে আবন্ধ হইলাম"

— এইবাকার সভাবচনদারাই ( দুচ্ছাবে ) সন্ধিয়ক্ত হইতেন ।

দশুদারা সাধিত বা অনুক্লিও করিবেন। উপকারী রাজাকে উপনমিতা বিদ্ধির নিজের উপকার করার শক্তি অনুসারে তুই রাধিবেন। এবং তাঁহার (উপকারী রাজার) প্রস্নাদের পর্য্যালোচনা করিয়া তাঁহাকে অর্থ ও মান দান করিবেন। এবং তাঁহার বাসন বা বিপত্তি উপত্বিত ইইলে (তিনি) তাঁহাকে অনুগ্রহ দেধাইবেন। এবং স্বরং উপত্বিত উপনত রাজগণকে (অনুরাগপ্রদর্শনার্থ তিনি) যথেছে দর্শন দিবেন ও (তাঁহাদের দিক্ ইইডে নিজের কোনও বিপদের আশ্রা বুঝিলে ইহার) প্রতিবিধান করিবেন।

(তিনি) দণ্ডোপনত ( অর্থাৎ দণ্ডাদি উপায়ধারা নিজের আয়ন্তীক্তত ) রাজগণবিষয়ে অনাদর, দোষবচন, নিন্দা ও অতিস্কৃতির প্রয়োগ করিবেন না। এবং ( বিপদে ) অভয় দিয়া ( তিনি ) ভাঁহাদিগকে পিতার ন্তায় অহ্য়েছ প্রদর্শন করিবেন। যে দণ্ডোপনত রাজা বিজিপীরুর অপকার করিবেন তাঁহার সেই দোষ প্রচার করিয়া তাঁহাকে ( তিনি ) প্রকাশভাবে ঘাতিত করিবেন। অথবা, ( এই প্রকাশদণ্ডের জন্ত ) অভান্ত ( দণ্ডোপনত ) রাজগণের উদ্বিয় হওয়ার কারণ থাকিলে, ( বিজিপীরু ) দাওক্ষিক প্রকরণে (৮৯ প্রকরণে ) উক্ত বিধান অবস্থন করিবেন অর্থাৎ অপকারীর উপাংগুদও ব্যবস্থা করিবেন। তিনি দেই ঘাতিত ( দণ্ডোপনত রাজার) ভূমি, দ্রব্য, পুত্র ও স্ত্রীর উপর কোন অধিকারের অভিমান করিবেন না অর্থাৎ তাহাদিগকে স্বয়ং অপহরণ করিবেন না। তিনি তাহার স্বক্রসম্ভূত ব্যক্তিদিগকে ( অর্থাৎ পুত্রাদি যোগা আত্রীয়দিগকে ) নিজ নিজ উচিত অধিকারে স্থাপিত করিবেন। ( দণ্ডোপনয়নে ক্রত যুদ্ধাদি ) কর্ম্মে মৃত রাজার পুত্রকে তিনি পিত্রাজ্যে স্থাপিত করিবেন।

বিজিপ্টাবুর এই প্রকার আচরণদার। দণ্ডোপনত রাজগণ (কেবদ দণ্ডোপনায়ী বিজিপ্টাবুর নহে) ভাঁহার পুত্র পৌত্রদিগেরও অস্থবর্ত্তন করিয়া থাকেন।

কিন্ধ, যে বিজিগীয় দণ্ড-প্রণত রাজগণকে মারিয়া বা (বন্ধনাগারে) বাঁধিয়া তদীয় ভূমি, দ্রবা, পুত্র ও স্থীকে আত্মগাৎ করেন, তাঁয়ার (বাদশারাজাত্মক) রাজমণ্ডল উদ্বিশ্ব হইয়া তাঁহায় নাশের জন্ত উদ্রাক্ত হয়েন। এবং যে-সকল অনাত্য বিজিগীয়য় নিজ ভূমিতে ব্যাপ্ত আছেন তাঁহায়াও তাঁহায় উপর উল্লেখ্য হইয়া (তাঁহায় অপকারের জন্ত) উল্লাক্ত রাজমণ্ডলকে আত্রয় করেন। আবা, তাঁহায়া (অমাড্যেয়া) সয়ং তদীয় য়াল্য অধিকার কয়িয়া বসেন, কিংবা ভায়য় প্রাণ অধিকার কয়েয়া বসেন, কিংবা ভায়য় প্রাণ অধিকার কয়েয়া বসেন, কিংবা

অতএব, যে রাজারা স্ব-স্ব ভূমিতে সামপ্রামাগদার। বিজিপীর কর্তৃক রক্ষিত হয়েন, তাঁহার। (বিজিপীর) রাজার প্রতি অনুক্ল থাকেন এবং তাঁহার পুত্র পোত্রদিগেরও অন্থবর্তন করেন॥ ১॥

কোটিলীর অর্থশাত্তে বাড্গুণা-নামক সপ্তম অধিকরণে দত্যোপনায়ী বিজ্ঞিগীবুর ব্যবহার-নামক বোড়শ অধ্যায় ( আদি হইতে ১১৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত ।

### সপ্তদশ অধ্যায়

### ১২১-১২২ প্রকরণ--স্কিকর্ম ও সন্ধিমোক

শম, সাজি ও সমাধি—এই তিন শক্ষারা একই অর্থ অভিহিত হয়। সেই অর্থ এইরূপ—যাহাদ্যারা সন্ধিকারী দিগের মধ্যে (পণবন্ধবিষয়ক) বিশ্বাস লক্ষ হয়, তাহাই শম, সন্ধি বা সমাধি ি অর্থাৎ সত্যা, শপথ, প্রতিভূ (জামিন) বা (রাজপুঞাদির) প্রতিগ্রহরূপ কারণদারা বিশাদের দৃটীকরণ ।।

নিজ আচার্যোর মতে, যে দক্ষি সভাধারা ( অর্থাৎ ইহা এই প্রকারই হইবে, অঞ্চলা হইবে না, এইরাল সভাতাপূর্বক বচনদারা ) করা হর, অথবা যাহা শলধদারা ( অর্থাৎ পূজনীয় শিতা বা স্ত্বর্ণাদির স্পর্শপূর্বক ) করা হর, সেই দক্ষি চলাসক্ষি ( অর্থাৎ অন্থির বলিয়া অনতিবিখসনীর দক্ষি ) এবং যে সন্ধি প্রতিভূ ( অবাতিজনমের জন্ম জামিন )-সহকারে বা প্রতিগ্রহ ( অর্থাৎ কথার বিখাসজন্ম রাজপুত্রাদির অর্পণ )-সহকারে করা হয়, সেই সন্ধি স্থাবরসন্ধি ( অর্থাৎ স্বায়ী বলিয়া অভান্ত বিখননীয় দক্ষি )।

কিন্তু, ক্রেটিল্যু এই মত মানেন না। (তাঁহার মতে) সত্য ও শপধদারা কত সন্ধিই 'স্থাবর', কারণ, সত্য ও শপথ ইহলোক ও পরলোক—উভয়ত্ত দাবর (অর্থাৎ সন্ধিকারীদিগের ইহলোকে সভ্যভক্তজনিত অপবাদ ও পরলোকে নরকপাতের ভর থাকে)। আবার, প্রতিভূ ও প্রতিগ্রহ কেবল ইহলোকের প্রয়োজনে আনে এবং ভাহার। বলবভার অপেক্ষা রাখে (অর্থাৎ প্রতিভূ বলবান্ হলৈই বিশ্বসনীয় হয় এবং প্রতিগ্রহও ভাহার রক্ষাকারীর প্রেমণাত্র হইতে শারিলেই বিশ্বসনীয় হয়, অক্সথা নহে)।

সভ্যপ্রভিজ্ঞ ( নলাদি ) পূর্ব্ব পূর্ব্ব রাজারা "আমরা সন্ধিতে আবদ্ধ হইলাম"

- এইপ্রকার সভাবচনদারাই ( দুঢ়ভাবে ) সন্ধিয়ক হইতেন।

সভোর অভিসঞ্জন ঘটিলে, ভাঁহারা ( পূর্ববাজারা ) শাণধগ্রহণপূর্বক আরি জল, সীভা ( পাজসামাভি—উপসক্ষণদারা ভূমি ব্ঝিতে হইবে ), প্রাকার ( অর্থাৎ প্রাকারের ইইক ), হস্তিহন্ধ, অমপৃষ্ঠ, রথে বসিবার আসন, শল্প, রছ, ( ধালাদির ) বীজ, ( চন্দনাদি ) গন্ধদ্রতা, ( মৃত্যাদি ) রস, স্করণ ও হিরণা ( নগদ্ টাকামুদ্রা ) স্পর্শ করিতেন। 'এই সব দ্রবা ভাঁহাকে নই করে বা ভাঁহাকে ভাগি করে' যিনি শাণথ অভিক্রম করেন ( অর্থাৎ অ্যাাদি স্পর্শ করিয়া ) ভাঁহার। ( সন্ধির দৃট্টাকরণার্থ ) শাণথ গ্রহণ করিতেন।

শশবের অতিক্রম ঘটিলে, বড় বড় তপস্বী ও (গ্রাম-) প্রধানদিগের প্রতিভূম্ব (জামিন বক্ষণ) অবলম্বন করিয়া দন্ধি করা উচিত। এই প্রতিভূ-নির্দ্ধারণপূর্বক সন্ধিবিষয়ে, যে রাজা শক্তর নিগ্রহবিধানে সমর্থ প্রতিভূ গ্রহণ করেন, তিনিই অধিক লাভবান্ হয়েন। ইহার বিপরীতকারী অর্থাৎ শক্তনিগ্রহে অসমর্থ প্রতিভূগ্রাহী রাজা (শক্তদারা) বঞ্চিত হয়েন।

পর্যধনীয় বন্ধু ও মুখ্যদিগের (পরবচনে বিশ্বাদ রক্ষার জন্ত ) গ্রহণ করার নাম প্রতিপ্রহ। প্রতিগ্রহ্বার। সন্ধিকরণবিবয়ে, বে রাজা নিজের দৃশ্য অমাত্য বা দৃশ্য অপাত্য আধিরূপে দিরা সন্ধি করেন, তিনিই বিশেষ লাভ্যুক্ত হয়েন। আর বিপরীত রাজা (অর্থাৎ প্রতিগ্রহ-গ্রহণকারী রাজা) বক্ষিত হয়েন। কারণ, শক্র হইতে প্রতিগ্রহ গ্রহণ করিয়া বিশ্বস্তবাধে অবন্ধিত (বিজ্ঞানীয়ুর) ছিত্র বা ছর্মালতা দোবত্বানে শক্র, নিজ প্রদন্ত প্রতিগ্রহ্র উপর অপেক্ষা না রাধিয়া, প্রহার করেন। কিন্তু, (প্রক্রভার্মণ) অপত্যকে প্রতিগ্রহ্ দিয়া সমাধান করিতে হইলে যে রাজা কভা বা পুরুণানের প্রসক্ষে কভাই প্রতিগ্রহার্থ দান করেন, তিনি বিশেষ লাভবান্ হয়েন। কারণ, কভা পিতার (সম্পত্তিরূপ) দারের অধিকারিনী হয় না এবং সে অন্তের উপভোগের প্রয়োজনে ব্যবহৃত হয় ও (পিতার) ক্লেশ উৎপাদন করে। কিন্তু, পুক্র ইছার বিপরীত (অর্থাৎ সে দারভানী এবং সে পিতার প্রথেষ ও ক্লেশান্তির সহায়ক ছয়)।

হুই পুত্রের মধ্যে, যে রাজা দমানজাতীয়, প্রাক্ত, শ্র, অন্তবিস্থায় শিকিত পূত্রকে, বা একমাত্র পুত্রকে, প্রতিগ্রহরূপে প্রদান করেন, তিনি (শক্তরারা) বঞ্চিত হরেন। ইহার বিপরীত বিনি, অর্থাৎ বিনি অক্সীন, অপ্রাক্ত, অণ্র ও অন্তর-বিষ্যার অশিক্ষিত পুত্রকে প্রতিগ্রহরূপে প্রদান করেন, তিনি বিশেষ লাভবান হয়েন। কারণ, সমানজাতীয় পুত্রের অপেক্ষার অসমানজাতীর পুত্রকে আধিরূপে রক্ষা করাই শ্রেরহর, বে-হেডু এইরুপ (অসমানজাতীয়) পুত্র সম্পত্তির দারতাগি-সন্তান রহিত ( অর্থাৎ এই পুত্র ও তদীর সন্তান আধানকারীর সম্পত্তির ভাঙী হইতে পারে না )। প্রাঞ্জ পুত্রের অপেক্ষার অপ্রাঞ্জ পুত্রকে প্রতিগ্রহরূপে প্রদান করা শ্রেরন্বর, কারণ, তাহাতে মন্ত্রপাতির লোপ দৃষ্ট হয় ( স্নতরাং তাহার মন্ত্রপাতিকারা প্রতিগ্রহ-গ্রাহকের কোন উপকারের সন্তাবনা নাই )। শূর পুত্রের অপেক্ষার অর্থার (তারুক) পুত্রকে প্রতিগ্রহ রাখা শ্রেরন্বর, কারণ, তাহার কোনও উৎসাহশন্তিক নাই। অন্তচালনপটু পুত্রের অপেক্ষার অন্তবিভার অশিক্ষিত পুত্রকে প্রতিগ্রহরূপে প্রদান করা শ্রেরন্বর, কারণ, তাহার আক্রমণ করার অনুভণ কোন সম্পৎ নাই। একমাত্র পুত্রের অপেক্ষার অনেক পুত্রের অন্তথকে প্রতিগ্রহরূপে প্রদান করা শ্রেরন্বর, কারণ, (কোনও কার্যা) তাহার কোনও অপেক্ষা বা প্রয়োজন নাই।

আবার, জাত্য (সমানজাতীয়) ও প্রাক্ত পুত্রের মধ্যে, ঐশ্ব্যাপ্রকৃতি সেই পুত্রেরই অন্থবর্ত্তন করে, যে পুত্র অপ্রাক্ত হইপেও জাত্য (সমানজাতীয়), অর্থাৎ লাত্য পুত্রের গুণ এই যে, সে রাজৈখর্য্যের উত্তরাধিকারী হইবে। (কিছ), যে পুত্র অসমানজাতীয়, অবচ প্রাক্ত, মন্তাধিকার বা মন্ত্রশক্তি তাহার অন্থবর্ত্তন করে অর্থাৎ সে পুত্র রাজ্যাধিকারী না হইলেও মন্ত্রশক্তিযুক্ত হওয়া তাহার বিশেষ গুণ। অজ্ঞাত্য প্রক্রের মন্ত্রাধিকার থাকিলেও, জাত্যক বা সমানজাতীয় পুত্র (অপ্রাক্ত হইসেও) বুজসংযোগ লাভ করিয়া প্রাক্তকেও অতিশন্তিত করিতে পারে (অর্থাৎ রাজ্যাধিকারী হইয়া সে বিভার্ত্বকগণকে মন্ত্রাধিকারে বসাইয়া তাহাদের মন্ত্রশক্তির গুণে নিজের অপ্রাক্ততার পূরণ করিতে পারে)।

আবার, প্রাক্ত ও শ্ব পুত্রের মধ্যে, মতিকর্মের যোগ অশ্ব প্রাক্তের অন্থবর্জন করিয়া থাকে (অর্থাৎ অশ্ব প্রাক্ত পূত্র বৃদ্ধিপূর্বক কর্যা করিতে সমর্থ হয়)। বিজ্ঞমের অধিকার শ্ব অপ্রাক্তর অন্থবর্জন করে অর্থাৎ শ্ব পূত্র অপ্রাক্ত হইলেও বিজ্ঞমশালী হইতে পারে। শ্ব অপ্রাক্ত পুত্রের বিজ্ঞমের অধিকার থাকিলেও, (অশ্ব) প্রাক্ত পূত্র (অপ্রাক্ত) শ্ব পুত্রকেও বক্তিত করিতে পারে, অর্থাৎ তাহাকে অবশে আনিতে পারে, যেমন বৃদ্ধিমান্ পূক্ক (শিকারী) বলবান্ হন্তীকেও স্বশে আনিতে পারে।

শ্ব ও অত্নশিক্ষিত পুত্রের মধ্যে, পরাক্রমের উভোগ অকৃতাত্ত্ব শ্ব পুত্রের অফুবর্ত্তন করে (অর্থাৎ অকৃতাত্ত্ব হুইলেও শ্ব পুত্র বিক্রমের কার্য্য করিতে সমর্থ হর)। লক্ষালভে অধিকার, কৃতাত্ত্ব শ্ব পুত্রের অফুবর্ত্তন করে (অর্থাৎ সে উত্তমন্ত্রণে লক্ষ্যভেদী হুইতে পারে)। তাহার লক্ষ্যলভে অধিকার থাকিলেও, প্র প্ত নিজের ছিরতা, (সমটে) ডংক্ষণাৎ প্রতীকারসামর্থ্য ও অসংযোহ (নিজকে হারাইর) না কেলার গুণ )-ধারা কৃতান্ত্র (অপ্রকেও) অভিপরিত ক্রিতে গারে (অর্থাৎ ভাহাকে স্বশে আনিতে গারে )।

বহপুত্রযুক্ত ও একপুত্রযুক্ত রাজার মধ্যে বে রাজা বহপুত্র-সমন্বিত তিনি ( দক্ষির দৃঢ়করণার্থ প্রতিগ্রহরূপে ) অহ্যতম পুত্র প্রদান করিয়া অবপিষ্ট পুত্র বাকার অভিমানে গরিতে হইয়া ( অবসরপ্রাপ্তিতে ) সন্ধির অভিজ্ঞান করিতে পারেন না ( স্থতরাব বহপুত্র রাজা একপুত্রের অপেকার প্রেরম্বর )।

একমাত্র পূত্রকে প্রতিগ্রহরূপে দিয়া সন্ধি দৃঢ় করিতে হইলে, সেই সন্ধিকারী রাজাই বিশেষ লাভযুক্ত হইতে পারেন, যদি দেই পূত্রের ফল অর্থাৎ পূত্র বর্তমান থাকে ( স্থতরাং সন্ধির অতিক্রমে নিজ পূত্রকে হারাইলেও তাঁহার পোত্র রাজাধিকার প্রাপ্ত হইতে পারিবে ।

ছই পুত্র সমফলযুক্ত ( অর্থাৎ সমানপুত্রসমন্বিত ) হইলে তথাধো বে পুত্র প্রকানন্দক্তিমুক্ত অর্থাৎ বুবা ভাছারই গুণাভিশর বুকিতে ইইবে। আবার প্রজাননশক্তিমুক্ত ছই পুত্রের মধ্যে যে পুত্র আসল্লগর্ভোৎপাদন-শক্তিশালী ভাছার গুণবিশেষ আছে বুকিতে হইবে ( অর্থাৎ এমন পুত্রকে প্রতিগ্রহরূপে দেওরা উচিত নহে )।

কিছ, (পুত্রোৎপাদনে অথবা রাজ্যভারবহনে ) শক্তিমান্ একপুত্র থাকিলে, রাজা নিজে পুত্রোৎপাদনে পুগুশক্তিক হইলে নিজকেই আধিরূপে প্রদান করিবেন, একমাত্র পুত্রকে প্রতিগ্রহরূপে আধান করিবেন না। (এই পর্যায় দক্ষিকর্ম অর্থাৎ সন্ধি দৃচ করার উপার নিরূপিত হইল।) (সম্প্রতি সন্ধিমোক বা প্রতিগ্রহরূপে আহিত পুত্রাদির মোক্ষসম্বন্ধে উপায় নিরূপিত হইতেছে।) সন্ধিকরিয়া নিজের শক্তি উপচিত বা বর্দ্ধিত করিয়া, (বিজিক্ষিয়্) সমাধিমোক্ষ (সন্ধির মৃচকরণের জন্ত শক্তির নিকট প্রতিগ্রহরূপে রক্ষিত পুত্রাদিকে মোচন) করাইবেন।

শক্তর নিকট দক্ষিদ্চকরণের উদ্দেশ্যে প্রতিগ্রহরণে আহিও কুরারের আসমবর্তী দক্তি-নামক গৃঢ়পুক্রের। ও কারু ও শিলীর বেবে বিচরণশীল অন্ত গৃঢ়পুক্রের। নিজ নিজ কার্য্য করিতে থাকিয়া রাজিতে হুরস্থার (মাটীর নীচে ভৈয়ারী-করা গুপু মার্গের ) বার কুমারের গৃহপর্যান্ত ধনন করাইয়া ভদারা কুমারকে অপহরণ করিবে। নট (অভিনয়কারী), নর্থক (নৃত্যকারী), গায়ন (গানকারী), বাদক (বাসকারী), বাগ্জীবন (ক্রাছারা উপজীবিকা-

কারী ), কুদ্দীলন (গোকপাঠক বা অভিপাঠক ), প্রবক্ (লাদ্দকারী ), বজু গাদি লইরা নৃত্যকারী, ও দৌভিক (মায়াবিভাপ্রদর্শক ? পমহামহোপাধাার গণপতি শান্তী ইহার অর্থ করিয়াছেন—আকাশধানিক অর্থাৎ যে আকাশে গতাগতি করিতে জানে ) ইতিপূর্বে বিজিগীর্ঘারা গৃচপূক্ষধের কাজে ব্যাপৃত হইরা শক্ষর নিকট উপস্থিত হইবে। পরে তাহারা ক্রমে (আহিত) কুমারের নিকটও পৌছিবে। (কুমার) তাহাদের জন্ত (শক্ষরাজার অহজ্ঞা লইরা) অনির্দ্ধিত গাবে যথেক্ষ সময়ে (কুমারের গৃহে) প্রবেশ, অবস্থান ও (তথা হইতে) নির্গমনের ব্যবস্থা করাইবেন। তৎপর তাহাদের অন্তত্মের বেবধারী হইরা। কুমারও) রাজিতে (তাহাদের সহিত। প্রস্থান করিবেন।

এতদার। বেখা বা ভার্যার বেষধারী হইরা (কুমারের) নিজমণও ব্যাধ্যাত হইল (অথবা, বেখা ও ভার্যার বেষধারী গুপ্ত পুরুষদিগের কুমার-নিজমণকার্ব্যে দহারতার বিষয় ব্যাধ্যাত হইল)।

অথবা, তাহাদের (নটনর্ত্তকাদির, বাদিত্রের (বাজানার। পেটা ও আভরণাদি-ভাতের পেটা লইয়া ( কুমার তৎতৎ-কলাপ্রদর্শনের স্মান্তিতে সেইছান হইতে ) নির্গত হইবেন।

অথবা, (কুমার) স্পকার, ভক্ষ্যকার, স্নানকাররিতা, সংবাহক (অঞ্চ-বিমর্দ্ধক), আন্তর্ক (শরনাদির বিস্তার-কারক), করক (নাপিত), প্রদাধক ( বন্ধাপক্ষোদিদারা যে সাজাইয়া দেয়) ও জলপরিচারকদারা, ডাহাদের দ্রব্যসামগ্রী, বন্ধ, ভাগু-পেটিকা, শ্ব্যা ও আসনরূপ স্তোগ্যোগ্য বন্ধনিচয়ের সহিত বাহিরে নীও
ইইবেন।

অথবা, (কুমার) পরিচারক বা চাকরের ছন্মে, রূপনিরূপণের অধােগ্য সময়ে অর্থাৎ অন্ধ্রার্তু সময়ে কোনও দ্রব্য লইয়া নির্গত ইইবেন। কিংবা (তিনি) রান্ত্রিতে দেয় ভূতবলি দানের ছলনা করিয়া স্থবলার হার দিয়া নির্গত ইইবেন। অথ্যা (তিনি নদী প্রভূতি) জলাশায়ে বাক্লণ-যোগের (১৬ অধিকরণে ১ম অধাার স্তেইবা) আশ্রেয় লইবেন অর্থাৎ এই যোগদাধনের ছল করিয়া নির্গত ইইবেন।

জন্ধবা, বৈদেহকব্যঞ্জন (বণিকের বেখধারী) গুচপুরুবেরা পঞ্চ আর ও কলের বিজ্ঞারবারহারদার। প্রহরীদিগকে (ত্যিক্রা) বিষ থাওয়াইবে ( অর্থাৎ প্রহরী সেই আয়াদি ভক্ষণ করার পরে স্থাচৈতভা হইলে সেই ভচপুরুবেরা ক্যারকে সইরা প্রস্থান করিবে )। অথবা, কুমার দেবতার উপহার, শ্রাদ্ধ ও প্রীতিভোজনের উপলক্ষে প্রহ্নীদিগকে মদনরসমূজ (অর্থাৎ মদকর-স্থায়্ক্ত) আর ও পানীর স্থবা বাওয়াইয়া
(তাহাদের সংজ্ঞালোপ ঘটিলে) নির্গত হইবেন। অর্থবা, (তিনি) নিষ্কের
প্রহ্নীদিগকে প্রচুর ধনাদিদানে উৎসাহিত করিয়া নির্গত হইবেন।

অথবা, নাগরক (নগররকী), কুশীলব, চিকিৎসক ও আপুপিকের (অপুণ বা পিষ্টকাদির বিক্রেভার) বেষধারী গুড়পুরুবের। (পুরসঞ্চারে প্রাপ্তান্থ্যতি এই লোকেরা) রাজিতে ধনী ব্যক্তিদিগের গৃছে আগুন লাগাইবে। অথবা, রিদ্দি পুরুবেরা ও বৈদেহক বা বিপিকের বেষধারী গুড়পুরুবেরা পণাগৃহে বা দোকানগৃহে আগুন লাগাইবে (স্বভরাং আগুন দেখিরা জনসংঘর্ষ হইলে কুমার সেই অবসরে নির্গত হইবেন)। অথবা, (কুমার) নিজের গৃহে অন্ত লোকের শরীর (শব) ফেলিয়া রাখিয়া, তাহাতে আগুন লাগাইবেন যেন কেহ ভাঁহার আর অবেষণ না করিতে পারে (অর্থাৎ সকলেই সেই শব অগ্নিতে দেখিয়া 'কুমার দক্ষ হইয়াছেন' এইরূপ মনে করিবে)। তৎপর তিনি সন্ধিচ্ছেদ (ভিতিতে রক্ষকরণ) ও ধাতস্থরকা আগ্রর করিয়া নির্গত হইবেন।

অথবা. (কুমার) কাচভার (কাচের দ্রব্যের বছনকারী), কুন্তকার (জলকলসবছনকারী), কিংবা ভাওভারের (অক্তান্ত ভাওবছনকারীর) বেষধারী ছইয়া রাত্রিতে প্রস্থান করিবেন। অথবা, (তিনি) মুও ও জটিল-নামক (বিজ্ঞিলীবু-প্রণিহিত) গুঢ়পুরুষদিগের প্রবাসনমন্তের গৃহে প্রবেশ করিয়া রাত্রিতে স্বয়ং তদ্বেষধারী ইইয়া ভাছাদের সহিত প্রস্থান করিবেন। অথবা, (তিনি) (ঔপনিষদিক অধিকরণে উক্তে) নিজেকে বিদ্ধাকরণ (স্বাভাকিক রূপ পরিবর্তনকরণ) ও ব্যাধিকরণ (ব্যাধিত ব্যক্তির ভ্রায় রূপত্রহণ) কিংবা অরণ্যচর (-পুলিন্দাদির) বেষত্রহণরূপ উপায়ের অক্ততমটি অবলম্বন করিয়া (রাত্রিতে প্রস্থান করিবেন)। অথবা, প্রেতের বেষধারী (রাজকুমার) গুঢ়পুরুষধারা বাহিয়ে নীত ইইবেন। অথবা, তিনি স্থীবেশ ধারণ করিয়া কোন মৃত ব্যক্তির ভারের অন্তর্গমন করিবেন।

আবার, (অন্তেমণকারীদিগের অন্থপতনের ভয়ের সময়ে) বনচরদিগের বেষধারী গৃচপুরুবের। যে পথ দিয়া (অপক্রাম্ভ) কুমার চলিয়া গিরাছেন, ভন্নগু পথ (অবেধণকারীদিগকে) দেখাইয়া দিবেন।

অথবা, (কুমার) শকটচারীদিণের শক্টমার্গ অবলম্বন করিয়া (তাহাদের সহিত ) অপগত হইবেন। অথবা, ডদীয় অন্তেখণকারীরা নিকটবর্ত্তী হইলে, (ডিনি) কোনও প্রশ্নেদ আগ্রায় লইবেন। যদি ঘন জ্ঞাল না পাওয়া যায়, তাহা হইলে পথের উভয়পার্শে হিরণ্য কিংবা বিষযুক্ত থাগুদামগ্রী ফেলিভে ফেলিভে চলিবেন। (ভাহার পরে) দেই পথ ছাড়িয়া অন্ত পরে অপগত হইবেন।

যদি কুমার অধ্যেশকারী দিগের দ্বারা গ্বত হয়েন, তাহা হইলে সামবচনাদির প্রয়োগে তাহাদিগকে বঞ্চিত করিবেন। কিংবা তিনি বিষযুক্ত পাথেয় দিয়া তোহাদিগকে মূর্চ্ছিত বা মারিত করিয়া দেখান হইতে অপগত হইবেন)।

অববা, পূর্ব্বোজ্ঞ ) বারুণবোগে ও অগ্নিলাহে অন্ত কাহারও শব ফেলিয়। রাখিয়া (বিজ্ঞিয়য়ু) শক্তর প্রতি আক্রমণ করিবেন এবং বলিবেন—"তোমার ঘার। আমার পুত্র (যোগে বা অগ্নিতে) হত হইয়াছে." (স্তরাং ক্মার মারা গিয়াছেন শুনিয়া সেই শক্ত আর তাঁহার অন্বেষণার্থ চেষ্টা করিবেন না, কুমারও সহজে সেখান হইতে প্রস্থান করিতে পারিবেন )।

অথবা, (অন্ত উপায় না পাইয়া ক্মার) রাক্তিতে পূর্ব পুরুষ্টিত শন্ত গ্রহণ করিয়া প্রহরীদিগকে আক্রমণ করিয়া শীজগামী (অংগদিবাহনের) সাহায্যে পূর্বসঙ্কেতিত গুচুপুরুষ্দিগের সহিত অপগত হইবেন॥ ১॥

কোটিলীয় অর্থশাল্পে বাড্গুণ্য-নামক দপ্তম অধিকরণে দন্ধিকর্ম ও সন্ধিমোক্ষ-নামক দপ্তদশ অধ্যায় ( আদি হইতে ১১৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## অফ্টাদল অধ্যায়

# ১১৪-১১৫ প্রকরণ—ম**হ্যম, উদাসীন ও মণ্ডলছ অন্য রাজার প্রতি** বিজিপীযুর ব্যবহার

মধ্যমের প্রাকৃতি (প্রকৃষ্টভাবে সহায়তাকারী রাজা) তিনটি—তিনি সরং, ও তাঁহার মিত্ররূপ তৃতীয় প্রকৃতি, এবং মিত্র-মিত্ররূপ পঞ্চম প্রকৃতি। এবং তাঁহার মিত্ররূপ তৃতীয় প্রকৃতি ও বিরুদ্ধির বিরুদ্ধির (বিরুদ্ধির) রাজাও) তিনটি—তাঁহার অবিরূপ হিতীয় প্রকৃতি, অরিমিত্ররূপ চতুর্থ প্রকৃতি ও অরিমিত্রমিত্ররূপ ষষ্ঠ প্রকৃতি। যদি বধাম রাজা এই উভয় ত্রিকের (অর্থাৎ প্রকৃতি ও বিরুতিরূপ হয়টির) উপর অংশুরুদ্ধি রাখেন, ভাহা হইলে বিজিনীয় মধ্যমের প্রতি অরুকৃল ব্যবহার করিবেন। যদি মধ্যম তাঁহাদের প্রতি অরুকৃল ব্যবহার করিবেন। যদি মধ্যম তাঁহাদের প্রতি অরুগ্রহদ্ধি না রাধেন, তাহা হইলে

বিজিপীর নিজের প্রকৃতিত্রহের উপর অর্থাৎ নিজ প্রকৃতি, বিত্রপ্রকৃতি ও দিত্র-মিত্রপ্রকৃতির উপর অন্তলেম বা অন্তকৃত ব্যবহার করিবেন।

यपि मधाम बाक्स विकित्रीहुत मिळ्लावी ( १म व्यक्षिकद्याः अस व्यक्षांत्र ऋहेतः ) মিত্রকে নিজের অধীন করিতে চাহেন, তাহা হইলে তিনি (বিজিপীয়া) নিজের ও নিক মিতের মিত্রদিগতে ( মধ্যমের বিরুদ্ধে ) উত্থাপিত করিয়া এবং মধ্যমরাজ্ঞাত মিত্রদিগকে মধ্যম ছইতে ভিন্ন করিয়া, মধ্যমশিশিত নিজ মিত্রকে বক্ষা করিবেন। অপবা. (বিজিগীয় মধ্যমের অপকারার্থ) রাজয়গুলকে (মধ্যমের বিস্কার) প্রোৎসাহিত করিবেন। ( তদীয় প্রোৎসাহন বাক্য এইরূপ হইবে )—"এর মধ্যম বাজা অত্যন্ত উন্নত হইয়া আমাদের সকলের বিনাশের জ্ঞা উঠিয়া লাগিয়াছেন, (অভেএৰ) আমরা একতা মিলিভ হইয়া ভাঁহার (মধ্যমের) আফুমণ্যাতা বিহত করিব।" যদি এই প্রোৎসাহিত রাজমণ্ডল (বিজ্ঞিনীরুর) সাহায্যার্থ তাঁহাকে অন্তর্গুটীত করিতে চাহেন, তাহা হইলে বিঞ্চিগীর ( তাঁহাদের সহায়তায়) মধামকে নিগৃহীত করিয়া নিজকে সংবদ্ধিত করিবেন। যদি রাজমণ্ডল বিজি**গীবুর** প্রতি অন্তব্যহ না দেখান, ভাষা হইলে বিভিনীয় ( মধ্যমলিন্সিত ) স্বমিত্তকে কোশ ও দেনা দিয়া অসুগৃহীত করিয়া—যে-বে বহুসংখ্যক মধ্যমের <del>হেবকারী রাজা</del>রা পরস্পারকে সহায়তাখার। অসুগৃহীত করিয়া (মধ্যমের অপকারার্থ) দণ্ডায়মান হইবেন, অথবঃ বাঁহার৷ নিজেদের এক জন (বিভিগীর্ভার৷) অকুকৃলিত হইলে সকলেই অসুকৃষিত হইবেন, কিংবা যাহারা প্রস্পরের মধ্যে ভেদ আশস্তা করিয়া ( মধ্যমের বিরুদ্ধে ) উবিত হইতে চাহিবেন না, তাঁহাদের মধ্য হইতে প্রধানভূত নিজরাজ্যের আসমবর্তী কোন একজন রাজাকে সাম ও দানঘার। আপন বশে আনিবেন। এইপ্রকার ভাবে দ্বিতীয় সহায়ক লাভ করিয়া ভিনি (বিজিগীর) **দিগুণবলসম্পন্ন হ'ই**বেন এবং তৃতীয়কে লাভ করিয়া ব্রিগুণবলসম্পন্ন হ**ই**বেন। এইভাবে নিজ শক্তি বাড়াইয়া লইয়া বিজিগীর মধ্যমের নিগ্রহ বিধান করিবেন।

অথবা, বিজ্ঞিনীর ( মধ্যমছেবিগণের সাহায্য লইবার পূর্বেই ) দেশ ও কালের অতিপাতের বা অক্সথবোগিতার সন্ধাবনা হইলে, মধ্যমের সহিত নিজে সদি করিয়া ( মধ্যমিলিন্সিত নিজ মিত্রের ) সহায়তা করিবেন। অথবা তিনি, মধ্যমের বাহারা দৃষ্ণ রাষ্ট্রমুধ্য তাহাদিগের সহিত (দেশদাহ ও দেশবিলোণ আছেতি) কর্বের পণনধারা ( কর্মদন্ধি ) করিবেন (অর্থাৎ তাঁহারা মধ্যমের দেশে অরিকর্ম গ্রছতি সম্পাদন করিবেন, এই সর্তে তাঁহাদের সহিত বিজ্ঞিনীর সন্ধি করিবেন)।

(বিশিন্ধীযুর বিত্তভাবী বিত্তের বিক্ষডাচারী মধ্যমের প্রতি বিশিনীর

ব্যবহার বলা হইল, সম্প্রতি তদীয় কর্পনীয় মিজের বিক্লচাচারী হইলে বধ্যবের প্রতি বিজিগীরুর ব্যবহার অভিহিত হইতেছে।)

বদি মধ্যম রাজা বিজিগীবুর কোনও কর্ণনীর মিত্রকে নিজের অধীন করিতে চাহেন, তাহা হইলে বিজিগীবু সেই মিত্রকে এই বলিয়া অভর প্রদান করিবেন—"আমি ডোমাকে রক্ষা করিতেছি।" এই অভরবচন ততদিন চলিবে যতদিন পর্যন্ত এই কর্ণনীর মিত্র মধ্যমদার। কলিত না হইবেন। তারপর তিনি কর্লিত হউলে, বিজিগীবু তাঁহাকে ত্রাণ করিবেন।

বদি মধ্যম রাজা বিজিপীরুর কোনও উচ্ছেদনীয় মিত্রকে নিজের বশে আনিতে চাহেন, তাহা হইলে বিজিপীরু (তাঁহার কর্শনপ্রান্তি পর্যন্ত উপেক্ষা করিবার পর) যথন দেখিবেন মিত্রটি কর্শিত হইয়াছেন ( সম্পূর্ণরূপে উচ্ছিন্ন হরেন নাই ) ওখন তাঁহাকে ত্রাণ করিবেন, কারণ, তদীয় উচ্ছেদপর্যন্ত উপেক্ষা করিলে মধ্যম রাজার বৃদ্ধির তন্ন পাকিবে ( তাহাতে বিজিপীরুর নিজেরও ভন্ন থাকিবে )।

অথবা, বিজিগীর মধ্যমন্বার। উচ্ছিন্ন মিন্তকে নিজ ছইতে ভূমিদানন্বার। অনুগৃহীত করিয়া ভাঁছাকে নিজহন্তে রাখিবেন, ন্চেৎ সেই মিন্তের অক্তন্ত্র (অর্থাৎ শক্তস্থানে) অপসরণের ভর থাকিবে।

(বিজ্ঞিসীরুর) কর্শনীয় ও উচ্ছেদনীয় নিজ মিত্রের। যদি মধ্যম রাজার সহায়তা করেন, তাহা হইলে বিজিসীরু ( মধ্যমের সহিত ) পুরুষান্তর-নামক সন্ধি করিবেন ( অর্থাৎ নিজের সেনাপতি ব। কুমারকে সন্ধিদৃঢ়তার জন্ত আধিরূপে রাধির) সন্ধি করিবেন )।

ৰদি (বিজিপীবুর) কর্শনীয় ও উচ্ছেদনীয় মিত্রদিগের মিত্রেরা বিজিপীবুর নিগ্রহকরণে সমর্থ হয়েন, তাছা ছইলে তিনি (বিজিপীবু) মধ্যমের সহিত সন্ধি করিবেন। (এই পর্যান্ত বিজিপীবুর নিজ মিত্রের আক্রমণকারী মধ্যমের প্রতি তাঁহার ব্যবহার নিজ্ঞপিত ছইল।)

অথবা, মধ্যমরাজা বদি বিজিগীযুর অমিক্রকে নিজ বলে আনিবার জয় আফ্রমণ করিতে চাহেন, ভাহা হইলে তিনি (বিজিপীরুর) সেই মধামের সহিত সন্ধি করিবেন।

এইরূপ করা হইলে, বিভিন্নীরুর ভার্যও (ভার্যাৎ নিজ ভারিজের নিপ্রহও ) শক্ত হইল এবং মধ্যুমরও প্রির ভাচরিত হইল।

বৃদ্ধি মধ্যম রাজা ভাঁছার নিজের কোনও মিত্রভাবী মিত্রকে নিজের ক্ষ্মীন করিতে চাহেন, ভাছা হইলে ভিনি মধ্যমের সহিত পুচমান্তর-নামক সন্ধি করিবেন (অর্থাৎ, নিজের সেনাপতি বা কুমারকে মধ্যমের সাহাব্যার্থ প্রেরণপূর্বক সন্ধি করিবেন)। অথবা, মধ্যমের সেই মিত্রের উপর নিজের কোন
অপেকার বা তাহা হইতে কোন সার্থসিদ্ধির সন্তাবনা থাকিলে, তিনি (বিভিন্নীরু)
মধ্যমকে এই বলিয়া বারণ করিবেন—"মিত্রকে উচ্ছিল্ল করা তোমার যোগ্য কার্য্য
হইবে না"। অথবা, তিনি (বিজিগীরু) মধ্যমের সেই কার্য্যের উপেকা
করিবেন, কারণ ভদীর কার্য্যের জন্ত তাহার (মধ্যমের) রাজমণ্ডল স্বপক্ষবধের
জন্ত মধ্যমের উপর কুপিত হইবেন।

ধনি মধ্যম রাজ্য নিজের অমিত্রের উপর বিক্রমপ্রাদর্শনপূর্বক তাঁহাকে স্বশে আনিতে চাহেন, তাহা হইলে তিনি (বিজ্ঞিগীর) স্বয়ং অদৃশ্যমান থাকিয়। (অর্থাৎ গুচ্ভাবে থাকিয়) মধ্যমের সেই অমিত্রকে কোশ ও সেনাছারা সাহাষ্য করিবেন।

যদি মধ্যম রাজা কোন উদাসীন রাজাকে স্বশে আনিতে চাহেন, তাহ। হইলে "উদাসীন হইতে মধ্যম রাজা ভেদপ্রাপ্ত হউন"— এইরূপ মনে করিয়া তিনি (বিজিগীরু), মধ্যম ও উদাসীন রাজার অপেক্ষায় যে রাজা রাজ্যগুলের অধিকভর প্রিয় সেই রাজাকে আপ্রয় করিবেন (অর্থাৎ, সেই রাজাকে সাহায্য করিবেন)।

(সম্প্রতি ক্রমপ্রাপ্ত উদাসীন রাজার প্রতি বিজ্ঞিসীবুর ব্যবহার অভিহিত হইতেছে।) মধ্যম-চরিত সম্বন্ধে যাহা বলা হইল, উদাসীন-চরিতেও তাহা প্রযুক্ত্য বলিয়া ব্যাধ্যাত হইল। (বিশেষ কথা বলা হইতেছে—) বদি উদাসীন রাজা মধ্যমকে স্ববশে আনিবার জন্ত ইচ্ছা করেন, তাহা হইলে তিনি (বিজ্ঞিসীবু) উভয়ের মধ্যে (অর্থাৎ মধ্যম ও উদাসীনের মধ্যে) যে পক্ষ অবলম্বন করিলে তিনি নিজ্ঞ শক্তকে বঞ্চিত করিতে ও নিজ্ঞ মিত্রের উপকার করিতে পারিবেন, সেই পক্ষের সহিত মিলিত হইবেন, অথবা তিনি দণ্ড বা সেনাছার। উপকারী মধ্যম বা উলাসীনের সহিত মিলিত হইবেন।

এই ভাবে বিজ্ঞিয় নিজের শক্তি বাড়াইয়া অরিপ্রাকৃতিকে কর্ষিত বা ক্ষীণ-শক্তি করিবেন। এবং তিনি (বিজ্ঞিনীয়) মিত্র প্রকৃতিরও উপকার করিবেন।

অরিশক্ষার। বোধিত সামস্ক তিনপ্রকার হইতে পারে, যথা— অরিভাবী সামস্ক, মিত্রভাষী সামস্ক, ভূতাভাষী সামস্ক। ভ্রমধ্যে অরিভাবী সামস্কের কথা বলা হইতেছে——( বিভিনীবুর বাজ্যের অনস্কর রাজ্যের অধিকারী হওয়ার) উচ্চার (সেই সামস্কের) সহিত অমিত্রভাব সমান থাকিলেও, অরিভাবী

সামক্ষের আট প্রকার বিশেষ হইতে পারে। (১) জনাজ্বান্ ( অর্থাৎ বে সামস্ত অবশীক্তেজির), (২) নিভাাপকারী (অর্থাৎ যে সামস্ত সর্বাদা অপকারকারী), (৩) শত্রু (অর্থাং যে সামস্ত অকারণে বিজিগীযুর প্রতি ছেবপোষণকারী ), (৪) শত্রুসহিত (অর্থাৎ যে সামস্ত শত্রুর সহায়কারী ), (৫) পার্ষিংগ্রাম ( অর্থাৎ যে নামস্ত পুর্চদেশ হইতে উপদ্রবের উৎপাদক ), (৬) ব্যসনী (অর্থাৎ যে দামন্ত বিপদগ্রস্থা, (৭) যাতব্য (অর্থাৎ যে সামস্ত অভিযুক্ত বা আক্রান্ত হইবার বোগ্য) ও (৮) যে সামস্ত বিজ্ঞিগীযুর ব্যসনসময়ে অভিযোক্তা বা আক্রমণকারী হইয়া অবিভাবী সামস্ত বলিয়া পরিজ্ঞাত। মিত্রভাবী দামন্তের ভেদ বলা ঘাইতেছে---(১) বিজ্ঞিনীযুর সহিত যে সামস্ত ( ভুমাাদি ) একই অর্থের সাধনের জন্ম ( ডিন্ন ভিন্ন দিকে ) যাত্রাকারী, (২) যে উদ্দেশ্যে ( যথা, ভূমিপ্রাণ্ডির জন্ম ) বিজিপীয়ু যানপ্ররন্ত হইয়াছেন ভাহা হইতে ভিন্ন উদ্দেশ্যে ( যথা, হিরণ্যপ্রাপ্তির জন্ম) যে সামস্ত অভিযানে প্রবৃত্ত হয়েন, (৩) যে দামস্ত বিজিগীযুর সহিত একত মিলিত হইয়া যুদ্ধবাতাকারী, (৪) বে দামস্ত বিজিগীবুর সহিত (ভিন্ন ভিন্ন দেশে অভিযানের জন্ত ) সন্ধি করিয়া প্রযাণকারী, (৫) যে দামন্ত (বিজিগীয়র) কোন স্বার্থনাধনের জঞ যাত্রাকারী, (৬) যে সামস্ত বিজিগীযুর সহিত মিলিত হইয়া শুন্তনিবেশনাদিরূপ কোনও কাৰ্য্যে প্ৰবৃত্ত, ( ১) যে সামস্ত কোশ ও সেনা । এই উভয়ের কোন একটি দ্রব্যের ক্রয়কারী, বা বিক্রয়কারী, ও (৮) যে দামস্ত দ্বৈধীভাব গুণের অবলম্বন-কারী। ইহারা সকলেই মিত্রভাবী সামস্ত বলিয়া অভিহিত।

এখন ভূত্যভাবী সামস্কের ভেদ বলা ছইতেছে—(১) যে সামস্ক বলবান্ রাজার প্রতিঘাতকারী, (২) যে সামস্ক বলবান্ রাজার অন্তর্জি ( অর্থাৎ অরি ও বিজিপ্টিপুর মধ্যবর্তী ছইয়া ভূম্যনন্তর রাজা), (৩) যে সামস্ক বলবান্ রাজার প্রতিবেশী এবং (৪) বে সামস্ক বলবান্ রাজার পার্ফিগ্রাহক, (৫) যে সামস্ক স্বরং আশ্ররার্থ উপস্থিত ছইয়া দঙ্গোপনতপর্য্যায়ভূক্ত হয়েন, ও (৬) বে সামস্ক স্বরু রাজার প্রতাপ অক্সভব করিয়া আশ্ররার্থ উপস্থিত ছইয়া দঙ্গোপনত-পর্যায়ভূক্ত হয়েন। ইহারা ভূত্যভাবী সামস্ক বলিয়া পরিচিত।

উক্ত তিনপ্রকার অমিত্রভৃত দামন্তের ভার তৃমে।কান্তর মিত্র দামন্তগণ্ড ব্যাখ্যাত হইল, অর্থাৎ ভাঁহারাও অরিভাবী, মিত্রভাবী ও ভূতাভাবী হইয়া— তিনপ্রকার ভেদযুক্ত হইতে গারেন ইহা বলা হইল।

এই ভূম্যেকান্তর নিত্রসমূহের মধ্যে বে মিত্র শব্দর অভিবোগ উপস্থিত হইলে,

বিজ্ঞিপীরুর দহিত স্মানভাবে স্বার্থনিন্ধিতে তৎপন্ন হরেন, (বিজ্ঞিপীরু) সেই মিত্রকে তেমন শক্তিঘার। উপচিত করিবেন—যাহাধার। (সেই মিত্রা) শক্তকে অভিভূত করিতে পারিবেন। ১॥

(আবার) যে মিত্র শতকে পরাভূত করিয়া শরং বৃদ্ধিশাভ করিলে বিজিপীরুর অবশীভূত হয়েন, তাঁহাকে (অরিভূত: দামস্কুঞাকৃতি ও (মিত্রভূত) একাল্করঞাকৃতির সহিত বিরোধযুক্ত করাইবেন॥২॥

অথবা, সেই অবশীভূত মিত্রের ভূমি তাঁহার কোন স্বংশোৎপন্ন বান্ধব ব। তাঁহার কোন অবরুদ্ধ (পুত্রাদি)-দার। তিনি (বিজিগীর) হরণ করাইবেন, কিংবা তদীয় অন্ধ্রেহের অপেক্ষা করিয়া দেই মিত্র যাহাতে স্ববশে থাকিতে পারেন তাঁহার সহিত দেরপ ব্যবহার করিবেন। ৩।

অধবা, যে মিত্র অভান্ত কর্মিত (হীনশক্তি) হইয়া (বিজিপীযুর) উপকার করেন না, কিংবা ভাঁহার শক্তর সহিত মিলিত হরেন, অর্থবিং ( অর্থশাব্রজ্ঞ বিজিপীরু) ভাঁহাকে হানিরহিত ও বৃদ্ধিরহিত অবস্থায় রাখিবেন ॥ ৪ ॥

(আবার) যে চল বা চঞ্চমিত্র স্বপ্রয়োজনের ষোগবশতঃ (বিজিপীরুর সহিত) সন্ধি করেন, বিজিপীরু তাঁহার অপগ্যনের হেড়ু তেমন ভাবে (অর্থাৎ অর্থাদিদানদারা) বিহত করিবেন, বাহাতে তিনি পুনরার (সন্ধিভক করিয়া) চলিরা বাইবেন না ॥ ৫ ।

অথবা, বে শঠ মিত্র ( বিজিপীবুর ) শক্রর সহিত মিলিত থাকেন, ( বিজিপীবু) তাঁহাকে সেই অরি হইতে ভিন্ন করাইবেন এরং ভেণপ্রাপ্ত হইলে তাঁহাকে উচ্ছিন্ন করিবেন এবং তদনস্কর শক্ররও উচ্ছেদশাধন করিবেন ৫৬।

থে মিত্র ( অরি ও বিজিপীয়ু— উভরের পক্ষে ) উদাসীন থাকেন, তাঁহাকে ( বিজিপীরু ) দামস্তগণের সহিত বিরোধিত করিবেন, তৎপর তিনি বিশ্রহে সন্তাগযুক্ত হইলে পর, তাঁহাকে তিনি ( বিজিপীরু ) নিজের উপকারে নিবেশিত করিবেন, অর্থাৎ বাহাতে সেই মিত্র বিজিপীয়ু-কর্ত্তক বিহিত উপকার-লাভে উৎস্ক হইতে পারেন ॥ १॥

বে প্রবাদ মিত্র ( নিজ শক্তিবৃদ্ধির জন্ত ) অরি ও বিজিপীর উভয়কেই আশ্রয় করেন, (বিজিপীর) ভাঁহাকে গেনাধারা অহুগৃহীত করিবেন—বাহাতে সেই মিত্র গরাবাধ না হয়েন ( অর্থাৎ শক্তর সহিত মিলিত না হয়েন ) ঃ ৮ ঃ

অথবা, (বিজিপীর) এমন নিজকে তাঁহার নিজ ভূমি হইতে সরাইয়া নিরা জন্ম ভূমিতে সন্তিবেশিত করিবেন—কিন্তু, সেই স্থানে তাঁহাকে সরাইয়া নেওয়াক পূর্বেই সেখানে সেনা-সাহায্য-দানের জন্ত সেইরূপ সমর্থ এক ব্যক্তিকে স্থাশিত করিবেন। ১॥

অংবা, ধে মিত্র বিজিগীবুর উপকার করেন না, কিংবা সমর্থ হইরাও তাঁহার বিপাছতে অপকার করেন, বিজিগীবু তাঁহাকে পূর্ব্বেই নিজের প্রতি বিধাসমুক্ত করিয়া তাঁহাকে নিজ অংশ্ব উপস্থিত পাইলে উচ্ছিন্ন করিবেন ॥ ১০॥

(বিজ্ঞিকীবুর) যে অরি (বিজ্ঞিনীবুর) মিত্রের বিপদ দেখিয়া প্রতিবন্ধরহিত হইয়া নিজের উন্নতিসাধন করেন, দেই মিত্রন্বারা, (বিজ্ঞিনীবু) তাঁহার (মিত্রের) বাসন প্রশ্মিত বা অপ্রকাশিত হইলে, দেই মিত্রনারা দেই অরিকে সাধিত বা অক্সকৃশিত করিবেন। ১১॥

(বিজ্ঞিনীযুর) যে মিত্র অমিত্রের বাসনপ্রাপ্তিতে নিজের উন্নতিসাধনপূর্বক বিজ্ঞিনীযুর প্রতি বিরাগযুক্ত হয়েন, (বিজ্ঞিনীরু) দেই মিত্রকে তদীয় অমিত্রের বাসন দুরীভূত হইলে, সেই অমিত্রদারাই সাধিত বা অফুক্লিড করিবেন। ১২।

যে বিজ্ঞিগীয়ু অর্থশাপ্তবিং, তিনি বৃদ্ধি, ক্ষয় ও স্থান, কর্শন ও উচ্ছেদন, এবং সামদানাদি সব উপায় বিচারপূর্ক্তক প্রয়োগ করিবেন ॥ ১৩ ॥

এইভাবে যে রাজা পরস্পরদংসিষ্ট বাজ্গুণোর ( অর্থাৎ দন্ধিবিগ্রহাদি ছয়টি গুণের) বিচারপূর্বক প্রয়োগ করেন, তিনি বৃদ্ধিশৃত্বলায়ারা বন্ধ অস্তান্ত রাজগণের সহিত ব্যেক্তভাবে ক্রীড়া করেন। ১৪॥

কৌটিলীর অর্থপান্তে বাড্গুণ্য-নামক দপ্তম অধিকরণে মধ্যম, উদাদীন ও

মণ্ডশন্থ অন্ত রাজার প্রতি বিজিগারুর ব্যবহার-নামক অষ্টাদশ

অধ্যার (আদি হইতে ১১৬ অধ্যার ) সমাও।

মাড্গুণ্য-লামক সপ্তম অধিকরণ সমাও।

# ব্যসনাধিকারিক— অষ্টম অধিকরণ প্রথম অধ্যায়

# ১২**৭ প্রকরণ—প্রেক্ক ভিব্যসনবর্গ**

বিজিগীয়ুও শত্রের (উভয়ের) যুগগৎ ব্যাসন উপস্থিত হইলে, শত্রুর প্রতি অভিযান বা আক্রমণই স্নকর হইবে, অথবা নিজের আত্মরক্ষাই স্নকর হইবে — এই বিচার জন্ত ব্যাসনসমূহের (বিপত্তিসমূহের) চিন্তা বা নিরূপণ অর্থাৎ ব্যাসনসমূহের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্রের গুরুত্ব-সমূত্র

দৈব (পূর্বজ্ঞার কর্মজনিত) ও মাহুষ (পূর্বধের বৃদ্ধিজনিত)-এই উভর-প্রকার প্রকৃতিবাদন (অর্থাৎ স্বাম্যমাত্যাদি সপ্তাদের ব্যদন), অন্তর (বা অক্টভ-বিধি) ও অপন্য (স্ক্যাদির অযুধাভাবে অন্তর্ভান)-দারা সন্তাবিত হয়।

আরও পাঁচপ্রকারে বাসন উত্থাপিত হইতে পারে—(১) ( আভিজাতাদি ) গুণসমূহের অথবা সন্ধাদিগুণসমূহের প্রতিকূপতা ( অসমাক্ অন্ধর্চানাদি ), (২) তত্তদ্গুণসমূহের অভাব ( অন্ধান ), (৩) কোপাদি প্রকৃষ্ট দোব, (৪) বী-প্রভৃতি-বিবয়ে অত্যাসজি ও (৫) পরচক্রদারা পীড়ন—এগুলিকেও বাসন বলা বায়। ব্যস্তন শব্দের অর্থ এই প্রকার—যাহা প্রেয়োমার্গ বা কল্যাণের পথ হুইতে পুরুষকে ব্যস্ত বা এই করে তাহার সংজ্ঞাই ব্যস্ত শ্বস্ত ।

তদীয় আচার্টেরের মতে—স্থামী (রাজা), অমাতা, জনপদ, গুর্গ, কোশ, দণ্ড (বল) ও মিত্র—এই সপ্ত প্রেক্ক জির ব্যসনমধ্যে পূর্ব্ব-পূর্বটি (পর-পরটির আপেক্ষায়) অধিকতর গুরু বা কট্টবিধারক। (উক্ত ক্রমটি কোটিল্যেরও ইট বলিয়া প্রতিভাত হয়—এই মতে মিত্রব্যসন হইতে দণ্ডব্যসন, দণ্ডব্যসন হইতে কোশব্যসন, কোশব্যসন হইতে গুর্গব্যসন, গুর্গব্যসন, হুর্গব্যসন, গুর্গব্যসন হইতে জনপদব্যসন, জন-পদব্যসন হুইতে আমাত্যব্যসন ও অমাত্যব্যসন হুইতে স্থামিব্যসন গুরুতর)।

(১) কিন্তু, আচার্য্য ভারম্বাজ (লোণ) এই মত বৃত্তিযুক্ত মনে করেন না। কারণ, (তাঁহার মতে) স্থামিব্যসন ও অমাত্যব্যসন বুগপৎ উথিত হইলে, অমাত্যব্যসনই অধিকতর ভীতিপ্রদ। কারণ, মন্ত্রণা (কার্য্যাকার্য্যবিচার), মন্ত্রণার কলনির্দারণ, নিশ্চিত কার্য্যের অম্প্রান, (হিরণ্যাদির) আর ও তদ্মরের ব্যবস্থা, দশু-প্রাণারন বা সেনার উথাপন ও বধাস্থানে স্থাপন, অমিত্র (শক্রা ও আটবিক

প্রধানদিগের অত্যাচার-নিবারণ, নিজ রাজার রাজ্যরক্ষা, দর্বপ্রকার বাসনের প্রতীকার, কুমারগণের হস্ত হইতে রাজার রক্ষণ, ও কুমারদিগকে (বৌবরাজ্যা-দিতে) অভিবেক—এই সমস্ত কার্যা অমাত্যগণের আয়ন্ত। অমাত্যগণের অত্যার অআবার বিভাবে। তথন ছিল্লপক্ষ পক্ষীর ন্যায় রাজারও কার্যাপ্রস্থির লোপ ঘটিবে। (অমাত্যগণের) ব্যাসন উপস্থিত হইলে শক্রর উপজাশকার্য্যও সন্নিহিত হইবে। (অমাত্যগণের) বৈগুণো বা ব্যাসনজনিত বিপরীত আচরণে রাজার নিজপ্রাণনাশের আশক্ষা উপস্থিত হইতে পারে, কারণ, অমাত্যানণ রাজার প্রাণের নিকট্টারী খাকেন।

কিন্ত, কৌটিল্য এইমত পোষণ করেন না ( অর্থাৎ তাঁহার মতে অমাত্যবাসন হইতে রাজবাসনেরই গুরুষ অধিক । মন্ত্রী, পুরোহিত প্রভৃতি (রাজপাদোপজীবী ) ভূতাবর্গ, নানাপ্রকার অধ্যক্ষগণের ব্যবস্থাপন, পুরুষপ্রকৃতির
অর্থাৎ রাজা ও মিত্রাদি রাজপ্রকৃতির এবং দ্রবাপ্রকৃতির অর্থাৎ কোশাদিপ্রকৃতির
বাসনসময়ে বাসনপ্রতীকার ও এই হই প্রকৃতির উন্নতিবিধান—এই সমস্ত কাজ
রাজাই করিয়া থাকেন । অমাত্যগণ বাসনাস্থাক হইলে ( তৎস্থানে ) তিনিই অন্ত
অব্যসনী অমাত্য নিযুক্ত করিতে পারেন । পুজাজনের প্রতি সংকার ও দৃশ্যজনের প্রতি নিগ্রহবিধানে তিনি সভত তৎপর থাকেন । আবার স্বামী
(রাজা) যদি স্বরং রাজগুণসম্পান্ন থাকেন, তাহা হইলে নিজগুণসম্পান্নরারা
তিনি অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গকেও গুণসম্পান্ন করিয়া তুলিতে পারেন । স্বামী স্বরং
বে-বে শীলবিশিপ্ত হয়েন, অমাত্যাদি প্রকৃতিগুলিও তৎতৎ-শীলবিশিপ্ত হইয়া
থাকেন—তাহাদের (প্রকৃতিগুলির) উত্থান বা উল্লোগ (পালি, অপ্রমাদ) ও
প্রমাদবিধ্যে তাহারা রাজায়ন্ত। ব্য-হেতু স্বামী তাহাদের কূট বা মূল ( অর্থাৎ
সর্কোক্ত )-স্থানীয়।

(২) আবার আচার্য্য বিশালাক্ষও অমাতাব্যসন ও জনপদবাসনের মধ্যে জনপদবাসনেই অধিকতর ক্ষতিজনক বলিয়া মনে করেন। কারণ, (তাঁহার মতে) কোশ, দও (সেনা), কুপ্য (তাত্রলোহবল্লাদিরের), বিষ্টি (কর্মকরবর্গ), বাহন (হস্তাবাদি), এবং নিচরসমূহ (ধান্ততৈলাদিরের) এই সমস্ত জনপদ হইতেই উথিত হয় (প্রাপ্ত হওয়) যায়)। জনপদের অভাব বা বিপণ্ডি ঘটিলে তৎসমূদরেরই অভাব ঘটে। স্নতরাং ব্যসনস্থাকে জনপদের স্থান স্থামী ও অমাড্যের মধ্যবর্জী হওয়া উচিত অর্থাৎ রাজার ব্যসনের ওক্ষত্বের পরই দিতীর গুরুব্ধের স্থান হটবে জনপদব্যসনের।

কিন্ধ, কৌটিল্য এই মত যুক্তিসক্ষত মনে করেন না। কারণ, ( জাঁছার মতে ) জনপদের সর্বপ্রকার কার্য্য অহাত্যের উপর নির্ভর করে—হথা, জনপদের ( কবিসেত্প্রকৃতি ) সর্বপ্রকার কার্য্যের স্থানিশন্তি, শ্বরাজা ও শক্তরাজা প্রকৃতি হইতে যোগক্ষেমদাধন, ব্যসনের প্রতীকার, শৃত্তভ্বানে প্রামাদিনিবেশন ও ইহাদের সমৃদ্ধিবর্দ্ধন, এবং অর্থদণ্ড (বা জরিমানা) ও রাজকীয় করাদির সংগ্রহবারা উপকারবিধান ( অর্থাৎ জনপদ-সহন্ধে ) এই সমন্ত সংকাজ অমাত্যবর্গ হইডেই স্বাবিত হয়। ( স্থতরাং কোটিল্যের মতে অমাত্যবাসনই জনপদবাসনের অপেক্ষায় অধিকতর ভয়াবহ। )

(৩) আবার পারাশরগণের অর্থাৎ পরাশরের মতাছবর্জী আচার্যাগণের মতে জনপদবাসন ও প্রগাসনের মধ্যে প্রগাসন অধিকতর কইপ্রাদ বলিয়া বিবেচিত হয়। কারণ, ( তাঁহাদের মতে ) গুগে ( বা পাঠান্তরে গ্রুগ হইতে ) কোল ও দণ্ডের উৎপত্তি হয় এবং ( শক্ত হইতে) কোনও প্রকার আপদ উপস্থিত হইলে গ্রুগই জনপদবাসীদিগের আপ্রয়ন্থান হয়। আবার জনপদবাসীদের অপেক্ষায় পুর্বাসিগণই অধিকতর শক্তিমান্ এবং নিত্য বা ছায়ী এবং আপদের সময় ভাহারাই বাজার সহায় হয়। জনপদনিবাসীরা একপ্রকার শক্তর মতই গণ্য অর্থাৎ শক্তর আক্রমণে তাহারা শীত্রই ওদমুগানী হইয়া পড়ে।

কিন্ধ, কৌটিলা; এই মত শোষণ করেন না । কারণ, ( তাঁছার মতে ) তুর্গ, কোশ, দণ্ড, দেড়ু ( পুষ্পকলবাটাদি ২।৬ দ্রন্থইর; ) ও বার্ডা। ক্লিব, বাণিজ্য ও শাশুপাল্য )—এই সমস্ত কার্য্য জনপদের উপরই নির্ভর করে এবং জনপদবাসীদিগের মধ্যেই পরাক্রম, স্থিরতা, কার্য্যক্রতা। শীশুকারিছ ) ও সংখ্যাবাছল্য অষিক দৃষ্ট হয় । জনপদের ব্যসন বা নাশ উপস্থিত হইলে, পর্যবত্তর্গে বা জলপ্লের্গাদ করা সম্ভবপর হয় না । তবে এই বিশেষ যে, কেবল কর্যক্রহল জনপদসম্বন্ধে স্থর্গবঙ্গন ঘটিলে, ডাছাই অধিকতর ভয়াবহ ( কারণ, কেবল নিক্টবর্তী তুর্গরক্ষা তথন কঠিন ), আবার আর্ধধারী পুরুষ-বহল জনপদসম্বন্ধে জনপদবাসনই অধিকতর ছানিজনক হয় ( কারণ, তথন হুর্গরক্ষা সরল হয় ) ।

(৪) আচার্য্য পিশুরুর বা নারদের মতে হুর্গব্যসন ও কোশব্যসন ধধ্যে কোশ-ব্যসন অধিকতর গুরু বলিরা গৃহীত। কারণ, ( তাঁহার মতে ) হুর্গের সংস্কার ও রক্ষণ এই উভরই কোশ-সঞ্চরের উপর নির্ভর করে। কোশের সাহায্যে হুর্গন্থিভ জনদিগের মধ্যে উপজাপ বা ভেদ আনা সম্বর্গর হয়। আবার কোশের সাহায়ে জনপদ, মিত্র ও শক্তর নিগ্রহবিধান করা বার। দূর দেশান্তরে অবস্থিভ রাজা বা জনসমূহকে ( সাহাব্যার্থ ) উৎসাহিত করা যায় এবং সেনাবলের বারস্থাও পুবিধাজনক হয়। তবে একটি বিশেষ এই যে, ব্যসন উপস্থিত হইলে ( পলাইবার সময়ে ) কোশ শক্তে লাইয়া পলায়ন সম্ভবপর হয়, কিন্ত হর্গ দকে লাইয়া যাওয়া বায় না।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত পোষণ করেন না। কারণ, (ভাঁছার মতে) কোশ, দত্ত (সেনা), (ভাঁছাদি-প্রয়োগে) গোপনে যুদ্ধ, স্থপকীর (রাজজােহী জন-দিগের) নিগ্রহ, দত্তবলের উপযোগ বা ব্যবস্থা, আসার-নামক স্কুৎ রাজার সেনা-সাহাঘ্য-স্বীকার, পরচক্র ও আটবিকদিগের নিবারণ—এইসব কার্যা ছর্গের উপরই অর্পিত বা লক্ত থাকে। কিন্তু প্রর্গের-বন্ধাভাবে কোশ পরহন্তগত হইতে পারে। আবার দেখাও যায় যে (কোশ না থাকিলেও) দৃচ প্রর্গে অবন্ধিত লোকের উল্ছেদ সম্ভবপর নহে। স্নতরাং কোশব্যসনের অপেক্ষায় হুর্গব্যসনই অধিকতর কষ্টবিধারক।

(৫) আচার্যা কৌণপণত বা ভীমের মতে, কোশব্যসন ও দপ্তব্যসনের মধ্যে দপ্তব্যসনই অধিকতর অন্থিংপাদক হয়। কারণ, (তাঁহার মতে) মিত্র ও অমিত্রের নিগ্রহ, অভ্যের সেনাকে (নিজ উপকারে আনিবার জন্ত) প্রোৎসাহন, এবং স্বদপ্তের (শক্রবলনাশার্থ) স্বীকার—এই সব ক্রিয়ার মূপেই থাকে দপ্ত বা সেনা। দপ্তের অভাবে কোশের বিনাশও নিশ্চিও। (কিছা,) কোশের অভাবে কৃপ্য (তাত্রলোহ-বল্লাদি দ্রব্য), ভূমিদান ও শক্রর ভূমিতে যে বাহা স্বাং বলপূর্কক পাইবে সেই দ্রব্যগ্রহণহারাও দপ্ত-সংগ্রহ করা বাইতে পারে। দপ্তপ্রাপ্ত হইলেই আবার কোশ সংগৃহীত হইতে পারে। কিছা, দপ্ত বা বল স্বামীর আসম্ভবর্তী থাকে, তাই ইহা অমাত্য-সমানধর্মবিশিষ্ট বলিয়া অবধার্য হর।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত পোষণ করেন না। কাবণ, ( তাঁহার মতে ) দণ্ডের দিতি কোশের উপর নির্ভর করে। কোশের অভাবে দণ্ড পরহন্তগত হর। এমন কি (কোশের অপ্রাথিতে) দণ্ড বা বল স্বামীকেও হত্যা করে। দণ্ড ( ? ) দর্বপ্রকার ( সামস্তাদির সহিত বিজ্ঞিনীযুর ) বিরোধ উৎপাদিত করিতে পারে। 'পর্বাভিষোগকর:' পদটি যদি পরবর্ত্তী 'কোশং' পদের বিশেষণমণে গ্রন্ত হর, তাহা হইলে ব্যাখ্যা এইরূপ হইবে, বথা কোশ সর্বপ্রকার অভিযোগের নির্বাহক হইরা ('সর্বাভিষোগতারক:' পাঠ থাকিলে — সর্বপ্রকার শক্রর অভিযোগে ইইতে রক্ষাবিধান করিয়) খাকে বলিয়। ধর্ম ও কামও কোশ বা অর্থহারই সম্পাদিও

হয়। কিছ, দেশবশে, কালবশে ও কার্যাবশে কোশ ও দণ্ডের মধ্যে বে কোন একটিও প্রধান বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে। কারণ, দণ্ড লব্ধ কোশের রক্ষক হয়। আবার, কোশ কোশের ও দণ্ডেরও রক্ষক হইয়া থাকে। কোশ সর্বপ্রকার দ্রব্য-প্রকৃতির কার্যানির্ব্বাহক বলিয়া ইহার (কোশের) ব্যসন বা বিপত্তিই অধিকতর কইকর হয়।

(৬) আচার্য্য বাতব্যাথি বা উদ্ধবের মতে, দশুবাসন ও মিত্রবাসনের মধ্যে মিত্রবাসনই অধিকতর ভরাবহ হয়। কারণ, (তাঁহার মতে) মিত্র বেতনদার ভূত না ইইয়া এবং (বিজিগীরুর) সন্নিকটে না থাকিয়াও (তাঁহার) কার্য্য করিয়া থাকেন (অর্থাৎ দশু বা সেনা বেতনভূত ইইয়া এবং রাজার সন্নিহিত থাকিয়া কর্মি করিয়া থাকে)। মিত্র পার্মিগ্রাহ শত্রুর পার্মিগ্রাহের আসার (মিত্র)-রূপী সম্প্রকর, এবং অমিত্রের ও আটবিক প্রধানের প্রতীকার করিয়া থাকেন। আবার তিনি (মিত্র) কোশ, সেনা ও ভূমি প্রদান করিয়া (বিজিগীরুর) বাসনের অবস্থায় তাঁহার সহিত যুক্ত থাকিয়া তাঁহার (বিজিগীরুর) উপকারমাধন করেন।

কিন্ত, কৌটিল্য এই মত যুক্তিযুক্ত মনে করেন না। কারণ, (তাঁহার মতে) যে রাজার দণ্ড বা দেনা থাকে, তাঁহার মিত্র মিত্রভাবাপারই থাকে, এমন কি তাঁহার অমিত্রও মিত্রভাবাপার হইয়া যায়। বল-সহক্ষে দণ্ড ও মিত্রের অবস্থা সমান দাঁড়াইলে, নিজের যুদ্ধ, দেশ, কাল ও লাভ অন্তর্লারে একডরের বিশেষ পরিজ্ঞাতব্য। কিন্ত, শক্রর বিহুদ্ধে শীন্ত অভিযানের প্রয়োজন উপন্থিত হইলে এবং অমিত্র আটবিক বা আভান্তর প্রকৃতির কোপবিকার দেখা দিলে, মিত্র দ্বেশ্বিত বলিয়া) উপকারে আসিতে পারেন না। (বিজ্ঞানীয়ু ও তাঁহার শক্রর মধ্যে) যুগলৎ বাসন উপন্থিত হইলে, অথবা শক্রর রন্ধি উপন্থিত হইলে, মিত্র তথন নিজের অর্থসিন্ধির জন্ম বাস্তর থাকেন। (অর্থাৎ শক্রর হন্ধ্য হইতে নিজের অর্থসাভের আশা পোষণ করিতে থাকেন)। (প্রতরাং মিত্রবাসনের) অপেক্ষায় দণ্ডবাসনই অধিকতর কটের কারণ বলিয়া গৃহীত হওয়ার যোগ্য। এই পর্যান্ত প্রকৃতিসমূহের বাসনের (গুরুলমূত্ব-) নির্পন্ন উক্ত হইল।

সপ্তপ্রকৃতিরই অবয়ব বিদ্যমান আছে (যথা, রাজপ্রকৃতির যুবরাঞ্চাদি, অমাত্যপ্রকৃতির মন্ত্রিপরিবদ্যদি, জনপদপ্রকৃতির ক্বকাদি, কুর্গপ্রকৃতির ধাষন-প্রকৃতি, কোশপ্রকৃতির রজাদি, দগুপ্রকৃতির মোলভ্তাদি ও মিপ্তপ্রকৃতির সহজাদি) কিছ, (বিভিগীর ও শক্ষর) এই সমন্ত প্রকৃতির অবরবসমূহের ব্যসন-বৈশিষ্ট্য (ইতরাপেকার গুরুষ বা লবুছ) উপস্থিত হইলে, বে প্রকৃতির

উপর বাসন আপতিত হয়, তাহার সংখ্যাবস, রাঞ্চপ্রীতি বা অক্তান্ত গুণবোগ, ( যানাদি ) কার্যোর সিন্ধিবিধায়ক বলিয়া বিবেচিত হইবে ॥ ১ ॥

বদি বিজিগীর ও তাঁহার শক্তর উভয়ের বাদন তুল্য হয় অর্থাৎ একই প্রকৃতির (জনপদাদির )উপর বাদন উপস্থিত হয়, তথন একের গুণ (বছভাবাদি) ও অপরের ক্ষর (গুণরাহিত্য) অবলম্বন করিয়া, (যানাদি) বিশেষ কার্য্য সম্প্রধার্য্য হইবে। কিন্তু, যদি (বাদনযুক্ত প্রকৃতি-ভিন্ন) অভ্যান্ত অবশিষ্ঠ প্রকৃতির শক্তিশালিম্ব বর্ত্তমান থাকে, তাহা হইলে পূর্ব্বাভিহিত বিশেষ (যানাদি) কার্য্য বিধেয় হইবে না ॥ ২॥

কি**ন্ত, একটি প্রকৃতির বাসন উপস্থিত হইপে যদি অবশিষ্ট প্রকৃতিসমূহের নাশ** ঘটে, তাহা হইলে, কোন প্রধান প্রকৃতিরই হউক বা কোন অপ্রধান প্রকৃতিরই হউক, সেই বাসন অভাস্ত গুরুতর বলিয়া পরিজ্ঞাত হইবে॥ ৩।

কৌটিশীয় অর্থশান্তে ব্যসনাধিকারিক-নামক অষ্টম অধিকরণে প্রকৃতিব্যসন-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ১১৭ অধ্যায় ) স্মাপ্ত।

### দ্বিতীয় অধ্যায়

১২৮ প্রকরণ—রাজা (বিজিগীয়ু ও মিত্রাদি রাজা) ও রাজ্য (অমাড্যাদি প্রাকৃতিপঞ্চক)—এই স্কৃই বর্সের ব্যসদের গুরু-লঘুতা-বিচার

পূর্ব্বোক্ত দণ্ড প্রকৃতিবর্গকে সংক্ষেপে বলিতে গেলে ছইটি বর্গে বিভক্ত করা বায়, বধা —(১) রাজ্য ও (২) রাজ্য ।

রাজার প্রতি ( রাজ্যের ) ছই প্রকার কোপ সন্ধাবিত হয়, য়থা—(জ্মাত্যাদিকনিত ) অভ্যন্তরে কোপ ও ( অরিজনিত ) বাহ্য কোপ। বাহ্য কোপ
আশেক্ষার অভ্যন্তর কোপ অধিকতর ভয়াবহ, কারণ, অভ্যন্তর কোপ দরের
মধ্যন্থিত দর্পের মত সর্বাদা ভয় উংশাদন করে। অভ্যন্তর কোপ ছইপ্রকার
ইইতে পারে—অন্তর্মানাত্য কোপ ( অর্থাৎ য়াল্যর আসম্রবর্তী প্রধান ) অমাত্য
ইইতে উথিত কোপ ও অন্তামাত্য কোপ—তয়ধ্যে প্রথমটি বিভীয়টি অপেক্যায়
অধিকতয় ভয়াবহ। এই জন্ত, য়াল্যা (কোপ-প্রশেমনের মাধন বলিয়া) কোপশক্তি ও দও বা বলশক্তি সায়ত রাধিবেন।

তদীর আচাবেরর মতে বৈরাজ্য অপেকার বৈরাজ্য অধিকতর কটদারক, কারণ, বৈরাজ্য (অর্থাৎ বিখামিক রাজ্য) উতর রাজার মধ্যে পরস্পরের
প্রতি বেব ও অহুরাগ উৎপাদন করিয়া এবং পরস্পরের মধ্যে সংঘর্ব বা স্পর্জা
বাড়াইয়া নিজে বিনষ্ট হয় । কিন্তু, বৈরাজ্য (অর্থাৎ বিগত-পূর্বাথামিক রাজ্য,
বাছা অন্ত রাজার বিজিত রাজ্য) প্রকৃতি বা প্রজাবর্গের চিডরগ্রনের অপেকা
রাখে এবং ইছা স্বশ্রিছিভিতে থাকে বিসন্তা অপরের অর্থাৎ প্রজাদিশের
ভোগের বস্তু হয় ।

কিন্ত, কৌটিল্য এই মত সমর্থন করেন না। কারণ, (তাঁহার মডে)
পিতাও পুত্রের মধ্যে, অথবা গ্রুই লাতার মধ্যে বিরোধনশতঃ হৈরাজ্য উৎপন্ন
হর, এবং ইহা সমান যোগকেম-বিশিষ্ট থাকে বলিরা অমাতাগণের অবগ্রহ বা
অধীনতা সম্ভাবিত থাকে। কিন্তু, বৈরাজ্য (বিভরী রাজা) জীবমান শক্
ছইতে রাজ্য কাড়িয়া লইয়া হৈছা ত আমার নিজপ নহে' এইরূপ মনে করিয়া,
(দত্ত-করাদিঘার) প্রজাদিগকে) কট প্রদান করেন, অথবা অভ হানে (রাজ্য)
সরাইয়ানেন, অথবা (অভ রাজার নিকট হইতে মূল্য লইয়া রাজ্য) বিজ্ঞর
করেন, অথবা ইহাতে প্রজাবর্গকৈ বিরক্ত জানিলে ইহা পরিত্যাগ করিয়া পলাইয়
বান (অর্থাৎ কোটিলার মতে বৈরাজ্যই বৈরাজ্য অপেক্ষায় অধিকতর কষ্টদায়ক)।

আদ্ধ ( অন্ধীতশার ) ও চলিত-শার ( অর্থাৎ অধীতশার ইইলেও তদহুরণ আচরণবিরহিত ) রাজ্যের মধ্যে কে অধিকতর শ্রেরোবিশিষ্ট ? এই বিবরে তদীর আচার্ব্যের এই মত বে, যে রাজা আদ্ধ অর্থাৎ বাহার শাররণ চকুং নাই, তিনি যাহা ইচ্ছা তাহাই করেন, ( ফুরুর্মাদিতে ) তাঁহার অভিনিবেশ দৃঢ়, অথবা তিনি শরের বৃদ্ধিতে চলেন—এই ভাবে তিনি ক্ষয়ার করিয়া রাজ্য নই করেন। কিছ, যে রাজ্য চলিতশার বলিয়া শার জানিরাও তদহুসারে আচরণ করেন না, তিনি ধে বিবরে শারের আদেশ হইতে চলিতমতি হরেন, তাহা হইতে তাঁহাকে কাছবুর্দক নিবারণ করা সভবণর হয়।

কিছ, দেটিলা এই ৰত পোৰণ করেন না। (তাঁহার মতে), আছ বা শাল্লজানবিহীন রাজ্যকে অমাত্যাদি সহার-সম্পতিদারা ঘেই-সেই (হিতকর) বিবরে চালিত করা বাইতে পারে। কিছ, 'চলিতশাল্ল' রাজা (শাল্ল জানিরাও) শাল্লবিধির বিক্লছাচরণে বৃদ্ধি অভিনিবিষ্ট রাণিরা অভারপূর্কক রাজ্যকে ও নিজকে নই করেন (অর্থাৎ কোটিলাের মতে চলিতশাল্ল রাজ্য অধিকতর হানিবিধায়ক হয়েন)।

ব্যাধিগ্রন্থ ও নব বাজার মধ্যে, কোন্টি অধিকতর শ্রেরোবিধারক—এই বিবরে তদীর আচার্থ্যের মতে ব্যাধিত বাজা (নিরহুণ) অমাত্যাদিবারা উৎপল্ল রাজ্য নাশপ্রাপ্ত হরেন অথবা অমাত্যাদি প্রকৃতিবারা বিহিত নিজের প্রাণনাশপ্রাপ্ত হরেন। কিন্তু, নৃতন রাজা রাজধর্মের অহুষ্ঠান, প্রজাদিগের প্রতি অহুগ্রহ, পরিহার বা করমোক্ষণ, (ভূমিপ্রভৃতির) দান, সৎকার-প্রদর্শন বা অস্থান্থ (পূর্ত্তাদি) কর্মদারা প্রকৃতির্গ্তনবিধায়ক উপকারসাধন করিরা চলেন।

কিন্তু, কেন্টিল্য এই মত অহ্নোগন করেন না। (ভাঁহার মতে) ব্যাধিত বাজা পূর্বপ্রবৃত্তিত রাজবাপার মানিয়া চলেন। কিন্তু, নব রাজা 'এই রাজ্য আমার নিজবশে উপার্জিত' এই মনে করিয়া কাহারও অবগ্রহ বা নিবারণ না মানিয়াই চলেন। অথবা, সামুখারিক বা সমবায়াবন্ধ রাজাদিগের (বা প্রধানদিগের) চালিত হইয়া তিনি রাজ্যের উপঘাত (বিনা প্রতীকারে) সহিয়া প্রকৃতি বা প্রজাদিগের প্রতি অলাতক্ষেহ হইয়া তিনি নহজেই অপরের উচ্ছেদের প্রেন। যোগ্য হয়েন। বাাধিতের মধ্যেও বিশেষ বা বিভিন্নতা আছে, কারণ, একপ্রকার ব্যাধিত পাপরোগ্র (কুর্চাদিপীজিত) এবং অল্পপ্রকার ব্যাধিত রাজা অর্থিকতর হানি উৎপাদন করিতে সমর্থ)।

নব রাজার গুই প্রকার ভেদ হইতে পারে—অভিজাত বা উচ্চক্ষসভূত ও অনভিজাত বা নীচকুলগভূত। তমধ্যে গুর্বল অভিজাত রাজা, অথবা বলবান্ অনভিজাত রাজা অধিকতর হানিবিধারক—এইরূপ প্রশ্ন হইলে, তত্তত্বে তদীর আচার্য্য বলিরা থাকেন যে, তুর্বল অভিজাত রাজাগেক্ষার বলবান্ অনভিজাত রাজা গরীরান্ হরেন। কারণ, অভিজাত রাজা ত্র্বল হওরার অমাত্যাদি প্রকৃতিশ্বন অথবা প্রভাজন তাঁহার ত্র্বলভার বিষয় অরণ রাখিয়া অভিক্ঠে তদীর উপজাপ বা ভেদের বশবর্তী হরেন। কিন্তু, অনভিজাত রাজা কলবান্ হওরার, তাঁহার। তাঁহার বলের প্রতি আকৃঠ ইইয়া সহজেই আমির উপজাপের বশবর্তী হরেন।

কিন্তু, কোটিল্য এই মত শীকার করেন না। ( তাঁহার মতে ) প্রথান বাজা অভিয়াত বা উচ্চকুলম্মুত হইলে, প্রকৃতিরা স্বরং তৎসমীলে উপনত হর স্বর্গং তাঁহার আপ্রান্ত প্রহণ করেন, কারণ, ঐশর্বোর স্বভাবই হইল সাভি-গাত্যের অপ্রবর্ত্তন করা স্বর্গাৎ উচ্চকুলম্মুত রাজা স্বভাবতঃ ঐশ্বর্গালী হরেন। কিন্তু, বলবান্ রাজা অনভিজাত বা নীচকুলসমূত হইলে, প্রকৃতিরা তাঁহার উপজাপ বা ভেদ বিসংবাদিত করিয়া তোলেন, অর্থাৎ তাঁহারা কোন সমন্ত্র ভদীয় উপজাপের বশবর্তী হইলেও, অবসর পাইলেই তাহা হইতে দ্বে দাঁড়াইতে গারেন। যে-হেডু সর্বপ্রকার গুণাধারত্বই অঞ্রাগবিষয়ে কারণ ইইয়া দাঁড়ায়।

উৎপন্ন শস্তের নাশ হস্তদ্বিত অনুপ্ত বীজনাশের অপেক্ষায় অধিকতর হানিকর, কারণ, ইহাতে (শস্তোৎপাদনে স্বীকৃত) পরিশ্রমের নিক্ষণতা ঘটে।

অতিবৃষ্টি অপেক্ষায় অবৃষ্টি অধিকতর হানিকর, কারণ, ইহাতে (জলাভাবে প্রজাজনের ) আজীব বা জীবিকার উচ্ছেদ ঘটে।

এইভাবে প্রাকৃতিব্যসনবর্গের হুই হুইটির বলাবল পারস্পর্ব্যের ক্রমান্নসারে ধানবিষয়ে ( অর্থাৎ শক্রর অপেক্ষায় বিজিগীরুর স্বব্যসনের লঘুত্ব হুইলে, শক্রর প্রতি আক্রমণবিষয়ে ) অথবা স্থানবিষয়ে ( অর্থাৎ শক্রর অপেক্ষায় তাহার স্বব্যসনের গুরুত্ব হুইলে, স্বস্থানেই অবস্থান বিষয়ে ) হেতু বলিয়া উক্ত হয়। ১।

কোটিশীর অর্থশালে ব্যসনাধিকারিক-নামক অন্তম অধিকরণে রাজা ও রাজ্যের ব্যসননিরূপণ-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১১৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# তৃতীয় অধ্যায়

১২৯ প্রকরণ--পুরুষ-ব্যসন বা সাধারণ লোকের ব্যসনদোষ-সমূদের নিরূপণ

( আধীক্ষিকী-প্রভৃতি ) বিস্থালাভন্ধনিত বিনয়ের অভাবই পুরুষের ব্যসনের হৈতৃ হয়। কারণ, (বিস্থালিকা না করিয়া) অবিনীত লোক ব্যসনোংগর কোবসমূহের জানলাত করিতে পারে না।

ব্যসনজনিত দোষসমূহের নিরূপণ করা হইতেছে। কোপ হইতে উৎশন দোষ তিন প্রকার (অর্থাৎ বাক্শারুক্ত, দগুপারুক্ত ও অর্থদ্বণ এই তিন বাসন 'জ্রিবর্গ' বলিরা শরিচিত)। এবং কাম হইতে উৎপন্ন দোষ চারি প্রকার (অর্থাৎ ব্যারা, দ্যুত, স্ত্রী ও পান—এই চারি বাসন 'চতুর্বর্গ' বলিয়া অভিহিত)।

কোণ ও কাম—এই উভয়ের মধ্যে কোপই ওক্লতর বা বলবন্তর। কারণী কোণ সর্ববিবয়সমূহে উৎপন্ন হইতে পারে অর্থাৎ ইহা সার্বত্তিক লোব। আবার ু ইহাও শ্রুত হয় বে, রাজারা কোপবশ্বর্তী হইয়া প্রায়ই অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গের কোপে মারা গিয়া থাকেন। কিন্তু, তাঁহারাই আবার কামবশবর্তী হইলে শারীরিক ক্ষর ও কোশদতের হানিবশতঃ কেবল শত্রু ও ব্যাধিদারা নই হইয়া থাকেন। (স্বতরাং কাম অপেক্ষায় কোপই বলবন্তর দোষ বলিয়া অভিছিত হওয়ার বোগ্য।)

কিন্তু, আচার্য্য ভারত্বাক্ষ (দ্রোণাচার্য্য) এই মত সমর্থন করেন না ( অর্থাৎ কোণ ও কাম দোব নহে )। ( তাঁহার মতে ) কোণ দংপুরুষের আচার বা ধর্ম। কারণ, কোণ হইতে উৎপন্ন হয়—শত্রুর প্রতীকার, গরকত অবহেলার বারণ, এবং (কোধীর প্রতি অপকারকরণ হইতে) অন্ত মহয়ের মনে ভীতির সঞ্চার। আবার পাপী বা হর্জনকে পাপকার্য্য হইতে প্রতিবিদ্ধ রাখিতে হইলে কোশ্বীকার নিত্যই প্রয়োজনীয়। (সেইরূপ) কামও সিদ্ধিলাভ বা স্থলাভের হেতু হয়। ( এই কারণে মাহ্যবের মনে ) সাস্ত্র বা মধ্রভাবিত্ব, ভাগেশীলতা বা দানশীলতা এবং সকলের প্রতি প্রিয়ভাব রাধার প্রবৃত্তি হয়। আবার নিজকৃত কর্মের ফল উপভোগ করার জন্তও কামের দহিত সম্বন্ধ নিত্যই অবর্জনীয়।

কিন্ধ, কৌটিল্য এই মত যুক্তিগুক্ত মনে করেন না। (ভাঁহার মতে কোশ ও কাম — উভয়ই দোষ ) কারণ, কোশ হইতেই মাসুবের দ্বেয়তা আসে অর্থাৎ লোকে কোণযুক্ত মাসুধকে কেহই অসুরাগের চকুতে দেখে না; (ইহা হইতে) শত্রুলাভণ্ড ঘটে; এবং (কোণের সদ্দে সদে ) হঃখও লাগিয়া খাকে। আবার, কাম হইতেই মাসুবের নিন্দাদি পরিভাবপ্রাণ্ডি ঘটে; ধনাদিশ্রব্যনাশও ইহা হইতে উৎপন্ন হয়; এবং মাসুবকে কামের ফলে অনর্থকারী চৌর, দৃত্তকর বা জ্যারী, পুক্ক বা শিকারী, গায়ন বা গায়ক ও বাদক বা বাহ্যক্রের সংসর্গ করিতে হয়। (স্থভরাং অনর্থোৎণাদন করে বলিয়া উভয়ই দোষ বলিয়া পরিগণিত হওয়ার যোগ্য।)

আবার, উপরি উক্ত কোপজ ও কামজ দোববর্গন্ধরের মধ্যে, (কামজন্ত) পরিভব বা ভিরন্ধারাদি প্লানির অপেক্ষার, (কোপজন্ত) ঘেরত। বা অপরের বিবাগভাজনত। অধিকতর হানিকর বলিয়া প্রতিভাত হয়। কারণ, পরিভ্ত পুরুব নিজজন ও পরজনদার। বিধেরীকৃত বা বশীভূত হইডে পারে, কিছ, দের

আবার, (কামজনিত) এব্যনাশের অপেকার, (কোপজনিত) শক্রনাত

অধিকতর ছানিজনক। কারণ, দ্রব্যনাশ কেবল কোশেরই আবাধ্য বা ছানি উৎপাদন করে, কিছু, শুক্তলাভ প্রাণেরও আবাধা বা ছানি ঘটাইতে পারে।

আবার, কামজনিত (চোরাদি) অনর্থকারীর সংযোগের অপেক্ষার, (কোপজনিত) গ্রংধসংযোগ অধিকতর হানিকর। কারণ, সেই সেই অনর্থ-কারীদিগের সহিত সংযোগ মুহুর্ত্তকান্সের জন্তও প্রীতির সঞ্চার করে, কিন্ধ, হ্রংধের সংযোগ দীর্ঘকান্স ক্লেশ দিয়া থাকে। অতএব, (কাম হইতে) কোণই অধিকতর ক্লেশদায়ী।

বাক্পারুষ্ণ (কথার পরুষতা-প্রদর্শন), অর্থন্যণ (অর্থের ক্ষতিকরণ) ও দশুপারুষ্ম (শান্তিহার) পরুষতা-প্রদর্শন)—এই তিনটি দোষই কোপজ দ্রিবর্গনামে অভিহিত। বাক্পারুষ্ম ও অর্থন্যণের মধ্যে অর্থন্থণের অপেকায় বাক্পারুষ্মই অধিকতর কটনায়ক - ইহাই বিশালাক্ষের মত। কারণ, (তাঁহার মতে) কর্ষণ ব্যক্ষাহার আহত হইলে, ভেজনী লোক (পরিভব বহু করিতে না পারিয়া) নিজের তেজের হারা অধিক্ষেপকারীকে প্রভ্যাক্তমণ করিতে পারে। আবার হুর্জচনরূপ শল্য (বাণ) হান্যে নিধাত হইলে অন্তেরিক ভেজঃ সংদীও করে এবং ইক্সিরম্যুহের সন্তাপ উৎপাদন করে।

কিন্তু, কৌটিশ্য এই মত গ্রাহ্ম করেন না, তাঁহার মতে বাক্পারুদ্যের অপেক।
অর্থপূবণই অধিকতর ক্লেশদারক। (তিনি মনে করেন দে,) অর্থদারা কত
সংকার ত্র্কাচনরূপ শল্য অপহত করিতে পারে (অর্থাৎ বাক্পূজা অর্থদ্যণের
অপঘাত আনিতে পারে না)। কাহারও রতি বা জীবিকা লোপ করার নান
অর্থদ্যণ। অর্থদ্যণও আর চারি প্রকারের হইতে পারে—যথা, কার্য করাইয়া
কর্মচারীকে অর্থ না দেওরা, দণ্ডাদিঘারা কাহারও ধন গ্রহণ করা, (অর্থনাশ
ঘটাইরা) দেশের পীড়া উৎপাদন, অথবা রক্ষণীয় অর্থের পরিত্যাগ বা অরক্ষণ।

অর্থদ্বণ ও দওপারুছের মধ্যে, দওপারুছের অপেক্ষার অর্থদ্বণই অধিকতর কইপ্রদ — ইহাই পারাশর দিনের (পরাশরের মতাবলঘী আচার্যাদিণের) মত। কারণ, ধর্ম ও কাম অর্থের উপর নির্ভর করে। পোকনির্বহাই অর্থের ছারাই সন্তাবিত। এই জন্ত, অর্থের উপবাত বা দ্বণই দওপারুবের অপেক্ষার অবিকতর হানিজনক।

কিছ, কোটিল্য এই মত পোষণ করেন না। কারণ (তাঁহার মতে)
বিপুল অর্থ পাইরাও কেহ স্বশরীরের বিনাশ ইচ্ছা করে না। এমন কি, অন্তের
নিকট স্থাপালয়ের ভরে (নিজকে বাঁচাইবার জন্ত) ততথানি অর্থদূরণ বা

অর্থনাশ দে স্থীকার করিতে পারে। এই পর্যন্ত কোপক বাসনের ত্রিবর্গ বলা হইল। এখন কামজ বাসনের নিরূপণ কর) হইবে। কামজ বাসনের চতুর্বর্গ এই প্রকার—মুগরা (শিকার), দাভ (জুরাবেখলা), খ্রী ও (মস্তাদির) পান। এই চতুর্বর্গের অন্তর্গত মুগরা ও দ্যুতের মধ্যে আচার্য্য পিশুন্তনের মতে (দ্যুতের অপেক্ষার) মুগরা অধিকতর দোবযুক্ত। করেণ, (তদীয় মতে) মুগরাতে চোর (বা দহ্য), শক্ত, হিংল্ল জন্ত, দাবানল ও (অনবধান জন্ত) পাদম্পলনের ভর ধাকে এবং ইহাতে দিগ্রম্প ঘটে। পরত্ত দ্যুতে বা জুরাতে, অক্ষক্রীড়ার বিচক্ষণ পোকের জয় হয়, বেমন হইয়াছিল (নলের বিরুদ্ধে) জায়বেনের এবং (মুধিষ্ঠিরের বিরুদ্ধে) জুবের্যাধনের।

কিন্তু, এই মত কৌটিল্যের গ্রাহ্থ নহে। কারণ, এই উভয়ের (মুগয়া ও দাতের ) মধ্যে এক পক্ষের পরাজয়ও ঘটিয়া থাকে, যথা হইয়াছিল **সলোর ও যুধিস্তিরের।** ( হুডরাং মুগন্নার ক্লায় দ্যুতও কষ্টকর ব্যসন।) দ্যুতে বিজিত দ্রব্য পরের ভক্ষা মাংদের তুলা এবং ইহাতে ( জেতা ও পরাজিত ব্যক্তির মধ্যে ) শক্ত। বাঁধে। আবার দূতে, সহুপায়ে পূর্ব-সংগৃহীত ধনের অস্থানে বিনিয়োগ ঘটে, অসত্পায়ে নৃতন ধনের সংগ্রহ হয়, এবং ইহাতে সংগৃহীত ধনের বিনা ভোগে পুনরায় ( ক্রীড়াদারাই ) নাশও হইয়া থাকে। ( সতত বৈঠক করার কারণে ) দৃত্তে মৃত্র-পুরীষের বেগধারণবশত: এবং কুধা ( -ভূষণ )-প্রভৃতির জঞ নানারূপ ব্যধিগ্রস্ত হওয়ার সম্ভাবনা থাকে। দ্যুত হইতে এইরূপ বছ দোবের উৎপত্তি স্ক্তাবিত। কিন্তু, মুগরায় নিয়োক্ত গুণগুলি পরিদৃষ্ট হয়—বধা, ব্যায়াম বা শরীরিক পরিশ্রম, শ্লেমা বা কফ ও পিতের নাশ, মেদঃ বা মাংসাদির অস্থপচর, ঘর্মনাশ এবং (মুগাদির) চঞ্চ ও স্থির শরীরে লক্ষীকরণ-শিক্ষা ও জ্বদিগের কোশ ও ভয়ের কারণ উপস্থিত হইলে কি প্রকার চেষ্টা দৃষ্য হয় ভদারা ইহাদের চিত্তভাবের জ্ঞান হইয়া থাকে এবং (কোন্ ঋতুতে মুগয়ার্থ বান স্কর ও কোন্ ঋতুতে) যান অসুচিত, এই সব বিবর স্পষ্ট প্রতীয়মান হয়। (এই জন্ত কোটিল্যের মতে মৃগন্তার অপেক্ষান্ত দৃত্তই অধিকতর কটবিধান্তক रामन । )

আচার্য্য কৌশপদজ্জের (ভীখের) মতে, দৃতি ও লীবাসনমধ্যে জ্যারীর বাসনই অধিকতর কইকর। কারণ, জ্যারী সততই (প্র্যারশার অভাবেও) রাজিতে প্রদীপ আলাইয়াও, এমন কি মাতা মারা গেলেও (ভাঁহার উর্জনেহিক জিয়া না করিয়াও)খেলা করিতে থাকে। এবং কোন কার্যসঙ্চ-বিবরে জিক্ষাদিত হইদেও দে কুণিত হয়। কিন্ধ, (তাঁহার মতে) দ্বীবাদনে সানভূমিতে, প্রদাধন (বন্ধাদিধারণ )-ভূমিতে ও ভোজনভূমিতেও রাজাকে ধর্ম ও অর্থ-সব্ধক্ক প্রস্লাদি করিয়া বিষয় জ্ঞাত করান যায়। এবং (আমাত্যাদিধারণ বাদনী রাজার) দেই স্লীলোককে রাজার হিতকরণে নিয়োজিত করা যাইতে পারে। অথবা, উপাংশুদগুদারা (গুরহত্যাধারা) দেই স্লীকে নই করা যাইতে পারে, কিন্বা (বিধাদিপ্রয়োগভারা) তাহার ব্যাধি উৎপাদিত করিয়া তাহাকে অন্তর্জ্ঞ পাঠাইতে পারা যায়।

কিন্ধ, কৌটিক্য এই মত পরিপোষণ করেন না। কারণ ( তাঁহার মতে )
দূতে কোন বন্ধ হারিলে তাহা পুনরার জিতিয়া পওয়ার সন্ধাবনা খাকে, কিন্তু,
জীবাসনে কোন বন্ধ নই হইলে ইহা আর পুনরার লাভ করা যায় না। আবার
জীবাসনে, বাসনী রাজার সহিত আমাত্যাদির দর্শন বড় ঘটে না, সেই জন্ত তাঁহাদের কার্যসন্ধন্ধে উৎসাহের অভাব উপস্থিত হয়, উপযুক্ত সময় অতিক্রান্ত ইইয়া গেলে অনর্থ ঘটে ও ধর্মহানি হয়, রাজ্যশাদনতক্স হর্বন হইয়া পড়ে এবং জীবাসনী রাজার মন্ত্রপান দোষও দেখা দেয়। ( স্বতরাং কোটিল্যের মতে দূতের স্বপেক্ষার জীবাসনই অধিকতর হানিজনক।)

আচার্য্য বাভব্যাধির (উদ্ধ্রের) মতে, স্তীব্যসন ও পানব্যসনের মধ্যে স্তীব্যসনই অধিকতর ক্ষতিজনক। কারণ (তাঁহার মতে) স্তীব্যোকের যে অনেকবিধ মূর্যতা পরিদৃষ্ট হয় তাহা (১ম অধি। ২০শ আ। ১০শ প্র) নিশাস্তপ্রণিধি-নামক প্রকরণে ব্যাখ্যাত হইয়াছে। পরস্ক, পানব্যসনে দেখা যায় যে, ব্যসনী রাজা শন্ধাদি ইক্সিরবিধ্যসমূহের উপভোগ করিতে পারেন, সকলের প্রতি প্রাতি প্রদর্শন করিতে পারেন, পরিজনবর্গের প্রতি সংকার দেখাইতে পারেন এবং কর্মজনিত পরিশ্রমের প্রশামন ঘটাইতে পারেন।

কিন্ধ, কৌটিল্য এই মত যুক্তিসঙ্গত মনে করেন না। (তিনি মনে করেন যে,) স্ত্রীবাসনে আসক্ত রাজার নিজের পরিণীত স্ত্রীতে বাসনযুক্ত ইইলে অপত্যের উৎপত্তি সম্ভবপর হয় এবং তাহার নিজের আস্বরক্ষার কারণ উপস্থিত হয়। আবার বাহুস্ত্রীতে (গণিকাদিতে) বাসনী হইলে ইহার বিপরীত কল দাঁড়ায়। আবার আযোগ্যা (কুলব্রীতে) বাসনী রাজার সর্কস্থনাল ঘটে। উপর্যুক্ত উভার দোব পানবাসনেও ঘটিতে পারে। তদতিরিক্ত পানবাসনের অন্তর্গকার দোব বিভাষান আছে।

(মছপারীর) সংজ্ঞাবা বুদ্ধির লোপ হয়, সে উন্মন্ত না হইলেও উন্মতের

মত ব্যবহার করে, জীবিত থাকিলেও সে মৃত ব্যক্তির মত নিশ্চেষ্ট হয়, তথন তাহার কোশীন-দর্শন ঘটে অর্থাৎ গুল্থ ছানের অন্যোপন ঘটে, তাহার শাস্ত্রজ্ঞান, তজ্জনিত প্রজ্ঞা, প্রাণবল, বিস্তু ও মিত্রের হানি ঘটে, সজ্জ্জন ব্যক্তিদিগের সহিত তাহার সংসর্গের অভাব হয়, অনর্থকারী ব্যক্তির গোয়ক ও বাদকাদির ) সহিত সংযোগ ঘটে এবং ধননাশক তন্ত্রী (বীণাদি)-বাস্তু ও গানবিষয়ে নৈপুণালাতে প্রসক্তি উপস্থিত হয়। ( স্নতরাং স্ত্রীব্যসনের অপেক্ষায় পানব্যসনই অধিকত্র হানিজনক।)

কোন কোন আচার্য্যের মতে দৃতে ও মহ্য —এই উভয় ব্যসনের মধ্যে দৃতেই অধিকতর কটকর। প্রাণিদৃতে কিয়া অপ্রাণিদৃতে পণ বা বাজীতে রক্ষিত ধন-নিমিন্তক (এক পক্ষের) জয় ও (অপর পক্ষের) পরাজয় পরশার বিদ্ধাপক্ষদয়ন্তনিত প্রকৃতিকোপ, অর্থাৎ উভয়পক্ষের চরিত্রে কোধ উৎপাদন করে। বিশেষ্তঃ সঙ্গবসমূহের ও সঙ্গবস্থাবলন্ধী অর্থাৎ ঐকমতো অবন্ধিত রাজক্সসমূহের দৃতিনিমিন্তক ভেদ উপন্থিত হয় এবং ভেদনিমিন্তক বিনাশ ঘটিয়া বাকে।

অন্ত আচার্যাদিগের মতে ( 'অন্তেষাং' শব্দ অধাহার্য্য বলিরা প্রতীত হয় ), অসজ্জনের সংকারবিশিষ্ট মত্মপানাসন্তিরূপ ব্যসনই সর্বপ্রকার বাসনমধ্যে অধিকতম হানিবিধারক, কারণ, ইহা রাজ্যশাসনতন্ত্রে দৌর্বাল্য আনরন করে।

কাম ও কোপ — এই উভয়ই অসৎপুরুষের প্রতি সংকার ও সংপুরুষের প্রতি নিগ্রাহের হেডু হয়। (এইজন্ত) দোবের বাহুল্য উভয়ে আছে বলিয়া সর্বাধা এই উভয়ই বড় ব্যাসনক্রণে পরিগণিত হয়॥ ১॥

অতএব, ধারস্বভাব জিতে ক্রিয় ( রাজা ) রজসেবী ইইয়া অর্থাৎ রজোপদেশে (বশীকৃতমন্ত্র ইইয়া ) সর্ব্ধ প্রকার ব্যসনজনিত ছঃখোৎপাদক ও মূলচ্ছেদকারী কোপ ও কাম পরিভাগে করিবেন ॥ ২ ॥

কৌটিলীয় অর্থশাল্পে ব্যসনাধিকারিক-নামক অষ্টম অধিকরণে পুরুষবাসনবর্গ-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১১৯ অধ্যায় ) সমাও।

# চতুৰ্য অধ্যায়

১৩০-১৩২ প্রকরণ—পীড়নবর্গ ( দৈবী ও মামুষী বিপদের পীড়ন), শুস্তুবর্গ (রাজগামী অর্থের উপরোধ) ও কোশসন্ধিবর্গ (রাজার্থের কোশে অপ্রবেশ)

দৈৰী পীড়ন পাঁচ প্ৰকারের—যথা, অগ্নি, উদক ( বস্তাদি ), ব্যাধি, হার্ভিক্ষ ও মরক (মহামারী )।

ভদীয় **আচার্যোর** মতে (অগ্নিপীড়ন ও উদকপীড়ন-মধ্যে) অগ্নিপীড়ন অধিকতর ভয়াবহ, কারণ, ইহা সব দহন করে বলিয়া ইহার প্রতীকার অসম্বব; (কিন্তু,) উদক্পীড়নের কষ্ট (নৌকাপ্রভূতিগ্রার) উপশমিত হইতে পারে।

কৌটিল্যের মতে এই (সিঙ্কাপ্ত যুক্তিযুক্ত বলিয়া প্রতিভাত) নহে। কারণ, অগ্নি কোন একটি প্রাম বা প্রামার্জনাত্র দহন করে, কিন্তু, উদক্বেগ শত শত প্রাম ভাসাইয়া নেয়।

তদীয় আচার্ব্যের মতে ব্যাধি ও গুভিক্ষের মধ্যে ব্যাধিই অধিকতর কইপ্রদ, কারণ, যাহারা ব্যাধিপ্রস্ত হইয়া মারা গিয়াছে এবং বাহারা ব্যাধিপ্রেড ত্রিতেছে, তাহাদের পরিচারকলিগের ( ক্ষিপ্রভৃতি ) কার্ব্যের উপযোগী ব্যায়ামের বা আয়াদের উপরোধ ঘটার বলিয়া, ব্যাধি দর্ব্বপ্রকার কার্য্যের উপঘাত বা নাশ আনমন করে। কিন্তু, গুভিক্ষ সেই প্রকার কোন কর্য্যে নাশ করে না এবং ( ধান্তাদির অভাব ঘটাইলেও ) হিরণ্য বা নগদ টাকা ও পশুদারা রাজার প্রাণ্য কর দেওয়ার স্থেয়েগ নই করে না।

কিন্ত, কৌটিল্য এই মত পোষণ করেন না। কারণ, তাঁহার মতে ব্যাধি একটি মাত্র প্রদেশকে পীড়ন করে এবং ( ঔষধাদির প্রয়োগদারা ) ইহার প্রতীকারও সন্তবপর হয়। কিন্তু, প্রাণিগণের জীবন সঙ্কটাপন্ন করিয়া ঘূর্ভিক্ষ সর্বদেশকে পীড়ন করে।

এতদ্বারা মরক বা মহামারীও ব্রিয়া লইতে হইবে, অর্থাৎ ছর্ভিক হইতে মহামারী অধিকতর কইপ্রদ।

তদীর আচাতের্যার মতে কুন্ত কুন্ত কর্মকর্তা ও বৃহৎ বৃহৎ কর্মকাররিতাদিগের মধ্যে, কুন্ত কর্মকর্তাদিগের কর বা নাশ, কর্মের অবোগক্ষেম ঘটার, অর্থাৎ অপ্রবৃত্ত কর্মের প্রবৃত্তি এবং প্রবৃত্ত কর্মের বৃক্ষণ নিম্পাদন করে না। কিন্তু, বৃহৎ কর্মকাররিতাদিগের কর কর্মানুষ্ঠানে উপরোধ বা নাশমান্ত ঘটার।

কিন্তা, কৌটিলা এই মন্ত অন্ত্যোদন করেন না। কারণ, ক্ত ক্রা কর্মকর্জাদিশের করের সমাধান (অন্ত ক্রা কর্মকর্জাদিশের করের সমাধান (অন্ত ক্রা কর্মকর্জাদারা) পটিতে পারে। বেছেড্, ক্রাকগণের বাহুলা-বশতঃ তাহারা স্থপত। মুখাদিগের ক্ষর-সম্বন্ধে এই কথা পাটে না। করেণ, সহস্র সহস্র লোকের মধ্যে একঞ্জন ব্যক্তি মুখা হইলেও হইতে পারেন, বা না-ও হইতে পারেন। হইলেও তিনি বল ও প্রজ্ঞার আধিকাবশতঃ ক্রাকগণের আগ্রন্থত হন। (অর্থাৎ কোটিলাের মতে ক্রাক্ষয় অপেক্ষার মুখ্যক্ষয়ই অধিকতর হানিকর।)

( সম্প্রতি মাশ্র্যী বিপত্তির নিরূপণ করা হইতেছে।)

তদীয় আচার্ব্যের মতে, স্বচক্রের বা নিজদেশের রাজশক্তির ও পরচক্রের বা পরদেশের রাজশক্তির ও পরচক্রের বা পরদেশের রাজশক্তির মধ্যে, স্বচক্রশীড়াই অধিকতর কইপ্রদ। কারণ, স্বচক্র অতিমাক্ত দণ্ড ও করদ্বারা পীড়া উৎপাদন করে, এবং ইহার নিবারণ অসম্ভব। কিন্তু, পরচক্রকৃত পীড়ার প্রতীকার প্রতিযুদ্ধদারা নিবারিত হইতে পারে, অথবা ইহা দেশত্যাগ করিয়া দেশান্তরে গমনদারা, অথবা সন্ধিদারা নিবর্ত্তিত হইতে পারে।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত যুক্তিসঙ্গত মনে করেন না। কারণ, সচক্রের পীড়ন, অমাত্যাদি মুখাপুরুবদিগের আরুকুল্য-বিধানদ্বারা এবং তাহাদের নাশদ্বারাও নিবারিত হইতে পারে। অথবা, সচক্র কেবল (ধনধান্তাদিসম্পদ্ধ) একটি মাত্র দেশকে পীড়ন করিতে পারে। কিন্তু, পরচক্র সমগ্র দেশের পীড়ক হইরা দ্রব্যাদি পূর্থন, বধ, অগ্রিকার্য্য, (অন্তপ্রকার) বিধ্বংসন এবং দেশ ইইডে উৎসারণ্যার) পীড়া উৎপাদন করে।

তদীর আচার্ব্যের মতে রাজাদিগের মধ্যে পরম্পর বগড়ার অপেকার প্রকৃতিগণের ( অর্থাৎ অমাত্যাদিগণের ) পরম্পর বগড়া অধিকতর হানিকর। কারণ, প্রকৃতিবিবাদ প্রকৃতিগণের মধ্যে পরম্পরের ভেদ আনয়ন করে এবং শক্তর অভিযোগ বা আজ্রমণ ডাকিয়া আনে। কিন্তু, রাজবিবাদ প্রকৃতিবর্গের ছিন্তুণ ভক্ত (ভাতা) ও বেতনের এবং পরিহারের (বা কর্মোক্ষণের) কারণ ইইয়া গাঁড়ায়।

কিন্তু, কেটিল্য এই মত যুক্তিস্থত মনে করেন না। কারণ, প্রকৃতিবর্গের
মধ্যে মুখ্য বা নায়কগণের আত্মকুল্য-বিধানদারা এবং পরস্পার-কলছের কারণের
দ্রীকরশধারা প্রকৃতিবিবাদ নিবারিত হইতে পারে। অধিকন্ত, বিবাদ-নিরত
প্রকৃতিরা প্রস্কুরের মধ্যে স্পর্ভাবশতঃ (রাজাও রাজ্যের)উপকারই সাধন

করে। কিন্তু, রাজবিবাদ প্রজার পীড়ন ও উল্ছেদ্দাধন করে বলিয়া, প্রকৃতিবর্গের দ্বিগুণ প্রযন্ত্র-বারা উপশন্তর হয়। (অর্থাৎ কোটিল্যের মতে রাজবিবাদই প্রকৃতিবিবাদ অপেক্ষার অধিকতর হানিকর।)

ডদীয় আচার্যের মতে রাজবিহারের অপেকায় দেশবিহার অর্থাৎ সাধারণ প্রজাজনের জৌড়াদি অধিকতর হানিকর। কারণ, প্রজাজনের ধেলাদি শুর্দ্ধি বা বিহার অতীত, বর্তমান ও ভবিল্লং—এই তিন কালেরই (কুবিপ্রস্তৃতি) সর্বপ্রকার কর্মের ফল নাশ করে। কিন্তু, রাজবিহার (লোহকারাদি) কারুদিগের, বেশকারাদি) স্ক্রেশিল্পীদিগের, কুশীলব বা গায়কদিগের, বাগ্জীবন বা গুডিপাঠকদিগের, রূপাজীব। বা রূপজীবিক। অর্থাৎ বেশ্যাগণের এবং বৈদেহক বা অন্তান্ত বিক্রয়ন্ত্রীবিগণের উপকার্যাধন করে।

কিন্ত, কৌটিলোর নিকট এই মন্ত যুক্তিযুক্ত বলিয়া প্রতিভাত হয় না। কারণ, দেশবিহার কর্মজনিত প্রথমর লাঘবজন্ত অল্প সময় বা অল্প অর্থ নই করে এবং বিহারবান্দিগকে পুনরায় স্ব-স্ব কর্মে খোগদান করায়। কিন্তু, রাজবিহার, স্বাম রাজাহার। এবং ওাঁহার প্রিয়জনদারা প্রজাজনের অনিভাপ্রদন্ত প্রণয় বা বাচিত ধন লওয়ার ব্যবস্থা করিয়া ও পণ্যশালাতে (নিজ ইছার উপযোগী) কার্যোর সম্পাদন করাইয়া প্রজার পীড়া উৎপাদন করে। (অর্থাৎ কোটিলোর মতে রাজবিহারই দেশবিহারের অপেক্ষায় অধিকতর কইকর।)

ভদীয় আচার্থ্যের মতে খ্রভগা অর্থাৎ দোভাগাবতী রাজরাণীর বিহারের অপেক্ষার রাজকুমারের বিহার অধিকতর পীড়াকর। কারণ, কুমারবিহার স্বর্গ কুমারবার। এবং তাঁহার বলভজনধার। প্রজাজনের অনিক্ষাপ্রদন্ত প্রণার বা বা বিভিত্ত ধন প্রভাগ ব্যবদ্ধা করিয়া ও প্রণাশালাতে (নিচ্চ ইচ্ছার উপযোক্তী) কার্য্যের সম্পাদন করাইয়া প্রজাজনের পীড়া উৎপাদন করে। আর খ্রভগা দেবী (গন্ধালাদি) বিশাসদাম্গ্রীর উপভোগদ্বারা প্রজার (অল্পমান্তার) পীড়া উৎপাদন করে।

কিছ, কৌটিল্যের ইহা অভিমত নহে। কারণ, মন্ত্রী ও পুরোহিত্যার। ক্মারকে তৎ-তৎ কার্য্য হইতে নিবারিত করা যার। কিছ, প্রভগা দেবীকে ভাহার মূর্বভাবশতঃ ও ( কুশীলবাদি ) অনর্থকারী পুরুষের সংসর্গবনতঃ নিবারিত করা যার না। (অর্থাৎ কোটিলাের মতে প্রভগাবিহারই কুমারবিহারের অপেকার অধিকতর হানিকর।)

ভদীর আচার্যোর মতে শ্রেণী বা সল্বের পীড়া, শ্রেণীর্ব্য বা তাহাবের

নারকের পীড়ার অপেক্ষার অধিকতর কইদারক। কারণ, সংখ্যাধিকারশতঃ শ্রেণীর প্রতিবন্ধ অসন্তব এবং ইহা চুরি এবং সাহদ বা বলপূর্বক ধনাগছরণদারা (লাকের) পীড়া উৎপাদন করে। কিন্ধ, শ্রেণীমুখ্য বা শ্রেণীনায়ক (উৎকোচ-গ্রহণে) কাহ্যিসাধন এবং (উৎকোচ না পাইয়া) কাহ্যিনাশ ঘটাইয়া (অল্পনাত্রায় লোকের) পীড়া উৎপাদন করে।

কিছ, কৌটিশ্য এই মত স্মর্থন করেন না। কারণ, শ্রেণীর অঙ্গীভূত পুরুষণণের সমান দোষগুণ থাকার শ্রেণীকে (চুরি প্রস্তৃতি হইতে) সহজেই নিবারিত করা যায়। অথবা, শ্রেণীমুখাগণের কোন কোন ব্যক্তিকে অন্নকৃতিত করিয়াও (শ্রেণীকে তদ্রপ করা যায়)। কিছা, সর্ব্যক্ত মুখ্য বা নায়ক অন্তের প্রাণহরণ ও দ্বব্যহরণহারা পীড়া উৎপাদন করে। (অর্থাৎ কোটিশ্যের মতে মুখ্যের বা নায়কের পীড়াই শ্রেণীর পীড়ার অপেক্ষায় অধিকতর কইদারক।)

তদীয় আচাবের্বর মতে সমাহর্ত্-নামক মহামাত্রের পীড়ার অপেক্ষায় দল্লিগাত্ত-নামক মহামাত্রের পীড়া অধিকতর কষ্টকর। কারণ, কৃতকর্মের দোষ উদ্ধাবন করিলা ও কালাভিক্রমণের কথা তুলিয়া স্লিগাতা প্রজ্ঞার পীড়া উৎপাদন করে। কিন্তু, সমাহর্তা করণ বা সংখ্যালক-নামক (হিসাবরক্ষক কর্মচারীর) বারা অধিষ্টিত থাকিয়া ভাহার জন্ম নিয়মিত বেতনমাত্রেরই ভোগ করিলা থাকেন।

কিন্তু, কেটিল্যের এই মতে অভিক্ষতি নাই। কারণ, সমিধাতা অস্তান্ত কর্মচারীর দ্বারা ব্যবস্থিত রাজকোবে দ্বাপনীয় বস্তমাত্রেরই পরিগ্রহ করেন। কিন্তু, সমাহর্ত্ত। প্রথমতঃ নিজের জন্ত (উৎকোচাদিরূপে) অর্থ লইয়া পরে রাজার্থ সংগ্রহ করেন, কিংবা রাজস্ব নিজেই অপহরণ করেন এবং রাজকরভূত পরস্বগ্রহণ-বিধরে স্বেচ্ছার কার্যা করিয়া থাকেন। (অর্থাৎ কোটিলাের মতে সমাহর্ত্তার উৎপাদিত পীড়নই সমিধাতার পীড়ার অপেক্ষায় অধিকতর কইকর।)

ভদীয় আচার্টের্যুর মতে বৈদেহকের পীড়নের অপেক্ষার অন্তপালের পীড়ন অধিকতর কইপ্রদ। কারণ, অন্তপাল ব। সীমারক্ষাধিকারী মহামাত্র (নিজ ইঙ্গিতে) চোরপ্রসক্ষ উত্তাবিত করিয়া এবং পথিকের দেয় বর্তনী-নামক কর অতিমাত্রায় গ্রহণ করিয়া বিলিক্সপথে পথিকদের পীড়া উৎপাদন করেন। কিছ, বৈদেহক বা ব্যাপারীয়া বিক্রেয় পণ্য বিক্রম করিয়া এবং পণ্যের বিনিমরে প্রতিপণ্য গ্রহণ করিয়া উপকার-সাধনপূর্ব্যক ব্যাপারীদিগের বিশিক্ষপ্রের উন্নতিশাধন করেন।

কিল্ল, ক্রেটিক্য এই মত সমর্থন করেন না। কারণ, অন্তপাল একসক্রে

আনীত বহু পণ্যপদার্থের উপর সমুচিত বর্জনী-নামক কর সইয়া বণিকপ্রের উরতিসাধন করেন। কিন্তু, বৈদেহকগণ বা ব্যাপারীরা একত্ত সন্মিলিত ছইয়া পরামর্শপূর্বক নিজ বিজের পণ্যের মূল্যাধিক্য এবং অন্ত হইতে কের পণ্যের মূল্যায়েস ব্যবস্থা করিয়া একপণে শতপণ এবং (তৈলাদির) এককৃত্তে শতকৃত্ত লাভ করিয়া ব্যাপার করিয়া থাকে। (অর্থাৎ কোটিল্যের মতে বৈদেহকগণদারা উত্তাবিত পীড়াই অন্তপাদদারা উত্তাবিত পীড়ার অণিকতর কইজনক।)

পৌড়নের হেত্ভূত ভূমির মোক্ষণবিষয়ে মতামত বলা হইতেছে।)
বিজিপীরুর নিজ অভিজাত বা কুলীনদিগের উপরুদ্ধ ভূমির, কিবো পশুব্রজ্বারা
উপরুদ্ধভূমির মোক্ষণের বা ত্যাগের প্রশ্নসহক্ষে তদীর আচিতির্ব্যর মত এই
যে—অভিজাতগণের উপরুদ্ধভূমি প্রভূত শস্তদায়িনী হইলেও ইহা আয়্মীয় বা
দৈনিক প্রুবদিগের উৎপাদন জন্ম রাজার উপকারসাধন করে। অতএব, শক্রর
আক্রমণজনিত বিপৎ-ক্ষের ভরে ইহা মোক্ষণের অযোগা। কিন্তু, পশুব্রজের
ঘারা উপরুদ্ধ ভূমি যদি ধান্তাদির্বির যোগা হয়, তাহা হইলে ইহা মোক্ষণধোগা
হইতে পারে। কারণ, বিবীত বা তৃণাদির উৎপত্তিভূমি ক্ষেত্র বা শস্তাদির
উৎপত্তিভূমিছারা বাধিত হয়।

কিন্ত, কৌটিল্য এই মত পোষণ করেন না। কারণ, অভিজ্ঞাতধারা উপক্ষ ভূমি দৈনিক পুক্ষবের উৎপাদনদ্বারা মহৎ উপকারসাধন করিলেও ইহা মোক্ষণ-যোগ্যা, অন্তথা বিপৎ-কটের সঞ্চাবনা থাকে। কিন্তু, পশুত্রজের দ্বারা উপকৃষ্ঠ ভূমি রাজকোবে সংগ্রহণযোগ্য (দ্বতাদি-) দ্রব্যদানাদিখারা এবং (বলীবর্দাদি) বাহনদানদারা উপকারসাধন করে বলিয়া মোক্ষণযোগ্যা নহে। কিন্তু, বদি সমীপন্থিত ক্ষেত্রে শত্মের কোনরূপ উপরোধ বা ব্যাঘাত ঘটার, তাহা হইলে সেই (পশুত্রজের হারা উপকৃষ্ঠ ভূমিও) মোক্ষণযোগ্যা হইতে পারে। (ক্ষ্মিৎ ইহাই কোটিলার মত।)

ভদীর আচার্ব্যের মতে আটবিকদের অভ্যাচারের অপেক্ষার প্রতিরোধক বা সাধারণ পূর্তনকারীদিগের অভ্যাচার অধিকতর পীড়াদারক। কারণ, প্রতিরোধকেরা রাক্তিভেই চরিরা বেড়ার এবং তাহারা বনগহনচারী এবং মাস্থবের শরীরের উপরেই আক্রমণ চালার, সর্বন্য সন্নিধানে থাকে এবং রাষ্ট্রের প্রধান ধনিকদিগকে (অভ্যাচার্গ্ণার) কোশিত করে। কিন্তু, আটবিক্গণ প্রভান্ত প্রদেশের অরণ্যে চরিয়া বেড়ার। ভাহারা প্রকাশ্যে সর্বজনের দৃষ্টিপথে চলে এবং ভাহারা কভিপর জনসহত্যে বাজকের কার্য্য করে। কিন্তু, কৌটিল্য এই মতাবশন্তী নহেন। কারণ, প্রতিরোধকেরা কেবল অসাববান লোকেরই ধনাশহরণ করে এবং সংখ্যার অন্ত বলিন্তা তাহারা কৃষ্টিভ-প্রসর। এই জন্ত তাহারা নহজে পরিজ্ঞাত হইরা বরা পড়ে। কিন্তু, আটবিকেরা আপন আপন লেশে অবন্থিত থাকে এবং তাহারা সংখ্যার বহু এবং বিক্রমশালী। তাহারা প্রকাশ্যে যুদ্ধ করে, (দেশের লোকের) ধন অপহরণ করে এবং প্রাণবধন্ত করে। এই ভাবে তাহারা (নিরস্কুশ হইরা) রাজার সমান প্রভাবশালী হরেন। (অর্থাৎ কোটিল্যের মতে প্রতিরোধকের পীড়ার অপেক্ষার আটবিকের পীড়া অধিকতর কষ্টদারক।)

মুগবন ও ইন্তিবন—এই উভয়ের মধ্যে হস্তিবনই অধিকতর কটকর। কারণ, মুগগণ সংখ্যার অধিক এবং প্রভূত মাংস ও চর্ম প্রদান করে বলিয়া উপকারী। ইহারা অক্সাহারী এবং (ধাবনকালে) অস্তেই ক্লিপ্ট হয় এবং সহজেই বশগামী হয়য়া পড়ে। কিন্তু, হস্তিগণ মুগের বিশরীত-গুণবিশিষ্ট। ইহারা ধ্বত হইলেও, বদি হয়্ট হয়, তাহা হইলে দেশের লোকের বিনাশ উৎপাদন করে।

নিজরাজ্যের স্থানীর-নামক ক্ষু নগরের ( ছিতীয় অধিকরণের প্রথম অধ্যার স্তাইবা ) উপকার এবং পররাজ্যের স্থানীরের উপকার —এই উভরের মধ্যে স্বরাজ্যের স্থানীরের উপকার এইভাবে ঘটে। সেধানে ধান্ত, পশু, হিরণ্য ও কুপা-পদার্থের ( ক্রুরবিক্ররাদির নানাপ্রকার ব্যবহারদ্বারা ) জনপদবাদীদিগের উপকারদায়িত হর এবং ( গ্রভিক্রাদি ) বিপদের সময়ে তাহা তাহাদের প্রাণধারণের হেতু হয়। পররাজ্যের স্থানীরের উপকার ইহার বিপরীত কল প্রস্বকরে অর্থাৎ আত্মণীড়াদারক হয়। এই পর্যান্ত নানাপ্রকার প্রীড়ন ব্যাধ্যাত হইল।

ভক্ত বা রাজার্বের উপরোধ হুইপ্রকার—আভ্যন্তর ও বাজ। রাষ্ট্রের মুধ্য কর্মচারিগণের দারা উৎপাদিত ভক্ত আভ্যন্তর ভক্ত এবং মিত্র ও আটবিকগণদারা উৎপাদিত ভক্ত বাভ ভক্ত। এই পর্যন্ত শুক্তবর্গ ব্যাধ্যাত হইল।

এই গৃইপ্রকার স্বস্তদার। এবং উপরিউক্ত (দৈব ও মাসুব) শীড়নদার। কোবদল অর্থাৎ রাজকোবে করাদির অপ্রদান বা অপ্রবেশ ঘটিরা থাকে। করদারীদিগের নিকট ছইতে গৃহীত কর যদি মুখ্যপুরুষের হন্তগত হয়, তাহা ছইলে ইহাও একপ্রকার কোবদল। (রাজাসুজ্ঞার) রাজকরের পরিহার বা মাশ করা ছইলেও একপ্রকার কোবদল উপস্থিত হয়। নানাভাবে রাজার্থ বিক্রিপ্ত ছইলেও এবং কথনও কথনও জাব্য পরিমাণ হইতে ন্যুনাধিকভাবে কয় সংগৃহীত হইলে এবং সামস্ত ও আটবিকদারা রাজার্থ অপহাত হইলেও কোষসক উপস্থিত হয়। এইবানেই বিভিন্নপ্রকারের কোষসক বাধ্যাত হইল।

উপরিউক্ত পীড়নসমূহের উৎপত্তিপ্রতিবন্ধ-বিষয়ে এবং পীড়নগুলি উৎপন্ন হইলে ইহাদের কারণবিষয়ে এবং উপরিউক্ত শুক্ত ও কোষসঙ্গের নাশবিষয়ে রাজা দেশের সমৃদ্ধির জন্ম চেইমান থাকিবেন। ১।

কোটিশীয় অর্থশাল্পে ব্যসনাধিকারিক-নামক অস্ট্রম অধিকরণে পীড়নবর্গ, স্তম্ভবর্গ ও কোষদক্ষবর্গ-নামক ৪র্থ অধ্যায় ( আদি হইতে ১২০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### পঞ্চম অধ্যায়

#### ১৩৩-১৩৪ প্রকরণ—বঙ্গ বা সৈন্থোর ব্যসনবর্গ ও মিত্রের ব্যসনবর্গ-নিরূপণ

বল বা দৈন্তের ব্যাসন নিম্নলিধিত চোত্রিশ প্রকারের হইয়া থাকে। বথা, অমানিত ও বিমানিত, অভত ও ব্যাধিত, নবাগত ও দ্রায়াত, পরিপ্রান্ত ও পরিক্ষীণ প্রতিহত ও হতা প্রবেগ, অনৃত্প্রাপ্ত ও অভূমিপ্রাপ্ত, আশানির্কেদী ও পরিস্থা, কলত্রগর্হী ও অন্তঃশলা, কুপিতমূল ও ভিন্নগর্ভ, অপস্ত ও অতিক্ষিপ্ত, উপনিবিষ্ট ও সমাপ্ত, উপক্ষম ও পরিক্ষিপ্ত, ছিন্নধান্ত ও ছিন্নপুক্ষবীবধ, স্বিক্ষিপ্ত ও মিত্রবিক্ষিপ্ত, দৃয়মৃক্ত ও ছুইপান্ধিগ্রাহ, শৃন্তমূল ও অস্থামিসংহত এবং ভিন্নক্ট ও অম্বান্ত (উপরি উন্নিধিত প্রত্যেক ছিকের বলাবল বিচার করা হাইবে।)

- (>) ইহাদের মধ্যে **আমানিত ও বিমানিত** ( হওয়ার বাসন্যুক্ত ) সৈত্রের বিচার করিলে দেখা বায় বে, অমানিত বল বা সৈন্ত পরে অর্থ ও মানাদিবারা সংকৃত হইলে ( রাজপক্ষে ) যুদ্ধ করিতে পারে। কিছ, বিমানিত বল বা সৈত্র অবজ্ঞাত হওয়ায় হুদয়নিহিত কোপবশতঃ যুদ্ধ করিতে চাহিবে না।
- (২) সেইরূপ **অভ্**ড ও ব্যাধিত (হওয়ায় ব্যসন্মৃক্ত) সৈভের মধ্যে, অভ্ত বা অদত্তবেতন সৈম্ম তৎসময়ে বেতনপ্রাপ্ত হইলে (রাজগক্ষে) মৃদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, ব্যাধিত সৈম্ম নিজের শারীরিক শক্তিহীনভাষশতঃ অকর্মণ্য হইরা পড়ার মৃদ্ধ করিতে চাহিবে না।

- (৩) ভদ্রপ নবাগত ও দুরায়াত (হওয়ায় বাসনম্ক ) সেনার নধ্যে, নবাগত বা অচিরায়াভ সেনা অন্ত বা নবেতর সেনা হইতে দেশের অবস্থা পরিজ্ঞাত হইয়া তাহাদের সহিত মিশিয়া (রাজপক্ষে) যুদ্ধ করিতে পারে। কিছ, দ্রায়াত সেনা দ্র হইতে আগমনজন্ত পরিক্ষিপ্ত হওয়ায় যুদ্ধ করিতে চাহিবে না।
- (৪) পরিশ্রেত ও পরিশীণ (২ওয়ায় ব্যদনযুক্ত) দেনার মধ্যে, পরিপ্রাক্ত দেনা স্থান, ভোজন ও নিজাদার। বিশ্রাম পাত করিলে (রাজপক্ষে) বুদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, পরিক্ষীণ দেনা অন্ত বুদ্ধে র্গ্য পশু ও উপযুক্ত শ্রেষ্ঠ পুদ্ধের ক্ষয়প্রাপ্ত ইওয়ায় যুদ্ধ করিতে চাহিবে না।
- (৫) প্রতিহত ও হতাগ্রেবেগ (হওয়ায় বাসনম্ভা) সেনার মধ্যে, প্রতিহত সেনা যুদ্ধারত্বে ভক বা পরাজয়প্রাপ্ত হইলেও প্রবীর পুরুষধারা সংমেলিত হইলে (রাজপক্ষে) যুদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, হতাগ্রবেগ সেনা সুধারত্বেই প্রবীর পুরুষ হারাইয়া যুদ্ধ করিতে চাহিবে না।
- (৬) **অনৃত্প্রাপ্ত ও অভূমিপ্রাপ্ত (** হওয়ায় বাদনম্ক ) দেনার মধ্যে, অনৃত্প্রাপ্ত দেনা তৎকাল-প্রাপ্ত ঋতুর উপযোগী যুগ্য বা যুগবাহী পশু, শত্র ও কবচ লইয়া ( রাজপক্ষে ) যুদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, অভূমিপ্রাপ্ত দেনা দর্শ্বত্র প্রদার বা গতাগতি স্থান ও যুদ্ধবাায়ামের অভাবে যুদ্ধ করিতে চাহিবে না।
- (१) আশানিকেনী ও পরিক্ত (হওরার ব্যসনমুক্ত) সৈত মধ্যে, আশানিকেনী সৈত (নৈরাশ্যপ্রাপ্ত হইরাও) কামনার বন্ধ লাভ করিলে (রাজ্পক্ষে) মুদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, পরিক্ত সৈত সৈত্তমুখ্যদিগকে হারাইরা মুদ্ধ করিতে চাহিবেন।
- (৮) কলরেগর্ছী ও অস্তঃশল্য (হওয়ায় বাসনমৃক্ত) সৈজের মধ্যে কলত্রগর্ছী (অর্থাৎ কলত্রাদি পোয়বর্গ তাহাদিগকে মুক্কর্মে যোগ দিতে বাধা দেয় বলিয়া বে সৈভ তাহাদের নিন্দা করে ) সৈভ কলত্রাদির রক্ষাক্ষভ ব্যবদ্ধা হইলে (রাজ্ঞপক্ষে) মুক্ক করিতে পারে । কিন্তু, অন্তঃশল্য সৈভ নিজ্ঞ অন্তঃকরণে শক্তর প্রতি আকর্ষণ রাখাতে মুক্ক করিতে চাহিবে না ।
- (৯) কুপিডমূল ও ভিরগর্জ (হওরার বাসনবৃক্ত) সেনার মধ্যে, বৃপিতমূল বা কুদ্ধপ্রধানক সেনা সামাদি উপারের প্ররোগদ্বারা প্রশমিতকোশ হইলে (রাজপক্ষে) বৃদ্ধ করিতে পারে। কিম ভিরগর্জ সেনা পরস্পার ভির

- (১০) অপশত ও অভিক্ষিপ্ত (হওয়ায় ব্যসন্মুক্ত) সেনার মধ্যে,
  অপশত সেনা এক রাজ্যে বলছারা নিরাকৃত হইশেও পুনরায় মন্তবাগে ও
  ব্যায়ামাভ্যাসদার এবং অরণ্য ও মিতরাজার আশ্রম লাভ করিয়া (রাজপক্ষে)
  মুদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, অতিক্ষিপ্ত সেনা বহুরাজ্যে বলছারা নিরাকৃত হইয়া
  বহুপ্রকার কই অসুভব করায় মৃদ্ধ করিতে চাহিবে না।
- (১১) উপানিবিষ্ট ও সমাপ্ত (হওয়ায় বাসনমুক্ত ) বসমধ্যে উপনিবিষ্ট বল বা সেনা ( শক্তর নিকটে থাকিয়া ) নিজের পূবক্ বান ( আক্রমণ ) ও স্থান ( ছিতি ) অবলঘন করিয়া অতিসন্ধানকারী শক্তর সহিত যুদ্ধ করিতে পারে ( কারণ, স্বীয় বান ও স্থান পূথক্ থাকায় শক্ত রক্তাবেবণে বিফল হইবে )। কিন্তু, সমাপ্ত সেনা যুদ্ধ করিতে চাহিবে না। কারণ, শক্তর সহিত সমান বান ও স্থান অবলঘন করায়, শক্ত ভদীয় রক্ত পরিজ্ঞাত হইতে পারিবে।
- (১২) উপক্লম্ক ও পরিক্ষিপ্ত (হওয়ায় ব্যসন্যুক্ত ) বলমধ্যে, উপক্লমবল (যে দিকে উপরোধবৃদ্ধ হইরাছে তাহা হইতে ) অন্ত এক দিক্ দিয়া নিজ্ঞামণ-পূর্বক উপরোধকারী শত্রুর প্রতি যুদ্ধ চালাইতে পারে। কিন্তু, পরিক্ষিপ্তবল স্কাদিকে শত্রুকর্ত্বক পরিবেটিত হওয়ায় প্রতিযুদ্ধ চালাইতে সমর্থ হইবে না।
- (১৩) ছিল্লখান্ত ও ছিল্লপুরুষবীবখ (হওয়ায় ব্যসন্যুক্ত) দেনামধ্যে, প্রথমটি (তাহার আপন দেশের ধান্তাগম ছিল্ল ইইলেও) অন্ত কোন স্থান হইতে ধান্ত আনিয়া, অথবা মুগাদি জক্ষম জন্তর মাংস কিংবা স্থাবর বৃক্ষাদির ফল আহার করিয়া যুদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, যে দেনার নিজ্ঞদেশীয় দৈনিক পুরুষ ও শিক্যাদি ভারাগম ছিল্ল হইয়াছে এবং সেই কারণে যে সেনা সহায়শৃন্ত হইয়া পড়িয়াছে, সেনা যুদ্ধ করিতে চাহিবে না।
- (১৪) স্থাবিক্ষিপ্তা ও মিক্রবিক্ষিপ্তা (হওয়ায় বাসনমৃক্ত ) বলমধ্যে, স্থাবিক্ষিপ্তা অর্থাৎ নিজ্ক দেশে কার্যার্থ এদিক্-ওদিক্ প্রেরিড সেনা শক্তর (অভিযোগরূপ) আপদ উপস্থিত হইলে পরে পুনরায় একত্রিত হইতে পারে। কিন্তু, মিক্রবিক্ষিপ্তা অর্থাৎ মিত্রের কার্যার্থ মিত্রদেশে প্রেরিড সেনা দূরবর্তী দেশে স্থিত বলিয়া এবং সমিধানে বিলম্ব হইবে বলিয়া একত্রিত হইতে পারিবে না।
- (১৫) দৃত্তযুক্ত ও প্রষ্টপার্কিগ্রাছ (হওরার বাসনযুক্ত) বলমধ্যে, দৃত্তযুক্ত অর্থাৎ রাজ্যহাতী প্রবীন প্রধান কর্মচারীর ঘারা যুক্ত বল অন্তান্ত বিশ্বস্ত পুরুষ-ঘারা অধিষ্ঠিত হইরা দৃত্তগণসহ অসংহত বা অসংশ্লিষ্ট হইরা যুদ্ধ করিতে পারে।

কিন্তু, গ্রন্থলাহিত্যাহ অর্থাৎ যে দেনার পার্কিগ্রাহ পশ্চাতে থাকিয়া সর্বনাই দোবের কাজে ব্যস্ত থাকে, দেই সেনা পৃষ্ঠাভিঘাতের ভরে ত্রন্ত থাকে বলিয়া যুদ্ধ করিতে চাহিবে না।

- (২৬) শুরুষ্ণ ও অস্বামিসংহত (হওয়ায় ব্যদনমৃক্ত ) বলমধ্যে, শৃভূমৃণ অর্থাৎ বে দেন। মৃণস্থানে অবশিষ্ট না রাধিয়া প্রস্থিত, দে দেন। পোর ও জানপদ লোকদারা বক্ষার বিধান করিয়া নিজের সমগ্রশক্তিনিয়োগদারা যুদ্ধ করিতে পারে। কিন্তু, অস্থামিসংহত সৈভ রাজা বা দেনাপতিরহিত হইয়া তাহা করিতে চাহিবে না।
- ে । ভিন্নকৃট ও আন্ধ (হওয়ার ব্যসন্মৃত্য ) বলমধ্যে, ভিন্নকৃট অধাৎ দেনাধ্যক্ষরহিত বল অন্ত অধ্যক্ষধার অধিষ্ঠিত হইয়া মৃদ্ধ করিতে প্রস্তুত হইতে গারে। কিন্তু, অন্ধ অর্থাৎ শক্রর ব্যবহার-সম্বন্ধে সম্পূর্ণ অজ্ঞ সেনা দেশিক বা উপদেশকারীর অভাবে তাহা করিতে চাহিবে না। ইভি (বলব্যসনসমূহের নিরূপণ সমাপ্ত হইল)।

(সম্প্রতি নিম্নবর্ণিত শ্লোকদ্বর্দ্বারা উক্ত বাসনগুলির পরিহারের উপার বলা হইতেছে।)

( অমানন-বিমানন প্রভৃতি উপরি উল্লিখিত) দোষদমূহের সংশোধন, এক াল বা দৈল্লসহ অন্ত দৈল্লের সংমিশ্রণ বা একত্র সমাবেশন, সত্র বা অরণো সনাসংস্থান, ও শত্রুসেনার প্রতি কপটে।পার-প্রয়োগদার। অতিসন্ধান ও বলাধিক প্রতিপক্ষের সহিত সন্ধিক্রণ—( এইগুলিই ) নিজ বল বা সেনার ব্যসন গরিহারের সাধন বা উপায় ॥ ১॥

বিজ্ঞাীয়ু রাজা নিতা উখানশীল বা সজাগ থাকিয়া, বাসন উপস্থিত হইলে, নিজ দণ্ড বা সৈৱকে শত্রুর হাত হইতে রক্ষা করিবেন, এবং নিডাই উভোগী থাকিয়া শত্রুর সৈৱের রক্ষ বা ছিলে পাইপেই তৎ-প্রহারে উভত হইবেন ॥ ২ ॥

(সম্প্রতি নিম্নবর্ণিত ছয়টি শ্লোকদারা মিত্রবাসনের প্রকারভেদ বলা ইতেছে।)

বর্চ শ্লোকের 'কুচ্ছেন দাধ্যতে' শব্দবয়দহ অল্বয় বুঝিতে হইবে।

বিজিসীরুর পক্ষে, নিমোলিখিত নানাবিধ বিকারবশতঃ ভিন্ন মিত্র অতিকটে টিবিত বা অসুক্লিত হয়। (১) যে নিত্র স্বকার্যবশতঃ বা দল বাঁধিয়া সকলের গায়বশতঃ, অথবা স্ববন্ধৃ-প্রভৃতি একজনের কার্য্যবশতঃ শত্রুর প্রতি যতিবানে প্রবৃত্ত ছইয়াছেন; (২) যে মিত্র নিজের শক্তিহীনতা জন্ত, অথবা ( শত্রু হইতে ধনাদির ) লোভজন্ত, অধব্য ( শত্রুর প্রতি ) প্রণয় জন্ত বিভিন্নীযু-কর্তৃক পরিত্যক্ত হইয়াছেন, ( তিনি কইসাধ্য মিত্র ) ॥ ৩।

শুক্রর সহিত সংগ্রাম চলিতে থাকা সময়ে, যে মিত্র অভিযানে প্রবৃত্ত বাকিলেও, (শক্র হইতে প্রাপ্ত ধনাদি গ্রহণপূর্ব্ধক নিবর্ত্তমান বিজিগীরু-কর্ত্বক বিজ্ঞীত বা স্থীয়তা হইলতে প্রচাবিত বা বিদ্বিত হইলাছেন, অথবা যে মিত্ত বৈধীভাবজ্ঞ বিক্ষীত হইলাছেন—অর্থাৎ বাঁছার (নিজমিত্রের) শক্রর সহিত সন্ধিপূর্বক বিজিগীরু নিজ যাতবা শক্রর প্রতি আক্রমণ চালাইতেছেন বলিলা যে মিত্র ছাড় পড়িয়াছেন, অথবা যে মিত্ত—"তুমি এই দিকে যাও, আমি অঞ্চদিকে যাই" এই বলিলা বিজিগীরু ভাঁছার (নিজমিত্রের) শক্রর সহিত সন্ধি করিলা সে দিক হইতে অঞ্চদিকে অর্থাৎ নিজের অঞ্চশক্রর দিকে অগ্রসর হওলার, ছাড পড়িয়াছেন, (তিনিও কইনাধ্য মিত্র)। ৪॥

পৃথক্ পৃথক্ ভাবে বা বিজিপীয়ুর এক সন্ধে যানপ্রায়ুত্ত ছইবার সন্ধিতে বিঘাস উৎপাদন করিশেও যদি বিজিপীয়ু তাঁহার (নিজমিত্রের শত্রুর সাহায্য করিয়া) যে মিত্রকে বঞ্চিত করিয়াছেন সেই মিত্র এবং তাঁহার শত্রুর ভয়ে বা স্বমিত্রের প্রতি অনাদরে বা নিজের আপস্থবশতঃ যে মিত্র (বিজিপীয়ু-কর্তৃক) তাঁহার ব্যসন ইইতে অনিস্তারিত সেই মিত্রও ক্ইসাধ্য মিত্র ॥ ৫ ॥

যে মিত্র (বিজিগীরুর) নিজ ভূমিতে আগমন-বিষয়ে অবক্ষম ইইয়াছেন, অবধা যে মিত্র ভয়বশতঃ (বিজিগীয়ুর) স্বদ্মীপ হইতে দূরে অপস্ত হইয়াছেন, অবধা যে মিত্রকে নিজের দ্রব্যাপহরণজন্ত বা দাতব্যের অপ্রদানজন্ত, বা দাতব্য দিয়াও অপ্যানিত কর। হইয়াছে—(দে মিত্র কইদাধ্য) ॥ ৬ ॥

বিজিপীর স্বাং অথবা অগুরারা যে মিত্রের ধন অতিমাত্রার হবণ করিয়াছেন বা করাইয়াছেন, কিংবা যে মিত্র (বিজিপীরুর) শব্দকে নির্দ্ধিত করিয়া আসিলেই অগু ছঃসাধ্য কার্য্যে নিযুক্ত হইয়াছেন—(সে মিত্র কইসাধা)। গ্ন

নিজের সামর্থাহীনতাবশতঃ যে মিঞ্জ উপেক্ষিত হইয়াছেন, অথবা মিত্রভাব কল্প প্রার্থনা করিতে গেলে শর যে মিত্রের প্রতি বিরোধভাব সংজ্ঞনিত হইয়াছে, এমন মিত্র কটে সাধিত বা বশীভূত হয়েন। আবার যদি তেমন মিত্র কোন-প্রকারে বশীভূতও হয়েন—তাহা হইলেও তিনি শীস্তই বিরক্ত বা নিংক্ষেত্র হইয়া প্রকারে । ৮॥

(এখন মুদাধ্য মিত্রবর্গের কথা বলা হইতেছে।) যে মিত্র (বিজিগীরুর হিভার্ষে) কৃতপ্রিশ্রম বলিয়া মানার্ছ ছইলেও দ্যোহবশত: (বিভিগীরু-কর্ত্র ) অপূঞ্জিত, বে মিত্র পুজিত হইলেও নিজের প্রয়াগাস্থারী সৎকারপ্রাপ্ত হয়েন নাই এবং বে মিত্র (বিজিগীরুর শক্তঘারা, বিজিগীরুর প্রতি প্রয়োক্তব্য ) ভক্তি-প্রদর্শনে নিবারিত হইয়াছেন॥ ১॥

যে মিত্র (বিজিগীয়ু-কর্ত্ ক) অন্ত মিত্রের প্রতি বিহিত উপদাত দর্শন করিয়া (নিজের প্রতি তেমন হইতে পারে মনে করিয়া) ত্রস্ত হইয়াছেন, অথবা যে মিত্র বিজিগীয়ুকে তদীয় শক্রর সহিত সন্ধিতে আবদ্ধ দেখিয়া শক্ষিত হইয়াছেন, এবং যে মিত্রের প্রতি বিজিগীয়ু দৃষ্য পুরুষদারা ভেদ প্রয়োগ করিয়াছেন, সে-দব মিত্র সাধ্য বা বশীভূত হইতে পারেন এবং বশীভূত হইয়া অবস্থিত রহেন। ১০॥

অতএব, ( বিজিসীরু ) এই সমস্ত মিত্রভঙ্গজনক দোষ উৎপাদন করিবেন না।
আর যদিও (কোনও কারণে ) এই সব দোষ উৎপন্নও হয়, তাহা হইলে দোষের
উপবাতক ( সাস্তাদি ) গুণধারা সেগুলির প্রশামন ঘটাইবেন ॥ ১১॥

বিজ্ঞিনীর যে-যে কারণে ( অমাত্যাদি ) প্রকৃতির বাসনপ্রাপ্ত হইবেন, আলস্তরহিত হইয়। ( ব্যসন উৎপন্ন হওয়ার ) পূর্ব্বেই তিনি সেই সেই কারণের প্রতীকার করিবেন ॥ ২২ ॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে ব্যস্কাধিকারিক-নামক অন্তম অধিকরণে বল-ব্যস্কাবর্গ ও মিত্রব্যস্কাবর্গ-নামক পঞ্চম অধ্যায় ( আদি হইতে ১২১ অধ্যায় ) সমাপ্ত। ব্যস্কাধিকারিক-নামক অন্তম অধিকরণ সমাপ্ত।

# অভিযাস্তৎকর্ম—নবম অধিকরণ প্রথম অধ্যায়

#### ১৩৫—১৩৬ প্রক্রণ—শক্তি, দেশ ও কালের বলাবল-জ্ঞান ও যাত্রাকাল

বিজিপীরু রাজা নিজের ও শক্তর সম্বন্ধে, শক্তি (উৎসাহ, প্রভাব ও মন্ত্র), দেশ (সমবিষমন্থানাদি), কাল (শীতগ্রীখাদি), যাত্রাকাল (অভিযানের উপযোগী সমর), বলসমুখানকাল (সেনা ভর্তি করিয়া যথাকার্য্যে তাহার বিনিয়োগের সময়), পশ্চাৎকোপ (নিজের অভিযান-সময়ে পশ্চাতে পার্ফিগ্রাহাদির আক্রমণ ও অভ্যাচার), কয় (বাহন ও কর্মকর পুরুষদিগের অপচয়), বায় (অর্থাদির অপচয়), লাভ (ফলসিদ্ধি) ও আপদসমূহের (১৪৩ প্রকরণোক্ত বাহু ও আভাজার বিপত্তিসমূহের) বল ও অবলবিষ্য়ে সম্পূর্ণ জ্ঞানলাভ করিয়া যদি নিজকে বিশেষভাবে বলযুক্ত মনে করেন (স্বত্রাং শক্তকে যদি হীনবল মনে করেন), তাহা হইলে যানে প্রবৃত্ত হইবেন। অল্পণা, তিনি আসনপরিগ্রহ করিয়া (চুপচাপ) অবস্থান করিবেন।

উৎসাহশক্তি, প্রতুশক্তি ও মন্ত্রশক্তি—এই শক্তিব্ররের পারম্পরিক গুরুলগু-ভাবের বিচার করা যাইতেছে।) তদার **আচার্য্যের** মতে উৎসাহশক্তি ও প্রভাবশক্তির মধ্যে উৎসাহশক্তিই প্রশন্ততর। কারণ, (তাঁহাদের মতে) স্বয়ং শৌর্যান্, দৈহিক বলসম্পন্ন, নীরোগ, অন্তর্বিস্থাবিৎ, (মিত্রাদিরহিত ইইলেও) কেবল নিজদণ্ড বা সেনার উপরই নির্ভরশীল হইরাও, রাজা স্বয়ং প্রভাবশক্তিসম্পন্ন (অন্ত) রাজাকে পরাজিত করিতে সমর্থ হরেন। অবচ তাঁহার দণ্ড বা সেনা স্কন্ন হইলেও তিনি তদীর তেলোমহিমার কার্যা করিওে সমর্থ হরেন। কিন্তু, প্রভাবশক্তিসম্পন্ন রাজা যদি উৎসাহশক্তিবিহীন হরেন, তাহা হইলে তিনি বিক্রমপ্রদর্শনে বিপদ্প্রন্ত হইয়া নাশপ্রাপ্ত হরেন।

কিন্ত, কেটিল্য এই মত যুক্তিসকত মনে করেন না। কারণ, ( ভাঁহার মতে ) প্রভাবশক্তিবিশিষ্ট ( অর্থাৎ কোশ ও দওজ তেজ:সম্পন্ন ) রাজা স্প্রভাবে ( যাতব্য রাজা হইতে ) বিশিষ্টতর তৃতীয় রাজাকে স্বদহায়ার্থ বরণ করিয়া এবং প্রবীরপুরুষদিগকে ( ভক্ত-বেতনাদি দিয়া ) স্বশে আনিয়া, অর্থণ। প্রভূত ধনদানধার।) কিনিয়া শইয়া, উৎসাহশক্তিসম্পার (অন্ত) রাজাকে অভিশয়িত করিতে পারেন। তদীয় দণ্ড বা দেনা অভ্যস্ত প্রভাবশালী হইয়া অন্ব, গঞ্জ, রথ ও অন্তান্ত উপকরণদ্বারা সম্পার হইয়া দর্বত্র অপ্রতিহতভাবে বিচরণ করিতে পারে। (ইহাও শুনা বায় যে) স্ত্রীলোক, বালক, পঙ্গু ও অন্ধরাজগণও প্রভাবশক্তিসম্পার হইয়া উৎসাহশক্তিসম্পার রাজাদিগকে পরাজিত কয়িয়া হা (ধনাদিদানদ্বারা) করে করিয়া লইয়া পৃথিবী ক্লয় করিতে সমর্থ হইয়াছেন। (স্তরাং কৌটিলোর মতে উৎসাহশক্তির অপেক্ষায় প্রভাবশক্তিই অধিকতর কার্যাকরী হয়।)

তদীয় আচার্টেরে মতে প্রভাবশক্তি ও মন্ত্রশক্তির মধ্যে প্রভাবশক্তিই প্রশন্ততর। কারণ, ( তাঁহার মতে ) মন্ত্রশক্তিদম্পর হইলেও যদি কোন রাজা প্রভাবশক্তিবিহীন হয়েন; তাহা হইলে তিনি নিক্ষলমন্ত্র হইয়া পড়েন। আবার, প্রভাবের অভাব ভাঁহার (কোশ-দণ্ড সাধ্য) মন্ত্রকে অভিহত করে, বধা রৃষ্টির অভাব (বর্ষণাপেক্ষাকারী) গর্ভসং ধান্তকে অভিহত বা নই করিয়া থাকে।

কিন্তু, কৌটিল্য এই মত সমর্থন করেন না। ( তাঁহার মতে প্রভাবশক্তির অপেক্ষার ) মন্ত্রশক্তিই প্রশাস্ততর। কারণ, প্রজ্ঞাও শান্ত্রজ্ঞানর পচকুবিশিষ্ট রাজ্ঞা অল্প আয়াসেই মন্ত্রের অন্ধর্ত্তান করিতে সমর্থ হয়েন এবং উৎসাহ ও প্রভাবশক্তিশবিশিষ্ট শক্তরাজগণকে সাম্যাদি উপায়দার। এবং যোগ ( অর্থাৎ ভীক্ষাদি চারপুক্ষব্যাগ ) এবং উপনিষ্ণপ্রয়োগদ্বারা ( অর্থাৎ উপনিষ্দিক অধিকরণাক্ত অন্যাদি উপায়দারা ) বঞ্চিত করিতে পারেন। এইভাবে উৎসাহ, প্রভাব ও মন্ত্রশক্তিরারা অধিক শক্তিমান্ রাজা ( পূর্ব্ব-পূর্ব্ব শক্তিটিশ্বরা যুক্ত রাজাদিগকে ) বঞ্চিত বা স্ববশংগত করিতে পারেন।

( সম্প্রতি দেশের নিরূপণ করা যাইতেছে।) দেশ-শব্দার। পৃথিবী বৃথিতে হইবে। এই পৃথিবীতে ( ভারতবর্ধরূপ মহাদেশে ) হিমালর হইতে ( দক্ষিণ- ) সমুদ্র পর্যান্ত উদগ্ভব অর্থাৎ উত্তরদিগ্ভব যে ক্ষেত্র এবং ভির্যাগ্ভাবে ( অর্থাৎ পূর্বে-পশ্চিমে ) এক হাজার যোজনবাাশী যে ক্ষেত্র,—ভাহাকে চক্রবর্জিক্ষেত্র বলা হয়—অর্থাৎ উক্তপ্রকার সীমাবদ্ধ দেশে চক্রবর্জী রাজার অর্থত শাসন চলিতে পারে বলিয়া ইহার নাম চক্রবর্জিক্ষেত্র হইয়াছে। এই চক্রবর্জিক্ষেত্রে আরণ্য (জন্মল ভূমি, যাহা কৃষিরে অ্যোগ্য ভূমি), প্রামা ( বাহা কৃষিযোগ্য ভূমি ), পার্বিত ( বাহা পাহাড়ী ভূমি ), উদক ( জল্পথ্যারস্থান ), ভৌম (স্থলভূমি), সম ( স্মতলভূমি ) ও বিষম ( উন্ধতানত ভূমি )—এইরূপ বিশেষ বিশেষ বিশেষ

আছে। এই সমস্ক বিশেষভাগে ষাহাতে নিজের বল বা সেনার (জয়াদি) রিছি হয়, সেইয়ণ কার্যা রাজা করিবেন। যে দেশে নিজসৈয়ের নানাবিধ বাায়ামের স্পরিধা হইতে পারে এবং শক্রসৈয়ের নানাবিধ বাায়ামের স্পরিধা হইতে পারে—ভাছাই উত্তম দেশ। ইছার বিপরীত দেশ ( অর্থাৎ যে হানে নিজসৈয়ের বাায়ামের অপ্পরিধা ও শক্রসৈয়ের বাায়ামের প্রবিধা ও শক্রসৈয়ের বাায়ামের প্রবিধা ও বার যে দেশ। এবং যে দেশ নিজের ও শক্রব ব্যায়ামের পক্ষে নমান প্রবিধা ও স্ক্রবিধায়ক্ত ভাছা মধ্যম দেশ।

( এখন কালের নিরূপণ করা যাইতেছে।) শীতকাল, এ মিকাল ও বর্ধাকাল ভিদেশ কাল তিনপ্রকার। কালের বিশেষ বিশেষ ভাগ এই প্রকার—রাজি, দিন, শক্ষ ( রুঞ্চপক্ষ ও ভক্ষপক্ষ ), মাদ, ঋতু, আরন ( উত্তরারণের ছয়মান ও দক্ষিণারনের ছয় মাদ ), সংবৎসর ( সাল বা একবংসর ) এবং যুগ। এই সমস্ত কালবিশেষে বাহাতে নিজের বল বা সেনার রুদ্ধি হয় সেইরূপ কার্য্য রাজা অহুষ্ঠান করিবেন। যে কালে নিজেসৈত্যের নানাবিধ ব্যায়ামের আহুক্লা ঘটিবে এবং শক্ষর সৈত্যের নানাবিধ ব্যায়ামের প্রাতিক্লা ঘটিবে—ভাহাই উত্তমকাল। ইহার বিপরীত কাল অধন কাল। এবং ধে কাল নিজের ও শক্ষর সম্বন্ধে বা সমান ভাহা মধ্যম কাল।

( শক্তি, দেশ ও কালের বলাবলবিচার সন্থায় ) তদীয় আচার্থ্যের এই মত বে, এই তিন বন্ধর মধ্যে শক্তিই দেশ ও কালের অপেক্ষায় অধিক প্রেষ্ঠ। কারণ, ( তাঁহার মতে ) রাজা শক্তিশালী হইলে নির ও উচ্চ মূলযুক্ত দেশের এবং শীত, গ্রীম ও বর্ষাযুক্ত কালেরও প্রাতীকারে সমর্থ হয়েন।

কোন কোন আচার্টের মতে এই তিনের মধ্যে দেশই অপর ছইটির অপেক্ষায় অধিক প্রেষ্ঠ । কারণ, ( তাঁহার মতে ), কুরুরও স্থলগত থাকিয়া ( ভলগত ) নক্তকে টানিয়া আনিতে পারে এবং নিয়ন্থানে ( অর্থাৎ জলদেশে ) থাকিয়া নক্তও কুরুরকে টানিয়া আনিতে পারে ( অর্থাৎ অক্ত্ল দেশে থাকিয়া ধে কোন ব্যক্তি শক্তকে জন্ম রাধিতে পারে )।

আৰার কোন কোন আচোর্টেরর মতে এই তিনের মধ্যে কালই অপর ছইটির অপেকার শ্রেষ্ঠ। (কালের প্রভাবে) কাক দিনের বেপার পেচককে মারিতে পারে এবং পেচকও রাজিতে কাককে মারিতে পারে (অর্থাৎ নিজের অন্তর্কুল সমরে অবস্থিত থাকিয়া যে কোন ব্যক্তি বলবান্ শক্তকেও নই করিতে পারে)।

কিছা, কোটিলায় এই মত সমর্থন করেন না। কারণ, (জাঁহার মতে) শক্তি, দেশ ও কাল এই ডিনটিই কার্য্যাধনবিবয়ে পরস্পারকে অপেক্ষা করে। স্বতরাং এই মতে এই ডিনের প্রত্যেকটিরই সমান প্রাধান্ত ধরিয়া লাইতে হইবে।

(এখন শক্তর বিরুদ্ধে যাত্রাকাল অর্থাৎ যাত্রা বা অভিযানের কাল নিরূপিত হইতেছে।) উক্ত (শক্তি, দেশ ও কালসম্বন্ধে শক্তর অপেক্ষায় অধিকতর) শক্তিশালী হইলে (বিজিগীর রাজা) নিজের সেনার এক-তৃতীয়াংশ বা এক-চৃত্থাংশ যথাক্তমে মৃল্ছানে (রাজধানীতে), পার্ফীতে (পৃষ্ঠভাগে), প্রত্যন্তপ্রদেশে ও অটবীপ্রদেশে রক্ষার্থ স্থাপিত করিয়া, কার্য্যাধনের উপযোগী কোল ও দণ্ড লইয়া, অমিত্র বা শক্তর অভিযাতের উদ্দেশ্যে মার্গলীর্থী যাত্রা অর্থাৎ অত্রহায়ণমাদে অবলম্বনীয় যাত্রা বা অভিযান স্বীকার করিবেন কারণ, সেই সমরে অমিত্রের পুরাতন ভক্ত (অল্লাদি) ক্ষীণ থাকে।

ভাঁছার ন্তন ভক্ত তথন পর্যন্ত অসংগৃহীত থাকে এবং তথন তাঁছার ছর্গসংস্কার করা সম্ভবপর হয় না। আরও (একট্ লাভ বিজিগীরুর সম্ভবপর হয় ) তথন (শক্রর) বর্ধাকালে উপ্ত বীজ হইতে নিম্পন্ন শক্ত ও হেমস্ককালে বপ্তরা বীজমুষ্টিও তিনি (বিজিগীরু) উপহত করিতে সমর্থ ইইবেন। আবার (শক্রর) হেমস্ককালে উপ্ত বীজ হইতে নিম্পন্ন শক্ত ও বসম্ভকালে বপ্তর্য বীজমুষ্টিও নপ্ত করিতে হইলে, তিনি চৈত্রী বাত্রা অর্থাৎ চৈত্রমাসে অবলম্বনীর অভিযান স্বীকার করিবেন। আবার (শক্রর) বসস্তকালে উপ্ত বীজ হইতে নিম্পন্ন শক্তা ও বর্ধাকালে বপ্তর্য মুষ্টিবীজও নপ্ত করিতে হইলে, তিনি জোঠান্দ্রীয় যাত্রা অর্থাৎ জোঠমানে অবলম্বনীর অভিযান স্বীকার করিবেন এবং তাহা হইলে তথন তাঁহার অমিত্রের অবস্থাও এইরূপে থাকিবে যে, তাহার (শক্রর) তুণ, কাঠ ও জল ক্ষীণ থাকিবে এবং তথন তাঁহার ছর্গসংস্কার করাও সম্ভবপর হইবে না।

(বাতবা দেশের অবস্থা বৃথিয়া যাত্রাকাল নিরূপিত হওয়া আবশ্যক।) বে দেশ অত্যক্ত গরম এবং যেথানে ব্যস ( গশুর খান্ত তৃণাদি ), ইন্ধন ( কার্চ ) ও জল অল্প আছে, (বিজিপীর) সেই দেশে হেমন্তে অভিযান করিবেন। আবার যে দেশ অনব্যত তৃষারবর্ষণে তমসাজ্য় থাকে, বেধানে গভীর জলাশয় বা জলময় ভাগ বেশী আছে এবং যেথানে তৃণ ও রক্ষের গহনভাগ আছে, (বিজিপীর) সেই দেশে গ্রীম শুকুতে অভিযান করিবেন। (বর্ষাকাশে যাত্রা প্রায় প্রতিধিদ্ধ, কিন্তু, ) যে দেশ নিজনৈত্তের ব্যায়ামের যোগ্য ও শত্রুনৈত্তের ব্যায়ামের অ্যোগ্য, সেই দেশে ( বিজিপ্তীরু ) বর্ধাকালে অভিযান করিতে পারেন।

অগ্রহারণ ও পৌবমানের মধ্যে দীর্ঘকালব্যাপিনী (মার্গনীর্ঘী) যাত্রা করিবেন অর্থাৎ যে অভিযানে বেশী সময়ের প্রয়োজন হইবে সেইরূপ যাত্রা করিবেন (কারণ, তথন করাদিকর্মের নাশের আশকা নাই)। চৈত্র ও বৈশাখ মানের মধ্যে মধ্যমকালব্যাপিনী (চৈত্রী) যাত্রা করিবেন। আর জ্যৈষ্ঠ ও আবাঢ় মানের মধ্যে অল্পকালব্যাপিনী (জ্যেষ্ঠামূপীয়া) যাত্রা করিবেন—যদি বিজিগীয়ু কেবলমাত্র শক্রদেশে যাইয়া অল্লাদির উপদ্রব করিতে ইচ্ছা করেন, (কিন্তু মুদ্দাদির জ্বন্ত নহে)। আবার শক্রর ব্যানন বা বিপত্তি আপতিত হইলে (পূর্ব্বকালোক্ত যাত্রাক্রয়ের সমর অপেক্ষা না করিয়া) চতুর্থী (মার্গশীর্ঘাদিবিলক্ষণা) যাত্রা করিবেন। এই ব্যাননাভিয়ান বিপ্রহাষ্ঠান-নামক প্রকরণে (অধিং ৭, অধ্যায় ৫) ব্যাধ্যাত হইয়াছে।

শক্রর বাসন উপস্থিত হইলে, বিজিগীর ( তাঁহার বিরুদ্ধে ) অভিধান করিবেন—ইছা তদীয় আচার্য্য প্রায়শঃ উপদেশ করিয়া থাকেন। কিন্তু, কোটিল্য নিজে এইরূপ সিদ্ধান্ত মানেন যে, (শক্রর অপেক্ষায়) নিজের শক্তির উদর হইলেই বিজিগীরু ( তাঁহার বিরুদ্ধে ) অভিধান চালাইবেন, কারণ, বাসনের উৎপত্তি আনিশ্চিত ( কথন যে শক্রর বাসন উপস্থিত হইবে ভাহার ঠিকানা নাই —হয়ত, তখন বিজিগীয়র শক্তিরও অপচয়ের অবস্থা হইতে পারে )।

অথবা (শত্রুর ব্যাসন ও নিজের শক্তির উপচরের অপেক্ষা না করিরাও)
থদি বিজিগীর অভিযানে প্রারুত হইলে শত্রুর কর্শন, বা উচ্ছেদসাধন করিতে
সমর্থ ইইবেন মনে করেন—ভাহা হইলেও ভিনি অভিযান শীকার করিতে
পারেন।

(এখন সেনাহসারে যাত্রাকালের বিচাধ করা হইতেছে।) অভ্যন্ত উঞ্চলার বিপর্যান্ত হওয়ার সময়ে, বিজিগীরু যদি হল্ডিব্যভিরেকে অন্তপ্রকার (খারোট্রাদি) বল বা দেনাযুক্ত হয়েন, তাহা হইলে তিনি অভিযানে বাহির হইতে পারেন। কারণ, (সেই সময়ে) হল্ডিগণের স্বেদ বাহিরে নিগত না হইলে ইহারা ক্রিরোগাক্রান্ত হয় এবং ভখন (জলাভাবে) স্নান না করয়ে ও জলশান না কয়য় ভাহাদের ক্রমণ (জলজাব) স্কর্ছভাবে না হওয়ার ফলে ইহারা (অভভাপে) আরু হয়য় বায়। অভএব, যে দেশে প্রচুর জল আছে ও যে সময়ে বর্ষণ হয়, সেই দেশে ও সেই কালে বিজিপীর হাজ্ববদযুক্ত থাকিলে অভিযানে প্রবৃত্ত

হইবেন। তদ্বিপরীত অবস্থায় ( অর্থাৎ অপ্রভ্তজলযুক্ত দেশে ও বর্ধাতিরিক্ত দমরে ) তিনি গর্দ্ধন্ত, উট্র ও অপ্রবলযুক্ত থাকিলে অভিযানে প্রবৃত্ত হইবেন। আবার বর্ধাকালেও যদি কোন দেশে বর্ধান্তনিত পক্ষ অল্প হয়, তাহ। হইলে সেই মক্ষপ্রায় দেশে তিনি ( হস্তী, অস্থ, রথ ও পদাতিযুক্ত ) চতুরক বল লইয়া অভিযান করিতে পারেন। অথবা, যাত্রামার্গের সমতলত্ব, বিষমত্ব, নিম্নতা ( অর্থাৎ জলপ্রায়তা ) অথবা স্থলপ্রায়তা এবং ইহার ক্রস্বতা ও দীর্ঘতার দক্ষণ যাত্রা বা অভিযানের বিভাগ নির্দিষ্ট হইতে পারে।

কার্য্যের পথ্তাবশতঃ দব অভিযানই ফ্রন্থকালব্যাপী হয় এবং কার্য্যের গুরুভাবশতঃ দেগুলি দীর্ঘকালব্যাপী হয়। (সদেশে বর্ধাবাদ বিধেয়, কিন্তু কার্য্যবশতঃ) পরদেশেও বর্ধাবাদ কর্ত্তব্য হইতে পারে ॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থশান্তে অভিযাত্মৎকর্ম-নামক নবম অধিকরণে শক্তি, দেশ ও কালের বলাবলজ্ঞান ও যাত্রাকাপ্র-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ১২২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### দ্বিতীয় অধ্যায়

১৩৭—১৩৯ প্রকরণ—বল বা সেনার উপাদানকাল (যথোপ-যোগী কার্য্যে বিনিয়োগের কালনিরূপণ), সেনার সমাহগুণ এবং প্রতিবলকর্মা (শত্রুর বলাসুসারে নিজ সেনাগঠনের উপায়-নির্দ্ধারণ)

মৌলবল (মূল অধিষ্ঠান বা রাজধানী ভব পিতৃ পৈতামহ দেনা), ভূতকবল (ভূতি বা বেতনভোগী দেনা), ভ্ৰেণাবল (জনপদের শ্রেনী বা সংঘে ভূজ থাকিয়া নানাবিধ কর্মকারী হইরাও আয়্ধীয় পুরুষের দেনা), মিত্রবল (মিত্রের দেনা), আমিত্রবল (শত্রুর দেনা) ও অটবীবল (আটবিক মুখ্যদের দেনা) — এই ছরপ্রকার বলের বা দেনার সমুখানকাল ('সমুদ্ধান'কাল পাঠ সক্ষত মনে হয় না) অর্থাৎ তাহাদিগকে মুদ্ধাদিকার্যো বিনিষ্ক্ত করিবার উপযুক্ত কাল নির্ণীত শ্রহৈতেছে।

(১) (মোলবল-বিনিয়োগের কারণ ও কাল বলা হইতেছে।) (ক) মূলের
 (ভারিয়ান বা রাজধানীর) রক্ষার্থ প্রয়োজনীয় মোলবলের অভিরিক্ত মোল দেন।

থাকিলে; (খ) অথবা যদি ( বিজিনীর শব্ধং যুদ্ধে গেলে ) মোলপুরুষেরা অভিনাত্রায় টোহচিন্তাপরায়ণ ইইরা মূলস্থানের রাজার প্রতিক্লে বিকারযুক্ত হইবে এমন অবস্থা ব্যা বায়; (গ) অথবা ( যথন তিনি দেখিবেন যে, ) প্রতিষ্টেজ্বা ( প্রত্যেষ্ট্রী শক্রু) বহুসংখ্যক এবং তৎপ্রতি অস্থ্যক্ত নিজ মোলবল-সহকারে, কিষ্বা লোইগুশালী অন্ত দেনাবলে বলীয়ান্ ইইয়াছেন বলিয়া তাঁহার ( অর্থাৎ দেই প্রতিযোজার ) বিরুদ্ধে ব্যায়াম বা বহুযুত্রপূর্বক অভিযান চালনা দরকার ইইরাছে; (ঘ) অথবা যদি বহুদূর্ব্বাণী পথ ও বহু সময়ব্যাণী কালপর্যাপ্ত যুদ্ধ চলিলে, মোলগণই অবশ্রম্ভাবী ক্ষর (লোকক্ষয়) ও বায় ( অর্থনাশ ) সম্থ করিতে পারিবে এমন অবস্থা দাড়ায়; ভ) অথবা যদি দেখা যায় যে, যাওব্য শক্তর বহু নিজ্মান্থক্ত গুচুপুরুষদিগের বিজিলীরের অনশে সম্পাত বা উপস্থিতি ঘটাতে, তাহারা অবশ্যই উপজাপ বা ভেদবপনে নিযুক্ত হইবে, অর্থাৎ এই প্রকার ভয় উপস্থিত হইলে, এবং ( মোলবাতিরিক্ত ) ভূতকাদি অন্তান্থ দেনার প্রতি অবিষাদ উৎপন্ন হইলে; (চ) অথবা যদি সকলপ্রকার সৈন্থের ( প্রধানপুরুষ্বনিগের) বলক্ষয় ইইয়াছে এমনও বুঝা যায়, তাহা হইলে—মোলবল বিনিয়াগের কাল বা অবসর আসিরাছে এইরূপ বুঝা যায়, তাহা হইলে—মোলবল বিনিয়াগের

- (২) (ভ্তকবলের বিনিয়োগের কারণ ও কাল বলা যাইতেছে।) যদি বিজিনীর দেখেন যে, (ক) তাঁহার নিজ ভ্তকবল প্রচুর, কিন্তু মোলবল অল্প, তাহা হইলে; (খ) অথবা শক্রর মোলবল অল্প ও বিরাগযুক্ত, তাহা হইলে; (গ) অথবা শক্রর ভ্রতাদৈন্ত ফল্প বা অল্পক্তিশালী এবং একরূপ সারশ্ন্ত, তাহা হইলে; (গ) অথবা মান্তব্য ফল্পরায়াম-সহকারে চালাইতে হইবে—এইরূপ অবত্বা হইলে; (ভ) অথবা যাতব্য দেশ অদ্ববর্তী এবং কালও অদীর্ঘ হওরাং লোকক্ষয় ও অর্থবার স্বল্পবিমিত হইবে, এমন জানিলে; (চ) অথবা তাঁহার (বিজিলীরুর) সৈন্তমধ্যে শক্রর গৃচপুরুষাদির সম্পাত অল্প হইরাহে এবং তজ্কনিত উপজাপ বা ভেদ শমিত হইরাছে এবং তাঁহার নিজনৈত্ব বিশাসের পাত্র, এমন হইলে; এবং (ছ) শক্রর (ভৃণকার্ভাদির) প্রসার স্বল্প হওরার তাহার বিঘাত সম্ভবপর ছইবে, এমন হইলে—(ভিনি) ভৃতবলের বিনিয়োগের কাল বা অবসর উপস্থিত হইরাছে জানিবেন।
- (৩) (শ্রেণীবলের বিনিয়োগের কারণ ও কাল নিরূপিত হইতেছে।) যদি বিন্ধিনীর বুঝেন বে, (ক) তাঁহার শ্রেণীবল সংখ্যার অধিক এবং ইছা মূলছানে ও অভিযানসময়ে নিবেশিত হইতে সমর্থ হইবে, তাহা হইলে; (ব) প্রবাদও ক্লম্ব

অর্থাৎ প্রবাস অদ্ম-দেশবর্তী ও অবহকালব্যাপী, তাহা হইলে; (গ) প্রতিষোদ্ধাও (শক্রও) শ্রেণীবলবছল হইয়া (প্রয়োজনমত) মন্ত্র বা তৃষ্টাংযুদ্ধ ও ব্যায়াম বা প্রকাশবিক্রম অবলম্বন কমিয়া তাঁহার (বিজিগীরুর) বিরুদ্ধে যুদ্ধ চালাইতে ইচ্ছুক, তাহা হইলে; এবং (ঘ) প্রতিযোদ্ধা দণ্ডভরে ভীত নিজনৈয় লইয়া (অপর নরপতির সাহাযো) যুদ্ধব্যাপার চালনা করিতে চাহেন, তাহা হইলে তিনি শ্রেণীবলের বিনিরোগের কাল বা অবসরপ্রাপ্ত হইরাছে জানিবেন।

- (৪) (মিত্রবলের বিনিয়োগের কারণ ও কাল নির্দারিত হইতেছে।) বলি বিজিপ্নীরু মনে করেন যে, কে) তাঁহার মিত্রবল সংখ্যার অধিক এবং ইহা তদীর মূলস্থানে ও অভিযানে নিয়েজিত হইতে সমর্থ, তাহা হইলে; (খ) প্রবাসও আদ্রদেশকালবিরক, তাহা হইলে; (গ) মন্ত্রযুদ্ধ বা তৃষ্ণীংযুদ্ধের অপেক্ষায় ব্যায়াম বা প্রকাশয়ুদ্ধই অধিকতর হইবে, তাহা হইলে; (য়) ( শক্রর ) আটবিক সেনাও তাঁহার নগরন্বিত তদীর আসার বা মিত্রসেনাকে পূর্বে মিত্রবলদ্বারা যুদ্ধ করাইয়া, পরে নিজবলদ্বারা য়দ্ধ করাইবেন, তাহা হইলে; (য়) অথবা ( তিনি যদি মনে করেন যে ), তাঁহার নিজের যাহা য়ুদ্ধাদির কার্য্য তাহা মিত্রেরও কার্য্য, এই ভাবে উভয়ের কার্যাত্রলাতা ঘটে, তাহা হইলে; (চ) অথবা কার্য্যদিদ্ধি মিত্রের আয়ন্ত তাহা হইলে; (ছ) অথবা তাঁহার মিত্র সন্নিহিত বলিয়া অন্তর্মর, মতরাং তাঁহার অন্তর্মহ বা উপকারের পাত্র, তাহা হইলে; (জ) অথবা তাঁহার (মিত্রের) শক্রদারা দৃশ্বর্গের বিনাশসাধন করিবেন, তাহা হইলে—মিত্রবলের বিনিয়োগের কাল বা অবসরপ্রাপ্ত হইয়াছে, ইহা তিনি ধরিয়া লইবেন।
- (৫) (অমিত্রবলের বিনিয়োগের কারণ ও কাল বলা হইতেছে।) যদি বিজিপীর মনে ভাবেন যে, (ক) তাঁহার শক্রবলসংখ্যা প্রভূত ও তাহা তদীর নগরেই অবস্থিত এবং তিনি তাহা অন্ত শক্রবলের সঙ্গে যুদ্ধ করাইবেন এবং তাহা ঘটাইতে পারিলে (খবরাহতক্ষক) চণ্ডালের যেমন কুরুর ও বরাহের যুদ্ধ বাঁধাইরা দিলে যুধ্যমানগ্রের অন্তত্তরের বধে তাহার ইইলাভ হয়, তেমন শক্রবলের সহিত শক্রবলের যুদ্ধ বাঁধাইতে পারিলে তাহারও অন্তত্তরথদ্ধণ ইইলাভ হইবে অথবা আটবিকদিগকে শক্রবলের সহিত যুদ্ধ করাইবেন, তাহা হইলে; খে) অথবা নিজ মিত্রসমূহের ও নিজ আটবিক মুণাদিগের কন্টক বা শক্রের উল্লেদ্যাধনরূপ এই ক্রিয়া (অর্থাৎ এইপ্রকার শক্রবলয়ারা শক্রবলের যুদ্ধবাঁধানের ক্রিয়া) তিনি (বিজিপীয়) সাধন করিবেন, তাহা হইলে; গে) অথবা অত্যক্ত বৃদ্ধি বা উর্যুতিযুক্ত শক্রবল ঘাহাতে কুপিত হইয়া না উঠে এই

ভাষে তিনি নিভাই ইহাকে নিজসন্নিধানে বাস করাইবেন, কিন্ধ, লক্ষ্য রাখিবেন বেন সেই শত্রুবল মন্ত্রিপুরেহিতাদি প্রকৃতিবর্গের আভ্যন্তর কোল উৎপাদন না করিতে পারে—এমন অবস্থা হইলে; (খ) অথবা, এই প্রকার শত্রুবলের সঙ্গে শত্রুবলের মৃদ্ধ শেষ হইলে আবার যুদ্ধোচিত কাল উপস্থিত হইবে, তাহা হইলে —(তিনি) অমিত্রবলের বিনিয়োগের কাল বা অবসরপ্রাপ্ত হইরাছে জানিবেন।

(৬) এই প্রকারেই ( অর্থাৎ অমিত্রবলবিনিয়োগের নিমিন্তের স্থায় নিমিন্ত উপস্থিত হইলে। অটবীবল-বিনিয়োগের কালও উপস্থিত বলিয়া ব্যাখ্যাত হইবে। ( আটবিকবলের বিনিয়োগবিবয়ে একটি বিশেষ এই প্রকার।) যদি বিজিপীয়ুমনে করেন যে (ক) তাঁহার অটবীবল শক্রভূমির পথপ্রদর্শক হইবে, পরভূমিতে যুদ্ধ করার উপযোগী আয়ুধাদির প্রয়োগে উপযুক্ত ও অরির সহিত যুদ্ধবিষয়ে (পূর্ব্ব হইতেই) শক্রর প্রতিপক্ষতা আচরণ করে—এবং তক্ষন্ত এই প্রকার অটবীবলদারাই, শক্র স্থাতিপক্ষতা আচরণ করে—এবং তক্ষন্ত এই প্রকার অটবীবলদারাই, শক্র স্থাতি বিবহল বলীয়ান্ হইয়া অগ্রসর হইলে তাহায় বধসাধনে সমর্থইইবেন—যেমন একটি বিবহলের আঘাতদারা অন্ত একটি বিবহল ভালিতে পারা যায় তেমনভাবে—ভাহা হইলে; (থ) অথবা শক্রর ত্ণকার্চাদি দ্রব্যের স্কল্প প্রবেশনও আটবীবলদারাই বিহত হইতে পারিবে, তাহা হইলে—অটবীবল- বিনিয়োগের কাল বা অবসরপ্রাপ্ত হইয়াছে বৃঝিতে হইবে।

(উক্ত ছন্তপ্রকার দেনার অতিরিক্ত অন্ত একপ্রকার দেনার কবা বলা হইতেছে।) ইহার নাম ঔৎসাহিক বল (নিজ উৎসাহমাত্রকে অবলম্বন করিয়া কার্য্যে প্রবৃত্ত হয় বলিয়া এই সংজ্ঞা)। এই সেনা এক বা মুখ্য নায়করহিত, ইহা অনেক জাতীয়ের মধ্যে (নানাদেশ-মধ্যে) অবস্থিত, (রাজাদেশ) পাইয়া বা না পাইয়াও পরবিষয়বিলাপে উত্তিষ্ঠমান। ভেল্ল ও অভেল্ডভেদে এই সেনা ফুইপ্রকার—ভক্তভোগী, বেতনভোগী, (শক্রবিয়য়) কুওনকারী, (য়্রগাদিকর্মে) বিষ্টি বা শ্রমিকের কার্য্যকারী, এবং রাজার প্রতাপাম্প্রটানকারী (অর্থাৎ বিশ্রামপ্রদর্শনে রাজাজ্ঞাকারী) হইলে ইহা শক্রগণের 'ভেল্প' (ভেদযোগ্য) হইতে পারে। এই সেনা তুলাদেশীয়, তুল্যজাতীয় ও তুলাশিল্প হইলে 'অভেন্ত' শক্রম ভেদের অযোগ্য) হইতে পারে, কারণ, এইরূপ সেনাই সংহত বা নিতাসংঘাত-মিলিত এবং শক্তিসম্পার। এই পর্যান্ত নানারূপ বলের উপাদান বা বিনিয়োগের কাল নির্দীত হইল।

ভন্মধ্যে ( রাজা ) অমিত্রবল ও অটবীবলকে কুণ্য ং বস্তাদিদ্রব্য )-দারা ভূত, অলবা শক্তর দেশে পৃষ্ঠিত দ্রবাদারা ভূত রাখিবেন। শক্তরও যদি নানাপ্রকার বলসংগ্রহের কাল উপস্থিত হয়, তবে (বিজিগীযুর সহারতার জন্ত পূর্বাগত) শক্তবলকে তিনি (বিজিগীযু) অবগৃহীত অর্থাৎ সমন্নিধানে আবদ্ধ রাধিবেন। অবধা, (নিজকার্য্যাপদেশে) অন্ত স্থানে ইহাকে পাঠাইয়া দিবেন; অথবা, (প্রতিজ্ঞাত সাহায্যবিধান না করিয়া) ইহাকে অফলযুক্ত করিবেন; অথবা, ইহাকে (ভাঙ্গিয়া নানাঅংশে বিভক্ত করিয়া) নানাস্থানে বিক্ষিপ্ত রাধিবেন। অথবা, (শক্তর আবশ্যকতার) কাল অভিক্রাপ্ত হইলে ইহাকে ছাড়িবেন। (বিজিগীয়ুর) শক্তর এইপ্রকার বলসংগ্রহচেন্টার বিঘাত ঘটাইবেন এবং নিজের বলসংগ্রহচেন্টা সম্পন্ন রাধিবেন।

(মেলিভ্তকাদি ছয়প্রকার সেনার মধ্যে) সন্নাহ বা যুদ্ধার্থ প্রস্তুত রাধা সম্বন্ধে পূর্ব-পূর্বটি পর-প্রটির অপেক্ষার প্রশান্ততর। ভূতবল অপেক্ষার (১) মোলবল অধিকতর সিন্ধিকর, কারণ, মোলবল সর্বাদাই স্বামীর ভাবে ভাবাপন্ন (অর্থাৎ কি প্রকারে নিজে স্বামীর সত্ত্বে স্বাদ্বান্থাকিবে এইরূপ চিন্তাযুক্ত)থাকে এবং নিত্যই ইহা স্বামীর নিকট হইতে সমাদরপ্রাপ্ত হয় এবং নিজেও স্বামীর প্রতি সমাদরপ্রদর্শক থাকে ( অর্থাৎ পরস্পরের প্রতি সংকারের অস্থবর্তন অবিভিন্ন খাকে )।

আবার, শ্রেণীবলের অপেক্ষায় (২) ভূতবল অধিকতর সিদ্ধিকর, কারণ, ভূতবল নিতাই রাজার নিরস্তর অর্থাৎ সমীপবর্তী থাকে, ইহাকে শীদ্রই যুদ্ধাদি-কার্য্যে উঞ্জিত বা প্রস্তুত করা যায় এবং ইহা রাজার বশংগত থাকে।

আবার, (২) শ্রেণীবল মিত্রবলের (অপেক্ষার অধিকতর শ্রেরস্কর, কারণ, শ্রেণীবল) রাজার নিজ জনপদে অবস্থিত আছে, ইহা স্বাজার সহিত সমান প্রয়োজনে বা উদ্দেশ্যেই সংগৃহীত এবং রাজার সহিত (শত্রুবিবয়ে) তুল্য সংঘর্ষ, তুল্য অমর্ষ বা ক্রোধ, ও তুল্য সিদ্ধিলাতে যুক্ত হয়।

আবার, (৪ থিত্তবল অমিত্রবলের অপেক্ষার অধিকতর শ্রেয়েবিধারক, কারণ, (বিজিগীযুর সৃহিত) সমান প্রয়োজনবিশিষ্ট থাকার, মিত্রবল যে কোন দেশে ও যে কোন কালে সহায়তাদানে অগ্রসর থাকে ( অর্থাৎ ইহা দেশ ও কাশের পরিমাপ করিয়া সহোয় দেয় না )।

আবার, (৫) অমিত্রবল অটবীবলের অপেক্ষার অধিকতর শ্রেম্বর, কারণ, অমিত্রবল আর্থ্যগুণবিশিষ্ট নায়কদারা অধিষ্ঠিত থাকে (অর্থাৎ অটবীবল আর্থান জনদার। অধিষ্ঠিত থাকে না)। তবে এই উভয় বলই (অর্থাৎ অমিত্রবল ও আটবিকবল) শক্রদেশের দুর্থনজন্তই প্রযুক্ত্য হইতে পারে। শক্রম দেশ দুর্থন ব্যতীত অন্তর্ম মুদ্ধাদিতে, অথবা (বিজিক্ষিত্রর) ব্যসন বা বিপজিতে প্রযুক্ত হুইলে,

এই উভয়বল হইতে 'অহিভয়' সম্ভাবিত হয় ( অর্থাৎ ইহারা বিজ্ঞিপীবুর বিশক্ষত। আচরণ করিয়া সর্পের স্থার তাহার সর্বনাশ ঘটাইতে পারে )।

তদীর **আচার্ব্যের** মতে ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রির, বৈশ্য ও শ্রু—এই চতুর্বিধ জাতির সৈন্তমধ্যে, তেজের অর্থাৎ সদ্ভণের প্রাধান্তবশতং পূর্বে-পূর্বে সৈন্ত পর-পর্যটির অপেকার অধিকতর প্রেরহর।

কিছ, কৌটিল্য এই মত যুক্তিসকত মনে করেন না। কারণ, ( তাঁহার মতে ) শক্র প্রণিপাতদারা ব্রাহ্মণবদকে নিজ অধীন করিতে পারেন। পরন্ত, প্রহরণবিভায় স্থাশিক্ষিত ক্ষত্রিরবলই সর্ব্বোভ্যম, এবং বৈশ্ববল ও শ্দ্রবলও শ্রেরন্ধর হইতে পারে, যদি তমধ্যে অধিক সংখ্যায় সারবিশিষ্ট প্রবীরপুক্ষর থাকে।

অতএব, 'শক্ত এইপ্রকার বলবিশিষ্ট এবং ইছার প্রা**তিবল** বা বিরুদ্ধাচারী নিজবল এই প্রকার হইবে'— এইরূপ ভাবে (উক্ত সন্নাহগুণের বিচারসহকারে) বিজিপীর বলসমুখান বা বলসংগ্রহের বিধান করিবেন।

হস্তিবলের বিরুদ্ধে প্রতিবল তেমনই হইবে, বাহাতে হস্তী, বন্ধ, লকটগর্ভ (শকটমধ্য, বা লকটব্ছ-নামক বৃাহ অর্থাৎ বাহা স্কাকারাক্র ও পশ্চাৎপৃথুল বলিয়া মন্ত্রসংহিতার ২০৮৮ লোকের ব্যাখ্যার কুল, কভট্ট টীকা করিরাছেন ওদ্যুক্ত বল), কৃন্ধ, প্রাস, হাটক (বা ত্রিকন্টক ক্স্তুত্লাপ্রমাণ অন্তবিশেষ), বেণু ও শলা (লোইকণ্ড) থাকিবে।

রধবশের প্রতিবল ডেমনই হইবে, বাহাতে পূর্ব্বোক্ত হস্তিপ্রতিবল---পাবাণ, লগুড়, আবরণ (কবচ), অঙ্কুশ, ও কচগ্রহণী-নামক যন্ত্র সহিত বিষ্ণমান থাকে। অখবলের প্রতিবলও ( হস্তিবলের ) প্রতিবল-দমান রহিবে।

হন্তী, অখ, রথ ও পত্তি—এই চতুরদ্দেনার প্রতিবশ বধান্ধমে এইরূপ হইবে— বর্মযুক্ত হন্তিবল ( হন্তীর প্রতিবল ), বর্মযুক্ত অখবল ( অখের প্রতিবল), কবচমুক্ত রথবল ( রথের প্রতিবল ) এবং আবরণ বা কবচযুক্ত পদাতিবল ( পত্তি বা পদাতির প্রতিবল)।

এইভাবে ( সন্নাছপ্রতিবলকর্ম-প্রকারের জ্ঞানসংকারে ) বিজিপীর (মোলাদি)
নিজসৈভের বিভব বা শক্তি পর্যালোচনা করিয়া এবং হন্ত্যাদি সেনাকের
বাহল্যাদি বিচার করিয়া, শক্তসৈভের প্রতিবোধনে সমর্থ খবলসমুখান বা সংগ্রহ
করিবেন । ১ ॥

কোটিলীয় অর্থনাথ্রে অভিযাক্তংকর্ম-নামক নবম অধিকরণে বলোগাদানকাল, কুলাইঙ্কণ ও প্রতিবলকর্ম-নামক বিতীয় অধ্যার(আদি ইইতে ১২৩ অধ্যার) সমাধ্য :

## তৃতীয় অধ্যায়

### >৪০->৪১ প্রকরণ—পশ্চাৎকোপচিস্তা এবং বাহ্ ও অস্ত্যস্তর প্রকৃতির কোপপ্রতীকার নিরূপণ

(বিজ্ঞিনীর শব্দের বিক্লছে ধানপ্রান্ত হইলে, পার্ক্ষিগ্রাহ, আটবিক ও দৃষ্টাদিলার। তাঁহার বে দম্যন্ত অনর্থ উৎপাদিত হওরার দন্তাধনা —ইহার নামই 'পশ্চাৎকোপ'। পশ্চাৎকোপ অল্প হইলে, ইহা অগ্রসন্তাবা মহৎ লাভ উপেক্ষা করিয়া গণনীর হইবে, অথবা, অগ্রসন্তাবা লাভ বড় হইলে অল্প পশ্চাৎকোপ উপেক্ষণীয় হইবে — এইরূপ প্রশ্ন উবিত হইলে ইহাদের গুরুতর্ম্ব এইভাবে নির্ণীত হওরার বোগ্য। এই উভরের মধ্যে অল্প পশ্চাৎকোপ (অনর্পোৎপাদন-বিবরে) গুরুতর অধিক (অর্থাৎ প্রভূত অগ্রসন্তাব্য লাভ উপেক্ষা করিয়াও পশ্চাৎকোপের প্রতীকার করা আবশ্যক)। কারণ, বিজিপীর ঘানে প্রবন্ধ হইলে, দৃষ্য, অমিত্র ও আটবিক জনের। অল্প পশ্চাৎকোপের চতুর্দ্দিক হইতে বাড়াইয়া তোলে, অথবা অভ্যন্তার প্রকৃতিকালও (অর্থাৎ মন্ত্রিপ্রোহিতাদিশ্বার। উৎপাদিত কোপেও) পশ্চাৎকোপকে বাড়াইয়া তোলে।

পশ্চাৎকোপ উপেক্ষা করিয়া) ধানপ্রবন্ত হইরা বিজিপীর রাজা বে অগ্রসভাষা বিপূল লাভপ্রাপ্ত হইবেন, পশ্চাৎকোপ সংবর্জিত হইলে তাঁহার ভূত্য ও মিত্র পক্ষের কোপ প্রশমনার্থ বে ক্ষয় ও বায় হইবে ভাহাই সেই লাভকে প্রাস্ন করিবে। এই জ্বল্ল গণনা এইরূপ করিতে হইবে যে, ( ধানলন্ধ লাভের প্রায় সম্পূর্ণ গ্রাস হওয়ার সভাবনা থাকার) অগ্রসভাব্য লাভের মাত্রা সহজে একাংশক্ষণ সিদ্ধ, এবং ভঙ্গলনায় পশ্চাৎকোপজনিত অনর্থ শতে একাংশক্ষণ ( অর্থাৎ প্রভাৎলাভ পশ্চাৎকোপের অপেক্ষার দশগুণ অসার)—সতরাং ( পশ্চাৎকোপের আশস্থা বৃদ্ধি পাইলে বিজিপীর) বানে প্রবৃদ্ধ ইইবেন না। কারণ, লোকপ্রবাদও এইরূপ আছে যে, অনর্থসমূহ স্চীমুখের স্তায় স্বন্ধ হইয়া থাকে ( কিন্তু, পরে বিপূল রূপ ধারণ করে )।

শশ্চাংকোণের আশেল। থাকিলে, বিজিপীয় ( স্বরং যানে প্রর্থ না ছইরা ইহার প্রশাননার্থ) সাম, দান, ভেদ ও দশু-নামক উপার-চতুইরের প্ররোগ করিবেন। আর যদি অপ্রস্থাবা লাভের আশা থাকে, তাহা হইলে বানবিবরে সেনাপ্তি বা ধুবরাজকে দশু বা সেনানারক করিরা পাঠাইবেন। পর্যাও সেনাবলে বলীয়ান বিভিনীর রাজা পালাৎকোশের প্রতিবিধানে নিজকে সমর্থ বোব করিলে অঞ্জনভাব্য লাভ প্রাপ্তির জন্ত বান-প্রবৃত্ত হইতে গারেন। আবার, (মন্তিপুরোহিতাদি হইতে উৎপন্ন) অভ্যন্তর কোশের আলকা থাকিলে তিনি সেই সব আলকার হেতুভূত ব্যক্তিগণকে সজে লইয়া বানে-প্রবৃত্ত হইবেন।

অথবা, বাছকোপের ( অর্থাৎ রাইর্থ্য, অন্তপাল, আটবিক প্রস্কৃতির অন্ততম হইতে সমুৎপন্ন কোপের ) আশহা থাকিলে, বিজিপ্তীর, বাছকোপজনক ব্যক্তিদিগের পৃত্ত ও ভার্য্যাকে অভ্যন্তর প্রকৃতির অর্থাৎ অমাভ্যাদির অবীনে রাখিয়া মৌলভূতকাদি অনেক সেনাবর্গযুক্ত ও অনেক মুখ্য বা সেনানায়ক্ষ্যুক্ত শুক্তাপাল ( মুদ্ধবানপ্রের্থ বিজিপ্তীর্শ্ভ বাজধানীতে নিযুক্ত পালক ) ছাপিত করিয়া বানপ্রবৃত্ত হইতে পারেন। অথবা ( অভ্যন্তর কোপের প্রতিবিধানে অসমর্থ হইলে ) তিনি বানপ্রায়ুভ হইবেন না। পূর্কেই বলা হইগ্নাছে বে, বাছকোপের অপেকায় অভ্যন্তর কোপ অধিকতর হানিকর।

মন্ত্রী, পুরোহিত, সেনাপতি ও যুবরাজ—এই চারিজনের অন্ততম ধারা উৎপাদিত কোপ বা উপদ্রবকে অভ্যন্তর কোপ বলা হয়। রাজার নিজের দোবে এই কোপ উৎপন্ন হইলে, তিনি নিজের দোব পরিত্যাগ করিরা, অথবা মিন্নিপুরোহিতাদি ) অল্পের দোবে এই কোপ উৎপন্ন হইলে তাঁহাদের শক্তি ও অপরাধান্ত্রসারে (বধবন্ধনাদি ) দণ্ডের বিধান করিরা সেই কোপের প্রতিবিধান করিবেন।

পুরোছিত বদি ( অভ্যন্তরকোপজনক বলিয়া ) মহান্ অপরাধীও হরেন, তথাপি তাঁহার দণ্ড হইবে বন্ধন বা দেশ হইতে নিন্ধানন ( অর্থাৎ বধ নহে )। মুবরাজ সেইরূপ অপরাধী হইলে তাঁহার প্রতি বন্ধন বা নিগ্রহের (বধদণ্ডের ) ব্যবদ্ধা হইতে পারে;—কিন্তু, তাহাও ইইবে, বদি রাজার অন্ত গুণবান্কোন পুরে জীবিত থাকেন। পুরোহিত ও মুবরাজের সমান দণ্ডবার। ( অথবা বন্ধন ও নিগ্রহ্বার), মহী ও সেনাপ্তির এই প্রকার অপরাধে দণ্ডবিধাত্য হইবে।

( অক্তর্রাকার অভ্যন্তরকোপও হইডে পারে, তাহার প্রতিবিধান বল। ছইডেছে।) রাজার নিজ পুত্র বা আতা বা নিজ কুলের অন্ত কেই বলি রাজ্য পাইজে ইজা করেন, তাহা হইলে ( রাজা ) তাঁহাকে (সৈনাগভালি বোর্যাগদে তাহাকে নিবৃক্ত করিয়া ) প্রোধবাহিত করিয়া আধ্বন্য আনিবেন। প্রাইশ্রকার ভাবে উৎসাহকাদান সম্ভবপর না হইলে, পাছে বা এই ব্যক্তি রাজার নিজ্ঞাজ্যর সহিত মিলিত হর, এই জয়ে, পূর্বপরিগৃহীত সম্পত্তিপ্রভৃতির ভোগের অহ্বর্ত্তন ও তাঁহার সহিত সন্ধিকার্য্য-ছাপনঘারা তিনি তাঁহাকে স্বরণে রাখিবেন ; ইহাদের মত অহাম্ব কুলীন ব্যক্তিদিগকে ভূমিদানপূর্বক রাজা নিজের প্রতি তাঁহাদের বিশাস উৎপাদন করিবেন ; অথবা, স্বয়ংগ্রাহ সৈন্তকে (অর্থাৎ বে সৈত্তকে শক্রর দেশে নিজের পর ক্রবাদি নিজের অধিকারভৃক্ত করিবার অহ্মতিপ্রাপ্ত হইয়া মৃদ্ধ করে সেই সৈন্তকে ) তাঁহাদের অধিনারকত্বে মৃক্ত করিয়া (কোনও গুলাদিতে) প্রেরিত করিবেন ; অথবা, তাঁহাদের অধিনারকত্বে মৃক্ত করিয়া সামন্ত বা আটবিকগণকে (অন্তত্ত্ব মুলাদিতে) প্রেরিত করিবেন এবং সেই সমগ্রাহ দণ্ড, সামন্ত ও আটবিকগণের সহিত তাঁহাদিগকে বিরোধিত করিয়া বন্ধনমৃক্ত করিবেন । তৎপর তাঁহাদিগের হন্তে অবক্রন্ধ সেই সক্লীনদিগকে তিনি নিজে গ্রহণ বা গ্রেপ্তার করিবেন । অথবা, ডিনি ( তুর্গলজোপার-নামক অধিকরণে উক্ত ) পারগ্রামিক-নামক বোগের অহ্র্যান করিবেন ( অর্থাৎ ভল্মারা ভাঁহাদিগকে সহন্তে আনিবেন )।

এতদারা মন্ত্রী ও সেনাপতির কোপপ্রতীকারও বাাধ্যাত হইল। মন্ত্রাদির কর্মণি মন্ত্রী, পুরোহিত, সেনাপতি ও ধ্বরাজ—এই চারি প্রকারের ) অভিরিক্ত (দৌবারিক-প্রভৃতি) অভাভ অমাতাবর্গের অভতমঘারা উৎপাদিত কোপকে অক্তরমাত্যকোপ বলা হয়। সেইরূপ কোপ উৎপার হইলে, তিনি তৎপ্রশমনার্থ বথাঘোগ্য উপারসমূহের প্রয়োগ করিবেন। (অভ্যন্তর্কোপ এই পর্যন্ত নির্মাণত হইল।)

সেন্দ্রতি বাছকোপ ও তৎপ্রশামনের উপার নির্মাণিত হইবে।) রাউ্রম্থ্য (অর্থাৎ রাউর প্রবান ব্যক্তি), অন্তপাল (সীমাধিকারী প্রধানপূক্ষধ), আটবিক (অট্রীপতি), ও দণ্ডোপনত (রাজার সেনাশন্তির প্রভাবে বশংগত ব্যক্তি)
—এই চারিপ্রকার ব্যক্তিদিগের অন্ততম হইতে উৎপন্ন কোপ বা উপদ্রধ্যক
বাছকোপ বলা হয়। (বাছকোপ উপন্থিত হইলে রাজা) ইহা উপত্রবকারীদিগের প্রশ্বের স্হার্ডার প্রশ্মিত করিবেন।

অথবা, তাহাদের কেই বদি প্রবল চুর্গাদিবারা যুক্ত হর, তাহা ইইলে জিনি তাহাকে সামস্ত বা আটবিক, বা তাহাদের অকুলীন কেই তাহাদিগের বারণ অবক্সম শ্রইরা থাকিলে তত্ত্বারা (অর্থাৎ ইহাদের অক্সজনবারা) আবদ্ধ করিবেন। অথবা তিনি অনিজ্ঞারা তাহাকে স্থাজননপূর্কক সক্ষতি করিবেন ( অর্থাৎ সমিত্রের সহিত তাহাকে মিত্রতাপাশে বন্ধ করিরা বশে আনিবেন)

—বেন সে ( বিজিনীযুর ) নিজ অমিত্র বা শক্তর সহিত মিলিত না হয়।

**সজি-নামক গৃচপুরুষ ভাহাকে ( অর্থাৎ রাষ্ট্রমুখ্যাদির অঞ্ভতম বাছকে** ) व्यमित रा भक्त रख रहेएड एडम्यूक कतिया दाधितन । विक्रितेतूद भक्त দহিত বাহাতে এই বাহুপুরুষ মিলিত না হইতে পারে দেই উন্দেশ্যে, এই সঞ্জী-পুঞ্চব নিম্নলিখিডভাবে ভাষাকে উপদেশ দিয়া ভেদসাধন করিবে, যথা, "ভূমি ষাহার সহিত মিলিত হইতে চাও, দেই রাজা তোমাকে গুপ্তচর মনে করিয়। ভোমার প্রভুর উপরই ভোমাকে বিক্রমগ্রদর্শনে নিয়েকিত করিবেন। অংবা, নিজ প্রয়োজন সিদ্ধ হইল দেখিয়া, তিনি তোমাকে নিজের সেনানায়ক নিযুক্ত क्षित्रा निरम्बद गब्दद रा आउँविक्रिशाद छेलद व्याक्रमशाद क्रम्र व्यानक मृद्रवसी দেশে কষ্টকর প্রবাদে নিযুক্ত রাখিবেন। অথবা, ভোষাকে ভোষার স্ত্রী-পুত্র হইতে বিযুক্ত করিয়া বিষয়াস্তে (দেশের প্রান্তভাগে) বাস করাইবেন। তোমাকে নিজ্ঞাত্তর বিক্লকে চালিত বিশুনে প্রতিঘাত প্রাপ্ত হইতে দেখিয়া, তিনি তোমাকে (ধনাদির মূল্য লইয়া) ভোমার প্রভুর নিকট পণাস্বরূপ বিক্রয় করিবেন। অখবা, তিনি ভোমাকে তোমার প্রভুৱ হস্তে দিয়া তাঁহার সহিত সন্ধিবিধানপূর্বাক ভাঁহাকেই প্রামন্ন করিবেন (তোমাকে নহে)। অথবা, এই রাজা (অর্থাৎ ডুমি বাঁছার সহিত মিশিত হইতে চাছ) তোমার প্রভুর (বিজ্ঞিনীবুর) কোন মিত্রের সহিত তোমাকে প্রণন করিয়া মিলিত হইবেন।"

বদি এই বাছপুক্ষৰ এই ভেদোপদেশ স্থীকার করিয়া শহেন, তাহা হইপে (সেই সত্ত্রীপুক্ষৰ) তাঁহাকে অভিপ্রেড বস্তব্যার) সংক্রড করিবেন। যদি এই ভেদোপদেশ তিনি স্থীকার না করেন, তাহা হইলে সেই সত্ত্রীপুক্ষ তাঁহার সংশ্রের (অর্থাৎ সংশ্রেরদাতার) তেদ উৎপাদন করিবেন এবং তদর্থে এই বলিবেন—"যে ব্যক্তি আপনার সংশ্রের প্রার্থনা করেন, তিনি অন্ত রাজার প্রেরিড গুণুচর (অ্বত্রব সাব্ধান থাকুন)।"

আবার স্ত্রী (গৃতপুদ্ধন), বরণওে দণ্ডিত (অভিত্যক্ত) পুদ্ধের হক্ষে প্রেরিত গৃত্ধেরবার। বিভিনীরুর অমিত্রকে বধ করার অভিপ্রারে বাহের নিথিত পত্রবার। ) শক্তর মনে সন্দেহ উৎপাদন করিয়া, তদ্বারাই সেই (রাই্রম্থ্যাদি) বাহকে বধ করাইবেন, অথবা অন্ত গৃতপুদ্ধন প্রয়োগ করিয়া তাঁছার বাহেরে ) বধসাধন করিবেন। তিনি বাহু অন্তপালাদির সঙ্গে (বিভিনীরুর শক্তর নিকট আপ্রায় লইবার অভিশ্বারে) সহপ্রস্থানকারী প্রবীরপুক্ষদিগকে ভাছাদের

অভিপ্রায় অক্সারে (ইটার্থ প্রদানাদিখারা) কার্য্য করিয়া স্বপক্ষে আনিবেন। (সেই প্রবীরপুরুবেরা বিজিপীরুর পক্ষ অবশব্দন না করিতে চাইলে ) ভাহারা বে বিজিপীরুধারা গুণ্ডভাবে তাহাকে বধ করার জন্ত প্রাণিহিত হইরাছে সে কথা সত্তী অমিত্রকে জানাইরা। দিবেন। এই ভাবেই বাহুকোপের প্রতীকার দিদ্ধ হয়। বিজিপীরু চেষ্টা করিবেন বাহাতে শক্রর অভ্যন্তর ও বাহুকোপ সমুৎপন্ন হয়। এবং তিনি আরও লক্ষ্য রাধিবেন বাহাতে (শক্রকৃত) নিজের অভ্যন্তর ও বাহুকোপের উপশ্য খটে।

যে ব্যক্তি কোপ বা উপদ্রব উৎপাদনে সমর্থ ও (উৎপদ্ধ কোপের ) প্রশমনেও সমর্থ, তাহার প্রতি উপজ্ঞাপ (অস্তের সঙ্গে ভেদোৎপাদন) করণীর। স্তাসজ্ঞ (বিশাসের পাত্র) যে ব্যক্তি কার্য। সম্পাদনে ও ক্রিয়ার ফলপ্রান্তিবিহয়ে (প্রতিজ্ঞাপকারীর) উপকার করিতে ও তাঁহার বিপন্তিতে তাঁহাকে রক্ষা করিতে সমর্থ, তাহার প্রতি প্রতিজ্ঞাপ করণীয় (অর্থাৎ অস্তের উপজ্ঞাপের বিক্লজে প্রতীকার বিধেয়)। কিন্তু, ইহা বিচার্যা বিষয় যে, সেই ব্যক্তি সদ্বৃত্তিম্ক অথবা প্রপ্রকৃতিক।

শঠবৃদ্ধি বাহ্য (উপজাপকারী), অভ্যন্তর (মন্ত্র্যাদির) সহক্ষে এইভাবে উপজাপ করিবেন—"আমার দ্বারা উপজাপিত অভ্যন্তর মন্ত্র্যাদি যদি গুর্ত্তাকে বব করিয়া আমাকে তৎছানে নিবেশিত করেন, তাহা ছইলে আমার শব্দ্র নাশ ও ভূমিলাভ—এই গুইপ্রকার লাভ হইবে। অথবা শব্দ্র যদি অভ্যন্তর মন্ত্র্যাদিকে বব করে, তাহা ছইলে ছতমন্ত্রীর বন্ধুবর্গ মন্ত্রীর তুলা-দোবে দোবী বলিয়া দণ্ডের ভয়ে উদ্বিগ্ন ছইরা আমার অভ্যন্ত কত্তাপক্ষভুক্ত হইরা দাঁড়াইবে, অর্থাৎ মারিত মন্ত্রীর বন্ধুবর্গ অভ্যন্ত সর্বভালে আমার বলে আসিবে। অথবা, বিশিক্ষীর অন্তান্ত এবংবিদ্ব অভ্যন্তর কর্মচারীদিগের প্রতি (বিশ্বাসপ্ত ছইরা) শব্দিত ছইবেন। এইভাবে বিজিন্ধীরর অন্তান্ত অভ্যন্তরদিগকে অভিভাক্ত জনদিগের হন্তে প্রেরিভ কূটলেথ বা শাসনদ্বারা (তাঁহার সহিত বিরোধ উৎপাদন ক্যাইরা) নই করাইব।" (এই পর্যন্ত শঠপ্রকৃতিক বাছের অভ্যন্তবের প্রতি উপজাপের প্রকার নির্মণিত করা ছইল।)

আবার শঠবৃদ্ধি অভ্যন্তর, বাছের প্রতি এইভাবে উপলাপ চালাইবে— "এই বাছের কোশ অপহরণ করিব। অথবা, ইহার দোনার বধনাধন করিব। অথবা, আমাগ্ন গ্রন্থ প্রভুকে ইহার দার। রং করাইব। ইহা করিতে বীকার করিলে এই বাছকে অমিত্র ও আটবিকদিগের সক্ষে বুদ্ধবিক্ষম দেখাইতে প্রোৎসাহিত করিব। তৎপর ইছার সেনাচক্র এই কার্ব্যে লিও ছইলে এবং (অমিজ্রাদির সহিত) ইছার বৈর প্রকৃতিভাবে বর্দিত ছইলে—এই বাহু আমার বর্শংগত থাকিবে। তৎপর আমার প্রভুকে এইরূপ কার্যাদারা আমি প্রসন্ন করিতে পারিব। অথবা, আমি স্বরং (বাছের) রাজ্য করার্থ্য করিব; অথবা, বাছেকে বাধিরা। লইরা তাঁহার ভূমি ও তাঁহার আপন প্রভূত্য ভূমি—এই উত্য সম্পত্তি প্রাপ্ত হইব; অথবা, বাছের বিরোধী কোনও ব্যক্তিকে স্ববলে আনিরা, তৃদ্ধারা বিশাসভাজন বাহুকে বধ করাইব; অথবা, বাছের আশামিক বা শৃভূ মূল্যান হরণ করিয়া লইব।" (এই পর্যান্ত বাছের প্রতি শঠ-প্রকৃতিক অভ্যন্তরের উপজাপের প্রকার নির্মাণত ছইল।)

কিন্তু, কল্যাণবৃদ্ধি সংশ্লিষ্ট হইয়া কাথ্য করার জন্তই হিতসথন্ধে উপজাপ করিয়া বাকে ( অধবা, উপজাপ্যের সহিত নিজের জীবনবৃত্তি বৃদ্ধিয়াই কল্যাণবৃদ্ধি উপজাপিতা, উপজাপের প্রয়োগ করেন)। কল্যাণবৃদ্ধির সহিত অবশ্লই সদ্ধি করা উচিত। আর শঠকে 'তৃমি যেমন চাও, তেমনই করিব' এই বলিয়া ভাঁছাকে বঞ্চিত করা উচিত।

এইরূপে (শঠম ও কল্যাণবৃদ্ধিমের) নিশ্চর করিরা কার্যাভত্তবিৎ বিজিগীর পরের (শঠমাদি) জানিরাও অন্তপ্রের নিকট তাহা প্রকাশ করিবেন না, এবং তাঁহার অন্তনকও অন্তনের নিকট হইতে (এই বিষয়ে) রক্ষা করিবেন অর্থাৎ অন্তনের বিষয়টি অপ্রকাশিত রাধিবেন, এবং পরের নিকট হইতেও অন্তনকে এবং অন্তনের নিকট হইতে পরকে তেমনভাবেই রক্ষা করিবেন; এবং নিভাই অন্তন্ন ও পরের নিকট হইতে নিজকে রক্ষা করিবেন (অর্থাৎ ভাহাদের সম্বন্ধে নিকের অস্তক্ষ বা প্রতিকৃশ অভিপ্রারের কথা অপ্রকাশিত রাধিবেন) । ১ ।

কোটিলীর অর্থশান্তে অভিযাক্তংকর্ম-নামক নবম অধিকরণে পশ্চাৎকোশচিস্তঃ
এবং বাহু ও অভ্যস্তর কোশের প্রতীকার-নামক তৃতীর অধ্যার
( আদি হইতে ১২৪ অধ্যার ) সমাপ্ত।

## চতুৰ্য অধ্যায়

#### ১৪২ প্রকরণ—ক্ষয়, ব্যয় ও লাভের বিচার

বৃগ্য (হন্ত্যাদি বাহন) ও কর্মকর পুরুবদিগের অপচরকে ক্ষন্ত বলা হয়। বিরণা (নগদ টাকাপয়সারূপ ধন) ও ধান্তের অপচরকে ব্যার বলা হয়। এই ক্ষর ও বারের অপেকার বহুগুণবিশিষ্ট (আদেরছাদি গুণবৃক্ত) লাভের সন্তাবনা ইইলে বিজিপীর বানে প্রবৃত্ত হুইবেন।

আদের, প্রত্যাদের, প্রসাদক, প্রকোশক, ব্রস্কাল, তল্লকর, অল্পরার, মহান্, রন্ধ্যান্য, কল্য, ধর্ম্মা ও পুরোগ—এই বাদশটি লাভের সম্পথ বা ওপ বলিয়া নিগীত হয়।

( এই দ্বাদশপ্রকার লাভের সরাণ নির্মাণিত হইতেছে।)

বে লাভ বা লক্ষরত (ভূমানি) লহজে প্রাপ্ত হওয়া বায় ও প্রাপ্ত হইলে
সহজে রক্ষিত হয় এবং বায়া শক্র কাড়িয়া নিতে পারে না—তাহার নাম আদের
লাভ। ইছার বিপর্যায় হইলে (অর্থাৎ বায়া পাইতে ও রক্ষা করিতে কই
পাইতে হয় এবং বায়া শক্রর হন্তগতও হইতে পারে ) তাহাকে প্রতাদের লাভ
বলা হয়। বিজিলীর এইরূপ প্রত্যাদেয় লাভ পাইয়া, অথবা, এইপ্রকার লাভের
উপর জীবননির্বাহ করিয়া নাশগ্রাপ্ত হয়েন।

কিন্তু, বদি তিনি ভাবেন যে, প্রত্যাদের লাভঞ্জাপ্ত হইলে, তিনি ভাহা লইরা (শক্রর) কোল, দগু বা দেনা, (ভাগুদির) সক্ষর, ও (ছর্গাদির) রক্ষাবিধান হীন করিরা তুলিতে পারিবেন; অথবা, (শক্রর) খনি, দ্রবাবন, হছিবন, সেতৃবদ্ধ, বণিকৃপথসমূহের সার নই করিরা দিতে সমর্থ হইবেন; অথবা, ভাছার প্রকৃতিবর্গকে (অমাত্যাদিকে ভদ্ধারা) কল করিতে পারিবেন; অথবা, লেন্ধ ভূমিপ্রভৃতিতে / শক্রর প্রকৃতিবর্গকে (তৎকলভোগার্থ) আনিরা বসাইবেন, অথবা, ভাছাদিগকে সেখানে বসাইরা ভাছাদের সর্বপ্রকার ভোগের খীকার করিরা ভাছাদিগকে প্রীণিত বা সম্বন্ধ রাখিবেন; অথবা, শক্র মেই প্রকৃতিবর্গের (প্রজ্ঞান্তনের) উপর (ভাছার অপেক্ষার) বিশরীত আচরণ করিরা ভাছাদিগকে বিশ্বতি করিবেন; অথবা, শক্রর প্রতিপক্ষের নিক্ট সেই লাভ বা লব্ধ ভূম্যাদি বিক্রীত করিবেন; অথবা, শক্রর প্রতিপক্ষের নিক্ট সেই লাভ বা লব্ধ ভূম্যাদি বিক্রীত করিবেন; অথবা, শক্রর অভিসক্ষের বা ভাছার অবক্রম

তিনি স্থাতের বা নিজের দেশে ওয়র বা অন্ত শক্রদের হগুজাত পীড়ার প্রতীকার করিবেন; অথবা, ওাঁহার মিজ্র বা আশ্রয়ভূত মধ্যম রাজার মন ওাঁহার প্রতি প্রতিকৃপ করিয়া উঠাইবেন; অথবা, শক্রর দেই অমিত্র, শক্রর কোন বিরাগভাজন স্বকৃপীনকে তাহার রাজ্যে বসাইবেন; অথবা, তিনি (বিজিপীয়ু) দেই প্রজুমি সংকারপূর্বক শক্রকেই প্রদান করিবেন এবং তাহা হইলে শক্র ওাঁহার সহিত সন্ধিতে আবদ্ধ হইয়া চিরকালের জন্ত তাহার মিত্র হইয়া গাঁড়াইবেন;—
(উক্তরূপ অবস্থাভেদে) তিনি প্রত্যাদের পাভও প্রহণ করিতে পারেন। এইপ্রকারে আদেয় ও প্রত্যাদেয় লাভ ব্যাখ্যাত হইল।

বে লাভ অধ্যত্মিক রাজার নিকট হইতে কোন ধার্মিক রাজা প্রাপ্ত হয়েন; এবং বাহান্বারা নিজের ও পরের প্রীতি উৎপাদিত হইতে পারে, তাহার নাম প্রসাদক লাভ। ইহার বিপরীত প্রকারের লাভের নাম প্রকোপক (অর্থাৎ বে লাভ ধার্মিক রাজার নিকট হইতে অধ্যত্মিক রাজা গ্রহণ করেন এবং ঘাহাত্ম ও পরকে প্রকোপিত করে)। মন্ত্রিগণের উপদেশে, বত্ম করিপেও বে লাভ লব্ম হা, তাহাও কোপ উৎপাদন করিয়া থাকে, কারণ, মন্ত্রীরাও আশন্ধিত হইবেন যে, তাঁহারা রুধাই রাজাকে ক্ষর ও ব্যর করাইয়াছেন। আবার, দৃষ্ট মন্ত্রীদিগের প্রতি অনাদর দেখাইয়া লব্ম লাভও কোপের কারণ হয়—কারণ, মন্ত্রীরা মনে করিবেন যে, রাজা লিক্মনোরথ হইলে তাঁহাদিগকে বিনই করিবেন। ইহার বিপরীত লাভ প্রসাদক্ষনক হয়। এই পর্যান্ত প্রসাদক ও কোপক লাভ নির্মণিত হইল।

বে লাভ গমন্যাত্র অর্থাৎ শ্বরপরিপ্রমে অরকালমধ্যেই লক্ষ হয় — তাহার নাম ছম্মকাল লাভ। যে লাভ কেবল (উপজাপাদি) মরসায়া ( অর্থাৎ বাহাতে কেই কারণে মুগা ও পুরুষের ক্ষয় অর হয়)—তাহার নাম ভত্তকর লাভ। যে লাভ । হিরণ্যাধিদানের পরিবর্ত্তে) কেবল মাত্র জ্বাদি (ভোজনাদি) দানরূপ জ্বরায়েই লক্ষ হয় — তাহাকে অর্ব্যয় লাভ বলা হয়।

বে লাভ ক<u>্রালেন্ট্রেন্টে ( অর্থাৎ তথনই ) বিপুল লাভ</u>—ভাছাকে মহান্ লাভ বলা হয়।

বে পাশু ( উত্তরকালেও ) কর্মপ্রাপ্তির অস্তবন্ধ বা সাত্তা ক্রয়ায়,—ভাহাকে ক্রুদের লাশু বলা হয়।

বে লাভ ( তনিক্তে ) কোনও প্রকার উপত্রবযুক্ত হইবে না,—ভাছাকে কল্য লাভ বলা ছয়। বে লাভ প্রশন্ত (প্রকাশব্তাদিরপ) কারণ ছইতে উৎপন্ন হয় – তাছাকে ধর্মা লাভ বলা হয়।

বে লাভ সামবারিক, বা একত্রিত হইয়া যানে প্রবৃত্ত রাজগণের মধ্যে।
(ভাগের ) অনির্মে বা অসর্ত্তে আগত,—সেই লাভকে পুরোগ লাভ বলা হয়।

রুইটি লাভের সমতা পরিদৃষ্ট ছইলে, তন্মধ্যে যে লাভটি বহুগুণযুক্ত বলিয়া বিবেচিত হইবে, রাজা সেই লাভটি গ্রহণ করিবেন ; কিন্তু, এই বিষয়ে বিচার করিতে হইবে দেশ ও কালের, ( অর্থাৎ কোন্ লাভটিকে দেশ ও কাল অধিকতর গুণযুক্ত করিবে ), ( মন্ত্রাদি ) শক্তিত্রয় ও ( সামাদি ) উপারচত্টুরের, ( অর্থাৎ, মন্ত্র, প্রভাব ও উৎসাহ - এই শক্তি তিনটির মধ্যে উত্তরোভর শক্তির অশেক্ষার পূর্ব্ব-পূর্ব্ব শক্তির বাবহারে প্রাপ্ত লাভ অধিকতর গুণযুক্ত এবং সাম, দান, ভেদ ও দণ্ড—এই চারি প্রকার উপায়ের উত্তরোভর উপায়ের অপেক্ষার পূর্ব্ব-পূর্ব্ব উপায়ের প্রয়োগে প্রাপ্ত লাভ অধিকতর গুণযুক্ত ), ( হিরণাদিলাভের ) প্রিরতা ও ( কল্কদ্রব্যের ) অপ্রিরতার, ( লাভের ) শীঅপ্রাপ্তবাতা ও বিলম্বে লগুতার, ( লাভের ) সামীপ্য বা দূরভার, ( লাভের ) ভাৎকালিকতা ও উত্তরকালপর্যাক্ত হারিছের, লাভের সারতা ও সার্ব্বকালিকতার, ও ( লাভের সংখ্যা ও পরিমাণ-বিষয়ে ) বহুত্ব ও ( ইহার সংখ্যা ও পরিমাণের অল্পন্তে ) বহুত্বণযোগের। ( তাৎপর্যা এই যে, লাভের গুণযোগের বিচারে, দেশকালাদি কারণের পর্য্যলোচনা করিয়া যে পাভ অধিকতর গুণযুক্ত বলিয়া প্রতীরমান হুইবে, তাহাই গ্রহণীয়।)

নিম্নলিখিত দোবসমূহ লাভের বিঘ উৎপাদন করিয়৷ থাকে, যথা—কাম (বা দ্বীপ্রাক্ত্য), কোপ, সাধ্যম (ত্রন্ততা বা মোহাচ্ছরতা), করুণা, লক্ষ্যা, (ক্র্যুড়ার), অনার্য্যভাব, মান (অহকার), সাহক্ষোলতা (ভৃতিবিধানার্থ মুছভাব), পরলোকের অপেকা (অর্থাৎ পরলোকনাশক পাপের আলক্ষা), দাভিকতা, অত্যালিছ (অন্তারপূর্বক অত্যাধিক লাভভক্ষণ), দীনভাব, অস্তরা (গুণমভাবে দোবারোপ), হন্তগতবন্ধর অবজ্ঞা, হুরাআতা (অর্থাৎ শীড়াদারিছ), (বিশ্বভ্রন্থনেরপ্রতি) বিশ্বাসাভাব, (পরাক্ষাদির) তর, শক্রুর অতিরম্ভার, শীড়াক ও বর্ষার অসহনশীলভা, (কার্যারছে) শুভতিবি ও শুভনক্ষত্রের বিচারাপেকা।

নক্ষাস্থাত্তে ( ক্ষ্মাং ক্ষ্মিয়ার্ডে নক্ষ্যাের ওভাগুড়ভাস্থাত্ত ) ক্ষাড়িয়ার ক্ষাত্তাস্থাত্ত ক্ষাত্তির ক্ষাত্তাস্থাত্ত ক্ষাত্তির ক্ষাত্তাস্থাত্ত ক্ষাত্ত ক্ষাত্ত ক্ষাত্তাস্থাত্ত ক্ষাত্ত ক্

জ্ঞতীষ্টপাভ ঘটিয়া উঠে না। কাবণ, কার্যাসিন্ধির বিবরে জ্বর্ণই (ধনাদিরপ্ উপার, অথবা প্রয়োজনই) নক্ষত্র বশিরা বিবেচিত হওরা উচিত ( জ্বর্ধাৎ ইহাই সিন্ধির উপকরণ); ভারকাসমূহ এই বিষয়ে কি করিতে পারে ? । ১ ।

ধনরূপ সাধনরহিত লোকের। শত শত প্রকারের যত্ত্বারাও অভীষ্টলাভ করিতে পারে না। (সাধনভূত) প্রতিগক্ত্বারা বেমন অন্ত গলকে আবন্ধ কর। বায়, সেইক্লণ ধনবারাই অন্তান্ত অভীষ্টবিবয় আবন্ধ হইতে পারে । ২।

কোটিলীয় অর্থশান্তে অভিযাত্তৎকর্ম-নামক নবম অধিকরণে ক্ষয়,
বায় ও লাভের বিচার-নামক চতুর্থ অধ্যায়
( আদি হইতে ১২৫ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

#### পঞ্চম অধ্যায়

১৪৩ প্রকরণ—বাহ্য ও অভ্যস্তর আগদের নিরূপণ

সন্ধি-প্রস্কৃতি ( চর গুণের ) নিজ নিজ বিবরের অতিক্রমপূর্বক আর্থাৎ, অংগতিত স্থানে প্ররোগ করার নাম অপনর ( নর হইতে বংশ ) বলা হর।
অপনর হইতেই সর্বপ্রকার আপদ সম্ভবপর হয়।

( উপজ্ঞিত ও প্রতিজ্ঞপিতার ভেদাশ্রসারে আপদ চারিপ্রকারের ছইতে পারে।) (১) রোট্রম্থ্যাদি) বাজ্গণ উপজাপক হইয়া, ( ময়্র্যাদি ) অভ্যন্তরগণকে প্রতিজ্ঞাপক করিয়া যে বিপদের উত্থাপন করেন—ইহাই প্রথম প্রাকারের বিপদ। (২) অভ্যন্তরগণ উপজাপক হইয়া বাজ্গণকে প্রতিজ্ঞাপক করিয়া যে বিপদের উত্থাপন করেন—ইহাই দ্বিতীর প্রকারের বিপদ। (৩) বাজ্গণ উপজাপক হইয়া বাজ্গণকে প্রতিজ্ঞাপক করিয়া যে বিপদের উত্থাপন করেন—ইহাই দ্বিতীর প্রকারের বিপদ। (৪) এবং অভ্যন্তরগণ উপজাপক হইয়া, অভ্যন্তরগণকে প্রতিজ্ঞাপক করিয়া যে বিপদের উত্থাপন করেন—ইহাই চতুর্ব প্রকারের বিপদ। (৪) এবং অভ্যন্তরগণ উপজাপক করিয়া যে বিপদের উত্থাপন করেন—ইহাই চতুর্ব প্রকারের বিপদ। (লক্ষা রাধিতে হইবে যে, এই চারিপ্রকার বিপদের মধ্যে, প্রথম ও দ্বিতীর্ক্রটিত উপজ্ঞাপিতা ও প্রতিজ্ঞাপিতা পরন্দর বিজ্ঞাতীর এবং ভূতীয় ও চতুর্বন্তিতে জাহায়া সমানজ্ঞানীর বিপার গৃহীত।)

বে বিপলে ( অর্থাৎ প্রবন ও বিজীয়টিতে ) বাষ্ঠাণ অভ্যন্তর্গন্তর উপর উপলাপ পরিচালন করেন, অর্থা অভ্যন্তর্গণ বাষ্ঠাণের উপর উপলাপ পরিচালন করেন—শেই ভিরজাতীর উত্তরের যোগবশতঃ উৎপন্ন উপজালের প্রতীকারবিষ্টের নিজিলাভ করিতে হইলে, প্রতিজ্ঞণিতারই (সামদানাদিখারা) সমাধান বিশেবভাবে প্রেরন্তর । কারণ, প্রতিজ্ঞণিতার) সহত্তে (অর্থাদিদানছারা) বশে আনীত হইতে পারে—কিন্ত, উপজ্ঞণিতারা তেমনভাবে বশে আনে না। প্রতিজ্ঞপিতারা (একবার) প্রশমিত হইলে, উপজ্ঞণিতারা (উপজাণের উত্তেদ হইবে আশহা করিয়া) অস্তান্ত ব্যক্তির প্রতি উপজাণ চালাইতে পারিবে না। বাজ্গণের পক্ষে অভ্যন্তরগণের প্রতি উপজাপ চালনা বড়ই হছর ক্রিয়া, এবং অভ্যন্তরগণের পক্ষেও বাজ্গণের প্রতি উপজাপ চালনা তেমনই হকর ক্রিয়া। (উপজ্ঞ্ঞপিতার উপজাপ হলি প্রতিজ্ঞ্ঞপিতা শীকার করিতে না চাহেন, ভাহা হইলে) উপজ্ঞ্মপিতার (উপজ্ঞাপবিষয়ক) মহান্ যক্ষের্থন নাল বা নিক্ষলতা অবশ্বস্তরাবী, এবং (ভাহা হইলে) উপজ্ঞাণাগণের (শ্বামি-প্রমাদে) অভীইনিদ্ধি ও (উপজ্ঞ্পিতার) নিজের অনুর্থাগ্য ঘটিতে পারে।

- (২) অভ্যন্তরগণ যদি প্রতিজ্ঞপিতা হইয়া দৃঁড়োন (বাছের উপজ্ঞপিত্ছে), তাছা হইলে রাজা (তাঁছাদের প্রশমনজন্ম) সাম ও দানের প্রয়োগ করিবেন। এই সাম বা সাস্থাক্ষারা স্থানকর্ম ও মানকর্ম বৃক্তিতে হইবে, অর্থাৎ রাজা কোন বিশিষ্ট অধিকারে তাঁছাদিগকে নিযুক্ত করিবেন, অথবা ছত্রচামরাদির দানঘার। তাঁছাদিগকে সন্তুট রাধিবেন। আর দানশন্দ্যারা অন্থপ্রহ (ধনাদিদান), পরিছার (আদেয় ধনাদির অগ্রহণ বা করমুক্তি ), অথবা বিশিষ্ট বিশিষ্ট কর্মে সমগ্রক্ষপ্রযাগ বৃধিতে হইবে, অর্থাৎ রাজা তাঁছাদিগকে ধনাদিদান করিবেন, অথবা করমুক্তির ব্যবস্থা করিবেন, অথবা বড় বড় কার্ষ্যের কল নিজে না গ্রহণ করিয়া তাঁছাদিগকে সমগ্রভাবে তৎকলভোগ করিতে অন্থ্যতি দিবেন।
- (২) বাহ্যগণ যদি প্রতিজ্ঞপিত। হইয়া দাঁড়ান ( অভ্যন্তরের উপলপিত্তে ), তাহা হইলে, রাজা ( তাঁহাদের প্রশামনজন্ত ) ভেদ ও দণ্ডের প্রয়োগ করিবেন। (ভেদপ্রয়োগ বলা হইতেছে।) এই বাহুগণের সহিত মিত্রভার ভাগ অভিনর-পূর্বক সন্তি-নামক গৃচপুরুবেরা তাঁহাদের নিকট রাজার চার বা কণটপ্ররোগের কথা এইরাপ বলিবে, যথা "তোমাদের এই রাজা দ্যুরূপধারী ( মন্ত্রাদির উপভিপিত্তে ) ভোমাদিগকে বঞ্চিত করিতে অভিলাবী হইরাহেন, ইয়া বুধিয়া কার্য করিও, অর্থাৎ, প্রতিজ্ঞাণিতার ভাব ভাগে কর।" রাজার অপ্রিয়্কারী দ্যু ( মন্ত্রাদি ) অভ্যন্তরগণ, বা দ্র ( রাইমুখ্যাদি ) বাহুপণ বদি প্রতিজ্ঞাণিতা ইইরা দাঁড়ান, ভাহা হইলে রাজ্মাণিহিত দুসুরুপধারী ওওচরেরা ( প্রতিজ্ঞাণক )

অভ্যন্তর দৃহ্যগণকে (উপজাপক বাহুগণকে হলধারী বলিরা প্রতিপন্ন করিরা) সেই বাহুগণ হইতে ভিন্ন করিয়া দিবেন এবং (প্রতিজ্ঞাপক) বাহু দৃহ্যগণকে (উপজাপক অভ্যন্তরগণকে হলধারী বলিয়া প্রতিশান করিয়া) সেই অভ্যন্তরগণ হইতে ভিন্ন করিয়া দিবেন। অথবা, (প্রতিজ্ঞাপক বাহু) দৃহ্যগণের মধ্যে অহুপ্রবিষ্ট হইয়া, ভীক্ষ-নামক গৃঢ়পুরুষেরা শল্প ও বিষেধ্য প্রয়োগদারা সেই দৃহ্যদিগের বধ্যাধন করিবে; অথবা, সেই প্রতিজ্ঞাপক বাহুদিগকে (বিশ্বাসবচন্দ্রারা) ডাকিয়া নিয়া বধ করিবে।

(৩) যে বিপদে উপজাপক বাছগণ অভ্যন্তরগণকে প্রতিজ্ঞাপক করিয়। তাঁহাদের প্রতি উপজাপ চালান, কিয়া উপজাপক অভ্যন্তরগণ বাহুগণকে প্রতিজ্ঞাপক করিয়া উপজাপ চালান—সেই প্রকার সমানজাতীর উপজাপক ও প্রতিজ্ঞাপকদারা উত্থাপিত বিপদে উপজ্ঞপিতার সমাধান বা প্রশমনসিদ্ধি অধিকতর প্রোয়ন্থর। কারণ, উপজ্ঞপিতার দোব দমিত হইলে, দৃষ্যপুরুষদিগের প্রান্থতাব আরু থাকে না। আবার (প্রতিজ্ঞাপক) দৃষ্যগণের দোবগুদ্ধি ঘটিলে, উপজ্ঞাপদোব পুনরার অক্তান্থ লোককে দৃষ্টিত করিতে পারে। (প্রত্রাং এই ক্ষেত্রে উপজ্ঞপিতার প্রশমনই প্রেয়ন্থর।)

অতএব (উপজিপিতার শোধনই প্রয়োজনীয় বলিয়া) বাজ্বন যদি উপজাপক হয়, তাহা হইলে, রাজা তাঁহাদের প্রতি ভেদ ও দণ্ডের প্রয়োগ করিবেন। অথবা, তাঁহাদের মিত্রের বেশধারী সন্তি-নামক গৃড়পুরুবেরা তাঁহাদিগকে এইরূপ (ভেদবাক্য) বলিবে, যথা—"এই রাজা (প্রতিজ্ঞাপক্ষারা) তোমাদিগকে নিজ্ঞ অধীন করিতে ইচ্ছা করেন; এই রাজার সহিত তোমাদিগকে বিগ্রহ চালাইতে হইবে—এই বুঝিয়া চলিবে, অর্থাৎ, বিশ্বাস করিয়া কাহারও উপর উপজাপ চালাইও না"।

অথবা, প্রতিজ্ঞপিতার নিকট হইতে (উপজ্ঞপিতার নিকট) গমনপর দৃত বা নৈনিক প্রকাদিগের সহিত অন্তানিষ্ট হইরা তীক্ষপুরুবেরা (তীক্ষ-নামক গৃঢ়-পুরুবেরা) এই উপজাপকগণের ছিন্ত বা প্রমাদস্থান উপলব্ধি করিরা তাহাদিগকে প্রহার করিবে। তৎপর সত্রীরা (সন্তি-নামক গৃঢ়পুরুবেরা) সেই বৈধসম্বদ্ধে প্রতিজ্ঞপিতার নাম গ্রহণ করিবে, অর্থাৎ প্রতিজ্ঞপিতাই বে উপজ্ঞপিতার বধ্যক্রমিতা এইরূপ অভিধান প্রকাশ করিবে।

. (৪) বদি উপ্রাণক অভ্যন্তরগণ অভ্যন্তরগণকে প্রতিজ্ঞাপক গ্লার্ব্য করিয়া উপজ্ঞাপের প্রয়োগ করেন, ভাষা ইইলে রাজা বধাবোগ্য (সাবাদি) উপায় প্রয়োগ করিবেন। সন্তোধস্চক, কিন্তু অসন্তোধপ্রদ সাম, অথবা ইছার বিপরীত (অর্থাৎ অসন্তোধস্চক, কিন্তু সন্তোধপ্রদ সাম) তিনি প্রয়োগ করিবেন। অববা, শুক্ররিত্র ও সামর্থ্যের ছল দেখাইয়া, কিয়া (বন্ধবিরোগাদির) হঃখময় অবসরের অপেক্ষা করিয়া তিনি প্রতিপ্রনাদি বা সংকার প্রদর্শনরূপ দানের প্রয়োগ করিবেন।

অধবা, মিত্ররপধারী (গৃচপুরুষ) তাঁহাদিগকে (অভান্তর উপজাপকগণ) এইরূপ ভেদবাকা বলিবে, যথা — "রাজা তোমাদিগের মনের অভিপ্রায় জানিবার জক্ত উপধার (বা ধনদানাদিদার। পরীকার) প্রয়োগ করিবেন, তাঁহার নিকট মনোগত অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়া বলিবে।" অথবা, এই গৃচপুরুষ তাঁহাদিগকে পরক্ষর হইতে ভিন্ন করিবে এবং বলিবে— "এই এই ব্যক্তি রাজার নিকট ভোমাদের সম্বন্ধে এইরূপ কথা লাগায়।" এই প্রকার ভেন প্রযোজবা।

এছলে, দাওকন্মিক-নামক ( গঞ্চম ) অধিকরণে উক্ত দত্তের বা উপাংক্তবধের প্রয়োগ বিধেয়।

উপরিউক্ত চারিপ্রকার বিপদের মধ্যে রাজা অভ্যন্তর বিপদেরই সর্কাপ্রে সমাধান করিবেন। পূর্ব্বেই বলা হইয়াছে যে, (অভ্যন্তর) সর্পভিয়ের স্থায় অভ্যন্তরকোপ বাছকোপের অপেক্ষায় অধিকতর ভয়াবহ।

উপরি নির্মণিভস্করণ চারিপ্রকার বিপদের মধ্যে রাজা পূর্ক-পূর্ব্বটিকে তেওঁরোভরটির অপেক্ষায় ) শঘু বলিয়। বিবেচনা করিবেন। (অর্থাৎ, পূর্ব্বপূর্ব্বাপেক্ষায় উন্তরোভরটি গুরু বিবেচিত হইবে।) কিন্ত, যে বিপদ বলবান্ উপজ্পিতার দ্বারা উত্থাপিত হয়, তাহা পূর্ব্ব হইলেও গুরু বলিয়। ধার্যা, এবং তাহার বিপর্যায় ঘটিলে অর্থাৎ যে বিপদ হর্ববল উপজ্পিতার দ্বারা উত্থাপিত হয়, তাহা উন্তর্ব বা পরবর্ত্তী হইলেও লঘু বলিয়। পরিগণিত হওয়ার যোগা॥ ১॥

কোটিপীয় অর্থশান্তে অভিযাস্থৎকর্ম-নামক নবম অধিকরণে বাহ্য ও অভ্যন্তর আপদ্-নামক পঞ্চম অধ্যায় ( আদি হইতে ১২৬ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

### ষষ্ঠ অধ্যায়

#### ১৪৪ প্রকরণ—দৃদ্ধ ও শক্তদারা উৎপাদিত ( বাহ্ ও অভ্যন্তর ) আপদের নিরূপণ

(আপদ শুৰু ও মিপ্রান্ডেদে হুইথাকার ।) তমধ্যে কেবল দৃশ্ব পুরুষধার। এবং কেবল শক্তধারা উৎপাদিত হুইলে সেই আপদকে শুৰু আপদ বলা বায়। মুতরাং আপদ দৃশুগুৰা ও শক্তপনা বলিয়া বিবিধা। (১) আপদ যদি দৃশ্বগুৰা হয় (অর্থাৎ রাজাপকারী পুরুষধারা কেবল উৎপাদিত হয়), তাহা হুইলে—রাজা (দৃশ্ব)পোরগণ বা জানপদগণের উপর দশু ব্যতিরেকে অক্তান্ত উপায়সমূহ (অর্থাৎ সাম, দান ও ভেদ) প্রয়োগ করিবেন। কারণ, দশুরুপ উপায় মহাজনের অর্থাৎ বহুদংখ্যক পুরবাসী ও জনপদবাসী জনের উপর প্রযুক্ত হুইতে পারে না। যদি ইহা (দশু) প্রযুক্তও হয়, তাহা হুইলে ইহা (দাব-প্রামনরূপ) দেই অভীই অর্থ সাধন করিতে পারে না। বহং (তৎপরিবর্জে) ইহা অক্ত অনর্থ উৎপাদন করে। ইহাদের (পোরজানপদসমূহের) মধ্যে বাহারা (উপজাপক) মুখ্যপুরুষ তাহাদের প্রতি দাশুক্রম্প প্রয়োগ করিতে রাজা চেটা করিবেন।

(২) আগদ যদি শক্তজা হয় (অর্থাৎ রাজার সহজ কুত্রিমশক্তর উপজাপে কেবল উৎপাদিত হয়), তাহা হইলে—শক্ত বাঁহার (বে সামস্তাদির) অধীন, প্রধান বা তাঁহার মন্ত্রাদি বাঁহার অধীন, অথবা তাঁহার কার্যা বা অন্তান্ত অমাত্যাদি বাঁহার অধীন, তাঁহার প্রতি সামাদি উপায়চতুইয় (যথাযোগাভাবে) প্রয়োগ করিয়া রাজা (আগৎ-প্রতীকাররূপ) সিদ্ধিলাত করিতে ইচ্ছুক হইবেন। (ইহার বিবরণ এই—) প্রধানের সিদ্ধি অর্থাৎ প্রধানবারা উৎপাদিত আগদের প্রশামন, স্বামীর আয়ত, অর্থাৎ প্রামীকে সামাদিহারা অল্পুল করিবার বয় নিতে হইবে। আবার আয়ত বা কার্যাশক্ষারা বোধিত অমাত্যাদির সিদ্ধি বা তাঁহাদের ঘারা উৎপাদিত আগদের প্রশামন মন্ত্রীদিগের আয়ত,—অর্থাৎ মন্ত্রীদিগকে সামাদিঘার। অল্পুল করিবার বয় নিতে হইবে। আবার প্রধান ও আয়তের সিদ্ধি অর্থাৎ একবোগে এই উভরের ঘারা উৎপাদিত আগদের প্রশামন উজরের (অর্থাৎ রাজা ও মন্ত্রী—এই উভরের বারা উৎপাদিত আগবের এই অবছায় বারী ও মন্ত্রী—উভরকে সামাদিহারা অল্পুল করিতে বস্থ নিতে হইবে।

আন্ধ আর একপ্রকার আগদের প্রসক উত্থাপিত হইতেছে—ইহার নাম আমিপ্রা বা মিপ্রিতা আগদ—ইহা দ্যা ও অদ্যুবর্গের মিপিত চেষ্টার উৎপর হয়। এই আমিপ্র আগদ উপন্থিত হইলে, অদ্যুবর্গের সিদ্ধি বা প্রশ্নন (সামাদি-প্রায়োগে ভাষাদিগের আহক্লা বিধান) প্রয়োজনীয়। কারণ, অদ্যুকে শান্ত করিতে পারিলে অবলঘনের বা আপ্রয়ের অভাবে অবলম্বিতা অর্থাৎ উাষ্টাকে অবলঘন করিয়া চেষ্টমান (আপজ্জনক) দৃয় আর বিভ্রমান থাকিবে না, অর্থাৎ আগনা হইতেই শান্ত হইবে।

আবার আরও একপ্রকার আপদের উল্লেখ করা হইতেছে—ইছার নাম পরমিশ্রা বা শত্দমিশ্রিতা আপদ—ইছা মিত্র ও অমিত্রগণের একীভাব বা মিলনের ফলে উৎপাদিত হইয়া থাকে। এই পরমিশ্রা আপদ উপস্থিত হইলে, মিত্রের সিদ্ধি বা প্রশমন (সামাদিপ্রয়োগে তাঁছাকে অস্কুল-বিধান) প্রয়োজনীয়। কারণ, মিত্রের সলে সন্ধি করা হকর, অমিত্রের সলে নছে (অর্থাৎ অমিত্রের সহিত দক্ষি করা কঠিন)।

বদি দেই মিত্র দিন্ধ কবিতে অনিচ্ছুক হয়েন, তাই। হইলে পুন: পুন: তাঁহার বিক্লের রাজা উপজাগ চালাইবেন,—তদনস্তর সত্তি-নামক গৃচপুক্ষরগণধায়া অমিত্র হইতে দেই মিত্রের ডেদ ঘটাইয়া দেই মিত্রেকে খবলে আনিবেন। অথবা, এই মিত্র ও অমিত্রসংঘের সংলগ্ধ অস্তব্যায়ী কোন সামস্ত বিস্তধান থাকিলে, তাঁহাকে হন্তগত করিবেন। (কারণ,) অস্তব্যায়ী সামস্তকে নিজ বলে আনিতে পারিলে মধ্যস্থায়ী সামস্তের নিজেই পরন্পর ভিন্ন হইয়া যায়। অথবা, (সেই সংঘের) মধ্যস্থায়ী কোন সামস্তকে (তিনি) বলীভূত করিবেন। (কারণ,) মধ্যস্থায়ী লামস্ত লব্ধ হইয়া অকত্র সংহত হইয়া কাজ করিতে পারেন না, অর্থাৎ পরন্পর ভিন্ন হইয়া পড়েন। যে-সমস্ত উপার অবলয়ন করিলে তাঁহাদের আপ্রয় অর্থাৎ সাহায্যকারী শক্তিশালী হাজা হইতে তেদের সন্থাবনা হইতে পারে—(তিনি) দেই সম্প্ত উপার প্রয়োগ করিবেন।

ধার্দ্দিক রাজার প্রতি সাম-প্রয়োগসহকে এই বলা হইডেছে যে, বিজিপীর উচ্চার (ধার্দ্দিক রাজার) জাতি, কুল, বিস্তা ও ব্যবহারের স্থ্যাতিরূপ সম্বব্দান। অথবা সেই রাজার পূর্বাপুরুষগণের কৃত উপকার ও অনপ্রারের কথাবার। উচ্চাকে শাস্ত করিবেন।

সোমপ্রারোগে কাছার। সাধ্য হইতে পাবেন কে-স্বন্ধে বলা হইতেছে।)
বিভিন্নির সামপ্রারোগে সেই রাজাকেই শাখ করিতে চেটা করিবেন—বিনি

উৎসংহহীন, বিনি বুক করিরা প্রাক্ত বা ধির, বাঁহার উপারপ্রয়োগ প্রতিহত হইরাছে, বিনি ক্ষর ( যুগাপুক্রাপচর ) ও ব্যর ( হিরণান্তপচর ) এবং প্রবান ভোগ করিরা দন্তপ্ত ইইরাছেন, বিনি শোচ বা শুচিছন্তপের অপেক্ষা রাধিরা অন্ত রাজাকে নিজ মিত্ররূপে লাভ করিতে ইচ্ছুক আছেন, বিনি অন্ত রাজাকে ভর করেন বা অন্ত রাজাকে অবিখাদ করেন, বিনি মিত্রভাবকেই প্রধান বলিরা প্রাক্ত করেন, কিংবা বিনি অরং কল্যাণবৃদ্ধি আছেন।

আবার, যে রাজা লোভী, অথবা ধনহীন, তাঁহাকে, তপসী ও মুব্য বাজিনিগকে দাকী রাখিয়া অর্থাদির দানঘারা বশীভূত করিবেন। সেই দান পঞ্প্রকারের হইতে পারে, যথা—দেয় বিদর্গ (অর্থাৎ গৃহীত ভূমিতে ব্রহ্মদেয়াদির যথাপূর্ব্বদান), গৃহীতালুবর্ত্তন (অর্থাৎ পূর্বপূক্ষণপদারা গৃহীত ভূমি-প্রভৃতিতে ভোগের অন্বর্তন বা ভোগের অনিষেধ), আত্রপ্রতিদান (অর্থাৎ গৃহীত ভূম্যাদির প্রত্যর্পণ), অপূর্বে বা নৃতন স্ক্রেরের দান এবং শক্রব দেশ হইতে পৃত্তিত ধন স্বয়ং পৃথনকারীকে নিতে দেওয়ারূপ দান। ইহাই পাঁচপ্রকার দানকর্ম।

স্প্রতি তেদের নিরূপণ করা হইতেছে।) যে রাজা পরস্পরের ঘেষ (তাৎকাশিক বিরোধভাব), বৈর (চিরকাল হইতে উৎপন্ন বিরোধভাব) ও ভূমিহরণের জরে আশহিত—ভাঁহাকে (বিজিপীরু) ঘেষাদির অক্সতম অবলয়ন করিয়া ভিন্ন করিবেন। যিনি ভীক্ব ভাঁহাকে (তিনি) শত্রুর প্রতিঘাত বা তৎকর্ত্বক যুদ্ধাদিলারা নাশের ভয় দেখাইয়া ভিন্ন করিবেন। অথবা, (তিনি) এই প্রকার বিশিয়া ভেদসাধন করিবেন—"তোমার সহায়ক এই রাজা (আমার সহিত ) সন্ধি করিয়া ভোমার বিহুদ্ধে আক্রমণাদি কর্ম চালাইবেন—(ইতিমধাই) (আমার সহিত করিয়া ভোমার বিহুদ্ধে আক্রমণাদি কর্ম চালাইবেন—(ইতিমধাই) (আমার সহিত এই সন্ধিকরণবিষ্ত্রে তোমাকে অভ্যন্তর রাখা হয় নাই, আর্থাৎ ভোমাকে বহিন্নত করা হইয়াছে।"

(ভেদের প্রকারান্তর বলা ছইতৈছে।) মিত্র বা অমিত্র বে কোন রাজার আনেশ ছইতে অথবা অন্তদেশ ছইতে পণ্যাগারে মজুত রাধার জন্ত বে সমস্ত পণ্য আনিবে—নেশুলি তাঁহার সহিত (গুড়ভাবে সন্ধিতে মিলিত) (বিভিন্মীরুর) বাতব্য রাজার নিকট ছইতে শব্ধ ছইয়াছে এই মিথাারভান্ত সন্তি-নামক গুড়-পুরুবেরা রটাইয়া দিবে। এই বুজান্ত সর্পত্ত প্রচারিত ছইলে পর, (বিভিন্মীরু) অভিত্যক্ত ('অভিব্যক্ত' পাঠ তত্ত্বী স্মীটীন বশিলা প্রতিভাত হব্ধ না ) পুরুব্দর

অর্থাৎ বাছার বব্যতা নিশ্চিত এমন পুরুবের ছাত দিয়া একটি কুটশাসন (তৎসমীপে) পাঠাইবেন। (শাসনের ভাব এইরূপ ছইবে, যথা—) "আমি তোমার নিকট এই পণ্য অথবা পণ্যাগারসদৃশ বহু পণ্য পাঠাইলাম। আমার (শক্র সাহাবাকারী,) তোমার সহিত সমবায়স্ত্রে উখানকারী, সামবায়িকদিগের বিরুদ্ধে আজ্মণ চালাও, অথবা ভাহাদের নিকট ছইতে (আমার উপকারার্থ) সরিয়া পড়, ভাহার পর পণিত অর্থাদির অবশিষ্ট অর্থাদি তুমি (আমার নিকট ছইতে) পাইবে।" তদনস্তর সন্তি-নামক গুচপুরুষণণ অস্থান্থ সমবায়িকগণের নিকট—"এই পত্র ভোমাদের শক্র কর্ত্ক (অর্থাৎ বিজিশীবুক্র কর্ত্ক ) প্রদন্ত ছইয়াছে"— এইরূপ বিখাদ করাইবে।

শক্রর অর্থাৎ সামবায়িকগণের অন্তত্যের সম্বন্ধীয় কোন পণা (রম্বাদি), অন্তের অজ্ঞাতসারে, বিজিগীবুর হস্তগত করা হইবে। তাঁহার বৈদেহক (ব্যাপারী) - ব্যক্ষন গৃচপুরুবেরা সেই পণাটি শক্রধর্মা অন্ত সামবায়িক মুখ্যের নিকট নিয়া বিক্রয় করিবে। তৎপর সত্তি-নামক গৃচপুরুবেরা অন্ত সামবায়িক-গণের নিকট এইরূপ বিশ্বাস করাইবে যে, এই পণ্য তাহাদের অরি (বিজিগীরু) - কর্ত্বক (বিক্রয়ার্থ) প্রান্ত হইয়াছে। (স্কুবাং বিজিগীবুর সহিত মিলিড সামবায়িকের কথা মনে করিয়া অন্তান্ত সামবায়িকগণ পরম্পার ভিন্ন হইয়া যাইবে —ইহাই এম্বলে অভিপ্রেভ অর্থ।)

অথবা, রাজা মহাপরাধে দোধী অমাতাদিগকে, অর্থ ও মান দান করিয়া
নিজ বশে আনিয়া, শত্র, বিষ ও অন্নিপ্রয়োগদারা শক্রর নাশার্থ গোপনে নিমৃক্ত
করিবেন। প্রথমতঃ এইরূপ একটিমাত্র অমাতাকে (নিজ দেশ হইতে)
নিক্ষানিত করিবেন (যেন তিনি শক্রর দেশে যাইতে পারেন)। তৎপর তাঁহার
প্ত্র ও জীকে (গোপনে অরক্ষিত অবস্থায় লুকাইয়া রাখিয়া), 'য়াত্রিতে
(রাজাদেশে) তাঁহারা হত হইয়াছেন' এইরূপ (মিথ্যাসংবাদ) তিনি প্রচার
করিবেন (মাহাতে শক্রর দেশে সেই অমাত্য শক্রর বিশ্বাসভাজন হইতে
পারেন)। তৎপর সেই (নিম্পাতিত) অমাত্য একটি একটি করিয়া অস্তান্ত
নিম্পাতিত অমাত্যাদিগকে শক্রসমীপে পরিচিত করিয়া দিবেন (অর্থাৎ বলিবেন
যে, বিজিগীরুর বেববশতঃ তাঁহারা দে-দেশে চলিয়া আসিয়াছেন)। যদি
তাঁহারা (নিম্পাতিত অমাত্যেরা) রাজানিই কার্যা (শত্র, বিষ ও অন্নিপ্রারোগে
শক্রর বিনাশরূপ কার্য্য) সম্পাদন করেন, তাহা হইলে তাঁহানিগকে (উডয়েবতন-নামক চারপুরুরধারা) বরাইবেন না (অর্থাৎ প্রেপ্তার করাইবেন না)।

ৰদি ( সেই কাৰ্য্য করিতে ) কোন অমাত্য অশক্তি বা অসামর্য্য জানায়, তাহা হইলে তিনি তাঁহাদিগকে গত করাইতে গারেন। নিকাসিত যে অমাত্য শক্তব বিশাসভাজন হইবেন, তিনি শক্তকে এইভাবে (উপজাপসহকারে ) বলিবেন খে, তিনি যেন সামবায়িক মুখ্য হইতে আত্মরক্ষা করিয়া চলেন। অনন্তর সামবায়িকমুখ্যের নিকট প্রেষিত, অমিক্রদারা রচয়িত ক্টলেখ—যাহা কাহারও উপলাতের বিষয়ীভূত তাহা—উভয়বেতন-নামক চারপুরুষ ধরিয়া ফেলিবেন।

অথবা, তিনি উৎসাহ ও সামর্থায়ক কোন সামবায়িকের নিকট সেইরূপ কুটশাসন পাঠাইবেন। (ইহার তাৎপর্য্য এইরূপ হইবে—) "অমুক সামবায়িকের রাজ্য আক্রমণপূর্বক গ্রহণ কর—এবং পূর্বনিশ্চিত সন্ধি স্বীকৃত হইতে পারে না।" অনস্কর দ্রিপুক্ষবেরা অন্তান্ত সামবায়িকের নিকট এই কৃটপত্রের কথা প্রকাশ করিয়া দিবে।

জ্ববা, (সত্রীরা) কোন এক সামবায়িক রাজার ক্ষরবার (সেনানিবেশ), বীবধ (ধাস্তাদির আগম) ও আসার ( হুহুৎ বলের আগম) নষ্ট করাইবেন, কিছ ডদত্ত সামবায়িকগণের সহিত নিজ মিত্রতার ভাব ( কথাছারা) প্রকাশ রাখিবে। আবার সেই (প্রবম) সামবায়িককে সত্রীরা এই বলিয়া উপজ্পিত ক্রিবে, যথা—"ভূমি ভ ইহাদের ( অন্ত সামবায়িকগণের) দ্বারা ঘাতিত হইবে।" ( হুভরাং ইহাদের মধ্যে সন্ধি রক্ষিত হইতে পারিবে না। )

অথবা, বদি কোন সামবায়িকের কোনও প্রবীর পুরুষ, হস্তী বা অথ ( স্বঃং )
মরিয়া যায়—অথবা, গৃচপুরুষগণদার। হত বা অপহত হয়, তাহা হইলে সত্রীরা
বলিয়া বেড়াইবে যে, ইহারা পরশার উপহত হইয়াছে অর্থাৎ অস্ত সামবায়িকের
দারা ইহাদের বধ সাধিত হইয়াছে। তৎপর যে সামবায়িক এই বধের জন্ত
দোবী বলিয়া (মিথাা) প্রধাণিত হইবেন, তাঁহার নিকট এক ক্টশাসন প্রেরিও
ইইবে। (ইহার তাৎপর্য হইবে এইরূপ—) "পুনর্কার যদি এইরূপ (বধ)
করিতে পার তাহা হইলেই অবশিষ্ট (পণিত) ধনাদি পাইবে।" তৎপর
উভয়বেতন-নামক গৃচপুরুষেরা সেই পত্র হস্তগত করাইবে। (এই পর্যান্ত
সামবায়িকগণের মধ্যে ভেদমাধনের উপার বলা হইল।)

উক্ত ভেলোপায়ে দামবায়িকগণের ভেদ দাধিত হইলে, ইহাদের অস্ততমকে (বিজিপীয়ু) নিজের অধীন করিয়া লইবেন।

ইছাথার। দেনাপতি, কুমার ও দৈশুচারী পুরুষদিগের মধ্যেও কি প্রকার উপায়ে ভেদদাখন করিতে হইবে, তাছা বলা হইল। সক্ষয়ত-নামক অধিকরণে (১) অধিকরণে ) যে ভেদের কথা বলা হইবে তাহাও (এইছলে) তিনি প্রয়োগ করিতে পারেন। এই পর্যন্ত ভেদমন্থীয় দ্ব কার্য্যের কথা বলা হইল। (সম্প্রতি দশু-প্ররোগের প্রকারসমূহ বলা যাইতেছে।) তীক্ষ্ম (অভাধিক কোপন-শ্বভাব), উৎসাহী (পরাক্ষমশালী), অথবা বাসনী (মৃগয়াদি বাসনে আসক্ত) দ্বিতশক্তকে (ভূর্গাদিতে অবিদ্বিত্ত শক্রকে) গৃচপুরুবরের একতিত ইইয়া শত্র, অগ্নি ও বিব প্রয়োগদ্বারা হত্যা করিবে। অথবা, তমধ্যে একজনমাত্র গৃচপুরুবই স্থবিধা বা স্থামতা বৃঝিয়া (বে কোনও উপার অবশন্ধন করিয়ো) তাহার বধসাধন করিবে। কারণ, কোনও তীক্ষ্ণ-নামক গৃচপুরুব একাকীই শত্র, অগ্নি ও বিবছারা শক্ষকে হত্যা করিতে পারে। এই গৃচপুরুব, সর্বপ্রকার গৃচপুরুব একত্র মিলিরণ যে কার্য্য সমাধা করিতে পারে তেমন কার্যা, অথবা তদপেক্ষার উৎকৃষ্টভর কার্য্যও (একাকী) সাধন করিতে পারে। এই পর্যান্ত পর্যান্ত ভালন-দল-ভেদ-দশুরূপ উপায়েচতৃইরের বিবর নির্মাণত হইল।

এই উপায়বর্গের মধ্যে প্রথম-প্রথমটি পর-পরটির অপেক্ষায় পর্যুতর অর্থাৎ অল্পাব্যববিশিষ্ট বলিয়া পূর্ব্ব-পূর্বাটি অনায়াসে প্রযোজ্য। সাম নিজেই একাব্যববিশিষ্ট বলিয়া একগুণ বলিয়া গৃহীত। দান সামপূর্ব্বক বলিয়া ছই অবয়ববিশিষ্ট বলিয়া ইছা দ্বিগুণ। সাম ও দানরূপ অবয়ব লইয়া গঠিত বলিয়া ভেদ ত্রিগুণ। দশু সাম-দান-ভেদরূপ অবয়বযুক্ত বলিয়া ইছাকে চতুগুণ বলা হয়।

উপরি উল্লিখিত উপায়সমূহের প্রয়োগ অভিযোগকারী অর্থাৎ কোনও যাতব্য শক্তর প্রতি বানপ্রান্ত সামবারিক রাজাদিগের সম্বন্ধে উক্ত হইয়াছে। আবার উছারা যদি ( আক্রমণার্থ বিছিত্ ত না হইয়া ) নিজ নিজ ভূমিতেই অবন্ধিত থাকেন, তাহা হইপেও এই উপায়গুলির প্রয়োগ সমানভাবেই করা যায়, বুঝিতে হইবে। তবে ইহার বৈশিষ্টা এইরূপ নির্মণিত হইতে পারে। (বিজিপীয়ু) মভূমিতে অবন্ধিত মিত্রামিত্র রাজাদিগের মধ্যে (ইহাদের সন্দিলিতভাবে প্রস্থানের পূর্বের) অস্ততমের নিকট, ( দানার্থ বহম্পা রম্বাদিরূপ ) পণ্যসমূহ সঙ্গে বহনকারী ও সেই রাজার বিষয়ে জানশীল দূতমুখ্যদিগকে পুনং পুনং পাঠাইবেন। উছারা দেই রাজাকে (বিজিপীয়ুর সহিত) সন্ধি করিবার জন্ত, অথবা ভদীর শক্তর বিরুদ্ধে অভিযোগ চালাইবার জন্ত নিয়োজিত করিবেন। যদি দেই রাজা (মিত্রামিত্রের অন্ততম) সেইরূপ সন্ধি করিতে স্থীকার না করেন, তাহা হইলে সেই দৃত্রমুখ্যেরা ইহাই প্রকাশ করিবেন যে, সেই রাজার সহিত (বিজিপীয়ুর)

সদ্ধি হইয়া গিয়াছে। তৎপর উভয়বেতন-নামক গৃঢ়পুরুবগণ এই কথা অন্তান্ত সামবারিকগণের নিকট প্রকাশ করিয়া দিয়া বলিবে যে, "ভোমার দলের ঐ রাজাটি বড় ছষ্ট (অর্থাৎ ভোমাদিগকে না জানাইয়া বিজিগীরুর সহিত সদ্ধি করিয়া বসিয়াছে)"।

অথবা, যে রাজার, অপর যে রাজার নিকট হটুতে ভয়, বৈর ও জেবেঃ
সন্তাবনা আছে, (গুচপুরুষগণ) সে রাজাকে সেই অপর রাজা হইতে ভিন্ন করিবে
এবং বলিবে — "এই রাজা ভোমার শত্রুর (অর্থাৎ বিজিগীরুর) সহিত সন্ধি
করিতেছেন, শীত্রই তিনি ভোমাকেও প্রবঞ্চিত করিবেন, স্মৃতরাং তুমি অতিশীত্র
(সেই বিজিগীরুর সহিত) সন্ধি করিয়া কেল এবং সেই অপর রাজার নিগ্রহবিষয়ে যত্নশীল হও।"

অথবা, (বিজিপীপু কোনও সামবায়িকের সহিত) **আবাহ** (কন্তাগ্রহণ) ও বিবাহ (কন্তাদান)-সমন্ধ স্থাপিত করিয়া অসংযুক্ত অর্থাং সমন্ধরহিত অন্তান্ত রাজগণকে সেই সামবায়িক রাজা হইতে ভিন্ন করিবেন।

সামস্তরাজগণ, আটবিকগণ, অথবা ( মিত্রামিত্রগণের ) \*অক্লসস্কৃত অবরুদ্ধ
পূ্জাদিলার। (বিজিগীর ) তাঁহাদের রাজ্যের হানি উৎপাদন করিবেন; অথবা,
দেই মিত্রামিত্রগণের দার্থ (বিণক্ষজারবাহী পশুসংঘ), ব্রজ (গোমহিষাদি),
এবং অটবী (স্তব্যাদিবন)-সমূহ নই করাইবেন। অথবা, তাঁহাদের রক্ষকরূপে
আপ্রিত সেনাও তিনি নই করাইবেন। অথবা, যে জাতিসংঘেরা (সংঘর্ত্তনামক অধিকরণে দ্রন্থীর) পরস্পর হইতে বিনিষ্ট তাহারা দেই মিত্রামিত্রগণের
ছিদ্রগুলিতে অর্থাৎ প্রমাদস্থানসমূহে আঘাত প্রদান করিবে। গুচুপুরুষগণও
অধি, বিষ ও শক্ত প্রয়োগদারা সেই প্রমাদস্থানগুলিতে আঘাত করিবে।

( উপসংহারে বলা হইতেছে।)

পরমিশ্র) বিপদ উপস্থিত হইলে, শঠ (বা গুঢ়ব্যবহারকারী বিজিগীরু) রাজ। বিভংস (পক্ষীর বিশাসার্থ পক্ষীর চিত্রযুক্ত শরীরাচ্ছাদক বস্ত্র )ও গিলের (ভক্ষা মাংদের) স্থায় কপট উপায়রূপ যোগ রচনা করিয়া, বিশাস উৎপাদন ও আমির (অর্থাৎ সারপণা বক্তপ্রভৃতি) দান করিয়া শক্রদিগকে নষ্ট করিবেন ॥ > ॥

কোটিশীর অর্থশান্তে অভিযাত্মৎকর্ম-নামক নবম অধিকরণে দুয় ও শত্রুসংগুক্ত আপদের নিরূপণ-নামক বঠ অধ্যায় ( আদি হইতে ১২৭ অধ্যায় ) সমাও।

## সপ্তম অধ্যায়

-৪৫-১৪৬ প্রকরণ—অর্থ, অনর্থ ও সংশয়যুক্ত আপদের নিরূপণ এবং সামাদি উপায়-বিশেষের প্রয়োগছারঃ ইহাদের প্রতীকার

কামাদি (বড়্বর্গ) রূপ দোবের আধিকা, রাজার নিজ (মন্ত্রাদি) অভ্যন্তর প্রকৃতিগণের কোপ উৎপাদন করে। (দিন্ধি প্রভৃতির অঘধাবৎ প্রয়োগরূপ) অপলার রাজার নিজ (রাষ্ট্রমুখাদি) বাহাগণের কোপ উৎপাদন করে। কোমাদি ও অপন্যরূপ) এই ছই দোষকে আমুরী বৃত্তি বলা হয়। স্বজনের বিকারোৎপাদক এই কোপ শক্রর বৃদ্ধি (বলবভার) হেতু উপন্থিত হইলে, আপদ বিলায়া পরিগণিত; এবং এই আপদ অর্থক্রপা, অনর্থরূপা ও সংশাস্কর্কপা বলিয়া তিন প্রকারের হইতে পারে।

যে অর্থ (ভুমাদি) নিজ হন্তগত না হওয়ায় শক্রর বৃদ্ধি (সয়দ্ধি)-সাধন করে, সেই অর্থ (একপ্রকারের) আপদর্থ। আবার যে অর্থ হন্তগত হইলেও শক্রগণকর্ত্বক প্রত্যাদের হইতে পারে (অর্থাৎ শক্ররা যাহা পুনরায় কাড়িয়া নিজে গারে) তাহা দ্বিতীয় প্রকারের আপদর্থ। আবার যে অর্থ পাইতে হইলে রাজার অনেক ক্ষর ও বয়ে ঘটিবে তাহা তৃতীয় প্রকারের আপদর্থ। যথা, বহুসামন্তের আমিষভূত বা ভোগাভূত লাভ (এক সামন্তের হন্তগত থাকিলে ইহা অন্তান্ত মিলিত সামন্ত-কর্ত্বক আচ্ছিল্ল হইতে পারে বলিয়া ইহা) আপদর্থ। আবার, কোনও সামন্তের ব্যাননদশাতে ভাহার নিকট হইতে আচ্ছিল্ল লাভও আপদর্থ। আবার, কোনও সামন্তের ব্যাননদশাতে ভাহার নিকট হইতে আচ্ছিল্ল লাভও আপদর্থ। আগদর্থ। সমূধে যাতব্য রাজার নিকট হইতে প্রাপ্ত হয়, তাহা হইলে সে লাভও আপদর্থ। সমূধে যাতব্য রাজার নিকট হইতে প্রাপ্ত বে লাভ পশ্চারাগের মূলস্থানের দৃশ্যাদির) উপদ্রবহশতঃ, অথবা পার্ফিগ্রাহ শক্রর চেষ্টারশতঃ বাধিত হয়, সে লাভও আপদর্থ। আবার মিত্রের উচ্ছেদসাধন করিয়া, অথবা তাঁহার সহিত পূর্কস্বত সন্ধির উল্লেখন করিয়া, যে লাভ প্রাপ্ত হইলে রাজমণ্ডল বিক্ষমভাব ধারণ করেন, সেইপ্রকার লাভও আপদর্থ। আগদর্থ। আগদর্থ লাভের প্রকারভেদ বন্ধা হইল।

সন্ত্যার কাহারও নিকট হইতে, অথবা অন্ত কাহারও নিকট হইতে প্রাপ্ত অর্থ-সম্বন্ধে কোনও ভয়ের উৎপত্তি ঘটিলে, ইহাকে অনর্থরূপ বিপদ বলা যান। উক্ত অর্থ ও অনুর্থবিষয়ক সংশয় উপস্থিত হইলে, ইহা সংশয়রূপ আপদ। এই সংশন্ন চারি প্রকারের হইতে পারে, যথা — (১) ইছা কি অর্থ. অথব। তাছা নর ( অর্থাৎ অর্থের ভাব ও অভাব সম্পর্কীয় সংশয় ) ? (২) ইছা কি অনর্থ, অথব। তাছা নর ( অর্থাৎ অনর্থের ভাব ও অভাব সম্পর্কীয় সংশয় ) ? (৩) ইছা কি অর্থ, অথবা ইছা অনর্থ ? (৪) ইছা কি অনর্থ, অথবা ইছা , অর্থ ? (ক্রুনে উদাহরণ দেওয়া হইতেছে।)

শক্তর মিত্রকে (শক্তর দহিত বিরোধে) উৎসাহিত করিতে গেলে, প্রথম প্রকারের সংশর উপস্থিত হইতে পারে—"ইহা কি অর্থ, অথবা তাহা নর ?" শক্তর সেনাকে অর্থ ও মানদারা আহ্বান করিতে গেলে, দ্বিতীয় প্রকারের সংশয় উপস্থিত হইতে পারে—"ইহা কি অনর্থ, অথবা তাহা নয় ?" বে ভূমির সামস্ক বলবান সেই ভূমি অধিকার করিতে গেলে, তৃতীয় প্রকারের সংশয় উপস্থিত হইতে পারে—"ইহা কি অর্থ, অথবা ইহা অনর্থ ?" নিজ হইাত বলবন্তর কোন রাজার সহিত মিলিত হইয়া যাতব্যের প্রতি বানে প্রবৃত্ত হইতে গেলে, চূর্থ প্রকারের সংশয় উপস্থিত হাতে পারে—"ইহা কি অনর্থ, অথবা অর্থ ?" এই চারিপ্রকার সংশয় উপস্থিত হাতে পারে— "ইহা কি অনর্থ, অথবা অর্থ ?" এই চারিপ্রকার সংশয়মধ্যে যে সংশারটি অর্থ-বিবয়ক ( অর্থাৎ যাহাতে অনর্থের কোন সম্পর্ক নাই ) সেই সংশয়ে বিজিগীয় রাজা উন্থোগ অবলম্বন করিতে পারেন।

প্রত্যেক অর্থ ও অনুর্থের সক্ষে অহ্বর্মের ( সাত্ত্যের ), অথব। তদতাবের বাগে হয় প্রকার ভেদ হইতে পারে। ইহার নাম অহ্বেদ্ধখড়বর্গ। ভেদগুলি এই প্রকার, যথা – (১) অর্থের অহ্বর্মুক্ত অর্থ ( অর্থাহ্মবৃদ্ধ অর্থ ), (২) অর্থাহ্মবৃদ্ধর অর্থ ( নিরহ্মবৃদ্ধ অর্থ ), (৩) অনুর্থের অহ্বর্মুক্ত অর্থ ( অনুর্থাহ্মবৃদ্ধ অর্থ ), (৪) অর্থের অহ্বর্মুক্ত অনুর্থ ( অর্থাহ্মবৃদ্ধ অনুর্থ ), (৪) অর্থার অহ্বর্মুক্ত অনুর্থ ( অর্থাহ্মবৃদ্ধ অনুর্থ )।

( এই গুলির উদাহরণ ক্রমশঃ দেওয়া হইতেছে। ) শক্রকে উৎসাদিত করিরা পুনরায় পার্কিগ্রাহকে নিজবশে জানয়ন করা—অর্থান্থবদ্ধ অর্থ। কোন উদাসীন রাজার নিকট হইতে কল বা ধনাদি লইয়া তদীয় সেনার প্রতি তদ্বায়া অন্তগ্রহ-প্রকাশ—নিরত্বদ্ধ অর্থ। শক্রর অন্তঃ বা অন্তর্জির ( সপ্তম অধিকরণে ১৩শ অধ্যায় দ্রইয়া, অর্থাৎ শক্র ও বিজিয়ীরুর মধ্যত্ব নরপতি ) উচ্ছেদসাধন—
অনর্থান্থবদ্ধ অর্থ। কোশ ও দণ্ড বা দেনাধায়া শক্রর প্রতিবেশী রাজায়
সহায়তা করা—অর্থান্থবদ্ধ অনর্থ। হীনশক্তি কোন রাজাকে ( নিজ শক্রয়
অতিবোসার্থ) উৎসাহিত করিয়া নিজে সরিয়া পড়া—নিরত্ববদ্ধ অনর্থ।

নিজ হইতে বশবজন রাজাকে উত্থাপিত অর্থাৎ সহারত। দিবার জ্ঞাকারে উৎসাহিত করির। নিজে সরিরা গড়া—অনর্থাকুবন্ধ অনর্থ। এই অক্সবন্ধত্ব্বর্গের মধ্যে প্রথম-প্রথমটিকে পাওরা শ্রেরত্বর (অর্থাৎ পর-পর্টির অপেক্ষার)। এই পর্যান্ত অর্থ ও অনর্থক্ষপ কার্য্যের স্বরূপ প্রতিপাদন করা হইল।

যদি অগ্রা, পশ্চাৎ ও পার্য — সর্বাদিক হইতে যুগবৎ অর্থোৎপত্তি ঘটে, তবে
ইহার নাম সমস্ততোর্থাপন। এই সমস্ততোর্থাপদ যদি পাঞ্চিগ্রাহদারা বিদ্যোহিত
হয়, তবে ইহার নাম সমস্ততোর্থাপদ ও
সমস্ততোর্থাপণদায়াপণ। উক্ত সমস্ততোর্থাপদ ও
সমস্ততোর্থাপণদায়াপদ ঘটিলে (বিজিনীবুর অগ্রবর্তী। মিত্র ও (পশ্চাঘর্তী)
আক্রন্তনামক রাজার সহায়তা লইলে সিদ্ধি বা প্রতীকার সম্ভবপর হয়।

আবার চারিদিকের শক্রগণ হইতে। যদি যুগপৎ) ভরের উৎপত্তি ঘটে, তবে ইহার নাম সমস্ততোনর্থাপৎ। এই সমস্ততোনর্থাপদ বদি মিত্রদারা বিরোধিত হয়, তবে ইহার নাম সমস্ততোনর্থসংশয়াপৎ। উক্ত উভয় প্রকার আগদদে চল বা চুর্গবহিত অমিত্রের ও আক্রন্দের সহায়ভা সইলে সিদ্ধি বা প্রতীকার সম্বশের হয়। অথবা (দৃষ্ণামিত্রসংঘৃক্ত প্রকরণে ১ম অধিকরণের বঠ অধ্যায়ে উক্ত) পরমিপ্রা বিপদের বে সকল প্রতীকার নিরূপিত হইয়াছে—সেগুলির প্রয়োগত্ব এইছলে বিধেয়।

একদিক হইতে লাভ ও অপরদিক হইতেও লাভ সম্বৰ্ণর হইলে, ইহাকে উভরতোর্থাপথ বলা হয়। এই উভরতোর্থাপদে এবং সমস্কতোর্থাপদে যে সকল লাভগুণের কবা (১ম অধিকরণের ৪র্থ অধ্যারে এবং এই অধ্যারে, বলা ইইরাছে —ভদ্বারা মুক্ত অর্থ পাওয়ার সন্তাবনা থাকিলে, বিজিমীয়ু তাহা গ্রহণ করিবার জন্ত বানপ্রবৃত্ত হইতে পারেন। যদি এই প্রকার উভরতোর্থাপদে লাভগুণ সমান বলিয়া প্রতিভাত হয়, তাহা হইলে যে লাভটি প্রধান বা প্রশাসকলগুত্ত, অথবা নিজ দেশের সন্নিকটে অবস্থিত, অথবা কালাভিপাতের অসহন বা আসন্নকালে সন্তাবা, অথবা যাহা না পাইলে বিজিমীয়ু সয়ং নান বা হীন বলিয়া প্রতিপন্ন হইবেন —সেই লাভটি পাইবার জন্ত (বিজিমীয়ু) বানে প্রস্তৃত্ত হইতে পারেন।

এই দিক হইতে অনর্থ এবং দেই দিক হইতে অনর্থ —এইরূপ উভর বিক হইতে অনর্থের উৎপত্তি হইলে, ইহাকে উভরতোনর্থাপৎ বলা হয়। এই উভরতোনর্থাপদে এবং সমস্ততোনর্থাপদে (বিজিগীর) মিত্রগণ হইতেই সিদ্ধি বা প্রভীকার ইক্ষা করিবেন। যদি মিত্রের সহায়তা লাভ না করা যায়, তাহা হইলে বিচ্চিপীয়ু এক্ডোনর্থা-পদে নিজ প্রস্কৃতিসমূহের মধ্যে লখ্ডর প্রস্কৃতির ত্যাগপূর্বক প্রতীকারের চেটা করিবেন। আর উভয়ভোনর্থাপদে তিনি জ্যায়ান্ বা প্রশন্ততর প্রস্কৃতিত্যাগ্রারা প্রতীকারের চেটা করিবেন; এবং সমস্তভোনর্থাপদে মূল্য়ানত্যাগপূর্বক প্রতীকারের চেটা করিবেন। উক্ত প্রতীকার সম্বর্ণর না হইলে, রাজা স্বয়ং সর্বাস্ব ত্যাগ করিয়া অন্তক্ত চলিয়া যাইবেন। কারণ, (ইতিহাস হইতে) ইহা জানা যায় যে, এই প্রকার সর্বাস্ব ত্যাগ করিয়া যাইয়া যদি রাজা জীবিত থাকেন, ভাহা হইলে পুনর্বার তাঁহার স্বয়্বানলাভ ঘটিয়া থাকে, যথা লালা স্ক্র্যাক্ত (নল) ও (বৎসরাজ) উদয়ন পুনর্বার প্রাজ্য লাভ করিয়াছিলেন।

একদিক হইতে লাভ এবং অন্তদিক হইতে নিজরাজ্যের (শক্তকর্ত্ক)
আক্রমণ সন্তবপর হইলে, ইহাকে উভয়ভোর্থানর্থাপৎ বলা হয়। এইপ্রকার
আপদ উপদ্বিত হইলে, যে অর্থ গৃহীত হইলে অনর্থের প্রতীকারে প্রশােষ্ঠিত
হইতে পারে, দেই অর্থের গ্রহণার্থ তিনি যানপ্রবৃত্ত হইতে পারেন। আর তাহা
না হইলে, অর্থাৎ দেই অর্থ অনর্থ-প্রতীকারে অসমর্থ হইলে, তাহা উপেক্ষা
করিয়া রাজা নিজ রাজ্যের অভিমর্শ বা আক্রমণ নিবারণ করিবেন।
এতদ্বারা সমস্তভোর্থানর্থাপদত ব্যাধ্যাত হইল, অর্থাৎ যে প্রতীকার উভয়ভোর্থানর্থাপদ সহদ্ধে বলা হইরাছে, তাহাই এক্সলেও প্রবাজ্য ইইতে পারে।

একদিক হইতে অনর্থ নিশ্চিত, অন্তাদিক হইতে অর্থসংশয় আছে—এইরূপ ঘটিলে, ইহাকে উভয়তোনর্থার্থসংশয়াশৎ বলা হয়। এইরূপ আগদ উপস্থিত ছইলে (বিজিগীর) প্রথমতঃ অনর্থের প্রতীকার করিবেন—তাহা সিক হইলে, অর্থসংশরের প্রতীকারে চেইমান হইবেন।

ইহাধার। ইহাও ব্যাখ্যাত হইল বে, ( উভয়তোনর্থার্থসংশ্রাপদে যে প্রতীকার প্রযোজ্য )—সমস্কতোনর্থার্থসংশ্রাপদেও তাহাই প্রযোজ্য।

একদিক হইতে অর্থ নিশ্চিত, অন্তদিক হইতে অনর্থসংশয় আছে—এইক্লগ বঁটিলে, ইহাকে উভয়তোর্থানর্থসংশয়াপং বলা হয়।

এতদারা সমস্ক্রতোর্ধানর্থসংশয়-নামক আপদও ব্যাধ্যাত হইক ( অর্থাৎ এই উভয়ক্ষশ-আপদের কক্ষণ ও প্রতীকার সমান )।

উক্তপ্রকার আপদে, তিনি (রাজা, অমাত্য, জনপদ, গুর্গ, কোশ, দণ্ড ও ষিত্ররূপ) প্রকৃতিবর্গের মধ্যে পূর্ব্ব-পূর্ব্ব প্রকৃতিকে অনর্থসংশয় হইতে মোচন করিতে বস্থবান ছইকেন (অর্থাৎ পূর্ব্ব-পূর্ব্বটির অপেকার উত্তর-উত্তরটি অধ্যধান

বলিয়া প্রধানভূত পূর্ব-পূর্বটির ঘারা জনিত অনর্থনংশর প্রতীকারঘারা রক্ষা করিবেন) ৷ (ইহার নিদর্শন, যথা—: অনর্থসংশয়ে অবস্থিত মিত্র দণ্ড বা সেনার অপেক্ষায় অধিকতর প্রশন্ততর—( অর্থাৎ মিত্র হইতে অনুর্থের সংশয় অধিকতর পীডাদায়ক নহে – কিন্তু, দণ্ড হইতে উৎপন্ন অনর্থসংশ্র অধিকতর পীডাবছ হুইয়া থাকে )। সেইরূপ দও হইতে অনুর্থসংশয় ঘটিলে, ইহা কোশ হইতে উৎপন্ন অনর্থসংশারের অপেক্ষায় অধিকতর প্রশস্ততর (অর্থাৎ দণ্ড হইতে যে অনর্থসংশয় উৎপদ্ম হইতে পারে তদপেক্ষায় কোশ হইতে উৎপদ্ম অনর্থসংশয় অধিকতর পীভাবহ হইয়া থাকে) ৷ ( প্রকৃতি হুই প্রকার –পুরুষপ্রকৃতি ও দ্রব্যাস্কৃতি ) —এই সমগ্র ( অর্থাৎ উভয়প্রকার ) প্রকৃতির অনর্থসংশয় মোচন করিতে না পারিলে, (বিন্ধিগীয়ু) প্রকৃতিগুলির কোন কোন অব্যবের অনর্থনংশয় দূর করিতে যদ্মবান হইবেন। তন্মধ্যে পুরুষপ্রাকৃতির যে অবয়ব তীক্ষ ও পুরু, তাহাদিগকে বৰ্জন করিয়া, যে অবয়ব সংখ্যায় অধিক ও অমুরক্ত, তাহাদিগের অনর্থনংশর মোচন করিতে তিনি যুত্রবান হটবেন। আবার দ্রব্যপ্রাকৃতির যে অবন্ধব বেশী মূল্যবান ও ম্ছোপকারক্ষম, সেগুলির অনর্থসংশয় মোচন করিতে তিনি যত্নবান ছইবেন। সন্ধি, আসন, ও বৈধীভাব -এই তিন ( লয়ভূতা) গুণ অবলম্বন করিয়া লয়ুদ্রব্য-প্রকৃতির, এবং তর্মির্যায়ম্বারা অর্থাৎ বিতাহ, যান ও সমাপ্রায়রূপ (ওক্ষড়ত তিন) গুণ অবলম্বন করিয়া গুরুদ্রবা-প্রকৃতির অনর্থদংশয় মোচন ক্রিতে তিনি মুস্বান্ ইইবেন।

ক্ষয় (শক্তি ও সিদ্ধির অপচয় , স্থান (শক্তিও সিদ্ধির ওদবস্থতা) ও রিদ্ধি (শক্তিও সিদ্ধির উপচয়) — এই তিনটির মধ্যে (বিজিপীরু) পর-পরটি প্রাপ্ত হইতে ইচ্ছা করিবেন। কিন্তু, এই ক্ষয়াদির প্রতিলোমজনেও (বিজিপীরু) এইগুলিকে পাইতে ইচ্ছা করিতে পারেন (অর্থাৎ রিদ্ধি অপেক্ষায় ক্ষয়কে ইচ্ছা করিতে পারেন ), বদি তিনি মনে করেন যে, তিনি সেরপ করিলে ভবিশ্বতে র্দ্ধির বিশেষ বা অতিশর লব্ধ হাতে পারে।

এই প্রকারে দেশনিমিত্ত আপদের ব্যবস্থাপন উক্ত হইল। এতদ্বারা বাত্রা বা বানের আদি, মধ্য ও অস্তে সক্তাব্য অর্থ, অনর্থ ও সংশক্ষের প্রাধি ও প্রতীকারও ব্যাধ্যাত হইল, ব্রিতে হইবে।

যদি বাজার প্রারম্ভে অর্থ, অনর্থ ও দংশরের যুগপং বোগ দৃষ্ট হর, তাহা ইইলে অর্থ প্রহণ্ট প্রেরম্বর—কারণ, অর্থের সহায়তায় পার্কিগ্রাহ ও আ্সারেম ( বাজবোর মিত্রের ) প্রতিঘাত সম্বরণর হর এবং ক্রর, ব্যর, প্রবাদ, প্রত্যাদের বোতবাকর্ত্তক অপভ্রত ভূমাদির পুন্র্র্রহণ), ও মূলের ( রাজধানীর ) রক্ষণবিষ্
রে অর্থেরই অপেক্ষা থাকে। অর্থের স্থার, অনর্থ ও সংশয়ও স্বভূমিন্থিত বিজিগীযুর পক্ষে সুধ্যাধ্য হয়।

এতদারা যাত্রার মধ্যেও অর্থ, অনর্থও সংশ্রের প্রাণ্ডিও ডৎপ্রতীকার ব্যাখ্যাত হইল।

কিন্ধ, যাত্রার অন্তে কর্শনীর শত্রুকে কৃশ বা নির্বাদ করিয়া ও উচ্ছেদনীর শত্রুকে (মূলত: ) উচ্ছিন্ন করিয়া (পরভূমিতে দ্বিত বিজিপীরুর পক্ষে) অর্থ গ্রহণ করাই শ্রেয়ন্বর; অনর্থ ও সংশ্র শ্রেয়ন্বর হইতে পারে না, কারণ, শত্রু হইতে সর্বাদ বাধাবিদ্যের ভর থাকে।

( এই পর্যন্ত পুরোগ বা প্রধান সামবারিককে লক্ষ্য করিয়াই বিধি নিবদ্ধ হইরাছে, কিন্তু, ) সামবারিকগণের মধ্যে দিনি অপুরোগ অর্থাৎ অপ্রধান, উাহার প্রতি যাতাে বা আক্রমণের মধ্য ও অন্ত অবস্থায় সভ্ত অনর্থ ও সংশরের প্রতীকারই প্রেয়ন্থর, কারণ, ভাঁহার পক্ষে প্রতিবন্ধরহিত হইয়া অন্তত্ত চলিয়া যাইবার সন্ধাননা উপন্থিত হইতে পারে।

অর্থ, ধর্ম ও কাম — এই তিনটিকে অর্থত্তিবর্গ বলা হয়। ইহার মধ্যে পূর্ব্ব-পূর্বটিকে পাওয়াই অধিকতর শ্রেয়ন্তর, অর্থাৎ কাম হইতে ধর্ম ও ধর্ম হইতে অর্থ ই প্রশাস্ততর।

অনর্থ, অধর্ম ও শোক—এই তিনটিকে অনর্থত্রিবর্গ বলা হয়। ইহার মধ্যে পূর্ব্ব-পূর্বটির প্রতীকার কয়াই অধিকতর শ্রেয়ন্তর :

অর্থ ও জনর্থ, ধর্ম ও অধর্ম, কাম ও শোক—এই তিনপ্রকার ধুগ্রের মধ্যে, প্রত্যেকের পরস্পর সংশার উপ। হত হইতে পারে বিশিরা—এই তিনটিকে সংশার দ্বিবর্গ বলা হয়। ইহাদের প্রত্যেকের উত্তরপক্ষটির ( অর্থাৎ অনর্থ, অধর্ম ও শোকের ) প্রতীকার সাধিত হইলে, পূর্বপক্ষটির ( অর্থাৎ অর্থ, ধর্ম ও কামের ) গ্রহণ করাই শ্রেষ্কর।

এই প্রান্ত কালের অবস্থাপন অর্থাৎ যাত্রার আদি, মধ্য ও অন্তকাশিক অর্থানর্থাদি-সম্বনীয় ব্যবস্থা নিরূপিত হইল। এইখানেই (অর্থ, অনর্থ ও সংশর্যুক্ত সর্বপ্রকার) আপদ প্রপঞ্চিত হইল।

(উক্ত আপদসমূহের প্রভীকারার্থ সামাদি উপায়সমূহের মধ্যে কোন্টা কি ভাবে প্রধােকা ভাষা উক্ত হইতেছে।) পুত্র, ভাই ও বন্ধুবিবয়ক আপদে, সাম ও দানপ্রদোগধারা দেই আপদগুলির প্রতীকার সমূচিত হয়; আবার আপদগুলি পোর, জানপদ, দণ্ড বা দেনা ও রাষ্ট্রমুখ্যাদি-বিষয়ক হইলে তৎপ্রতীকার দান ও ভেদ-প্রয়োগদারা সমূচিত হয়; এবং আপদগুলি যদি সামস্ত ও আটবিকবিষয়ক হয়, তাহা হইলে ভেদ ও দণ্ডপ্রয়োগ সমূচিত হয়।

উক্ত নিয়মাস্সারে প্রবোজ্য এইসকল সামাদি উপায়ে আপদদিদি ঘটিলে, ইহাকে 'অপ্রপোম' ( অপ্রকৃত্র ) দিদি বলা যায় ; ইহার বিপর্যায় ঘটিলে এই আপদদিদিকে 'প্রতিপোম' (প্রতিকৃত্র ) দিদি বলা হয় ( অথাৎ পুশ্রাদি দ্যোহরতি হইলে তাহাদের প্রতি ভেল ও দণ্ডও প্রয়োজনমন্ড প্রবোজা, এমন কি সামস্কাদি যদি লাখ্যগুলবিশিষ্ট হয়, তাহা হইলে তাহাদের প্রতি সাম ও দানও প্রবোজা হইতে পারে )। মিত্ররাজ ও অমিত্ররাজবিষয়ক আপদে দিদি বা প্রতিক্রিয়া 'ব্যামিশ্র' বা সংকীর্ণও হইতে পারে ( অর্থাৎ বিকারপ্রশামনের অস্কর্মণ করিয়া উপার্চত্ইরমধ্যে যে-যে উপায়ের মিশ্রণ সমূচিত হইবে তিমিশ্রণদারাই প্রতীকার বিধ্যে )। কারণ, উপায়গুলি পরম্পরের সহকারী হইয়া থাকে।

শক্রমন্ত্রী যে অমাত্যগণ কুজন্দানিদানে কত্য বলিয়া শক্ষান, তাঁহাদের প্রতি সাম প্রযুক্ত হইলে, ইহা দানাদি অবশিষ্ট উপায়গুলিকে নিবর্তিত করে থে অর্থাৎ দেগুলির প্রয়োগের আর আবক্ষকতা থাকে না)। আবার শক্রর থে অমাত্যগণ দৃশ্ব হইয়াছেন, তাঁহাদিগের প্রতি বিজিমীর দানরণ উপায় প্রয়োগ করিবেন (ভেদ ও দণ্ডের আবক্ষকতা হইবে না)। আবার শক্রর অমাত্যগণ-মধ্যে বাঁহারা সক্ষবদ্ধ ইইয়াছেন, তাঁহাদিগের প্রতি ভেডেই প্রযোজা (দণ্ডের প্রয়োজন হইবে না); এবং যে সকল অমাত্য শক্তিশালী ভাঁহাদের প্রতি কেবল দণ্ডক্ষপ উপায়ই প্রযোজা।

আশহসমূহের গুরুত্ব ও লগুড়ের যোগ ব্ঝিয়া উপায়গুলির লি**রেয়াগ**ে বিকল্প ও সমূচেত্ব প্রযোজ্য হইয়া থাকে।

'কেবল এই উপায়দ্বারাই কার্যাসিদ্ধি (বা আণৎপ্রাতীকার) হইবে, অন্ত উপায়দ্বারা নহে'—এইরপ ক্ষেত্রে উপায়টিকে 'নিয়োগ' বলা হয়। 'এই উপায়-দারা অথবা অন্ত উপায়দ্বারা কার্যাসিদ্ধি হইবে'—ইহার নাম 'বিকল্প'। আবার 'এই উপার্থারা ও অন্ত উপায়দ্বারা কার্যসিদ্ধি হইবে'—ইহার নাম 'সমুচ্চর'।

দাম, দান, ভেদ ও দও—এই চারি উপারের একযোগ ঘটিলে অর্থাৎ ইহার। পৃথক্তাবে প্রমুক্ত হইলে, চারিপ্রকার ভেদ পাওয়া যায় ( যথা—কেবল সাম, কেবল দান, কেবল ভেদ ও কেবল দও)। আবার এইগুলির মধ্য হইভে ভিন-ভিনেউকে যুক্ত করিলে চারিপ্রকার ভেদ পাওয়া বার (বথা—দাম-দান-ভিদ, সাম-দান-দণ্ড, সাম-ভেদ-দণ্ড, ও দান-ভেদ-দণ্ড)। আবার ইহাদের স্থই সুইটি যুক্ত করিলে হয় প্রকার ভেদ পাওয়া যায় (যথা – সাম দান, সাম-ভেদ, সাম-দণ্ড, দান-দণ্ড ও ভেদ দণ্ড)। আবার ইহাদের চারিটিকেই যুক্ত করিয়া এক প্রকার ভেদ পাওয়া যায় (যথা – সাম-দান-ভেদ-দণ্ড)। সর্বাসমেত উপায়গুলির এই পঞ্চদশ প্রকারের (অলুলাম) ভেদ পাওয়া বায় (যথা – দণ্ড, ভেদ, দান ও সাম পৃথকভাবে চারি প্রকার; দণ্ড-ভেদ-দান, দণ্ড-ভেদ-সাম, ভেদ-দান-সাম ও দণ্ড-দান-সাম — ত্রিযোগে চারি প্রকার; দণ্ড-ভেদ-দান, দণ্ড-ভেদ, দণ্ড-দান, ভিদ-দান ও দান-সাম ভ দান-সাম — ব্রিযোগে চয় প্রকার; দণ্ড-ভেদ-দান-সাম — এক্যোগে একপ্রকার; সর্বস্থেত পঞ্চদশ প্রকার)।

এই উপায়গুলির মধ্যে এক উপার অবলম্বনে নিদ্ধি বা প্রতীকার লাভ হইলে, ইহাকে একনিদ্ধি বলা যায়। ছইটি উপায়ের যোগে নিদ্ধি ঘটিলে, ইহাকে দিনিদ্ধি বলা যায়। তিনটি উপায়ের যোগে নিদ্ধি লাভ হইলে, ইহাকে ত্রিনিদ্ধি বলা বায়। এবং চারি উপায়ের যোগে নিদ্ধি ঘটিলে, ইহাকে চতুঃনিদ্ধি বলা যায়।

অর্থ ধর্মের মূল বা হেতু হয়, এবং অর্থ কামতোগের সাধকও হয় — এই জল ধর্মা, অর্থ ও কামের অন্থবদ্ধ ঘটায় বলিয়া, অর্থজনিত সিদ্ধিকে সর্বার্থসিদ্ধি বলা হয়। এই পর্যান্ত (অপনয়প্রতব মাছ্যী আপদের সর্বপ্রতার প্রতীকার বা) লিছির কথা বলা হইতেছে। পিছের কথা বলা হইতেছে। দৈব বা পূর্বজন্মার্জিত ধর্মাধর্মজনিত আপদ এইপ্রকার হইতে পায়ে, যথা— অয়ি, জল, বায়ি মহামারী, রাষ্ট্রবিল্লব বা রাষ্ট্র হইতে পলায়ন, ঘতিক্ষ, ও (মৃ্বিকাদির অন্তেথিক উৎপত্তিরূপ) আমুরী সৃষ্টি। এই সকল দৈবী আপদের সিদ্ধি বা উপশ্রম দেবতা ও প্রান্ধানের প্রতি প্রধামদারা খাটিয়া থাকে।

আবৃষ্টি ( বর্ষণের একান্ত অভাব ), অভিবৃষ্টি, অথবা, আহ্নী স্টিরূপ যে আশদ উপস্থিত হয়—অথর্ব্যদোক্ত শান্তিকর্ম ও দিছপুরুষদিগের দ্বারা কৃত শান্তিকর্মগুলিও তৎদিদ্ধির বা তৎপ্রশাদনের হেতু হইতে পারে ॥ ১ ।

কোটিলীর অর্থলাত্তে অভিযাসংকর্ম-নামক নবম অধিকরণে অর্থ, অনর্থ ও সংশরষুক্ত আগদের নিরূপণ ও উপার্যবিকরের প্রয়োগজনিত সিন্ধি-নামক সপ্তম অধ্যার ( আদি হইতে ১২৮ অধ্যার ) সমাধ্য। অভিযাম্ভৎকর্ম-লামক বর্ম অধিকরণ সমাধ্য।

# **দাং**গ্রামিক—দশম অধিকরণ

#### প্রথম অধ্যায়

#### ১৪৭ প্রকরণ - ক্ষরাবার বা সেনা-বাসস্থানের নিবেল

বান্ধবিশ্বাকৃশল ব্যক্তিগণদার। প্রশন্ত বা অন্ধ্যাদিত বান্ধভূমিতে, নায়ক (সেনাপতি), বর্দ্ধকি (স্থপতি) ও মৌহর্ভিকগণ (শুভাশুভকালবিজ্ঞায়ী জ্যোভিধীরা)—রত বা গোলাকতি, দীর্ঘ বা চত্রন্ত (চতুকোণবিশিষ্ট), অধবা নির্মাণভূমির যোগ্যভান্থসারে অন্থাকারবিশিষ্ট চারিটি দার ও (উত্তর-দক্ষিণে আয়ত তিনটি, সর্বসমেত) ছয়টি পথ-যুক্ত এবং নায়প্রকার মহল্লা-শোভিত স্কলাবার বা সেনাবাসন্থান নির্মাণ করাইবেন। (শক্ত হইতে আক্রমণের) ভয় উপস্থিত হইলে, অথবা, চিরকাল দেখানে অবন্থানের প্রয়োজন হইলে, সেই স্কলাবার চতুর্দ্ধিকে থাত বা পরিখাদারা বেষ্টিত হইবে, এবং ইছা বপ্র (পরিধা হইতে উদ্ধৃত মৃত্তিকাকৃট), সাল (প্রাকার), দার (এক প্রধান দার) ও অট্টালক (উপরিগৃহ)-দারা সম্পন্ন হইবে।

( ক্ষাবারের বাজভূমির ) মধ্যভাগের উত্তরত্ব মবমাংশে রাজার বাদ্যান নির্মাণ করিতে হইবে—ইহার প্রায়াম বা দৈর্ঘ্য ইইবে শতধন্তঃপরিমিত ( ২র অধিকরণে ১০শ অধ্যায় দ্রষ্টরা) এবং ইহার বিন্তার হইবে পঞ্চাশংধন্তঃপরিমিত । রাজবান্তকের পশ্চিম অর্জাংশ অন্তঃপুর নির্মাণ করিতে হইবে । অন্তঃপুরের সমীপে অন্তর্জ্যংশিক দৈন্ত অর্থাৎ অন্তঃপুরের রক্ষী দৈন্ত নিবেশিত করিতে হইবে । রাজবান্তকের পুরোভাগে উপক্ষান অর্থাৎ রাজার দর্শনার্থী জনগণের বৈঠকধানা নির্মাণ করিতে হইবে । ইহার দক্ষিণদিকে রাজকোশ, শাসনকরণ ( অক্ষণটল বা সরকারী শাসনবিভাগ ) ও কার্যাকরণ ( কার্যা বা ব্যবহার-দর্শনন্থান ) নির্মাণ করিতে হইবে । ইহার বামভাগে রাজার বাহনার্থ হন্তী, কর্ম ও র্থসমূহের স্থান নির্মাণ করিতে হইবে । রাজবান্তকের পৃষ্ঠভাগে শতধন্তঃ-পরিমিত পরশান্তরালবিশিষ্ট চারিটি পরিক্ষেপ বা সীমারত্ব অঞ্চল থাকিবে—প্রথমটি শকটপরিক্ষেপ অর্থাৎ হাহা শকট্মারা পরিবেষ্টিত স্থান, দ্বিতীয়টি মেথী-প্রতিপরিক্ষেপ অর্থাৎ কট্রিকুক্তসমূহের শাথাবিস্তারদ্বায়া রুজগরিক্ষেপ বা বাট, তৃত্বিকি অর্থাৎ ( দাক্ষমর ) স্তর্জ্যরা রুজ বাট, এবং চতুর্ব্তি

সালপরিক্ষেপ অর্থাৎ প্রাকারদ্বারা কৃত বাট। প্রথমটিতে ( শক্টপরিক্ষেপে )
পুরোভাগে মন্ত্রী ও পুরোহিতের নিবাদ রচিত হইবে, ইহার দক্ষিপদিকে
কোষ্টাগার ও মহানদ ( রন্ধনশালা ) এবং বামদিকে কুপ্যাগার বা কুপাগৃহ ও
আর্থাগার থাকিবে। বিতীয়টিতে ( মেনীপ্রভিতিপরিক্ষেপে ) মোল ও ভ্রুত্ত
সৈন্তের জন্ত, অর্থ ও প্রথের জন্ত এবং সেনাপতির জন্য নিবেশ রচিত হইবে।
তৃতীরটিতে ( ভর্জপরিক্ষেপে ) হন্তী, শ্রেণীবল ও প্রশান্ত্য-নামক মহামাত্রবিশেষের
নিবেশ নির্মিত হইবে। চতুর্থটিতে ( সালপরিক্ষেপে ) বিটি বা কর্মকর্বর্গ,
নারক ( সেনাপতিদশকের প্রধান অধিকারী ) এবং নিজপুরুষদ্বারা অধিঠিত
মিক্রবল, অমিত্রবল ও অটবীবল নিবেশিত হইবে। বণিক্ ও বেম্মাদিগের জন্ত
রাজপথের সমীপে নিবাদ ধার্য হইবে। সর্ব্ববহির্দ্ধেশে ল্বকে বা ব্যাধ ও শ্বগদী
অর্থাৎ কুকুরজীবী এবং ( শক্রের আগমন সংজ্ঞান্বারা প্রকাশার্থ ) তুর্য বা ভেরী
ও অগ্নিসহিত গুঢ়বেণী রক্ষকদিগের স্থান বাবস্থিত থাকিবে।

বেদিক হইতে শক্রদের আপতন বা আগমন সম্ভবপর মনে হইবে, রাজা দেদিকে কুপকুট আর্থাৎ তৃণাদিছের কুপ, অবপাত বা গর্ত্ত, এবং কন্টকযুক্ত কলকাদি স্থাপিত রাধিবেন। তিনি (পদিক, দেনাপতি ও নায়ক-নামক দেনাধিকারীদিগের অধীন মৌলাদি ছয় প্রকার ) দেনার অষ্টাদশ বর্গের অধিঠাত্জনের বিপর্যায় বা অদলবদল করাইবেন (বাহাতে শক্রকর্ত্তক উপজ্ঞাপের কোন ভয় না থাকে)। তিনি শক্রর অপদর্প বা গুণ্ডচরগণের চারজ্ঞানার্থ দিবদেও প্রহরের বা পাহারার বন্দোবস্ত করিবেন। তিনি (দৈনিকদিগের মধ্যে) পরশ্বর বিবাদ, স্করাপানাদি, সমাজ বা কোত্তকের গোর্গী, ও ল্তে (বা জ্বান্তের) বারণ করাইবেন। প্রবেশ ও নির্গমের জন্ত মুদ্রা বা হাজপান্তের ব্যবহারও রক্ষিত হইবে। (মপ্রিকর রাজরহিত মূল্যান বা রাজধানীকে প্রকা অর্থীয়গণকে ধরিয়া ফেলিবেন (গ্রেণ্ডার করিবেন) ঘাহারা শাসন বা রাজদেখ-বাত্তরেকে দেনা হইতে নির্গ্ত হইয়াছে।

প্রশান্তা ( তথামক মহামাত্র ) ( রাজপ্রস্থানের ) আগেই স্থপতি ও কর্মকর-স্থারা সম্যাগ্ডাবে পথের নানারূপ রক্ষার ( পথের নানারূপ অস্থবিধা দূর করার ) ক্যার্থা ও ( নির্কাপ্রদেশে ) জলাদির ব্যবস্থা করাইবেন । ১।

কৌটিলীয় অর্থশান্তে সাংগ্রামিক-নামক দশম অধিকয়ণে ক্ষাবার-নিবেশ-নামক প্রথম অধ্যার (আদি ছইতে ১২৯ অধ্যায় ) সমাস্ত ।

## দ্বিতীয় অধ্যায়

## ১৪৮-১৪৯ প্রকরণ—**ক্ষাবারের দিকে রাজার প্রস্থাণ ও বলব্যসন ও** প্রকটের সময়ে নিজনেলা-রক্ষার উপায়

প্রাম ও অরণাসমূহের ভিতর দিয়া পথ চলিবার সময়ে যে ছানে নিবেশের দরকার হইবে, সেধানকার তুণ, কার্চ ও জলযোগসহদ্ধে ইয়ভা নির্ণয় করিয়া ও তৎ-তৎ ছানে পৌছান, থাকা ও গমন করার সময় (পূর্ব হইতেই) নির্ণয় করিয়া, (বিজিগীয়ু) যাত্রায় উপ্তত হইবেন প্রাচীন কোনও টীকাকারের মডে 'য়ান'-শক্দারা পক্ষমাসাদি ব্যাপিয়া অবস্থান ব্ঝায়, 'আসন'-শক্দারা পাঁচে-ছয়িনের অবস্থান ও 'গমন'-শক্দারা একদিন্যাত্র অবস্থান ব্ঝায়)। যতথানি ভক্ত (আয়াদি) ও উপকরণের (য়য়াদির) আবশ্যকীয়তা থাকিবে, তৎ-প্রভীকারার্থ তাহার দিগুণ ভক্ত ও উপকরণ (তিনি) সলে সক্ষে বাহিত করিবেন। যদি তিনি বাহনাদির ব্যবস্থা করিতে অশক্ষ হয়েন, তাহা হইলে সৈন্তদিবের উপরই প্রয়োজনীয় ভক্ত ও উপকরণের বহনকর্ম অর্পণ করিবেন। অথবা, তিনি তৎ-তৎ নিবেশগুলির কোন কোনও স্থানে ভক্ত ও উপকরণ পূর্ব হইতেই সঞ্চয় করিয়া (জয়া করিয়া) রাথিবেন।

(সেনার) অগ্রভাগে নায়ক (সেনাপতিদশকের অধিকারী) যাইবেন।
মধ্যত্বানে রাজার অন্তঃপুরস্থ রাজ্ঞীগণ ও রাজা শয়ং থাকিবেন। গুইশার্বে
বাহধারা শক্রর আঘাত নিবারণ জন্ম অখারোহী সৈনিকগণ থাকিবে। সেনাচক্রের পশ্চান্তাগে হস্তী থাকিবে। সকল দিক হইতে প্রসারদশ্যৎ অর্থাৎ প্রভৃত বন্ধ উপজীব্য এবং গ্রীহিত্গাদি উপকরণ নেওয়া হইবে। স্বদেশ হইতে অবিক্ষিয়ভাবে অয়াদি আজীবদ্রব্যের আগমকে বীবধ বলা হয়। মিত্রের সেনাকে আসার বলা হয়। রাজকলত্রের অর্থাৎ অন্তঃপুরস্থ রাজ্ঞীদিগের ছানকে অপসার বলা হয়। সেনার পশ্চান্তাগে সেনাপতি পর্যায়্রজনে (অর্থাৎ নিজনিক্ষ সেনার পশ্চান্তাগে শয়ং) নিবিষ্ঠ থাকিবেন।

দেনার পুরোভাগে শক্রর আক্রমণের সন্থাবন। হইলে, (বিজিপীরু মকর-বুংহ-নামক বৃংহ রচনা করিয়া চলিবেন। পশ্চান্তাগে শক্রর আক্রমণ আশন্তিত হইলে, তিনি শক্টবুংহ রচনা করিয়া চলিবেন। উভয় পার্শে শক্রর আক্রমণের ভয় থাকিলে, তিনি বজ্লবুঃহ রচনা করিয়া চলিবেন। চতুর্দ্ধিক হইতে শক্রর অভ্যাথাত মনে করিলে, তিনি সবব তৈ ভিজ-বুন্ই রচনা করিয়।
চলিবেন। এবং একজন একজন করিয়। গস্তব্যমার্গে শক্রর আক্রমণ আশহ।
করিলে, তিনি সুচিবুরুহ রচনা করিয়। চলিবেন (এই অধিকরণের বর্চ অধ্যায়ে
এই সকল 'বৃহে' নিরূপিত হইয়াছে )।

পথে বদি কোনও প্রকার দৈখী ভাব উপস্থিত হয়, অর্থাৎ এই মার্গ দিয়া গমন করিলে ইহা অস্কুল বা দেইমার্গ দিয়া গমন করিলে ইহা প্রতিকূল হইবে এইরূপ মনে হয়, তাহা হইলে তিনি নিজের (রথাদির) গমনের জন্ত উপযুক্ত ভূমি দিয়াই যাইবেন। কারণ, প্রতিকূল ভূমিতে গমনকারী দিগের পক্ষে, অস্কুল ভূমি দিয়া গমনশীল রাজগণ প্রতিকূল হইরা দাঁড়ার, অর্থাৎ তাঁহারা আক্রমণীয় হয়েন না। (একদিনে) (চারিক্রোশ পরিমিত) এক বোজন পথ চলিলে এই গতিকে অধম গতি বলা হয়; দেড় বোজন চলিলে ইহাকে মধ্যম গতি বলা হয়; আরে, মুই যোজন চলিলে ইহাকে উত্তম গতি বলা হয়। অথবা, (দেশকাল ব্যিয়া) যতথানি সম্ভবপর হয়, ততথানি গতিও হইতে পারে, অর্থাৎ তুই বোজনের অপ্রশাহাও অধিক পথ চলা যাইতে পারে।

( প্রস্থিত রাজার পক্ষে শনৈ: শনৈ: যান ও শীঘ্র শী্র যান কখন অবলয়ন করা আবশ্যক, দে-বিষয়ে বলা হইতেছে, যে--- ) বিজ্ঞিগীয়ু যুখন দেখিবেন যে. নিক্ষের স্থবিধার জন্ম ডিনি কোনও রাজাকে আশ্রয় করিবেন,অথবা (ধনধান্তাদি-সম্পন্ন ) হইলে শত্রুকে নষ্ট করিবেন, অথবা নিজের পার্ফি ( পুষ্ঠশক্র ), আসার (মিত্রবল), মধ্যম ( অবিবিজিপীযুর ভূমানস্তর বাজা) ও উদাসীন (অবি-বিজ্ঞিনীযু-মধামের বাস্থ ) রাজাকে প্রশমিত করিতে হইবে, অথবা, দৃষ্কট বা विषय गार्गिक ऋगम कतिएंड इटेर्टि ; अथवा, निस्कृत कोम (धनमध्याह), নিজের দণ্ড বা বিক্ষিপ্ত সেনার মিলন, মিত্রবল, অমিত্রবল ও অটবীবলের আগমন, বিষ্টি বা কর্মকরদংগ্রহ, ও দেনার অত্নত্ব ঋতুর প্রতীক্ষা করা আবিষ্টক; অথবা, শত্রুৰাহা কৃত গুর্গসংস্কারকর্মের ক্ষুর, ভাঁহার নিচয় বা ধান্তাদিনক্ষের ক্ষয় এবং ভদীয় বিহিত রাজ্যরক্ষাকার্ষ্যেরও ক্ষয় উপস্থিত হইবে ; व्यथवा, मुक्कद्र (धनमानामिषादा) को उदेगत्त्रत्र यात निर्द्शन वा (धन व्यामित्यः) অথবা, তদীর মিত্রবলের মনেও নির্কেদ আসিবে, অথবা, শক্রর উপস্কৃপিতারা ( শক্তর প্রতি বিজিগীয়র অভিযোগ-বিষয়ে ) শীজভার জন্ম উপজাপ করে না; অংখবা, শক্ত স্বয়ং ভাঁছাব (বিজিগীবুর) অভিপ্রায় (বিনা মুদ্ধে) পুরণ ক্রিবেন, তাহা হইলে তিনি তখন শলৈ: শলৈ: বাত্তা ক্রিবেন। ইহার

বিপরীত ঘটিলে অর্থাৎ ধথোক্ত নিমিকগুলির অভাবে, তিনি শীক্ত শীক্ত যাত্র। করিবেন।

(সেনার নম্পাদিতরণের আবিশ্যক হইলে,) বিজিপীর হাজী, ভালসংক্রম (অর্থাং ভালোপরি কার্চাদিধারা রচিত চলিবার রাজা), সেভ্বন্ধ, নৌকা, কার্চ্চাহ্বাত ও বেণুসংঘাতদ্বারা, এবং অলাব্ (লাউ-কোল), চর্মকরও (চামজার বাক্স), দৃতি (ভারা), প্লব (উভূপ বা ভেলা), গণ্ডিকা (গণ্ডাক্ষতি কার্চ্চাহ্বলকথারা নিশ্মিভ প্লবনসাধনবিশেষ) ও বেলিকা বা রজ্জ্বারা দেনার জলতরণ ব্যবস্থা করিবেন ১

যদি (ন্যাদিতরণস্থানের) তীর্থ বা খাট শক্ষারা প্রতিক্রম হয়, ভাছা হইলে তিনি অন্ত স্থান দিয়া অর্থাৎ ঘাটবিহীনস্থান দিয়া হস্তী ও অধ্যের সাহায়্যে রাত্রিতে সেনাকে জল পার করাইয়া (কৃট্যুজবিক্তপ্রপ্রকরণ ১০০০ দ্রন্তবা) সন্তকে গ্রহণ করিবেন। জলবিহীনস্থানে চক্রুস্থ বাহন অর্থাৎ শকটাদি ও বলীবর্দাদি চতুম্পদ অস্তবারা পথের পরিমাণ বুঝিয়া ও ইহাদের বহনশক্তি পর্য্যালোচন করিয়া তিনি জল বহন করাইবেন। (এই পর্যাস্ত স্কলাবারপ্রয়াণ নির্দ্রিক্ত হইল।)

বিজিপীর যথন দেখিবেন যে, তাঁহার নিজের সৈন্তকে দীর্ঘ কান্তার পথে চলিতে হইবে, অথবা জলহাঁন পথে বাইতে হইবে, অথবা ইহা তৃণ, কঠি ও জলহাঁন হইয়াছে, অথবা ইহা কঠিন পথে চলিতেছে, অথবা ইহা শুকুর অভিবাগে অবদর ইইয়া পড়িয়াছে, অথবা ইহা ক্থা, পিশাসা ও পথচলার জ্বস্তু হায়াছে, অথবা ইহা পদ্ধগভীর ও জলগভীর নদী, গুহা, ও শৈল পার হইবার জ্বতা এহার আরোহণ ও অবরোহণ-কার্য্যে ব্যাপৃত রহিয়াছে, অথবা ইহা একারন পথে, পর্বতবিহম পথে বা তুর্গম পথে বহুসংখ্যার একপ্রিত হইরা শড়িয়াছে, অথবা নিবেশস্থানে ও প্রস্থানসময়ে বিসম্লাহ অর্থাৎ শক্ষকবচাদিবিহীন ইইয়াছে, অথবা ইহা ভোজনে ব্যাপৃত আছে, অথবা ইহা দীর্ঘ পথ চলিয়া বিশ্রাছ হইরাছে, অথবা ইহা নিদ্রাগত হইরাছে, অথবা ইহা ব্যাধি, মরক ও গ্রিজ্বারা পীড়িত হইরাছে, অথবা ইহার পদাতিক, অয় ও হন্তী ব্যাধিপ্রস্থান্ত স্বর্থান্ত স্বর্থান্ত কার্যান্ত করিছের আনহার ব্যাপ্ত কার্যান্ত, তথা ইহার ব্যাধিপ্র কর্যান্তর বলবাসন উপস্থিত হইরাছে, তাহা হইলে তিনি সেই ইনান্তের বক্ষার ব্যবস্থা করিবেন। এবং তিনি (উক্তবিশেবযুক্ত) পরসৈত্তর থতিলাতের চেটা করিবেন।

(শক্রর সংখ্যা জানিতে হইলে) বিজিমীর বধন শক্তকে একারন মার্গে ধাইতে দেখিবেন, তথন সেই পথ দিরা সৈনিক পুরুবদিগকে নির্গমনসময়ে গণনা করিয়া, এবং হন্তীর প্রাস বা ভোজাসংখ্যা, ইহাদের শব্যা ও আন্তরণসংখ্যা, চুরীর সংখ্যা, এবং ইহাদের শক্তা ও আয়ুধ-সংখ্যা গণনা করিয়া শক্রবলের ইরভা জানিয়া লইবেন। এবং তিনি নিজের বলের এই প্রকার ইয়ভা-জ্ঞাপক বিষয় শৃক্ষাইয়া রাখিবেন।

(বিজিগীরু রাজা) অগসার (পরাজরসমরে পলাইর। বাইবার স্থান) ও প্রতিগ্রহ (আগত শত্তেসনার গ্রহণ করার স্থান)—এই তুই স্থানমুক্ত পর্বতত্বর্গ ও নদীর্হেগ নিজের পূর্চে করিরা অর্থাৎ স্থাজিত রাখিরা, নিজের অস্থুওণ ভূমিতে যুদ্ধ করিবেন ও সেনানিবেশ রচনা করিবেন ॥ ১॥

কোটিশীর অর্থশান্তে সাংগ্রামিক-নামক অধিকরণে স্কাবারপ্রয়াণ ও বলবাসন ও পথকটের সময়ে নিজসেনারকার উপায়-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় (স্বাদি ইইতে ১৩০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## তৃতীয় অধ্যায়

১৫০-১৫২ প্রকরণ—কুটযুদ্ধের বিকল্প বা ভেদ; নিজঠৈসভোর প্রোৎসাহন, ব্যুহাদিরচনাছারা পরবলাপেক্ষায় স্বতলর ব্যবস্থাপন

(বিজিগীর) শক্তিশালী ও অধিকসংখ্যক বলধার। সংযুক্ত হইরা, (শক্তর প্রতি) উপজাপের ব্যবস্থা করিয়া এবং যুক্ষোগ্য ঋতু বা সময়কে নিজের অপুকৃত্ত মনে করিয়া, স্যোগ্য প্রদেশে অবস্থানপূর্বক প্রকাশযুদ্ধ স্বীকার করিতে পারেন। তিনি বিশরীত অবস্থার কৃট্যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইবেন।

পেক্র ) বলবাসন (৮)৫ ফ্রাইব্য) ও অবক্ষদ্দনকাল ( অর্থাৎ নীর্থকান্তার গমন ও জলহীন অবস্থাদির প্রাথি ) উপস্থিত হইলে, বিজিগীর শক্তকে আক্রমণ করিতে পারেন; অথবা স্বয়ং অন্তর্গুল ভূমিঙে স্থিত হইয়া প্রতিকৃল ভূমিঙে স্থিত শক্তকে আক্রমণ করিতে পারেন। অথবা শক্তর ( অমাত্যাদি ) প্রকৃতিবর্গকে (উপজাপাদিলারা) নিজ বশে আনিতে পারিলে, তিনি অন্তর্গুল ভূমিতে অবস্থিত শক্তকে আক্রমণ করিতে পারেন, অথবা, নিজের দ্যাবল, অমিত্রবল ও অটবীবলখারা প্রাক্তর প্রদান করিয়া ( নিজের জরবিসানে ) প্রতিকৃলভূমিতে অবস্থিত

শক্রকে হনন করিতে পারেন। (নিজের যোগ্য ভূষিতে) শত্রুর সেন। সংহত-ভাবে অবস্থিত থাকিলে, তিনি শত্রুকে হন্তীর দারা ছিন্নভিন্ন করিয়া দেওয়াইবেন।

প্রথমতঃ ভক্ষ বা পরাজয়প্রদানবশতঃ ছিন্ন ও ভিন্ন (অর্থাৎ সংঘবিল্লিষ্ট )
শক্রসেনাকে, (বিজিপীরুর নিজ দেনা) অভিন্ন বা সংহত থাকিয়া প্রভাবর্তনপূর্বক আবাত করিবে। সম্মুখে আক্রমণ করাতে প্রায়নপর বা বিমুখ শক্রসেনাকে ভিনি পশ্চাদ্দেশ হইতে হত্তী ও অথবারা অভিহত করিবেন। পশ্চাদ্দেশ
হইতে আক্রমণ করাতে প্রায়নপর বা বিমুখ শক্রসেনাকে সম্মুখিদিক হইতে
শোধ্যবং সৈক্সবারা ভিনি অভিহত করিবেন।

পুরোভাগে ও পৃষ্ঠভাগে যেভাবে আক্রমণ নিরূপিত হইল—দেইভাবে চুই গার্থের অভিঘাতও ব্যাথ্যাত হইল। অথবা, যেদিকে শক্রর দৃষ্যবদ বা কর বা অসার বল থাকিবে, তিনি দেদিকে অভিঘাত চালাইবেন। দশ্বংথ বিষম ভূমি দেখিলে তিনি পৃষ্ঠদেশে আক্রমণ চালাইবেন। পৃষ্ঠদেশে বিষম ভূমি দেখিলে তিনি পুরোভাগে আক্রমণ করিবেন। একপার্যে বিষম ভূমি দেখিলে তিনি অন্তর্পার্য হইতে আক্রমণ চালাইবেন।

অথবা, (বিজিপীরু) প্রথমতঃ নিজের দ্যুবল, অমিত্রবল ও অটবীবলঘারা শতকে যুদ্ধ করাইয়া প্রান্ত হইলে, তাহাকে নিজে অপ্রান্ত থাকিয়া আক্রমণ করিবেন। অথবা নিজের দ্যুবলের মঙ্গে শতকে যুদ্ধ করাইয়া সেই বলে পরাজয় বয়ং আনাইলে যথন শত্রু বিখাস করিবে যে, তাহারই জয়লাভ হইয়াছে, তথন তিনি নিজে সেই পরাজয় বিখাস না করিয়া সত্রাপ্রাপ্রকি ('সত্তা'-সংজ্ঞা পরে স্বস্টব্য) শত্রুকে আক্রমণ করিবেন। সার্থ (বিক্রিংগংখ), ব্রজ (গোকুল), ও রদ্ধাবার (সেনানিবেশ) সমূহের সমাক্ রক্ষণে ও লুঠনে প্রমন্ত শত্রুকে (বিজিপীয়ু স্বয়ং) অপ্রয়ন্ত থাকিয়া অভিহত করিবেন। অথবা, তিনি স্বয়ং সার্বস্থাক্ত হইয়া (বাহিরে) করু বা অপ্র বল নিযুক্ত রাথিয়া শত্রুর বীরপুক্ষবিগের মধ্যে প্রকেশ করিয়া তাহাদিগকে আক্রমণ করিবেন। অথবা, তিনি (শত্রুর সেশে) গোত্রহণ ও (ব্যান্ত্রাদি) খাপদজন্তগণের বধবিধান করিয়া (ভংপ্রতীকারে উষ্ণত) শত্রুর বীরপুক্রবিগকে আরুট করিয়া, নিজে সত্রক্তর থাকিয়া তাহাদিগকে আরুট করিয়া, নিজে সত্রক্তর থাকিয়া তাহাদিগকে আরুটা করিবেন।

় রাত্রিতে (নানাপ্রকার উপদ্রবযুক্ত) আক্রমণ করার ভীত অবস্থায় শক্রসৈন্তকে জাগ্রত থাকিতে বাধ্য করিয়া, (রাত্রিতে) অনিদ্রায় ক্রান্ত হইলে ইহায়া ধৎন দিবসে নিজা হাইবে, তথন বিজ্ঞিগীয়ু তাহাদিগকে বধ করিবেন। অথবা, তিনি পাদদেশে চর্মনিন্মিত (রক্ষার্থ) কোশ বা ধোলদ্বারা আরত হস্তিসমূহদ্বারা অবস্থপ্ত পূক্ষবগণের বধসাধন করিবেন। দিনে (পূর্ব্বাক্তেও মধ্যাক্তে) যুদ্ধবাপারে শরিশ্রান্ত পূক্ষবদিগকে তিনি অপরাক্তে অভিহত করিবেন। অথবা, শুক্ষচর্ম ও গোলাকৃতি প্রস্তর্বপত্তারা নিন্মিত কোশপরিহিত ত্রাণশীল গো-মহিব ও উট্রযুধের সহারতার হস্তী ও অধরহিত ও ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত এবং মৃদ্ধ হইতে প্রতিনিবৃত্ত শক্তবলকে (বিজ্ঞিগীয়ু) স্বরং অভিন্ন (বা সংহত) থাকিয়া বধ করিবেন। পূর্বের উল্লিখিত 'সত্র'কতপ্রকার হইতে পারে তাহা এখন বলা হইন্তেছে।) এই-শুলকে 'সত্র' বা বিজ্ঞিগীয়ুর পক্ষে ছন্ন সঞ্চারের সাধন বলিয়া জানা যায়—ধান্নন (মৃক্ত্রপ্র), বন্তর্গ, সংকট (গুল্মকউলাদিমর হন্তবেশ স্থল), প্রম্ময় ভূমি, শৈলভূমি, নিমন্থল (গভীর প্রদেশ), বিষম (বা নির্মোন্নত) স্কল, নৌকা, গো, শকটবৃত্ত (ভোগবৃত্তভেদ), নীহার (বা ক্ন্মটিকা) ও রাত্রির অন্ধকার।

( শক্রর প্রতি ) পূর্ব্বোল্লিখিত প্রহরণ বা আক্রমণকাল (এবং এই সত্তগুলি) কৃট্যুদ্ধের কারণ হয়, অর্থাৎ কুট্যুদ্ধে এগুলির উপযোগ আবশ্যক হয়।

কিন্তু, সংগ্রাম বা প্রকাশযুদ্ধ নির্দ্দিষ্ট দেশে ও কালে ঘটে এবং ইছা ধর্মপূর্ব্বক করা হয় বলিয়া ইছা ধর্মিষ্ঠ।

(সেনাকে প্রোৎসাহিত কৃষিতে হইলে নিম্নবর্ণিত উপায় ব্সবলম্বিত হয়।)
সংঘবদ্ধ বা সংহত সেনাকে (বিজিগীসু) স্বয়ং এইরূপ বলিবেন—"আমিও
আপনাদের সহিত তুল্যবেতনভোগী (অর্থাৎ আমার লাভ আপনাদের সমান
হইবে)। (যুদ্ধবিজ্ঞিত) রাজ্য আমি আপনাদের সহিত একত্র ভোগ ক্ষিব।
আমি যে শক্তকে নির্দ্দেশ ক্রিয়া দিব—আপনারা তাহাকে অভিহত ক্রিবেন।"

মন্ত্রী ও পুরোহিত্বারাও (রাজা) যোদ্ধপুরুষদিগকে এইভাবে প্রোৎসাহিত করিবেন। দক্ষিণাদিধার। স্থাসাও যজ্ঞের অবসানে এইরূপ কলের কলা বেদ-সমূহে উক্ত আছে বলিয়া প্রুত হয়, যবা—"( যুক্তে মরণের ফলে) শ্রগণের যে ( স্থাদি ) গতি হয় ( সমাওয়ক্ত ) তোমারও সেইপ্রকার গতি হউক" ( অর্থাৎ — ভূরিয়ক্তের অন্তর্গানে যে কল বেদে প্রুত হয়, যুক্তে প্রাণত্যাগকারী শ্রগণের সেই কল হয় )। এই বাক্যের পোষণার্থক ( পূর্বাচার্য্যাণকৃত ) তুইটি স্লোক্ত আছে, যথা—

(১) 'অনেক ৰজা, তপামাও ৰজ্ঞীয়পাঞ্চয়ন, অথবা দানপ্ৰতিগ্ৰহকারী

পাত্রের চরনম্বারা বিপ্রাগণ স্থাপি ইইয়া যে লোক বা যে অভীষ্টার্থ লাভ করেন, সুযুদ্ধে বা ধর্মাযুদ্ধে প্রাণভ্যাগ করিয়া শ্রগণ ক্ষণকাল্মধ্যে দেই দব লোক যা অভীষ্টার্থের অধিক উচ্চ লোক ও অভীষ্টার্থ লাভ করেন'॥ ১॥

(২) 'জল্পারা পূর্ণ, মন্ত্রদারা স্থান্তত ও দর্ভরারা সংবীত বা বেষ্টিত ন্তন শরাব (মুৎপাত্রবিশেব – যাহা কোন প্রাভৃত দেওয়ার সময়ে সঙ্গে দেওয়া হয়) সেই (যোদ্ধ-) পুরুষের প্রাপ্য হয় না এবং দৈই পুরুষ নরকগামী হয়,—যে পুরুষ ভর্তপিও ভোগ করিয়াও তদর্থে যুক্ক করে না'॥২॥

এই বিজিগীর রাজার দৈবজ্ঞ ও শক্নশান্তবিদ্গণ রাজার বৃহসম্পৎ অর্থাৎ বিশেষ বিশেষ বৃহরচনার কথাছারা নিজলিগের সর্বজ্ঞতা ও দৈবসাক্ষাৎকারের ঝাপনা করিরা রাজার স্বপক্ষীর সৈত্তকে হর্ষদৃক্ত করিবেন, অর্থাৎ তাহাদিগকে সংগ্রামে প্রোৎসাহিত করিবেন এবং ( তদারা ) শত্রুপক্ষকে উদিয় করিবেন । 'আগামী কলা মৃদ্ধ হইবে' ইহা নিশ্চিত হইলে ( দেই দিন রাজা ) উপবাস করিরা শল্প ও ( অখাদি ) বাহনের নিকট শারন করিবেন; এবং অর্থার বেশেকে ( শত্রুমারণ ) মন্ত্রাপিদারা যজ্ঞ করিবেন। তিনি ( শত্রুপারতির ) বিজ্ঞান্তক্ত্র ও ( নিজ্মরণে ) স্বর্গ্রাপ্তির অন্তক্ত্র আশীর্কচন ( ত্রাক্ষণাদিদারা ) পাঠ করাইবেন; এবং আগ্রহক্ষার্থ নিজকে ত্রাক্ষণদিগের হত্তে সমর্পণ করিবেন।

রোজা) অর্থদান ও মানদানদারা নিতাাসুক্ল, ও শৌর্যা, শিল্প, আভিজাতা ও রাজভক্তিযুক্ত সেনাকে নিজ বড় দেনার মধ্যে শ্বক্ষণার্থ হাপিত করিবেন। রাজার পিতা, পুত্র ও ভ্রাভাদিগের ও (রাজরক্ষার্থ নিযুক্ত) আর্ধধারী পুরুষগণের (রাজসম্বন্ধের জ্ঞাপক) বেষাদিশ্র প্রধানভূত দৈহনে রাজা নিজ সমীপে ছাপিত রাখিবেন। সক্ষে অথারোহী পুরুষদিগের অম্বন্ধ বা সহায়ভার বন্দোবন্ত থাকিলে, রাজা স্বন্ধ হন্তী ও রথ বাহনরূপে বাবহার করিবেন। দেনামধাে যে বাহনের বহল ব্যবহার থাকিবে, অথবা রাজা যে বাহনে স্বন্ধ অভ্যক্ত সেই বাহনেই তিনি অধিরোহণ করিবেন। রাজবেষধারী কোনও পুরুষকে ব্যহর্চনার অধিষ্ঠাভৃত্তপে নিযুক্ত রাখা হইবে, অর্থাৎ শক্ত যেন স্বন্ধ রাজাকে কক্ষ্য না করিতে পারে।

সূত (পুরাণ ও ইতিহাসজ্ঞ) ও মাগধগণ (অভিশাঠকগণ) শুরদিগের স্বর্গবাদ ও ভীরুদিগের স্বর্গাভাবের কথা ও অন্তান্ত বোদ্ধবর্গের জাতি, নংব, কুল, কর্ম্ম (জীবিকা) ও রন্ত (বা শীল) সম্বন্ধীর স্ততি (বাজসমীণে তাহাদিগের উৎসাহার্থ) বর্ণনা করিবে।

পুরোহিতপুষ্ণগণ (শক্তনাশার্থ আরন্ধ শক্তহিংসিনী) ক্লড্যাদেবীর দ্বারা অন্পৃষ্টিত অভিচারের (অবর্থমন্ত্রপ্রোগের) কবা (রাজসমীণে) বিজ্ঞাপিত করিবেন। সত্রী (গুচপুষ্ণব, ষন্ত্রিকপাঠে—ষত্রশিল্পী), বর্দ্ধিক (ভেন্নক) ও মৌছুর্ত্তিক (জ্যোতিষী) আপন কান্ডের সিদ্ধিও শক্তর কার্যোর অসিদ্ধির ক্র্বা (রাজসমীণে) বলিবেন।

দেনাপতি ( সকল প্রকার সেনার প্রধান অধ্যক্ষ ) অর্থদান ও মানদানদ্বারা সংপৃত্তিত অনীক বা সৈত্তকে ( এইরূপে উৎসাহবাক্য ) বলিবেন—"তোমাদের মধ্যে কোন দৈনিক শক্তরাজাকে বধ করিতে পারিলে তাহার শতসহত্র ( লক্ষ ) স্বর্ণমূল্রা লাভ হইবে ; শক্তর কোন প্রবীরমূঝের বধে দশহাজার স্বর্ণমূল্যা, হন্তী বা রধ নই করিতে পারিলে পাঁচ হাজার, অধ্বধে এক সহত্র, পদাতিক মুখ্যের বধে এক শত, ) সাধারণ দৈনিকের ) শির আনিতে পারিলে বিংশতি স্বর্ণমূল্য লাভ হইবে । ( তত্বপরি এই প্রকার দৈনিকের ) ভোগ ( ভক্ত ও বেতন ) বিগুণিত করা হইবে এবং ( শক্তর রাজ্য হইতে অপন্থিয়মাণ ) মাহা কিছু রদ্বাদি যে কেই নিজে প্রহণ করিয়া আনিবে, তাহা তাহার নিজ অধিকারে আদিবে।" এই সমন্ত ( শোর্ষ্যের কাঞ্চ ও তত্জন্ত দীয়মান প্রস্থাবের ) কবা দশবর্গের অধিপতিগণ ( পদিক, দেনাপতি ও নায়কগণ, ১০।৬ দুইবা ) জানিয়া রাখিবেন ;

চিকিৎসকগণ চিকিৎসার শস্ত্র, যন্ত্র, ঔষধ, ( তৈলাদি ) স্বেছদ্রব্য ও (প্রণ্যাদি-বন্ধনার্থ ) বন্ধ নিজহত্তে প্রস্তুত রাখিয়া, এবং অন্ন ও পানীয় দ্রব্যাদির রক্ষণার্থ নিযুক্ত শ্রীশোকগণ সৈনিকপুরুবদিগের হর্ষবিধানকারিন্মরূপে নিযুক্ত থাকিয়া, সেনার পৃষ্ঠদেশে অবস্থিত থাকিবে।

বিজিপীর ( দংগ্রাম-সময়ে ) নিজ অনীক বা সেনার স্থোগ্যভূমিতে এমন-ভাবে ব্যুহ রচনা করিবেন যেন দেনার মুখ দক্ষিণ দিকে না খাকে, স্থ্য যেন তাহার পশ্চাদ্ভাগে থাকে, এবং বায়ু যেন তাহার অপ্তক্তে বহে। পরসেনার নিজ অপ্তক্ত প্রদেশে বিজিপীরুর বৃাহ রচনা করিতে হইপে, দেখানে ( শক্জ-নাশার্থ ) তিনি নিজের অপ্রেনাকে পাঠাইবেন।

যে প্রদেশে (বিজিপীবুর) ব্যুহের পক্ষে অবস্থান ও ক্ষিপ্রকারিতা-প্রদর্শন সঞ্চৰপর নহে—সেধানে অবস্থিত ও ক্ষিপ্রক্রিয় হইলে (বিজিপীর্) পক্রকর্তৃক বিজিত হইবেন। আর ইহার বিপর্যয়ে অর্থাৎ স্থান ও প্রহুব বা ক্ষিপ্রক্রিয়ার অন্তব্য ভূমিতে বৃহর্চন। সম্ভবপর হইলে, তিনি সেধানে দ্বিত ও প্রজ্ঞবিত হইলে শক্তকে পরাজিত করিতে সমর্থ হইবেন।

ব্যহরচনার অহক্ল ভূমির বিভাগ বলা হইতেছে।) ভূমি তিন প্রকারের ছইতে পারে—সমা, বিষমা ও ব্যামিপ্রা। ইহার প্রত্যেকের আবার তিন প্রকার ভেদ জানা যার, বথা—পুরোভাগের ভূমি, পার্যভাগের ভূমি ও পশ্চাদ্ভাগের ভূমি। ভূমি (তিন প্রকারেই) সম হইলে দণ্ডবুহে (দণ্ডাকারবৃহ) ও মণ্ডলবুহে (মণ্ডালারবৃহ) রচিত হইতে পারে, ইহা বিষম হইলে ভোগবুহে ও সংহতবুহে এবং ব্যামিপ্র হইলে বিষমবৃহে রচনাকরা ধার। (বাহতেদ এই অধিকরণের ৫ম অধ্যায়ে উক্ত হইরছে।)

নিজের অপেক্ষায় বলবন্তর শক্রকে পরাঞ্জিত করিলে (বিজিপীরু) স্বর্ম তাঁছার সহিত সন্ধি প্রার্থনা করিবেন, শক্র নিজের সমানবলবিশিষ্ট হইলে, তদারা বাচিত হইলে, তিনি সন্ধি করিবেন। নিজের অপেক্ষায় হীনবল শক্রকে তিনি সর্বাধা নষ্ট করিবেন (বেন সেই শক্র আর প্রবায় অভ্যুবিত না হইতে পারে)। কিছ (সেই হীনবল শক্রও) ধদি নিজের অলুক্ল ভূমিতে অবস্থিত থাকে, অথবা আপন জীবনবিষয়ে নিরাশ হইয়া থাকে, তবে সেই শক্রকে তিনি নষ্ট করিবেন না।

( হীনবল ) শক্ত জীবনসমধে নিরাশ হইয়া বদি প্রতাবির্ত্তন করিয়া গাঁড়ার, তাহা হইলে তাহার মৃদ্ধ করার বেগ নিবারণ করা কঠিন হয়, অতএব, তেমন ভয় শক্তকে ( বিজ্ঞিনীয়ু পুনরায় ) পীড়া দিবেন না । ১।

কোটিলীয় অর্থশান্ত্রে সাংগ্রামিক-নামক অধিকরণে কৃট্যুদ্ধবিকল্প, নিজ্পৈস্থের প্রোৎসাহন এবং বৃহোদিরচনাদ্বারা পরবলাপেক্ষায় স্বব্লের ব্যবস্থাপন-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১৬১ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## চতুৰ্থ **অ**ধ্যায়

## ১৫৩-১৫৪ প্রকরণ—**যুদ্ধযোগ্য ভূমি এবং পন্তি, অখ, রথ ও** হস্তীর কার্য্যনিরপণ

পদাতি, অশ্ব. রথ ও হস্তিদেনার যুদ্ধসময়ে ও নিবেশ বা অবস্থান সময়ে নিজ নিজ অন্তব্য ভূমিই ইষ্ট বা অপেক্ষিত হওয়া চাই।

ধান্ত্রন্ধ, বনপ্রক্, নিম্নভূমি (জলভূমিও অর্থ হইতে পারে) ও ফলভূমিতে অবন্ধিত থাকিয়া যুক্কারী, ভূমিধননপূর্বক তন্মধ্যে অবন্ধিত থাকিয়া যুধ্যমান, জাকাশে (বৃক্ষাদিশ্ভ স্থানে অর্থও ধৃত হইতে পারে) যুধ্যমান, দিবাযোধী ও রাজিযোধী পদাভিপুন্ধবগণের, এবং নদী, পর্বত, অন্প (জলময় প্রদেশ) ও সরোবর-সম্বন্ধী হন্তী ও অখগণের পক্ষেও তাহাদের নিজ নিজ অমুক্ল যুক্জ্মি ও অমুক্ল যুক্জাল ইষ্ট বা অপেক্ষিত হওয়া চাই।

রেধসেনার যোগ্য ভূমি নিরূপিত হইতেছে। ) রপচালনাভূমি সম (উচ্চ-নিম্নতারহিত), দ্বির (কঠিন), অভিকাশ (ভূণাদিদ্যারা অনবচ্ছর). উৎধাত-রহিত, রপচক্রের ও অখাদির খুরক্ষেপচিক্তরহিত, রথের অক্ষরোধনে অসমর্থ, রক্ষ, গুলা, শতা, শুল্ক, কেদার (ধান্তবাপ), গর্জ, বল্মীক, বালি, পল্ক ও বক্র-প্রদেশরহিত, এবং দরণহীন (অর্থাৎ যে ভূমিতে দীর্ঘরেধাকার স্থাবিরাদি থাকিবেনা) হওয়া আবশ্যক।

( উপরি উক্ত রধের যোগ্য ভূমি ) সম ও বিষমভানে যুদ্ধ ও অবস্থানসময়ে হক্তী, অখ ও পদাতিসেনার পক্ষেও উপযুক্ত ভূমি।

বোড়ার জন্ত বিশেব ভূমির কথা বণিত হইতেছে।) যে ভূমি ছোট ছোট শিলা ও রক্ষযুক্ত, ছোট ছোট লগ্যনযোগ্য গর্ত্তবিশিষ্ট, স্বন্ধ দরণদোষযুক্ত ভাছাই অধ্যে যোগ্য ভূমি।

ধে ভূমিতে স্থাৰ্, পাথর, বৃক্ষ, লতা, বন্দীক ও গুল্ম স্থল বা মোটা মোটা থাকে, দেই ভূমিই পদাভির যোগা ভূমি।

ৰে ভূমিতে শৈল, নিমপ্ৰদেশ ও দৰবন্থানগুলি হন্তীর গম্য, যাহাতে বৃক্ঞলি হন্তীর মর্দ্দনৰোগ্য, বাহাতে লতাসমূহ হন্তীর ছেদনযোগ্য, এবং যে ভূমি শঙ্ক, ৰক্ষাদেশ ও দরণবিহীন—দেই ভূমি হন্তীর যোগ্য ভূমি। ষে ভূমি কউকবিহীন, বহু বিষম (নিম্নোন্তপ্রদেশ)-রহিত ও যে ভূমি
প্রয়োধনমত প্রতিনিবর্ত্তনের অবকাশযুক্ত – সেই ভূমি পদাতিদেনার পক্ষে অতি
উত্তম ভূমি। যে ভূমিতে (অগ্রসর হওর) অপেক্ষার) প্রতিনিবর্ত্তনের দিওও
ক্ষুবিধা হইতে পারে, যে ভূমি কর্দ্ধম ও জলহীন এবং যাহাতে অবের ধঞ্জন
উৎপাদিত হওরার সন্তাবনা নাই, (অর্থাৎ দলদল ভূমি) এবং যে ভূমি কাঁকরযুক্ত
মৃত্তিকারহিত – সেই ভূমি অধের পক্ষে অতি উত্তম ভূমি।

বে ভূমিতে ধূলি, কর্দ্ধম, গুল (বা কর্দ্ধময় গুল ), নল (সুধিরাধ্য তুলবিশেষ) ও লর (মুঞ্জ) এই উভয়ের মূলশঙ্কু আছে, যে ভূমি খাদংখ্রী বা গোকউকবিহীন, এবং বে ভূমিতে মহারক্ষসমূহের শাধার আঘাত প্রাপ্তির সন্তাবনা নাই—সেই ভূমি হন্তীর পক্ষে অতি উপ্তম ভূমি।

যে ভূমিতে (স্থানের যোগ্য) জনশিয় ও বিশ্রামস্থান আছে, যে ভূমি উৎথাতরছিত ও কেদারহীন এবং যে ভূমি হইতে অবদরমত প্রত্যাবর্তনের স্থবিধ। আছে – দেই ভূমি রথের পক্ষে অতি উত্তম ভূমি।

শত্যাদিসমূহের উপযোগিনী ভূমির বিষয় উক্ত হইল।

এইপ্রকার ভূমির ব্যাখ্যান-অন্তমারে দর্কপ্রকার দেনার নিবেশ ও যুদ্ধকর্মও ব্যাখ্যাত ইইতে পারে।

( দর্বপ্রথম অংশকর্মসূহ বলা হইতেছে।) অখের কাষাবেলী এইরূপ হইবে, বথা—(১) ভূমিবিচয়, বাসবিচয় ও বনবিচয়—অর্থাৎ অভূমিতে পরবলের গৃচভাবে অবস্থান জানিলে তৎসংশোধন অগ্নেনাবারা করিতে হইবে, তেমন আবার নিজবাস্থানে শক্রর উপদ্রবের পরিহার এবং জ্ল্লন্ময় স্থানে চোরাদির উৎসারণও তদ্মারা করিতে হইবে; (২) শক্রর অনাক্রমণীয় বিষমস্থান, জলাশরমুক্তস্থান, নজাদিতরণযোগ্য ঘাট, নিজের অমুক্লভাবে বছনশীল বায়্মুক্ত স্থান, স্থারশিপাতের অমুক্লভানের নিজস্বিধার জন্ত গ্রহণ; (৩) শক্রর বীবধ ( স্থান্দে ইতৈ অবিজ্ঞিনভাবে আজীবদ্রবের আগমন ) ও আসার ( মিজ্র শোনার আনরন)-নাশকরও ও নিজের বীবধ ও আসারের রক্ষণ; (৪) পরবলের গৃচ্প্রবেশাদির বিশ্বদ্ধি বা তদ্বীকরণ এবং নিজবলের ক্ষেভ্সমরে ইন্থান্থাপন; (৫) প্রসারের ( বন্তকাভ খাসাদির ) র্জিকরণ; (৬) বাহর ন্তায় অব্যায়া প্রবাদের উৎসারণ; (৭) শক্রর উপর প্রথম প্রাহার-প্রদান; (৮) ব্যাবেশন অর্থাৎ শক্রসেনার মধ্যে চ্কিয়া গিয়া ভাহাদের বিক্ষোভ উৎপাদন; (৯) শক্রব্রেশনার উপর নানারণ আঘাত বা উৎপাত্তরণ; (১০) নিজ্বনার আখানন;

(১১) শত্রুবেনার গ্রহণ বা গ্রেপ্তার; (১২) নিজের সেনাকে শক্রহন্ত ছইডে নোক্ষণ; (১৩) নিজনেনার পশ্চাদক্ষরণ করিলে শক্রুবেনার পশ্চান্তাগে নিজে অক্সনবণ; (১৪) শক্রর কোশ ও কুমারের অপহরণ; (১৫) শক্রব জন্মন (শশ্চান্তারে) ও কোটিদেশে (পুরোভাগে) অভিনাত-প্রদান; (১৬) ভরাধ শক্রুবেনার অক্সরণ; (১৭) পলায়নপর শক্রুদেনার অক্সন্মন এবং (১৮) বিপ্রা-কীর্ণ স্বদেনার সভ্যত্রিধান।

নিম্নলিখিত কর্মগুলিকে হাজিকর্ম অর্থাৎ হাজিযোগ্য কর্ম বলা হয়, মধা—
(১) নিজ সেনাগ্রে চলন; (২) পূর্বে অক্তর পথা, বাস ও ঘাট তৈয়ার করিতে সাহায্যপ্রদান; (৩) শক্রসেনাকে বাহুর স্থার হইয়া উৎসায়ণ; (৪) জল পরিমাপের জন্ম নজাদিজলে তরণ ও জলমধ্যে অবতরণ; (১) শক্রসমক্ষে অবছিত্তি, অধ্বগমন ও উচ্চস্থানাদি হইতে অবরোহণ; (৬) বিষমস্থানে (জুণগুলাদিঘারা আছর স্থানে)ও শক্রসেনার সমবায়ে স্ফটস্থানে প্রবেশ; (৩) (শক্রশিবিরে) অগ্নিন্ধাপণ; (৮) (হাজিরপ) একাল সেনাঘারাই বিজয়লাভ; (৯) বিশীর্ণ নিজ সেনার একীকরণ; (১০) সংঘীভ্ত পরসেনার ছিয়ভিন্ন করণ; (১১) বিপাদে রক্ষাকরণ; (১২) শক্রসেনার মর্দ্দন; (১৩) দর্শনিঘারা ভীতির সঞ্চার; (১৪) (মদাদির অবস্থান্বারা) গ্রাসের উৎপাদন; (১৫) নিজসৈপ্রের মহন্তপ্রদর্শন; (১৬) (শক্রসেনার) গ্রহণ; (১৭) (নিজসেনার শক্রহন্ত হইতে) মোচন; (১৮) (শক্রর) প্রাকার, গোপুর ও প্রাকারাগ্রে শ্বিত) অট্টালকগৃহের ভঞ্জন; এবং (১৯) শক্রর কোল ও বাছনের অপনয়ন।

নিয়লিধিত কর্মসমূহ রথবোগ কর্ম বা রথকর্ম বিলয়। কথিত হয়। যথা—
(২) স্বলেনার রক্ষা; (২) সংগ্রামসময়ে শক্রর চতুরক্ষদেনার নিবারণ;
(৩) ( শক্রনেনার ) গ্রহণ; (৪) ( শক্র হইতে নিজ্সেনার ) মোচন; (৫) বিশীর্শ নিজ্সেনার গুকীকরণ; (৬) সংঘীভূত পরসেনার ভেদন; (1) শক্রসেনার জ্রাস-উৎপাদন; (৮) নিজ্ সেনার মহত্পপ্রদর্শন এবং (৯) ভয়ত্বর ঘোষ বা ধ্বনি-উৎপাদন।

(সমবিব্যাদি) সর্ব্ধপ্রকার দেশে ও (বর্ধাদি) সর্ব্ব কালে শল্পধারণ ও (যুক্তোপযোগী) ব্যায়াম অভ্যাস—এইগুলি পদাভিক্স বিলয়া ক্ষিত হয়।

বিটিকর্ম ( অর্থাৎ আয়ুধ্বিহীন কর্মকরগণের কর্ম ) এইরূপ হইবে, ব্যা--(১) শিবির, মার্গ, মেডু, কুল, ও ভীর্থসমূহের শোধন করণ, অর্থাৎ ঠিক অবস্থার

সেগুলিকে রক্ষণ; (২) থর, আর্ধ, কবচ, অন্তান্ত উপকরণসামগ্রী, ও গ্রাদ (খাপ্তদ্রবাদি) বহন; (৩) (যুদ্ধভূমি হইতে) (পরিডাক্ষ) আযুধ, কবচ ও (শক্রর অস্ত্রশারাদিধারা)প্রতিবিদ্ধ যোদ্ধাদিগকে অন্তর অপনরন।

বে রাজার অখনংখ্যা অর, তিনি রথসমূহে অথ ও বলীবর্দ্দির বোজন করিবেন, অর্থাৎ ঘোড়ার সঙ্গে সঙ্গে রথে বলীবর্দ্দির উপযোগ লইবেন। তেমন আবার তাঁহার গজনংখ্যাও অল হইলে, তিনি গর্দদভ, উট্র ও শকট (অথবা গর্দ্দিভ উট্রযুক্ত শকট) পশ্চাতে রাধিয়া সেনা রক্ষা করিবেন ( অর্থাৎ তৎগর্ভ দৈক্ত রাধিবেন )। ১ ॥

কোটিলীয় অর্থপান্তে সাংগ্রামিক-নামক অধিকরণে যুদ্ধের যোগা ভূমি এবং পন্তি, অথ, রথ ও হন্তীর কর্মনিরূপণ-নামক চতুর্থ অধ্যায় (আদি ছইতে ১৩২ অধ্যায়) সমাণ্ড।

#### পঞ্চম অধ্যায়

১৫৫-১৫ ৭ প্রকরণ—প্রকা, কক্ষ ও উরস্যবিশেষে সেনার সংখ্যান্স-সারে ব্যুহরচনা; সার ও অসার বলের বিভাগ; এবং পত্তি, অখ, রথ ও হন্তীর যুগ

যুদ্ধস্থল হইতে স্কাবার পাঁচ শত ধুকু:পরিমিত (২০০ ক্রপ্টব্য) দুরবর্তী প্রদেশে স্থাপিত রাখিয়। (বিজিগীর) যুদ্ধস্থল অস্কীকার করিবেন অথবা ভূমির পরিমাণ-অসুসারে সেই যুদ্ধস্থল আরও কম বা বেশী দুরেও থাকিতে পারে। সেনার মুখা সৈনিকদিগকে (পক্ষকক্ষাদিস্থানে) বিভক্ত বা নিবেশিত করিয়া ও সেনাকে (পক্ষর) চকুর অগোচরে স্থাপিত করিয়া, সেনাপতি (পন্তিদশকপতি) ও নায়ক (সেনাপতিদশকাধিপতি) সেনাতে ব্যুহরচনা করিবেন।

এক পদাতি ও অন্য পদাতির মধ্যে এক 'শম'-পরিমিত ( চতুর্দ্ধশ অঙ্কুলি-পরিমিত ) ভূমির ( ২।২০ দ্রেইবা ) অস্তর রাধির) (বিজিলীর ) পত্তির বৃাহ রচনা করিবেন। অব্দেনার ছইটির মধ্যে তিন 'শম' পরিমিত বাবধান থাকিবে—এক রথ ও অন্য রখের মধ্যমূলে ও এক হন্তী ও অপর হন্তীর মধ্যে পাঁচ শমপরিমিত ব্যবধান থাকিবে। অথবা (ভূমির পরিমাণ অক্সনারে) অন্তরসমূহ বিশুণ ও জ্ঞিণ করিয়াও তৎ-তৎদেনার বৃহে (তিনি) রচনা করিবেন। এইভাবে স্থেও সমর্দ্দনরহিত অবস্থায় (তিনি) যুদ্ধ করিবেন। পঞ্চ অর্থিতে (হস্তপরিমিত ছান্দ্রারা) এক 'ধহাং' হয় (২য় অধিকরণে ২০শ অধ্যায়ে চার অর্থিতে এক ধহাং হয়, ইহা বলা ইইয়াছে)। ধয়ী বা ধাহার দৈনিক পুরুষদিগকে তিনি পাঁচ পাঁচ ছাত দূরে দাঁড় করাইবেন। ত্রিধহাং বা পঞ্চনশহন্ত অন্তর্যালে অন্য এবং পঞ্চন্ধ্যুং বা পঞ্চবিংশতি হন্ত অন্তর্বালে রথ বা হন্তী নাজাইতে হইবে। প্রক্রম্ম (দেনার পুরোভাগের ছই পার্য), কক্ষত্বয় (দেনার পশ্চান্তাগের ছই পার্য)ও উরক্ত (দেনার মধ্যতাগ)—এই পাঁচ অনীক বা দেনার মধ্যবর্তী অন্তরাল পঞ্চধহাং অর্থাৎ পঞ্চবিংশতি হন্তপরিমিত হইবে।

অশ্বারোহী সৈনিকের আগে আগে তিনটি করিয়৷ পদাতিক পুরুষ থাকিয়৷
যুদ্ধ করিবে। রথের অথবা হস্তীর আগে আগে পঞ্চদশ পুরুষ প্রতিযোদ্ধরূপে
থাকিবে এবং পাঁচটি করিয়া অশ্বারোহীও থাকিবে। অশ্ব, রথ ও হস্তীর দেবার্থ পাঁচটি পাদিশোপা বা পাদরক্ষক নিযুক্ত থাকিবে।

(বিজিপীরু) তিন তিনটি করিয়া এক পঙ্জি রচন। করিয়া, এইরূপ তিন পঙ্জিতে (নয়টি রথ রাখিয়) রবের উরত্য বা মধ্য অনীক স্থাপিত করিবেন। আবার উভয় পার্শের কক্ষন্তরে ও পক্ষন্তরে ততথানি (অর্থাৎ তিন পঙ্জিতে সর্বসমেত নয়্থানি রথ রাখিয়া) কক্ষানীকদ্বর ও পক্ষানীকদ্বর স্থাপিত করিবেন। স্থতরাং এইভাবে উরত্যাদি পঞ্চানীক্যুক্ত বৃহেে রথসংখ্যা (৪৫) পঁয়তাল্লিশ হইবে।

প্রেত্যেক রবের অগ্রভাগে পাঁচটি করিয়া অব থাকাবলতঃ ) পাঁরতাল্লিশথানি রথসম্বন্ধে অর্থাৎ একটি রথবৃহ্হে ( ৫ × ৪৫ ) ২২৫ ছুইশত পাঁচিশটি অথ থাকে; আবার (প্রভাকে রবের অগ্রভাগে পঞ্চনশ করিয়া পুরুষ থাকাবলতঃ) পাঁরতাল্লিশ রথসম্বন্ধে ( ১৫ × ৪৫ ) ৬৭৫ ছয়শত পচান্তর পুরুষ প্রতিযোদ্ধরূপে ( পরস্পরের সহায়ার্থ ) থাকে। অথ, রথ ও হন্তীর সঙ্গে পাদগোপ বা পাদসেবকের সংখ্যাও ততগুলি হইবে। ( অর্থাৎ অধ্যের অগ্রভাগে যত পুরুষ চলিবে ততটি পাদগোপও থাকিবে, এবং রথ ও হন্তীর অগ্রভাগে যত অথ ও যত পুরুষ চলিবে ততটি পাদগোপও থাকিবে )।

এই প্রকার বৃহত্তে সমবুর ছ বলা হয় ( অর্থাৎ প্রত্যেক ব্রিকে তিনটি করিয়া রখ সইয়া রচিত একটি বৃাহ )। এই প্রকার বৃহহের জ্রিকে ছইটি করিয়া রথ বৃদ্ধি ক্রিয়া একবিংশতি রখ পর্যান্ত বৃদ্ধি করা যাইতে পারে (অর্থাৎ ৩-৫-১-৯-১১-১৩১৫-১৭-১৯-২১ করিয়া এক এক শঙ্জিতে রথ থাকিতে পারে )। এই প্রকার অনুগ্র রথসংখ্যা লইয়া ( ৩ রথ হইতে ২১ রথ পর্যান্ত প্রতি পঙ্জিতে রথসংখ্যা লইয়া ) দশ প্রকার সমব্হিপ্রকৃতি-নামক ভেদ হইতে পারে।

পক্ষ, কক্ষ ও উরস্থা (বা মধ্য ) স্থানে বৃহোকের (রখের ) পরস্পর বিষম সংখ্যা থাকিলে, দেই বৃহকে বিষমবৃত্ত বলা হয় (যথা—পক্ষে যদি পাঁচ করিয়া পক্ষ রচিত হয় উত্যাদি )। এই ভাবে প্রত্যেক বিষমবৃত্তের প্রতি পঙ্জিতে ছই ছইটি করিয়া রখসংখ্যা বাড়াইয়া একবিংশতি পর্যান্ত উঠা যায়। এই প্রকার অযুগ্র রখসংখ্যা লইয়া (পূর্ববং) দশ প্রকার বিষমবৃত্ত প্রকার ভিন্নামক ভেদ হইতে পারে।

এই প্রকার সমবিষমবৃত্ত রচিত হওরার পরে যদি দৈল বৃত্ত হইতে অবশিষ্ট থাকে, তাহা হইলে সেই বৃত্তাবশিষ্ট দৈলখারা আবাপ বা প্রক্ষেপ বিহিত হইবে অথাৎ সেই অবশিষ্ট দৈল বৃত্তাবশিষ্ট দৈলখারা আবাপ বা প্রক্ষেপ বিহিত হইবে অথাৎ সেই অবশিষ্ট দৈল বৃত্তাবশিষ্ট এদিকে দেদিকে স্থাপিত করা হইবে। (আবাপের প্রকার বলা হইতেছে।) বৃত্তাবশিষ্ট রথগুলির সংখ্যা তিন ভাগে বিভক্ত করিয়া বিজিগীয়ু ইহার গুইভাগ (পক্ষরম ও কক্ষরম-নামক) বৃত্তাক্ষেপ্ত করিবেন এবং অবশিষ্ট এক-তৃতীয়াংশ উর্বল্য বা মধ্যে স্থাপিত করিবেন। সমগ্র রথানীকে যতথানি রথ থাকিবে, আবাপ্যরূপে অবশিষ্ট রথসংখ্যা ইহার এক-তৃতীয়াংশ অপেক্ষায় কম হইবে—অর্থাৎ এক-তৃতীয়াংশের সমান বা অধিক রথ আবাপ্য বলিয়া বেন অবশিষ্ট না থাকে। ইহাদারা হন্তী ও অস্বসম্বন্ধেও এইরূপ আবাপ্ট করিতে হইবে ইহা ব্যাখ্যাত হইল (অর্থাৎ পক্ষর্মেও কক্ষর্মের তৃই-তৃতীয়াংশ ও উর্ব্যে এক-তৃতীয়াংশ আবাপ্য হইবে)।

যত সংখ্যাপরিমিত অশ্ব, রথ ও হন্তী থাকিলে যুদ্ধে পরস্পরের সংমর্দ্ধ বা ভীড় না হয়—ততথানিদ্বারা আবাপ-সংখ্যা ধার্য্য করা বাইতে পারে (অর্থাৎ এক-ভূতীয়াংশ ইড্যাদিদ্বারা বিহিত আবাপ উপেক্ষিতও হইতে পারে)।

দত বা ব্যহরচনার্থ প্রযুক্ত সেনার বাছলা ঘটিলে, অর্থাৎ ব্যহরচনার অভিরিক্ত বল বা সেনা থাকিলে, তাহা ব্যহমধ্যে প্রবেশ করাইয়া দেওয়ার নাম আবাপ। পদাতি সেনার এইরপ বাছলা ঘটিলে ফেনামধ্যে ইহার প্রক্ষেপকে প্রভাবাপ বলা হয়। একালসেনার অর্থাৎ অর্থ, হন্তী ও রথালের অক্ততম সেনার এইরপ বাছলাজনিত প্রক্ষেপের নাম অভ্যাবাপ। এবং দৃষ্য বা রাজবিরোধী পুরুষদারা এই প্রকার প্রক্ষেপের নাম অভ্যাবাপ।

অধবঃ শক্রকৃত আবাপ অপেক্ষায়, বা তাহার প্রত্যাবাপ অপেক্ষায়, নিজ-

ৰলের আবাণ ও প্রত্যাবাণ চতুও ও হইতে, স্বষ্টগুণ পর্যন্ত বৃদ্ধি করা যাইতে পারে, অথবা নিজ বিভবাসুসারে সৈন্তের আবাণ করা যাইতে পারে।

রখবুৰে গচনার কণাধার। হ তিবুৰে রচনাও ব্যাধ্যাত হইল। অথব। হন্তী, রণ ও অখনেনাদারা মিলিড করিয়াও ব্যামিশ্র ব্ছরচনা করা বাইতে পারে।

চক্ষ বা সেনার সন্মূথের উভয় অন্তে (পক্ষ-নামক স্থানে) হস্তী, পশ্চাদ্দিকের উভয় পার্বে (কক্ষ-নামক স্থানে) শ্রেষ্ঠ অন্য এবং উরস্থ বা মধ্যজাগে রথ স্থাপন করা হইবে (ইহার নাম শিক্ষজেনী' ইস্তিব্ছে হওয়া উচিত)। আবার উরস্থে হস্তী, কক্ষম্বরে রথ এবং শক্ষম্বরে অন্য ব্যাথিয়া ব্যুহ রচিত হেইলে ইহার নাম 'মধ্যভেদী' (হস্তিব্ছে)। উক্ত প্রকারম্বরের বিপরীত হস্তিব্ছের নাম 'অন্তর্ভেদী' (অর্থাৎ কক্ষে হস্তী, উরস্থে অন্য ও পক্ষে রথ থাকিলে সেই ব্রুহের নাম এইরূপ হয়)।

কেবল হন্তীর দ্বারা রচিত বৃাষ্ঠেই 'শুদ্ধ' আখ্যা দেওয়। হয় ( অর্থাৎ এই বৃহ্ছে অব ও রথের মিশ্রণ থাকে না)। ইহার উরক্তে থাকিবে সাদ্রাছ ( মৃদ্ধোগ্য ) হন্তী, ঔপবাছ ( রাজবাহনাদিভাবে ব্যবহার্য ) হন্তী থাকিবে কক্ষন্ত্রে ( পশ্চাদ্ভাগের ছই পার্থে ) এবং ব্যাল ( ছুই ) হন্তী থাকিবে পক্ষন্তরে ( পুরোভাগের উভরপার্থে )।

গুদ্ধ আখবু হৈ এইভাবে রচিত হইবে, যথা—কবচধারী অথ উরক্ষে বা মধ্যে থাকিবে এবং কর্মরহিত অথ কক্ষ ও পক্ষদেশে অবস্থিত থাকিবে।

তদ্ধ ( অর্থাৎ যাহাতে অন্ত সেনাকের মিশ্রণ থাকিবে না সেইরূপ )
পত্তিব্যুক্ত এইভাবে রচিত হইবে, যথা—আবরণ বা কবচধারী পুরুষ পক্ষে
থাকিবে এবং কক্ষে থাকিবে ধছারী পুরুষ ( উরশ্রে সন্তবতঃ সংধারণ সৈনিক পুরুষগণ থাকিবে )। এই শর্যান্ত তদ্ধ বা অমিশ্রিত (গলাদিব্যুক্ত ) বলা হইল।

(মিশ্রব্ছরচনার ছইপ্রকার দেনাক্ষমিশ্রণদ্বার। বিভাগ রচিত ছইতে পারে, বধা—) (১) উভরপক্ষত্বলে পদাতিক দৈত্য এবং কক্ষন্তরস্থলে অথ থাকিতে পারে। (২) অথবা, পৃষ্ঠদেশে (কক্ষন্তরে?) হন্তী এবং প্রোভাগে (পক্ষন্তরে?) রখ থাকিতে পারে। অথবা শক্রব্ছরশভঃ শক্রব্ছতঞ্জনের অন্তর্গ করিয়া ইছায় বিপর্যায় করা ঘাইতে পারে। ছই দেনাক্ষিশ্রণদ্বারা এইরূপ বিভাগ কল্পিত ছইতে পারে। এইভাবে দেনার তিন অক্সের মিশ্রণদ্বারাও বিভাগ রচিত ছইতে পারে—ইছা ব্যাখ্যাত ছইল।

(সম্প্রতি বিতীয় প্রকরণ্যার) দার ও ফল্প দেনার বিভাগ প্রদর্শিত হইতেছে।)
(প্রকৃতিসম্পৎ-প্রকরণে অভিহিত পিতৃপৈতামহত, নিতান্ব ও বল্পন্থ প্রভৃতি)
দণ্ডগুণ্যুক্ত হইলে পদাতিক পুরুষদিগের 'দারবল' আধা। হয়। হন্তী ও
আখনেনার দারবলন্ধমন্তে নিয়লিথিত গুণবিশেষ থাকা চাই, যথা—কুল,
(ভন্তমন্ত্রাদি) জাতি, ধৈর্যা, কর্মপটুতার বয়স, শামীরিক বল, (উৎদেধ, আয়াম
ও পরিণাহবিষয়ে) শরীরগঠন, বেগ, তেজঃ (পরাক্রমন্দ্রীলভ) বা তিরস্কারের
আসহনভাব), শিল্প বা অশিক্ষা, স্থিরতা প্রেহারপ্রাপ্তিতেও কার্যাের অপরিত্যাাগ),
উদ্প্রতা (মুখ উল্প্রিত বা উচ্চ রাখা), বিধেয়তা বা নিয়ন্তার বশগামিতা, শোভন
চিক্ত ও শোভন চেষ্টারাার যোগ (অর্থাৎ এই গুণবিশেষ থাকিলে হন্ত্রী ও অধ্যের
দারবলন্ধ অন্তর্মিত হইবে)।

(বিজিকীরু) পতি, অখ, রব ও ছন্তিনেনার দারভূত বলের এক-তৃতীয়াংশ উরস্তে বা মধান্বলে স্থাপিত করিবেন। অবশিষ্ট গ্রই-তৃতীয়াংশ দারবল কক্ষধয়ে ও পক্ষবয়ে ( সমানভাগে অর্থাৎ এক-তৃতীয়াংশের গ্রই গ্রই ভাগ করিয়।) তিনি স্থাপিত করিবেন। অন্ত্রনার নামে পরিচিত ভদপেক্ষায় নৃনেশক্তি বল উত্তমদার বলের অন্ত্রনামভাগে ( পশ্চাভাগে ) তিনি স্থাপিত করিবেন। হিতীয় প্রকার অন্ত্রনার বল অপেক্ষায় ন্যুনশক্তি বলকে তৃতীয়দার বলা বায়:— এই তৃতীয়দার বল উত্তমদার বলের প্রতিলোমভাগে ( পুরোভাগে ) তিনি স্থাপিত করিবেন। ক্ষরবলকে ( অর্থাং যে সেনার পিতৃপৈতামহত্ব প্রভৃতি গুণ নাই সেই সেনাকে ) তৃতীয়দার-নামক সেনায়ও প্রতিলোমভাগে ( পুরোভাগে ) তিনি স্থাপিত করিবেন। এইভাবে তিনি সর্বপ্রকার সৈত্যকে কার্য্যের উপযোগী করিয়। লাইবেন।

কল্পবলকে শক্ষাদিস্থানে নিবেশিত করিয়া যুদ্ধ করিলে (শক্রর) আক্রমণবেগ নিজ (ফল্পনোর নাশঘারাই) অভিহত বা প্রশমিত হইরা যায় ('অভিহত' পাঠও দৃষ্ট হয় ।। আবার সাববল অগ্রে স্থাপিত করিয়া অহাসাববলকে উভয়কোটীতে (পক্ষয়ে) স্থাপিত করা যায়। জগনে বা কক্ষময়ে তৃতীয়সার সেনা স্থাপিত হইলে এবং মধ্যে কল্পনো স্থাপিত করিয়াও বাহ রচিত হইতে পায়ে;—এই প্রকার ব্ছয়চনা শক্রর বেগ সহিতে পারে, অর্থাৎ পরবলবেগে পরাভূত হয় না। বাহ স্থাপিত করিয়া (বিজিগীর) পক্ষয়য়, কক্ষয়য় ও উরশ্ব, এই পাঁচপ্রকারে বিভক্ত সেনামধ্যে এক অন্ধ বা ছই অক্ষারা শক্রবলকে প্রহার করিবন এবং অবশিষ্ঠ অক্গঞ্জীয়া শক্রর আক্রমণে বাধা দিবেন।

শ্রুর যে দেনা হর্বল, হস্তী ও অধরহিত এবং দৃশ্য অমাত্যাদিঘার। বৃদ্ধ, অধবং, যে দেনার উপর উপজাপ বিহিত ইইয়াছে—দেই দেনাকে (বিজিমীরু) প্রচুর সারবল্যরা অভিযাত করিবেন। আবার শক্রর যে দেনা সারভর সেই দেনাকে তিনি নিজের বিগুণসারভূত দেনাঘারা অভিযাত করিবেন। আবার নিজ দেনার যে অঙ্গ অঙ্গমারবিশিষ্ট দেই অঙ্গকে বছ দেনাঘারা তিনি উপচিত করিবেন (অর্থাৎ তৎসঙ্গে অন্ত বহু দেনার যোগ বিধান করিবেন)। যে দিকে (পক্ষাদিতে) শক্রমেনার অপচয় লক্ষিত ইইবে—সেই দিকের সমীপে নিজ দেনার বৃহে রচনা করিবেন, অথবা যেদিক হইতে নিজ দেনার উপর (শক্রর আক্রমণের) ভয় বৃঝা যাইবে সেই দিকে নিজ দেনার বৃহে রচনা করিবেন।

(সম্প্রতি অখাদির যুদ্ধকর্ম অভিহিত হইবে।) তার্মাযুদ্ধ ব্রয়োদশ প্রকারের হইতে পারে, যবা—(১) অভিহত বা অভিসরণ (অর্থাৎ নিজ দেন। হইতে শক্রেনার প্রতি অগ্রসর হওয়া), (২) পরিস্ত বা পরিসরণ (অর্থাৎ শক্র্রেনার চতুর্দিকে অভিযাত করিতে করিতে ঘূর্ণন), (৩) অভিস্ত বা অভিসরণ (অর্থাৎ শক্রেনোকে মধান্থলে ভেদ করিয়) স্টীর মত অভিগমন), (৪) অপস্ত বা অপসরণ (অর্থাৎ স্টীর মত পুনঃ নির্গমন), (৫) উন্মধ্যাবধান (অর্থাৎ বহুসংখ্যক অগ্রার) শক্রেনেকে উন্মধিত করিয়। পুনরায় অগ্রগুলির একর অবস্থান), (৬) বলয় (অর্থাৎ ছই দিক ইইতে স্টীমার্গলারা অভিগমন), (১) গোমুত্রিকা (অর্থাৎ গোমুত্রের ভায় বক্রগতিতে প্রবর্ত্তন), (৮) মণ্ডল (অর্থাৎ শক্রেনোর একদেশ ভেদ করিয়া চারিদিকে পরিবেটন), (১) প্রকীনিকা (অর্থাৎ সর্ব্বপ্রকার অগ্রগতি মিলাইয়া প্রয়োগ করা), (১০) বাার্ভপৃষ্ঠ (অর্থাৎ অপসরণের পরে আবার অভিসরণ), (১১) নিজ সেনা ভয় ইইতে থাকিলে অভিমুখে প্রবৃত্ত নিজ্নেনার অহ্বর্ত্তন), (১২) নিজ সেনা ভয় ইইতে থাকিলে ইহার অগ্রভাগে, পার্থাদেশে ও পৃষ্ঠদেশে ইহাকে ঘূরিয়া রক্ষা করা, এবং (১৩) শক্রমেনা ভয় ইইলে ইহার পশ্রাদ্যমন।

ছণ্ডিযুক্ষ নিম্নলিখিত প্রকারে হইতে পারে, যথা—(১) প্রকীর্ণিকা ব্যতীত অন্ত ( অভিস্তাদি ) দর্বপ্রকার অধ্যুক্ষের স্থায় ( অভিস্তাদি ) দর্বপ্রকার ছন্তিযুদ্ধও হইতে পারে, এবং ভদতিরিক্ত (২) শত্রুদেনার পন্ত্যাদি চারিটি দেনাকই যদি ব্যন্ত হয়, অথবা দমন্ত ( একত্রিত ) হয়, তাহা হইকে দেওলির হনন করা, (৩) শত্রুদেনার পক্ষ, কক্ষ ও উর্প্তের সম্পূর্ণ অব্যক্ষ্য, (৪) শত্রুদ্ধ

সেনার কোনদ্রণ ছিল্ল পাইলেই তৎপ্রতি প্রহার এবং (c) স্ক্রনেনা হুপ্ত ছইলে ভতুপরি আঘাত করা।

রথমুক্ক নিয়লিখিত প্রকাবে হইতে পারে, যথা—(১) উন্নধানধান ব্যতিরেকে অন্তান্ত সর্বপ্রকার ইন্তিয়ুদ্ধের ন্যায় রথমুক্কও তৎপ্রকারের ইইতে পারে; এবং (২) স্বযোগ্যভূমিতে অবস্থিত হইয়া শক্রর উপর অভিযান বা আক্রমণ, (৬) শক্রসেনাকে পরাজিত করিয়া অপসরণ, এবং (৪) স্থিতমুক্ক অর্থাৎ স্থরক্ষিত শক্রসেনার প্রাকার পরিবেষ্টন করিয়া বছকাল ধরিয়া ইহার সহিত যুক্ক করা।

পত্তিমুদ্ধ এইরপ হইতে পারে, যবা - দর্মদেশে ও দর্মকালে জন্তাদি ধারণ করিয়া থাকা এবং গোণনে শতানেনার নাশ করা।

এইসব বিধি অবলম্বন করিয়। (বিজিপীর) অধ্যা ও ম্মাবৃাহের রচনা করাইবেন। (হস্ত্যাদি) চতুরক সেনার যতথানি বিভব বা সমৃদ্ধি আছে তিনি ভদসুরূপ হইয়া (বৃাহব্যবস্থা করিবেন) । > ।

্বুছের সময়ে ) রাজা সেনাবৃহ হইতে ছইশত ধহুঃপরিমিত দ্ববর্তী ভানে দেনার পৃষ্ঠদেশে থাকিবেন। তাহা হইণে শক্তবার। নিজ দেনা ভিন্ন হইণে ভাহার একীকরণবারা পুনঃসংগঠন সম্ভবপর হয়, ( অতএব ) রাজা সেনার পশ্চাভাগে অবস্থান না করিয়া যুদ্ধ করিবেন না । ২।

কোটিশীর অর্থশাল্পে সাংগ্রামিক-নামক অধিকরণে পক্ষ, কক্ষ ও উরক্তবিশেষে সেনাসংখ্যাস্থসারে বৃহবিভাগ; সার ও ক**ভ** বলের বিভাগ; এবং পভি, অখ, রথ ও হন্তীর যুদ্ধ-নামক পঞ্চয় অধ্যার (আদি হইতে ১৩৩ অধ্যার) সমাও।

## ষষ্ঠ অধ্যায়

১৫৮-১৫৯ প্রকরণ--দশুবাহ, ভোগবাহ, মণ্ডলবাহ ও অসংহত-ব্যুক্তের রচনা এবং দশুবাহাদির প্রতিব্যুহস্থাপন

(দেনার) পক্ষর, উরজ (মধ্য) ও প্রতিগ্রহ বা পৃষ্ঠদেশ—এই চারি আকার অব্যবস্ক বৃহবিভাগ উপ্রস্ বা শুকাচার্ঘ্যের মতে, রচিত হইতে পারে। পক্ষর, কক্ষর, উরজ ও প্রতিগ্রহ—এই ছর প্রকার অব্যবস্ক বৃহবিভাগ বৃহস্পতির নতে রচিত হইতে পারে। ( শুক্ত ও বৃহস্পতি এই ) উভর আচার্ব্যের মতে,—গক্ষ, কক্ষ ও উরস্থ এই প্রধারে বিভক্ত সেনার—দণ্ড, ভোগ, মণ্ডল ও অসংহত-নামক চারি প্রকার বৃহহ হইতে পারে এবং এই বৃহহভদগুলিকেই প্রকৃতিবৃহে নাম দেওয়া হয়। এই বৃহহঙলির মধ্যে যে বৃহহে সেনাকে তিরশ্চীনভাবে (তিরছেভাবে) অবস্থাপন করা হয়, দে বৃহহের নাম দণ্ডবৃহে। উপরিউক্ত (ঔশনসমতের চারি প্রকার এবং বার্হ্মপত্যমতের ছয় প্রকার) অবয়বসমূহের একরে সংলগ্য করিয়াবর্ত্ত্বাকারে অবস্থাপনের নাম ভোগবৃহে। শক্রব অভিমুখে অগ্রসরণকারী সেনা যদি চতুর্দ্দিকে শক্রকে ঘিরিয়া আক্রমণ করে, তাহা হইলে সেই আক্রমণকে মণ্ডল-সংজ্ঞা দেওয়া হয়। ( শক্রর দিকে অগ্রসর হওয়ার পূর্কে ) উক্ত চারি বা হয় প্রকার দেনা যদি পুথক্ পুথক্ ভাবে স্থিত থাকিয়া আক্রমণরৃত্তি পরিচালনা করে, তাহা হইলে সেই সেনা অসংহত-নামে আধ্যাত হয়।

(সম্রুতি কক্ষ-দেনার অনকীকারী গুক্তাচার্যোর মত উপেক্ষা করিয়া, বৃহস্পতির মতের অবিরোধে কোটিলা সমতে দণ্ডাদির লক্ষণ নির্দ্দেশ করিতেছেন ৷) পক্ষ, কক্ষ, এবং উরত্য এই পাঁচ প্রকার সেনাদারা ঠিক ঠিক ভাগে ছানগমনাদি সাধনকারী সেনাকে দণ্ডবৃহে বলা যায় ৷ (ইহা প্রকৃতিবৃহ বটে। সম্প্রতি বিকৃতিবৃহত্তদ বলা হইতেছে।) কক্ষদ্ধধার। শত্রুর প্রতি আক্রমণ চালাইলে সেই দগুরুছেকে প্রদর-নামক দগুরিকার বলিয়া গৃহীত হয়। দণ্ড-সেনা পক্ষমহারা প্রতিলোমভাবে অর্থাৎ কক্ষাভিমুবে আগমনকারী প্রতিবলকে আক্রমণ করিলে ইহা দৃড়ক-নামক দগুৰিকার বলিয়া আধ্যাত হয়। আবার দেই দণ্ড-দেনাই (কাহারও মতে দেই দৃঢ়কবৃ৷হই) অত্যধিক বেগদহকারে শক্রদেনার মধ্যে প্রবিষ্ট হইলে ইহা 'অদ্ভ' নামে পরি-চিত হয়। আবার হুইপক্ষই স্বস্থানে স্থাপিত করিয়া উরস্তদার। শতকর সেনার দিকে আক্রমণ চালাইলে সেই দও-দেনার নাম শ্যেন হইরা থাকে। উক্ত প্রদরাদি চারি প্রকার বৃহের বিপরীত চারি প্রকার বৃাহ হইতে পারে :—ইছাদের নাম বৰাক্সমে চাপবৃহে, চাপক্ কবৃহে, প্রতিষ্ঠবৃহে ও ক্সপ্রতিষ্ঠবৃহ ( অর্থাৎ কৃক্ষব্যহারা প্রতিকাম হইলে চাপবৃহি; পক্ষব্যবারা অভিকাম হইলে চাপ-কু<sup>\*</sup> কিবৃহে; পক্ষরবারা অভিকাশ্ত হইলে প্রতিষ্ঠবৃহ; এবং পক্ষর ও উরত্ত-দ্বারা অভিক্রান্ত বা অভিক্রান্ত ইইলে হুপ্রভিঠবাহ নাম ধারণ করে )। ( দশু-ৰুহেংৰ অভ প্ৰকাৰ বিকাৰভেদ বলা হইতেছে।) ৰে বৃহেংর পক্ষয় চাপের -জাকার প্রাথ্য হয়, ডাছার নাম স্কর্যুছ। উর্ভেছারা শক্ষ্যেন। আ্ফ্রমণ

495

করিয়া ইছার মধ্যে প্রবিষ্ট হইলে, দশুবৃহকে বিজয় আখা দেওয়া হয়। বে বৃহের পক্ষয়য় প্রশক্ষের আকার ধারণ করে—ভাহার নাম হয় প্রলকর্ণবৃহে। বিজয়বৃহহাপেকায় যে বৃহের পক্ষয়য় বিশুণ স্থল হয়, ভাহার নাম বিশাল-বিজয়বৃহ হইয়া থাকে। যে বৃহের পক্ষয়য়, (কক্ষয়য় ও উরক্ষ এই ) তিন দেনার দমান অভিক্রমশীল হয়, ভাহার নাম চম্মুখবৃহে। আর ইহার বিপরীত বৃহে অর্থাৎ যে বৃহহের কক্ষয়য়, (পক্ষয় ও উরক্ষ এই) তিন দেনার দমান অভিক্রমশীল হয় ভাহার নাম ঝয়ায়বৃহে। যে দশুবৃহে দেনায়াজি শক্রয় উপয় প্রজক্মশীল হয় ভাহার নাম ঝয়ায়বৃহে। যে দশুবৃহে দেনায়াজি শক্রয় উপয় প্রজময় হয়, দেই দশুবৃহের নাম তথন স্টীবৃহে বলিয়া পরিচিত হয়। যে বৃহহে (পক্ষয়য়, কক্ষয়য় ও উরক্ষয়ানে) হয়টি দশুবৃহকে (ভিরশ্টানভাবে) স্থাপিত করা হয়, দেই বৃহহের নাম বলয়বৃহে। যদি কোন বৃহহে এই প্রকারভাবে চারিটি দশুবৃহে স্থাপিত হয়, ভাহা হইলে দেই বৃহহের নাম হক্ষয়বৃহহ হয়। এই পর্যান্ত মণ্ডবৃহহের নিয়পণ করা হইল।

পক্ষন্ত্র, কক্ষন্ত্র ও উরত্য এই তিন স্থান্দ্রারা বিষম সংখ্যার রচিত বৃছের নাম ভোগবৃহে। এই বৃছে সর্পের স্থার একাকারে অবব। গোমুত্রের স্থার বিভিন্নাকারে স্থাপিত হইতে পারে বলিয়া ইহার ছই প্রকার ভেদ হইতে পারে, যথা—সর্পারী অববা গোমুত্রিকা। যে ভোগবৃহে উরত্য বা মধ্যন্থার মুগ্র অর্থাৎ বিধাবিভক্ত দণ্ডের আকারবিশিষ্ট হয় এবং বাহার পক্ষব্যের প্রতােকটি একৈক্দণ্ডের আকারবিশিষ্ট হয় —তাহার নাম শকটবৃহে। ইহার বিপরীত হইলে—
ক্র্যাৎ কোনও বৃহ্হের উরত্যন্থান একৈকদণ্ডের আকারবারী ও ইহার শক্ষব্যের
প্রতােকটি বিধাবিভক্তদণ্ডের আকারবারী হইলে, ইহার নাম হয় মকরব্য়ই।
পূর্ববেণিত শকটবৃহেই হন্তী, অধ ও রবহারা মিশ্রিত হইলে, ইহার নাম হয়
পারিপতন্ত্রকবৃহে। এই পর্যান্ত ভোগাসুবৃহ্হের নিরূপণ করা হইল।

বে বৃহ্বে পক্ষর, কক্ষরর ও উরস্তের অন্যোভনিগন ঘটে, তাহার নাম
মণ্ডপবৃহে (ইহা কেটিলাের নিজমতাক্ষরারী মণ্ডপবৃহি-লক্ষণ)। এই মণ্ডলবৃহহের ছইটি ভেদ আছে—একটির নাম সর্বতােডক্র। অপরটির নাম ছর্জর—
চারিদিকে শক্রর উণর আক্রমণ চালাইলে এই মণ্ডলবৃহে সর্বতােডক্র এই সংজ্ঞা
পাভ করে; এবং যে মণ্ডলবৃহে ছই-ছই সেনা উরস্তে, ছই-ছই সেনা পক্ষরে
এবং কেবল ছই সেনা ছই কক্ষে পাকিয়া একযােগে শক্রর আক্রমণ করে দেই
মণ্ডপবৃহহের নাম অইনীকবৃহে হয়। এই প্রাপ্ত মণ্ডলবৃহহের নির্দণ
করা ছইল।

শক্ষরা, কক্ষর ও উরশ্য — এই পাঁচ সেনার অসংহতভাবে শক্ষর অভিমুখে আক্রমণ ঘটিলে, ইছার নাম হয় অসংহতবৃহে। এই পাঁচ অনীকের ঘারা গঠিও অসংহতবৃহের ছইটি প্রকারভেদ আছে;—এই পাঁচ সেনাকে যদি বক্ষের আকারবিশিষ্ট করিয়া রচনা করা হয়, তাহা ছইলে ইছার নাম হয় বক্ষবৃহ, এবং যদি গোধা-নামক জন্তর আকারবিশিষ্ট করিয়া রচনা করা হয়, তাহা ছইলে ইছার নাম হয় গোধাবৃহে। আবার যদি (পক্ষর, উরশ্য ও প্রতিক্রহ বা সেনার শশ্যভাগে এই) চারি স্থানের সেনাকে অসংহতভাবে রচনা করা হয়, তাহা ছইলে ইছার নাম উন্থানকবৃহে বা কাকপদীবৃহে ছইয়া থাকে। আবার যদি (পক্ষর এবং উরশ্য ও প্রতিক্রহের অন্তর এই) তিন স্থানের সেনাঘার। অসংহতবৃহ রচিত হয়, তাহা ছইলে ইহার নাম অর্দ্ধচিক্রকবৃহে অথবা কর্কটশৃন্ধী-বৃহহ। এই পর্যন্ত অসংহতবৃহের নিরূপণ করা হইল।

খোর ক্রেকটি অভিনিক্ত বৃংহক্তেদের কথা বলা হইতেছে।) যে বৃংহের উরক্ষে বা মধ্যভাগে রথ, কক্ষন্তরে হস্তী এবং পৃষ্ঠদেশে অব (এবং পক্ষারে পতি) থাকে, তাহার নাম অনিইবৃংহ। আবার যে বৃংহে (পক্ষারে) পতি, (উরক্ষে) অব, (কক্ষারে) যথ এবং পৃষ্ঠদেশে হন্তী থাকে, তাহার নাম অচলবৃহে। আবার বাহাতে (পক্ষারে) হন্তী, (উরক্ষে) অব, (কক্ষারে) রথ এবং পৃষ্ঠদেশে পতি থাকে, তাহার নাম হর অপ্রতিহত্তবৃহে।

(বৃহেনিরূপণের পর এখন প্রতিবৃহ্নের স্থাপন করা হইতেছে।)(বিজিপীরু) প্রদর-নামক বৃহহকে দৃচক-নামক বৃহেলার। আঘাত করিবেন। তিনি দৃচক্র্যুহকে অসম্বানামক বৃহহলার। আঘাত করিবেন। প্রতিষ্ঠবৃহহলারা, স্কর্বৃহকে বিজ্ঞার্যুহরে সর্বতোভন্ত-নামক বৃহহলারা তিনি আঘাত বা নই করিবেন। ছক্ত্রিয়-নামক বৃহহলারা তিনি সর্বপ্রথমনামক বৃহহলারা তিনি পঞ্জি, অব, রব ও হন্তী—এই চারি সেনাক্ষের প্রথম-প্রথমটি পর-পরটিলারা আঘাত বা নাল করিবেন। এবং হীনাল অর্থাৎ অল্লসার অক্তরিশিষ্ট সেনাকে অধিকাক বা শক্তিসম্পন্ন অক্তরিশিষ্ট সেনাকে আধিকাক বা শক্তিসম্পন্ন অক্তরিশিষ্ট সেনাকে আধিকাক বা শক্তিসম্পন্ন অক্তরিশিষ্ট সেনালারা আঘাত করিবেন।

( সম্প্রতি সেনার সংচালকদিগের নাম নিম্নপিত হইতেছে।) দশ সেনাদের ( নেনাদ চারি প্রকার হইলেও এখনে প্রধানভূত রথ ও হস্তী লক্ষিত ইইতেছে ) ক্ষর্পাৎ দশটি রথ এবং দশটি হস্তীর ( প্রত্যেক রথ ও হস্তীর সহিত কডটি অধ ও সমাতিক থাকিবে তথিষরে এই ক্ষধিকর্শের পঞ্চর অধ্যায় দ্রাইবা ) উপর ক্ষধিকার- প্রাপ্ত এক ভর্তার নাম পদিক। দশটি পদিকের উপর বিনি এক অধিকারী পুরুষ তাঁহার নাম সেলাপতি এবং দেনাপতি দশকের উপর এক অধিকারী পুরুষের নাম লায়ক। দেই নায়ক,—বাহের অক্সভৃত (হন্তী প্রভৃতি) সেনার অক্ষবিভর্জনে, বিভক্তভাব হইলে একীকরণে, গতি-নির্ভৃতি, গতিকরণে, যুদ্ধ হইতে প্রত্যাবর্তানে এবং প্রহরণ বা আক্রমণকার্য্যে—তুর্ঘানিনাদ, এবং ধ্বন্ধ ও পতাকাপ্রদর্শনিধারা সংজ্ঞা বা সংকেতবিধান করিবেন। স্ববল ও শক্রবলের ব্যহ্ত সমান হইলে, দেশ (সম বিষমাদি দেশ), কাল (দিনরাজ্ঞাদি কাল) ও সারের (শোর্যাদি সার) যোগ বা সম্বন্ধের উপর সিদ্ধি (অর্থাৎ যুদ্ধবিক্তর) নির্ভর করিবে।

(বিজিমীর নিম্বর্ণিত উপায়নমূহদার!) শক্রর উদ্বেগ বাড়াইবেন, ষধা — (জামদর্যাদি) যন্ত্র, উপানিবলিক অধিকরণে উক্ত (বিবাদি-) প্রয়োগ, অন্তবিষয়ে বাাসক্তচিত্র পোকের উপর আঘাতকারী তীক্ষ-নামক গৃচপুক্ষের ক্রুবর্ক্ম, (ইক্সজালাদি) মারারচনা, (রাজার) দৈবসাক্ষাৎকারের খ্যাপন, হস্তাচিত বেবাদিদ্বারা আফ্লাদিতস্বরূপ শক্ট, শক্রুন্থগণের প্রকোপ, (অগ্রে) গোরুষের নিবেশন, কন্ধাবারে অগ্ন্যংপাদন, (দেনার) কোটিতে (পক্ষ্মরে) ও জ্বনে (কক্ষমের) প্রহারপ্রদান, অথবা দৃতব্যঞ্জন গুপুক্ষদারা শক্রসেনার উপজাপ বা ভেদসাধন—এবং 'তোমার হর্গ দঙ্গ হইতেছে', অববা 'তোমার হুর্গ অপহত ইইতেছে', 'তোমার নিজ কুল্মস্থত পুক্ষদার। কোপ উৎপাদিত ইইতেছে', 'তোমার সামস্ত শক্র ও তোমার আটবিক তোমার বিক্লছে উলিত ইইতেছে', এইপ্রকার (অসত্য) উল্কিসমূহ (অর্থাৎ বিজ্লিমীর এই সমস্ত উপায় অবশ্বন করিয়া শক্রকে উদ্বিগ্ধ করিলেই তাহার জ্বের সন্তাবনা হববে) ৪ ১-০ ৪

ধন্থপারী পুরুষধার। ক্ষিপ্ত বাণ কেবলমাত্ত একজন পুরুষকে মারিতে পারে, অধবা না-ও মারিতে পারে। কিন্তু, প্রজ্ঞাবান্ ব্যক্তিধারা প্রযুক্ত মতি বা বৃদ্ধি গর্ভিত প্রাণীসমূহকেও নই করিতে পারে (অর্থাৎ যুদ্ধ অপেকার বৃদ্ধিই অধিক শক্তিশালিনী হয়)।

কৌটিলীয় অর্থনাস্ত্রে সাংগ্রামিক-নামক অধিকরণে, দণ্ডবৃহে, ভোগবৃহে,
মণ্ডলবৃহে ও অসংহতবৃহেরচনা এবং তৎতদ্বৃহের প্রতিবৃহেত্বাপননামক বর্চ অধ্যায় ( আদি হইতে ১৩৪ অধ্যায় ) সমাপ্ত।
সাংগ্রামিক-নামক দশম অধিকরণ সমাপ্ত।

# সংঘরত্ত—একাদশ অধিকরণ প্রথম অধ্যায়

#### ১৬০-১৬১ প্রকরণ—ভেদের অর্থাৎ সংঘবিলেবোপারের প্রযোগ ও উপাংশুদ্

সংঘকে সহায়করূপে পাওয়া গেলে দেই লাভ, দণ্ড বা সৈন্তলাভ ও মিত্তলাভ মধ্যে উত্তম বা প্রশন্ত লাভ বলিয়া বিবেচিত হইতে পারে। কারণ, সংহত, বা একত্রীভাবে শক্তিসম্পন্ন হইয়া অবস্থিত সংঘদমূহ শত্রুগণেরও অবৃদ্ধ বা অজন্ম হয়। (কাজেই) বিজিগীর রাজা, নিজের অফুক্লচারী হইলে সংঘদমূহকে সাম ও দামপ্রয়োগদ্বারা সায়ত রাখিবেন অর্থাৎ তাহাদিগকে নিজের উপযোগে রাখিবেন এবং প্রতিক্লচারী হইলে তাহাদিগকে তেদ ও দণ্ডপ্রয়োগদ্বারা শাসনে রাখিবেন।

কলোজ ও সুরাষ্ট্র-দেশের সংঘদমূহ ( অর্থাৎ বৈশ্যশ্রেণী ও ক্ষত্তিয়শ্রেণী ) বার্তা ও শন্ত্রদারা উপজীবিকা চালায়। ( ইহারা একপ্রকার সংঘচারী।) আর লিক্ছিবিক ( বাহাদের প্রাচীন রাজধানী ছিল বৈশালী ), ব্রেজিক ( পালি বজ্জিক ), মন্ত্রাক (প্রাচীন রাজধানী ছিল 'পাবা'), মন্ত্রক, কুকুর, কুরু ও পাঞ্চাল-দেশীর শ্রেণী বা সংঘীরা রাজনামধারী সংঘোপভীবী ( অর্থাৎ এই সও স্থানের ক্ষত্রিয়াদি বর্গও অপরপ্রকার সংঘনামে পরিচিত )।

এই উভয় প্রকার সংঘের আগরবর্তী হইরা (বিজিগীবুর) সন্তি-নামক গৃচপুক্ষরণ সংঘগুলির পরস্পরের মধ্যে দোষ, ছেব বা রোষ, অপকারাদিনিমিন্তক বৈর বা দ্রোহ ও কলহের কারণ উপলব্ধি করিয়া তাহাদিগের মধ্যে ক্রমশং অত্মপ্রবিশিন্ত ভেদ ঘটাইবে এবং বলিবে, 'অমুক সংঘ ভোমাদের সংঘের এইরূপ অপবাদ করে'। (অন্ত সংঘের প্রতিও এইভাবে বলিয়া) তাহারা উভয়পক্ষমধ্যে ভেদ আনয়ন করিবে। পরস্পরের প্রতি ক্রইভাবাণর সংঘীদিগের মধ্যে আচার্যারাঞ্জন গৃচপুক্ষরণণ বিভা, শিল্প, দৃতে (জ্রাখেলা), ও বৈহারিক (প্রশ্লোভরাদি, অপবা ক্রীভোংসবাদি) বিষয়ে বালকলহ (অমুক সংঘী তোমাকে ম্র্যাদি বলিয়াছে ইত্যাদিয়প বাক্যভারা প্রয়োচিত বালকোচিত কলহ ) উৎপাদন ক্রাইবে। অপবা, বেষ্টা ও মন্তপানে আসক্ত সংঘুধা পুক্রস্বিগের মধ্যে

প্রতিশোম বা উপ্টা প্রশংসা করাইয়া তীক্ষ-নামক গৃচপুরুষণণ ভাছাদের পরক্ষরের কলহ উৎপাদন করাইবে; অথবা দংঘর্থা পুরুষদিগের সম্বন্ধে বাহারা কৃত্য (অর্থাৎ কুন্ধ, পূর্ব, ভীত বা অবমানিত) বান্ধি ভাহাদিগকে নিজের আহুক্লো আনিয়া ভাহাদের পরক্ষরধা বিবাদ ঘটাইবে। (গৃত্পুরুষণণ) বিশিষ্ট ইইভোগ্যের ভোগকারীদিগের অপেক্ষায় যে (রাজপুরুত্দা) কুমারকেরা হীনভোগ্য ভোগ করেন—ভাঁহাদিগকে (বিশিষ্ট ভোগ্যের ভোগকারীদিগের বিরুদ্ধে) প্রোৎসাহিত করিবে।

( সংঘমধ্যে ) হীনগণের সহিত বিশিষ্টগণের এক শংক্তিতে ভোজন ও বিবাহ-সম্বন্ধ তাহারা নিবারণ করিবে। অথবা, তাহারা আবার হীনগণকে বিশিষ্টগণের সহিত একপংক্তিভোজন ও বিবাহ-সম্বন্ধাপনে যোজিত করিবে। কুল, পুরুষকার ও স্থানভেদ সম্পর্কে যাহারা অবহীন বা নিকৃষ্ট তাহাদিগকে বিশিষ্টজনের সহিত ভূপাভাব প্রান্তির জন্ম ভাহারা যোজিত করিবে। অথবা, ( সংঘমধ্যে ) কোনও ব্যবহার স্থাযাভাবে নির্ণীত হইলেও, তাহারা ইহার বিপরীত স্থায় সমর্থন করিয়া ( ব্যবহর্ত্তাকে ) শুনাইবে বা বুঝাইবে।

অথবা, তীক্ষ-নামক গৃচপুরুষরা, রাত্তিতে সংঘিগণমধ্যে কোনও বিবাসবিষয়
উপত্তিত হইলে, (একপক্ষের ) দ্রব্য, পশু ও মহুস্থ নই করিয়া (অপর কোনও
পক্ষের উপর সেই নাশের দোব আরোপ করিয়া) তাহাদের মধ্যে কলহ উৎপাদন
করিবে। সর্বপ্রকার কলহবিষয়েই (বিজিগীর) রাজা হীনপক্ষকে কোশ ও সগুলারা
স্বপক্ষে আনিয়া তাহাকে নিজ প্রতিপক্ষ বা শক্ষর বধে নিযুক্ত করিবেন।
অববা, তিনি সংল হইতে ভেদপ্রাপ্ত পুরুষদিগকে অন্তর্জ পাঠাইয়া দিবেন।
স্ববা, তিনি ইহাদিগকে একপ্রদেশে একত্রিতভাবে নিবেশিত করিয়া ভূমিতে
কৃষিকর্দা করিতে যোগ্য ইহাদের কুলপ্রুক বা কুলদশক লইয়া (ভিন্ন ভিন্ন )
গ্রামানবেশ করাইবেন। কারণ, ইহাদিগকে একত্র হইয়া থাকিতে দিলে, ইহায়া
(বিজিগীর রাজার বিক্ষে) শন্তর্গহণে সমর্থ হইয়া উঠিতে পারে। এবং ইহায়া
সমবেত হইয়া অবস্থান করিলে, (ভিনি ) ইহাদের উপর দণ্ডবিধান করিবেন।

(বিজিপীর রাজা পূর্ব্বোলিখিত) রাজশক্ষোপজীবী সংঘগণধার। অবরুজ বা পরাভূত কোনও বিশিপ্তকুলোংশর গুণী ব্যক্তিকে 'রাজপুত্র' বলিয় স্থাপনা করিবেন। আবার কার্ডান্তিকাদি (জ্যোতিবী ও সামুদ্রিকশালী প্রস্কৃতি) সংঘমধ্যে সেই (কল্লিড) রাজপুত্রের সহজে তাঁহার রাজপক্ষপ্যোগের কথা প্রকাশ করিবেন। এবং তাঁহারা ধার্দ্মিক সংঘর্ষাগণের প্রতি এইরূপ উপজাপ প্ররোগ করিবন—"অমুক রাজার পুত্র বা জাতার প্রতি তোমরা। (তাঁহার উপরোধাদিজনিত ক্লেশের নিবারণার্থ) নিজ ধর্ম অবলখন কর।" তাঁহার। দেই উপজাপ শীকার করিয়া লইলে, (ক্রুল্লুজাদি) রুত্যপক্ষকে আহুকুল্যে আনিবার জ্ঞান, তাঁহার। তৎ-সমীপে অর্থ ও দণ্ড (সেনা) প্রেরণ করিবেন। বিজ্ঞানের অবসর উপস্থিত ইইলে, শৌগুক বা সৌরিকের বেষধারী গৃচ্পুরুষগণ নিজেদের পুত্র ও স্তীর মরণজ্ঞলে, ইহা (প্রেডের উদ্দেশ্যে দের) 'নৈবেচনিক'-নামক মন্থ— এই বলিয়া মদনরসমূক (বিবমর) শতশত মন্থ কুন্ধ (সংঘের নিকট) প্রদান করিবে। (ভেদের উপায়ান্তর বর্ণিত ইইভেছে।) চৈত্য ও দেবালয়ের হারদশেশ ও রক্ষান্থানে (গৃচ্পুরুষ) সঞ্জীরা (সংঘণতির সহিত) সংবিৎ বা দর্ভ করার অভিপ্রায়ে নিক্ষেপ বা স্থাসরূপে রাধিবার উপযুক্ত হিরণ্যভাজনসমূহ— যাহাতে হিরণ্য ও অভিজ্ঞানমূল্যা নিহিত আছে— প্রকাশ করিবে। সংঘন্ধ পুরুবেরা এই বিবরসম্বন্ধে জিজ্ঞান্য করার জন্ত দৃষ্ট হইলে পর, তাহারা বলিবে ধে, এই সব অংগভাজনগুলি 'রাজ্কীয়'। ওদনন্তর (এই বিবয় লইয়া সংঘন্ধা পরশার ভেদ উপস্থিত হইলে) (বিজিনীরু রাজা) তাহাদের উপর আক্রমণ চালাইবেন।

অথবা, সংঘণ্ডলির বাহন ও হিরণ্য অল্পকালের জন্ত ঋণদ্ধণে লইয়া, তিনি প্রধ্যাতভাবে ( অর্থাৎ সর্বজনসমক্ষে ) সংঘের মুখ্যকে সেই সব প্রধ্য দিবেন, এবং সংঘণ্ডলি তাহা ( বধাসময়ে ) ফিরিয়া লইবার প্রার্থনা করিলে বলিবেন — "অমুক্ মুখ্যের নিকট তাহা দেওয়া হইয়াছে।" ( অর্থাৎ এইভাবে সংঘণ্ড সংঘ্যুখ্যের ভিতর ভেদ আনম্মন করিবেন। )

এতদ্বার। স্কলাবারে প্রবিষ্ট আটবিকদিগের মধ্যেও, ভেদ আনয়ন করিবার উপার অভিহিত হইল—বুঝিতে হইবে।

স্থেতি উপাংশুব্ধের বিষয় নিরূপিত ছইতেছে।) অথবা, অত্যন্ত অভিয়ানী সংঘ্র্থাপুত্রকে সত্রী (গৃচপুরুষ) এইভাবে ব্বাইবে—"তুমি অমুক রাজার পুত্র, শক্রম শুরে ভোমাকে এখানে স্তাসরূপে রাখা ছইয়াছে।" সেই সংখ্যুখাপুত্র এই কথা মানিয়া লইলে, (বিজিগীর) রাজা কোশ ও মগুরারা ভাঁছাকে নিজের অর্জুল করিয়া, সংঘ্রে উপার ভদ্মারা বিজ্ञম চালাইবেন। ভংশর ভাঁছার ভার্যাসিদ্ধি (অর্থাৎ সংঘ্যুখার্য পুত্রবারা সংখ্যে নিকাছরূপ কার্যার সিদ্ধি) ঘটিলে, ভাঁছাকেও (সেই সংঘ্যুখাপুত্রকেও) তিনি প্রবাসিত করাইবেন (অর্থাৎ ভাঁছাকে নির্কাসনে পাঠাইবেন)।

অথবা, কুলটা স্ত্রীর পোষণকারী, অথবা, প্লবক, নট, নর্দ্ধক ও সোভিকগণের ( ঐক্তলালিকগণের ) বেবধারী গৃচপুক্ষেরা, গুণ্ডচরের কার্মো ব্যাপারিত থাকিয়া, পরমর্মপ-বোবনবিশিষ্ট স্ত্রীলোকদ্বারা সংঘ্যুধাদিগকে উদ্মাদিত করিবে। সংঘ্যুধারা এইভাবে স্ত্রীকামী হইকে, তাঁহাদের মধ্য হইতে অক্তরের প্রতি কোনও স্ত্রীলোকের বিশাস উৎপাদন করিয়া ( মিলনের সঙ্কেতস্থান ঠিক হইকে ) সেই রম্মীকে অক্ত এক সংঘ্যুধারার অক্তর নেওয়াইয়া, বা অক্ত সংঘ্যুধা তাহাকে অপহরণ করিয়া নিয়াছেন বলিয়া মিধ্যা কথা রটনা করাইয়া, সংঘ্যুধাদিগের মধ্যে তাহারা কলহ উৎপাদন করিবে। এইভাবে কলহ উৎপাদ হইকে, তীক্ষ্ণ-নামক গৃচপুক্ষবেরা তাহাদের নিজ কার্য্য স্থাধা করিবে, অর্থাৎ কোনও একজন সংঘ্রুধার হত্যাসাধন করিবে এবং রটাইয়া দিবে, "এই কামুক ব্যক্তি প্রতিকামুক অক্ত ব্যক্তিদ্বারা হত হইয়াছেন।"

অখবা, এই সংঘদ্ধাগণনধাে যদি কেহ ঝগড়। করিতে না চাহেন, তাহা হইলে দেই রমনী এই প্রকার বলিবে—"আপনার প্রতি আমি জাতকামা হই—ইহাতে জমুক সংঘদ্ধা বাধাপ্রদান করেন অর্থাৎ তিনি ইহা ইচ্ছা করেন না। তিনি জীবিত থাকিলে আমি আহ এখানে (আপনার নিকট) থাকিতে পারি না"—এই বলিয়া নে তাঁহার বধের আয়োজন করিবে। অথবা, যদি কোনও সংঘদ্ধা তাহাকে বলাংকারপূর্বক অপহরণ করিয়া কোনও জললে বা জীড়াগৃহে (সঙ্কেতগৃহে) শইয়া যান, তাহা হইলে তাঁহাকে ভীক্ত-নামক গৃচপুরুবেরা হত্যা করাইবেন, অথবা, সে স্বয়ং বিবপ্রয়োগে তাঁহাকে হত্যা করিবে। তাহার পম সেই রমনী এইয়প প্রকাশ করিবে—"অমুক (প্রতিকামুক) ব্যক্তিদারা আমার প্রিয়জন হত হইয়াছেন।"

অথবা, সিদ্ধপ্রুবের বেবধারী গৃঢ়পুরুব কোনও স্ত্রীকে জাতকাম সংঘ্রুপ্তকে বন্দীকরণের উপযোগী ওহধিসমূহের প্রয়োগের ছল করিয়া, বিষমিন্তিত ঔবধের প্রয়োগনারা ঠকাইয়া (তাঁহার বধসাধনপূর্বক) পলাইয়া যাইবে। সে শলাইয়া গোলে পর, অন্ত সঞ্জীপুরুবেরা প্রকাশ করিবে যে, অন্ত একজন প্রতিকামুক্ষারা প্রেরিভ হইয়াই সেই সিদ্ধপুরুব তাঁহার বধসাধন করিয়াছেন।

অথবা, ধনী বিধবা স্ত্রীলোক, অথবা (সধবা হইলেও দারিস্ত্র্যাদিদোবে)
গৃচভাবে ব্যাভিচারকারিণী স্ত্রীলোক ও কণট স্ত্রীলোক (অর্থাৎ স্তীবেধারী
প্রক্ষমন) দার ও নিক্ষেণ-সম্বন্ধী বিবাদে রত হইয়া (নির্ধরার্থ ) সংখ্যুধাগণের
নিক্ট উপস্থিত হইয়া তাঁহাদিগকে উন্মাদিত করিবে। অধবা, অদিভিস্তী

( অর্থাৎ নানাপ্রকার দেবতার ছবি প্রদর্শন করিয়। জীবিকাকারিণী স্ত্রী ), কোশিক স্ত্রী ( নর্শপ্রাহীদিগের স্ত্রী ), নর্ভকী ও গায়িকা স্ত্রী ( এইভাবে ) সংঘূর্ণাদিগকে উন্মাদিত করিবে। এই প্রকার ভাবে উন্মাদিত ইইয়া বশীকৃত সংঘূর্থাগণ সংক্রের গুঢ়গৃহে রাত্রিভে সমাগমার্থ প্রবেশ করিলে তীক্ত-নামক গৃঢ়পুক্রেরা তাঁহাদিগকে বধ করিবে, কিংবা বন্ধনপূর্বক অপহরণ করিবে।

অৰবা, কোনও মত্ৰী গৃঢ়পুৰুষ সংবম্খ্যকে এইভাবে জানাইবে—"অমুক গ্ৰামে দ্বিদ্রকুলজাও অমুক পুরুষ (জীবিকার জন্ত ) অন্তর চলিয়া গিয়াছে, তাহার স্ত্রী রাজার ভোগের যোগ্যা, তাহাকে আপনি খীকার করিয়া লউন "দেই স্ত্রী ( সংঘমুখাঘারা ) গৃহীত হইলে, পনর দিবদ শরে সিদ্ধবেষধারী এক দৃয় ( রাঞ্চার **থা**তিকুলচারী ) সংঘমুখাদিগের মধ্যে মাইয়া এইরূপভাবে আক্রন্সন বা চীৎকার করিয়া বলিবে—"এই মুখাপুরুষ ('মুখ্যাং'—পাঠ গ্রুত হইলে 'ভার্য্যাং' পদের বিশেষণক্রণে গৃহীত হইতে পারে - কিন্তু, ইহা সমীচীন মনে হয় না; 'মুখো' পাঠ ধরা অধিক অর্থনছতি রক্ষা করিবে) আমার ভাষ্যা, পুত্রবধূ, ভগিনী বা কন্তাকে বলাৎকারে ভোগ করিতেছেন।" বদি সংঘ সেই মুধ্যুক ( এই অপরাধের জন্ম) নিগৃহীত করে, ভাহা হইলে (বিজিগীয়ু) রাজা তাঁহাকে স্বৰণে আনিয়া অক্সান্ত প্রতিক্লচারী মুধ্যদিগের উপর তাঁহাকে উত্যক্ত করিবেন। আর যদি মেই মুখ্য সংঘকর্ত্বক নিগৃহীত না হন, তাহা হইলে তীক্ষুগণ রাত্রিতে সেই সিন্ধবেষধারী দৃষ্যপুরুষকে হত্যা করিবে। তৎপর অহান্ত সিন্ধব্যঞ্জন গুঢ়পুরুষেরা চীৎকার করিয়া বলিবে —"এই সংঘ্যুখাপুরুষ এলাঘাতী ( দিদ্ধপুরুষের হস্তা ) এবং তিনি ব্রাহ্মণীর সহিত জারকর্মে রত হিলেন।" অথবা, কার্ন্তান্তিক ব দৈবজ্ঞের বেষধারী গুঢ়পুরুষ, (সংঘ্যুখাগণের) অন্ততমন্বারা রতা (কোন ব)ক্তির) কন্তাসম্বন্ধে অন্তত্ম সংঘয়ুখ্যের নিকট এইভাবে বুঝাইবে—"অযুক ব্যক্তির কন্তা বাঁহার পত্নী হইবে, তিনি রাজা হইবেন এবং দে কন্তা বে পুত্র প্রাস্থ করিবে তিনিও রাজা হইবেন; অভএব,— দর্কাশ্বদানে, বলাৎকারপূর্কাক দেই কন্তাকে লাভ কর।" (সেই বোধিত সংঘুখাদারা) যদি দেই কন্তা লব না হয়, তাহা হইলে পূর্ববরণকারী পক্ষকে তাহারা তাঁহার বিরুদ্ধে উৎসাহিত করিবে। আর যদি (সেই সংঘমুখ্য) সেই কল্পান্তে লাভ করিভে পারে, তবে ( পূর্ববিষয়িত। ও পরবর্তী যাচক--এই উভয়ের মধ্যে ) কলছ দিছ ছইবে।

খধৰা, ভিক্কীবেষধারী ত্রী-গুওচর ভার্যাপ্রেমরত কোন সংঘ্যুধাকে এইরূপ শ্লিবে—"অযুক্ বৌৰনদৃপ্ত মুখ্য আগনায় ভার্যায় প্রতি (কামলোলুণ হইয়া) তাঁহার নিকট আমাকে ( দূতীরূপে ) পাঠাইয়াছেন। তাঁহার ভরে আমি এই পত্ত ও আভরণ লইয়া এখানে আসিয়াছি। আপনার ভার্য্যা নির্দ্দের। আপনি গৃচ্ভাবে তাঁহার বিরুদ্ধে প্রতীকারের চেষ্টা করুন (অর্থাৎ তাঁহার বধোপার নির্দ্ধারণ করুন)। (বতক্ষণ আপনি তাহা না করেন) ততক্ষণ আমিও আপনার নিকট অবস্থান অঙ্গীকার করিব।" এই প্রকার কলহ-কারণ উপন্থিত হইলে, কিংবা (উপজাপ বাতীত) আপনা হইতেই কলহ উৎপন্ন হইলে, অথবা, তীক্ষপুরুষগণদ্বারা কলহ উৎপাদিত হইলে, (বিজিগীরু) রাজা অল্পন্তিবিশিষ্ট সংব্যুখ্যকে কোশ ও দণ্ডবারা নিজবশে আনিয়া তাঁহাকে প্রতিক্লচারী অক্তান্ত সংব্যুখ্যকে কোশ ও দণ্ডবারা নিজবশে আনিয়া তাঁহাকে প্রতিক্লচারী অক্তান্ত সংব্যুখ্যকে কোশ ও দণ্ডবারা নিজবশে আনিয়া তাঁহাকে প্রতিক্লচারী অক্তান্ত সংব্যুখ্যকে কোশ ও দণ্ডবারা নিজবশে আনিয়া তাঁহাকে প্রথবা (তাহা করিতে অসমর্থ হইলে ) তাঁহাকে দেখান হইতে (তাঁহার নিজ দেশ হইতে ) অপবাহিত বা অপদারিত করিবেন।

উক্ত প্রকারে (বিজিগীরু রাজা) সংঘদমূহের মধ্যে এক মুধ্য রাজা হইয়া ধাকিতে পারিবেন। আর সংঘগুলিও এই প্রকারে দেই রাজা হইতে, এবং সেই রাজার উৎপাদিত অতিসন্ধান বা প্রবঞ্চনাদমূহ হইতে আত্মরক্ষা করিয়া চলিবে।

সংঘর্ধ্য ভাষর্তির অবলম্বনে হিতকারী ও প্রিরাচারী হইয়া সংঘমধাে দাস্ত (অকুষ্কত) রহিবেন, এবং স্বচিত্তাপ্রবর্তী জনসমূহকে নিজের কাছে রাধির। (সংঘের) সব পুরুষের মতামুবর্তী হইয়া থাকিবেন । ১॥

কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্রে সংঘর্ত্ত-নামক একাদশ অধিকরণে ভেদপ্রয়োগও উপাংও-দণ্ড-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ১৩৫ অধ্যায় ) সমাও।

সংঘর্ত্ত-নামক একাদশ অধিকরণ সমাপ্ত।

## আবলীয়স—দ্বাদশ অধিকরণ

#### প্রথম অধ্যায়

#### ১৬২ প্রকরণ—**দৃত্তকর্ম**

নিজ হইতে বলবতার রাজাঘারা অভিযুক্ত বা আক্রান্ত প্রবল (বিজিপ্রীরু) রাজাকে, সর্বপ্রধার (পরিভবের) অবস্থায়ই, বেতসের ধর্ম অবলম্বন করিয়, তদন্তিকে নত্র থাকিতে হইবে। বে রাজা বলীয়ান্ রাজার নিকট নত থাকেন, তিনি ইল্রের নিকট প্রণত হইলেন—এইরূপ ভাবিতে হইবে। ইহা ভারমাজ আচার্য্যের মত।

দর্বপ্রকার বলসমূহছার। ( ছর্বল রাজাও বলীয়ান্ রাজার সহিত ) যুদ্ধ করিবেন। কারণ, পরাক্রমই সব বাসন বা আপদ নাশ করে। আর পরাক্রম-প্রদর্শনই ক্ষত্রিরের স্বধর্ম। যুদ্ধে জয় হউক, আর পরাক্তর হউক—( ক্ষত্রিরের ধর্ম হইল পরাক্রম-প্রদর্শন, শত্রুর পাদে পত্র নহে )। ইহা বিশালাক্ষ আচার্যের মত।

(কিন্তু), ক্রেটিল্য এই উত্তর মতই মানেন না। সর্বপ্রকার অপমানেই, (বলীয়ান রাজার নিকট) আনত হর্বল রাজাকে কুলচর মেবের মত জীবনবিবরে নিরাশ হইরাই বাস করিতে হয়। আর অল্প সৈত লইরা যুক্কারী রাজা, তরণসাধনবিহীন হইরা সমুদ্রে অবগাহনকারী ব্যক্তির মত নাশপ্রাপ্ত হয়। অতএব, ( হুর্বল রাজা) শক্রর অপেক্ষায় অধিক্তর শক্তিসম্পন্ন অন্ত কোন রাজাকে, অথবা শক্রর অপ্রধর্ণীয় কোনও হুর্গ আশ্রয় করিরা, অতিযোক্তার প্রতিব্যাপার্যুক্ত হইবেন।

( তুর্বল রাজার উপর) অভিবোগকারী বা আক্রমণকারী রাজা তিন প্রকারের ছইতে পারেন—ধর্মবিজয়ী, লোভবিজয়ী ও অস্তরবিজয়ী। তমধ্যে বিনি ধর্ম বিজয়ী ( অভিবোজা), তিনি শক্রর আম্বাসমর্পণে তুই হয়েন; কেবল তাঁহার ভয়ে নছে, অভাভ শক্রর ভয়েও ( হর্মল রাজা) তাঁহার শরণাগত আফিবেন। আর ঘিনি জোভবিজয়ী (অভিবোজা), তিনি শক্রর ভূমি ও দ্রবাহরণদারা তুই হয়েন; ( হর্মল রাজা) অর্থধারা তাঁহার শরণাগত বহিবেন। আর বিনি অস্করবিজয়ী (অভিবোজা), তিনি শক্রর ভূমি, দ্রবা,

পূত্র, দার ও তাঁহার প্রাণহরণদ্বারা ভূষ হয়েন; ( ছর্কল রাজা ) ভূমি ও স্রবা প্রদানধারা তাঁহাকে অন্তর্ক করিয়া, স্বয়ং ধরা না দিয়া তাঁহার প্রতীকার করিবেন।

(উক্ত তিনপ্রকার) অভিযোজাদিগের মধ্যে যদি কোন একজন তুর্বল রাজার উপর আক্রমণ করার উদ্দেশ্যে উন্থোনী হয়েন, তাহা হইলে সেই অবলীয়ান্ রাজা সন্ধি, মন্ত্রযুদ্ধ, অবণা কৃট্যুদ্ধনারা তাঁহার প্রতীকার করিবেন। তিনি প্রবল অভিবোজার শত্রুপক্ষকে সাম ও দানদারা নিজ আহুক্লো আনিতে চেষ্টা করিবেন এবং তাঁহার (সেই অভিযোজার) (অমাতাাদি) সপক্ষকে ভেদ ও দওদারা নিজের বশে রাবিতে চেষ্টা করিবেন। অথবা, (সেই অভিযোজার) দুর্গ, রাষ্ট্র, ক্ষনাবার (সেনানিবেশ), (তাঁহার অর্থাৎ অভিযুক্ত অবলীয়ান রাজার) গুচ্পুক্ষবেরা শত্রপ্রয়োগ, রস (বিষ)ও অগ্নিপ্রদানদারা নই করিবে। ( হর্মল রাজা) তাঁহার ( অর্থাৎ দেই প্রবল অভিযোজার) সর্কদিক হইতে পাঞ্চিগ্রহণ করাইবেন; অথবা তাঁহার রাজ্য তাঁহার রাজ্য তাঁহার অবরুদ্ধ কোনও পুত্রধারা অপহরণ করাইবেন।

এইভাবে নানাপ্রকার অপকারসাধনের পরে, ( অবলীয়ানুরাজা ) তাঁহার ( সেই প্রবল অভিযোক্তার ) নিকট ( দক্ষি করার জন্ত ) দৃত পাঠাইবেন। আর বদি তিনি অপকারসাধনে অশক্ত হয়েন, তাহা হইলেও দক্ষির জন্ত প্রার্থন। করিবেন। সন্ধানার্থ থাটিত হইলেও, যদি প্রবল রাজা অভিযানে প্রবন্ত রহেন—তাহা হইলে ( প্রবল রাজা পণিড ) কোষ ও দত্তের ( শেনার ) মাত্রা এক-চতুর্থাংশ বাড়াইয়া ও ( সন্ধির জন্ত পণিত ) দিবস ও রাত্রির সংখ্যা বাড়াইয়া সন্ধির প্রার্থনা করিবেন।

তিনি (প্রবল অভিবোক্তা) যদি দেনাগ্রহণের দক্ষি করার যাচ্ঞা করেন, তাহা হইলে (তুর্বল রাজা) তাঁহাকে (দেই প্রবল অভিযোক্তাকে) কুর্গ অর্থাৎ কার্য্যাশক্ত হস্তী ও অখনমূহ প্রদান করিবেন, অথবা, উৎসাহযুক্ত অর্থাৎ ভেক্সী হস্তী ও অখ দিতে হইলে, দেগুলিকে বিষপ্রয়োগে হীনবল করিরা প্রদান করিবেন। (বেন শীন্তই দেগুলি মারা ঘাইতে গারে।)

( বদি অভিবোক্তা ) পুরুষ বা পদাতিদেনাগ্রহণের সর্ত্তে সন্ধি বাচ্ঞা করেন, ভাহা হইলে ( অবলীয়ান্ রাজা ) নিজের বোগপুরুষবারা (বিবাদিধারা দুয়াদির মারণক্ষম সূচপুরুষবারা) অধিষ্ঠিত করিয়া দুয়বল, অমিত্রবল ও অটবীবল ভাঁহাকে প্রদান করিবেন এবং তেমনভাবে ব্যবস্থা করিবেন যাহাতে উভ্রের ( অর্থাৎ সেই অভিযোজা শক্রর ও দৃয়াদিবলের ) বিনাশ ঘটে। অথবা ( হুর্বল রাজা ) নিজের তীক্ষবল ভাঁহাকে প্রদান করিবেন—যে বল বা সৈন্ত অবমানিত হইলেই ( অভিযোজা ) শক্রর অপকার করিবে। অথবা, (হুর্বল রাজা ) তাঁহার নিজের অস্থ্রক্ত মোলবল তাঁহাকে প্রদান করিবেন—যে বল তাঁহার ( অর্থাৎ প্রবল্ অভিযোজার ) ব্যবন উপস্থিত হইলে তাঁহার অপকার সাধন করিবে।

( যদি অভিযোক্তা ) কোশগ্রহণের দর্ত্তে সদ্ধি যাচ্ঞা করেন, ভাষা হইকে ( অবলীয়ান রাজা ) তাঁহাকে এমন সারবন্ধ ( অর্থাৎ মূল্যবান রাজা দি ) দান করিবেন—যাহার ক্রেন্ডা তিনি ( অভিযোক্তা ) পাইবেন না, অথবা, এমন কুপাবন্ধ ( বন্তাদি কল্পন্তব্য ) দান করিবেন যাহা যুদ্ধের কোন কার্যো ব্যবহৃত হওয়ার যোগ্য নহে।

( यिष অভিযোজা ) ভূমিগ্রহণের সর্ত্তে সন্ধি যাচ্ঞা করেন, তাহা হইলে ( অবলীয়ান্ রাজা ) এমন ভূমি তাঁহাকে প্রদান করিবেন যাহা সহক্ষেই প্রত্যাদের ( অর্থাৎ যাহা ফিরিয়া পাওয়ার সম্ভাবনা থাকিবে ) হইতে পারে, যাহাতে অমিত্র বা শক্রর সন্ধিনান থাকিবে, যাহাতে ( হুর্গাদি ) আপ্রয়ের অভাব আছে, এবং যাহাতে নিবেশ করিতে হইলে বছতর পুরুষক্ষয় ও অর্থবায়ের সম্ভাবনা আছে। অথবা, ( অবলীয়ান্ রাজা ) বলীয়ান্ রাজার নিকট স্ব-রাজধানী বাতীত আর সর্প্রশি দিয়াও সন্ধি যাচ্ঞা করিবেন।

কোন অন্ত (অর্থাৎ প্রবল অভিষোক্তা) রাজা বলপূর্বক যাহা হরণ করিতে চেষ্টমান হইবেন, (অবলীয়ান্ রাজা) ভাহা (সন্ধিপ্রভৃতি) উপায় অবলম্বনে ভাঁহাকে দিবেন। কিন্তু, তিনি স্থদেহ রক্ষা করিবেন, ধন রক্ষা করিবেন না, কারণ, অনিভা ধনে দয়ার প্রয়োজন কি ? (অর্থাৎ দেহ রক্ষা করিতে পারিলে, ধনের পুনরজ্জন সন্ধাবিভ হইবে।) ॥ ।।

কোটিলীয় অর্থশান্তে আবলীয়দ-নামক দ্বাদশ অধিকরণে দ্তকর্ম-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে :৩৬ অধ্যায় ) দমাপ্ত।

### দ্বিতীয় অধ্যায়

১৬৩ প্রকরণ – মন্ত্রমুদ্ধ বা মডিশক্তিদারা শক্রজথনিরূপণ

यपि जिनि ( क्षेत्रन अजिरास्ता) मिन्दि अवदान ना करतन, जाहा इहेल (অবলীয়ান রাজা) ভাঁহাকে এইভাবে বলিবেন—"অমুক অমুক রাজারা অরিবড় বর্গের (কাম, ক্রোধ, লোভ, মান, মদ ও হর্ষের) বশংগত হইয়া নাশ্বপ্রাপ্ত ছইয়াছেন। তুমি দেইসৰ অসংযত রাজাদের পথ অনুসরণ করিও না। নিংজর ধর্ম ও অর্থ অবেক্ষণ করিয়া চল। কারণ, মুখে মিত্রভাবপ্রদর্শনকারী দেই রাজার। বাস্তবিক পক্ষে অমিত্র বলিয়াই বিবেচিত হওয়ার যোগ্য.—বাঁহার। ভোমাকে দাহদ, অধর্ম ও অর্থাভিক্রমবিধয়ে প্রোৎদাহিত করেন। নিঞ্ জীবনবিধ্য়ে যে শুরগণ মমতা ত্যাগ করিয়াছেন, তাঁহাদের সহিত যুদ্ধ করাই 'দাহদ' কার্য। উভয় পক্ষের জনক্ষয় করার নামই 'অধর্ম'। করতলগত অর্থ ও সক্ষন মিত্র-এই উভয় বস্তু তাগি করাকেই 'অর্থাতিক্রম' বলা যায়। অমুক বাজা বছমিত্র-সমন্বিত, তিনি এই ধনঘারা মিত্রদিগকে অভান্ত উল্লোগী করিয়া তুলিবেন এবং দেই মিত্রের। তোমাকে দর্ব্বদিক হইতে আক্রমণ করিবেন। কিন্তু মধ্যম ও উদাসীন বাজ্বখণ্ডল ভাঁহাকে পরিভাগ করে নাই। কিন্তু, ডুমি দেই মণ্ডল্গারা পরিত্যক্ত হইয়াছ। দেই জ্ঞা ('বে' স্থানে 'যৎ' পাঠ স্মীটান মনে হয় ) ভাঁহারা (ভোমার উপেকাকারীয়া ) ভোমাকে (যুদ্ধর্থ) সমুপ্তোসী দেখিয়া এই জন্ম উপেক্ষা কারতেছেন যে, 'ডুমি অধিকতরভাবে ক্ষয় ও ব্যয়দারা যুক্ত হইবে এবং ভোমার মিত্র হইতে ভেদপ্রাপ্ত হইবে। অতএব, ভোমাকে তথন মূলস্থান হইতে ভ্রষ্ট দেখিলে তাঁহারা সহজেই তোমার উচ্ছেনসাধন করিবেন'। ( অভএব) ভোমার পক্ষে দৃষ্যতঃ মিত্রভাবপ্রদর্শনকারী অমিত্রগণের কৰা শুনা, মিত্রন্ধনকে উদ্বিধ করা, অমিত্রদিগের কল্যাণসাধন করা, ও প্রাণ-मरमञ्जादी व्यन्थेकाथ इषश डेविड इहेरा ना।" ( बहेन्न डेन्सम ग्रीड হইলে অভিযোক্তাকে সন্ধির জন্ম পণিত অর্থাদি ) অবলীয়ান্ রাজা দিবেন।

এই প্রকার উপদেশ-প্রদানের পরেও যদি অভিযোজা ( দন্ধি করিতে অত্মীকৃত হইরা ) আক্রমণ করিতে উভোগী থাকেন, তাহা হইলে ( তিনি ) ভাঁছার অমাত্যাদি প্রকৃতির কোণ উৎপাদন করাইবেন—এবং ইহা 'দংঘর্ড'নামক অধিকরণে (১১শ অধিকরণে ) বেমন উজ হইরাছে এবং 'বোগবামন'-

নামক প্রকরণে (১৩শ অধিকরণে বিতীর অধ্যারে ) বেমন উক্ত ছইবে—তেমন ভাবে করাইতে ছইবে। (অভিযোজার বিহ্নছে তিনি) 'তীক্ষ' ও 'রসদ' (বিব-প্রদারী) পুরুষদিগের প্রয়োগ করাইবেন। আবার আত্মরক্ষিতক-প্রকরণে ( মৃত্যবিকরণে ২১শ অধ্যারে) রক্ষাবোগ্য স্থান বলিয় বাহা নির্দ্দিট ছইয়াছে—সেধানেও (তিনি) তীক্ষ ও রসদ পুরুষদিগকে প্রযুক্ত করিবেন।

বন্ধকী বা কৃষ্টার পোষণকারী গুণ্ডচরের। পরমন্ধপর্যোবনবতী স্ত্রীষার। (অভিব্যোক্তার) দেনামুধ্যদিগকে উন্মাদিত করিবে। দেইরূপ একটি স্থাতে বদি বহুদেনামুধ্যের, অথবা ছইটি মুখ্যের কাম উপজাত হয়, তথন তীক্ত্রের তাহাদের পরস্থারমধ্যে কলহ উৎপাদিক করিবে। এই প্রকার কলহ উৎপাদিত হইশে, তাহারা পরাজিত পক্ষকে অভ্যন্থানে অপগমনবিব্য়ে প্রেরিত করিবে, অথবা বিজ্ঞিনীয়ু ভর্তার যুক্ষযাত্রাতে সাহায্যকরণার্থ নিয়োজিত করিবে।

সেনামুখাদিগের মধ্যে বাঁহার। কামের বশবর্তী হইবেন, ভাঁহাদিগকে সিদ্ধবেষধারী গুণ্ডচরেরা, বশীকরণের উপযোগী ঔষধের ছল করিয়া অন্ত ঔষধের প্রয়োগদ্বারা বঞ্চনা করিয়া, ভাঁহাদের মারণ জন্ত বিষ প্রদান করাইবে।

রাজার প্রতি বিষপ্রয়োগের প্রকার বলা হইতেছে।) অথবা বৈদেহক বা বণিজকের বেষধারী গৃচপুরুব অতিস্থলরী রাজমহিবীর অন্তরক পরিচারিকাকে নিজের কামভোগের জন্ত প্রচুর ধন দিয়া ভাহাকে পুনরায় ভ্যাগ করিবে। সেই বৈদেহক-ব্যঞ্জন পুরুবের পরিচারকরূপে ভদ্বেষধারী অন্ত গৃচপুরুবায়া উপদিষ্ট হইয়া. সিজবাঞ্জন (ভূভীয়) গৃচপুরুব (পুর্বোক্ত রাজমহিবীর পরিচারিকাকে) বশীকরণবোগ্য ওবধি প্রদান করিবেন এবং ভিনি উপদেশ করিবেন বে, এই ওবধি বেন দেই বৈদেহকের শরীরে প্রক্রিণ্ড হয়। (এইভাবে বৈদেহকের বশীকরণ) সিদ্ধ হইলে, সেই স্বভাগ রাজমহিবীর নিক্টও এই ওবধিপ্রয়োগে বশীকরণবোগে উপদিষ্ট হইবে — বেন সেই ওবধি রাজশারীরে প্রক্রিণ্ড হয়। সেই বোগে বস বা বিষ বোজনা করিয়া প্রবঞ্চনাপূর্বক রাজার মারণ ঘটাইতে ছইবে।

(মহামাত্রের ভেদ আনিবার উপার নির্মাণিত হইডেছে।) অথবা, কার্ডান্তিক বা দৈবজের বেবধারী গৃহপুরুব, রাজগরুণ-মৃত্যু কোন মহামান্তকেও (শ্রেষ্ঠ অমাত্যকে) জনে জনে নিজের (কার্ডান্তিকের) উপর বিখাস প্রতিষ্ঠিত করিয়া বলিবেন ('তৃমি রাজা হইবে') এইরুণ। সেই মহামাত্রের ভার্যাকে ভিজ্কীত বেবধারিনী ন্ত্রী (চর) বলিবেন—"তৃমি রাজার পদী হইবে এবং রাজা হওয়ার বোগ্য পুত্র প্রসৰ করিবে।" (মহামাত্রের রাজ্যে লাগস। হইলে ভাঁহার সহিত রাজার বিরোধ ঘটিবার সম্ভাবন। হইবে।)

অথবা, মহামাত্রের ভাষ্যারূপে অবন্ধিত কোনও বন্ধকী (গুণ্ডচররূপিনী) স্ত্রী মহামাত্রকে বলিবে —"রাজা কিন্তু আমাকে অস্তঃপুরে দইরা হাইবেন। ভোমার নিকট (রাজদত) এই পত্রদেখা ও আভরণ এই পরিপ্রাজিকা (বংশুবিক পক্ষেণ্ডনিমূজা তাৰেবধারিনী স্ত্রী) আনম্বন করিয়াছেন।" (এই জন্ত মহামাত্রের রাজার প্রতি ধ্যে সঞ্জাত হইতে পারে।)

মহামাত্রভেদের অন্ত উপায় বলা ইইভেছে।) স্থদ (পাচক) ও আরালিকের বাংসাদি প্রস্তুত্বনারীর) বেবে অবস্থিত গৃচপুরুষ মহামান্তের নিকট প্রকাশ করিবে বে, তাঁহার প্রতি বিষপ্রয়োগের জন্ত রাজা তাহাকে বলিয়া দিয়াছেন এবং তজ্জন্ত তিনি লোভনীয় প্রচুর অর্থও দিয়াছেন। বৈদেহকব্যঞ্জন গৃচপুরুষ (অর্থাৎ বিষবিজ্ঞারকারী ব্যাপারী) এই কথার সত্যভাসম্বন্ধে মহামাত্রের বিশ্বাস উৎপাদন করিবে ( অর্থাৎ রাজার আদেশ না জানিয়া সে মহামাত্রের স্থাপ ও আরালিকের নিকট বিষ বিজ্ঞার করিয়াছে)। সে আরও বলিবে বে, এই বিষের মারণসিন্ধি নিশ্চিত । এইভাবে (বিজিলীবুর গুওচর ) এক, ছই বা তিনটি উপায় বিশ্বন্ধ ও সমস্বভাবে) অবলম্বন করিয়া, এক একটি মহামাত্রকে অভিযোজণ রাজার বিশ্বন্ধে বিজ্ঞাবিষয়ে বা অপসরণবিষয়ে বােজিত করিবে।

(অভিষোজা রাজার) তুর্গন্ত্যথা (রাজার অন্থণস্থিতিতে) শুন্যপাল
অর্থাং শৃত্য-রাজ্ধানী-রক্ষকের স্থীপে অন্তর্গজাবে অবস্থিত সত্রীরা (সত্তি-নামক
গৃতপুরুষেরা), প্রবাসী ও জনপদবাদীদিগের নিকট (শৃত্যপালের প্রতি)
ভাহাদের মৈত্রীরক্ষার্থ এইরূপ-আবেদন করিবে—"শৃত্যপাল মুমন্ত যোদ্ধর্য ও
অধিকরণন্থিত রাজপুরুষদিগকে এই ভাবে বলিয়াছেন—'রাজা বড়ই কছে বা
সঙ্গটে শতিত ইইয়াছেন, তিনি জীবিত অবস্থার ফিরিয়া আসিবেন কিনা ভাষা
বলা বার না; আপনারা বলপুর্বক (প্রজার নিকট ইইতে) অর্থ আদার কন্ধন
এবং ধাহারা অমিত্রভাবাপন্ন ভাহাদিগকে হত্যা কন্ধন'।" শৃত্যপালের এই আজা
সর্বত্তি প্রভারিত ইইলে পর, তীক্ষেরা রাত্তিতে পুরবাসীদিগের বিত্ত নিজলোকবারা) আহরণ করাইবে এবং মুধাদিগকে হত্যা করিবে। ভাহারা (ইহা রটাইবে
বেং,) 'এইজাবে ভাহারাই মারিত হয়, বাহায়া শৃত্যপালের আরাধনা বা সেবা
না করে;' (আবার অন্তদিকে দেই সত্রীরা) শৃত্যপালের স্থানসমূহে ক্রিরান্ধিত
শল্প, ও বিত্তবন্ধনার্থ (রক্ষ্প্রভৃতি) নিক্ষেপ করিবে। ভদনত্তর সত্রীরা এইরূপ

রটনা করিবে—"শৃষ্ণপাল এই সবলোক্ষিগকে ছড্যা করাইয়াছেন এবং ডাছাদের বিস্ত লোপ করাইয়াছেন ।"

এই প্রকার উপায় অবলয়ন করিয়া ( গৃঢ়পুরুষেরা ) সমাহর্ত্ত-নামক রাজপুরুষ হইতে ( অভিযোক্তার ) জনপদবাদীদিগের ভেদসাধন করিবে।

প্রামমধ্যে রাজিতে তীক্ষেরা সমাহর্তার অধীন পুরুষদিগকে মারিরা এইরূপ কথা প্রচার করিবে – "ভাহাদের এইরূপ অবস্থাই ঘটে, যাহারা অধর্শের প্রশ্রহ লইয়া প্রাঞ্জিদিগকে কই দের।"

(শৃষ্ণপাল ও সমাহর্তার) এই লোধ সর্বাত্ত প্রচারপ্রাত্ত হইলে, (সত্রীরা) প্রকৃতি কোপ উৎপাদন করিরা শৃষ্ণপালের বা সমাহর্তার বধ্যাধন করিবে। অথবা, (তাহারা) শক্রর স্কুলস্মৃত কোনও জ্ঞাতিকে বা তাঁহার কোন অবরুদ্ধ পুত্রকে রাজ্যে প্রতিষ্ঠিত করিবে।

(সেই গুড়পুরুবের) অভিযোজা শক্রর ) অন্তঃপুর, গোপুর, (কার্চাদি ) দ্রব্য ও ধান্তসংগ্রহাগারসমূহ আলাইয়া দিবে এবং তৎতৎস্থানের (রক্ষকদিগকে )বধ করিবে এবং স্বয়ং এইসব ঘটনাজন্ত গ্লেধের অভিনয় করিয়া (পুর ও জনপদ-নিবাসীরাই এমন প্রকার্য্য করিয়াছেন এইয়প )বলিবে॥ ১॥

কৌটিলীয় অর্থপাত্তে আবলীয়স-নামক দ্বাদশ অধিকরণে মন্ত্রযুদ্ধ-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় ( আদি ছইতে ১৩৭ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## তৃতীয় অধ্যায়

#### ১৬৪-১৬ঃ প্রকরণ—দেশামুখ্যদিগের ও অক্যাণ্ড মহামাঞ্জিগের বধ ও রাজযগুলের প্রেশংলাছন

( অভিবোক্তা ) রাজার ও তাঁহার প্রিয়লনদিগের ( অন্তর্গভাবে ) স্মীপ্রবর্তী সন্ত্রীরা—পভিমুখ্য, অধমুখ্য, রথমুখ্য ও হন্তিমুখ্যদিগের মিক্তহানীয় লোকের নিকট সোহার্জ্যের বিখাসে বলিবে—"রাজা ( এই পর মুখ্যদিগের উপর ) কুছ ছইয়াছেন।" রাজার এই কোপের কথা প্রচারিত হইলে পর, তীক্ষ্ণণ, রাজিতে পথ চলার যে ঘোষ হয় ভাহার প্রতীকার করিয়া ( সেই মুখ্যদিগের ) গৃহে প্রবেশ করিয়া বলিবে—"স্বামীর আজ্ঞা ইইয়াছে, আশনারা সঙ্গে আগ্নন।" গৃহ হইতে নির্গত্ত ইইবার-সমরেই ভাহাদিগকে ভাহারা মারিয়া কেলিবে। পূর্ব্বাক্ত রাজা

ও রাজবল্পজনিগের ) আসমচাথী (সত্রীদিগকে) তাহারা (তীক্টেরা) বলিবে "থামীর আদেশেই তাহাদিগকে মারা হইয়াছে।" ধে দব (মুখোরা পূর্বেই) রাজা ছাড়িয়া চলিয়া গিয়াছেন, তাঁহাদিগকে সত্রীরা বলিবে—"আমরা যাহা আগে বলিয়াছি তাহাই ঘটিল, যে বাঁচিতে চায়, তাহাকে এজান হইতে অপকান্ত হইতে হইবে" (অর্থাৎ এই প্রকার উপায়ে প্রবল্ভর অভিযোক্তা-শক্রকে ছর্বল করিতে হইবে)।

অর্থলানার্থ (মহামাত্রথারা ) যাচিত হইরা, রাজা (অভিযোক্তা রাজা) ধে সব । মহামাত্রকে ) অর্থ দান করেন না, সত্রীরা তাঁহাদিগকে বলিবে—"শৃন্তপাল রাজাধারা এইভাবে উক্ত হইরাছেন—'অমুক অমুক (মহামাত্রপুক্র) আমার নিকট হইতে অযাচ্য বন্ধ চাহিতেছে। আমার ধারা ভাহারা প্রভ্যাধ্যাত হইলে পর, ভাহারা শক্রর সহিত মিলিত ইইরাছে। ভাহাদের উক্তেদসাধনের ক্ষয় তুমি প্রথমবান্ থাকিবে'।" ভদনস্তর পূর্কবিৎ আচরণ করিতে হইবে ( অর্থাৎ ভীক্ষণপুদ্ধেরা রাত্রিতে ভাহাদের বধ্দাধন করিবে এবং কাহাকে কাহাকে রাজসকাশ হইতে অপক্রাপ্ত করাইবে )।

আবার যাচিত হইয়া রাজা যাহাদিগকে (অর্থাৎ যৈ দব মহামাত্রকে অর্থাদি)
দান করেন,—দত্তীরা তাহাদিগকৈ বলিবে—"শৃত্যপাল রাজাদ্বারা এইভাবে উক্ত
হইরাছেন—'অমুক অমুক (মহামাত্রপুক্রব) আমার নিকট হইতে অ্যাচা বস্ত
চাহিতেছে। বিখাদের জন্ত আমি তাহাদিগকে দেই অর্থ দিয়াছি, কিছ, তাহারা
শক্তর সহিত মিলিত হইরাছে। তাহাদের উক্তেদদাধনের জন্ত তুমি প্রয়ম্ব
লইবে'।" তদনস্তর পূর্কবিৎ আচরণ করিতে হইবে।

আবার বাহার। (যে সব মহামাত্রের।) রাজার নিকট বাচ্য বন্তও না চাহে,
—সত্রীরা ভাহাদিগকে ৰলিবে—"শৃস্তপাল রাজাঘার। এই ভাবে উক্ত হইরাছেন
—'অমুক অমুক (মহামাত্রপুরুষ) আমার নিকট হইতে বাচ্য বন্তও চাহে না।
ইহার কারণ আর কি হইতে পারে ? নিজের দোবের জন্ত ভাহার। আমার নিকট
আসিঙে শক্ষিত হইতেছে। ভাহাদের উচ্ছেদ্সাধনের জন্ত প্রায়ত্ব লইবে'।"
তদমশ্বর পূর্ববং আচরণ করিতে হইবে। (মুখ্যভেদনের প্রকার উক্ত হইল।)

এওছারা সর্বপ্রকার ক্বতাপকের (ক্রুছপুনাদির) বিবয় ব্যাখ্যাত হইল বৃষ্কিতে হইবে ধ

্ সম্প্রতি মহামান্তানির নিকট হইতে প্রবলতর অভিবোক্তা রাজাকে ভিছ করিবার উপায় বলা হইভেছে।) (বিশ্বভভাবে) রাজসমীপে অবস্থানকারী সন্তী, রাজাকে এইরপ ব্যাহবে—"অমৃক অমৃক মহামাত্র আগনার শক্তপৃক্ষবদিগের সহিত কথাবার্ত চালার।" সত্তীর এই বচন রাজা অফীকার করিয়। লইলে পর, সেই সত্তী রাজার দৃশ্বপুক্ষবদিগকে, ভাহার। (মহামাত্রের ) শাসন বা সন্দেশ লইয়। শক্ত-সমীপে বাইতেছে বলিয়। প্রদর্শন করিবে এবং বলিবে—''দেখুন যাহ। বলিয়াহি ভাহাই ঘটিভেছে।"

অথবা, ( সত্রী ) সেনামুখ্যদিগকে, অমাত্যাদি প্রকৃতিকে ও অন্থান্ত রাজপুরুষ্দিগকে ভূমি ও হিরণ্যদানের লোভ দেখাইরা উহিংদিগকে নিজ ( অন্ত )
সহযোগীদিগের উপর আক্রমণ করাইবে, অথবা ভাঁহাদিগকে রাজ্য হইভে অন্তত্ত্ব
সরাইরা নিবে। অথবা, সে (অভিযোক্তা) রাজার যে পুত্র ( রাজধানীতে )
রাজসমীপে, অথবা (অন্তপাশাদির নিকট দ্রবর্তী ) পুর্গে বাদ করেন,
ভাঁহাকে সত্রীদ্বারা এইরপ বলিরা রাজা হইতে ভেদপ্রাপ্ত করাইবে—" (মুবরাজ
অপেকার) তুমিই অধিকতর আত্মগুণসম্পার, তথাপি তোমাকে নিরন্তিত রাধা
হইরাছে। অত্তরের, কেন ( এই কথা ) উপেকা করিতেছ ? বিক্রম প্রদর্শন
করিরা ( রাজ্যভাগ ) গ্রহণ কর ; ( এমনও ) সন্তব হইতে পারে যে, মুবরাজ
ভোনাকেই প্রথমতঃ নই করিবে।"

অথবা, সেই প্রবেশতর অভিযোজা ) রাজার বংশসন্থৃত কোন বাদ্ধবন্ধে, কিংবা অবক্সম বান্ধপ্রকে, ( সত্রী ) হিরণাপ্রদানের লোভ দেবাইয়। বলিবে— "আপনি বান্ধার মৌলবল, কিংবা প্রত্যন্তব্হিত সেনা, কিংবা অন্ত সেনাকে বিধ্বস্ত কন্ধন।" আটবিকদিগকৈ অর্থ ও মানধারা সংকৃত কহিয়া সে তাহাদেও ধারা রাজার রাজ্ঞ) নই করাইবে।

্ শৃত্যতি রাজমণ্ডলের প্রোৎসাহন নিরূপিত ইইতেছে।) অথবা, (অভিযোক্তা শক্রর) পাঞ্চিগ্রাহ রাজাকে এইরূপ ভাবে (অবলীয়ান্ বিজিপীর রাজা) বলিবেন—"এই রাজা (আগে আমাকে উচ্ছিন্ন করিয়া) তোমারও উচ্ছেদসাধন করিবে। তুমি তাঁহার পাঞ্চিগ্রহণ কর, অর্থাৎ শশ্চাৎ ইইতে তাঁহাকে আক্রমণ কর। তুমি নির্ভ হইলে তিনি বদি তোমার উপর আক্রমণ চালান, তাহা ইইলে আমি তাহার পাঞ্চিগ্রহণ করিব।" [এই সম্পর্ভাংশ শশ্বাম পাজীর সংকরণে পাওয়া বার না।]

( অভিযোজার মিত্রকে প্রোৎসাহিত করার উপায় বলা হইতেছে।) অথবা, ( প্রবেশতর ) অভিযোজার মিত্রকে ( অবশীরান্ বিভিন্নীর ) এই ভাবে বলিবেন —"আমি আগনাদের সমত্তে সেতৃ-সরুগ অর্থাৎ অভিযোজার অভিযোগ হইডে আপনাদের রক্ষকপর্মণ; আমাকে ভিন্ন করিতে পারিলে, এই (রাজা) আপনাদিগকৈও ভাসাইরা নিবেন, অর্থাৎ আমার নাশে আপনাদের নাশ নিশ্চিত।" অথবা, তিনি বলিবেন—"আম্বন আমনা মিলিত ইইয়া (আমাদের প্রতি) এই রাজার যুদ্ধযাত্রা বা আক্রমণ বিহন্ত করি।"

অভিযোক্তা শক্ষর সহিত যে রাজারা সংহত এবং যে রাজারা অসংহত, ভাঁহাদিগকে (অবলীয়ান্ বিজিগীরু) এইরূপ (স্লেশ ) প্রেরণ করিবেন—"এই রাজা কিন্তু আনাকে উৎপাটিত করিয়া আপনাদের বিরুদ্ধেও উচ্ছেদকর্ম চালাইবেন। আপনারা বুরুন (বিপদে) আমিই আপনাদের সহায়তা বা রক্ষাবিধানের যোগ্য পাত্রে"।

( অবসীয়ান্ বিজিপ্নীর, অভিযোজা বসীয়ান্ শত্রুর আক্রমণ হইতে ) নিজের মৃক্তির জন্ত,—কি মধ্যম, কি উদাসীন, কি অন্তান্ত আসম্বর্তী রাজার নিকট সর্বাস্থানেও তাঁহাদের নিকট আ্রসমর্পণ করিবার ( বার্তা ) পাঠাইবেন, অর্থাৎ সর্বাস্থানস্থাক তাঁহাদের আশ্রুয় কামনা করিয়া আ্রুফা করিবেন ॥ > ॥

কোটিগীয় অর্থশান্তে আবলীয়দ-নামক দ্বাদশ অধিকরণে দেনামুখ্য ও অন্তান্ত মহামাত্রদিগের বধ ও রাজমগুলের প্রোৎনাহন-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১৩৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## চতুর্থ অধ্যায়

১৬৮-১৬৭ প্রকরণ -শান্ত্র, অগ্নি ও বিষের গৃঢ়প্রারোগ ও বীবধ, আসার ও প্রসারের নাশ

(প্রবল্ভর অভিযোক্তা শক্রর) দুর্গসমূহে (রাজধানী প্রভৃতিতে) বাহারা (অবলীয়ান রাজার) বৈদেহক বা ব্যাপায়ীর বেষধারী গুণ্ডচর হইয়া কার্য্য করিতেছে, তাঁহার আমসমূহে বাহারা গৃহপতি বা গৃহস্থের বেষধারী হইয়া সেই কাজ করিতেছে, এবং গ্রাহার জনপদস্থের সঞ্জিম্বলে ব্যাহারা গোরক্ষক ও তাপসের বেষধারী ইইয়া সেই কাজ করিতেছে—তাহারা (সেই অভিযোক্তা শক্ষর নহিত বিরোধে রভ) সমস্ত আটবিক, তাঁহার কুলসমূত বাদ্ধর ও তাঁহার অবক্ষম প্রের নিকট পণাবন্ধ-প্রেরণসহ (নিয়লিখিত) সন্দেশ প্রেরণ করিবে—"শক্ষর অর্ক্তাদেশ আপনার। সহজেই হরণ করিতে পারিবেন"। ওৎপর সেইসব শামস্কাদির গৃচ্পুক্রবেরা (পাক্রর) মূর্গে আসিয়া উপন্থিত হইলে, তাহাদিগকে অর্ধ্

ও মানধারা দংকত করিয়া. (সেই বৈদেহকাদি গুর্তারের। শক্তর অমাত্যাদি) প্রকৃতির রক্ষ্ণ প্রদর্শন করিবে। তংপর সেই গৃঢ়পুরুষাদি সহ ভাহার। শক্তর সেইসব রক্ষ্ণে প্রহার করিবে, অর্থাং সেই সব ছিদ্র অবলম্বন করিয়া শক্তর উপ্র আক্রমণ চালাইবে।

অথবা, শক্রব স্কলাবারে শোতিক বা মছবিক্রেভার বেবধারী গুরুপুরুষ কোনও বধাপুরুষকে নিজের পুত্ররূপে প্রচার করির। তাহার আক্রমণ বা গোলমালের ) সমরে বিষপ্রগোগদ্বারা তাহাকে মারিয়া ফেলিয়া, মুভবাক্তির ভৃত্তির জন্ত ইয় নৈবেচনিক ক্রব্য অর্থাৎ নিষেচন বা মুভবাক্তির তর্পণিসাধকক্রব্য বলিয়া, মাদকভার উৎপাদনকারী বিবহার। সমন্বিত শতশত মছকুজ প্রদান করিবে। অথবা, ভাহারা দেওমুখাদিগের বিশ্বাস জন্ত ) প্রথম একদিন শুদ্ধ অর্থাৎ বিষ-রহিত মছাভাহানিগকে পান করাইবে, কিয়া এক-চতুর্থাংশ বিষযুক্ত মছা পানার্থ দিবে, তৎপর অন্তাদিন সম্পূর্ণ বিষযুক্ত মছা দিবে। অথবা, ভাহারা প্রথমতঃ দওমুখাদিগকে শুদ্ধ (বিষরহিত) মদ দিবে, পরে মদের মাদকভার ভাহারা অবশ হইলে, ভাহাদিগকে বিষযুক্ত মদ প্রদান করিবে। (এই ভাবে শক্র রাজ্যর সেনামুখ্যক্রয়ের চেষ্টা করা হইবে।)

অধবং, (শক্রর ক্ষরবারে) দগুমুখ্যের বেষধারী গুচপুরুষ বধ্য কোনও পুরুষকে নিজের পুত্ররূপ স্থীকার করিয়া—অবশিষ্ট কার্য্য পূর্কোক্তভাবে করিবে ।

অববা, পাক্তমাং সক ( প্রুমাং সবিক্রেতা ), ঔদলিক ( প্রার্নিক্রেতা ), শৌক্তিক ( মন্তবিক্রেতা ) ও আপু পিকের ( পিইকাদিবিক্রেতার ) বেষধারী গৃচপুরুবেরা, নিজ নিজ পণ্যপ্রবের গুণবিশেষ ঘোষণা করিয়া, পরস্পরের প্রতি স্বর্মধ বা স্পর্জাসহকারে —'আমার প্রবার মূল্য কালান্তরে দিলেও চলিবে এবং আমার প্রবার মূল্য ক্ষুত্র'—এইরূপ বাপদেশে শক্রপক্ষের লোকদিগকে ভাকিরা বিষদ্বারা স্থপণা মিশ্রিত করিয়া, ভাহাদিগকে সেগুলি প্রদান করিবে। অথবা, স্থীলোক ও বাশকেরা ( বাজ্যবিকপক্ষে ইহারাও গুণ্ডচর ) স্করা, হন্ম, দ্বি, দ্বত ও তৈল তৎ-তৎ প্রবের বিক্রেতাদিগের হন্ত হইতে লইরা বিষযুক্ত নিজ পাত্রে চালিয়া লইবে—পরে 'এইরূপ মূল্য এইরূপ বিশিষ্ট প্রব্য আমাকে পুনরার দেও' —এই বলিয়া ভাহাদের ভাতে তৎ-তৎ ( বিবযুক্ত ) প্রব্য কিরাইয় ঢালিয়া দিবে। অববা, বৈদেহক বা ব্যাপারীর বেষধারী গৃচপুরুবেরা গণাবিক্রমের ব্যপদেশে এই সর স্করাদিপ্রব্যেরই আহরণকারী হইরা, ( শক্রের স্কর্মবারে ) স্রিক্টবর্ষ্টা থাকিয়। হুলী ও অধন্মনুহের স্কর্ম ও ঘালাদিতে বিষযুক্ত সেই কেই প্রশ্ মিলাইয়া দিবে।

অথবা, কর্মকর বা মজ্বের বেষধারী গৃচপুক্ষরো বিষযুক্ত দাস বা জল বিজ্ঞাক করিবে। অথবা, বছকাল যাবৎ মিত্রভার আচরণকারী সো-বাণিজকের বেষধারী গৃচপুক্ষরো আক্রমণ (বা গোলমালের) সময়ে শক্তর মোহের অবস্থা প্রান্তিলে, নিজের গরু, ছাগ ও মেববুণ (শক্তর ব্যাক্শভা বাড়াইবার উদ্দেশ্যে) ছাভিয়া দিবে। অথবা, অত্যাদি-বাণিজকের বেষধারী গৃচপুক্ষরো ঘোড়া, গাধা, উট ও মহিষের মধ্যে ষেগুলি হুট, সেগুলির চক্ত চ্চৃক্ষরীর উত্তরবিষযুক্ত মৃষিক্ষরীয় জন্মবিশেষের ) রক্তবারা শেশুলার সেগুলকে ছাভিয়া দিবে।

অথবা, লুক্ক বা শিকারীর বেষধারী গুড়পুরুষেরা নিজের ব্যাল বা ছট মুগদিগকে পঞ্জর হইতে ছাড়িয়া দিবে। অথবা, সর্প্র্ঞাহের বেষধারী গুড়পুরুষেরা উত্রাবিষ সর্পশুলিকে ছাড়িয়া দিবে। অথবা, হস্কিজীবীর বেষধারী গুড়পুরুষেরা (ব্যাল) হস্তী ছাড়িয়া দিবে। (শক্রনেনার ব্যাস্কুলভার অন্ত এইনব কাজ করা হয় এবং এই ব্যাস্কুলভার সময়ে ইহাকে আফ্রনণ করার প্রবিধা ঘটে।)

অথবা, অগ্নিজীবীর অর্থাৎ পোহকারপ্রভৃতির বেষধারী গৃচপুক্ষবেরা নিজের অগ্নিছাড়িয়া দিবে, অর্থাৎ শক্রদেনার মদোমাদসমূয়ে স্কল্পাবে অগ্নি পাগাইয়া দিবে।

অথবা, (অবলীয়ান বিজিলীবুর) গৃচপুরুষণণ, (প্রবলতর) শক্তর শদাতি, অখ, রথ ও হস্তীর মুখা ব। অধ্যক্ষণণকে বিমুখ হওয়ার অবস্থার অভিযাত করিবে, অথবা, মুখাদিগের আবাদে আগুন লাগাইয়া দিবে। অথবা দৃল্য, অমিত্র ও আটবিকের বেষধারী গৃচপুরুষেরা শক্তর প্রতি প্রণিধি বা গুরুচরের কার্য্যে ব্যাপ্ত থাকিয়া, তাঁহার (শক্তর) দেনার পৃষ্ঠদেশে অভিযাত করিবে, অথবা, সেই দেনার অবস্থান বা স্থাবন্থার আক্রমণ করিবে, অথবা, সেই দেনা সম্পুথবর্তী হইয়া আক্রমণার্থ অগ্রসর হইলে, ইহাকে প্রত্যাক্রমণ করিবে। অথবা, বনমধ্যে প্রারিত গৃচপুরুষেরা শক্তর প্রত্যান্তপ্রদেশে রক্ষিত স্কন্ধ বা দেনাকে (কোনও বাপেদেশে) নিজ সমীপে সমাকর্ষণ করিয়া নই করিবে। (এই পর্যান্ত শক্তর, অধি ও বিষ্ণারোগের নির্মণণ করা হইল।)

(সম্প্রতি বীবধ, আসার ও প্রসারের নাশসদক্ষে বলা ইইতেছে।) বধন (প্রবলতর) শক্তর বীবধ (অর্থাৎ ধাঞাদির আগমন), আসার (স্থান্থতের আগমন)ও প্রাসার (তৃপকাঠাদির প্রবেশ) এক একজ্ব গ্রাম সভ্চিত মার্গে চলিবে, তথন তাহারা সেগুলির উপর আক্রমণ চালাইবে।

অধ্যা, বাত্তিযুক্ত সক্তেত্সহকারে খ্ব বেশী বাজমান ভ্রাধ্যনি উৎপাদন

করিয়া ( গুচপুরুবেরা ) এইরূপ বলিবে — "আমরা শত্রুর অধিকৃতস্থানে প্রবেশ করিয়াছি এবং তদীর রাজ্য লাভ করিয়াছি।" অধবা, তাহারা রাজার আবাদে প্রবেশ করিয়া গোলমালের ভিতর রাজাকে মারিয়া কেলিবে।

অথবা, যে কোন দিকে পলায়নপর রাজকৈ, মেলছ ও আটবিক সেনার বেষধারী গৃচপুরুষেরা সত্ত অর্থাৎ মরুত্রগাদি (১০ম অধিকরণে, ৩র অধ্যায় দ্রষ্টব্য) আশ্রয় করিয়া, কিংবা শুল্ব ও বাট আশ্রয় করিয়া মারিয়া ফেলিবে ৷ অথবা, পুরুক, বা ব্যাধবাঞ্জন গৃচপুরুষেরা অবস্থদের বা আক্রমণের গোলমালমধ্যে গৃচ্যুক (কৃট্যুক্ষপ্রকরণে উক্ত যুদ্ধ) অবলম্বন করিয়া (বালাকে) মারিয়া ফেলিবে ৷

অথবা, তাহারা একৈকগম্য পথে, কিংবা শৈলপ্রায়, স্বস্থবাটপ্রায়, মঞ্লোদকে (দলদলে রাস্তায়) ও অস্তরুদকে (জলম্ব রাস্তায়) নিজদেশীয় দেনাদ্বারা (অভিযোক্তা রাজাকে) নষ্ট করিবে। অথবা, তাহারা নদী, সরোবর, তড়াগ ও দেতুবদ্ধ ভালিয়া দিয়া তজ্জলদ্বারা (শত্রুব দেনা) প্লাবিত করিবে। অথবা, তাহারা ধাহনত্বর্গ (মক্রত্বর্গ), বনত্বর্গ ও নিম্নত্বর্গ অবস্থিত শত্রুকে যোগাগি কপটোপায়ে প্রমুক্ত অগ্নি) ও যোগধ্ম (বিষময় ধ্ম)-দ্বারা নষ্ট করিবে

অথবা, তীক্ষ-নামক গৃঢ়পুরুবেরা সকটকানগত ( অর্থাৎ বে দ্বানের প্রবেশ ও নির্গম কঠিন তদগত) ( প্রবল্জর ) শত্রুরাজাকে অধিহারা, ধামনগুর্গন্থিত রাজাকে ধ্মহারা, নিধান ( গৃঢ়কোষরকার স্থান )-স্থিত রাজাকে বিষয়ারা, ও অসমধ্যে সুকায়িত রাজাকে গৃষ্টনকাদিয়ারা কিংবা ( গুর্গশন্ত্যোপায়-নামক : ৩শ অধিকরণে :ম অধ্যায়ে উক্ত ) অস্তাত্য জলসক্ষরণসাধনহারা নির্থীত করিবে।

অথবা, অগ্নিদ্ধারা আদীও আবাস হইতে নিশ্রমণপর শক্ররাজাকে, কিংবা (আত্মকার্থ) উপরি উক্ত (ধারনত্র্গাদি) ছানসমূহে আসক্ত শক্ররাজাকে, (অবলীয়ান্ বিজ্ঞিনীয়ু) যোগবামন (১৬শ অধিকরণে ২য় অধ্যায়) ও বোগ (বোগাতিসন্ধান-নামক ১২শ অধিকরণে ৫ম অধ্যায়) বারা, অথবা, (পরাতিসন্ধানার্থ উক্ত) যে কোন যোগন্ধায়া প্রবঞ্জিত করিয়া শ্বশে আনিবেন ॥ ১॥

কোটিশীর অর্থশালে আবলীরস-নামক বাদশ অধিকরণে শন্ত, অগ্নি ও বিবের গৃঢ়প্রারোগ ও বীবধ, আদার ও প্রদারের নাশ-নামক চতুর্ব অধ্যার ( আদি ছইডে ১৩২ অধ্যার ) সমাও।

#### পঞ্চম অধ্যায়

#### ১৬৮-১৭ - প্রকরণ—কপটোপার ও দণ্ডছারা অভিসন্ধান ও একবিজয়

দেবতার পূঞ্জাদানসময়ে ও (দেবতার উৎসবজ্ঞ) শোজাযাত্রাসমরে, দেবতার প্রতি ভক্তিবশতঃ শক্রর বহু বহু পূজ্জনের আগমন-প্রসক্ষ উপদ্থিত হইবে। সেই অবসরে (অবশীয়ান বিজিপীয় রাজা) শক্রর প্রতি যোগ বা কৃট উপায়ের প্রয়োগ করিবেন।

প্রেয়াগের উপার নিরূপিত হইতেছে। ) যে সময়ে শতকাজা দেবতার গৃহে প্রবেশ করিবার উপজ্জম করিবেন, তথন তিনি (সংযুক্ত) বন্ধ ছাড়িয়া দিয়া তাঁছার উপন্ন গুচ্ছাবে প্রতিষ্ঠিত ভিত্তি বা প্রাচার, কিংবা শিকা পাডিত করিবেন। मानात्मत्र मिरवावर्षी गृह हरेरिङ जिमि मिना ७ मञ्चर्यन कदाहेरवमः, व्यथना, ডিনি অবস্থান হইতে বিশ্লেষিত কৰাট ততুপরি পাডিড করিবেন, অথবা, ভিত্তিতে বা প্রাচীরে গুড়ভাবে নিৰেশিত বা একদেশে বন্ধনগৃক্ত অর্গল বা দণ্ড তছপরি বিমোচিত করিবেন। অথবা, তিনি দেবভার দেহস্থিত প্রহরণগুলি তাঁহার উপর পাতিত করিবেন। অথবা, তিনি তাঁহার দাঁড়াইবার, বদবার ও গমনের স্থানসমূহে ( বিবযুক্ত ) গোময়শেপন, (বিষযুক্ত ) গন্ধশেশের অবদেক বা (বিষযুক্ত) পুষ্পচূর্ণের উপহারদ্বারা বিষ্প্রয়োগের বাবস্বা করিবেন ৷ অধবা, তিনি গন্ধদ্রব্য-দারা আঞ্চাদিত তীক্ষ অর্ধাৎ বিষযুক্ত তীর ধ্য তাঁহাকে অত্যধিক মাজান গ্রহণ করাইবেন। অথবা, তিনি তাঁহার শ্যা। ও আদনের নীচে, যম্বধার। যে তল্পেশ আবন্ধ, তাহাতে শরান বা আদীন শক্তরাজাকে (যুদ্ধের) কীলকমোচনগারা (লোছনিন্মিড) শ্লযুক্ত কূপে বা গভীর গহররে পাতিত করিবেন। অধবা, দেই শক্ত ( অবদীয়ান্ বিজিগীধুর) নিকটবর্তী হইলে, তিনি তাঁহার জনশম হইতে বাধাপ্রাদানে সমর্থ পোককে আটক করিবার জন্ত দরাইয়া নিবেন, অংবা, তাঁহার ত্বৰ্গ ছইতে বাধাপ্ৰদানে অসমৰ্থ লোককে বন্ধন-মুক্ত করিবেন। দেই নীর্মান লোক বদি প্রত্যাদের হয় অর্থাৎ যদি তাহাকে ফিরাইয়া দিতে হয়, তাহা ছইলে ভিনি ভাছাকে নিক্টে শক্তর দেশে পাঠাইয়া দিবেন। যদি শত্রুর জনগদ ভাঁছার ় একমাত্র আধিপত্তো স্থিত থাকে, তাহা হইপৈ তিনি ইহার (জনপণের) শৈদসূর্ণে, বনছর্গে, নদীয়র্গে এবং অটবীঘারা পরিবেটিত প্রদেশসমূহে, ঘাছাতে তাঁহার

( শক্রর) কোন পুত্র বা ডাভার স্বায়ন্তীকৃত থাকে, তাহার বাবস্থা করিবেন, অর্থাং জনপদের তত্তদংশে তাঁহার পুত্র বা ভ্রাতার আধিপত্য স্থাপিত করিবেন।

দণ্ডোপনতবৃত্ত-নামক ( যাড্গুণ্যাধিকরণে ১১শ অধ্যায়ে ) প্রকরণে শক্রর উপরোধের হেডুসমূহ নিরূপিত হইয়াছে।

তিনি চতুর্দ্দিকে একবোজন-পরিমিত (শত্রুর দেশে) তৃণ ও কাঠ আলাইরুর দিনেন। তিনি তদীয় দেশের জল বিষযুক্ত করিবেন এবং দেই জল (দেতৃবদ্ধ প্রভৃতির ভেদ ঘটাইয়া) নির্গত করাইবেন। তিনি (তদীয় প্রাকারের) বাহিরে কৃটকুণ অর্থাৎ কপটকুণ, (তৃণাদিজ্জা) গর্ভ ও কন্টকযুক্ত পোহমর রজ্জু প্রভৃতি অবস্থাপিত করিবেন।

শক্ত রাজা বেধানে থাকেন, সেধানে ( অবলীয়ান্ বিজিগীরু ) বহর্থ হ্রক কাটাইয়া, ভাছাতে শক্তর বিচয় বা অন্তেবণকার্যো ব্যাপৃত মুখ্যদিগকে, অথবা, স্বয়ং অমিত্র রাজাকে অপহাত বা আক্রান্ত করাইবেন। শক্ত নিজেই বদি ( বিজিগীরুব ছর্গে প্রবেশ করার জন্ত ) হ্ররক নির্মাণ করেন, ভাহ। হইলে তিনি ( ছুর্গের চারিদিকে ) জলদর্শন হওয়া পর্যন্ত খাত, গভীর পরিধা থানিত করিবেন, অথবা ( ছুর্গের ) প্রাকারের দৈর্ঘ্যায়ুসারে কুপশালা নির্মাণ করাইবেন।

যে স্থানে স্থাক নিন্মিত হইয়াছে বলিয়া আশকা উপস্থিত হইয়াছে, তিনি সেধানে বাতগুলির অভিজ্ঞানার্থ নির্জ্জণ ঘট বা কাংস্ফানিন্মিত ভাগুসমূহ রাধিবেন। শক্রকৃত স্থাকের পথ জানা গেলে (বিজিপীর) প্রতিস্থাক তৈয়ার করাইবেন। অধবা, সেই স্থাকে ভেদ বা ছিন্ত করাইয়া তিনি তত্যারা (বিষময়) ধুম বা জল তত্মধা প্রাবশ করাইবেন।

অধবা, শক্তি—অন্থগারে গুর্গরকার বিধান করিয়া (অবলীয়ান বাজা) মূলছানে (রাজধানীতে) নিজ পুত্রকে স্থাপিত করিয়া (সবল) শক্তর প্রতিকৃপ দিকে অর্থাৎ যে দিকে শক্তর অনিষ্ঠ উৎপল্ল হইবার সন্থাবন। আছে সেদিকে স্বয়ং চলিয়া খাইবেন। অথবা, তিনি সেই দিকে বাইবেন,—ঘেদিকে গেগে তিনি নিজ মিত্র, বাজ্বব ও আটবিকদিগের সহিত মিলিত হইতে পারিবেন, অববা, যে দিকে গোলে তিনি শক্তকে তদীয় মিত্রগণ হইতে বিষ্কু করিতে পারিবেন, অববা, পঠদেশ হইতে শক্তর অ্যক্রমণ করিতে পারিবেন, অববা, শক্তর রাজ্য অপহরণ করিতে পারিবেন, অববা, শক্তর বীবধ, আদার ও প্রসার্কের নিরোধ করিতে পারিবেন, অববা, বেদিকে গোলে কপট অক্সংখলকের ভার কপট প্রয়োগছাল। শক্তকে প্রহার করিতে পারিবেন, অববা, বেদিকে গোলে কপট অক্সংখলকের ভার কপট প্রয়োগছাল। শক্তকে প্রহার করিতে পারিবেন, অববা, বেদিকে গোলে কপট সক্ষেপ্তিক গোলে নিজ

রাজ্যের আপ্সাধনে সমর্থ ছইবেন, অথবা, নিজ মৃপস্থানের বৃদ্ধি করিতে পারিবেন। অথবা, তিনি সেই স্থানে যাইবেন, যে স্থানে গেলে তিনি তক্তর সৃহিত নিজ অভিপ্রেত সৃদ্ধি স্থাপন করিতে পারিবেন।

অথবা, তাঁহার ( অবলীয়ান্ রাজার ) সহপ্রস্থানকারী গৃঢ়পুরুবের। ( সবল ) শক্তর নিকট ( এইরূপ সন্দেশ ) পাঠাইবে— "আপনার শক্ত আমাদের হন্তগত হইয়াছেন। প্রতরাং কোনও পণাবন্তর অপদেশে হিরণা, অথবা, কোনও অপকারের অপদেশে অন্তঃসারযুক্ত সেনা আমাদের নিকট প্রেরণ কল্পন, আমরা আপনার এই শক্তকে বন্ধ বা মারিত অবস্থার আপনার নিকট অর্পণ করিব।", শক্ত রাজা এইরূপ করিতে শীকার করিলে, সেই হিরণা ও সারযুক্ত সেনা ( অবলীয়ান্ বিজিপীরু শরং ) গ্রহণ করিবেন।

অথবা, ( অবলীয়ান্ রাজার ) অন্তণাল নিজ তুর্গ শক্তকে প্রদান করিয়া, তাঁহার ( সেই সবল শক্তর ) সেনার কোনও এক অংশকে অনেক দূরে গইয়া গিয়া বিশ্বাদোৎপাদনপূর্বক ইহার বধসাধন করিবেন। অথবা, (সেই অন্তপাল) একীভূত কোন উদ্ভূম্খল জনপদকে নিগৃহীত করার জন্ত শক্তর দেনা ভাকিয়া লইবেন। তৎপর সেই দেনাকে তিনি এমন প্রদেশে নিয়া ঘাইবেন যেখানে গেলে নির্গমন কঠিন, এবং যেখানে নিয়া বিশ্বাদোৎপাদনপূর্বক তাহার বধসাধন করিবেন।

অথবা, তাঁহার (অবলীয়ান্ বিজিগীয়ুর) কোনও মিত্রবেষধারী গৃচপুরুক্ত লক্ষের নিকট এইরূপ বার্ডা পাঠাইবে—"এই (আপনার) ছর্গে ধান্ত, শ্লেহজ্ঞার (তৈলম্বতাদি), ক্ষার (ওড়াদি) বা লবণ ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়াছে অর্থাৎ ফুরাইয়া গিয়াছে। এইলব দ্রবা অমৃক দেশে ও অমৃক সময়ে প্রবেশ লাভ করিবে। আপনি দেই লব দ্রবা নিজে (ল্টিয়া) লউন।" তদনস্কর (অবলীয়ান্ বিজিপীয়ুর) দৃষ্ত, অমিত্র ও আটিবিক পুরুবেয়া বিষযুক্ত ধান্ত, স্লেহজ্ঞবা, ক্ষারবন্ত বা লবণ (সেই দেশে ও সেই কালে) প্রবেশ করাইবে। অথবা, অন্ত বধাপুরুবেরা দেই কার্যা করিবে (ভাছা ছইলেই দেই বিষযুক্ত প্রবোর ব্যবহারে বিজিপীয়ুর শত্রু নই ছইবেন)।

এইভাবে সর্বপ্রকার বিষযুক্ত পদার্থের বীবধ পক্রদার। কি উপারে প্রছণ করাইতে হইবে ভারা ব্যাধ্যাত হইল, বুঝিতে হইবে।

অধ্বা, ( অধনীয়ান্ বিজিকীয় ) শত্ৰুর সহিত সন্ধি করিয়া গণিত ছির্ণ্যের ( নগদ টাকায় ) একাংশ ভাঁহাকে দিবেন ৷ অবলিট অংশ গ্রাদান করিতে তিনি বিশয় করিবেন। তদনশুর (বিশ্বাস উৎপন্ন হইলে শব্দর কর্মীর) রক্ষাবিধানে তিনি শব্দকে উপেক্ষা করিতে প্রযোজিত করিবেন। অথবা, তিনি অগ্নি, বিষ ও শব্দবারা শব্দকে প্রহার করিবেন। অথবা, তিনি হিরণ্যপ্রতিগ্রহকারী অর্থাৎ উৎকোচগ্রহণকারী শব্দর বল্পত বা প্রিয়ন্ত্রনাসনকে (অর্থবারা) অন্থর্গইতি করিয়। শব্দে আনিবেন (অর্থাৎ শব্দর নাশের জন্ম তাহাদের মহারতা সইবেন)।

যদি ( অবলীয়ান্ বিজিলীয়ু ) সর্বাদা শত্রনিবারণে পরিক্ষীণ বা অলক্ত হয়েন.
তাহা হইলে তিনি শত্রুকে স্বর্গ ছাড়িয়া দিয়া সুরক্ষপথে নির্গত হইয়া ষাইবেন।
অথবা, তিনি প্রাকারের ক্ষিতে যেখানে কোন ভক্ত আছে, তাহা ভেদ করিয়া
পলাইয়া যাইবেন।

রাজিতে শক্ষ্যনার উপর সোপ্তিকাশহরণ অবশ্বন করিয়। যদি তিনি কৃতকার্যা হইতে পারেন, ভাহা হইলে (স্তুর্গেই) অবস্থান করিবেন। কিন্তু, অকৃতকার্য্য হইলে তিনি পার্য বা বজোপারে নিজ্ঞান্ত হইবেন। (তদ্ধপ উপায় নিরূপিত হইতেছে, যথা—) তিনি পাষ্যপ্তের (যে ক্যেন ধর্মসম্প্রদায়ের স্ত্যের্য্য) বেষধারী ইইয়) অক্ষরংধ্যক পরিজনসহকারে নিজ্ঞান্ত হইবেন। অথবা, তিনি মারা গিয়াছেন এই বিশিয়া, প্রেতবাক্ষন রাজাকে গুঢ়পুরুবের) হুর্গ হইতে নিজ্ঞান্ত করাইবে। অথবা, তিনি কোন প্রেত বা মৃত ব্যক্তির স্ত্রীর বেবধারী হইয়া প্রেত স্থামীর অস্থ্যমন করিবেন।

অথবা, তিনি দেবতার প্জোণছারে, প্রাদে ও উন্থানতোজনাদিতে বিষযুক্ত অরপান (শক্তকে) দিয়া, দৃশুপুক্ষের বেষধারী গৃঢ়পুক্ষদিগের সাহাধ্যে শক্রণক্ষে প্রবেশ করিয়া, উপজাপ বা ভেদ-অবদ্যনপূর্বক নিজ গৃঢ়গৈন্তের সহায়তার শক্তকে অভিহত করিখন।

স্পেতি সৈপ্তসাহাদ্য-ব্যতিরেকে একাকী অবলীয়ান্ রাজা কি প্রকারে শক্তকে অভিত্ত করিতে পারেন, তাহা নিম্নপিত হইতেছে।) অথবা, যদি ( অবলীয়ান্ রাজার ) মূর্গ শক্রবারা গৃহীত হয়, তাহা হইলে তিনি থাওয়ার যোগ্য ক্রব্যাদিবারা পরিপূর্ণ কোন চৈত্য বা দেবালয়ে নিজকে সরাইয়া লইয়া গিয়া সেই ছানের
দেবপ্রতিযায় ছিল্লে প্রবেশ করিয়া নিবাস করিবেন। অথবা, তিনি গৃঢ্বাস্বোগ্য
রক্ষযুক্ত ভিত্তিতে, কিংবা দেবতাপ্রতিমাযুক্ত কোন ভূমিগৃহে যাইয়া বাস করিবেন।
শক্র যদি তাঁছার কথা বিস্বত হয়েন, তাহা হইলে ( অবলীয়ান্ বিভিন্তির্
য়াত্রিতে স্বর্জাপথে শক্রবাজার আবাসে প্রবেশ লাভ করিয়া হল্ড অনিত্রকে বধ
করিবেন। অথবা, তিনি ব্যবিলেরণের আধার বিশ্বেবিত করিয়া তহুগরি

বর্রপাত ঘটাইবেন। অথবা, বিষ ও অগ্নিযোগদারা ( ওপনিষদিক অধিকরণের প্রলম্ভন-প্রকরণে উক্ত উপার্হারা ) লিগু গৃহে কিয়া জতুগৃহে শ্রান শক্র রাজাকে তিনি আলাইয়া দিবেন।

অথবা, ভূমিগৃহে, স্থবদায় ও গৃচ্ছিন্তিতে প্রবিষ্ট জীক্ষ নামক গৃচপুরুষেরা বিহারবিষয়ে আসক্ত শব্দ রাজাকে প্রমোদবন ও বিহারদ্বানের অভতরে অবস্থান-কালে হত্যা করিবে; অথবা, গুগুচরের কার্য্যে অবস্থিত গৃচপুরুষেরা ( প্রদ ও আরালিকাদিরূপে প্রছন্ত পুরুষেরা ) বিষপ্রয়োগদ্বারা তাঁহাকে বধ করিবে। অথবা, নিরুদ্ধ ( অর্থাৎ অভজন প্রবেশ-রহিত ) স্থানে স্থপ্ত শ্ব্দরাজার উপর গুগুবেষধারিণী স্ত্রীরা সর্প, বিষ ও অগ্নির ধূম মোচন করিবেন ( ষভারা শব্দরাজা মারা বাইতে পারেন )।

অথবা, অবসর উপস্থিত হইলে, যদি অস্ত্রুল উপায় পাওয়া যায়, তাহা হইলে শত্রুর অস্তঃপুরে গমনের পর, গৃঢ়ভাবে দেখানে সংবরণ করিয়া (অবলীয়ান্ বিজিগীরু) সেই উপায় শত্রুর উপর প্রয়োগ করিবেন। তৎপর গৃঢ়ভাবেই তিনি সেই স্থান হইতে নিজ্ঞান্ত হইবেন, এবং গৃঢ়প্রাণিহিত সম্জন-দিগ্রের প্রতি আহ্বানসংকেত প্রদান করিবেন।

( অবলীয়ান্ বিজিগীরু ) দ্বারপাল, বর্ষবর . নপুংসক ) ও শক্তর অস্তঃপুরে অন্ত কর্মচারীর বেবে অবস্থিত গৃড়পুরুষদিগকে এবং শব্দর প্রতি প্রযুক্ত গৃড়-প্রদিগকে ত্র্যাঘোররূপ সংজ্ঞাদ্বারা আহ্বান করিয়া, শব্দর অবশিষ্ট প্রিজনদিগকে (তাহাদের দ্বারা) বধ করাইবেন ১ > ॥

কোটিলীয় অর্থপান্তে আবলীয়দ-নামক হাদশ অধিকরণে যোগ বা কপটোপায়দ্বাস্থা অভিসদ্ধান, দণ্ডাভিসদ্ধান ও একবিজয়-নামক পঞ্চম অধ্যায় ( আদি হইতে ১৪০ অধ্যায় ) সমাও। আবলীয়স-নামক হাদশ অধিকরণ সমাপ্ত।

## হুর্গলক্তোপায়– ত্রয়োদশ অধিকরণ প্রথম অধ্যায়

#### ১৭১ প্রকরণ—উপজাপ বা শক্ত **হইতে ডৎপক্ষীয়গণের ভেদের** উপায়

শক্রর প্রাম ( -নাগরাদি ) দখল করিতে ইচ্ছুক বিজিপীরু নিজের সর্বজ্ঞত।
ও দেবতার সহিত দাক্ষাংকার-সংযোগের খ্যাপনাদ্বারা আত্মপক্ষকে অত্যন্ত
হর্ষযুক্ত করিবেন ও শক্রপক্ষকে উদ্বিগ্ন করিবেন।

নিয়লিখিত উপায় প্রয়োগদ্বার। নিজের সর্ববিজ্ঞতা তিনি প্রকাশ করিবেন, ব্রধা—(১) মুখ্য মুখ্য রাজোপজীবিগণের নিজ গৃহের গুল্প রন্তান্ত (গৃড়-পুরুবদ্বারা) অবগত হইয়া সেই মুখ্যদিগের নিরাকরণ; (২) কন্টকশোধন অধিকরণে (পঞ্চম অধ্যায়ে) উক্ত অপসর্পোপদেশদ্বারা, রাজার সহিত দ্বে-আচরণকারীদিগকে জানিয়া প্রকাশকরণ; (৩) অল্যের অবিদিত সংস্পবিস্থার (অর্থাৎ নৃত্যুক্তীতবাছবিছার) সংজ্ঞাদ্বারা (এবং গুণ্ডচরাদি হইতে অবগত) রাজার নিকট নিবেদনীয় উপটোকনের কথা আগেই খ্যাপন; (৪) (যে দিনই বিদেশে কোন ঘটনা ঘটিবে) সেই দিনই সেই ঘটনাশংদী লেখা বা মুদ্রাদ্বারা সংযুক্ত (অর্থাৎ সেই লেখাহারক) গৃহপারাবতদ্বারা বিদেশের রুজান্ত জ্ঞাপন।

নিয়লিখিত উপায় প্ররোগদারা নিজের দেবতালংযোগ তিনি প্রকাশ করিবেন, যথা – (১) স্থরকাদারা যাইয়া অয়ি ও চৈড্যদেবতায় প্রতিমাতে রুড ছিদ্রদারা জন্তঃপ্রবিষ্ট অয়ি ও চৈড্যদেবতারঞ্জক (গুচ়পুরুষদিগের) সহিত সভাবণ ও তাঁহাদের পূজন (রাজা করিবেন); (২) জল হইতে উবিত নাগবাঞ্জন ও বরুণবাঞ্জন (অর্থাৎ তাজববেষবারী গুচুপুরুষদিগের) সহিত সভাবণ ও তৎপূজন (করিবেন); (৬) (তড়াগাদির) জলমধ্যে মুদ্রামুক্ত (মোহর-করা) বালুকানিশ্বিত (মজবুত) কোশ বা পেটারী রাখিয়া রাজিতে, তথ্যধ্য (পূজায়িত) অয়িমালা বার বার উঠাইয়া দেখাইবেন; (৪) ভারী শিলামুক্ত শিক্ষাদারা ধারিত প্রবক্ষের (উড়্পাদির, ভেলার) উপর (ছিরভাবে) শাড়াইয়া থাকিবেন (অর্থাৎ এই প্রকারে বন্ধ প্রবক্ষ জলবেগে অছির ছইবে না–রাজাও তত্রপরি গাড়াইয়া থাকিতে পারিবেন); (২) উদকবন্ধি বা জলপ্রবেশয়োধকারী ব্যাভারায়া ও জরায় বা গভিবেলীয় মত চর্মনিশ্বিত বৈদীয়ায়া মজক সহ নালিকা

ঢাকিয়া, পৃষত-নামক মৃগের অস্ত্র ও কুলীরক (কাঁকড়া), কুন্ধীর, লিংগুমার ও উদ্র-নামক মংস্থাবিশেষের বসা (চরবী) সহ শতপাকে প্রন্তুত তৈল নাসিকাতে প্রয়োগ করিয়া, (পুরুষেরা) রাজিতে গণশা (দলে দলে) সঞ্চরণ করে—এই প্রকার জলসঞ্চার ঘটে। এই সব জলসঞ্চারী গুচপুরুষবারা (রাজা) বরুণ ও নাগদেবের কন্থাগণের ন্থায় শক্ষ উচ্চারিত করাইবেন এবং (ভিনি) ভাহাদের সহিত আলাপ করিবেন; এবং (৬) কোপের কারণ উপস্থিত হইলে স্মুধ হইতে। ঔষধাদিযোগে ) অগ্নি ও ধুম নিগত করিবেন।

রাজার নিজের দেশে তাঁহার এই সব বিষয়ের ( অর্থাৎ তদীয় সর্বজ্ঞত ও বিবতসংবাগের ) কথা, তাঁহার সহায়তাকারী ও তদীয় এই সব প্রভাবের দর্শনকারী, কার্ডান্তিক (বিদৰজ্ঞ), নৈমিন্তিক (নিমিন্তদর্শনে শুভাল্ডভদংসী), মোহুর্ভিক (জ্যোতির্কিন্), পোরাণিক (পুরাণ-কথাকথক) ও ইক্ষণিক প্রাণান্তব্য তবিয়ৎ শুভাল্ডভবকা) গৃচপুরুষগণ প্রকাশ করিবে। ( আবার সেইরূপ গৃচপুরুবেরাই ) তদীয় শক্রর দেশে (বিজ্ঞিনীরুর ) দৈবতদর্শন ও দিবা কোশ ও দিবা দণ্ড বা দেনার প্রাহেতাবের কথা প্রচার করিবে। দৈবতপ্রশ্ন ( শুভাল্ডভকর্ম-বিষয়ক প্রশ্ন), নিমিন্তবিছা ( শক্রবিছা), বায়সবিছা ( কাকস্বরবিজ্ঞান), অঙ্গবিছা ( অক্স্পর্শবিষয় ) ভাল্ডভকর্মন, স্থাদর্শন ও পশুপক্ষীর রবসম্বন্ধে ( তাহারা ) এইরূপ বলিবে যে, এইসব বারা ( রাজার ) বিজয় স্টিত ইইতেছে। ( এবং এইসব নিমিন্তবায়া স্টিভ ) শক্রর বিশরীত অবস্থা অর্থাৎ পরাজয় ঘটিবে ইহাই ভেরীনিনাদসহকারে ( ভাহারা ) প্রচার করিবে। আর তাহারা এই শক্রবাজার সম্বন্ধে আকাশে উদ্ধাপাত ( অধিঃ ১৪। অধ্যার ২ দ্রেইর ) দর্শন করাইবে।

শক্তর মুখ্যপুক্তবদের সহিত মিজরূপে ব্যবহারকারী দ্তবেষধারী পুক্তবের।
( তাঁহাদের নিকট ) নিজ প্রভূর ( অর্থাৎ বিজিগীরুর ) হারা প্রণশিত সংকারের প্রশংসা করিবে। তাহারা ( শক্তর ) অমাভাবর্গ ও আর্ধধারী সৈনিকপুক্ষণ-দিগের সমূপে ( বিজিগীরুর ) উম্ভিসাধন ও প্রপক্ষের অবনতিসাধনের কথা এবং তাঁহাদের ( অমাভ্য ও আর্ধীরগণের ) প্রতি তুল্যরূপ যোগক্ষেমবহনের কথা ব্যক্ত করিবে। ( তাহারা আরও বলিবে বে, ) তাঁহাদের ( অমাভ্য ও আর্ধীরবর্গের ) প্রতি ( রাজা ) ভাহাদের বিপৎকাশে সহারভাগেশনি ও সম্পৎকাশে অভিনশনারি প্রদর্শন এবং ( ভাহাদের মৃত্যুর পর ) ভাহাদের অপভ্যের প্রতি সংকার প্রদর্শন করেন।

পূর্ব্বে ( ভেদদম্বন্ধে ) বেদ্ধপ উপায় উল্লিখিড হইয়াছে, ভাগ্ অবলম্বন করিয়া রাজা পরপক্ষকে উৎদাহিত করিবেন। পুনরার অন্ত উপারও বদা হইবে, যখা—( শক্তণক্ষের কাছাকে কি ভাবে উৎদাহিত করিতে হইবে অর্থাৎ শক্রবাজা হইতে ভিন্ন করিতে হইবে ভাহা বশঃ হইবে ) (পরপঞ্চীর ) বাহারা কার্য্যসম্পাদনে অভ্যন্ত পটু ভাহাদিগকে তিনি সামান্ত গর্দভের নিদর্শনদার; অর্থাৎ গর্দভের জায় প্রভূব জন্মই ভাছারা পরিশ্রম করিরা থাকে, এইরূপ বাক্য-দারা উৎসাহিত করিবেন। শকুট বা বেঅষ্টি ও শাধাহনন বা কুঠারাদির নিদর্শনদ্বারা দণ্ডকারী দৈনিকদিগকে তিনি ( অর্থাৎ স্থকার্ধের ফল স্থরং অমুভব করিতে পারে না বলিয়া তিরস্কারপূর্বক স্বপ্রভু হইতে ভিন্ন হওয়ার জ্ঞা) উৎসাহিত করিবেন। বাহারা উন্বিয় অর্থাৎ শত্রুরাজায় ভয়ে জীভ, ভাহাদিগকে তিনি (জীবিতনিরাশ) কুলমেষ-নিদর্শনে তিরকার করিয়া ভেদ্বিষ্য়ে উৎসাহিত করিবেন। যাহার। (শত্রুরাঞ্চারারা) বিমানিত, ভাহাদিগকে ভিনি বছবাতজুল্য বিমাননাপ্রাপ্ত বলিয়া (ভেদজ্জা) উৎসাহিত করিবেন। যাহাদের আশা (পররাজার দারা) ভগ হইয়াছে তাহাদিগকে ফলশুল বিচুল বা বেত্ৰ অথবা শোহময় ভক্তপিও ও মিধাাস্ট (জ্ল্লানবিমুধ) মেঘের সহিত তুলিত করিয়া (এভেদবিষয়ে) তিনি উৎসাহিত করিবেন। ষাহারা (নিজকার্ষ্যের জন্ত প্রভূর নিকট হইতে) প্রাথ্ত (অলঙারাদিদান-খারা) পূজাকেই কার্য্যক্ষণ বলিয়া মনে করে, তাহাদের প্রাপ্ত অলভার অনিষ্টকারী ও হুর্লক্ষণযুক্ত বলিয়া, ভাছাদিগকে (রাজার) বিরুদ্ধে ভিনি উৎসাহিত করিবেন। শত্রুবাঞ্চারা যাহারা উপধিবশে প্রভারিত হইয়াছে, ভাহাদিগকে বাজা বে ব্যাজ্ঞচর্মপরিহিত নিষ্ঠুরস্বভাব ব্যক্তি এবং দেই কারণে কণ্টমুত্যুত্ব্য হইয়াছেন এইরূপ ব্লিয়া, তিনি তাঁহার বিরূদ্ধে উৎসাহিত করিবেন। আবার বাহার। (শক্রর) অপকার সর্বনাই করিয়া বাকে, পরসেব। যে পীলু ( ডিক্তারদ ফলবিলেষ )-ভক্ষণের মত, করকা-নামক ( ডিক্তারদ ) শাক্ষ-বিশেষের মত, উট্রী-নামক (ভিক্তরস) ওবধিবিশেষের মত, এবং গর্মভীর ক্ষীর-মন্ত্রের মত উল্বোকর, এইরূপ বলিয়া ডিনি ডাহাদিগকে ভাহাদিগের রাজার বিভ্ৰুছে উৎসাহিত করিবেন।

স্থাহার। (এইভাবে উৎসাহিত হইরা) শক্তর বিরুদ্ধে কার্যা করিতে শীকার করে, তাহাদিগকে তিনি অর্থ ও মানুখারা বৃক্ত করিবেন। দ্রবাসংকট ও অরসংকট উপস্থিত হইলে তিনি তাহাদিগকে দ্রবা ও অরদানধারা অস্থ্যইতি করিবেন। বদি ভাহার। (মাননাশাদি-জরে) এই দানের প্রতিগ্রহ না করে, তবে তিনি ভাহাদিগের স্ত্রী ও কুমার-ধার্যা অলকার ভাহাদিগকে দংকারপূর্ধক প্রদান করিবেন।

শেকর দেশে) ছার্ভিক্ষ, চৌরভয় ও আটবিকদিগের আক্রমণ উপস্থিত হইলে, পোর ও জানপদিগকে (রাজা ইইতে ভিন্ন হওয়ার জন্ম) উৎসাহিত করিতে যাহারা তৎপর, সেই (গৃঢ়পুরুষ ) সত্রীরা এই প্রকার বলিবে—"আমরা রাজার নিকট অন্থপ্রহ যাচ্ঞা করিব—কিন্ত, আমরা যদি অন্থাহ হইতে বঞ্চিত হই, তাহা হইলে অন্থ রাজার জাশ্রমে চলিয়া যাইব।"

উক্তপ্রকার উপদেশ যাহার) স্থীকার করিয়া লইবে—ডাহাদিগকে (বিজিনীরু) রাজা দ্রবা, ধান্ত ও (বাসস্থানাদি অক্তপ্রকার) দানদারা সহারতা প্রদর্শন করিবেন। শক্র হইতে তৎপক্ষীর লোকদিগের উপজাপ বা ভেদশন্ধরে ইহা এক মহৎ অভ্ত উপায় এ ১ ।

> কোটিলীয় অর্থশান্তে হুর্গলস্কোপায়-নামক ত্রয়োদশ অধিকরণে উপজাপ-নামক প্রথম অধ্যায় ( আদি হইতে ১৪২ অধ্যায় ) সমাস্ত i

#### দ্বিতীয় অধ্যায়

#### ১৭২ প্রকরণ—ধোগবামন বা কপট উপায়দারা দুর্গ **হইডে** শক্তর নিজনামণ

মৃত্তিতমন্তক অথবা জটাধারী ( তাপসবাজন কোন গৃঢ়পুৰুষ ) নিজকে শর্মত গুছাবাসী ও চারিশত বংসর আয়ুর্জ বলিয়া প্রকাশ করিয়া, অনেক জটাধারী শিশুসহ নগরের অন্তিকে অবস্থান করিবেন। আবার তাঁহারই শিশুরা হল ও মূল উপহাররূপে দক্তে লইয়া শক্রবাজার অমাতাদিগকে ও শ্বং রাজাকেও ভগবানকে ( অর্থাৎ তাঁহাদের গুরুদেবকে ) দেখিবার জন্ম প্রেরিত বা যোজিত করিবেন। রাজার সহিত মিলিত হইলে পর, (সেই ভাপস) পূর্ক্বিত্তী রাজগণের ও তাঁহাদের দেশের চিক্ত্সমূহের কথা প্রকাশ করিবেন, (এবং বলিবেন)—"এক এক শত বংসর পূর্ণ হইলেই আমি অগ্নিতে প্রবেশ করিয়া পুনরায় বালক হইয়া ক্ষিরিয়া আসি। এখন এই স্থানেই চত্ত্র্বার অগ্নিতে প্রবেশ করিব। আগনি অবশ্রই আমার

সম্বানের পাত্র অর্থাৎ আপনাকে বরাদিপ্রদানপূর্বক সংকারপ্রদর্শন করা আমার অবশ্যকর্ত্তবা। আপনি তিনটি বর মাগিতে পারেন।" এই সব উপদেশ তিনি স্বীকার করিলে, তাঁহাকে (তাপসটি) বলিবেন—"আপনি সাত রাত্রি পর্যান্ত এই স্থানে পুত্র ও স্ত্রী সহ (লোকের আনোদের জন্ত) অতিনয়াদিদর্শনের ও হোমের (অথবা তৃষ্টিভোজনাদির) বাবস্থা করিয়া বাস করিবেন। রাজা এইভাবে সেখানে বাস করিতে থাকিলে তিনি তাঁহাকে হত্যা করিবেন।

মুণ্ডিতমন্তক বা জটাধারী তাপদ স্থানিকের বেব পরিধান করিয়া, বহুসংখ্যক জটাধারী শিষ্যুক্ত হইয়া, ছাগরক্ষে দিশ্ধ একটি বংশ-শলাকা স্থবপূর্বণ ধারা লিপ্ত করিয়া, উপজিব্লিকা-নামক কীটবিশেবের অন্ত্যরুগ বা অন্ত্যক্ষান জন্ত কল্পীকমধ্যে নিহিত করিবেন, কিংবা স্থবর্গমণ্ডিত (বংশ) নালিকা (তেমন তাবে রক্ষিত করিবেন)। তৎপর সত্রী (পুরুষ) রাজার নিকট বলিবে—"এই দিন্ধান্ধত করিবেন)। তৎপর সত্রী (পুরুষ) রাজার নিকট বলিবে—"এই দিন্ধান্ধত ক্ষিত্ত করিবেন) বা কলোমুখ নিধির সন্ধান জানেন।" রাজাকর্ত্বক পৃষ্ট হইয়া তিনি বলিবেন সত্তাই তিনি তাহা জানেন। আর তিনি দেই (ভূমিতে পয়) অভিজ্ঞান বা চিহ্ন দেখাইবেন। অথবা, ভূমিমধ্যে বহুতর হিরণা নিহিত করিয়া তিনি তাঁহাকে (রাজাকে) বলিবেন—"এই নিধি নাগদ্বারা রক্ষিত—(কাজেই) ইহা (নাগপুজার্থ) প্রণিপাতহারা সাধনীয়।" যদি রাজা এই সবক্ষা স্থীকার করেন, তাহা হইলে (তাপস তাঁহাকে) বলিবেন—"গপ্তরাত্রি পর্যান্ত তিনি হত্যা করিবেন।

অথবা, রাত্তিতে তেজনাথিছার। সংযুক্ত (স্বগাত্তে অথিপ্রজ্ঞলনদ্বারা অভ্ত ক্ষপাদি প্রদর্শনকারী, অধি: ১৫, অধ্যার ২ দ্রন্থরা), একান্তে অবস্থিত স্থানিক বেষধারী তাশসসকলে, জন্ম জন্ম তাশীয় অভিনয় দেখাইবার সময়ে, রাজসকাশে সত্তীরা বলিবে—"এই সিদ্ধপুরুষ ভবিশ্বৎ সমৃদ্ধিসহদ্ধে মব বলিয়া দিতে পারেন।" রাজা তাঁহার নিকট যেই অর্থই যাচ্ঞা কর্মন না কেন, ভিনি (তাপস) ভাহাই ক্রিয়া দিতে পারিবেন, ইহা অজীকার করিয়া বলিবেন—"সপ্তরাত্ত প্র্যান্ত"—ইত্যাদি প্র্কবিৎ সমান।

অথবা, সিন্ধবেষধারী গৃঢ়পুরুব (শক্ত) রাজাকে মায়াবিস্তাঘার। প্রলুক্ত করিবে। ( রাজা ভন্নশে আনীত হইলে )—রাজা ভাঁহার নিকট ধাহা চাহিবেন—ইত্যাদি পুর্ববং সমান।

অথবা, সিমবেষধারী গুটপুরুব সেই দেশের অতাস্ক সংস্ঞিত দেবতার আশ্রর

দাইরা, নিরস্কর প্রহবণ বা ডুটিভোজাদি সহ সম্পাদিত উৎসবদ্ধারা অমাজাদি মুধ্য প্রকৃতিবর্গকে নিজ বশে আনিরা, ক্রমে ক্রমে সেই অমাজাদিধারাই রাজাকেও প্রবঞ্চিত করিবেন।

অথবা, (উদক্চরপবিস্তাদারা) জলমধ্যে বাসকারী দর্কথেতবর্ণ জটিপ্রেবদারী গৃচ্পুক্র সম্বন্ধে তাইবার তটপথ স্বরকা বা ভূমিগৃহ হইতে নিজ্ঞান্ত হওয়ার দময়ে —সত্তীরা রাজার নিকট বলিবে বে, তিনি বক্লণদেব বা নাগরাজ। রাজা ভাহার নিকট বাহাই যাচ্ঞা করিবেন—ইত্যাদি পূর্ববৎ সমান।

অথবা, জনপদের দীমাতে বাসকারী, দিজবেষধারী গৃঢ়পুরুষ ( শক্র) রাজাকে জদীর শক্তকে দেখিবার জন্ত প্রেরিত করিবেন। রাজা ভাষা করিবার জন্ত স্থীকার করিলে পর, পূর্বসংকেভিত ( শক্ষাদি ) চিক্ষারা শক্তকে স্থাকান করিয়া আনিয়া কোনও নিরুদ্ধ দেশে ভাষাকে ( শক্ত-রাজাকে ভাষার শক্তবারা ) ঘাতিত করিবেন।

অশ্বরূপ পণ্য (বিক্রয়ার্থ) দইয়া দ্মাগত বৈদেহকের (বলিকের) বেষধারী গৃচ্পুক্রবগণ তাহাদের আনীত অবরূপ পণ্যোপারনের দর্শন জন্য রাজাকে আহ্বান করিয়া, দেই পণ্য পরীক্ষায় তৎপর, কিংবা অথের সংবাধে অর্থাৎ ভিড়ে পতিত ( শক্র) রাজাকে হত্যা করিবে, অথবা অশ্বদারা তাঁহাকে প্রহার বা পদদলিত করাইবে।

অথবা, নগরস্মীপে রাত্তিকালে কোন চৈতো বা আরতনে আরোহণ করিয়া তীক্ষ-নামক গুঢ়পুরুষেরা কৃত্তমধ্যে ধান্তকাও কিখা পাটিত দারুপতে (অধিসংদীপনার্থ) ফুৎকার দিয়া এইপ্রকারে জন্সইভাবে বলিবে—"রাজা বা ভাঁহার মুখাপুরুষদিগের মাংস ভক্ষণ করিব;—আমাদের পূজা বর্ত্তিত হউক।" ওভাশুভনিমিত্তজ্ঞ ও জ্যোভিষিবেষধারী গুচপুরুষেরা ভাহাদের সম্বন্ধে এই কথা (স্ক্রি) প্রচারিত করিবে।

অধবা, কোনও মাক্লিক গভীর জলাশরে বা তড়াগমধ্যে রাত্রিতে তেজনতৈলধারা এক্ষিত নাগরূপধারী গৃঢ়পুরুষেরা, লোহমুধ শক্তি ও মুন্দ-নামক অর
পরক্ষর ঘর্ষণ করিতে করিতে সেইপ্রকার ভাবেই ( অর্থাৎ রাজা বা ভাঁছার
মুধ্যপুরুষদিগের মাংস ইত্যাদি) বলিবে। অর্থবা, ভল্পকর্মের ক্ষুক্ধারী
গৃঢ়পুরুষগণ) রাক্ষ্ণের রূপ ধারণ করিয়া, (মুধ হইতে) অরিধ্ম নিজ্ঞামণ করিতে
করিতে, তিনবার নগর বামে রাধিয়া ভ্রিয়া কুরুর ও শৃগালের বব-উত্থাপনপ্র্কিক, সেই প্রকারেই (পুর্বেবৎ) বলিবে। অর্থবা, রাত্রিতে (গৃচপুরুষগণ)

চৈত্যদেবতার প্রতিমাটিকে তেজনতৈল্থারা কিংবা অপ্রক্থাতৃনিশ্বিত আবরণে আছাদিত অধিয়ারা প্রজ্ঞালিত করিয়া, সেই প্রকাবেই (পূর্ববং বলিবে)। অন্তান্ত (গুচপুরুষেরা) সেই কথাই প্রচার করিবে।

অথবা, অত্যন্ত পৃক্ষিত দেবপ্রতিমাসমূহ হইতে (গৃচপুরুবেরা) অতিমান্তার ক্ষধিরদ্বারা প্রশ্রবণ ঘটাইবে। এই দৈবক্ষধিরের প্রবাহ ঘটিলে পর, অন্ত গৃচপুরুবেরা ইহাকে (রাজার সম্বন্ধে) যুক্তে পরাজয়ের লক্ষণ বলিয়া প্রকাশ করিবে।

অথবা, (পূর্ণিমা ও অমাবস্থাদি) পর্বরাত্তিতে (গৃঢ়পুক্রবগণ ) মুখ্য শাশানে শরীরের উপরার্কভক্ষিত মহয়বার। উপপক্ষিত চৈত্য (বা চিতার আরতন) প্রদর্শন করিবে। তাহার পর রাক্ষদরস্থারী কোন একটি গৃঢ়পুরুষ (নিজভক্ষণজন্ত) একটি মাস্থ চাহিবে। নিজকে শ্র বলিয়া গর্ব করিয়া কোন লোক, অথবা অন্ত কেই যদি (সেই মহয়যাচী রাক্ষদকে) দেখিবার জন্ত (সাহস্মহকারে) অগ্রসর হয়—তবে তাহাকে অন্তান্ত (গৃঢ়পুক্রবের)) লোহনির্মিত মুম্পদার: আঘাত করিয়া হত্যা করিবে, যেন সকলে মনে জানিতে পারে যে, সেই লোক রাক্ষদবারা হত হইয়াছে। এই অন্তত ব্যাপার যাহারা দেখিয়াছে, তাহারা ও সত্তীপুক্রবেরা ভাহা রাজসমীপে কহিবে। তৎপর নৈমিত্তিক ও মৌহুর্ভিকবেরধারী গৃঢ়পুক্রবেরা ভাহা রাজসমীপে কহিবে। তৎপর নিমিত্তিক ও মৌহুর্ভিকবেরধারী গৃঢ়পুক্রবর্গণ শাস্তি ও প্রায়ন্দিত্তের ব্যবস্থা (রাজসমীপে) নিবেদন করিয়া বলিবে—"তাহা না করিলে রাজার ও দেশের বড় অমন্তল ঘটিবে।" রাজা তাহা করিতে স্বীকৃত হইলে ভাহারা এইরূপও বলিবে—"এই সব তুর্নিমিত্তমন্তনে সপ্তরাত্ত পর্যস্ত রাজা স্বয়ং এক এক প্রকার মন্ত্রজন, বলিদান ও যুজ্ঞহাম করিবেন।" তদনস্তর পূর্ববিৎ আচরনীয়।

অথবা, (বিজিপীর রাজা) এই সমস্ত যোগের প্রয়োগ গৃচপুরুষদ্বারা নিজের উপর করাইয়া ভাহার প্রতিবিধান করিবেন, ধেন ভদীর অভান্ত সহারকগণ এই সব শিক্ষা করিতে পারে: (ভদনস্তর ভিনি গৃচপুরুষগণদ্বারা) এই যোগ (শক্ররাজার উপর) প্রয়োগ করাইবেন: অথবা, তিনিণ এই সমস্ত যোগের প্রয়োগ দেখাইয়া ভংপ্রভীকারপূর্বক (প্রকাজন হইতে) রাজকোশ বৃদ্ধির উপায় করিবেন (অধি: ৫, অধ্যায় ২ ক্রপ্রয়):

অথবা, হস্তিগ্রহণগোপুণ শক্ত রাজাকে (নিজগক্ষীয় ) নাগবন-বক্ষকের। প্রশন্তশক্ষণযুক্ত হস্তিদারা প্রলোভিত করিবে। এই প্রলোভন খীকারকারী রাজাকে কোনও গহনবনে, কিংবা একমাত্রগম্য সঙ্কটন্থানে ভূলাইয়া নিয়া (তাহারা) তাঁহাকে হত্যা করিবে, অথবা তাঁহাকে বাঁধিয়া শইয়া গিয়া (বিজিপীরু রাজার নিকট) উপস্থিত করিবে। এতভারা মৃগয়াকামী শক্রবাজার প্রতি করনীয়ন্ত ব্যাণ্যাত হুইল।

অথবা, ধনকামী ও ব্লীকামী ( শত্রুবাজাকে ) সত্তী গৃচপুরুষেরা দারভাগীর
নিকট গক্ষিত প্রবাের মোকক্ষমা জন্ম তদস্তিকে আনীতা ধনিকা বিধবা
ব্লীলোকঘারা কিংবা অন্য ( অবিধবা বা অনাঢা ) পরমরপ্রতী স্থীলোকঘারা
প্রলোভিত করিবে। এই কথায় সীকৃত রাজাকে রাত্রিতে সেই সত্তিসম্বদ্ধী
গুচপুরুষেরা সমাগমস্থানে শত্রপ্রহার ও বিষপ্রশ্লোগদ্বারা হত্যা করাইবে।

অথবা, সিদ্ধপুরুবদিশের, প্রব্রজ্যাগ্রহণকারী (ভিক্ল্নিগের) এবং চৈত্য ও স্থৃপন্থিত দেবতাপ্রতিমাসমূহের নিকট (দেবার্থ) পুনঃ পুনঃ অভি গমনসময়ে, স্থৃমিগৃহ, স্থারকা ও গৃঢ়গৃহভিত্তিতে প্রবিষ্ঠ তীক্ষ-নামক গৃঢ়পুরুষেরা শক্ররাজ্ঞাকে হত্যা করিবে।

যে-যে দেশে ( শক্ত ) রাজা স্বরং উপস্থিত হইয়া যে যে দর্শনীয় নৃত্যালীতাদি দর্শন করেন দেখানে; এবং যে সমস্ত যাজাবিদ্ধারে ( অন্তর্জ্ঞ সমনপূর্বক বাদকরা কার্যো) বা জলকীড়াতে বিশেষভাবে আদক্ত হয়েন দেখানে: চাটুবচন-প্রয়োগ প্রভৃতি কার্যো, যজ্ঞ ও প্রহবণ ( প্রীতিভোজন ) প্রভৃতিতে, জন্মোৎসবের প্রীতিতে, ( আত্মীয়ের ) মরপের শোকে, ও ( আত্মীয়ের ) রোগের ভয়ে; অথবা আত্মীয়লোকের যে উৎসবে তিনি বিখাসবশতঃ প্রমাদপ্রাপ্ত হয়েন দেখানে; কোন স্থানে যদি রক্ষিরক্ষিত না হইয়া সঞ্চরণ করেন দেখানে; ( বর্ষণজনিত ) ছর্দিনে অথবা জনাকীর্প স্থানসমূহে; অথবা বিমার্গে প্রস্থানসময়ে: অধিনাহে বা নির্জ্জনস্থানে প্রবেশকালে তীক্ষ-নামক গৃত্পুক্ষরণ উপভৃত্জাবশিষ্ট বয়, অলঙ্কার ও মালাঘারা, শয়ন ও আসনদ্বারা, মন্ত ও ভোজনদ্রবার উচ্ছিট্রারা প্রসাম ও আভিহত সংজ্ঞাতুর্যালারা আছুত, পূর্বপ্রপিহিত অভ্যান্ত গৃত্পুক্ষরণণ সহ মিলিও ইইয়া অরিদিগকে প্রহার করিবে। ( ছলপ্রস্কুক্ত) সত্রকারণে যে ভাবে ( গৃচ্পুক্ষরণণ ) শক্রমধ্যে প্রবেশ করিবে দেই ভাবেই ( শক্রমধ্য হইতে ) নিক্রান্ত হইবে। এই পর্যান্ত যোগবামন নির্মণিত হইল ৯ ১-৬ ॥

কোটিলীর অর্থলান্তে হুর্গলভোপায়-নামক ত্রেরাদশ অধিকরণে বোগবামন-নামক দ্বিতীয় অধ্যায় (আদি হইতে ১৪২ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## তৃতীয় অধ্যায়

#### ১ গ্ড প্রকরণ—অপসর্প-প্রণিধি বা শক্তর রাজ্যে গৃহপুরুষের নিবাসন্বিধি

বিজিপীর রাজা ) নিজের বিশ্বন্ত শ্রেণীমুখ্যকে (দেবের হেডুদেখাইয়া) নিজ রাজ্য হইতে নিজাসিত করিবেন। সেই (বিশ্বন্ত শ্রেণীমুখ্য) শক্ররাজাকে আশ্রর করিয়া, শক্রপক্ষের কার্যাজ্বলে নিজ দেশ হইতে সাহায়্য করিবার জন্ত সহায়ক (গুচপুরুষদিগের) সংগ্রহ করিবেন। অথবা, তিনি বহু সহায়ক অপসর্প সংগ্রহ করিয়া, শক্ররাজার অহুমতি লইয়া নিজস্বামীর (বিজিপীরুর) দুস্থবর্গকে, অথবা, হন্তী ও অগ্রহিত এবং দৃষ্য অমাতাযুক্ত ভদীর সৈত্য বা আক্রন্দকে (অর্থাৎ পৃষ্ঠমিত্রকে) জয় করিয়া (আশ্ররদাতা) শক্ররাজার নিকট পাঠাইবেন। (শক্ররাজার) জনপদের একাংশ, শ্রেণী বা আটবিকদিগকে (নিজস্বামীর) সহায়তাশীকরণার্থ তিনি আশ্রয় করিবেন। তাহাদের বিঘাস লাভ করিলে পর, তিনি তাহাদিগকে নিজস্বামীর নিকট পাঠাইবেন। তৎপর স্থামী (অর্থাৎ বিজিপীরু রাজা) ইন্তিবন্ধন বা অটবীনাশের হল তুলিয়া গুচভাবেই (শক্রকে) প্রহার করিবেন। ইহাছায়া অমাত্য ও আটবিকগণের অপদর্পবিধিও ব্যাখ্যাত হইল।

শক্রবাজার সহিত (ছল) মৈত্রী করিয়া (বিজিগীরু) আপন অমাতাদিগকে তিরন্ধত (বা কর্মচাত) করিবেন। তাঁহারা (অমাতোরা) সেই (মিত্রক্ত) শক্রর নিকট (দূতবোগে সংবাদ) পাঠাইবেন—"আপনি আমাদের স্বামীকে (আমাদের অস্থক্লে) প্রদান্ত কর্মনাও করিবেন—"আপনি আমাদের স্বামীকে পাঠাইবেন, (বিজিগীরু) তাহাকে তিরন্ধার করিবেন—"তোমার প্রভু আমার অমাতাদিগের সক্ষে আমার ভেদ ঘটাইতে চাহেন, আর তোমাকে (কোন সংবাদ নিয়া) এখানে আমিতে হইবে না।" অনস্তর (সেই অমাতাবর্গমধ্যে) কোন একটি অমাতাকে তিনি নিকাদিত করিবেন। সেই (অমাতা) শক্রবাজার আশ্রহ লইয়া কপট অপসর্প (গুচ্পুরুষ), (স্বামীর প্রতি) অপরাগর্ক স্বামিন্ত এবং শক্তিশ্বত চোর ও আটবিক, অথবা (স্থামী ও শক্রবাজা এই) উভরের উপধাতকারীদিগকে শক্রবাজার নিকট (সহার্থক বিদ্যা) উপহাররণে উপস্থাপিত করিবেন। (শক্রবাজার) বিশাসভাক্রন

হইলে পর তিনি ( শক্রর ) প্রবীরপুরুষদিগের নাশ ঘটাইবেন। অথবা, তিনি তদীর অন্তপাল, আটবিক বা দৈনিকপুরুষের ছইতা স্চনা করিয়া জানাইবেন— "অমুক অমুক লোক আপনার শক্রর সহিত দৃচ্ভাবে দন্ধি করিয়াছে।" অনম্ভর বিজিগীবুর বধ্যপুরুষের হস্ত হইতে অপিত কৃটলেখ্য দেখাইর। ( অর্থাৎ বিজিগীবু ও শক্ররাজার অন্তপালাদির পরস্পারস্কির বিষয় কোশলে শক্ররাজাকে জ্ঞাত করাইয়া ) তিনি ভাহাদের বধ ঘটাইবেন। অববা, তিনি শক্রকে উহাক্ত করিয়া দৈল্লকবাবহারপুর্বক ( ভাহাদের বধ ঘটাইবেন )।

অথবা, শত্রুর কুত্যুপক্ষীয়গণকে ( ক্রুদ্ধলুব্ধাদিবর্গকে ) নিষ্কের অমুকূল করিয়া, (বিশ্বিসীয়ু) শত্রুর কোন অমিত্র রাজাকে নিজের প্রতি অপকারসাধনে বাংপ্ত করাইয়া তাঁহার প্রতি অভিযোগে প্রস্তুত হইবেন ৷ তৎপরে শত্রুর নিকট তিনি এইরূপ বার্ন্তা (দূতমুখে) প্রেরণ করিবেন—"ভোমার অমুক বৈরী আমার অপকারসাধন করিতেছেন, আইস, আমরা উভয়ে একত্র হইয়া ভাঁহাকে বধ করি। (তিনি পরাঞ্চিত হইলে)তদায় ভূমি ও হিরণ্যে তোমারও ভাগ বা লাভাংশ হইবে <sup>ল</sup> এই ব্যবস্থা যদি শক্ত স্বীকার করেন এবং ( বিঞ্জিপীরুর নিকট ) আসিয়া উপস্থিত হয়েন, তাহা ছইলে (বিজিসীয়ু ) প্রথমতঃ দংকার দেখাইয়া তাঁহাকে শত্ৰুদাৰা রাজিতে নিদ্রাকালে গুচ্ভাবে আক্রমণ করাইয়া বা প্রকাশযুদ্ধে তদ্বারা তাঁহার বধ ঘটাইবেন। অথবা, ওদীয় বিখাদ উৎপাদন করিবার অভিপ্রায়ে প্রতিশ্রুত ভূমিদানের, পুত্রের রাজ্যাভিষেকের এবং নিজ রক্ষার অপদেশে ( ছলে ) তিনি ভাঁহাকে ( শত্রুকে ) গ্বত করাইবেন। অথবা, ষ্দি শুক্র ( অপ্দেশে ) গ্বত না হয়েন, ভাহা হইলে তিনি ভাঁহাকে গুপ্তভাবে वध कदाहित्व। यनि भेवक खन्न माहायार्थि ना आस्त्रन, किंख निक रेनल ( দাহাব্যার্ণে ) প্রেরণ করেন, ভাহা হইলে তিনি দেই দৈন্তকে পূর্কোক্ত বৈরীর দারা নই করাইবেন। (আছত হইয়া) যদি শত্রু রাজা বিজিকীযুর সঙ্গে না ষাইশ্না নিচ্ছের দণ্ড বা সৈন্মের দক্ষে প্রযাণে বহির্গত হইতে চাহেন, তাহা হইলেও ভিনি তাঁহাকে উভয়তঃ অণাৎ অগ্রে ও পূর্চদেশে সংপীড়ন করিয়া বধ করাইবেন ৷ যদি শক্ত রাজা বিজিসীযুর উপর অবিদাসবশত: (নিজ দৈয় সহ ) পৃথক্তাবে (পূৰ্ব্বোক্ত ক্ষমিত্ৰের প্ৰতি) প্ৰযাণে বহিৰ্গত হইতে ইচ্ছা করেন এবং যাতব্য সেই অমিত্রের রাজ্যের কোনও অংশ নিজে গ্রহণ করিতে অভিদাবী হয়েন, তাহা হইদেও তিনি তাঁহাকে সেই বৈরীর দায়া, অববা निर्द्धत नर्वरिननिर्द्धत अक्ति श्राह्मण कत्रिहा वर्ध कदाहरूवन । व्यथना, अक्र

যধন বৈরীর সহিত যুদ্ধে প্রবৃত হইবেন তথন (বিজিগীয়ু) সেনা পাঠাইয়। শক্রর মূলস্থান অন্তদিক দিয়া অপহরণ করাইবেন, অর্থাৎ সেধানে তদ্বারঃ লুট্পাট করাইবার ব্যবৃদ্ধা করিবেন।

অথবা, (বিজ্ঞিগীর) মিত্রের দক্ষে এই বলিয়া দক্ষি করিবেন যে, শক্রুর ভূমি একত্র অধিকৃত হইলে, উভয়ে তাহা বিভাগ করিয়া দইবেন। অথবা, তিনি শক্রুর সক্ষে এই বলিয়া দক্ষি করিবেন বে, নিজ্ঞ মিত্রের ভূমি একত্র অধিকৃত হইলে, উভয়ে তাহা বিভাগ করিয়া লইবেন। তৎপর শক্রুর ভূমির প্রতি (মিত্রের) লোভ উৎপন্ন করিতে পারিলে, তিনি দেই মিত্রন্থানিক্ষের প্রতি কোনও অপকার করাইয়া দেই ব্যপদেশে তাহাকে আক্রুনণ করিবেন। অনুদ্ধর পূর্বোলিখিত সর্বপ্রকার যোগ বা কপটোপার প্রয়োগ করা যাইতে পারে।

আবার মিত্রের ভূমির প্রতি শক্তর লোভ উৎপন্ন করা হইলে যদি শক্ত একত্ত ভাঁছার প্রতি অভিযানে স্বীকৃত হয়েন, ভাহা হইলে (বিজিগীর) ভাঁহাকে নিজ দণ্ড বা সৈন্ত দিয়া অস্থগহীত করিবেন (অর্থাৎ যাহাতে নিজ শক্রটি নিজ মিত্রের প্রতি আক্রমণ চালাইতে পারেন)। তৎপর শত্রু বদি মিত্রকে অভিযোগার্থ প্রাপ্ত হয়েন, তাহা হইলে ভিনি তাঁহাকে ( শক্তকে ) প্রবঞ্চিত করিবেন ( অর্থাৎ মিত্রের সহিত মিলিত হইয়া ভাঁহাকে নষ্ট করাইবেন )। অথবা, (বিজিনীরু) নিজের বাসনের প্রতীকারের ব্যবস্থা (মিথ্যাভাবে) করিয়া, নিজের উপর আপতিত কোন ব্যসন দেধাইয়া নিজমিত্রছারা শতকে উৎসাহিত করিয়া নিজের উপর ( শত্রুর ) আক্রমণ ঘটাইবেন, এবং তৎপর ( মিত্রের সৃষ্টিত মিলিত হইয়া উভয়ে ) ভাঁছাকে দংশীড়িত করিয়া অর্থাৎ ছইদিক হইতে চাপ দিয়া বধ করিবেন। অথবা, তিনি দেই শত্রুকে জীবন্ত অবস্থার ধরিরা লইয়া তাঁছার ব্যজ্যের পরিবর্ত্তন ঘটাইবেন, অর্থাৎ ভাঁহাকে বাঁধিয়া রাখিয়া তৎস্থানে নিজবংশ-গত তদীয় কোনও পুত্র বা বান্ধবকে রাজ্যশাসকরপে বসাইবেন। (বিভিনীরুর) মিত্রদ্বারা আছুত হইরাও শক্ত বদি নিব্লে অমিলিত থাকিতে ইচ্ছা করেন অর্থাৎ বিভিন্নীবুর বিরুদ্ধে পুথকভাবে অভিযানে প্রবৃত্ত হইতে চাহেন, তাহা হইলে (বিজিপীরু) সামস্তরাজা প্রভৃতিদারা ভাঁহার (শক্রর) মূলখান (রাজধানী) অপ্ররণ করাইবেন। অথবা, শত্রু যদি দৈন্তবারা আত্মরক্ষা করিতে ইচ্ছা করেন, ভাছা ছইলে ভিনি ভাঁছার সেই সেন। নই করাইবেন।

ষদি (বিজিসীবুর) মিত্র ও শক্ত (অভিসন্ধানখারা) ভেচ না হরেন, ভাহা

হইপে (বিজিগীরু) প্রকাশ্যভাবেই অন্তোন্তের ভূমিবিধ্য়ে পণৰছ হইবেন, অর্থাৎ মিত্রের ভূমিসম্বন্ধে শক্তর সহিত ও শক্তর ভূমিসম্বন্ধে মিত্রের সহিত ভাগবিধ্য়ে সন্ধি করিবেন। তৎপর মিত্রবাঞ্জন গুপুচর ও উভয়বেতন-নামক গুচপৃক্ষবের। সেই শক্ত ও মিত্রের নিকট এইরূপ বার্ত্তা প্রেরণ করিবে—"এই রাজা আপনার শক্তর সহিত মিলিত হইরা আপনার ভূমি লাভ করিতে চাহেন। এই অবস্থায় সেই মিত্র ও শক্তর মধ্যে অভ্যতর রাজা শক্তিত-চিত্ত কিম্বা রোব্যুক্ত হইরা পূর্কবিৎ চেষ্টা করিবেন ( অর্থাৎ বিজিগীয়ের প্রতি আক্রমণ চালাইবেন—তথন বিজিগীয়ের প্রতি আক্রমণ চালাইবেন—তথন বিজিগীয়

অথবা, (বিজিগীর) নিজের কৃত্যশক্ষকে (ক্রুলাদিবর্গকে) ইছারা সহায়তা করে এইরূপ সর্বত্র প্রচার করিয়া তুর্গমুখ্য, জমপদমুখ্য ও দণ্ডমুখ্য নিগকে নিজ রাজ্য হইতে বাছির করিয়া দিবেন। এই লোকগুলি শক্রর আগ্রয়ে যাইয়া, তাঁহার যুক্ক, (রাত্রিকালে) ওও আক্রমণ, অন্তঃপুরে বাদ ও ব্যসনপ্রাত্তির অবসর পাইলেই শক্তকে প্রবিশ্বত করিয়া নাশ করিবে। অববা, তাহারা শক্তকে তদীয় (আমাত্যাদি) স্বর্গ হইতে ভিন্ন করিবার বাবস্থা কবিবে এবং বিজিগীয়ুর অভিত্যক্ত বা বধ্যপুক্ষরগণন্নারা কৃটলেখ পাঠাইয়া (নিজের মিথ্যাকলিড বিষয়কে) সত্য বিশিয়া শক্তর নিকট প্রতিপন্ন করিবে (অর্থাৎ এই সব উপায়ে শক্ত ও তদীয় অমাত্যাদির মধ্যে ভেদ স্কৃষ্টি করিতে চেলা করিবে)।

অথবা, লুকক বা শিকারীর বেষধারী (বিজিপীরপ্রক্ষীর) গুচপুরুবেরা মাংসবিজ্ঞারের ছলে (শক্ররাজার) দ্বারে উপস্থিত ইইরা, দৌবারিক বা দ্বার-পালদিগের আশ্রের লইরা, শক্রর (অর্থাৎ সেই রাজার) প্রামসমীপে চোব আদিয়া থাকে ইহা ছই তিন বার নিবেদন করিয়া, রাজার বিধাসভাজন ইইলে পর, তাহারা প্রামবধ ও রাজিতে গুণ্ড আক্রমণ উপস্থিত হইলে শক্রর সেনাকে তৎপ্রতীকারের জন্ত হইভাগে বিভক্ত করাইয়া এইরপ ভাবে (শক্রকে) বলিবে—"চোরের দল অত্যন্ত সন্নিকটৈ আদিয়াছে, লোকের মহাকোলাহল শুনা যায় স্থাপনার প্রভৃত সৈত্য তৎপ্রতীকারার্থ (আমাদের সঙ্গে) বাহির হউক লিক রাজার নিকট ইইতে প্রাপ্ত) সেই সৈন্তকে প্রামবধ নিবারণ করার জন্ত অর্পন করিয়া, অন্ত একদল (নিজের) সৈন্তকে সঙ্গে লইয়া য়াত্রিতে হর্গদারে উপস্থিত ইইয়া ভাহারা এইরূপ বলিবে—"চোরগণকে বধ করা ইইয়াছে, এই সৈন্ত নিজ যাত্রা সিদ্ধ বা ফলযুক্ত করিয়া ফিরিয়া আসিয়াছে, (স্নতরাং) ইহার প্রবেশার্থ প্রস্থার খুলিয়া দেওরা হউক।" অথবা, পূর্বের প্রাণিধিতে নিযুক্ত জন্ত

গৃচপুরুবেরাই তুর্গদারগুলি খুলিয়। দিবে এবং ( শুদ্ধকবান্ধন পূর্ব্বোক্ত গৃচ্পুরুষদিগের ) সেই দেনার সহিত মিলিত হইয়। তুর্গমধ্যে প্রহার বিধান করিবে।

অথবা, (বিজিপীয়) শক্রর তুর্গে কারু, শিল্পী, পাষশুী, (নটাদি) কুশীদার ও বৈদেহক বা বাণিজকের বেষধারী আয়ুধীয়দিগকে (আয়ুবজীবিদিগকে) অপদর্শের কাজে নিযুক্ত করিবেন। গৃহপতির বেষধারী অস্তু গৃচপুরুবগণ তাহাদিগের (অর্থাৎ কারুশল্পি প্রভৃতির বেষধারী গৃচপুরুবদিগের) জন্ত প্রহরণ (অন্তর্শন্ত) ও আবরণ (কবচাদি) দংগ্রহ করিয়া, কার্চ, তৃণ, ধান্ত ও পণ্যের গাড়ীতে করিয়া তাহাদিগকে যোগাইয়া দিবে। অথবা, তাহারা দেবধ্যুদ্ধশে (অসিপ্রভৃতি) ও প্রতিমার সঙ্গে তৎতৎ প্রহরণ ও আবরণ তাহাদের নিকট প্রেরণ করিবে।

অথবা, তৎপর কারুপ্রভৃতির বেষধারী গৃচপুরুবেরা প্রমাণীদিগের বধ, জোর করিয়া পুটপাট, চারিদিকে আক্রমণ, ও শুঝ ও গুলুভিপদসহকারে পৃষ্ঠদেশ হইতে গুগে প্রবেশ — এইসব সম্বন্ধে (শক্ররাজার নিকট) নিবেদন করিবে (অর্থাৎ শীঘ্রই এই সমস্ত ব্যাপার ঘটিবে বলিয়া আবেদন করিবে)। অথবা, এই আবেদনের সঙ্গে সঙ্গুল ঘটিলে, তাঁহারা (শক্ররা) প্রাকার, দার ও অট্রালকের থওন, এবং (শক্রর) সেনার ভেদ ও ইহার নাশ ঘটাইতে তৎপর হইবে। (শক্রসেনার ভেদ ঘটাইয়া নাশসাধনের মত অপসর্পন্ধারা সেই সেনাকে বস্থান হইতে অপসারণ্ড যে কর্ত্তব্য তাহা নির্মণিত হইতেছে।)

অথবা, অতিবাহিক বা গুর্গমপথকজনার্থ সাহায্যকারী ও সার্থবাহর্গণের অন্তভূতি পুরুষ, কলাবহনকারী, অধ ও পণ্যের ব্যাপারী, নানা উপকরণহারক, ধান্তের ক্রেতা ও বিক্রেতা, এবং প্রব্রজিতের বেষধারী দূতসমূহদ্বারণ শক্রর সেনাকে বহুদ্রে অপসারণ করা কর্ত্বা, এবং শক্রর বিশ্বাসার্থ পণিত সন্ধির সর্ত্তরক্ষা করাও কর্ত্ব্য ।

এই পর্যান্ত শব্দরাজার উপর ( বিজিগীযুদারা নিযুক্ত ) অপসর্পের কার্য্যকশাপ নিরূপিত হইল !

উপরি উল্লিখিত অপসর্পাণ ও কন্টকশোধন-নামক অধিকরণে উক্ত অপসর্পাণ (শক্ররাজার) আটবিকদিগের উপরও কার্য্য করিবে। অপসর্প ও গৃঢ়-পুরুবেরা অটবীর নিকটবর্তী ব্রন্ধ বা গোষ্ঠকে, ও সার্থ বা বণিক্সংঘকে (আটবিক) চোরগণছার। দুটগাট করাইরা নাল করিবে। তাহারা (ব্রন্ধ ও সার্থের জন্তু) নথান্থানে সংস্কৃতিত অল্পরের ও পানীরন্ত্রের ব্যবস্থা করিয়া সেঞ্জিতে মাদকভার উৎপাদনকারী বিষন্ধারা মিশ্রিত করিয়া পলাইয়া য়াইবে। তৎপর গোপালকেরা ও বৈদেহকেরা চোরগণের নিকট হইতে চোরিত দ্রব্যগ্রহণপূর্বক মদনরসের বিকারসময়ে চোরগণের উপর আক্রমণ চালাইবে (অর্থাৎ তাহাদিগকে ধরিয়া লইয়া বধ করিবে)। অথবা, সক্ষর্মণ (মভপ্রিয় বলভদ্র) দেবের কোন ভক্ত, মুগু বা জটাধারীর বেধ গ্রহণ করিয়া, তৃষ্টিভোজদানদ্বারা মদনদ্রব্য ও অন্তবিষয়ক্ত দ্রব্যারা (পূর্বোক্ত চোরগণকে) প্রবঞ্চিত করিবেন। অনস্তর (মদনরসের বিকারকালে) ভাহাদিগের উপর তিনি আক্রমণ চালাইবেন। অববা, শোগুক বা মভবিক্রয়ারীর বেষধারী গৃচপুরুষ দেবপূজাকার্যার, প্রেক্তকার্যে (শ্রাজাদিকার্য্যে), উৎসবকালে বা সমান্ত (স্থগভোদি)-সময়ে স্বরাবিক্রয় জন্ত উপায়নপ্রদানের ব্যপদেশে মাদকদ্রব্য ও অন্তান্ত বিষ্
িক্রবারা আটবিকদিগকে প্রবঞ্চিত করিবে। তদনস্তর (ভাহারা প্রমন্ত হইলে) ভাহাদিগের উপর (বিজিগীযুর দেনান্বারা) আক্রমণ চালাইবার ব্যবস্থা দেকরিবে।

অথবা, বহুপ্রকারে (মন্তাদিদ্বারা) গ্রামঘাতজন্ত প্রবিষ্ট আটবিকদিগের চিত্তবিক্ষেপ উৎপাদন করিয়া (বিজিগীরু) তাহাদের বধসাধন করিবেন। এই পর্যান্ত চোরগণের উপর অপসর্পদিগের গুঢ়কার্যাসমূহ নিরূপিত হইল॥১॥

কৌটিলীয় অর্থশাল্তে তুর্গলভোপায়-নামক ত্রয়োদশ অধিকরণে অপদর্পপ্রণিধি-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি ছইতে ১৪৩ অধ্যায় ) সমাপ্ত :

# চতুৰ্য অধ্যায়

১১৪·১৭৫ প্রকরণ—পর্বিগাসনকর্ম ( শত্রুত্বরে চভুষ্পার্থে সৈন্যনিবাসন ) ও অবযর্দ্দ ( শত্রুর তুর্গগ্রহণ )

পূর্ব্বে শক্রর কর্শনের ( অর্থাৎ শক্রর কোশ ও দেনার নাশ ও তদীয়
অমাত্যাদির বধের ) ব্যবদ্ধা করিয়া ( বিজিপীর ) শক্রর সম্বন্ধে পর্যু গোসনকর্ম ( অর্থাৎ শক্রর মূর্বের চারিদিকে বেষ্টনকর্ম ) অবলম্বন করিবেন। এই অবস্থার ( বিজিপীর ) শক্রর যথানিবিষ্ট জনপদে অক্তর ম্বাপন করিবেন ( অর্থাৎ শক্রর জনপদে মাহাতে কোনও প্রকার তয়ের উত্তর না হয় তাহার চেষ্টা ক্মিবেন )। যদি তথন শত্রুব জনপদ (বিজিপীরুর বিক্লকে) উথিত হয় বা আন্দোলনপর হয়,
তাহা হইলে তিনি (অর্থাদি-দানরূপ) অন্তগ্রহ ও (করাদিমোচনরূপ)
পরিহারের ব্যবস্থা করিয়া জনপদকে (শাস্তভাবে) নিবেশিত রাখিবেন, কিয়
সেই অবস্থায় জনপদবাসীদিগকে দেশ ছাড়িয়া অন্তত্র অপস্ত হইতে দিবেন না।
তথন তিনি সমত্র জনপদবাসীকে তিয় তিয় ভূমিতে নিবেশিত রাখিবেন, অথবা
তাহাদিগকে এক ভূমিতেই বাস করাইবেন। কারণ, কৌটিলোর মতে জনশ্ল জনপদের কল্পনাই হইতে পারে না, এবং জনপদশ্ল বাজ্যও কল্পিত হাতে পারে না।

সম্প্রতি শক্তর প্রতি পীড়া উৎপাদন করার উপায় নিরূপিত হইতেছে।)
যদি শক্তর জনপদ কোনও প্রকার বিধনে অর্থাৎ বিপদে পতিত হয়, ভাহা ইইলে
বিজ্ঞিনীয়ু তখন শক্তর উৎপন্ন অন (যাহা মজুত আছে)ও ফ্সশ নষ্ট করিবেন
এবং বীবধ (ধান্ততৈলাদির নিজ্ঞাদেশে আনুমনকার্যা)ও প্রসার (দূর দেশ
হইতে তৃণকার্চাদির আগমন) নষ্ট করিবেন।

প্রসার ও বীবধের উচ্ছেদ এবং উৎপন্ন অন্ন ও ফদলের নাশ করাইতে পারিলে এবং প্রজাজনকে অন্তত্ত্ব নিতে পারিলে ও তাহাদিগকে গৃঢ়ভাবে বধ করিতে পারিলে, তদীর (অমাত্যাদি) প্রকৃতির ক্ষয় (বিজিগীরু) ঘটাইতে পারেন।

(কি-প্রকার অবস্থার বিজিগীর শক্তর ছুর্গ অবরোধ করিবেন তাহা নিরূপিত হইতেছে।) তিনি যথন এইরূপ বৃথিবেন, "আমার সৈন্ত প্রভূতগুণবিশিষ্ট ধান্ত, কুপ্য (পোহবল্লাদি দ্রব্য), যত্র, শল্প, আবরণ (কবচাদি), বিষ্টি (কর্মকর) ও রশ্মি, (রজ্জু-) দ্বারা সম্পূর্ণভাবে যুক্ত আছে এবং (অবরোধের পক্ষে) অন্তর্কুল অত্ বা কাল উপন্থিত হইরাছে। আর আমার শক্তর পক্ষে শতু প্রতিকৃল এবং ব্যাধি, ছভিক্ষ ও ধান্তাদিদ্রবেরে নিচর ও রক্ষার অভাব দৃষ্ট হয়; তাঁহার ফ্রীত বা বেতনভাগী শৈন্ত কার্যাদক্তিরহিত হইরাছে এবং তাঁহার মিত্রদেনাও ধেদম্কে হইরাছে", তথন তিনি (বিজিগীযু) শক্তর প্রর্গের অবরোধে লিও হইডে পারেন।

নিজ হন্ধাবার ( অ-সেনানিবেশ), আসার (মিত্রসেনা) ও নিজ পর্বের রক্ষাবিধান করিয়া, ( শক্রর) তুর্গের খাত ও প্রাকার-অস্থ্যরপূর্বক ইহাকে বের দিয়া, ( পরিখার ) জল ( বিবাদিয়ারা ) দ্বিত করিয়া, পরিখাওলি কাটিয়া জল বাহির করিয়া ফেলিয়া, অথবা দেগুলি ( মাটি কিয়া জলবারা ) তরিয়া দিয়া,

স্থরক-মার্গ ও দেনাকৃটিকা অবলম্বন করিয়া তিনি শক্তছর্গের বপ্স ( মাটির ভূপ ) ও প্রাকারের উপর আক্রমণ চালাইবেন।

বিদীর্শ প্রদেশ গুল বা ছাদনোপযোগী মুন্তিকাপিগুদ্ধরা এবং নিম্নপ্রদেশ ধ্লি-মগুলদারা তিনি আছাদিত করিবেন। (শত্রুগের) যে অংশে বছল রক্ষার ব্যবস্থা আছে, দে অংশ যন্ত্রসমূহদারা তিনি নই করাইবেন। কপটদারা (অথবা প্রদারিতগুণ্ড হন্তী হইতে হন্তিপককে সরাইয়া কেলিয়া) অর্থ (ও হন্তীর)-দারা (আরক্ষপুরুষদিগকে বিজিগীবুর দৈনিকগণ) আক্রমণ করিবে। শত্রুগ দৈনিকগণ বিক্রম প্রদর্শন করিতে থাকিলে দেই সময়ে, (দামাদি) উপায়চতুইগ্নের নিয়োগ (যে কোন বিশেষ উপারের ব্যবস্থা), বিকল্প (এই উপায়, বা দেই উপারের যে কোনটির ব্যবস্থা) ও সমুদ্রে (এই উপায় ও দেই উপার অথবা সর্বর্ব উপারের ব্যবস্থা) অবলখন করিয়া তিনি হুগবাদী শত্রুর উপর বিজয়দিন্ধির অভিলাষ করিবেন।

(বিজিগীবুর লোকেরা) শেন (বাজ পানী), কাক, নগু। (মোরগের স্থায় পক্ষিবিশেষ), ভাস (গৃধ্র), শুক, শারিকা, উপুক (পেচক) ও কপোও ধরাইয়া, ইহাদের পুজ্জদেশে অধ্যুৎপাদক দ্রব্য যোগ করিয়া দিয়া শক্ষর প্রর্গে ইহাদিপকে দিবে (অর্থাৎ যেন সেই অগ্নিযোগদারা পরপ্রর্গে অগ্নিকাণ্ড উপস্থিত হয়)।

(বিজিপীযুর) অপকৃষ্ট অর্থাৎ শত্রুগের অধ্যত্ত ক্ষাবার হইতে উথাপিত ধ্বজ ও ধ্যু: মাসুবাগিদার। (অর্থাৎ শত্রুগার মারিত বা শ্লে আরোপিত মাসুবের অন্ধিমধন হইতে উৎপাদিত অগ্নিদার। শত্রুর হুর্গ ভাহার। আদীপিত করিবে, অথবা রক্ষাকার্য্যে ব্যাপৃত পুরুষেরা এই প্রকার অগ্নিয়া দেইরূপ কাজ করিবে। (এখানে "আদীপয়েযুং" এই বহুবচনান্ত পাঠই অধিকতর সক্ষত মনে হয়।)

অন্তপাল ও তুর্গপালের বেষধারী গৃতপুরুষেরা নকুল, বানর, বিড়াল ও কুরুরের পুল্ডদেশে অগু পুংপালক দ্রবা যোগ করিয়া দিয়া, শক্রব সেই সব খরে আগুন লাগাইবার চেষ্টা করিবে, যেখানে শক্রব বাণ ও অভাভ দ্রব্যের সঞ্জ রক্ষিত ইইতেছে।

অথবা, ভাহারা শুদ্ধ মংশ্রের উদরে ও শুক্ষাংদের মধ্যে আর্থণোদক ফ্রব্য যোগ করিয়া দিয়া, পক্ষীদিগের খাস্থোপহাররূপে ভাহা ব্যবহার করিয়া শক্ষিম্হ্-দারা ইহা ( শক্রর জুর্গে ) নেওয়াইবার চেষ্টা করিবে ( অর্থাৎ ভাহাদারা দেখানে আঞ্চন লাগাইবার চেষ্টা করা হইবে )। দরলবৃক্ষ, দেবদারু, পৃতি-নামক ( স্থান্ধ) তৃণ, গুণ, গুণু, শ্রীবেষ্টক ( সরজ-রক্ষের নির্যাদ), সর্জ্বর ( বৃক্ষধূপ) ও লাক্ষার ( জতুর ) গুলিকা এবং সর্মান্ত, উষ্ট্র, ছাগ ও মেবের লগু—এই সব দ্রব্যে অগ্নি বৃত থাকে ( অর্থাৎ এই দ্রব্যগুলি অগ্নিধারক এবং স্মান্ত্র্যোগদনে সহায়ক)।

প্রিয়ালবুক্ষের চূর্ব, অবল্গুজ (সোমরাজিসংজ্ঞক ওষধিবিশেষ), মধী (শেকালিকাবিশেষ)ও মধ্চ্ছিট (সিক্প বা মোম) এবং অশ্ব, গর্দ্ধভ, উট্টুও গরুর লগু—এই সব দ্রব্য ক্ষেপনযোগ্য **অগ্নিযোগ ( অর্থাৎ** এই সব দ্রব্যের সহায়তায় অগ্নিযোগ ক্ষর হয়)।

অধির মত বর্ণধারী দর্বপ্রকার লোহের (ধাতুর) চূর্ণ, কিন্তা কুন্তী (অপর নাম শ্রীপর্নী), সীস ও ত্রপুর (রাঙ্গের) চূর্ণ, কিন্তা পরিভন্তক (নিন্তা) ও পলাশের ফুল, কেশ (গদ্ধগ্পবিশেষ) তৈল, মধ্ছিষ্ট (মোম) ও শ্রীবেষ্টক (সরলব্যক্ষের নির্যাদ)—এইগুলির যোগে বিখাস্ঘাতী (অর্থাৎ যেস্থানে অধির সন্তাবনা নাই সেধানেও অধ্যুৎপাদে সমর্থ) অধিযোগ প্রস্তুত ইইতে পারে। এই সব দ্রবাহার। আবলিপ্ত এবং শণ ও ত্রপুসের বন্ধনারা বেষ্টিভ বাণ (শর)—ইহাও একপ্রকার অধিযোগ।

কিন্ত পরাক্রম বা যুদ্ধবল বিজ্ঞমান থাকা কালে, এই সব অগ্নিযোগ প্রয়োগ করিতে হইবে না। কারণ, অগ্নিকে বিখাস করা যায় না, দৈবপীতৃনও (৮ম অধিকরণে ৪র্থ অধ্যায় দ্রষ্টবা) ভক্রপ অবিখাপ, যে-হেতু তদ্বারা অসংখ্যের প্রাণী, ধাজ, পশু, হিরণ্য ও কুপাদ্রব্যের নাশ ঘটে। যে রাজ্যের নিচর প্রাণিধাল্যাদির সঞ্চর) ক্ষয়প্রাপ্ত হইরাহে ভাহা প্রাপ্ত বা জিত হইলেও ক্ষয়েরই হেতু হইয়া দাঁড়ায় (অর্থাৎ ভজ্জয়দারা বিজিন্মির্র বিশেষ লাভ হয় না)। এই পর্যাপ্ত পর্যাপানন (অর্থাৎ পর্রর্গের চতুর্দ্দিকে অবরোধ )-কর্ম নির্দাণিত হইল।

(সন্তাতি অবমর্দ অথাৎ পরত্রের গ্রহণ ও ততুপধোলী কালাদির নিরূপণ করা হইতেছে।) বিভিন্নীয় যখন ব্ঝিবেন—"আমি দর্কপ্রকার কার্য্য করিবার উপকরণসমূহথারা ও বিটি বা কর্মকরসমূহদারা যুক্ত আছি এবং আমার শক্ত ব্যাধিশীড়িত, তাঁহার (আমাতাাদি) প্রকৃতিবর্গ উপধাশুক নহে; তাঁহার হুর্গাদির সংখ্যার করা হয় নাই এবং তাঁহার (খনধাস্থাদির) নিচর সংগৃহীত নাই, তিনি আসার বা অন্তদ্বপশ্স এবং আসারযুক্ত হওরার সন্তাবনা ধাকিলেও তিনি পরে যিত্রসমূহের সহিত সন্ধি করিবেন", তখনই অবমর্দ্দের বা পরত্র্গগ্রহণের কাল উপস্থিত ছইয়াছে, তিনি এইরূপ মনে করিবেন।

বিজিপীর তথনই (শক্তর্গের) অবমর্দে প্রবৃত্ত হইবেন, যথন তিনি দেখিবেন ধে,—সেধানে আগনা আগনিই আগুন লাগিরাছে, অথবা প্রহ্বণ (ভোজাদিনরা আনন্দোৎসব) খ্ব চলিতেছে, অথবা (নৃতাগীতাদির) অভিনয়দর্শন ও অনীকদর্শন (সৈনিকদিগের মিধ্যা যুদ্ধকোশলাদির প্রদর্শন) চলিতেছে, কিয়া গোরিক কলহ অর্থাৎ স্বরাপানকনিত কোন কলহ উপস্থিত হইয়াছে, অথবা শেকর ) গৈল্ল ক্রমাণত যুদ্ধ করিয়া পরিপ্রাপ্ত হইয়াছে, অথবা তাঁহার আনক লোক বহুদিন যুদ্ধ হওয়ায় আহত ও মৃত হইয়াছে, অথবা তাঁহার লোক জাগরণে ক্রাপ্ত হইয়া নিজিত হইয়া পড়িয়াছে, অথবা (বর্ষাদ্ধারজনিত) গ্রন্দিন উপস্থিত হইয়াছে, অথবা শক্ত কোন বেগবাহিনী নদী পার হইতেছেন, অথবা নীহারজনিত উপপ্রব উপস্থিত হইয়াছে।

স্থাবা, স্ক্রাবার ছাড়িয়া বনে পুকায়িত থাকিয়া বিজিপীয়ু বনমধা হইতে নিজ্ঞান্ত শক্তকে স্থাঘাত করিবেন।

অথবা, মিত্রবেষধারী, কিম্বা মিত্রদেনার মুণ্যের বেষধারী (বিজিনীযুর গৃচপুরুষ) সংক্ষম শক্রম সহিত মৈত্রী স্থাপন করিয়া, অভিতাজ বা বধ্য এক পুরুষকে শৃতরূপে (পত্রদারা) এই সন্দেশ দিয়া (শক্রম নিকট) প্রেরণ করিবে—"ভোমার এই ভিন্ত বা দোব আছে: অমুক অমুক ভোমার দৃশ্বপুরুষ (অর্থাৎ ভোমার শক্রম সহায়তাকারী ভোমার অপকারকারী পুরুষ) আছে। অথবা, ভোমার সংরোধকারী শক্রম এই ভিন্ত বা দোব আছে। (সংরোধকারী শক্রম কুম্বন্দাদি) এই ক্রত্যপক্ষ ভোমার সহায়তার জ্ঞান্ত উপস্থিত আছে।"

সেই দৃত খখন উত্তরন্ধপে প্রতিলেখ লইয়া নিজ্ঞান্ত হইবে, তথন বিজিগীর তাহাকে ধরিয়া ফেলিয়া তাহার অপকার-দোষ প্রখ্যাপিত করিয়া তাহাকে মারিয়া ফেলিবেন এবং তৎপর সেই স্থান হইতে অপস্ত ইইবেন।

অথবা, মিত্রের বেষধারী বা মিত্রসেনার বেষধারী গৃচপুরুষ সংরুজ রাজাকে (বিজ্ঞিসীযুর শক্তকে) বলিবে—"আমাকে রক্ষা করার জন্ত তুমি প্রস্তত থাকিও। অথবা, তুমি আমার সহিত মিলিত হইয়া সংরোজাকে (অর্থাৎ বিঞ্জিসীরকে) মারিয়াকে।"

বদি শক্রবাজা এই কথাতে স্বীকৃত হয়েন, তাহা হইলে 'ঠাহাকে ( বিজিপীরু বাজা) উত্তরদিক হইতে সংপীড়িত করিয়া মারিয়া কেলিবেন। অথবা, (তিনি) উাহাকে জীবিত অবস্থার ধরিয়া লইয়া তাঁহার সহিত রাজ্য-বিনিমর করাইবেন। অথবা, তিনি তাঁহার নগর নই করিবেন। অথবা, তিনি তাঁহার সারষ্ক্ত দেনাকে হর্গ হইতে বাহিরে আনাইরা মারির। ফেলিবেন। এই প্রকারে দত্তোপনত রাজাও আটবিকের কার্যাও ব্যাখ্যাত বলিরা বুঝা গেল ( অর্ধাৎ ভাহাদিগের ঘারাও শত্রুর অবমর্জকর্ম সাধিত করা হাইবে )।

অথবা, তিনি দণ্ডোপনত ও আটবিক বাজার অন্তত্তর শংরুদ্ধ শক্রবাজার নিকট এইরূপ সংবাদ পাঠাইবেন—"আপনার (হুর্গের) সংরোধকারী (বিজিপীরু) ব্যাধিক্রান্ত হইরাছেন; তিনি পার্ফিগ্রাহ্বারা আক্রান্ত হইরাছেন; অন্ত একটা ছিন্দ্র বা দোষও সমুখিত হইরাছে—তিনি অন্ত এক ভূমিতে পলাইরা বাইতে ইচ্ছুক হইরাছেন।" সেই শক্রবাজা এই কথা স্বীকার করিয়া লইলে, সংরোধকারী বিজিপীয় নিজের স্কলাবেরে আগুন লাগাইরা অন্তর চলিয়া ঘাইবেন। তদনস্তর পূর্কের মত সমস্ত কার্য্য আচরিত হইবে (অর্থাৎ শক্রবাজা আক্রমণে নির্গত ইইলে বিজিপীয় দণ্ডোপনত ও আটবিকের সাহায্যে তাঁহাকে সংপীড়িত করিবেন)।

অববা, পণাবিক্তোদিগের আগমন স্টিত করিয়া ( বিজিগীয়ু ) তাহাদিগের বিধমিথিত পণাদ্বারা তাঁহাকে ( শক্রবাজাকে ) প্রবঞ্জিত করিয়া নই করিবেন।

অথবা, আসার বা মিত্রসেনার বেষধারী গুচপুরুষ সংক্রদ্ধ শত্ররান্ধার নিকট এই মর্মে এক দৃত পাঠাইবে—"তোমার এই বাফ শত্রুকে আমি অনেকটা অভিহত করিয়া রাখিয়াছি, এখন তুমি তাঁহাকে (সম্পূর্ণভাবে) অভিহত করার জন্তু সহর্গ হইতে নিজ্ঞান্ধ হও"। শত্রু ইহা করিতে সীকার করিলে পর, পূর্বের মত আচরণ তাঁহার প্রতি করা হইবে ( অর্থাৎ উভয় পার্য হইতে তাঁহাকে সংপীড়িত করা হইবে )।

অথবা, (বিজিগীবুর) যোগপুরুষেরা (অর্থাৎ কণটকার্য্যকারী গুঢ়পুরুষেরা)
নিজদিগকে (শতরাজার) মিত্র বা বান্ধব বলিয়া প্রদর্শন করিয়া, মুদ্রাযুক্ত
(শিলকরা) কণটশাসন বা কণটলেথ্য হল্তে করিয়া ভদীয় ছুর্গে প্রবেশলাভপূর্বক কৌশলে ইছা (বিজিগীবুর) অধিকারে আনাইবে।

অথবা, আসারব্যঞ্জন গৃচপুক্ষ সংক্রম শক্ররাজার নিকট এই বার্ত্তা পাঠাইবে

"অমুক দেশে ও অমুক সময়ে আমি তোমার শক্রর (অর্থাৎ বিজিনীরুর )

স্কর্মবার আ্রুমণ করিব: ভূমিও (সেই দেশে ও সেই সময়ে আমার দলে দলে )

বুদ্ধ আরম্ভ করিবে"। তিনি ইহা করিতে স্বীকার করিলে পর, লে যথোক্ত

ক্রীবারটি অভিযাতবশতঃ সংকুল বলিয়া দেখাইবে এবং তাহা দেখিয়া শক্ররাজা।
রাজিতে স্মুর্গ হইতে নিজ্ঞান্ত হইলে গ্রাহাকে বধ করাইবে।

অধবা, বিজিপীর নিজ মিত্র বা আটবিক রাজাকে ডাকাইরা আনিবেন এবং (শক্রর প্রতি অভিযোগার্থ) তাঁহাকে উৎসাহিত করিবেন—"সংক্ষম্ব রাজার প্রতি বিজ্ঞম প্রদর্শন করিয়া তাঁহার ভূমি বা রাজ্য স্থাধিকারে আত্মন"। শক্রর প্রতি ইহাদের কেহ যদি বিজ্ঞম প্রদর্শন করিছে উন্পত হরেন, তাহা হইলে (বিজিপীর) তাঁহার আমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গহারা, কিয়া তাঁহার দৃষ্য প্রধানদিগক্ষে নিজের অস্কৃশ করিয়া লইয়া ভাহাদের হারা, অথবা, নিজেই বিধমিপ্রিভ প্রস্থাদির যোগহারা তাঁহার (অর্থাৎ সেই মিত্র বা আটবিকের) বধ ঘটাইবেন। এই শক্র আমার মিত্রঘাতক হইয়া দাঁড়াইয়াছে—ইহা প্রধ্যাশিত করিয়া তিনি নিজ কার্য্য সিদ্ধ করিবেন (অর্থাৎ সেই শক্রর প্রতি অভিযোগসাধন করিবেন)।

অথবা, মিত্রবেষধারী গৃচপুরুষ শব্দর নিকট এইরূপ বলিবেন বে, বিজিপ্টুরু ভাঁহার উপর আক্রমণ চালাইতে ইচ্ছুক হইয়াছেন। এইভাবে শব্দর আগুড়ার বা বিশ্বাসপ্রাপ্ত হইরা (সেই গৃঢ়পুরুষ) ভাঁহার প্রবীরপুরুষদিগকে মারাইবার চেষ্টা করিবেন।

অথবা, তিনি শত্রুর সহিত দল্ধি করিয়া তাঁহাকে (বিজিগীবুর) জনপদনিবেশে বাকিতে দিবেন, অথবা তাঁহার ঘারা অভ্য একটি জনগদ নিবিট ইইলে, তাঁহার অবিজ্ঞাত অবস্থায়, সেই জনপদ নই করিয়া দিবেন।

অথবা, তিনি নিজের দৃষ্য ও আটবিকদিগের হার। নিজের কোনও প্রকার অপকার করাইরা, দেই বাপদেশে (শক্রর) দেনার একাংশ অভিদ্রে লইরা গিরা, (দেই দেনাবিরহে সহজে আক্রমণবোগ্য) শক্রর হুর্গ হঠাৎ আক্রমণ করিয়া ছিনিয়া নিবেন। (শক্রমূর্গের আক্রমণকারী সহায়কগণের নিরূপণ করা হুইতেছে।) যাহারা শক্রর দৃষ্য, তাঁহার অমিত্র, তদীর আটবিক ও তদীর ঘেষ্য এবং যাহারা একবার শক্র হুইতে অপস্ত হুইরা পুনরার তৎসমীপে প্রত্যাগত, এবং যাহারা বিজিপীর্শারা অর্থ ও মানদানপূর্বক সংকৃত ও বাহারা আক্রমণের কাল ও সঙ্কেত পরিজ্ঞাত, তাহারা পরহর্গের আক্রমণকর্মে সহায়তা করিবে।

পরত্রের ও শক্রর ক্ষাবারের আক্রমণ সিদ্ধ করিয়া, (বিজিপীরুর লোকেরা)
মুদ্ধান্তনে পতিত, যুদ্ধে পরাঙ্গুৰ, বিপদ্প্রত, মুদ্ধকেপ ও শক্রডায়ে
বিক্রতরূপধারী এবং যুদ্ধ করিতে অস্থীকৃত পুরুষদিগকে অতম প্রদর্শন করিবে।
পরত্র্গ স্বহত্তে আনিয়া (বিজিগীর) প্রথমতঃ সেধান হইতে শক্রপক্ষদিগকে

উৎসারিত করিবেন এবং (যাহার) অতান্ত বিরোধী হইবে তাহাদিগের) উপাংগুবধ সাধন করিয়া গুর্গের অন্তর্ভাগে ও বহির্ভাগে প্রবেশ করিবেন।

এই প্রকারে বিভিনীর অমিত্রের ভূমি দখল করিয়া, ষধ্যম রাজাকে প্রাথ হইতে অর্থাৎ তাঁহার ভূমিও দখল করিতে লোভ করিবেন। তাঁহাকে শাইলে পর (তিনি) উদাসীন রাজাকেও পাইতে ইচ্ছা করিবেন। পৃথিবীজন্মের ইহাই প্রথম নার্গ।

মধ্যম ও উদাসীন রাজার অভাবে, নিজের গুণাতিরেকদারা শক্রর অমাত্যাদি প্রকৃতিবর্গকে তিনি নিজের অমুকৃল করিয়া লইবেন। তৎপর তাঁহার (কোশাদি) অভ প্রকৃতিগুলিকে স্ববশে আনিবার চেষ্টা করিবেন। (পৃথিবীজয়ের) ইহাই দ্বিতীয় মার্গ।

(দশরাজক) মণ্ডলের অভাবে ( ৭ম অধিকরণে ১৮ অধ্যার দ্রষ্টব্য ) (নিজের) শত্রুবারা ( শত্রুর ) মিত্রুবারা শত্রুকে উভর পার্থ ছইডে সংশীভিত করিয়া ( তাঁহাকে ) তিনি নিজ আত্নুকুল্যে আনিতে চেটা করিবেন। ( পৃথিবীজয়ের ) ইহাই ভূতীয় মার্গ।

অথবা, তিনি নিজের পক্ষে শকা বা অজের একটি সামস্তকে নিজের অন্তর্গ করিয়া লইবেন। এইভাবে তাঁহার বলে নিজে দ্বিগুণবলবিশিষ্ট হইয়া তিনি দ্বিতীয় এক সামস্তকে হস্তগত করিবেন। আবার তাঁহার বলে নিজে ত্রিগুণবল-বিশিষ্ট হইয়া তিনি এক তৃতীয় সামস্তকে নিজ বশে আনিতে চেষ্টা করিবেন। পৃথিবীজ্যের ইহাই চতুর্থ মার্গ।

(এইভাবে বিজিপীরু) পৃথিবী জয় করিয়া ইহাতে বর্ণ ও আশ্রমগুলির সঞ্চতরূপে বিভাগ করিয়া অধর্মাত্মসারে ইহা ভোগ করিবেন।

উপজাপ ( শক্রপক্ষের লোকের ভেদকরণ ), অপসর্প (শক্রর প্রতি গৃচ্পুক্ষরের কার্যা), বামন ( শক্রর দেশ হইতে অপসারণ ), প্যাপাসন (শক্রপ্রের চতুদ্ধিকে অবরোধ ) ও অবমন্ধি ( শক্রর প্র্যানাশ ) —এই পাঁচটি শক্রপ্রস্থাতের হেতু বলিয়া গৃহীত হয়। ১।

কৌটিলীর অর্থলাথে হুর্গলভোগার-নামক এরোদশ অধিকরণে পর্যুগাসনকর্ম ও অবমন্দ-নামক চতুর্ম অধ্যার (আদি হুইতে ১৪৪ অধ্যার) সমাপ্ত।

#### পঞ্চম অধ্যায়

#### ১৭৬ প্রকরণ **– লক্ষপ্রশমন বা লক্ষ বা বিক্সিড ভূমিতে** শা**ন্তিত্বাপন**

বিশ্বিদীবুর সমুখান বা উল্পোগ চুই প্রকারের হইতে পারে। সেই উল্পোগদার। আটবি-প্রভৃতিও (অর্থাৎ আটবি, ধনি ইত্যাদিও) লব্ধ হইতে পারে, কোন একটি গ্রামাদিও (অর্থাৎ গ্রাম, নগর ইত্যাদিও) লব্ধ হইতে পারে। (বিজিগীরুর) এই প্রকার লাভও ত্রিবিধ হইতে পারে, যথা, (১) নব (অর্থাৎ যাহা শক্র হইতে নৃত্যা অ্জিড), (২) ভৃতপূর্ব্ব (অর্থাৎ যাহা পূর্বের স্বকীর ছিল, কিন্তু পরে শক্রহন্তগত হইরাছিল, এবং যাহা এখন প্রত্যাহত)ও (৩) পিল্রা (অর্থাৎ পিতৃহন্ত হইতে প্রাপ্ত ছিল, কিন্তু পরে শক্রহন্তগত হইরাছিল এবং যাহা এখন প্রত্যাহত)।

নব লক্ষ বা লাভ প্রাপ্ত হইয়া (বিজিগীয় ) শতকে দোষ নিজের গুণপ্রদর্শন-দারা আচ্ছাদিত করিবেন এবং নিজের গুণ দ্বিগুণ বন্ধিত করিয়া শক্তর গুণ আজ্বাদিত করিবেন। (বিজিপীর) নিজধর্ম (প্রজাপাদনরূপ ধর্ম), স্বকর্ম ( যজ্ঞাদির অসুষ্ঠান ), অসুগ্রহ ( শক্ত হইতে পদ্ধ রাজ্যের প্রজাদিগের প্রতি ঋণদানাদিল্বারা উপকার), পরিহার (কর্ষোক্ষ), (ভূষ্যাদির) দান, ও সংক্রেক্র্যোপ্রারা ( নবজিতদেশের ) প্রকৃতিবর্গের ( প্রজান্ধনের ) প্রিয় ও হিতের অফুবর্ত্তন করিবেন। এবং তিনি নিজের যথাকথিত ( অর্থাৎ প্রতিশ্রুত) বিষয়ান্ত্ৰসাৱে ( শুক্ৰর ) কুভাপক্ষকে ( কুজবুজাদিবৰ্গকে ) ( দানাদিঘারা ) প্রসন্ত রাধিবেন ৷ এবং ভাঁছার নিজ উপকারের জভা যাহারা বহু পরিশ্রম করিয়াছে তাহাদিগকে ( তিনি ) আরও বেশী প্রদন্ন রাখিবেন। কারণ, বিসংবাদক (অর্থাৎ প্রস্তিক্রত বিষয়ের অপুরণ্কারী) রাজা নিচ্হের লোক ও শক্রর লোকেয় অবিশ্বাসের পাত্র হয়েন, এবং যিনি নিজ প্রকৃতি বা প্রজাবর্গের বিকল আচরণ করেন, তিনিও অবিশ্বাস্থ হয়েন। স্থতরাং আপন প্রজাবর্গের সমান শীল. বের, ভাষাও আহাচ্যর (বিজিপীয়ু) অবশখন করিবেন। এবং তিনি (নৃতন লবঃ) দেশের দেবতা, সমান্ত ( প্রীতিভোজপ্রধাদি ), উৎসব ও বিহারদয়ত্বে ভজিভাব রক্ষা করিবেন।

এবং (বিক্সিপুর ) সত্তি-নামক গৃচপুরুবেরা দেশ, গ্রাম, ভাতি, সংঘণ্ড মুখ্যদিগের নিকট শত্তবাজার অগচার বা অহিত আচরণ বারবার প্রদর্শন

করিবে। এবং (ভাহারা) সেই সেই দেশগ্রামাদিতে নব রাশ্বার ( বিশ্বিসীধুর) মহাভাগতা (উদারতা), ভক্তি ও স্বামিকত সংকার বিশেবভাবে বর্তমান আচে বলিয়া বারবার প্রকাশ করিবে। (বিজিপীর) সমূচিত ভোগ (বাজভোগের मान ), পরিহার ( কর্মোক্ষণ ), ও রক্ষণাবেক্ষণ ( কন্টকশোধন অধিকরণে উক্ত উপায় }-ছারা সেই সেই দেশগ্রামাদিকে নিজ উপগোগে আনিবেন। ( নবদর দেশে বিভিনীরু) সব দেবতাও আশ্রমের পূজন করাইবেন এবং খে-যে পুরুষ বিভাশুর (বড় পণ্ডিড), বাক্যশুর (বড় বাগ্মী) ও ধর্মশুর (বড় ধার্শ্মিক) তাঁহাদিগের জন্ম ভূমিদান, দ্রবাদান ও পরিহারের ব্যবস্থা করাইবেন। এবং যাহারা দীন, অনাথ ও ব্যাধিগ্রন্ত তাহাদিগের প্রতি অকুগ্রহ (নানাঞ্ডকার উপকার ) श्रमर्भन कतिरान ७ मन कार्याक्रक (लार्कित रक्षमर्गाहन कर्वाहरान । প্রত্যেক চাড়র্মাত্রে (চারিমানের বর্গে) অর্জনান অর্থাৎ পঞ্চদশ দিবদ এমন-ভাবে নির্দিষ্ট রাধিবেন, যাহাতে প্রাণিবধ প্রতিবিদ্ধ থাকিবে। এবং বংসরে হতগুলি পৌৰ্ণমানী থাকিৰে তন্মধ্যে চাহি হাত্ৰিতে তিনি প্ৰাণিবধ নিবিদ্ধ করাইবেন। রাজনকত্ত্রে ( অর্থাৎ রাজার রাজ্যাভিষেক ডিখিতে ) ও দেশনকত্ত্রে ( অর্থাৎ দেশলাভতিথিতে ) তিনি একরাত্রিব্যাপী প্রাণিবধের নিষেধ করাইবেন। তিনি যোনিবধ ( অর্থাৎ মাড়জাডীয় কুরুটী-প্রাভৃতির বধ ), বালবধ ( বাচ্চা প্রাণীর বধ ) ( বিজিপীরু ) প্রতিবিদ্ধ করাইবেন এবং পুংত্বের উপঘাত ( অর্থাৎ নরজাতীর প্রথাভূতির বন্ধীকরণ) নিবেধ করাইবেন। আর ফেরপ চরিত্র কোশ ও দণ্ডের নাশ করিতে পারে ও যেরূপ চরিত্র অধর্মযুক্ত বলিয়া প্রাভিডাত ছইতে পারে, তিনি তাহা দূর করিয়া দিয়া ( রাজ্যে ) ধর্মধুক্ত বাবহার প্রবর্ত্তিত করিবেন। আর চোরপ্রাকৃতিবিশিষ্ট (অর্থাৎ সুটপাটে রত ) **ক্লেক্ট্রাভিভ**লির ও তুর্গ, রাষ্ট্র ও সেনার মুখাপুরুষদিগের দূর দূর দেশে স্থানবিপর্যায় তিনি ব্যবস্থা করাইবেন ( অর্থাৎ এগুলিকে কখনও একস্থানে বেশীদিন থাকিতে দিবেন না )। শক্ষারা উপকৃত মহী, পুরোহিত প্রভৃতিদিগের জন্ত শক্ষর প্রভান্তপ্রদেশসমূহে ভিন্ন ভিন্ন ভানে নিবাদের ব্যবস্থা তিনি করাইবেন। (বিজিপীবুর) অপকার-করণে সমর্থ ও ভাঁছার (বিজিপীবুর) বিনাশের জন্ত সেই স্থানে বাসকারী ব্যক্তিদিগ্রে তিনি উপাংগুদও বা গোপনহত্যাদ্বারা প্রশমিত করিবেন। খনেশীয় ব্যক্তিদিগকে অথব। শত্রুভার। কারাগারে অবরুদ্ধ ব্যক্তিদিগকে ভিনি (বিশিক্ষারু) অবণদ হইতে বিচ্যুত শতাশকীয়দিগের অধিকারছানে নিযুক্ত कविर्वन ।

বদি শক্তর স্ববংশস্ত্ত কোন বাজি শক্ত হইতে অপহ্নত ভূমি কিরিয়া লইবার ক্ষমতাবিশিষ্ট বলিয়া প্রতিভাত হয়েন, অথবা প্রভান্ত অট্রীপ্রদেশের অধিকারী প্রদ্বের সহায়তায় দ্বিত হইয়া বাধা জন্মাইতে পারেন বলিয়া আশকাহর, তাহা ছইলে তাঁহাকে তিনি গুণহীন ভূমি কিছু দিতে পারেন। অথবা, সেই শক্তবংশ্য ব্যক্তিকে গুণ্মুক্ ভূমির চতুর্থাংশও তিনি (বিজিক্টরু) দিতে পারেন—কিন্তু, তাঁহার নিকট হইতে কোশদান ও সেনাদানের সর্ভ নিশ্চিত করিয়া (তিনি তাহা দিবেন)। এই কারণে সেই উপকারকারী (অথাৎ কোশদগুদানে প্রতিক্রতিদায়ক শক্তকুলীন) ব্যক্তি নিজের পোর ও জানপদদিগকে কোপিত করিবেন। (বিজিক্টারু) সেই কুপিত ব্যক্তিগণহারা তাঁহাকে হত্যা করাইবেন। অথবা, (অমাত্যাদি) প্রকৃতিহারা নিশ্দিত হইলে তিনি তাঁহাকে সেবান হইতে) বিভাজিত করাইবেন। অথবা, তিনি তাঁহাকে সেই দেশে নিবেশিত করিবেন যেখানে তাঁহার উপঘাতের হেতু বর্ত্তমান রহিয়াছে। (এই পর্যন্ত করাইবেন যেখানে তাঁহার উপঘাতের হেতু বর্ত্তমান রহিয়াছে। (এই পর্যন্ত নবশন্তবিধ্যের বিধি বলা হইল।)

ভূতপূর্ব লন্তদম্বন্ধে এইরূপ বলা হইতেছে—যে দোবের জন্ম দেশ শত্রুহঞ্জে চলিরা নিয়াছে, তিনি সেই প্রকৃতিদোব দাদিত করিয়া বা চালিরা রাখিবেন। এবং যে নিজ্ঞাণে দেশ শত্রুহস্ত হইতে পুনরার ফিরাইয়া লওয়া ইইয়াছে সে গুণগুলিকে তিনি দৃচতর করিবেন।

পিত্রালম্বদ্ধন্ধে এইরূপ বলা হইতেছে — যদি পিতার দোবে দেশ পরহন্তগত হইয়া থাকে, তাহা হইলে তিনি দেই সব পিতৃদোব দাদিত করিয়া বা চাপিত্র রাখিবেন। এবং তিনি পিতার কোন গুণ থাকিলে তাহা প্রকাশিত করিবেন।

বিজিপীর ( পর্বদেশে ) যেরূপ ধর্মযুক্ত চরিত্র ( কথনই পূর্বে ) আচরিত হয় নাই, অথবা, যেরূপ চরিত্র অভ্যনার আচরিত হইরাচে, তাহা প্রবর্ত্তিত করিবেন। কিন্তু, তিনি অধর্মযুক্ত চরিত্র ( কথনই ) প্রবর্ত্তিত হইতে দিবেন না এবং ইহা অস্ত্রের নারা আচরিত হইয়া বাকিলেও তাহা তিনি নিবর্ত্তিত রাধিবেন । >।

কোটিলীয় অর্থণান্তে তুর্গলন্তোগায়-নামক অয়োদশ অধিকরণে লব্ধপ্রশমন-নামক পঞ্চয় অধ্যার ( আদি হইতে ১৪६ অধ্যার ) সমাও। তুর্গলন্তোপায়-নামক ত্রম্বোদশ অধিকরণ লমাপ্ত। গুলি বন্ধি আক্ষেটি, কাচ (লবণজেদ) ও গোবহের রসে পিই হর, তাহ। হইলে এই দ্রব্যগুলি হইতে উৎপন্ন ধুম প্রাণীর অন্ধতা উৎপাদন করে।

সর্পের নির্দ্ধোক (বা কঞ্ক), গোবর ও ঘোড়ার বিষ্ঠা, ও অভাহিকের (মংস্থাবিশেবের) মন্তক—এই দ্রবাগুলি পৃথগ্ ভাবে ধৃষ উৎপাদন করিলে সেই ধুমও অন্ধীকর ধৃম হয়।

পারাবত, প্লবক (পক্ষিভেদ) ও জ্বনাদ (গৃগ্র) এবং হস্তী, পুরুষ মাছ্র ও বর্য়াহের মূত্র ও বিষ্ঠা; তথা কানীন (ধাতুভেদ), হিন্দু, যবতুর ও কণততুল; তথা কার্পান, কূটজ ও কোশাভকীর (অপামার্গ) বীজ; তথা গোমৃত্রিকা (তৃণভেদ) ও ভাগ্ডীর (যোজনবলীর) মূল, তথা নিম্ব, লিগ্রা (শজিনা), কণিচ্ছা (জম্বীরভেদ), কান্দীব (শচ্ছিনা-বিশেষ), ও পীলুরক্ষের ভক্ষ (ছিল্কা); তথা সর্প ও শক্ষীর চর্ম্ম; তথা হস্তীর নথ ও শৃক্ষের (দাঁতের) চূর্ণ—এই দ্রব্যগুলির প্রত্যেক বর্গই বদি (অগ্রিসংযোগে) ধূম উৎপাদন করে এবং সেই ধ্ম মদন (ধূত্রা) ও কোদ্রবের পলালের, কিছা হস্তিকর্প ও পলাশের পলালের সহায়তায় প্রনীড হয়, তাহা হইলে সেই ধূম যতদ্র পর্যান্ত চলিবে, ততদ্র পর্যান্ত প্রাণিনাশ ঘটাইবে।

কালী (অঘঠা), কুঠ (কুঠ), নড (নল-ত্ন) ও শতাবরীর মূল; অথবা, দর্প, মর্বপুছ, ককণক (ক্রুব্রপকী বা করার) ও পঞ্চ্টের চূর্ণ;—এই ছই দ্রবাধারা, পূর্ববর্তী কল্পে উক্ত পলালঘারা অর্থাৎ মদনও কোদ্রবের পলালঘারা এবং ছন্তিকর্প ও পলাশের পলালঘারা, অথবা কতক আরী ও কতক শুক্তপলালঘারা (অগ্রিসংযোগে। উৎপন্ন ধূম, সংগ্রামে অবতরণ ও (রাত্রির) আক্রমণের ভিডের দমরে বদি তেজনোদক্ষারা নিজনেত্রের উপঘাত নিবারণের ব্যবহা করিয়া লোকেরা প্রারোগ করে, তাহা হইলে দেই ধূম দব প্রাণীর নেত্র নই করিয়া লিতে পারে।

যদি শারিকা, কপোত, বক ও বলাকার বিষ্ঠা, অর্ক, অক্ষী (বৃক্ষতেদ), পীলুক ও স্কুহির (সমস্বহধার) হথবার। পিষ্ট হয়, তাহা হইলে ইহাবার। কৃত অঞ্জন লোকের অন্ধতা জন্মায় ও জল বিষমুক্ত করে।

বদি বব ও শালিধান্তের মূল, মদনকল, জাতীপুলোর পাতা ও নরের মূত্র একত্রিত করিয়া প্লক (শিপ্লল) ও বিদারীর মূলের সহিত মিশ্রিত করা হয় এবং বদি এগুলি মূক (মংস্থানিশ্র), উত্তরর (হেমত্রন্ধ), মদনবৃক্ষ ও কোরেবের কাথের সহিত যুক্ত করা হয়, অথবা, হস্তিকর্ণ ও পলাশের কাথের সহিত যুক্ত করা হয়, তাহা হই**শে ইহা মদলবোগ**-নামক এক যোগে পরিণত হর অর্থাৎ এই যোগ চিত্তবিশ্রম উৎপাদন করে।

আবার শৃকী (শিকীমাছ), গোত্দরক (१), কউকার (শাল্মনিবৃক্ষ), ও মন্ত্রপদী (ওবধিবিশেব) একত্রিত হইরা যে বোগে পরিণত হয় দেই যোগ; এবং গুঞ্জা, লাকনী (নারিকেল, মতাস্করে, পৃথত্পণা), বিষমূলিকা (কালকুটাদি বিষ) ও ইঙ্গুদীর বোগ; এবং করবীর, অক্ষি, শীল্ক, অর্ক ও মুগমারনীর (ওবধিবিশেষের) যোগ; এই যোগগুলি মদন ও কোন্তবের কার্থ সহ যুক্ত হইলে, অথবা, হন্তিকর্ণ ও পলালের কার্থ সহ যুক্ত হইলেও 'মদন-যোগ' বা চিন্তবিভ্রমকর যোগ প্রস্তুত হইতে পারে। অথবা, এই সব মদনযোগ যবস (খাস) ইন্ধন ও জলের দোষ উৎপাদন করিতে পারে।

কৃষ্ণাস, গৃহগোশিকা ও অক্ষাহিকের করতা বা স্বায়ুসংঘাত পক্ষ করিলে যে ধুম উদ্যাত হয়, তাহা নেত্রবধ ও উন্মাদ উৎপাদন করে।

কৃষ্ণাদ ও গৃহগোলিকার (ধ্য-যোগ) কুষ্ঠ উৎপাদন করে। এই যোগই যদি চিন্তভেকের আজ (আঁত) ও মধ্র দহিত মিশ্রিত হয়, তাহা হইলে ইহা প্রমেহ-রোগ উৎপাদন করে। আর, এই যোগ যদি মান্নবের রজ্জের সহিত মিশিত করা হয়, তাহা হইলে ইহা ক্ষয়রোগ উৎপাদন করে।

যদি দ্বীবিষ (অর্থাৎ নেক্রমল বা পিচ্টি) এবং মদন ও কোঞ্বের চ্ব উপজিহিবকার (পিশীলিকাবিশেষের) সহিত যুক্ত হয়, অব্বর্থা মাত্রাইক (পক্ষিভেদ), অঞ্জলিকার (ওবধিবিশেষ), প্রচলাক (ম্যুরপুছে), ভেক, অক্ষি ও শীলুকের সহিত যুক্ত হয়, তাহা হইলে এই যোগ বিষ্চিকা-রোগ উৎপাদন করে।

পঞ্চুর্তক, কোভিত্তক (কুমিডেন), রাজবৃক্ষ (আরহধ) ও পূল্পমধ্ (মধ্ক)—
এই চারিদ্রবার বোগ অর উৎপাদন করে। যদি ভাসপক্ষী, নকুল, ভিহ্বা
(মঞ্জিন্ধী ও প্রছিকা (শিপ্পলীমূল)—এই ক্রেকটি দ্রব্যের বোগ, গর্দ্ধভীর হর্মের
সহিত পিট হয়, ডাহা হইলে ইহা একমান বা অর্থমানের মধ্যেই (মাহ্র্যের) মৃক্ষ
ও বধিরত্ব উৎপাদন করিতে পারে। ইহার এককলা পরিমাণ পুরুবের প্রতি
ব্যবহৃত হইলেই উক্ত দোর আনয়ন করিবে ও অবলিও পরিমাণ পুর্ববং আত্ব্য
(অর্থাৎ ঘোড়া ও গাধার জন্ত বিশুণ ও হন্তী ও উট্রের জন্ত চারিশুণ মাত্রা
প্রধান হইবে)।

ু উপরি উলিখিত বোগগুলিতে নির্দিষ্ট ওংখিসমূহকে ভালিয়া (কুটুন

করিয়া) দেওশির কাথ প্রান্তত করিতে হইবে এবং নির্দিষ্ট প্রাণিগণের চূর্ণ করিয়া প্রান্তত করিতে হইবে। অথবা, দব দ্রবাগুলির (অর্থাৎ ওবরি ও প্রাণিবর্গের) কাথ তৈয়ার করিয়া ব্যবহার করিলে, ইহার কার্যা বা শক্তি অধিকতর হইবে। এই পর্যান্ত নানাপ্রকারের বোগ নির্দ্ধাণত হইল।

শাল্পনী, বিদারী ও ধাঞ্জের সহিত সিদ্ধ, মূপ (পিপ্লণীমূল) ও বংসনাভের (বিবভেদ। সহিত সংযুক্ত, এবং চুচুন্দরীর শোণিত প্রশেশভার। লিগু বাণ (নিক্ষিপ্ত হাইলে), ইহা যাহাকে বিদ্ধ করিবে, সেই বিশ্ব ব্যক্তি (তংফলে) অন্ত দশজন পুরুষকে দংশন করিবে এবং সেই দই দশজন পুরুষ (প্রত্যেকে) অন্ত দশজনকে দংশন করিবে।

যদি ভলাতক, যাতুধান (ওযধিবিশেষ), অপামার্গ ও বাণরক্ষের (অর্জ্নরুক্ষের) পুলের সহিত নিদ্ধ এলক (এলাটী), অর্কি, গুগ্গুলু ও হালাহল বিষের ক্ষায় (কাথ বা কশ্বনিশেষ), ছাগ ও মায়বের রক্ষের সহিত যুক্ত করা হর, তাহা হইলে ইহাও একপ্রকার দংশযোগ উৎপাদন করে (অর্থাৎ এই যোগ কোনও মায়্রের উপর প্রযুক্ত হইলে ইছার শক্তিতে দেই মায়্র্য অন্ত মায়্র্যকে দংশন করিতে পারে)।

ষদি উক্ত কথারের অর্ধ্বরণিক-প্রমাণ ভাগ সক্তু (ছাতু) ও পিণ্যাকের (জিলের ক্ষের) সঙ্গে মিপ্রিত হয়, তাহা ছইলে ইহা একশতধহংশরিমিত জলাশারকেও দ্বিত করিতে পারে। করিণ, (ইহাও একপ্রকার দংশ্যোগ এবং) ইহাবারা পরশারাক্রমে দই বা স্পৃষ্ট মাছও বিবদোব প্রাপ্ত হয় এবং যে এই জল পান বা স্পৃতি করে সেও বিবদোধ প্রাপ্ত হয়।

যদি লাল ও সাদা সহ্পের সহিত কোনও গোধাকে তিন শক্ষ আর্থাৎ পর্যভাৱিশ দিবস পর্যন্ত কোনও উট্টিকা-নামক মুৎপাত্তে রাখিয়। ভূমিতে পুতিয়। রাখা হয় এবং পারে ইহা কোনও বয়্যপুরুষবার। উয়ত হয়, তাহা হইলে দেই উদারকারী পুরুষ সেই গোধার প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেই তাহা তৎক্ষণাৎ তাহার মৃত্যু ঘটাইবে। যদি কোনও কৃষ্ণস্পকিও সেই গোধার স্তার সেইভাবে রাখা হয় ও পরে উঠান হয়, তাহা হইলে তৎপ্রতি দৃষ্টিকারীর প্রাণনাশও. নিশ্চিত।

অধবা, বৰি বিহাৎবারা প্রদক্ষ (সজাল) অগ্নি, এবং নির্জ্ঞাল আজারও বিহাৎ-প্রদক্ষ কাঠবারা গৃহীত হইরা (অগ্নিবোগে) অভিবর্ত্তিত হর, এবং বলি ইয়া কৃতিকা বা ভরনীনক্ষতে ক্ষত্রবেভাকে কর্মবারা অভিহত হইরা প্রস্তৃত হয়, তাহা হইলে সেই অৱি (শক্রর হুর্গাদিতে লাগাইতে পারিলে) প্রতীকারবিহীন হুইয়া দাঁডায়।

স্প্রতি শ্লোকচতুইরদার। অক্তপ্রকার যোগের কথা নির্মাণিত ইইডেছে।) কর্মার কের্মকার) বাবেণুদ্ধরা অক্ত বেণুর ঘর্ষণ হইতে অধি সংগ্রহ কবিয়া, ইহাতে পূথপ ভাবে মধুদ্ধরা তিনি হবন করিবেন। শোগুক বা শ্লাবিক্রীর নিকট ইইতে অধি লইমা ইহাতে প্রবাধার। তিনি হবন করিবেন এবং অর্ম্বার বা লোইকারের অধিতে ভার্মী (ওযধিবিশেষ) ও মুওহার। হবন করিবেন॥ ২॥

একপদ্পী বা পতিপ্রতা রমণীর নিকট হইতে আহত অধিতে মালাধারা তিনি হবন করিবেন। এবং পুংশ্চলী বা বাভিচারিণী রমণীর অধিতে দর্বপদারা তিনি হবন করিবেন। স্তিকাগৃহের অধিতে দধিধার। এবং আহিতায়ির বা অধিহোত্যের অধিতে তণ্ডুলদ্বারা তিনি হবন করিবেন। ৩ গ্র

চণ্ডাল হইতে আহত অগ্নিতে তিনি মাংস্থারা হবন করিবেন এবং চিতার অগ্নিতে মাত্মধারা হবন করিবেন। উক্ত অগ্নিগুলিকে একপ্রিত করিয়া তিনি ছাগ্রসা, মাত্ম্য ও প্রব (শুষ্ট কার্চ বা বট)-খারা হবন করিবেন॥৪॥

তথা এই অগ্নিগুলিতে তিনি রাজবৃক্ষের কার্চহার। অগ্নিমন্তবোগে হবন করিবেন। এইরূপ অগ্নি শক্রদিগের প্রতীকারের অতীত এবং ইহা দেখিলেও শক্রদের দৃষ্টিমোহ উপস্থিত হয়॥ ১।

অদিতে নমন্তে (অদিতিকে নমস্বার)। অসমতে নমন্তে (অসমতিকে নমস্বার)। দরস্থতি নমন্তে (দরিতাকে নমস্বার)। দরস্থতি নমন্তে (দরিতাকে নমস্বার)। অগ্নরে স্বাহা (অগ্নির উদ্দেশ্যে স্বাহা)। দেশের উদ্দেশ্যে স্বাহা)। ভূ: স্বাহা (ভূ-র উদ্দেশ্যে স্বাহা)। ভূব: স্বাহা (ভূবন্-এর উদ্দেশ্যে স্বাহা)।

কৌটিলীয় অর্থশাত্রে গুণনিবদিক-নামক চতুর্দশ অধিকরণে প্রথাত প্রয়োগ-নামক প্রথম অধ্যায় (আদি হইতে ১৪৬ অধ্যায়) সমাপ্ত।

#### দ্বিতীয় অধ্যায়

#### ১৭৮ প্রকরণ—শক্তর প্রালম্ভন বা বঞ্চনবিষয়ে অভুডোৎপাদন

শিরীর, উত্থর ও শমী—এই তিন জব্যের চূর্প দ্বান্ত সহিত্ত মিলিত করিয়। খাইলে, অর্জমান পর্যান্ত (কাহারও) কুধা হইবে না। কলেরুক (র্যাক্ষণ), উৎপলের কন্দ, ইক্মৃল, বিস (য়ণাল), দ্ব্রা, হ্রগ্ধ, দ্বান্ত ও মণ্ড (রসাত্র)—এই কয়েরু জব্যের যোগে প্রান্ত জব্য থাইলে একমান পর্যান্ত (কাহারও) কুধা হইবে না। অথবা, মায়, য়ব, কুলথ (য়াল্পডেদ) ও দর্ভমূলের চূর্ণ, হ্রগ্ধ ও দ্বান্তের সহিত মিশাইয়া যে থাইবে, নে একমান পর্যান্ত উপবান করিবে সে-ও একমান পর্যান্ত উপবান করিতে সমর্থ হইবে। অথবা, বলী, হর্গ্ধ ও দ্বাত—সমপরিমাণে মিলাইয়া যে পান করিবে সে-ও একমান পর্যান্ত উপবান করিতে সমর্থ হইবে। সালপর্ণী ও পৃশ্নিপণার (নারিকেলের ?) মূলের কন্ধ হুর্গের সহিত মিশাইয়া যে পান করিবে সে-ও একমান পর্যান্ত উপবান করিতে সমর্থ হইবে। অথবা, নালপর্ণী ও পৃশ্নিপর্ণীর মূলের কন্ধের সহিত হুগ্ধ পাক করিয়া যদি কেহ তাহা মধ্ ও দ্বান্তর সহিত থায়, তাহা হইলে নে একমান পর্যান্ত উপবান করিতে সমর্থ হয়।

খেত ছাগলের মৃত্রে সগু রাত্রি পর্যন্ত রক্ষিত সর্বপ হইতে উৎপন্ন তৈল কটুক আলাবৃতে (কটুডুমীতে) একমাস বা আর্দ্ধমাস পর্যন্ত রক্ষিত ইইলে, ইহা (তৈল) চতুম্পদ ও দিপদ জন্তগণের রূপ (আকৃতি) পরিবর্ত্তন করিতে পারে—ইহা বিদ্ধাপকরণ-নামক যোগ। সপ্তরাত্রি পর্যন্ত কেবল তক্রু (ঘোল) ও যব-ভক্ষণকারী খেত গর্ফান্ডের বিদ্ধা ও যবের সহিত পক্ষ গোর সর্বপের তৈলঘারাও বিদ্ধাপকরণ যোগ হইতে পারে, অর্থাৎ এইরূপ তৈল বাবহারে লোকের রূপ বা আকৃতি পরিবর্ত্তিত হইতে পারে।

খেতছাগ ও খেতগৰ্দভের যে কোনটির মৃত্র ও বিষ্ঠাতে পক দর্যপের তৈল যদি অর্ক (মৃত্যুর), তৃল ও পতকের চুর্ণের সহিত মিলিত হইয়া ঔষধবিশেষে পরিণত হয়, তাহা হইলে দেই তৈল তদ্বাবহারীর আরুতিকে খেত করিয়া তুলিতে পারে—এই বোগের নাম খেতীকরণ।

বেত কুকুট ও অঞ্চগর সর্পের বিষ্ঠা মিলিও হইলেও বেতীকরণ-বোগ হইতে পারে। বেত ছাগের মূত্রে সপ্তরাত্তি পর্যন্ত রক্ষিত বেত সর্বপ, যদি পুনরার তক্ষ, অর্কন্দীর, অর্ক, তুল, কটুক, মংস্ত ও বিলক্ষের (বিডক্সামক ওইধিভেদের) সহিত একশক্ষকাল পর্যান্ত মিলিত করিয়া রাধা যায়, তাহা হইলে ইহাও এক-প্রকার খেতীকারক বোগ হয়। দমুক্রের মতৃকী, শব্দ, হয়। (মূর্বা-নামক ওবধিভেদ), কদলী, ক্ষার (সবণভেদ) ও তক্ত — এই দ্রবাওলির যোগও খেতীকারক যোগভেদ। কদলী, অবল্ভজ (নোমরাজী), ক্ষার, রম (পারম) ও শুক্ত (অমবিশেষ)—এই দ্রবাগুলি যদি শ্বরাতে ভিজাইয়া, তক্ত, অর্ক, তৃল, অহি ও লবণ এবং ধালামের (কাঞ্চিকের) সহিত এক পক্ষ পর্যান্ত মিলিত রাধা হয়, তাহা হইলে এই দ্রবাগুলির যোগও একপ্রকার খেতীকরণ যোগ হয়। বলীতে (লতাতে) লয় কটুতৃখীতে অর্জমান পর্যান্ত রক্ষিত নাগর ও শুলী যদি খেত সর্যান্ত পিট হয়, তাহা হইলে ইহাও রোমরাজিকে থেত করিবার উপযোগী যোগ হয়ত পারে।

আর্ক, তুল ও আর্ক্নরক্ষের একপ্রকার কীট, বেতা ও গৃহগোলিকা—এই সব দ্রব্য পিষ্ট হইয়া কেশে সংলগ্ন হইলে, ইহ। কেশকে শধ্যের মত বেত করির। তোলে॥ ১॥

গোমর কিংবা তিন্দুক (গাব) ও নিখের কম্ব (পিষ্ট)-দার। আদ মার্চ্ছিত করিয়া যদি কেহ ভল্লাতক ও পারদ মিশ্রিত করিয়া অম্পুলিগু হয়, তাহা হইলে একমান মধ্যে ভাহার কুঠরোগ হইতে পারে।

কৃষ্ণনর্পের মুখে অথবা গৃহগোলিকার মুখে স্থরাত্তি পর্যান্ত রক্ষিত গুলাও কুর্মবােগা উৎপাদন করে। শুকপক্ষীর পিত্ত ও ইহার অণ্ডের রসবারা শরীরে মালিশ করিলে কুর্মবােগা উৎপান্ন হইতে পারে। প্রিরালরক্ষের কছবারা প্রস্তুত ক্ষার কুর্তের প্রতীকার করে।

মুনগী, কোলাভকী ( বিজা ), শভাবনীর মূল যাছাকে খাওয়ান হয়, দে একমাসমধ্যে গৌরবর্ণ ছইডে পারে। বটরক্লের কয়য়হায়া স্বাভ এবং সহচরের পীত বা নীলবিন্টিয় ) কয়য়য়য় দিয় বা লিগু বাজি রুফবর্ণ ছইয়া য়য়। শক্ন ও কয়ৄ ( কায়নি )-তৈল মুক্ত হরিভাল ও মনঃশিলার যোগও শামীকয়ণ-বোগে পরিণত হয়, অর্থাৎ ভল্লিগু বাজি কালবর্ণ হইয়া উঠে। খভোতের চূর্ণ স্বপতিক্লের সহিত বুক্ত হইলে রাজিতে অলিতে থাকে। খভোত ও গড়পদের (হোট কেঁচুরার ) চূর্ণ, সমুল্লের ছোট হোট জয়বিশেবের ও ভ্রমণক্ষীর ( কলিক্ষ বা কিলাপক্ষীর ) কপাশ বা শিরোছিয় চূর্ণ, থদির ও কর্ণিকার ব্লেফর পুশাচুর্ণ, আখবা শক্ন ও কয়্র তৈলমুক্ত তেজন ( বা বেণু )-চূর্ণ, ও মণ্ডকের ব্লারিক্তরক বা নিম্বক্লের ছালের মবী ( কালি )—এইগুলিয় প্রত্যেকটি গাল্পে

মালিশ করিয়া ইহাতে অগ্নি লাগাইলে ইহা (বিনা ক্লেশে) গাতপ্রজালনবাগ উৎপাদন করে:

পারিজন্তকের (নিশ্বের ) ছাল, বন্ধ্র (ধাত্রী বা কাঞ্জিকা ), কদলী ও তিলকের কছবারা লিগু শরীর অথিবাগে (বিনা ক্রেশে ) জলিতে থাকে। শীলু রক্ষের ছালের মবীঘারা নির্দ্মিত শিশু (বিনা অথিবোগে ) হচ্ছে রক্ষিত হইলেও জলিতে থাকে এবং দেই পিশু মতুকের বনা বা চর্চার দহিত দিশ্ব হইলে অথিসংসর্গে জলিতে থাকে। সেই পিশুবারা প্রলিশু অল, যদি কৃশতৈল ও আন্তর্শনের তৈলবারা দিক্ত হয়, অথবা সমুদ্রমণ্ড,কী, সমুদ্রকেন ও সর্জারদের (সালরক্ষের ) চূর্ণের সহিত মৃক্ত হয়, তাছা হইলে ইহা (অল) অলিতে থাকে।

মণ্ড কের বসা বা চর্কীর সহিত পক হধ, ও কুলীর (কাঁকড়া) প্রভৃতির বসা বা চর্কীর সহিত সমানপরিমাণ তৈল মিলিত করিয়া সেই তৈল গাত্তে মালিশ করিলে ইহাও একপ্রকার অগ্নিপ্রজ্বালনযোগ উৎপাদন করে। আবার মণ্ড কের বসা বা চর্কীগ্রার দিশ্ব শরীর অগ্নিযোগে অলিতে থাকে।

বেণ্র (বালের) মূল ও শৈবল (শেরালা)-লিপ্ত অক যদি মপ্ত,কের বনা বা চর্মীদার। লিপ্ত হয়, তাহা হইলে ইহা (অক) অলিতে থাকে। পারিভদ্রক (নিঘ), প্রতিবলা (ওধধিভেদ), বঞ্লুল, বন্ধু ও কদলীর মূল্যারা নির্মিত করের সহিত যদি মপ্ত,কবসালিপ্ত তৈল মিপ্রিত হয় এবং দেই তৈল্যারা কাহারও পাদ অভাক্ত হয়, তাহা হইলে দেই লোক অলিত অস্থারের উপরও চলিতে পারে।

উপদোকা (পৃতিকা বা পুঁইশাক), প্রতিবলা, বঞ্ল ও পারিভন্তক—এই-গুলির মূল্যারা তৈরারী কছের সহিত মণ্ডুকের বসাবা চর্কী মিশ্রিত করিরা তৈল প্রস্তুত করিলে, যদি সেই তৈল্যারা কাহারও নির্মাল (ধৃলিশ্রু) পাদ অভ্যক্ত হয়, ভাহা হইলে সেই লোক জ্বলন্ত অকাররাশির উপর ভেমনভাবে চলিতে পারে যেন দে পুশ্রাশির উপর দিয়া চলিভেছে। ২-৩।

হংস, ক্রেণিক ও মর্ব অথবা অভাভ জলচর বড় বড় পক্ষীর পুদ্ধদেশে বিদিন্দা বিদিকা নিলত্বে ঘোৰিত ছোট দীপিকা ) বাধিয়া দেওরা হয়, তাহা হইলে বাজিতে ইছা উদ্ধার ভায় দৃই হইবে। বিহাতের অধিদার। অণিত কার্চের ভাষ অধিকে প্রশম্ভিক করিতে পারে।

শ্বীরশোধার। বাসিত বা মিশিত মাবা ও মঙ্কের বসা বা চকরি সহিত মিশ্রিত বস্তু ও ক্লীর (কউবারীর) মূল প্রথমশিত চুলীভেও পঞ্ছইবে না। ভূলী পরিকার করিলে এই পাকপ্রতিবধের প্রতীকার হয়। শীলুকাঠ নির্দ্ধিত মণিতে (অলিঞ্জর বা বড় কলশে) অগ্নি থাকে।

মবর্চলার (অন্তনীর বা স্বাম্থী পুশের) মৃলব্রছি, অথবা ইহার প্রেপ্রছি

যদি পিচু বা তুলাধারা শরিবেটিত হয়, তাহা হইলে ইহা মুখ হইতে অগ্নি ও ধ্ম

হাড়ার সাধন হইতে পারে। কুল ও আত্রফলের তৈলখারা সিস্ক অগ্নি বর্ধা ও

মহাবায়তেও অলিতে থাকে (নির্বাশিত হয় না)। সম্প্রকেনক যদি তৈলযুক্ত
হয়, তাহা হইলে ইহা জলে ভাসিতে থাকিলেও অলিতে থাকে। যানবের

অন্থিতে বিচিত্র বর্ণের বেণুহারা নির্মথনজন্ম উৎপন্ন অগ্নি জলঘারাও শাস্ত হয় না

এবং ইহা জলপ্রায়োগে অধিক অলিতে থাকে।

শস্ত্রধার। হত, অথবা শ্লে প্রবেশিতদের পুক্ষের বামপার্যন্থ পশু কা-নামক অন্ধিতে বিচিত্রবর্ণের বেণুধারা নির্মধনজন্ত উৎপন্ন অধি এবং শ্লী বা পুরুষের অন্ধিতে মাস্থাবর পশু কা-নামক অন্ধিরারা নির্মধনজন্ত উৎপন্ন অধি যে স্থানে তিনবার বামদিকে ঘুরান হয় সেই স্থানে অন্ত কোন প্রকার অধি জ্ঞানে বা প্রথম অধিকরণে ২১শ অধ্যায় দেইবা)।

চুচুন্দরী, খঞ্জরীট ( ধঞ্জনপক্ষী ) ও উধরদেশের কীট—ইছার প্রত্যেকটা যদি পিট ছইয়া অধ্যনুত্রের সহিত মিশ্রিত হয়, তাহা হইলে এই মিশ্রণদ্রব্য শৃথ্পদেরও ভঞ্জনকারী যোগ উৎপাদন করিতে পারে। অয়য়ান্ত নামক পাষাণ বা মণিও শৃথ্যসভ্জনকারী হইতে পারে॥ ৪॥

কুলীরের অণ্ড, ভেক ও খারকীটের বসা বা চর্নীর প্রপেশসহ বিশুণিত ( বণতা-প্রাপ্ত ) শৃকরের গর্ভ বদি করুণক্ষী, ভাসের ( গৃগ্রের ) পার্খদেশ ও উৎপল ( -নামক মংস্যভেদের ) জলের সহিত পিষ্ট হয়, ভাহা হইলে সেই প্রকেপ চতুল্বদ ও দ্বিপদ জন্তুদিরের পাদদেশে মাথিলে এই লেপ, এবং উপুক (পেচক) ও গৃগ্রের বসা বা চর্নীদারা হদি উট্ট-চর্মনিম্মিত পাছকাদ্বর প্রশিশু করিয়া তাহা বটপত্রবারা প্রজ্ঞাদিত করা হয় তাহা হইলে সেই পাল্লকাদ্ব, অপ্রাপ্তভাবে পঞ্চাশ্ব বোজন পর্যন্ত গমনের সাধন হইতে পারে।

শ্রেন ( বাজ ), কর, কাক, গৃঙ, হংস, ক্রোক ও বীচিরর ( পক্ষীবিশেষ )— এই ক্রেকটি পক্ষীর মজা, অথবা বীর্ষ্য পাদলেপ বা পাছকালেপদ্ধণে ব্যবহৃত হুইলে, ইহা পুদ্ধকে একশ্ত বোজন পর্যন্ত গমনে অপরিপ্রাক্ত বাধিতে পারে।

সিংহ, ব্যাত্র, দ্বীপী, কাক ও উদ্কের মক্ষা বা বীর্য্য পূর্ববিৎ ব্যবহৃত হইলে লঙ ধোজন পর্যান্ত পুরুষকে গমনবিব্য়ে অপরিল্রান্ত বাধিতে পারে। (প্রাক্ষণাদি) সর্ববর্ধের শ্রীর গর্ভপাত হইলে, সেই গর্ভ বদি উট্রিকা-নাম্ম মুৎপাত্রে অভিধ্যমন্ত্ৰীয়া পূত হয়, অথবা শ্বশানে মৃতশিক্ত বদি ভেমনভাবে অভিব্যুক্তমানা পূত হয়, তাহা হইলে সেই গৰ্ভ ও মৃতশিক্ত হইতে সমূখিত মেদও পূৰ্ববিং ব্যবস্থত হইলে পুৰুষকে শত বোজন পৰ্যান্ত গমনবিধন অপন্নিশ্ৰান্ত রাখিতে পারে।

( এইভাবে বিজিগীরু ) অনিষ্টকারক অধ্তদর্শন ও উপপ্রবদ্ধারা শক্রর উদ্বেগ উৎপাদন করিবেন, যাহাতে তাঁহার ( শক্রর ) রাজ্যে অরাজকতা উপস্থিত হইতে পারে। এই প্রকার কার্য্য নিন্দাজনক হইলেও, ইহা ( বিজিগীরু ও শক্র উভয়ের পক্ষেই ) কোপ বা উপপ্রবের সময়ে সমানভাবে অকুষ্ঠের হইতে পারে। ৫।

কৌটিলীয় অর্থশাত্তে ঔপনিষ্দিক-নামক চতুর্দ্দশ অধিকরণে প্রদন্তন বা প্রবঞ্চনবিষয়ে আন্তোৎপাদন-নামক দিতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১৪৭ অধ্যায় ) সমাও।

# তৃতীয় অধ্যায়

#### ১৭৮ প্রকরণ—প্রাসম্ভল বা শত্রুর প্রাবঞ্চলবিষয়ে ভৈষ্জ্য ও মজের প্রায়োগ

প্রথমত: ভৈষ্জ্যের প্রয়োগ নির্মণিত ছইডেছে ) বিড়াল, উট, বৃক্ষ, শৃকর, খাবিৎ (সজারু), বাগুলী (পক্ষিতেদ), নগু। (পক্ষিডেদ) কাক ও পেচক, অথবা অস্থান্ত যে দব প্রাণী রাত্তিতে বিচরণ করে—এই প্রাণিগুলির একটি, ছুইটি বা বহুটির দক্ষিণ, অথবা, বাম চকু লইয়া পৃথগ্ভাবে ইহাদের চুর্ণ কেছ করাইবে। তাছার পরে কোন লোক বদি এই প্রাণিগুলির বাম চকুর চুর্ব দিরা নিজের দক্ষিণ চকুতে, অথবা ইহাদের দক্ষিণ চকুর চুর্ব দিয়া নিজের বাম চকুতে প্রশেশ কের, তাছা ছইলে সেই লোক রাত্তিতে ও অক্ষকারে দেখিতে সমর্থ হইবে।

এক অন্ত্রক ( লকুচ), বরাছের চকু, খন্ডোতে ও কালশারিবা, ( ওবধিবিশেষ )
—এই ক্রব্যগুলি মিশ্রিত করিয়া চকুতে অঞ্চনরূপে ব্যবহারকারী পুরুষ রাজিতে
রূপকর্শনে সমর্থ হয় । ১ ।

ভিন রাজি পর্যান্ত উপবাস করিয়া বদি কোনও লোক পুখনক্ষত্তবৃক্ত কালে, শহাবারা হত অথবা পূলে গ্রোত কোনও পুসবের মন্তকের কপালে ( জ্ঞামক অন্তিতে) যুক্তিকা ভরিয়া ইহাতে বব বপন করিয়া তাহাতে ভেড়ায় হব শিক্ষিত করে, এবং তৎপর ইহাতে উৎপন্ন যবান্ধ্রের মালা যদি দেই লোক ( গলার ) বাধিয়া বিচরণ করে, তাহা ইইলে তাহার ছারা ও রূপ অল্পের অলুকা ছইবে।

তিন রাত্রি পর্যান্ত উপবাস করিয়া যদি কেছ পুসনক্ষত্রযুক্ত কালে ক্রুর, বিড়াল, পেচক ও বাগুলীর (পক্ষিবিশেষের) দক্ষিণ ও বাম চক্ষুর চূর্ণ পৃথদ ভাবে করায়, এবং পরে নিজের চক্ষু যথাযথভাবে ( অর্থাৎ নিজের দক্ষিণ চক্ষু সেই প্রাণিগুলির দক্ষিণ চক্ষুর চুর্ণবারা এবং নিজের বাম চক্ষুইছাদের বাম চক্ষুর চুর্ণবারা ) অভ্যক্ত বা প্রাণিগু করে, তাহা হইলে দেই পোকের ছায়াও রূপ অন্তের অন্ধৃত্য ইইবে।

তিন রাক্তি পর্যান্ত উপবাস করিয়। যদি কোনও লোক পুষ্যনক্ষত্রযুক্ত কালে পুরুষ-প্রাণ্যাতী বাণ হইতে এক অঞ্জনশাকা ও অঞ্জনশাত্র প্রন্থত করায় এবং পরে পুর্বোদ্ধিভি (ক্রুরাদির) যে কোনটির অক্ষিচ্প্রারা (পূর্ববং) নিজের চক্ত্ প্রাপিপ্ত করিয়া বিচরণ করে, ভাষা ইইলে সেই সোকের ছায়। ও রূপ অন্তেরণ অন্তর্গ হইবে।

তিন রাত্রি পর্যান্ত উপবাদ করিয়া যদি কোনও লোক পুশ্বনক্ষত্রযুক্ত কাশে কালায়দদ্বারা আঞ্জনী (অঞ্জনপাত্র) ও শলাকা গ্রন্থত করার; এবং পরে নিশাচর প্রানিদিগের যে কোন একটির মন্তককপাল অঞ্জনদ্বারা পুরিত করিয়া যুক্ত স্ত্রীলোকের যোনিতে প্রবেশ করাইয়া দন্ধ করার; এবং তংপর দেই অঞ্জন পুনরায় পুশ্বনক্ষত্রযুক্ত কালে উদ্ধার করিয়া দেই (পূর্ব্বোক্ত) আঞ্জনীতে রাখে; এবং তারপর দেই অঞ্জনদ্বারা নিজে অভ্যক্তনয়ন হইয়া বিচরণ করে, ভাহা হইলে তাহার ছায়া ও রূপ অভ্যের অদৃষ্ঠ হইবে।

যে স্থানে আছিতারি (অবিছোত্রী) বাক্ষণকে দক্ষ বা দক্ষমান দেখিবে দেখানে যদি কোনও লোক তিন বাত্রি পর্যান্ত উপবাদ করিয়া পুয়নক্ষত্রযুক্ত কালে স্বরংয়ত ব্যক্তির বন্ধবারা একটি প্রদেব (থলিয়া) প্রন্ত করিয়া ইহা দেই ব্যক্তির চিভান্তস্থারা পূরিত করিয়া, ইহা দেই প্রাক্তির হায়া ও রূপ অলের অদৃশ্য হাইবে অর্থাৎ দেইভাবে দেই ব্যক্তির হায়া ও রূপ অলের অদৃশ্য হাইবে অর্থাৎ দেইভাবে দেই ব্যক্তি বিচরণ করিলে ভাহাকে কেহ দেখিতে পাইবেনা।

বান্ধণের প্রেডকার্ধ্য (প্রান্ধকার্ধ্য) বে গাড়ী মার। যায় ভাষার অস্থি ও মজ্জার চূর্বদারা পরিপূর্ণ দর্শন্তর্গ পশুদিগের অন্তর্জানের সাধন হয়, অর্থাৎ এইরূপ স্প্রিক্রের সংস্থা হইলে, পশুগণ তৎসংস্থাই কাহাকেও দেখিবে না। সর্পদংশনে দই কোনও জন্ধর (?) ভক্ষধারা পূর্ব মর্বপুক্ষনিদ্ধিত ভন্তা ব্য ধলিয়া অস্তান্ত শশুর অন্তর্জানের সাধন হয়।

শেচক ও বাগুলীর পুদ্ধ, বিষ্ঠা ও আহর অছির চুর্ণদার। পরিপূর্ণ দর্পচর্ম প্রিকাণের অভ্যন্তানের সাধন হয়।

এই পর্যান্ত অন্তর্জনিবিবরে আটপ্রকার বোগ নিরূপিত হইল। (দ্রপ্রতি চারিপ্রকার প্রাথানবোগ বলা হইবে। তদ্মধ্যে প্রথম ঘুইটি বোগের সাধারণ মন্ত্র বলা হইতেছে "বলিং বৈরোচনং বন্দে" ইত্যাদি ছইতে "অলিতে বলিতে (মতান্তরে, পলিতে) মনবে স্বাহা" পর্যান্ত শব্দনিচয়দারা।)

বিরোচনপুত্র ব'লি, শতপ্রকার মায়াডিজ্ঞ **শব্দর,** ভণ্ডীরপাক, নরক, নিকুস্ত ও কুস্তকে বন্দনা করি ॥ ২ ॥

দেব ও লারদকে বন্দনা করি, দাবর্ণি গালবকে বন্দনা করি। এই সব দেব ও দানবের সহায়তাযোগ প্রাপ্ত হইয়া আমি তোমার মহৎ স্বপন বা নিজা বিধান করি॥ ৩॥

অব্দেরসর্পাণ বেমন নিজা যার, চমু বা দেনামধ্যে ধলের। অর্থাৎ হুট দৈনিকরা বেমন নিজা যার, প্রামমধ্যে যাহার। সহত্র সহত্র ভাও সইরা ও লঙশত রখনেমি লইরা কুত্হলাজ্ঞান্ত থাকে সেই পুরুষেরাও ভেমন নিজা যাউক। আমি এই গৃহে প্রবেশ করিব—ইহার ভাওসমূহ নীর্থ বা নিঃশক্ষ থাকুক। ৪-৫।

মন্ত্রক নমসার করিয়া এবং হুই (१) কুকুরগণকে বাঁধিয়া রাখিয়া, দেবলোকে বাঁয়ার দেবতা ও মাহ্মবলোকে বাঁয়ার আহ্মল তাঁছাদিগকে নমস্বার করিয়া বে-সব কৈলাসের ভাপসগণ অধ্যয়নবিবয়ে পারগ হইয়া সিদ্ধ হইয়াছেন, তাঁছাদিগকে নমস্বার করিয়া—এই সর্বসিদ্ধণণ হইতে (শক্তি পাইয়া) আমি তোমার ঘোর নিজ্ঞা বিধান করিতেছি। ৬-০।

আমি চলিয় গেলে যেন সকল সংঘাতপ্রাপ্ত (লোকরাও) অপক্রাস্ত হয়। ছে অলিতে, ছে পলিতে (পাঠাস্তবে 'বলিডে')! মহুর প্রতি স্বাহা। এই মন্তের প্রয়োগ এইক্লপ:—

কোনও পুরুষ তিন রাত্রি পর্যান্ত উপবাদ করিয়া পুয়নক্ষত্রযুক্ত কৃষ্ণপক্ষের চতুর্জণীতিবিতে কোনও চণ্ডালীর হল্ত হইতে একটি বিলখননকারী মৃবিকল্পাতীর ক্ষম্মর একখণ্ড বহিদ করিবে। মাবদহ সেই মাংদৰণ্ড একটি ছোট পেটারাতে বন্ধ করিয়া ইছা সে খোলা বিল্ঞীর্ণ শ্রশানে নিখাত করাইবে। তৎপর বিতীয় অর্ধাৎ পরবর্ষী চতুর্দ্দশীতিধিতে ইছা দেখান ছইতে উঠাইরা কোনও কুমারীদ্বারা ইছা পেখণ করাইরা সে তদ্বারা গুলিকা পাকাইবে। ভাহা হইতে একটি গুলিকাকে অভিমন্ত্রিত করিয়া, ইছা বেন্থানে উপরিউক্ত মন্ত্র পাঠস্য নিক্ষেপ করিবে— দেখানে যত প্রাণী থাকে সকলেই নিক্রিত ছইয়া পড়িবে।

এই প্রকার বিধিন্নার। হইতে তিনস্থানে কৃষ্ণবর্গ ও তিনস্থানে খেতবর্গ একটি শন্যকের কাঁটা বিভ্ত শাশানে নিবাত করাইবে। দ্বিতীয় চতুর্দ্ধশীতে ইহা ভূমি হইতে উদ্ধার করিয়া শাশানের ভঙ্মদহ ইহাকে (শন্যকে) যেস্থানে সে উক্ত মন্ত্রপাঠ সহকারে নিক্ষেপ করিবে সেই স্থানের সব প্রান্তী নিক্রিত হইয়া প্রতিবে।

স্বর্ণপূষ্ণী দেবীকে, ব্রহ্মাণীকে, ব্রহ্মাকে ও কুশধ্বজ্বকে এবং অন্তান্ত সকল দেবতাকে বন্দনা করি; এবং সকল তাপসদিগকেও বন্দনা করি॥৮॥

সব ব্রাহ্মণ ও ক্ষত্রিয় রাজার। আমার বশে আহ্মক এবং সকল বৈশ্য ও শুদ্রেরাও সর্ববদা আমার বশংগত হউক॥ ৯॥

স্বাহা। হে অমিলে, হে কিমিলে, হে বস্থলারে ('বয়ুজারে' ও 'বয়ুচারে' গাঠান্তর), হে প্রহোগে, হে ফকে, হে বয়ুলের ('বয়ুল্মে' পাঠান্তর), হে বিহালে, হে দক্তকটকে ('কটুকে' পাঠান্তর)—সাহা।

প্রামে যে সকল ক্রুর কৃত্হল—তাহার। মথে নিদ্রিত হউক। শলাকের এই ত্রিখেত কাঁটা ব্রহ্মাধারা নিম্নিত। কারণ, সমস্ত সিদ্ধের। প্রশ্নপ্ত হইরাছেন। তোমার এই স্থাপন বিহিত হইল। প্রামের সীমান্ত যতদ্র বিস্তৃত ততদ্রে ক্র্যোপ্সাম পর্যন্ত ইহার প্রভাব॥ ১০-১১॥ স্বাহা।

এই মরের প্ররোগ এইরূপ হইবে। শল্যকের তিখেত কণ্টকসমূহ (বিস্তৃত শুশানে সে নিধাত করাইবে)। সগুরাতি পর্যান্ত উপবাস করিয়া কোনও পূর্ব্বর ক্ষতভূর্ত্বশীতে এই মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া থদিরস্কুক্ষের কার্চ্চারা অগ্নিতে একশত আটবার মধু ও ঘুতসহকারে হোম করিবে। তৎপর ইহার মধ্য হইতে এই মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া গ্রামদ্বারে অথবা গৃহত্বারে যেধানেই একটি শলাক নিধাত করা হইবৈ—ইহা সেধানেই সকলকে নিজিত করিয়া দিবে।

বিরোচনমুত বলিকে নমন্বার করি। পতপ্রকারের মান্নাভিক্স শব্দর, নিকুন্ত, মর্ক, কুন্তু, মহামুর ভন্তক্ত, অর্মালব, প্রেমীল, মন্তোলুক, মটোবল, কৃষ্ণ ও কংলের উপচার (কার্য্যাবলী ?) ও যশবিনী পৌলমীকে নমন্বার করি। ১২-১৩। নিজ কার্ব্যের দিন্ধি জন্ত মন্ত্রসহকারে শ্বশারিক। গ্রহণ করিভেছি। গ্রামে বে দকল কুরুর কুত্হল—তাহারা স্থে নিদ্রিত হউক। প্র্যোদর হইতে অস্তমর পর্যান্ত বাহা আমরা চাহিতেছি, এবং যাবৎ আমার ফলপ্রান্তি না ঘটে—ততক্ষণ পর্যান্ত সব দিয়ার্থেরা স্থাধে নিদ্রিত বাকুন ॥ ১৪-১৫॥ স্বাহা।

এই মন্ত্রের প্রয়োগ এইরূপ হইবে। চারিদিন পর্যন্ত অন্ন অগ্রহণকারী প্রুব কৃষ্ণচূর্দ্ধনীতে বিশুভ শাশানভূমিতে বলি দিয়া এই মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া শবভূত শাবিকা গ্রহণ করিয়া, ছোট কাপড়ে ইহাঘারা এক পুটলী বাঁধিবে। শশাকের কাঁটাঘারা ইহার মধ্যে বিঁধাইয়া এই মন্ত্রশহকারে বেখানে ইহা নিধাভিত হইবে, দেখানে ইহা সকলকেই নিজিত করিয়া দিবে।

সেপ্রতি ঘারথোলার যোগ নিরূপিত হইতেছে।) অঘিদেবতার শরণ বা আশ্রয় লইতেছি এবং দশদিকের সব দেবতাদিগের শরণ কাইতেছি। সর্ব্ব-প্রকার (বিয়াদি) দুরীভূত হউক এবং সকলেই আমার বশে আশ্রক । ১৬॥ স্বাহা।

এই মন্ত্রের প্ররোগ এইরূপ হইবে। তিন রাত্রি পর্যান্ত উপবাসকারী পুরুষ পুশানকত্রসংযুক্ত কালে অনেক শর্করা(ছোট ছোট শিলাখণ্ড) লইরা (ডতুপরিছিত অরিতে) মধু ও ঘুওঘারা একবিংশতিবার হবন করিবে। তৎপর সেগুলিকে (শর্করাগুলিকে) গদ্ধ ও মালাহারা পূজা করিয়া দে (মাটিতে) নিবাত করাইবে। বিতীয় পুশানক্ষত্রের যোগ হইলে ইহাদিগকে উঠাইয়া একটি শর্করা মন্ত্রদারা অভিমন্ত্রিত করিয়া, ইহাদারা দে কোনও করাটের উপর আঘাত করিবে। এই আঘাতছারা চারিটি শর্করার পরিমাণে করাটে ছেদ হইবে— এবং এইজাবে ঘার ধোলা যাইতে পারিবে।

চারিদিন পর্যান্ত উপরাসী পুরুষ ক্লফচতুর্দ্দশীতে মৃত (ওয়) লোকের হাড়ছারা একটি বলীবর্দ্দের মৃত্তি করাইবে। সেই মৃত্তিকে দে উপরিউক্দ মন্ত্রহারঃ অভিমন্ত্রিত করিবে। (তাহা করিলে) গ্রইটি বলীবর্দ্দযুক্ত একথানি গোষান সমুখে উপন্থিত হইবে। তৎপর (সেই গোযানধারা) সে আকাশে চলাচল করিতে পারিবে।

"দদা রবিরবি: দগওপরিঘাতি সর্বাং ভণাতি"—ইহা একটি মন্তবোগ।
('দগও' ছলে 'দগছ' পাঠও দৃষ্ট হয়, মত্রের অর্থ স্ববোধ নহে, কোন দংকরণে
মত্রের পাঠ 'রবিসদ্ধপরিখাতিং' ইভাদিও দৃষ্ট হয়)। তংগর চঙালী, কৃষী,
তথকটুক ('গুলকটুক' পাঠও দেখা বার), ও দারীবের-শ্রুতি, তাহারা নারীভগৃষ্ক বলিরা, 'সাহা' উচ্চারিত হইতেছে (ইহা বিতীয় একটি মন্তবোগ)। এই সুই মন্ত্র প্রয়োগ্রামা মারের তাল (যন্ত্র) উদ্বাটিত হইতে পারে এবং (গৃহস্থেরা) সকলেই নিজিত হইয়া পড়িবে।

তিন রাত্রি পর্যান্ত উপবাসকারী পুরুষ পুশ্বনক্ষন্ত্রদংযুক্ত কালে শ্রন্থার। ছত অথবা শূলে প্রোথিত লোকের মন্তক্ষপালে রক্ষিত মৃতিকাতে ভূবরী-নামক শশ্র রাথিয়া তাহা জলধার। সিঞ্চন করাইবে। আবার পুশ্বনক্ষন্ত্রদংযুক্ত কালেই তাহাতে জাত অন্তর হইতে শ্বন্ধবজ্ঞ প্রন্তত করাইবে। এই রক্ষ্বাহা জ্যাযুক্ত ধরুঃ ও অন্তান্ত যন্ত্রেরও পুরোভাগেই ছেদন এবং ধন্থর্বাণেরও জ্যা-এর ছেদন দেকরিতে পারিবে। যদি কেহ কোন স্ত্রী বা পুরুষের (শবাদের) চিতার উপরিম্বিত মৃতিকাদার। উদকাহির (সর্পতেদের) করুক পুরিত করে, তাহা হইলে এই যোগদার। নাসিকার নিরোধ ও মুধ্বের গুলুন স্থাবিত হইবে। স্করের বন্ধিকে প্রী বা পুরুষের) চিতান্থিত মৃতিকাদার। পুরিত করিয়া ইহা যদি বানরের সামুদ্বার। বাঁধা যায়, তাহা হইলে এই যোগ আনাহ বা মলগুন্তের কারণ হয়। ক্ষমপক্ষের চতুর্দ্ধশীতিথিতে শ্রন্থার। হত কলিল। গাভীর পিত্রার। রাজ্যুক্ষের কারিগ্রেপ্ত প্রন্তর প্রতিমার চক্ষ্ অন্ধিত করিলে ইছাই শক্ষকে অন্ধ করিবার যোগবিশের হয়।

চারিরাত্রি পর্যন্ত উপবাসকারী পুরুষ কৃষ্ণপক্ষের চতুর্দ্ধলীতিখিতে ভূতবলি দান করিয়া পূলে প্রোত পুরুষের অন্থিরির। কীলক প্রস্তুত্বত করাইরে। তন্মধ্যে একটি কীলক (যাহার) মলে বা মূত্রে নিধাত করা হইবে, ভাহারই মলন্তম্ভ উপন্থিত হইবে। আবার কীলক (যাহার) পাদে (পদচিছে ?) বা আসনে (উপবেশনন্থলে) নিধাত করা হইবে, ভাহাকে ইহা শুভ করিয়া মারিবে। যাহার দোকানে, ক্ষেত্রে বা গৃছে (কীলক) নিধাত হইবে, ইহা ভাহার আজীব বা বৃত্তির ভেদ ঘটাইবে। এই বিধিন্নারা ইহাও ব্যাধ্যাত হইল যে, বিশ্লাভের আগ্রিনারা দগ্ধ বৃক্তের কার্ন্ন হইভে প্রস্তুত কীলকও (পূর্ব্বোপ্ত অবস্থার) তৎতৎ কার্যা করিবে।

অবাচীন (নিমুমুনী বা দক্ষিণ্দিগ্ৰব) পুনর্নব-নামক (শাক বা পুশ্বিশেষ), কাকের নিকট মিট যে নিম, বানবের শোম ও মাহুবের অস্থি যদি মৃত্যাহুবের বস্ত্রঘারা বাঁধিয়া কাহারও গৃহে নিখাত হয়, অথবা এগুলিকে পেবণ করিয়া যদি কাহাকেও পান করান যায়, ভাহা হইলে দেই লোক পুত্রদারসহিত ও ধনসহিত তিনপক্ষ কাশও পার হইতে পারিবে না, অর্থাৎ দেই কালের মধ্যেই নষ্ট হইয়া বাইবে ॥ ১৭-২৮॥ অবাচীন (নিমুম্থী বা দক্ষিণদিগ্ তব) পুনন ব-নামক (শাক বা পুশবিশেষ) কাকের নিকট মিষ্ট যে নিম্ন, স্বয়ংগুরা বা কচছুরা-নামক ওবধি ও মান্ত্রের জন্মি বদি কাহারও স্থানে, অথবা কাহারও গৃহ, সেনা, গ্রাম বা নগরের আর্মেশে নিধাত হয়, তাহা হইলে সেই লোক পুত্রদারসহিত ও ধনসহিত তিনপদ্ধ কালও অতিবর্ত্তন করিতে পারে না, অর্থাৎ সেই কালের মধ্যেই নষ্ট হইয়া বাকে । ১৯-২০ ॥

ছাগ, বানর, বিড়াল, নকুল, ত্রাহ্মণ, চণ্ডাল, কাক ও পেচকের লোমরাঙি কেই একল্রিড করিবে। এই সব দ্রব্যের সহিত (মারণে কল্পিড লোকের) বিঞ্চা চুণিত করিলে, এই যোগের স্পর্শে সন্থা: সন্থা: সেই লোক মারা বাইবে। মৃত লোকের মালা, স্থরার বীন্ধা, নকুলের লোমরান্ধি এবং রুণ্ডিক, অলি-নামক রুণ্ডিকভেদ ও সর্পের চর্মা একল্রিড করিয়া যদি কাহারও স্থানে নিখাত করা হয় ভাহা হইলে যাবৎ সেই দ্রবাগুলি সেই স্থান হইতে দ্রীভূত না করা হয়, তাবং সেই পুরুষ অপ্রুষ্ধ হইয়া সাঁড়ায় অর্থাৎ পুরুষোচিত সামর্থাবিহীন হইয় প্রেড ॥ ২১-২৩॥

তিন বাত্তি পর্যান্ত উপবাদকারী পুরুষ পুরুনক্ষত্রসংযুক্ত কালে শক্ষদার। হত্ত্ব আথবা শ্লে প্রোত লোকের শির:কপালে রক্ষিত মৃত্তিকাতে গুঞ্জাবীক্ষ রেঃপিড করিয়া তাহা ক্ষশদারা দিক্ষিত করাইবে। দেখানে সংকাত গুঞ্জাবরীকে পুরুনক্ষত্রযুক্ত অমাবস্থা বা পূর্ণিমাতিখিতে উঠাইয়া নিয়া ডদ্বারা মগুলিকা (খেরা) প্রস্তুত করাইবে। দেই মগুলিকাতে রক্ষিত অরপানের ভাক্ষনগুলিকরপ্রতি হয় না।

মৃত ধেহরে জন কাটিয়া নিয়া রাত্তির (নৃত্যসীতোদির) উৎসবে জ্ঞালিও প্রদীপের অধিতে তাহা কেছ দক্ষ করাইবে। দেই দক্ষ জন ব্বের মৃত্তে পেবিও করাইয়া ওদারা নবকুজের ভিতর চতুর্দ্ধিকে দে লেপ দিবে। দেই কুজটিকে দে বাম দিক হইতে গ্রামের পরিক্রমা করাইবে। তন্মধ্যে গ্রামের সমস্ত নবনীও আসিয়া উপস্থিত হইবে।

পুষনক্ষত্রযুক্ত কৃষ্ণপক্ষের চতুর্দশীতিথিতে কাষমন্ত কুকুরীর (মুলে পুংলিগ পাঠ অবিবক্ষিত বলিয়া প্রতিভাত হয়) ঘোনিতে কৃষ্ণলোহ-নিন্দ্রিত একটি মুক্ত্রিকা (অঙ্গুলীরকবিশেষ) কেই লাগাইয়া দিবে। সেই মুক্ত্রিকা শ্বরং খনির পড়িলে লে তাহা গ্রহণ করিবে। এই মুক্তিকার প্রভাবে আছুত হইলে বুকেঃ কল আসিয়া উপস্থিত ছইবে। মন্ত্র ও ভৈষজ্য (ওবধি)-ধারা যুক্ত, এবং মারাধারা কৃত বে-যে থোগ (উক্ত হইয়াছে), তল্পারা (বিজিসীয়ু) শতকে নষ্ট করিবেন এবং অজনকে পালন করিবেন ॥২৪॥

কোটিলীয় অর্থশাল্তে ঔপনিবদিক-নামক চতুর্দশ অধিকরণে প্রলম্ভনবিষয়ে ভৈষজা ও মন্তের প্রয়োগ-নামক তৃতীয় অধ্যায় ( আদি হইতে ১৪৮ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

# চতুৰ্য অধ্যায়

#### >৭১ প্রকরণ—শিঙ্গদেনার উপর প্রযুক্ত উপঘাতের প্রভীকার

শক্ষবারা (বিজিগীবুর) নিজপক্ষের উপর প্রযুক্ত দৃষিত বিষভক্ষণের প্রতীকার ইচ্ছা করিলে এইরূপ কার্য্য করিতে হইবে, যথা—শ্লেম্মাতক (শেশুবা বছবারবৃক্ষ, বাঙ্গালায় বহুয়ারবৃক্ষ), কপিন্দ, দন্তী (বা উহুন্নরপর্ণী), দন্তপঠি (জন্তীর), গোজী (গোজিহ্বা), শিরীয়, পাটলী, বলা (বাটাল্যক, বাঙ্গালায় বাড়িয়ালা), শ্যোনাক (শ্যোনাক বা শোনাগাছ), পুনন বা, খেতা (ব্যাটিকা বা বংশরোচনা), বরণ (বৃক্তেদ)—এই বৃক্তপ্রলির কাথযুক্ত এবং চন্দন ও শালাবুকীর (বানরী, কুকুরী বা শুগালীর, মতান্তরে বিড়ালীর) রক্তথারা ভেজন-জল প্রস্তুত্ত করাইয়া ভদ্বারা রাজভোগ্যা স্ত্রী ও সেনার গুরুষ্থান প্রকাশিত করিলে—ইছা বিষ-প্রতীকারের যোগ হইতে পারে।

পৃষভমুগ, নকুল, মধুর ও গোধার পিত্তযুক্ত মধী (নীলশেকালিকা) ও দর্ধপের চূর্ণ মদনদোষ হরণ করে অর্থাৎ উন্মাদক জব্যন্তারা দংজাত দোষ দূর করে ; এবং সিক্ষুবার, বরণ, বারুণী (দূর্কা), ভতুলীয়ক (পত্তশাকবিশেষ, বাজালায়-শুদিয়ানটিয়া বা চাঁপানটিয়া শাকে), শতপর্ক (বংশাগ্র) ও পিতীতক (তগর) — এই বস্তগুলির বোগও মদনদোষ-হরণকারী।

স্থালবিক্সা (পুলীপর্ণী-নামক ওষধিবিশেষ), মদন, বিকুবারিত, বরণ, বারণবন্ধী —এইগুলির মূল হইতে প্রস্তুত ক্ষায়সমূহের সবগুলিকে বা একডমকে পুন্ধের সৃহিত মিশাইয়া পান করিলেও মদনদোব দুয়ীভূত হয়।

কৈডর্যা (কট্রুক্ল), পৃতি ও তিল – এই তিন ক্রব্যের তৈল নাক দিয়া টানিলে ইছা উন্মাদের প্রতীকার করে। প্রিয়কুও নক্তমাল (চিরিবিঅ বা করঞ্জ)—এই ছুই জ্রেব্যের যোগ কুর্চ হরণ করে।

কুষ্ঠ ( ওযধিবিশেষ ) ও লোধের যোগ পাক (অর্থাৎ কেশের পক্ষতা) ও শোব (ক্ষররোগ ) বিনাশ করে।

কট্দল, দ্রবন্ধী (লম্বরী-নামক ওয়ধিভেদ) ও বিলক্ষের চূর্ণ নাক দিয়। টানিলে ইহা শিরোরোগ নষ্ট করে।

প্রিয়ঙ্গু, মঞ্জিষ্ঠ, তগর, লাক্ষারস, মধুক, ছরিদ্রা ও মধু—এই দ্রবাগুলির ধােগে প্রস্তুত ঔষধ, রজ্জ্বন্ধন, জলমজ্জন, বিষ্বেগ, প্রহার ও (উচ্চস্থান হইতে) প্রনে নুপ্তনংজ্ঞ পুরুষ পুনর্কার সংজ্ঞাপ্রাপ্তির উপযোগী হয়।

( উপরে উক্ত প্রতীকারবিধায়ক ঔষধিসমূহের ) এক অক্ষমাত্রায় অর্থাৎ বোল মাষক-পরিমিত মাত্রায় মালুধের জন্ত, গোও অধের জন্ত ইহার দিওণ মাত্রায়, এবং হস্তী ও উট্টের জন্ত ইহার চতুও ণ মাত্রায় প্রয়োগ বিধেয়।

(প্রিয়ঙ্গুপ্রভৃতি) দ্রব্যগুলির মণি বা গুলিকা স্কর্বর্ণর পত্তে অন্তর্নিবিষ্ট হইলে তদ্বাবহারেও সর্বপ্রকার বিষ নষ্ট হয়।

কীবস্তী (জীয়াতী ইতি ভাষা), শ্বেতা (শব্দিনী নামক ওষধি), নুক্ক (বাঙ্গালায় ঘন্টাপারুল) বৃক্ষ, পুষ্প (ওষধিজেদ) ও বন্ধাকা। (লভাবিশেষ, ইহা বক্ষোপরি বৃক্ষের নামও হইতে পারে)—এইগুলির এবং অক্ষীবে (শাভনাঞ্জন বৃক্ষে, মতান্তরে মহানিম্ব বৃক্ষে) উৎপন্ন অশ্বথের দ্বারা প্রস্তুত মণি বা গুলিকা ধারণ করিলেও সর্বপ্রকার বিষের প্রতীকার হয়।

(জীবন্তী প্রভৃতি) শেই সমস্ত ওয়ধিদ্বারা লিও বাজের শব্দও বিষবিনাশক হয়। (এই প্রকার ওয়ধিদ্বারা) লিও ধ্বজা বা পতাকা দেখিলেও (বিষ্চুষ্ট মালুষ) বিষশুন্ত হয়॥ ১॥

(বিজিগীর রাজা) এই সব জবাদার। স্বসৈন্তের ও নিজের প্রতীকার বিধান করিয়া বিব, ধুম ও জবদূৰণগুলি শক্তর উপর প্রয়োগ করিবেন ॥ ২॥

কোটিপীর অর্থশান্ত্রে ঔপনিষ্দিক-নামক চতুর্দশ অধিকরণে নিজ্পেনার উপর প্রযুক্ত উপহাতের প্রতীকার-নামক চতুর্থ অধ্যার (আদি হইতে ১৪০ অধ্যায়) সমাপ্ত।

ঔপনিষ্দিক-নামক চভুৰ্দ্দশ অধিকরণ সমাপ্ত।

# <u>তন্ত্রযুক্তি—পঞ্চদশ</u> অধিকরণ

#### প্রথম অধ্যায়

### ১৮০ প্রকরণ—তন্ত্রযুক্তি ( তন্ত্র বা অর্থশাল্কের ভার্থ-নির্ধয়ের উপযোগী যুক্তিসমূহ )

মন্ত্রের রন্তি বা জীবিকাকে 'অর্থ' বলা যায়। মনুরাযুক্ত ভূমির নামও 'অর্থ' কয়। ধে শাত্র দেই পৃথিবীর লাভ ও পালনের উপায় নিরূপণ করে, ভাহার নাম কাথশান্তা। দেই শাত্র বত্রিশ-প্রকার বৃক্তিদারা যুক্ত। দেই যুক্তিভিলি এইরূপ—

অধিকরণ, বিধান, যোগ, পদার্থ, হেড়র্থ, উদ্দেশ, নির্দেশ, উপদেশ, অপদেশ, অতিদেশ, প্রদেশ, উপমান, অর্থাপত্তি, সংশয়, প্রদক্ষ, বিগর্যয়, বাক্রশেষ, অস্থ্যত, ব্যাখ্যান, নির্বাচন, নিদর্শন, অপবর্গ, স্বদংজ্ঞা, পূর্বপক্ষ, উত্তরপক্ষ, একান্ত, অনাগভাবেক্ষণ, অভিক্রান্তাবেক্ষণ, নিয়োগ, বিকল্প, সমুচ্য় ও উন্থ।

প্রধানভূত যে অর্থ বা বিষয় অধিকার করিয়া কিছু বলা যায়, তাহাকে আধিকরণ বলা হয়। যবা– "পৃথিব্যা: লাভে পালনে"—ইত্যাদি (২০১) বাকোর পরই সমগ্র অর্থশাল্কের বৃহৎ বৃহৎ বিষয়ের নামান্ত্রপারে বিনয়াধিকারিক প্রভৃতি নামে অধিকরণের নাম প্রাপ্ত হওয়া যায়।

শাত্রের প্রকরণাত্রসারে আরুপূর্বী বা জমনিবেশনের কবনকে বিধান বল।
হয়। বণা—'বিভানমুন্দেশঃ', 'বৃদ্ধনংযোগঃ', 'ইঞ্রিয়জয়ঃ', 'আমাত্যোৎপ্রিঃ'
ইত্যাদি (১ ১)।

(কোন বিষয়ের অর্থ ব্যাইবার জন্ত) কোন বাক্যের যোজনার নাম বোগ।
বধা—'চড়র্বর্ণাশ্রমো লোকঃ' (১।৪)।

কেবল কোন পদের অর্থকে পদার্থ বলা হয়। যথা—'মূলহর:' একটি পদ।
এই পদের অর্থ—থথা—'পিতৃগৈভামহমর্থং'— ইত্যাদি (২।৯)।

অর্থের দিদ্ধিকারক হেত্র নাম ভেত্তর। ববা—'অর্থমূলৌ—' ইত্যাদি

সমস্ত বা সংক্ষিপ্ত বাক্যের নাম উল্লেশ। বথা—'বিস্তাবিনরতেতুরিজিয়জয়া'

ব্যস্ত বা বিস্তৃত বাক্যের নাম নির্দেশ। যথা—'কর্ণছগক্ষিক্রাডাণে-স্ত্রিয়াণাং'—ইত্যাদি (১৮৬)।

এই প্রকারে চলিতে হইবে—এইরূপ কধনের নাম **উপদেশ।** যথা— 'ধর্মার্যে'।'—ইত্যাদি (১।১)।

অমুক ব্যক্তি এই বিষয়ে এই প্রকার উক্তি করেন—এইরূপ কথনের নাম ভাপদেশ। যথা—'মন্ত্রিপরিষদং……নানবাঃ' ইত্যাদি (১/১৫)।

উজ বিষয়ের কথাদার। অহন্ত বিষয়ের সিদ্ধি করার নাম অভিদেশ। যথা
— দস্তম্ম প্রাধ্যাতম্ব (৩):৬)।

অত্যে কণিতব্য বিষয়ের কথনদার। অন্তক্তবিষয়ের সিদ্ধি করার নাম আদেশ। যথা—'সামদানভেদ্দভৈর্বা—ব্যাখ্যাম্যামঃ' (१।১৪)।

দৃষ্টবস্তদারা অনৃষ্টবস্তর দিন্ধি করার নাম **উপাশাল**। যথা—'নির্ভপরিহারান্' ইত্যাদি (২।১)।

ষে বস্তু বলা হয় নাই, তাহা যদি উক্ত বস্তুত্ব অর্থ হইতেই পাওয়া যায়—তবে ইহাকে **অর্থাপত্তি** বলা হয়। যথা—'লোকযান্তাবিং—আশ্রয়েত' (৫।৪)।

এই ছলে 'অপ্রির ও অহিত জনধারা, আন্তার শইবে না'—এইরূপ কর্থ অর্থাপতিদারা জানা যায়।

কোন অৰ্থ যদি ছই পক্ষেত্ৰই হেতু বলিয়া প্ৰযুক্ত হইতে পাৱে—ভবে ইহাকে সংশাস্ত্ৰ বলা যায়। যথা — 'ফীণ্লুৰপ্ৰকৃতিকং'—ইত্যাদি (গা৫)।

অন্ত প্রকরণের সহিত অর্থ সমান হইলে, ইহাকে প্রাসক বলা হয়। যথা— 'কৃষিকর্মপ্রাদিষ্টায়াং'—ইডাাদি (১৷১১)।

ক্ষিত বিষয়ের বৈশরীত্যধার। কোন বস্তর নির্দেশ করিলে, ইহাকে বিশর্যার বৃদ্ধা হয় বধা—'বিশরীতং'—ইত্যাদি (২)১৬)।

বাহাদারা কোন বাক্য সমাও করা হয়, তাহার নাম বাক্যেশেষ। যথা— 'ছিল্লপক্ষ্য'—ইত্যাদি (৮।১)। এছলে উছ 'শকুনের' এই পদটি বাক্যশেব বলিয়া ধার্য হইবে।

অপারের বাঞ্চা যদি প্রতিবিদ্ধ না হয়, তবে ইহাকে **অনুমত** বলা যায়। বথঃ
— 'পক্ষাব্রক্তং প্রতিগ্রহঃ'— ইত্যাদি (১০)।

সিদ্ধ বিবরের অভাধিক ধ্পনার নাম ব্যাখ্যাল। ধ্বা—'বিশেষা সম্পানাং ---ভঙ্ক দৌর্বস্যাৎ (৮।৩)। অন্তর্নিহিত গুণধারা কোন শক্ষের সিদ্ধি করার নাম সির্ব্বচন। যথা— 'রাস্ত্রতানং শ্রেয়দ ইতি' (৮৪১)।

দৃষ্টান্তসহকারে বলি দৃষ্টান্তের নির্দেশ করা হয়, তবে ইহাকে **লিঘর্শন বলা** হয়। যথা—'বিগৃহীতো হি জ্যায়সা'— ইত্যাদি (১।৩)।

সামান্তভাবে ব্যাপক কোন বিধির কথা বলিতে গিয়া যদি ইহার সঙ্কোচ করা হয়, তাহা হইলে ইহাকে অপবর্গ বিশা যায়। ইত্যাদি "নিত্যমাগন্নমরিবলং"— ইত্যাদি (২)।

যে শক্তের সংকেত অন্ত কোন বস্তুতে প্রবর্ত্তিত করা হয় না, ডাহাকে স্বসংক্ষা বলা হয়। যথা—'প্রথমা প্রকৃতিক্তক্ত'—ইত্যাদি (৬।২)।

ধে বাক্যের প্রতিধেধ করা হইবে ইহার নাম পূর্ব্বপক্ষ। যথা— 'বাম্যমাভ্যবাসনয়োঃ'—ইত্যাদি (৮।১)।

সেই পূর্ব্বপক্ষের নির্ণয়বিধানকারী বাক্যের নাম **উত্তরপক্ষ**। খথ:— 'ভদায়স্তত্মাৎ'—ইত্যাদি (৮৮১)।

যে বিষয় দর্ব্ধদেশে বা দর্ব্বকালে প্রযোজ্য, অর্থাৎ যাহা ত্যাগ করা চলে না. ভাছাকে একান্ত বলা যায়। যথা—'তন্মান্নথানং'—ইত্যাদি (১৮১৯)

পরে এই প্রকার বিধান করা যাইবে এইরূপ বলার নাম অলাগভাবেক্ষণ। যথা—'ভূলাপ্রতিমানং'—ইত্যাদি (২০১৩)।

ইভিপূর্ব্বে এট প্রকার বিধান করা ইইয়াছে, এইরূপ বলার নাম অভিক্রান্তাবেক্ষণ। যথা—'অম্বিসম্পদ্ধতা পুরস্তাং'(৬।১)।

অমুক কার্য্য এইভাবে করিতে হইবে, অভথা করিতে হইবে না—এইরূপ বঙ্গার নাম মিয়োগা। বথা—'ভন্মাদ ধর্মমর্থং'—ইভাাদি (১০১৭)।

অমুক কার্য্য এইভাবে করা যাইতে পারে, অথবা এইভাবে—এইরূপ বদার নাম বিকল্প। যথা—'ছহিতরো বা ধর্মিটেযু'—ইত্যাদি (৩।৫)।

অমুক কার্য্য এইভাবেও করা বাহ, আবার এইভাবেও করা বায়—এইরূপ বলার নাম সমুক্তর । যথা—'অসঞাতঃ'—ইত্যাদি (৩া৭)।

যে কৰা উক্ত হয় নাই, ভাহার উক্তিকরণকে উহ্ন বলা হয়। ৰথা— 'ৰখাবদু দাভা প্রতিপ্রহীতা চ'—ইভ্যাদি (৩০১৬)।

এই প্রকারে এই শাস্ত্র এই সমস্ত তত্ত্রযুক্তিবারা মুক্ত আছে। ইহলোকের ও পরলোকের প্রাথ্যি ও পালনবিধরে এই শাস্ত্র বিহিত হইরাছে। ১।

এই অর্থশান্ত (লোকের মনে) ধর্ম, অর্থ ও কাষের প্রবৃত্তি ঘটার ও

ইহাদের রক্ষাবিধান করে এবং অর্থের বিরোধী অধক্ষসমূহের নাশ করিয়া থাকে : ২।

ষিনি কোধবশবর্তী হইয়া শস্ত্র, শাস্ত্র ও নব্দরাজগতা ভূমি শীষ্ট উদার করিয়াছিলেন, তিনিই ( অর্থাৎ কোটিশ্যই ) এই শাস্ত্র প্রশায়ন করিয়াছেন ॥ ৩॥

কোটিলীয় অর্থপান্তে তত্ত্বজ্ঞি-নামক পঞ্চদশ অধিকরণে প্রবম অধ্যায় ( আদি হইতে ১৫০ অধ্যায় ) সমাপ্ত।

## তন্ত্রযুক্তি-মামক পঞ্চদশ অধিকরণ সমাপ্ত।

শাস্ত্র-সমূহের ( অর্থবিষয়ে ) ভাষ্যকারগণের মধ্যে বছপ্রকারের বিপ্রতিপত্তি (বিবাদ ) দেখিয়া, বিকুপ্তপ্ত স্বয়ং স্ত্র করিয়া ইহার ভাষ্যও রচনা করিয়াছেন ॥ ৪ ॥

কোটিলীয় অর্থশান্ত সমাপ্ত।

# প্রাচীন দওনীভি ও অর্থনীভিবিষয়ক কয়েকটি পারিভাষিক শক্ষের অভিধান

अरम्भथ-इद्यादा ভारवांशे वनीवका- अपिति-ए विक्की नानात्वराह्म দির যাভারাত পথ। অঙ্কণসঞ্চার —রাত্তির যে-ক্ষণে পথসঞ্চার অদিভিন্তী—নানাদেবতার ছবি निविक्त (म-क्रांप मकात्र। অক্লপটল -- গাণনিকদিগের দলিল ও निवस्त्रश्चकां नि त्रांथिवात्र श्वान । পুস্ককাদির রক্ষাস্থান। অকৃত (ক্ষেত্ৰ)—যোক্ষেত্ৰ অগ্ৰহত থিল ় ভূমি অৰ্থাৎ বাহা কৰ্ঘণোপৰোগী

প্রতিমা দেখাইয়া ভিক্না করে। দেখাইয়া জীবিকাকারিণী শ্ৰীলোক। অধিকরণ—শাসনকার্ধ্যের বিভাগ-दिस्थितः অধিবিদ্রা—দ্বিভীয়দারপরিগ্রাহীতা স্বামীর পূর্ক বিবাহিতা স্থী। खरियान--- यनयान ।

# विरमय स्ट्रेबा

এই প্রদেশর শেষাংশে ৩৩২ প্র্ডাভেকর পর হইতে ভুলক্তমে ৩৩৭...ছাপা হইরাছে: স্তরাং ম্দিত সংখ্যাগ<sup>্লি</sup> ৩৩৩ চঠতে ৩৬৫ পর্যত হইবে।

আধারহাত্যকোশ—রাজার আদারবর্তী প্রধান আমাতা হইতে উখিত কোশ বা বিরাগ।

অন্তর্জি — বে চুর্বংশ রাজা বিজিপীয়ু ও অরিয় মধ্যবর্জী ইইয়া অবস্থিত। অন্তর্বংশিক—প্রধান অন্তঃপুরয়ক্ষক। অপদান — অবদান বা প্রশাস্ত কর্ম।

অপনর—মাধ্যকর্মধার। বোগক্ষেবের অনিশক্তি; বাড্গুণ্যের অবধা-প্রয়োগ।

অপবিদ্ধ— মাতাপিতার পরিত্যক্ত ধে পুত্রকে অল্প কৈছ সংস্থার করিয়া পুত্ররূপে গ্রহণ করে।

ব্দশনর্প---ভগুচর।

অপদার—রাজকলতের বা অভঃপুরস্থ রাণীদিগের স্থান; প্রসাদি হইতে অবসরমত নির্গরনের পথ।

অপ্ৰারণ – স্থৰণীদি লারক্রয়ে অলার-ক্রয় প্রক্ষেপ কলিয়া স্থৰণীদি প্রাইয়া নেওয়া।

অশহার—প্রাথ .আর খাডার না শেখা, নিবছ ব্যর না দেওরা ও হন্তগত নীবীর অপলাণ—এই তিন প্রকার দোবের সংক্ষা।

আপোহ — তর্কের গোবর্জ পঞ্জের পরিত্যাগ।

শ্বনাথবাৰছায়— বে ব্যক্তি শাইনসকত ব্যবহারবিধিয় বর্গ প্রাথ হর নাই। শ্বনজন্দ শুহে বাদ করার ভাড়া মূদ্য । শ্বনজন্দ শুহের ভাড়াকিয়। আৰক্ষেতা - গৃহের ভাজাদার যাগিক। আবনিধান - গৌরজানপদদিগের নিকট রক্ষার্থ ধনাদি গদ্ভিত রাবা।

অবমৰ্ক — শত্ৰুত্ৰপ্ৰাহণ।

ব্দবক্ষ (পূত্র)— বে রাজপুত্র পিতার শারিধ্য হইভে পূরে নির্কাশিড হইয়া ক্ষম আহে।

অবক্ষণ—সুপ্তাৰন্ধার দেনার আক্রমণ।
অবস্থায়—(উৎকোচাদির লেপ্তে)
করাদি-গ্রন্থার দিয় কালাদির
অভিক্রম।

অবস্থাবণ – শত্রুর দেশে অর্থাদি সরাইয়া দেওয়া।

অভিতাক্ত—রাজদণ্ডে দণ্ডিত বধা-পুরুষ।

অভিশপ্ত—অপরাধের সংশহ করিয়া অভিগৃহীত জন।

অভ্যন্তর কোশ—রাজার মন্ত্রিপুরোহি-ভাদিবারা উৎশাদিত অনর্ধ।

অভারপত্তি – কাছারও বিপদের স্মরে সাহায্য-প্রবান।

অনিত্রবল — রাজার নিজ শত্রুর দেন।। অনিত্রসম্পৎ — হাজার অনিত্তের প্রধান দোধসমূহ।

অমাত্যসম্পাৎ--- অমাত্যগণের প্রাকৃতি গুণসমূহ।

**चर- रेटेक्टन** इ (वाग)

পরিপ্রকৃতি—বিজিনীবুর নিজ রাজ-মওলে প্রবিহত প্রনান্তর ভূমি-নংলয় রাজা (বিনি উটাই পরি বা শক বিধেচিত হয় )ওু≍ীচক অরিমিত্র—বিক্ষিপীরুর সন্মুখদিকে
মিত্রের অনস্কর ভূমির অধিপতি
(বিনি বিক্ষিপীরুর অরির মিত্র)।
অরিমিত্রমিত্র—বিক্ষিপীরুর সন্মুখদিকে
মিত্রমিত্রের অনস্কর ভূমির অধিপতি (বিনি বিক্ষিপীরুর অরিমিত্রের
মিত্র)।

অর্থ-আদালতের বিচার্যা বিবর। অর্থজিবর্গ-অর্থ, ধর্ম ও কাম। অর্থদ্যণ-অর্থের ক্ষতিকরণ। অর্থশাল্প-পৃথিবীর লাভ ও পালনের উপার-নিরূপক শাল্প।

অর্ধনীতিক—কোন ক্ষেত্রে উৎপন্ন ফসলের অর্ধভাগ নেওয়ার স্বীকারে বপনকারী।

ষ্মাকৰ্ম স্কাদিতে শ্বভূমি ও পর-ভূমিতে অথেব কার্যাবলী।

আৰব্ছি—সেনাকভূত অৰথারা রচিত বৃহি।

আখাধ্যক্ষ-নাজকীয় আখশাদার বাব-জীয় আখকার্য্যের পরিদর্শক প্রধান সাজপুরুষ।

অপ্রবিজয়ী — হর্বলভর রাজার উপর আক্রমণকাতী বে রাজা শক্তর ভূমি, দ্রেবা, পুত্র, দার ও তদীয় প্রাণহরণবারা তুই হয়।

অপামিবিজয় —পর্যাব্যের ব্যবহার-কারীর থারা ভদ্তব্যবিজ্ঞান। আক্সাধ্যক্ষ —ধনিবিভাগের অব্যক্ষ। আক্সিক্ষ —ধাক্ষরে নির্ক্ত কর্মকর। আকাশঘোধী—ছর্পের প্রাকারাদি উচ্চ-ভানে, অথবা ব্যোমধানে, অ্বভিত হইয়া যুদ্ধকারী।

আ ক্রন্স—বিজিক্টার্র গল্চান্দিকে পার্ফি-গ্রাহের অনস্তর ভূমির অধিপত্তি (বিনি বিজিকীর্ব মিক্ত)।

আক্রান্দানার—বিজিগীবুর পশ্চান্দিকে পার্কিগ্রাহানারের অনস্তর ভূমির অধিপতি (থিনি বিজিগীবুর আক্রন্দের মিত্র)।

আজীব জীবিকাবা রন্তি। আটবিক—অটবীপাল, অটবীপতি; অটবী প্রদেশের রক্ষাকারী প্রধান পুরুষ।

আতিথ্যত্তম-প্রদেশ হইতে স্থানত প্রানহমে ধার্য শুরু।

আত্যয়িক (কার্য্য)—সমস্থাপূর্ণ বে কার্য্য শীন্ত্রসম্পাদনীয় (জরুরি কর্ম্ম)। আ্রসম্পন্ন—রাজাদির উপধোগী গুণ-সম্পন্-বিশিষ্ট ব্যক্তি।

আত্মোপনিধান—আত্মদমর্পণস্টক সমি প্রয়োগ।

আধিবেদনিক—স্থামীর বিভীয়দার-পরিগ্রহণকালে প্রথম খ্রীকে প্রদন্ত ধনাদি।

আহীক্ষিকী — অধ্যাত্মবিচ্চা; মতা**ত্ত**মে, হেত্তবিস্থা।

আপূপিক-শেইকাৰি-বিক্লেণ্ড। আবসীয়স-শক্ষরাজার অপেক্ষা অবলী -গ্লান্বা সুর্বাস্থ্যসভার বিভিন্নীর গ্লান্থার করশীয়বিধি।

আৰঃক্লু-( পুত্ৰের পরিণয়ার্ব ) কম্বা-SET ! আবেশনী—পর্ণাদির কারু। আভিগামিক ( ৩৭ )-- রাজার খে-সব ওণ প্রজাজনকে আকুষ্ট করে। আত্যম্ভর শুক্ক—ছুর্গে ও নগরে উৎপুর প্ৰাস্থাৰ ধাৰ্যা গুৰু। व्यक्ति—दावकर्ष नियुक्त वा व्यक्ति-কারী পুরুষ। আর্থাগার--- রাজকীর অন্তর্গাদির নিচরস্থান। আয়ুধাগায়াখ্যক — অন্তপঞ্জালার শ্রবান অধিকারী রাজপুরুষ। व्यक्तिक्ष-भनागरमत्र द्यशान सान । **আরশরীর-- ছাজার আ**রের দকা।

জ্ঞান্ত্রম — বন্ধচারী, গৃহন্ধ, বানপ্রন্থ ও পরিবাদক (বা যতি — এই চারিটির নাম।

আরালিক--প্রমাৎসাদির বিজ্ঞেতা।

**জাত্তহতক**—যে হঠাৎ বা **জকা**ণ্ডে

মৃত্যুৰ্ধে পতিত।

আদন—বাড্ গুণার অঞ্জম গুণ (স্কি প্রস্থৃতির উপেক্ষা বা অকরণ অবদ্ধন করিরা নিক্রাজ্যে খির-ভাবে অবস্থান); ইহা কথন কথনও 'স্থান' ও 'উপেক্ষণ' লন্দের পর্যারবাটী।

আলার—আনক রাজনিত্র বা রাজ-ক্রমান্তর্গার আগমন। ক্রমান্তর্গার আজ- আহার্ব্যোদক-বে স্থানে ধর্বার ক্ষদই প্রবড়ে সংগ্রাহ কবিয়া সাধিতে হর। আহিও—আধিতে বা বন্ধকে আবহ জন।

উক্ষণিক—প্রশ্নোভরধার। ভবিত্তৎ-শুভাশুভবকা।

উত্তৰসাহসম্প্ত --- ১০০০-পণাত্মক অৰ্থ-দপ্ত ।

উথান – কার্যো উত্তোগ ( পালিভাবার অপ্রযাদ বা অপ্রযাদ )।

উৎসব—ইক্লোৎসব, বসস্থোৎসব প্রছৃতি সমাজে গ্রাচলিত আনন্দোলাস।

উৎসাহশক্তি—রাজার যে শক্তি তাঁহার উৎসাহাদি ব্যক্তিগত গুণ হইতে সমুভূত।

উদয়—দ্বাজপ্রাণ্য করাদি ধনের উৎপত্তি।

উদান্থিত—উদাসীন সম্যাসীক্রপ গুচ-পুরুষ বিশেষ।

উদাসীন — উর্দ্ধে আসীন অর্থাৎ সর্ব্ধাপেক্ষা বসবতন বে রাজা, বিজিপীর,
তদীর অরি ও নধ্যমরাজার শ্রকৃতি
হইতে বাহিরে অবছিত ও তদপেক্ষার বসবতর এবং বিনি এই
তিন নরপতিকৈ সংহত ও অনংহত
অবস্থার অস্থাহ দেখাইতে ও
কেবল অসংহত অবস্থার নিপ্রহ
দেখাইতে স্বর্ধ ।

উণসভ—'আৰি আশদাৰ পূৱা' কৰা 'এই পূৱ আশবাৰ পূৱা' কালেন্তে

এটকণ উভিযার। স্বরং উপনত বা বাছবজনমারা অন্তের হতে সম্পিত পুত্র। ক্তপদাত-বিবাদি-প্রয়োগদারা বধ। উপস্থাপ---কুমত্রপাদ্ধার। ভেদবিধান। উপহা---ছল প্রয়োগদারা (ধর্ম্বোপরা, অর্থোপরা, কামোপরা ও ডবোলধা---এই চারিটি ইহার ভেদ)। উপনিধি-শিলমোহরযুক্ত বন্তাদিলারা আবন্ধ দ্ৰব্য, বাহা ভাস বা নিক্ষেপ-রূপে অক্টের নিকট গচ্ছিত রাখা रुव । উপনিপাভ—দৈধী বিগদ। বিক্লৰে উপনিবৎপ্রযোগ -- শক্রর গোপ্রে অগ্নিবিবাদির বাবছা। রাজকর্মচারী-উপযুক্ত-নামক দিগের উর্দ্ধতন অধিকারীর নাম। উপশ্বর—গৃহের প্রয়োজনীর উপকরণ-সামগ্রী বা আসবাবপত। উপভান-জাজার দর্শনার্থী জনগণের दिर्ठकथाना यद्र ; आष्ट्रानमञ्जा উপদ্বায়িক—হব্বিপ্রভৃতি পশুর উপ-স্থানে বা পরিচর্ব্যায় নিষ্ক্ত পুরুষ। উপাংগুৰও—গুগুছভা।। উলাংগুৰৰ-পঞ্জহত্যা। **ड्रान्यम् - अहे नम्हि कथन कथन**ड 'আসন' ও 'ছান' শবের পর্যায়-ৰাচী হয়, ভৰাৎ বাড্ভণ্যের

पंडचन चन :

উভয়বেডন —গৃড়পুক্ষববিশেব, খে নিক রাজার বেডনভোগী হইরাও. ভাঁহার অক্রমোগনে শত্রুবাজায়ও বেডনভোগী হইয়া নিজয়জার খার্থে কার্যকারী। উরক্ত —সেনার মধাভাগ । উর্ণাকার্ক — পশমীদ্রবার শিল্পী উহ—ভাতার্থ বিষয়ের উপপদ্ঠিচিশ্বন একবিজয় -- সহায়নিবশেক শক্তর । দিয়া একমুখ —একহাত একচেটিয়া-ভাবে বিৰুয়াদি। একৈন্ব্য-একই বাজবংশসভূত বাজ-পুত্রের আধিশতা। ঐরদ—নিজের পরিশীতা জীতে স্বরং উৎপাদিত পুত্ৰ। ঠদনিক-প্ৰায়বিক্তেতা। গুণনিবদিক—শক্তজ্যোপারের বছক্ত-मक्कीय । কল-সেনার পশ্চভাগের ছইপার্য। কটাখি-মারণকর কাহাকেও খাস্থারা মুড়াইয়া ভাহাড়ে বে অন্তি দীপিত করা হয়। कन्द्रक--बाक्षविद्धांथी नथाई-नक्ष्मूक ব্যক্তি। क्केक्ट्यासन-नमात्य गहाता क्रोबी-

দিবারা লোকণীড়ক, সেই সকল

ক্টকডুব্য

বিধিব্যবস্থা ৷

জনের শোধনার্থ

কদৰ্য্য —বে ফুণণ ব্যক্তি নিজকে ও নিজের ভূড্যাদিকে কট দিরা নিজ অর্থ বাডায়।

কন্তাপুর — রাজবাটীর বে অংশে অবি-বাহিত রাজকন্তাগণের বাসস্থান। কয়ণ— দশিলাদি-লেখক (কেরাণী)। কর্মান্ত—কারধানা।

কর্মনিবন্ধা — শিল্পকর্মের আগণ বা ক্রয়-বিক্রমের বন্ধশালা।

কর্ণন-কইপ্রদান।

কর্ব---১৬ মাব ( সোণার )।

কর — যুগ্য (হন্তিপ্রভৃতি বাহন) ও কর্ম-কর পুরুষদিগের অপচর; অল আরের অবস্থায় অধিক বার।

কানীন—বিবাহের পূর্বে কন্তা থাকার অবস্থায় তাহা হইতে প্রত্ত পূত্র। কাপটিক—কপটর্বতি ছাত্ররূপ গ্রু-পৃক্ষবিশেষ।

কারণিক—গণনাবিভাগের ক্সন্ত কর্ম-চারী :

কাল — ভূলকৰ্মকারী।

কার্জান্তিক—কৃতান্ত বা থ্যের পট দেখাইয়া জীবিকাকারী; দৈবজ্ঞ; দৈবচিন্তক।

কার্ম্মটিক (বা বার্ম্মটিক)—২০০শত ঝামের উপর রাজকর্ত্বক শাসনভার দিয়া নিবেশিত ক্রে নগরবিশেয।

কাৰ্যান্তিক—রাজ্যের কর্যান্ত বা কার-থানা সমূহের তথাবধানে নিবৃক্ত বুধ্য সামপুক্ত — কটাদশ নহাবাত্ত থা তার্থের অক্তম । কার্ষিক — গণনাবিভাগের কর্মচারী।

কীত(পুত্র)— গুলাগানসহকারে পিতা
মাতা হইডে ধবিদ-করা পুত্র।
কুপ্য—সারদাক, বেবু বল্লী, বৰ, বজ্জু,

ওববি, বিব, লোহধাতু, পশুচর্দ্দ
ইত্যাদি ক্রবা।

কুপাগৃহ-সারদাক্ষঞ্জতি ল্রবাসমূহের নিচমন্থান।

কুপ্যাধ্যক—বে প্রধান রাজকর্মচারী কুপ্য অর্থাৎ সারদাক্ষ, বেণু, বল্লী প্রভৃতি ক্রব্যের সংগ্রহকার্য্যে ব্যাপুত।

কুমারপুর—রাজবাটীর যে আংশে অপ্রাপ্তব্যবহার রাজকুমারগণের বাসভান।

কুমারমান্ডা — পট্টমহিনী ব্যতীত রাজার অন্ত গণী।

কুমারাধ্যক্ষ-রাজকুমারগণের তথা-বধানকারী অধ্যক্ষ।

কুত্তীপাক - তথ্য কটাছে ভাজা--- দণ্ড-বিশেষ।

কুলসংঘ— বছপুত্তের সংঘ ( ঋণবা, কুলত্ব বছ জনের সংঘ )।

কুল্যা—ভাগু বা উৎপদ্ধস্ববাদির বাহনোপ্যোগী জলপ্রশালী বা থাল।

ক্টরূপ---ক্পট-রুক্:।

কৃটরাশকাহক --বে জালী টাকা নির্দ্ধাণ করে।

क्मनय---नदीशक्षित्र/जीववर्षी नंत्र ।

कृष्ठेयुक्ता-कशके निन्नासादत्र। কৃটযুদ্ধ—অনিন্দিষ্ট দেলে ও কালে হল-भूर्खक रुक्त । ক্টপান্ন --জাল গত্ত বা কপট-লেব। कृष्टेश्वावनकाश्वक---(य अक्षमभीटन पर्वन)-नवस्य मिथाकथा समावः। কুটসাক্ষী —কপট সাক্ষণারী। কৃ**টপুব•ি**ব্যবহারী — বে অপ্ত ধাতুর সংযোগে স্বর্ণের রাগ নই করিয়া ভাহা ব্যবহার করে। কর্মণের কুন্ড (ক্ষেত্র)—বে কেত্ৰ উপৰোগী করা হইয়াছে। কুডা—উপজাপধারা বাহাকে বশে অনুনা সক্তবপর নর ১ -ফুল্লিমমিল—বে বাজা বিজিগীবুর একান্তর ভূমির শ্র্মিণতি এবং বিনি নিজের ধন ও জীবিকার জন্ত ভাঁছার আশ্রান্ত অবস্থিত। कृत्वियम्बद्धः — विक्रिगीयूतः व्यनस्वत्र स्थितः ৰে অধিপতি শন্তং উচ্চান বিৰোধ গামী, কিংবা অপরভারা ভাঁহার विद्यार छेरलाचन करान। **দুও--**গ্রামাদি ছইতে গ্রহণীয় নির্দ্দিট

গামী. কিংবা অপরবার। তাঁহার বিরোধ উৎপাদন করান। দুগু--গ্রামাদি ছইতে গ্রহণীর নির্দিট কর। ক্ষেত্রখ-নগোত্র বা অন্তগোত্র পুরুব-বারা অল্পের ক্ষেত্রে বা ত্রীতে জাত পুত্র। ক্ষেত্রী--বে গভি নিজ ক্ষেত্রে বা ত্রীতে অল্পের বারা পুত্র উৎপাদন কর্মার। ক্ষোক্রমণশং--রাজকোবের প্রস্তুট্ট শুণ-স্বৃত্র।

কোৰাভিস্ংহরণ-- বাঞ্চকেবের ক্বজুতার অর্থসঞ্জের উপার অংব-শম্ম করা। কোবগৃহ--বাঞ্চার স্থবরস্থাদির নিচয়-কোষসক – রাজকোবে করাদির অঞ্চান বা অপ্রবেশ। কোঠাগার---রাজসরকারের ধান্তাদি খান্তসামগ্রীর নিচয়স্থান। কোঠাগারাখ্যক – রাজকীয় কোঠা-গারের বা নিভাপ্রয়োজনীয় খার্জা-দিরকাগ্ছের জন্ত নিযুক্ত প্রধান অধিকারী। কৌ শারভূতা — শিশুচিকিৎনক : কৌশিক-সর্পপ্রদর্শনপূর্বক কারী ব্যালগ্রাহী। কেশিকন্ত্ৰী-নৰ্পপ্ৰাহীয় ন্ত্ৰী। वनकरहारी-**ভূ**মিডে बाउ ক্ষিয়া দেখান হইতে যুক্কারী। ধনিকৰ্ম-ধনিধ আবিভার ও ধনিক দ্ৰব্যাদির শুবিকরণ। খশ---ধান্তাদি নিক্স করিবার স্থান-বিশেষ। ধল্ডুমি – ধান্তবগনের স্থান। গণিকাধাক পণিকাদিগের করণীর 🗣

বৃত্তির পরিদর্শক প্রধান রা**কণ্কর**।

हिनावनपत्राकादीनित्तव क्व वा

41

গর্ভসংস্থা-- গর্ভিশীর বাসবোগ্য স্থান।

গাণ্নিকা - গাণ্নিক

चदिकारक गर्जा ।

গৃচ্ছ — মান্তবাদ্ধবের গৃছে বিদা নিয়োগে অক্ত কাহারও ছারা গৃচ্-ভাবে উৎপাদিও পুত্র । গৃহপতিক-বাজন — কবিজীবী গৃহছের বেশধারী গৃচপুরুষবিশেব । গাপ— সমাহর্তার অধীন পঞ্চামী, দশগ্রামী প্রভৃতির কার্যাপরিদর্শক রাজপুরুষ; নগরের অংশবিশেবে নিযুক্ত রাজপুরুষেরও এই নাম , সংগ্রহণ প্রাকৃতি ছোট ছোট নগ্রের শাসনাধিকারী।

গোধাক — সাজার ত্রকে গবাদি প্রত্নর

তথাবধারক প্রধান রাজপুরুব।
গোপুর — হুর্গ বা নগরের ছার।
গ্রহণ - শন্ধার্থের অবগ্য।
গ্রামক্ট — গ্রামধুখা।
গ্রামক্তক — সমগ্র গ্রাম হইতে গ্রাপ্ত
বেজনের ভোগকারী গ্রামমুখা;
গ্রামাধিকারী; মতান্তরে, গ্রামের
স্কৃতিভোগী কর্মকর।

আৰিক -- আমসুখ্য বা আমণাল।
আৰম্বানী---আমের অধ্যক্ষ।

ক্রম্মানী (বল বা সেনা)--- হন্তী, অধ্য,

রথ ও পদাতিক--- এই চারি
আকার মেনা।

ইবিশ্ব—বেশ্যান্তর, লোকাচার প্রকৃতি ; অনুবর্তিক স

চলসন্ধি---অবিখননীয় খলিয়া যে সন্ধি **हक्त सः व्यक्ति । ठक्कान - एवं नाश्चित्र अक्षादन अक्षित्र**न বেশী থাকে নঃ ভৰ্মাৎ যে নিবছঃ এদিক ওদিক বুর্ণনাশীল। **ठक्क १५ -- भक्**षेश्या भ्रश् । চক্ষবৰ্ত্তিক্ষেত্ৰ—ধে বিশাপ ভূৰও চক্ষ-বৰ্জী বা একছত্তাধিপতি রাজার অধও শাসনভূক। চাতুরভ--চতুঃসমুদ্রাভ পৃথিবীয় ভাণী-चंद्र । চারক - সংরোধগৃহ বা হাজতখানা। চাররাত্রি— যে-রাত্তিতে অবাধে সঞ্চারের অহুমতি প্রদন্ত থাকে। চালিজ-প্রচলিভ সমুদাচার বা প্রথা অর্থাৎ তৎ-তৎ দেশে প্রচলিত রীভিনীভি।

চার্যা। — সঞ্চরণ-পথ।

চিত্রবাত — ক্লেশদানসহকারে মারণ।

চোরবাত্ত্ — পরবর্তিকালের চোরোজর
শিকনামক চোকিদারী কর।

চোরবাত্ত্ব — চোরোজরশিক রাজপুরুষ।

হারাপ্রমাণ — পুরুবহারার পরিমাপদারা

সময়-বিভাগ ।

অনগণসম্ভ — ভনগদ বা রাষ্ট্রের একট

ভণসমূহ।

অথাক্রিক — সংবাদাধির ব্যাক্রের

भोकविक—गरवानावित बहसकार्याः वृत्रत्वानं गारतः हान्तिः। गर्छानकः भोनी पूक्ताः। ব্যাল-কোন হানে বাস্ব্যকারী লোক ও বিশয়চতুম্পদ **अः**शानिकः । काक्नीबिर --विश्वत विकिश्यक । আক্লবিদ-বিববিদ্বাপট্ অথাদি পশুর চিকিৎসক ৷ জায়ান্ – শত রাজার অপেকায় অধিক **अख्यि ७ व्यक्ति** निकितिर्भिष्टे द्राष्ट्रा । **७मब---छेशश**र वा विश्वत । ভাষরিক—বিপ্লবকারী ৷ ডিম-শ্রহাবিপ্লব। তত্বাভিনিবেশ—তর্কের গুণযুক্ত পক্ষে मनानिद्दम । ভর -- নদী প্রভৃতির ধেরাপন কর। তর্ত্ত নোকাদিখার৷ নদী প্রভৃতি ভরপের ভাজা। ভকু <del>– পুত্রকর্ত্তনের বছবিশেব (টাকু)।</del> ভাদান্বিক-প্রভাহ উপর্ব্বিভ বা পর অর্থের ভক্ষণকারী। ভাপদ-ব্যঞ্জন—মুপ্ত বা জটিল ভাপসের বেশবারী গুড়পুরুববিশেব। তীক্স—শ্রীরনিরণেক্ষ অভিসাহসী ৰশিরা পরিচিত গুঢ়পুরুববিশেব। ভূত্ৰবায় —স্চিলিয়ী। कृतीरबुद्ध--विवातित योग ७ गृहगूक्र-ৰেহ উপভাপৰালা সাহিত ঘাতন বা বারণ : বছপার সোপনমূক ; অপর मार 'यहपूष'।

सही---वन, नव्:

रिका ।

देखिरिक -- खन्नोविक्राविश দওকর্ম--অপহাধীর উপর নানাপ্রকার ় শাহীর ক্তবিধান। দওনীতি-বাজনীভিবিছা! দওপারুক্ত – কাছারও সম্বন্ধে দেছম্পর্ল, দাওাডোলন প্রচারধারা পুষ্ণবতা প্রদর্শন। দওপাল — সৈভবকার অধিপণ্ডি---অষ্টাদশ মহামাত বা ভীর্ণের অস্তর্গ । দপ্তসম্পৎ - বাজসেনার প্রফুট গুণসমূহ দওপ্রতিকারিনী—যে জীলোক নিজনুরূপে কর্ম কবিয়া দিখে राश्या । **লভোপনত – রাজার দণ্ড বা** শক্তির প্রভাবে বংশগভ রাজাব) বাজি। দভোপনারী—বে রাজা নিজের দও বা সেনাশক্তির প্রভাবে অপর বাজাকে चर्दान जात्मन । দ্তক্ – পিতামাভার বারা সমত্র উদক-

গ্রহণপূর্বক অন্ত পুক্ষকে কর পুরা।
দশকুলী—দশ কুলের সংবার বা
সংকৃতি।
দশক্রামী—দশ প্রামের সমাহার বা
সংকৃতি।
দশবর্গিক—দশক্ষন ভটের নারক:
দংশবোগ—দ্বাবিশেবের বে বোল
মাল্লবের উপর প্রবৃক্ষ হইলে ইহার
শক্তিতে সেই মাল্লব হর:

দাপক—বে অধিকামী দারিককে
রাজকরাদি দিতে বাধা করান ।

দায়ক—করাদির দানকামী ।

দায়বিভাগ —পুত্রগণ মধ্যে শিভূত্যালা

সম্পত্তির অংশভাগ ।

দারাদ—দার বা শিভূত্যালা সম্পত্তির

গ্রহণাধিকামী ।

ছুৰ্গঞ্জ-ভূৰ্গনিৰ্ম্বাণ।

তুর্গপাল – তুর্গরক্ষার প্রধান পর্বাবেক্ষক-অষ্টাদশ মহামাত্র বা তীর্ধের অন্ততম।

হুৰ্গদশ্বং—হুৰ্গের ( অর্থাৎ পরিধাদি-বেটিত হুৰ্গম দেনানিবাদ বা পুরাদির ) প্রকৃষ্ট গুণদমূহ।

নুক্ত—রাজার প্রতি ক্রোহাচরণ-দোবে প্রতি ব্যক্তি।

দৌবারিক--রাজফুলের প্রধান প্রতী-ছারী – অষ্টালশ মহামাত্র বা তীর্থের অস্ততম।

বৈবীভাব — সন্ধি ও বিপ্রছের সমকাশীন উপবোগঃ অখবা, একই শক্তর সহিত প্রকটভাবে সন্ধির ব্যবস্থা ও প্রাক্ষরভাবে ফ্রোহাচরপের ব্যবস্থা করা।

বৈরাজ্য—বে রাজ্যের ছইটি রাজা শাসক।

গৃত—অক্ষকীড়া প্রভৃতি, জ্রাবেল।।
প্রব্যপ্রকৃতি—হাজ্যের প্রাক্তের ববো
হাজা ও প্রহুৎ ব্যতীত কোবাদি
অপর পাঁচটি প্রকৃতি।

ক্লব্যনকৰ্ম সামন্ত্ৰকাণিক বন হইতে তৎ-তন্দু বোৰ আহ্বণাণিন ব্যবস্থা-করণ।

ক্রোণমুখ--- ৪০০ বানের উপর শাসন ভার দিয়া নিবেদিত উপ-নগরবিশেষ।

ধনিক—ঋণপ্রয়োগকারী ধনী ব্যক্তি; উত্তর্থ

ধরণ – রূপার ১৬ মাব ; জ্রামক রূপার টাকা ( সম্বতঃ এক স্থবর্ণের যোড়শাংশ)।

ধর্মবিজয়ী—হর্কলতর রাজার উপর আক্রমণকারী যে বলবন্তর রাজা শুক্রর আত্মমর্শণৈ তুষ্ট হয়।

ধর্মদেজ্—ধর্মার্থে বিশ্বষ্ট ভূমি-দেজ্-কুপাদি।

ধৰ্মস্থ — ধৰ্মাসনোপ্ৰিষ্ট ব্যবহান-নিৰ্ণা-য়ক বিচায়ক ( বিশেষতঃ দেওয়ানী মামলার )।

ধর্মস্থীর —ধর্মস্থ বা দেওরানী বিভাগের বিচারকদম্মী ব্যবহারদমূহ।

ধারণ—গৃহীত বিষয়ের অবিশ্বরণ। ধারণিক—অধ্বর্ণ।

নয়—মাহুৰ ক া খোগ ও ক্লেমের নিশক্তি।

ननीमाञ्क--- (य काटन क्विकार्टरात्र क्छ नर्वना मनीकन गोकता पात्र ।

নাগরিক—নগরকার্ব্যের প্রিক্তেক্

নাবধ্যক - শাক্তবীর নৌবিভাগে নৌকাভাছা ও তরদের প্রভৃতির আদারকার্ব্যের পর্যাবেক্ষণকারী প্রধান রাজপুরুব।

নায়ক — দশ দেনাপতির উপর প্রাথ্যধিকার দেনাবিভাগীর প্রধান কর্মচারী : অষ্টাদশ মহামাত্র" বা তীর্থের
তালিকার রামারণ ও মহাভারতে
এই শক স্থানে 'নগরাধ্যক্ষ'-শব্দের
ব্যবহার পাওরা ধার। তবে কি
শক্ষটি অর্থশাস্ত্রের তালিকার
'নাগরিক' হইবে ?

নালিক)—২৪ মিনিট-পরিমিত সময়-বিভাগ।

নাষ্টিক – নিজের কোন প্রব্য নই বা অপহত হইয়াছে বলিয়া যে ব্যক্তি অভিযোগকারী।

নীবী — আর হইতে বার বাদ দিয়া যে অর্থ অবলিষ্ট ধাকে; মূলধন অর্থেও ইছা ব্যবহাত হয়।

নৈমিত্তিক—নিমিত্তর্গনিধার। শুক্তশংসী।

নিক্ষেপ —কাক্ষ প্রভৃতির নিকট অপরা-বাদি নির্মাণের জন্ত হত স্বর্ণাদি। নিব্দি-ভূষ্যাদিগর্ভনিহিত স্ল্যবান্ ক্রব্য।

নিচর —নিভাব্যবহার্থা তৈলগবণাদি জ্বোর দক্ষা।

নিবায়ক—বাজধনগকক। নিবছক—হিনাবপুৰকের সেধক। নিবন্ধপৃত্তক—হিসাব লেখার খাতাপত্ত। নিবেশন— যুতগতিকার জ্ঞ স্তর্গ গ্রহণ। নিম্নবোধী—অসময়প্রদেশে নৌকাদিতে অবস্থিত হইয়া ধূনকারী।

নিয়ামক—জলগোতচালক। নিশাস্ত - রাজবাসী।

নিজ্জ্ম— দাদাদিভাব ও কারাদণ্ডাদি ছইতে মুক্তির মূল্য।

নিজায়্যশুৰ — একদেশ হইতে নিজায়া পণ্যের নিজামণনিমিত্তক শুৰু। নিজাতন — স্ত্রীর পতিগৃহত্যাগ করিয়া পলায়ন।

নিস্টি—রাজসেধ্যবিশেষ, বাছাদ্বারা কাহারও উপর কার্য্যাদিসমূদ্ধে প্রামাণ্য প্রদন্ত হয়।

নিস্টার্থ । দৃত। — সম্পূর্ণভাবে অমাতা-গুণসম্পূদ্যক প্রথমশ্রেণীর দৃত (যাহার নিজের উপশ্রই বিবয়-নির্দ্ধারণভার স্তক্ত আছে )।

পক্ষ---দেনার পুরোভাগের ছই পার্ব। পঞ্চানী -- পাঁচ আনের স্মাহার বা সংহতি।

পণ — ভরাষক স্নপানির্মিত দি**কা** বা মুদ্রা

পণবাত্ত)---পণ্যদিং সিকার সাধারণ্যে চলাচশ ।

পণ্যপৃহ—রাজকীর পণাস্তব্যের নিচর-স্থান।

প্ৰাণ্ট্ৰ-প্ৰাণ্ডৰের সমানাৰ্থক।

পণ্যপত্স—বাণিজ্যের প্রবাসনিত্রীর ফর-বিজ্ঞরখানভূত বন্দর-নগর। পণ্যাধ্যক্ষ—রাজ্ঞকীর দার ও কন্ত পণ্য-প্রবার ভত্তাবধারক অবিকারী। পত্য—সমুদ্র ও নদীর কুলবর্ত্তী নগর বা বন্দর।

প্রকাশ্যক-শতনের বা বন্দরের গুড়াদি আদারের পর্ববেক্ষক রাজকর্মচারী।

পভিব্যহ—সেনাকজ্ত পদাতিকছার। রচিত বুয়ে।

শন্ত্যধ্যক্ষ—রাজকীর দেনাবিভাগে পদাতিদৈক্ষের ক্রিয়াপর্যাবেক্ষণে নিযুক্ত প্রধান রাজপুরুষ।

শশ্যদন—বণিকদিগের পথের খাই-ধরচ।

শধ্যস্থনরণ — স্থনভিপ্রেত পৃস্কবের সঙ্গে স্থীলোকের পথ-চলা।

পদাত্তিকর্ম-- বৃদ্ধাদিতে পদাত্তিক সৈত্তের কার্য্যবদী।

পদিক—নশটি সেনাদের, বিশেবতঃ
দশটি রথ ও হন্তীর উপর প্রাথা–
বিকার সেনাবিভাগীর কর্মচারী।

শরিখ—খেরারা বন্ধ কর বা ভাড়া (?)।
শরিবাজিকা—ভিক্কীর বেশধারিদী
গুরুচবের কার্বে ব্যাপৃতা মহিলা।
শরিবিভার্ব ( দৃত )— একপাধহীন

্পনাত্য-গুণাবলী-মুক্ত বিভীয় শ্ৰেণীয় মুক্ত, সাহার উপর কর্তব্য-বিক্যুপরিমিতাকারে প্রচন্ত আরে। শবিহাস—সম্পূর্ণ রাজকরমুক্তি। পরিহাসকর—করমুক্তির দ্রাস। শবোক্ত—মামলার বিশরীও উক্তির

পর্ পোসনকর্ম — শত্রুত্বরের চতুপার্থে সেনানিবাসন।

দোবে অপরাধী।

পরীহার—রাজলেখাবিশেব. বাছাতে রাজনির্দেশে কাছারও উপর করাদিমুক্তির বিবর নিবিষ্ট খাকে। পশ্চাৎকোপ—কোন রাজার পশ্চান্দেশে পার্ফিগ্রাছ, আটবিক ও দৃহ্যাদিবার। উৎপাদিত ক্ষর্মর্ড।

প্রকর্ম — কল্পাদিদ্বণরূপ ব্যতিচার। প্রকাশবৃদ্ধ — নির্দিষ্ট দেশে ও কালে ক্রিয়মাণ যুদ্ধ।

প্রাকৃতি—রাজা, অমাত্য, স্কৃৎ, কোষ, রাষ্ট্র, হুর্গ ও দগুনামক সাতটি রাজ্যাক।

প্রচার-কর্তব্যদম্বনীয় বিধিনিয়মাদি।

প্রাণয় — রাজকোবের অর্থকুদ্ধুতা । রাজ-কর্তৃক প্রজাসনীগে বিশিষ্ট করাদি-রূপ অর্থবাচনা।

প্রতিক্রোশ—( বান্তবিক্ররে ) মূলাবৃদ্ধির ভাক।

প্রতিগ্রহ-স্পরসম্বন্ধীর বন্ধু ও মুধ্যবিদ্যের আধিক্ষপে গ্রহণ।

্রাতিগ্রাহক—যাজকরাদির আহার-কারী।

প্রতিবদ--বিক্রমাচারী সেন্।।

প্রতিভূ-শণের বা প্রতিশ্রুতির च्या जिल्हरमत क्ल निर्क कामिन। প্রতিরোধক—অভ্যাচারী সূর্গনকারী। প্রভাতিবোগ —পাল্টা মামলা। প্রত্যাদের—খাতব্যবাজকর্ত্ত অপহত ভুষ্যাদির পুন্রাইণ। প্রতোলী - রখ্যা ( পথ )। প্রথম (বা পূর্ব্ব) সাহসদও --২৫০ পণা-ত্ত্বক ভার্থদণ্ড। श्रेनीथरान—दाखिए थथनकात्रमभ्देश इट्डिटीपि नहेश गमन। প্রদেষ্টা-ক্টকশোধনাধিকত (কৌজ-দারী বিভাগের) প্রধান বিচারক -অষ্টাদশ নহামাত বা তীর্থের ব্যয়ত্তম। প্রভাবশক্তি—রাজার যে শক্তি তাঁহার কোল-দওজ তেজ হইতে সমুভূত। প্রবহণ —শকটাদিতে व्यक्तिश्व : মভান্তবে, উন্তানভোকনাদি। প্ৰবেশ্য-শুৰ —অন্তদেশ হইতে প্ৰবেশ্য-পণ্যের প্রবেশননিমিতক শুব। প্রয়োগ – কোষদ্রবার হলে লাগাইরা ভাছা অপহরণ করা। শাসনকার্য্যে প্রশাস্থা-কারাগারের ব্যাপুত অধ্যক্ষ বা মহামাজ (মহা-ভারতের কারাগারাধিকারী বন্ধনাগারাধিকত); ৰভান্ধৰে, স্থাতি ও কৰ্মকাৰগণের সাহাবে ক্লাবারনিবেশরিভা । अभाव--- १७४१ छ वस्त्राति ७ देवनां निव , सहा चरपर्य ।

প্রহণ-ভূমিভাজনাদি ঋষু গোষ্ঠী। পাক্ষাংসিক-প্ৰমাৎসবিক্ষেতা। र्णाम्भय-- भारत हराद भव । পারতন্ধিক—পরদারের প্রতি আসক্ত: পারদারিক। শ্বান্তীগর্ডকাড পারশব —ভাক্ষণের পুত্র। পারিহীণিক – কোন ক্ষতির পূরণার্থ রৃহীত আর । পার্থ – তল্পামক আয়, নির্দিষ্ট আয়ের অভিবিক্ত (বক্তোপারধারা প্রাথ আহা। পার্ফি – রাজার বা রাজদেনার পৃষ্ঠদেশ। পশ্চান্দিকে পার্ফিগ্রাহ বিজিপীযুর অন্তঃর ভূমির অধিপতি (বিনি বিজিপীবুর শঞ )। পার্ফিগ্রাহাদার —বিশ্বিপীবুর পশ্চান্দিকে অ।ক্রশের অনস্কর ভূমির অধিপতি (বিনি বিজিপীরুর পার্ষিগ্রাছের যিতা)। পাব<del>ও—</del>বিভিন্ন ধর্মসম্প্রদায়ভূক্ত লোক। প্রালম্ভন — ( শত্রু ) প্রাবঞ্চন । বোগবিশেবের প্রস্থাপনধোগ--বে প্রয়োগদ্বারা প্রভাবাদ্বিত হইদ্না লোক নিদ্রিত হইয়া পড়ে। প্রাভিতাব্য-জামীন ছওয়া। প্রাপ্তবাবহার—বে বোড়শবর্ষীর পুরুষ ব্যব্যার্থিধির বলগারী হটিরাছে ( সাবাসক পুরুষ ) ।

প্রাপ্তব্যবহারা— যে খাদশ্ববীয়া খ্যবছাৰবিধির বশবর্ষিনী হইয়াছে। পুত্তিকাপুত্ত—'ইছার যে পুত্ত হইবে সে আমার পুত্র বলিয়া গণা হইবে'---এইরূপ উক্তিস্হকারে বিবাহে \* গ্রেদকা কলার ('পুত্রিকার') গর্ড-জাত পুত্র, যাহাকে কন্তার পিতা নিজ পুত্র বলিয়া গ্রহণ করেন। পুরমুধ্য--পুর বা নগরের প্রধান প্রধান ব্যক্তি। পুরাণচোর - পুরাতন তক্ষর। পুরোহিত-বাজার ধর্মবিষয়ক প্রধান **ऄ**लटम्रेटी । পুষ্ণ-নিবদ্ধপুস্তক, হিদাবের বই। পুস্কভাগু—নিবন্ধপুস্তকের গেটিকা। পুগ — কর্মাকরসংঘ। পোডব---ভজনের জন্ম তুলাও প্রতি मान रा राष्ट्र निर्मा :-कर्म । পোতবাধ্যক—তুলা ও মানভাওের मर्भावक ध्रवान त्राक्षणुक्षय । পোন্ডব-পুনৰ্কার বিবাহিতা স্ত্রীর গৰ্জহাত পুত্ৰ। **পোরব্যবহারিক পুরবাদীদিগের** ব্যব-ছার বা আইনপ্রয়োগসহকে (আদা-লভের প্রধান বিচারক অর্থাৎ धर्माशक वा धर्मभ्--- चडीमण महा-মান্ত বা তীর্ষেত্ব অঞ্চতম। **महाहि — सर्वात शांभी**न । कंड बावहर

বন্ধনাগার-কারাগৃহ। বর্ণ – ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শ্রু--এই চারিক্ষাতি। বৰ্ণক ---আদৰ্শদ্ধণে বক্ষিত গুৰুত্বৰ্ণ-নির্ম্মিত মুক্রা। বর্ত্তনী—অভ্যশাশাদির **সংগৃহী**ত শধকর। বৰ্জকি--ভক্ষক। বাকৃপাত্ময়---গালি, নিন্দা ও ভৰ্জনাদি-ষারা পুরুষভাপ্রদর্শন। বাক্যান্থবোগ-সন্দেহ-বিষয়ে বাক্যম্বারা **क्रिक्कश्रमायाम्** । বাগ্জীবন-পুরবৃত্তকথক; নানাকৌশলময় বাক্যপ্রয়োগদারা ভাষাদা প্রদর্শনকারী। বার্ডা--কৃষি, পাওপান্য ও বাণিজ্ঞা--এই ভিনবিষয়ক বিছা। বান্ত - গৃহ, ক্ষেত্র ও উপবনাদি। বাছিরিক — কিওব-বঞ্চক-নট-নর্ত্তকাদি **धृर्खक**न । বাহুগুৰ—জনপদে উৎপন্ন প্ৰাস্থকে ধার্য্য শুব্ধ। বাহুকোপ ~ রাষ্ট্রমুখ্য, অস্তপাল, আট-বিক ও দক্ষোপনত ব্যক্তিদিগের অন্তত্ম হইডে উৎশব্ন কোশ বা উপঞ্ৰ । विधार--- इसे बाब्बाव भरका पृकानिकरण ছোছচিরণ বা অপকার। বিজিপীয়ু---বে দ্বাজা আত্মধানন্দর ড প্ৰকাশক্ষিত্ৰ গুণস্পান ইউরা

নয়ের আশ্রমভূত (অর্থাৎ যাড্-ওণ্যের বর্থাবর প্রাক্তোগদ্বারা শক্রকে বিশিত করিতে অভিলাবী হাজা) ৷ विकास -- विवयक्तित्वरवद कान । বিধা—ছম্ভী ও অধ্বের ভোজ বছর পরিমাণ : विनय--- निकाः हे जियुक्तः। বিশ্বমানা-বিভীয়বার পতিগ্রাহিণী। বিষ্টি-কর্মকর বর্গ। বিষ্টিকৰ্ম – যুক্ষাদিতে আয়ুধবিহীন কৰ্ম-क्रवरायक कार्याविकी । বিষ্টিবন্ধক---বিষ্টি বা কর্মকরের সংগ্রহ-कात्री त्राष्ट्रशुक्रयः বিবীক-গৰাদি পত্তর জন্ত তৃণাদিময় চারণ-ভূমি। বিবীতাধ্যক — তুপাদিমর গোচারণ হস্তিবনাদির রাজ্ঞাপ্য করাদির পর্যাবেক্ষক र्थधान शक्त्रक्र । বিরূপকরণ--্যে যোগবিশেষের প্রয়োগে জন্তগণের ক্লপপত্মিবর্ত্তন ঘটে। বিষয়---(দশ-বিভাগবিশেষ (প্রদেশ) ৷ বীজী--ৰে পুৰুষ অন্ত পডির ক্ষেত্রে বা স্ত্ৰীতে নিজ বীজহায়া পুত্ৰ উৎপাদন **存(**第 ) বীৰশ-শ্বদেশ হইতে অবিদিয়ভাবে শ্বয়াদি শ্বাশীখন্তব্যের আগম। বৃদ্ধি-ভিগ্ৰহা বা উন্নতি : টাকার স্থান : 'अझ कुट्राय मृट्य' जविक जारतन

া সৰ্বস্থাৰ নামত বৃদ্ধি।

বৈতন—পরিশ্রমের **জন্ন প্র**দণ্ড মৃ**ল্য**। त्वक - अखिताका ; अर्थो ; दांगी। दिराष्ट्रक--वाशिक्षक, वशिक् বৈদেহক-ব্যঞ্জন — বাণিজকের বেশুধারী गृष्ण्कस्वित्नवः। বৈশ্বপ্রভাষ্যাত সংস্থা— চিকিৎসকদার। বলিয়া পরিভাক্ত অসংঘারেরাগ জনদিগের বাসযোগ্য স্থান। देवस्त्रग — मूनाशामित পूत्रपार्थक राजी-বিশেষ ৷ বৈয়াপু,বু)ভাকর—পণ্ণের পুচৰ) বিক্রেন্ডা। বৈরাজ্য--যে রাজ্যের পূর্বাশাসক রাজ্য নাই এবং যাহা অসভা রাজার হন্তগত। ব্যবহার-- ঋণাদানাদি ব্যাপার। বাবহারপ্রাপণ-নে বয়সে জী (বাদশ-বর্ষীয়া ) ও পুরুষ ( বোড়শর্বীর ) প্রাপ্তবাবহার বলিরা গৃহীত হর ( আধুনিক ভাষায় দাবালক হয় )। বায় – অংশের শরচ; হিরণ্য বানগদ টাকা ও খান্তাদির অপচয়। ব্যয়লবীর — রাজার্থের বারের দকা। वाकी-वात्र वाद खदा मानित्न हैश ক্ষ হট্যা যাইতে পারে বলিয়া ইছার হাছা কিছু বেশী (AGRI हरू, वर्षाः शहारक का<del>ध-</del> নেওয়া বলা হয়। ব্যাধিসংখ্য – ব্যাধিগ্ৰন্থ, লোকেৰ বাস-যোগ্য স্থান।

ব্যারাম-কর্মোভোগ।

বাংরামধুত্ব – রাজা মৃত্যক্ষেত্রে অবভীর্ণ ছইরা অন্ধশভাদির প্রয়োগভারা र्य यूक्ष करवन । ব্যুট—বাঞ্চাব বাঞ্চাভিবেক হইতে গণিত বৰ্ষ, মাদ, পক্ষ ও দিবদ-গণনার সংকা। বৃহ্মাদের – ব্রাহ্মণকে ভোগার্থ প্রান্ত কেতাদি। ভক্ত-অন্নাদি (ভাতা)। ভাগ-ধান্তাদির বড়্ভাগ, দশভাগ ইত্যাদি। ভাটক – নোকাদির ভাড়া। ভূমিগৃহ—ভূগ<del>্ৰত্</del> গৃহ। ভূমিচ্ছিদ্রবিধান-কর্মণের অংগাগ্য ভূমির ব্যবস্থা (প্রাচীনলিপিসমূহে উল্লিখিত 'ভূমিফিন্তস্থার' )। ভূতক—ভূতিপ্রাপ্ত কর্মকর। মুডকবল--ভুডি বা বেডনভোগী সৈতা। ( ব্যুনিশ্রার্থ ভোগ—কোনস্রব্যের हेराव ) जुजामान व्यवद्या । ষদনরদ – উত্মাদোৎপাদক বিষাদির বোগ, বাহ্য শব্দর প্রতি গোপনে প্রবিচ্ছা হয়। মহাম---বে বাজা বিজিগীৰু ও ভদীয় · **অরির অনুভয়ভূমিতে অবস্থিত এবং** ্ বিনি উভয়কেই ভাঁছাদের সংহত ও অসংহত অবস্থায় অসুগ্রহপ্রারশন

করিতে সমর্থ ও উভগ্নকে কেবল

ধেবাইভেড নমর্ব।

Tree I মরমুক্ত -- রাজা যুক্তকেন্তে ক্ষরতীর্ণ না হইয়া মহধারা অর্থাৎ পূচপুরুবগণ-কর্মক বিধাদিঞ্জাগছারা শক্ত-নাশের বে চেটা করেন ভাহা; মতিশক্তিয়ার। শতক্তরের ব্যবস্থা। মন্ত্রশক্তি--- হাজার যে শক্তি ভাঁহার মদ্রিপ্রভৃতির মন্ত্রণা হইতে সমুস্কৃত। মন্ত্ৰী-ধীসচিব বা ৰভিসচিব, অৰ্থাৎ রাজার যে প্রধান অমাতা ভাঁছাকে भागनिविषयक यहना (भन । ম্ব্রিপরিবং---অমাত্যবর্গের গুপ্তসক।। भक्ति शतिवास क्या कि स्थापित विश्व विश्व कि स्थापित विश्व कि स्थापित विश्व कि स्थापित विश्व कि स्थापित कि स्थ বা অমাত্যসভার অধ্যক্ষ সভাগতি—অষ্টাদশ মহামাত্র বা তীর্থের অন্ততম। মহাজন---জনতা। মহামাত্র-মহামাত্য বা অন্তাদশ ভীর্থ-গণের অভতম। মানাধ্যক---দেশ ও কালের মান-পরিদর্শক প্রধান রাজপুরুব। মাধক—তন্ত্রামক ভাত্রসিকা। মাহানদিক—রাজপাকশালার অধিকৃত ध्यधान शुक्रम । মাংক্তভার — রাজ্যের বে অধ্যায় সবলের কবলে ছর্কলেরা প্রতিত হয়, ধেমন বছ বড় সংস্থ হোট ভোট যৎস্থকে প্রান করে, নেই भवाक्य भवश्व नाम । 🧠 🔑

मशासनाष्ट्रनत्थ- eas भनावाक व्यर्-

মিত্র-বি**জিপী**ব্র শবুংগিকে অরিয় অনস্তর ভূমির অবিণতি।

মিত্রপ্রকৃতি—বিজিপীপুর নিজ রাজ মণ্ডলে অবস্থিত, একভূমি বা একরাজাব্যবহিত ভূমির অধিপতি (মিত্র বিবেচিত ছর)

মিত্রিমিত্র—বি**ন্ধিরী**রুর সম্থদিকে অরিমিত্রের অনস্থর ভূমির অধি-পতি (বিনি বি**ন্ধিরী**রুর মিত্রের মিত্র)।

মিত্রবল—রাজার নিজ মিত্রের সেনা। মিত্রসম্পৎ—রাজার মিত্রের প্রকৃষ্ট গুণ-সমূহ।

নুদ্রাধ্যক্ষ — রাজকীয় মুদ্রা ব। চিছ্নযুক্ত লেখ্যাদিসক্ষে অধিকৃত প্রধান রাজপুরুব।

মূলহর—যে ব্যক্তি পিতৃপৈতামহ

সম্পৃত্তি অভায়ভাবে ভক্ষণ করে।
মূলভান—রাজার রাজধানী।
মোহনগৃহ—মার্গব্যামোহকার্যকর্ছ।
মোক্ষ—খাষী বা জীর বিবাহবন্ধন
হইতে মুক্তি বা ছাড়াছাড়ি।
মোলবল—মূল বা রাজধানীর যে সেনা
রাজার পিতৃপৈতামহ সেনা।
মোর্কিক—জ্যোতির্বিক্।
মাত্রা—দেবতালিগের রথধাত্রাঞ্ছতি
শোতামান্তা।
মাত্রাবিহার—জন্ত্র গমন করিয়া বাস
করা।

যান-শক্তি ও দেশকালাদির অভাষিক যোগৰশভ: বিক্লছে অভিযান i যানপাত্র-- জনধারী পোডাদি। যাতব্য-- যে রাজা শত্রু ধারা অভিযান্ত-मान । যামভূৰ্যা—বাত্ৰিব খামে বামে পথে कन-मक्षाद्यत्र निद्याध्यः ६क बाक-বোষপা। যুক্ত—শাদনবিভাগের রা**জকর্ম**চারী। যুক্তপ্রতিবেধ – যুক্ত व्यधिकात्री **4**1 পুরুষদিগকর্থক ধনাপছরণাদির নিবারণ : यूगः - वनौदर्भ भद्र-छेड्डीमि वाद्य । যুববাজ - অষ্টাদশ ভীর্থ বা মহামাত্তের অন্ততম - বিনি পরবর্তী রাজপদের জন্ত নিৰ্দাৰিত বাজপুত্ৰ। যোগ—কণট উপান্ধের প্রয়োগ। (वागणान-विवसवायुक मण। ্যাগপুরুষ--পুর্বপরামর্শবার। সহিত রাজার যোগাযোগ পাকে; অধ্বা, উপজাপব্যবহারে নিযুক্ত शृष्**शृक्**ष । যোগপ্রায়েগ — শক্তর বিক্রাক তীক্লাদি গুড়পুরুক্তবের নিয়োগ। বোগবামন-কণট উপার্বারা इहेट्ड भक्कद निक्रामण । হোনিবধ – মাতৃকাতীর ক্ষর বধ।

রজ্জু – বিবরপতির

বিশ্বাগের কর।

ব্যাপ্য

রথকর্ম — মুদ্ধাদিতে রথম্বোগ্য কার্য্যান বলী ৷

রবাধ্যক্ষ—রাজকীয় রথশালার যাবজীয় রথকার্য্যের পর্য্যবেক্ষক প্রধান রাজপুক্ষর।

রথবৃছি—সেনা**ক**ভূত রথবার। রচিত বৃ্ছি।

রসদ—বিষ**প্র**দায়ী নির্দ্ধর গৃঢ়পুক্রব বিশেষ।

রা**জনিবেশ—**রাজবাড়ী।

রাজ্ঞাকৃতি —সপ্তাকের মধ্যে রাজা ও ভদীর স্থকং,—এই উভর প্রাকৃতি। রাজব্যঞ্জন —রাজচিত্রযুক্ত রাজাতিরিক্ত অপর ব্যক্তি।

রাজবাসন—রাজার মরণ্টুদিরূপ বিপত্তি।

রাজমণ্ডল—অবি, মিত্র, পার্ফিগ্রাহ প্রছাতি-সহকারে বিজিনীরু রাজার বে রাজচক্ষ কল্পিড হর।

রাজর্বি - জিতেজিয় রাজা।

রাজশাসন— রাজ্যজ্ঞা; রাজার জ্যাদেশ-শেখ্য :

दाकाविख्य--- दाकाविश्वव ।

রাইর্থা--রাই বা জনপদের প্রধান প্রধান ব্যক্তি।

রিক্**ণ— শিভূত্যক্তা সম্প**ত্তি ।

রিক্থতাকৃ—দারহর বা পিড্সম্পতির অধিকারী।

রূপ—নগদ টাকার মূলা (ছিন্দী রূপিরা); চুরির মাল। রূপদর্শক--ধাত্মর মুস্তার পরীক্ষক। রূপাজীবা – রূপধার। স্থাবিকাকারিন (গণিক।)।

রূপাভিগৃহীত—চুরির মাদসহ গুড ব্যক্তি।

রূপিক—লবণবিক্রয়ী হইতে লবণাধ্যক্ষ দারা গ্রহণীয় অতিরিক্ত ভাগ। লক্ষণাধ্যক্ষ—রূপ্য ও তাত্রনির্মিত মুদ্রা নির্মাণকার্যোর অধ্যক্ষ; ক্ষেত্র।

রামাদির লক্ষণ বা সীমার নির্দেশক।

লবণাধ্যক্ষ—আকারাদি হইতে প্রভা লবণের অধ্যক্ষ।

শক্তপ্ৰশমন পৰ বা বিজিও ভূমিতে শাক্তিভাপন।

পোক্ষাত্রা—পোকিক সাম্বাঞ্জিক ইণ্ডি বা ব্যবহারের স্থিতি।

লোভবিজয়ী— হর্কলতর রাজার উপর আফেমণকায়ী যে বলবতর রাজা শক্তর ভূমি ও দ্রবাহরণভারা তুই হয়।

শন্ধিতক—যা**হাকে অণ**রাধী বলিরা সন্দেহ করা হয়।

শম---শান্তি।

শাসন-- রাজ্বেখন

শাসনহর ( দৃত )— অর্থহীন অমাত্য-গুণাবসী-মুক্ত ভৃতীর শ্রেণীর দৃত ( বিনি কেবল রাজার শাসনপত্ত বহন করিরা প্রবাজসমীপে যান)। শিকা শ্রহার—বেক্তায়াত কণ্ড। শিল্পী —স্পাকর্মকারী । শুদ্ধবধ—অক্লেশ মারণ। শুদ্ধাধ্যক্ষ—শুদ্ধ-আদাহের পরিদর্শক প্রধান রাজপুরুষ।

শুক্রাব)--শাস্ত্রপ্রবণের ইচ্ছা

শ্ন্তনিবেশনকর্ম শ্ন্ত বা কর্ষণাদির অথোগ্য ভূমিতেরুষকাদির নিবাসা-দির রচনা।

শ্ভাপাল—হুদ্ধানে প্ররত রাজার অহপেহিভিতে শ্ভা রাজধানীর পালক।

শৌশুক—মগ্সবিঞ্চেতা।

ষ্ঠামীকরণ—যে যোগবিশেষের প্রয়োগে ব্যবহারীর স্বাকৃতি কাল হয়।

শেতীকরণ – যে যোগবিশেষের প্রয়োগে ব্যবহারীর আক্রতি সাদ্য হয়। প্রবণ - শক্ষের অবগম।

শ্রেণী বিভিন্নপ্রকার শিল্পী ও বাব-সামীদিগের সংঘ।

শ্রেণীবল—জনপদের শ্রেণী ব) সংঘড়ক্ত বে-সব পুরুষ আয়ুধধারী হইয়। দেনাভুক্ত।

ষাড্গুণ্য — সন্ধি, বিগ্রহ, বান, আসন, সংশয় বা সমাক্ষার ও বিধীভাব— এই ছয়টি বাজনীভিবিবরক গুণ।

স্কার—অনেক স্থানে স্করণ করিয়া বে গুণ্ডারেরা রাজার্থ সংবাদ সংগ্রাহ করে তাহাদের নাম। শত্র—খামনতুর্গাদি সকটমান। সঞ্জী—নানাশ্যার ও নানাবিশ্বার অধ্যয়নকারী বলিয়া পরিচিত গুঢ়-পুরুষবিশেষ।

সন্ধি – ছই রাজার মধ্যে ভূমি, কোশ
ও সেনাদানাদির সর্ত্তে পণবন্ধন।
সন্ধিধান – নিধিক্ষণে অর্থাদি ভূমিগর্ভে
সংস্থাপন করা।

সন্নিধাতা - রাজকোধাদির সমাগ্ভাবে নিধানকারী মহামাত্রবিশেষ,অধাৎ যিনি কোশাদির সংগ্রহ ও রক্ষণ-কার্য্যে বাপ্তি।

সম-শক্তর জার সহিত সমানশক্তি ও স্মানসিজিবিশিষ্ট রঞ্জা;

স্থবায়—এক্তুমিশন।

ন্যাঞ্চ--প্রীতিসন্মিশন গোঞ্চী।

স্থাধিমোক্ষ— শত্রুর নিকট আধিরূপে রক্ষিত পুত্রাদির মোচন।

সমাহর্তা—তুগরাষ্ট্রাদি হইতে উৎপন্ন আয়ের সমাহরণকারী মহামাত্ত-বিশেষ।

সমাহবয় — মল-মেধ-কুকুটাদির পরকার লড়াইর ছারা জুয়াবেলা।

সমৃদয়—দ্বাংপতিস্থানসমূহ হইতে
সমাগ্ভাবে উদিত বা উপিত ধন।
সর্বাত্তগ—বাজলেধাবিশেন, বাহা ধারা
পথিকাদির রক্ষাজন্ত অধিকারী
জনদিগের উপর কার্যভার সর্বাত্ত
প্রচারিত হয়।

সর্কাধিকরণ---সর্কঞ্চকার শাসনবিভাগ। সহজ্ঞমিত্র---বিভিন্তীযুগ একান্তর ভূমির বে অধিণতি ভাঁছার মাতাপিতৃ-দম্মক্ষে দম্মমুক্ত হইয়া শ্বভাবতঃ মিত্র।

দহজ-শক্ত—বিজিপীয়ুর অনস্কর ভূমির যে অধিপতি স্বভাবত তাঁহার অমিত্র কিংবা ভূপ্যবংশস্ভূত বিশ্বা দায়ভাগী।

সহোচ — গর্ভবতী স্ত্রীর নিবাহাঞ্জে জ্ঞাত পুত্র।

নহোদক ( দেড়্বন্ধ )—ধে স্থানে (দেড়্-বন্ধে ) সর্ববদাই স্বাভাবিক জল অবস্থিত থাকে।

ক্ষাবার — যুদ্ধযাক্তাপৰে রাজার সেনা-নিবেশ; ইহা রাজধানী অর্থেও ব্যবস্থত হয়।

ত্তত্ত — গ্লাজার্বের উপরোধ। ত্ত্বাধী — ত্লভূমিতে অব্যত্তি হইর। যুদ্ধকারী।

স্বধাদায়ী -- শিগুদায়ী।

স্বৰগ্ৰহ—ধে নিজকে ও অপরকে অন্তচিত কাৰ্য্য হইতে নিবারণ করিতে সমর্থ।

সামবারিক—স্মবায়াবন্ধ বহুসংখ্যক রাজাধারা মিশিত সংঘ।

নামুখায়িক — সমধায়াবদ্ধ রাজগণ।
নামেধিক – যে ব্যক্তি অস্তের ভবিল্লৎ
সম্পত্তি প্রভৃতির কথা জিজ্ঞাসিও
হইয়া বলিয়া দিডে পারে।
নার্থ—ব্যক্ষাংখ।

সাধিক - সাৰ্যচাৰী স্বণিক্ অৰ্থাৎ বাণিজাৰ্থ বিদেশে যাত্ৰাকামী।

সাহন—সর্বাসমক্তে বলাৎকারনহকারে অপহরণাদি।

স্থান-স্থান আ্রের সহিত স্থান ব্যায়ের অবস্থা; ইছা কথনও 'আসন' ও 'উপেক্ষণ' শক্ষের পর্য্যায়বাচা হয়।

শ্বনিক—সমাহর্তার অধীনত্ব জনপদ ও নগরচতুর্ভাগের শাসনাধিকারী।

স্থানীয়—৮০০ শত গ্রামের উপর শাসনভার দিয়া নিবেশিত নগর-বিশেষ।

স্থাবরসঞ্জি—বিশ্বস্মীয় বলিয়াধে সন্ধি স্বায়ী।

স্বামিদশ্বে রাজার প্রকৃষ্ট গুণসমূহ।
নীঙা—লাক্সপদ্ধতি (উপলক্ষণ-দ্বারা)
কৃষিভূমি; ধাঞাদি শক্ষণাতের
নাম।

নীতাতার – রুষ্কুর্ক্স শস্তাদির অপ-লাপ বা অপহরণজনিত অপরাধের জন্ত বিহিত দণ্ড।

সীতাধ্যক্ষ—কৃবিকর্শ্বের পরিদর্শক প্রধান রাজপুরুব।

জীধন — বিবাহিত। জীর জীবিকার্থ প্রদত্ত ভূমি, হিরণ্যাদি নগদ টাক। ও শরীরে পরিধানার্থ ভূষণাদি। ক্রমণ — ভ্রমক দোনার টাকা (ভজনে ১৬ মাব)। স্থৰপাৰ- বসভৱের প্রয়োগ ধার। গৌহাদিকৈ স্থবৰ্গে পরিণত করার বিস্তা।

সুবর্ণাধাক — রাজার অক্ষশালাতে সুবর্ণাদির সংশোধন প্রভৃতি কার্ব্যের পরিদর্শক প্রধান রাজ-পুরুষ।

প্ররাধ্যক্ষ-শ্বর। ও তৎকিথের ব্যব-হারের পরিদর্শক প্রধান রাজ-পুরুষ।

প্চক-–গুপ্তভাবে আজ্ত সংবাদের প্রনাকারী।

প্রাধ্যক্ষ-শত্তাদি নির্মাণকার্য্যের পরিদর্শক প্রধান রাজপুরুষ :

एक साःमाणिशाहक। एन) - बाक्कोश्र शक्कवस्थान ।

প্নাধ্যক্ষ—মুগালি প্রাণিসমূহের বধাবধ বিষয়ে অধিকৃত রাজপুরুষ ।

স্থাপক বহুপ্রদ বা মহাদাতা ৷

নেতৃ—গৃহাদিনখনে দীমাজেতেক চিত্র। নেতৃকর্ম – নেতৃবদ্ধ-নির্মাণ।

সেতৃবন্ধ —(>) শক্তাদির উৎপাদনের
জন্ত কুত্রিম উপায়ে নদী প্রভৃতির
কিংবা বর্ষার জল বাঁবিরঃ রাখার
জলাশার; (২) কীশকাদিধারা
গৃহাদির সীমাবন্ধ।

নেনাপতি—চত্রক রাজকীয় সেনার প্রধান রাজকর্মচারী; দশটি গদিকের উপর প্রাপ্তাধিকার সেনা-বিভাগীর কর্মচারী। জ্ঞেন—চুরি।
জ্ঞেনগণ্ড—চুরির শংকি।
সৌবণিক—হুবর্ণাদিনিমিত নিক্সমব্যর
কারবারে নিযুক্ত রাজপুক্র।
শৌতিক—ঐক্সমালিক।

সংখ্যারক—গণনাকার্যে বা হিসাব-রক্ষার ব্যাপুতক।

সংগ্রহণ—দশবানি গ্রামের উপর
শাসনভার দিয়া নিবেশিত অভিকুদ্র নগর বিশেষ; বশাৎকারসহকারে দ্রীপোকের উপর
ব্যভিচার।

সংঘ – বৈশ্য ও ক্ষত্রিয়ের শ্রেণীবিশেষ। সংঘী—সংঘের সভ্য।

সংখ্যাপথ - সমুজানির জলমধ।ছ
নিরভার গভাগতির পথ।

সংখানীয় — জেরবিজনের প্রধান স্থান ; বড়বড় (বঞ্চর) বাজার।

সংস্থান থাকিয়া যে ওপ্তচরের।
রাজার জন্ত সংবাদ সংগ্রহ করে
ভাহাদের নাম।

সংস্থাধ্যক—মজুত পণ্যাদির সংস্থান-প্রীক্ষক; মতান্তরে, পণাশালার অধ্যক্ষ

সংশ্রম — বলবন্তর রাশ্যর নিকট নিজকে ও নিজের স্ত্রীপুতাদিকে সমর্পণ।

সংশয়ত্তিবৰ্গ--- আৰ্থ ও আন্ধ্, ধর্ম ও আংধর্ম এবং কাম ও শোক---এই ত্তিবিধ মুধ্যের পরস্পার-সংশয়। क्षेत्र ७ विक्युश्वाता कीविका व्यक्तन क्(इं।

হরণোপার রাজ্ঞব্যের অপহরণের বা ভদ্ধু,পকরার উপায়।

হস্কিশ্ম – যুদ্ধানিতে স্থপরভূমিতে इस्तीद रशाश कार्यावनी।

ছন্তিবন্দর্ম -ছন্তীর বনে ছন্তিধরণ ও शिखकायात वारशाविधान ।

সাংব্যবহারিক - যে ব্যক্তি প্রপণ্যের ছন্তিবৃাহ সেনাকভূত হলিখারা রচিড বৃহে।

> হতিশালার হস্তাধাক – রাজকার যাৰভায় ছন্তিকাৰ্ধ্যের প্র্যাবেক্ষক প্রধান রাজপুরুষ।

ছির্ণ্য -- নগদ টাকা।

হীন--শক্ররাজার অপেকার হানশক্তি ও হীনসিজিবিশিষ্ট রাজা।

#### শব্দনির্ঘণ্ট

অংসপথ ১০৯ তাক তেও অক্ষশালা ২৯ অক্সুপ্রবংক ৭৭ অকডচিকীর্বা (সন্ধি-**शन्त**() 550 অগ্রিক্লীবী ২৪৫, ২৭৯, 020 অগ্নিযোগ ২৮৫, ৩০২ অন্তবিদ্যা ২৮৭ অচলব্যুহ ২৬০ অটবীপ্যল ৫০ অট্বীবল ১২১, ১৬৬, 200, 206, 209 অট্যালক ২৩৭ অভিক্রান্তাবেক্ষণ ৩৩১ অভিদেশ ৩৩০ অতিসক্ষশ ২৮০ অভিসন্ধি ১১৫, ১২২ অতিস্ত ২৫৬ অতার ৫৫ অতার-সন্ধি ১৬ অজ্যাবাপ ২৫৩ অত্যাশিষ ২১৭ অথবাবেদ ১২ ২০০. ₹8¢ অদিতিকা ২৬৫ অদৃশ্টপ্রেষ্-সন্ধি ১৬ অবৈধ্য ৮০, ১২৬ অধশ্য ২৭১ অধিকরণ **২৯. ২৬০.** 025 অধিকরণী ১৫ व्यमन ४५. ५५२ অনধরিবর্গ ২৩৪ ञनर्थान् क (जनवर्ष) ₹:00

অন্থান্ত্র (অর্থ) ২৩০ অনথ'র পা (আপং) 252 অনুবসিত সন্ধি ১০১ অনাগতাবেক্ষণ ৩৩১ অনায়তি ৭১ অনাৰ্যাভাব ২৯৭ অনিত্য (বশামিত) ১২৫ অনিত্যমিত্রা (ছমি) 252 অনিভূত সন্ধি ১০৫ অনিক্রম ১০৪ অনীকদৰ্শন ৩০৩ অনুগ্রহ ৮৮, ৩০০, 909 অনুবন্ধবৰ্গ ২৩০ অনুমত ৩৩০ অনুযোগ ২৫ অন্রক্তপ্রকৃতি (মিত্র) >₹.0 অন্তুপ্রাপ্ত (সেনা) 770 অন্তৰ্গাল ৫০, ৫২, ৬১, 585, 355, 003 অশুরমাত্যকোপ 599. 5.22 অন্তর্দক ২৭৯ অন্তব্দি ১৪৩ অন্তর্যংশিক ৬১, ৭২ অন্তঃকোপ ১২. অন্তঃশল্য (সেনা) ১৯০ অন্ধাহিক ৩১০, ৩১৩ অন্বাবাপ ২৫০ অপনর ৮৯, ১৭২, ミント অপচরিত ১০৩

অপদেশ ৩২১ অপবৰ্গ ৩৩০ অপরিপণিত (সন্ধি) 202 অপদৰ্শ ২৯৪, ৩০৩ অপদার ২০, ১৫১, **568, 566, 805** অপস্ড ২৫৬ অপোহ ৭৭ অবচয় ১ অবচয়-সন্ধি ১৭ অবপাত ১২, ২০৮ অবমর্দ্দ ২৯৯, ৩০২, ୭୦୭, ୭୦୫ অবলীয়ান্ ২৬৯, ২৭০ অবশীপক্রিয়া (সন্ধি-ধন্ম) ১১০ অবশ্য (নিতামির) ১২৫ অবস্থা ২৪৪ অবস্কৃদ্দন ২৪২ অবাচীন ৩২/৬ অভিচার ৪৫, ৫১ অভিচারমশ্র ১০, ১২ অভিচারশীল ১৪ অভিত্যক্ত ৫৮, ৫৯, **২৯৭, ৩০৩** অভিযাস্যংক্ষ ৭৩. **ሆ**ዓ. **১৯**৮ অভিযোক্তা ২৬৮ অভিশপ্ত ২৫ অভিষয় ৩১০ অভিস্ত ২৫৬ অভিহিত সন্ধি ১৩৫ অভান্তরকোশ ১৭৭. \$50, **\$50** অভ্যন্তর প্রকৃতি ২০৯ অমাভাসম্পই ৭৮

আমিল ১০২, ১২১ অমিচ্যল ১২১, ১৬৬, 200, 200, 209 অগ্নিরসম্পৎ ৭৯ আয় ৮১ অয়ন ২০০ অয়স্কান্ত ৩১১ অবুলী ৩৫ অরাজবীজী ১৩৪ অধিভাবী (সামন্ত) ১৬৮ অরিপ্রকৃতি ৮২ অরিমির ৮২, ১৪৫ অরিমিটমির ৮২, ১৪৫ অগ্নিস্টব্যুহ ২৬০ অপুনিবগ্ ২০৪ অর্থ ব্যুপ ১৮২ অথ'র্পা (আপং) २२५ অর্থান্য ৩২৯, ৩৩১ অর্থশাদ্ধবিং ১৩০, 206. 295 অপ্রতিক্রম ২৭১ অর্থান্যক্ষ (অনর্থ') ₹00 অর্থান্যন্ধ (অর্থা) ২৩০ অথাপত্তি ৩৩০ অন্তিদ্যকা ২৬০ অমাল্য ৩২৩ অলিকী ১৮ অশ্বন্ধ ২৪৯ অন্বয়েহ ২৫৪ অধ্যমের ৪৪ অশ্ব্যুক্ত ২৫৬ অন্টানীকব্যহ ২৫৯ २०१, २६४, অসহা 260 অস্থ্রবিজয়ী ২৬৮ ক্ষুবামিসংহত (সেনা) 274

অসংকৃত ১৪৫ অসংহতক্ষে ২৫৭, ২৬০

আকার ৬৮ অকোশধোধী ১৩১ অক্রেন্সার ৮২, ১১৬, 784 আক্রন্দ ৮২, ৮৬, ১০১, 284 আচার্য ৮৬, ৮৮, ১০০, ५०२, ५००, ५५२, 522, 520, 528, ১२৭-२৯, ১৩২, \$09-08, \$88, ১৫৩, ১৫৯, ১৭<del>২</del>, 244-42 244-20 554. 300-303. \$0₩ আজীৰ ১৮০, ৩২৫ আজানী ৩২১ আটবিক ৩৭, ৭২, 525, 525, 255 আঢ়্বণিগ্ৰতী (ভূমি) 708 আতিব্যহিক ২৯৮ অত্যপ্রতিদান ২২৪ আত্মধারণা (ভূমি) 252 আত্মরক্ণ-সান্ধ ১৬ আদাসম্পর ৭৮, ৮০ আত্মসম্পন্ন ৬৫. ৭৪ আত্মামিষ-সন্ধি ৯৫ আডায়িক ৬৭ আদিন্ট-সন্ধি ৯৭ আদের (কাভ) ২১৫ আনাহ ৩২৫ আপ্রিক ১০, ১৬৪,

298

আপপ্রেম্বোগ ৫০ আবলীরস ১৪, ১৪৯, 242 আবাপ ২০২, ২৫০ আবাপ্য ২৫৩ আবাহ ১৫৩, ২২৮ আভিগামিক (গ্রুপ) ৭৭ অভান্তর (কোপ) ২০৬ আযুক্ত ৬৬ আরুখাগার ২৯ আরক্ট ৪ আরালিক ৫১, ২৮৫ আর্য্য ৬২ আর্যা ৩৩, ৪৬ আশানিশ্বেদী (সেনঃ) 220 আশ্মৃত ২২ আগ্রর ১০ আসন ৮৬, ৮৯, ১৮ আসার ১০১, ১৫১, ১৫৫, ১৫**৬, २**२५, ২৩৯, ২৭৭, ২৭৯ আস্রী (সৃষ্টি) ২৩৬ আহিতাগ্নি ৩১৫, ৩২১ আহারেদিক (সেতৃবন্ধ) আহার্যেদিক (দেতুবন্ধ) 209

ইক্সিত ৬৮ ইতিহাস ৭৫ ইন্দ্র ১০ ইন্দ্রগোপ ৩১১

ঈক্ষণিক ২৮৭

উচ্চিদিক ৩১০ উচ্ছিন-সন্ধি ৯৭ উচ্ছেদনীয় (শুক্র) ৮২ উশ্রমসাহসদস্য ৫, ২৭, ₹5-00, 00, 0V 85, 82-84 উৎসাহগ্য ৭৮ क्रेश्माहणीस ४०, ३६०, ZZB উৎসাহশক্তিহীন ১৪৯ फेल्यन २०२ 40, 20, উদাসীন 520, 588, 56V, **২80, २**99 জেন্দ্রশ ৩২১ উদ্যানকৰ্যুহ ২৬০ উপকরণ ২০৯ উপগ্ৰহ-সন্ধি ৯৬ উপদ্বাত ৩২৭ উপ্রভাপতা ২১৯ উপজ্ঞাপ ১০৩, ১৭৩, 598. 59h, 250, २४७. ७०७ উপজাপক ২১৮ উপক্ষীবন ৫ উপদেশ ৩৩০ উপনিপাত ১০ উপনিষংপ্রণিষি ৮৮ উপনিধংপ্রয়োগ ১৯৯ উপমান ৩৩০ উপস্কর ২৯ উপদান ২৩৭ <del>উপস্থা</del>রিক ৬২ केशारम्बन्छ ३२, ३६०-564. 548, 268, HOG উল্লেক্ষ্য ১৮

উভয়তোনথাপং ২৩১

524. 544

২০১ সাধাত্যক্ত

উভরোভ্যেভোগী (মির)

উভরবেতন ১৪৬, ২২৫,
২২৮, ২৯৭
উভরভাবী (মিচ) ১২৬,
১২৭
উরস্য ২৫১, ২৫২,
২৫০-২৬০
উল্লেখন ২৩
উল্লেখন ২৩
উল্লেখন ২৫
উল্লেখ্য ১২
উল্লেখ্য ১১৪, ০১৯
উল্লেখ্য ৩১৪, ০১৯
উল্লেখ্য ৩৪

উন্ধকর ৩৪ উহ ৭৭ উহা ৩৩১

ক্ষিক্ ৬১

একবিজ্ঞার ২৮১
একভোভোগী (মিত)
১২৫, ১৫৬
একমুখ ৯
একসিদ্ধি ২৩৬
একার্সবধ ৩৪
একান্ত ৩৩১
একারন (মার্গা) ২৪২
একক ৩১৪

শুদক (ভূমি) ১০২ শুদনিক ১০, ২৭৮ শুদনিযদিক ৫৭, ১৫১, ১৬৪, ২৬১, ৩১০ শুংসাহিক (বল) ২০৮

ক্সে ৩২৩ কক্ষ ২৫১, ২৫২, ২৫৪-২৫৮ কটামি ৪৬

ক্ৰণিক ৭০ কণ্টক ৭৯ कपर्या (भट्र) ५८३ কন্ধরবেধ ৩৫ कसानाञ्च ५८५ कन्गामान ५५७ कसाञ्चकष्य ७५ কন্যাপ্রদান ১৪৭ ক্ষপটশাসন ৩০৪ কপাল-সন্ধি ৭৭, ৯৬ कन्दल २ করকা ২৮৮ ক্কটশ্ৰুণী ২৬০ কৰ্মিদ ১২২, ১৩৬ কম্মতি ২৯ ক্ষার ১৫, ৩১৫ কর্মন ১১, ১০০, ১৬৭, 292 কশ্লীয় (শত্ৰ) ৮২ কলগ্ৰগহী (সেনা) ১৯০ কম্পক ১৬৩ कमा (मार्फ) २५७ কল্যাবন্তী (মিত্ৰ) ১১১ ক্ষয়িয়বল ২০৮ क्या ४३, ४४, ३०८, 506, 505, 256, 228 কাকগী ৩৫ ক্রকপদী ২৬০ কাচভার ১৬৪ কভোরেন ৬৯ কায়জবাসন ১৮৩ কাম্পোজ ২৬২ কাসীস ৩১২ কার্ক ১ ক্রে,শিক্ষী ৬২ कार्साखिक ५०. ६२ কাম্মন্তিক ২৮৭

কার্যকরণ ২৩৭

किञ्चलक ५० কুকুর ২৬২ কুটু বিক ৩১ द्ध १७५ কুন্ত ২০৮ কুপিতম্ল (মেনা) ১৯৩ কুপ্য ৯৭ কুপ্যাসার ২৪ কুমার ১৬৩, ১৬৪ কুমার্ববহার ১৮৮ কুমারমাতা ৬১ কুছ ৩২২, ৩২৩ ক্ষীপকে ৪৬ কুর: ২৬২ कुलारशक २७० কুলপথক ২৬৩ কুশধ্যক ৩২৩ কুশীলৰ ৩৪, ৫৫, ৬২, 500-68, 544, 454 कृरक ७, ५०, ५७ क्र ३१, ७५, ५५० क्षक्षे २०४, २४२ ক্টেপঞ্জর ১২ क्रेंभ्सा ८, ०३ कर्णेयरक ३३०, ३७७, 268, 262 कार्टेब्राल ५४, ५% ক্টের্পকারক ১৫ क्रिंग्या २५७ क्रुंगिमन ७५, २५०, 224-226 क्रेट्टायनकाती ५८ क्रिंगाको ५८-५७ ক্লেপথ ১৩৮ ক্লেমেষ ২৮৮ কৃতবিদ্বেগ (স্ক্রিধ্ন্র্ণ) 220

কৃতপ্লেষণ (সন্ধিশৰ্মা) 220 কৃত্তিকা ৩১৪ কৃত্যপক্ষ ৯৮, ২৯৫, 284 কুত্যা ৪৫ কুত্যাদেবী ২৪৬ কুত্যাশীল ১৪ কৃতিম্মিত ৮৩ কৃতিমশত, ৮৩ কুক ৩২৩ কোপজ (বাসন) ১৮১ কোপপ্রতীকার ২০৯ কোশসন্ধিবৰ্গ ১৮৬ কোশসম্পৎ ৭৯ কোশ্যভিসংহরণ ৫৪ কোশোপনত-সন্ধি ৯৭ কোষসঙ্গ ১৯১, ১৯২ কোষ্ঠাগার ২১ কোটিলা ৭৩, ৭৪, ৮৬, MM. 200, 202, **552, 520, 528, ১२**9, ১२১, ১০১. 509. 50V. 565. 566, 565, 590-96, \$94-9\$. \$85-\$5. **≯**205-46¢ ₹0¥. ₹64, 500 কৌপপদন্ত ১৭৫, ১৮০ কৌপীন ১৮৫ কৌশকন্ত্ৰী ২৬৬ কোশের ২ क्कोभ २

षश्चरनाष्ठ २४०

খনকবোধা ১৩১

খনি ৮৭, ১৪৯

ধনিকম' ৫২

র্থানভোগ (ভূমি) ১০২ খরপট ২.৮ খল ৩০, ৩৮, ৫২ গঙ্গা ১০ গণ্ডিকা ২৪১ গভাগত ১১০, ১১২ গ্রন্থিভেদক ৩৪ গ্ৰহণ ৭৭ গালব ত২২ গ্রামক্ট ১৪ 📑 গ্রামভূতক ৫৫, ৬৩ গ্রামস্বামী ৪৩ গিল ২২৮ গ্ৰুহগালিকা ৩১০, গ্রপারাবত ২৮৬ গ্হীতান্বভূন ২২৪ গোধাব্যহ ২৬০ গোপ ২২ গোম,হিকা ২৫৯ গেরেক্ষকবতী (ভূমি)

020

200

ঘটোবল ৩২৩ যোটমূখ ৭০

চক্রচর ১৩ চক্ষপথ ১৩১ চক্রবভিক্তে ১৯৯ চরিয়া ৩০৯ চন্দর্করন্ড ২৪১ চণ্ডাঙ্গ ২৫ **ठ**ष्ट्रवक (यह मा स्म्मा) 200, 20H চতুঃসিদ্ধি ২৩৬ हमामा भवाहर २७५ চল (অমিছ) ১৪১, 384, 38V

চলসন্ধি ১৫৯ চলিতশাস্য ১৭৮ চাতুরম্ভ ৮০ চাতৃশ্বাস্য ৩০৮ **हाशक्षकदार २७४** চাপব্যহ ২৫৮ চারক ৩২ চারণ ৬ চিত্রপশ্ভ ৩৬ চিত্ৰখ ৩৬ চিত্রভোগ (মিত্র) ১২৫, 544 চৈত্রী (যাত্রা) ১০১ চৈত্য ২৮৪, ২১১ চৈত্যপঞ্জো ১২ চোরেক্ডকে ৪২

ছিলপ্র্যবীবধ (সেনা) 228

कनभएमस्भर १४ জনপদম্ব্য ২৯৭ জ্য়ংসেন ১৮৩ <del>ज्ञान</del>नौतिमा ५२ জাত্য ১৬১ জ্যায়ান্ ৯৩ জ্যেষ্ঠামপ্রেরীয়া (বাচা) 205

ক্ষাস্যব্যুহ ২৫৯ केंद्र ५६ ভাষরিক ৩২ তত্ত্বভিনিবেশ ৭৭ ত্তুকছ ৩২৩ তম্ভবার ১ তত্তব্যক্তি ৩২৯ তাদাদিক (শত্ৰু) ১৪২ তারকা ২১৮ ভাগবিভাগী ৭৮

*ত্রিলিসতি*দ্দন ৪৬ গ্রিসিছি ২৩৬ তীক্ষ্য ৫০, ২২০, ২২৭, २७४-२७१. २१२ তুলবায় ৩ ত্র্যাকর ৬২ कुकौरयुक ५५०, ५७७, ২০৫ তেজনজল ৩২৭ তেজনতৈল ২৯১ তেজনাগ্রি ২৯০ তেজনোদক ৩১২

দংশযোগ ৩১৪ দক্ষিণাপথ ১৩৯ দশ্ভ ১৪৮, ১৫৫, ২০৯, **২২৭, ২৩**৫ দশ্ডকশ্ম ২৭, ২৮, ৪৮ দু-ডধারণা (ভূমি) ১২৯ দশ্ভনয়ী ৭৮ ২০, 88, দুল্ডপারুষা **シ**せき দশ্ভব্যহ ২৪৭, ২৫৭, ২৫৯ দশ্ভমুখ্য ২৯৭ দ-ভম্বাস্থ্যস্প-সঞ্জি 20

দশ্ভসম্পৎ ৭৯ দশ্ভোপনত ৫৩, ১১, 208, 204, 269 দশ্ভোপনতব,ত ৯৪ দ্ৰেজপনত-সন্ধি ৯৬ দশ্ভোপনায়ী ১৫৫ मत्रण २८४ দশকুলী ১০ দশস্থামী ৪০ দশরাজমশ্ভল ৮২ 42. ¥8. দ্রব্যপ্রকৃতি ५००, ५०७, २००

ह्यायन ४५ দাশ্ভকশ্মিক ৭৩, ৭৬ \$68. 22\$-22 मान ১৪৮, ১৫৫, २०৯, 228. 20¢-08 দাস ৫৮ শ্বাদশরাজপ্রকৃতি ৮৩ ছিসিছি ২০৬ দীৰ্ঘ ৭০ দুগকিন্দ ৮৭ দুৰ্গপাল ৩০১ দুর্মুখ্য ২৯৭ দুর্গলস্ভোপায় ১৫৬ দ্যাসম্পৎ ৭১ দুৰজ রব্যুহ ২৫৯, ৬৬০ দুর্ভিক্ষ ১০০ দুযোধন ১৮৩ দুল্টপাঞ্চিগ্রাহ (সেনা)

দ্রুঃসাধ্য (মিত্র) ১৯৬ দ্তম্খা ২২৭ দ্ৰীবিষ ৩১৩ मूबा ८४, ৯৯, ৯৯৯, 525. 568, 222· ২৩, ২৬৬, ৩০৫ দুষ্য (বল) ১৪৪ দুৰ্গমহামাত ৪৮, ৪৯ मृहक २७४, २७० দেবতাধ্যক ৫৭ দ্বেতাসংযোগ ২৮৬ দেবল ৩২২ দেয়বিদ্য ২২৪ **त्रश्चनकर्य ७०४** দেহবিহার ১৮৮ দেশোপনত-সন্ধি ১৭ দৈৰভঠৈতা ৫৭ দৈবপ্রমাণ১৩৪, ১৩৫ दिशीकार ४७, ३०, ३२, 54, 558

শৈরাজ্য ১৭৮ লৌবারিক ৬১

ধরণ (মুরা) ০
ধন্মবিজয়ী ২৬৮
ধন্মনির ৩০৮
ধন্মনির ৩০, ৩২
ধন্মা (লাভ) ২১৭
ধান্মনের ২৪৮, ২৮০
ধান্যভোগ (ভূমি) ১৩২
ধান্মণ ৭৭

নক্ত ২১৮ मगीम्बर्ग ४৯, ५००, 200 নদীপ্জো ১০ নদীমাতৃক ১৩৭ मन्त्राख ७७२ नव ४५ নরক ৩২২, ৩২৩ নল ১৮৩ নাগ ৫৭, ২৮৬, ২৯০ নাগপ্তা ১২ नाशवनव्यक्त २৯२ নাগরাজ ২৯১ मात्रक ७५, २०४, २७५, 592 নার্দ ৩২২ নাখিক ২০ नाम ७১ নিকৃত ৩২২, ৩২৩ নিকেপ ২৬৪ নিচর ১৫১, ১৭৩, ৩২০ নিভামির ১২৫ मिक्याभिता (कृषि) ১२৯ निवर्गन 005 निधि छ, ५७

निवद्य २०

নিশ্নযোধী ১৩০
নিয়োগ ২৩৫, ৩৩১
নির্নাবন্ধ (অন্ধ্রণ) ২৩০
নির্নাবন্ধ (অর্থা) ২৩০
নিব্রাচন ৩৩১
নিশান্তপ্রাণিধি ১৮৪
নিজ্নর ৩৪
নিজ্কর ৩৪
নিজন ২১
নেজন ২
নৈমিত্তিক ৬২, ২৮৭,
২১২
নৈষেচনিক ২৬৪, ২৭৮

か事 ₹**₫**Ъ. 240. ২৫৫-৫৯ পথগ্ৰামী ৪৩ পণ্যিভাগী ৭৮ পদযাগ্রা ও পণাপটন ১৩৮ প্রদাপত্তন ১৫৬ भगाभरका ५८ পশ্যাগার ২৯ পণ্যাধ্যক ১ পতিত (প্রেব) ২৫ পত্তিব্যহ ২৫৪ পান্তব্ৰ ২৫৭ প্রোর্গ ১ পদিক ২৬১ পদাতিকমা ২৫০ পদার্থ ৩২১ \$92, \$9¢. পরচন্দ্র 244 পরাক্ষরিভাগী ৭৮ পরদ্বেশ-সন্ধি ১৭ পৰ্যতন্ত্ৰণ ১০৭ প্ৰতিপ্ৰা ১২ পরিচর-সঞ্জি ১৬

পরিকেপ ২৩৭ পরিপণিতকাল (সন্ধি) 50V. 505 পরিণতিদেশ (সন্ধি) 204, 202 পরিপণিতার্থ (সন্থি) POR পরিস্ত ২০৬ পরিস্প্ত (সেনা) ১৯৩ পরিহার bb. 595. 900, 909 পর্য্যপাসন ৩০৬ পর্যাপাসনকর্মা ২১১. 903 পদাল ৩১১ পশ্চাৎকোপ ২.০১ পশ্রেক ১৯০ প্রকার্ম ৪০ প্রকর্ম কারী ৩১ প্ৰকাশব্ৰ ১১৩, ১৫৬, **২**8**૨.** ২৯৫ প্ৰকৃতি ৭৭, ৮৩, ১০০, 366 প্রকৃতিকোপ ৭৩ প্রকৃতিবাসন ১৭২ প্রকৃতিমুখ্য ১০৫ প্রকোপক (লাভ) ২১৬ প্ৰচ্ছুন্দক ১৩ क्षकाश्चल ५५ প্রণার ৫৫ প্রতিগ্রহ ১৫৯-৬০, 265 প্রতিজ্ঞাপতা ২১৯ প্ৰতিজ্ঞাপৰ ২১৮ প্রতিবল ১৬২, ২০৮ প্রতিষ্ঠ ১৪৭, ১৬০

প্রতিরোধক ১৬, ৫০,

প্রতিষ্ঠায়ত ২৫৮, ২৬৫

220

প্রতিস্থান ৭১ প্রত্যোদ ১৭ প্রভাব্ত ৩০৮ প্রত্যাদের ২৮১ প্রত্যাদের (লাড) ২১৫ প্রত্যাবাপ ২৫০ প্রথমসাহসদক্ত ৬, ২৬, **25. 05-00. 80-88.** 84, 66 প্রদার ২৫৮, ২৬০ প্রাদেশ ৩৩০ श्रामची ५, २,२,०२,७५ প্রধান ১৪৬, ১৪৭ প্রবীরপার্য ৩০৫ প্রভূপন্তি ¥8, \$60, 224 প্রভগতিহীন ১৪৮ প্ৰভূমিকি ৮৪ প্রমীল ৩২৩ প্রলম্ভন ৩১৬, ৩২০ প্রশাস্তা ৬১, ২০৮ প্রসঙ্গ ৩৩০ প্রসাদক (লাভ) ২,১৬ 562, 299, প্রসার ২৭৯, ৩০০ প্রদ্বাপনযোগ ৩২২ প্রসেব ৩২২ প্রহ্বণ ১৭, ৫৮, ২৯১ প্ৰবক ২৬৫ शाक्यारीयक २५४ পাঞ্চল ২৬২ भारत्याण २७२ পাদপথ ১৩৯ পার্য্যামিক ৪৮, ৫০, 522 পারতবিপক ১৬ পারুলবপরে ৪৯ পারাশর ১৭৪, ১৮২ পারিকম্মিক ৬২

পারিপত্তবাহ ২৬০ পারিভয়ক ৩১৮ পার্কি ১০৩, ১১৫-১৬, ১৪০-৪৩, ২৪০,

২৭৬ পর্যক্রিছার ৮২, ১০১ পাঞ্জিপ্রাহক ১৪১, 584, 580 প্রাঞ্জাহাসার ¥2, \$88 পাষণ্ড ৫৬ পাষ-ডী ২৯৮ প্রাপ্তব্যবহার ৪৫ প্রায়শ্চিত ১১ প্রাস ২০৮ পিজান ২ পিণ্যাক ৩১৪ পিশ্বন ৭০, ১৭৪, ১৮৩ পিশ্নেপ্র ৭১ প্রতিন ১৯১ প্ৰীডুনবৰ্গ ১৮৬ প্রীড়নীর (শয়ে,) ৮২ পীল, ২৮৮ প্রস্তাং (লাড) ২০১ প্রেমণ ৭৫ প্রোণচোর ১৬, ১৭ প্র্যথপ্রতি ২০০ <sub>প</sub>ুরুষ্ব্যসন ১৮০ প্রেষ্টোগ (মিন্ন) ১২৪ প্রব্রান্তর-সন্ধি ৯৬. 569 020-22, পুষ্টালক্ত 028-28 भारण्डली ०३५ <del>গুরোগ</del> (লা**ড**) ২১৭ প্রেপক ৩৩১ প্ৰেচিৰা ৯৮ প্রিবীক্স ৩০৬ প্রেডকার্যা ৬৩

পোতবদোর ৭ পোরব্যবহারিক ৬১ পোরাণিক ২৮৭

वक्कृदर्श २०५, २७० ¥9, ≥≥, বলিকপথ 204-02, 282, **246** ব্ধদন্ড ৩০. ৩৩, ৩৯, 85 বনদুগ ৮৯ বন্দাকা ৩২৮ ব্যুকী ৫৬, ২৭৩ বন্ধনাগার ৩২ বয়ন ১১ वत् ६५, २४५, २३३ ব্রুমী ১৮৯ বন্ধবি ৬১, ২৪৬ ব্যবিদ্ধ ২৮৫ বলয়ব্যহ ২৫৯ বলসম (লাভ) ১১৫ ব্লসম্খান ১৯৯ বলহীন (লাভ) ১৯৫ বলাখিক (লাভ) ১১৫ বলি ৩২২, ৩২৩ বপ্লভ ৪৮. ৫১ ব্যয় ২১৪ ব্যসন ১৭২ ব্যসনচভূষ্বর্গ ১৮০ ব্যস্নতিবৰ্গ ১৮০ वस ५८५, ५६६, २२४ ব্ৰন্তিক ২৬২ রক্ষা ৩২৩ রক্ষাণী ৩২৩ বাক্পার্যা ২৩, ১৮২ ব্যকাশ্র ৩০৮ বাক্যশেষ ৩৩০ বাগ্জীবীন ১৬২, ১৮৮ ব্যতব্যাধি ৮৬, ১৭৬, 248

বামন ৩০৬ বারস্বিদ্যা ২৮৭ বারিপথ ১০৮ বারিপথভোগ ১৩৩ বানা-শবোগ ১৬৩, ১৬৪ ্বান্তা ১৯ বাহাকোপ ১৭৭, ২১০-. 50 বাহ্য (প্রকৃতি) ২০১ ব্যাখ্যান ৩৩০ वारवर्गन ५८% ব্যায়াম ৮১ वासायय्क ১৪৪ রক্ষেপবল ২০৮ বিকল্প ২৩৬, ৩৩১ বিশ্বতি ১৬৫ বিক্রম ৪৮, ৪৯, ১২১ বিক্রমবিভাগী ৭৮ বিশ্বহ ৮৬, ৮৮ বিজয় ২৫৯ বি**জিগীয**় ৮২ বিজ্ঞান ৭৭ বিতংস ২২৮ বিদ্যাল্র ৩০৮ বিদ্যুল ২৮৮ বিধান ৩২৯ বিপৰ্বার ৩৩০ বিপ্রতিপত্তি ৩৩২ বিবিক্ত ৬৮ বিৰীভ ৩৮ বিবীতাধ্যক ৪৩ বিশ্ব ৩৪ विद्राग ১০৪, ১০৫ বির্পেকরণ ১৬৪, ৩১৬ বিশালবিক্যব্যহ ২৫৯, ₹60 বিশালাক ১৭৩, ১৮২, 204 विवयनग्रह ५८०

বিষমসন্ধি ১১৫, ১২২ বিষয় ৪৩ বিশিট 390, 20b. २८०, ७००-७०२ বিশ্বিকশ্ম ২৫০ বিণ্টিবশ্বক ৬২ বিষ্ণু ব্লু ৩৩২ বিহার ৩০৭ বীবধ ১৫২, ২২৬, ২০৯, ২৭৭, ২৭৯, 000 ব্রতিবিকার ৬৯ र्वाक ४५, ४१, ५०% বৃদ্ধানয় (লাভ) ২১৬ বহুম্পতি ২৫৭ বেণিকা ২৪১ বেদ ২৪৪ বেশ ১৩ বৈক্তুক ৪ বৈদেহক ৭, ৯, ১৩, ১४৯. २९२ বৈদেহকব্যঞ্জন ১৩১ रेवब्राक्ष ५५४ বৈশ্যবল ২০৮

ভক্ত ২০৯
ভবারন্তী (মিন্ন) ১১৯
ভবণী ০১৪
ভব-পিশ্ড ২৪৫
ভাশ্ডভার ১৬৪
ভারন্থাজ ৭০, ১৭২,
১৮১, ২৬৮
ভিন্দুক ৬ ৫
ভিন্দুক ৪৯, ৫০
ভিন্দুক ৪৯, ৫০
ভিন্দুক (সেনা) ১৯৫
ভিন্দুক (সেনা) ১৯৫
ভিন্দুক (সেনা) ১৯৫
ভিন্দুক (সেনা) ১৯৫
ভিন্দুক (সেনা) ১৯৩
ভিন্দুক (স্কুমি) ১০৩
ভূমিলাভ ১২২
ভিন্দুক ১২২, ১২৮

ভূতক্ষল ২০৩, ২০৪
ভূতবল ১২৯, ২০৪,
২০৭
ভূতাভারণীয় ৬০
ভূতাভারী (সামস্ত)
১৬৮, ১৬৯
ভেদ ১৪৮, ১৫৫, ২০৯,
২২৪, ২২৬-২৭,
২০৫-০৬
ভূতাগ্রাহ্ ২৪৭, ২৫৭,

মকরবাহ ২০১, ২৫১ মণি ৩২৮ ম-ডেল ১৪৫ মন্ডলব্যুহ ২৪৭, ২৫৭, ২৫৯ মশ্ভেলাক ৩২৩ यमनतमाय ७२५ মদনযোগ ৩১৩ মদনরস ১৬৪. ২১১ महाधास २४ মদ্রক ২৬২ মধ্যম ৮৩, ৯৩, ১২০-\$25, \$80, \$46, **\$80, \$99** মধ্যমসাহসদণ্ড ৬, ১১, 05, 00, 08, 82, 86 মন্ত ২২ মশ্বব্ৰ ১৪৪, ২৬৯, 495 मन्द्रमस्टि ५८, ১৫०, 446 মক্তপজিতীন ১৪৮ মন্ত্ৰিসন্ধি ৮৪ মন্ত্রিপরিষংপাল ৬১ মরক ১১, ১০০ 平田学 そもそ

মহাকাছ ১০ মহাজন ২২২ মহাভোগ (মিয়া) ১২৫. 569 -মহামার ৪৮, ৪৯, ৭৪, 290, 296 মাগ্ধ ৬২, ১৪৫ মাণ্ব ১৫ মাণবক ৬২ মাশ্ডব্য ২৬ মায়াযোগ ১২ মারাবিদ্যা ৫৯ মাৰ্গশীৰী (ধাত্ৰা) ২০২ মিত ৮২, ১২১, ১২২, **১২**0, ১২৪ মিলপ্রকৃতি ৮২ মিতবল 5**25, 200,** २०६, २०५ মিতভাবী (মিত) ১২৩ মিত্রভাবী (সামন্ত) 358. 353 মিলমিল ৮২, ১৪৫ মিচলাভ ১২২ মিতসকি ১২২ মিত্রুম্প ৮০ भूश ७५, ८४, ५२ ম,দাপরীক্ষক ৫৮ ম,শ্টিকা ১৫ ম্লভান ১৪০, ১৫২, २४०, २৯७ ম্লেহর (শার্) ১৪২ ম্বা ১৫ ম্বিককর ১২ भ्रिकश्का ১২ মাগবন ১১১ মেঘী প্রততিপরিকেপ 209 रन्गाक् ५२५, २४० स्थ्यक्रांचि ५८५, ००४

মোলবল ১২১, ২০০-২০৪, ২০৭ মোহ,ত্তিক ২৮৭, ২৯২ বংকিঞ্চনকারী ১৩৪

যবস ২০১ ষাতব্য ৮২,১০০,১০২, 500, 558, 55b যাত্রাবিহার ২৯৩ যান ৮৬, ১০ যাগ ২০০ যুগা ১৫১ যুর্বিষ্ঠির ১৮৩ ধুবরাজ ৭৩ যোগ ১৯৯, ২৯৬, ৩২৭ のきか যোগক্ষেম ১৫২, ১৭৪, 298 যোগপ্রণিধি ৮৮ যোগপরেম ৭৪ যোগবামন ২৮০, ২৮৯, シンク যোগিপোবক ৬১

রজক ২
রথকম্ম ২৫০
রথব্যহ ২৫৪
রথব্যহ ২৫৭
রথিক ৬১
রসদ ১৪
রাজনক্ত ৩০৮
রাজপ্রকৃতি ৮৩, ১৩৯
রাজবিহার ১৫০, ১৫৯
রাজবিহার ৭২
রাজবাসন ৭৩
রাজবাসন ৭৩
রাজবাসন ৭৩
রাজবাসন্ধ্য ৭২, ৭৩

যোনিবধ ৩০৮

রাজশব্দেশিকবিবী ২৬৩
রাজস্রে ৬২
রাজস্থে ১৪৭
রাজস্থা ৫০, ৫২, ৬১
রাজ্মন্থ্য ৫৩, ১৬৬,
২১১, ২৩৫
রশ্বে ১৯, ৫৯
র্শদর্শক ৫
রশোজবিবা ১৮৮
রশোজস্তীত ১৯

লকুট ২৮৮
লকপ্রশামন ৩০৭
লাভ (স্শপং) ২১৫
লিক্ষী ১৮
লিচ্ছিবিক ২৬২
লেখক ০২
লেকেযান্রাভিজ্ঞ ৬৫
লোভ ১০৪, ১০৫
লোভবিজ্ঞাী ২৬৮

শকটপরিকেপ ২৩৬ শকটব্যুহ ২০৯, ২৫৯ শ্কাসমন্ত ৭৭ শক্যারভী (মিত্র) ১১৯ শতকা ১৮, ১৯ শৃংকতক ২৬ শপথ ১৫৯ শম ৮১, ১৫১ শম্যা ১৭ শৃস্বর ৩২২, ৩২৩ শঙ্গা ২০৮ শুলাকা ৩৫ শ্বলী ২০৮ স্থাবিং ৩২০ •মশানবিধি ২৫ শ্বিপ ৭৭ শাকটিক ৪৫ **णाममकर्मण २०**०

नाखिकमा ५५ শামীকরণ ৩১৭ শিকাপ্রহার ৬ न्द्रकागण ०७ भएकदर्थ २৯, ०७, ०४ महारा ५५ শাস্ত্রক ২০৮ শ্ন্যনিবেশন ৫২, ৮৭ শ্নানিবেশ ৫৪ म्राभाग २५०, २०४, 290 শ্ন্যম্ল (সেনা) ১৯৫ শ্নাহান ১৭৪ শোল ২৫৮ শ্বেতীকরণ ৩১৬ লেশী ১, ৬১, ৮৯, ১৮৯ **ट्यांगिन** ५२५, ५७०, **२००-२**०8. 209. 208 ट्यमीयाचा ১৮৯, २৯৪ শ্রেদীমনুষ্যা (ভূমি)

১৩০ দৈলখনক ৬২ দৈলদান ৮৯ দোলিডক ২৭৮, ০১৫

बाष्ट्रादेश ४५, ४७

সন্দর্শণ ২৯৯
সন্দ ১৮৫
সন্দর্শন্তি বিদ্যাবিদ্যাবী ১৮৫
সাল্লাব্যাহ ২৫৮, ২৬০
সাল্লা ১৮, ২১২, ২১৯২২০, ২২৩, ২২৬
সাল্লা ৮৬, ৮৯, ১৫৯
সাল্লাবিদ্যালী ৭৮
সাল্লাব্যালা ৯৫৯, ১৫২

সমাহ ২০৩ সন্ধিধাতা ১৮১ সপ্তাকৃতি ১৭২ সম ৮৪, ১৩ সমন্ততেয়েগিদ ২০১ সমস্ততোথ সংশয়াপং 205 সমন্ততোনথাপং ২০১ সমন্ততোনথ সংশয়াপং 502 সমবায় ১০১ সময়াচারিক ৬৭, ১৫৩ সমসন্ধি ১১৫, ১২২ সমাজ ৫৭, ৫৮, ২৯৯, 600 সমাধি ১৫৯ সমাধিমোক ১৬২ সমাশ্রয় ১০ সমাহতা ১৮১ সমুক্র ৮ সমাক্তর ২৩৫, ৩৩১ मर्दिक (र সরুপতী ৩১৫ সর্বতোভদ্র ২৫৯, ২৬০ সর্বতোভদুব্যুহ ২৪০ সর্শ্বতেভোগী (মির) **३२७, ५२७** সপসারী ২৫৯ সর্বভোগ (মিচ) ১২৫. 546 সহজ্ঞমিত ৮৩ সহজ্ঞাত্ত ৮৩ সহোদক (সেতৃক্র) 204 স্পন্ধাবার ১৫১, ২২৬, ২৩৭ ভ্রম্বরক্ষেপ ২৩৮ ম্বর্জ ১৮৬, ১৯১ ठडनराज्य ३८८

श्वार्ग ५००, ५०७ স্থাপথ ১০১ স্থলপথভোগ ১৩৩ ন্থলবোধী ১৩০ श्ववद्यश्च ५ ४ স্বচক্র ১৮৭ ম্বরংগ্রাহ (দ'ড) ২১১ माम ১৪৮, ১৫৫, ২০১, २२०, २०६-०७ সামত ৭২, ৮২, ১০১, 558-59, 568-65 সামবারিক ১০৫-১০৭, >29, >00, >86-84. ২২৫ সাম, আয়িক ১৭১ সার্থ ২১৮ সার্থগণ ৫০ সম্বর্গারী ৬৪ সাধিক ৪৩ সালপরিকেপ ২৩৮ সাহস ২৭১ স্থান ৮১, ৮৮, ৯৮, ১৩১ স্থানিক ২২, ২৯০ শ্বানীর ১১১ স্থাবরসন্ধি ১৫১ সিহ্নি ২৩৬ ব্যিত (অমিচ) ১৪১ ন্থিরকর্মা ১১৯, ১৪৭ সপ্রেতিভাব্যহ **268, 280** भावन (भारत) ८ স্বৰ্ণ-সন্ধি ১৬ माख्या ১৮৮ স্যাত ২০২ भूताचे २७५ 🗥 স্পোধ্য (মিত্র) ১১৬ मर्ज्ञ (व.क) ১২ সীভা ১৬০ সীভাতার ৫৫

স্চিৰ্চে ২৪০, ২৫১ সূত ৬২, ২৪৫ সূস ৫১ <del>গু,লকণ'ব্,ড</del>়

२७५, २७०

स्नामक ५५ সেতৃ ৩৮ সেতৃকর্ম্ম ৮৭ সেতৃবন্ধ ১৪৯, ২৪১ সেনাপতি ২৫১, ২৬১ रमनाम्या २५८ ন্তেরদণ্ড ৪ সোম ৩১৫ া সৌপ্তিকাপহরণ ২৮৪ সেভিক ১৬৩, ২৬৫ সংখ্যায়ক ৬২ সংগ্ৰহণ ৪২ मध्य २७२, २७०,

288

সংঘী ২৬২ मध्यस्य २२५-२৮ **সংখ্य**,था २७७ সংঘম্খ্যপতে ২৬৪ **मर**म्**रमटक्**म ७८ भरवनन ১७ भरदननकाती ५८ সংবাহক ১৬৩ সংবিং ২৬৪ সংযানপথ ১০৮ সংকর্মাবভাগী ৭৮ সংশ্ৰপ্ত ৮৬, ৯১, ১৫ সংশয় ৩২১ সংশয়হিবর্গ ২৩৪ সংশয়রূপা (আপং) 455 সংহিতপ্রযাণ ১০৭ সংসগ্ৰিদ্যা ২৮৬ সংস্থাধ্যক ৭, ১১

সংহতব্যহ ২৪৭

হতাপ্রবেগ (সেনা) ১১৫ হত্তিকৰ্ম ২৫০ হত্তিবন ৭৯, ১৯১ হান্তবনকর্ম্ম ৮৭ হপ্তিব্যহ ২৫৪ হত্তিয়াম ২৫৬ हुन्दकान (माध) २५७ राप्टेक २०४ হিরণ্য ৭৯, ৯৯, ১০৫, 528, 566, 555 হিরণ্যকর ৫৬ হিরণ্যদণ্ড ৩২ হিরণ্ডাভ ১২২ হিরণ্যসন্ধি ১২২ হীন ৮৪, ১৩ হেম্বর্ম ১১৯ হৈমবতপথ ২০১

## कौटिलोयं अर्थशास्त्रम्

[ द्वितीयः खण्डः ]

किकाता-प्रेसिडेन्सि-महाविद्यालयस्य प्राक्तन-प्रधान-संस्कृताध्यापकेन एम्. ए., पि. एइच्. डि., विद्यावाचस्पतीत्युपाधियुक्तेन श्रीराधागोविन्द वसाकेन सम्पादितं वक्तभाषयोनूदितञ्च

जेनारेस प्रिण्डासं य्याण्ड पानिलशासं प्राइमेट लिमिटेड् इत्यास्य मुद्रणारूये स्नातकोपाधिषारिणा श्रीसुरजित्चन्द्र दासेन मुद्रितं प्रकाशितञ्ब

#### সম্পাদকের নিবেদন

বিগত ইং ১৯৬৪ সালের জুলাই মাসে কোটিলীয় অর্থশাস্ত্রের বিতীয় সংস্করণের প্রথম থণ্ড মংকৃত বঙ্গানুবাদসহ মূল সংস্কৃতাংশের মুদ্রণ সহিত প্রকাশিত হইয়াছে। সেইভাবে মুদ্রিত হইয়া প্রকাশিত হওয়ায় সেই প্রথম থণ্ড পুস্তক বহুলভাবে বিক্রীত হইয়াছে বলিয়া আমার প্রকাশকগণের নিকট শুনিয়া আমি অত্যন্ত উৎসাহিত হইয়াছি ত্রবং এই প্রস্থের ক্রেতৃবর্গের নিকট অত্যন্ত কৃতজ্ঞ হইয়াছি বলিতে পারি। এইবার অর্থশাস্ত্রের দিতীয় সংস্করণের দ্বিতীয় খণ্ড প্রকাশিত হিইল।

এই খণ্ডেও মংকৃত বঙ্গান্ধবাদসহ মূল সংস্কৃতাংশ সংযোজিত করা হইয়াছে। এই খণ্ডের বিষয়বস্তু সাধারণতঃ শিক্ষার্থীদিগের অজ্ঞাত, কারণ, কলিকাতা বিশ্ববিপ্তালয়ের 'প্রাচীন ভারতের ইতিহাস ও কৃষ্টি' বিভাগের অল্পনংখ্যক ছাত্র-ছাত্রীদের প্রথম খণ্ডের বিষয়বস্তুসহ এই দ্বিতীয় খণ্ডের বিষয়বস্তুর কর্থাঞ্চং জ্ঞান প্রয়োজনীয়। স্নাতকোত্তর শ্রেণীসমূহের বিভাগী, জিজ্ঞাসু সুধীজন ও ভারততত্ত্ববিষয়ে গবেষকগণের সুবিধার জন্ম এই দ্বিতীয় খণ্ডের বঙ্গান্ধবাদসহ মূল সংস্কৃতাংশ প্রকাশ করা হইল।

েকোটিল্যের রাজনৈতিক মতামতের সম্যগ্রপে প্রতিপত্তির 
ক্যু উচ্চগ্রেণীর ছাত্র-ছাত্রীরা ও রাজনীতিশারে অভিজ্ঞ অধ্যাপক
মধ্যাপিকাগণ যাহাতে সংস্কৃত মূলের সহিত বঙ্গাস্থবাদ পড়িতে
বিরেন, সেই চিন্তা লইয়াই এই ছিতীয় খণ্ড প্রকাশিত হইল।
বিশেষ মূল সংস্কৃতাংশে যেরূপ সঙ্গত পাঠ গৃহীত হওয়ার যোগ্য
বিশ্ব প্রদ্বে স্থিবিষ্ট করা হইল। বর্তমান সংস্করণ হইতে এই ছরুছ

কোটিলীয় অর্থশান্তের পঠন-পাঠনে যদি দেশের লোকের, বিশেষতঃ বালাদাদেশের লোকের, কোনরূপ উপকার সাধিত হয়, তাহা হইলেই এই বৃদ্ধ সম্পাদক ও অমুবাদকের সর্বপ্রকার আম সক্ষ. বিবেচিত হইবে। ইতি—

৬৯, বালিগঞ্জ গাড়েন্স্, কলিকাতা-১৯ ইং ১৫ই আগউ, ১৯৬৭ সাল

শ্রীরাখাগোবিন্দ বসাক

## द्वितीयसण्डस्य हिस्टा क्रमणा

# कण्टकशोधनं—चतुर्थमधिकरणम्

|                      | <del></del>                                     | _    |            |
|----------------------|---|------|------------|
| <b>अ</b> ष्यायसंख्या | विषयावली  |      | पृष्ठम्    |
| ۶,                   | क्।रुकररक्षणम्                                  | •••  | ₹.         |
| २                    | वेदेहकरक्षणम्                                   |      | ą          |
| ₹                    | उपनिपातप्रतीकारः                                | •••  | 4          |
| X                    | गूढ़ाज।विनां रक्षा                              |      | ૭          |
| 4                    | सिद्ध <b>न्य</b> ञ्जनेर्माण <b>ब</b> कप्रकाशनम् |      | 6          |
| Ę                    | <b>शङ्कारू</b> पकर्माभिग्रहः                    | ,    | १०         |
| 9                    | आ <b>शुमृतकपरीक्षा</b>                          |      | <b>१</b> २ |
| ሪ                    | वान्यकर्मानुयोगः                                | •••  | १३         |
| 9                    | सर्वाधिकरणरक्षणम्                               |      | 14         |
| ₹ 0                  | एकाङ्गवधनिष्ट्रयः                               | •••  | १८         |
| 88                   | शुद्धविषक्षच दण्डकल्पः                          | ***  | १९         |
| <b>१</b> २           | कन्यात्रकर्म                                    | ***. | ₹₹         |
| १३                   | अतिचारदण्डः                                     | •••  | २३         |
| ;                    | योगवृत्तं —पञ्चममधिकरणम्                        |      |            |
| ۶                    | दाण्डकर्मिकम्                                   | •••  | २५         |
| २                    | कोशाभिसंहरणम्                                   |      | २८         |
| ş                    | <b>मृत्य</b> भरणी <b>य</b> म्                   | •••• | 38         |
| ¥                    | <b>अनुजी</b> बिवृत्तम्                          | ***  | 33         |
| 4                    | समयाचारिकम्                                     | •••  | \$8        |
| Ę                    | राज्यप्रतिसन्धानम                               | **** | 35         |

## मण्डलयोनि.—यष्टमधिकरणम्

| भध्यायसंख्या | <b>बिषयावली</b>   |       | पृष्ठम्    |
|--------------|---|-------|------------|
| 8            | प्रकृतिसम्पदः   | •••   | 36         |
| २            | द्मम≆्यायिकम्   | •••   | <b>∀</b> • |
|              | षाड् ग्रुण्यं—सप्तममधिकरणम्   |       |            |
| १            | षाह्गुण्यसमुद्देशः, क्षयस्थानवृद्धिनिश्चवश्च                                  |       | ४३         |
| ् २          | संश्रयवृत्तिः   |       | ४५         |
| 3            | समहीनज्यायसां गुणाभिनिवेशः, हौनसन्धय  | হেৰ   | ४६         |
| *            | विगृह्यासनं, सन्धायासनं, सम्भूयप्रयाणञ्ज                                      | •••   | ₹€         |
| ų            | यावध्यामित्रयोरसिग्रहचिन्ता, क्षयलोभिक्षर<br>प्रकृतोनां, सामवायिकविपरिमर्शक्च | ानहेर | ख:<br>५१   |
| Ę            | <b>सं</b> हितप्रयाणिकं, परिपणितापरिपणि <b>ता</b> पसृत                         | (হিच  |            |
|              | स≑धयः   |       | ५४         |
| હ            | द्वै घीमाविकाः सन्धिविक्रमाः  | •••   | <b>પ</b> છ |
| 6            | यातब्यवृत्तिः, अनुग्राह्यमित्रविशेषादच  |       | ५६         |
|              | मित्रहिरण्यभूमिकर्मसन्धयश्चः—   |       |            |
| 3            | मित्रसन्धिः, हिर <b>ण्य</b> सन् <del>धिः</del>                                |       | Ęo         |
| १•           | मू <b>मिसन्धिः</b>  | •••   | Ę϶         |
| ११           | अनव सित सन्धिः  |       | Ęų         |
| १२           | कर्मसन्बिः  |       | ६७         |
| <b>१</b> ३   | पार्षिणग्राहचिन्ता  |       | ६ृष्ट      |
| . 68         | हीनशक्तिपूरणम्  | •••   | ७२         |
| * <b>१</b> ५ | बलबता विगृह्योपरोषहेतवः,  |       |            |
|              | <b>४०</b> डोपनतवृत्त <b>ं</b> च   | •••   | ७४         |

| <b>अध्याय</b> संख्या | विषयावली                                   |        | पृश्ठम् |
|----------------------|--|--------|---------|
| १६                   | दण्डोपनायिवृत्तम्                          |        | હદ્     |
| <b>?७</b>            | सन्धिकमं, सन्धिमोक्षश्च                    |        | 92      |
| १८                   | मध्यमचरितोदासीनचरितमण्डलचरितानि            |        | 6•      |
| ब्यस                 | नाधिकारिकम् - अष्टममधिकरण                  | म्     |         |
| 8                    | प्रकृतिव्यसन <b>व</b> र्गः                 | •••    | -८३     |
| २                    | राजराज्ययोव्यसनचिन्सा                      | •••    | ረ६      |
| <b>ર</b>             | पुरुषव्यसनवर्गः                            |        | 66      |
| ¥                    | पोड़नवर्गः, स्तम्भनवर्गः, कोशसङ्गवर्गश्च   | •••    | 93      |
| ષ                    | बलव्यसनदर्गः, मित्रव्यस्नदर्गदच            | •••    | €3      |
| अवि                  | भय <del>ास्</del> यत्कर्म—नवममधिकरणम्      |        |         |
| १                    | शक्तिदेशकालबकाबलज्ञानं, यात्राकालाक्ष      |        | εę      |
| २                    | बलोपादानकालाः, सन्नाहगुणाः, प्रतिबक्तका    | र्गं च | 8૮      |
| ₹                    | पश्चात्कोपचिन्ता, बाह्याभ्यन्तर-           |        |         |
|                      | प्रकृतिकोपप्रतीकारदच                       |        | १०१     |
| K                    | क्षयव्ययलाभिवपरिमर्शः                      |        | ₹•₹     |
| 4                    | बाह्य। भ्यन्तराश्चापदः                     |        | १०५     |
| Ę                    | दूष्यशन्रुसंयुक्ताः                        |        | १०७     |
| •                    | <b>बर्धानर्थसंशययुक्ताः, त्रासामु</b> पाय- |        |         |
|                      | बिकस्पजाः सिद्धयस्य                        | • • •  | 808     |
|                      | सांघामिकं — दशममधिकरण ्                    |        |         |
| ę                    | स्कन्यावारनिवेशः                           | •••    | ११३     |
| २                    | स्कन्धावारप्रयाणं, दक्कव्यसनावस्कन्द-      |        | •       |
| !                    | कालरक्षणं च                                |        | 888     |

| बध्याय संस्था                  | विषयावसी                                       |        |                   |  |  |
|--------------------------------|--|--------|-------------------|--|--|
| ŧ                              | कूटयुद्धविकल्याः, स्वतैन्योत्साहनं,            |        |                   |  |  |
|                                | स्व <b>द</b> लान्यब <b>ल</b> ञ्चायोगद <b>च</b> | •••    | ₹ ₹               |  |  |
| *                              | युद्धभूमयः, पत्त्यश्वरथहस्तिकर्माणि            |        | ११८               |  |  |
| <b>પ</b>                       | पक्षकक्षोरस्यानां बलाग्रतो ब्यूहविभागः,        |        |                   |  |  |
|                                | सारकल्गुबलविभागः, पत्त्राश्वरश्रहस्तियुः       | द्वानि | १२०               |  |  |
| Ę                              | दण्डभोगमण्डलसंहतस्यूहस्यूहमं तस्य              |        |                   |  |  |
|                                | प्रतिब्यूहस्थापनं च                            | •••    | १२२               |  |  |
| ₹                              | नंघबृत्तम् —एकादशमधिकरणम्                      |        |                   |  |  |
| *                              | मेदोपादानि, उपांशुदण्डश्च                      |        | १२४               |  |  |
| आबलीयसं—द्वादशमधिकरणम्         |  |        |                   |  |  |
| ę                              | दूतकर्माणि—सन्धियाचनम्                         | •••    | १२७               |  |  |
| २                              | वाक्ययुद्धं, मन्त्रयुद्धम्                     | •••    | १२८               |  |  |
| ₹                              | <u> </u>                                       |        | \$\$ <b>•</b>     |  |  |
| R                              | शस्त्राग्निरसप्रणिधयः, वीवधासारप्रसारवधक्व     |        | १३२               |  |  |
| 4                              | योगातिसंघानं, दण्डातितंघानम्, एकविश्वय         | ध्च    | <b>१३३</b>        |  |  |
| दुर्गलम्भोपायः—त्रयोदशमधिकरणम् |  |        |                   |  |  |
| 8                              | <b>उपजा</b> पः                                 | •••    | १३६               |  |  |
| २                              | योगवासनम्                                      | •••    | १३७               |  |  |
| ₹                              | अपसर्पप्रणिचिः                                 | •••    | <b>6.8.</b>       |  |  |
| A                              | पर्युपासनकर्मं, अवसर्दञ्च                      | •••    | <b>१</b> ४२       |  |  |
| 4                              | <del>राज्य</del> प्रदामनम                      |        | 8,8, <del>6</del> |  |  |

# औपनिषदिकं—चतुर्दशमधिकरणम्

| <b>अञ्चा</b> संख्या | विषयावसी                    |      | पृष्ठम् |
|---------------------|-----------------------------|------|---------|
| *                   | पर <b>धातप्रयोगः</b>        | •••  | \$80    |
| २                   | प्रलम्भनम्—अद्भुतोत्पादनम्  |      | १५०     |
| ą                   | भेषज्यमन्त्रप्रयोगः         |      | १५३     |
| ¥                   | स्ववलोघातत्रतीकारः          |      | १५८     |
|                     | तन्त्रः किः पञ्चद्शमधिकरणम् |      |         |
| ₹                   | <b>त</b> न्त्रयुक्तसः       | **** | १५६     |

# कौटिल्यं अर्थशास्त्रः

# कण्टकशोधनम् — चतुर्थमधिकरणम् ।

#### ७६ प्रक. कारुकरक्षणम् ।

प्रदेष्टारस्रयस्रयोऽमात्याः कण्टकशोधनं कुर्युः ।

अथ्यंत्रकाराः कारुशासितारः सन्निक्षेप्तारः स्विबत्तकारवः श्रेणा-प्रमाणा निक्षेपं गृह्णीयुः । विपत्तौ श्रेणी निक्षेपं भजेतः । निर्दिष्टदेशकाल-कार्यं च कमं कुर्युः । अनिर्दिष्टदेशकालकार्यापदेशं कालातिपासने पादहौनं वेतनं तिरुवगुणश्च दण्डः । अन्यत्रः भ्रेषोपनिपाताभ्यां नष्टं विनष्टं वाऽभ्यावहेयुः । कार्यस्यान्ययाकरणे वेतननाशस्तिद्विगुणश्च दण्डः ।

तन्तुवाया दशेकादशिकं सूत्रं वर्धयेयुः । वृद्धिच्छेदे छेदिद्वगुणो दण्डः सूत्रमूल्यं वानवेतनम् । क्षौमकौशेयानामध्यर्धगुणम् । पत्रोणीकम्बलदुक्लानां छिगुणम् । मानहीने हीनापहीनं वेतनं तिह्यृगुणश्च दण्डः । तुलाहीने हीनचतुर्गुणो दण्डः । सूत्रपरिवर्तने मूल्यद्विगुणः ।

तेन द्विपटवानं व्याख्यातम् ।

ऊर्णातुलायाः पञ्च बलिको विहननच्छेदो रोमच्छेदश्च ।

रजकाः काष्ठफलकश्लक्ष्णशिलासु वस्राणि नेनिज्युः। अन्यत्र नेनिजन्तो वस्रोगघातं षट्पणं च दण्डं दद्युः।

मृद्रराङ्कादन्यद्वासः परिद्यानास्त्रिषणं दण्डं दशुः । परवस्त्रविक्रयाः वक्रयाधानेषु च द्वादशपणो दण्डः । परिवर्तने मृत्यद्विगुणो वस्त्रदानं च । मृकुलाबदातं शिलापट्टशुद्धं धौतसूत्रवर्णं प्रमृष्टश्वेतं चेकरात्रोत्तरं दशुः । पत्र्यात्रिकं तनुरागं, षष्ट्रात्रिकं नीलं, पुष्पलक्षामिण्जिष्ठारक्तं, गुरुपरिकमं यहोपचार्यं जात्यं वासः सप्तरात्रिकं । ततः परं वेतनहानि प्राप्तृ गुः ।

श्रद्धेया रागविवादेषु वेतनं कुशलाः कल्पयेयुः ।

परार्थ्यानां पणो वेतनं, मध्यमानामधंपणः, प्रत्यवराणां पादः। स्थूलकानां माषद्विमाषकम्, द्विगुणं रक्तकानाम्। प्रथमनेजने चतुर्भागः क्षयः। द्वितीये पञ्चभागः। तेनोत्तरं व्याख्यातम्।

रजकैस्तन्तुवाया व्याख्याताः।

मुबर्णकाराणाम् । अशुचिहस्ताद्र्यं मुबर्णमानास्याय सरूपं कीणतां द्वादशवणो दण्डः, विरूपं चतुर्विशितवणः, चीरहस्तादष्टचत्वारिशत्पणः । प्रच्छन्नविरूपमूल्यहोनक्रयेषु स्तेयरण्डः । कृतभाण्डोपधी च । सुवर्णान्माषकमपहरतो द्विशतो दण्डः । रूप्यधरणान्माषकमपहरतो द्वादशपणः । तनोत्तरं व्याख्यातम् । वर्णोत्कर्षमसाराणां योगं वा साध्यतः पञ्चशतो दण्डः । तयोरपवरणे रागस्यापहार विद्यात् । माषको वेतनं रूप्य-धरणस्य । सुवर्णस्याष्टभागः । शिक्षाविशेषेण द्विगुणा वेतनवृद्धिः । तेनोत्तरं व्याख्यातम् ।

ताम्रवृत्तकंसर्वक्रन्तकारक्रुक्कानां पश्चकं शतं वेतनम् । ताम्रपिण्डो दशभागक्षयः । पलहीने हीनद्विगुणो दण्डः । तेनोत्तरं व्याख्यातम् ।

सीसत्रपुरिण्डो विश्वतिभागक्षयः । काकणीद्वयं चास्य पलवेतनम् । तनोत्तरं व्याख्यातम् ।

रूपदर्शकस्य स्थितां पणयात्रामकोप्यां कोपयतः कोप्यामकोपयतो द्वादशपणो दण्डः । व्याजी परिशुद्धा पणयात्रा । पणान् माषकमुपजीवतो द्वादशोपणो दण्डः । तेनोत्तरं व्याख्यातम् । कूटरूपं कारयतः प्रतिगृह्णतो निर्यापयतो वा सहस्रं दण्डः । कोशे प्रक्षिपतो वधः ।

सरकपांसुधावकाः सारिवभागं लभेरन् । डी, राजा रह्नां च । रहा-पहार उत्तमो दण्डः ।

स्वनिरत्ननिधिनिवेदनेषु षष्ठमंशं निवेत्ता लभेतः। द्वादशमंशं भृतकः। शतसहस्राद्रध्वं राजगामी निधिः। ऊने षष्ठमंशं दद्यात्।

पौर्वपौरुषिकं निधि जानपदः शुचिस्स्वकरणेन समग्रं स्रभेतः। स्वकरणाभावे पञ्चश्वतो दण्डः। प्रच्छन्नादाने सहस्रम्। मिषजः प्राणाबाधिकमनाख्यायोपक्रममाणस्य विपत्तौ पुर्वस्साहस-दण्डः । कर्मापराधेन वि ।त्तौ मध्यमः । मर्मवधवेगुण्यकरणे दण्डपारुष्यं विद्यात् ।

कुशोलवा वर्षारात्रमेकस्या वसेयुः । कामदःतमितमात्रमेकस्यातिवातं च वर्जयेयुः । तस्यातिकमे द्वादशपणो दण्डः । कामं देशजातिगोत्रचरण-मैथुनापहान नर्मयेयुः ।

कुशोलवेश्वारणा भिक्षुकाश्च व्याख्याताः। तेषामयश्यूलेन यावतः पणानभिवदेयुः तावन्तः शिकाप्रहारा दण्डाः। शेषांणां कर्मणां निष्पत्ति-वेतनं शिल्पिनां कल्पयेत्।

एवं चोरानचोराख्यान् विणक्कास्कुञ्जीलयान् । भिक्षुकान् कुहकांश्चान्यान्यारयेद्देशपीडनात् ।। इति कोटिलोयार्थशास्त्रे कण्डकशोधने चतुर्थाधिकरणे प्रथमोऽध्यायः कारुकरक्षणं, आदितोऽष्टसप्ततिसमः ।

### ७७ प्रकः वैदेहकरक्षणम् ।

संस्थाध्यक्षः पण्यसंस्थायां पुराणमाण्डःनां स्वकरणविशुद्धानामाधानं विकयं वा स्थापयेत् । तुलामानमाण्डानि चावेक्षेत, पौतवापचा यत् ।

परिमाणीद्रोणयोरधंपलहीनातिरिक्तमदोषः । पलहीनातिरिक्ते द्वादश-पणो दण्डः । तेन पलोक्तरा दण्डवृद्धिव्यक्तियाता ।

तुलायाः कर्षहीनातिरिक्तमदोषः। द्विकर्षहीनातिरिक्ते षट्पणो दण्डः। तेन कर्षोत्तरा दण्डवृद्धिव्याख्याताः।

आह्रकस्याधंकवंहीनातिरिक्तपदोषः । कवंहीनातिरिक्ते त्रिपणो दण्डः। तेन कर्षोत्तरा दण्डवृद्धिव्याख्याता ।

तुलामानविशेषाणामतोऽन्येषामनुमानं कुर्यात् ।

तुलोमानाभ्यामतिरिक्ताभ्यां कीत्वा होनाभ्यां विकीणानस्यं त एव द्विगुणा दण्डाः ।

गण्यपण्येष्वष्टभागं पण्यमूल्येष्वपहरतष्षण्णवतिर्देण्डः।

काष्ठलोहमणिमयं रज्जुचमंमृन्मयं सूत्रवल्करोममयं वा जात्यमित्य-जात्यं विक्रयाधानं नयतो मूल्याष्टगुणो दण्डः ।

सारभाण्डमित्यसारभाण्डं, तज्जातमित्यतज्ञातं, राढायुक्तम्पधियुक्तं समुद्गपरिवर्तिमं वा विक्रयाधानं नयतो हीनमूल्यं चतुष्पञ्चासत्पणो दण्डः, पणमूल्यं द्विगुणो, द्विषणमूल्यं द्विशतः। तेनार्घवृद्धौ दण्डवृद्धिव्याल्याता।

कारुशिल्पिनां कर्मगुणापकृषंमाजीवं विकयक्रयोपवातं वा सम्भूय समुत्यापयतां सहस्रं दण्डः।

वैदेहकानां वा सम्भूय पण्यमवरुन्धतामनर्घेण विक्रीणतां कीणतां वा सहस्र दण्डः ।

तुलामानान्तरमर्घवर्णान्तरं वा धरकस्य मापकस्य वा पणमूल्यादष्टभागं हस्तदोषेणाचरतो द्विशतो दण्डः । तेन द्विशतोत्तरा दण्डवृद्धिव्याख्याता । धान्यस्तेहस्रारलवणगन्धभैषज्यद्रव्याणां समवर्णीपधाने द्वादशपणो दण्डः ।

यन्निमृष्टमुपजीवेयुः, तदेषां दिवससञ्जातं सङ्ख्याय विश्वक् स्थापयेत्। केतृतिके त्रोरन्तरपतितमदायादन्यं भवति । तेन धान्यपण्यनिचयांश्चानुक्राताः कुर्युः । अन्यथानिचितमेषां पण्याध्यक्षो गृह्हीयात् । तेन धान्यपण्यविकये व्यवहरेतानुग्रहेण प्रजानाम् ।

अनुज्ञातक्रयादुपरि चेषां स्वदेशीयानां पण्यानां पञ्चकं शतमाजीवं स्थापयेत्। परदेशीयानां दशकम्। ततः परमर्घं वर्धयतां कये विकये वा भावयतां पणशते पञ्चपणाद्विशतो दण्डः। तेनार्घवृद्धौ दण्डवृद्धि-व्यक्तियाता।

सम्भूयक्रये चैषां अविकीते नान्यं संभूयक्रयं दद्यात् । पण्योपद्याते चैषामनुग्रहं कुर्यात् पण्यबाहुल्यात् ।

पण्याध्यक्षः सर्वपण्यान्यकेमुखानि विक्रीणीत ।

तेष्वविक्रीतेषु नान्ये विक्रीणारन् । तानि दिवसवेतनेत विक्रीणीरन् अनुप्रहेण प्रजानां ।

देशकास्त्रान्तरितानां तु पण्यानां---

प्रक्षेपं पण्यतिष्यत्ति शुल्कं वृद्धिमवक्रयम् । व्ययानन्यारच सङ्ख्याय स्थापयेदयंभद्यत् ॥

इति कौटिलीयार्थशस्त्रे कण्डकशोधने चतुर्थाधिकरणे द्वितीयोध्यायः वैदेहकरक्षणम्, आदित एकोनाशौतितमः।

#### ७८ प्रक. उपनिपातप्रतीकारः ।

देवान्यष्टौ महाभयानि—अग्निरुदर्क व्याधिदु'र्भिक्षं मूर्षिका व्यालास्सर्पा रक्षांसीति । तेभ्यो जनपदं रक्षेत् ।

ग्रीक्षे बहिरधिश्रयणं ग्रामाः कुर्युः । दशमूलीसङ्ग्रहेणाधिष्ठिता वा । नागरिकप्रणिधात्रग्निपैतिषेधो व्याख्यात: । निशान्तप्रणिधौ राजपरिग्रहे च । बलिहोमस्वस्तिवाचनैः पर्वसु चाग्निपूजाः कारयेत् ।

वर्षारात्रमनूपग्रामा पूरवेलामुत्सृज्य वसेयुः । काष्ठवेणुनावश्चापगृह्णीयुः । उह्यमानमलाबृहतिसवगण्डिकावेणिकाभिस्तारयेयुः । अनिभसरतां द्वाद-

शपणो दण्डः अन्यत्र सवहीनेभ्यः।

पर्वमु च नदीपृजाः कारयेत्।

मायायोगविदो वेदविदो वर्षमभिचरेयुः ।

वर्षावग्रहे शबीनाथगङ्गापर्वतमहाकच्छपूजाः कारयेत् ।

व्याधिभयमौपनिषदिकैः प्रतीकारैः पतिकुर्युः। औषषेश्चिकित्सकाः, शान्तिप्रायश्चित्तेवा सिद्धतपसाः।

तेन मरको व्याख्यातः।

तीर्थाभिषेचनं महाकच्छवर्धनं गवा रुमशानावदोहनं कबन्धदहनं देवरात्रि च कारयेत्।

पशुज्याधिमरके स्थानान्यर्थनीराजनं स्वदेवतपूजनं च कारयेत्।

दुभिक्षे राजा बीजभक्तोपग्रहं कृत्वानुग्रहं कुर्यात्। दुगंतसेतुकमं वा भक्तानुग्रहेण। भक्तसंविभागं वा। देशनिक्षेपं वा। मित्राणि वा व्यपाश्रयेत। कशंनं वमनं वा कुर्यात्। निष्पन्नसस्यमन्यविषयं वा सजनपद्दो यायात्। समृद्रसरस्तटाकानि वा संश्रयेत। धान्यशाकमूल-फलावापान् सेतुषु कुर्वीत। मृगपशुपक्षिव्यालमन्स्यारम्भान् वा।

मूषिकभये मार्जारनकुलोत्सर्गः।

तेषां ग्रहणहिंसायां द्वादशपणो दण्डः । शुनामनिग्रहे च अन्यत्रारण्य-चरेभ्यः।

स्नुहिक्षीरिलप्तिन धान्यानि विसृजेत् । उपनिषद्योगयुक्तानि वा । मूषिककरं वा प्रयुक्षीत । शान्ति वा सिद्धतापसाः कुर्यु । पर्वेषु च मूषिकपूजाः कारयेत् ।

तेन शलभपक्षिकिमिभयप्रतीकारा व्याख्याताः ।

व्यालभये मदनरसयुक्तानि पशुशवानि प्रकृजेत् । मदनकोद्रवपूर्णा-न्यौदर्याणि वा ।

लुब्धकाः श्वगणिनो वा कूटपञ्जरावपातैश्चरेयुः। आवरणिनः शस्त्रराणयो व्यालानभिहन्युः। अनभिसर्तुर्द्धोदशपणो दण्डः। स एव लाभो व्यालघातिनः।

पर्वसु च पर्वतपूजाः कारयेत्। तेन मृगपक्षिसङ्ख्याहप्रतीकारा व्याख्याताः।

सर्पमये मन्त्रेरोषधिभिश्च जाङ्गलीविदश्चरेयुः। सम्भूय वोपसर्पान् हन्युः। अथवंवेदविदो वाभिचरेयुः। पर्वसु नागपूजाः कारयेत्। तेनो-दकप्राणिभयप्रतीकारा व्याख्याताः।

रक्षोभये रक्षोच्चान्यथर्षवेदविदो मःयःयोगविदो वा कर्माणि कुर्युः। पर्वसु च वितर्दिच्छत्रोल्लोपिकाहस्तपताकाच्छागोगहारेः चैत्यपूजाः कारयेत्। "चरुं वश्वराम" इत्येवं सर्वे भयेष्वहोरात्रं चरेयुः । सर्वत्र चोपहतान् पितेवानुगृह्हीयात् । मायायोगविदस्तस्माद्विषये सिद्धतापसाः । वसेयुः पूजिता राज्ञा देवापत्प्रतिकारिणः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे कण्डकशोधने चतुर्थाधिकरणे तृतीयोध्यायः उपनिपातप्रतीकारः, आदितोऽश्रीतितमः ।

### ७६ प्रक. गूढाजीविनां रक्षा ।

समाहतृं प्रणिधौ जनपदरक्षणमुक्तम । तस्य कण्टकशोधनं वक्ष्यामः । समाहर्ता जनपदे सिद्धतापसप्रविज्ञितचक्षचरणारणकुहकप्रच्छन्दक-कार्तान्तिकनैमित्तिकमौहूर्तिकचिकित्सकोन्मत्तमूकबिरजडान्धवैवदेहकका-रुशिस्पिकुशीलववेशशौण्डकापूपिकपाक्षमांसिकौदनिकश्यञ्जनान् प्रणिद-ध्यात । ते ग्रामाणामध्यक्षाणां च शौचाशौचं विद्युः । यं चात्र गूढजीविनं शङ्केत, तं सित्रसवर्णनापसपंयेत् । धर्मस्यं प्रदेष्टारं वा विश्वासोपगतं सत्रो ब्रूयात्—"असौ मे बन्धुरित्रयुक्तः , तस्यायमनर्यः प्रतिक्रियतां अयं चार्थः प्रतिगृह्यताम्" इति । स चेत्तथा कुर्यात्, "उपदाग्राहकः" इति प्रवारयेत ।

तेन प्रदेशारो व्याख्याताः ।

ग्रामकूटमध्यक्षं वा सत्री ब्रूयात् "असी जाल्मः प्रभूतद्रव्यस्तस्याय-मनर्थः । तेनेनमाहारयस्व" इति । स चेत्तथा कुर्यात् "उत्कोचकः" इति प्रवास्येत ।

कृतकाभियुक्तो वा कूटसाक्षिणोऽभिज्ञाताऽनर्थवेपुल्येन आरभते । ते चेत्तथा कुर्युः, "कूटसाक्षिणः" इति प्रवास्येरन् ।

तेन कूटश्रावणकारका व्याख्याताः।

यं वा मन्त्रयोगमू क्रकमंभिरूमाशानिकैर्वा संवननकारकं मन्येत, तं सत्री ब्रूयात् "अमुख्य भागी स्नुषां दुहितरं वा कामये । सा मां प्रतिका-मयतां, अयं चार्थः प्रतिगृह्यताम्" इति । स चेत्तवा कुर्यात् "संवनन-कारकः" इति प्रवास्येतः ।

तेन कृत्याभिचारशीली न्याख्याती ।

यं वा रसस्य बक्तारं केतारं विकेतारं भेषज्याहारव्यवहारिणं वा रसदं मन्येत तं सत्री ब्र्यात् — "असौ मे शत्रुस्तस्योपद्यातः क्रियतामयं चार्थः प्रतिगृह्यताम्" इति । स चेत्तया कुर्यात्, "रसदः" इति प्रवास्येत ।

तेन मदनयोगव्यवहारी व्याख्यातः।

यं वा नानालोहक्षाराणां अङ्गारमस्नासंदंशमुष्टिकाधिकरणीविम्बटक्क-मूषाणामभीक्षणं कोतारं मधीभस्मधूमदिग्धहस्तवस्रलिङ्गं कर्मारोपकरणसंवर्गं कूटरूपकारकम् मन्येत, तं सत्रौ शिष्यत्वेन संव्यवहारेण चानुप्रविश्य प्रज्ञापयेत्। प्रज्ञातः "कूटरूपकारकः" इति प्रवास्येत ।

तेन रागस्यापहर्ता कूटसुवर्णव्यवाहारी च क्याख्यातः । आरब्धारस्तु हिंसायां गूढा नीवास्रयोदश । प्रवास्या निष्कयार्थं वा दशुदीषविशेषतः ॥

इति कौटिलीयार्थकास्त्रे कण्टकशोधने चतुर्थीविकरणे चतुर्थोऽध्यायः गूढाजीविनां रक्षा, आदित एकाशीतितमः।

# ८० प्रक. सिद्धव्यञ्जनैर्माणवप्रकाशनम्।

सत्रिप्रयोगाद्रध्वं सिद्धव्यञ्जना माणवा माणवविद्याभिः प्रलोभयेयुः । प्रस्थापनान्तर्धानद्वारापोहमन्त्रेण प्रतिरोधकान्, संवननमन्त्रेण पार-तिल्पकान्।

तेषां कृतोत्साहानां महान्तं सङ्घमादाय रात्राववस्यं ग्राममृह्स्यान्यं

ग्रामं कृतकाः स्नीपुरुषं गत्वा ब्रूयुः—"इहैव विद्याप्रभावो दृश्यताम् । कृच्छः परग्रामो गन्तुम्" इति । ततो द्वारापोहमण्त्रेण द्वाराज्यपोद्ध्य "प्रविश्यताम्'' इति ब्रूयुः । अन्तर्धानमण्त्रेण जाग्रतामारक्षिणां मध्येन माणवानतिक्रमायेयुः । प्रस्वापनमन्त्रेण प्रस्वापयित्वा रक्षिणश्काय्याभिर्या-णवैस्सञ्जारयेयुः । संवननमन्त्रेण भार्याव्यञ्जनाः परेषां माणवैस्संमोदयेयुः ।

उपलब्धविद्याप्रभावाणाः पुरक्चरणाद्यादिशेयुरभिज्ञानार्थम् ।

कृतलक्षणद्रव्येषु वा वेष्ममु कर्म कारयेयुः अनुप्रविष्टान्वैकत्र ग्राह्मेयुः। कृतलक्षणद्रव्यक्रयविक्रयाधानेषु योगसुरामत्तान्शा ग्राह्मेयुः। गृही-तान् पूर्वापदानसहायाननुयुञ्जोत ।

पुराणचोरव्यञ्जना वा चोराननुश्रविद्यास्तयेव कर्म कारयेयुः ग्राह-येयुक्च । गृहीतान् समाहर्ता यौरजानपदानां दर्शयेत्— "चोरग्रहणीं विद्यामधीते राजा ; तस्योपदेशादिमे चोरा गृहीताः ; भूयक्च ग्रहीष्यामि ; वारयितव्यो वस्स्वजनः पापाचारः" इति ।

यं चात्रापसर्पोपदेशेन शम्याप्रतोदादीनामपहर्तारं जानीयात्, तमेषां प्रत्यादिकोत्—"एष राज्ञः प्रभाव" इति ।

पुराणचोरगोपालकव्याधश्वगणिनश्च वनचोराटविकाननुप्रविष्टाः प्रभू-तकूटहिरण्यकुप्यभाण्डेषु सार्थवज्ञग्रामेष्वेनानभियोजयेयुः । अभियोगे गूढ-बलेर्षातयेयुः मदनरसयुक्तेन वा पथ्यादानेन । अनुगृहीतलोप्तृभारानायस-गतपरिश्रान्सान्त्रस्वपतः प्रहवणेषु योगसुरामत्तान्वा ग्राहयेयुः ।

पूर्ववच गृहात्वेनान् समाहर्ता प्ररूपयेत्।
सर्वज्ञरूयापनं राज्ञः कारयन् राष्ट्रवासिषु।
इति कौटिलीयार्यवास्त्रे कण्टकशोधने चतुर्थाधिकरणे पञ्चमोऽज्यायः
सिद्धव्यक्कनेर्माणव प्रकाशनं आदितो द्वचशीतितमः।

### द**१ प्रक.** श**ारूपक**माभिष्रहः

सिद्धप्रयोगाद्ध्वं शङ्कारूपकर्माभिग्रहः।

क्षीणदायकुटुम्बमल्पनिर्वेशं विपरीतदेशजातिगोत्रनामकर्मांपदेशं प्रच्छत्रवृत्तिकर्माणं मांससुराभक्ष्य भोजनगन्धमाल्यवस्वविभूषणेषु प्रसत्त्रमम्
तिव्ययकर्तारं पुंश्वलीधूतशोण्डिकेषु प्रसत्त्रममीक्ष्णप्रवासिनमविज्ञातस्थानगमनमेकान्तारण्यनिष्कुटविकालचारिणं प्रच्छन्ने सामिषे वा देशे बहुमन्त्रसित्रपातं सद्यक्षतत्रणांनां गूढप्रतीकारियतारं अन्तगृंहिनित्यमभ्याधिगन्तारं कान्तापरं परपरिग्रहाणां परस्रीद्रव्यवेश्मनामभीक्ष्णप्रष्टारं कुत्सितकर्मशास्रोपकरणसंसर्गं विरात्रे छन्नकुड्यच्छायासभारिणं विरूपद्रव्याणामदेशकालविकेतारं जातवेराशयं हीनकर्मजाति विगूद्यमानरूपं छिज्जेन
जालिङ्गिनं लिङ्गिनं वा भिन्नावारं पूर्वकृतापदानं स्वकर्मभिरपदिष्टं
नागरिकमहामात्रवशने गूहमानम्बस्यस्यतत्रासिनं हिस्तस्तेननिधिनिक्षेपापहारवरप्रयोगगूढाजीविनामन्यतमं सङ्केतित शङ्काभिग्रहः।

रूपाभिग्रहस्तु—नष्टापहृतमविद्यमानं सञ्जातव्यवहारिषु निवेदयेत् । तत्रं निवेदिद्यमासाद्य शच्छादयेयुः, साचिव्यकरदोषमाप्नुयुः। अञ्जानन्तोऽस्य इब्बस्यातिसर्गण मुच्येरन् । न चानिवेद्य संस्थाध्यक्षस्य पुराणभाण्डा— नामाधानं विकयं वा कुर्युः। तत्रं निवेदितमासाद्येत, रूपाभिगृहीतमागमं पृच्छेत् "कुतस्ते सञ्चम्" इति । स चेद् ब्रूयाद्—दायाद्यवाद्या-सममुष्मालकक्ष्मं, स्रीतं करितमाधिप्रच्छन्नं अयमस्य देशः काकश्चोपसम्प्रावः; अयमस्यार्घः प्रमाणं लक्षणं मूल्यं च इति, तस्याग्रमसमाधौ मुच्येत ।

नाष्टिकश्चे त्तदेव प्रतिसन्बध्यात् । यस्य पूर्वो दीषंश्च परिभोगश्शुचिवां देशस्तस्य द्रव्यमिति विद्यात् । चतुष्पदानामपि हि रूपिकञ्जसामान्यं मबति, किमञ्ज पुनरेकयोनिद्रव्यकतृ प्रसूतानां कुप्याभरणभण्डानाम् इति । स चेइनुयात्—याचितकमबन्नीतकमाहितकं निक्षेपमुपनिष् बैय्यावृत्यभर्म वामुष्येति, तस्यापसारप्रतिसन्धानेन मुच्येत । ''नैबम्'' इत्यपसारो वा न्रूयात् ।

रूपाभिगृहोतः परस्य दानकारणमात्मनः प्रतिग्रहकारणमुपि क्रुनं वा दायकदापकनिबन्धकप्रतिग्राहकोपदेष्टृभिरुपश्रोतृभिर्वा प्रतिसमानयेत्॥

उज्मितप्रनष्टनिष्यतितोपलम्बस्य देशकाललाभोपलिङ्गनेन शुद्धिः। अशुद्धस्तत्र तादत्र दण्डं दद्यात्। अन्थया स्तयदण्डं भजेतः। इति रूपाभिग्रहः।

कर्माभिग्रहस्तु—मुषितवेश्मनः प्रवेशनिष्कसनमद्वारेण द्वारस्य सन्धिना बीजेन वा वेधमुत्तमागारस्य जालबातायननीप्रवेधमारोहणावतरणे च कुड्यस्य वेधमुपखननं वा गूढद्रव्यनिक्षेपग्रहणापायमुपदेशोपलभ्यमभ्यन्तर-च्छेदोत्करपरिमर्दोपकरणमभ्यन्तरकृतं विद्यात् । बिपर्यये बाह्यकृतम् उभयत उभयकृतम् ।

अभ्यन्तरकृते पुरुषमाससं व्यसिननं क्रूरसहायं तस्करोपकरणवंसर्गं स्त्रयं वा दिरद्रकुलामन्यप्रसत्कां वा परिचारकजनं वा तद्विधाचारमितिस्वप्नं निद्रावलान्तमाधिकलान्तमाधिकः शुष्कभिन्नस्वरमुखवर्णमनवस्थितमित्रिकानित्रमानिम्नुवारोहणसंरब्धगात्रं विलूनिधृष्टभिन्नपाटितशरीरवस्रं वातिकण्वतंरब्धहस्तपादं पांसुपूर्णकेशनसं विलूनभुग्नकेशनसं वा सम्यक्स्नातानुलिक्षं तेलप्रमृष्टगात्रं सद्योषौतहस्तपादं वा पांसुपिच्छिलेषु तुल्यपादपदिनिक्षेपं प्रवेशनिष्कासनयोवां तुल्यमाल्यमद्यगन्धवस्त्रच्छेदविलोपनस्वेदं परीक्षेत ।

चोरं पारदारि**कं वा विद्यात्**।

सगोपस्थानिको बाह्यं प्रदेष्टा चोरमार्गणम् । कुर्यान्नागरिकस्चान्तर्दुर्गे निर्दिष्टहेतुभिः ॥ इति कौटिकीयार्थशास्त्रे कण्टककोधने चतुर्थाधिकरणे षष्ठोऽध्यायः शङ्कारूदकर्माभिग्रहः आदितस्थ्यशोतितमः ।

## द्भर प्रक. आशु<u>त्</u>तकपरीक्षा

तंस्रास्यक्तमाशुमृतकं परिक्षेत ।

निस्कीर्णमूत्रपुरीषं वातपूर्णकोष्ठत्वक्कं शूनपादपाणिमुन्मीलिताक्षं सञ्बञ्जनकण्ठः पीडननिरुद्धोच्छासहतं विद्यात ।

तमेव सङ्कचितवाह्सिक्थमुद्रन्धह्तं विद्यात्।

शूनपाणिपादोदरमपगताक्षमुद्धृत्तनाभिमवरोपितं विद्यात् ।

निस्तब्धगुदाक्षं सन्दष्टजिह्यमाध्मातोदरमुदकहतं विद्यात् ।

शोणितानुसिक्तं भग्नभिन्नगात्रं काष्ठं रिममिर्वा हतं विद्यात्।

सम्भग्नस्फुटितगात्रमवक्षिद्तं विद्यात् ।

स्यावपाणिपाददन्तनःखं शिथिलमांसरोमचर्माणं फेनोपदिग्धमुखं विषहतं विद्यात् ।

तमेव सशोणितदंशं सर्पकीटहतं विद्यात्।

विक्षिप्तवस्त्रगात्रमतिवांतविरिक्तं मदनयोगहतं विद्यात् ।

मतोऽन्यतमेन कारणेन हतं हत्वा वा दण्डभयादुद्वन्धनिकृत्तकण्ठं
 विद्यात्।

विषहतस्य भोजनशेषं पयोभिः परीक्षेत । हृदमादुद्धृत्याग्नौ प्रक्षिप्तं चिटाचिटायदिन्द्रधनुर्वर्णं वा विषयुक्तः विद्यात् ।

दग्धस्य हृदयमदग्धं दृष्टुः वा । तस्य परिचारकजनं वाम् दण्डपारुष्या-दितिलब्धंमार्गेत ।

दुःस्रोपहतमन्यप्रसक्तः वा स्त्रीजनं, दायनिवृत्तिस्त्रीजनाभिमन्तारं वा बन्धुम्। तदेव हतोद्रद्धस्य परीक्षेत ।

स्वयमुद्धस्य वा विश्वकारमयुक्तः मार्गैत ।

सर्वेषां वा स्त्रीदायाद्यदोषः, कर्मस्पर्धा प्रतिपक्षद्वेषः पण्यसंस्था समवायो वा विवादपदानामन्यतमं वा रोषस्थानं । रोषनिमित्तो धातः ।

स्वयमादिष्टपुरुषेवां चोरेरथंनिमिसं साहस्याद्यन्यनैरिभिकां हतस्य

धातमासन्ने म्यः परीक्षेत । येनाहूतस्सहस्थितः प्रस्थितो हतभूमिमानीतो वा, तमनुयुक्तीत । ये चास्य हतभूमावासन्नचरास्तानेकैकवाः पृष्टेत् "केनायमिहानीतो हतो वा कस्सवास्त्रः सङ्ग्रह्मानः उद्धिग्नो वा युष्मा-भिटंष्टः" इति । ते यथा ब्रूयुस्तथाऽनुयुक्तीत ।

अनायस्य शारीरस्थमुपभोगं परिच्छदम्।
बस्तं वेषं विभूषां वा दृष्ट्रां तद्भ्यवहारिणः।।
अनुयुक्कीत संयोगं निवासं वासकारणम्।
कर्मं च व्यवहारं च ततो मार्गणमाचरेत्।।
रज्जुशस्त्रविषैर्वाऽपि कामकोधवशेन यः।
धातयेत्स्वयमात्मानं स्त्री वा पापेन मोहिता।।
रज्जुना राजमार्गे तां चण्डालेनापकषंयेत्।
न श्मशानविधिस्तेषां न संबन्धिकियास्तथा।।
बन्धुस्तेषां तु यः कुर्यात्प्रेतकायंकियाविधिम्।
तद्गति स चरेत्पश्चात्स्वजनाद्वा प्रमुच्यते।।
संवत्सरेण पर्तात पतितेन समाचरन्।
याजनाध्यापनाद्यौनालं श्चान्योऽपि समाचरन्।।

इति कौटिलीयार्धशास्त्रे कण्टकशोधने चतुर्थाधिकरणे सप्तमोध्यायः त्राशुमृतकपरीक्षा आदितश्चतुरशीतितमः।

# 🖙 प्रक. वाक्यकर्मानुयोगः

मुषितसिक्षधे वाद्यानामस्यन्तराणां च साक्षिणमभिशस्तस्य देशजातिगोत्रनामकर्मसारसहायनिवासाननुयुद्धीतः। तांद्वापदेशैः प्रति-समानयेत्। ततः पूर्वस्याह्नः प्रचारं रात्रौ निवासं च 'अ प्रहणादिति' अनुयुन्शतः। तस्यापसारप्रतिसन्धाने शुद्धस्यात्। अन्यवा कर्मप्राप्तः। त्रिरात्राद्र्व्यंमग्राद्धः शिंद्धःतकः, पृच्छाभावादन्यत्रोपकरणदर्शनात् । "अचोरं चोरः" इत्यभिव्याहरतक्ष्वोरसमो दण्डः , चोरं प्रच्छादयतक्ष्य । चोरेणाभिद्यस्तो वेरद्वेषाभ्यामपदिष्टकः शुद्धस्यात् । शुद्धं परिवासयतः पूर्वस्साहसदण्डः ।

शङ्कानिष्पन्नमुपकरणमन्त्रिसहायरूपवैय्यावृत्यकरान्निष्पादयेत् । कर्म-जक्ष्य प्रदेशद्रव्यादानांशविभागैः प्रतिसमानयेत् ।

एतेथां कारणानां अनभिसन्धाने विप्रलपन्तमचोरं विद्यात् । दृश्यते ह्यचोरोऽपि चोरमार्गे यटच्छ्या सिलपाते चोरवेषक्षस्त्रभाण्डसामान्येन गृह्यमाणो दृष्टः चोरभाण्डस्योपवासेन वा, यथा हि माण्डस्यः कर्मक्रोक्ष-भयादचोरः "चोरोऽस्मि" इति बुवाणः । तस्मात्समाप्तकरणं नियमयेत् ।

मन्दावराधं बालं वृद्धं न्याधितं मत्तमुन्मत्तं क्षुत्पिपासाध्यक्रान्तमत्याः शितमामकाशितं दुर्वेलं वा न कर्म कारयेत ।

तुल्यकोलपुंश्रलीप्रावानिककचावकाक्यभोजनद।तृभिरपसर्पयेत्। एव-मतिसन्दभ्यात्। यथा वा निक्षेपापहारे व्याख्यातम्।

आप्तदोषं कर्मं कारयेत्। न त्येव स्त्रियं गर्भिणों सूतिकां वा मासायरप्रजाताम्। स्त्रियास्त्यधंकर्म। याथ्यानुयोगो वा।

ब्राह्मणस्य सन्निपरिग्रहः श्रुतवतस्तपस्विनश्च। तस्यातिकम उत्तमो दण्डः कर्तुः कारयिनुश्च कर्मणा व्यापादनेन च।

व्याबहारिक' कर्मभतुष्क'—षड् दण्डाः,'सप्त कशाः, हाबुपरिनिबन्धौ, उदकनालीका च ।

परं पापकर्मणां नक्वेत्रलताद्वादशकं, द्वावूक्वेष्टौ विश्वतिर्नक्तमाल-लताः, द्वात्रिशक्तलाः, द्वौ वृश्चिकवन्त्रौ, उल्लब्स्वने च द्वे, सूची हस्तस्य, यथाक्पीतस्य, एकपवंदहनमङ्गुल्याः, स्नेहपीतस्य प्रतापनमेकमहः, श्विशिररात्रौ बल्बजाग्रशस्या चेत्यष्टादशकं कर्मः। तस्योपकरणं प्रमाणं प्रहरणं प्रधारणमब्धारणं च खरपष्ट्वादागमयेत्।

विवसान्तरमेकैकं च कर्म कारयेत्। वृत्रंकृतापवानं, प्रतिज्ञायापहरन्तमेकदेशमदृष्टद्रव्यं, कर्मणा रूपेण चा गृहीतं, राजकोद्यमवस्तृगन्तं, कर्मंबच्यं वा राजववनात्समस्तं व्यस्तमस्यस्तं वा कर्म कारयेत् ।

सर्वापराधेष्यपीडनीयो ब्राह्मणः। तस्याभिवस्ताङ्को ललाटे स्यादुव्यवहारपतनायः। स्तेये स्वा, मनुष्यवधे कवन्धः, गुरुतल्पे भगम्। सुरापाने मद्याच्याः।

> ब्राह्मणं पापकर्माणमुद्धुष्याङ्ककुतत्रणम् । कुर्यान्निविषयं राजा वासयेदाकरेषु वा ॥

इति कौटिलीयायंशास्त्रे कण्डकशोधने चतुर्याधिकरणे अष्टमोऽध्यायः वाक्यकर्मानुयोगः आदितः पञ्चाशोतितमः।

#### ⊏४ प्रक. सर्वाधिकरणरक्षणम्

समाहतृ'प्रदेष्टारः पूर्वमञ्यक्षानामध्यक्षपुरुषाणां **च नियमनं** कुयु'ः।

स्रतिसारकर्मान्तेभ्यस्सारं रत्नं वापहरतः शुद्धवधः ।

फलगृद्रव्यक्तमीनतेभ्यः फलगुद्रव्यमुपस्करं वा पूर्वस्साहसदण्डः।

पण्यभूमिभ्यो वा राजपण्यं माषमूल्याद्ध्यंम् आ पादमूल्यादित्यपहरतो दादशपणो दण्डः। आ दिपादमूल्यादिति चतुर्विशतिपणः। आ त्रिषादम्ल्यादिति चतुर्विशतिपणः। आ त्रिषादम्ल्यादिति चतुर्विशतिपणः। आ दि-पणमूल्यादिति पर्वम्साहसदण्डः। आ चतुष्पणमूल्यादिति मध्यमः। आ दशपणमूल्यादिति पर्वम्साहसदण्डः। आ चतुष्पणमूल्यादिति मध्यमः। आ दशपणमूल्यादिति वधः।

कोष्ठपण्यकुष्यायुषागारेभ्यः कुष्यभाण्डोपस्करापहारेव्वर्घमूक्येव्वेस एव वण्डाः । कोशभाण्डागाराक्षशालाभ्यश्चतुर्भागमूल्येष्वेत एव द्विगुणा दण्डाः । चोराणामभित्रभर्षणे चित्रो घातः । इति राजपरिग्रहेषु ज्याक्यातम् ।

बाह्येषु तु प्रच्छन्नमहिन क्षेत्रखलवेश्मापणेभ्यः कुप्यभाण्डमुपस्करं वा माषमूल्याद्रध्वंमा पादमूल्यादित्यपहरतस्त्रिपणो दण्डः। गोमयप्रदेहेन वा प्रलिप्यावधोषणम् आ द्विपादमूल्यादिति षट्पणः, गोमय भरमना वा प्रलिप्यावधोषणम्। आ त्रिपादमूल्यादिति चवपणः; गोमय- मस्मना वा प्रलिप्यावधोषणं शरावमेखल्या वा। आ पणमूल्यादिति द्वादश-पणः; मुण्डनं प्रवाजनं वा। आ द्विपणमूल्यादिति चतुर्विशतिपणः, मुण्डनिमष्टकाशकलेन प्रवाजनं वा। आ चतुष्पणमूल्यादिति षट्त्रिशत्पणः। आ पञ्चपणमूल्यादिति अध्यवत्यादिति प्रवाचनस्यादिति साहस्रः। आ पञ्चाशत्पणमूल्यादिति पञ्चश्वासः। आ चत्वारिशत्पणमूल्यादिति साहस्रः। आ पञ्चाशत्पणमूल्यादिति विष्टः। दिति वघः।

प्रसद्धा दिवा रात्रौ वाऽन्तर्यामिकमपहरतोः श्रंमूल्येष्वेत एव द्विगुणा दण्डाः । प्रसद्धा दिवा रात्रौ वा सशस्त्रस्यापहरतश्चतुर्भागमूल्येष्वेत एव हण्डाः ।

कुटुम्बिकाध्यक्षमुख्यस्वामिनां कूटशासनमुद्राकर्मसु पूर्वमध्यमोत्तमवधा दण्डाः ; यथाऽपराघं वा ।

धर्मस्थश्चेद्विवदमानं पुरुष तर्जयति, भत्संयत्यपसारयति, अभिग्रसते बा. पूर्वमस्मे साहसदण्डं कुर्यात् । वाक्पारुष्ये द्विगुणम् ।

पृच्छपं न पृच्छत्यपृच्छपं पृच्छति, पृष्टा वा विस्वति, शिक्षयिति, स्मारयिति, पूर्वं ददाति वेति, मध्यममस्मे साहसदण्डं कुर्यात् । देयं देशं न पृच्छति, अदेयं देशं पृच्छति, कार्यभदेशेनातिवाहयिति, छलेनाति-हरित, कालहरणेन श्रान्तमपबाहयिति, मार्गपन्नं, वाक्यमुक्तमयिति, मितिसाहाय्यं साक्षिम्यो ददाति, तारितानुशिष्टं कार्यं पुनरिप गृह्मिति, उत्तमसस्मे साहसदण्डं कुर्यात् ।

पुनरपराघे द्विगुणं, स्थानाद्युवरोपणं च।

लेखकश्चेदुक्तं न लिखत्यनुक्तं लिखति, दुष्कमुपलिखति, सूक्त-मुल्लिखत्यथीद्वपक्ति वा विकल्पयतीति, पूर्वमस्मे साहसदण्डं कुर्यात्, याथाऽपराधं वा ।

धर्मस्थः प्रदेश वा हैरण्यमदण्डणं क्षिपति, क्षेपितृगुणमस्मे दण्डं कुर्यात् । हीनातिरिक्ताष्टगुणं वा । शारीरदण्डं क्षिपति, शारीरमेव दण्डं भजेत । निष्क्रविद्वगुणं वा । यं दा भूतमर्थं नाशयत्यभूतमर्थं करोति तदश्गुणं दण्डं दद्यात् ।

भर्मस्योयाचारकान्निसारयतो बन्धनागाराच्छय्यासनभोजनोचारसञ्जार रोधबन्धनेषु त्रिपणोत्तरा दण्डाः कर्तुः कारयितुरच ।

चारकादभियुक्तं मुञ्जतो निष्पातयतो वा मध्यमः साहसदण्डः अभियोगदानं च। बन्धनागारात्सवंस्वं बध्यः । बन्धनागाराध्यक्षस्य संस्कृतक्षमनाख्याय चारयतः चतुर्विशतिपणो दण्डः। कर्म कारयतो द्विगुणः। स्थानान्यत्वं गमयतोऽन्नपानं वा रुन्धतष्यण्यविद्यंण्डः। परिक्लेशयत उत्की चयतो वा मध्यमस्साहसदण्डः। प्रतस्साहस्रः।

परिगृहीतां दासीमाहितिकां वा संरुद्धिकामिधचरतः पूर्वस्साहसदण्डः । चोरडामरिकभार्यी मध्यमः । संरुद्धिकामार्यामुत्तमः । संरुद्धस्य वा तत्र व धातः । तदेवाध्यक्षेणगृहीतायामार्यायां विद्यात् । दास्यां पूर्वस्साहसदण्डः ।

चारकमभित्वा निष्यातयतो मध्यमः । भित्वा वधः । बन्धनागारा-त्सर्वस्यं वधश्य ।

एबमर्थचरान् पूर्वं राजा दण्डेन घोधयेत्। शोधयेयुरच शुद्धास्ते पौरजानपदान् दमेः॥ इति 'कौटिलीयार्थशस्त्रे कण्डकशोधने चतुर्थाधिकरणे नवमोऽध्यायः सर्वाधिकरणरक्षणं, आदितष्यडशीतितमः।

#### ८५ प्रक. एकाङ्गवधनिष्क्रयः।

तीर्यंघातग्रन्यिमेदोऽध्वंकराणां प्रथमेऽपराधे संदंशच्छेदनं चतुष्यक्राश-त्पणो वा दण्डः। द्वितीये छेदनं, पणस्य शत्यो वा दण्डः। तृतीये दक्षिणहस्तवधश्वतुश्वातो वा दण्डः। चतुर्थे—यथाकामी वधः।

पत्र्रविशतिपणावरेषु कुक्कुटनकुलमार्जारस्वसूकरस्तेयेषु हिंसायां बा चतुष्पश्राधात्पणो दण्डः, नासाग्रच्छेश्नं वा। चण्डालारण्यच-राणामधंदण्डाः।

पाद्मजालक्र्यावपातेषु बद्धानां मृगपशुपक्षिव्यालमत्म्यानामादाने तत्र तादत्र दण्डः।

मृगद्रव्यवनान्मृगद्रव्यापहारे शस्यो दण्डः। बिम्बविहारमृगपक्षिस्तेये हिंसायां वा द्विगुणो दण्डः।

कारुशिल्पिकुशीलवतपस्विनां शुद्रकद्रव्यापहारे शत्यो दण्डः । स्थूलकद्रव्यापहारे द्विशतः । कृषिद्रव्यापहारे च ।

दुर्गमकृतप्रवेशस्य प्रतिशतः प्राकारिच्छद्राद्वा निक्षेपं गृहीत्वाऽपसरतः कन्धराबधो द्विशतो वा दण्डः।

चकपुक्तं नावं क्षुद्रपशुं वाऽपहरत एकपादवधः त्रिश्चतो वा दण्डः । कूटकाकण्यक्षारालाशलाकाहस्तविषमकारिण एकहस्तदभश्चतुरवातो वा दण्डः ।

स्तेनपार रदारिकयोस्माचिव्यकर्मणि स्त्रियास्स ङ्ग्रहीतायाश्च कर्णं नासा-च्छोदनं पत्रुशतो वा दण्डः । पुंसो द्विगुणः।

महापशुमेक दासं दासों वाऽपहरतः प्रेतभाण्डं वा विकीणानस्य द्विपादवधः षट्छ्तो वा दण्डः ।

वर्णोत्तमानां गुरुणां च हस्तपादलङ्क्ष्यने राजयानबाहनाद्यारोहणे चैकहस्तपादवधः समग्रतो वा दण्डः । शूद्रस्य ब्राह्मणबादिनो देवद्रव्यमवस्तृणतो राजद्विष्टमादिशता द्वितेत्रमे-दिनश्च योगाञ्जनेनान्धत्वमष्टशतो वा दण्डः।

चोरं पारदारिकं वा माक्षेयतो राजशासनमूनमितिरिक्तं हा लिखतः कन्यां दासों दा सहिरण्यमपहरतः कूश्व्यवहारिणो विमासिकित्रयण्डच वामहस्तिद्विपादवधो नवश्वतो था दण्डः। मानुषमांसिकित्रये वधः। देव-पशुप्रतिमामनुष्यक्षेत्रगृहहिरण्यसुवर्णारतसस्यापहारिण उत्तमो दण्डः शुद्धवधो वा।

पुरुषं चापराधं च कारणं गुरुलाधवम् । अनुबन्धं सदात्वं च देशकाली समीक्ष्य च ॥ उत्तमावरमध्यत्वं प्रदेशा दण्डकर्मणि । राज्ञश्च प्रकृतीनां च कल्पयेदन्तरान्त्रितः ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे कण्डकशोधने चतुर्थाधिकरणे दशमोऽध्यायः एकाङ्गवधनिष्क्रयः, आदितः सप्ताशीतितमः ।

### 💶 प्रक. शुद्धश्चित्रश्च दण्डकस्पः।

कलहे प्रतः पुरुषं चित्रो घातः । सप्तरात्रस्यान्तः मृते शुद्धवधः । पक्षस्यान्तरुत्तमः । मासस्यान्तः पञ्चशतः समृत्थानव्ययश्च ।

शस्त्रेण प्रहरत उत्तमो दण्डः । मदेन हरतवधः । मोहेन हिशतः । वधे वधः ।

प्रहारेण गर्भे पातयत उत्तमो दण्डः। भैषज्येन मध्यमः। परिक्लेशेन पूर्यस्साहसदण्डः।

प्रसभस्त्रीपुरुषघातकाभिसारकिनग्राहकावघोषकावस्कन्दकोपवेधकान् पिथवेश्मप्रतिरोधकान् राजहस्त्यश्वरथानां हिंसकान् स्तेनान्वा शूकानारोहयेयुः। यक्नैनान् दहेदपनयेद्वा स तमेव दण्डं लभेत साहसमुत्तमं वा ।

हिल्ल-तेनानां भक्तवासीपकरणाग्निमन्त्रदानवैयावृत्यकर्मसूत्तमो दण्डः।
परिभाषणमविज्ञाने। हिल्लस्तेनानां पुत्रदारमसमन्त्रं विसृजेत्
समन्त्रमाददीत ॥

राज्यकामुकमन्तःपुरप्रधर्षकमटभ्यमित्रोत्साहकं दुर्गराष्ट्रदण्डकोपकं ना शिरोहस्तप्रादीपिकं घातयेत ।

ब्राह्मणं तमः प्रवेशयेत्।

मातृपितृपुत्रभ्रात्राचार्यंतपस्विधातकं बात्विक्छरःप्रादीपिकं घातयेत्। तेषामाकोशे जिह्वाच्छेदः। अङ्गाभिरदने तदङ्गान्मोच्यः।

यदच्छाघाते पुंसः, पशुयूथस्तेये च शुद्धवधः । दशावरं च यूथं विद्यात् । उदकधारणं सेतुं भिन्दतस्तत्रं वाप्सु निमञ्जनम् । अनुदकमुत्तमः साहसदण्डः । भग्नोत्सृष्टकं मध्यमः ।

विषदायकं पुरुषं क्षित्रयं च पुरुषघनीमपः प्रवेशयेत् । अगिभणीं गर्भिणां मासावरप्रजातताम् । पतिगुरुप्रजाघातिकां अग्निविषदां सन्धिच्छेदिकां वा गोभिः पादयेत् ।

विवीतक्षेत्रखलवेश्मद्रश्यहस्तिवनादीपिकमग्निना दाहयेत् ।

राजाकोणकमन्त्रभेदकयोरनिष्टप्रबृत्तिकस्य ब्राह्मणमहानस्रावले हिनदच जिह्नामुत्पाटयेत् ।

प्रहरणावरणस्तेनमनायुधीयमिषुभिषातियेत् । आयुधीयस्घोत्तमः ।

मेढ्रफलोपघातिनस्तदेव छेदयेत्।

जिह्वानासोपघाते संदंशवधः।

एते शास्त्रेष्यनुगताः क्लेशदण्डा महात्मनाम् ।

अक्लिष्टानां तु पापानां घर्ग्यदेशुद्धवधस्समृतः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे कण्टकशोधने चतुर्थाधिकरणे एकादशोऽच्यायः शुद्धरिचत्रश्च दण्डकल्पः, आदितोऽष्टाशीतितमः।

#### ८७ प्रक. कन्याप्रकर्म।

सवर्णामप्रीप्तकलां कन्यां प्रकुर्वती हस्तवधश्वतुश्वती **वा दण्डः**। मृतायां वधः।

प्राप्तफलां प्रकुर्वतो मध्यमाप्रदेशिनीवधो द्विशतो वा दण्डः । वितुष्चा-पहीनं दद्यात् ।

न च प्राकाम्यमकामायां लभेत । सकामायां चतुष्पञ्चादात्पणो दण्डः, स्त्रियास्त्वधंदण्डः ।

परशुल्कावरुद्धायां हस्तवधरचतुरशतो वा दण्डः, शुल्कदानं चः।

सप्तातंत्रजातां वराणादूष्वंमलभमानां प्रकृत्य प्राकामी स्यात्, न च पितुरप**होनं दद्या**त् । ऋतुप्रतिरोधिभिः स्वाम्यादपकामति ।

त्रिवर्षं प्रजातार्तवायास्तुल्यो गन्तुमदोषः । ततः परमतुल्योऽप्यनस्र-इतायाः । पितृद्वव्यादाने स्तेयं भजेत ।

परमुद्दिश्यान्यस्घ विन्दतो द्विशतो इण्डः। न च प्राकाम्यमकामायां लभेत।

कन्यामस्यां दर्शयित्वाऽन्यां प्रयच्छतः व्हात्योः दण्डस्तुल्यायां, हीनायां द्विगुणः ।

प्रकर्मण्यकुमार्याश्चतुष्पठमागत्पणो दण्डः। शुल्कव्ययकर्मणी च प्रतिदद्याद् अवस्थाय । तज्जातं पश्चात्कृता द्विगुणं दद्यात् । अन्यशोणि-तोपभाने द्विशतो दण्डः, मिध्यभिशंसिनश्च । पुंसः शुल्कव्ययकर्मणी च जीयेत । न च प्राकाम्यमकामायां लभेत ।

स्त्री प्रकृता सकामा समाना द्वादशपण दद्यात्, प्रकर्ता द्विगुणम् । अकाभायास्थात्यो दण्डः आत्मरागार्थे, शुल्कशानं च । स्वयं प्रकृता राजदास्यं गच्छेत् ।

बहिर्गामस्य प्रकृतायां मिथ्याभिशंसिने च द्विगुणा दण्डः।

प्रसह्य कन्यामपहरतो द्विशतः, ससुवर्णामुत्तमः।

बहूनां कन्यापद्दारिणां पृथग्यथोत्ता दण्डाः ।

गणिकादुहितरं प्रकुर्वतस्यतुष्पञ्चाद्यात्पणो दण्डः, शुल्कंमातुर्भीग-ष्योडशगुणः।

दासस्य दास्या वा दुहितरमदासीं प्रशुवंतरचतुर्विशितपणो दण्डः शुल्काबन्ध्यदानं च। निष्क्रयानुरूपां दासीं प्रकुवंतो द्वादशपणा दण्डः वस्त्राबन्ध्यदानं च।

साचिज्यावकाशदाने कर्तृसमो दण्डः।

प्रोषितपतिकामपचरन्तीं पतिबन्धुस्तत्पुरुषो वा सङ्गृह्ण्यात्। सङ्गृहीता पतिमाकांक्षेत । पतिश्चेत् क्षमेत, विमृज्येतोभयम् । अक्षमायां स्त्रियाः कणंनासाच्छेदनम् वधं जारश्च प्राप्तृयात् ।

कारं चोर इत्यभिहरतः पञ्चश्वतो दण्डः। हिरण्येन मुञ्जतस्तदष्टगुणः। केशाकेशिकं सङ्ग्रहणम्। उपलिङ्गनाद् वा शरीरोपभोगानां, तज्जातेभ्यः, स्त्रीवचनाद् वा।

परचकाटवीह्तामोधप्रब्यूढामरण्येषु दुर्मिक्षे वा त्यक्तां प्रेतभावोत्बृष्टां वा परस्त्रियं निस्तारयित्बा यथासंभाषितं समुपभृञ्जीत । जातिविशिष्टा-मकामामपत्यवतीं निष्कयेण दद्यात् ।

> चोरहरतान्नदीवेगाहुभिक्षाइशिविश्रमात्। निस्तारियत्वा कान्तारान् नष्टां त्यक्तां मृतेति वा।। भृञ्जीत स्थिमन्येषां यथासंभाषितं नरः। न तु राजप्रतापेन प्रमुक्तां स्वजनेन वा॥ न चोत्तमां न चाकामां पृविषत्यवतों न च। ईटशीं चानुरूपेण निष्क्रयेणोपवाहयेत्।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्र कण्टकशोधने चतुर्धाधिकरणे द्वादकोऽज्यायः कन्याप्रकर्म, आदित एकोननवतितमः ।

#### ८८ प्रक. अतिचा दण्डः।

श्राह्मणमपेयमभक्ष्यं वा सङ्ग्रासयत उत्तमो दण्डः । क्षत्रियं मध्यमः । वैश्यं पूर्वस्साहसदण्डः । शूद्रं चतुष्पञ्चाशत्पणो दण्डः ।

स्वयंग्रसितारो निर्विषयाः कार्याः ।

परगृहाभिगमने दिवा पूर्वस्साइसदण्डः, राश्री मध्यमः।

दिवा रात्रौ वा सशसस्य प्रविशत उत्तमो दण्डः।

भिक्षुकवेदेहकौ मत्तीन्मत्तौ बलादापदि चातिसन्निकृष्टाः प्रवृत्तप्रवेशा-श्चादङ्घाः, अस्यत्र प्रतिषेधात् ।

स्ववेश्मनोनिरात्रादूर्ध्वं परिवार्यमारोहतः पूर्वस्साहसदण्डः । परवेश्मनो मध्यमः । ग्रामारामबाटभेदिनश्च ।

ग्रामेष्वन्तः साथिका ज्ञातसारा वसेयुः । मृषितं प्रवासितं चैषामनिर्गतं रात्रौ ग्रामस्वामी दद्यात् । ग्रामान्तरेषु वा मृषितं प्रवासितं विवीताष्यक्षो दद्यात् । अविवीतानां चौररज्जुकः । तथाऽप्यगुप्तानां सीमावरोष-विचयं दद्यः । असीमावरोषे पञ्चग्रामी द्याग्रामा दा ।

दुर्बलं वेश्म, शकटमनुत्तब्धमूर्ध्वस्तम्भं शस्त्रमनपाश्रयमप्रतिच्छन्नं श्रञ्ज कूरं कूटावपातं वा कृत्वा हिंसायां दण्डपारुष्यं विद्यात् ।

वृक्षच्छेदने दम्यरिमहरणे चतुष्यदानामदान्तसेवने वा काष्ठलोष्टपाषाण-दण्डबाणबाहुविक्षेपणेषु याने हस्तिना च सङ्घट्टने "अपेहि" इति प्रक्रोधान्नदण्डेयः।

हस्तिना रोषितेम हतो द्रोणान्नंकुम्भं माल्यानुलेपनं दन्तप्रमार्जनं च पटं दद्यात् । अश्वमेधावभृथस्नानेन तुल्यो हस्तिना वध इति पादप्रक्षा-लनम् । उदासीनवधे यातुरुत्तमो दण्डः ।

कृञ्जिणा दंष्ट्रिणा वा हिंस्यमानममोक्षयतस्स्थामिनः पूर्वस्साहसदण्डः । प्रतिकृष्टस्य द्विगुणः ।

शृङ्गिदंष्ट्रिस्यामन्योन्यं वातयतस्तत्र तावत्र दण्डः । देवपशुसृषभ-मुक्षाणं गोकुमारीं वा बाह्यतः पत्रुवातो दण्डः । प्रवासयत उत्तमः । लोमदोहथाहनप्रजननोपकारिणां क्षुद्रपशूनामादाने तत्र ताथश्र दण्डः । प्रवासने च, अन्यत्र देवपितृकार्यभ्यः ।

छिन्नस्यंभग्नयुगं तियंग्यतिमुखागतं प्रत्यासरद्वा चन्नयुक्तं यानपशु-मनुष्यसम्बाधे वा हिंसायामदण्डयः । अन्यया यथोक्तं मानुषप्राणिहिंसायां दण्डमभ्याबहेत् । अमानुषप्राणिवधे प्राणिदानं च ।

बाले यातरि, यानस्यः स्वामी दण्ड्यः । अस्वामिनि यानस्यः प्राप्तव्यवहारो वा याता । बालाघिष्ठितमपुरुषं वा यानं राजा हरेत् ।

कृत्याभिचाराभ्यां यत्परमापादयेत्, तदापादयितव्यः। कामं भार्या-यामनिच्छन्त्यां कन्यायां वा दारार्थिना भर्तरि भार्याया वा संवननकरणम् अन्यथा हिंसायां मध्यमस्साहसदण्डः।

मातापित्रोर्भगिनीं मातुलानीमाचार्याणीं स्नुषां दुहितरं भगिनीं बाऽधि-चरतः लिङ्गच्छेदर्न वधदच । सकामा तदेव लभेत । दासपरिचारका-हितकभूक्ता च । ब्राह्मण्यामगुप्तायां, क्षत्रियस्योक्तमः, सर्वस्वं वेद्यस्य । जूद्रः कटाग्निना दह्ये त । सर्वत्र राजभार्यागमने कुम्भीपाकः ।

श्वपाकीगमने कृतकबन्धाङ्कः परविषयं गच्छेत्, श्वपाकत्वं वा शूद्रः। श्वपाकस्यार्यागमने वधः स्त्रियाः कर्णनासाच्छेदनम्।

प्रवृजितागमने चतुर्विशतिपणो दण्डः। सकामा तदेव लभेतः।

रूपाजीवायाः प्रसिद्धोपभोगे द्वादशपणो दण्डः । बहूनामेकामधिचरतां पृथववतुविंशतिपणो दण्डः । स्त्रियमयोनौ गच्छतः पूर्वस्साहसदण्डः । पुरुषमधिमेहतश्च । मैथुने द्वादशपणः तिर्यग्योनिष्वनात्मनः । देवतप्रतिमानां च गमने द्विगुणस्स्मृतः ॥ अदण्डयदण्डने राज्ञो दण्डस्त्रिशद्भुणोऽम्भस्ति । वश्णाय प्रदातच्यो ब्राह्मणेभ्यस्ततः परम् ॥ तेन तस्पूयते पापं राज्ञो दण्डापचारजम् ।

कास्ता हि बरुणो राजां मिथ्या व्यावरतां नृष् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे कण्टकशोधने चतुर्थाधिकरणे त्रयोदशोऽज्यायः अतिचारदण्डः, आदितः नवतितमः । एताबता कौटिलीयस्यार्थशासस्य कण्टकशोधनं चतुर्थमधिकरणं समाप्तम् ।

# प्र अधिः यागदृत्तः—प्रवैचममधिक णम्। द्रश्रकः दाण्डकमिकम्

दुर्गराष्ट्रयोः कण्टककोधनमुक्तम् । राजराज्ययोर्वक्ष्यामः ।

राजानमबगृद्धोपजीविनः शत्रुसाधारणा वा ये मुख्यास्तेषु गूढपुरुष-प्रणिधिः कृत्यपक्षोपग्रहो वा सिद्धिः यथोक्तं पुरस्तादुपजापोऽपसर्पो वा यथा च पारग्रामिके वक्ष्यामः ।

राज्योपघातिनस्तु बल्लभार्सहता वा ये मुख्याः प्रकाशमधन्याः प्रतिषेद्धं दूष्याः, तेषु धर्मरुचिरुपांशुदण्डं प्रयुक्षीत । दूष्यमहामात्रभातरं सत्कृतं सत्री प्रोत्साह्य राजानं दर्शयेत् । तं राजा दूष्यद्रक्योपभोगाति-सर्गेण दूष्ये विकनयेत् । शस्त्रेण रसेन वा विकान्तं तत्रेव धातयेत्, "आतृघातकोऽयम्" इति ।

तेन पारशवः परिचारिकापुत्रश्च व्याख्यातौ ।

दूष्यं महामात्रं वा सित्रशित्साहितो आता दायं याचेत । तं इष्यगृहपतिद्वारि रात्रावृपद्ययानमन्यत्र वा वसन्तं तं तीक्ष्णा हत्वा व्यात्— "हतोऽयं दायकामुकः" इति ॥ ततो हतपक्षं परिगृद्धोतरं निगृह्हीयात् ।

दूष्यसमीपस्था वा सत्रिणो आतरं दायं याचमानं घातेन परिमर्त्संपेयुः । तं रात्राविति--समानम् ।

वूष्यमहामात्रयोगी यः पुत्रः तुः, पिता वा पुत्रस्य दारानिवयरित भ्राता वा भ्रातुस्तयोः कापटिकमुखः करुहः पूर्वेण व्याख्यातः।

दूष्यमहामात्रमपुत्रमात्मसम्भावितं वा सत्री — "राजपुत्रस्त्वं सनुमया-विह न्यस्तोऽसि" इत्युपजपेत् । प्रतिपन्नं राजा रहसि पूजयेत् — "प्राप्त-यौक्रराज्यकालं त्वां महामात्रभयान्नाभिषिख्नामि" इति । सं सत्री महामात्र-विषे योजयेत् । विकान्तं तत्रं व घातयेत् — "पितृषातकोऽयं" इति ।

भिक्षुको वा दुष्यभार्या सावननकीभिरौषश्रीभिस्संबास्य रसेनातिसन्द-ध्यात् । इत्याप्यप्रयोगः।

दूष्यमहामात्रमटवीं परग्रामं वा हन्तुं, कान्तारव्यवहिते दा देशे राष्ट्रपालमन्तपालं वा स्थापयितुं, नाग्गरस्यानं वा कुपितमपग्रहीतुं, सार्थातिवाह्यं प्रत्यन्ते वा सप्रत्यादेयमादातुं फल्गुबलं तीक्ष्णयुक्तं प्रेषयेत्। रात्रौ दिवा वा युद्धे प्रवृत्ते तीक्ष्णाः प्रतिरोधकव्यञ्जना वा हन्युः "अभियोगे हतः" इति ।

यात्राविहारगतो वा दूष्यमहामात्रान् दर्शनायाह्वयेत् । ते गूढशस्त्रै - स्तीक्ष्णेस्सह् प्रविद्या मध्यमकक्ष्यायामात्मविचयमन्तःप्रवेशनार्धं दशुः । ततो दीवारिकाभिगृहीतास्तीक्ष्णा "दूष्यप्रयुक्ताः स्मः" इति ब्रूयुः । ते तदभिविख्याप्य दूष्यान् हन्युः । तीक्ष्णस्थाने चान्ये वध्याः ।

बहिर्विहारगतो सा दूष्यान् आसन्नावासान् पूजयेत् । तेषां देवी-न्यञ्जना वा दुस्स्त्री रात्रावावासेषु गृह्येतेति—समानं पूर्वेण ।

दूष्यमहामात्रं वा 'सूदो भक्षकारो वा ते शोभनः' इति स्तवेन भक्ष-भोज्यं याचेत, बहिर्वा क्रचिद्ध्वगतं पानीयम् । तदुभयं रसेन योजयित्वा प्रतिस्वादने तावेवोपयोजयेत् । तदभिविख्याप्य "रसादाविति" घातयेत् ।

अभिचारगोलं वा सिद्धन्यञ्जनो गोभाकूमंकर्कटकूटानां लक्षण्यानाम-न्यतमप्राशनेन मनोरथानवाप्स्यतीति ग्राहयेत्। प्रतिपन्नं कर्मणि रसेन लोहमुसलेबी पातयेत्—"कर्मन्यापदा हतः" इति ।

चिकित्सकव्यञ्जनो वा दौरात्मिकमसाध्यं वा व्याधि दूष्यस्य स्थाप-विस्ता भैषज्याहारयोगेषु रसेनातिसन्दध्यात् ।

सूदाराकिकव्यरुजना वा प्रणिहिता दूष्यं रसेनातिसन्दध्युः । इत्यु-पनिषरप्रतिषेधः । उभगद्रव्यत्रितिषेधस्तु—यत्र द्र्ष्यः प्रितिषेद्धव्यस्तत्र द्रष्यमेव फल्गुबल-तीक्षणयुक्तः प्रेषयेत्—"गच्छामृष्मिन् दुर्गे राष्ट्रे वा सेन्यमृत्यापय हिरण्यं वा, वल्लभाद्वा हिरण्यमाहारय, वल्लभक्त्यां वा प्रसाधानय। दुर्गसेतु-विष्यमन्त्रपात्र्यं वा। यश्च त्वा प्रतिषेधयेत्रं वा ते साहाय्यं दद्यात्, स "बन्धव्यस्यात्" इति । तथेव इतरेषां प्रेषयेत् "अमुष्याविनयः प्रति-षेद्धव्यः" इति । तमेतेषु कल्लहस्थानेषु कमंप्रतिधातेषु वा विवदमानं तीक्षणाश्यक्षं पातिमत्त्वा प्रच्छन्नां हन्युः। तेन दोषेणेतरे नियन्त्याः।

पुराणां ग्रामाणां कुलानां वा दूष्याणां सीमाक्षेत्रखलवेष्ममर्यादासु द्रव्योपकरणसस्यवाहर्नीहसासु प्रेक्षाकृत्योत्सवेषु वा समुत्पन्ने कलहे तीक्ष्णैरुत्यादिते वा तीक्ष्णाश्शस्त्रं पातयित्वा ब्रूयुः "एवं क्रियन्ते येऽमुना कलहायन्ते" इति । तेन दोषेणेतरे नियन्तव्याः ।

येषां वा दूष्याणां जातमूलाः कलहाः तेषां क्षेत्रस्रक्रवेश्मान्यादीपयित्वा वन्त्रुसम्बन्धिषु वाहनेषु वा तीक्ष्णाः शस्त्रं पातयित्वा तथेव अपूरः "अमृता प्रयुक्ताः स्मः" इति । तेन दोषेणेतरे नियन्तव्याः ।

दुर्गराष्ट्रदूष्यान् वा सत्रिणः परस्परस्यावेशनिकान् कारयेयुः । तत्र रसदा रसं दशुस्तेन दोषेणेतरे नियन्तव्याः ।

भिक्षुकी वा दूष्यराष्ट्रमुख्यं दूष्यराष्ट्रमुख्यस्य भाषां स्तुषा दुहिता वा कामयत इत्युपजपेत्। प्रतिपन्नस्याभरणमादाय स्वामिने दर्शयेत्—"असौ ते मुख्यो यौदनोत्सिक्को भार्यां स्नुषां दुहितरं वाऽभिमन्यते" इति । तयोः कलहो रात्रौ । इति समानम् ।

दूष्यदण्डोपनतेषु तु युवराजः सेनापतिर्वा किञ्चिदुपकृत्थापकान्तो विकमेत । ततो राजा दूष्यदण्डोपनतानेव प्रेषयेत् फल्गुबलतीक्ष्णयुक्तनिति समानास्सर्व एव योगाः । तेषां च पुत्रेष्यनुक्षिपत्सु यो निर्विकारः स पितृदायं लभेत । एवमस्य पुत्रपौत्राननुवतंते राज्यमपास्तपुरुषदोषमिति ।

> स्वपक्षे परपक्षे वा तूष्णीदण्डं प्रयोजयेत् । आयन्त्यां च तदात्वे च क्षमावानविशक्कितः ॥

इति कौटिलीयार्थकास्त्रे योगवृत्ते पञ्चमाधिकरणे प्रथमोध्यायः दाण्डकार्मिकम्, वादितः एकनवतितमः ।

### ६० प्रक. कोशाभिसंहरणम् ।

कोशमकोशः प्रत्युत्पन्नार्थकृछ्ं संङ्गृह्हीयात् । जनपदं महान्तमल्यप्रमाणं वा देवमातृक प्रभूतधान्यं धान्यस्यांगं तृतीयं चतुर्थं वा याचेत,
यथासारं मध्यमवरं वा। दुर्गसेतुकमंवणिक्पथ्यून्यनिवेशखनिद्रव्यहस्तिवनकर्मोपकारिणं प्रत्यन्तमल्पप्राणं वा न याचेत । धान्यपशुहिरण्यादि
निविशमानाय दद्यात् । चतुर्थमंशं धान्यानां बीजभक्तशुद्धं च हिरण्येन
क्रीणीयात् । अरण्यजातं श्रोत्रियस्वं च परिहरेत् । तदप्यनुग्रहेण
क्रीणीयात् । तस्याकरणे वा समाहतृंपुरुषा ग्रीष्मे कर्णकाणामुद्धापं कारयेयुः । प्रमाद्यावस्कन्नस्यात्ययं द्विगुणमुदाहरन्तो बीजकाले बीखलेख्यं कुर्युः ।
निष्यन्ने हरितपकादानं वारयेयुः अन्यत्र शाककटभङ्गमुष्टिभ्यां देवपितृपुजादानार्थं गवार्थं वा । भिक्षुकग्रामभृतकार्थं च राशिमूलं परिहरेयुः ।

स्वसस्यापहारिणः प्रतिपातोऽष्टगुणः । परसस्यापहारिणः पश्चाशद्भुणः सीतात्ययः स्ववगंस्य, बाह्यस्य तु वधः ।

चतुर्थमंशं धान्यानां, षष्ठं वन्यानां तूललाक्षाक्षीमवल्ककार्पासरीम-कौशेयकौषयगन्धपुष्पफलशाकपण्यानां काष्ठवेणुमांसवल्लूराणां च गृह्णीयुः । दन्ताजिनस्याधन् । वनिष्ठष्टं विकीणानस्य पूर्वस्साहसदण्डः ।

इति कषंकेषु प्रणयः।

सुवर्णरजतवन्त्रमणिमुक्ताप्रवालाश्वहस्तिपण्याः पश्चाशत्कराः । सूत्र-वस्त्रतास्रवृत्तकंसगन्धभैषण्यसोधुपण्याश्चत्वारिशत्कराः । धान्यरसलोह-पण्याः शकटव्यवहारिणश्च त्रिशत्कराः । काचव्यवहारिणो महाकारवश्च विश्वतिकराः । क्षुद्रकारदो दन्धकीपोषकाश्च दशकराः । काष्ठवेणु- पाषाणमृद्धाण्डपकाश्रहरितपण्याः पञ्चकराः। कुनौलवा रूपाजीवाश्च वेतनार्थं दशुः। हिरण्यकरमकर्मण्यानाहारयेषुः। न चेषां कञ्चिदपराधं परिहरेषुः। ते सपरिगृहीतमभिनीय विकीणीरन्।

इति व्यवहारिषु प्रणयः।

कुक्कुटसूकरमर्धं दद्यात्। क्षुद्रपद्मवष्यद्भागम्। गोमहिषाश्वतर-खरोष्ट्रादच दशभागम्। बन्धकीपोषका राजप्रेष्याभिः परमरूपयौदनाभिः कोशं सहरेयुः।

इति योनिपोषकेषु प्रणयः।

सकुदेव न द्विः प्रयोज्यः। तस्याकरणे वा समाहर्ता कार्यमपदिश्य पौरजानपदान् भिक्षेत । योगपुरुषाश्चात्र पूर्वमितमात्रं दश्यः। एतेन प्रदेशेन राजा पौरजानपदान् भिक्षेत । कापिटकारुचैनानरूपं प्रयच्छतः कुत्सयेयुः। सारतो वा हिरण्यभाढ्यान्याचेत । यथोपकारं वा स्ववशा वा यदुपहरेयुः। स्थानच्छत्रवेष्टनविभूषारुचैषां हिरण्येन श्रयङ्कछेत्। पाषण्डसञ्चवन्यमश्चोत्रियभोग्यं देवद्रव्यं वा कृत्यकराः प्रेतस्य दग्धगृहस्य वा हस्ते न्यस्तमित्युपहरेयुः।

देवताभ्यक्षो दुर्गराष्ट्रदेवतानां यथास्वमेकस्थं कोशं कुर्यात्। तथंव वाहरेत्। देवतर्चत्यं सिद्धपुण्यस्थानमौपपादिकं वा रात्राबृत्थाप्य यात्रा-समाजाभ्यामाजीवेत्। चंत्योपवनवृक्षेण वा देवताभिगमनमनार्तवपुष्प-फलयुक्तं न स्थापयेत्। मनुष्यकरं वा वृक्षे रक्षोभयं प्ररूपित्वा सिद्ध-व्यञ्जनाः पौरजानपदानां हिरण्येन प्रतिकुर्युः। सुरङ्गायुक्तं वा कूपे नाग-मनियतशिरस्कं हिरण्योपहारेणे दर्शयेत् नागप्रतिमायामन्तिक्छद्रायाम् चंत्यच्छिद्धे बल्मीकछिद्दे वा सपंदर्शन आहारेण प्रतिबद्धसंत्रं कृत्वा श्रद्ध-प्रानानादर्शयेत्। अश्रद्धानानामाचमनप्रोक्षणेषु रसमवपाय्य देवताभित्राापं ब्रूयात्। अभित्यक्तं वा दंशियत्वा। योगदर्शनप्रतीकारेण वा कोषाभि-संहरणं कुर्यात्।

वैदेहकम्पञ्जनो वा प्रभूतपण्यान्तेवासी व्यवहरेत् । स यदा पण्यमूल्ये निक्षेपप्रयोगेश्पवितस्स्यात्तदेनं रात्री मोषयेत् । एतेन रूपदर्शकः सुवर्णकारश्च व्याख्यातौ ।

वैदेहकन्यञ्जनो वा प्रख्यातन्यवहारः प्रवहणनिमित्तं याचितकमबन्नीतकं वा रूप्यमुवर्णभाण्डमनेकं गृह्हीयात् । समाजे वा सर्वपण्यसन्दोहेन प्रभूतं हिरण्यमुवर्णमृणं गृह्हीयात्, प्रतिभाण्डमूल्यं च । तदुभयं रात्रौ मोषयेत् ।

साञ्जीव्यञ्जनाभिः स्त्रीभिर्द्ष्यानुन्मादियत्वा तासामेव वेदमस्वभिगृह्य सर्वस्वान्याहरेयुः।

दूष्यकुरुयानां वा विवादे प्रत्युत्पन्ने रसदाः प्रणिहिता रसं दद्युः । तेन दोषेणेतरे पर्यादातव्याः ।

दूष्यमभित्यक्तो वा श्रद्धेयायदेशं पण्यं हिरण्यनिक्षेपभृणप्रयोगं दायं वा याचेत । दासशब्देन वा दूष्यमालम्बेत । भार्यामस्य स्नुषां दुहितरं वा दासीशब्देन भार्याशब्देन वा । तं दूष्यगृहप्रतिद्वारि रात्रावुपशयानमन्यत्र वा वसन्तं तोक्ष्णो हत्वा ब्रूयात्—"हतोऽयमित्यं कामुकः" इति । तेन दोषेणेतुरे पर्यादातव्याः ।

सिद्धव्यञ्जनो वा दूष्यं जम्मकविद्याभिः प्रलामियत्वा ब्यात्—"अक्षयं हिरण्यं राजद्वारिकं स्त्रीहृदयमरिक्याधिकरमायुष्यं पुत्रीयं वा कमं जानामि" इति । प्रतिपन्नं चंत्यस्थाने रात्रौ प्रभूतसुरामांसगन्धमुपहारं कारयेत्, एकरूपं चात्र हिरण्यं पूर्वनिस्तातम् । प्रेताङ्गं प्रेतिश्चिष्ठां यत्र निहितस्स्यात् ततो हिरण्यमस्य दर्शयेदत्यस्पिति च ब्रूगात् । "प्रभूतह्ररण्यहेतोः पुनरुपहारः कर्तंव्यः इति, स्वयमेवंतेन हिरण्येन द्वोभूते प्रभूतमौपहारिकं क्रीणोहोति"। तेन हिरण्येनौपहारिकक्रये गृह्योत ।

मातृब्यञ्जनायाः वा 'पुत्रो मे त्वया हत' इत्यवरूपितः स्यात् । संसि-द्धमेवास्य रात्रियागे वनयागे वनकीडायां वा प्रवृत्तायां तीक्ष्णा विद्यस्या भित्यक्तमतिनयेयुः ।

दूष्यस्य वा भृतकव्यञ्जनो वेतनहिरण्ये कूटरूपं प्रक्षिप्य प्ररूपयेत् । कर्मकारव्यञ्जनो वा गृहे कर्म कुर्वाणस्तेन कूटरूपकारकोपकरणम-पनिदध्यत् । चिकित्सकव्यञ्जनो वा गरमगरापदेशेन ।

प्रत्यासन्तो वा दूष्यस्य सत्री प्रणिहितमभिषेकमाण्डममित्रकासनत् च

कापटिकमुखेन आसक्षीत, कारणंच बूयात्। एवं दूष्येष्ट्रधार्मिकेषु च वर्ततः नेतरेषु।

पक्कं पक्कमिनारामात् फलं राज्यादनामु यात् । आत्मच्छेदभयादामं नर्जयेत्कोपकारकम् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे योगवृत्ते पञ्चमाधिकरणे द्वितीयोऽष्यायः कोशाभिसंहरणं, आदितो द्विननतितमः ।

## **१ प्रक. मृत्यभरणीयम् ।**

दुर्गजनपदशक्तया भृत्यकर्म समुदयपादेन स्थापयेत्, कार्यसाधनसहेन वा भृत्यलाभेन । शरीरमवेक्षेत, न धर्माथौँ पीडयेत् ।

ऋत्विगाचार्यमन्त्रिपुरोहितसेनापितयुवराजराजमातृराजमहिष्योऽष्टच-त्वारिशत्साहस्राः । एतावता भरणे नानास्वाद्यत्वमकोपकं चैषां भवति । दौवारिकान्तर्वं शिकप्रशास्तृसमाहतुं सिन्नचातारश्चतुर्विशतिसाहस्राः ।

एतावता कर्मण्या भवन्ति ।

कुमारकुमारमातृनायकपौरव्याबहारिककार्मान्तिकमन्त्रिपरिषद्राष्ट्रपाला-न्तपालाश्च द्वादशसाहस्राः । स्वामिपरिबन्धबलसहाया ह्येतावता भवन्ति ।

श्रेणीमुख्या हस्त्यश्वरथमुख्याः प्रदेष्टारश्च अष्टसाहस्राः । स्ववर्गानुक-र्षिणो ह्ये तावता भवन्ति ।

पत्त्यश्वरथहस्त्यभ्यक्षाः द्रव्यहस्तिवनेपालाः चतुस्साहस्राः ।

रियकानीकस्थिविकित्सकाश्वदमकवर्धकयो योनिपोषकाश्च द्विसाहस्राः। कार्तान्तिकनेमित्तिकमोहर्तिकपौराणिकसूतमागधाः पुरोहितपुरुषास्स-

र्वाध्यक्षारम साहसाः ।

शिल्पवन्तः पादाताः सङ्ख्यायकलेखकादिवर्गः पश्चमताः । कुशीलकास्त्वधंतृतीयशताः । द्विगुणवेतनाश्चेषां तूर्यकराः । कारुशिल्पनो विश्वतिकाः । चतुष्यदद्विपदपरिचारकपारिकर्मिकौपस्थायिकपालकविष्टिबन्धकाष्यिक वेतनाः ।

आर्यपुक्तारोहकमाणवकशैललनकास्सर्वोपस्थायिन आचार्या विद्या-वन्तक्ष पूजावेतनानि यथाही लगेरन् —पञ्चशतावरं सहस्रपरम् ।

दशपणिको योजने दूतः मध्यमः । दशोत्तरे द्विगुणवेतन आ योजन-शतादिति ।

समानविद्येभ्यस्त्रिगुणवेतनो राजा राजसूयादिषु ऋतुषु, राजस्सारियः साहस्रः।

कापटिकोदास्थितगृहपतिकवैदेहकतापसभ्यञ्जनास्साहस्राः । ग्रामभृतकसत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुक्यः पञ्चक्रताः । चारसञ्चारिणोर्धे तृतीयकाताः प्रयासवृद्धवेतना वा ।

द्यातवर्गसहस्रवर्गाणामध्यक्षा भक्तवेतनलाभमादेशं विक्षेपं च कुर्युः। अविक्षेपे राजपरिग्रहदुर्गराष्ट्ररक्षावेक्षणेषु च। नित्यमुख्यास्स्युरनेकमुख्याश्च।

कमंतु मृतानां पुत्रदारा भक्तवेतनं लभरेन् । बालवृद्धव्याधिताश्चे-षामनुग्राह्याः । प्रेतव्याधितसूतिकाकृत्येषु चैषामर्थमानकमं कुर्यात् ।

अल्पकोशः कुट्यपशुक्षेत्राणि दद्यात् ; अल्पं च हिरण्यम् । शून्यं बा निवेशियतुमम्भुत्थितो हिरण्यमेव दद्यात् ; न ग्रामं ग्रामसंजातव्यवहारस्था-पनार्थम् । एतेन भृतानामभृतानां च विद्याकमंभ्यां भक्तवेतनविशेषं च कुर्यात् । षष्ठिवेतनस्यादकं कृत्वा हिरण्यानुरूपं भक्तं कुर्यात् ।

पत्त्यश्वरषद्भिणाः सूर्योदये वहिस्संन्धिदिवसवर्षे शिल्पयोग्याः कुर्युः ।
तेषु राजा नित्ययुक्तस्स्यात्भोक्ष्णं चैषां शिल्पदर्शनं कुर्यात् । कृतनरेन्द्राक्ट्रं
शस्त्रावरणमायुधागारं प्रवेशयेत् । अशस्त्राश्चरेयुरन्यत्र मुद्रानुज्ञातात् ।
नष्टं विनष्टं वा द्विगुणं दद्यात् । विध्वस्तगणनां च कुर्यात् । साधिकानां
शस्त्रावरणमन्त्रपाला गृह्हीयुः, समुद्रमवचारयेयुर्वा । यात्रामम्युत्थितो वा
सेनामुद्योजयेत् । ततो वेदेहकव्यस्रानास्यवंपण्याम्यायुष्वीयेभ्यो यात्राकाले
दिगुणप्रत्यादेयानि दधुः । एवं राजपण्यविक्रयो वेतनप्रत्यादानं च अवति ।
एवमवेक्षितायव्ययः कोशदण्डव्यसनं नावाप्रोति ।

इति भक्तवेतनविकल्पः । सत्रिणक्वायुषीयानां वेश्याः कारुकुशीलबाः । दण्डवृद्धाश्च जानीयुश्शोच खीचमतन्द्रिताः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे योगबृत्ते पञ्चमेऽधिकरणे तृतीयोध्यायः भृत्यभरणीयम् आदितस्त्रिनवतितमः।

#### ६२ प्रक. अनुजीवि<del>वृत</del>्तम् ।

लोकयात्राविद् राजानमात्मद्रभ्यप्रकृतिसम्पन्नं प्रियहितद्वारेणाश्रयेत । यं वा मन्येत यथा—"अहमाश्रयेष्सुरेवमसौ विनयेष्सुराभिगामिकगुणयुक्तः" इति । द्रश्यप्रकृतिहोनमप्येनमाश्रयेत । न त्वेवानात्मसम्पन्नम् । अनात्म-वान् हि नीतिशास्त्रद्वेषाददनध्यंसंयोगाद्वा प्राप्यापि महदेश्वयं न भवति अत्भवति रुज्ञावकाशः शास्तानुयोगं दद्यात् । अविश्वंवादाद्धि स्वानस्थैर्य-मबाप्रोति । मतिकर्मसु पृष्टः तदात्वे च आयत्यां च धर्माधसयुक्तं समधं प्रवीणवदपरिषद्भीरः कथयेत् । ईप्सितः पणेत-धर्मार्मानुयोगं अविशि-ष्टेषु बलवत्तंयुक्ते षु दण्डदारणं, तत्संयोगे तदात्वे च दण्डघारणमिति. त कुर्याः । पक्षं वृक्षिं गुह्यं च मे नोपहरयाः । म संज्ञया च त्वां कामकोघ-दण्डनेषु बारयेयम् इति । आयुक्तप्रदिष्टायां भूमावनुज्ञातः प्रविशेत् । उपविशेच पार्श्वतस्सिञ्चिष्टवित्रक्कृष्टः। वरासनं विगृह्य कथनमसम्मप्रत्य क्षमश्रद्धेयमनृतं च बाक्यमुच्चेरनर्माणि हासं वात्रधीवने च शब्दवती न कुर्यात् । मिथः कथनमन्येन, जनवादे हुन्हुकथनं, राज्ञो वेषमुद्धतकुहकानां च, रज्ञातिशयप्रकाशास्यर्थनं एकाक्ष्योष्ठनिर्भोगं भ्रुनुटीकर्म, वान्यापक्षेपणं च बुवितः वलवत्सं युक्तविरोधं साभिः स्रोदधिमस्सामन्तद्तीई व्यवसा-विक्रिप्तानध्यश्च प्रतिसंसर्गमेकार्यंचर्या सङ्घातं च वर्जयेत् ।

अहीनकालं राजार्थं स्वार्थं प्रियहितेस्सह । परार्थंदेशकाले च स्याद्धमर्थिसंहितम्।। पृष्टः प्रियहितं ब्र्यान ब्र्यादहितं प्रियम्। अप्रियं वा हितं ब्रूयाखण्वतोऽनुमतो मियः।। तूष्णीं वा प्रतिवानये स्याद् द्वेष्यादींश्च न वर्णयेत्। अप्रिया अपि दक्षास्त्युः तङ्कावाचे बहिष्कृता:।। अनध्यश्चि त्रिया दृष्टाह्चित्तज्ञानानुवर्तिनः। अभिहास्येष्वभिद्वद्वोरहासांदच वर्जयेत् ॥ परात्सङ्कामयेद्वारं न च घोरं स्वयं बदेत । तितिक्षेतात्मनश्चैव क्षमावान् पृथिवीसमः॥ आत्मारक्षा हि सततं पूर्वं कार्या विजानता । अग्नाबिव हि संशोक्ता वृत्ती राजोपजीविनाम् ॥ ऐकदेशं दहेदग्रिः शरीरं वा परं गतः। सपुत्रदारं राजा तु घातयेद्वंघयेत वा ॥

इति कौटिकीयार्थशास्त्रे योगवृत्ते पञ्चमाधिकरणे चतुर्थोऽध्यायः अनुजीविवृत्तम् आदितश्चतुर्नवितिसमः ।

#### ६३ प्रक. समयाचा किम् ।

निमुक्तः कर्मसु व्ययविशुद्धमुदयं दर्शयेत् । आम्यन्तरं बाह्यं मुद्धः प्रकाश्यमात्ययिकमुपेक्षितव्यं वा कार्यः "इदमेकम्" इति विशेषयेत्र ।

मृगयाद्यूतमदासीषु प्रसक्तं चानुवर्तेत प्रशंसाभिः बासन्नश्चास्य

भ्यसनोपघाते प्रयतेतः । परोपआपातिसन्धानोपधिभ्यश्च रक्षेत् इङ्गि-ताकारी चास्य लक्षयेत् ।

कामद्वेषहर्षदेन्यव्यवसायभयद्वनद्वविपर्यासमिङ्गिताकाराभ्यां हि मन्त्र-संवरणार्थमाचरन्ति प्रज्ञाः।

प्रदर्शने प्रसोदित । वाक्यं प्रतिगृह्णित । आसनं ददित । विविक्ते दर्शयते । शङ्कास्थाने नातिशङ्कते । कथायां रमते । परशाप्येष्वपेक्षते । पथ्यमुक्तं सहते । स्मयमानो नियुङ्को । हस्तेन स्पृशति । श्लाघ्येनोपहसित । परोक्षे गुणं बयौति । मक्ष्येषु स्मरति । सह विहारं याति । व्यसनेऽभ्यवपद्यते । तङ्कक्तीन् पृजयति । गृक्षमाचष्टे । मानं वर्धयति । अर्थं करोति । अन्यं प्रतिहन्ति इति तृष्टिशानम् ।

एतदेव विपरीतमतुष्टस्य ।

भूयश्च वस्यामः—सन्दर्शने कोपः, वाज्यस्याश्चवणत्रतिषेघौ, आसन-चक्षुषोरदानं, वर्णस्वरभेदः, एकाक्षिश्च कुट्योष्ठनिर्भोगः स्वेदश्च श्वासिस्म-तानामस्थानोत्पत्तिः, परिमन्त्रणं, अकस्माद्ध जनं, वर्धनं अन्यस्य, भूमिगात्र-विलेखनं, अन्यस्योपतोदनं, विद्यावर्णदेशकुत्ता, समदोषनिन्दा, प्रतिदोष-निन्दा, प्रतिलोमस्तवः, सुकुतानवेक्षणं, दुष्कृतानुकीर्तनं, पृष्ठावधानं, अतिस्यागः, मिथ्याभिमाषणं, राजवर्शिनां च तद्वृत्तान्यत्वम् । वृत्तिविकारं चावेक्षेताप्यमानुषाणाम् ।

अयमुच्चेः सिश्वतीति कात्यायनः प्रवदाश कौश्रोऽपसव्यम् इति कणिक्को भारद्वादः । तृणमिति दीर्षश्चारायणः। शीता शाटीति घोटमुद्धः। हस्ती प्रत्यौकीदिति किञ्जल्कः। रथाश्चे प्राक्षंसीत् इति पिशुनः। प्रतिरद्धणे शुनम् इति पिशुनपुत्रः।

अर्थमानावक्षेपे च परित्यागः। स्वामिषीलमास्मनश्च किल्बिषमुप-लम्य वा प्रतिकुर्वीतः। मित्रमुपकृष्टं बाऽस्य गच्छेत्। तत्रस्यो दोषनिर्धातं मित्रं अंतंरि चाचरेत्। ततो भतंरि जोवेद्वा मृते वा पुनराव्रजेत्।।

इति कौटिलीयार्थंबास्त्रे योगवृत्ते पञ्चमाधिकरणे पञ्चमोध्यायः समयाचारिकम् अस्तिः पञ्चनवृतितमः ।

#### ६४, ६५ प्रक. राज्यप्रतिसन्धानमेकैश्वर्यं च।

राजन्यसनमेवममास्यः प्रतिकुर्वीतः । प्रागेव मरणाबाषभयाद्राज्ञः प्रिय-हिलोपग्रहेण मासद्विमासान्तरं दर्शनं स्थापयेत् । "देशवाडापहममित्रापह-मायुष्यं पुत्रोयं वा कमं राजा साधयितं" इत्यपदेशेन राजन्य सुनमनुरूप-वेकायां प्रकृतीनां दर्शयेत्, मित्रामित्रदूतानां च । तैश्च यथोचितां सम्भाषां अमात्यमुक्तो गच्छेत् । दौवारिकान्तर्वंशिकमुखश्च यथोक्तं राजप्रणिषि-मनुवर्तयेत् । अपकारिषु च हेडं प्रसादं वा प्रकृतिकान्तं दर्शयेत् । प्रसाद-मेवोपकारिषु । आसपुरुषाधिष्ठितौ दुर्गप्रत्यन्तस्यौ वा कोशादण्डावेकस्यौ कारयेत् । कुल्यकुमारमुख्यांच्चान्यापदेशेन ।

यश्च मुख्यः पक्षबान् दुर्गाटवीस्थो वा वेगुण्यं भजेत तमुपग्राहयेत्, बाह्यादाधां वा यात्रां प्रेषयेत् मित्रकुर्लं वा ।

यस्मात्र सामन्तादाबाशां पश्येत्तमुत्सवविवाहहस्तिवन्धनाध्वपण्यभूमि-प्रदानापदेशेन अवग्राहयेत् । स्वमित्रेण वा । ततः सन्धिमदूष्यं कारयेत् ।

आट**बिकाभित्रै** वर्षि वर्षे ग्राहयेत्। **तत्कुलीनमबरुद्धं वा भू**म्येक-देशेनोपग्राहयेत्।

कुल्यकुमारमुख्योपग्रहं कृत्वा वा कुमारमभिषिक्तमेव दर्शयेत्। दाण्ड-कर्मिकवद्वा राज्यकण्टकानुद्धत्य राज्यं कारयेत्।

यदि वा कश्चिन्मुख्यः सामन्तादीनामन्यतमः कोर्पं भजेत, तं "एहि

राजानं त्वा करिष्यामि" इत्याबाहयित्वा घातयेत्। आपत्प्रतीकारेण वा साधयेत्।

युवराजे वा कमेण राज्यभारमारोप्य राजन्यसनं ख्यापयेत्।

परभूमौ राजव्यसने मित्रेणामित्रव्यसुनेन शत्रोस्सन्धिमबस्थाप्याप-गच्छेत्। सामन्तादीनामन्यतमं बाऽस्य दुर्गे स्थापितवाऽपगच्छेत्। कुमारमभिषिच्य वा प्रतिव्यूहेत । परेणामियुक्तो वा यथोक्तमापत्प्रताकारं कुर्यात्।

एवमेकेश्वर्यममात्यः कारयेदिति --कौटिल्यः ।

"नैवम्" इति भारद्वाजः—"प्रिच्नियमाणे वा राजन्यमास्यः कुल्यकुमार-मुख्यान् परस्परं मुख्येषु वा विकामगेत् । विकान्तं प्रकृतिकोपेन घातयेत् । कुल्यकुमारमुख्यानुपांशुदण्डेन वा साधियत्वा स्वयं राज्यं गृह्णीयात् । राज्यकारणाद्धि पिता पुत्रान् पुत्राश्च पितरमिष्दुह्यन्ति, किमङ्ग पुनरमा-त्यप्रकृतिद्योकप्रहो राज्यस्य । तत्स्वयमुपस्थितं नावमन्येत । स्वयमा-ख्ढा हि श्री त्यज्यमानाऽभिश्चपतीति लोकप्रवादः ।

> कालश्च सञ्चदभ्येति यं नरं कालकाङ्क्षिणम् । दुर्लभस्स पुनस्तस्य कालः कर्मं चिकीर्षतः॥

"प्रकृतिकोषकर्माधर्मिष्ठमनेकान्तिकं चैतत्" इति कौटिश्यः—राज-पुत्रमात्मसम्पन्नं राज्ये स्थापयेत् । संपन्नाभावे व्यसनिनं कुमारं राजकच्यां गर्भिणीं देशीं वा पुरस्कृत्य महामात्रान् सन्निपात्य ब्रूयात्—"अयं बो निक्षेपः, पितरमस्यावेक्षध्वं सत्त्वाभिजनमात्मनश्च ; ध्वजमात्रोऽयं, भवन्त एव स्वामिनः ; कथं वा त्रियताम्" इति । तथा ब्रुवाणं योगपुरुषा व्रूयुः—"कोऽन्यो भवत्पुरोगादस्माद्राज्ञश्वातुर्वण्यमहंति पालयितुम्" इति । तथेत्यमात्यः कुमारं राजकन्यां गर्भिणीं देशीं वाऽिषकुर्वीत, बन्धुसम्ब-

भक्तवेतनविशेषममात्यानामायुषीयानां च कारयेत्। "भूपश्चाऽयं वृद्धः करिष्यति" इति ब्रूयात्। एवं दुर्गराष्ट्रमुख्यानाभाषेत, यद्याही च मित्रामित्रपक्षम्। विनयकर्मणि च कुमारस्य प्रयतेतः। कन्यायां समान कातीयादपत्यमुल्पाद्य वाडिभिषिञ्चेत् । मातुष्टिकत्वशोभभवात्कु-ल्यमल्पसत्त्वं छात्रं च लक्षण्यमुपनिद्यात् । ऋतौ चेनां रक्षेत् । न भातमार्थं कष्टिचदुत्कृष्टमुपभोगं कारयेत् । राजार्थं तु यानवाहनाभरणव-ससीवेश्मपरिवापान् कारयेत् ।

यौवनस्यं च याचेत विश्वमं चित्तकारणात्।
परित्यजेदतुष्यन्तं तुष्यन्तं चानुपालयेत्।।
निवेद्य पुत्ररक्षार्थं गूढासारपरिग्रहान्।
अरण्यं वीषंसत्रं वा सेवेतारुच्यतां गतः।।
मृख्येरवगृहीतं वा राजानं तित्रयाश्रितः।
इतिहासपुराणाभ्यां बोधयेदर्थंबास्त्रवित्।।
सिद्धव्यञ्जनरूपो वा योगमास्याय पार्थिवम्।
लभेत लङ्क्वा दूष्येषु दाण्डकर्मिकमाचरेत्।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे योगवृत्ते पत्रुमेऽधिकरणे षष्ठोऽध्यायः राज्यप्रतिसन्धानं एकैश्वर्ये । आदितष्यण्णवितः । एतावता कोटिलीमस्यार्थशास्त्रस्य योगवृत्तं पत्रुममधिकरणं समाक्षम् ।

## मण्डलयोनिः—षष्टमधिकरणम् । ६६ प्रक. प्रकृतिसम्पदः।

स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोश्वदण्डमित्राणि प्रकृतयः। तत्र स्वामिसम्पत्—महाकुलीनो देवबुद्धिसस्वसम्पन्नो वृद्धदर्शो धार्मि-कस्सत्यवागविसंवादकः कृतज्ञः स्थूललक्षो महोत्साहोऽदीर्घसूत्रश्वान्यसामन्तो दृढबुद्धिरक्षुद्धपरिषस्को विनयकाम इत्याभिगामिका गुणाः। शुभूषाश्रवणग्रहणधारणविक्षानोहापोहतत्त्वामिनिवेशाः प्रकागुणाः । शौर्यममर्थः शोध्रता दाक्यं चोत्साहगुणाः ।

बाग्मीप्रगरमः स्मृतिमतिबलवानुदग्नः स्ववग्रहः कृतशिल्पो व्यसने ६ण्ड-नाय्युपकारापकारयोदं प्रप्रतीकारी होमानापरप्रकृत्योविनियोक्ता दीर्घंदूरदर्शी देशकालपुरुषकारकार्यप्रधानस्सन्धिविकमत्यागसंग्रमपणपरि छद्वविभागी सं-वृतोऽदीनाभिहास्य बिह्य स्नुकुटीक्षण हुकामकोधलोभस्तम्भचापलोपतापपे-शुन्यहोनः शक्लः स्मितोदग्राभिभाषी वृद्धोपदेशाचार इत्यात्मसम्पत् ।

मात्यसम्पदुक्ता पुरस्तात्।

मध्ये चान्ते च स्थानवानात्मधारणः परधारणश्चापि स्थारक्षस्वाजीवः शत्रु द्वेषी शत्र्यसामन्तः पङ्कपाधाणोषरविधमकण्टकश्चेणीव्यालमृगाटवीहीनः कान्तस्सीतास्ननिद्रव्यहस्तिवनवान् गब्यः पौरुषेयो गुप्तगोषरः पशुमान् अदेवमातृको वारिस्थलपथाभ्यामुपेतः सारचित्रबहुपण्यो दण्डकरसहः कर्मशीलक्षकोऽबालिशस्वाभ्यवरवर्णप्रायो भक्तशुचिमनुष्य इति जन-पदसम्पत्।

दुर्गसम्पद्धक्ता पुरस्तात् ।

धर्माधिगतः पृवः स्वयं वा हेमरूप्यप्रायदिषकस्यूलरहहिरण्यो दीर्धा-मप्यापदमनायति सहेतेति कोशसम्पत् ।

पितृपैतामहो नित्यो वश्यश्तुष्टभृतपुत्रदारः प्रवासेष्वपि संपादितः सर्वत्राप्रतिहतो दुःखसहो बहुयुद्धस्सर्वयुद्धप्रहरणविद्याविद्यारदः सहवृद्धि- क्षयिकत्वादद्वे ध्यः क्षत्रप्राय इति दण्डसम्पत् ।

पितृपैतामहं नित्यं वश्यमद्धेध्यं महस्रघुसमुत्यमिति मित्रसम्मत् ।

अराजनीजी लुब्धः क्षुद्रपरिषत्को विरक्तप्रकृतिरन्यायवृत्तिरयुक्तो व्यसनी निरुत्साहो देवप्रमाणो यत्किञ्चनकार्यगतिरननुबन्धः क्रीबो नित्यापकारी चेत्यमित्रसम्पत् । एवभूतो हि क्षत्रुस्सुद्धः समुच्छेतुं भवति ।

अरिवर्जाः प्रकृतयः सर्वे तास्स्वगुणोदयाः । ऊत्काः प्रत्यङ्गभूतास्ताः प्रकृता राजसम्पदः ॥ सम्पादयत्यसम्पन्नाः प्रकृतीरात्मबान्तृषः । .
विवृद्धाश्चानुरक्ताश्च द्वाद्धित्यद्वात्मवान् ॥
ततस्स दुष्टप्रकृतिश्चातुरन्तोऽप्यनात्मवान् ।
हन्यते वा प्रकृतिभियति वा द्विषतां वशम् ॥
आत्मवांस्त्वल्पदेशोऽपि युक्तः प्रकृतिसम्पदा ।
नयजः पृथियों कृतस्नां अयत्येव न हीयते ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे मण्डलयोनौ षष्टे ऽविकरणे प्रथमोऽध्यायः प्रकृतिसम्पदः, आदितस्यसनवतिसमः।

#### ६७ प्रक. शमब्यायामिकम् ।

वामन्यायामी योगक्षेमयोयीति:।

कर्मारम्भाणां योगाराधनो व्यायामः । कर्मफलोपभोगानां क्षेमा-राधनश्चमः ।

शमन्यायामयोयोनिष्याद्युष्यम् ।

क्षयस्थानं वृद्धिरित्युदयाः तस्य । मानुषं नयापनयौ देवमयानयौ । देवमानुषं हि कमं लोकं यापयति । अदृष्टकारितं देवं, तस्मिन्निष्टे न फलेन योगोऽयः । अनिष्टेनानयः ।

दृष्टकारितं मानुषम्, तस्मिन् योगक्षेमनिष्यत्तिर्मयः । वियत्तिरपन्यः । तिबन्त्यम् । अविन्त्यं देवमिति ।

राजा आत्मद्रव्याप्रकृतिसम्पन्नो नयस्याधिकानं विजिगीषुः। सस्य समन्ततो मण्डकीभूता भूम्यन्तरा अरिप्रकृतिः। तथेव भूम्येकान्तरा मित्रप्रकृतिः।

अरिसम्पद्युक्तः सामन्तः शब्दः।

भ्यसनी यातव्यः । अनपाश्रयो दुर्वं लाश्रयो बोच्छेदनीयः । विषयंये पोडनीयः कर्शनीयो वा ।

इत्यरिविशेषाः ।

तस्मान्मित्रमरिमित्रं मित्रमित्रं अरिमित्रमित्रं चानन्तर्येण भूमीनां प्रसज्यते पुरस्तात्।

पश्चात्पार्षिणग्राह आऋन्दः पार्षिणग्राहासार आऋन्दासार इति ।

सूम्यनन्तरः प्रकृत्यमित्रः तुल्याभिजनस्सहजः। विरुद्धो विरोधियता वाकृतिमः।

भूम्येकान्तर प्रकृतिमित्र मातापितृसम्बन्धं सहजं, धनजीवित्रहे्सी-राश्चितं कृत्रिममिति ।

अरिविजिगीष्वोर्भूस्यन्तरः इंहतासंहतयोरनुप्रहे समर्थो निप्रहे चासंहत-योर्भस्यमः।

अरिविजिगीषुमध्यानां बहिः प्रकृतिस्यो बलवत्तरः संहतासंहतानाम-रिविजिगीषुमध्यमानामनुग्रहे समर्थो निग्रहे चाबंहतानामुदासीनः।

इति प्रकृतयः।

विजिगीवर्मित्र' मित्रमित्र' बाऽस्य प्रकृतयस्तिसः। ताः पञ्चभिरमात्य-जनपददुर्गको ग्रदण्डप्रकृतिभिरेकेकशः संयुक्ता मण्डलमष्टादशकं भवति ।

अनेन मण्डलपृथक्त्वं व्याख्यातं **अ**रिमध्यमो**दासीनानाम्** ।

एवं चतुर्मण्डलसङ्क्षेपः। द्वादश राजप्रकृतयः, षष्टिद्र'व्यप्रकृतयः, सङ्क्षेपेण द्विसप्ततिः।

तासां यथास्वं सम्पदः। शक्तिः सिद्धिश्च।

बलं शक्तिः, सुखं सिद्धिः।

शक्तिस्रिविधा—ज्ञानवस्रं मन्त्रशक्तिः, कोशदण्डबस्रं प्रमुशक्तिः, विकमवस्रमुत्साहशक्तिः।

एवं सिद्धिविधिव मन्त्रशक्तिसाध्या मन्त्रसिद्धिः, प्रभुगक्तिसाध्या प्रभुसिद्धिः, उत्साहशक्तिसाध्या उत्साहसिद्धिरिति ।

ताभिरम्यु च्छिनो ज्यामान् भवति । अपिबतो हीनः । तुल्पशक्ति-

स्समः । तस्मान्छिक्तिः सिद्धिः च घटेतात्मन्यावेशयितुम् । साधारणो वा द्रव्यप्रकृतिष्त्रानन्तर्येण शौववशेन वा । दूष्यामित्राभ्यां वाऽप्रकष्टुं यतेत ।

यदि वा पश्येत्—"अमित्रो मे शक्तियुक्तो वाग्दण्डपारुष्यार्थंदूषणैः प्रकृतीरुपहनिष्यति, सिद्धियुक्तो वा मृगयाण्यूत मद्यस्रीभिः प्रमादं गमिष्यति, स विरक्तप्रकृतिरुपक्षीणः प्रमत्तो वा साध्यो मे भविष्यति, विग्रहाभियुक्तो वा सर्वसन्दोहेनंकस्थो दुगंस्थो वा स्थास्यति, स संहत- हंन्यो मित्रदुगंवियुक्तस्साध्यो मे भविष्यति, 'बलवान्या राजा परतः शत्रुमुच्छेत् कामस्तमुस्थिद्य न मामुच्छिन्द्यादिति, बलवता प्रार्थितस्य मे विषक्रकर्मारम्भस्य वा साहाय्यं दास्यति मध्यमिलप्सायां चेति", एवमा-दिषु कारणेष्वमित्रस्यापि शक्ति सिद्धि चेच्छेत्।

नेमिमेकान्तरम् राज्ञः कृत्वा चानन्तरानरान् । नाभिमात्मानमायच्छेत् नेता प्रकृतिमण्डले ॥ मध्येह्यु पहितः शत्रुः नेतुर्मित्रस्य चोभयोः । उच्छेद्यः पीडनीयो वा बलवानपि जायते ॥

इति कौटिलीयार्थशस्त्रे मण्डलयोनौ षष्ठोऽधिकरणे दितीयोऽध्यायः

शमन्यायामिनम्, आदितोऽष्टनवतितमः । एतावता कौटिलीयस्यार्थशास्त्रस्य मण्डलयोनिः षष्ठमधिकरणं समाप्तम् ।

# षाड्गुण्यम्—सप्तममधिकरणम् । ६८—६६ प्रक षाड्गुण्यसमुद्देशः, क्षयस्थानवृद्धिनिश्चयश्च.

षाङ्गुण्यस्य प्रकृतिमण्डलं योनिः।

'सन्धिविग्रहासनयानसंश्रयद्वेशीभावाष्पाङ्गुन्यम्' इत्याचार्याः ।

'ह्रौगुण्यम्' इति वातःयाधिः, 'सन्धिविग्रहाभ्यां हि षाह्गुण्यं सम्पद्यते' इति ।

'षाङ्गुण्यमेवैतदवस्थाभेदाद्' इतिकौटिल्यः।

तत्र ---पणबन्धः सन्धिः ; अपकारो बिग्रहः ; उपेक्षणमासनं ; अभ्युच्चयो यानं ; परार्पणं संश्रयः ; सन्धिबिग्रहोपादानं द्वेधीभाव इति षड् गुणाः ।

परस्माद्धीयमानः संदघीत । अभ्युच्चीयमानो विगृह्णीयात् । 'न मां परो नाहं परमुबहत्तुं शक्तः' इत्यासीत । गुणातिशययुक्तो यायात् । शक्तिहीनस् अयेत । सहायसाध्येकार्ये द्वेधीभावं गच्छेत् । इति गुणावस्थापनम् ।

तेषां—यस्मिन् वा गुणे स्थितः पश्येत् "इहस्य शक्ष्यामि दुगंबेतु-कर्मवणिक्पथशून्यनिवेशस्वनिद्रव्यहस्तिवनकर्माण्यात्मनः प्रवर्तयितुं परस्य चैतानि कर्माण्युपहन्तुम्" इति तमातिष्ठेत्. सा वृद्धिः ।

' झाशुनरा मे वृद्धिभू यस्तरा बृद्ध्युदयतरा वा भविष्यति विपरीता परस्य'' इति ज्ञात्वा पश्वृद्धिमुपेक्षेत । तुल्यकाल लोदयायां वृद्धौ सन्धिमुपेयात् ।

य स्मिन् वा गुणे स्थितः स्वकर्मण।मुपञ्चातं पश्टेन्नेतरस्य तरिमन्न तिष्ठेत्, एव क्षयः।

"चिरतरेणाल्पतरं वृद्धयुदयतरं वा क्षेष्ये ; विपरीत परः" इति ज्ञात्वा क्षयम्पेक्षेत । त्ल्यकालफलोदये वा क्षये सन्धिम्येयात् ।

यस्मिन् वा गुणे स्थितस्स्वकर्मवृद्धिं क्षय वा ना भिष्क्येदेतत् स्थानम् । "ह्रस्यातरं वृद्धयुदयतरं वा स्थास्यामि विपरीतं परः" इति ज्ञात्वा स्थानमुपेक्षेत ।

"तुल्यकालकलोदये वा स्थाने सन्विमुदेयात्" इत्याचार्याः ।

"नैतद्विभाषितम्" इति कौटिल्यः ।

यदि वा पश्येत्—"सन्धी स्थिती महाफलैः स्वकमंभिः परकर्माण्युपहिनिष्यामि, महाफलानि वा स्वकर्माण्युपभोक्ष्ये परकर्माणि वा,
सन्धिविश्वासेन वा योगोपनिषदप्रणिधिमिः परकर्मान्युपहिनिष्यामि, सुझं
वा सानुप्रहपरिहारसौकर्यं फललाभभूयस्त्वेन स्वकर्मणां परकर्मयोगावहः
जनमास्राविष्यामि, विलेनाऽतिमात्रेण वा बंहितः परः स्वकर्मोपधातं
प्राप्स्यित, येन वा विगृहीनो मया सन्धत्ते, तेन अस्य विग्रहं दार्घं करिध्यामि, मया वा संहितस्य मद्द्वेषिणो जनपदं पीडियध्यति, परोपहतो
वाऽस्य जनपदो मामागमिष्यिति, ततः कर्मसु वृद्धिं प्राप्स्यामि, विपन्नकर्मारम्भो वा विषमस्थः परः कर्मसु न मे विक्रमेत, परतः प्रवृत्तकर्मारम्भो वा त्राभ्यां संहितः कर्मसु वृद्धिं प्राप्स्यामि, राष्ट्रपतिबद्धं वा
धात्र्णा सन्धं कृत्वा मण्डलं भेत्स्यामि, भिन्नमवाप्स्यामि, दण्डानुग्रहेण
वा शत्रु पुण्ह्य मण्डललिप्सायां विद्वेषं ग्राह्यिष्यामि; विद्विष्टं तेनेव
धात्रिष्यामि" इति सन्धिना वृद्धिमातिष्टेत् ।

यदि वा पश्येत्—"आयुषीयप्रायश्क्षेणीप्रायो वा मे जनपदः शैलवन-नदीदुर्गं कहारारक्षो वा शक्ष्यति पराभियोगं प्रतिहरनुमिति, विषयान्ते दुर्गमविषद्यमपाश्चितो वा शक्ष्यामि परकर्माण्युपहन्तुमिति, व्यसनपीडो-पहतीत्साहो वा परस्सं प्राप्तकर्मो पद्यातकाल इति, विगृहीतस्यान्यतो वा शक्ष्यामि जनपदमपवाहियतुम्" इति विग्रहे स्थितो वृद्धिमातिष्टेत्।

यदि वा मन्येत—"न मे शक्तः परः कर्माण्युपहन्तुं, नाहं तस्य कसौंपघाती वा, व्यसनमस्य, श्ववराह्वोरिय कलहे वा स्वकंमानुष्ठान-परो वा वार्षेष्ये" इत्यासनेन वृद्धिमातिष्ठेत् । यदि वा मन्येत—"यानसाध्यः कर्मोपद्यातः शत्रोः, प्रतिविहितस्वकर्माः रक्षद्वास्मि" इति यानेन वृद्धिमातिष्ठेत् ।

यदि वा मन्येत---"नास्मि शक्तः परकर्माण्यु हिन्तुं, स्वकमो प्षातं वा त्रातुम्" इति बलवक्तमाश्रितः स्वकर्मानुष्टानेन क्षयात् स्थानं स्थानाद्वृद्धि चाकाङ्क्षेत ।

यदि वा मन्येत — "सन्धिनंकतः स्वक्तमणि प्रवर्तयिष्यामि विग्रहेणे-कतः परकमण्युपहनिष्यामि" इति द्वैधीभावेन वृद्धिमातिष्ठेत् ।

एव विह्मिर्गु जैरतेः स्थितः प्रकृतिमण्डले ।

पर्यं वेत क्षयात् स्थानं स्थानादृद्धि च कर्मसु ॥

इति कौटिलोयार्थं शास्त्रे पाड्गुण्ये सप्तमेऽधिकरणे प्रथमोऽध्यायः

षाड्गुण्यसमुद्देशः क्षयःश्वानवृद्धिनिश्चयश्च आदितो तवनवतितमः

#### १०० प्रक. संश्रयवृत्तिः

सन्धिविष्रहयोस्तुल्यायां वृद्धौ सन्धिमुपेयात् । विष्रहे हि क्षय-व्ययप्रवासप्रत्यवाया भवन्ति ।

तेनासन्यानयोरासनं व्याख्यातम्।

द्वैश्वीभावसंश्रययोद्धे वीभावं गच्छेत्। द्वेश्वीभूतो हि स्वकर्मप्रधान आत्मन एवोपकरोति । संश्रितस्त् परस्योपकरोति, नात्मनः।

यदलस्सामन्तः तदिशिष्टबलमाभयेत । तदिशिष्टबलाभावे तमेवाश्चितः कोशदण्डभूमीनामन्यतमेनास्योपकत् मदष्टः प्रयतेत ।

महादोषो हि विशिष्टबन्समागनो राज्ञामन्यत्रारिगृहोतात् ।

अशक्ये दण्डोपनतबद्वर्तेत ।

यदा चास्य प्राणहरं व्याधिमन्तःकोपं शत्रु वृद्धिं मित्रव्यसनमुपस्थितः वा तन्निमित्तमात्मनक्च वृद्धि पश्येत्, तदा सम्भाव्यव्याधिवर्मकार्यापवे- शेनापयायात् । स्वविषयस्यो वा नोपगच्छेत् । आसन्नो वाऽस्य छिद्रेषु पहरेत् ।

बजीविसोर्वा मध्यगास्राणसमर्थमाश्रयेत्। यस्य वानन्तद्धिस्स्मात्। उभौ वा कपालसंश्रविस्तिष्ठेत्। मूलहरमितरस्येतरमपिश्वान्। भेदमु-भयोर्का परस्परापदेशं प्रयुक्जीतः। मिन्नयोरुपांशु दन्डम्। पाश्वस्थो वा बलस्थयोरासन्नभयात् प्रतिकुर्जीतः। दुर्गपाश्रयो वा इधोभूतस्तिष्ठेत्। सम्धित्रिष्ठक्रमहेतुभिक् चिष्टेतः। दूष्यामित्राटिकानुभयोरुपगृह्णीयात्। एतयोरन्यतरं गच्छंस्तेरेत्रान्यतरस्य व्यसने प्रहरते। द्वाभ्यामुपहितो वा मण्डला ॥श्रयस्तिष्ठेत् मुमध्यमभुदासीनं वा संश्रयेतः। तेन सहैकमुपगृद्धो-तरमुच्छित्रन्द्यादुभौ वा। द्वाभ्यामुच्छिन्नो वा मध्यमोदासीनयोस्तत्प-सीयाणां वा राज्ञां न्यायवृत्तिमाश्रयेतः। तुल्यानां वा यस्य प्रकृतयः मुख्येयुरेनं, यत्रस्थो वा शक्नुयादात्मानमुद्धतुं, यत्र वा पूर्वपृष्ठभेचिता गितः आसन्नःस्सम्बन्धो वा मित्राणि भूयांसीति शक्तिमन्ति वा भवेयुः।

> प्रियो यस्य भवेद्यो वा प्रियेऽस्य कतरस्तयोः। प्रियो यस्य स तं गच्छेदित्याश्रयगतिः परा॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमेऽधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः, संव्यवकृत्तिः आदितः शततमः।

## १०१-२ प्रक. समहीनज्यायसां गुणाभिनिवेशः हीनसन्धयश्च ।

विजिगीषुः शक्त्यपेक्षः षाङ्गुण्यमुपयुठजीत । समज्यायोभ्यां सन्धीयेत । हीनेन विगृह्धीयात् । विगृहीतो हि ज्यायसा हस्तिना पादयुद्धियवाभ्युपैति । समेन चामं पात्रमामेनाहतिमेवोभयतः क्षयं करोति । कुम्भेनेवाश्मा हीनेने-कास्तिसिद्धिमवाप्नोति । ज्यायांश्चेन्न सन्धिमिच्छेत्, दण्डोपनतवृत्तमावलीयसं वा योगमा-तिष्ठेतु ।

समरचेत्र सन्धिभिक्छेत्, यावन्मात्रमपकुर्यात्ताक्षन्मात्रमस्य प्रत्य-पकुर्यात् । तेजो हि सन्धानकारणं, नातप्तं लोहं लोहेन सन्धत्त इति । हीनश्रोत्सर्वत्रानुप्रणतिस्तिष्ठेत्, सन्धिमुपेयात् । आरण्योऽग्निरिव हि दुःखामर्पजं तेजो विक्रमयति । मण्डलस्य चानुपाह्यो भवति ।

संहितक्ष्वेत् "परप्रकृतयो लुब्धक्षीणापचारिताः प्रत्यादानभयादा नोपगच्छन्ति" इति पक्षेद्धीनोऽपि विगृह्णीयात् ।

विगृहीतश्चेत् "परप्रकृतयो लुब्धक्षीणापचारिताः विग्रहोद्विग्ना वा मां नोपगच्छन्ति" इति पश्येत्, ज्यायानिक सन्धीयेत, विग्रहोद्वेगं वा शमयेत्।

व्यसनयौगपद्ये — ''गुरुव्यसनोऽस्मि, रुषुव्यसनः परः सुखेन प्रति-कृत्यव्यसनमातमनोऽभियुठज्यातित्" इति पश्येत्, ज्यायानपि सन्धीयेत । सन्धिविग्रह्योद्देत् परकर्शनमात्मोपचयं वा नाभिपश्येत्, ज्यायान-प्यासीत ।

परव्यसनमप्रतिकार्यं चेत् पश्येत्, होनोऽप्यभियायात्। अप्रतिकार्यासम्रथ्यसनो वा ज्यायानपि संश्रयेत ।। सन्धिनेकतो विग्रहेणेकतश्वत् कार्यसिद्धि पश्येत्, ज्यायानपि द्वेशीभूत-स्तिष्ठेदिति । एवं समस्य षाड्गुण्योपयोगः । तत्र तु प्रतिविशेषः—

> प्रवृत्तचक्रेणाकान्तो राज्ञा बलवताऽबलः। सन्धिनोपनमेत्तूणें कोषादण्डात्ममूमिभिः॥ स्वयं सङ्ख्यातदण्डेन दण्डस्य विभवेन दा। उपस्यातव्यमित्येष सन्धिरात्मामिषो मतः॥ सेनापतिकुमाराभ्यां उपस्थातव्यमित्ययम्। पुरुषान्तरसन्धिस्स्यान्नात्मनेत्यात्मरक्षणः॥ एकेन्नान्यत्र यातव्यं स्वयं दण्डेन वेत्ययम्। अदृष्ठपुरुषस्यन्धिदंण्डमुख्यात्मरक्षणः॥

"न" इति कोटिल्यः—कर्शनमात्रमस्य कुर्यादन्यसानिनः । परिवृद्धया तु वृद्धस्समु<del>च्छेद</del>नम् ।

एवं परस्य यातव्योऽस्मै साहाय्यमविनष्टः प्रयच्छेत् । तस्मात्सर्व-सन्दोंहप्रकृतो विगृह्यासीत । विगृह्यासनतुप्रातिलोम्ये सन्धाया हे सी विगृह्यासनहेतुभिरभ्युचितः सर्वसन्दोहवर्जं विगृह्य यायात् ।

यदा वा पश्येत्—"व्यसनी परः, प्रकृतिव्यसनं बाऽस्य शेषप्रकृतिभिर-प्रतिकार्यं, स्वचक्रपीडिता विरक्ता वाऽस्य प्रकृतयः कर्षिता निरुत्साहाः परस्परात् भिन्नाः शक्या लोभियतुम्, अग्रच्युदकव्याधिमरकदुर्भिक्षनिमित्त-क्षीणयुग्यपुरुषनिचयरक्षाविधानः परः" इति, तदा विगृह्य यायात् ।

यदा वा पश्येत्—"मित्रमाक्रम्दश्च मे शूरबृद्धानुरक्तप्रकृतिर्विपरीत-प्रकृतिः परः पार्ष्णिग्राहश्चासारश्च, शक्ष्यामि मित्रेणासारमाक्रम्देन पार्ष्णिग्राहं वा विगृद्ध यातुम्" इति, तदा विगृद्ध यायात् ।

यदा वा फलमेकहार्यमल्पकार्ल पश्येत्तदा पाष्णिग्रहासार।भ्यां विगृ**छ** यायात्। विपर्यये सन्धाय यायात्।

यदा वा पश्येत्—"न शनयमेकेन यातुमवस्यं च यातव्यम्" इति, तदा समहीनज्यायोभिस्सामवायिकेस्सम्भूय यायात्। एकत्र निर्दिष्टं नांशेनाने-कत्रानिर्दिष्टं नांशेन। तेषामसमबाये दण्डमन्यतमस्मिन्निविष्टांशेन याचेत। सम्भूयभिगमनेन वा निर्दिश्येत। ध्रुवे लाभे निर्दिष्टं नांशेनाध्रुवे लाभांशेन।

अंशो दण्डसमः पूर्वः प्रयाससम उत्तमः। विलोपो दा यथालामं प्रक्षेपसम एव दा ॥ इति कौटिलायार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे चतुर्थाध्यायः विगृद्धासनं सन्वायासनं विगृद्ध यानं सन्धाय यानं संभूष प्रयाणम्। आदितो द्विशततमः।

# १०८-१० प्रक. यातब्यामित्रयोरभिष्रहचिन्ता, क्षयलोभविरागहेतवः प्रकृतीनां, सामवायिकविपरिमर्शश्च ।

तुल्यसामन्तव्यसने यातव्यमित्रं वा इत्यमित्रमियायात्, तिसदी यातव्यम्। अमित्रसिद्धी हि यातव्यस्साहाय्यं दद्यान्नामित्रो यातव्यसिद्धी।

गुरुव्यसनं यातव्यं, रुघुव्यसनममित्रं वेति गुरुव्यसनं सोकर्यतो यायात् इत्याचार्याः ।

"न" इति कौटिल्यः—लघुव्यसनमित्रं यायात्। लघ्बिप व्ययनमभियुक्तस्य कृद्धं भविति । सत्यं गुर्विप गुरुतरं भविति । अनिभि-युक्तस्तु लघुव्यसनः सुखेन व्यसनं प्रतिकृत्यामित्रो यातन्यमभिसरेत्। पार्ष्णिं गृह्मीयात्।

यातव्ययोगपद्ये गृहव्यसनं न्यायवृत्ति लघुव्यसनमन्यायवृत्तिं विरक्ता ब्रुति वेति विरक्तप्रक्विति यायात् । गुहव्यसनं न्यायवृत्तिमियुक्तः प्रकृतयोऽनुगृह्णन्ति । लघुव्यसनमन्यायवृत्तिमुपेक्षन्ते । विरक्ता बलवन्तमप्युच्छिन्दन्ति । तस्माद्विरक्तप्रकृतिमेष यायात् ।

क्षीणलुब्धश्कृति मपचरितप्रकृति वेति १— "क्षीणसुब्धप्रकृति यायात् । क्षीणलुब्धा हि प्रकृतयस्मुखेनोपनापं पीडां वोपणच्छन्ति । नापचरिताः प्रधाना अवग्रहसाध्याः" इत्याचार्याः । "न" इति कौटिल्यः —क्षीणलुब्धा हि प्रकृतयो भतंरि स्निग्धा मतृ'हिते तिष्ठन्ति । उपन्नापं वा विसं-वादयन्ति, अनुरागे सावंगुण्यमिति । तस्मादपचरितप्रकृतिमेव यायान् ।

बलवन्तमन्यायवृत्ति दुर्वेलं बा न्यायवृत्तिमिति ?—बलबन्तमन्याय-वृत्ति यायात् । बलबन्तमन्यायवृत्ति अभियुक्तः प्रकृतयो नानुगृह्णन्ति निष्पातयन्त्यमित्रः बाज्स्य भजन्ते । दुर्बलं तु न्यायवृत्तिमभिपुक्तः प्रकृतयः परिगृह्णनित अनुनिष्पतनित वा ।

अवक्षेपेण हि सतामसतां प्रग्रहेण च । अभूतानां च हिंसानामधम्याणां प्रवर्तनैः॥ उचितानां चरित्राणां धर्मिष्ठानां निवर्तनैः । अधर्मस्य प्रसङ्गेन धर्मस्यावग्रहेण च ॥ अकार्याणां च करणे: कार्याणां च प्रणासने: । अप्रदानेश्व देयानामदेयानां च साधनैः ॥ अदण्डतेश्च दण्ड्यानां दण्ड्यानां चण्डदण्डनैः । अग्राह्माणामुपग्राहेर्ग्राह्माणां चानभिग्रहैः ॥ अतर्धातां च करणेरध्यातां च विधातनेः। अरक्षणेडच चोरेभ्य स्क्षयं च परिमोषणे ॥ पातैः पुरुषकाराणां कर्मणां गुणदूषणैः । जपद्यातेः प्रधानानां माध्यानां **सार**माननेः ॥ विरोधनेश्य बृद्धानां वैषम्येणानुतेन च । कृतस्याप्रतिकारेण स्थितस्याकरणेन च ॥ राज: प्रमादालस्याभ्यां योगक्षेमविधेन च । प्रकृतीनां क्षयो लाभो वैराग्यं चोपकायते ।। क्षीणाः प्रकृतयो लोभं लब्बा यान्ति विरागताम् । विरक्ता यान्त्यमित्रं वा भतीरं झन्ति वा स्वयम ॥

तस्मात्प्रकृतीनां क्षयलोभविरागकाराणानि नोत्पादयेत्। उत्पन्नानि वा सद्यः प्रतिकृतीतः।

क्षीणा लुब्धा विरक्ता वा प्रकृतय इति !—क्षीणाः पीडनोञ्छेदन-भयात् सद्यसिन्धि युद्धं निष्पतनं वा रोचयन्ते । लुब्बा लोभेनासन्तुष्ठाः परोपजापं लिप्सन्ते । विरक्ताः पराभियोगमम्भुत्तिष्ठन्ते । तासां हिरण्यधान्यक्षयः सर्वोपघाती कृच्यतीकारञ्ज । युग्यपुरुषक्षयो हिरण्यधान्यसाध्यः । लोभ ऐकदेशिको मुख्यायत्तः परार्थेषु शक्यः प्रति- हन्तुमा**रा**तुं वा । विरागः प्रधानावग्रहसाष्ट्यः । निष्प्रधाना हि प्रकृतयो भोग्या भवन्त्यनुषज्ञाप्याध्वान्येषामनापत्सहास्तु । प्रकृतिमुस्यप्रग्रहेंस्तु बहुषा भिन्ना गुप्ता भवन्त्यापत्सहाध्व ।

सामबायिकानामपि सन्धिबग्रहकारणान्यवेदय शक्तिनौचयुक्तौ सम्भूय थायात् । शक्तिमान् हि पार्ष्णिग्रहणे यात्रासाहाय्यदाने वा सक्तः, शुचिस्सिद्धौ चासिद्धौ च यथास्थितकारीति ।

तेषां ज्यायसैकन द्वाभ्यां समाभ्या वा सम्भूय यातव्यमिति १—द्वाभ्यां समाभ्यां श्रेयः, ज्यायसा ह्ववगृहीतद्वरति समाभ्यामितसन्धानाधिक्ये वा तौ हि सुखो भेदयितुम्। दुष्टदचेको द्वाभ्यां नियन्तु भेदोपग्रहं चो-पगन्तुभिति।

समेनेकेन द्वाभ्यां हीनाभ्यां वेति ?—द्वाभ्यां हीनाभ्यां श्रेयः । तौ हि द्विकार्यसाधको वश्यो च भवत: ।

कार्यसिद्धौ तु—कृतार्था ज्यायसो गूढस्सापदेशमपब्र्वेत् ।

अशुचेश्शुचिवृत्तात्तु प्रतीक्षेत।विसर्जनात् ॥

सन्नादबसरेद् भ्यतः कलन्नमपनीय वा ।

समादिष हि लब्धार्थाद्विश्वस्तस्य भयं भवेत् ॥

ज्यायस्त्वे चापि लब्धार्थः समो बिपरिकल्पते ।

अभ्यु चितश्चाविश्वास्यो वृद्धिश्चित्तविकारिणा ॥

विविद्यादल्पमप्यंशं लब्ध्वा तुष्टमुक्तो त्रजेत् ।

अनक्षो वा ततोऽस्याङ्के प्रगृह्य द्विगुणं हरेत् ॥

कृतार्थस्तु स्वयं नेता विस्त्रोत्सामवायिकान् ।

अपि जीयेत न जयंश्मण्डलेष्टस्तथा भवेत् ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे पञ्चमोऽध्यायः

यातव्यामित्रयोरभिग्रहचिन्ता क्षयलोमविरागहेतयः प्रकृतीनां

सामवायिकविपरिमर्शः आदितस्त्रिश्वाततमः ।

### १११-१२ प्रकः संहितप्रयाणिकम् , परिपणि-तापरिपणितापस्टतसन्धयश्च ।

विजिगीषुर्हितीयां प्रकृतिमेबमतिसन्दध्यात् । सामन्तं संहितप्रयाणे योजयेत्—"त्विनतो याहि, अहमितो यास्यामि, समानो लाभ" इति ।

लाभसाम्ये सन्धिः। वैषम्ये विक्रमः।

सन्धिः परिपणितइचापरिपणितःच ।

''त्वमेतं देशं पाह्यहमिमं देशं या स्यामौति'' परिपणितदेश:।

"त्वमेतावन्तं कालं चेष्टस्य, अहमेतावन्तं कालं चेष्टिष्य" इति परिपणितकालः।

''त्वमेतावत्कार्यं साधय, अहमेतावत्मार्यं साधियश्यामीति'' परि-पणितार्थः।

यदि वा मन्येत—"शैलवननदीदुर्गमटवीव्यवहितं छिन्नधान्यपुरुषवीव-धासारमयवसेन्धनोदकमविज्ञातं प्रकृष्टमन्यभावदेशीयं वा सैन्यव्यायामा-नामलब्धभौमं वा देशं परो यास्पति, विपरीतमहं" इत्येतस्मिन् विशेषे परिपणितदेशं सन्धिम्पेयात ।

यदि वा मन्येत—''प्रवर्षोष्णश्चीतमतिव्याधिप्रायमुपक्षीणाहारोपभोगं सैन्यव्यायामानां चौपरोधिकं कार्यसाधनानामूनमतिरिक्तं वा कार्लं परक्चेष्टिष्यते, विपरोतमङ्क्षम्'' इत्येतस्मिन् विशेषे परिपणितकालं सन्धि-मुपेयात्।

यदि वा मन्येत—"प्रत्यादेयं प्रकृतिकोपकं दीर्घंकालं महाक्षयव्ययमल्प-चनर्थानुबन्धमकल्यमधर्म्यं मध्यमोदासीनविरुद्धं मित्रोवघातकं वा कार्यं परस्साधियध्यति, विपरीतमहम्" इत्येतिसमन् विशेषे परिपणितार्थं सन्धिमुपेयात्।

एवं देशकालयोः कास्त्रकार्यसोर्देशकार्यमोर्देशकालकार्याणां चावस्थाप-नात् सप्तविषः परिपणितः । तस्मिन् प्रागेवारभ्य प्रतिष्ठाप्य च स्वकर्माणि, परकर्मंतु विक्रमेत ।

व्यसनत्वरावमानालस्ययुक्तमज्ञं वा सनुमतिसन्धातुकामी देशकास-कार्याणामनवस्थापनात् "स'हितौ स्वः" इति सन्धिविश्वासेन परच्छिद्र-मासाद्य प्रहरेदित्य रिपणितः।

तत्रंतद्भवति—

सामन्तेनेव सामन्तं विद्वानायोज्य बिग्रहे । ततोऽन्यस्य हरेद्रूमि जित्वा पक्षं समन्ततः॥ सन्धेरकृतिकिशेषी कृतश्लेषणं कृतिवदुषणमवशोणिकियाच । विक्रमस्य प्रकाशयुद्धम् कूटयुद्धम् तूष्णोयुद्धम् । इति सन्धिविक्रमौ । अपूर्वस्य सन्धेस्सानुबन्धेस्लामादिभिः पर्यवणं समहोनज्यायसां च यथाबलमबस्थापनमञ्जतिकोषा ।

कृतस्य प्रियहिताभ्यामुभयतः परिपालनं यथासम्भाषितस्य च निबन्ध-नस्यास्यनुवर्तनं रक्षणं च ''कथं परस्मान्न भिद्येत इति" कृतवलेषणम् ।

परस्य अपसन्धेयतां दूष्यातिसन्धानेन स्थापियत्या व्यतिक्रमः कृतिबेदू-षणम् ।

भृत्येन मित्रेण वा दोषापसुतेन प्रतिसन्धानमवशीर्शिक्या ।

तस्यां गतागतश्चतुर्विध:-कारणात् गतागतः, विपरीतः, कारणाद् गतोऽकारणादागतः, विपरीतश्चेति ।

स्वामिनो दोषेण गतो गुणेनागतः परस्य गुणेन गतो दोषेणागत इति कारणाद् गतागतस्सन्धेयः ।

स्वदोषेण गतागतो गुणमुभयोः परित्यज्य अकारणाद् गतागतस्वलः बद्धिरसन्धेयः।

स्वामिनो दोषेण गतः परस्मात् स्वदोषेणागत इति कारणाद् गतोऽकारणादागतस्तकंयितव्यः। "परप्रयुक्तः स्वेन वा दोषेणापकत् – कामः, परस्योच्छेतारमित्रं मे ज्ञात्वा प्रतिघातभयादागतः, परं वा माम<del>ुच्छेल</del>ुकामं परित्याज्यानृशंस्यादागतः" इति ज्ञात्वा कल्याणबुद्धि पुत्रयेदन्यथाबुद्धिमपकृष्टं वासयेत्।

स्वदोषेण गतः परदोषेणागत इत्यकारणाद् गतः कारणादागतस्तकयि-तम्यः-"छिद्रं मे पूरियष्यति, उचितोऽयमस्य बासः, परत्रास्य जनो न रमते, पाष्णित्राणार्थं वा समस्समबस्नेन लाभेन पणेतः। पणितः कल्याणबुद्धिमनु-गृह्णीयात् ; अन्यशा विक्रमेत ।

जातम्यसनप्रकृतिरन्ध्रमेनकावरुद्धमन्यतो रूभमानो वा समस्समब्रहा-द्धीनेन राभेन पणेत । पणितस्तस्यापकारसमर्थौ विक्रमेत, अन्यथा संदध्यात्।

एवंभूतो वा समस्सामन्तायत्तकायं: कर्तव्यवलो वा बलसमाद्विद्याध्टेन लाभेन पणेतः। पणितः कल्याणबुद्धिमनुगृह्णीयात् अन्यथा विक्रमेतः।

जातन्यसनप्रकृतिरन्ध्रमिमहन्तुकामः स्वारब्धमेकान्तसिद्धि बाऽस्य कर्मोपहन्तुकामो मूले यात्रायां वा प्रहतु कामो यातन्यात् भूयो लभमानो वा ज्यायांसं हीनं समं वा भूयो याचेत । भूयो वा याचितः स्वबलरक्षार्थं दुर्वर्षमन्यदुर्गमासारमटवीं वा परदण्डेन मर्दिगुकामः प्रकृष्टेऽध्विन काले वा परदण्डं क्षयव्ययाभ्यां योक्तुकामः परदण्डेन वा विवृद्धस्तमेवोच्छेत्तु-कामः परदण्डमादानुकामो वा भूयो दद्यात् ।

ज्यायान् वा हीनं यातव्यापदेशेन हस्ते कतुंकामः परमुच्छिद्य वा तमेवोच्छेत्तुकामः त्यागं वा कृत्वा प्रत्यादातुकामो बलमाद्विशिष्टेन लाभेन पणेता पणितस्तस्यापकारसमर्थो विक्रमेत, अन्यथा संदध्यात् । यातन्य-संहितो वा तिष्ठेत् । दूष्याभित्राटवीदण्डं वाऽस्मं दद्यात् ।

जातव्यसनप्रकृतिरन्ध्रो वा ज्यायान् होनं बलसमेन लाभेन पणेत । पणितस्तस्यापकारसमयौ विक्रमेत, अन्यथा संदध्यात्।

एवंभूतं वा हीनं ज्यायान् बलसमाद्धीनेन लाभेन पणेत । पणितस्तस्या पकारसमधौ विक्रमेत, अन्यथा संदध्यात् ।

> आदौ बुद्धचेत पणितः पणमानद्दन कारणम्। ततो वितवयोभयतो यतः श्रेयस्ततो अर्जत् ॥ इति कौटिकीमार्थशास्त्रे पाड्गुण्ये सप्तमोहध्यायः द्वेषीभाविकाः सन्धिविश्रमाः

> > आदितः पञ्चशततमः ।

## ११४–११५ प्रक. यातव्यवृत्तिः ; अनुग्राह्यमित्रविशेषाश्च ।

यातव्योऽ भियास्थमानः सन्धिकारणमादातुकामा विहन्तुकामो वा सामवायिकानामन्यतमं लाभद्वैगुण्येन पणेत । प्रपणिता क्षयव्ययपवासप्रत्य-वायपरोपकारकारौराबाधांश्वास्य वर्णयेत् । प्रतिपन्नमथे न योज्येत् । वैरं वा परेग्रीहियत्वा विसंवादयेत् ।

दुरारब्धकर्माणं भूयः क्षयण्ययाभ्यां योक्तुकामस्स्वारब्धायां वा यात्रायाः सिद्धं विधातियतुकामो मूले यात्रायां वा प्रतिहर्तुकामो यातव्यसंहितः पुनर्याचितुकामः प्रत्युत्पन्नार्थं क्रच्छस्तास्मिन् अविश्वस्तो वा तदात्वे लाभमलपमिच्छेत् । आयत्यां प्रभूतम् ।

नित्रोपकारमित्रोपघातं अर्थानुबन्धमवेक्षमाणः पूर्वोपकारकं कारयितुकामो भूयस्तदात्वे महान्तं लाभमुत्सृज्यायत्यामल्पिकच्छेत् ।

दूष्यामित्राभ्यां मूलहरेण वा ज्यायसा विगृहीतं त्रातुकामस्तथाविधमुप-कारं कारयितुकामः सम्बधावेक्षी वा तदात्वे च आयत्यां च लामं न प्रतिगृह्णीयात् ।

कृतसन्धिरतिकमित्कामः परस्ध प्रकृतिकर्शनं मित्रामित्रसन्धिविद्वे-षणं वा कर्त्वुकामः पराभियोगाच्छङ्कमानो लाभमशासमधिकं वा यःचेत । तमितरस्तदात्वे च आयत्यां च क्रममवेक्षेत । तेन पृर्वे क्याख्याताः ।

अरिविजिगीष्वोस्तु स्वं स्वं मित्रमनुगृह्हतोः शक्यकस्यभव्यारिम-स्थिरकर्मानुरक्तप्रकृतिभ्यां विशेषः। शक्यारम्भो विषद्यं कर्मारभेत। कल्यारम्भो निर्दोषं; भव्यारम्भो कल्याणोदयं; स्थिरकर्मा नासमाप्य कर्मोपरमते। अनुरक्तप्रकृतिः सूसहायत्वादश्येनाप्यनुग्रहेण कार्यं साध्यति। त एते कृतार्थाः मुखेन प्रभूतं चीपकुर्वन्ति। अतः प्रतिलोमे नानुग्राह्यः।

तयोरेकपुरुषानुग्रहे यो मित्रं मित्रतरं वाऽनुगृह्णति सोऽतिसन्धते । मित्रादात्मवृद्धि हि प्राप्नोति । क्षयव्ययत्रदासपरोपकारान् इतरः । इतार्थश्र कत्रुवैंगुण्यमेति । मध्यमं त्वनुगृह्णतोयां मध्यमं मित्रं मित्रतरं बाऽनुगृह्णाति सोऽ-तिसन्धत्ते । मित्रादात्मवृद्धिं हि प्राप्नोति । क्षयव्ययप्रवासपरोपकारानितरः । मध्यमश्चेदनुगृहीतो विगुणः स्यादमित्रोऽतिसंघत्ते । कृतप्रयासं हि मध्यमामित्रमपस्तमकाधोपगतं प्राप्नति । तेनोदासीनानुगृहो व्याख्यातः ।

मध्यमोदासीनयोबंलांशदाने यश्शूरं कृतास्त्रं दुःखसहमनुरक्तं वा दण्डं ददाति, सोऽतिसन्धीयते । विपरीतोऽतिसन्धते ।

यत्र तु दण्डः प्रतिहतस्तं वा चार्धमन्यांश्च साध्यति, तत्र मौलभृत-श्रेणीमित्राटवीबकानामन्यतमुपलब्धदेशकालं दण्डं दद्यात् । अभित्राटवीबलं वा व्यवहितदेशकालम् । यं तु मन्येत—"कृतार्थो मे दन्हं गृहणीयात् अमित्राटव्यभूम्यनृतुषु वा वासयेदफलं वा कुर्यादिति," दण्डव्यासङ्गाप-देशेन नेनमनुगृह्णीयात् । एवभवश्यं त्वनुगृहोतव्ये तत्कालसहमस्मे दण्डं दद्यात् । आ समाप्तेश्चेनं वासयेद्योधयेत्र बलव्यसनेभ्यश्च रक्षेत् । कृतार्थोत्र सापदेशमवस्रावयेत् । दूष्यामित्राटवीदण्डं वाऽस्मं दद्यात् । यातव्येन वा सन्धार्यनमतिसंदध्यात् ।

> समे हि लाभे सन्धिरस्याद्विषमे विक्रमो मतः । समहोनविशिष्टानामित्युक्तस्सन्धिविक्रमाः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे अष्टमोऽध्यायः यातव्यवृत्तिरन्य्राह्ममित्रविशेषाः, आदितः षट्छततमः ।

## ११६ प्रक. मित्रहिरण्य भूमिकर्मसन्धियश्च।

संहितप्रयाणे मित्रहिरण्यभूमिलाभानामुत्ततरेत्तरो लाभः श्रेयान्। मित्रहिरण्ये हि भूमिलाभाद्भवतः, मित्र'हिरण्यलाभात्। यो वा लाभः सिद्धः शेषयोरन्यतरं साधयति।

"त्वं चाहं च मित्र' लभावहे" इत्येश्रमादिः समसन्धिः। 'त्वं मित्रं' इत्येवमादिर्विषमसन्धिः। तयोविशेषहाभादतिसन्धिः।

समसन्धा तु यस्सम्पन्नं मित्रं मित्रकृञ्छ्रे वा मित्रमवाप्नोति सोऽतिसं-धत्ते । आपाद्धि सौहृदस्थेर्धमृत्पादयति ।

मित्रकुच्छे ऽपि नित्यमवश्यमनित्यं वश्यं वेति। "नित्यमवश्यं श्रेयः, तद्धचनुपकुर्वदपि नापकरोति" इत्याचार्याः।

नेति कोटिल्यः- वस्यमनित्यं श्रेयः, याबदुपकरोति सावस्मित्रं भवति । उपकारलक्षणं मित्रमिति ।

वश्ययोरिप महाभोगमनित्यमल्पभोगं वा निल्यमिति। ''महाभोग-मितत्यं श्रेयः, महाभोगमिनित्यमल्पकालेन महदूपकुवेतु महान्ति व्यय-स्थानानि प्रतिकरोति" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—नित्यमल्पभीगं श्रंयः, महाभोगमनित्यमुपकार-भयादपकामति, उपकृत्य वा प्रत्यादात्मीहते । नित्यमल्पभोगं सास्तत्या-दल्पमुपक्वेत् महता कालेन महदूपकरोति ।

गुरुसमुत्थं महन्मित्रं रुघुसमुत्थमरूपं वेति ।—''गुरुसमुत्थं महन्मित्र'" प्रतापकर भवति, यदा चोत्तिष्टते, तदा कार्यं साथयति" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः— लघ्समुत्थमल्पं श्रेयः, लघुसमुत्थाल्पं मित्रं कार्य-काल नातिपातयति दोबंल्याच यथेष्टभोग्यं भवति, नेतरत्प्रक्रष्टभौ-मम् ।

विक्षित्त सैन्यभवश्य सैन्यं वेति । "विक्षित्तं सैन्यं शवयं प्रति संहतुं व-श्यत्वात्" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्य:--अवस्य सेन्यं श्रेयः । अवस्यं हि शक्यं सामादिभिर्वस्यं कत्, नेतरत्कार्यव्यासक्तं प्रतिसहर्तुम् ।

पुरुष भोगं हिरण्यभोगं वा मित्रमिति। "पुरुषभोगं मित्र' श्रेयः, पुरुषभोगं मित्रं प्रतापकरं भवति । यदा चोत्तिष्ठी तदा कार्यं साध्यति" इत्याचार्याः ।

नेति कोटिल्यः — हिरण्यभोगं मित्र श्रेयः, नित्यो हिरण्येन योगः कदाचिहण्डेन दण्डश्च हिरण्येन।स्ये च कामाः प्राप्यस्त इति ।

हिरण्यभोग भूमिभोगं वा मित्रमिति । "हिरण्यभोगं गतिमत्त्वात् सर्वव्ययप्रतीकारकरम्" ईत्याचार्याः ।

नेति कौठिल्यः—"मित्रहिरण्ये हि भूमिलाभाद्भवतः" इत्युक्तः
पुरस्तात्। तस्माद्भमिभोगं मित्रः श्रेय इति ।

तुल्ये पुरुषभोगे विक्रमः क्लेशसहत्वमनुरागः सर्व**बलकामो वा मित्र**-कुलाद्विशेषः।

तुल्ये हिरण्यभोगे प्राधितार्थता प्राभूत्यमल्पप्रयासता सातत्याञ्च विशेषः ।

#### तत्र तद्भवति—

नित्यं वध्यं रुष्ट्यानं पितृपैतामहं महत्।
अद्वेध्यं चेति सम्पन्नं मित्रं पड्गुणमुच्यते ॥
ऋते यदर्थं प्रणयाद्रक्ष्यते यध्व रक्षति ।
पूबो'पितसम्बन्धं तन्मित्रं नित्यमुच्यते ॥
सर्वचित्रमहाभोगं त्रिविधं वध्यमुच्यते ।
एकतोभोग्युभयतः सवंतोभोगि चापरम्।।
आदातृ वा दात्रपि वा जीवत्यरिषु हिंसया ।
मित्रं नित्यमयध्यं तहुर्णाटच्यपसारि च ॥
अन्यतो बिगृहीतं वयल्रुष्ट्यसनमेव वा ।
संघत्ते चोपकाराय तत् मित्रं वध्यमध्युवम् ॥
एकार्थानार्थंसम्बन्धमुमकार्यविकारि च ।
मित्रभावि भवत्येततान्मित्रमद्वेध्यमापिते ॥
कित्रभावाद्भुवं मित्रं शत्रुसाधारणाञ्चलम् ।
न करस्यचिद्धासीनं द्वयोधभयभावि तत् ॥

विकागीकोरमित्रं यन्मित्रमन्तिधितां गतम्।
उपकारे निविष्टं वाशक्तः वाऽनुपकारि तत् ॥
प्रियं परस्य वा रक्ष्यं पूज्यंसम्बन्धमेव वा।
अनुगृद्धाति यन्मित्रं शत्रुसाधारणं हि तत् ॥
प्रकुष्टमौमं तंतुष्टं बलवज्ञालसं च यत् ।
उदासीनं भवत्येतद् व्यसनादयमानितम् ॥
अरेने तुश्च यद्वृद्धि दोबंल्यादनुवर्तते ।
उभयस्याप्याबिद्धिष्टं विद्यादुभयभावि तत् ॥
कारणाकरणद्धास्तं कारणाकरणागतम् ।
यो मित्रं समुपेक्षेत स मृत्युमुपगृहति ॥

क्षिप्रमल्पो लाभदिचरात्महानिति वा—"क्षिप्रमल्पो लाभः कार्य-देशकालसंवादकः श्रेयान्" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—चिरादिविनिपाती बीजसधर्मा महान् लाभः श्रेयान्, विपर्यये पूर्वः ।

> एवं दृष्ट्वा ध्रुवे लाभे लामांशे च गुणाव्यम् । स्वार्थसिद्धिपरो यायात्संहितस्सामवायिकैः ॥

इति कौटिलोयार्थशास्त्रे वाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे नवमीध्यायः मित्राहिरण्यभूमिकर्मसन्धौ मित्रसन्धिः हिरण्यसन्धिः,

आदितः सप्तशततमः।

## ११६ प्रक. भूमिसन्धिः।

"त्वं चाहं च भूमि लभावहे" इति भूमिसन्धः।

तयोर्यः त्रत्युपस्थितार्थः सम्पन्नां भूमिमवाप्रोति सोऽतिसंधत्ते । तुश्ये सम्पन्नालाभे यो बलवन्तमात्रम्य भूमिमवाप्नोति सोऽतिसंधत्ते । भूमि लामं शत्रुकर्शनं प्रतापं च हि प्राप्नोति । दुर्बलाद्भमिलामे सत्यं सौकर्यं भवति । दुर्बल एव च भूमिलाभः, तत्सामन्तरच मित्रममित्रभावं गच्छति ।

तुल्ये वक्कीयस्त्वे यस्थिरं शत्रुमुत्पाटच भूमिमवाप्रीति सोऽतिसंधत्ते । दुर्गावाप्तिहि स्वभूमिरक्षणम मित्राटवीप्रतिषेधं च करोति ।

च श्रामित्राट् मूमिलाभे शवयसामन्ततो विशेषः । दुर्बलसामन्ता हि क्षित्राप्यायनभोगक्षेमा भवन्ति । विषरीता बलवत्सामन्ता कोशदण्डाब-च्छेदनी च भूमिभंवति ।

सम्पन्ना नित्यामित्रा मन्दगुणा वा भूमिरनित्यामित्रेति—"सम्पन्ना नित्यामित्रा श्रेपसी भूमिः। सम्पन्ना हि कोशदण्डौ सम्पादयति। सौ वामित्रप्रतिष्यातकौ" इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः—नित्यामित्रालाभे भूयांश्ख्यतुकाभो भवति । नित्यश्च शत्रुरुगकृते चापकृते च शत्रु रेव भवति । अनित्यस्तु शत्रुरुपकारादनपकारद्वा शाम्यति । यरस्या हि भूमेर्बहुदुर्गाश्चोरगणेर्म्लेच्छाटवीभिर्वा नित्याविर-हिताः प्रत्यन्तास्सा नित्यामिद्रा । विपर्यये त्वनित्यामित्रेति ।

अल्पा प्रत्यासन्ना महती व्यवहिता वा भूमिरिति ।—अल्पा प्रत्यासन्ना श्रेयसी । सुला हि प्राप्तुं पालयितुमभिसारयितुं च भवति । विपरीता व्यवहिता ।

व्यवहिताव्यवहितयोरिप दण्डवारणाऽऽत्मधारणा वा भूमिरिति ।— श्रात्मधारणा श्रोयसी । सा हि स्वसमुत्थाभ्यां कोशदण्डाभ्यां धार्यते । विपरीता दण्डधारणा दण्डस्थानमिति ।

बालिशात्प्राज्ञाद्वा भूभिकाभ इति ।---बालिशाङ्क्रमिलाभः श्रोयान् । सुप्राप्यान्पाल्पा हि भवत्यादेया च । विपरीता प्राज्ञादनुरक्ते ति ।

पोडनीयोञ्छेदनीयियोरुञ्छेदनीयाद्भ् मिलाभः श्रेयान् । उञ्छेदनीयो ह्यनपाश्रयो दुर्बन्भपाश्रयो बाऽभियुक्तः कोश्वदण्डावादायापसतु कामः प्रकृतिभिस्त्यज्यते । न पोडनीयो दुर्गमिश्रप्रतिस्तम्भ इति ।

दुर्गप्रतिस्तब्धयारेपि स्थलनदीदुर्गीयाभ्यां स्थलदुर्गीयात् मूमिलाभः श्रोयान्। स्थलीयं हि सुरोधावमदस्किन्दमनिःस्राविद्यत्रु च। नदीदुर्गं तु द्विगुणल्केशकरमुदक च पातम्यं वृत्तिकरं चामित्रस्य।

नदीपवंतदुर्गीयाभ्यां नदोदुर्गीयाद्भू मिलाभः श्रेयान् । नदादुर्गं हि हस्तिस्तम्भसङ्कपसेतुबन्धनौभिस्साध्यमनित्यगाम्भीर्यमबस्राब्युदकः व, पार्यतं तु स्वारक्षं दुरबरोधि कृच्छ्रारोहणं अप्रे चैकस्मिन् न सर्यवधः, विलाबक्षप्रमोक्षदच महापकारिणाम् ।

निम्नस्यक्रमोधिभ्यो निम्नयोधिभ्यो भूलामः श्रेयान् । निम्नयोधिनो ह्युपरुद्धदेशकालाः, स्यलयोधिनस्तु सबंदेशकालयोधिनः ।

क्षतकाकारायोधिस्यः खनकेस्यो भूमिलामः श्रेयान् । खनका हि खातेन शस्त्रेण चोभयथा युध्यन्ते, शस्त्रेणेवाकाशयोधिनः ।

> एवं विघेभ्यः पृथिवीं लभमानोऽर्थशास्त्रवित् । संहितेभ्यः परेभ्यश्च विशेषमधिगच्छति ॥

इति कौटिलीयार्थबास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे दशमोऽध्यायः मित्रहरण्यभूमिकमंसन्धौ भूमिसन्धः, आदितोऽष्टशततमः।

#### ११६ प्रक. अनवसितसन्धिः।

'त्वं चार्हं च शून्यं निवेशयावहे' इत्यनबसितसन्धः। तयोयंः प्रत्युपस्थितार्थो यथोक्तगुणां भूमि निवेशयति सोऽतिसंघत्ते।

तत्रापि स्थलमौदकं विति । महतः स्थलादल्पमौदकं श्रोयस्सातत्याद-वस्थितत्वाच्च फलानाम् । स्थलयोरपि प्रभूतपूर्वापरसस्यमल्पवर्षपाक-मसक्तारममं श्रोयः । औदकयोरपि धाग्यवापमधान्यवापाच्छ्रेयः । तयो-रम्पबहुत्वे धान्यकान्तादल्पान्महदधान्यकान्तं श्रोयः । महत्यवकाशे हि स्थाल्पादश्वानृप्याद्वीषधयों भवन्ति । दुर्गादीनि च कर्माणि प्राभूत्येन कियम्ते । कृतिमा हि भूमिगुणाः ।

स्निधान्यभोगयोः खनिमोगः कोशकरः, भान्यभोगः कोशकोष्ठा-गारकरः। घान्यम्ला हि दुर्गादीनां कर्मणामारम्भः। महाविषयविकयो वा स्निभोगः श्रेयान् ।

"द्रव्यहस्तिबनभोगयोर्द्रव्यवनभोगः सर्वेकर्मणां योनिः प्रभूतनिबान-क्षमध्य । विपरीतो हस्तिवनभोगः" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः-शावयं द्रव्यवनमनेकस्यां भूभौ वापियतुं न इस्तिवनं, हस्तिप्रधानो हि परानीकवध इति ।

वारिस्थक्रपथभोगयोरनित्यो वारिपथभोगः, नित्यःस्थलपथभोग इति । भिन्नमनुष्या श्रेणीमनुष्या वा भूमिरिति।—भिन्नमनुष्या श्रेयसी। भिन्नमनुष्या भोग्यः भवत्यनुपजाप्या चान्येषाम् । अनापत्सहा तु । विपराता श्रेणीमनुष्या कोपे महादोषाः ।

तस्यां चातूर्वर्ण्यामिनिबेशे सर्वभोगसहत्वादबरवर्णंत्राया श्रोयसी। बाहुल्यात् घूवत्वाच कृष्याः कर्षणवतीः । कृष्या चान्येषां चारम्भाणां प्रयोजकत्वात् गोरक्षवती । पण्यतिचयणत्तिग्रहादाढचवणिग्वती । भूमि-गुणानामपाश्रयः श्रेयान् ।

दुर्गापाश्रया पुरुषापाश्रया वा भूमिरिति । पुरुषापाश्रया श्रवसौ । पुरुषबद्धि राज्यम् । अपुरुषा गौवंन्ध्येव कि दुहीत ।

महाक्षयव्ययनिवेशान्तु भूमिमवाप्तुकामः पूर्वमेव केतारं वणेतः। दुबंरुमराजबीजिनं निरुत्साहमपक्षमन्यायवृत्ति व्यसनिनं दैवप्रमाणं यत्कि-ञ्जनकारिणं वा।

महाक्षयव्ययनिवेदायां हि भूमी दुईलोराजदीजी निविष्टरसगन्धाभिः प्रकृतिभिस्सह क्षयभ्ययेनावसीदति । बलबानराजबीजी क्षयभ्ययमयाद-सगन्धाभिः प्रकृतिभिस्टाज्यते ।

निरुत्साहस्तु दण्डवानि दण्डस्याप्रणेता सदण्डः क्षयव्ययेनावभज्यते। कोशवानप्यपुक्तः क्षयव्ययानुग्रहहीनत्वास कुतिविवत्प्राप्नोति ।

अन्यायवृत्ति निविष्टमप्युत्थापयेत्, स कवमनिविष्ट' निवेशयेत् । तेन व्यसनी व्याख्यातः ।

दैवप्रमाणो मानुषहीनो निरारम्भो विषक्षकर्मारम्भो वाऽवसीदति । यत्किञ्जनकारी न किञ्जिदासादयति । स चैषां पापिष्ठतमो भवति । "यत्किञ्जिदारभमाणो हि विजिगीषोः कदाचिच्छिद्रम।सादमेत्" इत्याचार्याः ।

"यदा छिद्र' तथा विनाशमप्यासादयेत्" इति कौटिल्यः।

तेषामलाभे यथा पाष्णिग्राहोपग्रहे बक्ष्यामस्तवा भूमिमबस्थापयेदित्य-भिहितसन्धिः।

गुणवतीमादेयां वा मूर्पि बक्तवता ऋयेण याचितस्सन्धिमवस्थाप्य दद्यादित्यनिभृतसन्धिः।

समेन वा याचितः कारणमबेक्ष्य दद्यात्—''प्रत्यादेया मे भूमिवंश्या बाऽनया प्रतिवद्धः परो मे वश्यो भिबष्यति, भूमिविक्रयाद्वा मित्रहिरण्य-लाभः कार्यसामर्थ्यकरो मे भविष्यति" इति ।

तेन हानः केता व्याख्यातः।

एवं मित्र हिरण्यं च सक्षनामजनां च गाम् । रुभमानोऽतिसंघत्ते शास्त्रविस्सामवायिकान् ।।

इति कौटिलीयार्थंबास्त्रे षाडगुण्ये सप्तमाधिकरणे एकादकोऽध्यायः मित्रहिरण्यभूमिकमंसन्धौ अनवसितसन्धिः, आदितो नवबततमः

### ११६ प्रक. कर्मसन्धिः।

"त्वं चाहं च दुर्गं कारमावहे" इति कर्मसन्धिः । तयोर्थो देवकृतमविषद्यमल्पभ्ययारममं दुर्गं कारयति सोऽतिसंघत्ते । तत्रापि स्थलनदीपर्वतदुर्गाणामुत्तरोत्तरं श्रोयः ।

सेतुबन्धयोरप्याहार्योदकात्सहोदकःश्रोयान् । सहोदकयोरपि प्रभूत-वापस्थानः श्रोयान् । द्रव्यवनयोरपि यो महत्सारबद्द्रव्याटवीकं विषयान्ते नदीमातृकं द्रव्यवनं छेरयति, सातिनंबत्ते। नदीमातृकं हि स्वाजीवमपाश्रयस्य आपदि भवति।

हस्तिवनयोरिप यो बहुशूरमृगं दुबंलप्रतिवेशमनन्तावकलेशि विष-यान्ते हस्तिवनं बच्नाति, सोतिसंधत्ते ।

तत्रापि—"बहुकुण्ठाल्पशूरयोरल्पशूरं श्रोयः। शूरेषु हि युद्धम्। अल्पाश्शूरा बहून् अशूरान् भञ्जन्ति, ते भग्नास्स्वसैन्यावधातिनो भवन्ति" इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः --- कुन्वा बहवः श्रेयांसः स्कन्धविनियोगादनेकं कर्म कुर्वाणाः स्वेषामशश्रया युद्धे, परेषां दुर्धर्षा विभीषणास्त्र । बहुषु हि कुण्ठेषु विनयकर्मणा शक्यं शेयंमाधातुं, न त्वेश्वाल्पेषु शूरेषु बहुत्वमिति ।

खन्योरपि यः प्रभूतसारामदुर्गमार्गामल्पव्ययारम्भां खर्नि सानयित, स्रोतिस्थले ।

तत्रापि—''महासारमल्पमल्पसारं वा प्रभूतासिति। महासारमल्पं श्रोयः। बजूमिजिमुक्ताप्रवास्त्रहेमरूप्यधातुई प्रमूतमल्पसारमत्यर्धेण ग्रसते'' इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः—चिरादल्पो महासारस्य ऋता विद्यते । प्रभूत-स्सातत्यादल्पसारस्य ।

ऐतेन बणिक्पथो व्याख्यातः।

तत्रापि—"बारिस्थलपथयोर्वारिषथः श्रेयान्, अल्पव्ययव्यायामः प्रभूतपण्योदयस्य" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः —संरुद्धगतिरसार्वकालिकः प्रक्रुष्टभययोनिर्निष्प्रति-कारदच वारिपथः। विपरीतः स्थलपथः।

बारिपये तु कूलसंयानवथयोः कूलपथः पञ्यपट्टणबाहुल्याच्छ्रेयान् । नदीवथो वा सातत्याद्विषद्भावाधत्वाच्च ।

स्यलपयेऽपि —"हैमवतो दक्षिणापयाञ्छ्रेयान् हस्त्यश्वगन्यदन्ताजिन-रूप्यमुवर्णपण्यास्सारवस्तराः" इत्याचार्याः । नेति कौटिल्यः---कम्बलाजिनाश्चपण्यवर्जाः शङ्क्षयज्ञमणिमुक्तासु-वर्णपण्याद्य प्रभूतसरा दक्षिणापथे ।

दक्षिणाषथेऽपि बहुस्निन्सारपण्यः प्रसिद्धगतिरत्वन्यायामो वा विण-क्पयः श्रोयान् । प्रभूतविषयो वा फल्गुपण्यः ।

तेन पूर्वः पश्चिमञ्च वनिक्पथो व्याख्यातः ।

तत्रापि चक्रपादपथयोश्चक्रपथो विपुकारम्भत्वाक्छ्रेयान् देशकाल-सम्भावनो वा खरोष्ट्रपथः।

अभ्यामंसपथो व्याख्यातः।

परक्रमो दयो नेतुः क्षयो वृद्धिविषयंये। तुल्ये कर्मपथे स्थानं क्षयं स्व विजिगीषुणाः। अल्पागमातिव्ययता क्षयो वृद्धिविषयंये। समायव्ययता स्थानं कर्मसु क्षेयमात्मनः॥ तस्मादल्पव्ययारम्भं दुर्गादिषु महोदयम्। कर्म लब्ध्वा विशिष्टस्स्यादित्युक्ताः कर्मसन्धयः॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे द्वादशोऽध्यायः मित्रहिरण्यभूमिकमंसन्धौ कमंसन्धिः, आदितो दशशततमः।

#### ११७ प्रक. पार्ष्णिमाहचिन्ता ।

संहत्यारिविजिगीव्योरिमत्रयोः पराभियोगिनोः पार्षण गृह्धतोर्यव्यक्तिः सम्पन्नस्य पार्षण गृह्धाति, सोऽतिसंधत्ते । शक्तिसम्पन्नो झामित्रमुच्छिद्य पार्षणग्राहमुच्छिन्द्यात्, न हीनशक्तिलंब्धलाम इति ।

शक्तिसाम्ये यो विपुलारम्भस्य पाष्ट्रिण गृह्हाति, सोऽतिसंघत्ते । विपुला-रम्भो ध्रमित्रमुच्छिद्य पार्ष्टिणग्राहमुच्छिन्द्यात्, नाल्पारम्भः सक्तवक इति । आरम्भसाम्ये यः सवेसंदोहेन प्रयातस्य पाष्णि गृह्णाति, सोऽतिसंघते । शून्यमूलो ह्यस्य सुकरो भवति, नंकदेश्वबलप्रयातः कृतपाष्णिप्रतिविधान इति ।

बलोपादानसम्ये यश्चलामित्रं प्रयातस्य पाष्णि गृह्णाति, सोतिसंघत्ते । चलामित्रं प्रयातो हि सुखेनावाससिद्धिः पाष्णिग्राहमुच्छिन्द्यात्र स्थितामित्रं प्रयातः । असौ हि दुर्गप्रतिहतः । पाष्णिग्राहे च प्रतिनिवृत्तस्थितेनामित्रे-णावगृद्यते ।

तेन पूर्वे व्याख्याताः।

शतुसाम्ये यो धार्मिकाभियोगिनः पाष्णि गृह्हाति सोऽतिसंघते । धार्मि-काभियोगी हि स्वेषां च हेष्यो भवति । अधार्मिकाभियोगी सम्प्रियः ।

तेन भूलहरतादात्विककदर्याभियोगिनाः पार्ष्णिग्रहणं व्याख्यातम् । मित्राभियोगिनोः पार्ष्णिग्रहणे त एव हेतवः ।

मित्रमित्रं वाभियुञ्जानयोयों मित्राभियोगिनः पाष्णि गृह्णाति सोऽतिसवत्ते। मित्राभियोगी हि सुखे नावाससन्धिः पाष्णिग्राहमुच्छिन्द्यात्। सुकरो हि मित्रेण सन्धिनिमित्रेणेति।

मित्रमनित्र' चोद्धरतोयोे मित्रोद्धारिणः पार्ष्णि गृह्णात, सोऽतिसंघसे । वृद्धमित्रो समित्रोद्धारी पार्ष्णिग्राहपुच्छिन्द्यान्नेतरः स्वपक्षोपषाती ।

तयोरलब्धलाभाषगमने यस्याभित्रो महतो लाभात् वियुक्तः क्षयव्यया-धिको बा, स पाष्णिग्राहोऽतिसंधत्ते । लब्धलाभाषगमने यस्यामित्रो लाभेन शक्त्रचा हीनः, स पाष्णिग्राहोऽतिसंधत्ते । यस्य बा यातव्यः शत्रोखिंग्रहा-पकारसमर्थस्यात्पाष्णिग्राहमोरपि यद्शनयारमभवलोपादानाधिकस्थितशत्रः पार्श्वस्थायो वा सोऽतिसंधत्ते । पार्श्वस्थायी हि यातव्याभिसारो मुलाबाधकश्च भवति । मुलाबाधक एव परचात्स्थायी ।

> पार्ष्णियाहास्त्रयो स्रेयाश्चात्रोश्चेष्टानिरोधकाः। सामन्ताः पृष्ठतो वर्गः प्रतिवेशौ च पार्श्वयोः।। अरेर्नेतुश्च मध्यस्थो दुर्बलोज्न्तर्धिरुच्यते। प्रतिधाते बलवतो दुर्गटब्यपसारवान्।।

मध्यमं त्वरिविधिगीब्बोर्लिप्समानयोमंध्यमस्य पाष्णि गृह्हतोः लब्ध-लाभापगमने यो मध्यमं मित्राद्वियोजयित, अमित्र च मित्रमाप्रोति, सोऽति-संघते । सन्वेयस्य शत्रुरुपकुर्वाणो न मित्रं मित्राभाबादुत्कान्तम् ।

तेनोदासीनलिप्सा व्याख्याता ।

पाष्णिग्रहणाभियानयोस्तु मन्त्रयुद्धादभ्युच्चयः।

"ब्यायामयुद्धे हि क्षयभ्ययाभ्यां उभयोरवृद्धिः । जित्वाऽपि हि क्षीण-दण्डकोशः पराजितो भवति" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः--सुमहताऽपि क्षयम्ययेन शत्रुविनाशोऽभ्युपगन्तव्यः।

तुल्ये क्षयव्यये यः पुरस्ताइप्यवलं घातियत्वा निश्शल्यः पश्चाद्वश्यवलो युच्येत, सोऽतिसंघत्ते । द्वयोररिप पुरस्ताद् व्यवलघातिनोयौ बहुलतरं शक्तिमत्तरमत्यन्तदूष्यं च घातयेत्, सोऽतिसंघत्ते ।

#### तेनामित्राटवीबलघातो व्याख्यातः।

पाष्णियाहोऽभियोक्ता वा यातव्यो वा यदा भवेत् । विजिगीषुस्तवा तत्र नैत्रमेतत्समाण्येत् ।। पाष्णिप्राहो भसुन्नेता शत्रोमित्राभियोगिनः । विग्राह्म पूर्वमात्रन्दं पाष्णियाहाभिसारिणा ॥ आक्रस्वेनाभियुञ्जानः पाष्णियाहाभिसारिणम् ॥ अपिमित्रेण मित्रं च पुरस्तादवघट्टयेत् । सित्रमिश्रमरेद्धापि मित्रमित्रेण वारयेत् । मित्रमित्रेण चाक्रन्दं पाष्णियाहान्त्रिवारयेत् ॥ एवं मण्डलमात्मार्थं विजिगीषुनिवेद्ययेत् । पृष्ठतद्य पुरस्ताच मित्रप्रकृतिसम्पदा ॥ कृत्स्ने च मण्डले नित्यं दूतान् गूढांद्य वासयेत् । मित्रभूतस्सपनानां हत्वा हत्वा च संवृतः ॥ असंवृतस्य कार्याणि प्राप्तान्यपि विशेषतः। निस्संधर्यं विषद्यन्ते भिन्नसव इवोदधौ ॥ इति कौटिसीयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे त्रयोदशोऽज्यायः पार्ष्णिप्राहचिन्ता, आदितः एकादशगततवः।

#### ११⊏ प्रक. हीनशक्तिपूरणम् ।

सामवायिकेरेवमभियुक्तो विजिणीषुर्यस्तेषां प्रधानस्तं ब्रूयात्---"त्वया मे सन्धिः ; इदं हिरण्यं ; अहं च मित्रं ; द्विगुणा ते वृद्धिः ; नार्हस्यात्मक्ष-येण मित्रमुखानमित्रान् वर्धयितुम् ; एते हि वृद्धास्त्वामेव परिभविष्यन्ति" इति ॥

भेदं वा ब्रूयात्—"अनपकारो यथाऽहमेतैस्सम्भूयाभियुक्तः तथा त्वामप्येते संहितबलास्स्वस्था व्यसने वाऽभियोक्ष्यन्ते ; बलं हि चित्तं विकरोति ; तदेषां विघातय" इति ।

भिन्नेषु प्रधानमुपगृह्य हीनेषु विक्रमयेत् । हीनामनुग्राह्य वा प्रधाने । यथा वा अयोऽभिमन्येत, तथा । वैरं वा परेर्ग्नाहयित्वा विश्ववादयेत् । फल-भूययस्त्वेन वा प्रधानमुपजाच्य सन्धि कारयेत् ।

अथोभयवेतनाः फलभूयस्त्वं दर्शयन्तस्सामवायिकान् ''अतिसंहि-तास्स्य' इत्युक्ष्ययेयुः।

दुष्टेषु सन्धि दूषयेत् । अधोभयवेतना भूयो भेदमेषां कुर्युः "एवं तद्यदस्माभिदंशितम्" इति । भिन्नेष्वन्यतमोपग्रहेण वा चेष्टेत ।

प्रधानाभावे सामवायिकानामृत्साहयितारं स्थिरकर्माणमनुरक्तप्रकृति कोभाद्भयाद्वा सङ्घातमुपागतं विचगीषोभीतं राज्यप्रतिसम्बन्धं मित्रं वका-मित्रं वा पूर्वान्यतराभावे साधयेत्।

उत्साहियतारमात्मिनसर्गेण स्थिरकर्माणं सान्त्वप्रणियातेन, अनुरक्तः प्रकृति कन्यादानयापनाभ्यां, लुब्धमंघद्वेगुण्येन, भीतमेभ्यः कोशदण्डानुग्रहेण स्वतोभीतं विश्वासयेत् प्रतिभूप्रदानेन, राज्यप्रतिसम्बन्धमेकीभावोपगमनेन, मित्रमुभयतः प्रियहिताभ्यामुपकारत्यागेन, वा चकामित्रमबधृतमनपकारोः पकाराभ्याम् ।

यो वा यथायोगं भजेत, तं तथा साधयेत्। सामदानभेददण्डैर्वा यथाऽऽपत्सु व्याख्यास्यामः॥

व्यसनोपघातत्वरितो वा कोशदण्डाभ्यां देशे काले कार्ये वाऽवधृतं सन्धिमुपेयात् । कृतसन्धिहीनमात्मानं प्रतिकुर्वीतः । पक्षे हीनो बन्धु-मित्रपक्षं कुर्वोत, दुर्गमविषह्यं वा । दुर्गमित्रप्रतिस्तब्धो हि स्वेषां परेषां च पूज्यो भवति ।

मन्त्रशक्तिहीनः प्राज्ञपुरुषोपचयं विद्यावृद्धसंयोगं वा कुर्वीत । तथा हि सद्य: श्रेयः प्राप्नोति ।

प्रभवहोतः प्रकृतियोगक्षेनसिद्धौ यतेत । जनपदस्सर्वकर्मणां योनिः, ततः प्रभावः । तस्य स्थानमात्मनश्च आपदि दुर्गम् ।

सेतुबन्धस्सस्यानां योनिः । नित्यानुषक्तो हि वर्षगुणलामः सेतुवापेषु । विजयपथः परातिसन्धानस्य योनिः, विजयपथेन हि दण्डगूढ-पुरुषातिनयनं सम्लावरणयानवाहनक्रयस्य क्रियते । प्रवेशो निनंयनं च ।

सिन्सिङ्ग्रामोपकरणानां योनि: । द्रव्यवनं दुर्गकर्मणां, यानरथयोश्च ।। हस्तिवनं हस्तिनाम् । गवाश्वरथोष्ट्राणां च त्रजः ।

तेषामलामे **यन्धु**मित्रकुलेम्यः समार्जनम् उत्साहहीनःश्रेणीप्रवीरषुरुषाणां चोरगणाटविकम्लेच्छजातीनां परापकारिणां गूढपुरुषाणां च यथालाभमुप चयं कुर्वीत ।

परमिश्र: प्रतीकारमाबलीयसं वा परेषु प्रयुज्जीत । एवं पक्षेण मन्त्रेण द्रव्येण च बलेन च । सम्पन्नः प्रतिनिर्म<del>ण्</del>छेत् परावग्रहमात्मनः ॥ इति कौटिलोयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे चतुर्दशोऽध्यायः होनशक्तिपूरणम्, आदितो द्वादशशतः।

# ११६-१२० प्रक. बलवता विग्रह्मोपरोधहेतवहः, दण्डोपनतवृत्तं च ।

दुर्वलो राजा बलवताःभियुक्तः तद्विशिष्टबस्माश्रयेत, यमितरो मन्त्र-शक्त्रचा नातिसंदध्यात् । तुल्य बलमन्त्रशक्तीनां अयत्तसम्पदो वृद्धसंयोगाद्वा विशेषः ।

विशिष्टवलाभावे समबलेस्तुल्यवलसङ्ख्ये वी बलवतस्सम्भूय तिष्ठेत्, यावन मन्त्रप्रभावशक्तिभ्यामतिसंदघ्यात् । तुल्यमन्त्रप्रभावशक्तीनां विषु-लारम्भतो विशेषः ।

समबलाभावे हीनबर्लंश्युचिभिरुत्साहिभिः प्रत्यनीकभूतेबंस्वतस्सम्भूय तिष्ठेत्, यावन्न मन्त्रप्रभावोत्साह्यक्तिभिरतिबंदध्यात् । तुल्योत्साह्-यक्तीनां स्वयुद्धभूमिलाभाद्विशेषः । तुल्यभूमीनां स्वयुद्धकाललाभाद्विशेषः । तुल्यदेक्षकालां युग्यशस्त्राबरणतो विशेषः ।

सहायामावे दुर्गमाश्रयेत, यत्रामित्रः प्रभूतसैन्धोपि भक्तयवसैन्धनोद-कोपरोधं न कुर्यात्, स्वयं च क्षयव्ययाभ्यां युज्येत । तुल्यदुर्गाणां निचया-पसारतो विशेषः। निचयापसारसम्पन्नं हि मनुष्यदुर्गमिच्छेदिति कौटिल्यः। तदेभिः कारणेराश्रयेत्—

"पार्षिणग्राहासारं मध्यममुदासीनं वा प्रतिपादियष्मामि । सामन्ताट-विकतत्त्रुलोनाबरुद्धानामन्यतमेनास्य राज्यं हारियष्यामि घातियष्यामि वा । कृत्यपक्षोपग्रहेण वाऽस्य दुर्गे राष्ट्रे स्कन्धावारे वा कोपं समृत्था-पियष्यामि । शस्ताग्निरसप्रणिधानेरीपनिषदिकेर्वा यथेष्टमासम्नं हिनष्यामि । स्वयमिषिष्ठितेन वा योगप्रणिधानेन क्षयस्ययमेनमुपनेष्यामि । क्षयस्यय-प्रवासोपत्रक्षे वाऽस्य मित्रवर्गे सेन्ये वा क्रमेणोपञ्चापं प्राप्स्यामि । बीवधा- सारत्रसारवधेन वाऽस्य स्कन्धावारावग्रहं करिष्यामि । दण्डोपनयेन वाऽस्य रन्ध्रमुत्थाप्य सर्वेसन्दोहेन प्रहरिष्यामि । प्रतिहत्तोत्साहेन वा यथेष्टं सन्धिमवाप्स्यामि । मयि प्रतिबन्धस्य वा सर्वेतः कोषाः समृत्थास्यन्ति । निरासारं वाऽस्य मूलं मित्राटवीदण्डेरुद्धातिष्ठ्यामि । महतो वा देशस्य योगक्षेममिहस्थः पालपिष्यामि । स्वविक्षिप्तं मित्रविक्षिप्तं वा मे सैन्य-मिहस्थस्यैकस्थमविषद्धां भविष्यति । निम्नबातरात्रियुद्धविशारदं वा मे सेन्यं पथ्याबाधमुक्तमासन्ते कर्मणि करिष्यति । विरुद्धदेशकालिमहागतो वा स्वयमेव क्षयव्ययाम्यां न भविष्यति । महाक्षयव्ययामिगम्योऽयं देशी दुर्गाटव्यपसारबाहुल्यात्, परेषां व्याधिप्रायस्यैन्यव्यायामानां अलब्ध-भौमश्च, तमापद्भतः प्रवेक्ष्यति, प्रविष्टो वा न निर्गमिष्यति" इति ।

कारणाभावे बलसपुच्छ्ये वा परस्य दुर्गमुन्मुच्यापगच्छेत्। अग्नि-पतङ्गवदमित्रे वा प्रविशेत्।

"अन्यतरसिद्धिहि त्यक्तात्मनो भवति" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—"सम्धेयतामात्मनः परस्य चोपलभ्य संदर्धात । विपर्यये विक्रमेण सन्धिमपसारं वा लिप्सेत । सम्धेयस्य वा दूतं प्रेषयेत् । तेन वा प्रेषितमर्थमानाभ्यां सत्कृत्य बूयात्—इदै राज्ञः पण्यागारमिदं देवी-कुमाराणां, देवाकुमारवचन।दिदं राज्यमहं त्वदर्पणः" इति ।

लब्धसं श्रयः समयाचारिकबद्धतंरि वर्तेत । दुर्गादोनि च कर्माण्या-वाहिबबाहपुत्रामिषेकाश्वपण्यहरितग्रहणसत्रयात्राविहारगमनानि चानुज्ञातः कुर्वीत । स्वभूम्यवस्थितप्रकृतिसन्धिमुपधातमग्रमृतेषु वा सर्वमनुज्ञातः कुर्वीत । दुष्टपौरजानपदो वा न्यायवृत्तिमन्यां भूमि याचेत । दूष्यवदु-पांशुदण्डने वा प्रतिकुर्वीत । उचितां वा मिनाद्धमि दीयमानां न प्रति-गृह्णीयात् । मन्त्रिपुरोहितसेनापतियुवराजानामन्यतममदश्यमाने भतंरि पश्येत्। यथाशक्ति चोपकुर्यात् । देवतस्वस्तिवाचनेषु तत्परा आशिषो बावयेत् । सर्वत्रात्मनिसर्गं गुणं बृयात् ।

> संयुक्तवलवत्सेवो विरुद्धश्वाङ्कितादिभिः। वर्तेत दण्डोपनतो भतंर्यवमवस्थितः॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे पञ्चदशोऽघ्यायः बलदता विगृह्योपरोधहेतवः दण्डोपनतवृत्तम् आदितस्रयोदशशततमः ।

# १२१ प्रक. दण्डोपनायिवृत्तम्।

अनुज्ञातस्तद्धिरण्योद्धेगकरं वलवान् विजिगीषमाणो यतस्वभूमिस्स्वर्तु-वृत्तिश्च स्वर्गेन्यानां अदुर्गापसारः शत्रुरपार्ष्णिरनासारश्च, ततो यायात्। विपर्यये कृतप्रतीकारो यायात्।

सामदानाभ्यां दुबंलानुपनमयेत्, भेददण्डाभ्यां बलवतः ।

नियोगविकस्पसम्बर्धेदचोपायानामनन्तरेकाःतराः प्रकृतीस्साधयेत् ।

ग्रामारण्योप त्री विञ्जजवणिक्पथानुपालनमुङ्झितापसृतापकारिणां चार्प-णमिति सान्त्वमाचरेत् । भूमिद्रश्यकन्यादानमभयस्य चेति दानमाचरेत् ।

सामन्ताटविकतत्कुलोनावरुद्धानामन्यतमोपग्रहेण कोशदण्डभूमिदाय-याचनमिति भेदमाचरेत् । प्रकाशकूटतूष्णीयुद्धदुर्गकम्भोपायैरमित्रप्रग्रहण-मिति दण्डमाचरेत् ।

एवमुत्साह्वतो दण्डोपकारिणः स्थापयेत्, स्वप्रभाववतः कोशोपकारिणः प्रज्ञावतो भूम्युपकारिणः ।

तेषां पण्यपत्तनप्रामखनिसञ्जातेन रत्नसारफल्गुकुप्येन द्रव्यहस्ति-बनद्रजसमुत्थेन यानवाहनेन वा यद्वहुश उपकरोति तिच्चभोगं, यद्ण्डेन कोशेन वा महदुपकरोति तन्महाभोगं, यद्ण्डकोशभूमीश्पकरोति तत्सवंभोग। यदिमत्रमेकतःप्रतिकरोति तदेकलोभोगि। यदिमत्रमासारं चोरकरोति तदुभयतोभोगि। यदिमत्रासारप्रतिवेशाटविकान् सर्वतः प्रतिकरोति तत्सवंतोभोगि। पार्षणकाहरचाटिवकस्वात्रुमुख्यस्वात्रुमां भूमिदानसाध्यः करिचदासाद्यतः, निर्गुणया भूम्येनमुपग्राहयेत्, अप्रतिसम्बद्धया दूर्गस्थं, निरुपज्ञीन्ययाऽऽद्य-विकं, प्रत्यादेयया तत्कुलीनं, रात्रोः उपच्छित्रया सत्रोहपरुद्धं, नित्या-मित्रया श्रेणीबलं, बलवत्सामन्तया सहतब्रुम्, उभाम्यां युद्धे प्रतिलोम्, अलब्धन्यायामयोत्साहिनं, शून्ययाऽरिपक्षीयं, कर्षवत्याऽपवाहितं, महाक्ष्यम्ययिनवेद्यया गतप्रत्यागतम्, अनुपात्रयया प्रत्यपद्धतं, परेणानिधवास्यया स्वयमेव भर्तारमुपग्राहयेत्।

तेषां महोपकारं निर्विकारं चानुवर्तयेत् । प्रतिलोममुपांशुना साधयेत् । उपकारिणमुपकारशक्ता तोषयेत् । प्रयासतश्चार्थमानौ कुर्यात् । व्यसनेषु चानुग्रहं स्वयमागतानां यथेष्टदर्शनं प्रतिविधानं च कुर्यात् । परिभवोप-धातकुत्सातिवादांश्चेषु न प्रयुठकीतः। दत्या चाभगं पितेवानुगृह्णीयात् । यश्चास्य।पकुर्यात्द्रोषमभिविख्याप्य प्रकाशमेनं धातयेत् । परोद्रेगकारणाद्वा दाण्डकर्मिकवच्चेष्टेतः। न च हसस्य भूमिद्रव्यपुत्रदारानभिमन्येतः। कुल्यानप्यस्य स्वेषु पात्रेषु स्थापयेत् । कर्मणि मृतस्य पुत्रं राज्ये स्थापयेत् ।

एवमस्य दण्डोपनताः पुत्रपौत्राननुदर्तन्ते ।

यस्तूपनतान् हत्वा बध्वा वा भूमिद्रव्यपुत्रदारानभिमन्येत, तस्योद्विग्नं मण्डलम् अभावायोत्तिष्ठते । ये चास्यामात्यास्स्वभूमिष्वायत्तास्ते चास्यो-द्विग्ना मण्डलमाश्रयन्ते । स्वयं वा राज्यं, श्राणान् बाऽस्याभिमन्यन्ते ।

> स्वभूमिषु च राजानः तस्मात्साम्राऽनुपालिताः। भवन्त्यनुगुणा राज्ञः पुत्रपौत्रानुवर्तिनः॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे षोडशोध्यायः दण्डोपनायिवृत्तम्, आदितश्चतुर्दशशततमः।

# १२२-१२३ प्रक. सन्धिकर्म, सन्धिमोक्षश्च ।

श्चमस्सन्धिस्समाधिरित्येकोऽर्थः । राज्ञां विश्वासोपगमः श्वमस्सन्धिस्स-माधिरिति ।

"सर्त्यं शपथो वा चालः सन्धिः। प्रतिभूः प्रतिग्रहो वा स्थावरः" इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः—सत्यं वा शपथो वा परत्रेह च स्थावरस्सन्धि, इहार्थं एव प्रतिभूः प्रतिग्रहो वा बकापेक्षः ।

"संहितास्समः" इति सत्यसन्धाः पूर्वे राजानः सत्येन संदिधिरे । तस्य।तिक्रमे शपयेन अग्रयुदकसीताप्राकारलोष्टहस्तिस्कन्धाश्वपृष्ठरथोपस्थ-श्रक्षश्लदीजगन्धरससुवर्णहिरण्यान्यःलेभिरे । हन्युरेतानि त्यजेयुद्धनं यश्वप्यमतिकामेद् इति ।

षपथातिकमे महतां तपस्विनां मुख्यानां वा प्रातिभाव्यवन्धः प्रतिभूः । तस्मिन् यः परावग्रहसमर्थान्प्रतिभूवो गृह्माति, सोऽतिसंघत्ते । विपरीतोऽति-संधोयते ।

बन्धुमुख्यप्रग्रहः प्रतिग्रहः। तस्मिन्यो दूष्यामात्यं दूष्यापत्यं वा ददाति सोऽतिसंघत्ते। विपरोतोऽतिसंघीयते। प्रतिग्रहग्रहणविश्वस्तस्य हि परः छिद्रेषु निरपेक्षः प्रहरति।

अपत्यसमाधौ तु कन्यापुत्रदाने ददत्तु कःयामितसंघत्ते। कन्या ह्यादायादा परेषामेवानर्थाय क्रोशाय च । विपरीतः पुत्रः।

पुत्रयोरिप जात्यं प्राज्ञं शूरं कृतास्त्रमेकपुत्रं वा दद।ति, सोऽतिसंधीयते विपरीतोतिसंधीसे। जात्यादजात्यो हि लृष्तदायादसंतानत्वादाधातुं अयान्। प्राज्ञादप्राज्ञो मन्त्रशक्तिक्लोपात्। शूरादशूर उत्साहशक्ति-लोपात्। कृतास्तादकृतास्तः प्रहर्तव्यसम्पल्लोपात्। एकपुत्रादनेकपुत्रो निरपेक्षत्वात्।

जात्यप्राज्ञयोरजात्यपप्राज्ञमैश्वर्यप्रकृतिरनुवर्तते । प्राज्ञमजात्यं मन्त्रा-धिकारः । मन्त्राधिकारेऽपि वृद्धसंयोगाज्ञात्यकः प्राजमितसंधत्ते ।

प्राकश्रयोः प्राजमश्रूरं मतिकर्मणां योगोऽनुवर्तते । श्रमप्राज विक-माधिकारः ।

विक्रमाधिकारेऽपि हस्तिनमिव लुब्धकः प्राज्ञवगुरमितसं धसे। शूरकृतास्वयोदशूरमकृतास्वं विक्रमन्यवसायोऽनुवर्तते । कृतास्त्रम**श**रं लक्षलम्भाधिकारः ।

लक्षलम्भाधिकारेऽपि स्थैयेप्रतिपत्त्यसं मोषैः शूरः कृतास्वमतिसंधत्ते । बह्वे कपुत्रयोबंहुपुत्र एकं दत्वा शेषवृत्तिस्तब्धः संधिमतिश्चमति नेतर: ।

पुत्रसर्वस्वदाने संधिरचेत् पुत्रफलतो विशेषः। समकलयोश्शक्तप्र-जननतो विषेशः। शक्तात्रजननयो स्प्युपस्थितप्रजननतो विशेषः।

शक्तिमत्येकपुत्रे तु लुप्तपुत्रोत्पत्तिरात्मानमादध्यात्, न चैकपुत्रमिति । अभ्युचीयमानः समाधिमोक्षं कारयेत् । कुमारासन्नास्त्रतिणः कारु-शिक्ष्पिञ्चञ्जनाः कर्माणि कुर्वाणाः सुरङ्गया राशावुपलानयित्वा कुमारम-पहरेयु:। नटनर्तकगायकवादकवाम्बीवनकुक्षीलवसवकसौभिका वा पूर्व-प्रणिहिताः परमुपतिष्ठेरन् । ते कुमारं परम्परयोगतिष्ठेरन् । तेषामनि-यतकालप्रवेशस्थाननिगंगनानि स्थापयेत् । ततस्तद्वचळजनो दा रात्रौ प्रतिष्ठेत ।

तेन रूपात्रीबाभायव्यिक तनाश्च व्याख्याताः । तेषां वा तूर्यभाण्डफेलां गृहोत्वा निर्गच्छेत्।

सूदारालिकस्रापकसंवाहकास्तरककस्पकप्रसाधकोदकपरिचारकैर्वा द्व-व्यवस्रभाण्डफेलाक्षयन।सनसम्भोगैनिह्नियेतः परिचारकच्छचाना किञ्चिदरूपवेलायामादाय निर्गच्छेत् ।

स्रञ्जामुखेन वा निषोपहारेण तोयाशये वा बाहर्ण योगमातिग्ठेत्। वेदेहकव्यञ्जना वा पक्वान्नफलव्यवहारेणारक्षिषु रसमवन्नारयेयुः।

देवतोपहारश्राद्धप्रहवर्णानिमित्तमारक्षिषु मदनयोगयुक्तमन्नपानश्सं वा प्रयुष्यापगच्छेत् । आरक्षकप्रोत्साहनेन वा । नागरककुशस्त्रवचिकित्सका-पूषिकव्यञ्जना व। रात्री समृद्धगृहाण्यादीपयेयुः। आरक्षिणां वेदेष्टक- भ्यत्रता वा पण्यसंस्थामादीपयेयु । अन्यद्वा शरीरं निक्षिप्य स्वगृहमा-दीपयेदनुपातभयात् । ततः सन्धिच्छेदखातसुरङ्गाभिरपगच्छेत् ।

का बकुम्भभाण्डमारव्यङ्जनो वा रात्रौ प्रतिष्ठेत । मुण्डजटिलानां प्रवासनान्यनुष्रविष्टो वा रात्रौ तद्वचञ्जनः प्रतिष्ठेत । विरूपव्याधिकरणा-रण्यवरच्छयनामन्यतमेन वा प्रेतव्यञ्जनो वा गूढैर्निह्नियेत ।

प्रेतं द्वा स्त्रीवेषेणानुगच्छेत्।

वनवरव्यञ्जनाङ्कैनमन्यतोयान्तमन्यतोऽपदिशेयुः, ततोन्यतो गच्छेत्। चक्रचराणां वा शकटवाटेरपगच्छेत्। आसन्ते चानुपाते सत्रं वा गृह्ह्हीयात्। सत्राभावे हिरण्यं रसविद्धं वा भक्षजातमुभयतः पन्धान-मुत्सृजेत्। ततोऽन्यतोऽपगच्छेत्।

गृहीतो वा सामादिभिरनुपातमितसंदध्यात् । रसिबद्धेन वा पथ्यदानेन । बारुणयोगाग्निदाहेषु वा शरीरमन्यदाधाय शश्रुमिभगुञ्जीत—"पुत्रो मे त्वया हतः" इति ॥

> उपात्तच्छन्नशस्त्रो वा रात्रौ विकम्य रक्षिषु । शोध्रपातैरपसरेत् गृढप्रणिहितैस्सह ।।

इति कोटिलीयार्यशास्त्रे षाड्गुण्ये सप्तमाधिकरणे सप्तदशोऽष्यायः सन्धिकर्म सन्धिमोक्षः, आदितः पञ्चदशशततमः।

# १२४–१२६ प्रक. मध्यमोदासीन-मण्डलचरितानि ।

मध्यमस्यातमा तृतीया पञ्चमी च प्रकृती प्रकृतयः । द्वितीया च चतुर्थी षष्टी च विकृतयः । तच्चेदुभयं मध्यमोऽनुगृह्धीयात्, विजिगीषुर्मध्यमानु-स्रोमस्स्यात् । न चेदनुगृह्धीयात् प्रकृत्यनुरुोमस्स्यात् । मध्यमस्वेद्विजिगीषोमित्रं मित्रभावि लिप्सेत, मित्रस्थात्मनश्च मित्राग्युत्थाप्य मध्यमात्र मित्राणि भेदयित्वा मित्रंत्रायेत । मण्डलं वा
प्रोत्साहयेत्—"अतिप्रवृद्धोऽयं मध्यमस्सर्वेषां नो विनाषाय अभ्युत्थितः
सम्मूयास्य यात्रां विहनाम" इति । तच्चेन्मण्डलमनुगृह्णीयान्मध्यमावग्रहेणात्मानमुपवृंह्येत् । न चेदतुगृह्णीयात्, कोषादण्डाभ्यां मित्रमनुगृह्म, ये
मध्यमदेषिणो राज्ञानः परस्परानुगृहोता वा बहवस्तिष्ठेयुः एकसिद्धा वा
बहवस्सिद्धचयुः परस्पराद्या शिङ्कता नोत्तिष्ठेरन्, तेषां प्रधानमेकमासन्नं वा
सामदानाभ्यां लेभेत । द्विगुणो द्वितोयं त्रिगुणस्तृतीयम् । एवमभ्युत्रितो
मध्यममवगृह्णीयात् ।

देशकालातिपत्तौ वा सन्धाय मध्यमेन मित्रस्य साधिव्यं कुर्यात्। दूष्येषु वा करसन्धिम् कर्शनीयं वाऽस्य मित्रं मध्यमो लिप्सेत, प्रतिस्तम्भये-देनं—"अहं त्या त्रायेय" इत्या कर्शनात्। कशितमेनं त्रायेत "उच्छेदनीयं वाऽस्य मित्रं मध्यमो लिप्सेतः। कशितमेनं त्रायेत मध्यमवृद्धिभयात् उच्छित्रं वा भूम्यनुष्रहेण हस्ते कुर्यादन्यत्रापसारभयात्।

कर्शनीयोञ्छेदनीययोश्चेन्मित्राणि मध्यमस्य साचिन्यकराणि स्युः, पृष्पान्तरेण संघोयेतः। विजिगीषोर्वातयोगित्राण्यवग्रहसमर्यानि स्यु , संचिमुपेयात्। अभित्रं बास्य मध्यमो लिप्सेत, सन्धिमुपेयात्। एवं स्वार्थस्य कृतो भवति मध्यमस्य प्रियं च ।

मध्यमश्चेत्स्विमत्रं मित्रभावि लिप्सेत, पुरुषान्तरेण संद्ध्यात् सापेक्षं वा "नार्हसि मित्रमुच्छेलुम्" इति वारयेत् उपेक्षेत वा "मण्डलमस्य कुप्यतु स्वपक्षत्रधात्" इति । अमित्रमात्मनो वा मध्यमो लिप्सेत, कोशदण्डा-भ्यामेनमहश्यमानोऽनुगृह्णीयात् ।

उदासीनं वा मध्यमो लिप्सेत—"अदासोनाद्भिञ्चताम्" इति मध्यमोदासीनयोयों मण्ड अस्याभित्रेतस्तमाश्रयेतः मध्यमवरितेनोदा-सीनवरितं व्याख्यातम् ।

उदासीनश्चेत् मध्यमं लिप्सेत, यतश्वत्रु मितसंदध्यात् मित्रस्योपकारं कुर्यात्, मध्यमोदासीन वा दण्डोपकारिणं स्रमेत, ततः परिजमेत । एवमुपगृद्धातमानमरिप्रकृति कशंयेत् । मित्रप्रकृति चोपगृह्धीयात् । सत्यप्यमित्रभावे तस्यानात्मवान्नित्यापकारी शत्रुः शत्रुसहितः पाष्णिग्राहो वा व्यसनी यातव्यो व्यसने वा नेतुरिभयोक्ते त्यरिमाविनः ।

एकार्थाभित्रयातः पृथगर्थाभित्रयातः संभूययात्रिकः संहितप्रयाणिकः स्वार्थाभित्रयातः सामुत्यायिकः कोशादण्डयोरन्यतरस्य केता विकेता हैधीभाविक इति मित्रभाविनः।

सामन्तो बलबतः प्रतिघातोऽन्सर्घिप्रतिवेशो बा बलबतः पार्डणग्राहो बा स्वयमुपनतः प्रतापोपनतो वा दण्डोपनत इति भृत्यभाविनस्सामन्ताः। तैभू म्येकान्तरा व्याख्याताः।

> तेषां गत्रविरोधे यन्मित्रमेकार्थतां वजेत्। शक्त्या तदनुगृह्णीयाद्विषहेत यया परम् ॥ प्रसाध्य बातुं यन्मित्रं वृद्धं गच्छेदवश्यताम् । सामन्तेकान्तराभ्यां तत्प्रकृतिभ्यां विरोधयेत् ॥ तत्कुलीनावरुद्धाभ्यां भूमि वा तस्य हारयेत्। यथा बाऽनुग्रहापेक्षं वश्यं तिष्ठेत्तथा चरेत्।। नोपकुर्यादमित्रं वा गच्छेद्यदतिकश्चितम्। तदहीनमवृद्धं च स्थापयेन्मित्रमर्थवित ॥ अर्थयुक्त्या चलं मित्रं सर्निष यदुपगच्छति । तस्यापगमने हेत्ं विहन्यात्र चलेदाया ॥ अरिसाधारणं यदा तिष्ठेत्तवरितश्शठम । भेदयेद्भिन्नमुच्छिन्द्यात्ततश्यनुमनन्तरम् ॥ उदासीनं च यत्तिष्ठे त्सामन्तैस्तद्विरोधयेत् । ततो विग्रहसंतप्तमुपकारे निवेशयेत्।। अभित्र' विजिगीषुं च यत्संचरति दुवंलम् । तद्रलेनानुगृह्णीय।द्यथा स्यान्न पराङ्मुखम् ॥ अपनीय ततोऽन्यस्यां भूमौ वा संनिवेशयेत्। निवेश्य पूर्वं तत्रान्यं दण्डानुग्रहहेतुना ।।

अपकुर्यात्समर्थं वा नोपकुर्याद्यदापदि ।
उच्छिन्दादेव तिनमत्रं विश्वस्याङ्कमुपस्थितम् ॥

मित्रव्यसनतो वाऽरिरुक्तिष्ठे द्योऽनवग्रहः ।

मित्रणंव भवेत्साध्यव्छादितव्यसनेन सः ॥

अमित्रव्यसनिमत्रमुत्थितं यद्विरज्यति ।

अरिव्यसनसिद्ध्या तच्छत्रुणेव प्रसिद्ध्यति ॥

वृद्धि क्षयं च स्थानं च कर्यनोच्छेदनं तथा ।

सर्वोपायान् समादध्यादेतान्यश्चार्थशास्त्रवित् ॥

एवमन्योन्यसञ्चारं षाड्गुण्यं योऽनुपद्यति ।

स बुद्धिनिगलैबंद्धैरिष्टं कोडित पाण्यवेः ॥

इति कौटिलोयार्थशास्त्रे षाड्गुण्यं सप्तमाधिकरणे अष्टादशोऽध्यायः

मध्यमचरित्रमुदासीनचरितं मण्डलचरितम्, आदितः षोडश्वशत्मः ।

एतावता कौटिलीयस्यार्थशास्त्रस्य षाड्गुण्यं

सप्तमाधिकरणं समाप्तम् ।

# व्यसनाधिकारिकम्—अष्टममधिकरणम् । १२७ प्रक. प्रकृतिव्यसनवर्गः ।

भ्यसनयोगपद्यं सोकर्यतः "यातभ्यं रक्षितभ्यं च" इति भ्यसनचिन्ता । दैवं मानुषं वा प्रकृतिभ्यसनमनयापनयाभ्यां संभवति । गुणप्रातिलोम्य-मभावः प्रदोषः प्रसङ्गः पीडा वा भ्यसनम्। "भ्यस्यत्येन श्रेयसः" इति भ्यसनम्।

स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोशदण्डमित्रव्यसनानां पूर्वं पूर्वं गरोय इत्या-चार्याः ।

नेति भारद्वाजः-स्वाम्यमात्पव्यसनयोरमात्यभ्यसनं गरीयः इति । मन्त्रो मन्त्रक्रलाबाप्तिः कर्मानुष्ठानमायव्ययकर्मं दण्डाप्रणयनममित्राटवी-प्रतिवेधः राज्यरक्षणं व्यसनप्रतीकारः कुमाररक्षणमभिवेकश्च कुमाराणा-मायत्तममात्येषु । तेषां अभावे तदभाविद्यन्नपक्षस्येव राज्ञश्चेष्टानाकः व्यसनेष चासन्नाः परोपजापाः । वैगुण्ये च प्राणबाधः प्राणान्तिकचरत्वा-द्राज्ञ इति।

"न" इति कौटिल्यः—मन्त्रिपुरोहितादिभृत्यवगंमध्यक्षत्रचारं पुरुष-द्रव्यप्रकृतिव्यसनप्रतीकारमेधनं च राजैव करोति । व्यसनिषु वाऽमात्ये-ध्वन्यानव्यसनिनः करोति । पूज्यपूजने दूष्यावग्रहे च नित्ययुक्तास्तिष्ठति । स्थामौ च सम्पन्नः स्वसम्पद्भिः प्रकृतीस्संपादयति । स्वयं यच्छोलस्तच्छोलाः प्रकृतयो भवन्ति, उत्थाने प्रमादे च तदायत्तत्वात्। तत्कूटस्थानीयो हि स्वामीति।

अमात्यजनपदव्यसनयोजनपदव्यसनं गरीयः इति विशास्राक्षः । कोशदण्डः कुप्यं विधिवहिनं निचयाश्च अनपदादुत्तिष्ठन्ते । तेषामभावो जनपदाभावे स्वाम्यमात्ययोश्चानन्तर इति ।

नेति कौटिल्य:-अमात्यमुलास्सर्वारम्भाः जनपदस्य कर्मसिद्धयः स्वतः परतस्य योगक्षेमसाधनं व्यसनप्रतीकारः शून्यनिवेश्वोपचयौ दण्डकरा-नुग्रहश्चेति ।

जनपददुर्गव्यसनयोर्दुर्गव्यसनम् इति पाराशराः। दुर्गे हि कोश-दण्डोत्पत्तिरापदि स्थानं च जनपदस्य । शक्तिमत्तराञ्च पौरा बानपदेभ्यो नित्याश्चापदि सहाया राजः जानपदास्त्वमित्रसाधारणाः इति ॥

नेति कोटिल्यः--जनपदमूला दुर्गकोशदण्डाःसेतुवातरिस्भाः। शीर्यं स्थेर्यं दाक्ष्यं बाहुस्यं च बानपदेषु । पर्वतान्तर्द्वीपाश्च दुर्गा नाध्युष्यन्ते जनपदाभावात् । कर्षकप्राये तु दुर्गव्यसनमायुषीयप्राये तु जनपदे जनपद-व्यसनमिति ।

दुर्गकोशब्यसनयोः कोशब्यसनम् इति पिशुनः—"कोशमूळो हि दुर्गं इंस्कारो दुर्गरक्षणं च। दुर्गः कोबादुपचाप्य: परेषम् । जनपदमित्रामित्र-

निग्रहो देशान्तरितानामुरसाहनं दण्डबलव्यबहारः। कोशमादाय च व्यसने क्षक्यमण्यातुं न दुर्गम् इति ॥

नेति कौटिल्यः — दुर्गापंणः कोशो दण्डस्तूष्णींयुद्धं स्वपक्षनिग्रहो दण्डबलव्यवहारः आसारप्रतिग्रहः परचक्राटवीप्रतिषेधश्च। दुर्गाभावे च कोशः परेषाम्। दृश्यते हि दुर्गवतामनुच्छित्तिरिति।

कोशदण्डम्यसनयोदंण्डव्यसनम् इति कौणपदन्तः दण्डमूलो हि मित्रामित्रनिग्रहः परदण्डोत्साहनं स्वदण्डप्रतिग्रहश्च। दण्डाभावे च ध्रुवं कोशविनाशः। कोशाभावे च शक्यः कुप्येन सूम्या परभूमिस्वयंग्रहेण वा दण्डः पिण्डयितुम्। दण्डवता च कोशः। स्वामिनश्वासन्नवृत्तित्वाद--मात्यसधर्मा दण्ड इति।

नेति कौटिल्यः कोश्वमूलो हि दण्डः । कोशाभाने दण्डः परं गच्छति, स्वामिमं वा हन्ति । सर्वाभियोगकरश्च कोशो धमंकामहेतुः । देशकाल-कार्यवरीन तु कोशदण्डयोरन्यतरः प्रमाणीभवति । लम्भपालनो हि दण्डः कोशस्य । कोशः कोशस्यदण्डस्य च भवति । सर्वद्रव्यप्रयोजकत्वात् कोशव्यसनं गरीयः इति ।

दण्डमित्रव्यसनयोमित्रव्यसनम् इति वातव्याधिः—मित्रमभृतं व्यवहितं च कर्मं करोतिः; पार्षणग्राहमासारमित्रमाटिकं च प्रतिकरोति, कोशदण्डभूमिभिश्चोपकरोति व्यसनावस्थायोगिमिति ।

नेती कौटिल्यः—दण्डवतो मित्रं मित्रभावे, तिष्ठस्यमित्रो दा मित्रभावे । दण्डमित्रयोस्तु साधारणे कार्ये सारतः स्वयुद्धदेशकाक्काभाद्विशेषः । शीघाभियाने त्वमित्राटविकाभ्यन्तरकोपे च न मित्र विद्यते । व्यसन-यौगपद्ये परवृद्धौ च मित्रमर्थयुक्तौ तिष्ठति । प्रकृतिव्यसनसंप्रधारण-मुक्तमिति ।

प्रकृशक्षवधनां तु व्यसनस्य विशेषतः। बहुभावोऽनुरागो वा सारो वा कार्यसाघक:॥ इयोस्तु व्यसने तुल्ये विशेषो गुणतः क्षयात्। शेषप्रकृतिसाद्गुण्यं यदि स्यान्नामित्रेयकम्॥ शेषप्रकृतिनाशस्तु यत्रैकव्यसनाद् भवेत् ।
व्यसनं तद्गरीयस्त्यात् प्रधानस्येतरस्य वा॥
इति कोटिलीयार्थशास्त्रे व्यसनाधिकारिकेऽष्टमेऽधिकरणे प्रथमोऽध्यायः
प्रकृतिव्यसनवर्गः, आदितस्सष्टदश्चतत्तमः ।

#### १२८ प्रक राजराज्ययोर्घ्यसनचिन्ता ।

राजा राज्यमिति प्रकृतिसंक्षेपः।

राज्ञोऽभ्यन्तरो बाह्यो वा कोप इति । अहिभयादभ्यन्तरः कोषा बाह्यकोपात्पापापीयान् । अन्तरमात्यकोपदचान्तःकोपात् । तस्मारकोण-दण्डकाक्तिमात्मसंस्थां कुर्वीत ।

द्वैराज्यवैराज्ययोः द्वैराज्यमन्योग्यपक्षद्वेषानुरागाभ्यां परस्पर ङ्वर्षेण वा विनश्यति । वेराज्यं तु प्रकृतिचित्तग्रहणापेक्षि यथास्थितमन्यं भुंज्यते इत्याचार्याः । नेति कौटिल्यः । पितापुत्रयोभ्रांत्रार्वा द्वेराज्यं त्व्ययोग-क्षेममात्यावग्रहं वर्तयतेति । वेराज्यं तु जीवतः परस्याच्छिद्य "नैतन्मम" इति मन्यमानः कर्शयत्यप्रवाहयति, पण्यं वा करोति, विरक्तं वा परित्यज्यअपगच्छतीति ।

अन्धरचित्रसास्रो वा राजेति । अज्ञास्त्रचक्षुरन्धो यत्किञ्चनकारी दढाभिनिवेशी परप्रणेयो वा राज्यमन्यायेनोपहन्ति । चित्रतशासस्तु यत्र शासाञ्चलितमतिभवति, शक्यानुनयो भवतीत्याचार्याः ।

नेति कौ टेल्यः—अन्धो राजा शक्यते सहायसम्पदा यत्र तत्र वा पर्यवस्थापयितुमिति । चिलतशास्तरतु शास्त्रादन्यथाभिनिविष्टबुद्धिरन्यायेन राज्यमात्मानं चोपहुन्सीति । व्याघितो नवो वा शजेति। व्याधितो राजा राज्योपघात-ममात्ममूलं प्राणावाधं वा राजमूलमवाप्नोति। नवस्तु राजा स्वधमीनु-ब्रह्वरिहारदानमानकर्मभिः ष्रकृतिश्वज्जनोपकारै श्वरतीत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः—व्याधितो राजा यथाप्रवृत्तं राजप्रणिधिमनुवर्तयति । नवस्तु राजा "बलाविजतं ममेदं राज्यम्" इति यथेष्टमनयग्रहश्चरति । सामुत्थायकैरवगृहीतो वा राज्योपघातं मर्षयति । प्रकृतिष्वरूढः सुस्रमुच्छेतुं भवति । व्याधिते विशेषः—पापरोग्यपापरोगी च ।

नवेऽप्यभिजातोऽन भिजात इति दुर्बलोऽभिजातो बलवाननभिजातो राजेति । दुर्बलस्याभिजातस्योपजापं दौर्बल्यापेक्षाः प्रकृतयः कृच्छ्रेणो पगच्छन्ति । बलवतश्चानभिजातस्य बजापेक्षास्मुखेन" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः — दुबंलमभिजातं प्रकृतबस्स्वयमुपनमन्ति । जात्यमे-श्वयंप्रकृतिरनुवर्तत इति । बलबतश्चानभिजातस्योपजापं विसंवादयन्ति... अनुरागे साद्युष्यम् इति ॥

प्रयासवधात्सस्यवधो मुष्टिवधात्पापीयान् निराजीवंत्वादवृष्टिरितवृष्टित इति ।

> द्वयोर्द्वयोर्व्यसनयोः प्रकृतीनां बकाबलात् । पारम्पर्यक्रमेणोक्तं याने स्थाने च कारणम् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे व्यसनाधिकारिके अष्टमाधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः राजराज्ययोर्व्यसनचिन्ता । आदितोऽष्टादशशततमः ।

#### १२६ प्रक. पुरुषव्य दनवर्गः ।

अविद्याविनयः पुरुषव्यसनहेतुः। अविनीतो हि व्यसनदोषान् न पश्यति।

तानुपदेक्ष्यामः --- कोपजिल्लवर्गः ; कामबद्यतुर्वगः । तयोः कोपो गरीयान् । सर्वत्र हि कोपद्यरित, प्रायश्वर्य कोपवशा राजानः प्रकृति-कोपहेताः श्रूयन्ते, कामवशाः क्षयण्यसननिमित्तमरिज्याधिभिः इति ।

नेति भारद्वाजः—सत्पुरुषाचारः कोषः वेरायतनमक्ज्ञातवघो भीत-मनुष्यता च । नित्यश्च कोषसम्बन्धः पापप्रतिषेधार्थः । कामस्सिद्धिलाभः । सान्त्वं त्यागशीलता सम्प्रियभावश्च । नित्यश्च कामेन सम्बन्धः कृतकर्मण फलोषभोगार्थं इति ।

नेति कौटिस्यः—हेष्यता शत्रुवेदनं दुःखसङ्गरः कोपः । परिभवो द्रव्यनाशः पाटत्र रयूतकार लुब्धकगायकवादकैरचानथ्येंस्र्रंयोगः कामः । सयोः परिभवात् हेष्यता गरीयसो, परिभूतस्स्वैः परेदचावगृह्यते, हेष्यस्समुच्छिः सत इति । द्रव्यनाशाच्छत्रुवेदनं गरीयः, द्रव्यनाशः कोशाबाधकः, शत्रुवेदनं प्राप्याः कोशाबाधकः, शत्रुवेदनं प्राप्याः स्वाः कोशाबाधकः, शत्रुवेदनं प्राप्याः स्वाः कोशाबाधकः, शत्रुवेदनं प्राप्याः कोशाबाधकः, शत्रुवेदनं प्राप्याः स्वाः कोशाबाधकः, शत्रुवेदनं प्राप्याः स्वाः स्वाः अनर्थ्यः संयोगो मुहूतं प्रीतिकरो, दोषंक्षे शकरो, दुःखानामासङ्ग इति । तस्मात्कोपो गरीयान् ।

वानपारुष्यमर्थदूंषणं दण्डपारुष्यमिति । वानपारुष्यार्थंदूषणयोविन्धा-रुष्यं गरीयः इति विशालाक्षः—परुषमुक्तो हि तेजस्वी तेजसा प्रत्या-रोहति । दुरुक्तवन्यं हृदि निर्वातं तेजस्संदीपनमिन्द्रियोपतापि च इति ।

नेति कौटिल्यः—अर्थपूजा वान्छल्यमपहन्ति, वृत्तिविस्रोपस्त्वर्थंदूषणम् अदानमादानं विनाशः परित्यागो वा अर्थस्येत्यर्थंदूषणम् ।

अर्थदूषणदण्डपारुष्ययोरर्थदूषणं गरीयः इति पाराशराः—अर्थमूली धर्मकामी, अर्थप्रतिबन्धरव लोको वतंते । तस्योपधातो गरीयान् इति ।

नेति कोटिल्यः —सुमहताऽप्यर्थेन न कश्चन शरीरविनाशमिच्छेत्। दण्डपारुष्यात्र तमेव दोषमन्येम्यः प्राप्नोति । इति कोपजस्तिवर्गः। कामजस्तु-मृगया चूतं खियः पानमिति चतुर्वंगः ।

तस्य मृगयाचूतयोः मृगया गरौयासौ इति विशुनः—स्तेनामित्र-ज्याकदावप्रस्वलनभयदिङ्मोहाः क्षुत्पियासे च प्राणाबाधस्तस्याम् । द्यूते तु जितमेवाक्षविदुषा यथा जयत्सेनदुर्योधनास्याम् इति ।

नेति कौटिल्यः—तयोरप्यन्यतरपराजयोऽस्तोति नलयुधिष्ठराभ्यां व्याख्यातम् , तदेव विजितद्रव्यमामिषं, वैरबन्धरच, सतोऽर्थस्य विप्रतिपत्तिरसतरचार्जनमप्रतिभुत्तनाको, मूत्रपुरीषधारणबुभुक्षाविभिरच व्याधिन हाभ इति चूतदोषः । मृगयायां तु व्यायामः श्लेष्मपित्तमेदस्स्वेदनाशरच्छे स्थिरे च काये लक्षपरिचयः कोपभयस्थाने हि तेषु च मृगाणां चित्तज्ञान-मितित्ययानं चेति ।

धूतस्त्रीव्यसनयोः कैतवव्यसनम् इति कीणपदन्तः—सातत्येन हि निक्षि प्रदीपे मातरि च मृतायां दोव्यत्येव कितवः, कृच्छ्रे च प्रतिपृष्टः कुप्यति । स्त्रीव्यसनेषु तु स्नानप्रतिकर्मभोजनभूमिषु भवत्येव धर्मार्थपरि-प्रश्न । क्षवया च स्त्री राजहिते नियोक्तु मुपांशुदण्डेन व्याधिना वा व्यावर्तयितुमवस्नावयितुं वा इति ।

नेति कौटिल्यः—सप्रत्यादेयं द्यूतम् निष्प्रत्यादेयं स्त्रीव्यसनअदर्शनं, कार्यानेर्वेदःतिपातनादनर्थधमंलोपश्चला, तन्त्रदीर्बर्ल्यं, पानानुबन्धश्चेति ।

स्त्रोपानव्यसनयोः स्त्रीव्यसनम् इति वातव्याधः—"स्त्रीषु हि बालिश्यमनेकविधं निशान्तप्रणिधौ व्याख्यातम्। पाने तु शब्दादीनामिन्द्रि-यार्थानामुपभोगः प्रीतिदानं परिजनपूजनं कर्मश्रमवधश्च" इति।

नेति कौटिल्यः—स्त्रीव्यसने भवत्यपत्योत्पत्तिरात्मरक्षणं चान्तदिरेषु, विपयंयो वा बाह्येषु अगम्येषु सर्वोच्छित्तिः । तदुभयं पानव्यसने । पान-सम्पत्—संज्ञानाद्यः अनुन्यत्तस्योन्भत्तत्वमप्रेतत्य प्रेतत्वं कौषीन्दर्शनं श्रुत-प्रज्ञाप्राणवित्तमित्रहानिस्सद्भिर्वियोगोऽनर्थ्यसं योगस्तंत्रीगतिनेषुण्येषु चार्थ-घ्रोषु प्रसङ्ग इति ।

धूतमद्ययो: धूतमेकेषाम् पणनिमित्तो जयः पराजयो वा प्राणिषु निश्चे-तनेषु वा पक्षद्वं धेन प्रकृतिकोपं करोति, विशेषतश्च सङ्घानां सङ्घर्ममणां च राजकुरुानां द्यूतिनिमित्तो भेदः, तिल्लिमित्तो विनाश इति असत्प्रग्रहः पापिष्ठतमो व्यसनानां तन्त्रदौर्बल्यादिति ।

असतां प्रग्रहः कामः कोषश्वावग्रहस्सताम् । व्यसन दोषबाहुल्यादत्यन्तमुभयं मतम ॥ तस्मात्कोषं च कामं च व्यसनारम्भमात्मवान् । परित्यजेन्मूलहरं वृद्धसेवी जितेन्द्रियः ॥ इति कौटिलीयार्थशस्त्रे व्यसनाविकारिके अष्टमाधिकरणे तृतीयोऽध्यायः, पुरुषव्यसनवगः आदित एकोनविश्वतिशक्तसः ।

# १३०-१३२ प्रक. पीडनवर्गः, स्तम्भवर्गः, कोशसङ्गवर्गश्च ।

दैवपीडनमग्निरुदकं व्याधिर्दुर्भिक्षं मरक इति ।

अग्न्युदकयोरग्निपीडनमप्रतिकार्यं सर्वदाहि च, शक्योपगमनं तार्या-बधमुदकपीडनमित्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः ---अग्निर्ग्राममर्घग्रामं वा दहति, उदकवेगस्सु ग्रामशत-प्रवाहीति ।

व्याधिदुर्भिक्षयोर्झ्याधिः प्रेतव्याधितोपसृष्टपरिचारकव्यायामोपरोधेन कर्माण्युपहन्ति । दुर्भिक्षं पुनरकर्मोपद्याति हिरण्यपशुकरदायि च इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः---एकदेशपीडनो व्याघिः श्वन्यप्रतीकारश्च, सर्वदेश-पाडनं दुर्भिक्षं प्राणिनामजीवनायेति ।

तेन मरको भ्याख्यातः।

क्षुद्रकमुख्यक्षययोः क्षुद्रकक्षयः कर्मणामयोगक्षेत्रं करोति, मुख्यक्षयः कर्मानुष्ठानोपरोधवर्मा" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः — शक्यः शुद्रश्चयः प्रतिसन्धातुं बाहुल्यात् श्चद्रकाणात्र मुख्यक्षयः । सहस्रेषु हि मुख्यो भवत्येको न वा सत्त्वप्रज्ञाधिनयादाश्चय-त्वात् श्चद्रकाणामिति ।

स्वचक्रपरचक्रमोस्स्वचक्रमतिमात्राभ्यां दण्डकराभ्यां पीडयत्यशक्यं च बार्ययतुं, परचकं तु शक्य प्रतियोद्धमपसारेण सन्धिना वा मोक्षयितुम् इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः—स्वचकपीडनं प्रकृतिपुरुषमुख्योपग्रहिबघाताभ्यां शक्यते वारियतुमकेदेशं वा पीडयित । सर्वदेशपीडनं तु परचक्रं विलोप-घातदाह विध्वंसनोपवाहने: पीडयतीति ।

प्रकृतिराजविदादयोः प्रकृतिविदादः प्रकृतीनां भेदकः पराभियोगाना-वहति । राजविदादस्तु प्रकृतीनां द्विगुणभक्तवेतनपरिहारकरो भवतीत्या-चार्याः ।

नेति कौटिल्यः—शक्यः प्रकृतिविवादः प्रकृतिमुख्योपग्रहेण कलहस्था-नापनयनेन वा वारियतुं, विवदमानास्तु प्रकृतयः परस्परसङ्क्येणोप-कुर्वन्ति । राजविवादस्तु पीडनोच्छेदनाय प्रकृतीनां हिगुणव्यायामसाध्य इति ।

देशराजविहारयोः देशविहारस्र काल्येन कर्मफलोपधारं करोति, राजविहारस्तु कारुशिल्पिकुशीलववाग्जीवनवैदेहकोपकारं करोति इत्या-चार्याः।

नेति कौटिल्यः—देशविहारः कर्मश्रमवधार्थमल्पं मक्षयति, मक्षयित्वा च भूयः कर्मसु योगं गच्छति । राजविहारस्तु स्वयंब्रह्मभैश्च स्वयंग्राह-प्रणयपण्यागारकार्योपग्रहेः पीडयतीति ।

सुभगाकुमारयोः कुमारस्स्वयं बह्नभैश्च स्वयंग्राहश्रणयपण्यागार-कार्योपग्रहैः पीडयति । सुभगा विलासोपभोगेन **इ**त्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—शक्यः कुमारो मन्त्रिपुरोहिताभ्यां वार्रायतुं, न सुभगा बालिक्यादनर्थ्यंजनसंयोगाच्चेति ।

श्रेणीमुख्ययोः श्रेणी बाहुल्यादनवग्रहा स्तेयसाहसाभ्यां पीडयति, मुख्यः कार्यानुग्रहिषाताभ्याम् इत्याचार्याः । नेति कौटिल्यः—सुव्यावर्त्या श्रेणी समानशीलव्यसनत्वात्, श्रेणी-मुख्येकदेशोपग्रहेण वा । स्तम्भयुक्तो मुख्यः परप्राणद्रव्योपघाताभ्यां पौडयतीति ।

सनित्रधातृसमाहत्रोस्यिश्रधाता कृतविदूषणात्ययाभ्यां पीडयति । समाहर्ता करणाधिष्ठितः प्रदिष्टफक्रोपभोगी भवति इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः — सन्निधाता कृतावस्थमन्यैः कोशप्रवेश्य प्रतिगृह्णाति । समाहर्ता पूर्वमर्थमात्मनः कृत्वा पश्चाद्राजार्थं करोति, प्रणाश्चयति वा, परस्वादाने च स्वप्रत्ययश्चरतोति ।

अन्तपास्त्रवेदेहकयोरन्तपालक्ष्वोरप्रसगंदेयात्यादानाभ्यां विणक्पशं पीडयति । वेदेहकास्तु पण्यप्रतिपण्यानुग्रहैः प्रसाधयन्ति इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—अन्तपालः पण्यसम्पातानुग्रहेण वर्तंयति । वेदेहकास्तु सम्भूय पण्यानामृत्कर्षापकर्षं कुर्वाणाः पणे पणशतं, कुम्भे कुम्भशतम् इत्याजीवन्ति ।

अभिजातोपरुद्धा भूमिः पशुद्रजोपरुद्धा वेति—अभिजातोपरुद्धा भूमिः महाफलाऽप्यायुषीयोपकारिणी न समा मोक्षयितुं व्यसनाबाधभयात्। पशुद्रजोपरुद्धा तु कृषियोग्या क्षमा मोक्षयितुं, विश्वीतं हि क्षेत्रेण बाध्यते" इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः—अभिजातोपरुद्धा भूमिरत्यन्तमहोपकाराऽपि क्षमा मोक्षयितुं व्यसनाबाधभयात्। पशुक्रजोपरुद्धा तु कोशवाहमोपकारिणी न क्षमा मोक्षयितुमन्यत्र सस्यबापोपरोधादिति।

प्रतिरोधकाटविकयोः प्रतिरोधकाः रात्रिसत्रचराद्दशरीराक्रमिणो नित्यादशतसहस्रापहारिणः प्रधानकोपकादच व्यवहिताः प्रत्यन्तारण्यचरा-दचाटविकाः प्रकाशा दश्यादचरन्त्येकदेशघातकादच इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—प्रतिरोधकाः प्रमत्तस्यापहरन्ति, अस्पाः कुण्ठाः सुखा जातुं ग्रहीतुं च । स्वदेशस्थाः प्रभूता विकान्ताश्चाटविकाः । प्रकाश-योधिनोऽपहर्तारो हन्तारश्च देशानां राजसधर्माण इति ।

मृगहस्तिवनयोः मृगाः प्रभूताः प्रभूतमांसचमेषिकारिणो मन्दग्रासा-

वक्र शिनस्सुनियम्याश्च । विपरीता हस्तिनो गृद्यमाणाः दुष्टाश्च देश-विनावायेति ।

स्थपरस्थानीयोपकारयोः स्वस्थानीयोपकारो घान्यपशुहिरण्यकुप्योप-कारो जानपदानामापाद्यात्मधारणः। विपरीतः परस्थानीयोपकार इति पीडनानि।

आभ्यन्तरो मुख्यस्तम्भो बाह्यो मित्राटबीस्तम्भ इति स्तम्भवर्गः । ताभ्यां पीडनैर्यथोक्तरेच पीडितस्सक्तो मुख्येषु परिहारोपहतः प्रकीर्णो मिथ्यासंहतः सामन्ताटबीहृत इति कोशसङ्गाः ।

पीडनानामनुत्पत्ती उत्पन्नानां च वारणे ।

यतेत देशवृद्धचर्यं नाशे च स्तम्भसङ्गयोः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे व्यसनाधिकारिकेऽष्टमाधिकरणे चतुर्थोऽध्यायः,

पीडनवर्गः स्तम्भवर्गः कोशसङ्गवर्गः आदितो विश्वतिशततमः ।

### १३३-१३४ प्रक. बलव्यसनवर्गः मित्रव्यसनवर्गश्च

बस्रव्यसनानि—अमानितं विमानितं, अभृतं व्याधित, नवागतं दूरायातं पारिश्वान्तं परिक्षीणं, प्रतिहतं हताग्रवेगं, अनृतुप्राप्तं अभूमिप्राप्तं, आशानिवेदि परिसृष्तं, कलत्रगहि अन्तरशस्य कुपितमूलं भिन्नगर्भं, अपमृतं अतिक्षिप्तं, उपनिविष्टं समाप्तं, उपरुद्धं परिक्षिप्तं, खिन्नधान्यपुरुषवीवनं, स्विश्विष्तं मित्रविक्षिप्तं, दूष्युक्तं दुष्टपार्ष्णिग्राहं, शून्यमूलं अस्वामिसंहतं, भिन्नकूटं अन्वमिति ।

तेषाममानितिविमानितयोरमानितं कृतार्थमानं युष्येत, न विमानित-मन्तःकोपम् । अभृतव्याधितयोरभृतं तदात्वकृतवेतनं युष्येत, नव्याधितमकर्मण्यम् । नवागतदूरयातयोनंबागतमस्यत उपलब्धदेशमनविमश्रं युष्येत, नदूराः यातमायतगतपरिक्वेशम् ।

परिश्नान्तपरिक्षीणयोः परिश्नान्तं, स्नानभोजनस्बप्रलब्धविश्रमं युध्येत, न परिक्षीणमन्यश्रहवे क्षीणयुग्य पुरुषम् ।

प्रतिहत्तहताग्रवेगयोः प्रतिहतमग्रपातभग्नं प्रवीरपुरुषसंहतं युध्येत, न हताग्रवेगमग्रपातहतप्रवीरम्।

अनृत्वभूमिप्राप्तयोरनृतुप्राप्तं यथतुं योग्ययुग्यशस्त्रावरणं युघ्येत, नाभूमिप्राप्तमवरुद्धप्रसारव्यायामम् ।

आशानिर्वेदिपरिसृक्षयोराकानिर्वेदि स्टब्धाभिप्रायं युध्येत, न परिनृक्षम-प्रमृक्षम् मुख्यम् ।

कलत्रगर्धान्तरशल्ययोः कस्त्रत्रगर्ध्युनमुच्य कलत्रं युष्येत, नान्तरश्च-ल्यमन्तरमित्रम् ।

कुपितमूलभिन्नगर्भयोः कुपितमूलं प्रशामितकोपं सामदिभिर्व्युध्येत, न भिन्नगर्भमन्योन्यस्माद्भिन्तम् ।

अपमृतातिक्षिप्तयोरपद्गृतमेकराज्यातिकान्तं मन्त्रव्यायामाभ्यां सत्र-मित्रापाश्रयं युष्येत, नातिक्षिप्तमनेकराज्यातिकान्तं बह्वाकाव्यात्।

उपनिविष्टसमाप्तयोरुपनिविष्टं पृथक्यानस्थानमतिसन्धातारं युष्येत, न समासं अरिणेकस्थानयानम् ।

उपरुद्धपरिक्षिप्तयोरुपरुद्धमन्यतो निष्क्रम्योपरोद्धारं प्रतियुध्येत, न परिक्षिप्तं सर्वतः प्रतिरुद्धम् ।

छिन्तधान्यपुरुषवोवधयोः छिन्नधान्यमन्यतो धान्यमानीय जङ्गमस्था-वराहारं वा युध्येत, न छिन्तपुरुषवोवधमनभिसारम् ।

स्वविक्षिप्तमित्रविक्षिप्तयोः स्वविक्षिप्तं स्वभूमौ विक्षिप्तं संन्यमापदि वन्यमपस्रावयितुं, न मित्रविक्षिप्तं विष्रकृष्टदेशका उत्वात् ।

दूष्ययुक्तदुष्टपार्षिणग्राहयोद्दंष्ययुक्तमात्तपुरुषाधिष्ठितमसंहतं युध्येत, न दुष्टपार्षिणग्राहं पृष्ठाभिधातशस्तम् । शून्यमूळास्यामि संहतयोः शून्यमूलं कृतपौरजानपदारक्षं सर्वसन्दोहेन युच्येत, नास्वामि संहतं राजसेनापितहीनम् ।

भिन्तकूटान्धयोभिन्तकूटमन्याधिांष्ठतं युध्येत, नान्धमदेशिकमिति । दोषशुद्धिर्वलावापः सत्रस्थानातिसहितम् । सन्धिश्चोत्तरपक्षस्य बलव्यसनसाधनम् ॥ रक्षेत्स्वदण्डं व्यसने शतुभ्यो नित्यमुत्थितः । प्रहरेदृण्डरन्ध्रे षु शत्रूणां नित्यमुत्यितः ॥ अभियातं स्वयं मित्रं सम्भूया यवशेन वा । परित्यक्तमञ्जनत्या वा लोभेन प्रणयेन वा ।। विकीतमभियुष्टबाने संग्रामे वाऽपवतिना । देधीभावेन वा मित्रं यास्यता वाऽन्यमन्यतः ॥ पृथावा सहयाने वा विश्वासेनाति संहितम । भयावमानालास्यैर्वा व्यसनान्न प्रमोक्षितम् ॥ अवरुद्धं स्वभूमिभ्यः समीपाद्धा भयाद् गतम्। भाच्छेदनाददानाद्वा दत्या वाञ्यवमानितम् ॥ अत्याहरितमर्थं या स्वयं परमुखेन वा। अतिभारे नियुक्तं वा भङ्कत्वा परमकस्थितम्।। उपेक्षितमशक्त्रघा वा प्राथंयित्वा विरोधितम्। कुच्छोण साध्यते मित्रं सिद्धं चाशु निरज्यति ॥ कृतप्रयासं मान्यं वा मोहान्मित्रममानितम । मानितं वा न सदृशं भक्तितो वा निवारितम् ॥ मित्रोपधातत्रस्तं वः शक्क्तिं वाऽरिसंहितात् । दुष्येवी भेदितं मित्रं साध्यं सिद्धं च तिष्ठति ॥ तस्माञ्चोत्पादयेदेनान् दोषान् मित्रोपषातकान् । उस्पन्नान्वा प्रशमयेत् गुणैर्दोषोपघातिभि :।। यतो निमितं व्यसनं प्रकृतोनामवाप्नुयात् । प्रागेव प्रतिकृषीत तन्निमित्तमतन्द्रितः ॥

इति कौटिकीयार्थशस्त्रे व्यसनाधिकारिके अष्ठमाधिकरणे पञ्चमोऽष्यायः बलव्यसनवर्गः, मित्रव्यसनवर्गः, आदित एकविशतिशततमः । एतावता कौटिकीयस्यार्थशास्त्रस्य व्यसनाधिकारिकं बल्लममधिकरणं समाप्तम्।

# अभियास्यत्कर्म—नवमाधिकरणम् । १३५.१३६ प्रक शक्तिदेशकालवलाबैल-ज्ञानं, यात्राकालाश्च ।

बिक्रिगीषुरात्मनः परस्य च बलाबलं शक्तिदेशकालयात्राकालबलसमु-त्यानकालपश्चात्कोपक्षयभ्ययकाभापदां ज्ञात्या विशिष्ठिबलो यायात् । अन्यथाऽऽसीत ।

उत्साहप्रभावयोक्त्साहः श्रेयान् । स्वयं हि राजा शूरो बलवानरोगः कृतास्रो दण्डद्वितीयोऽपि शक्तः प्रभाववन्तं राजानं जेतुम्, अल्पोऽपि भास्य दण्डस्तेजसा कृत्यकरा भवति । निक्त्साहस्तु प्रभाववान् राजा विक्रमामिपन्नो नश्यितः" इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—प्रभाववानुत्साह्वन्तं राजानं प्रमावेनातिसंघते। तिविशिष्टमन्यं राजानं आवाह्य हृत्वा कीत्वा प्रवीरपुरुषान्। प्रभूतप्रभावहय-हस्तिरथोपकरणसम्पन्नश्चास्य दण्डस्सर्वत्राप्रतिहतश्चरति। उत्साहवन्तश्च प्रभाववन्तो जित्वा कीत्वा च स्त्रियो बालाः पङ्गवोन्धाद्य पृथिवीं जिग्युः इति।

प्रभावमन्त्रयोः प्रभावः श्रेयान् । मन्त्रशक्तिसम्पन्नो हि वन्ध्यबुद्धि-रप्रभावो अवति, मन्त्रकर्म चारच निश्चितमप्रभावो गर्भवान्यमवृष्टिरिबो-हन्ति इत्याचार्याः । नेति कौटिन्यः—मन्त्रशक्तिःश्रेयसी, प्रज्ञाशास्त्रचक्षु राजा अन्पेनापि प्रयत्नेन मन्त्रमाक्षातुं शक्तः, परानुत्साहप्रभावतःच सामादिभियोगोपनिष-द्भयां चातिसन्धातुं, एवमुत्साहप्रभावमन्त्रशक्तिनामुत्तरोत्तराधिकोऽतिशं- वर्ते।

देशः पृथिवी । तस्यां हिमवत्समुद्रान्तरमुदीचीनं योजनसहस्र परिमाणं तिर्यवक्षकर्वातक्षेत्रम् । तत्रारण्यो ग्राम्यः पार्वत औदको भौमस्समो विषम इति विशेषाः । तेषु यथास्वबस्र वृद्धिकरं कर्मं प्रयुक्षीत । यत्रात्मनस्सैन्य व्यायामानां भूमिः अभूमिः परस्य, स उत्तमो देशः । विपरीतोऽधमः । साधारणो मध्यमः ।

कालः शीतोष्णवर्षात्माः, तस्य रात्रिरहः पक्षोः मास ऋतुरयनं बंबत्सरो युगमिति विशेषाः । तेषु यथास्वबलवृद्धिकरं कमं प्रयुक्जौतः । यत्रात्मन-स्क्षेन्यव्यायामानामृतुः अनृतुः परस्य स उत्तमः कालः । विपरीतोऽघमः । साधारणो मध्यमः ।

शक्तिदेशकालानां तु शक्तिः श्रेयसी इत्याचार्याः। शक्तिमान् हि निम्नस्थलवतो देशस्य शीतोष्णवर्षवतत्त्व कालस्य शक्तः प्रतिकारे भवति ।

देशः श्रेयान् इत्येके । स्थलगतो हि श्वा नकः विकर्षति, निम्नगतो नकश्वानमिति ।

कालक्क्ष्रेयान् इत्येके । दिवा काकः कौशिकः हन्ति । रात्री कौशिकः काकम् इति ।

नैति कौटिल्यः परस्परसाधका हि शक्तिदेशकालाः । तैरभ्युन्नितः तृतीयं चतुर्थं वा दण्डस्याशं मूले पाष्ण्यां प्रत्यन्ताटवीषु च रक्षा विश्वायः कार्यसाधनसहं कोश्वदण्डं चादाय क्षोणपुराणभक्तमगृहीतनवभक्तमञ्चस्कृतदुर्गमित्रत्रं, वार्षिकं चास्य सस्यं हैमनं च मुध्मिपहन्तुं मागंशीर्षीं यात्रां यायात् । हैमनं चास्य सस्यं वासन्तिकं च मुष्टिमुपहन्तुं चंत्रीं यात्रां यायात् । क्षीणतृणकाष्ठोदकमसंस्कृतदुर्गमित्रत्रं, वासन्तिकं च अस्य सस्यं वार्षिकीं वा मुष्टिमुपहन्तुं ज्येष्ठामूश्रीयां यात्रां यायात् । अत्युष्णमल्ययन्वसेन्वनीदकं वा देशं हेमन्ते यायात् ।

तुषारदुर्दिनमगाधनिम्नशायं गहनतृणवृक्षः वा देशं ग्रीष्मे यायात् । स्वसैन्यव्यायामयोग्यं परर्यायोग्यं वर्षति यायात् ।

मार्गशीर्षं तेषं चान्तरेण दीर्घकासां यात्रां यायत् । चेत्रं वेशासः चान्तरेण मध्यमकालां, ज्येष्ठामूलीयमाषाढं चान्तरेण ह्रस्वकालामुपोषि-ष्यत् । व्यसने चतुर्थीम् ।

व्यसनाभियानं विगृह्ययाने व्याख्यातम् ।

प्रायशक्या चार्याः परव्यसने यातव्यम् इत्यूपदिशन्ति ।

शक्त्युदये यातभ्यमनैकान्तिकत्वात् व्यसनानाम् इति कौटिल्यः।

यदा वा प्रयातः कर्शयितुमुच्छेतुं वा शक्तु पादामित्रं, तदा यायात् ।

अत्युष्णोपक्षोणं काले हस्तिबलप्रायो यायात् । हस्तिनो ह्यन्तस्स्वेदाः कृष्टिनो भवन्ति, अनवगाहमानास्तोयमपिवन्तरचान्तरवक्षारारचान्धी-भवन्ति । तस्मात् प्रभूतोदके देशे, वर्षति च हस्तिबलप्रायो यायात् । विपयंये खरोष्ट्राश्यबलप्रायः । देशमल्पवर्षपङ्कः वर्षति मरुप्रायं चतुरङ्ग-बक्षो यायात् । समविषमनिम्नस्थलह्नस्वदोधंवशेन वाऽच्वनो यात्रां विभजेत् ।

सर्वा वा ह्रस्वकालास्स्युयतिब्याः कार्यलाघवात् ।

दीर्धाः कार्यगुरुत्वाद्वा वर्षावासः परत्र च ॥

इति कौटिलीयार्थकास्त्रे अभियास्यत्कर्माण नवमेऽधिकरणे प्रथमोध्यायः

शक्तिदेशकालबस्रावलज्ञानं यात्राकालाः,

गादितो द्वाविवातिशततमोऽध्यायः।

# १३७-१३६ प्रक.बलोपादानकालाः, सन्ना-हगुणाः, प्रतिबलकर्म च ।

मौलभृतकश्रेणीमित्रामित्राटवीबलानां समुद्दा(त्था १)नकालाः ।
मूलरक्षणादितिरिक्तःं मौलबलम् अत्यावापयुक्ता वा मौका मूले
बिकुवीरन् इति बहुलान्रक्तमौलबलः सारबलो वा प्रतियोद्धा व्यायामेन

योद्धस्यम् इति, प्रकृष्टेऽञ्जनि काले वा क्षयव्ययसहत्वान्मौलानाम् इति, बहुलानुरक्तसम्पाते च यातव्यस्योपजापभयादन्यसैन्यानां भृतादीनाम-विश्वासे, बलक्षये वा सर्वसैन्यानाम् इति, भौलबक्षकालः ।

प्रभूतं मे भृतबस्मल्पं च मोलवस्म् इति, परस्याल्पं बिरक्तं वा मौलवलं, कल्गुप्रायमसारं वा भृतसेन्यम् इति, मन्त्रेण योद्धव्यमल्पव्या-यामेन इति, ह्रस्यो देशः कालो वा तनुक्षयव्ययः इति, अल्वसंपातं शान्तोपजापंविश्वस्तं वा मे सेन्यम्, इति—परस्याल्पः प्रसारो हन्तव्यः इति, भृतबलकालः।

प्रभूतं मे श्रेणीबलं शवयं मूले यात्रामां चाधातुम्" इति, हिन्दः-प्रवासः श्रेणीबलप्रायः प्रतियोद्धा मन्त्रव्यायामाभ्यां प्रतियोद्ध्कामो दण्डब-लव्यवहारः इति श्रेणीबलकालः ।

प्रभूतं में मित्रबलं शवर्यं मूले यात्रायां चाधातुमल्यः प्रवासो मन्त्रयु-द्धान्न भूयो व्यायामयुद्धम् इति, मित्रबलेन वा पूर्वमटवीं नगरीस्थानमासारं वा योधयित्वा पश्चात् स्वबलेन योधयिष्यामि, मित्रसाधारणं वा मे कार्यं, मित्रायत्ता वा मे कार्यंसिद्धिः, आसन्नमनुग्राह्यं वा मे मित्रमत्यावापं वाऽस्य साधयिष्यामि इति मित्रबलकालः ।

प्रभूतं मे शशुबलं शशुबलेन योषयिष्यामि, नगरस्थानमटवीं वा । तत्र मे श्वदराह्योः कलहे चण्डालस्येवान्यतरसिद्धिः भविष्यति ; आसाराणामट-बोनां वा कण्टकमर्दनमेतत् करिष्यामि ; अत्युपचितं वा कोपभयाशित्यमा-सन्नमरिबलं वासयेदन्यश्राभ्यन्तरकोपशङ्कायः शशुयुद्धावरयद्धकालक्ष्य इत्यमिश्रबलकालः । तेनाटवीबलकालो व्याख्यातः ।

मार्गदेशिकं परभूमियोग्यमरियुद्धप्रतिलोममटवीबक्षप्रायश्शनुर्वा बिल्वं बिल्वेन हन्यतामल्पः प्रसारो हन्तन्यः इत्यटबीबलकालः ।

सैन्यमनेकमनेकजातीयस्थमुक्तमनुक्तं वा विलोपार्थं यदुतिष्ठति, तदौ-त्साहिकम्। भक्तवेतनविलोवविष्टिप्रतापकरं भेद्यं परेषम्भेद्य तुस्यदेशजा-तिशिलग्रायं संहतं महदिति बलोपादानकालाः तेषां। कुप्यभृतमित्राटवीअलं विलोपमृतं वा कुर्यात्। अभित्रस्य वा बलकाले प्रत्युत्पनने शतुमवगृह्धीयात्। अन्यत्र वा प्रेषयेत्। अकलं वा कुर्यात्। विक्षिष्ठं या वासयेत्। काले याऽति-क्रान्ते विषृजेत्। परस्य चैतत् बलसमुद्दा(त्या १)नं विद्यातयेद् आत्मनस्सं-पादयेत्।

पूर्वपूर्वं चेषां श्रेयस्सन्नाहियतुम् । तद्भावभावित्वान्नित्यसत्कारानुग-मात्र मौलवलं भृतवराच्छोयः ।

नित्यानन्तरं क्षित्रोत्थायि वश्यं च भृतवलं श्रेणीवलाच्छ्रेयः । जानपदमेकार्थोपगतं तुल्यसङ्घर्षामवंसिद्धिलामं च श्रेणीवलममित्रवला-च्छेयः ।

आर्याधिष्ठितमामित्रबरुमटबोबलाच्छ्रेयः । तदुभयं विलोपार्थम् । अविलोपे व्यसने च ताभ्यामहिभयं स्यात् ।

त्राह्मणक्षत्रियवेश्यशूद्रसैन्यानां तेजःप्राघात्यात् पूर्वपूर्वं श्रेयस्संनाह्-यितुम् इत्याचार्याः ।

नेति कौटिल्यः—प्रणिपातेन ब्राह्मणबलं परोऽभिहारयेत्। प्रहरण-बिद्याविनीतं तु क्षत्रियवलं श्रेयः, बहुलसारं वा वैश्यशूद्रबलमिति। तस्मादेवंबलः परः तस्येतत्प्रतिबक्षम् इति बलससुद्दा(स्था १)नं कुर्यात् —हस्तियन्त्रशकटगर्मकुन्तप्रासखहाटकवेणुशस्यबद्धस्तिबलस्य प्रतिबलम्। तदेव पाषाणकगुडावरणाङ्क् बक्षवग्रहणाप्रायं रथवकस्य प्रतिबलम्। तदेवाश्वानां प्रतिबलम्, वर्मिणो वा हस्तिनोऽश्वा वा वर्गिमणः। कविनो रेषा आवरणिनः पत्तबश्वतुरङ्गबलस्य प्रतिबलम्। एवं बलसमुद्दा(त्था १)नं परसैन्यनिवारणम्।

विभवेन स्वसैन्यानां कुर्यादङ्गविकल्पद्यः ॥

इति कौटिलीयार्थबास्त्रे अभियास्यत्कर्मण नवमेऽधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः बलोपदानकालास्सन्नाहगुणाः प्रतिबलकर्म, आदितस्रयोविकतितमोऽध्यायः।

# १४०-१४१ प्रक. पश्चात्कोचिन्ता, बाह्या-भ्यन्तरप्रकृतिकोपप्रतिकारश्च ।

अक्पः पश्चात्कोपो महान् पुरस्ताल्लाभः इति । अल्पः पश्चात्कोपो गरीयान् । अल्पं पश्चात्कोपं प्रयातस्य दूष्यामित्राटिवका हि सर्वतः समेधयन्ति, प्रकृतिकोपो बा। लब्धमिन च महान्तं पुरस्ताल्लाभम् । एवंभूते भृत्यिमित्रक्षयव्यया ग्रसन्ते । तस्मात् सहस्रौकीयः पुरस्ताल्लाभस्ययोगः, शतंकीयो वा पश्चात्कोप इति न यायात् । सुचीमुखा ह्यन्चां इति लोक- प्रवादः । पश्चात्कोपे सामदानभेददण्डान् प्रयुठजीत् । पुरस्ताल्लाभे सेनापति कुमारं वा दण्डचारिणं कुर्वीत ।

बरुवान्वा राजा पश्चात्कोपावग्रहसमर्थः पुरस्ताल्लाभमादातुः मायात् । आभ्यन्तरकोपशङ्कायां शङ्कितानादाय यामात् ।

बाह्यकोपशङ्कायां वा पुत्रदारमेषामभ्यन्तरावग्रहं कृत्वा शूण्यपालमनेक-बलवर्गमनेकमुख्यं च स्थापयित्वा यायात् । न वा यायात् । अभ्यन्तरकोपो बाह्यकोपात् पापीयान्' इत्युक्तं पुरस्तात् ।

मन्त्रिपुरोहितसेनापितयुवराजानामन्यतमकोपोऽभ्यन्तरकोपः तमा-त्मदोषत्यागेन परशक्तयपराधवकोन वा साधयेत्। महापराधेऽपि पुरोहिते संरोधनमवस्त्रावणं वा सिद्धिः, युवराजे संरोधनं निग्रहो वा गुणवत्यन्य-रिमन्सिति पुत्रे।

ताभ्यां मन्त्रिसेनापती व्याख्याती ।

पुत्रं स्रोतरमन्यं वा कुल्यं राज्यग्राहिणमृत्साहेन साधयेत् । बस्साहा-भावे गृहीतानुवर्तनसन्धिकमंभ्यामरिसन्धानभयात् । अयेम्यस्ति द्विषेभ्यो वा भूमिदानंबिश्वासयेदेनम् । तद्विशिष्टं स्वयंग्राहं दण्यं वा प्रेषयेत्, सामन्ताटा-विकान्वा । तैर्विगृहीतमतिसंदघ्यात् । अवश्द्वादानं पारग्रामिकं वा योगमा-तिष्ठेत् ।

एतेन मन्त्रिसेनापती व्याख्याती।

मन्त्रप्रदिवजीनायन्तरमात्यानामन्यतमकोपोऽन्तरमात्यकोपः । तत्रापि यथाहंमुपायान् प्रयुष्ठजीत ।

राष्ट्रमख्यान्तपालाटविकदण्डोपनतानामन्यतमकोपो बाधकोपः। तम-न्योम्येनावग्रायेहत् । अतिदुर्गप्रतिस्तब्धं वा सामन्ताटविकतत्कुलीनाब-रुद्धानामन्यतमेना बग्राइयेत् । मित्रेणोपग्राहयेद्वा यथा नामित्रं गच्छेत् ।

अमित्रात्सत्री भेदयेदेनं 'अयं त्वां योगपुरुषं मन्यमानो भर्तर्थेव विकमयिष्यति, अवाप्तार्थो दण्डचारिणममित्राटविकेषु क्रच्छे वा प्रवासे योध्यति, विपुत्रदारमन्ते वा वासियव्यति, प्रतिहतवित्रमं त्वां भर्तरि पण्य करिष्यति, त्वया वा सन्धिं कृत्वा भर्तारमेव प्रसादयिष्यति, मित्रमुपकृष्टं वाऽस्य गच्छेत्' इति । प्रतिपन्नमिष्टाभिप्रायैः पूजयेत् । अप्रतिपन्नस्य संश्रयं भेदयेद्—असौ ते योगपुरुषः प्रणिहितः इति । सत्री चैन अभित्यक्तवासनै-र्घातयेत्, गूढ्पुरुषेर्वा। सहप्रस्थायिनो वाऽस्य प्रवीरपुरुषान्यथाभिप्रायकरणे-नाबाह्येत्। तेत प्रणिहितान् स्त्री ब्रूयादिति सिद्धिः। परस्य चैनान् कोपानुत्थापयेत् । आत्मनश्च शमयेत् ।

यः कोपं कर्तुं शमयितुं वा शक्तः, तत्रोपनापः कार्यः । यस्सत्यसम्भः शक्तः कर्मणि कलावासौ चानुग्रहीतु विनिपाते च त्रातु , तत्र प्रतिज्ञापः कार्यः । तकंयितम्यश्च — 'करूयाणबुद्धिरुताहो शठः' इति ।

बठो हि बाह्योऽम्यन्तरमेवमुपजपति—'भर्तारं चेद्धत्वा मां प्रतिपाद-यिष्यति, शतुबची भूमिलाभश्च मे द्विविधी लाभी भविष्यति, अववा शत्रुरेनमाहनिष्यतीति, हतबन्ध्यक्षस्तुल्यदोषदण्डेन वा उद्विग्रस्च, मे भूयान् कृत्यपक्षो भविष्यति, तद्विधे बाऽन्यस्मिन् अपि शिक्कृतो भिबष्यति अन्यमन्यं चास्य मुख्यमभित्यक्तशासनेन घातयिष्यामि' इति ।

अभ्यन्तरो वा शठो बाह्यमेवमुपजपति-- 'को समस्य हरिष्यामि, दण्डं बाऽस्य हनिष्यामि, दुष्टं वा भर्तारमनेन घातियव्यामि, प्रतिपन्नं बाह्य-मिनाटाविकेषु विकामयिष्यामि चक्रमस्य सज्यता वैरमस्य प्रसज्यता ततस्वाधीनो मे भविष्यति, ततो भर्तारमेव प्रसादयिष्यामि, स्वयं वा राज्यं ग्रहीष्यामि, बध्या वा बद्यभूमि भतुंभूमि चोभयमदाप्स्यामि ;

बिरुद्धं वाबाइयित्वा बाह्यं विश्वस्तं घातयिष्यामि शूर्यं वाऽस्य मूलं हरिष्यामि इति ।

कल्याणबृद्धिस्तु सहबोध्यर्थमुपजपति । कल्याणबुद्धिना संदधीत । शठं 'तथा' इति प्रतिगृद्धातिसंदध्यात् ।

इत्येवमुपलभ्य,

परे परेभ्यस्स्वे स्वेभ्यः स्वे परेभ्यस्बतः परे । रक्ष्यास्स्वेभ्यः परेभ्यश्च नित्यमातमा विपश्चिता ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अभियास्यत्कर्मणि तृतीयोऽध्यायः परचात्कोपचिन्ता, बाह्याभ्यन्तर नमोधिकरणे प्रकृति-कोपप्रताकारस्य आदितश्यतींवशतिशततमः।

#### १४२ प्रकः क्षयव्ययलाभविपरिमर्शः ।

युग्यपुरुषापचयः क्षयः ।

हिरण्यधान्यापचयो व्ययः।

ताभ्यां बहुगुणविशिष्टे लाभे यायात्।

आदेयः, प्रत्यादेयः, प्रसादकः, प्रकोपकः, ह्रस्वकालः, तनुक्षयः, अल्पञ्चयः, महान्, वृद्धयुदयः, कल्यः, धर्म्यः, पुरोगक्चेति लाभसम्पत्।

सुप्राप्यानुपास्यः परेषामप्रत्यादेय इति आदेयः, निपर्यये प्रत्यादेयः। तमाददानस्तत्रस्यो वा विनाशं प्राप्नोति ।

यदि वा पश्येत्—'प्रत्यादेयमादाय कोश्वदण्डनिचयरक्षाविधानान्यव-स्नाविषयामि, सनिद्रव्यहस्तिवनसेतुबन्धवणिक्पणानुद्धृतसारान् करिष्यामि; प्रकृतीरस्य कर्शयिष्यामि; आवाह्यिष्याम्यायोगेनाराधिष्य्यामि वा, ताः परः प्रयोगेण कोपयिष्यति ; प्रतिपक्षे वाऽस्य पण्यमेनं करिष्यामि

मित्रमदरुद्धं बास्य प्रतिपादयिष्यामि, मित्रस्य स्वस्य दा देशस्य पौडामत्रस्यस्तरकरेभ्यः परेभ्यश्च प्रतिकरिष्यामि, मित्रमाश्रयं बास्य बैगुण्यं ग्राहियष्यामि, तदमित्रं विरक्तं तत्कुलीनं प्रतिपत्स्यते ; सत्कृत्य बाऽस्मै भूमि दास्यामीति संहित समुत्थितं मित्रं मे चिराय भविष्यति' इति प्रत्यादेयमपि काभमाददीत ।

इत्यादेयप्रत्यादेवी व्याख्याती ।

अधार्मिकादु दामिकस्य लाभो अभ्यमानः स्वेषां परेषां च प्रसादको भवति । विपरीतः प्रकोप इति ।

मन्त्रिणामुपदेशाल्लाभोऽलम्यमानः कोपको भवति, 'अयमस्माभिः क्षयव्ययौ ग्राहितः' इति । दुष्यमन्त्रिणामनादराह्नाभो लभ्यमानः कोपको भवति, 'सिद्धार्थोऽयमस्मान् विनाशियष्यति' इति । विपरीतः प्रसादकः।

इति प्रसादककोपकौ व्याख्याती ।

गमनमात्रसाध्यत्वाद्घस्यकालः।

मन्त्रसाध्यत्वात्तनुक्षयः।

भक्तमात्रव्ययत्वादलपव्ययः ।

तदात्ववेपुल्यान्महान् ।

मर्थानुबन्धकत्वद्वद्वद्वदयः ।

निराबाधकस्वात्कल्यः ।

प्रशस्तीपादानाद्धम्यः ।

सामवायिकानामनिबंनधगामित्वात् पूरोग इति ।

तुल्ये लामे, देशकारी शक्कत्युपायौ प्रियाप्रियौ जवाजवी सामीव्यविप्र-कर्षौ तदात्वानुबन्धी सारत्वातत्ये बाहुल्यबाहुगुण्ये च विमृत्य बहुगुणयुक्तं लाभमाददीत ।

काभविद्याः--कामः कोपः साध्वसं कारुण्यं ह्रीः अनार्यभावः मानः सानुकोशता परलोकापेक्षा दाम्भिकत्वं अत्याशित्वं दैन्यं असुया हस्तगता-वमानो दौरात्मिकमविश्वासी भवमनिकारदशीतोष्णवर्षाणामाक्षम्यं मञ्जल-तिधिनक्षत्रेष्टित्वमिति ।

नक्षत्रमतिपृच्छन्तं बालमधोऽतिवर्तते ।
अथो सर्थस्य नक्षत्रं कि करिष्यन्ति तारकाः ॥
नाधनाः प्राप्नुबन्स्यर्थान् नरा यत्नशतेरपि ।
अर्थेरथाः प्रबच्यन्ते गजाः प्रतिगजेरिव ॥
इति कौटिलोयार्थशास्त्रे अयास्यत्कर्मणि नवमेऽधिकरणे
चतुर्थोऽध्याय क्षयव्ययःलाभविपरिमर्शः,
आदितः पञ्चविद्यतिशततमः ।

#### १४३ प्रक. बाह्याभ्यन्तराश्चापदः ।

सन्ध्यादीनामयथोद्दे शावस्थापनमपनयः । तस्मादापदस्संभवन्ति ।

बाह्योत्पत्तिरभ्यन्तरप्रतिजापा, अभ्यन्तरात्पत्तिर्वाध्वप्रतिजापा । बाह्योत्पत्तिर्वाह्यप्रतिजापा अभ्यन्तरोत्पत्तिरभ्यन्तरप्रतिजापा इत्यापदः ।

यत्र बाह्या अभ्यस्तरानुपजपन्ति, अभ्यन्तरा वा बाह्यान् तत्रोभययोगे प्रतिजपतः सिद्धिविशेषवती । सुम्याजा हि प्रतिजपितारो भवन्ति ; नोपजपितारः। तेषु प्रशान्तेषु नान्यान् शक्नुयुरुपजपितुमुपजपितारः। कृच्छ्रोपजापा हि बाह्यानामभ्यन्तरास्तेषामितरे वा । महतश्च प्रयस्तस्य वधः, परेषां अर्थानुबन्धश्चात्मनोऽन्य इति ।

अभ्यन्तरेषु प्रतिजयत्सु सामदाने प्रयुष्णजीत । स्थानमानकर्म सान्त्वम् । अनुग्रहपरिहारौ कर्मस्थायोगो वा दानम् ।

बाह्येषु प्रतिजयत्सु भेददण्डौ प्रयुठजीत । सित्रणो मित्रव्यठजना वा बाह्यानां चारमेषां सुयूः 'अयं धो राजा दूष्यव्यञ्जनैरतिसंघातुकामो, बुध्य-ष्वम्' हति । दूष्येषु वा दूष्यव्यव्यव्यनाः प्रणिहिता दूष्यान् बाह्ये र्भेदयेयुः, बाह्यान्या दूष्यैः । दूष्याननुप्रविष्टा वा तीक्ष्णाश्शस्त्ररसाभ्यां हन्युः । आहूय वा बाह्यान् घातयेयुरिति ।

यत्र बाह्या बाह्यनुपजपन्ति, अभ्यन्तरान् अभ्यन्तरा वा, तत्र कान्तयोग उपजपितुः सिद्धिविशेषवती । दोषशुद्धौ हि दूष्या न विद्यन्ते । दूष्यशुद्धौ हि दोषः पुनरन्यान् दूषयति ।

तस्माद्वाद्यो धूपजपत्सु भेददण्डौ प्रयुठजोत । सित्रणो मित्रव्यठजना बा स्रूयुः 'अयं बो राजा स्वयमादातुकाकः, विगृहीताः स्थानेन राजा, वृष्यघ्यम्' इति । प्रतिजपितुर्वा ततो दूतदण्डाननुप्रविष्टास्तीक्ष्णाः शस्त्ररसादिभिरेषां खिद्र वृप्रहरेयुः । ततः सित्रणः प्रतिजपितारमभिशंसेयुः ।

अभ्यन्तरानभ्यन्तरेषूपजपत्सु यथाहंमुपायं प्रयुठजीत । तुष्टलिङ्गमतुष्ट विपरीतं वा साम प्रयुठजीत ।

शौचसामर्थ्यापदेशेन व्यसनाभ्युदयावेक्षणेन वा प्रतिपूजनमिति दानम्। मित्रव्यञ्जनो वा त्रूयादेतान्—'चित्तज्ञानार्थमुपधास्याति वो राजाः; तदस्याख्यातव्यम्' इति । परस्पराद्वा भेदयेदेनान्—'असौ च वो राजन्येवमुपअपति'। इति भेदः दाण्डकामिकवज्ञ दण्डः।

एतासां चतसृणामापदामभ्यन्तरामेव पूर्वं साधयेत् । 'अहिभयाद-भ्यन्तरकोपो बाह्यकोपात् पापीयान्' इत्युक्तं पुरस्तात् ।

> पूर्वा पूर्वी बिजानीयाह्मध्वीमापदमापदाम् । उत्थितां बलवद्भयो वा गुर्वी लघ्वां विपर्यये ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे अभियास्यत्त्रमंणि नवमाधिकरणे पठवमोऽध्यायः वाद्याभ्यत्तराक्ष्च आपदः,

> > आदितः षड्विशतिशततमः

## १४४ प्रक. दूष्यशत्रुसंयुक्ताः ।

दूष्येभ्यः शतुभ्यश्च द्विविधाः शुद्धाः ।

दूष्यशुद्धार्या पौरेषु जानपदेषु वा दण्डवर्जानुपायान्त्रयुठजात । दण्डो हि महाजने क्षेप्तुमशक्य:, क्षिप्तो वा तं चार्थं न कुर्यात् । अन्यं चानर्थमृत्पा-दयेत् । मुख्येषु त्वेषां दाण्डकार्मिकवच्चेष्टे तेति ।

शत्रु बुद्धायां यतः भत्रुः प्रभानः कार्यो वा, ततस्सामादिभिः सिद्धिः लिप्सेत ।

स्थामिन्यायत्ता प्रधानसिद्धिः, मन्त्रिष्वायत्ता यत्नसिद्धिः, उभयायताः प्रधानायत्ता सिद्धिः।

दूष्यादूष्याणामामिश्रितत्वादामिश्रा। आमिश्रायामदृष्यतस्तिद्धः। आक्रम्बनाभावे ह्यालम्बितान विद्यते। मित्रामित्राणामेकोभावात् परमिश्रा। परमिश्रायां मित्रतस्तिद्धः। सुकरो हि मित्रेण सन्धिर्नामित्रेणेति।

मित्रं चेत्र सन्धिमिच्छेत्, अभीक्ष्णमुपजपेत्, ततस्सविभिरमित्राद् भेदियित्वा मित्रं लभेतः। मित्रामित्रसङ्गस्य वा योऽन्तस्त्थायी तं लभेतः। अन्तरस्थायिनि लब्धे मध्यस्थायिनो भिद्यन्ते । मध्यस्थायिनं वा सभेतः। मध्यस्थायिनि वा लब्धे नान्तस्स्थायिनः संहन्यन्ते । यथा चैषामाश्रयभेदः तानुपायान् प्रयुक्जीतः।

धार्मिकं जातिकुलश्रुतवृत्तस्तवेन सम्बन्धेन पूर्वेषां श्रेकाल्योपकारान-पकाराभ्यां वा सान्त्वयेत् ।

निवृत्तोत्साहं विग्रहश्चान्तं प्रतिहृतोपायं क्षयव्ययाभ्यां प्रवासेन भोपतप्तं शौचेनाम्यं लिप्समानमन्यस्माद्वा शङ्कमानं मेत्रीप्रधानं वा कल्याणबृद्धिः साभ्ना साधयेत्।

लुब्धं क्षीणं वा तपस्विमुख्यावस्थापनापूर्वं दानेन साधयेत्।

तत्पञ्चविधं देयविसर्गः, गृहीतानुवर्तनं, आत्तप्रतिदानं, स्वद्रव्यदानं अपूर्वं, परस्वेषु स्वयंग्राहदानं चेति दानकर्मः। परस्परद्वेषवेरभूमिहरणग्राङ्कितं अतोऽन्यतमेन भेदयेत्। भीष्ठं वा प्रतिघातेन—'कृतसन्धिरेष त्वियि कर्म करिष्यति, मित्रमस्य निसृष्टं, सन्धौ वा नाभ्यन्तरः' इति ।

यस्य वा स्वदेशादन्यदेशाद्वा पण्यानि पण्यागारत्या गच्छेयुः, तान्यस्य 'यातव्यालब्धानि' इति सित्रणश्चारयेयुः । बहुलीभूते शासनमभिन्यक्ते ने प्रेषयेत्—'एतत्ते पण्यं पण्यागारं वा मया ते प्रेषितं, सामवायिकेषु विकम्मस्व, अपगच्छ वा, ततः पणशेषमबाप्स्यसि' इति । ततस्सित्रणः परेषु ग्राहयेयुः—'एतदरिप्रदत्तम्' इति

शात्र प्रख्यातं वा पण्यमित्रज्ञातं विजिगीषुं गच्छेत्। तदस्य वैदेहकव्यञ्जनाश्शत्रुमुख्येषु विक्रीणीरन्। ततस्सित्रिणः परेषु ग्राहयेयुः— 'एतत्पण्यमरिप्रदत्तम्' इति ।

महापराधानर्थमानाभ्यामुपगृह्य वा शक्षरसाग्निभिरमित्रेण प्रणिदध्यात् । अथेकममात्यं निष्पातयेत् । तस्य पुत्रदारमुपगृह्य रात्रौ हतमिति स्थाप-येत् । अथामात्यः शत्रोस्तानेकैकताः प्ररूपयेत् । ते चेद्ययोक्तां कुर्युः, न चैनान् ग्राहयेत् । अशक्तिमतो वा ग्राहयेत् । आप्तभावोपगतो मुख्यादस्या-त्मानं रक्षणीयं कथयेत्; अथामित्रशासनम् मुख्यायोपधाताय प्रेषितमुभय-वेतनो ग्राहयेत् ।

उत्साहशक्तिमतो वा प्रेषयेत्—'अमुख्य राज्यं गृहाण यथास्थितो न सन्धि: इति । ततस्सित्रणः परेषु ग्राह्ययेयुः, एकस्य स्कन्धावारं विविध-मासारं वा घातयेयुः, इतरेषु मेत्रीं बुवाणाः । तं सित्रणः—'त्वमैतेषां घातियतन्यः' इत्युपज्येयुः ।

यस्य वा प्रवीरपुरुषो हस्ती हयो वा म्रियेत, गूढपुरुषेहैन्येत ह्रीयेत बा, तं सिन्नणः परस्परोपहतं ब्रूयुः। ततः शासनमभिशस्तस्य प्रेषयेत्—'भूयः कुरु ततः पणशेषमवाप्स्यसि' इति । तदुभयवेतना ग्राहयेयुः। भिन्नेष्वन्यतमं स्रभेत ।

तेन सेनापतिकुमारदण्डवारिणो व्याख्याताः। साङ्घिकं च भेदं प्रयुज्जीतेति भेदकर्म। तीक्ष्णमुत्साहिनं व्यसनिनं स्थितशत्तुं वा गूढपुरुषाः शस्त्राग्निरसा- १४५-१४६ प्रक.] अर्थावर्थं संशयपुरताः, तासामुपायविकल्पजास्सिद्धयस्य 109 विविस्ताध्ययेयुः । सौकर्यतो वा तेषामध्यतमः । तीक्ष्णो ह्ये कः शखरसाग्नि- भिस्साधयेत् । अय सर्वसंदोहकमं विशिष्टः वा करोति । इत्युपायचतुर्वगः ।

पूर्वैः पूर्वश्चास्य लिष्ठः । सान्त्वमेकगुणम् । दानं द्विगुणं सान्त्य-पूर्वम् । भेदिस्तिगुणः सान्त्वदानपूर्वः । दण्डश्चतुगुंणः सान्त्वदानभेदपूर्वः' इत्यभियुठजानेषूक्तम् ।

स्वभूमिष्ठेषु तु त एवोपायाः । विशेषस्तुः—स्वभूमिष्ठानामन्यतमस्य पण्यागारेरभिज्ञातान् दूतमुख्यानभीक्षणं प्रेषयेत्, त एनं सन्धौ परिहिंसायां वा योजयेयुः, अप्रतिपद्यमानं 'कृतो निस्सिधः' इत्यावेदयेयुः । तिमतरे-षामुभयवेतनास्यंकामयेयुः—'अयं वो राजा दुष्टः' इति । यस्य वा यस्माद्भय वैरं द्वेषो वा, तं तस्माद्भेदयेयुः 'अयं ते वात्रुणा संधत्ते, पुरा त्वामितंषत्ते क्षिप्रतरं सन्धोयस्व, निग्नहे चास्य प्रयतस्व इति । आबाह-विवाहाभ्यां वा कृत्वा संयोगमक्षयुक्तान् भेदयेत् । सामन्ताटविकतत्कु-लोनावरुद्धेरुचेषां राज्य निषातयेत् । सार्थत्रजाट दण्डं वाऽभिसृतम्, परस्परापाश्रयाइचेषां जातिसङ्घाविछद्वेषु प्रहरेयुः । गूढाश्चाग्निरसंबाल्चेण ।

बोतंसगिस्रवन्नारीन्योगेराचरितंकाठः । घातयेत्परमिश्रायां विश्वासेनामिषेण च ।। इति कौटिसीयार्थेशास्त्रे अभियास्यत्कर्मणि नवमाधिकरणे षष्ठोऽध्ययः दृष्यशत्रुषंयुक्ता, आदितः सप्तविशतिशतसमः ।

# १४५–१४६ प्रक. अर्थानर्थसंशथयुक्ताः तासाऱ्पायविकल्पजास्सिद्धयश्च ।

कामादिरुत्सेकः स्थाः प्रकृतीः कोषयति ; अपनयो बाह्याः । तदुभय-मासुरौ वृत्तिः । स्वजनविकारः कोषः । परवृद्धिहेतुषु आपदर्थोऽनर्थं-स्क्रंगय इति । बोऽर्घः शतुबृद्धिमप्राप्तः करोति, प्राप्तः प्रत्यावेयः परेषां भवति, प्राप्त्यमाणो वा क्षयन्ययोदयो भवति, स भवत्यापदर्धः । यथा —सामन्ता-नामामिषभूतः, सामन्तन्यसनजो छ।भः, शत्रुप्राधिता दा स्वभावाधिगम्यो वा छ।भः, पश्चात्कोपेन पार्ष्णिग्राहेण वा विगृहीतः पुरस्ताल्लामः, मित्रोच्छेदेन सन्धिन्यतिक्रमेण वा मण्डलविरुद्धो लाभ इत्यापदर्थः ।

स्वतः परतो वा भयोत्पत्तिरित्यनर्थः ।

तयो: 'अर्थो न वेति', ''अनर्थो न वा' इति. 'अर्थोऽनर्थः' इति, 'अनर्थः अर्थ' इति संशयः।

षत्रु मित्रमृत्साहयितुमर्थो न वेति संशयः । शत्रुबलमर्थमानाभ्यामाबाहयितुमनर्थो न वेति संशयः । बक्रवत्सामन्तां भूमिमादातुमर्थोऽनर्थः इति संशयः । ज्यायसा सम्भूययानमनर्थोऽर्थे इति संशयः । तेषामर्थसं शयमुपगच्छेत् ।

अयोऽर्थानुबन्धः, अयो निरनुबन्धः, अयोऽनथीनुबन्धः, अनथोऽर्थानुबन्धः, अनथोऽनथीनुबन्धः इत्यनुबन्धष्ट्वर्गः। सनुमृत्याटच पार्ष्णिग्राह्यानमथोऽर्थानुबन्धः।

उदासीनस्य दण्डानुग्रहः फलेन अथॉ निरनुबन्धः । परस्यान्तरुक्छेदनमथोऽनर्थानुबन्धः । श्रृत्रतिवेशस्यानुग्रहः कोशदण्डाभ्यामनथोऽर्थानुबन्धः । हीनशक्तिमुत्साह्य निवृत्तिरनथों निरनुबन्धः । ज्यायांसमृत्थाप्य निवृत्तिरनथोंऽनर्थानुबन्धः । सस्य पूर्वः श्रेयानुपसं प्राप्तुम् । इति कार्यावस्थापनम् । समन्ततो युगधदर्थोत्पत्तिस्समन्ततोऽर्थापद्भवति । सेव पार्ष्णिग्राहविगृहोता समन्ततोऽर्थसं श्रथापद्भवति । तयोर्मित्राक्रन्थोपग्रहात्सिद्धः । समन्ततः शत्रम्यो भयोत्पत्तिस्समन्ततोऽनर्थापद्भवति । १५५-१४६ प्रकः] सर्थानर्यसंशययुक्ताः, तासामुपायविकल्पवास्सिद्धयश्च 111

सेव मित्रगृहीता समन्ततोऽनर्थसंशयापद्भवति । तयोध्यलामित्रात्रन्दोपग्रहात्सिद्धिः ।

परमिश्राप्रतिकारो या। इतो लाभ इतरतो लाभ इत्युभयतोऽय-विद्भवति।

तस्यां समन्ततोऽर्थायां च लाभगुणयुक्तमर्थमादातुं यायात् । तुरूपे लाभगुणे प्रधानमासन्नमनतियातिनम्, न ऊप वा येन भवेत्, तमादातुं यायात् ।

इतोऽनर्थं इतरतोऽनथं इत्युभवतोऽनर्थावत् ।

तस्यां समन्ततोऽनथायां च मित्रेभ्यस्सिद्धि लिप्सेसः मित्राभावे प्रकृतौनां लघोयस्येकतोऽनथां साधयेत्। उभयतोनर्थां ज्यायस्या। समन्ततोऽनथां मूलेन प्रतिकुर्यात्। अशक्ये सर्वमृत्सृज्यापगच्छेत्। दृष्टा हि जीवता पुनरापतिः, यथा सुयात्रोदयनाभ्याम्।

इतो लाभ इतरतो राज्याभिमशं इत्युभयतोऽर्थानथांपद्भवति । तस्याम-नर्यसाधको योऽर्थः तमादातुं यायात् ; अन्यथा हि राज्याभिमशं बारयेत् । एतया समन्ततोर्थानर्थापद्यास्याता ।

इतोऽनर्थ इतरतोऽर्थंसंशयः इत्युभयतोऽनर्थार्थसंशयः। सस्यां पूर्वमनर्थं साथयेत्। तत्सिद्धावर्थसंशयम्।

एतया समन्ततोऽनथिंसं शया स्यास्याता । इतोथं इतरतोऽनर्थसं शय इत्युभयतोनर्थार्थसं स्यापत् भवति । एतया समन्ततोऽर्थानर्थसं शया स्याख्याता ।

तस्यां पूर्वी पूर्वी प्रकृतानामनवंस'शयान्मोक्षयितुं यतेतः श्रेयो हि मित्रमनवंस'शये तिछत्र दण्डः, दण्डो वान कोश इति ।

समग्रमोक्षणाभावे प्रकृतीनामवयवान्मोक्षयितुं यतेतः । तत्र पुरुषप्रकृत तीनां च बहुलमनुरक्तं वा तीक्ष्णलुब्धवर्जम् । द्रव्यप्रकृतीनां सारं महोपकारं वा । सन्धिनाऽऽसनेन द्वैधीभावेन वा लधूनि, विपर्ययैः गुक्रणि ।

क्षयस्थानवृद्धीनां चोत्तरोत्तरं लिप्सेत । प्रतिलोम्येन वा क्षयादीनाम् भायत्यां विशेषं पश्येत् । इति देशाबस्थापनम् ।

एतेन यात्रामध्यान्तेष्वर्धानयंसं शयानामुपसं प्राप्तिन्यां ह्याता ।

निरन्तरयोगित्वात्रार्थानर्थसं शयानां यात्रादावर्थः श्रेयानुपसं प्राप्तुं पार्डिणग्राहासारप्रतिवाते क्षयन्ययप्रवासप्रस्यादेयमूलरक्षणेषु च भवति । तथाऽनर्थस्सं श्रयो वा स्वभूमिष्ठस्य विदशो भवति ।

एतेन यात्रामध्येऽधीनधं संशयानामुपसं प्राप्तिन्यास्याता ।

यात्रान्ते तु कर्शनीयमुच्छेदनी वा कर्शयित्वोच्छिदा वाऽष'ः श्रेयानूपस'प्राप्तु नानर्थास्स'शयो वा, पराबाधभयात् ।

सामवायिकानामपुरोगम्य तु यात्रामध्यान्तगोऽनथंस्संशयो वा अया-नुषसंप्राप्तुमनिबन्धगामित्वात् ।

अर्थो धर्मः काम इत्यथं त्रिवर्गः।

तस्य पूर्वः पूर्वेदश्रेयानुषसं प्राप्तुम् ।

**अनर्थोऽधर्मश्शोक इत्यनर्थ** त्रिश्गं: ।

तस्य पूर्वः पूर्वः श्रेयान् प्रतिकर्तुम् ।

अयोऽनर्थ इति, धर्मोऽधर्म इति, कामः शोक इति संशयत्रिवर्गः ।

तस्योत्तरपक्षसिद्धौ पूर्वपक्षश्रेयानुपसं प्राप्तुम् ।

इति कालाबस्थापनम् । इत्यापदः ।

तासां सिद्धिः---पुत्रभातृबन्धुषु सामदानाभ्यां सिद्धिरनुरूपा, पौरजान-पददण्डमुख्येषु दानभेदाभ्यां, सामन्ताटविकेषु भेददण्डाभ्याम् ।

एवाऽनुलोमा विपयंये प्रतिलोमा ।

मित्रामित्रेषु व्यामिश्रा सिद्धिः । परस्परसाधका स्पायाः ।

षत्रोः शिक्कतामात्येषु सान्त्वं प्रयुक्तं शेषप्रयोगं निवर्तयितः ; दूष्यामा त्येषु दानम् । सङ्घातेषु भेदः ; शक्तिमत्सु दण्ड इति ।

गुरुलाषवयोगात्रापदां नियोगविकल्पसमुत्रया भवन्ति ।

'अनेनैबोपायेन नान्येन' इति वियोगः।

'अनेन वाऽन्येन दा' इति विकस्पः।

'भनेनान्येन च' इति समुचयः।

तेषामेकयोगाश्चरदारस्यियोगाश्च ; द्वियोगाष्यट् ; एकश्चतुर्योग इति पञ्च-दक्षोपायाः । तावन्सः प्रतिलोमाः ।

तेषामेकेनोपायेन सिद्धिरेकसिद्धिः, द्वाम्यां द्विसिद्धिः, त्रिभिश्विसिद्धिः। चतुर्भिश्चतुःसिद्धिरिति ।

भर्ममूक्त्वात् कामकलत्वात्रार्थस्य धर्मार्थकामानुबन्धा यार्थस्य सिद्धिस्सा सर्वार्थसिद्धः ।

इति सिद्धयः।

देवादग्निरुदकं व्याधि: प्रमारो विद्रवो दुर्भिक्षमासुरी सृष्टिः इत्यापदः । तासां देवतबाह्यणप्रणिपाततः सिद्धिः । अवृष्टिरतिवृष्टिर्वा सृष्टिर्वा माऽऽसुरी भवेत् ।

तस्यामाथवंणं कमं सिद्धारमभादच सिद्धयः॥

इति कौटिलोयार्थग्रास्त्रे आभियास्यत्कर्मण नवमेऽधिकरणे सप्तमोध्यायः अर्थानयंसंशययुक्तास्तासामुपायविकल्पजास्सिद्धयश्च । आदितोऽष्टा-विश्वतिशततमः । एतावता कौटिलीयस्यार्थशास्त्रस्य अभियास्वत्कर्म नवममधिकरणं समाप्तम् ।

## सांत्रामिकम्—दशममधिकरणम् । १४७ प्रकः स्कन्धावारनिवेशः।

वास्तुकप्रशस्ते बास्तुनि नायकवर्धकिमौहूर्तिकाः स्कन्धावारं वृत्तं दीर्षं चतुरकं वा, भूभिवशेन बा, चतुर्दारं षट्पथं नवसंस्थानं मापयेगुः।

स्नातवप्रसालद्वाराष्ट्रानकसंपन्नं भये स्थाने च । मन्यमस्योत्तरे नवभागे राजवास्तुकं धनुवशतायाममधंविस्तारं, पविचमार्धं तस्यान्तःपुरमन्तर्व-शिकसैन्यं चान्ते निविशेतः। पुरस्तादुपस्थानं, दक्षिणतः कोश्रशसनकार्य-करणानि, वामतो राजीपवाह्यानां हस्त्यश्वरथानां स्थानम्। अतो धनुव्यताः न्तराइवत्वारइश्वकटमेथीप्रतितस्तभ्यसालपरिक्षेपाः । प्रथमे पुरस्तानमिन्तिपुरोहितौ, दक्षिणतः कोष्ठागारं महानसं च, बामतः कुप्यायुवागारम् ।
द्वितीये मौलभृतानां स्थानं अश्वरथानां, सेनापतेश्च । तृतीये हस्तिनः
ओण्यः प्रशास्ता च । चतुर्थे विष्टिणीयको मित्रामित्राटशीयलं स्वपुरुषाविष्ठितम् । वणिश्रो रूपाओवाश्चानुमहापथम् । बाह्यतः सुरुधकश्वपणिनः
सतूर्याग्रयः गूढाश्चारक्षाःशत्रूणामापाते कूपकूटावपातकण्टिकनीश्च
स्थापयेत् । अष्टादश्चगणामारक्षविपर्यासं कारयेत् । दिवामामं च
कारयेदपसर्पज्ञानार्थंम् ।

विवादसौरिकसमाजद्यतवारणं च कारयेत् । मुद्रारक्षणं च । सेनानि-वृत्तमायुधीयमशासनं शून्यपालोऽनुबध्नीयात् ।

> पुरस्तादव्यनस्यम्यमप्रवास्ता रक्षणानि च । यायाद्वर्धकिविष्टिभ्यामुदकानि च कारयेत् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे साङ्ग्रामिके दशमेऽचिकरणे प्रथमोध्यायः स्वन्धावारनिवेशः, आदित एकोनित्रिशच्छततमः ।

### १४८-१४६ प्रक. स्कथवारप्रयाणं, बलव्यसनावस्कन्दकालरक्षणं च ।

ग्रामारण्यानामध्वति निवेद्यान् यवसेन्धनोदक्षक्शेन परिसङ्ख्याय स्वानासनगमनकालं च यात्रां यायात् । तत्व्रतीकारद्विगुणं भक्कोपकरणं बाहयेत् । अशक्तो वा सैन्थेष्वायोजयेत् । अन्तरेषु वा निचिनुयात् ।

पुरस्तान्नायकः । मध्ये कळत्रं स्वामी च । पार्श्वयोरस्या बाहूत्सारः । चकान्तेषु हस्तिनः । प्रसारवृद्धिर्वा सर्वतः । वनाजीवः प्रसारः । स्वदेशा-दन्वायतिर्वीदयः । मिश्रवलमासारः, कलत्रस्थानमपसारः । पश्चात् सेनापतिः पर्यायात्रिविशेतः। पुरस्ताद् अभ्याधाते मकरेण यायात्, पश्चाच्छकटेन, पार्थयोवंच्चेण, समन्ततः सवंतोभद्रेण, एकायने सूच्या। पिंध द्वेधीभावे स्वभूमितो यायात्। अभूमिछानां हि स्वभूमिछा युद्धे प्रतिलोमाः भवन्ति। यो बनमधमाः, अध्यर्धं मध्यमाः, द्वियो-जनमुत्तमाः, सम्भाव्या वा गतिः। आश्रयकारौ, संपन्नधातीः, पार्षण-रासारो मध्यम उदासीनो वा प्रतिकतंथ्यः, सङ्कटो मागः शोधियतव्यः, कोशा दण्डा मित्रामित्राटवीवलं विधिः ऋतुर्वा प्रतीक्ष्याः, कृतदुर्गकर्मनि-चयरक्षाक्षयः कोत्वलनिर्वेदो मित्रवलनिर्वेदश्चागमिष्यतिः उपजितारो वा नातित्वरयन्ति, शत्र्रमिप्रायं वा पूरिष्यिति इति शनैर्यायात्। विषयंये शीद्यम्।

हस्तिस्तम्भसङ्क्र्मसेतुबन्धनौकाष्ठवेणुसङ्घातैः, अलाबुचर्मकरण्डद्दतिस-वगण्डिकावेणिकाभिक्चोदकानि तारयेत् ।

तीर्थाभिग्रहे हत्स्यव्वेरन्थतो रात्रावृत्तार्य सत्रं गृह्णीयात् । अनुदके चित्रचतुष्पदं चाध्वप्रमाणे शक्योदकं वाहयेत् ।

दीर्घकान्तारमनुदक यवसेन्धनोदक्होन वा कृच्छ्राध्यानमभियोगप्रस्कन्तं क्षुतिगपास्छवक्छान्तं पङ्कतोयगमभोराणां वा नदीदरीशैकानामुद्याना-पयाने व्यासक्तं एक।यनमार्गं शैलविषमे सङ्कटे वा बहुलोभूत निवेशे प्रस्थितेविसन्नाहं भोजनव्यासक्तं आयतगतपरिश्रान्तमवसुप्तं व्याधिमर-कदुभिक्षपोडितं व्याधिसपत्त्यक्षद्विपमभूयिष्ठं वा बलव्यसनेषु वा ग्वंन्यं रक्षेत्। परसेन्यं चाभिहःयात्।

एकायनमागंत्रयातस्य सेनानिश्चारग्रासाहारशय्यात्रस्ताराग्निनिधानध्य-जायुषसङ्ख्यानेन परबस्ज्ञानम् । तदात्मनो गूहयेत् ।

पार्वतं वा वनदुर्गं सापसारप्रतिग्रहम् । स्वभूमौ पृष्ठतः कृत्वा युष्येत निविद्योत च ॥ इति कौटिल्यार्थशास्त्रे साञ्ज्रामिके दशमेऽ धकरणे द्वितीयोध्यायः स्कन्धा-वारप्रयाणं, बलभ्यसनायस्कन्दकालरक्षणं च, आदितस्त्रिशच्छततमः ।

# १५०-१५२ प्रक. कूटयुद्धविकस्पाः, स्वसै-न्योत्साहनं, स्वबलान्यबलव्यायोगश्च ।

बलविशिष्टः कृतोपजाप: प्रतिविहितर्तुस्स्वभूम्यां प्रकाशयुद्धमुपेयात् ; विषयंये कृष्टयुद्धम् ।

बलव्यसनावस्कन्दकालेषु परमभिहन्यात् । अभूमिष्ठ' वा स्वभूमिष्ठः । प्रकृतिप्रग्रहो वा स्वभूमिष्ठः दूष्यामिश्राटबीबलेबा भङ्गः दत्वा विभूमिश्रामः हन्यात् । संहतानीकं हस्तिर्भिभैदयेत् । पूर्वं भङ्गप्रदानेनानुप्रलीनं भिन्नमिन्नः ।तिनिवृत्य हन्यात् ।

पुरम्तादिभहत्य प्रचलं विमुखं वा पृष्ठतो हस्त्यश्वेनाभिहन्यात्। पृष्ठतोऽभिहत्य प्रचलं विमुखं वा पुरस्तात् सारबलेनाभिहन्यात्। ताभ्यां पाश्वीभिषातौ व्याख्यातौ । यतो वा दुष्यफल्गुबलं ततोऽभिहन्यात्। पुरस्ताद्विषमायां पृष्ठतोऽभिहन्यात्। पृष्ठतो विषमायां पुरस्तादिभहन्यात्। पाश्वेतो विषमायां इतन्तोऽभिहन्यात्।

दूष्यामित्राटवीबलैर्वा पूर्वं योषयित्वा श्रान्तमश्रान्तः परमिहन्यात्। दूष्यबलेन वा स्वयं भङ्ग दत्वा 'जितम्' इति ।वश्वस्तमविश्वस्तः सत्रापाश्र-योऽभिहन्यात्। सार्यं त्रत्रस्कःधावारसंवाहविलोपप्रमत्तमप्रमत्तोऽभिहन्यात्। फलगुबलावच्छन्नस्सारबलो वा परवीराननुप्रविश्य हन्यात्। गोप्रहणेन श्वापदवधेन वा परवीरानाकुष्य सत्रच्छन्नोऽभिहन्यात्।

रात्रावस्कन्देन जागरयित्वानिद्राक्वान्तानवसुप्तान्वा दिवा हम्यात्। सपादचर्मकोशैवी हम्तिभिस्सौप्तिकं दद्यात्। अहस्सन्नाहपरिश्वान्तानप-राह्ह् ऽभिहन्यात्। शुष्कचर्मबृत्त्वाकंराकोशकैभौमिहिषोष्ट्रयूथैवी त्रस्तुभिर-कृतहस्त्यस्चं मिन्नमभिन्नः प्रतिनिवृत्तं हन्यात्। प्रतिसूर्यपातं वा सर्वमभिहन्यात्।

धान्बनसङ्कटपङ्करोलनिम्नविषमनायो गाबश्शकटव्यूहो नीहारो रात्रि-रिति सत्राणि । पूर्वे च प्रहरणकालाः कूटयुद्धहेत्वः।

संप्रामस्तु—निर्विष्टदेशकालो धर्मिमछ। संहस्य दण्डं अपात्— 'तुन्यवेतनोऽस्मि; भवद्भिस्सह भोग्यमिदं राज्यं; मयाऽभिहितः परोऽ भिहन्तव्यः' इति । वेदेष्डप्यनुश्रूयते—'समाप्तदक्षिणानां यज्ञानामवभृषेषु "सा ते गतियां शूराणां" इति ; अपीह श्लोकौ भवतः—

> "यान्यज्ञसङ्ग स्तपसा च विश्राः स्वर्गेषिणः पात्रचयैदच यान्ति । क्षणेन तानप्यतियान्ति शूराः प्राणान् सुयुद्धेषु परित्यजन्तः ॥" "नवं शरावं सिकलस्य पूर्णं सुर्सस्कृतं दर्भकृतोत्तरीयम् । तत्तस्य माभूत्ररकं च गच्छेद्यो भत्ंपिण्डस्य कृते न युद्ध्येत् ॥'" इति मन्त्रिपुरोहिताभ्यामुत्साहयेद्योषान् ।

ब्यूहसंपदा कार्तान्तिकादिश्चास्य वर्गः सवंज्ञदैवसंयोगख्यापनाभ्यां स्वपक्षमुद्धषंयेत् । परपक्षं चोहेजयेत् । 'श्वो युद्धम्' इति कृतोपवासः शखवाहनं चानुशयीत । अथवंभिश्च जुहुयात् । विजययुक्तास्स्वर्णीयाः श्वाशिषो वाचयेत् । बाह्मणेभ्यश्चात्मानमतिसृजेत् ।

शौर्यशिरुपाभिजनानुरागयुक्तमश्रंमानाभ्यामिवसंवादितमनीकगर्भे कुर्वीत
--- पितृपुत्रस्रातृकाणामायुधीयानामध्वजं मुण्डानीकं राजस्थानम् । हस्ती
रथो वा राजवाहनमश्वानुबन्धे । यत्प्रायस्रेन्यो, यत्र वा विनीतः
स्यात्तदिधरोहयेत् । राजभ्यञ्जनो ब्यूहाधिष्ठानमायोज्यः ।

सूतमागधाः शूराणां स्वगंमस्वर्गं भोरूणां जातिसङ्घकुलकर्मवृत्तस्तव च योधानां वर्णयेयुः । पुरोहितपुरुषाः कृत्याभिचारं ब्रूयुः । सत्रिकवर्धकि-मौहूर्तिकास्स्वकर्मसिद्धिमसिद्धि परेषाम् ।

सेनापितरर्थमानाभ्यामिसं स्कृतमनीकमाभाषेत—'शतसाहस्रो राज-वजः । पञ्चाशत्साहस्रः सेनापितकुमारवधः । दशसाहस्रः प्रजीरमुख्यवधः । पञ्चमाहस्रो हस्तिरयवधः । साहस्रोऽधवधः । शत्यः पत्तिमुख्यवधः । शिरो विश्वतिकम् । भोगद्वेगुण्य स्वयंग्राहश्च' इति । तदेषां दशवगिष्वपतयो विद्यः ।

चिकित्सकाः शस्त्रयन्त्रागदस्नेहवस्तहस्ताः, स्नियश्चान्नपानरक्षिण्यः पुरु-षाणानुद्धर्पणीयाः पृष्ठतस्तिष्ठेयुः । अदक्षिणामुखं पृष्ठसस्सूर्यमनुकोमवातमनीकं स्वभूमौ क्यूहेत । परभूमि-व्युहे चार्थारवारयेयुः ।

यत्र स्थानं प्रजवश्याभूमि व्यूहस्य, तत्र स्थितः प्रजवितश्योभयथा जायेत । विपर्यये जयति । उभयथा स्थाने प्रजवे च ।

समा विषमा व्यामिश्रा वा भूमिरिति, पुरस्तात्पार्श्वास्यां पदशाञ्च ज्ञेया । समायां दण्डमण्डलव्यूहाः, विषमायां भौगसंहतव्यूहाः। व्यामिश्रायां विषमव्यूहाः।

विशिष्टवलं भङ्क्तवा सन्धि याचेत । समबलेन याचितः संदधीत । हीनमनुहन्यात् । न त्वेव स्वभूमित्राप्तं त्यक्तात्मानं वा ।

पुनरावर्तमानस्य निराशस्य च जीविते । अधार्यो जायते वेगस्तस्माद्भग्नः न पीडयेत् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे साङ्ग्रामिके दशमाधिकरणे तृतीयोऽध्यायः, कृटयुद्धविकल्पास्स्वर्धन्योत्साइनं स्ववज्ञान्यवस्त्रव्यायोगस्च ।

- आदित एकत्रिशच्छततमः।

### १५३---१५४ प्रक. युद्धभूमयः, पत्त्यश्वरथहस्ति-कर्माणि च ।

स्वभूमिः पत्त्यश्वरथद्विपानाभिष्टा युद्धे निवेशे च । धान्वनवननिझ-स्थलयोधिनां सनकारु। हादिवारात्रियोधिनां च पुरुषाणां नादेयपर्वत। नूप-सारसानां च हस्तिनामश्वानां च यथास्विमष्टा युद्धभूमयः कालाश्च।

समा स्थिराभिकाशा निरुत्खातिन्यचऋखुराऽनक्षग्राहिणो अवृक्षगुल्म-प्रततिस्तम्भकेदारश्चभ्रवल्मोकसिकतापङ्कभङ्करदरशहीना च रथभूमिः।

हस्त्यश्वयोमंनुष्याणां च समे विषमे हिता युद्धे निवेशे च। अण्यश्मवृक्षा हस्वलङ्कानीयश्वञ्चा मन्ददरणदीषा चाश्वभूमिः। स्थूलस्याण्वश्मवृक्षप्रतिवश्मीकगृष्टमा पदासिभूमिः।

गम्पर्शेलिस्रविषमा मर्दनीयवृक्षा छेदनीयप्रतः पङ्कमञ्जूरदरण-होना च हस्तिभूमिः। अक्रण्डिकन्यबहुविषमा प्रत्यासारवतीति पदातीनामतिश्रयः। द्विगुणप्रत्यासारा कर्दमोदकखठजनहीना निरुशकंरेति वाजिनामतिश्रयः। पासुकर्दभोदकनलशराधानवती श्वसंष्ट्रहोना महावृक्षशासाधातिव-युक्ते ति हस्तिनामतिश्रयः।

तोयाशयाश्रयवती निरुत्खातिनी केदारहीना ब्यावतंनसमर्थेति रथा-नामतिशयः।

उक्ता सर्वेषां भूमिः।

एतया सर्वबलनिवेशा युद्धानि च व्याख्यातानि भवन्ति ।

भूमिवासवनविचयो विषमतोयतीर्थवातरिमग्रहणं, बीवधासारयोर्घातो रक्षा वा, विशुद्धिस्थापना च बलस्य, प्रसारवृद्धिर्बाहूत्सारः, पूर्वप्रहारो व्यावेशनं, व्यावेशनमारुवासो ग्रहणं मोक्षणं मार्गानुसारिविनिमयः कोश-कुमाराभिहरणं जधनकोट्यभिघातो हीनानुसारणमनुयानं समाजकमेंत्यश्व-कर्माणि।

पुरोयानमकृतमार्गवासतीर्थकर्म बाह्रत्सारस्तोयतरणावतरणे स्थानगम-नावतरणं विषमसंबाधप्रवेशोऽग्निदानशमनमेकाङ्गविजयः भिन्नसंधानम-भिन्नभेदनं व्यसने त्राणमभिधातो विभोषिका त्रासनमौदार्यं ग्रहणं मोक्षणं सालद्वाराष्ट्रालकभठजनं कोश्चवाहनापबाहनमिति हस्तिकर्माणि।

स्वयलरक्षा चतुरङ्गबलप्रतिषेषः संग्रामे ग्रहणं मोक्षणं भिन्नसंघानम-भिन्नभेदनं त्रासनमौदार्थं भीमचोषश्चे ति रयकमण्णि ।

सर्वदेशका अशस्त्रवहुनं व्यायामञ्चेति पदातिकर्माणि ।

शिविरमार्गसेतुकूपतीथंशोधनकर्म यन्त्रायुधावरणोपकरणप्रासवहनमा-योधनाच प्रहरणावरणप्रतिविद्धापनयनमिति विधिकमीणि ।

कुर्याद्रवाश्वव्यायोगं रथेष्वरूपहयो नृपः । खरोष्ट्रशकटानां वा गर्भमरूपगजस्तवा ।। इति कौटिलोयार्थशास्त्रे सांग्रामिके दशमाधिकरणे चतुर्थोऽच्यायः

युद्धभूमयः, प्रस्थव्यरबहस्तिकर्माणि आदितो द्वात्रिशच्छततमः।

# १५५—१५७ प्रक. पक्षकक्षोरस्यानां बलामतो व्यूहविभागः, सारफल्युबलविभागः, पत्त्यश्वरथ-हस्तियुद्धानि च ।

पञ्चधनुरशतापकृष्टदुगंमवस्थाप्य युद्धमुपेयाद् भूमिवशेन वा । विभक्त-मुख्याम बक्षुविषये मोक्षयित्वा सेनां सेनापतिनायकौ व्यूहेयाताम् । श्वमान्तरं पत्तिं स्थापयेत् । त्रिशमान्तरमञ्ज । पञ्चशमान्तरं रथं, हस्तिनं वा । द्विगु-णान्तरं त्रिगुणान्तरं वा व्यूहेत । एवं यथासुखमसम्बाधं युध्येत ।

पञ्चारित धनुः ; तस्मिन् धन्बिनं स्थापयेत् । त्रिधनुष्यस्यं, पञ्चधनुषि रथं हस्तिनं वा ।

पञ्चधनुरनोकसन्धिः पक्षकक्षोरस्यानाम् । **अश्वस्य त्रयः पुरुषाः प्रतियो**-द्धारः । पञ्चदश रथस्य, हस्तिनो वा, पञ्च वाश्वाः । तावन्तः पादगोपाः वाजिरश्रद्धिपानां विधेयाः ।

त्रीणि त्रिकाण्यनोकं रथानामुरस्यं स्थापयेत् । ताबत्कक्षं, पक्षं चोभ-यतः । पञ्चचत्वारिशद् एवं रथा व्यूहे भवन्ति । हे शते पञ्चविशितिक्चाइनाः, षट्शतानि पञ्चसप्तिद्वच पुरुषाः प्रतियोद्धारः । तावन्तः पादगोपा वाजिर-थद्विपानाम् । एव समव्यूहः । तस्य द्विरथोत्तरा वृद्धिरा एकविशितिरथा-दित्येवमोजा दश समव्यूहप्रकृतयो भवन्ति । पक्षकक्षोरस्यानामतो विषमसंक्याने विषमव्यूहः । तक्ष्यापि द्विरथोत्तरा वृद्धिरा एकविश्वितिरथा-रथादित्येवमोजा दश विषमप्रकृतयो भवन्ति । अतस्तिन्यानां व्यूहशेष-मावापः कार्यः ।

रथानां द्वौ त्रिभागावञ्जेष्वावाययेन् । शेषमुरस्यं स्थापयेत् । एवं त्रिभागोनो रथानामावायः कार्यः ।

तेन हस्तिनामश्वानाम् आवापो ब्याख्यातः ।

यानदश्वरद्यद्विपानां युद्धसम्बार्धं न कुर्मात्, ताबदावापः कार्यः । दण्डवाहुल्यमादापः । पत्तिवाहुल्यः प्रत्यावापः । एकाञ्जवाहुल्यमन्वावापः । दूब्य शहुस्यमत्या वापः । परवापात् प्रत्यावापादा चतुर्गुं यश्वाऽष्टगुणादिति । वा विभवतस्यैन्यानामावापः कार्यः ।

रथन्यूहेन हस्तिन्यूहो व्याख्यातः । व्यामिश्रो वा हस्तिरथाश्वानाम् । वकान्तयो हस्तिनः, पाश्वयोरश्वामुख्या रथास्ये उरस्य । हस्तिनामुरस्य रथानां कक्षावश्वानां पक्षाविति मध्यभेदी । विपरीतोऽन्तभेदी । हस्तिन नामेव तु शुद्धः । सान्नाह्यानामुरस्यम्, औपवाद्यानां जघनं, व्यलानां कोट्याविति ।

अध्त्रव्यूहो वर्निणामुरस्यं शुद्धानां कक्षपक्षाविति ।

पत्तिभ्यूहः पुरस्तादावरणिनः पृष्ठतो धन्त्रित इति । शुद्धाः । पत्तयः प्रभारक्षाः पादर्वयोहंस्तिनः पृष्ठतो रथाः पुरस्तात्परन्यूह्वकोन वा विपर्यास इति । द्वयङ्गवलविभागः । तेन त्रयङ्गवलविभागः न्याख्यातः ।

दण्डसम्पत्सार्वलं पुंसाम् । हस्त्यश्वयोधिशेषः । कुलं जातिः सत्त्वं वयःस्थता प्राणो वर्षाजवस्तेजशिशलां स्थेयंमुदग्रता विधेयत्वं सुव्यञ्जना-चारतेति । पत्त्यश्वरचद्धिपानां । सारित्रभागमुरस्थं स्थापयेत्, हो विभागौ कक्षं पक्षं चोभवतः । अनुलोमममुसारम् । प्रतिलोमं तृतीयसारम् । फल्गु । प्रतिलोमम् । एवं सर्वमुपयोगं गमयेत् ।

फल्गुबलमन्तेब्ववधाय वेगोऽभिहुतो भवति । सारबलमग्रतः कृत्वा कोटीब्बनुसारं कुर्यात् । जबने तृतीयसारं, मध्ये फल्गुबलमेतत् सहिष्णु भवति । व्यूहं तु स्थापयित्वा पक्षकक्ष्योरस्यानामेकेन द्वाभ्यां बा प्रहरेत् । शेर्षेः प्रतिगृह्णीयात् ।

यस्य परस्य दुबंलं बीतहस्त्यश्वं दूष्यामात्यकं कृतोपजापं वा, तत्मभूतसारेणाभिहन्यात्। यद्वा परस्य सारिष्ठं, तद्विगुणसारेणाभि-हन्यात्। यदञ्जभल्पसारमात्मनस्तद्वहुनोपचिनुयात्। यतः प्ररस्याप-षयस्ततोऽभवाशे व्युद्देतं, यतो वा भयं स्यात्।

अभिसृतं परिमृतमतिसृतमपसृतमुन्मध्यावधानं बलयो गोमूकिकाः मण्डलं प्रकीणिका व्यवृत्तपृष्ठमनुवंशानग्रतः पाद्यम्यां पृष्ठती भग्नरक्षाः मग्रानुषातः इत्यद्ययुद्धानि ।

प्रकीणिकावजन्यितान्येव, चतुर्णामञ्जानां व्यस्तसमस्तानां वा घातः, पक्षकक्षोरस्यानां च प्रभव्जनमवस्कन्दः सौप्तिकं चेति हस्तियुद्धानि ।

उन्मध्यावधानवजन्यितान्येव स्वभूमावभियानापयानस्थितयुद्धानीति रथयुद्धानि ।

सर्वदेशकालप्रहरणमुयांशुदण्डरचेति पत्तियुद्धानि ।

एतेन विधिना व्यूहानोजान्युग्मांश्च कारयेत् ।
विभवो यावदङ्गानां चतुर्णां सटशो भवेत् ॥

द्वे शते धनुषां गत्वा राजा तिष्ठेतप्रतिग्रहेः ।

भिन्नसङ्खातनं तस्मान्न युष्येताप्रतिग्रहः ॥

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे सांग्रामिके दशमाधिकरणे पञ्चमोऽध्यायः

पक्षकक्षीरस्यानां बलाग्रतो व्यूहिवभागः, सारकल्गुबलविभागः,

पत्त्यस्वर्यहस्तियुद्धानि च आदितस्वर्यास्त्रशच्छततमः ।

# १५८-१५६ प्रक. दण्डभोगमण्डलासंहतन्यूहब्यूहनं, तस्य प्रतिन्यूहस्थापनं च।

'पक्षावुरस्यं प्रतिग्रहः' इत्योशनसो ब्यूहविभागः । 'पक्षौ कक्षावुरस्यं प्रतिग्रहः' इति बार्हस्पत्यः ।

प्रयक्षकक्षोरस्या उभयोः। दण्डभीगमण्डलासंहताः प्रकृतिब्यूहाः तत्र तिर्यग्वृत्तिर्वण्डः। समस्तानामन्बावृत्तिभीगः। सरतां सर्वतोवृत्तिः मण्डलः। स्थितानां पृथगनीकवृत्तिरसंहतः।

पक्षकक्षोरस्येस्समं वर्तमानो दण्डः । स कक्षातिकान्तः प्रदरः । स एव पक्षकक्षाभ्यां प्रतिकान्तो दढकः, स एव अतिकान्तः पक्षाभ्यामसद्यः; पक्षाववस्थाप्योरस्याभिकान्तः श्येनः ; विपर्यये चापं ; चापकुक्षः, प्रतिष्ठः बुप्रतिष्ठश्च । चापपक्षस्सठत्रयः ; स एबोरस्यातिकान्तो विजयः १४५-१४६ वक.] दण्डमोगवण्डलासंहतन्यृहमं, तस्य प्रतिन्यृहस्थापमं च 123 स्थूलकर्णपक्षः स्थूलकर्णः ; द्विगुणपक्षास्स्थूलो विद्यालविजयः ; खचभिक्रान्त-पक्षश्चममुखः ; विपर्यये महास्यः ।

अञ्बंदाजिदंग्डः सूची ; हो दण्डो बलयः ; चत्वारो दुर्जय इति दण्डम्यूहाः ।

पक्षकक्षोरस्यैर्बिषमं वर्तमानो भोगः। स सर्पसारी गोमृत्रिका वा । स युग्मोरस्यो दण्डपक्षः शकटः; विपर्यये मकरः; हस्त्यश्वरर्थव्यंतिकीर्णः शकटः पारिपतन्तक इति भोगव्यूहाः।

पक्षकक्षोरस्यानाम् एकीभावे मण्डलः। स सर्वतोमुखः, सर्वतोभद्रः, अष्टानीको दुर्जय इति मण्डलव्यृहाः।

पक्षकक्षोरस्यानां असंहतादसंहतः। स पञ्चानीकानामाकृतिस्थाप नाद्वज्ञो गोधा द्या । चतुर्णामुद्यानकः काकपदा द्या । त्रयाणमधंचन्द्रकः ककंटकश्रृङ्को वाइत्यमंहतन्यूहाः।

रधारेस्यो हस्तिकक्षोऽदवपृष्ठोऽरिष्टः।

पत्तयोऽहका रथा हस्तिनश्चानुपृष्ठमचलः।

हस्तिनोऽश्वा रथाः पत्तयस्वानुपृष्ठमप्रतिहतः ।

तेषां प्रदरं दृढकेन घातयेत् दृढकमसह्योन ; इयेन वापेन ; प्रतिष्ठं सुप्रतिष्ठेन ; सञ्जयं विजयेन ; स्थूलकर्णां विशास्त्रविजयेन ; पारि-पतन्तकं सर्वतोगद्रोण । दुर्जयेन सर्वान् प्रतिब्यूहेतः।

पत्यश्वरथिवानां पूर्वेपूर्वमुत्तरेण शतयेत्। हीनाञ्जमधिकाञ्जेन वेति। अञ्जदशकस्यैकः पतिः पदिकः; पदिकदशकस्यैकः सेनापितः; तद्शकस्यैको नायक इति। स तूर्यधोषध्वश्वपताकाभिः व्यूहाञ्जानां संज्ञा-स्थापयेद् अञ्जविभागे सञ्जाते स्थाने गमने व्यावर्तने प्रहरणे च। समे व्यूहे देशकालसारयोगातिसाद्धिः।

यन्त्रे रुपनिषद्योगेः तीक्ष्णेर्व्यासक्तवातिभिः । मायामिददैवसयोगेः शकटेहेस्तिभूषणेः !! दूष्यप्रकार्यगोयृथेस्स्कन्धावारपदीपनै: । कोटीजधनवातैर्वा दूतव्यक्जनभेदनैः ।। दुर्गं दग्धं हुतं वा ते कोप: कुल्यः समृत्थितः। शशुराटिको वेति परस्योद्वे गमाचरेत्।। एकं हत्यात्र वा हत्यादिषुः क्षिप्तो धनुष्मता। प्राज्ञेन तु मितः क्षिप्ता हत्यादुर्भगतानिष।। इति कौटिलोयार्थशास्त्रे संग्रामिके दशमाधिकरणे षष्ठोऽध्यायः दण्डभोगमण्डलासंहतन्यूहन्युहनं तस्यप्रतिन्यूहस्थापनं च। आदितश्चतुर्लिशच्छततमः एतावता कोटिलीयार्थशासस्य सांग्रामिकं दशममिषकरणं समासम्।

# ११ अधि. संधवृत्तम् । १६०–१६१ प्रक. भैदोपादानानि, उपांशुदण्डश्च ।

सङ्घ त्राभो दण्डमित्रलाभामामुत्तमः। सङ्घ हि संहतत्थादधृष्याः परेषाम्। ताननुगुणान् भुञ्जीत सामदानाभ्याम्। विगुणान् भेददण्डाभ्याम्। काम्बोजसुराष्ट्रक्षत्रियश्रेण्यादयो वार्ताशस्त्रोपजीविनः।

लिच्छिविकवृत्रिकमल्लकमद्रककुकुरकुष्पाञ्चालादयो राजगब्दोपजी-विनः ।

सर्वेषामासन्नाः सन्निणः सङ्घनां परस्परन्य ज्ञहेषवेरकलह्स्थानान्युपलभ्य कमाभिनीतं भेदमपचारयेषुः—'असौ त्वा विजल्पति' इति । एवमुभयतः । बद्धरोषाणां विद्याशिल्पयूतवेहारिकेष्वाचार्यव्यव्यवना बालकलहानुत्पादयेषुः । वेशशौण्डिकेषु वा प्रतिलोमप्रशंसाभिः सङ्घमुरूयमनुष्याणां
तीक्षणाः कलहानुत्पादयेषुः ; कृत्यपक्षोपप्रहेण वा । कुमारकान् विविष्टिच्छविदक्या हीनच्छिन्दिकानुत्साहयेषुः । विशिष्टानः चेकपानं विवाहं हीनेभ्यो
वारयेषुः । हीनान् वा विशिष्टरेरेकपाने विवाहं वा योजयेषुः । अवहीनान्
वा तुल्यभावोपगमने कुलतः पौरूषतः स्थानविषयांसतो वा । अयबहारमवस्थितं वा प्रतिलोगल्यापनेन निशामयेषुः । विवादपदेषु वा द्राम्यपशुमनु-

ष्याभिवातेन रात्रौ तीक्ष्णाः कलहानुत्पादयेयुः। सर्वेषु च कलहस्थानेषु हीनपर्क्ष राजा कोशदण्डाभ्यामुपगृद्धा प्रतिपक्षवधे योजयेत्, भिन्नानपवाह-येदा । एक देशे समस्तान् वा निवेश्य भूमी चैथां पञ्चकुलीं दशकुली वा कृष्यां निवेशयेत्। एकस्था हि शस्त्रग्रहणसमर्थास्त्युः। समवाये चैषा-मत्ययं स्थापयेत् । राजशब्दिभिरवरुद्धमवक्षिप्तं वा कुल्यमभिजातं राज-पुत्रत्वे स्थापयेत् । कार्तान्तिकादिश्रास्य वर्गी राजरुश्वण्यतां सङ्घेषु प्रका-शयत्। सङ्घमुख्यांश्च धर्मिछानुपजपेत्—'स्वधर्मममुख्य राज्ञः पुत्रे भ्रातरि वा प्रतिपद्यध्वम्' इति । प्रतिपन्नेषु कृत्यपक्षोपग्रहार्थमर्थं दण्डं 🔻 प्रेषयेत् । विकमकाले घौण्डिकव्यञ्जनाः पुत्रदारप्रेतापदेशेन 'नेषेचनिकम्' इति मदनरसयुक्तान् मद्यकुम्भान् शतशः प्रयच्छेयुः । चेत्यदेवतद्वाररक्षास्थानेषु च संत्रिणः समयकमंतिक्षेपं सहिरण्याभिज्ञानमुद्राणि हिरण्यभाजनानि च प्ररूपयेयुः । त्रयमानेषु च सङ्घेषु 'राजकीयाः' इत्यावेदयेयुः । अथावस्कन्दं दद्यात् । सङ्घानां वा वाहनहिरण्ये कालिके गृहीत्वा सङ्घमुख्याय प्रख्यातं द्रव्यं प्रयच्छेत् । तदेवां यापिते 'दत्तममुख्मै मुख्यःय' इति ब्रूषात् ।

एतेन स्कन्धावाराटवीभेदी व्याख्यातः।

सञ्जम्ख्यपूत्रमात्मसंभावितं वा सत्री ग्राहयेत्— 'अमुख राज्ञ: पुत्रस्त्वं शत्रुभयादिह न्यस्तोऽसि' इति ; प्रतिपन्नं राजा कोशदण्डाभ्यां उपगृह्य सङ्घेषु विकामयेत् ; अवाहार्थस्तमपि प्रवासयेत् ।

बन्धिकपोषकाः सवकनटनर्तकसौभिका वा प्रणिहिताः स्नीभिः परम-रूपयौवनाभिरसञ्ज मुख्यानुन्मादयेयुः । जातकामानामन्यतमस्य कुत्बाऽन्यत्र गमनेन प्रसभहरणेन वा कलहानूत्पादयेयुः। कलहे तीक्ष्णाः कमं कूर्यः-- 'हतोऽयमित्थं कामुकः' इति ।

विसंवादितं वा मर्षयमाणमभिसृत्य स्त्री ब्रूयात् — 'असौ मां मुख्य-स्त्विय जातकामां बाधते ; तस्मिन् जीवति नेह स्थास्यामि' इति घातमस्य प्रयोजयेत् ।

प्रसह्यापहुसा वा वनान्ते कीडागृहे बाऽपहुसीर रात्री सीक्ष्णेन घात-येत्। स्वयं वारसेन। ततः प्रकाशयेत्—'अमुना मे प्रियो हतः' इति। जातकामं वा सिद्धन्यरुजनः सांवनिकोिभरौषधीभिरधंवास्य रसेनाति-संघायापगच्छेत्। तिस्मनपन्नान्ते सित्रणः परप्रयोगमिभर्शसेयुः—'आढ्य विधवा गूढाजीवा योगस्त्रियो वा दायिनक्षेपार्धं विवदमानास्सङ्ख मुख्यानुन्मा-दयेयुः' इति। अदिति कौशिकस्त्रियो नतंकीगयना वा। प्रतिपन्नान् गूढ-वेश्मसु रात्रिसमागमप्रविद्धांस्तीक्षणा हन्युबंध्वा हरेयुवा। सन्नो वा स्नोलोलुपं सङ्खमुख्यं प्रक्षपयेत्—'अमुष्मिन् प्रापे दिरद्रकुलमपसृतं ; तस्य स्नो राजाहां, गृहाणैनाम् इति। गृहोतायामधंमासान्तरं सिद्धव्यञ्जनो दूष्य सङ्खमुख्य-मध्ये प्रकोशेत्—'असौ मे मुख्यां भार्या स्नुषां भीगनीं दुहितरं वाऽधिचरित' इति। तं चेत्सङ्घो निगृह्णीयात्, राजनमुषगृद्धा विगुणेषु विक्रमयेत्। अनिगृहीते सिद्धव्यव्यव्यं हि रात्रौ तीक्षणाः प्रवासयेयुः। नतस्तद्वयव्यवनाः प्रकोशेयुः—'असौ बहाहा ब्राह्मणीजारस्त्र' इति।

कार्तान्तिकञ्यञ्जनो वा कःयामन्येन वृतामन्यस्य प्ररूपयेत्—'अमुष्य कन्या राजपलो राजप्रसदिनी च भविष्यति ; सर्वस्वेन प्रस्**श वेनां रुभस्व'** इति । अरुभ्यमानायां परपक्षमुद्धर्षयेत् । लब्धायां सिद्धः कलहः ।

भिक्षुकी वा त्रियभार्यं मुख्यं त्रूयात्—"असी ते मुख्यो यौवनोत्सिक्तो भार्यायां मां प्राहिणोत् ; तस्याहं भयाल्लेख्यमाभरणं गृहीत्वा गवाऽस्मि ; निर्दोषा ते भार्या ; गूढमस्मिन् प्रतिकर्तव्यम् । अहमपि तावत् प्रतिपत्स्यामि" इति । एवमादिषु कलहस्थानेषु स्वयमुत्पाने वा कलहे तीक्ष्णेकृत्पादिते वा हीनपक्षं राजा कोशदण्डाभ्यामुपगृद्ध विगुणेषु विक्रमयेदपवाहयेद्वा ।

सङ्घेष्वेवमेकराजो वर्तेत । सङ्घाश्चाप्येवमेकराजाः तेभ्योऽतिसंवानेभ्यो रक्षयेयुः ।

सङ्घयमुख्यश्च सङ्घेषु न्यायवृत्तिहितः प्रियः । दानतो युक्तः त्रनस्तिष्ठेत्सर्वचित्तः नुवतंकः ।। इति कौटिलीयार्थशास्त्रं सङ्घवृत्ते एकादशाधिकरणे प्रथमोऽध्यायः भेदो-पादानानि, उपांशुदण्डश्च आदितः पञ्चित्रशच्छततमः । एतावता कौटिलीयस्यार्थशास्त्रस्य सङ्घवृत्तमेकादशमधिकरणं समाप्तम् ।

# १२ अघि आबळीयसम्। १६२ प्रक दूतकर्माणि।

'बलायसाऽभियुक्तो दुर्बलस्सवंत्रानुप्रणतो वेतसधर्मा तिष्ठेत् 'इन्द्रस्य हि स प्रणमति, यो वलीयसा नमित' इति भारद्वाजः । 'सर्बसन्दोहेन बकानां युध्येत, पराक्रमो हि व्यसनमपहन्ति ; स्वधमंश्चेष क्षत्रियस्य ; युद्धे जयः पराजयो या' इति विद्यालाक्षः ।

नेति कौटिल्यः सर्वत्रानुप्रणतः कूलेडक इव निराक्षोः जीविते वसित । युघ्यमानश्चाल्पसेन्यस्समुद्रमिवाण्लवोऽवगाहमानस्सीदित । तद्वि-शिष्टं तु राजानमाश्चितो दुगंमविषद्धं वा चेष्टेत । त्रयोऽभियोक्तारो धर्मलोभासुरविजयिन इति । तेषामभ्यवपत्या धर्मविषयी तुष्यति ; तमभ्यवपद्येत । परेषामिष भयात् । भूमिद्रव्यहरणेन लोभविषयी तुष्यति ; तमर्थेनाभ्य अपदेत । भूमिद्रव्यपुत्रदारप्राणहरणेन अपुरविजयी ; तं भूमिद्रव्याभ्यामुष्गृह्याप्राह्यः प्रतिकृवीत ।

तेषामन्यतममुत्तिष्ठमानं सन्धिना मन्त्रयुद्धेन कृष्युद्धेन वा प्रतिध्यूहेत । बातुपक्षमस्य सामदानाभ्यां ; स्वपक्षं भेददण्डाभ्यां ; दुर्गं राष्ट्रंस्कन्धावारं वाऽस्य गूढाव्वास्त्ररसाग्निमिस्साधयेयुः । सर्वतः पार्ष्णमस्य ग्राह्येत् ; अटबीभिर्वा राज्य घातयेत् ; तत्कुलीनावस्द्धाभ्यां वा हारयेत् । अपका-रान्तेषु चारय दूतं प्रेषयेत् । अनपक्षत्य वा संधानम् । तथाऽप्यभिप्रयान्तं कोशदण्डयोः पादोत्तरमहोरात्रोत्तरं वा सन्धि याचेत ।

स चेद्वाडसिन्धं याचेत, कुण्ठमस्मै हस्त्यश्चं दद्यादुत्साहितं वा गरयुक्तम्।

पुरुषसिन्धं याचेत, दूष्यामित्राटबाबलमस्मै दश्चात् योगपुरुषाधि-छितम्। तथा कुर्योद्यथोमयविनाबस्स्यात्। तीक्ष्णबलं वाऽस्मै दद्यात् यदबमानितं विकुर्वीतः। मौलमनुरक्तं वा यदस्य व्यसनेऽपकुर्यात्। कोशसर्निय पाचेत, सारमस्मै दद्यात् यस्य केतारं नािषगच्छेत्; कृष्यमयुद्धयोग्यं वा ।

भूमिसन्धि याचेत, प्रत्यादेवां नित्यामित्रामनपाश्रयां महाक्षयव्यवनि-वेशां बाऽस्मै भूमि दद्यात् ।

सर्वस्थेन या राजधानीवर्जेन सन्धि यःचेत । बलीयस :—

यरप्रसहा हरेदन्यः तरप्रयच्छेदुपायतः ।
रक्षेरस्वदेहं न धनं का हानित्ये धने दया ॥
इति कौटिलायार्थशास्त्रे आवलीयसे दादशेऽधिकरणे प्रथमोऽध्यायः

दूतकर्माणि सन्धियाचनम् आदितः षट्त्रिशच्छततमः ।

#### १६३ प्रक. मन्त्रयुद्धम्।

स चेत्सन्धौ नावितिष्ठेत, न्यादेनं—'इसे षड्गांवशगा राजानो विनष्टाः तेषामनात्मवतां नाहिस मार्गमनुगन्तुं; धर्ममधं चावेक्षस्व; मित्रमुख्या समित्रास्ते, ये त्वां साहसमधर्ममधीतिकमं च ग्राहयन्ति; शूरेस्त्यक्तात्मिभः सह योद्धं साहसं; अनक्षयमुभयतः कर्तुमधमः; दृष्टमधं मित्रमदुष्टं च त्यक्तुमधातिकमः, मित्रबांश्च स राजा भूयश्चतेन अधंन मित्राण्युद्योअ— विष्यति, यानि त्वा सर्वतोऽभियास्यन्ति; न च मध्यमोदासीनयोमंण्डलस्य वा परित्यक्तः; भवांस्तु परित्यक्तो ये त्वा समुद्युक्तमृपप्रेक्षन्ते—भूयः क्षयभ्ययाभ्यां युज्यतां; मित्रात्र भिद्यतां; बर्थनं परित्यक्तमूलं सुक्षेनोच्छे-त्स्याम इति । स भवान्नाहित मित्रमुक्तानामित्राणां श्रोतुं; मित्राण्यु-देजयितुमित्रांश्च श्रेयसा योवतुं; प्राणवंशयममधं घोषनन्तुम्' इति वच्छेत्। तथाऽपि प्रतिष्ठमानस्य; प्रकृतिकोपमस्य कारयेद्यथा संघवृत्ते व्याक्यातं, योगवामने च । तीक्षणरसद्यवयोगं च । यदुक्तमात्मरक्षितको व्याक्यातं, योगवामने च । तीक्षणरसद्यवयोगं च । यदुक्तमात्मरक्षितको

रक्ष्मं, तत्र तीक्ष्णान् रसदांश्च प्रयुक्षीत । बन्धकापोषकाः परमरूपयोव-नाभिः सोभिस्सेनामुख्यानुन्मादयेयुः । बहूनामेकस्यां द्वयोवां मुख्ययोः कामे जाते तीक्ष्णाः कछहानुत्पादयेयुः । कछहेपराजितपक्षं परचावगमने यात्रा-साहाय्यदाने वा भर्तुर्योजयेयुः ।

कामवद्यान्या सिद्धव्यठजनाः सांवननिकीभिरोषघीभिरभिसंघानाय मुख्येषु रसं दापयेयु:।

वैदेहकव्यञ्जना वा राजमहिष्यासमुभगायाः प्रेष्यामासस्रां कामनिभित्त-मधैन अभिनृष्य परित्यजेत् । तस्यैन परिचारकव्यञ्जनोपदिष्ठः सिद्धव्यञ्जन-स्साननिकीमौपधीं दद्याद्वे देहकश्च रीरेऽवधातव्येति । सिद्धे सुभगाया अप्येनं योगमुपदिशेद्र।जशरीरेऽवधातव्या इति । ततो रसेनातिसंदध्यात् ।

कार्तान्तिकव्यज्जनो वा महामात्रं राजलक्षणसम्पर्शं क्रमाभिनीतं वृग्रात्। भार्यामस्य भिक्षुको — 'राजपलो राजभसविनी वा भविष्यसि' इति। भार्याव्यक्रजना वा महामात्रं बृ्यात्— 'राजा किल मामवरोषयिष्यति; तवान्तिकाय पत्रलेख्यमाभरण चेदं परि- व्राजिकयाऽऽहृतम्' इति।

सूदारालिकव्यक्रमनो वा रसप्रयोगार्थं राजवस्तार्थं चास्य लोभनीयमभिनयेत् । तदस्य वैदेहकव्यक्रजनः प्रतिसंदध्यात् ; कार्यासिद्धिः च ब्रुयात् । एवमेकेन दाभ्यां त्रिभिरित्युपायैरेकेकस्य महामात्रः विक्रमायापगमनाय वा योजयेदिति ।

दुर्गेषु चास्य शून्यपालासन्नास्सित्रिणः पौरजानपदेषु मेत्रीनिमित्त-मावेदयेयुः। शून्यपालेनोक्ता योधाश्च अधिकरणस्थादच—'कुच्छू-गतो राजा जीवन्नागमिष्यति न वा ; प्रसह्य वित्तमार्जयध्वमित्रांदच हत" इति । बहुलोभूते तीक्षणाः पौरान्निशास्वाहारयेयुः, मुख्यांवचाभिहन्यः— 'एवं क्रियन्ते, ये शून्यपालस्य न शुश्रुषन्ते' इति । शूर्यपालस्थानेषु च सशोणितानि शस्त्रवित्तबन्धनान्युत्मृजेयुः। ततस्सित्रिणः—'शून्य-पाको घातयति, विलोपयति च' इत्यावेदयेयुः। एवं बानपदान् समाहर्तुर्भेदयेयुः। समाहत् पुरुषांस्तु-प्राममध्येषु रात्रौ तोक्ष्णा हत्वा त्रूपुः 'एवं क्रियन्ते ; ये जनपदमधर्मण वाधन्ते' इति । समुत्पन्ने दोषे शून्यपालं समाहतरि वा प्रकृतिकोपेन घातयेयुः । तत्कुलीनमवस्द्धं वा प्रतिपादयेयुः ।

अन्तःपुरपुरद्वारद्रव्यधान्यपरिग्रहान् । दहेयुस्तांदव हन्युर्वा ब्रूयुरस्यातंवादिनः ॥ इति कौटिलीयार्धशास्त्रे आवलोयसे द्वादशेऽधिकरणे द्वितीयोध्यायः, दूतकर्माणि वाक्ययुद्धं दूतकर्मसमाप्तं मन्त्रयुद्धं

मादितस्सप्तात्रे शच्छततमः।

## १६४-१**६**५ प्रक. सेनामुख्यवधः, मण्डल-प्रोत्साहनं च ।

राज्ञा राजवल्लभानां चासन्नास्सित्रणः पत्त्यश्वरषद्विपमुख्यानां 'राजा कुद्धः' इति सुहृद्धिश्वासेन मित्रस्थानीयेषु कथ्ययेयुः । बहुलीभूते ताक्षणः कृतरात्रिचारप्रतीकाराः गृहेषु 'स्वामिक्चनेन आगस्यताम्' इति ब्र्युः; तान्त्रिगंच्छत एवाभिहन्युः । 'स्वामिक्वेदेशः' इति चासन्नान् ब्र्युः । ये च प्रवातितास्तान् सित्रणो क्र्युः—'एतत्त्वदस्माभिः कथितं, जीवितुकामेन अपकान्तव्यम्' इति ।

येभ्यश्च राजा याचितो न ददाति तान् सित्रणो ब्रूयु:—'उक्तः शून्यपालो राज्ञा 'अयाच्यमयंमसौ चासौ मा याचते ; मया प्रत्याख्याताः शत्रु संहिताः ; तेषामुद्धरणे प्रयतस्व' इति । ततः पूर्ववदाचरेत् ।

येम्यरच राजा याचितो ददाति, तान् सत्रिणो ज्रूयुः—"उक्तः चून्यपालो राजा—याच्यमर्थमसी चासौ च मा याचते ; तेम्यो मया सोऽवीं विश्वासार्थं दसः, शत्र् संहिताः । तेषामुद्धरेषे प्रयक्षस्व' इति । ततः पूर्वदाचरेत् । ये चैनं याच्यमर्थं न याचन्ते, तान् सत्रिणो त्रूयुः—'उक्तः शून्यपालो राज्ञा — याच्यमर्थंमसी चासी च मा न याचते ; किमन्यत् स्वदोष-शिक्कृतस्वात् ; तेषामुद्धरणे प्रयतस्व' इति । ततः पूर्ववदाचरेत् ।

एतेन सर्वः कृत्यपक्षो व्याख्यातः ।

प्रत्यासन्नो वा राजान सनी ग्राहयेत् — 'असौ चासौ च ते महामान्रः शत्र पुरुषेस्सम्भाषते' इति । प्रतिपन्ने दूष्यानस्य शासनहरान् दर्शयेत् — 'एतत्तत्' इति ।

सेनामुख्यप्रकृतिपुरुषान् वा भूम्या हिरण्येन वा लोभियत्वा स्वेषु विक्रमयेदपवाहयेद्धा । योऽस्य पुत्रस्समीपे दुर्गे वा प्रतिवसति, त सित्रणोपजापयेत्—'बात्मसम्पन्नतरस्त्वं पुत्रः तथाऽप्यन्तहिंतः ; तिक्तमपुपेक्षसे । विक्रम्य गृहाण ; पुरा त्वा युवराजो विनाशयित' इति ।

तत्कुलीनमबरुद्धं वा निहरण्येन प्रतिकोभ्य वृयात्—'अन्तर्बलं प्रत्यन्तस्कन्धमन्त वाऽस्य प्रमृद्गीहि' इति ।

आटिवकानार्थमानाभ्यामुपगृह्य राज्यमस्य घातयेत्। पार्ष्णिग्राहं वाऽस्य ब्रूयात्—'एष खन्नु राजा मामुच्छिद्य त्वामुच्छेत्स्यितः; पार्ष्णमस्य गृहाणः ; त्वियि निवृत्तेऽस्याहं पार्ष्णं ग्रढीष्यामि' इति। मित्राणि बाऽस्य ब्रूयात्—'अहं वः सेतुः ; मिय विभिन्ने सर्वानेष वो राजा प्लाविष्यिति' इति। 'सम्भूय वाऽस्य यात्रां विहनाम' इति। तते संहतानामबंहतानां च प्रेषयेत्—'एष खन्नु राजा मामुत्पाठ्य भवत्यु कर्मं करिष्यति। बुध्यध्वं अहं वः श्रेयानभ्यवपत्तुम्' इति

मध्यमस्य प्रहिणुयादुदासनिस्य वा पुनः । यथाऽऽसन्नस्य मोक्षार्थं सर्वस्वेन तदपर्णम् ॥

इति कौटिलीयार्थंशास्त्रे आवलीयसे द्वादशेऽधिकरणे तृतीयोऽध्यायः

सेनामुख्यवधः, मण्डलप्रोत्साहनं च, आदितोऽष्टत्रिशच्छततमः ।

### १६६-१६७ प्रक. शस्त्राग्निरसप्रणिधयः, वीवधासारप्रसारवधरच ।

ये चास्य दुर्गेषु चैदेहकव्यञ्जनाः, ग्रामेषु गृहपतिकव्यञ्जनाः जनपदसन्धिषु गोरक्षकतायसन्यञ्जनाः, ते सामन्ताटविकतत्कुलीनायस्द्धानां
पण्यागारपूर्व प्रेषयेयुः—"अयं देशो हार्यः" इति । आगर्शास्येषां दुर्गे
गूढपुरुषानर्थमानाभ्यां अभिसत्कृत्य प्रकृतिच्छिद्राणि प्रदर्शयेयुः। तेषु
सैस्सह प्रहरेयुः।

स्कन्धावारे वाऽम्य शौण्डिकव्यञ्जनः पुत्रमभित्यक्तं स्थापियत्वा अवस्कन्दकाले रसेन प्रवासियत्वा 'नेषेचिनिकम्' इति मदनरसयुक्तान् मद्यकुम्भांच्छत्शः प्रयच्छेत्। शुद्धं वा मद्यं पाद्यं वा मद्यं दद्यादेकमहः, उत्तरं रसिद्धं प्रयच्छेत्। शुद्धं वा मद्यं दण्डमुख्येभ्यः प्रदाय मदकाले रसिद्धं प्रयच्छेत्।

दण्डमुख्यठजनो वा 'पुत्रमित्यक्तम्' इति-समानम्।

पनकमांसिकौदिनिकशौण्डिकः पूर्णिकव्यव्जना वा पण्यविशेषमवधोष-यित्वा परस्परसङ्घर्षण कालिकं समर्घतरमिति वा परानाहूय रसेन स्वगण्यान्यपचारयेयुः । सुराक्षीरदिधसिपस्तैलानि वा तद्वयवहतृहस्तेषु गृहात्त्रा स्नियो बालाश्च रसयुक्तेषु स्वभाजनेषु परिकिरेयुः ; 'अनेनःर्घेण विशिष्टं वा भूयो दीयताम्' इति तत्रे वाविकरेयुः । एतान्येव वेदेहक-व्यव्जनाः पण्यविकयेणाहतिरो वा हस्त्यश्वानां विधायवसेषु रसमासन्ना दशुः ।

कर्मकरव्यव्जना वा रसाक्तं यवसमुदकं वा विक्रीणारन्। चिर-संस्ष्टा वा गोवाणिजका गवामजाबीनां वा यूथान्यवस्कन्दकालेषु परेषां मोहस्थानेषु प्रमुठचेयुः। अश्वलरोष्ट्रमहिषादीनां दुष्टाश्च तद्वचवजना वा चुचुन्दरीशोणिताक्ताक्षान् ; लूब्धकव्यवजना वा व्यालभृगान् परुजरेभ्यः प्रमुठचेयुः; सपंग्राहा वा सर्पानुग्रविषान् ; हस्तिजीविनो वा हस्तिनः। अग्निजीविनो वा अग्निमबह्नेयुः। गूढपुरुषा वा बिमुखान् पस्यश्वरथ- द्विषमुख्यानिमहन्युः; आदीवयेषुवा मुख्यावासान् । दूष्यानिभाटिबकव्यव्जननाः प्रणिहिताः पृष्ठाभिघातमवस्कन्दप्रसिग्नहं वा कुर्युः। वनगृहा वा प्रत्यन्तस्कन्धमुपनिष्कुष्याभिहन्युः। एकायने वीवधासारप्रसारान् वा। ससञ्चेतं वा रात्रियुद्धं भूरितूर्यमाहत्य वृ्युः—'अनुप्रविष्टास्स्मी स्वसं राज्यम्' इति। राजावासमनुप्रविष्टा वा सङ्कः हेषु राजातं हन्युः। सर्वतो वा प्रयातमेनं म्लेच्छाटिबकदण्डचारिणः सन्नापाश्रयाः स्तम्भवाटा-पाश्रया वा हन्युः। लुब्धकव्यव्जना वाऽवस्कन्दसङ्कलेषु गृह्युद्धहेतु-भिरिमहन्युः। एकायने वा शेलस्तम्भवटख्वजनान्तस्वके वा स्वभूमि-बलेनाभिहन्युः। नदीसरस्तटाकसेतुवन्धभेदवेगेन वा मावयेयुः। धान्वनवतदुर्गनिम्नदुर्गस्थं वा योगाग्निधूमाभ्यां नाश्येयुः। सङ्कट्रगतमिन्नना, धान्वनगतं धूमेन, निधानगतं रसेन, तोयावगादः दुष्टगा हैएक्कचरणैवि तीक्ष्णास्साधयेयः। आदीप्तावासात् निष्यतन्तं वा—

योगवामनयोगाभ्यां योगेनान्यतमेन वा । अभित्रमतिसंदेष्यात् सक्तमुक्तासु भूमिष् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे आवस्रीयसे द्वादशाधिकरणे चतुर्थोऽध्यायः शस्त्राग्निरसप्रणिषयः, वीवषासारप्रसारवधश्च, आदित एकोनचत्वारिशच्छतः।

## १६८-१७० प्रक. योगातिसंधानं, दण्डाति-संधानं, एकविजयश्च ।

दवतेज्यायां यात्रायामिनित्रस्य बहूनि पूज्यागमस्थानानि भक्ति। तत्रास्य योगमुब्जयेत्। देवतागृहप्रवद्योपिर यन्त्रमोक्षणेन गूर्ढार्भित्त शिलां वा पातयेत्। शिलाशस्त्रवर्षमुत्तमागारात्, कवाटमवपातितं वा, भित्तिप्रणिहितमेकदेशबन्धं वा परिधं मोक्षयेत्। देवतादेहस्थप्रहरणानि बाऽस्योपरिठात् पातयेत्। स्थानासनगमनभूमिषु वाऽस्य गोमयप्रदेहेन गम्धोदकावसेकेन वा रसपितचारयेत् पुष्पचूर्णोपहारेण वा। गम्धप्रति-च्छम्मं वाऽस्य तीक्षणं धूममितनयेत्। शूलकूपमवपातनं वा शयना-सनस्याधस्ताचन्त्र गद्धतस्त्रमेनं कीलमीक्षणेन प्रवेशयेत्। प्रत्यासप्ते वामित्रे जनपदाज्जनमवरोधक्षममितनयेत्। दुर्गाचानवरोधक्षममपनयेत्। प्रत्यादेयमरिविषयं वा प्रेषयेत्। जनपदं चैकस्थं शैलवननदीदुर्गेष्वट-वीव्यवहितेषु वा पुत्रभ्रातृपरिगृहीतं स्थापयेत्।

उपरोधहेतको दण्डोपनतवृत्ते ब्याख्याताः ।

तृणकाछम् आयोजनाद्दाहयेत् । उदकानि च दूषयेत् ; अवास्तावयेत्र । कृटकूपावपातकण्डिकनीश्च बहिरु त्रयेत् । सुरङ्गामित्रस्थाने बहुमुखीं कृत्वा विचयमुख्यानिभहारयेत् ; अमित्रं वा । परप्रयुक्तायां वा सुरङ्गायां परिखामुदकान्तिकीं खानयेत् । कूपशास्त्रामनुसालं वा । अतोयकुम्मान् कांस्यभाण्डानि वा शङ्कास्थानेषु स्थापयेत् खाताभिज्ञानार्थम् । कांते सुरङ्गापथे प्रतिसुरङ्गां कारयेत् । मध्ये भिरता धूममुदकं वा प्रयच्छेत् । प्रतिविहितदुर्गो वा मूले दायादं कृत्वा प्रतिलोमामस्य दिशं मच्छेत् । प्रतिविहितदुर्गो वा मूले दायादं कृत्वा प्रतिलोमामस्य दिशं मच्छेत् । यतिविहितदुर्गो वा मूले वियोगं कुर्यात् ; पार्ष्णिं वा गृह्हीयात्, राज्यं वाऽस्य हारयेत्, वीवधासारप्रसारान् वा वारयेत् ; यतो वा शकनुयाद् आक्षिकवादपक्षेपेणास्य प्रहर्तुं ; यतो वा स्वं राज्यं त्रायेत, मूलस्योपवर्यं वा कृर्यात् । यतस्यन्धिपेणास्य प्रहर्तुं ; यतो वा स्वं राज्यं त्रायेत, मूलस्योपवर्यं वा कृर्यात् । यतस्यन्धिपेणास्य प्रहर्तुं ; यतो वा स्वं राज्यं त्रायेत, मूलस्योपवर्यं वा कृर्यात् । यतस्यन्धिपेणास्य प्रहर्तुं ; यतो वा स्वं राज्यं त्रायेत, मूलस्योपवर्यं वा कृर्यात् । यतस्यन्धिपेणास्य प्रहर्तुं ; यतो वा स्वं राज्यं त्रायेत, मूलस्योपवर्यं वा कृर्यात् । यतस्यन्धिपेणास्य प्रहर्तुं ; यतो वा स्वं राज्यं त्रायेत, मूलस्योपवर्यं वा

सहप्रस्थायिनो वाऽस्य प्रेषयेयुः—'अयं ते शत्रु रस्माक हस्सगतः ; पण्यं विप्रकारं वाऽपदिक्य हिरण्यमन्तस्सारबलं प्रेषयस्येनमर्पयेम बद्धं प्रवासित का' इति । प्रतिपन्ने हिरण्यं सारबलं चाददीत ।

अन्तपालो वा दुर्गक्षप्रदानेन वर्लकदेशमितनीय विश्वस्तं धातयेत्। जनपदमेकस्यं वा घातसितुमित्रानीकमावाहयेत् ; तदववद्धदेशमितनीय विश्वस्तं धातयेत्।

मित्रभ्यञ्जनो वा बाह्यस्य प्रेषयेत् — 'क्षीणमस्मिन् दुर्गे धान्यं स्नेहाः

१६⊏-१७० प्रक्] क्षारो लवणं वा ; तदमुष्मिन् देशे काले च प्रवेक्ष्यति ; तदुवगृहाण' इति । ततो रसविद्धं धान्यंस्नेहं क्षारं लवणं वा दूष्यामित्राटविकाः प्रवेशयेयुः ; अन्ये वा अभित्यक्ताः ।

तेन सर्वभाण्डवीवधग्रहणं व्याख्यातम् ।

सन्धिं वा कृत्वा हिरण्येकदेशमस्मै दद्यात् । विलम्बमानस्रोषम । ततो रक्षाविधानान्यवस्रावयेत्; अग्निरसज्ञस्त्रीर्वा प्रहरेत्; हिरण्यप्रति-ग्राहिणो बाऽस्य बल्लभाननुगृह्णीयात् ।

परिक्षाणो बाइस्में दुर्गं दत्वा निर्मेच्छेत् सुरङ्गया । कुक्षिप्रदरेण वा प्राकारभेदेन निर्गच्छेत् ।

रात्राबबस्कन्दं दत्वा सिद्धस्तिष्ठेत् ; असिद्धः पाध्वेंनापगच्छेत् । वाषण्डच्छचाना मन्दपरिवारो निर्गच्छेत् ; प्रेतब्यठजनो वा गृहैनिह्नियेत ; स्रोवेषघारी वा प्रेतमनुगच्छेत्। देवतोपहारश्राद्धप्रहवणेषु वा रसविद्ध-मन्नरातमनम्ज्य कृतीपजापी दूष्यव्यवजनीतिष्यत्य गृहसैन्योऽभिहन्यात् । एवं गृहीतदुर्गी वा प्रास्यप्राशं चैत्यमुपस्थाप्य दैवतप्रतिमाण्छद्रः प्रविष्या-सीत ; गूढभित्ति वा देवतप्रतिमायुक्तं वा भूमिगृहम् । विश्मृते सुरङ्गया रात्रौ राजाबासमनुप्रविश्य सुप्तममित्रं हत्यात्। यन्त्रविश्लेषणं वा विक्लेष्याघस्तादवपातयेत् । रसाग्नियोगेनावलिप्तं गृहं जतुगृहं वाऽधि-श्यानमित्रमादीपयेत् । प्रमदवनविहाराणामन्यतमे वा बिहारस्थाने प्रमतं भूमिगृहसुरङ्गागूढभित्तिप्रविष्टास्तीक्षणा हन्युः, गूढ्प्रणिहिता वा रसेन। स्वपतो वानिष्ठद्वे देशे मृढास्त्रियः सर्परसाग्निधूमानुपरि मृञ्जेयुः। प्रत्युत्पन्ने वा कारणे यद्यदुपपद्येत तत्तदिमित्रेऽन्तःपुरगते गृहसञ्जारः प्रयुठजीत, ततो गूढ्मेवापगच्छेत्, स्वजनसंज्ञां च प्ररूपयेत ।

द्वाःस्थान्वर्षवराध्यान्यान् निगृढोपहितान् परे । तूर्यसंज्ञाभिराहूय द्विषच्छेषाणि धात्तयेत् ॥ इति कौटिलीयास्पर्यशास्त्रे आवलीयसे द्वादशाविकरणे पञ्चमोऽन्यायः, योगातिसम्बानं, दण्डातिसन्धानं, एकविजयश्च आदितश्वत्वारिशच्छतत्तमः। एतावता कौटिलीयस्यार्थवासस्य मावलीयसं द्वादशमधिकरणं समाद्यम् ।

## दुर्गलम्भोपायः त्रयोदशमधिकरणम् । १७१ प्रक. उपजापः।

सर्वज्ञदेव तसंयोग ख्यापनास्यां विजिगोषः परग्राममबाप्तुकामः स्वपक्षमुद्धवंयेत्। परपक्षं चोद्वेजयेत्।

सर्वज्ञख्यापनं तु---गृहगुद्धप्रवृत्तिज्ञानेन प्रत्यादेशो मुख्यानां : कण्टकशोधनःपसर्पागमेन प्रकाशनं राजद्विष्टकारिणां ; विज्ञाप्योः पायनस्या प्रन महष्टसं सर्ग विद्यासंज्ञादिभिः 🕫 विदेशप्रवृक्तिज्ञानं तदहरेव गृहकातिन मुद्रासंयुक्तिन ।

देवत संयोगस्था गनं तु--सुरु ङ्गामुखेनाग्निचेत्यदेवतत्र तिमाच्छिद्रानुत्रविष्टेः रग्निचेत्यदैवतव्यक्रजनेस्संभाषणं पूजनं च ; उदकादुत्थितीर्वा नागवरूण-व्यवज्ञनैस्तंभाषणं पूजनं च ; रात्रवन्तरुदके समुद्रवालुकाकोशं प्रणिधायाग्नि मालादर्शनं ; शिलाशियावगृहोते सवके स्थानं ; उदकवस्तिना जरायणा वा शिरोऽवगृढनासः पृष्कान्त्रकुतीरनकाशिश्चमारोद्रवसाभिक्षं शतपावयं नस्तःप्रयोगः -- तेन रात्रिगणस्वरति इत्युदकचरणानि । तैर्वरुणनागकन्याद्यात्रयक्रियःसम्भाषणं च ; कोपस्थानेषु मुखादग्निधूमोत्सगंः तदश्य स्विवये कार्तान्तिकनैमिक्तिकमौहूर्तिक-पौरानिवेक्षणिकगृढपुरुषाः साचिज्यकरास्तद्शिनश्च प्रेकाशयेयः। परस्य विषये देवतदर्शनं दिव्यकी-अस्य ब्र<u>्यः। देवतप्रश्</u>चनिम<del>त्त</del>वायसाञ्जविद्याः **शदण्डो**त्यत्ति स्बब्तमृगपक्षिन्याहारेषु चास्य विजयं ज्रूयुः; विपरोत्तममित्रस्य। सदुन्दुमिम् उल्को च परस्य नक्षत्रे दर्शयेषुः। परस्य मुख्यान् मित्रत्वेनाः पदिशान्तो दूतव्यक्षनास्स्वामिशस्कारं ब्रूयुः। स्वपक्षवक्षाधानं परपक्षः प्रतिधातं च तुल्ययोगक्षेमममात्यानामायुधीयानां च कथयेयुः। तेषु व्यसनाम्युदयापेक्षणमपत्यपूजनं च प्रयुजीत ।

तेन परपक्षमुत्साहयेद्ययोक्त पुरस्तात्। भूयद्य बक्ष्यामः साधारण-गर्दभेन दक्षान् ; लकुरशाखाहननाम्यां दण्डवारिणः ; कूलेलकेन बीढिग्रान् ; अशनिवर्षण विमानितान्, बिद्देशनावकेशिना बायसपिण्डेन बैलव-

जमेघेनेति विहतासान् ; दुर्भगास्त्रक्कारेण देविणोऽति पूजाफरून् ; व्याध्य-नर्मणा मृत्युकूटेन चोपहितान् ; पोस्नुविखादनेन करकायोष्ट्रचा गर्दभी-क्षीराभिमन्थनेनेति ध्रुवापकारिणः इति । प्रतिपन्नान् अर्थमानाभ्यां योजयेत् । द्रव्यभक्तां चिछद्रे षु चैनान् द्रव्यभक्तादानेरनुगृह्ह्योयात् । अप्रति-गृह्धतां स्त्रीकुमारास्त्रद्भारानभिहरेयुः ।

दुर्भिक्षस्तेनाटब्युपघातेषु च पौरजानपदानुत्साहयन्तः सत्रिणो त्रूयः— 'राजानमनुग्रहं याचामहे ; निरनुग्रहाः परत्र गच्छामः' इति ।

तथेति प्रतिपन्नेषु द्रव्यधान्यपरिग्रहैः । साचिव्यं कार्यंभित्येतदुपजापाद्भृतं महत्॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे दुर्गलम्भोपाये त्रयोदशेऽधिकरणे प्रथममोऽध्यायः उपजापः, आदित एकचत्वारिशच्छततमः ।

#### १७२ प्रक. योगवामनम्।

मुण्डो जटिलो वा पर्वतगुहावासी चतुर्ववं शतायुः ब्रुवाणः प्रभूत-जटिलान्देवासी नगराभ्याशे तिष्टेत्। शिष्याश्चास्य मूलफलोपग-मनेरमात्यान् । च भगवद् श्रंनाय योजयेयुः। समागतश्च राज्ञा पूर्व-राजदेशाभिज्ञानानि कथयेत् — 'शते शते च वर्षाणां पूर्णे ऽहमग्नि प्रविश्य पुनर्वालो भवामि ; तदिह भवत्समीपे चतुर्थमिन प्रविक्ष्यामि । अवश्यं मे भवान्मानियतस्यः ; त्रीन् वरान् वृणोष्वः इति । प्रतिपन्नः बूयात्— 'सप्तरात्रमिह सपुत्रदारेण प्रेक्षाप्रहवणपूर्वं वस्तव्यम्' इति । वसन्त-मवस्कन्देत ।

मुण्डो वा जटिलो वा स्थानिकश्यण्जनः पभूतजटिलान्तेवासी वस्त-शोणितदिग्धां वेणुश्चलाकां सुवर्णंचुर्णेनावलिष्य वल्मीके निदध्याष्ट् उपजिह्विकानुसरणार्थं, स्वर्णनालिकां वा। ततस्सत्री राज्ञः कथयेत्—'असौ सिद्धः पुष्पितं निर्धि जानाति' इति । स राज्ञा पृष्टः 'तथा' इति सूयात्। तज्ञाभिज्ञानं दर्शयेत् । भूयो का हिरण्यमन्तराधाय क्रूयाच्चैनं — 'नाग-रक्षितोऽयं निषिः प्रणिपातसाध्यः' इति । प्रतिपन्नं क्रूयात् — 'सप्तरात्रं' इति समानम् ।

स्थानिकव्यठजनं वा रात्रौ तेजनाग्नियुक्तमेकान्ते तिष्ठन्तं सत्रिणः कमाभिनीतं राज्ञः कथयेयुः—'असौ सिद्धस्सामेधिकः' इति । तं राजा यमर्थं याचेत, तमस्य करिष्यमाणः, 'सप्तरात्रं'—इति समानम् ।

सिद्धव्यव्यक्तो वा राजान जम्भकविद्याभिः प्रकोभयेत् । 'तं राजा' इति समानम् ।

सिद्धव्यञ्जनो वा देशदेवतामभ्यहितामाश्चित्य प्रहवणेरभीक्ष्णं प्रकृति-मुख्यानभिसंबास्य ऋमेण राजानमतिसंदध्यात् ।

जटिलब्यव्जनमन्तरुदकवासिनं वा सर्वश्वेतं तटसुरङ्गाभूमि-गृहापसरणं वरुणं नागराजं वा सित्रिणः ऋमाभिनीतं राज्ञः कथयेयुः । 'तं राजा' इति समानम् ।

जनपदान्तेवासी सिद्धव्यञ्जनो वा राजानं शत्रुदर्शनाय योजयेत्। प्रतिपन्नं विम्बं कृत्वा शत्रुमावाहयित्वानिरुद्धे देशे घातयेत्।

अश्वपण्योपयाता वेदेहकव्यक्रजनाः पण्योपायननिमित्तमाहूय राजानं पण्यपरीक्षायामासक्तमश्रव्यतिकीर्णं वा हत्युरक्वेश्च प्रहरेयुः।

नगराभ्याशे वा चेत्यमारुह्य रात्रौ तीक्ष्णाः कुम्भेषु नालीन्वा विदुलानि वमन्तः—'स्वामिनो मुख्यानां वा मांसानि भक्षयिष्यामः पूजा नो वर्तताम्' इत्यम्यक्तः ब्रूयुः। तदेषां नैमिक्तिकमौहूर्तिकव्यव्जनाः ख्यापयेयुः। मङ्गल्ये वा ह्रदे तटाकमध्ये वा रात्रौ तेजनतेशाभ्यक्ता नागस्पिणः वाक्तिमुसलान्ययोमयानि निष्पेषयन्तस्तथेव ब्रूयुः। ऋक्षचर्मकञ्चुकिनो वा अभ्निधूमोत्सर्गयुक्ता रक्षोरुपं वहन्तिक्षरपस्ययं नगरं कुर्वाणाः स्व्य-सृगालवाशितान्तरेषु तथेव ब्रूयुः। चेत्यदेवतप्रतिमां वा तेजनसेलेनाब्जपटलस्थन्नेनाग्निना वा रात्रौ प्रज्वाल्य तथेव ब्रूयुः। तदन्ये स्थाप-येयुः। देवतप्रतिमानामभ्याइतानां वा घोणितेन प्रसावमतिमानं कुर्युः। तदन्ये व्याप्ययेयुः। देवतप्रतिमानामभ्याइतानां वा घोणितेन प्रसावमतिमानं कुर्युः। तदन्ये स्वाप्ययेयुः। स्विध्यान्तिमानं कुर्युः।

हमशानप्रमुखे वा चैत्यमूर्ध्वेभिक्षितेमंनुष्येः प्रश्पयेयुः । ततो रक्षरूपी
मनुष्यकं याचेत । यरचात्रज्ञ शूरवादिकोऽन्यतमो वा द्रष्ट्रमागच्छेत् तमन्ये
लोहमुसलें:हंन्युः, यथा रक्षोभिहंत इति ज्ञायेत । तदाङ्कुतं राज्ञः तद्विनः
सित्रणश्च कथयेयुः । ततो नैमित्तिकमौहूर्तिकव्यक्ष्यनाः शान्तिं प्रायश्चित्तं
ब्युः, 'अन्यया महदकुशलं राज्ञो देशस्य च' इति । प्रतिपन्नं 'एतेषु
सप्तरावमेकेकमन्त्रविलिहोमं स्वयं राज्ञा कर्तव्यम्' इति बूयुः । 'ततः'
समानम् ।

एतान्वा योगानात्मिन दर्शयित्वा प्रतिकुर्वीत परेषामुपदेशार्थम् ।
ततः प्रयोजयेद्योगान् । योगदर्शनप्रतीकारेण वा कोशाभिसंहरणं कुर्यात् ।
हस्तिकामं वा नागवनपाला हस्तिना लक्षण्येन प्रकोभयेयुः । प्रतिपन्नं
गहनमेकायनं वाऽतिनीय घातयेयुः, बद्धा वाऽपहरेयुः । तेन मृगयाकामो व्याख्यातः ।

द्रव्यस्रीलोलुपमाढ्यविषवाभिर्वा परमरूपमौवनाभाभिस्स्रीभिर्दायाद-निक्षेपार्थमुपनोताभिः सत्रिणः प्रलोभयेयुः । प्रतिपन्नं रात्रौ सत्रिच्छन्नाः समागमे शस्त्ररसाभ्यां घातयेयुः ।

सिद्धप्रव्रजितचेत्यस्तूपदेवतप्रतिमानामभीक्ष्णाभिगमनेषु वा भूमिगृह्-सुरङ्गागृढभित्तिप्रविष्टास्तीक्ष्णाः परमभिहन्यः ।

येषु देशेषु याः प्रेक्षाः प्रेक्षते पाधिवस्त्वयम् ।

यात्राविहारे रमते यत्रे कीडति वाऽम्भसि ॥

वाद्रुक्त्यादिषु कृत्येषु यत्रप्रवहणेषु वा ॥

सूतिकाप्रेतरोगेषु प्रीतिशोकभयेषु वा ॥

प्रमादं याति यस्सिन् वा विश्वासात्स्वजनोत्सवे ॥

यत्रास्यारक्षिसस्त्रारो दुदिने संकुलेषु वा ॥

विश्वस्थाने प्रदीप्ते वा प्रविष्टे निजंनेऽपि वा ॥

वस्राभरणमाल्यानां फेलाभिः शयनासनैः ॥

प्रहरेयुररोस्तीक्षणाः पूर्वप्रणिहितेस्सइ ॥

यथैव प्रविशेयुश्य द्विषतस्सत्रहेतुभिः । तथैव चापगच्छेय्रित्यूक्तः योगवामनम् ॥ इति कौटिलीयार्थशस्त्रे दुर्गलम्भोपाये त्रयोदशाधिकरणे द्वितीयोध्यायः योगवामनं आदितो दिचत्वारिशच्छतसमः ।

## १७३ प्रक् अपसर्पप्रणिधिः।

क्षेणीमुख्यमासं निष्पातयेत्। स परमाश्रित्य पक्षापदेशेन स्विब-षयात् साचिव्यकरणसहायोपादानं कुर्वीतः । कृतापसर्पोपचयो वा परमनु-मान्य स्वामिनो दुष्यग्रामं वीतहस्त्यश्वं दुष्यामात्यं दण्डमाऋन्दं वा हत्वा परस्य प्रेषयेत्। जनपदैकदेशं श्रेणीमटवों दा सहायोपदानार्थं संश्रयेत। विश्वासमुपगतस्स्वामिनः प्रेषयेत्तस्स्वामी हस्तिबन्धनमटश्रीघातं वाऽप-दिश्य गृढमेव प्रहरेत्। एतेनामात्त्याटविका व्यख्याताः।

शत्रुणा मैत्रीं कृत्वा अमात्यानवक्षिपेत्। ते तच्छत्रोः प्रेषयेयु:---'भर्तारं नः प्रसादय' इति । सयं दूर्तं प्रेषयेत्, तमुपालभेत—'भर्ता ते माममात्येर्भेदयति ; न च पुनरिहागन्तव्यम्' इति । निष्पातयेत् ; स परमाश्रित्य योगापसपीपरक्तदृष्यानशक्तिमतः स्तेनाट-विकानुभयोपधातकान् वा परस्योपहरेत् । आप्तभावोपगतः प्रवीरपुरुषो-पधातमस्योपहरेत् । अन्तपालमाटविकं दण्डचारिणं वा---'दढमसौ चासौ व ते शत्रुणा संधते' इति । अथ पश्चादभित्यक्तशासनैरेनान् वातयेत् दण्डबलञ्यबहारेण सन्नु मुद्योज्य यातयेत् । कृत्यपक्षोपग्रहेण वा परस्यामित्रं राजानमात्मन्यपकारमित्बाभियुञ्जीत । ततः परस्य प्रेषयेदु-'असौ ते वैरी ममापकरोति; तमेहि संभूय हनिष्याव:; भूमी हिरण्ये वा ते परिग्रहः' इति । प्रतिपन्नमभिसत्कृत्यागतमवस्कन्देन प्रकाशयुद्धेन वा शत्रुणा धातयेत्। अभिविश्वासनार्थं भूमिदानपुत्राभिषेकरक्षापदेशेन वा ग्राहयेत् । अविषद्ममुपांशुदण्डेन वा घातयेत् । स चेद् दण्डं दद्यात्, न स्वय-

मागच्छेत्, तमस्य वैरिणा घातयेत्। दण्डेन वा प्रयातुमिच्छेत् न विजागीवृणा, तथाऽप्येनमुभयतस्वांपीहनेन घातयेत्। अविश्वस्तो वा प्रत्येकको
यातुमिच्छेत्, राज्यैकदेशं वा यातव्यस्य आदातुकामः, तथाऽप्येनं वैरिणा
सर्वदाहेन वा घातयेत्। वैरिणा वा सक्तस्य दण्डोपनयेन मूलमन्यतो
हारयेत्। धात्रुभूम्या वा मित्रं पणेतः; मित्रभूम्या वा षात्रुम्। ततः
शत्रुभूमिलिप्सायां मित्रेणात्मन्यपकारयित्वाऽभियुज्जोतेति—समानाः
पूर्वेण सर्व एव योगाः।

षत्रं वा मित्रभूमिलिप्सायां प्रतिपन्नं दण्डेनानुगृह्ण्यात् ; ततो मित्रगतमितसंदिष्यात् ; ततः कृतप्रतिविधानो वा व्यसनमात्मनो दर्शयित्वा मित्रेणामित्रमुत्साहयित्वा आत्मानमभियोजयेत् ; ततस्यंपीडनेन घातयेत् ; जीवग्राहेण वा राज्यविनिमयं कारयेत् ।

िनेत्रणाहूतरुचेच्छत्र रप्राद्यो स्थातुमिच्छेत्, सामन्तादिभिमू लमस्य हारयेत् ; दण्डेन वा त्रातुमिच्छेत्, तमस्य घातयेत् । तौ चेन्न भिद्येयातां प्रकाशमेनान्यस्य भूम्या पणेत ; ततः परस्परं नित्रव्यञ्जनोभयवेतना वा द्वान् प्रेषयेयुः—'अयं ते राजा भूमि लिप्सते शत्रुमंहितः' इति ; तयो-रन्यतरो जाताशङ्कारोषः पूर्वयच्चेष्टेत । दुर्गराष्ट्रदण्डमुख्यान् वा कृत्यपक्ष-हेतुभिरभिनिष्ट्याप्य प्रवाजयेत् ; ते युद्धावस्कन्दावरोधव्यसनेषु शत्रुमति-संदध्युः ; भेदं वाऽस्य स्ववर्गेभ्यः कुर्युः ; अभित्यक्तशासनेः प्रति-समानयेयुः ।

लुक्चकन्यञ्जना वा मांसविकयेण द्वास्था दौदारिकापाश्रयाश्रोराभ्यागमं परस्य द्विलिरिति निवेद्य लक्ष्मप्रत्या भर्तुरतीकं द्विधा निवेश्य ग्रामवधेऽवस्कन्दे च द्विषतो बूयुः—'आसन्नश्चोरगणः, महांश्चाकन्यः; प्रभूतं
सेन्यमागच्छतु' इति । तदर्पयित्वा ग्रामघातदण्डस्य सेन्यमितरदादाय
राभौ दुर्गद्वारेषु बूयुः—'हतश्चोरगणः; सिद्धयात्रमिदं सेन्यमागतं;
द्वारमपान्नियताम्' इति । पूर्वप्रणिहिता वा द्वाराणि दद्युः; तेस्सह प्रहरेयुः।
काश्विल्पिपाषण्डकुशोल्यववेदेहकष्यण्यनान् आयुधीयान् वा परदुर्गे
प्रणिद्यात्। तेषां गृहपतिकव्यण्यनाः काष्ठतृणघान्यपण्यक्षकटेः प्रहरण-

वारणान्यभिहरेयुः ; देबध्वजप्रतिमाभिर्वा । ततस्तद्वच्यञ्जनाः प्रमत्तवधम-वस्कन्दप्रतिग्रहमभिप्रहरणं पृष्ठतः शङ्कदुन्दुभिशाब्देन वा प्रविष्टमित्यावेद-येयुः । प्राकारद्वाराष्ट्राककदानमनीकभेदं घातं वा कुर्युः ।

सार्थगणवासिभिरातिवाहिकैः कन्यावाहिकैरश्वपण्यव्यवहारिभिरूप-करणहारकैर्घान्यकेतृविकितृभिर्वा प्रविक्तिलिङ्गिभिर्धृतैरुव दण्डासिनयनं सन्धिकमं विश्वासनार्थमिति राजायसर्पाः।

एत एबाटबीनामपसर्पाः कण्डकशोधनोक्ताश्च । व्रजमटक्यासन्नमपसर्पाः स्सार्थं बा चोरेर्घातयेयुः । कृतसङ्क्षेतमन्नपानं चात्र मदनरसिद्धं वा कृत्वाऽपगच्छेयुः । गोपालकवंदेहकाश्च ततश्चोरान् गृहोतलोप्तृभाराः मदनरसिकारकालेऽवस्कन्दयेयुः । सङ्कर्षणदेवतीयो वा मुण्डजिटल-स्मान्नः प्रहवणकर्मणा मदनरसयोगाभ्यामतिस्वंद्यात् । अथावस्कन्दं दद्यात् । शौण्डकस्पठजनो वा देवतप्रेतकायोत्सवसमाजेष्वादृ विकान् सुराविक्रयोपायननिमित्तं मदनरसयोगाभ्यामतिसंदन्यात् । अथावस्कन्दं दद्यात् । अथावस्कन्दं दद्यात् ।

ग्रामघातप्रविष्टां वा विक्षिप्य बहुधाऽटवीम् । घातयेदिति चोराणामपसर्पाः प्रकीतिताः ।। इति कौटिलीयार्थशास्त्रे दुगंलम्भोषाये त्रयोदशाधिकरणे तृतीयोऽध्यायः, अपसर्पप्रणिधिः आदितस्त्रिचत्वारिशवछततमः ।

# १७४-१७५ प्रक. पर्युपासनकर्म, अवमर्दश्च ।

कर्धनपूर्वं पर्युपासनंकर्म । जनपदं यथानिविष्टमभयं स्वापयेत् । उत्थित-मनुग्रहपरिहाराभ्यां निवेशयेदन्यत्रापसरतः ; समग्रामन्यस्यां भूमौ निवेशये देकस्यां वा दासयेत् । न ह्यजनो जनपदो राज्यं जनपदं वा मक्तीति कौटिल्यः । विषमस्थस्य मुधि सस्यं वा हन्याद्वीवधप्रसारौ च। प्रसारवीयषच्छेदान्मुष्टिसस्यवघादपि । वमनात् गृढघाताच जायते प्रकृतिक्षयः ॥

'प्रभूतगुणवद्धान्यकुष्ययन्त्रशस्त्रावरणविष्टिरिश्मसमग्रं मे सेन्यमृतुश्च पुरस्तात् ; अपर्तुः परस्य व्याधिदुर्भिक्षनिचयरक्षाक्षयः क्रीतवलनिवेदो मित्रबलनिवेंदश्य' इति पर्युपासीत ।

कृत्वा स्कन्धावारस्य रक्षां वावधासारयोः पथइच ; परिक्षिप्य दुर्गे बातसालाभ्यां, दूषित्वोदकमवस्राव्य परिकारसंपूरियत्वा वा, सुरुङ्गावस-कृटिक।भ्यां वप्रप्राकारौ हारयेत् ।

दारं च गुरुन निम्नं वा पांसुमालयाऽऽच्छादयेत्। बहुलारक्षं यन्त्रे-र्घातयेत्। निष्करादुपनिष्कृष्याश्वैश्च प्रहरेयु:। विक्रमान्तेषु च नियोग-विकल्पसपुचयैरचोपायानां सिद्धि लिप्सेत दुर्गवासिनः ।

स्येनकाकनप्तृभासशुकशारिकोलूककपोतान् ग्राहयित्वा पु<del>ञ</del>्छेष्वग्नि-योगयुक्तान् परदुर्गे विष्रजेयुः। अपकृष्टस्कन्धावारादुच्छित्रव्वजधन-वारक्षा वा मानुषेणाग्निना परदुर्गमादीपयेयुः ।

गूढ रुषाश्वान्तदुगंपालका नकुलवानरविद्यालशुनां पुच्छेब्दश्चियोगमा-धाय काण्डनिचयरक्षाविधानवेश्मसु विसृजेयुः।

शुष्कमत्स्वानामुदरेष्विग्नमाधाय वल्लूरे वा वायसोपहारेण वयोभि-र्हारयेयुः ।

सरलदेबदारुपृतितृणगुरगुलुश्रीवेष्टकसर्ज्यंरसलाक्षागुलिकाः खरोष्ट्रा-जाबीनां कण्डं चाग्निधारणम् ।

प्रियालचूर्णमबलगु जमषो मधू च्छिष्टमइबखरोष्ट्रगोलण्डमित्येष क्षेप्योऽ-त्रियोगः ।

सर्वलोहचूर्णमस्निवर्णं वा कुम्भीसीसत्रपुचूर्णं वा पारिभद्रकपलाश-पुष्पकेषमधोतेलमधू च्छिष्टकश्रीबेष्टककयुक्तोऽग्नियोगः विश्वासघाती बा। तेनावलिक्षः सणत्रपुसवल्कवेष्टितो बाण इत्यग्नियोगः।

नत्वेव विद्यमाने पराक्रमेऽग्निमबस्जेत्। अविश्वास्थो हुन्तिः

दैवपोडनं च, अप्रतिसंख्यातप्राणिधान्यपशुहिरण्यकुष्यद्रव्यक्षयकरः। क्षोणनिष्यं चावाप्तमपि राज्यं क्षयायैव भवति ।

इति पर्युपासनकर्म ।

'सर्वारम्भोपकरणविष्टिसम्पन्नोऽस्मि; व्याधितः पर उपवाविरुद्ध-प्रकृतिरकृतदुर्गकर्मनिचयो वा निरासारस्सासासारो वा पुरा मित्र स्संधत्ते' इत्यवमर्दकालः।

स्वयमग्री जाते समुत्थापिते वा प्रह्वणे प्रोक्षानीकदर्शनसङ्गसौरिकः कलहेषु नित्वयद्भान्तवले बहुलयुद्धपतिविद्धप्रेतपुरुषे बागरणक्नान्त-सुप्तजने दुद्धिने नदोवेगे वा नीहारसम्सवेबाऽवमृद्गीयात्।

स्कन्धावारमृत्मृज्य वा बनगूढ़ः सन्नुः निष्कान्तं घातयेत ।

मित्रासारमुख्यव्यञ्जनो वा संख्डेन मैत्रीं कृत्वा दूतमभित्यक्तं त्रेषयेत्—'इदं ते छिद्रम् ; इमे दूष्याः ; संरोद्धर्का छिद्रममं ते कृत्यपक्षः' इति । तं प्रतिदूतमादाय निर्गच्छन्तं विजिगीषूगृंहीत्वा दोषमभिविख्याप्य प्रवास्यापगक्छेत् ततः मित्रासारव्यञ्जनी वा संख्दं ब्रूयात्—'मां त्रातुमुपनिर्गच्छ ; मया वा सह संरोद्धारं चहिं' इति । प्रतिपन्नमु-भयतरसंपीडनेन घातयेत् ; जीवग्राहेण वा राज्यविनिमयं कारयेत् ; नगरं वाऽस्य प्रमृद्रीयात् । सारवलं वाऽस्य वमयित्वाऽभिहन्यात् ।

तेन दण्डोपनताटविका व्याख्याताः।

दण्डोपनताटविकयोरन्यतरो वा संरुद्धस्य प्रोवयेत—'अयं संरोद्धा भ्याधितः, पाष्ट्रणग्राहेणाभियुक्तछिद्रमन्यदुत्थितमभ्यस्यां भूमावपयातु-कामः' इति । प्रतिपन्नो संरोद्धा स्कन्धावारमादीप्यापयायात्—ततः पृष्ठवदाचरेत् ।

पण्यसम्पातं वा कृत्वा पण्येनेनं रसविद्धेनातिर्धदध्यात् ।

आसारव्यञ्जनो वा संरद्धस्य दूतं प्रेषयेत्—'मया वाद्यमिहतपुपनि-र्गच्छाभिहन्तुम्' इति । प्रतिपन्नं पूर्ववदाचरेत् ।

मित्र' बन्धु बाऽपदिश्य योगपुरुषाः शासनमुद्राहस्ताः प्रविश्य हुर्गं ग्राह्येयु:। आसारम्यञ्जनी वा संच्छस्य प्रेषयेत् — 'अमुब्मिन् देशे काले च स्कन्धावारमाभिहनिष्यामि ; युष्माभिरपि योद्धम्यम्' इति । प्रतिपन्नं ययोक्तमस्यावातसंकुलं दर्धमित्या रात्रौ दुर्गाभिष्कान्तं घातयेत् ।

यद्वा मित्रमाबाहयेत् ; आटिविकं बा, तमुत्ताहयेत् — 'विक्रम्य संरद्धे भूमिमस्य प्रतिपद्यस्व' इति । विकान्तं प्रकृतिभिद्ंष्यमुख्यावप्रहेण बा धातयेत् । स्वयं बा रसेन 'मित्रधातकोऽयम्' इत्यवाद्वायंः विक्रमितुकामं वा मित्रव्यठजनः परस्याभिशंसेत् । आसभावोपगतः प्रवीरपुरुषानस्योप— धातयत् । सिंग्व वा कृत्वा जनपदमेनं निवेशयेत् । निविष्टमन्य- जनपदमित्राता हन्यात् । अपकारियत्वा दूष्याटिविकेषु वा बलेकदेश- मितिनोय दुर्गमबस्कन्देन हारयेत् । दूष्यामित्राटिबकदेष्यप्रत्यपसृताश्च कृतार्थमानसंज्ञाचिह्नाः परदुर्गमबस्कन्देषुः ।

परदुर्गमवस्कन्दा स्कन्धावारं वा पतितपराङमुखाभिपन्नमुक्तकेशशस्त-भयविरूपेभ्यश्राभयमयुध्यमानेभयश्च दद्युः। परदुर्गमवाप्य विशुद्धशत्रु-पक्षः कृतोपांशुदण्डप्रतीकारमन्तवं हिस्स प्रविशेत्।

एवं विजिगीषुरिमत्रभूमि लब्ब्बा मध्यमं लिप्सेतः तिस्सि हातुदासीनम्। एष प्रथमो मार्गः पृथिबी जेतुम्।

मध्योदासीनयीरभावे गुणातिशयेनारिप्रकृतीस्साधयेत्। तत उत्तराः प्रकृतीः। एष द्वितीयो मार्गः।

मण्डकस्याभावे बात्रुणां मित्रं मित्रंण वा बात्रुमुभयतः संपोडनेन साधायेत्। एव तृतीयी मार्गः।

अशस्यमेकं वा सामन्तं साधयेत्; तेन द्विगुणी द्वितीयं, त्रिगुण-स्तृतीयम् । एष चतुर्यो मार्गः पृथिकी जेतुम् ।

जित्वा च पृथिकी विभक्तकर्णाश्रमां स्वधमेंण भुक्जीत ।

उपजापोऽपसपी च वामनं पर्यु पासनम् ।

अवमर्दद्य पञ्चेने दुर्गलम्भस्य हेतवः ॥

इति कोटिलीयार्थशास्त्रे चतुर्थोऽच्यायः दुर्गरूम्मोपाये पयुं पासनकर्म, , अवमर्थस्य त्रयोदशाधिकरणे आदितस्चतुरवस्वारिसच्छततमः।

### १७६ प्रक. लब्धप्रशमनम्.

द्विविधं विजिशीषोः समुत्थानम् — अटब्यादिकमेकग्रामादिकं च। त्रिविधश्चास्य लम्भः—नवो, भूतपूर्वः, पित्रच इति । भवमवाप्य लन्मं परदोषान् स्वगुणैञ्छादयेत् । गुणान् गुणदेगुण्येन । स्वधर्मकर्मानुग्रहपरि-हारदानमानकमंभिश्च प्रकृतिप्रियहितान्यनुवर्तेत । वयासं भाषिनं कृत्यपसमुपग्राहयेत्। भूयश्च कृतश्यासम्। अविश्वास्यो विसंवादऋसवेषां परेषां च भवति ; प्रकृतिविरुद्धाचारश्च । तस्मात्समान-शीलवेषभाषाचारतामुपगच्छेत्। देशदैवतसमाजोत्सवविहारेषु च भक्ति मनुवर्तेतः देशग्रामजातिसङ्गमुख्येषु वाभीक्षणं सत्रिणः परस्यापचारं दर्शः येयुः। माहाभाग्यं भक्ति च तेषु स्वामिनः स्वामिसत्कारं च विद्यमानम्। उचितेश्चेतान् भोगपरिहाररक्षावेक्षणेः मुठजीत सर्वत्राश्चमपूजनं च विद्याशक्यधर्मशूरपुरुषाणां च भूमिद्रव्यदानपरिहारान् कारयेत्। सर्व-बन्धनमोक्षणमनुग्रहं दोनानाथव्याधितानां च । चातुर्मास्येष्वर्धमासिकम-घातं ; पौर्णमासीसु च चातूरःश्रिकं ; राजदेशनक्षत्रेश्वैकरात्रिकं ; योनि-बालवर्ध पुंस्त्वोपघातं च प्रतिषेधयेत् । यत्र कोशदण्डोपघातिकमधर्मिष्ठं वा चरित्रं मन्येत, तदपनीय धर्मव्यवहारं स्थापयेत् । चोरप्रकृतीनां म्लेच्छ-जातीनां च स्थानविपर्यासमनेकस्थं कारयेत्। दुर्गराष्ट्रदण्डमुख्यानां च परोपगृहीतानां च मन्त्रिपुरोहितादीनां परस्य प्रत्यन्तेष्वनेकस्यं वासं कार-येत्। अपकारसमर्थाननु क्षियतो वा भतृ विनाशमुपांशुदण्डेन प्रशमयेत्। स्बदेशीयान्वा परेण वाऽवरुद्धानपवाहितस्थानेषु स्थापमेत्। यश्च सत्कु-लीनः प्रत्यादेयमादातुं शक्तः प्रत्यन्ताटबीस्यो वा प्रवाधितुमभिजातः, तस्मै विगुणां भूमि प्रयच्छेत् ; गुणवत्याश्चतुर्भागं वा कोशदण्डदानमबस्याप्य, यदुपकुर्वाणः पौरजानपदान् कोपयेत्, कुपितेस्तैरेनं घातयेत्। प्रकृति-भिरुपक्ष्टमपनयेद् औरधातिके वा देशे निवेशयेदिति ।

मूतपूर्वे ---येन दोषेणापवृत्तः, तं प्रकृतिदोषं छादयेत्। येन च गुणे-नोपावृत्तः, तं तीब्रोकुर्यादिति । वित्रचे — पितृदोषाञ्छाबयेत् । गुणांदच प्रकाशयेदिति ।
चरित्रमञ्जतं धम्ये कृतं चान्येः प्रवर्तयेत् ॥
प्रवर्तयेत् चाषम्यं कृतं चान्येनिवर्तयेत् ॥
इति कौटिलीयार्थशास्त्रे दुर्गलम्भोपाये त्रयोदशेधिकरणे
पञ्चमोध्यायः लब्धप्रशमनम् ।
आदितः पञ्चचत्वारिबच्छततमः । एतावता कौटिलीयस्यार्थशासस्य
दुर्गकम्भोपायस्रयोदशाधिकरणं समाप्तम् ।

# १४ अधि. औपनिषदिकं—चतुर्दशाधिकरणम् । १७७ प्रक. परधातप्रयोगः ।

चातुर्वेर्ण्यरक्षार्थमौपनिषदिकमधर्मिष्ठेषु प्रयुञ्जीत ।

कारुकूटादिः विषवगः श्रद्धेयदेशवेषशिल्पभाजनापदेशेः कुञ्जवामनिक-रातमूकविषरज्ञडान्धच्छदाभिः भ्लेच्छजातीयैरभिष्रेतेः स्रोभिः पुंभिश्च पर-शरीरोपभोगेष्वाधातव्यः।

राजकीडाभाण्डनिधानद्रव्योपभोगेषु गृहाश्चास्तिधानं कुर्युः ; सत्राजी-विनश्च रात्रिचारिषोऽग्रिजीविनश्चाग्निधानम् ।

चित्रमेककौण्डित्यककृकणपञ्चकुष्ठशतपदीचूर्णमृचिदिङ्गकंबलीशतकन्दे-ध्मकृक्कलासचूर्णं गृहगौलिकान्धाहिककृकण्ठकपूर्तिकीटगोमारिकाचूर्णं भल्ला-तकावल्गुकारसयुक्तं सद्यःप्राणहरमेतेषां वा धूमः ।

कीटो बाज्यतपस्तसः कृष्णसपैष्रियङ्गभिः । शोषयेदेव संसोगस्सद्यःप्राणहरो सतः ॥ धामागंवयातुधानमूलं भ्रह्णतकपुष्पचूर्णयुक्तमार्धमासिकः । ध्याधातकमूलं भ्रह्णातकपुष्पचूर्णयुक्तं कीटयोगो मासिकः । कस्रामात्रं पुरुषाणां द्विगुणं सराहदानां चतुर्गुणं हस्त्युष्ट्राणाम् । शतकर्दमोचिदिञ्जकरवीरकट्तुम्बीमत्स्यघूमो मदनकोद्भवप्रालेन हस्तिकर्णपलाशपलालेन वा प्रवातानुवाते प्रणीतो यादञ्चरति तावम्मारयति ।

पूर्तिकोटमस्यकटुतुम्बोशतकदंमेष्टनेन्द्रगोपचूर्णं पूर्तिकोटशुद्धारालाहेमिबदारीचूर्णं वा बस्तश्रुङ्गखुरचूर्णयुक्तमन्धीकरो धूमः। पूर्तिकरठजपत्रहरितालमनविशलागुठजारक्तकार्पासप्तालान्यास्कीटकाचगोशक्रद्रसपिष्टमन्धीकरो धूमः। सर्पतिमोर्कं गोश्वपुरीषमन्धाहिकशिरश्वन्धीकरो धूमः।

पाराबतत्स्वक्रक्रक्यादानां हस्तिनरवराहाणां च मूत्रपुरीषं कासीस-हिङ्गयवतुषकणसण्डुलाः कार्पासकुटक्कोशातकीनां च बीजानि गोमूत्रिका-भाण्डीमूलं निम्बशिग्रु फणजंकाक्षीवपीस्कृतभाङ्गः सपंदाफरीचमं हस्तिनस-श्रुङ्गचूणीमित्येष धूमो मदनकोद्रवपलालेन हस्तिकर्णपक्षाश्चपलालेन वा प्रणीतः प्रत्येकको यावचरति तावनमारयति । कालीकुष्ठनडशातावरीमूलं सपंप्रचलाककृत्रणपञ्चकुष्ठचूणं वा धूमः पूर्वकस्केनाद्रं शुष्कपलाले न वा प्रणीतस्सङ्गामावतरणावस्कन्दनकालेषु कृतेनाञ्जनोदकाक्षिप्रतीकारैः प्रणीतस्सवंप्राणिनां नेत्रझः।

धारिकाकपोतबकबलाकालण्डमङ्काक्षीपोकुकस्तुहिक्षीरपिष्टमन्धर्किरण-मञ्जनमुदक्षद्वणं च ।

यवकशालिमूलमदनकलजातीपत्रनरमूत्रयोगः सक्षविदारीमूलयुक्तो मूक्तोदुम्बरमदनकोद्रवक्वाथयुक्तो हस्तिकर्णपलाश्वकाथयुक्तो वा मदनयोगः। शृङ्किगौतमवृक्षकण्डकारमयूरपदीयोगो गुठबालाङ्कलीविषमूलिके क्रुदीयोगः। करबीराक्षिपीलुकार्कमृगमारणौयोगो मदनकोद्रवकाथयुक्तो हस्तिकर्ण-पलाशकाथयुक्तो वा मदनयोगः। समस्ता वा यवसेन्वनोदकदूषणाः।

कृतकण्डककृतसमृहगौलिकाम्बाहिकधूमौ नेत्रेवसमुन्मादं च करोति । कृतकासगृहगौलिकायोगः कृष्टकरः ।

स एव चित्रमेकान्त्रमधुयुक्तः प्रमेहमापादयति ; मनुष्यक्रीहितयुक्तः शोषम् । दूषीविषं मदनकोद्रवचूण मपिजिह्निकायोगः मातृवाहकामञ्जलिकार प्रचलाकमेकाक्षिपीलुकयोगो विषुचिकाकरः ।

पञ्चकुष्ठककौण्डिन्यकराज्ञवृक्षपुष्यमधुयोगी स्वरकरः।
भासनकुरुजिल्ल्लाग्रित्यकायोगः खरीक्षीरपिष्टो मूकबिधरकरोः।
मासार्थमासिकः कलामात्रं पुरुषाणामिति—समानं पूर्वेण।
भञ्जकायोपनयनमौषधानां चूर्णं प्राणभृताम्। सर्वेषां वा क्वायोपनयनम्; वीर्यवत्तरं भवतीति योगसम्पत्।

शाल्मलीविदारीघान्यसिद्धो मूलवत्सनामसंयुक्तश्चुषुन्दरीबोणितप्रलेपेन दिग्धो बाणो यं विध्यति, स विद्धोऽन्यान् दशः पुरुषान् दशतिः; ते दष्टा दशान्यान् दशन्ति पुरुषान् ।

भश्कातकयातुषानायमागंबाणानां पुष्पेरेलकाक्षिगुग्गुलुहालाह्छ।नां च कथायं बस्तनरकोणितयुक्तः दंशयोगः। ततोऽबंधरणिको योगस्सक्त्वृपिण्याकाभ्यामुदके प्रणीतो धनुष्कातायाममुदकायद्ययं दूषयति ; मत्स्यपरम्परा होतेन दष्टाभिमृष्टा वा विधीभवति ; यश्चेतदुदकं पिवति स्पृशति वा ।

रक्तस्वेतसर्थपेगोंधा त्रिपक्षयमुष्टिकायां भूमौ निखातायां निहिता बध्येनोद्धृता यावत्पस्यति, तावन्मारयति । कृष्णः सर्पौ वा ।

विद्युत्प्रदग्धोऽङ्गारोऽज्वलो वा विद्युत्प्रदग्धेःकाष्ठेगृहोतःवानुवास्नितःकृत्ति-गासु भरणीषु वा रौद्रौण कर्मणाऽभिहुतोऽग्निः प्रणीतश्च निष्प्रतीकारो दहति ।

> कर्माराविग्नमाह्नत्य क्षौद्रेण मुहुयात्पृथक् । सुरया शौण्डिकादग्निं भाग्यायोऽग्निं भृतेन च ॥ माल्येन चैकपत्न्यग्निं पूँब्रल्यग्नि च सर्वपेः । दच्ता च सूतिकास्वग्निमाहिताग्निं च तण्डुलैः ॥ चण्डालाग्निं च मासेन चिताग्निं मानुषेण च । समस्तान् बस्तवसया मानुषेण ध्रुवेण च ॥ जुहुयादग्निमन्त्रेण राजवृक्षकदारुमिः । एष निष्प्रतिकारोऽग्निद्धिषतां नेत्रमोहनः ॥

अदिते नमस्ते, अनुमते नमस्ते, सरस्वति नमस्ते, सवितनंपस्ते । अग्रये स्बाहा ; सोमाय स्वाहा ; भूस्स्वाहा ; भूवस्स्वाहा ।

इति कौटिलोयार्थशस्त्रे उपनिषदिके चतुर्दशेशाऽधिकरणे प्रथमोऽध्यायः

परधातप्रयोगः, आदितः षट्चत्वारिशदुत्तरशततमः ।

## १७८ प्रक, प्रसम्भने अद्भुतोत्पादनम् ।

शिरीषोदुम्बरशमीचूर्णं सर्विषा संहत्यार्धमासिकशुद्योगः । कशेरकोत्पळकन्देक्षुमूळविसदूर्वाक्षीरघृतभण्डसिद्धो मासिकः ।

माषयवकुलत्थदमंमूलचूर्ण वा क्षीरघृताम्यां, बल्कीक्षीरघृत वा समिबद्धं सालपृश्चिपणीमूलकरकं प्रयसा पीत्या, पयो वा तत्सिद्धं मध्-घृताभ्यामणित्वा, मासमुपवसति ।

ध्वेतबस्तमृत्रे सप्तरात्रोषितेः सिद्धार्थकैस्सिद्धं तैलं करुकालावौ मासार्घमासस्थितं चतुष्पदद्विपदानां विरूपकरणम् ।

तक्रयदभक्षस्य सप्तरात्राद्रघ्दं श्वेतगर्दभस्य लण्डयवेस्सिद्धं गौरसर्वप-तेलं बिरूपकरणमः।

एतयोरम्यतरस्य मृत्रलण्डरससिद्धं सिद्धार्धतैलमकंतूलपतङ्गचुणं प्रतिवापं क्वेतीकरणम् ।

द्वेतकुषकुटाजगरलण्डयोगः द्वेतीकरणम् । द्वेतबस्तमूत्रे द्वेतसर्षणाः सप्तरात्रीषितास्तकमकंक्षोरमकंत्लकट्कमत्स्यविलङ्गाश्च एष पक्षस्थितो योगः श्वेतीकरणम् ।

समुद्रमण्डूकीशङ्क्षसुधाकदलीक्षारतऋषोगः व्वेतीकरणम् ।

कदल्यबल्गुजक्षाररसधुक्ताः सुरायुक्तास्तकार्कतूलस्तुहिलवणं धान्याम् च पक्षस्थितो योगः स्वेती करणम्।

कट्कालाबीबल्लोगते नारमधंमासस्थितं गौरसपंपपिष्टं इवेतीकरणम्।

अर्कतूलोऽर्जुने कीटः खेता च गृहगौलिका । एतेन पिष्टेनास्यक्ताः केबास्स्युः बाह्मपाण्डराः ॥

गोमयेन तिन्दुकारिष्टकल्केन वा मदिताङ्गस्य भन्नातकरसानुलिप्तस्य मासिकः कुष्ठयोगः।

कृष्णसर्पमुखे गृहगौलिकामुखे वा सप्तरात्रोषिता गुञ्जाः कुष्ठयोगः । शुकपित्ताण्डरसाभ्यञ्जः कृष्ठयोगः।

कुष्ठस्य प्रियालकल्ककषायः प्रतीकारः।

कुक्कुटोकोवातकोशतावरीमूलयुक्तमाहारयमाणो मासेन गौरो भवति । बटकषायस्नातः सहचरकल्कदिग्धः कृष्णो भवति ।

शकुनकङ्गुतैलयुक्ता हरितालमनश्चिलाः श्यामीकरणम् ।

खद्योतचूर्णं सर्वपतेलयुक्तं रात्री ज्वलति। खद्योतगण्ड्पदचूर्णं समुद्रजन्तूनां भृङ्गकपालानां खदिरकणिकाराणां पुष्पचूर्णं वा शकुनकञ्चतेलयुक्तं तेजनचूर्णं पारिभद्रकत्वस्मषी मण्ड्कवसया युक्ताः
गात्रप्रज्वालनमग्निना।

पारिभद्रकत्वस्वधाकदलीतिलकस्कप्रदिग्धं शरीरमग्निना ज्वलति । पीलुत्वङम्पीमयः पिण्डो हस्ते ज्वलति । मण्डुकवसादिग्धोऽग्निना ज्वलति ।

तेन प्रदिग्धमङ्गः कुशास्त्र हरूतेलसिक्तः समूद्रमण्ड्कीफेनकसर्जरसचूर्ण-युक्तः वा ज्वलति ।

मण्डूकवस।सिद्धेन पयसा कुलीरादीनां वसया सममार्ग तैलं सिद्धमभ्यक्को गात्राणामग्निशवजालनम् ।

मण्डूकवसादिग्घोऽग्निना उवलति ।

वेणुमुलशेबलसिमङ्गं मण्डूकवसादिग्धममिनना ज्वलति ।

पारिभद्रकप्रतिबलावरुजुलव क्रकदलीमूलकस्केन मण्डूकवसादिग्धेन तेलेनाभ्यक्तपादोऽङ्गारेषु गच्छति ।

> उपोदका प्रतिबक्ता बठजुङ: पारिभद्रकः । एतेषां मूककक्केन मण्डूकवसया सह ।।

साघयेत्तं रुमेतेन पादाबभ्यज्य निर्मलौ । अङ्गारराशौ विवरेदाया कुसुमसञ्जये ॥

हंसक्रीञ्चमयूराणाम् अन्येषां वा महाबकुनोनाम् उदकसवानां पुरुद्धेषु बद्धा नलदीपिका रात्राबुल्कादशंनम्।

वैद्युतं भस्माग्निशमनम्।

स्त्रीपुष्पयायिता माषा व्रअकूलीमूलं मण्डूकवसामिश्रं खुल्ल्यां दीप्ताया-मपाचनम् । चुल्लीशोधनं प्रतीकारः ।

पीलुमयो मणिरग्निगर्भः सुवचंलामूलग्रन्थिः सूत्रग्रन्थिवा पिचु-परिवेष्टितो मुखादग्निधूमोत्सर्गः ।

कुषास्रकन्तेनसिक्तोऽग्नियंषंप्रवातेषु ज्वनति ।

समृद्रफेनकस्तेलयुक्तोऽम्मसि सवमानो जवलति । प्लबङ्गमानामस्थिषु कल्माषवेणुना निर्माथतोऽग्रिनोदकेन शाम्यत्युदकेन जवलति ।

षस्त्रहतस्य शूळप्रोतस्य वा पुरुषस्य वामपाश्वंपशुंकास्थिषु कल्माषवेणुना निर्माधतोऽप्रि:, स्त्रियाः पुरुषस्य वाऽस्थिषु मनुष्यशुंकया निर्माधतोऽप्रियंत्र त्रिरपसव्यं गच्छति, न चात्रान्योऽग्रिज्वंस्रति ।

> चुचुन्दरी खठनरीट: खारकीटरच विष्यते । अरबमूत्रेण संसुष्टा निगलानां सु भठजनम् ॥

क्यस्कान्तो वा पाषाणः। कुकीराण्डवर्दुरखारकीटवसाप्रदेहेन द्विगुणो वारकगर्भः कङ्कभासपाध्वीत्पकोदकपिष्टद्रचतुष्पदद्विपदानां पादलेपः; उकुकगृध्रवसाभ्यामृष्ट्रचर्भोपानहावस्यज्य वटपत्रे: प्रतिच्छाद्य पञ्चावाद्योजनान्यश्रान्तो गच्छति। दयेनकङ्ककाकगृध्रहंसकौश्चवीचिरल्लानां मज्जानो रेतांसि वा योजनवाताय। सिह्य्याध्रद्वीपिकाकोलूकानां मज्जानो रेतांसि वा सार्ववणिकानि गर्भपतानान्युष्ट्रिकायामभिपूय ध्मद्याने प्रेतिवा शून्या तत्समृत्यि तं मेदो योजनवाताय।

> मनिष्टेरद्भ्ृतोत्पातेः परस्योद्वेगमाचरेत् । भाराज्यायेति निर्वादः समानः कोप उच्यते ॥

इति कोटिकीयार्थवास्त्रे भौपनिषदिके चतुर्दशेऽधिकरणे द्वितीयोध्यायः प्रसम्भने अञ्चुतोत्पादनम् भादितस्यप्तचरवारिंशच्छततमः।

## १७८ प्रलम्भने भेषज्यमन्त्रप्रयोगः।

मार्जारोष्ट्रवृक्षवराहस्वाविद्वागुक्रीनप्तृकाकोल्कानां अन्येषां वा निषा-बराणां सत्त्वानामेकस्बद्धयोवंहूनां वा दक्षिणानि वामानि वाऽक्षीणि गृहीत्वा द्विचा चूर्ण कारयेत्। ततो दक्षिणं वामेन वामं दक्षिणेन समभ्यज्य रात्री समसि च पश्याति।

> एकाम्ककं वराहाक्षि खद्योतः काल्यारिबा। एतेनाभ्यक्तनयनो रात्री रूपाणि पश्यति॥

त्रिरात्रोपोषितः पुष्ये गस्त्रहतस्य शूलत्रोतस्य वा पुंसः शिरःकपाले मृत्तिकायां यवानावास्याविक्षीरेण सेचयेत्; ततो यविष्कढमालामावद्यय नष्टच्छायारूपश्चरति ।

त्रिरात्रोपोषितः पुष्येण स्वमार्जारोल्कवागुलीनां दक्षिणानि वामानि चाक्षीणि द्विषा चूर्ण कारयेत्। ततो यथास्वमभ्यक्ताक्षो नष्टच्छायारू-पश्चरति।

त्रिरात्रोपोषितः पुष्येण पुरुषधातिनः काण्डकस्य बलाकाम् अठजनी च कारयेत्। ततोऽन्यतमेनाक्षिचुर्णेनाभ्यक्ताक्षो नष्टच्छायारूपश्चरति। त्रिरात्रोपोषितः पुष्येण कालायसीम् अठजनीं शलाकां च कारयेत्; ततो निशाचराणां सत्त्वानां अन्यतमस्य खिरःकपालमञ्चनेन पूरियत्वा मृतायास्त्रिया योनौ प्रवेश्य दाहयेत्; तद्यत्रमं पुष्येणोद्धृत्य तस्यामठजन्यां निद्ध्यात्। तेनाम्यक्ताक्षो नष्टच्छायारूपश्चरति।

यत्र ब्राह्मणमाहिताम् दग्धं दह्ममानं वा पश्येत्, तत्र त्रिरात्रोयोचितः पुष्येण स्वयंमृतस्य वाससा प्रसेवं कृत्वा वितामस्मना पूर्यित्वा समाबध्य नष्टच्छायारूपश्चरति ।

न्नाह्मणस्य त्रेतकार्ये या गौः नायंते, तस्या अस्यिमकाचुर्णपूर्णाहिभस्त्रा पश्नामन्तर्भानम् । सर्पद्धस्य मस्मना पूर्णा प्रचलाकमस्त्रा मृगाणामन्तर्घानम् । उल्कूबगगुलीपुच्छपुरीयजान्यस्थिचूर्णपूर्णाहिमस्त्रा पक्षिणामन्तर्धानम् । इत्यष्टावन्तर्धानयोगाः ।

बिलं वैरोचनं बन्दे शतमायं च शम्बरम् ।

भण्डारपाकं नरकं निकुम्भं कुम्भमेव च ॥
देवलं नारदं बन्दे वन्दे सार्वाणगालवम् ।

एतेषामनुयोगेन कृतं ते स्वापनं महत् ॥

यथा स्वपन्त्य प्रशा ये च ग्रामे कुत्हलाः ॥

भण्डकानां सहस्त्रेण रथनेमिशतेन च ।

हमं गृहं प्रवेध्यामि तूष्णीमासन्तु भाण्डकाः ॥

नमस्कृत्वा च मनवे बध्वा शुनकफेलकाः ।

ये देवा देवकोकेषु मानुषेषु च बाह्मणाः ॥

अध्ययनपारगास्सिद्धाः ये च केलाशातापसाः ।

एतेभ्यस्सर्वसिद्धेभ्यः कृतं ते स्वापनं महत् ॥

अतिगच्छति च मय्यपगच्छक्तु संहताः ।

शक्ते वलिते मनवे स्वाहा ॥

एतस्य प्रयोगः—त्रिरात्रोपोषितः कृष्णचतुर्दश्यां पुष्ययोगिन्यां श्वपा-काहस्ताद्विलखावलेखनं कीणीयात् । तन्मार्षस्यहं कण्डोलिकायां कृत्वा अस-द्भीणं आदहने निखानयेत् । दितीयस्यां चतुर्दश्यामुष्टृत्य कुमार्या पेषयित्वा गुलिकाः कारयेत् । तत एकां गुलिकामिमन्त्रपित्वा यत्रेतेन मन्त्रेण क्षिपति तत्सर्वं प्रस्वापयति । एतेनैव कल्पेन श्वाविधः शक्यकं त्रिकालं त्रिश्वेतमसङ्कीणं आदहने निकानयेत् । दितीयस्यां चतुर्दश्याम् उद्दृत्वादहनमस्मना सह यत्रैतेन मन्त्रेण क्षिपति, तत्सर्वं प्रस्वापयति ।

> सुवर्णपुष्पीं ब्रह्माणीं ब्रह्माण' च कुशध्ववस् । सर्वात्र देवता बन्दे बन्दे सर्वात्र हापसान् ॥

वर्षं मे ब्राह्मणा यान्तु भूमिपाकाश्च क्षत्रियाः । वर्षः वेश्याश्च शूद्राश्च वशतां यान्तु मे सदा ॥

स्वाहा अभिले किमिले धमुजारे प्रयोगे **कश्के** वयुह्न विहाले इन्तकटके स्वाहा।

> बुक्षं स्वपन्तु शुनका ये च ग्रामे कुतुह्लाः । श्वाविषः कल्यकं चैतित्त्रश्वेतं बह्यनिर्मितम् ॥ प्रसुक्षास्सर्वसिद्धा हि एतत्ते स्वापनं कृतम् । याबद्वामस्य सीमान्तः सूर्यस्योद्रमनादिति ॥

#### स्वाहा ।

एतस्य प्रयोगः—श्वाविधः बाल्वकानि त्रिश्वेतानि । सप्तरात्रोषिततः कृष्णचतुर्दश्यां सादिराभिस्सिमिशाभिरग्निमेतेन मन्त्रेणाष्ट्यातसंपातं कृत्वा मनुष्वाभ्याम् अभिजुहुयात् । तत एकमेतेन मन्त्रेण ग्रामद्वारि गृहद्वारि वा यत्र निस्तन्यते, तत्सर्वं प्रस्थापयति ।

बिल वैरोधनं वन्दे शतमायं च शम्बरम् । निकुम्नं नरकं कुम्मं तन्तुकच्छं महासुरम् ॥ स्रमालवं प्रमीलं च मण्डोलूकं घटोबलम् । कृष्णकंतोपचारं च पौलोमां च मशस्विनीम् ॥ स्रमानश्रयत्वा गृद्धामि सिद्धार्थं शवशारिकाम् । स्रमानश्रयत्वा गृद्धामि सिद्धार्थं शवशारिकाम् । स्रमानश्रयत्वा गृद्धामि सिद्धार्थं शवशारिकाम् । स्रमान्त्रयत्व च नमः शकलभूतेभ्यः स्वाहा । स्रमान्त्रयात्वा स्वाधां याम्यं माग्यामहे । याददस्तमयादुदयो याददर्थं फलं मम ॥

### इति स्वाहा ।

एतस्य प्रयोगः---चतुर्भक्तोपवासी कृत्णचतुर्दस्यामसङ्कीणं आदहने विक कृत्वा मन्त्रेण शवशारिकां गृहीत्वा पोत्रापौट्टकिकां बध्नीयात्। तन्मध्ये श्राविधः श्रष्ट्यकेन विध्वा यत्रेतेन मन्त्रेण निखन्यते, तत्सर्वं प्रस्वापयति। उपैमि बारणं चाप्ति देवतानि दिशो दश । अपयान्तु च सर्वाणि वशतां यान्तु मे सदा ॥

#### ः स्वाहा ।

एतस्य प्रयोगः—तिरात्रोपोषितः पुष्येण वार्करा एकविश्वतिसंपातं कृत्वा मधुषृताभ्याम् अभिजुहुमात् । ततो गन्धमाल्येन पूजियत्वा निखानयेत् । द्वितीयेन पुष्येणोक्टृत्येकां शर्करामिमम्त्रपित्वा कवाटमाहृत्यात् । अभ्यन्तरं चत्रमृणां शर्कराणां द्वारमपान्नियते ।

चतुर्भेक्तोपवासो कृष्णचतुर्दंश्यां भग्नस्य पुरुषस्यास्थ्ना ऋषभं कारयेत् ; अभिमन्त्रयेत्रं तेन, द्विगोयुक्तं गोयानमाहृतं भवति ; ततः परमाकाशे विकामति । सदा रविरविः सगन्धपरिघाति सर्वं भणाति ।

चण्डालीकुम्भोत्तम्बकटुकसारीघः सनीरीभगोऽसि स्वाहा । तालोद्धाटनं प्रस्वापनं च ।

त्रिरात्रोपोषितः पुष्येण शस्त्रहतस्य शूलशोतस्य वा पुंसः शिरःकपाले मृत्तिकायां तुवरीराज्ञास्योदकेन सेचयेत् । जातानां पुष्येणैव गृहीत्वा रज्जुकां वर्तयेत् । ततस्सज्बानां घनुषां यन्त्राणां च पुरस्ताच्छोदनं ज्या-च्छोदमं करोति । चदकाहिभस्नामुच्छवासमृत्तिकया स्नियाः पुरुषस्य वा पूरयेत् ; नासिकावर्षनं मुलग्रहश्च ।

बराहहस्तिभश्चामुच्छ्वासमृत्तिकया पुरक्तित्वा मर्कटस्नायुना-वध्नीयात् ; आनाहकारणम् ।

कुष्णचतुर्दस्यां शस्त्रहताया गोः कपिस्रायाः पित्तेन राजबृक्षमयीममित्रः प्रतिमाम् अञ्ज्यात् ; अन्धीकरणम् ।

चतुर्भक्तोपवासी कृष्णचतुर्दश्यां विश्व कृत्या शूलप्रोतस्य पुरुषस्यास्थ्ना कीककान् कारयेत्। एतेषामेकः पुरीषे मूत्रे वा निवास आनाहं करोति ; षादेऽस्यासने वा निवासः बोषेण मारयसि ; आपणे क्षेत्रे वृहे वा वृक्तिच्छोदं करोति ।

एतेन कल्पेन विद्युद्ग्धस्य वृक्षस्य कीलका व्याख्याताः ।

पुननंबमवाचीनं निम्बः काकमधुरुष यः ।
कपिरोम मनुष्यास्य बध्वा मृतकवाससा ॥
निखन्यते गृहे यस्य दृष्टा वा यं प्रपाययेत् ।
सपुत्रदारस्सवनस्त्रीन्पिक्षाक्षातिवर्तते ॥
पुननंवमवाचीनं निम्बः काकमधुरुष यः ।
स्वयंगृष्ठा मनुष्यास्य पदे यस्य निखन्यते ॥
द्वारे गृहस्य सेनाया ग्रामस्य नगरस्य वा ।
सपुत्रदारस्सधनस्त्रीन् पक्षाक्षातिवर्तते ॥
अञ्चमकंटरोमाणि मार्कारनकुलस्य च ।
ब्राह्मणानां स्वपाकानां काकोलूकस्य चाहरेत् ॥
ऐतेन विष्ठाऽवक्षुण्णा सद्य उत्सादकारिका ।
प्रेतनिर्मालक्ता किण्वं रोमाणि नकुलस्य च ।
वृष्टिषकाल्यहिकृत्तिश्व पदे यस्य निश्वन्यते ।
भवत्यपुरुषस्यद्यो यावत्त्कापनीयते ॥

त्रिरात्रोपोषितः पुष्येण ग्रस्तहतस्य शूलत्रोतस्य वा पुंसः शिरःकपाले मृत्तिकायां गुन्ना आवास्योदकेन च सेचयेत्। जातानाममावास्यायां पौर्णमास्यां वा पुष्ययोगिन्यां गुण्जावल्लीर्ग्राहयित्वा मण्डलिकानि कारयेत्। तेष्वत्रपानभाजनानि न्यस्तानि न क्षीयन्ते।

रात्रिक्षायां प्रवृत्तायां प्रदीपाग्निषु मृतधेनीस्स्तनानुत्कृत्य दाहयेत् । दग्धान् वृषमूत्रेण पेषयित्वाः नवकुम्भमन्तलेपयेत् ; तं ग्राममपसन्यं परिणाय तत्र न्यस्तं नवनीतमेषां तत्सर्वमागच्छतीति ।

कृष्णचतुर्देश्यां पुष्ययोगिन्यां शुनो छग्नकस्य योनी कालायसीं मुद्रिकां प्रेषयेत् ; तां स्वयं पतिकां गृङ्कीयात् ; तया वृक्षफलान्याकारितान्यागच्छन्ति ।

मनत्रभेषण्यसंयुक्ता योगा मायाकृताद्दव ये । उपहृत्यादमित्रास्तेस्स्वजनं चाभिपालयेत् ॥ इति कौटिलीयार्थवास्त्रे औपनिषदिके चतुर्दशऽधिकरणे तृतीयोऽध्यायः प्रलम्भने भैषण्यमनत्रयोगः, स्रादितोऽष्टचस्वारिशाच्छतत्तमः ।

### १७६ प्रक. स्वब ग्रेपचातप्रतीकारः।

स्वपक्षे परप्रयुक्तानां दूषिविषगराणां प्रतीकारे--वलेब्सातककपि-त्यदन्तिदन्तराठगोत्रीशिरीषपाटलीबलास्योनाकपुननंबारवेताबरणकाथयुक्तः चन्दनसाकावृक्तीलोहितयुक्तं तेजनोदकं राजोपभोग्यानां गुद्धप्रक्षालनं श्लीणां सेनायाश्च विषप्रतीकारः ।

पृषतनकुलनीलकण्ठगोधापित्तयुक्तः मधीराजिचूर्णः सिन्दुवारितवरण-वारुणीतण्डुकीयकशतपर्वाग्रपिण्डीतकयोगो मदनदोषहरः।

**बृ**गालंबिन्नामदनसिन्दुवारितवरणवारणवल्लीमूलकाषायाणामन्यतमस्य समस्तानां वा क्षीरयुक्तं पानं मदनदोषहरम् ।

कंडयंपृतितिलतेलमुन्मादहरम् । नस्तःकर्म-

प्रियङ्कानस्क्रमालयोगः कुछहरः।

कुछलोध्रयोगः पाकव्योषद्राः।

कट्फलद्रवन्तीविसञ्जपूर्णं नस्तःकमं विशोरोगहुरः।

प्रियङ्कमञ्जिष्ठातगरलाक्षारसमधुकहरिद्राक्षौद्रयोगो रज्जूदकविषप्रहार-पतननिस्संज्ञानां पुनःप्रत्यानयनाय । मनुष्याणामक्षमात्रं ; गवाश्वानां द्विगुणं ; चतुर्गुणं हस्त्युष्ट्राणाम् । रुक्मगर्भश्चेषा मणिस्सर्वविषहरः ।

जीवन्तीश्वेतामुष्ककपुष्पवन्दाकानामक्षीवे जातस्य अश्वत्यस्य मणिः सर्वविषहरः।

तूर्याणां तैः प्रलिप्तानां शब्दो विषविनाशनः ।

लिप्तष्वजं पताकां वा हष्ट्रा भवति निर्विषः॥

एतेः कृत्वा प्रतीकारं स्वसैन्यानामधात्मनः ।

अमित्रेषु प्रयुज्जीत विषध्माम्बद्धपणान् ।।

इति कौटिलीयार्थशास्त्रे औपनिषदिके चतुर्दशेऽधिकरणे चतुर्यौऽघ्यायः

स्बब्होपघातप्रतीकारः, सादित एकोनपञ्जाबाच्छततमः ।

एतावता कौटिलीयस्यार्थशासस्यौपनिषदिकं

चतुर्दशमधिकरणं समाप्तम्।

# तन्त्रयुक्तिः पञ्चदस्यस्ययेक णम् । १८० प्रक. तन्त्रयुक्तयः

मनुष्याणां वृत्तिरथंः, मनुष्यवती भूमिरित्यथं:; तस्याः पृथिव्या सामपासनोपायः वासमयंशासमिति ।

तत् द्वानिसयुक्तियुक्तं —अधिकरणं, विधानं, योगः, पदायः, हेत्वयः, उद्देशः, निर्देशः, उपदेशः, अपदेशः, अतिदेशः, प्रदेशः, उपमानं, अर्थापक्तिः, संशयः, प्रसङ्गः, विपर्ययः, बाक्यशेषः, अनुमतं, व्याक्यानं, निर्वचनं, निर्द्रशःनं, अपवगः, स्वसंज्ञा, पूर्वपक्षः, उत्तरपक्षः, एकान्तः, अनागतावेक्षणं, अतिकान्तावेक्षणं, नियोगः, विकल्पः, समुद्रयः, उद्यमिति ।

यमर्थमधिकृत्योच्यते तदधिकरणम्—"पृथिव्या लाभे पास्रने च यावन्त्यर्थशास्त्राणि पूर्वाचार्यैः प्रस्थापितानि प्रायशस्तानि संदुत्यैकमिद-मर्थशास्त्रं कृतम्" (१) इति ।

शास्त्रस्य प्रकरणानुपूर्वी विधानम्—"विद्यासमुद्देशः, वद्धसंयोगः, इन्द्रियअथः, अमात्योत्पत्तिः" (१।१) इति एबमादिकामिति ।

वाक्ययोजना योगः—"चतुर्वणिश्रमो लोकः" (१।४) इति ।

पदाविकः पदार्थः—"मूलहरः" इति पदम् । "यः पितृपैतामहमर्थ-मन्यायेन भक्षयति स मूलहरः" (२१६) इत्यर्थः ।

हेतुरथंसाधको हेत्बयं:—"अर्थमूलौ हि धर्मकामौ" (११७) इति । समासबाक्यमुद्देशः—"विद्याबिनयहेतुरिन्द्रियजयः" (११६) इति । व्यासवाक्यं निर्देशः—"कर्णत्वगक्षिजिह्नाध्याणेन्द्रियाणां शब्दस्पर्श-रूपरसगन्वेध्ववित्रतिपत्तिरिन्द्रियजयः" (११६) इति ।

एवं वर्तितस्यमित्युपदेशः—"धर्मार्थाविशोयेन कामं सेवेत न निस्तुक्षस्स्यात्" (११७) इति ।

एवमसाबाहेरथपदेशः---"मन्त्रिपरिषदं द्वादशमात्यान् कुर्वतिति मानवाः, षोद्यशेति बाह्यस्याः ; विश्वतिमित्यौशनसाः ; यशसामध्यंभिति कौटिस्यः" (१।१४) इति । उक्तेन साधनमतिदेश:—"दत्तस्याप्रदानमृणादानेन व्याख्यातम्" (३।१६) इति ।

बक्तक्येन साधनं प्रदेशः—"सामदानभेददण्डैर्ना मधापत्सु व्याख्या-स्यामः" (७।१४) इति ।

टब्डेनाइष्टस्य साधनमुपमानम् — "निवृत्तपरिहारान् पितेवानुगृङ्कीयात्" (२।११) इति ।

यदनुक्तमर्थादापद्यते साऽर्थापितः—"स्रोक्तयात्राबिद्धाकानमात्मद्रव्य-त्रकृतिसम्बन्नं प्रियहितद्वारेणाश्रयेत" (५।४) नाप्रियहितद्वारेणाश्रयेतेत्वर्था दापन्नं भवति इति ।

उभयतोहेतुमानर्थस्तंशयः—"क्षीणलुब्धप्रकृतिमपचरितप्रकृति वा" (৬।४) इति ।

प्रकारणान्तरेण समानोऽर्थः प्रसङ्गः—"कृषिकमंप्रदिष्टायां भूमाविति समानं पूर्वेण" (१।११) इति ।

प्रतिलोभेन साधनं विपर्ययः--- "विपरीतमतुष्टस्य" (१।१६) इति ।

येन वाक्यं समाप्यते, स वाक्यक्षेषः—'छिन्नपक्षस्येव राज्ञहवेष्टाना-शह्चेति" (८।१) तत्र शकुनेरिति वाक्यशेषः ।

परवाक्यमप्रतिविद्धममुमतम् "वक्षाबुरस्यं प्रतिग्रह इत्यौचनसो व्यङ्गविभागः" (१०।६) इति ।

अतिषयवर्णना व्याख्यानम्—"बिशेषतस्च सङ्घानां सङ्घधर्मिणां च राजकुलानां चूतनिभित्तो भेदः तिश्वमित्तो विनाण इत्प्रसत्प्रप्रहः पापिकतमो व्यससनां तन्त्रदौर्वल्यात्" (८।३) इति ।

गुणतः शञ्दनिष्यत्तिर्निर्वचनम्--- "व्यस्यत्येनं श्रेयस इति व्यसनम्" (८।१) इति ।

दशन्तो दशन्तयुक्तो निदर्शनम्—"बिगृहीतो हि ज्यायसा हस्तिनाः पादयुद्धमिबाम्युपैति" (७।३) इति ।

निस्य तब्यपकर्षणमपवर्गः--- "निस्यमासत्तमरिवलं वासयेदन्यत्राज्यन्त-रकोपबक्कायाः" (१।२) इति । परेरसमितव्यब्दः स्वयंज्ञा-- "प्रथमा प्रकृतिस्तस्य भूम्यनन्तरा द्वितीया भूम्येकान्तरा तृतीया" (६१२) इति ।

प्रतिषेद्धव्यं वाक्यं पूर्वपक्षः—"स्वाम्यमात्यव्यसनयोरमात्यव्यसनं गरोयः" (८११) इति ।

तस्य निर्णयनवानयमुत्तरपक्षः—"सदायत्तरवात् ; तत्कूटस्थानीयो हि स्वामी" (८।१) इति ।

सर्वत्रायत्तमेकान्तः :—"तस्मादुत्थानमात्मनः कुर्वति" (१।१६) इति । पश्चादेवं विहितमित्यनागतावेक्षणम् — "तुलाप्रतिमानं पौतवाध्यक्षे वक्ष्यामः" (२।१३) इति ।

पुरस्तादेवं विहितमित्यतिकान्तावेक्षणम्—"अमात्यसम्पदुक्ता पुर-स्तात्" (६।१) इति ।

एवं नान्यथेति नियोगः — "तस्माद्धमंगर्थं चास्योपदिशेन्नाधर्ममनर्थं च" (१११७) इति ।

अनेन वाऽनेन वेति विकल्पः—"दुहितरो वा धर्मिष्ठेषु विवाहेषु जाताः" (३।५) इति ।

अनेन चानेन चेति समुद्धयः—"स्वत्तठकातः पितृबन्धूनां च दायादः" (३१७) इति ।

अनुक्तकरणमृह्यम्—"यथावद्याता प्रतिपहीता च नोपहतौ स्यातां, तयाऽनुवायं कुशलाः कल्पयेयुः" (३।१६) इति ।

एवं बास्त्रिमिदं युक्तमेताभिस्तन्त्रयुक्तिभिः । अवाप्तौ पालने चोक्तं लोकस्यास्य परस्य च ॥ धर्ममधं च कामं च प्रवर्तयित पाति च । अधर्मानधंविद्धेषानिदं बास्त्रं निह्नित च ॥ येन बास्त्रं च बस्त्रं च नन्दराजगता च भूः । अमर्षणोद्धृतान्याशु तेन बास्त्रिमिदं कृतम् ॥ इति कौटिलीयार्थशास्त्रे तन्त्रेयुक्तौ पञ्चदशेऽधिकरणे प्रथमोऽध्यायः तन्त्रेयुक्तयः वादितः पत्राधान्छततमोऽध्यायः । एतावता कौटिलीयस्यार्थंशास्त्रस्य तन्त्रयुक्तिः पञ्जदशमधिकरणः समाप्तम् ।

दृष्ट्वा वित्रतिपन्तिं बहुषा ग्रास्त्रेषु भाष्यकाराणाम् । स्वयमेव विष्णुगुप्तस्यकार सूत्रं च भाष्य च ॥